हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी का परचा

एडीटर—

ताराचन्द, भगवानदीन, मुज़फ़्फ़र हसन, विशम्भरनाथ, सुन्दरलाल

जुलाई १९४७

[illegible]ी भाप

क़ीमत हिन्दुस्तान में छै रुपए साल, बाहर दस रुपए साल.
एक परचा दस आने.

ہندستانی کلچر سوسائٹی کا پرچا

ایڈیٹر

تارا چند = بھگوان دین - مظفر حسن - بشمبھر ناتھہ - سندرلال

جولائی ۱۹۴۷

قیمت—ہندستان میں چھہ روپیہ سال، باہردس روپیہ سال.
ایک پرچا دس آنے.

नया हि
... और ...
क ... में
... और उर्दू
पढाई कैसे

नया हिन्द

जिल्द ३ जुलाई '४७ नम्बर १

نمبر ۱ جولائی ۴۷ء جلد ۳

जात आदमी. प्रेम धर्म है. हिन्दुस्तानी वार्ता.
'नया हिन्द' पहुँचेगा घर घर लिये प्रेम की झोली.

جات آدمی، پریم دھرم ہے، ہندستانی بولی
'نیا ہند' پہنچے گا گھر گھر لئے پریم کی جھولی

दो चौपदे

(श्री "नीरज" कानपुर)

क्या करेगा प्यार वह भगवान को ?
क्या करेगा प्यार वह ईमान को ?
जन्म लेकर गोद में इन्सान की—
प्यार कर पाया न जो इन्सान को ॥

आज बनने के लिये मिटना पड़ेगा,
आज बढ़ने के लिये रुकना पड़ेगा,
दासता की जिन्दगी भी मौत ही है—
आज जीने के लिये मरना पड़ेगा ॥

دو چوپدے

(شری "نیرج" کانپور)

کیا کرے گا پیار وہ بھگوان کو ؟
کیا کرے گا پیار وہ ایمان کو ؟
جنم لے کر گود میں انسان کی ——
پیار کر پایا نہ جو انسان کو

آج بننے کے لئے مٹنا پڑے گا،
آج بڑھنے کے لئے رکنا پڑے گا،
داستا کی زندگی بھی موت ہی ہے ——
آج جینے کے لئے مرنا پڑے گا

کبھی اوحت کٹھہ انا کٹھن ہی ہوگا۔

जनता की हिन्दुस्तानी

(श्री माता प्रसाद गुप्त. एम० ए०. डी० लिट०)

[यह लेख लेखक ही के शब्दों में छापा जा रहा है. कमानों के अन्दर के शब्द हमारे हैं—एडिटर]

हमारे और बहुत से राष्ट्रीय सवालों के समान ही राष्ट्र-भाषा का सवाल नया नहीं है. और पिछले कई बरसों में बहुत सी लिखा पढ़ी भी इस के बारे में हुई है. पर इस समय—जब कि हमारे देश में एक कुछ-दिनी राष्ट्रीय सरकार बन गई है. और हम अपने देश के लिये एक सब-दिनी राष्ट्रीय सरकार बनाने जा रहे हैं—इस पर कुछ और विचार करना जरूरी लग रहा है.

एक बात यहाँ आप से आप यह उठती है कि राष्ट्रभाषा की जरूरत ही क्या है ? क्या उसके बिना राष्ट्र या राष्ट्रीयता नहीं हो सकती ? अगर स्विटजरलैंड कई अलग अलग भाषायें बोल कर भी एक राष्ट्र हो सकता है, और इंगलैंड और अमेरिका एक ही भाषा बोलते हुए भी अलग अलग राष्ट्र हो सकते हैं, तो जो राष्ट्र के होने के विचार से राष्ट्रभाषा के सवाल को क्यों ऐसी ...ी जावे ? राष्ट्र तो राष्ट्रीयता की चाह से होता है, भाषा से ... यह कहा जावे कि प्रांतों के आपस के व्यवहार के लिये एक ... की जरूरत है, तो पढ़े लिखों के लिये यह काम अंग्रेजी पढ़ों के लिए टूटी फूटी हिन्दुस्तानी कर ही देती हैं. जो यह ... कि हिन्दू-मुसलिम एकता के विचार से ऐसी भाषा की ...

... का पैदा किया ... है ...

جنتا کی ہندستانی

(شری ماتا پرشاد گپت ایم۔ اے۔ ڈی۔ لٹ)

[یہ لیکھ لیکھک ہی کے شبدوں میں چھاپا جا رہا ہے. کمانوں کے اندر کے شبد ہمارے ہیں — ایڈیٹر]

ہمارے اور بہت سے راشٹریہ سوالوں کے سمان ہی راشٹر بھاشا کا سوال نیا نہیں ہے، اور پچھلے کئی برسوں میں بہت سی لکھا پڑھی بھی اس کے بارے میں ہوئی ہے پر اس سمے — جب کہ ہمارے دیش میں ایک کچھ-دنی راشٹریہ سرکار بن گئی ہے، اور ہم اپنے دیش کے لئے ایک سب دنی راشٹریہ سرکار بنانے جا رہے ہیں — اس پر کچھ اور وچار کرنا ضروری لگ رہا ہے۔

ایک بات یہاں آپ سے آپ یہ اٹھتی ہے کہ راشٹر بھاشا کی ضرورت ہی کیا ہے؟ کیا اس کے بنا راشٹر یا راشٹریتا نہیں ہو سکتی؟ اگر سوٹزرلینڈ کئی الگ الگ بھاشائیں بول کر بھی ایک راشٹر ہو سکتا ہے اور انگلینڈ اور امریکا ایک ہی بھاشا بولتے ہوئے بھی الگ الگ راشٹر ہو سکتے ہیں تو راشٹر کے ہونے کے وچار سے راشٹر بھاشا کے سوال کو کیوں ایسی بڑائی دی جاوے؟ راشٹر تو راشٹریتا کی چاہ سے ہوتا ہے، بھاشا سے نہیں۔ جو یہ کہا جاوے کہ پرانتوں کے آپس کے ویوہار کے لئے ایک ایسی بھاشا کی ضرورت ہے، تو پڑھے لکھوں کے لئے یہ کام انگریزی تھا ان پڑھوں کے لئے ٹوٹی پھوٹی ہندستانی کر ہی دیتی ہیں۔ جو یہ کہا جاوے ... ایکتا ... سے ایسی ... ہے ... کا ... ہوا ہے، ... اس ...

. . . . हान पर स्कूलों और कालेजों में पढ़ाई कैसे हो. अथवा उन प्रान्तों के लिये रेडियो की भाषा क्या हो ? तो यह कहा जा सकता है कि दोनों भाषाओं के माध्यम वाले (ज़रिये से तालीम देने वाले) स्कूल कालेज और रेडियो स्टेशन अलग अलग हो सकते हैं. अथवा स्कूलों कालेजों में माध्यमों के हिसाब से अलग अलग सेक्शन हो सकते हैं. और एक ही रेडियो स्टेशन से भी दोनों माध्यमों में एक दूसरे के आगे पीछे खबरें और संदेश सुनाए जा सकते हैं. इसी तरह और भी कितनी ही बातें राष्ट्रभाषा की ज़रूरत के पक्ष (तरफ़दारी) में कही गई हैं. और पंडितों ने उनके जवाब देने का यत्न किया है. अधिक अंश में उनके जवाब ठीक भी हैं. इसे कौन न मानेगा ? पर सब प्रकार से वे ठीक हैं. यह बात हृदय से, हो सकता है, वे भी न मानें.

पर कुछ ऐसी भी बातें राष्ट्रभाषा के पक्ष में हो सकती हैं जिन का जवाब इतना सुगम नहीं हो सकता. कई भाषाओं की बात यदि हम थोड़ी देर के लिये छोड़ भी दें. हिन्दी और उर्दू ही का मामला सामने रक्खें. तो बतलाइए : हम अपने विचार ऐसे मिले जुले सुनने वालों के सामने कैसे रक्खेंगे. जिनमें से कुछ हिन्दी भर और कुछ उर्दू भर जानते और समझते हैं ? क्या हर एक बोलने वाले की एक भाषा में कही हुई सारी बातों का उल्था (तर्जुमा) . . . . . दूसरी भाषा में किया . . गा ? क्या केन्द्र (मरकज़ . . . . . . ात की

. . र सल्कात का भाषा क रूप म अपना । . .

بھاشا ایک نہ ہونے پر اسکولوں اور . . . . . . ہو؟ اتھوا اُن پرانتوں کے لئے ریڈیو کی بھاشا کیا ہو؟ تو یہ کہا جاسکتا ہے کہ دونوں بھاشاؤں کے مادھیم والے (ذریعہ سے تعلیم دینے والے) اسکول کالج اور ریڈیو اسٹیشن الگ الگ ہوسکتے ہیں. اتھوا اسکولوں کالجوں میں مادھیموں کے حساب سے الگ الگ سیکشن ہوسکتے ہیں، اور ایک ہی ریڈیو اسٹیشن سے بھی دونوں مادھیموں میں ایک دوسرے کے آگے پیچھے خبریں اور سندیش سنائے جاسکتے ہیں۔ اسی طرح اور بھی کتنی ہی باتیں راشٹر بھاشا کی ضرورت کے پکش (طرفداری) میں کہی گئی ہیں اور پنڈتوں نے اُن کے جواب دینے کا یتن کیا ہے۔ ادھک انش میں اُن کے جواب ٹھیک بھی ہیں، اسے کون نہ مانے گا؟ پر سب پرکار سے وے ٹھیک ہیں، یہ بات ہردے سے، ہوسکتا ہے، وے بھی نہ مانیں۔

پر کچھ ایسی بھی باتیں راشٹر بھاشا کے پکش میں ہوسکتی ہیں جن کا جواب اتنا سُگم نہیں ہوسکتا. کئی بھاشاؤں کی بات یدی ہم تھوڑی دیر کے لئے چھوڑ بھی دیں، ہندی اور اُردو کا ہی معاملہ سامنے رکھیں، تو بتلائیے: ہم اپنے وچار ایسے ملے جُلے سُننے والوں کے سامنے کیسے رکھیں گے، جن میں کچھ ہندی بھر اور کچھ اُردو بھر جانتے اور سمجھتے ہیں؟ کیا ہر ایک بولنے والے کی، ایک بھاشا میں کہی ہوئی ساری باتوں کا اُلتھا (ترجمہ) دوسری بھاشا میں کیسا جائے گا۔ کیا کیندر (مرکز) اور اس پرانت کی

بھی ادھت کچھ اتنا کٹھن ہی ہوگا۔

व्यवस्थापिका सभाओं (क़ानून बनाने वाली सभाओं) में भी, दोनों भाषाओं में काम होने पर, एक को दूसरे का मतलब अच्छी तरह समझाने के लिये यही न करना पड़ेगा ? फिर केन्द्र और इस प्रांत की सरकार का हर एक काग़ज़ पत्र क्या दोनों ही भाषाओं में रक्खा जावेगा ? और दूसरे प्रांतों के बीच भी आपसी व्यवहार का हर एक सरकारी काग़ज़ क्या दोनों भाषाओं में आया जाया करेगा ?

इस लिये जो हम यह समझते हैं कि इन कामों के लिये अंगरेज़ी भाषा का सहारा हमें और अधिक दिनों तक अब नहीं लेना है, और उसके हटने से ख़ाली हुई जगह पर हमें अपनी भाषा को लाना है, तो यह भी मानी हुई बात है कि वह काम एक ही भाषा से होगा, एक साथ कई तो क्या ऐसी दो भाषाओं से भी वह नहीं होगा जैसी भिन्न हिन्दी और उर्दू— मूल (असल) में एक होने पर भी—अब हो चुकी हैं. इस लिये सवाल इतना ही रह जाता है कि उस माध्यम का रूप क्या होना चाहिये.

(७०)

हिन्दी को, जैसी वह अब तक हो चुकी है, राष्ट्रभाषा बनाने के पक्ष में बहुत सी बातें कही गई हैं. लोगों ने कहा है : हिन्दी अपनी दादी उस संस्कृत की गद्दी पर आई हुई ... दुनिया के सबसे पुराने और कदाचित (शायद) सबसे बढ़े चढ़े ... भरी पुरी है: बाहर से आई हुई जातियों का राज्य ... पर भी पिछले युग में हिन्दी ने अपनेपन का ... किया और उसके ... दशाओं में

ویوستھا (قانون بنانے والی) سبھاؤں میں بھی، دونوں بھاشاؤں میں کام ہونے پر ایک کو دوسرے کا مطلب اچھی طرح سمجھانے کے لئے یہی نہ کرنا پڑے گا؟ پھر کیندر اور اس پرانت کی سرکار کا ہر ایک کاغذ پتر کیا دونوں ہی بھاشاؤں میں رکھا جاوے گا؟ اور دوسرے پرانتوں کے بیچ بھی آپسی ویوہار کا ہر ایک سرکاری کاغذ کیا دونوں بھاشاؤں میں آیا جایا کرے گا؟

اس لئے ہم سمجھتے ہیں کہ ان کاموں کے لئے انگریزی بھاشا کا سہارا ہمیں اور ادھک دنوں تک اب نہیں لینا ہے اور اس کے ہٹنے سے خالی ہوئی جگہ پر ہمیں اپنی بھاشا کو لانا ہے تو یہ بھی مانی ہوئی بات ہے کہ وہ کام ایک ہی بھاشا سے ہوگا، ایک ساتھ کئی تو کیا ایسی دو بھاشاؤں سے بھی وہ نہیں ہوگا جیسی بھن ہندی اور اردو— مول (اصل) میں ایک ہونے پر بھی — اب ہو چکی ہیں۔ اس لئے سوال اتنا ہی رہ جاتا ہے کہ اس مادھیم کا روپ کیا ہونا چاہئے۔

ہندی کو جیسی وہ اب تک ہو چکی ہے، راشٹر بھاشا بنانے کے پکش میں بہت سی باتیں کہی گئی ہیں۔ لوگوں نے کہا ہے: ہندی اپنی دادی اس سنسکرت کی گدی پر آئی ہوئی ہے جو دنیا کے سب سے پرانے اور کداچت (شاید) سب سے بڑھے چڑھے ساہتیہ سے بھری پری ہے! باہر سے آئی ہوئی جاتیوں کا راج جم جانے پر بھی پچھلے یگ میں ہندی نے اپنے پن کا بلدان نہیں کیا، اور اس ... سے ... دشاؤں میں بھی ... کی ... کا پیدا ... ہوا ہے اور اس ...

[illegible]। और सामन्तवादी रूढ़ियां (राजसी रीत रिवाज) को जितनी के साथ इसने दूर किया किया है. वह भी कुछ कम बड़ाई की बात नहीं है; दूसरे प्रान्तों की भाषाओं के जितने निकट यह है, उतने निकट दूसरी कोई भाषा नहीं है. क्योंकि यह मध्य देश की भाषा होने के साथ साथ उस संस्कृत की पोती है, जिससे उत्तरी हिन्दुस्तान की सारी भाषाएं निकली हुई हैं और दक्षिणी और बृहत्तर हिन्दुस्तान (हिन्द आज़म) की भाषाओं में भी जिसकी शब्दावली (लफ़्ज़ें) अधिकाई के साथ ली जा चुकी है; इसलिये प्रांतों के आपस के सभी सम्बन्ध और बृहत्तर हिन्दुस्तान के साथ देश की संस्कृति का सम्बन्ध जोड़ने में भी यह मदद कर सकती है; और इस समय की विदेशी सरकार से मुठभेड़ इस ने अपनी सारी शक्ति के साथ ली है; तब क्यों न इसे ही राष्ट्रभाषा का पद (दरजा) दिया जावे, और क्यों इस का आसन किसी दूसरी भाषा को दिया जावे ? बातें बहुत कुछ जँचती हैं.

उर्दू को राष्ट्रभाषा बनाने के पक्ष में भी कुछ ऐसी ही बातें कही गई हैं : उर्दू भी संस्कृत की ही पोती है, भले ही इस ने फारसी और अरबी से नाता जोड़कर अपना निज का साहित्य बना लिया है; उर्दू हिन्दू तथा मुसलिम संस्कृतियों के मेल जोल की भाषा है; दुनिया की नई जाग से इसने भी लाभ उठाया है. हाँ उस से यह चकाचौंध ज़रूरी नहीं हुई है; मुसलमानों को यदि साथ लेना है, उनके हृदय तक पहुँचना है, तो इसी का सहारा लेना होगा; मध्य पूर्व (Middle East) से नाता फिर से जोड़ने के लिये यह बड़े काम की होगी; हमारी

[illegible]

تیزی کے ساتھ اِس نے دور کیا ہے، وہ بھی کچھ کم بڑائی کی بات نہیں ہے؛ دوسرے پرانتوں کی بھاشاؤں کے جتنے نکٹ یہ ہے، اُتنے نکٹ دوسری کوئی بھاشا نہیں ہے، کیونکہ یہ مدھ دیش کی بھاشا ہونے کے ساتھ ساتھ اُس سنسکرت کی پوتی ہے، جس سے اُتری ہندستان کی ساری بھاشائیں نکلی ہوئی ہیں اور دکھنی اور برہتر ہندستان (ہندِ اعظم) کی بھاشاؤں میں بھی جس کی شبداولی (لفظیں) ادھکائی کے ساتھ لی جا چکی ہیں؛ اِس لئے پرانتوں کے آپس کے سبھی سمبندھ اور برہتر ہندستان کے ساتھ دیش کی سنسکرتی کا سمبندھ جوڑنے میں بھی یہ مدد کرسکتی ہے؛ اور اِس سمے کے بدیشی سرکار سے مُٹھ بھیڑ اِس نے اپنی ساری شکتی کے ساتھ لی ہے؛ تب کیوں نہ اِسے ہی راشٹر بھاشا کا پد (درجہ) دیا جاوے، اور کیوں اِس کا آسن کسی دوسری بھاشا کو دیا جاوے؟ باتیں بہت کچھ جنچتی ہیں۔

اُردو کو راشٹر بھاشا بنانے کے پکش میں بھی کچھ ایسی ہی باتیں کہی گئی ہیں: اُردو بھی سنسکرت کی ہی پوتی ہے، بھلے ہی اِس نے فارسی اور عربی سے ناتا جوڑکر اپنا نج کا ساہتیہ بنا لیا ہے؛ اُردو ہندو تھا مسلم سنسکرتیوں کے میل جول کی بھاشا ہے؛ دُنیا کی نئی جاگ سے اِس نے بھی لابھ اُٹھایا ہے، ہاں اُس سے یہ چکاچوندھ ضروری نہیں ہوئی ہے؛ مسلمانوں کو یدی ساتھ لینا ہے، اُن کے ہردے تک پہونچنا ہے، تو اِس کا سہارا لینا ہوگا؛ مدھ پورب (Middle East) سے ناتا پھر سے جوڑنے کے لئے یہ بڑے کام کی ہوگی؛ ہماری

بھی ادھک کٹھن ہی ہوگا۔

नई जाग में इसने भी हाथ बटाया है; तब क्यों न इसे राष्ट्रभाषा बनाया जावे? कहना न होगा कि यह बातें भी कुछ न कुछ जँचती हैं.

जो सवाल यह हो कि क्या दोनों में से किसी एक को राष्ट्रभाषा मान कर काम चलाया जा सकता है या नहीं, तो यह कहने में किसी को कदाचित् ही बाधा होगी कि यह बात अनहोनी नहीं है, माना कि इसमें कुछ कठिनाई हो सकती है. ऊपर जिन कामों के लिए राष्ट्रभाषा की जरूरत बताई गई है उनके ध्यान से अंग्रेजी की जगह लेने के लिये हमारी दोनों भाषाएँ ठीक हैं. यह जरूर है कि एक पक्ष का दावा मान लिया जाने पर दूसरे को मलाल होगा, और अड़ंग का सामना करना पड़ेगा. बुद्धिमानों ने यही सोच (۳) कर दोनों पक्षों में समझौते की—'हिन्दुस्तानी' की—सूरत निकाली है. और उसके अनुसार वे काम करने भी लगे हैं. पर इससे मामला कुछ सुलझता हुआ नहीं दिखाई देता. कारण यह है कि इस प्रकार के समझौतों को जनता संदेह की आंख से देखने लगी है. और उसका यह संदेह एक हद तक वाजिब भी लगता है. मिसाल के लिये हम ११ अगस्त १९४६ के 'हरिजन-सेवक' (पृष्ठ २५६) से नीचे लिखी पाँतें ले सकते हैं. यह महात्मा गाँधी के नाम से दिये गये 'हड़तालें' नाम के नोट से हैं और नागरी अक्षरों में हैं——

"आम तौर पर लोगों को यह मालूम ही नहीं हो सकता कि हड़ताल जायज है या नाजायज, सिवा इसके कि हड़ताल की

نئی جاگ میں اس نے بھی ہاتھ بٹایا ہے؛ تب کیوں نہ اسے راشٹربھاشا بنایا جاوے؟ کہنا نہ ہوگا کہ یہ باتیں بھی کچھ نہ کچھ جنچتی ہیں.

جو سوال یہ ہو کہ کیا دونوں میں سے کسی ایک کو راشٹر بھاشا مان کر کام چلایا جا سکتا ہے یا نہیں، تو یہ کہنے میں کسی کو کداچت ہی بادھا ہوگی کہ یہ بات ان ہونی نہیں ہے. مانا کہ اس میں کچھ کٹھنائی ہو سکتی ہے. اوپر جن کاموں کے لئے راشٹر بھاشا کی ضرورت بتائی گئی ہے اُن کے دھیان سے انگریزی کی جگہ لینے کے لئے ہماری دونوں بھاشائیں ٹھیک ہیں. یہ ضرور ہے کہ ایک پکش کا دعویٰ مان لیا جانے پر دوسرے کو ملال ہوگا، اور اڑنگے کا سامنا کرنا پڑے گا. بدھمانوں نے یہی سوچ کر دونوں پکشوں میں سمجھوتے کی —ہندستانی کی— صورت نکالی ہے، اور اس کے انوسار وے کام کرنے بھی لگے ہیں. پر اس سے معاملہ کچھ سلجھتا ہوا نہیں دکھائی دیتا. کارن یہ ہے کہ اس پرکار کے سمجھوتوں کو جنتا سندیہ کی آنکھ سے دیکھنے لگی ہے، اور اس کا یہ سندیہ ایک حد تک واجب بھی لگتا ہے. مثال کے لئے ہم ۱۱ اگست ۱۹۴۶ کے 'ہریجن سیوک' (پرشٹھ ۲۵۶) سے نیچے لکھی باتیں لے سکتے ہیں. یہ مہاتما گاندھی کے نام سے دیے گئے 'ہڑتالیں' نام کے نوٹ سے ہیں اور ناگری اکشروں میں ہیں——

"عام طور پر لوگوں کو یہ معلوم ہی نہیں ہو سکتا کہ ہڑتال جائز ہے یا ناجائز، سوا اس کے کہ ہڑتال کی تائید کرنے والے [illegible] جائز [illegible] ہوں،

और जिन पर आम लोगों का पूरा विश्वास हो. हड़ताली खुद अपने मामले में राय देने के हक़दार नहीं. इसलिये या तो मामला ऐसे पंच के सिपुर्द करना चाहिये. जो दोनों तरफ़ के लोगों को मंजूर हो, या उसे अदालती फ़ैसले पर छोड़ देना चाहिये. जब इस तरीक़े से काम किया जाता है. तो आमतौर पर पब्लिक के सामने हड़ताल का मामला पेश करने की नौबत नहीं आती. अलबत्ता. कभी कभी यह ज़रूर होता है कि मग़रूर मालिक पंच के या अदालत के फ़ैसले को ठुकरा देते हैं. या गुमराह मज़दूर अपनी ताक़त के बल मालिक से ज़बर्दस्ती और भी रियायतें पाने के लिए फ़ैसले को मंजूर करने से इन्कार कर देते हैं. ऐसी हालत में मामला आम रिआया के सामने आता है.'

(७) ऊपर की पाँतों में पूरे पचास शब्द ऐसे हैं जिनकी जगह पर हिन्दी या उर्दू के अपने शब्द आ सकते थे. किन्तु इनमें से तीन जगहों पर हिन्दी शब्द आए हैं. और बाक़ी ४७ जगहों पर उर्दू शब्द आए हैं, या यों कहिये कि हिन्दी के शब्द १०० में ६ हैं जब कि १०० में ९४ शब्द उर्दू के हैं. 'हरिजन-सेवक' में इधर कुछ कम या अधिक यही नीति बरती जा रही है. हिन्दी या नागरी लिपि में निकलने वाली और भी कुछ पत्रिकाएं और पुस्तकें इस शैली की बताई जा सकती हैं. उर्दू या फारसी-अरबी अक्षरों में भी इसी प्रकार हिन्दी की शब्दावली के प्रचार का कोई उपाय हो रहा है, इसका मुझे ज्ञान नहीं है. पर जो एक हो. तो दूसरा भी होना चाहिये. यह भले ही है कि इतने पर भी दोनों यत्नों को फिर भी उचित ठहराना कठिन ही होगा.

[illegible] भाषा के रूप में अपना लिया है.

اور جن پر عام لوگوں کا پورا وشواس ہو۔ ہڑتالی خود اپنے معاملے میں رائے دینے کے حق دار نہیں۔ اس لئے یا تو معاملہ ایسے پنچ کے سپرد کرنا چاہیئے، جو دونوں طرف کے لوگوں کو منظور ہو یا اسے عدالتی فیصلے پر چھوڑ دینا چاہیئے۔ جب اس طریقے سے کام کیا جاتا ہے تو عام طور پر پبلک کے سامنے ہڑتال کا معاملہ پیش کرنے کی نوبت نہیں آتی، البتہ کبھی کبھی یہ ضرور ہوتا ہے کہ مغرور مالک پنچ کے یا عدالت کے فیصلے کو ٹھکرا دیتے ہیں، یا گمراہ مزدور اپنی طاقت کے بل مالک سے زبردستی اور بھی رعایتیں پانے کے لئے فیصلے کو منظور کرنے سے انکار کر دیتے ہیں۔ ایسی حالت میں معاملہ عام رعایا کے سامنے آتا ہے۔

(۷) اوپر کی پانتوں میں پورے پچاس شبد ایسے ہیں جن کی جگہ پر ہندی یا اردو کے اپنے شبد آ سکتے تھے۔ کنتو ان میں سے تین جگہ پر ہندی شبد آئے ہیں، اور باقی ۴۷ جگہوں پر اردو شبد آئے ہیں۔ یا یوں کہئے کہ ہندی کے شبد ۱۰۰ میں ۶ ہیں جب کہ ۱۰۰ میں ۹۴ شبد اردو کے ہیں۔ 'ہریجن سیوک' میں ادھر کچھ کم یا ادھک یہی نیتی برتی جا رہی ہے۔ ہندی یا ناگری لپی میں نکلنے والی اور بھی کچھ پترکائیں اور پستکیں اسی شیلی کی بتائی جا سکتی ہیں۔ اردو یا فارسی، عربی اکشر میں بھی اسی پرکار ہندی کی شبداولی کے پرچار کا کوئی اپائے ہو رہا ہے اس کا مجھے گیان نہیں ہے۔ پر جو ایک ہو تو دوسرا بھی ہونا چاہیئے، یہ بھلے ہی ہے کہ اتنے پر بھی دونوں یتنوں کو پھر بھی اچت ٹھہرانا کٹھن ہی ہوگا۔

बुद्धिमानों ने दोनों भाषाओं को एक दूसरे के निकट लाने के लिये एक और उपाय बताया है. दोनो भाषाएँ—और लिखावटें युक्त प्रान्त में, जहाँ वे किसी न किसी रूप में बोली और काम में भी लाई जाती हैं, कम से कम प्राइमरी पढ़ाई के कई बरसों तक अनिवार्य (जरूरी) रक्खी जावें. कहने की जरूरत नहीं कि यह सलाह भी संदेह और डर की आँख से देखी जाती है. हिन्दी वाले कहते हैं: उर्दू इस प्रान्त के १०० में २० से अधिक लोगों के साहित्य और संस्कृति की भाषा नहीं हो सकती. और हिन्दी १०० में ८० से अधिक के साहित्य और संस्कृति की भाषा है; २० वाले ८० वालों की भाषा से परिचय करें तो ठीक ही है, ८० वाले भी २० वालों की भाषा सीखें इसका कोई तुक नहीं जान पड़ता. उर्दू वाले यह समझते हैं कि बड़ी जात छोटी पर अपनी संस्कृति की प्रभुता (बड़प्पन) जमाना चाहती है, इसलिये उसने यह अनोखा उपाय निकाला है. पर जो यह विचार ठीक न हो तो भी जनता की मरजी के खिलाफ़ उस पर एक ऐसी बात लादना जिसके हितकारी (मुफ़ीद) होने में संदेह हो, और जिसमें उसकी छोटी उम्र वाले नागरिक के कुछ बरस लगते हों, कहाँ तक उचित (ठीक) होगा ?

राष्ट्रभाषा की गाड़ी लगभग यहीं तक पहुंच कर रुक गई है, और जहाँ तक मेरा ध्यान है ऊपर के ही ढंग का यत्न करने पर आगे की ओर इसके बढ़ने के कोई लक्षण नहीं दिखाई पड़ते हैं. मेरी समझ में पूरे सवाल पर एक और निगाह से विचार करने की जरूरत है. ... जनता की, जो अनपढ़ी है.

بدھمانوں نے دونوں بھاشاؤں کو ایک دوسرے کے نکٹ لانے کے لئے ایک اور اُپائے بتایا ہے، دونوں بھاشائیں —اور لکھاوٹیں یکت پرانت میں، جہاں وے کسی نہ کسی روپ میں بولی اور کام میں بھی لائی جاتی ہیں، کم سے کم پرائمری پڑھائی کے کئی برسوں تک انواریہ (ضروری) رکھی جاویں۔ کہنے کی ضرورت نہیں کہ یہ صلاح سندیہہ اور ڈر کی آنکھ سے دیکھی جاتی ہے۔ ہندی والے کہتے ہیں: اُردو اس پرانت کے ۱۰۰ میں سے ۲۰ سے ادھک لوگوں کے ساہتیہ اور سنسکرتی کی بھاشا نہیں ہوسکتی اور ہندی ۱۰۰ میں ۸۰ سے ادھک کے ساہتیہ اور سنسکرتی کی بھاشا ہے؛ ۲۰ والے ۸۰ والوں کی بھاشا سے پریچے کریں تو ٹھیک ہی ہے۔ ۸۰ والے بھی ۲۰ والوں کی بھاشا سیکھیں اس کا کوئی تک نہیں جان پڑتا۔ اُردو والے یہ سمجھتے ہیں کہ بڑی جات چھوٹی پر اپنی سنسکرتی کی پربھوتا (بڑپّن) جمانا چاہتی ہے، اس لئے اس نے یہ انوکھا اُپائے نکالا ہے۔ پر جو یہ وچار ٹھیک نہ ہوں تو بھی جنتا کی مرضی کے خلاف اُس پر ایک ایسی بات لادنا جس کے ہت کاری (مفید) ہونے میں سندیہہ ہو، اور جس میں اس کی چھوٹی عمر والے ناگرک کے کچھ برس لگتے ہوں کہاں تک اوچت (ٹھیک) ہوگا؟

راشٹر بھاشا کی گاڑی لگ بھگ یہیں تک پہونچ کر رُک گئی ہے اور جہاں تک میرا دھیان ہے اوپر کے ہی ڈھنگ کے یتن کرنے پر آگے کی اور اس کے بڑھنے کے کوئی لکشن نہیں دکھائی پڑتے ہیں۔ میری سمجھ میں پورے سوال پر ایک اور نگاہ سے وچار کرنے کی ضرورت ہے۔

दूर अपनी होने पर भी हिन्दी और उर्दू में से एक संस्कृत की तत्सम१ पाने के / की ओर झुक कर और दूसरी फ़ारसी अरबी की तत्सम शब्दावली को अपना कर एक दूसरे से और अपने मूल रूप से बहुत दूर जा पड़ी हैं, और जो वे अपने आज के रूप में साधारण जनता के सामने रक्खी जावें, तो कभी कभी उन का १०० में २० हिस्सा भी समझना उसके लिये टेढ़ी खीर होगी; फिर, दूसरा ८० चाहे हिन्दी हो तो, और चाहे उर्दू हो तो, और चाहे किसी भी बाँट के हिसाब से दोनों की मिलावट हो तो भी, जो उसकी समझ के बाहर की चीज़ है, तो उसके लिये बराबर है, अन्तर अधिक से अधिक सोने और लोहे की बेड़ी का हो सकता है. उर्दू की मिसाल के लिये ऊपर दिया हुआ 'हरिजन-सेवक' का उद्धरण (हवाला) लिया जा सकता है, और हिन्दी की मिसाल के लिये नीचे दिये हुए उसी के उल्थे को लिया जा सकता है:

"साधारणतः लोगों को यह नहीं ज्ञात हो सकता कि हड़ताल उचित है या अनुचित, इसके अतिरिक्त कि हड़ताल का समर्थन ऐसे लोग करें जो निष्पक्ष हों और जिन पर सर्वसाधारण का पूरा विश्वास हो. हड़ताली स्वयं अपने स्वार्थ के विषय में सम्मति देने के अधिकारी नहीं. इसलिये या तो झगड़ा ऐसे पञ्च के हाथों में दे देना चाहिये जो दोनों पक्षों के लोगों को मान्य हो, या उसे न्यायालय के निर्णय पर छोड़ देना चाहिये. जब इस विधि से

१—तत्सम = ज्यों के त्यों, जैसे जिह्वा, उस्ताज़, लैन्टर्न.
तद्भव = बदले हुए, जैसे जीभ, उस्ताद, लालटैन.

... संस्कृत को भाषा के रूप में अपना लिया है.

الخ میں ایک بھاشا ہونے پر بھی ہندی اور اُردو میں سے ایک سنسکرت کی تت سم شبداولی کی اور جھک کر اور دوسری فارسی عربی کی تت سم شبداولی کو اپنا کر ایک دوسرے سے اور اپنے مول روپ سے بہت دور جا پڑی ہیں۔ اور جو وہ اپنے آج کے روپ میں سادھارن جنتا کے سامنے رکھی جاویں تو کبھی کبھی اُن کا ۱۰۰ میں ۲۰ حصہ بھی سمجھنا اُس کے لئے ٹیڑھی کھیر ہوگی؛ پھر دوسرا ۸۰ چاہے ہندی ہو تو، چاہے اُردو ہو تو، اور چاہے کسی بھی بانٹ کے حساب سے دونوں کی ملاوٹ ہو تو بھی، جو اُس کے سمجھ کے باہر کی چیز ہے، تو اُس کے لئے برابر ہے، انتر ادھک سے ادھک سونے اور لوہے کی بیڑی کا ہوسکتا ہے۔ اُردو کی مثال کے لئے اوپر دیا ہوا 'ہریجن سیوک' کا اودھرن (حوالہ) لیا جاسکتا ہے اور ہندی کی مثال کے لئے نیچے دئے ہوئے اسی کے اُلتھے کو لیا جاسکتا ہے۔

"سادھارنتہ لوگوں کو یہ نہیں گیات (معلوم) ہوسکتا کہ ہڑتال اُوچت ہے یا اَنوچت، اس کے اتی رکت کہ ہڑتال کا سمرتھن ایسے لوگ کریں جو نشپکش ہوں اور جن پر سرو سادھارن کا پورا وشواس ہو۔ ہڑتالی سویم اپنے سوارتھ کے وشے میں سمتی دینے کے ادھکاری نہیں۔ اس لئے یا تو جھگڑا ایسے پنچ کے ہاتھوں میں دے دینا چاہئے جو دونوں پکشوں کے لوگوں کو مانیہ ہو، یا اُسے نیائے الیہ کے نرنے پر چھوڑ دینا چاہئے۔ جب اس ودھی سے

۱۔ تت سم = جوں کے توں جیسے جِہوا، استاذ، لین ٹرن۔
تدبھو = بدلے ہوئے جیسے جیبھ - استاد - لالٹین۔

कार्य किया जाता है, तो साधारणतः जनता के समक्ष हड़ताल का झगड़ा उपस्थित करने की परिस्थिति नहीं आती. यह अवश्य है कि कभी कभी यह भी होता है कि अभिमानी स्वामी पञ्च के या न्यायालय के निर्णय को ठुकरा देते हैं, या कर्तव्य-विमूढ़ मजदूर अपनी शक्ति के बल पर स्वामी से अकारण और भी सुविधायें पाने के लिये निर्णय को मानने में अस्वीकार कर देते हैं. ऐसी दशा में झगड़ा साधारण जनता के सम्मुख आता है."

ऊपर की उर्दू और हिन्दी की मिसालों में लगभग १०० में ५० हिस्सा ही शब्द ऐसे हैं जो साधारण जनता की समझ के बाहर के हैं, अधिक नहीं, और इसका कारण यह है कि दोनों में जान बूझ कर बीच की ही शैली बरती गई है. फिर भी जो साधारण जनता के हित का ध्यान है, तो ऊपर की बात को बहुत कुछ नीचे के शब्दों में रखना होगा.

"मामूली ढंग पर लोगों को यह जान ही नहीं पड़ सकता कि हड़ताल ठीक है या नहीं, जब तक कि हड़ताल की सही कोई ऐसे लोग न करें जो किसी भी पक्ष के न हों, और जिन पर सब लोगों को पूरा विश्वास हो. हड़ताली अपनी तईं अपने मामले में राय देने के हक़दार नहीं. इसलिये या तो मामला ऐसे पंच के हाथ में देना चाहिये जो दोनों पक्ष के लोगों को मंजूर हो, या उसे अदालत के [illegible]ले पर छोड़ देना चाहिये. जब इस रीति से काम किया जाता [illegible]मामूली ढंग पर जनता के सामने हड़ताल का मामला रखने में [illegible]हीं आती. हाँ कभी कभी यह [illegible] होता है कि घमंडी [illegible] या अदालत के फ़ैसले को [illegible] राष्ट्रभा[illegible]. या बहके मज-

کاریہ کیا جاتا ہے، تو سادھارنتہ جنتا کے سمکش ہڑتال کا جھگڑا اپستھت کرنے کی پرستھتی نہیں آتی۔ یہ اوشیہ ہے کہ کبھی کبھی یہ بھی ہوتا ہے کہ ابھمانی سوامی پنچ کیا نیائے الیہ کے نرنے کو ٹھکرا دیتے ہیں یا کرتویہ بموڑھ مزدور اپنی شکتی کے بل پر سوامی سے اکارن اور بھی سوبدھائیں پانے کے لئے نرنے کو ماننے سے اسویکار کر دیتے ہیں۔ ایسی دشا میں جھگڑا سادھارن جنتا کے سمکھ آتا ہے۔"

اوپر کی اردو اور ہندی کی مثالوں میں لگ بھگ ۱۰۰ میں پچاس حصہ ہی شبد ایسے ہیں جو سادھارن جنتا کی سمجھ کے باہر کے ہیں، ادھک نہیں، اور اس کا کارن یہ ہے کہ دونوں میں جان بوجھ کر بیچ کی ہی شیلی برتی گئی ہے۔ پھر بھی جو سادھارن جنتا کے ہت کا دھیان ہے، تو اوپر کی بات کو بہت کچھ نیچے کے شبدوں میں رکھنا ہوگا۔

معمولی ڈھنگ پر لوگوں کو یہ جان ہی نہیں پڑ سکتا کہ ہڑتال ٹھیک ہے یا نہیں، جب تک کہ ہڑتال کی سہی کوئی ایسے لوگ نہ کریں جو کسی بھی پکش کے نہ ہوں، اور جن پر سب لوگوں کو پورا وشواس ہو۔ ہڑتالی اپنی تئیں اپنے معاملے میں رائے دینے کے حق دار نہیں اس لئے یا تو معاملہ ایسے پنچ کے ہاتھ میں دینا چاہئے جو دونوں پکش کے لوگوں کو منظور ہو یا اسے عدالت کے فیصلے پر چھوڑ دینا چاہئے۔ جب اس ریتی سے کام کیا جاتا ہے، تو معمولی ڈھنگ پر جنتا کے سامنے ہڑتال کا معاملہ رکھنے کی نوبت نہیں آتی۔ ہاں کبھی کبھی یہ بھی ہوتا ہے کہ گھمنڈی مالک پنچ [illegible] یا عدالت کے فیصلے کو ٹھکرا دیتے ہیں، یا بہکے مز[illegible]

हैं अपनी ताक़त के बल पर मालिक से ज़बरदस्ती और भी रियायतें पाने के लिये फ़ैसले को मानने से 'नहीं' कर देते हैं. ऐसी दशा में मामला साधारण जनता के सामने आता है."

यह वाक्य कुछ और सहज और साधारण जनता के लिये अधिक समझ में आने वाले बनाए जा सकते थे, पर इस बात का ध्यान रखने के कारण कि वाक्यों की बनावट भरसक मूल की ही रहे, यह नहीं किया गया है. फिर भी इस बात का यत्न किया गया है कि कोई शब्द ऐसा न आने पावे जो उसके लिये अनजाना हो, बल्कि भरसक सारे शब्द उसकी रोज़ की बोलचाल के हों.

हमारे देश का १०० में ९० हिस्सा गाँवों में रहता है. ८५ अक्षर भी नहीं पहिचानता है और पढ़ा लिखा तो ५ भी कदाचित् ही होगा. इस लिए जो हमें भाषा के सवाल पर अपने देश के हित में ध्यान से विचार करना है, तो इस ९५ की ज़रूरत को ही भाषा की सब से पहली ज़रूरत समझ कर अभी हमें एक इसी का ध्यान रखना होगा. इस ९५ की दशा जो हमें सचमुच सुधारनी है, इसको मदरसों की अनिवार्य पढ़ाई, प्रौढ़-शिक्षा (बालिग़ों की तालीम), रेडियो, नाटक, सिनेमा, ग्राम सेवा-केन्द्रों, ग्राम-सेवकों और ग्राम-सेविकाओं आदि की मदद से जानकार बनाना है, तो ऐसी ही भाषा का सहारा लेना होगा जो इस ९५ के लिये अधिक से अधिक सुगम हो. और जिसकी शब्दावली भरसक उसी की शब्दावली हो. जो इस प्रकार की भाषा का रूप हम खोज लेते हैं, तो हम इस ९५ की पढ़ाई और उसकी दशा का सुधार उसके [illegible] मदद से—रेडियो, व्याख्यानों, सिनेमाओं,

[illegible]

تک پر اپنی طاقت کے بل پر مالک سے زبردستی اور بھی رعائتیں پانے کے لئے فیصلے کو ماننے سے 'نہیں' کر دیتے ہیں۔ ایسی دشا میں معاملہ سادھارن جنتا کے سامنے آتا ہے۔"

یہ واکیہ کچھ اور سہج اور سادھارن جنتا کے لئے ادھک سمجھ میں آنے والے بنائے جا سکتے تھے، پر اس بات کا دھیان رکھنے کے کارن کہ واکیوں کی بناوٹ بھرسک مول کی ہی رہے، یہ نہیں کیا گیا ہے۔ پھر بھی اس بات کا یتن کیا گیا ہے کہ کوئی شبد ایسا نہ آنے پاوے جو اُس کے لئے انجانا ہو، بلکہ بھرسک سارے شبد اُس کی روز کی بول چال کے ہوں۔

ہمارے دیش کا ۱۰۰ میں ۹۰ حصہ گاؤں میں رہتا ہے، ۸۵ اکشر بھی نہیں پہچانتا ہے اور پڑھا لکھا تو ۵ بھی کداچت ہی ہوگا۔ اس لئے جو ہمیں بھاشا کے سوال پر اپنے دیش کے ہت میں دھیان سے وچار کرنا ہے، تو اس ۹۵ کی ضرورت کو ہی بھاشا کی سب سے پہلی ضرورت سمجھ کر ابھی ہمیں ایک اِسی کا دھیان رکھنا ہوگا۔ اس ۹۵ کی دشا جو ہمیں سچ مچ سُدھارنی ہے، اس کو مدرسوں کی انوارِیہ پڑھائی، پرودھ شکشا (بالغوں کی تعلیم)، ریڈیو، ناٹک، سنیما، گرام سیوا کیندروں، گرام سیوکوں اور گرام سیوکاؤں آدی کی مدد سے جانکار بنانا ہے، تو ایسی ہی بھاشا کا سہارا لینا ہوگا جو اس ۹۵ کے لئے ادھک سے ادھک سُگم ہو۔ اور جس کی شبداولی بھرسک اُسی کی شبداولی ہو۔ جو اس پرکار کی بھاشا کا روپ ہم کھوج لیتے ہیں، تو ہم اس ۹۵ کی پڑھائی اور اُس کی دشا کا سدھار اُس کے کانوں کی مدد سے۔ ریڈیو، ویاکھیانوں، سنیماؤں

नाटकों आदि से—आज से ही कर सकते हैं, और उसको आँखों की मदद से-मदरसों, प्रौढ़ पढ़ाई घरों आदि से-कुछ महीनों में प्रायः उसे अक्षर सिखा देने के बाद से ही. और जो हम इसकी जगह पर हिन्दी या उर्दू के आज के रूप को, या उनकी आपस की किसी मिलावट के रूप को लेकर चलते हैं, तो उस दरजे की भाषा सिखाने में ही सीखने वालों की उम्र और बुद्धि के हिसाब से तीन से पाँच बरसों का समय लग सकता है, और उनकी असली पढ़ाई बहुत कुछ उसके बाद हो सकेगी. राष्ट्र के हर एक नागरिक का ३ से ५ बरस तक का समय इस तरह अकारण ही बरबाद कर देना, विशेष करके उस दशा में जब कि उसकी औसत उम्र २५ बरस से अधिक नहीं है, क्या हमारे लिए कोई छोटा अपराध होगा? और जो हम उसकी पढ़ाई में उसकी अपनी भाषा का रूप रख कर उसकी उम्र का ३ से ५ बरस का समय बचा देते हैं, तो यह क्या हमारी किसी प्रकार की छोटी सेवा होगी?

और, जो दोनों भाषाओं को उनके आज के एक दूसरे से दूर जा पड़े रूप में इस प्रान्त में अनिवार्य ढंग से सिखाने का यत्न किया गया तब? तब ऊपर बताए गए समय के ड्योढ़े से लेकर दूने समय की बलि प्रान्त के हर एक पढ़ने वाले की उम्र से देनी होगी. साथ ही इस इंतज़ाम से जनता भाषा में सीधे और हलके पन की जगह पर टेढ़े मेढ़े और भारीपन को ही बड़प्पन देना सीखेगी, और दोनों को अलग अलग सीखने पर वह दोनों को एक समझने की जगह पर अलग अलग भाषाएं ही तो समझेगी? ऐसी दशा में वह भाषा क्या बन पाएगी जो सचमुच राष्ट्रभाषा ... ?

ناٹکوں آدی سے — آج سے ہی کر سکتے ہیں، اور اُس کی آنکھوں کی مدد سے — مدرسوں، پروڑھ پڑھائی گھروں آدی سے — کچھ مہینوں میں پرایہ اُسے اکشر سکھا دینے کے بعد سے ہی۔ اور جو ہم اس کی جگہ پر ہندی یا اُردو کے آج کے روپ کو، یا اُن کی آپس کی کسی ملاوٹ کے روپ کو لے کر چلتے ہیں، تو اُس درجے کی بھاشا سکھانے میں ہی سیکھنے والوں کی عمر اور بدھی کے حساب سے تین سے پانچ برسوں کا سمے لگ سکتا ہے، اور اُن کی اصلی پڑھائی بہت کچھ اُس کے بعد ہو سکے گی۔ راشٹر کے ہر ایک ناگرک کا ۳ سے ۵ برس تک کا سمے اس طرح اکارن ہی برباد کر دینا، وشیش کر کے اُس دشا میں جب کہ اُس کی اوسط عمر ۲۵ برس سے ادھک نہیں ہے، کیا ہمارے لیے کوئی چھوٹا اپرادھ ہوگا؟ اور جو ہم اُس کی پڑھائی میں اُس کی اپنی بھاشا کا روپ رکھ کر اُس کی عمر کا ۳ سے ۵ برس کا سمے بچا دیتے ہیں، تو یہ کیا ہماری کسی پرکار کی چھوٹی سیوا ہوگی؟

اور، جو دونوں بھاشاؤں کو اُن کے آج کے ایک دوسرے سے دور جا پڑے روپ میں اس پرانت میں انیواریہ ڈھنگ سے سکھانے کا یتن کیا گیا تب؟ تب اوپر بتائے گئے سمے کے ڈیوڑھے سے لے کر دونے سمے کی بلی پرانت کے ہر ایک پڑھنے والے کی عمر سے دینی ہوگی۔ ساتھ ہی اس انتظام سے جنتا بھاشا میں سیدھے اور ہلکے پن کی جگہ پر ٹیڑھے میڑھے اور بھاری پن کو ہی بڑپن دینا سیکھے گی، اور دونوں کو الگ الگ سیکھنے پر وہ دونوں کو ایک سمجھنے کی جگہ پر الگ الگ بھاشائیں ہی تو سمجھے گی؟ ایسی دشا میں وہ بیچ کی بھاشا کیا بن پائے گی جو سچ مچ راشٹر بھاشا ہو سکے

भाषा का यह साधारण जनता का रूप खोज निकालना हिन्दुस्तानी प्रदेश*की ही जरूरत नहीं है, बल्कि सारे देश की और सभी प्रान्तों की है. सारे देश की तो यह राष्ट्रभाषा के ध्यान से है, पर सभी प्रान्तों की है इसलिये कि लगभग उन सब में साहित्य की भाषा साधारण जनता की भाषा से दूर पड़ती जा रही है. जो किसी भी प्रान्त को प्रान्त की भाषा के सहारे पढ़ाई करानी है. तो आज या कल उसे भी अपनी भाषा का यह रूप खोज निकालना है. नहीं तो वह भी हिन्दुस्तानी प्रदेश से कम अपराधी न होगा और हिन्दुस्तानी प्रदेश की भाषा का यह रूप तै हो जाने पर उससे उत्तरी भारत के सारे प्रान्तों की भाषाओं का इसी प्रकार का रूप तै करने में बड़ी मदद मिलेगी, क्योंकि हिन्दुस्तानी प्रदेश की जनता की भाषा उनके सबसे निकट पड़ती है.

लेखकों, प्रकाशकों, और अखबार वालों की मदद इस जनता की भाषा को आप ही प्राप्त होनी चाहिये, क्योंकि इस भाषा से उनका थोड़ा हित न होगा. पढ़ाई लिखाई इस सहारे से जितनी ही बढ़ेगी, उतनी ही उनकी रचनाओं की माँग भी बढ़ेगी. पर जो वे साधारण जनता के काम के प्रकाशनों (किताबों वगैरा) की भाषा आज उसकी भाषा कर देते हैं, तो आज ही उनकी खपत प्राय: (अकसर) तिगुनी हो सकती है. मान लीजिये कि हिन्दुस्तानी बोलने समझने वाली जनता में अक्षर पहिचानने

*'हिन्दुस्तानी प्रदेश' से मेरा मतलब इस लेख भर में देश के उस समूचे हिस्से से है जिसने हिन्दी या उर्दू को अपने साहित्य और संस्कृति की भाषा के रूप में अपना लिया है.

بھاشا کا یہ سادھارن جنتا کا روپ کھوج نکالنا ہندستانی پردیش* کی ہی ضرورت نہیں ہے، بلکہ سارے دیش کی اور سبھی پرانتوں کی ہے. سارے دیش کی تو یہ راشٹر بھاشا کے دھیان سے ہے، پر سبھی پرانتوں کی اس لئے ہے کہ لگ بھگ ان سب میں ساہتیہ کی بھاشا سادھارن جنتا کی بھاشا سے دور پڑتی جا رہی ہے، جو کسی بھی پرانت کو پرانت کی بھاشا کے سہارے پڑھائی کرانی ہے، تو آج یا کل اسے بھی اپنی بھاشا کا یہ روپ کھوج نکالنا ہے، نہیں تو وہ بھی ہندستانی پردیش سے کم اپرادھی نہ ہوگا اور ہندستانی پردیش کی بھاشا کا یہ روپ طے ہو جانے پر اس سے اتری بھارت کے سارے پرانتوں کی بھاشاؤں کا اسی پرکار کا روپ طے کرنے میں بڑی مدد ملے گی، کیونکہ ہندستانی پردیش کی جنتا کی بھاشا ان کے سب سے نکٹ پڑتی ہے.

لیکھکوں، پرکاشکوں اور اخبار والوں کی مدد اس جنتا کی بھاشا کو آپ ہی پراپت ہونی چاہئے، کیونکہ اس بھاشا سے ان کا تھوڑا ہت نہ ہوگا. پڑھائی لکھائی اس سہارے سے جتنی ہی بڑھے گی، اتنی ہی ان کی رچناؤں کی مانگ بھی بڑھے گی. پر جو وے سادھارن جنتا کے کام کے پرکاشنوں (کتابوں وغیرہ) کی بھاشا آج اس کی بھاشا کر دیتے ہیں، تو آج ہی ان کی کھپت پرایہ (اکثر) تگنی ہو سکتی ہے. مان لیجئے کہ ہندستانی بولنے سمجھنے والی جنتا میں اکشر پہچاننے

* 'ہندستانی پردیش' سے میرا مطلب اس لیکھ بھر میں دیش کے اس سموچے حصے سے ہے جس نے ہندی یا اردو کو اپنے ساہتیہ اور سنسکرتی کی بھاشا کے روپ میں اپنا لیا ہے.

साहित्य की हिन्दी या उर्दू समझ सकते हैं, १०० में ५ है—कदाचित् (शायद) इतनी भी नहीं है—और हिन्दी के लोगों की गिनती १०० में ८० और उर्दू के लोगों की गिनती १०० में २० है; अब जो वे आज के साहित्य की हिन्दी में रचना करते हैं, तो वे अधिक से अधिक ८० × ५/१०० = १०० में ४ हिन्दुस्तानी बोलने समझने वाली जनता के काम की चीजें होंगी. और जो वे आज के साहित्य की उर्दू में रचना करते हैं, तो वे अधिक से अधिक २० × ५/१०० = १०० में १ हिन्दुस्तानी बोलने समझने वाली जनता के काम की चीजें होंगी. जो उनकी रचनाएँ साधारण जनता की भाषा में हैं, तो वे हिन्दी और उर्दू के पढ़ने वालों की गिनती के हिसाब से १०० में १२ और ३ के काम की हो सकती हैं. हमें यह भी याद रखने की जरूरत है कि जो हम साहित्य की भाषाओं को जनता की भाषा से जोड़ कर उन्हें जीवन रस नहीं पहुँचाते रहते तो वे मुर्दा भाषाएँ बनती जावेंगी.

कहना नहीं होगा कि भाषा के इस जनतंत्रीकरण (जम्हूरी बनाने) में हिन्दी और उर्दू के साहित्यकों को चिंता की कोई बात नहीं है; इससे हिन्दी और उर्दू की बाट में कोई बाधा न पड़ेगी. टेकनिकल और सूक्ष्म विषयों के विवेचन (बारीक मसलों पर ग़ौर करने) के लिए यह प्रकट है कि बेसिक हिन्दुस्तानी की शब्दावली पूरी न पड़ेगी और यह मानी हुई बात है कि हमें अनपढ़ी जनता को मामूली पढ़ा लिखा ही नहीं बनाना है, मामूली पढ़े लिखों को अच्छी तरह पढ़ा लिखा और विद्वान बनाना भी है, जो हमें अपने देश को बढ़े हुए देशों के

والے ۱۰۰ میں ۵ ہیں پر ایسے لوگوں کی گنتی جو آج کے ساہتیہ کی ہندی یا اُردو سمجھ سکتے ہیں، ۱۰۰ میں ۵ ہے — کداچت (شاید) اِتنی بھی نہیں ہے — اور ہندی کے لوگوں کی گنتی ۱۰۰ میں ۸۰ اور اُردو کے لوگوں کی گنتی ۱۰۰ میں ۲۰ ہے؛ اب جو وے آج کے ساہتیہ کی ہندی میں رچنا کرتے ہیں، تو وے ادھک سے ادھک ۵ × ۸۰/۱۰۰ = ۱۰۰ میں ۴ ہندستانی بولنے سمجھنے والی جنتا کے کام کی چیزیں ہوں گی اور جو وے آج کے ساہتیہ کی اُردو میں رچنا کرتے ہیں، تو وے ادھک سے ادھک ۲۰ × ۵/۱۰۰ = ۱۰۰ میں ایک ہندستانی بولنے سمجھنے والی جنتا کے کام کی چیزیں ہوں گی. جو اُن کی رچنائیں سادھارن جنتا کی بھاشا میں ہیں، تو وے ہندی اور اُردو کے پڑھنے والوں کی گنتی کے حساب سے ۱۰۰ میں ۱۲ اور ۳ کے کام کی ہو سکتی ہیں. ہمیں یہ بھی یاد رکھنے کی ضرورت ہے کہ جو ہم ساہتیہ کی بھاشاؤں کو جنتا کی بھاشا سے جوڑ کر اُنھیں جیون رس نہیں پہنچاتے رہتے تو وے مُردہ بھاشائیں بنتی جاویں گی.

کہنا نہیں ہوگا کہ بھاشا کے اس جن تنتری کرن (جمہوری بنانے) میں ہندی اور اُردو کے ساہتیکوں کو چنتا کی کوئی بات نہیں ہے؛ اِس سے ہندی اور اُردو کی باٹ میں کوئی بادھا نہ پڑے گی. ٹیکنیکل اور سوکشم وشیوں کے وِویچن (باریک مسئلوں پر غور کرنے) کے لئے یہ پرکٹ ہے کہ بیسک ہندستانی کی شبداولی پوری نہ پڑے گی اور یہ مانی ہوئی بات ہے کہ ہمیں اَن پڑھی جنتا کو معمولی پڑھا لکھا ہی نہیں بنانا ہے، معمولی پڑھے لکھوں کو اچھی طرح پڑھا لکھا اور ودوان بنانا بھی ہے، جو ہمیں اپنے دیش کو بڑھے ہوئے دیشوں کے

नया हि

. खड़ा करना है. इसलिये हिन्दी और उर्दू के टेकनिकल और सूक्ष्म् विवेचन वाले साहित्य के लिये उनके कोशों को अधिक से अधिक भरा पुरा बनाने की भी जरूरत है. सच पूछिये तो दोनों तरह के प्रयासों (कोशिशों) में आपस में कोई विरोध नहीं है. बल्कि यह 'जनता की हिन्दुस्तानी' पढ़ाई लिखाई बढ़ाने में मदद पहुँचा कर साहित्य की दोनों भाषाओं के लिये अधिक से अधिक चौड़ा क्षेत्र (मैदान) ही तैयार करेगी.

पर इस 'जनता का हिन्दुस्तानी' का ठीक ठीक रूप तै करना है, और इसी का ध्यान न रखने के कारण 'हिन्दुस्तानी' शब्द की खींचतान हुई है. और हिन्दी और उर्दू के चाहने वाले आपस में निकट आने की जगह एक दूसरे से और भी दूर हो गए हैं. 'हिन्दुस्तानी' नाम की आड़ में किसी ने सोचा हिन्दी का प्रचार हो जायगा. और कोई उसकी आड़ में उर्दू का प्रचार करने की सोचने लगे. बस यह एक नए झगड़े की जड़ हो गई. असल में इस 'जनता की हिन्दुस्तानी' का रूप ठीक ठीक तै करके उससे कुछ—जैसे १०० में १० हिस्सा—इधर या उधर की चीजों को ही जब तक हिन्दुस्तानी नहीं माना जाता और उनको ही आगे नहीं बढ़ाया जाता, उन्हीं का व्यवहार राष्ट्र की तमाम सुख और सुधार की योजनाओं (तजवीजों) में नहीं किया जाता, तब तक हिन्दुस्तानी प्रचार और हिन्दी-उर्दू-प्रचार और भेदभाव-प्रचार में अधिक अन्तर नहीं दिखाई पड़ता है; और धींगा धींगी, पक्षपात. और धोखाबाजी का ही देश सेवा के इस क्षेत्र में बोल बाला रहेगा.

बस ऊपर के विवेचन को ध्यान में रखते हुए इस 'जनता की

سامنے کھڑا کرنا ہے۔ اس لئے ہندی اور اُردو کے ٹیکنیکل اور سوکشم ووچن والے ساہتیہ کے لئے اُن کے کوشوں کو ادھک سے ادھک بھرا پورا بنانے کی بھی ضرورت ہے۔ سچ پوچھئے تو دونوں طرح کے پریاسوں (کوششوں) میں آپس میں کوئی ورودھ نہیں ہے۔ بلکہ یہ 'جنتا کی ہندستانی' پڑھائی لکھائی بڑھانے میں مدد پہونچا کر ساہتیہ کی دونوں بھاشاؤں کے لئے ادھک سے ادھک چوڑا کشیتر (میدان) تیّار کرے گی۔

پر اس 'جنتا کی ہندستانی' کا ٹھیک ٹھیک روپ طے کرنا ہے اور اسی کا دھیان نہ رکھنے کے کارن 'ہندستانی' شبد کی کھینچ تان ہوئی ہے۔ اور ہندی اور اُردو کے چاہنے والے آپس میں نکٹ آنے کی جگہ ایک دوسرے سے اور بھی دور ہو گئے ہیں۔ 'ہندستانی' نام (۵)
کی آڑ میں کسی نے سوچا ہندی کا پرچار ہو جائے گا اور کوئی اُس کی آڑ میں اُردو کا پرچار کرنے کی سوچنے لگے، بس یہ ایک نئے جھگڑے کی جڑ ہو گئی۔ اصل میں اس 'جنتا کی ہندستانی' کا روپ ٹھیک ٹھیک طے کر کے اس سے کچھ — جیسے ۱۰۰ میں دس حصّہ — اِدھر یا اُدھر کی چیزوں کو ہی جب تک ہندستانی نہیں مانا جاتا اور اُن کو ہی آگے نہیں بڑھایا جاتا، اُنھیں کا ویوہار راشٹر کی تمام سکھ اور سدھار کی یوجناؤں (تجویزوں) میں نہیں کیا جاتا، تب تک ہندستانی پرچار اور ہندی اُردو پرچار اور بھید بھاؤ پرچار میں ادھک انتر نہیں دکھائی پڑتا ہے؛ اور دھینگا دھینگی، پکششپات، اور دھوکا بازی کا ہی دیش سیوا کے اس کشیتر میں بول بالا رہے گا۔

بس اوپر کے ویوچن کو دھیان میں رکھتے ہوئے اس 'جنتا کی

वाले १०० में १५ हैं पर ऐसे लोगों की गिनती जो आज के साहित्य की हिन्दी या उर्दू समझ सकते हैं, १०० में ५ है—कदाचित (शायद) इतनी भी नहीं है—और हिन्दी के लोगों की गिनती १०० में ८० और उर्दू के लोगों की गिनती १०० में २० है; अब जो वे आज के साहित्य की हिन्दी में रचना करते हैं, तो वे अधिक से अधिक ८० × ५ / १०० = १०० में ४ हिन्दुस्तानी बोलने समझने वाली जनता के काम की चीजें होंगी, और जो वे आज के साहित्य की उर्दू में रचना करते हैं, तो वे अधिक से अधिक २० × ५ / १०० = १०० में १ हिन्दुस्तानी बोलने समझने वाली जनता के काम की चीजें होंगी. जो उनकी रचनाएँ साधारण जनता की भाषा में हैं, तो वे हिन्दी और उर्दू के पढ़ने वालों की गिनती के हिसाब से १०० में १२ और ३ के काम की हो सकती हैं. हमें यह भी याद रखने की ज़रूरत है कि जो हम साहित्य की भाषाओं को जनता की भाषा से जोड़कर उन्हें जीवन रस नहीं पहुँचाते रहते तो वे मुर्दा भाषाएँ बनती जावेंगी.

कहना नहीं होगा कि भाषा के इस जनतंत्रीकरण (जम्हूरी बनाने) में हिन्दी और उर्दू के साहित्यकों को चिंता की कोई बात नहीं है; इससे हिन्दी और उर्दू की बाट में कोई बाधा न पड़ेगी. टेकनिकल और सूक्ष्म विषयों के विवेचन (बारीक मसलों पर ग़ौर करने) के लिए यह प्रकट है कि बेसिक हिन्दुस्तानी की शब्दावली पूरी न पड़ेगी और यह मानी हुई बात है कि हमें अनपढ़ी जनता को मामूली पढ़ा लिखा ही नहीं बनाना है, मामूली पढ़े लिखों को अच्छी तरह पढ़ा लिखा और विद्वान बनाना भी है, जो हमें अपने देश को बढ़े हुए देशों के

(२०)

والے ۱۰۰ میں ۱۵ ہیں پر ایسے لوگوں کی گنتی جو آج کے ساہتیہ کی ہندی یا اُردو سمجھ سکتے ہیں، ۱۰۰ میں ۵ ہے—کداچت (شاید) اتنی بھی نہیں ہے— اور ہندی کے لوگوں کی گنتی ۱۰۰ میں ۸۰ اور اُردو کے لوگوں کی گنتی ۱۰۰ میں ۲۰ ہے؛ اب جو وے آج کے ساہتیہ کی ہندی میں رچنا کرتے ہیں تو وے ادھک سے ادھک ۸۰ × ۵ / ۱۰۰ = ۱۰۰ میں ۴ ہندستانی بولنے سمجھنے والی جنتا کے کام کی چیزیں ہوں گی اور جو وے آج کے ساہتیہ کی اُردو میں رچنا کرتے ہیں، تو وے ادھک سے ادھک ۲۰ × ۵ / ۱۰۰ = ۱۰۰ میں ایک ہندستانی بولنے سمجھنے والی جنتا کے کام کی چیزیں ہوں گی. جو اُن کی رچنائیں سادھارن جنتا کی بھاشا میں ہیں، تو وے ہندی اور اُردو کے پڑھنے والوں کی گنتی کے حساب سے ۱۰۰ میں ۱۲ اور ۳ کے کام کی ہوسکتی ہیں. ہمیں یہ بھی یاد رکھنے کی ضرورت ہے کہ جو ہم ساہتیہ کی بھاشاؤں کو جنتا کی بھاشا سے جوڑ کر اُنھیں جیون رس نہیں پہنچاتے رہتے تو وے مُردہ بھاشائیں بنتی جاویں گی.

کہنا نہیں ہوگا کہ بھاشا کے اس جن تنتری کرن (جمہوری بنانے) میں ہندی اور اُردو کے ساہتیکوں کو چنتا کی کوئی بات نہیں ہے؛ اس سے ہندی اور اُردو کی باٹ میں کوئی بادھا نہ پڑے گی. ٹیکنیکل اور سوکشم وشیوں کے وویچن (باریک مسئلوں پر غور کرنے) کے لئے یہ پرکٹ ہے کہ بیسک ہندستانی کی شبداولی پوری نہ پڑے گی اور یہ مانی ہوئی بات ہے کہ ہمیں اَن پڑھی جنتا کو معمولی پڑھا لکھا ہی نہیں بنانا ہے، معمولی پڑھے لکھوں کو اچھی طرح پڑھا لکھا اور ودوان بنانا بھی ہے، جو ہمیں اپنے دیش کو بڑھے ہوئے دیشوں کے

(۲۰)

नया हि
... खड़ा करना है. इसलिये हिन्दी और उर्दू के टेकनिकल और सूक्ष्म विवेचन वाले साहित्य के लिये उनके कोशों ... अधिक से अधिक भरा पुरा बनाने की भी ज़रूरत है. सच पूछिये तो दोनों तरह के प्रयासों (कोशिशों) में आपस में कोई विरोध नहीं है. बल्कि यह 'जनता की हिन्दुस्तानी' पढ़ाई लिखाई बढ़ाने में मदद पहुंचा कर साहित्य की दोनों भाषाओं के लिये अधिक से अधिक चौड़ा क्षेत्र (मैदान) ही तैयार करेगी.

पर इस 'जनता का हिन्दुस्तानी' का ठीक ठीक रूप ते करना है, और इसी का ध्यान न रखने के कारण 'हिन्दुस्तानी' शब्द की खींचतान हुई है. और हिन्दी और उर्दू के चाहने वाले आपस में निकट आने की जगह एक दूसरे से और भी दूर हो गए हैं. 'हिन्दुस्तानी' नाम की आड़ में किसी ने सोचा हिन्दी का प्रचार हो जायगा. और कोई उसकी आड़ में उर्दू का प्रचार करने की सोचने लगे. बस यह एक नए झगड़े की जड़ हो गई. असल में इस 'जनता की हिन्दुस्तानी' का रूप ठीक ठीक ते करके उससे कुछ—जैसे १०० में १० हिस्सा—इधर या उधर की चीज़ों को ही जब तक हिन्दुस्तानी नहीं माना जाता और उनको ही आगे नहीं बढ़ाया जाता, उन्हीं का व्यवहार राष्ट्र की तमाम सुख और सुधार की योजनाओं (तजवीज़ों) में नहीं किया जाता, तब तक हिन्दुस्तानी प्रचार और हिन्दी-उर्दू-प्रचार और भेदभाव-प्रचार में अधिक अन्तर नहीं दिखाई पड़ता है; और धींगा धींगी, पक्षपात, और धोखाबाज़ी का ही देश सेवा के इस क्षेत्र में बोल बाला रहेगा.

बस ऊपर के विवेचन को ध्यान में रखते हुए इस जनता की

(५)

سامنے کھڑا کرنا ہی. اِس لئے ہندی اور اُردو کے ٹیکنیکل اور سوکشم وویچن والے ساہتیہ کے لئے اُن کے کوشوں کو ادھک سے ادھک بھرا پورا بنانے کی بھی ضرورت ہی. سچ پوچھئے تو دونوں طرح کے پریاسوں (کوششوں) میں آپس میں کوئی ورودھ نہیں ہی. بلکہ یہ جنتا کی ہندستانی، پڑھائی لکھائی بڑھانے میں مدد پہونچا کر ساہتیہ کی دونوں بھاشاؤں کے لئے ادھک سے ادھک چوڑا کشیتر (میدان) تیار کرے گی.

پر اس 'جنتا کی ہندستانی' کا ٹھیک ٹھیک روپ طے کرنا ہی اور اِسی کا دھیان نہ رکھنے کے کارن 'ہندستانی' شبد کی کھینچ تان ہوئی ہی، اور ہندی اور اُردو کے چاہنے والے آپس میں نکٹ آنے کی جگہ ایک دوسرے سے اور بھی دور ہوگئے ہیں. 'ہندستانی' نام کی آڑ میں کسی نے سوچا ہندی کا پرچار ہوجائے گا، اور کوئی اُس کی آڑ میں اُردو کا پرچار کرنے کی سوچنے لگے. بس یہ ایک نئے جھگڑے کی جڑ ہوگئی. اصل میں اس 'جنتا کی ہندستانی' کا روپ ٹھیک ٹھیک طے کرکے اس سے کچھ — جیسے ۱۰۰ میں دس حصہ — اِدھر یا اُدھر کی چیزوں کو ہی جب تک ہندستانی نہیں مانا جاتا اور اُن کو ہی آگے نہیں بڑھایا جاتا، اُنھیں کا ویوہار راشٹر کی تمام سکھ اور سُدھار کی یوجناؤں (تجویزوں) میں نہیں کیا جاتا، تب تک ہندستانی پرچار اور ہندی اُردو پرچار اور بھید بھاؤ پرچار میں ادھک انتر نہیں دکھائی پڑتا ہی، اور دھینگا دھینگی، پکشپات، اور دھوکا بازی کا ہی دیش سیوا کے اس کشیتر میں بول بالا رہے گا.

بس اوپر کے وویچن کو دھیان میں رکھتے ہوئے اس جنتا کی

(۵)

हिन्दुस्तानी' का रूप तै करने के बारे में कम से कम नीचे लिखी बातें जरूरी होंगी—

१—यह भाषा कोई नई गढ़ंत न हो—इसका व्याकरण, इसकी ध्वनियाँ, इसकी शब्द-रचना, इसकी वाक्य-रचना और इसका अर्थ-विन्यास (इबारत का मतलब बयान करना) सभी कुछ हिन्दी और उर्दू की बोल चाल के मिलने जुलने प्रयोगों के समान हो.

२—यह भाषा किसी दूसरी भाषा की बेसिक या दूसरी किसी शब्दावली के हिन्दुस्तानी पर्याय भर (एक ही माने वाले लफ्ज) लेकर, या इधर उधर मनमाने शब्दों को बीन बटोर करके ही बनाई हुई न हो, बल्कि एक ऐसी अपने आपमें पूरी भाषा हो जिसमें हिन्दी और उर्दू के बड़े से बड़े कोशों के सारे परिभाषेतर (गैर इस्तलाही) शब्दों के स्थान पर इसके शब्दों से काम निकाला जा सकता हो. पारिभाषिक (इस्तलाही) शब्दों की बात अलग है; पर साथ ही इस भाषा की शब्दावली अधिक से अधिक छोटी भी हो.

(७८)

३—इस में इस प्रकार की शब्दावली बिल्कुल न हो जो हिंदुस्तानी के प्रदेश गाँवों की जनता के लिए अनचीन्ही हो, बल्कि भरसक इसकी सारी शब्दावली उसमें चलती भी हो.

४—अधिक से अधिक सुगम होने के नाते इस शब्दावली से यह आशा तो की जायगी कि यह हिंदुस्तानी प्रदेश की दोनों मुख्य लिखा-[illegible] नागरी और उर्दू—में लिखी जा सके, पर इस प्रकार का कोई [illegible]ना चाहिये कि किसी भी लिखावट की किसी कमी के

ہندستانی کا روپ طے کرنے کے بارے میں کم سے کم نیچے لکھی باتیں ضروری ہوں گی—

۱- یہ بھاشا کوئی نئی گڑھنت نہ ہو—اس کا ویاکرن، اس کی دھنیاں، اس کی شبد رچنا، اس کی واکیہ رچنا اور اس کا ارتھ وِنیاس سبھی کچھ ہندی اور اردو کی بول چال کے ملتے جلتے پریوگوں کے سمان ہو۔

۲- یہ بھاشا کسی دوسری بھاشا کی بیسک یا دوسری کسی شبداولی کے ہندستانی پریائے بھر (ایک ہی معنی والے لفظ) لے کر، یا ادھر ادھر من مانے شبدوں کو بین بٹور کر کے ہی بنائی ہوئی نہ ہو، بلکہ ایک ایسی اپنے آپ میں پوری بھاشا ہو جس میں ہندی اور اردو کے بڑے سے بڑے کوشوں کے سارے پریبھاشیتر (غیر اصطلاحی) شبدوں کے استھان پر اس کے شبدوں سے کام نکالا جا سکتا ہو، پاریبھاشِک (اصطلاحی) شبدوں کی بات الگ ہے؛ پر ساتھ ہی اس بھاشا کی شبداولی ادھک سے ادھک چھوٹی بھی ہو۔

۲۸

۳- اس میں اس پرکار کی شبداولی بالکل نہ ہو جو ہندستانی پردیش کے گاؤں کی جنتا کے لئے اَن چینھی ہو، بلکہ بھرسک اس کی ساری شبداولی اس میں چلتی بھی ہو۔

۴- ادھک سے ادھک سگم ہونے کے ناتے اس شبداولی سے یہ آشا تو کی جائے گی کہ یہ ہندستانی پردیش کی دونوں مکھیہ لکھاوٹوں ناگری اور اردو— میں لکھی جا سکے، پر اس پرکار کا کوئی بندھن نہ ہونا چاہئے کہ کسی بھی لکھاوٹ کی کسی کمی کے

नया हिं इसी प्रकार की किसी दूसरी बनावटी बाधा के कारण, शब्द के चुनाव में कोई अन्तर पड़े.

५—इस भाषा की परीक्षा हिन्दुस्तानी प्रदेश की भिन्न भिन्न बोलियों के क्षेत्रों में बँटे हुए गाँव वालों के बीच हो, और भाषा का वही रूप माना जावे जिसको इस प्रकार के अधिक से अधिक लोग अधिक से अधिक आसानी से समझ और मामूली ढंग पर सीखने के बाद बोल और लिख भी सकें. यदि दो या अधिक प्रयास इस दिशा में हों, तो उनमें से ठीक बे ठीक का निर्णय (फ़ैसला) भी इसी ढंग पर किया जावे, अथवा किसी के किये हुए इस प्रकार के प्रयास में किसी प्रकार के उलट फेर या सुधार का कोई सुझाव हो. तो उसका भी निपटारा इसी भाँति किया जावे.

(२०)

और इस बेसिक हिन्दुस्तानी को अधिक से अधिक काम की बनाने के लिये कम से कम नीचे लिखे हुए ग्रन्थों को तैयार करने की ज़रूरत होगी :

१—हिन्दी-हिन्दुस्तानी कोश—जिसमें हिन्दी के बड़े से बड़े कोश की सारी परिभाषेतर शब्दावली बेसिक हिन्दुस्तानी में बदल करके रक्खी हुई हो.

२—उर्दू-हिन्दुस्तानी कोश—जिसमें उर्दू के बड़े से बड़े कोश की सारी परिभाषेतर शब्दावली बेसिक हिंदुस्तानी में बदल करके रक्खी हुई हो.

३—बेसिक हिन्दुस्तानी कोश—जिसमें बेसिक हिन्दुस्तानी की सारी शब्दावली उसका तत्सम या तद्भव रूप, यदि कोई हो, उसकी व्युत्पत्ति (पैदाइश), उसका अर्थ, हिंदुस्तानी प्रदेश की

کارن' یا اسی پرکار کی کسی دوسری بناوٹی بادھا کے کارن ٹھیک شبد کے چناو میں کوئی انتر پڑے.

۵۔اس بھاشا کی پریکشا ہندستانی پردیش کی بھن بھن بولیوں کے کشیتروں میں بنٹے ہوئے گاؤں والوں کے بیچ ہو، اور بھاشا کا وہی روپ مانا جاوے جس کو اس پرکار کے ادھک سے ادھک لوگ آسانی سے سمجھ اور معمولی ڈھنگ پر سیکھنے کے بعد بول اور لکھ بھی سکیں. یدی دو یا ادھک پریاس اس دشا میں ہوں، تو اس میں سے ٹھیک بے ٹھیک کا نرنے بھی اسی ڈھنگ پر کیا جاوے، اتھوا کسی کے کئے ہوئے اس پرکار کے پریاس میں کسی پرکار کے الٹ پھیر یا سدھار کا کوئی سجھاؤ ہو، تو اس کا بھی نپٹارہ اسی بھانتی کیا جاوے.

(۲۰)

اور اس بیسک ہندستانی کو ادھک سے ادھک کام کی بنانے کے لئے کم سے کم نیچے لکھے ہوئے گرنتھوں کو تیار کرنے کی ضرورت ہوگی:

۱۔ہندی ہندستانی کوش — جس میں ہندی کے بڑے سے بڑے کوش کی ساری پریبھاشیتر (non-technical) شبداولی بیسک ہندستانی میں بدل کرکے رکھی ہوئی ہو.

۲۔اردو ہندستانی کوش — جس میں اردو کے بڑے سے بڑے کوش کی ساری پریبھاشیتر (non-technical) شبداولی بیسک ہندستانی میں بدل کرکے رکھی ہوئی ہو.

۳۔بیسک ہندستانی کوش — جس میں بیسک ہندستانی کی ساری شبداولی اس کا تتسم یا تدبھو روپ، یدی کوئی ہو، اس کی ویوتپتی (پیدائش)، اس کا ارتھ، ہندستانی پردیش کی

बोलियों और हिन्दी और उर्दू के रचनाओं में उसके प्रयोग की मिसालें और हिंदी उर्दू पर्याय भी हों.

४—बेसिक हिन्दुस्तानी व्याकरण—जिसमें उसकी ध्वनियाँ शब्द-रचना, वाक्य-रचना, तथा अर्थ-विन्यास का पूरा और हिन्दी और उर्दू में उनके रूपों के साथ तुलनात्मक विवेचन (मुक़ाबले का विचार) हो.

५—बेसिक हिन्दुस्तानी विवेचन—जिसमें बेसिक हिन्दुस्तानी के समूचे सवाल पर ब्योरे से विचार किया गया हो.

इस बेसिक हिन्दुस्तानी को वास्तव में राष्ट्रभाषा पद (दरजा) पर भली भाँति बैठाने के लिये यह भी करना होगा कि इस का एक कोश दूसरे प्रांतों की भाषाओं और अंग्रेजी में और दूसरे प्रांतों की भाषाएं और अंग्रेजी का एक एक कोश बेसिक हिन्दुस्तानी में बनाया जावे. पर यह काम बाद का है; ऊपर का काम हो जाने के बाद इसे करने की जरूरत होगी.

हिन्दुस्तानी की ओर (तरफ़) देश और समाज की सेवा करने वालों का ध्यान बहुत दिनों से है. आशा है कि वे अब हिन्दुस्तानी से भी अधिक इस 'जनता की हिन्दुस्तानी' पर ध्यान देंगे. और इसके रूप को खोज निकालने और इसका प्रचार करने में मदद करेंगे. आज उनके सामने देश को सुखी, उसको फूलता फलता और पढ़ा लिखा बनाने के लिये अनेक योजनाएं हैं. और आने वाली हैं. 'जनता की हिन्दुस्तानी' की यह योजना उस योजना-परिवार का एक मुख्य अंग होनी चाहिये; इससे उन्हें बल मिलेगा, गति मिलेगी और जीवन मिलेगा.

بولیوں اور ہندی اور اُردو کی رچناؤں میں اُس کے پریوگ کی مثالیں اور ہندی اُردو پریائے بھی ہوں۔

۴۔ بیسک ہندستانی ویاکرن — جس میں اُس کی دھنیاں، شبد رچنا، واکیہ رچنا تتھا ارتھ وِنیاس کا پورا اور ہندی اور اُردو میں ان کے روپوں کے ساتھ تُلناتمک ویویچن (مقابلے کا وچار) ہو۔

۵۔ بیسک ہندستانی ویویچن — جس میں بیسک ہندستانی کے سموچے سوال پر بیورے سے وچار کیا گیا ہو۔

اِس بیسک ہندستانی کو واستو میں راشٹر بھاشا پد (درجہ) پر بھلی بھانتی بٹھانے کے لئے یہ بھی کرنا ہوگا کہ اس کا ایک کوش دوسرے پرانتوں کی بھاشاؤں اور انگریزی میں اور دوسرے پرانتوں کی بھاشائیں اور انگریزی کا ایک ایک کوش بیسک ہندستانی میں بنایا جاوے۔ پر یہ کام بعد کا ہے؛ اوپر کا کام ہو جانے کے بعد اِسے کرنے کی ضرورت ہوگی۔

ہندستانی کی اُور (طرف) دیش اور سماج کی سیوا کرنے والوں کا دھیان بہت دنوں سے ہے۔ آشا ہے کہ وے اب ہندستانی سے بھی زیادہ اِس 'جنتا کی ہندستانی' پر دھیان دیں گے اور اس کے روپ کو کھوج نکالنے اور اس کا پرچار کرنے میں مدد کریں گے۔ آج اِن کے سامنے دیش کو سُکھی، اُس کو پھولتا پھلتا اور پڑھا لکھا بنانے کے لئے انیک یوجنائیں ہیں، اور آنے والی ہیں۔ 'جنتا کی ہندستانی' کی یہ یوجنا اُس یوجنا پریوار کا ایک مکھیہ انگ ہونی چاہئے؛ اِس سے اُنھیں بل ملےگا، گتی ملےگی اور جیون ملےگا۔

यह लेख जनता की हिन्दुस्तानी में ही लिखा गया है. लगभग ५० ही पारिभाषिक शब्दों की मदद ली गई है. नहीं तो ४००० शब्दों के इस लेख में आए हुए सभी शब्द अवधी क्षेत्र की साधारण जनता में चलते और समझे जाते हैं. इतना जरूर मैंने किया है कि कुछ शब्द जो अपने तत्सम रूप में भी अवधी क्षेत्र में समझे जा सकते हैं, और हिन्दी या उर्दू में तत्सम रूप में ही लिखे बोले जाते हैं. उन्हें मैंने तत्सम रूप में ही रक्खा है.

इस लेख में काम में लाए हुए पारिभाषिक शब्द यह हैं: जनता, राष्ट्र, प्रांत, साहित्य, संस्कृति, स्कूल, कालेज, माध्यम, सेकशन, केन्द्र, व्यवस्थापिका सभा, सामंतवाद, शब्दावली, पृष्ठ, नोट, पत्रिका, शैली, प्राइमरी, अनिवार्य, नागरिक, तत्सम, उल्था, वाक्य, प्रौढ़-शिक्षा, प्रदेश, लेखक, प्रकाशक, जनतंत्रीकरण, टेकनिकल, विषय, विवेचन, वैसिक, व्याकरण, ध्वनियाँ, शब्द-रचना, अर्थविन्यास, प्रयोग, पर्याय, परिभाषेतर, पारिभाषिक, कोश, तद्भव, व्युत्पत्ति, रचना, तुलनात्मक, प्रचार, योजना, क्षेत्र.

یہ لیکھ جنتا کی ہندستانی میں ہی لکھا گیا ہے۔ لگ بھگ ۵۰ ہی پاریبھاشک شبدوں کی مدد لی گئی ہے، نہیں تو ۴۰۰۰ شبدوں کے اس لیکھ میں آئے ہوئے سبھی شبد اودھی کشیتر کی سادھارن جنتا میں چلتے اور سمجھے جاتے ہیں۔ اتنا ضرور میں نے کیا ہے کہ کچھ شبد جو اپنے تت سم روپ میں بھی اودھی کشیتر میں سمجھے جا سکتے ہیں، اور ہندی یا اردو میں تت سم روپ میں لکھے بولے جاتے ہیں، انھیں میں نے تت سم روپ میں ہی رکھا ہے۔

اس لیکھ میں کام لائے ہوئے پاریبھاشک شبد یہ ہیں: جنتا، راشٹر، پرانت، ساہتیہ، سنسکرتی، اسکول، کالج، مادھیم، سیکشن، کیندر، ویوستھاپکا سبھا، سامنت واد، شبداولی، پرشٹھ، نوٹ، پترکا، شیلی، پرائمری، انیواریہ، ناگرک، تت سم، التھا، واکیہ، پرودھ شکشا، پردیش، لیکھک، پرکاشک، جن تنتری کرن، ٹیکنکل، وشے، وویچن، بیسک، دیاکرن، دھنیاں، شبد رچنا، ارتھ ونیاس، پریوگ، پریائے، پریبھاشیتر، پاریبھاشک، کوش، تدبھو، ویوتپتی، رچناتمک، تلناتمک، پرچار، یوجنا، کشیتر۔

तीन गीत

(रवीन्द्रनाथ ठाकुर)

१

वापसी

अगर तुम्हारी ऐसी मरजी हो तो मैं एक बार फिर इस दुनिया के समन्दर के किनारे जहाँ सुख और दुख की लहरों का खेल हमेशा चल रहा है, वापस आ जाऊँ. फिर पानी पर किश्ती चलाऊँ और मट्टी में खेलूं और माया रूपी हिरन की तरह हिरनी के पीछे अपने आँसुओं में तैरूँ.

फिर अँधेरी रात में काँटे वाले रास्ते पर चलूं, जैसा भी हो, घायल होता होता बचूँ या मरूँ.

क्योंकि मैं जानता हूँ कि तब भी फिर तुम्हीं छुपे भेष में आकर मेरे साथ हँसते हँसते खेलोगे और मैं इस दुनिया को नए तौर से प्यार करूँगा.

(गीताई से)

२

शुभ प्रभात

आज किसके घर का दरवाज़ा खुल गया है. किसके लिये आज सुबह सूरज का निकलना उसकी मुराद बर लाया है. किसकी ताजपोशी के लिये. सोने के घड़े में रोशनी भर कर, सुबह आशी-र्वाद लिये अँधेरे को पार करके चली आई है? सारे जंगल में

تین گیت

(رابندر ناتھ ٹھاکر)

۱

واپسی

اگر تمھاری ایسی مرضی ہو تو میں ایک بار پھر اس دُنیا کے سمندر کے کنارے جہاں سُکھ اور دُکھ کی لہروں کا کھیل ہمیشہ چل رہا ہے، واپس آجاؤں۔ پھر پانی پر کشتی چلاؤں اور مٹی میں کھیلوں اور مایا روپی ہرن کی طرح ہرنی کے پیچھے اپنے آنسوؤں میں تیروں۔

پھر اندھیری رات میں کانٹے والے راستے پر چلوں جیسا بھی ہو گھایل ہوتا ہوتا بچوں یا مروں

کیونکہ میں جانتا ہوں تب بھی تم ہی چھپے بھیس میں آکر میرے ساتھ ہنستے ہنستے کھیلوگے اور میں اس دُنیا کو نئے طور سے پیار کروںگا۔

(گیتانی سے)

۲

شُبھ پربھات

آج کس کے گھر کا دروازہ کھل گیا ہے۔ کس کے لئے آج صبح سورج کا نکلنا اُس کی مراد بر لایا ہے۔ کس کی تاج پوشی کے لئے سونے کے گھڑے میں روشنی بھر کر صبح آشیرباد لئے اندھیرے کو پار کرکے چلی آئی ہے؟ سارے جنگل میں

फूल खिल उठते हैं और नए पत्ते हवा में नाचते हैं ? किसके दिल के अन्दर उनकी माला गूंथी गई है ? बहुत सदियों के सौगात को किसने आज क़बूल किया है ? किसको ज़िन्दगी में सुबह ने आज अँधेरा बिलकुल दूर कर दिया है ?

(गीताई से)

३

साथी

मेरे रास्ते के साथी मैं तुम्हें बार बार नमस्कार करता हूँ. इस मुसाफ़िर का नमस्कार तुम क़बूल करो.

ज़िन्दगी में—जुदाई में—नुकसान में और आख़िरी दिन के मालिक—इस टूटे हुए घर का नमस्कार तुम क़बूल करो.

ए नई सुबह की रोशनी. हमेशा से चली आई ज़िन्दगी की रफ़्तार—

इस नई उम्मीद का नमस्कार तुम क़बूल करो.

ज़िन्दगी के रथ के चलाने वाले, मैं हमेशा से रास्ते का मुसाफ़िर हूँ.

इस रास्ते पर चलने वाले का नमस्कार तुम क़बूल करो.

(गीताई से)

बंगाल से तरजुमा—गु. म.

پھول کھل اُٹھتے ہیں اور نئے پتے ہوا میں ناچتے ہیں؟ کس کے دل کے اندر اُن کی مالا گونتھی گئی ہے؟ بہت صدیوں کے سوغات کو کس نے آج قبول کیا ہے؟ کس کی زندگی میں صبح نے آج اندھیرا بالکل دور کر دیا ہے؟

(گیتائی سے)

۳

ساتھی

میرے راستے کے ساتھی۔ میں تمھیں بار بار نمسکار کرتا ہوں
اِس مسافر کا نمسکار تم قبول کرو۔
زندگی میں — جُدائی میں — نقصان میں اور آخری دن کے مالک — اس ٹوٹے ہوئے گھر کا نمسکار تم قبول کرو۔
اے نئی صبح کی روشنی، ہمیشہ سے چلی آئی زندگی کی رفتار —
اس نئی امید کا نمسکار تم قبول کرو۔
زندگی کے رتھ چلانے والے، میں ہمیشہ سے راستہ کا مسافر ہوں۔
اِس راستے پر چلنے والے کا نمسکار تم قبول کرو۔
(گیتائی سے)

بنگلہ سے ترجمہ۔ گ۔ م۔

मौलाना मुहम्मद क़ासिम

(श्री रतन लाल बंसल, फ़िरोज़ाबाद)

सन् १८५७ की आज़ादी की लड़ाई नाकामयाब हो जाने के बाद वलीउल्लाई संगठन के चौथे नेता हाजी इमदादुल्ला साहब मक्का के लिये रवाना हो गए. मक्का जाने से पहले उन्होंने हिन्दुस्तानी मुसलमानों में मुल्क की आज़ादी के लिये लड़ने और संगठित होने के असूलों का प्रचार करने का काम मौलाना मुहम्मद क़ासिम साहब को सौंपा. उस वक़्त मौलाना मुहम्मद क़ासिम साहब के सामने ऐसी दिक़्क़तें थीं, जिनका पूरा पूरा ख़याल भी इस वक़्त नहीं किया जा सकता.

उनकी सबसे पहली और सबसे बड़ी दिक़्क़त तो यह थी कि सन् १८५७ के इन्क़लाब में हिस्सा लेने के जुर्म में सरकारी जासूस हाथों में फांसी का फन्दा लिये जगह जगह उनकी मौजूदगी सूंघते फिरते थे. मौलाना को फांसी का डर तो न था. क्योंकि अगर डर होता तो वह हाजी इमदादुल्ला साहब के साथ ही मक्का जा सकते थे. लेकिन वह ज़िन्दा रहना चाहते थे जिससे कि इस तहरीक को जो पिछले क़रीब डेढ़ सौ बरस से चलती आ रही थी और जिसको शाह वलीउल्लाह साहब से लेकर हाजी इमदादुल्ला साहब के ज़माने तक बड़े बड़े देश भक्तों ने अपने ख़ून से सींचा था, किसी तरह आगे भी ज़िन्दा रख सकें. वह यह भी जानते थे कि हाजी इमदादुल्ला साहब का मक्का चला जाना ही ठीक है. क्योंकि ज़्यादा मशहूर होने की वजह से उनके जल्द पकड़े जाने

مولانا محمد قاسمؒ

(شری رتن لال بنسل، فیروزآباد)

۱۸۵۷ء کی آزادی کی لڑائی ناکامیاب ہو جانے کے بعد ولی اللہی سنگٹھن کے چوتھے نیتا حاجی امداد اللہ صاحب مکہ کے لئے روانہ ہوگئے۔ مکہ جانے سے پہلے انہوں نے ہندوستانی مسلمانوں میں ملک کی آزادی کے لئے لڑنے اور سنگٹھت ہونے کے اصولوں کا پرچار کرنے کا کام مولانا محمد قاسم صاحب کو سونپا۔ اس وقت مولانا محمد قاسم صاحب کے سامنے ایسی دقتیں تھیں جن کا پورا پورا خیال بھی اس وقت نہیں کیا جا سکتا۔

ان کی سب سے پہلی اور سب سے بڑی دقت تو یہ تھی کہ ۱۸۵۷ء کے انقلاب میں حصہ لینے کے جرم میں سرکاری جاسوس ہاتھوں میں پھانسی کا پھندا لئے جگہ جگہ ان کی موجودگی سونگھتے پھرتے تھے۔ مولانا کو پھانسی کا ڈر تو نہ تھا کیونکہ اگر ڈر ہوتا تو وہ حاجی امداد اللہ صاحب کے ساتھ ہی مکہ جا سکتے تھے۔ لیکن وہ زندہ رہنا چاہتے تھے، جس سے اس تحریک کو، جو پچھلے قریب ڈیڑھ سو برس سے چلتی آ رہی تھی اور جس کو شاہ ولی اللہ صاحب سے لے کر حاجی امداد اللہ صاحب کے زمانے تک بڑے بڑے دیش بھگتوں نے اپنے خون سے سینچا تھا، کسی طرح آگے بھی زندہ رکھ سکیں۔ وہ یہ بھی جانتے تھے کہ حاجی امداد اللہ صاحب کا مکہ چلا جانا ہی ٹھیک ہے۔ کیونکہ زیادہ مشہور ہونے کی وجہ سے ان کے جلد پکڑے جانے

का ख़तरा है और बाक़ी के साथियों में मैं ही ऐसा हूँ जो इस तहरीक को, जो इस वक़्त क़रीब क़रीब बिल्कुल ही ख़त्म हो चुकी है, फिर से ज़िन्दा करने के लिये कुछ काम कर सकता हूँ. यह वलीउल्लाई संगठन और उसके नेताओं की ईमानदारी का एक बड़ा सबूत है कि ऐसे वक़्त में भी उनके निज़ाम में किसी तरह की फूट नहीं पड़ी. तहरीक के इमाम ने जिससे यह कहा कि वह उनके साथ मक्का चले, वह चला गया और जिससे यह कहा कि वह हिन्दुस्तान में ही रहे. वह हिन्दुस्तान में ही रहा. मौलाना मुहम्मद क़ासिम साहब के सामने एक दूसरी दिक़्क़त यह थी कि सन् १८५७ की नाकामयाबी और उसके बाद के अंगरेज़ों के ज़ुल्मों ने मुसलमानों में बड़ी पस्तहिम्मती पैदा कर दी थी. एक आम ख़्याल यह पैदा हो गया था कि अंगरेज़ों की ताक़त इतनी बड़ी है कि उनसे लड़ने का ख़्याल करना अपनी व क़ौम की बर्बादी को न्यौता देना है. इसी से यह भी ख़्याल पैदा हुआ कि जब अंगरेज़ों से इस वक़्त लड़ना नहीं है और उनकी हुकूमत में ही रहना है तो क्यों न उनसे ज़्यादा से ज़्यादा रियायतें हासिल की जांय और उनके दिल में यह बात बैठा दी जाय कि मुसलमान क़ौम अब अंगरेज़ों की उतनी ही वफ़ादार है जितनी हिन्दुस्तान की दूसरी क़ौमें. इस लिये मुसलमान नौजवानों को भी तालीम और नौकरियों में दूसरी क़ौमों की तरह हिस्सा मिलना चाहिये.

ऐसा ख़्याल रखने वालों में कुछ ऐसी बड़ी बड़ी हस्तियां भी थीं जो अपने ऊँचे चाल चलन और क़ाबलियत की वजह से मुसलमानों पर बहुत असर रखती थीं. इस ख़्याल के लोगों

کا خطرہ ہے اور باقی کے ساتھیوں میں میں ہی ایسا ہوں جو اس تحریک کو، جو اس وقت قریب قریب بالکل ہی ختم ہو چکی ہے، پھر سے زندہ کرنے کے لئے کچھ کام کر سکتا ہوں۔ یہ ولی اللہی سنگٹھن اور اس کے نیتاؤں کی ایمانداری کا ایک بڑا ثبوت ہے کہ ایسے وقت میں بھی ان کے نظام میں کسی طرح کی پھوٹ نہیں پڑی۔ تحریک کے امام نے جس سے یہ کہا کہ وہ ان کے ساتھ مکہ چلے، وہ چلا گیا اور جس سے یہ کہا کہ وہ ہندستان میں ہی رہے وہ ہندستان میں ہی رہا۔ مولانا محمد قاسم صاحب کے سامنے ایک دوسری دقت یہ تھی کہ ۱۸۵۷ء کی ناکامیابی اور اس کے بعد کے انگریزوں کے ظلموں نے مسلمانوں میں بڑی پست ہمتی پیدا کر دی تھی۔ ایک عام خیال یہ پیدا ہو گیا تھا کہ انگریزوں کی طاقت اتنی بڑی ہے کہ ان سے لڑنے کا خیال کرنا اپنی و قوم کی بربادی کو نیوتا دینا ہے۔ اسی سے یہ بھی خیال پیدا ہوا کہ جب انگریزوں سے اس وقت لڑنا نہیں ہے اور ان کی حکومت میں ہی رہنا ہے تو کیوں نہ ان سے زیادہ سے زیادہ رعایتیں حاصل کی جائیں اور ان کے دل میں یہ بات بٹھا دی جائے کہ مسلمان قوم اب انگریزوں کی اتنی ہی وفادار ہے جتنی ہندستان کی دوسری قومیں۔ اس لئے مسلمان نوجوانوں کو بھی تعلیم اور نوکریوں میں دوسری قوموں کی طرح حصہ ملنا چاہئے۔

ایسا خیال رکھنے والوں میں کچھ ایسی بڑی بڑی ہستیاں بھی تھیں جو اپنے اونچے چال چلن اور قابلیت کی وجہ سے مسلمانوں پر بہت اثر رکھتی تھیں۔ اس خیال کے لوگوں

में सबसे बड़ी हस्ती सर सय्यद अहमद खाँ साहब की थी. जो मौलाना ममलूक़ अली के शागिर्द होने की वजह से मौलाना क़ासिम साहब के गुरु भाई होते थे. सर सय्यद अहमद साहब सन् १८५७ के इन्क़लाब से पहिले ही अंगरेज़ों की नौकरी में आ चुके थे और अंगरेज़ों के रहन सहन व उनके काम करने के ढंग का उन पर गहरा असर पड़ा था. सन ५७ के इनक़लाब के बाद अंगरेज़ों ने दिल्ली में जो क़त्ले आम किया था, उसमें सर सय्यद अहमद साहब के एक सगे चचा मारे गए थे और उनकी बूढ़ी माँ को एक नौकर के घर में छिप कर जान बचानी पड़ी थी. जैसा कि सभी जानते हैं, सय्यद अहमद साहब ने ग़दर के वक़्त अपनी जान ख़तरे में डाल कर भी कई अंगरेज़ों की जान बचाई थी. इस लिये जब अंगरेज़ी फ़ौजों के ज़रिये अपने ख़ानदान की इस बर्बादी का हाल उन्होंने सुना, तो इसका असर उन पर पड़ना लाज़मी था. उस ज़माने में उनकी लिखी मशहूर किताब 'असबाबे बग़ावत' में हम इस असर को आसानी से महसूस कर सकते हैं. लेकिन जल्द ही वह दूसरे ख़्यालों में बह चले. उस वक़्त सरकारी नौकरियों से मुसलमानों को अलग रखने की अंगरेज़ों की पालिसी ने उनके दिल पर गहरा असर डाला और उन्होंने महसूस किया कि इस तरह हिन्दुस्तान के मुसलमानों को गहरा धक्का लगेगा और वह तालीम व दूसरी चीज़ों में हिन्दुस्तान की दूसरी क़ौमों से बुरी तरह पिछड़ जावेंगे. इससे बचने का उन्हें सिर्फ़ एक ही रास्ता सूझा कि मुसलमानों के दिलों

میں سب سے بڑی ہستی سرسید احمد خاں صاحب کی تھی جو مولانا مملوک علی کے شاگرد ہونے کی وجہ سے مولانا قاسم صاحب کے گرو بھائی ہوتے تھے. سرسید احمد صاحب ۱۸۵۷ء کے انقلاب سے پہلے ہی انگریزوں کی نوکری میں آ چکے تھے اور انگریزوں کی رہن سہن و اُن کے کام کرنے کے ڈھنگ کا اُن پر گہرا اثر پڑا تھا. ۵۷ء کے انقلاب کے بعد انگریزوں نے دلی میں جو قتل عام کیا تھا، اُس میں سرسید احمد صاحب کے ایک سگے چچا مارے گئے تھے. اور ان کی بوڑھی ماں کو ایک نوکر کے گھر میں چھپ کر جان بچانی پڑی تھی. جیسا کہ سبھی جانتے ہیں سید احمد صاحب نے غدر کے وقت اپنی جان خطرے میں ڈال کر بھی کئی انگریزوں کی جان بچائی تھی. اس لئے جب انگریزی فوجوں کے ذریعہ اپنے خاندان کی اس بربادی کا حال انھوں نے سُنا تو اس کا اثر اُن پر پڑنا لازمی تھا. اُس زمانے میں اُن کی لکھی مشہور کتاب "اسباب بغاوت" میں ہم اس اثر کو آسانی سے محسوس کر سکتے ہیں. لیکن جلد ہی وہ دوسرے خیالوں میں بہہ چلے. اس وقت سرکاری نوکریوں سے مسلمانوں کو الگ رکھنے کی انگریزوں کی پالیسی نے اُن کے دل پر گہرا اثر ڈالا اور انھوں نے محسوس کیا کہ اس طرح ہندستان کے مسلمانوں کو گہرا دھکا لگے گا، اور وہ تعلیم و دوسری چیزوں میں ہندستان کی دوسری قوموں سے بُری طرح بچھڑ جائیں گے. اس سے بچنے کا انھیں صرف ایک ہی راستہ سوجھا کہ مسلمانوں کے دلوں

से अंगरेज़ों और अंगरेज़ी तहज़ीब के लिये जो नफ़रत है वह निकाल दी जाय और अंगरेज़ों के दिल से भी मुसलमानों के बाग़ी होने का ख्याल मिटा दिया जाय.

सर सय्यद अहमद साहब अपने अक़ीदे के सच्चे, मेहनती और क़ौम की सच्ची भलाई चाहने वाले थे. उनके दिल में अपनी क़ौम के लिये उतना ही दर्द और उसकी तरक़्क़ी के लिये क़ुर्बानी करने का वैसा ही जज़बा था, जैसा मौलाना क़ासिम साहब के दिल में था. दोनों एक ही उस्ताद के शागिर्द थे. फिर भी दोनों का रास्ता न सिर्फ़ एक दूसरे से अलग बल्कि एक दूसरे के ख़िलाफ़ था. एक को अंगरेज़ों की हर एक चीज़ में नई रोशनी और ख़ूबी ही ख़ूबी नज़र आती थी. तो दूसरे को अंगरेज़ों की छाया से भी नफ़रत थी. एक अंगरेज़ों की वफ़ादारी में ही क़ौम और मुल्क की तरक़्क़ी देखता था, तो दूसरे के लिये अंगरेज़ों की मुख़ालफ़त न करना अपने ईमान को धोका देना था. यह इस बात क जीती जागती मिसाल है कि कभी कभी एक ही मक़सद होते हुए भी दो निहायत सच्चे और निहायत क़ाबिल इनसानों में भी कितना गहरा फ़रक़ और विरोध हो सकता है.

इस तरह मुहम्मद क़ासिम साहब के सामने दूसरी बड़ी मुश्किल यह थी कि सन ५७ के इन्क़लाब की नाकामयाबी की वजह से पस्तहिम्मत मुसलमानों में अंगरेज़ों के लिये वफ़ादारी रखने और उनकी तहज़ीब को अपनाने का प्रचार जारी हो चुका था. इस प्रचार में अंगरेज़ हर तरह से भारी मदद दे रहे थे. दूसरी तरफ़ एक के बाद दूसरी साज़िशों के मुक़दमे चला कर अंगरेज़ सरकार

سے انگریزوں اور انگریزی تہذیب کے لئے جو نفرت ہے وہ نکال دی جائے اور انگریزوں کے دل سے بھی مسلمانوں کے باغی ہونے کا خیال مٹا دیا جائے۔

سر سید احمد صاحب اپنے عقیدے کے سچے، محنتی اور قوم کی سچی بھلائی چاہنے والے تھے۔ اِن کے دل میں اپنی قوم کے لئے اتنا ہی درد اور اُس کی ترقی کے لئے قربانی کرنے کا ویسا ہی جذبہ تھا جیسا مولانا قاسم صاحب کے دل میں تھا۔ دونوں ایک ہی اُستاد کے شاگرد تھے۔ پھر بھی دونوں کا راستہ نہ صرف ایک دوسرے سے الگ بلکہ ایک دوسرے کے خلاف تھا۔ ایک کو انگریزوں کی ہر ایک چیز میں نئی روشنی اور خوبی ہی خوبی نظر آتی تھی تو دوسرے کو انگریزوں کی چھایا سے بھی نفرت تھی۔ ایک انگریزوں کی وفاداری میں ہی قوم اور ملک کی ترقی دیکھتا تھا تو دوسرے کے لئے انگریزوں کی مخالفت نہ کرنا اپنے ایمان کو دھوکا دینا تھا۔ یہ اس بات کی جیتی جاگتی مثال ہے کہ کبھی کبھی ایک ہی مقصد ہوتے ہوئے بھی دو نہایت سچے اور نہایت قابل انسانوں میں بھی کتنا گہرا فرق اور ورودھ ہوسکتا ہے۔

اس طرح مولانا محمد قاسم صاحب کے سامنے دوسری بڑی مشکل یہ تھی کہ ۵۷ء کے انقلاب کی ناکامیابی کی وجہ سے پست ہمت مسلمانوں میں انگریزوں کے لئے وفاداری رکھنے اور اُن کی تہذیب کو اپنانے کا پرچار جاری ہوچکا تھا۔ اس پرچار میں انگریز ہر طرح سے بھاری مدد دے رہے تھے۔ دوسری طرف ایک کے بعد دوسری سازشوں کے مقدمے چلا کر انگریز سرکار

मुसलमान मौलवियों और आलिमों को लम्बी लम्बी सज़ाएं देकर काले पानी भेज रही थी. ऐसी हालत में मौलाना मुहम्मद कासिम साहब के सामने यह सवाल पेश था कि इन चीज़ों का मुक़ाबला किस तरह किया जावे और मुसलमानों के वलीउल्लाई जमात के झंडे के नीचे लाकर उनमें आज़ादी के ख्यालात कैसे पैदा किये जाँय ?

कुछ दिनों बाद जब हेजाज़ से हाजी इमदादुल्ला साहब ने किसी मामूली सी जगह पर एक मज़हबी मदरसा क़ायम करने की स्कीम मौलाना क़ासिम साहब को भेजी. तो उनको अंधेरे में थोड़ी रोशनी नज़र आई और सन १८५७ के इनक़लाब के सिर्फ़ १० बरस बाद यानी सन १८६७ में अरबी तारीख़ १५ मुहर्रम १२८३ हिजरी को सहारनपुर से २२ मील दूर देवबन्द जैसे एक निहायत मामूली क़स्बे में उन्होंने 'दार-उल-उलूम' (इल्म का घर) के नाम से एक मज़हबी मदरसा क़ायम कर दिया. इस मदरसे को क़ायम करने में मौलाना क़ासिम साहब के अलावा उनके पुराने साथी हाजी रशीद अहमद साहब गंगोही का. जो ग़दर में हिस्सा लेने के जुर्म में फाँसी पाते पाते बचे थे. ख़ास हाथ था. उनके अलावा मौलाना महताब अली साहब और और उनके भाई मौलाना ज़ुल्फ़िक़ार अली साहब ने भी इस काम में पूरी मदद की थी.

मौलाना क़ासिम साहब ने जब यह मदरसा क़ायम किया. तब न उनके पास पैसा था और न कोई पैसे वाला मददगार ही था. आम लोगों का हाल यह था कि वह उनसे बातें करते भी डरते थे. फिर मदद कौन करता ? मदरसे के सब से पहिले तालिबइल्म मौलाना महमूद उल हसन थे. जो आगे चल कर मौलाना क़ासिम

مسلمان مولویوں اور عالموں کو لمبی لمبی سزائیں دے کر کالے پانی بھیج رہی تھی۔ ایسی حالت میں مولانا محمد قاسم صاحب کے سامنے یہ سوال پیش تھا کہ ان چیزوں کا مقابلہ کس طرح کیا جاوے اور مسلمانوں کو ولی اللہی جماعت کے جھنڈے کے نیچے لاکر ان میں آزادی کے خیالات کیسے پیدا کئے جائیں۔

کچھ دنوں کے بعد جب حجاز سے حاجی امداد اللہ صاحب نے کسی معمولی سی جگہ پر ایک مذہبی مدرسہ قائم کرنے کی اسکیم مولانا قاسم صاحب کو بھیجی تو اُن کو اس اندھیرے میں تھوڑی روشنی نظر آئی اور ۱۸۵۷ء کے انقلاب کے صرف دس برس بعد یعنی ۱۸۶۷ء میں عربی تاریخ ۱۵۔ محرم ۱۲۸۳ ہجری کو سہارنپور سے بائیس میل دور دیوبند جیسے ایک نہایت معمولی قصبہ میں انھوں نے دارالعلوم (علم کا گھر) کے نام سے ایک مذہبی مدرسہ قائم کر دیا۔ اس مدرسہ کو قائم کرنے میں مولانا قاسم صاحب کے علاوہ ان کے پُرانے ساتھی حاجی رشید احمد صاحب گنگوہی کا جو غدر میں حصّہ لینے کے جرم میں پھانسی پاتے پاتے بچے تھے، خاص ہاتھ تھا، ان کے علاوہ مولانا مہتاب علی صاحب اور اُن کے بھائی مولانا ذوالفقار علی صاحب نے بھی اِس کام میں پوری مدد کی تھی۔

مولانا قاسم صاحب نے جب یہ مدرسہ قائم کیا تب نہ اِن کے پاس پیسہ تھا اور نہ کوئی پیسے والا مددگار ہی تھا۔ عام لوگوں کا خیال یہ تھا کہ وہ ان سے باتیں کرتے بھی ڈرتے تھے پھر مدد کون کرتا؟ مدرسہ کے سب سے پہلے طالب علم مولانا محمود الحسن تھے جو آگے چل کر مولانا قاسم

साहब के सच्चे जा नशीन, और वलीउल्लाई जमात के छटे इमाम बने.

शुरू में दरख़्तों के साये में पढ़ाई शुरू हुई. उस वक़्त कौन यह जानता था कि यह जो दो चार लड़के एक बूढ़े से मौलवी के आगे बैठे हुए कलामे पाक का हिल कि लहर पढ़ रहे हैं और यह मदरसा जिसमें धूप और बारिश से बचाव के लिये एक छत तक नहीं है. कुछ बरसों के बाद ही मुल्क की आज़ादी के सिपाहियों की एक ख़ास छावनी और न सिर्फ़ हिन्दुस्तान बल्कि दुनिया भर के इस्लामी मदरसों में एक ख़ास मदरसा बन जावेगा.

इसके कुछ दिन बाद ही सर सय्यद अहमद साहब ने अलीगढ़ में मुसलिम नौजवानों को अंगरेज़ी तालीम देने के लिये एक कालेज खोलना तय किया. उसमें पढ़ाने के लिये विलायत से अंगरेज़ प्रोफ़ेसर बुलवाए गए. सर सय्यद अहमद साहब की ख़्वाहिश थी कि कालेज की इस तहरीक में मौलाना क़ासिम साहब भी शरीक हो जांय मगर क़ासिम साहब ने इसमें शरीक होने से इन्कार कर दिया. इस बारे में सर सय्यद अहमद साहब और उनके साथियों व मौलाना क़ासिम साहब में जो लम्बी ख़तकिताबत चली. वह 'तस्फ़ीयतुल अक़ायद' के नाम से एक किताब की शकल में निकल चुकी है. उस किताब से यह मालूम होता है कि मौलाना क़ासिम साहब उस ज़माने में भी, जब कि किसी मुसलमान मौलवी के लिये अंगरेज़ों की अमलदारी की नुक़्ताचीनी करना भी काले पानी की सज़ा को न्योता देना था, कितनी निडरता से अपने विचार और अक़ीदे को ज़ाहिर कर सकते थे.

इस ज़माने में मौलाना क़ासिम साहब और उनके साथियों

صاحب کے سچے جانشین، اور ولی اللٰہی جماعت کے چھٹے امام بنے.

شروع میں درختوں کے سایہ میں پڑھائی شروع ہوئی. اس وقت کون یہ جانتا تھا کہ یہ جو دو چار لڑکے ایک بوڑھے سے مولوی کے آگے بیٹھے ہوئے کلامِ پاک ہل ہل کر پڑھ رہے ہیں اور یہ مدرسہ جس میں دھوپ اور بارش سے بچاؤ کے لئے ایک چھت تک نہیں ہے کچھ برسوں کے بعد ہی ملک کی آزادی کے سپاہیوں کی ایک خاص چھاؤنی اور نہ صرف ہندستان بلکہ دُنیا بھر کے اسلامی مدرسوں میں ایک خاص مدرسہ بن جائے گا.

اس کے کچھ دن بعد ہی سر سیّد احمد صاحب نے علی گڑھ میں مسلم نوجوانوں کو انگریزی تعلیم دینے کے لئے ایک کالج کھولنا طے کیا. اس میں پڑھانے کے لئے ولایت سے انگریز پروفیسر بُلائے گئے. سر سیّد احمد صاحب کی خواہش تھی کہ کالج کی اس تحریک میں مولانا قاسم صاحب بھی شریک ہوجائیں مگر قاسم صاحب نے اس میں شریک ہونے سے انکار کردیا. اس بارے میں سر سید احمد صاحب اور ان کے ساتھیوں و مولانا قاسم صاحب میں جو لمبی خط کتابت چلی وہ 'تصفیت العقائد' کے نام سے ایک کتاب کی شکل میں نکل چکی ہے. اس کتاب سے یہ معلوم ہوتا ہے کہ مولانا قاسم صاحب اُس زمانے میں بھی جب کسی مسلمان مولوی کے لئے انگریزوں کی عملداری کی نکتہ چینی کرنا بھی کالے پانی کی سزا کو نیوتا دینا تھا، کتنی نڈرتا سے اپنے وچار اور عقیدے کو ظاہر کرسکتے تھے.

اس زمانہ میں مولانا قاسم صاحب اور ان کے ساتھیوں

के ख़िलाफ़ काफ़ी ग़लतफ़हमियाँ फैलाई गईं. अंगरेज़ी सल्तनत की तरफ़ से इन लोगों को एक अर्से से वहाबी मशहूर तो कर ही दिया गया था. साथ ही साथ इनको रजत पसन्द (प्रतिक्रिया वादी). फ़क़ीर के फ़क़ीर, मुल्क व क़ौम के दुशमन और अंगरेज़ों की सल्तनत के बाग़ी भी क़रार दिया गया. सच बात यह थी कि सिवा आख़िरी इलज़ाम के बाक़ी सब बिलकुल बे बुनियाद थे. और आख़िरी इलज़ाम पर तो उनको ख़ुद भी एतराज़ नहीं था.

मौलाना क़ासिम साहब इस प्रचार से ज़रा भी नहीं घबड़ाए. वह जानते थे कि जब कोई क़ौम इस तरह कुचल दी जाती है तब उसके ख़यालों में बड़ी उलझन पैदा हो जाती है और बहुत बार वह अपनी भलाई चाहने वालों की ही दुशमन हो जाती है. उन्होंने इन बातों की परवाह न करके चुपचाप अपना काम जारी रक्खा. इसका नतीजा यह हुआ कि देवबन्द का यह मदरसा जो सिर्फ़ तीन चार तालिबइल्मों से शुरू हुआ था. दिनों दिन तरक़्क़ी करता गया और तमाम हिन्दुस्तान व हिन्दुस्तान से बाहर के इसलामी मुल्कों से भारी तादाद में तालिबइल्म वहाँ आने लगे. जब इस तरह मदरसे की तरक़्क़ी होने लगी और उसका असर मुसलमानों पर बढ़ता गया. तो कुछ ऐसे लोग भी. जिनको अभी तक मदरसे के पास आने में भी दहशत होती थी. मदरसे के काम में हाथ बटाने लगे. उनकी तरफ़ से यह सुझाव भी पेश किया जाने लगा कि अब मदरसे के लिये सरकारी मदद भी हासिल करने की कोशिश की जाय और इस तरह मदरसे की माली हालत मज़बूत बना दी जाय.

मौलाना क़ासिम साहब ने ऐसे लोगों की हमदर्दी और उनके

کے خلاف کافی غلط فہمیاں پھیلائی گئیں. انگریزی سلطنت کی طرف سے اِن لوگوں کو ایک عرصہ سے "وہابی" تو مشہور کر ہی دیا گیا تھا، ساتھ ہی ساتھ ان کو رجعت پسند (پرتی کریا وادی)، لکیر کے فقیر اور ملک و قوم کا دشمن اور انگریزوں کی سلطنت کا باغی بھی قرار دیا گیا. سچ بات یہ تھی کہ آخری الزام کے سوا باقی سب بالکل بے بنیاد تھے. اور آخری الزام پر تو ان کو خود بھی اعتراض نہیں تھا.

مولانا قاسم صاحب اس پرچار سے ذرا بھی نہیں گھبرائے وہ جانتے تھے کہ جب کوئی قوم اس طرح کچل دی جاتی ہے تب اس کے خیالوں میں بڑی اُلجھن پیدا ہوجاتی ہے. اور بہت بار وہ اپنی بھلائی چاہنے والوں ہی کی دشمن ہوجاتی ہے. انھوں نے اِن باتوں کی پرواہ نہ کرکے چپ چاپ اپنا کام جاری رکھا اس کا نتیجہ یہ ہوا کہ دیوبند کا یہ مدرسہ جو صرف تین چار طالب علموں سے شروع ہوا تھا دنوں دن ترقی کرتا گیا اور تمام ہندستان اور ہندستان کے باہر کے اسلامی ملکوں سے بھاری تعداد میں طالب علم وہاں آنے لگے. جب اس طرح مدرسہ کی ترقی ہونے لگی اور اس کا اثر مسلمانوں پر بڑھتا گیا تو کچھ ایسے لوگ بھی جن کو ابھی تک مدرسہ کے پاس آنے میں بھی دہشت ہوتی تھی مدرسہ کے کام میں ہاتھ بٹانے لگے. ان کی طرف سے یہ سوجھاؤ بھی پیش کیا جانے لگا کہ اب مدرسہ کے لئے سرکاری مدد بھی حاصل کرنے کی کوشش کی جائے اور اس طرح مدرسہ کی مالی حالت مضبوط بنادی جائے.

مولانا قاسم صاحب نے ایسے لوگوں کی ہمدردی اور اُن کے

सुझावों के खतरों को झट पहिचान लिया. चूंकि मदरसा किसी के ज़ाती अख़्तियार में नहीं था. इस लिये वह मदरसे के काम में किसी को हिस्सा लेने से रोक तो नहीं सकते थे. लेकिन वह यह भी बर्दाश्त नहीं कर सकते थे कि इस तरह मदरसा सिर्फ लड़कों को किताबी तालीम देने वाला एक मदरसा बन कर रह जाय और अपने सच्चे असूलों को भूल जाय. इस खतरे से मदरसे को बचाने के लिये उन्होंने कुछ क़ायदे बनाए, जो उनके क्रान्तिकारी विचारों को बिलकुल साफ़ जाहिर करते हैं. यह क़ायदे रिसाला अलक़ासिम १३४७ हि० के दारुलउलूम नम्बर में शाया हुए थे और उसी से उनका कुछ हिस्सा यहाँ नक़ल किया जाता है—

(१) आज़ादी ज़मीर (विचारों की आज़ादी) के साथ मौक़े पर कलमतुल हक़ (सच्चाई) का एलान हो. कोई सुनहरी तमअ़ (लालच) और मुरब्बियाना दबाव (बड़प्पन का दबाव) या सर परस्ताना मराअ़त (रक्षाकरने वालों की तरफ़ से दी हुई रियायतें) उसमें हायल न हों (रुकावट न डालें.

(२) इसका ताल्लुक़ आम मुसलमानों के साथ ज़ायद से ज़ायद हो, ताकि यह ताल्लुक़ खुद ब खुद मुसलमानों में एक नज़्म (संगठन) पैदा करदे जो उनको इस्लाम और मुसलमानों की शान पर क़ायम रखने में मुईन (सहायक) हो.

इन दोनों क़ायदों से यह साफ़ मतलब निकलता है कि मौलाना क़ासिम साहब के नज़दीक इस मदरसे की सबसे बड़ी अहमियत सिर्फ यह थी कि इसके ज़रिये तमाम मुसलमानों में उसी तरह से

سوجھاؤں کے خطروں کو جھٹ پہچان لیا. چونکہ مدرسہ کسی کے ذاتی اختیار میں نہیں تھا، اس لئے وہ مدرسہ کے کام میں کسی کو حصّہ لینے سے روک تو نہیں سکتے تھے۔ لیکن وہ یہ بھی برداشت نہیں کرسکتے تھے کہ اس طرح یہ مدرسہ صرف لڑکوں کی کتابی تعلیم دینے والا ایک مدرسہ بن کر رہ جائے اور اپنے سچّے اصولوں کو بھول جائے، اس خطرے سے مدرسہ کو بچانے کے لئے انھوں نے کچھ قاعدے بنائے. جو ان کے کرانت کاری وچاروں کو بالکل صاف ظاہر کرتے ہیں. یہ قاعدے "رسالہ القاسم" ۱۳۴۷ہجری کے دارالعلوم نمبر میں شائع ہوئے تھے. اور اسی سے ان کا کچھ حصّہ یہاں نقل کیا جاتا ہے—

۱۔ آزادی ضمیر (وچاروں کی آزادی) کے ساتھ، موقع پر کلمۃ الحق (سچائی) کا اعلان ہو. کوئی سنہری طمعوں (لالچ) اور مربیانہ دباؤ (بڑپن کا دباؤ) یا سرپرستانہ مراعات (رکشا کرنے والوں کی طرف سے دی ہوئی رعایتیں) اس میں حائل نہ ہوں (رکاوٹ نہ ڈالیں).

۲۔ اس کا تعلق عام مسلمانوں کے ساتھ زائد سے زائد ہو تاکہ یہ تعلق خود بخود مسلمانوں میں ایک نظم (سنگٹھن) پیدا کردے جو ان کو اسلام اور مسلمانوں کی شان پر قائم رکھنے میں معین (سہایک) ہو.

ان دونوں قاعدوں سے یہ صاف مطلب نکلتا ہے کہ مولانا قاسم صاحب کے نزدیک اس مدرسہ کی سب سے بڑی اہمیت صرف یہ تھی کہ اس کے ذریعہ تمام مسلمانوں میں اسی طرح سے

एक संगठन पैदा हो सके. जिस तरह शाह वलीउल्लाह ने अपने दिल्ली के मदरसे के ज़रिये पैदा किया था. वह नहीं चाहते थे कि कुछ बड़े बड़े रईस और नवाब अपने पैसे के बल से इस मदरसे पर छा जाँय और उसके असली उसूलों को कुचल दें. उनके इस ख़याल का दूसरा सबूत उस वसीअत से मिलता है जो उन्होंने मरते वक़्त की थी. अपनी इस वसीअत में उन्होंने मदरसे की बाबत लिखा था—

"इस मदरसे में में जब तक आमदनी की सबील (ज़रिया) यक़ीनी नहीं है, तब तक यह मदरसा इन्शाअल्ला (अगर ख़ुदा ने चाहा) इसी तरह चलता रहेगा और अगर कोई आमदनी यक़ीनी ऐसी हासिल हो गई, जैसे जागीर या कारख़ाना, तिजारत या किसी अमीर का वादा, तो फिर यों नज़र आता है कि यह ख़ौफ़ और रिजा जो सरमाए रुजूइलिल्लाह है (परमात्मा के नाम पर निछावर है) वह हाथ से जाता रहेगा और कारकुनों (काम करने वालों) में निज़ा (झगड़ा) पैदा हो जायेगा. अलक़िस्सा (सारांश यह है कि) आमदनी और तामीर वग़ैरा में एक नौअ (तरह) की बे सरो सामानी मलहूज़ रहे (ग़रीबी का ध्यान रक्खा जाए).

२—सरकार की शिरकत (शामिल होना) व उमरा (अमीरों) की शिरकत भी ज़्यादा मुज़िर (नुक़सान पहुँचाने वाली) मालूम होती है.

३—ता मक़दूर (जहाँ तक हो सके) ऐसे लोगों का चन्दा ज़्यादा मूजिब बरकत (बरकत देने वाला) मालूम होता है, जिनको अपने चन्दे से उम्मेद नामवरी न हो (नाम की इच्छा न हो) बिल जुमला (आख़िरकार) हुस्नेनियत अहले चन्दा (चन्दा देने वालों की अच्छी नियत) ज़्यादा पायदारी (मज़बूती) का सामान मालूम होता है."

ایک سنگھٹن پیدا ہوسکے جس طرح شاہ ولی اللہ نے اپنے دلی کے مدرسے کے ذریعہ پیدا کیا تھا۔ وہ نہیں چاہتے تھے کہ کچھ بڑے بڑے رئیس اور نواب اپنے پیسے کے بل پر اس مدرسہ پر چھا جائیں اور اس کے اصلی اصولوں کو کچل دیں۔ ان کے اس خیال کا دوسرا ثبوت اس وصیت سے ملتا ہے جو انھوں نے مرتے وقت کی تھی اپنی اس وصیت میں انھوں نے مدرسہ کے بابت لکھا تھا۔

"اس مدرسہ میں جب تک آمدنی کی سبیل (ذریعہ) یقینی نہیں ہے تب تک یہ مدرسہ انشاءاللہ (اگر خدا نے چاہا) اسی طرح چلتا رہے گا اور اگر کوئی آمدنی یقینی ایسی حاصل ہوگئی جیسے جاگیر یا کارخانہ، تجارت یا کسی امیر کا وعدہ تو پھر یوں نظر آتا ہے کہ یہ خوف و رجا جو سرمایہ رجوع اللہ ہے (پرماتما کے نام پر نچھاور ہے) وہ ہاتھ سے جاتا رہے گا اور کارکنوں (کام کرنے والوں) میں نزاع (جھگڑا) پیدا ہوجائے گا؛ القصہ (سارانس یہ ہے کہ) آمدنی اور تعمیر وغیرہ میں ایک نوع (طرح) کی بے سروسامانی ملحوظ رہے (غریبی کا دھیان رکھا جائے)۔

۲۔ سرکار کی شرکت (شامل ہونا) و امراء (امیروں) کی شرکت بھی زیادہ مضر (نقصان پہنچانے والی) معلوم ہوتی ہے۔

۳۔ تا مقدور (جہاں تک ہوسکے) ایسے لوگوں کا چندہ زیادہ موجب برکت (برکت دینے والا) معلوم ہوتا ہے جن کو اپنے چندے سے امید ناموری (نام کی اچھا) نہ ہو بالجملہ (آخرکار) حسن نیت اہل چندہ (چندہ دینے والوں کی اچھی نیت) زیادہ پائداری (مضبوطی) کا سامان معلوم ہوتا ہے۔

यह 'वसीअत एक ऐसा क्रान्तिकारी दस्तावेज़ है, जिससे हिन्दुस्तान की अगली पीढ़ियाँ हमेशा एक रोशनी हासिल करती रहेंगी. इसके एक एक लफ़्ज़ से यह ज़ाहिर होता है कि मौलाना क़ासिम साहब कितने बड़े इनक़लाबी और मुल्क की आज़ादी के कितने सच्चे दीवाने थे. उन्हें सिर्फ़ चाह थी तो यह कि किसी तरह उनकी क़ौम फिर से संगठित होकर आज़ादी के मैदान में आ खड़ी हो. सन् १८७८ तक यानी अपनी ज़िन्दगी की आख़िरी घड़ियों तक वह बराबर इसी काम में लगे रहे.

मौलाना क़ासिम साहब नानौता ज़िला सहारनपुर के रहने वाले थे. उनके वालिद का नाम मौलाना असद अली था. उन्होंने हाजी इमदादुल्ला साहब और मुफ़्ती सदरुद्दीन साहब से तालीम हासिल की थी. मुफ़्ती सदरुद्दीन अपने ज़माने के एक बहुत बड़े आलिम और वलीउल्लाई जमात के दूसरे इमाम शाह अब्दुल अज़ीज़ साहब के शागिर्दों में से थे. मुफ़्ती साहब के एक दूसरे मशहूर शागिर्द मौलाना अबुल कलाम आज़ाद के पिता शेख़ मुहम्मद खैरुद्दीन साहब थे. इनके अलावा मौलाना क़ासिम साहब ने कुछ दिनों तक मौलाना ममलूक अली साहब से भी पढ़ा था.

वलीउल्लाई जमात के इमामों में मौलाना क़ासिम साहब इसलिये एक ख़ास अहमियत रखते हैं कि एक तरह से इस मरकज़ की बुनियाद उनको फिर से जमानी पड़ी और वह भी उस हालत में जब की ज़ुल्म का तूफ़ान जारी था. वह एक अजीब हिम्मत के आदमी थे जो बिलकुल नाउम्मेदियों के अँधेरे में भी रोशनी की कोई न कोई किरन पैदा कर लेते थे. सन् ५७ के बाद मुसलमानों

یہ وصیت ایک ایسا کرانت کاری دستاویز ہے جس سے ہندستان کی اگلی پیڑھیاں ہمیشہ ایک روشنی حاصل کرتی رہیں گی۔ اس کے ایک ایک لفظ سے یہ ظاہر ہوتا ہے کہ مولانا قاسم صاحب کتنے بڑے انقلابی اور ملک کی آزادی کے کتنے سچے دیوانے تھے۔ انھیں صرف چاہ تھی تو یہ کہ کسی طرح ان کی قوم پھر سے سنگھٹت ہوکر آزادی کے میدان میں آ کھڑی ہو۔ ١٨٧٩ء تک یعنی اپنی زندگی کی آخری گھڑیوں تک وہ برابر اسی کام میں لگے رہے۔

مولانا قاسم صاحب نانوتہ ضلع سہارن پور کے رہنے والے تھے ان کے والد کا نام مولانا اسد علی تھا۔ انھوں نے حاجی امداداللہ صاحب اور مفتی صدرالدین صاحب سے تعلیم حاصل کی تھی۔ مفتی صدرالدین اپنے زمانے کے ایک بہت بڑے عالم اور ولی اللہی (۳)
جماعت کے دوسرے امام شاہ عبدالعزیز صاحب کے شاگردوں میں سے تھے۔ مفتی صاحب کے ایک دوسرے مشہور شاگرد مولانا ابوالکلام آزاد کے والد شیخ محمد خیرالدین صاحب تھے۔ ان کے علاوہ مولانا قاسم صاحب نے کچھ دنوں تک مولانا مملوک علی صاحب سے بھی پڑھا تھا۔

ولی اللہی جماعت کے اماموں میں مولانا قاسم صاحب اس لئے ایک خاص اہمیت رکھتے ہیں کہ ایک طرح سے اس سنگٹھن کی بنیاد ان کو پھر سے جمانی پڑی اور وہ بھی اس حالت میں جب کہ ظلم کا طوفان جاری تھا۔ وہ ایک عجیب ہمت کے آدمی تھے جو بالکل ناامیدیوں کے اندھیرے میں بھی روشنی کی کوئی نہ کوئی کرن پیدا کر لیتے تھے۔ ۵۷ء کے بعد مسلمانوں

में अंगरेज़ी अमलदारी के ख़िलाफ़ एक संगठन बनाए रखना उनका ही काम था. वह सबसे ऊपर मुल्क की आज़ादी को जगह देते थे और इसके लिये सब कुछ कुर्बान कर सकते थे.

सन १८८० में उनकी मौत के वक़्त वलीउल्लाई जमात के संगठन की नींव फिर से काफ़ी जम चुकी थी. इसके लिये अब एक ऐसे आदमी की ज़रूरत थी जो उनके बाद इस काम को सम्हाल ले. मौलाना क़ासिम साहब की निगाह तो इस सिलसिले में दारुल उलूम के सबसे पहिले विद्यार्थी मौलाना महमूदुउल हसन पर थी. जो अपनी तालीम पूरी करके मदरसा देवबन्द में ही मुदर्रिस हो गए थे. लेकिन अभी उनकी उम्र थोड़ी ही थी, इसलिये कुछ दिनों के लिये यह बोझ हाजी रशीद अहमद साहब गंगोही ने सम्हाला. रशीद अहमद साहब ऐसे बेधड़क आदमी थे कि जब मौलाना सादुद्दीन साहब काश्मीरी और मौलाना अमानुल्ला साहब ने उनसे हिन्दुस्तान के 'दारुल हरब' होने की बाबत पूछा, तो उन्होंने यह फ़तवा दे दिया कि हिन्दुस्तान 'दारुल हरब' है. इसका साफ़ मतलब यह था कि अंगरेज़ों से लड़ाई जारी है और हर एक मुसलमान का यह मज़हबी फ़र्ज़ है कि उस लड़ाई में पूरा हिस्सा ले.

हाजी रशीद अहमद साहब सन १९०५ तक जिन्दा रहे. उनके बाद मौलाना महमूदुउल हसन साहब ने वलीउल्लाई जमात की इमामत का बोझ सँभाल.

میں انگریزی عملداری کے خلاف ایک سنگٹھن بنائے رکھنا ان کا ہی کام تھا. وہ سب سے اوپر ملک کی آزادی کو جگہ دیتے تھے اور اس کے لئے سب کچھ قربان کر سکتے تھے.

۱۸۸۰ء ان کی موت کے وقت ولی اللہی جماعت کے سنگٹھن کی نیو پھر سے کافی جم چکی تھی. اس کے لئے اب ایک ایسے آدمی کی ضرورت تھی جو ان کے بعد اس کام کو سنبھال لے. مولانا قاسم صاحب کی نگاہ تو اس سلسلہ میں دارالعلوم کے سب سے پہلے ودیارتھی مولانا محمود الحسن پر تھی جو اپنی تعلیم پوری کر کے مدرسہ دیوبند میں ہی ایک مدرس ہو گئے تھے لیکن ابھی ان کی عمر تھوڑی ہی تھی اس لئے کچھ دنوں کے لئے یہ بوجھ حاجی رشید احمد صاحب گنگوہی نے سنبھالا. رشید احمد صاحب ایسے بے دھڑک آدمی تھے کہ جب مولانا سعدالدین صاحب کاشمیری اور مولانا امان اللہ صاحب نے ان سے ہندستان کے 'دارالحرب' ہونے کی بابت پوچھا تو انھوں نے یہ فتویٰ دے دیا کہ ہندستان 'دارالحرب' ہے. اس کا صاف مطلب یہ تھا کہ انگریزوں سے لڑائی جاری ہے اور ہر ایک مسلمان کا یہ مذہبی فرض ہے کہ اس لڑائی میں پورا حصہ لے.

حاجی رشید احمد صاحب ۱۹۰۵ء تک زندہ رہے. ان کے بعد مولانا محمود الحسن صاحب نے ولی اللہی جماعت کی امامت کا بوجھ سنبھالا.

आख़िर क्यों

(श्री-विष्णु-प्रभाकर, बी० ए०)

शंकर हमेशा कुछ न कुछ सोचा करता है. उसके दोस्त उसे सपने देखने वाला कहते हैं. पर उसे परवाह नहीं. वह सोचता है, इस दुनिया की बात सोचता है, उस दुनिया की, तारों की. और कुछ नहीं तो घर में भागते फिरते नेवले की बात ही ले बैठता है. पर इधर उसे सोचने के लिये नया मसाला मिल गया है. शहर में अभी अभी दंगा हुआ. कुछ हिन्दू मुसलमान घायल हुए, कुछ मर गए. आबादी में कुछ ज्यादा फरक नहीं पड़ा पर जहां देखो फ़ौज. सबसे बड़ी मुसीबत यह कि सरेशाम से घर में बन्द होकर बैठो. शंकर बेताब हो उठा—आख़िर यह करफ्यू क्यों लगा है ? लोग लड़ते क्यों हैं ? पेट में छुरा क्यों भोंक देते हैं ? आख़िर क्यों ·······?

बस उसकी ट्रेन चल पड़ी. हिन्दू मुसलमान, ईश्वर के मानने वाले और न मानने वाले, धर्म की जरूरत, और इन्सानी जिन्दगी के बुनियादी असूल इन सभी मसलों पर उसने विचार कर डाला. करते करते उसे लगा कि उसने उलझनें सुलझा ली हैं. तब उसने सोचा यह दुनिया कितनी पागल है ? मामूली सी बात को लेकर इतना तूफ़ान खड़ा कर दिया है. यह बच्चों की सीधी सी बात उसके दिमाग में नहीं आती. आख़िर क्यों वह इतनी

३६

آخر کیوں

(شری وشنو پربھاکر، بی۔ اے)

شنکر ہمیشہ کچھ نہ کچھ سوچا کرتا ہے۔ اُس کے دوست اُسے سپنے دیکھنے والا کہتے ہیں پر اُسے پرواہ نہیں۔ وہ سوچتا ہے، اس دُنیا کی بات سوچتا ہے، اُس دُنیا کی، تاروں کی، اور کچھ نہیں تو گھر میں بھاگتے پھرتے نیولے کی بات ہی لے بیٹھتا ہے۔ پر اِدھر اُسے سوچنے کے لئے نیا مسالا مل گیا ہے۔ شہر میں ابھی ابھی دنگا ہوا، کچھ ہندو مسلمان گھایل ہوئے، کچھ مر گئے۔ آبادی میں کچھ زیادہ فرق نہیں پڑا پر جہاں دیکھو فوج۔ سب سے بڑی مصیبت یہ کہ سرِشام سے گھر میں بند ہوکر بیٹھو۔ شنکر بیتاب ہو اُٹھا— آخر یہ کرفیو کیوں لگا ہے؟ لوگ لڑتے کیوں ہیں؟ پیٹ میں چھُرا کیوں بھونک دیتے ہیں؟ آخر کیوں......؟ (۳٦)

بس اُس کی ٹرین چل پڑی۔ ہندو مسلمان، ایشور کے ماننے والے اور نہ ماننے والے، دھرم کی ضرورت، اور انسانی زندگی کے بنیادی اُصول اِن سبھی مسئلوں پر اُس نے وچار کر ڈالا۔ کرتے کرتے اُسے لگا کہ اُس نے اُلجھنیں سلجھا لی ہیں۔ تب اُس نے سوچا یہ دُنیا کتنی پاگل ہے؟ معمولی سی بات کو لے کر اِتنا طوفان کھڑا کر دیا ہے۔ یہ بچوں کی سیدھی سی بات اُس کے دماغ میں نہیں آتی۔ آخر کیوں وہ اتنی

रहे हैं पर यकीन मानिये आप मुझसे ज्यादा नहीं सोच सकते. वैसे तो इन्सान की आदत है कि वह "मैं हूँ" के साथ साथ "मैं जानता हूँ" इस सचाई की हिफाजत जी जान से करता है पर आज मैं इससे भी आगे बढ़ गया हूँ. मैंने एक और सचाई की खोज की है. उसी को लेकर मैं किसी आदमी से विचार करना चाहता था. घर में पार्वती है पर वह तो "मैं हूँ" से आगे बढ़ती ही नहीं. बताइये आप क्या मानते हैं ? कहते कहते वह उसकी बांह पकड़े घसीटता हुआ सा पलंग के पास ले आया और फिर दोनों हाथों से उसे बिठा दिया. रोशनी में उसका चेहरा चमक उठा. देखा वह कुछ लम्बा है, रंग चिट्टा और नक्शा आदमी का है. हड्डियां चौड़ी और मजबूत, ओंठ कुछ मोटे, आंखें कुछ डरावनी; एक अजीब शक्ल डर हैरानी और खौफ से भरी हुई. शंकर बोला—हाँ तो आप क्या मानते हैं ?

वह चुप.

—आप नहीं बोलते ? क्या गूंगे हैं ?

वह कांपा, उसकी आवाज फूटी—ज……ई……ई……

शंकर मुस्कराया—आप गूंगे नहीं हैं, बड़ा अच्छा हुआ. तो कहिये आप क्या कहते हैं. और कह कर मेज की तरफ घूमा. देखा—दूध रखा हुआ है. बोला—देखिये मैं भी कैसा बेवकूफ हूँ. आप आए और आपसे बहस करने को तैयार हो गया, आपकी बात तक नहीं पूछी. पार्वती ठीक कहती है—मैं कुछ नहीं सोचता. कैसी मजेदार बात है ? हमेशा सोचता रहता हूँ और पार्वती आराम से कह देती है—आप बिल्कुल नहीं सोचते. उसका मतलब है मैं

رہے ہیں پر یقین مانئے آپ مجھ سے زیادہ نہیں سوچ سکتے. ویسے تو انسان کی عادت ہے کہ وہ "میں ہوں" کے ساتھ ساتھ "میں جانتا ہوں" اس سچائی کی حفاظت جی جان سے کرتا ہے پر آج میں اس سے بھی آگے بڑھ گیا ہوں۔ میں نے ایک اور سچائی کی کھوج کی ہے۔ اسی کو لے کر میں کسی آدمی سے وچار کرنا چاہتا تھا. گھر میں پاروتی ہے پر وہ تو "میں ہوں" سے آگے بڑھتی ہی نہیں دیتا. بتائیے آپ کیا مانتے ہیں؟ کہتے کہتے وہ اس کی بانہہ پکڑے گھسیٹتا ہوا سا پلنگ کے پاس لے آیا اور پھر دونوں ہاتھوں سے اسے بٹھا دیا۔ روشنی میں اس کا چہرہ چمک اٹھا. دیکھا وہ کچھ لمبا ہے، رنگ چٹا اور نقشہ آدمی کا ہے. ہڈیاں چوڑی اور مضبوط، اونٹھ کچھ موٹے، آنکھیں کچھ ڈراؤنی؛ ایک عجیب شکل ڈر، حیرانی اور خوف سے بھری ہوئی. شنکر بولا—ہاں تو آپ کیا مانتے ہیں؟

وہ چپ.

—آپ نہیں بولتے؟ کیا گونگے ہیں؟

وہ کانپا اس کی آواز پھوٹی—جی…… ای…… ای……

شنکر مسکرایا—آپ گونگے نہیں ہیں بڑا اچھا ہوا. تو کہئے آپ کیا کہتے ہیں. اور کہہ کر میز کی طرف گھوما، دیکھا—دودھ رکھا ہوا ہے. بولا—دیکھئے میں بھی کیسا بیوقوف ہوں. آپ آئے اور آپ سے بحث کرنے کو تیار ہو گیا، آپ کی بات تک نہیں پوچھی. پاروتی ٹھیک کہتی ہے—میں کچھ نہیں سوچتا. کیسی مزیدار بات ہے؟ ہمیشہ سوچتا رہتا ہوں اور پاروتی آرام سے کہہ دیتی ہے—آپ بالکل نہیں سوچتے. اس کا مطلب ہے میں

अपने पर समय की बात नहीं सोचता. शायद वह ठीक कहती है. आप पहली बार आए हैं. शास्त्र में आपको मेहमान कहा है. और लिखा है मेहमान को सबसे पहिले अर्घ देना चाहिये. खैर आप दूध पीजिये और कुछ खाएं तो पार्वती को पुकारूँ.

—जी.......

—पुकारूँ. शायद खाना रखा हो.

—जी नहीं

—आप तकल्लुफ करते हैं. आप आए हैं. आप मेरे साथ दूध पियेंगे और हां! जाड़े की रुत है. मेरे पास बादाम रखे हैं.

और वह उठा. आलमारी खोली. दो प्लेट, दो प्याले और एक शीशी निकाल लाया. शीशी में मुन्ना के लिये बादाम और काजू रखे हुए थे, उन्हीं को प्लेट में डाला, प्याले में दूध भरा. फिर छोटी मेज उठा कर पलंग के पास रखी. सब सामान उस पर सजाया और बोला—अब आइये! खायेंगे और बातें करेंगे.

लेकिन इसी बीच में जब शंकर की पीठ उसकी तरफ थी अजनबी फुर्ती से उठा और खिड़की के पास आया, झुका और तेज़ी से हाथ में छिपी हुई चीज बाहर फेंकना चाहा. तभी शंकर मुड़ा. अजनबी कांपा, वह चीज़ खन्न से वहीं खिड़की के फ़र्श पर गिर पड़ी. शंकर चौंका—क्या गिरा? इधर उधर देखा फिर काम करने लगा. अजनबी के काटो तो खून नहीं. मुँह सूख गया. थर थर कांपने लगा पर शंकर ने उसे नहीं देखा. काम पूरा कर चुका तो बोला—अब आइये, खायेंगे और बातें करेंगे. तभी उसकी नज़र खिड़की पर पड़ी. कुछ चीज़ चमक रही थी. वह

پیسے کی بات نہیں سوچتا. شاید وہ ٹھیک کہتی ہو آپ پہلی بار آئے ہیں. شاستر میں آپ کو مہمان کہا ہے. اور لکھا ہے کہ مہمان کو سب سے پہلے ارگھ دینا چاہیئے. خیر آپ دودھ پیجئے اور کچھ کھائیں تو پاروتی کو پکاروں.

— جی.......

— پکاروں. شاید کھانا رکھا ہو.

— جی نہیں.

— آپ تکلف کرتے ہیں. آپ آئے ہیں. آپ میرے ساتھ دودھ پئیں گے اور ہاں! جاڑے کی رُت ہے میرے پاس بادام رکھے ہیں.

اور وہ اُٹھا. الماری کھولی. دو پلیٹ دو پیالے اور ایک شیشی نکال لایا. شیشی میں منّا کے لئے بادام اور کاجو رکھے ہوئے تھے انھیں کو پلیٹ میں ڈالا. پیالے میں دودھ بھرا. پھر چھوٹی میز اُٹھا کر پلنگ کے پاس رکھی. سب سامان اس پر سجایا اور بولا — اب آئیے! کھائیں گے اور باتیں کریں گے.

لیکن اسی بیچ میں جب شنکر کی پیٹھ اس کی طرف تھی، اجنبی پھرتی سے اُٹھا اور کھڑکی کے پاس آیا. جھکا اور تیزی سے ہاتھ میں چھپی ہوئی ایک چیز باہر پھینکنا چاہا. تبھی شنکر مُڑا. اجنبی کانپا، وہ چیز کھن سے وہیں کھڑکی کے فرش پر گر پڑی. شنکر چونکا — کیا گرا؟ اِدھر اُدھر دیکھا پھر کام کرنے لگا. اجنبی کو کاٹو تو خون نہیں. منہ سوکھ گیا. تھر تھر کانپنے لگا پر شنکر نے اسے نہیں دیکھا. کام پورا کر چکا تو بولا — اب آئیے کھائیں گے اور باتیں کریں گے. تبھی اس کی نظر کھڑکی پر پڑی. کچھ چیز چمک رہی تھی..

उठा. देखा—छुरा था, चमकता हुआ फौलादी छुरा. वह मुस्कराया. उसने छुरा उठा लिया और बोला—आज कैसा सुन्दर दिन है. बाइबिल में लिखा है, उसने कहा—रोशनी हो और रोशनी हो गई. मैंने भी चाहा—बातें करने के लिये आदमी चाहिये, तुम आगए. बातें छुरे पर करनी थीं छुरा आ गया. सचमुच मैं खुशक़िस्मत हूँ. वह फिर अपनी जगह आ बैठा. छुरा उसने प्याली के पास मेज़ पर रख दिया और कहा—आइये! हम अपना काम शुरू करें. बात यह है मुझे छुरे के बारे में ही बातें करनी थीं यानी इसके इस्तेमाल के बारे में. जैसा कि आजकल होता है, आप जा रहे हैं, पीछे से आकर कोई भी आपके पेट में या कमर में या गरदन में ग़रज़ कि कहीं भी छुरा भोंक देता है. आखिर क्यों·······? अजनबी ऐसे जैसे पत्थर की मूरत हो, न हिले न डुले, पलकें अडिग, दिल धकधक, दिमाग़ झनझन. जवाब के लिये जैसे ही शंकर ने आंखें उठाईं तो अचरज से बोला—अरे! आप बैठे हैं. वाह! खाते क्यों नहीं. पहिले खाइये फिर जवाब दीजिये. सोच कर जवाब दीजिये. छुरा आपके सामने रखा है. इस पर ध्यान जमाइये. यह क्यों बनाया गया? इसकी क्या ज़रूरत है? कुछ लोग कहते हैं इसकी बिल्कुल ज़रूरत नहीं. लेकिन ख़ैर इस वक़्त मान कर चलते हैं कि यह बना है तो इसकी ज़रूरत है. पर ज़रूरत क्या है? इसको कहां काम में लाना चाहिये इस बात पर हमें ज़रा तफ़सील से सोचना है. इसी सवाल पर सोचते सोचते मैं "मैं हूँ" "मैं जानता हूँ" से आगे बढ़ गया. यानी 'दूसरे हैं' 'दूसरे जानते हैं' और मैं और दूसरे

اُٹھا، دیکھا — چھُرا تھا، چمکتا ہوا فولادی چھُرا. وہ مُسکرایا. اُس نے چھُرا اُٹھا لیا اور بولا — آج کیسا سُندر دن ہے. بائبل میں لکھا ہے اُس نے کہا — روشنی ہو اور روشنی ہوگئی. میں نے بھی چاہا — باتیں کرنے کے لئے آدمی چاہیئے، تم آگئے. باتیں چھُرے پر کرنی تھیں چھُرا آگیا. سچ مچ میں خوش قسمت ہوں. وہ پھر اپنی جگہ آ بیٹھا. چھُرا اُس نے پیالی کے پاس میز پر رکھ دیا اور کہا — آیئے! ہم اپنا کام شروع کریں. بات یہ ہے مجھے چھُرے کے بارے میں ہی باتیں کرنی تھیں یعنی اِس کے استعمال کے بارے میں. جیسا کہ آج کل ہوتا ہے، آپ جا رہے ہیں، پیچھے سے آکر کوئی بھی آپ کے پیٹ میں یا کمر میں یا گردن میں غرض کہ کہیں بھی چھُرا بھونک دیتا ہے. آخر کیوں.......؟ اجنبی ایسے جیسے پتھر کی مورت ہو، نہ ہلے نہ ڈُلے، پلکیں اڈگ، دل دھک دھک، دماغ جھن جھن. جواب کے لئے جیسے ہی شنکر نے آنکھیں اُٹھائیں تو اچرج سے بولا — ارے! آپ بیٹھے ہیں. واہ! کھاتے کیوں نہیں. پہلے کھایئے پھر جواب دیجئے. سوچ کر جواب دیجئے. چھُرا آپ کے سامنے رکھا ہے. اِس پر دھیان جمایئے. یہ کیوں بنایا گیا؟ اِس کی کیا ضرورت ہے؟ کچھ لوگ کہتے ہیں اِس کی بالکل ضرورت نہیں. لیکن خیر اِس وقت مان کر چلتے ہیں کہ یہ بنا ہے تو اِس کی ضرورت ہے. پر ضرورت کیا ہے؟ اِس کو کہاں کام میں لانا چاہیئے اِس بات پر ہمیں ذرا تفصیل سے سوچنا ہے. اِسی سوال پر سوچتے سوچتے میں "میں ہوں"، "میں جانتا ہوں" سے آگے بڑھ گیا. یعنی "دوسرے ہیں"، "دوسرے جانتے ہیں" اور میں اور دوسر

एक हैं. दोनों के मसले एक हैं, दोनों के हल एक हैं, फिर यह गड़बड़ घोटाला क्यों है? समझ में नहीं आता आखिर क्यों.........?

इतना बोल चुकने के बाद शाबाशी के लिये जब शंकर ने अजनबी की तरफ़ देखा तो वह मुँह में काजू डाले. ओंठों से प्याला लगाए कांपता हुआ उसीकी तरफ़ एक टक देख रहा था. शंकर के देखते ही उसने प्याला मेज़ पर रख दिया और काजू को जल्दी जल्दी चबा डाला. तब तक शंकर ने तीन चार काजू खाए और आधा प्याला दूध पी लिया फिर बोला—अच्छा! एक सीधा सा सवाल पूछता हूँ.

—जी.

—तुम आदमी हो यह तो मैं देख ही रहा हूँ. ग़रीब लगते हो. मुश्किल से पेट भर पाते होगे. बीवी बच्चे सभी हैं. होते ही हैं. उनका पेट न भरता होगा तो कलेजा फटता होगा. देखो न मैं भी दफ़्तर में बाबू हूँ. खाने पीने लायक़ कमाता हूँ पर सच मानो कभी कभी वह भी नहीं पुरता. हां, ज़रा मयार में फ़रक़ ज़रूर है. तुम मुरदों का खाना खाते हो, मैं भूकों का खाता हूँ पर आदमियों का न तुम खाते हो न मैं.

अजनबी की आवाज़ पहली बार ठीक ठीक फूटी, बोला—सच कहता हूँ, बाबूजी आधी जून भी पेट नहीं भर पाता.

—जानता हूँ. तुम्हारी सूरत कह रही है. बच्चे कितने हैं?

—चार.

—लीजिये आप हैं, बीवी है, चार बच्चे और.........

—जी अम्मा हैं.

—और करते क्या हो?

ایک ہیں، دونوں کے مسئلے ایک ہیں، دونوں کے حل ایک ہیں، پھر یہ گڑبڑ گھوٹالا کیوں ہے؟ سمجھ میں نہیں آتا آخر کیوں.......؟

اتنا بول چکنے کے بعد شاباشی کے لئے جب شنکر نے اجنبی کی طرف دیکھا تو وہ منہ میں کاجو ڈالے ہونٹوں سے پیالہ لگائے کانپتا ہوا اُسی کی طرف ایک ٹک دیکھ رہا تھا۔ شنکر کے دیکھتے ہی اُس نے پیالہ میز پر رکھ دیا اور کاجو کو جلدی جلدی چبا ڈالا۔ تب تک شنکر نے تین چار کاجو کھائے اور آدھا پیالہ دودھ پی لیا پھر بولا۔ اچھا! ایک سیدھا سا سوال پوچھتا ہوں۔

—جی۔

—تم آدمی ہو یہ تو میں دیکھ ہی رہا ہوں۔ غریب لگتے ہو مشکل سے پیٹ بھر پاتے ہوگے۔ بی بی بچے سبھی ہیں، ہوتے ہی ہیں۔ اُن کا پیٹ نہ بھرتا ہوگا تو کلیجہ پھٹتا ہوگا۔ دیکھو نہ میں بھی دفتر میں بابو ہوں۔ کھانے پینے لائق کماتا ہوں پر سچ مانو کبھی کبھی وہ بھی نہیں پُرتا۔ ہاں! ذرا معیار میں فرق ضرور ہے۔ تم مُردوں کا کھانا کھاتے ہو، میں بھوکوں کا کھاتا ہوں پر آدمیوں کا نہ تم کھاتے ہو نہ میں۔

اجنبی کی آواز پہلی بار ٹھیک ٹھیک پھوٹی، بولا— سچ کہتا ہوں، بابو جی آدھی جون بھی پیٹ نہیں بھر پاتا۔

—جانتا ہوں۔ تمھاری صورت کہہ رہی ہے۔ بچے کتنے ہیں؟

—چار۔

—لیجئے آپ ہیں، بی بی ہے، چار بچے اور.........

—جی اماں ہیں۔

—اور کرتے کیا ہو؟

—एक दूकान पर नौकर हूँ चालीस रुपये मिलते है.

—अब सोचो. सात आदमी और चालिस रुपये. फिर इतना बड़ा शहर जिसमें एक से एक बढ़ कर आलीशान इमारतें. सैकड़ो बैंक, मिलें, फैक्ट्रियां और चमचमाते बज़ार हैं. दूर क्यों जाते हो तुम्हारा मालिक कितना कमाता है.

—जी उनकी किराने की बड़ी दुकान है. थोक फरोश हैं. खुदा झूट न बुलाए पांच छै हज़ार माहवार तो कमाते ही हैं.

—तो कभी सोचा ऐसा क्यों है ? क्यों थोड़े से लोग दूसरों की मेहनत पर ऐश करते है ? क्यों इन्होंने इतना धन जमा किया है ? क्यों पसीना बहा कर भी तुम भूके मरते हो ? आखिर क्यों ? कभी सोचा ?

अजनबी कुछ जवाब नहीं दे सका. अब वह कुछ बेतकल्लुफ़ से बादाम खाने की कोशिश कर रहा था. शंकर ने फिर कहा—उनके बच्चे खाकर खराब करने में फख़ समझते हैं. खुदा उनको खराब करने को भी देता है. उनकी औरतें ऐश इशरत की पुतलियां बन कर ग़रीब—दिलो में आग लगाती फिरती हैं; खुदा उनके लिये आग लगाने के सामान मोहय्या करता है पर तुम्हारे बच्चे मेहनत करके जब पेट भरने को रोटी मांगते हैं तो उन्हें नहीं मिलती, तुम्हारी मां, तुम्हारी बहन, तुम्हारी बीवी अपनी इज्जत रखने के लिये कपड़ा मांगती है वह भी खुदा उन्हें नहीं दे सकता कभी सोचा मेरे दोस्त, ऐसा क्यों है ?

अजनबी का हाथ रुक गया था. उसका दिल भरा आ रहा था. उसकी खूंखार आँखों में रोशनी चमकने लगी थी और छुरा [illegible] गया था. अन्दर से पार्वती दो बार

— ایک دُکان پر نوکر ہوں چالیس روپئے ملتے ہیں.

— اب سوچو. سات آدمی اور چالیس روپئے. پھر اتنا بڑا شہر جس میں ایک سے ایک بڑھ کر عالی شان عمارتیں، سینکڑوں بینک، ملیں، فیکٹریاں اور چمچماتے بزار ہیں. دور کیوں جاتے ہو تمھارا مالک کتنا کماتا ہے.

— جی اُن کی کرانے کی بڑی دُکان ہے. تھوک فروش ہیں. خدا جھوٹ نہ بلائے پانچ چھ ہزار ماہوار تو کماتے ہی ہیں.

— تو کبھی سوچا ایسا کیوں ہے؟ کیوں تھوڑے سے لوگ دوسروں کی محنت پر عیش کرتے ہیں؟ کیوں انھوں نے اتنا دھن جمع کیا ہے؟ کیوں پسینہ بہاکر بھی تم بھوکے مرتے ہو؟ آخر کیوں؟ کبھی سوچا!

اجنبی کچھ جواب نہیں دے سکا. اب وہ کچھ بے تکلفی سے بادام کھانے کی کوشش کر رہا تھا. شنکر نے پھر کہا— اُن کے بچے کھاکر خراب کرنے میں فخر سمجھتے ہیں. خدا اُن کو خراب کرنے کو بھی دیتا ہے. اُن کی عورتیں عیش عشرت کی پتلیاں بن کر غریب— دلوں میں آگ لگاتی پھرتی ہیں؛ خدا اُن کے لئے آگ لگانے کے سامان مہیا کرتا ہے پر تمھارے بچے محنت کرکے جب پیٹ بھرنے کو روٹی مانگتے ہیں تو انھیں نہیں ملتی، تمھاری ماں، تمھاری بہن، تمھاری بی بی اپنی عزت ڈھکنے کے لئے کپڑا مانگتی ہیں وہ بھی خدا انھیں نہیں دے سکتا. کبھی سوچا میرے دوست، ایسا کیوں ہے؟

اجنبی کا ہاتھ رُک گیا تھا. اُس کا دل بھرا آ رہا تھا. اُس کی خونخوار آنکھوں میں روشنی چمکنے لگی تھی اور چھرا اسی طرح میز پر رکھا ہوا تھا. اندر سے پاروتی دو بار

शंकर को सोने के लिये बुलाने आई. उसने देखा दरवाज़ा बन्द है और सुना वह किसी के साथ बड़ी तेज़ी से बातें कर रहे हैं. वह लौट गई. फिर आई, दरवाज़ा उसी तरह बन्द था. शंकर अभी अभी चुप हुआ था, उसने दूसरी आवाज़ सुननी चाही, खड़ी रही पर आवाज़ आई तो शंकर की ही थी. अगर्चे वह गुस्से में थी तो भी वह मुस्करा पड़ी और फुसफुसाई-- अपने सामने वह कभी किसी को नहीं बोलने देते.

और शंकर कह रहा था--मेरे दोस्त ! सोचते सब हैं, तुम, हम, वह सब पर अफ़सोस ग़लत सोचते हैं. क्या सोचेंगे—तुम पूरब की तरफ़ मुंह करके पूजा क्यों करते हो ? तुम बुत क्यों पूजते हो ? तुम शादी ऐसे क्यों करते हो ? ग़रज़ कि झटका, हलाल, आवागमन, ख़ुदा, ईश्वर, सुरग, नरक न जाने क्या क्या मसले हैं ? सोचते हैं और लड़ते हैं. फ़ैसला तो इन बातों का हो नहीं सकता. किसने देखा है ईश्वर को या ख़ुदा को ? कौन जानता है मर कर हम कहां जाते हैं ? क्या फिर जनम लेते हैं या नहीं ? जिस चीज़ का कोई हाज़िर सबूत नहीं उसके बारे में फ़ैसला कैसा ? और जिसके बारे में फ़ैसला नहीं हो सकता उसके बारे में लड़ाई कैसी ? यह तो ऐसे मसले हैं कि जिनको दिलचस्पी है खोज करते रहें. बाक़ी सब लोग आज़ादी से किसी भी तरफ़ मुंह करके पूजा करें. बाक़ी मस्जिद के आगे बाजा और गाय की क़ुर्बानी ऐसी बातें जड़ तो यह है नहीं, बहाने हैं. दिन भर ट्राम धड़धड़ाती है, हवाई जहाज़ धें धें करते हैं, मोटर पों पों पुकारती रहती है पर कभी कदाक् बाजा नहीं बज सकता ? और ज़िद

شنکر کو سونے کے لئے بلانے آئی۔ اس نے دیکھا دروازہ بند ہے اور سنا وہ کسی کے ساتھ بڑی تیزی سے باتیں کر رہے ہیں۔ وہ لوٹ گئی۔ پھر آئی۔ دروازہ اسی طرح بند تھا۔ شنکر ابھی ابھی چپ ہوا تھا، اس نے دوسری آواز سننی چاہی، کھڑی رہی پر آواز آئی تو شنکر کی ہی تھی۔ اگرچہ وہ غصہ میں تھی تو بھی وہ مسکرا پڑی اور پھسپھسائی۔ اپنے سامنے وہ کبھی کسی کو نہیں بولنے دیتے۔

اور شنکر کہہ رہا تھا— میرے دوست! سوچتے سب ہیں، تم، ہم، وہ سب پر افسوس غلط سوچتے ہیں۔ کیا سوچیں گے— تم پورب کی طرف منہ کرکے پوجا کیوں کرتے ہو؟ تم بت کیوں پوجتے ہو؟ تم شادی ایسے کیوں کرتے ہو؟ غرض کہ جھٹکا، حلال، آواگون، خدا، ایشور، سرگ، نرک۔ نہ جانے کیا کیا مسئلے ہیں؟ سوچتے ہیں اور لڑتے ہیں۔ فیصلہ تو ان باتوں کا ہو نہیں سکتا۔ کس نے دیکھا ہے ایشور کو یا خدا کو؟ کون جانتا ہے مر کر ہم کہاں جاتے ہیں؟ کیا پھر جنم لیتے ہیں یا نہیں؟ جس چیز کا کوئی حاضر ثبوت نہیں اس کے بارے میں فیصلہ کیسا؟ اور جس کے بارے میں فیصلہ نہیں ہو سکتا اس کے بارے میں لڑائی کیسی؟ یہ تو ایسے مسئلے ہیں کہ جن کو دلچسپی ہے کھوج کرتے رہیں۔ باقی سب لوگ آزادی سے کسی بھی طرف منہ کرکے پوجا کریں۔ باقی مسجد کے آگے باجا اور گائے کی قربانی ایسی باتیں جڑ تو یہ ہے نہیں، بہانے ہیں۔ دن بھر ٹرام دھڑدھڑاتی ہے، ہوائی جہاز دھیں دھیں کرتے ہیں، موٹر پوں پوں پکارتی رہتی ہے پر کبھی کدا اک باجا نہیں بج سکتا؟ اور ضد۔

करने वाले भी अजीब दिमाग़ वाले हैं. मिलटरी के लिये लाखों गाय कटती हैं पर एक गाय के लिये खून बहा देंगे. यह कोई जीवन के असली मसले थोड़े ही हैं. असली मसला है "मैं हूँ". इसका हल है "दूसरे भी हैं, दूसरे के होने में ही मेरा होना है". मैं जानता हूँ, दूसरे जानते हैं, ज्ञान की कोई हद नहीं यह बाद की बाते हैं. हम पहले जो असली बात है उसको भूल गए है. दूसरी जो नक़ली है. उसके लिये पागल हुए फिरते हैं. एक दूसरे को खा जाना चाहते हैं. अच्छा बताओ, सब मुसलमान हो जावें तो क्या सवाल खत्म हो जायेगा? दुनिया में इतने मुसलमानी राज हुए और हैं भी. क्या वह सब सुखी थे? क्या उन्होंने मैं हूँ—दूसरे हैं—दूसरों के होने में मेरा होना है इस सचाई को पहचाना था? या हिन्दुओं या दया की मूरती ईसा के भक्तों ने, या अक़्ल के पुतले कन्फ्यूशियस के चेलों ने या तथागत बुद्ध के पैरवों ने बुनियादी सचाई का हमेशा पालन किया और करते हैं? मेरे प्यारे दोस्त! इस सचाई को पहिचानने के लिये किसी के पास जाना जरूरी ही है यह बात नहीं है. यह इन्सानी ज़िन्दगी का बुनियादी मसला है और इसके लिये इन्सान बने रहना जरूरी है. सोचना चाहिये कि दूसरों के होने में मेरा होना कैसे है? अनाज पैदा करके भी किसान भूका क्यों रहता है? महल बना कर भी मेमार झोपड़ों में सिर क्यों छिपाता है? कपड़ा बुन कर भी जुलाहा तन क्यों नहीं ढक पाता. इसके जवाब में अक्सर कहा जाता है—जो पैदा करने वाले हैं वह अपनी पैदा की हुई चीज़ का इस्तेमाल नहीं करते. दरख़्तों पर कितने फल आते हैं पर वह उन्हें कभी नहीं खाते सुनने में कितनी प्यारी

کرنے والے بھی عجیب دماغ والے ہیں. ملیٹری کے لئے لاکھوں گائے کٹتی ہیں پر ایک گائے کے لئے خون بہا دیں گے. یہ کوئی جیون کے اصلی مسئلے تھوڑے ہی ہیں. اصلی مسئلہ ہے "میں ہوں" اس کا حل ہے "دوسرے بھی ہیں، دوسروں کے ہونے میں ہی میرا ہونا ہے". میں جانتا ہوں، دوسرے جانتے ہیں گیان کی کوئی حد نہیں یہ بعد کی باتیں ہیں. ہم پہلے جو اصلی بات ہے اس کو بھول گئے ہیں. دوسری جو نقلی ہے اس کے لئے پاگل ہوئے پھرتے ہیں. ایک دوسرے کو کھا جانا چاہتے ہیں. اچھا بتاؤ سب مسلمان ہو جائیں تو کیا سوال ختم ہو جائے گا؟ دنیا میں اتنے مسلمانی راج ہوئے اور ہیں بھی. کیا وہ سب سکھی تھے. کیا انھوں نے "میں ہوں — دوسرے ہیں — دوسروں کے ہونے میں میرا ہونا ہے" اس سچائی کو پہچانا تھا؟ یا ہندوؤں یا دیا کی مورتی عیسیٰ کے بھگتوں نے، یا عقل کے پتلے کنفیوشیس کے چیلوں نے یا تتھاگت بدھ کے پیروؤں نے بنیادی سچائی کا ہمیشہ پالن کیا اور کرتے ہیں؟ میرے پیارے دوست! اس سچائی کو پہچاننے کے لئے کسی کے پاس جانا ضروری ہی ہے یہ بات نہیں ہے. یہ انسانی زندگی کا بنیادی مسئلہ ہے اور اس کے لئے انسان بنے رہنا ضروری ہے. سوچنا چاہئے کہ دوسروں کے ہونے میں میرا ہونا کیسے ہے؟ اناج پیدا کر کے بھی کسان بھوکا کیوں رہتا ہے؟ محل بنا کر بھی معمار جھونپڑوں میں سر کیوں چھپاتا ہے؟ کپڑا بن کر بھی جلاہا تن کیوں نہیں ڈھک پاتا. اس کے جواب میں اکثر کہا جاتا ہے — جو پیدا کرنے والے ہیں وہ اپنی پیدا کی ہوئی چیز کا استعمال نہیں کرتے. درختوں پر کتنے پھل آتے ہیں پر وہ خود انھیں نہیں کھاتے سننے میں کتنی پیاری

पर असल में कितनी ग़लत दलील है. फल दरख़्त की ख़ुराक नहीं है. जो उसकी ख़ुराक है वह उसे ख़ुद ब ख़ुद मिलती है. कुदरत उसे गैस देती है, इन्सान खाद देता है, पानी भी देता है. न दे तो फल न मिले. लेने का देना है. दूसरी तरफ़ अनाज पैदा करने वाले किसान की ज़िन्दगी वही अनाज है जो वह पैदा करता है. वही उससे छीन लिया जाता है और उनको दिया जाता है जिन्होंने उसके लिये कोई मेहनत नहीं की. आख़िर क्यों? आख़िर यह बात तुम्हारी समझ में क्यों नहीं आती. आख़िर क्यों तुम जेब में छुरे डाले उन आदमियों को मारने की टोह में रहते हो जो कमो बेश तुम्हारी ही तरह भूके नंगे और बेघर हैं. फ़र्क़ सिर्फ़ इतना है वह शायद तुम्हारी तरह पूजा नहीं करते और मुझे तो इसमें भी शक है कि तुम या वह कभी सही मानी में पूजा करते भी हो.........कहते कहते शंकर अपनी जगह से उठा. फिर छुरा उठाया और घुमाने लगा. छुरा घूमता और बिजली की रोशनी में चमक उठता. अजनबी अचरज से उसे देखता रहा. शंकर यकायक रुका और उसके सामने आकर बोला—यह छुरा आपका है?

अजनबी कापाँ—मेरा.........

—जी यह छुरा आपका है.

—जी हाँ.

—तो फिर लीजिये और मुझे मार दीजिये. इसीलिये तो आप घर से निकले थे. एकदम जैसे बिजली कौंधी. अजनबी काँप काप उठा. अन्दर कोई तेज़ी से चीखा और फिर गिर पड़ा. शंकर जैसे दुनिया में लौटा और बेसाख़्ता बोला—पार्वती...उसने जल्दी से दरवाज़ा

پر اصل میں کتنی غلط دلیل ہے۔ پھل درخت کی خوراک نہیں ہے۔ جو اس کی خوراک ہے وہ اُسے خود بخود ملتی ہے۔ قدرت اُسے گیس دیتی ہے۔ انسان کھاد دیتا ہے، پانی بھی دیتا ہے۔ نہ دے تو پھل نہ ملے۔ لینے کا دینا ہے۔ دوسری طرف اناج پیدا کرنے والے کسان کی زندگی وہی اناج ہے جو وہ پیدا کرتا ہے۔ وہی اس سے چھین لیا جاتا ہے اور اُن کو دیا جاتا ہے جنھوں نے اس کے لئے کوئی محنت نہیں کی۔ آخر کیوں؟ آخر یہ بات تمھاری سمجھ میں کیوں نہیں آتی۔ آخر کیوں تم جیب میں چھُرے ڈال اُن آدمیوں کی ٹوہ میں رہتے ہو جو کم و بیش تمھاری ہی طرح بھوکے ننگے اور بے گھر ہیں۔ فرق صرف اتنا ہے کہ شاید تمھاری طرح پوجا نہیں کرتے اور مجھے تو اس میں بھی شک ہے کہ تم یا وہ کبھی صحیح معنوں میں پوجا کرتے بھی ہو... شنکر کہتے کہتے اپنی جگہ سے اُٹھا پھر چھُرا اُٹھایا اور گھمانے لگا۔ چھُرا گھومتا اور بجلی کی روشنی میں چمک اُٹھتا۔ اجنبی اچرج سے اُسے دیکھتا رہا۔ شنکر یکایک رُکا اور اُس کے سامنے آکر بولا — یہ چھُرا آپ کا ہے؟

اجنبی کانپا — میرا......

— جی یہ چھُرا آپ کا ہے۔

— جی ہاں۔

— تو پھر لیجیے اور مجھے مار دیجیے۔ اسی لئے تو آپ گھر سے نکلے تھے۔ ایک دم جیسے بجلی کوندی، اجنبی کانپ کانپ اُٹھا۔ اندر کوئی تیزی سے چیخا اور پھر گر پڑا۔ شنکر جیسے دنیا میں لوٹا اور بے ساختہ بولا — پاروتی...... اس نے جلدی سے دروازہ

खोला, देखा—सामने फ़र्श पर पार्वती बेसुध सी पड़ी है. उसने ममता से पुकारा—पार्वती पार्वती········.

अजनबी पीछे पीछे उठ आया था. उसने कहा—जल्दी से पानी ले आईये. शंकर दौड़ा, पानी उँडेला कि जाग कर मुन्ना रो उठा. अजनबी ने बड़ी बेतकल्लुफ़ी से बच्चे को उठा लिया और कहा—मुहँ पर पानी के छींटे दीजिये. डर गई हैं.

शंकर ने वैसा ही किया, एक लमहा, दो, तीन लमहे. पार्वती कुनमुनाई. शंकर ने पुकारा—पार्वती········.

—पार्वती बोली—जी.

—आंखें खोलो.

—जी.

—कैसी तबियत है ?

—अच्छी है. कह कर पार्वती ने आंखें खोल दीं. ग़ौर से शंकर को देखा, फिर देखा—कोई उसके बच्चे को लिये जल्दी जल्दी सहन में घूम रहा है. पुचकारता है चुमकारता है पर बच्चा बार बार सुबक उठता है. अचरज से बोली—कौन है ?

—एक दोस्त.

—दोस्त.

—हाँ दोस्त है. न होता तो क्या इस तरह घूमता.

और कह कर शंकर हंस पड़ा—डरपोक कहीं की. कान लगा कर बातें सुन रही थी. छुरा का नाम सुन कर जान निकल गई. उठो खुद तो क्या जीओगी, दूसरों का जीना दूभर कर देती हो. अरे मेरे लिये डर था तो जान पर खेल जातीं··················. पार्वती अब

کھولا، دیکھا — سامنے فرش پر پاروتی بے سدھ سی پڑی ہے۔ اُس نے ممتا سے بھر کر پکارا — پاروتی پاروتی......

اجنبی پیچھے پیچھے اُٹھ آیا تھا۔ اس نے کہا — جلدی سے پانی لے آئیے۔ شنکر دوڑا، پانی اُنڈیلا کہ جاگ کر منا رو اُٹھا۔ اجنبی نے بڑی بے تکلفی سے بچے کو اُٹھا لیا اور کہا — منہ پر پانی کے چھینٹے دیجئے۔ ڈر گئی ہیں۔

شنکر نے ویسا ہی کیا، ایک لمحہ، دو، تین لمحے۔ پاروتی کُنمنائی۔
شنکر نے پکارا — پاروتی.........

— پاروتی بولی — جی۔

— آنکھیں کھولو۔

— جی۔

— کیسی طبیعت ہے؟

— اچھی ہے۔ کہہ کر پاروتی نے آنکھیں کھول دیں۔ غور سے شنکر کو دیکھا، پھر دیکھا — کوئی اُس کے بچے کو لئے جلدی جلدی صحن میں گھوم رہا ہے۔ پچکارتا ہے چمکارتا ہے پر بچہ بار بار سبک اُٹھتا ہے۔ اچنبھے سے بولی — کون ہے؟

— ایک دوست۔

— دوست۔

— ہاں دوست ہے۔ نہ ہوتا تو کیا اس طرح گھومتا۔

اور کہہ کر شنکر ہنس پڑا — ڈرپوک کہیں کی۔ کان لگا کر باتیں سُن رہی تھی۔ چھُرے کا نام سُن کر جان نکل گئی۔ اُٹھو۔ خود تو کیا جیوگی دوسروں کا جینا دوبھر کر دیتی ہو۔ [illegible]

पूरी तरह ठीक हो गयी थी, लजा गई. बोली—मैं तो समझी थी सचमुच छुरेबाजी होने वाली है. तुम बड़े वैसे हो डरा, देते हो. जाओ उनसे बच्चे को ले आओ. मैं उनके सोने के लिये बिस्तर लाती हूँ.

पार्वती उठी और अन्दर चली गयी. शंकर उठा और अजनबी के पास आकर बोला—माफ़ करना. मैं तुम्हारा नाम पूछना तो भूल ही गया था.

—मुझे रफ़ीक़ कहते हैं.

—तब रफ़ीक़ साहब बच्चा मुझे दीजिये. बिस्तर बैठक में ला रहा हूँ.

रफ़ीक़ चौंका—पर मैं जाऊँगा.

—जायेंगे. करफ़्यू में ? क्या कहते हैं ?

रफ़ीक़ ने सिर झुका लिया. भीतर से आवाज़ हुई. शंकर ने जाकर बिस्तर ले लिया. पार्वती ने पूछा—खाना तो नहीं खायेंगे.

शंकर ने उसी बात को ज़ोर से दोहराया—अरे भाई पूछती हैं खाना तो नहीं खायेंगे. काँपता हुआ जवाब मिला—नहीं नहीं.

—पूछो दूध.

शंकर ने पूछा—दूध.

रफ़ीक़ ने जवाब दिया—जी पिया तो.

शंकर बोला—अरे हाँ ! जो दूध तुम दे आई थीं वह हम आधा आधा बाँट कर पी गए. तुम मुझे हमेशा पागल कहा करती हो लेकिन असल में मैं हूँ ज़रा कम. पार्वती हंस पड़ी, कहा—जब ख़ुद नहीं होते तो दूसरों को पागल बनाते हो. बात एक ही है.

शंकर भी ठहा मार कर हँसा और हंसता हंसता बैठक में आया देखा—रफ़ीक़ गुमसुम एक कुरसी पर बैठा हुआ ऊपर की

پوری طرح ٹھیک ہو گئی تھی، لجا گئی. بولی—میں تو سمجھی تھی سچ مچ چھرے بازی ہونے والی ہے. تم بڑے ویسے ہو ڈرا دیتے ہو. جاؤ ان سے بچے کو لے آؤ. میں ان کے سونے کے لئے بستر لاتی ہوں.

پاربتی اٹھی اور اندر چلی گئی. شنکر اٹھا اور اجنبی کے پاس آکر بولا—معاف کرنا. میں تمہارا نام پوچھنا تو بھول ہی گیا تھا.

—مجھے رفیق کہتے ہیں.

—تب رفیق صاحب بچہ مجھے دیجئے. بستر بیٹھک میں لا رہا ہوں رفیق چونکا—پر میں جاؤں گا.

—جائیں گے. کرفیو میں؟ کیا کہتے ہیں؟

رفیق نے سر جھکا لیا. بھیتر سے آواز ہوئی. شنکر نے آکر بستر لے لیا. پاربتی نے پوچھا—کھانا تو نہیں کھائیں گے.

شنکر نے اسی بات کو زور سے دہرایا—ارے بھائی پوچھتی ہیں کھانا تو نہیں کھائیں گے. کانپتا ہوا جواب ملا—نہیں نہیں.

—پوچھو دودھ.

شنکر نے پوچھا دودھ.

رفیق نے جواب دیا—جی پیا تو.

شنکر بولا—ارے ہاں! جو دودھ تم دے آئی تھیں وہ ہم آدھا آدھا بانٹ کر پی گئے. تم مجھے ہمیشہ پاگل کہا کرتی ہو لیکن اصل میں میں ہوں ذرا کم. پاربتی ہنس پڑی، کہا—جب خود نہیں ہوتے تو دوسروں کو پاگل بناتے ہو. بات ایک ہی ہے.

شنکر بھی ٹھٹھا مار کر ہنسا اور ہنستا ہنستا بیٹھک میں آیا دیکھا—رفیق گم سم ایک کرسی پر بیٹھا ہوا اوپر کی

तरफ़ ताक रहा है. उसकी आँखें आसुओं से भरी हैं. अनदेखा करके शंकर ने कहा—रफ़ीक़ भाई यह रहा तुम्हारा बिस्तर. बातें तुम से ख़ूब हुई. अब सोओ. सवेरे मुलाक़ात होगी. तब तक बिदा. शंकर ने हाथ उठाया और चला गया. लेकिन सवेरे जब कमरे में आया तो देखा—रफ़ीक़ नहीं है. सब सामान पहिले की तरह है. बिस्तरा करीने से लिपटा है. उसके ऊपर एक परचा पिन किया हुआ है. जल्दी से निकल कर पढ़ा. रफ़ीक़ ने लिखा था

·······समझ में नहीं आता यह सब क्या हुआ. मैंने ख़्वाब देखा था या इस दुनिया से कहीं दूर भटक गया था. रात भर सोचता रहा पर किसी नतीजे पर नहीं पहुँच सका. बहरहाल आपका सामना करने को हिम्मत इस वक्त मुझ में नहीं है. यह मेरी कमज़ोरी है पर जो है, वह है. कभी उस पर फ़तह पासका तो एक दिन आप लोगों का नियाज़ हासिल करने आऊँगा. तब तक के लिये अलविदा! अपनी अच्छी बीवी को मेरा सलाम देना. अपने प्यारे बच्चे को प्यार. और यह छुरा आपके लिये था आप ही रखिये. यक़ीन रखिये एक दिन आउँगा·······

पढ़ लिया तो शंकर ने उसे कई बार. उलटा पुलटा फिर एक लम्बी साँस लेकर कहा—सब दिल के ग़ुलाम हैं. 'आपके सामने आने की हिम्मत नहीं है' कैसे नहीं है? अब क्या छुरा मारने की बात है? बहरहाल! मैं ख़ुद जनाब के सामने जाकर खड़ा हो आऊँगा और कहूँगा आदाब अर्ज़ जनाब रफ़ीक़ साहब. तब !!

طرف تاک رہا ہے. اُس کی آنکھیں آنسوؤں سے بھری ہیں. اَن دیکھا کرکے شنکر نے کہا—رفیق بھائی یہ رہا تمھارا بستر. باتیں تم سے خوب ہوئیں. اب سوؤ. سویرے ملاقات ہوگی. تب تک وداع. شنکر نے ہاتھ اُٹھایا اور چلا گیا. لیکن سویرے جب کمرے میں آیا تو دیکھا—رفیق نہیں ہے. سب سامان پہلے کی طرح ہے. بستر قرینے سے لپٹا ہے. اُس کے اوپر ایک پرچہ پن کیا ہوا ہے. جلدی سے نکال کر پڑھا رفیق نے لکھا تھا.

...... سمجھ میں نہیں آتا یہ سب کیا ہوا. میں نے خواب دیکھا تھا یا اس دُنیا سے کہیں دور بھٹک گیا تھا. رات بھر سوچتا رہا پر کسی نتیجے پر نہیں پہنچ سکا. بہرحال آپ کا سامنا کرنے کی ہمت اس وقت مجھ میں نہیں ہے. یہ میری کمزوری ہے پر جو ہے، وہ ہے. کبھی اس پر فتح پاسکا تو ایک دن آپ لوگوں کا نیاز حاصل کرنے آؤں گا. تب تک کے لئے الوداع! اپنی اچھی بی بی کو میرا سلام دینا. اپنے پیارے بچے کو پیار. اور یہ چھرا آپ کے لئے تھا آپ ہی رکھئے. یقین رکھئے ایک دن آؤں گا.......

پڑھ لیا تو شنکر نے اُسے کئی بار اُلٹا پلٹا پھر ایک لمبی سانس لے کر کہا—سب دل کے غلام ہیں. 'آپ کے سامنے آنے کی ہمت نہیں ہے' کیسے نہیں ہے؟ اب کیا چھرا مارنے کی بات ہے؟ بہرحال! میں خود جناب کے سامنے جاکر کھڑا ہو جاؤں گا اور کہوں گا آداب عرض جناب رفیق صاحب. تب !!

समाज और साम्राज

(जनाब अब्दुल हलीम साहब अन्सारी, आर्टिस्ट, भोपाल)

कल्पना कीजिये कि दो चिराग़ सामने रक्खे हैं, बिलकुल आमने सामने—एक समाज का, एक साम्राज का ! समाज का सुनहरी चिराग़ अगर समाज का ख़ून चूस रहा है तो दुबले पतले समाज के मिट्टी के दीपक की बत्ती, मोटे ताज़े साम्राज की चरबी खींच खींच कर पी रही है—जिसकी वजह से उसकी रोशनी मंदी पड़ती जा रही है तो इसकी बढ़ती जा रही है—वह बेजान हो रहा है तो यह जानदार !

देखो तो सही ? जरा के जरा में वह कितनी फीकी फीकी और पीली पीली हो गई, उसकी झिलमिलाहट में उदासी और मुर्दनी है—इसकी मुसकराहट में जान है, शान है, जीवन है, प्रकाश है. यही वजह है कि साम्राज का चिराग़ टिमटिमा रहा है और समाज का दिया उसके सामने खड़ा मुसकरा रहा है . वह रो रहा है. वह हँस रहा है.

समाज के चिराग़ की मसली हुई बत्ती अन्दर ही अन्दर सुलगती रहती है और चुपके ही चुपके ताक़त पाकर अपनी जोत को तेज़ और बुलन्द करती जाती है. चूँ कि उसकी लहराती जोत में आकाशी मौज होती है इसी लिये यह अपनी भड़क से फ़िज़ा को गरमा कर और ग़ुलामी को शरमा कर समाज के अन्दर आज़ादी और ख़ुद्दारी का जज़्बा पैदा करती है और बाज़ मौक़े पर उसको

سماج اور سامراج

(جناب عبدالحلیم صاحب انصاری آرٹسٹ بھوپال)

کلپنا کیجئے کہ دو چراغ سامنے رکھے ہیں، بالکل آمنے سامنے — ایک سماج کا، ایک سامراج کا! سامراج کا سنہری چراغ اگر سماج کا خون چوس رہا ہے تو دُبلے پتلے سماج کے مٹّی کے دیپک کی بتّی، موٹے تازے سامراج کی چربی کھینچ کھینچ کر پی رہی ہے۔ جس کی وجہ سے اس کی روشنی مندی پڑتی جا رہی ہے تو اس کی بڑھتی جا رہی ہے — وہ بے جان ہو رہا ہے تو یہ جان دار!

دیکھو تو سہی؟ ذرا کے ذرا میں وہ کتنی پھیکی پھیکی اور پیلی پیلی ہو گئی، اُس کی جھلملاہٹ میں اُداسی اور مُردنی ہے — اس کی مُسکراہٹ میں جان ہے، شان ہے، جیون ہے، پرکاش ہے۔ یہی وجہ ہے کہ سامراج کا چراغ ٹمٹما رہا ہے اور سماج کا دیا اُس کے سامنے کھڑا مسکرا رہا ہے۔ وہ رو رہا ہے۔ یہ ہنس رہا ہے۔

سماج کے چراغ کی مسلی ہوئی بتّی اندر ہی اندر سُلگتی رہتی ہے۔ اور چپکے ہی چپکے طاقت پا کر اپنی جوت کو تیز اور بلند کرتی جاتی ہے۔ چونکہ اُس کی لہراتی جوت میں آکاشی موج ہوتی ہے اسی لئے یہ اپنے بھڑک سے فضا کو گرما کر اور غلامی کو شرما کر سماج کے اندر آزادی اور خودداری کا جذبہ پیدا کرتی ہے اور بعض موقع پر اُس کو

अपने फ़र्ज़ का ध्यान करा कर त्याग और क़ुरबानी की याद भी दिलाती है.

क्योंकि क्रान्ति की मशाल बिलकुल समाज की बग़ल के पास रहती है, इसलिये उसकी आँच से इनक़लाबी भाव का पारा ऊपर को चढ़ता है और इसी कारन ज़ालिम हत्यारी दुनिया उसके तय्यार माद्दे से हर वक़्त डरती रहती है. क्योंकि जब वह भड़कती है तो फ़ौरन सारा माद्दा फट पड़ता है.

साम्राजियों का दिमाग़ हमेशा आसमान पर रहता है और बेशरमी का ताज सरों पर. लेकिन अब वह घमंड के ऊँचे आसमान से नीचे की तरफ़ उलटे लटकते नज़र आ रहे हैं—इसी को कहते हैं 'घमंड का सर नीचा' और यही होती है 'इनक़लाब की तसवीर'.

——और समाज?

समाज! विकास के रोशन आकाश पर उड़ता दिखाई दे रहा है ग़ौर करो तो मालूम होगा कि वह हर हर घड़ी ऊँचा होता चला जा रहा है और यह उसकी भीतरी ताक़त का वह भारी भेद है कि ग़रीब और दलित समाज की आह घमंडी और ज़ालिम साम्राज के जादू के क़िले को आनन फ़ानन टुकड़े टुकड़े कर देती है और उसकी शान और शक्ति को दबा लेती है. वजह यह कि उसके साथ एकता की ताक़त होती है, जनता की हिम्मत होती है और सब से बढ़ कर यह कि ख़ुदा की मदद होती है.

वह देखो! समाज के चिराग़ पर रंग बिरंग के पतिंगों का

اپنے فرض کا دھیان کرا کر تیاگ اور قربانی کی یاد بھی دلاتی ہے.

کیونکہ کرانتی کی مشعل بالکل سماج کے بغل کے پاس رہتا ہے، اس لئے اس کی آنچ سے انقلابی بھاؤ کا پارا اوپر کو چڑھتا ہے اور اسی کارن ظالم ہتیارا دُنیا اُس کے تیار مادے سے ہر وقت ڈرتی رہتی ہے، کیونکہ جب وہ بھڑکتی ہے تو فوراً سارا مادہ پھٹ پڑتا ہے.

سامراجیوں کا دماغ ہمیشہ آسمان پر رہتا ہے اور بے شرمی کا تاج سروں پر. لیکن اب وہ گھمنڈ کے اونچے آسمان سے نیچے کی طرف اُلٹے لٹکتے نظر آ رہے ہیں — اسی کو کہتے ہیں 'گھمنڈ کا سر نیچا' اور یہی ہوتی ہے 'انقلاب کی تصویر'.

— اور سماج؟

سماج! وکاش کے روشن آکاش پر اُڑتا دکھائی دے رہا ہے. غور کرو تو معلوم ہوگا کہ وہ ہر ہر گھڑی اونچا ہوتا چلا جا رہا ہے اور یہ اس کی بھیتری طاقت کا وہ بھاری بھید ہے کہ غریب اور دلت سماج کی آہ گھمنڈی اور ظالم سامراج کے جادو کے قلعے کو آناً فاناً ٹکڑے ٹکڑے کر دیتی ہے اور اُس کی شان اور شکتی کو دبا لیتی ہے. وجہ یہ کہ اُس کے ساتھ ایکتا کی طاقت ہوتی ہے، جنتا کی ہمت ہوتی ہے اور سب سے بڑھ کر یہ کہ خدا کی مدد ہوتی ہے.

وہ دیکھو! سماج کے چراغ پر رنگ بے رنگ کے پتنگوں کا

घमसट है जैसे कि एक बाढ़ है, एक तूफ़ान है, और साम्राज के चिराग़ पर मुख़ालिफ़ हवा का थप्पड़! अब उसकी ज़िन्दगी का चिराग़ पल में बुझा चाहता है—साँस उखड़ रही है, दम छूट रहा है, आख़री हिचकियाँ ले रहा है और इशारों ही इशारों में गोया वह कह रहा है—

कोई दम का मेहमां हूँ ऐ अहले महफ़िल
चिराग़ सेहर हूँ बुझा चाहता हूँ.

देखो न! टप टप आँसू गिरे और वह चला—और समाज? यानी ग़रीब और ख़ुद्दार समाज, पूरे जोबन से ज़िन्दगी की कठिन घाटियाँ तय करता आज़ादी की रोशनी में दाख़िल हो रहा है—लेकिन किस तरह?

साम्राज को उसके ज़ुल्म का मज़ा चखाता चखाता और— ख़ुद ज़ुल्म सह कर मुसकराता मुसकराता.

सेहर = सुबह

گھمسٹ ہے جیسے کہ ایک باڑھ ہے، ایک طوفان ہے، اور سامراج کے چراغ پر مخالف ہوا کا تھپیڑ! اب اُس کی زندگی کا چراغ پل میں بجھا چاہتا ہے— سانس اُکھڑ رہی ہے، دم گھٹ رہا ہے، آخری ہچکیاں لے رہا ہے اور اشاروں ہی اشاروں میں گویا وہ کہہ رہا ہے—

کوئی دم کا مہماں ہوں اے اہلِ محفل
چراغِ سحر ہوں بجھا چاہتا ہوں۔

دیکھو نہ! ٹپ ٹپ آنسو گرے اور وہ چلا— اور سماج؟ یعنی غریب اور خوددار سماج، پورے جوبن سے زندگی کی کٹھن گھاٹیاں طے کرتا آزادی کی روشنی میں داخل ہو رہا ہے— لیکن کس طرح؟

سامراج کو اُس کے ظلم کا مزا چکھاتا چکھاتا اور— خود ظلم سہہ کر مسکراتا مسکراتا۔

سحر = صبح

गीत

(श्री चिरंजीत, देहली)

पंखों से बांध दिये पत्थर!

यह जुर्म, कि मैं चाहूँ उड़कर
उठ जाऊं मिट्टी से ऊपर
और चढ़ अनंत की डाली पर, मैं निसि दिन गाऊँ गीत अमर!
पंखों से बांध दिये पत्थर!

जिस लिये पंख मैं था लाया,
वह काम न इनसे ले पाया,
इन पंखों का देने वाला, नाराज़ न होगा क्या मुझ पर!
पंखों से बांध दिये पत्थर!

नित नभ से आमंत्रन आते
अरमान तड़प कर रह जाते,
मेरा पथ तकने वाले को, कैसे बंदी की मिले खबर!
पंखों से बांध दिये पत्थर!

तू काट गिरादे मेरे पर,
मैं पड़ा रहूँगा धीरज धर,
पर जब तक चेतन तन पर, मैं छोड़ नहीं सकता अंबर!
पंखों से बांध दिये पत्थर!

گیت

(شری چرنجیت، دہلی)

پنکھوں سے باندھ دئے پتھر!
یہ جرم، کہ میں چاہوں اُڑ کر
اُٹھ جاؤں مٹی سے اوپر
اور چڑھ اننت کی ڈالی پر، میں نِس دن گاؤں گیت امر!
پنکھوں سے باندھ دئے پتھر!
جس لئے پنکھ میں تھا لایا،
وہ کام نہ ان سے لے پایا،
اِن پنکھوں کا دینے والا، ناراض نہ ہوگا کیا مجھ پر!
پنکھوں سے باندھ دئے پتھر!
نِت نبھ سے آمنترن آتے
ارمان تڑپ کر رہ جاتے،
میرا پتھ تکنے والے کو، کیسی بندی کی ملے خبر!
پنکھوں سے باندھ دئے پتھر!
تو کاٹ گرادے میرے پر،
میں پڑا رہوں گا دھیرج دھر،
پر جب تک چیتن تن پر، میں چھوڑ نہیں سکتا امبر!
پنکھوں سے باندھ دئے پتھر!

हिंदुस्तानी कलचर और संगीत

न्यामत खाँ के बाद के बीनकार

(पं० गनेश प्रसाद द्विवेदी)

(५)

हम यह बता चुके हैं कि मिस्रीसिंह के बाद उनके बंस में सबसे बड़े बीनकार न्यामत खाँ हुए. या यों भी कह सकते हैं कि तानसेन और मिस्री सिंह के बाद इस मिले जुले खानदान में सबसे बड़े कलावंत गुनी न्यामत खाँ उर्फ़ शाह 'सदारंग' ही हुए. 'शाह' और 'सदारंग' की पदवी उन्हें मशहूर गुनी बादशाह मुहम्मद शाह 'रँगीले' ने दी थी. इन्होंने (सदारंग ने) तंत्रकार का दरजा गवैये से ऊँचा साबित कर दिया था. अकबर के बाद कला की कदर करने वाले सबसे बड़े मुग़ल बादशाह मुहम्मद शाह ही थे. यह अकबर से बढ़ कर इस मानी में थे कि यह खुद भी इस फ़न में माहिर थे और एक ऊँचे दरजे के कवि भी थे. अकबर सिर्फ़ सुनना समझना और गुनी का आदर करना ही जानते थे, खुद इस काम को नहीं करते थे, पर बादशाह रँगीले तो सचमुच 'रँगीले' ही थे. गाने में वह अच्छे से अच्छे गवैये के साथ टक्कर ले सकते थे. नये ख्याल रचनेवालों में उनकी देन लगभग न्यामत खाँ के बराबर की ही है. राग में बँधे हुए ख्यालों की रचना वही कर सकता है जो एक साथ ही कविता और रागसंगीत दोनों पर बराबर का दखल रखता हो. संस्कृत में इसको 'वागेयकार'

ہندستانی کلچر اور سنگیت

نعمت خاں کے بعد کے بین کار

(پنڈت گنیش پرشاد دویدی)

(۵)

ہم یہ بتا چکے ہیں کہ مصری سنگھ کے بعد اُن کے بنس میں سب سے بڑے بین کار نعمت خاں ہوئے۔ یا یوں بھی کہہ سکتے ہیں کہ تان سین اور مصری سنگھ کے بعد اِس ملے جُلے خاندان میں سب سے بڑے کلاونت گنی نعمت خاں عرف شاہ 'سدارنگ' ہی ہوئے۔ 'شاہ' اور 'سدارنگ' کی پدوی انھیں مشہور گنی بادشاہ محمد شاہ 'رنگیلے' نے دی تھی۔ انھوں نے (سدارنگ نے) تنترکار کا درجہ گویے سے اونچا ثابت کر دیا تھا۔ اکبر کے بعد کلا کی قدر کرنے والے سب سے بڑے مغل بادشاہ محمد شاہ ہی تھے۔ یہ اکبر سے بڑھ کر اِس معنی میں تھے کہ یہ خود بھی اِس فن میں ماہر تھے اور ایک اونچے درجے کے کوی بھی تھے۔ اکبر صرف سُننا سمجھنا اور گنی کا آدر کرنا ہی جانتے تھے، خود اِس کام کو نہیں کرتے تھے، پر بادشاہ رنگیلے تو سچ مُچ 'رنگیلے' ہی تھے۔ گانے میں وہ اچھے سے اچھے گویے کے ساتھ ٹکّر لے سکتے تھے۔ نئے خیال رچنے والوں میں اُن کی دین لگ بھگ نعمت خاں کے برابر کی ہی ہے۔ راگ میں بندھے ہوئے خیالوں کی رچنا وہی کر سکتا ہے جو ایک ساتھ ہی کویتا اور راگ سنگیت دونوں پہ برابر کا دخل رکھتا ہو۔ سنسکرت میں اس کو 'واگیہ کار'

कहते हैं. अंग्रेजी में यह कंपोज़र (Composor) कहलाते हैं और संगीत की दुनिया में सबसे ज्यादा इज्ज़त इन्हीं की होती है.

बादशाह रँगीले और उनके दरबारी गुनी न्यामत खाँ दोनों ही ऊँचे दर्जे के संगीत के माहिर ही नहीं बल्कि 'वाग्गेयकार' या 'कंपोज़र' थे. मौलिकता या नयापन लाने में तो न्यामत खाँ शायद तानसेन से भी आगे निकल गए. इनका 'सदारंग' का खिताब इसी बात को जाहिर करता है. किसी भी ललितकला (फ़नेलतीफ़) में जो कोई रोशनी और साया (Light and shade) के मधुर मिलन के जितने अनोखे मेल दिखा सके वह उतना ही पहुँचा हुआ गुनी माना जाता है. चितेरा छायालोक के जो मेल तरह तरह के हलके और गहरे रंगों की मिलावट से दिखलाता है वही गवैया या तंत्रकार सुरों की कलापूर्ण मिलावट, सजावट और जगमगाहट से पैदा करता है. चित्र कला में रंगों का और संगीत सुरों का उतार और चढ़ाव ही ललितकला की जान है. इस चीज़ में न्यामत खां सबको पीछे छोड़ जाते हैं, और इस निगाह से 'सदारंग' की उनकी पदवी बेमानी नहीं है. हमारे हिंदुस्तानी संगीत की सबसे बड़ी खूबी यही है कि इस में कलाकार को अपनी निजी कलात्मक (फ़न्नी) सूझ बूझ कल्पना और मौलिकता के मुताबिक़ नए रंग, नए फूल पत्ते आँकने की बेइंतहा गुंजाइश है. मिसाल के लिये कोई भी राग ले लीजिये, जैसे भैरवी या ईमन. इस को गाते बजाते वक़्त सभी कलाकार सुर तो वही बरतेंगे जो इनमें लगते हैं, इनसे बाहर कोई नहीं जा सकता, पर उन्हीं सात सुरों में कुछ को छिपा कर

کہتے ہیں. انگریزی میں یہ کمپوزر (Composor) کہلاتے ہیں اور سنگیت کی دُنیا میں سب سے زیادہ عزت اِنھیں کی ہوتی ہے.

بادشاہ رنگیلے اور اُن کے درباری گنی نعمت خاں دونوں ہی اونچے درجے کے سنگیت کے ماہر ہی نہیں بلکہ 'واگیہ کار' یا 'کمپوزر' تھے. مولکتا یا نیاپن لانے میں تو نعمت خاں شاید تان سین سے بھی آگے نکل گئے. اِن کا 'سدا رنگ' کا خطاب اِسی بات کو ظاہر کرتا ہے. کسی بھی للت کلا (فنِ لطیف) میں جو کوئی روشنی اور سایہ (Light and shade) کے مدھر ملن کے جتنے انوکھے میل دکھا سکے وہ اُتنا ہی پہونچا ہوا گنی مانا جاتا ہے. چتیرا چھایا لوک کے جو میل طرح طرح کے ہلکے اور گہرے رنگوں کی ملاوٹ سے دکھلاتا ہے وہی گویا اور تنترکار سُروں کی کلاپورن ملاوٹ، سجاوٹ اور جگمگاہٹ سے پیدا کرتا ہے. چتر کلا میں رنگوں کا اور سنگیت میں سُروں کا اُتار اور چڑھاؤ ہی للت کلا کی جان ہے. اِس چیز میں نعمت خاں سب کو پیچھے چھوڑ جاتے ہیں، اور اِس نگاہ سے 'سدا رنگ' کی اُن کی پدوی بے معنی نہیں ہے. ہمارے ہندستانی سنگیت کی سب سے بڑی خوبی یہی ہے کہ اِس میں کلاکار کو اپنی نجی کلاتمک (فنی) سوجھ بوجھ کلپنا اور مولکتا کے مطابق نئے رنگ، نئے پھول پتے آنکنے کی بے انتہا گنجایش ہے. مثال کے لئے کوئی بھی راگ لے لیجئے، جیسے بھیروی یا ایمن. اِس کو گاتے بجاتے وقت سبھی کلاکار سُر تو وہی برتیں گے جو اِن میں لگتے ہیں، اِن سے باہر کوئی نہیں جا سکتا، پر اُنھیں سات سُروں میں کچھ کو چھپا کر

कुछ को ज़्यादा फैला कर गुनी सैकड़ों हज़ारों क़िस्म के 'अलंकार' बनाता है कि एक तसवीर सी बनती चलती है, एक नक़शा सा खिंचता चलता है, जिस में देखने, सुनने, समझने के लिये काफ़ी मसाला होता है. यही है 'करतब'. जिस सिलसिले से यह अलंकार एक के बाद एक सजाए जाते हैं वह गवैयों की दुनिया में 'तरकीब' के नाम से मशहूर है. घरानों में अब भी किसी राग के आलाप या 'बढ़त' में नंबरवार तरकीबें मिलती हैं जो आगे चल कर तानों की शक़्ल अख़्तियार करती हैं. पर दुख इस बात का है कि यह तरकीबें आज तक लिखी न जा सकीं, घराने के उस्तादों के ज़बान तक ही रह गईं. स्वर्गीय पं० विष्णुनारायण भातखंडे ने क़रीब २००० ख़्याल ध्रुपद, और धमारों की बंदिशों की सुरलिपि बड़ी मेहनत से उस्तादों से हासिल करके लिखीं पर गायकी की तरकीबें और तंत्र के अलङ्कारों की तरफ़ वह ध्यान न दे सके. शायद कोई दूसरा संगीत का स्कालर इस तरफ़ ध्यान दे सके. सुना यह गया है कि न्यामत ख़ां की सब चीज़ें लिखी हुई अब भी उनके घराने में मौजूद हैं पर उन्हें छपाना तो दूर रहा वह किसी को देखने को भी नहीं मिलतीं. यह लोग सिवा अपनी औलाद के और किसी को इस लायक़ नहीं समझते. उनका विश्वास है, जो शायद एक हद तक सही भी है, कि कोई दूसरा उन चीज़ों की क़द्र न कर सकेगा. न्यामत ख़ाँ ने बड़ी मेहनत से इस विद्या को हासिल किया था. उतनी मेहनत शायद ही कोई दूसरा कर सके. इनकी सारे जनम भर की कमाई यही है. दुनिया की धन दौलत को उन्होंने हमेशा लात मारी. बादशाह से इनको बेइंतहा दौलत मिलती थी. पर यह सब दोस्तों की दावतों

کچھ کو زیادہ پھیلا کر گنی سیکڑوں ہزاروں قسم کے 'النکار' بناتا ہے کہ ایک تصویر سی بنتی چلتی ہے، ایک نقشہ سا کھنچتا چلتا ہے، جس میں دیکھنے، سننے، سمجھنے کے لئے کافی مسالہ ہوتا ہے. یہی ہے 'کرتب'. جس سلسلے سے یہ النکار ایک کے بعد ایک سجائے جاتے ہیں وہ گویوں کی دنیا میں 'ترکیب' کے نام سے مشہور ہے. گھرانوں میں اب بھی کسی راگ کے آلاپ یا 'بڑھت' میں نمبروار ترکیبیں ملتی ہیں جو آگے چل کر تانوں کی شکل اختیار کرتی ہیں. پر دکھ اس بات کا ہے کہ یہ ترکیبیں آج تک لکھی نہ جا سکیں، گھرانے کے استادوں کے زبان تک ہی رہ گئیں. پنڈت وشنو نراین بھات کھنڈے نے قریب ۲۰۰۰ خیال دھرپد، اور دھماروں کی بندشوں کی سُرلپی بڑی محنت سے استادوں سے حاصل کر کے لکھیں پر گائکی کی ترکیبیں اور تنتر کے النکاروں کی طرف وہ دھیان نہ دے سکے. شاید کوئی دوسرا سنگیت کا اسکالر اس طرف دھیان دے سکے. سنا یہ گیا ہے کہ نعمت خاں کی سب چیزیں لکھی ہوئی اب بھی ان کے گھرانے میں موجود ہیں پر انھیں چھپانا تو دور رہا وہ کسی کو دیکھنے کو بھی نہیں ملتیں. یہ لوگ سوا اپنی اولاد کے اور کسی کو اس لائق نہیں سمجھتے. ان کا وشواس ہے، جو شاید ایک حد تک صحیح بھی ہے، کہ کوئی دوسرا ان چیزوں کی قدر نہ کر سکے گا. نعمت خاں نے بڑی محنت سے اس ودیا کو حاصل کیا تھا. اتنی محنت شاید ہی کوئی دوسرا کر سکے. ان کی سارے جنم بھر کی کمائی یہی ہے. دنیا کی دھن دولت کو انھوں نے ہمیشہ لات ماری. بادشاہ سے ان کو بے انتہا دولت ملتی تھی. پر یہ سب دوستوں کی دعوتوں

और ग़रीब दुखियों की ख़ैरात में सर्फ़ होती थी. यह हमेशा मुहताज ही दिखाई पड़ते थे. दो एक मिसालें देना ना मुनासिब न होगा. न्यामत ख़ाँ को रंगीले बादशाह से गुज़ारे की तौर पर बहुत बड़ी रक़म मिला करती थी. इस पर भी इन्हें घर ख़र्च के लिये अकसर महाजनों से कर्ज़ लेना पड़ना था. और महाजन लोग बिना कोई क़ीमती चीज़ गिरवी रक्खे कर्ज़ देते नहीं. इनके पास क्या था सिवाय रागों के. महाजन लोग इनका कोई ख़ास राग गिरवी रख कर रुपया उधार देते थे. यानी यह कि जब तक यह क़र्ज़ की रकम वापस न करें तब तक वह राग दरबार मे या और कहीं गा बजा नहीं सकते थे. दरबार में उस राग की फ़र्मायश होने पर ये कहते कि 'जहांपनाह वह राग तो गिरवी रक्खा हुआ है फ़लाँ महाजन के यहां.' इस पर एक क़हक़हा लगता और फिर बादशाह सलामत उस महाजन के रुपये अदा कर इनका राग छुड़वाते.

यह ऊपर कहा जा चुका है कि न्यामात ख़ाँ और रंगीले बादशाह के रचे हुए ज़्यादातर ख़्यालों की सुरलिपियां भातखंडे की किताबों में आगई हैं. पर उन्होंने बहुत से ध्रुपद धमार भी रचे जिनकी सुरलिपि अभी तक नहीं मिल सकी है. बात यह हुई कि जो ख़्याल इन्होंने रचे. उसे तो इन्होंने बाहरी लोगों को याद करने की और गाने की इजाज़त दे दी पर धुरपद धमारों की तालीम अपने औलाद ही तक रक्खी. किसी बाहरी शख़्स को उन्हें नहीं याद कराया गया. इस घराने की ख़ास विद्या तो ध्रुपद और अलापचारी की ही थी. न्यामत ख़ाँ ने अपनी औलाद को कभी दरबार में ख़्याल

اور غریب دُکھیوں کی خیرات میں صرف ہوتی تھی. یہ ہمیشہ محتاج ہی دکھائی پڑتے تھے. دو ایک مثالیں دینا نامناسب نہ ہوگا. نعمت خاں کو رنگیلے بادشاہ سے گزارے کے طور پر بہت بڑی رقم ملا کرتی تھی. اِس پر بھی اِنھیں گھر خرچ کے لئے اکثر مہاجنوں سے قرض لینا پڑتا تھا. اور مہاجن لوگ بنا کوئی چیز گروی رکھے قرض دیتے نہیں. اِن کے پاس کیا تھا سوائے راگوں کے. مہاجن لوگ اِن کا کوئی خاص راگ گروی رکھ کر روپیہ اُدھار دیتے تھے. یعنی یہ کہ جب تک یہ قرض کی رقم واپس نہ کریں تب تک وہ راگ دربار میں یا اور کہیں گا بجا نہیں سکتے تھے. دربار میں اُس راگ کی فرمائش ہونے پر یہ کہتے کہ 'جہاں پناہ وہ راگ تو گروی رکھا ہوا ہے فلاں مہاجن کے یہاں'. اِس پر ایک قہقہہ لگتا اور پھر بادشاہ سلامت اُس مہاجن کے روپیے ادا کر اِن کا راگ چھڑواتے.

یہ اوپر کہا جا چکا ہے کہ نعمت خاں اور رنگیلے بادشاہ کے رچے ہوئے زیادہ تر خیالوں کی سُرلیپیاں بھات کھنڈے کی کتابوں میں آگئی ہیں. پر اُنھوں نے بہت سے دُھرپد دھمار بھی رچے جن کی سُرلپی ابھی تک نہیں مل سکی ہے. بات یہ ہوئی کہ جو خیال اِنھوں نے رچے اُسے تو اِنھوں نے باہری لوگوں کو یاد کرنے کی اور گانے کی اجازت دے دی پر دُھرپد دھماروں کی تعلیم اپنے اولاد ہی تک رکھی. کسی باہری شخص کو اُنھیں نہیں یاد کرایا گیا. اِس گھرانے کی خاص وِدّیا تو دُھرپد اور آلاپ چاری کی ہی تھی. نعمت خاں نے اپنی اولاد کو کبھی دربار میں خیال

गाने की इजाज़त नहीं दी. ऐसी हालत में हम इस बात का अन्देशा कर सकते हैं कि जो धुरपद को इतनी बड़ी चीज़ समझता हो उसने बहुत से धुरपद धमार भी ज़रूर रचे होंगे. इनके बंस के मौजूदा गुनी मुहम्मद दबीर ख़ाँ साहब का भी यही कहना है. इनके पास न्यामत ख़ाँ के रचे हुए सैकड़ों धुरपद मौजूद हैं जिन् में राग की पूरी तसवीर रक्खी हुई है और जिन्हें यह गा कर सुना भी देते हैं पर हमें दुख इस बात का है कि उन्हें किताब की शक्ल में छापने की राय यह नहीं देते. इसकी जड़ में यही बात मालूम होती है कि इनको अंदेशा है कि अगर इनके बुज़ुर्गों की चीज़ें किताबों में छप कर आम लोगों में फैल जायंगी तो इनकी अपनी पूछ और क़दर कम हो जायगी. हमारा ख़्याल है कि इनका इस तरह सोचना ग़लत है. मिसाल मौजूद है. दो हज़ार ख़्यालों की सुरलिपि छपी हुई हमारे सामने मौजूद है, पर इससे जिन घरानों से भातखंडे, विष्णुदिगंबर और राजा नवाब अली वग़ैरा ने चीज़ें हासिल कीं क्या उनकी क़द्र कम हो गई ? मैं तो कहूँगा कि इसी वजह से इनकी फिर के पूछ हुई. नहीं तो दुनिया इन उस्तादों को भूल चली थी. जिन लोगों से पं० भातखंडे और राजा नवाब अली ने चीज़ें हासिल की हैं उनकी फ़ेहरिस्त इन्होंने अपने किताब में दी है जिनमें से कुछ अभी हमारे भाग्य से ज़िंदा हैं, जैसे उस्ताद मुश्ताक़ हुसैन, फैयाज़ ख़ाँ, कृष्णराव पंडित व राजा भैया पोंछ वाले वग़ैरा. इन किताबों के छपनें के बाद और इन्हीं की वजह से इन लोगों की इज़्ज़त और मांग इस क़दर बढ़ गई कि कोई म्यूज़िक कानफ़रेंस या संगीत का बड़ा

گانے کی اجازت نہیں دی۔ ایسی حالت میں ہم اس بات کا اندیشہ کر سکتے ہیں کہ جو دھرپد کو اتنی بڑی چیز سمجھتا ہو اُس نے بہت سے دھرپد دھمار بھی ضرور رچے ہوں گے۔ ان کے بنس کے موجودہ گنی محمد دبیر خاں صاحب کا بھی یہی کہنا ہے۔ ان کے پاس نعمت خاں کے رچے ہوئے سیکڑوں دھرپد موجود ہیں جن میں راگ کی پوری تصویر رکھی ہوئی ہے اور جنھیں یہ گا کر سنا بھی دیتے ہیں پر ہمیں دکھ اس بات کا ہے کہ انھیں کتاب کی شکل میں چھاپنے کی رائے یہ نہیں دیتے۔ اس کی جڑ میں یہی بات معلوم ہوتی ہے کہ ان کو اندیشہ ہے کہ اگر ان کے بزرگوں کی چیزیں کتابوں میں چھپ کر عام لوگوں میں پھیل جائیں گی تو ان کی اپنی پوچھ اور قدر کم ہو جائے گی۔ ہمارا خیال ہے کہ ان کا اس طرح سوچنا غلط ہے۔ مثال موجود ہے۔ دو ہزار خیالوں کی سُرلپی چھپی ہوئی ہمارے سامنے موجود ہے، پر اس سے جن گھرانوں سے بھاتکھنڈے، وشنو دگمبر اور راجہ نواب علی وغیرہ نے چیزیں حاصل کیں کیا اُن کی قدر کم ہو گئی؟ میں تو کہوں گا کہ اسی وجہ سے ان کی پھر سے پوچھ ہوئی۔ نہیں تو دنیا ان استادوں کو بھول چلی تھی۔ جن لوگوں سے پنڈت بھاتکھنڈے اور راجہ نواب علی نے چیزیں حاصل کی ہیں اُن کی فہرست انھوں نے اپنی کتابوں میں دی ہے جن میں سے کچھ ابھی ہمارے بھاگ سے زندہ ہیں، جیسے استاد مشتاق حسین۔ فیاض خاں۔ کرشنا راؤ پنڈت و راجا بھیا پونچھ والے وغیرہ۔ ان کتابوں کے چھپنے کے بعد اور انھیں کی وجہ سے ان لوگوں کی عزت اور مانگ اس قدر بڑھ گئی ہے کہ کوئی میوزک کانفرنس یا سنگیت کا بڑا

जलसा इनकी मौजूदगी के विना अधूरा समझा जाता है. मैं समझता हूँ कि अगर शाह सदारंग के रचे हुए धुरपद, धमार, और सादरों की सुरलिपियां छपा ली जायं तो इस विद्या का बड़ा उपकार होगा और भातखंडे और राजा नवाब अली की तरह दबीर खाँ साहब का नाम भी अमर हो जायगा.

शाह सदारंग के बाद बीनकारों की दुनिया में सबसे मशहूर उनके पोते जीवन शाह और इनके (जीवन शाहके) भतीजे निर्मल शाह हुए. इनके बाद मुहम्मद वज़ीर खां हिन्दुस्तान के मशहूर बीनकार हुए. इनको गुजरे हुए अभी ज्यादा दिन नहीं हुए. मुहम्मद वज़ीर खां साहब को सुने हुए लोग अभी जिन्दा हैं. इन्हीं के पोते मुहम्मद दबीर खां साहब हैं जो अभी मौजूद हैं और कलकत्ते में 'सेनी' संगीत विद्यालय के प्रिंसिपल हैं. इनके बारे में खास तौर से कुछ कहने के पहले हमें इनके और शाह सदारंग के बीच के मशहूर बीनकारों पर एक निगाह डाल लेनी चाहिये.

शाह सदारंग के दो बेटे थे—फ़िरोज़ खां और भूपत खां*. फ़िरोज़ खां का खिताब था 'अदारंग' और भूपत खां का 'मनरंग' (कोई इन्हें 'महारंग' भी कहते हैं). इनमें से फ़िरोज़ खां बे औलाद रहे. भूपत खां के दो लड़के थे जिनके नाम थे जीवन शाह और प्यार खां (उंगलीकट). यह दोनों ही बहुत पहुँचे हुए गुनी हुए. इन में से प्यार खां बचपन में एक बार सड़क पर

*इन मिले जुले नामों पर ज़रा ग़ौर करने की ज़रूरत है. हमें इन घरानों में बहुत से नाम ऐसे मिलते हैं जो हिन्दुओं के भी हो सकते हैं और [illegible]मानों के भी.

جلسہ ان کی موجودگی کے بنا ادھورا سمجھا جاتا ہے۔ میں سمجھتا ہوں کہ اگر شاہ سدارنگ کے رچے ہوئے دھرپد، دھمار، اور سادروں کی سرلپیاں چھپالی جائیں تو اس ودیا کا بڑا اپکار ہوگا اور بھات کھنڈے اور راجا نواب علی کی طرح دبیر خاں صاحب کا نام بھی امر ہو جائے گا۔

شاہ سدارنگ کے بعد بین کاروں کی دنیا میں سب سے مشہور ان کے پوتے جیون شاہ اور ان کے (جیون شاہ کے) بھتیجے نرمل شاہ ہوئے۔ ان کے بعد محمد وزیر خاں ہندستان کے مشہور بین کار ہوئے۔ ان کو گزرے ہوئے زیادہ دن نہیں ہوئے۔ محمد وزیر خاں صاحب کو سنے ہوئے لوگ ابھی زندہ ہیں۔ انھیں کے پوتے محمد دبیر خاں صاحب ہیں جو ابھی موجود ہیں اور کلکتے میں 'سینی' سنگیت ودیالیہ کے پرنسپل ہیں۔ ان کے بارے میں خاص طور سے کچھ کہنے کے پہلے ہمیں ان کے اور شاہ سدارنگ کے بیچ کے مشہور بین کاروں پر ایک نگاہ ڈال لینی چاہیے۔

شاہ سدارنگ کے دو بیٹے تھے — فیروز خاں اور بھوپت خاں*۔ فیروز خاں کا خطاب تھا 'ادارنگ' اور بھوپت خاں کا 'من رنگ' (کوئی انھیں 'مہارنگ' بھی کہتے ہیں)۔ ان میں سے فیروز خاں بے اولاد رہے۔ بھوپت خاں کے دو لڑکے تھے جن کے نام تھے جیون شاہ اور پیار خاں (انگلی کٹ)۔ یہ دونوں ہی بہت پہنچے ہوئے گنی ہوئے۔ ان میں سے پیار خاں بچپن میں ایک بار سڑک پر

*ان ملے جلے ناموں پر ذرا غور کرنے کی ضرورت ہے۔ ہمیں ان گھرانوں میں بہت سے نام ایسے ملتے ہیں جو ہندوؤں کے بھی ہو سکتے ہیں اور مسلمانوں کے بھی۔

गोली खेल रहे थे जब कि इनके दाहने हाथ की पहली उंगली (जो बीनकार की खास उंगली होती है जिसमें मिज़राब पहन कर बीन या सितार बजाया जाता है) पर से रथ का पहिया निकल गया और वह उंगली कुछ दिन बाद अलग हो गई. यह बड़े होने तक बीन की तालीम से महरूम रहे, सिर्फ़ गायकी (धुरपद धमार व आलापचारी) की शिक्षा पाते रहे. इनके देखते देखते इनके भाई बीन की तालीम में पूरे हो चले जिससे यह बड़े दुखी रहने लगे. गाने की तालीम इनकी पूरी हो चुकी थी पर बीन न बजा सकने का इनको इतना सदमा हुआ कि गाने का रियाज़ भी इन्होंने छोड़ दिया. यह उदास मन से इधर उधर घूमा करते या घर के एक कोने में चुप चाप बैठे रहते. इनके बाप मनरंग और अदारंग दोनों को बड़ी चिंता हुई. दोनों ने इन्हें बुला कर पूछा कि तुमको किस बात का दुख है. इन्होंने आँसू भर कर कहा कि 'इतनी उमर बीत गई और बीन की तालीम न मिल सकी, अब ज़िन्दा रह कर क्या करूँगा.' इस पर इनके वालिद और अदारंग दोनों ने इन्हें बहुत ढारस दिया और कहा कि अफ़सोस मत करो, हिन्दुस्तान में कोई बीनकार तुम्हारा सानी नहीं हो सकेगा. इसके बाद काठ की एक नकली उंगली जिसमें लोहे की लंबी मिज़राब बैठाई हुई थी, इनके लिये बनवा कर इन्हें पहनाई गई. फिर क्या था. रागों की तालीम इन्हें हो ही चुकी थी. साल भर में ही यह बीन बजाने में माहिर हो गये, यहां तक कि इनके बड़े भाई जीवन शाह भी इनके सामने बीन पर हाथ न रखते थे. इन्होंने अपना रियाज़ बहुत बढ़ा लिया था. दिल्ली

گولی کھیل رہے تھے جب کہ ان کے داہنے ہاتھ کی پہلی انگلی (جو بین کار کی خاص انگلی ہوتی ہے جس میں مضراب پہن کر بین یا ستار بجایا جاتا ہے) پر سے رتھ کا پہیہ نکل گیا اور وہ انگلی کچھ دن بعد الگ ہو گئی۔ یہ بڑے ہونے تک بین کی تعلیم سے محروم رہے، صرف گائکی (دھرپد دھمار و آلاپ چاری) کی شکشا پاتے رہے۔ ان کے دیکھتے دیکھتے ان کے بھائی بین کی تعلیم میں پورے ہو چلے جس سے یہ بڑے دکھی رہنے لگے۔ گانے کی تعلیم ان کی پوری ہو چکی تھی پر بین نہ بجا سکنے کا ان کو اتنا صدمہ ہوا کہ گانے کا ریاض بھی انھوں نے چھوڑ دیا۔ یہ اداس من سے ادھر ادھر گھوما کرتے یا گھر کے ایک کونے میں چپ چاپ بیٹھے رہتے۔ ان کے باپ من رنگ اور ادا رنگ دونوں کو بڑی چنتا ہوئی۔ دونوں نے انھیں بلا کر پوچھا کہ تم کو کس بات کا دکھ ہے۔ انھوں نے آنسو بھر کر کہا کہ 'اتنی عمر بیت گئی اور بین کی تعلیم نہ مل سکی، اب زندہ رہ کر کیا کروں گا'! اس پر ان کے والد اور ادا رنگ دونوں نے انھیں بہت ڈھارس دیا اور کہا کہ افسوس مت کرو، ہندستان میں کوئی بین کار تمھارا ثانی نہیں ہو سکے گا۔ اس کے بعد کاٹھ کی ایک نقلی انگلی جس میں لوہے کی لمبی مضراب بٹھائی ہوئی تھی، ان کے لئے بنوا کر انھیں پہنائی گئی۔ پھر کیا تھا، راگوں کی تعلیم انھیں ہو ہی چکی تھی۔ سال بھر میں ہی یہ بین بجانے کے ماہر ہو گئے، یہاں تک کہ ان کے بڑے بھائی جیون شاہ بھی ان کے سامنے بین پر ہاتھ نہ رکھتے تھے۔ انھوں نے اپنا ریاض بہت بڑھا لیا تھا۔ دلّی

सब लोग बड़े चकराये. बाप ने हँस कर पूछा किस दुख से यह संखिया खाने की सूझी. उन्होंने कहा आपने हमें बीन क्यों नहीं सिखाई ? या तो महीने भर में मुझे बीन सिखाओ या संखिया मँगा दो. बाप हँसे और फिर संजीदा होकर बोले अच्छा महीने भर में ही तुम्हें बीन बजानी आ जायगी पर शर्त यह है कि जितनी मेहनत मांगी जाय उतनी करना पड़ेगी. इन्होंने तुरत बाप के पैर छू कर क़सम खाई कि ऐसा ही करेंगे. फिर क्या था. यह वैसे थे जिसे अंगरेज़ी में पैदायशी 'जीनियस' या 'प्राडिगी' कहते हैं. कहा जाता है कि इनकी समझ और दिमाग़ से ख़ुद जीवन शाह परेशान रहते थे. देखते देखते इन्होंने अपने ख़ानदान के सब लोगों को पीछे छोड़ दिया. 'छोटे नबात ख़ाँ' की पदवी इनको गुनियों के उसी जलसे में दी गई जिसमें एक बार इनको ताना दिया गया था और जिसकी वजह से यह संखिया खाकर मरने पर आमादा हुये थे. यह एक सालाना जलसा हुआ करता था जिसमें सिर्फ़ गुनी लोग भाग लिया करते थे. इनके बारे में पंडित सुदर्शनाचार्य अपनी मशहूर किताब में यों लिखते हैं—

"मिस्री सिंह जी (नबात ख़ाँ) के बंस में अंत में रसबीन ख़ाँ जी भारी बीनकार हुए. लोग इनको दूसरे नबात ख़ाँ जी कहते थे. यह प्रथम (शुरू में).ऐसे ही फिरा करते थे. एक दिन एक समाज में निरादर (बेइज़्ज़ती) पाकर पिता से खाने को संखिया मांगा. पिता ने बहुत समझाया, कहा कि संखिया खाने की कोई जरूरत नहीं, परिश्रम (मेहनत) करो, चौबीस दिन में तुम से बीणा बजवा देंगे. ऐसा ही किया फिर तो यह बीणा के अद्वितीय (लासानी) उस्ताद हो गए."

سب لوگ بڑے چکرائے. باپ نے ہنس کر پوچھا کہ کس دکھ سے یہ سنکھیا کھانے کی سوجھی. انھوں نے کہا تم نے ہمیں بین کیوں نہیں سکھائی؟ یا تو مہینے بھر میں مجھے بین سکھاؤ یا سنکھیا منگا دو. باپ ہنسے اور پھر سنجیدہ ہوکر بولے اچھا مہینے بھر میں ہی تمھیں بین بجانی آجائے گی، پر شرط یہ ہے کہ جتنی محنت مانگی جائے اتنی کرنا پڑے گی. انھوں نے فوراً باپ کے پیر چھوکر قسم کھائی کہ ایسا ہی کریں گے. پھر کیا تھا. یہ ویسے تھے جسے انگریزی میں پیدائشی 'جینیس' یا 'پروڈیگی' کہتے ہیں. کہا جاتا ہے کہ ان کی سمجھ اور دماغ سے خود جیون شاہ پریشان رہتے تھے. دیکھتے دیکھتے انھوں نے اپنے خاندان کے سب لوگوں کو پیچھے چھوڑ دیا. 'چھوٹے نبات خاں' کی پدوی ان کو گنیوں کے اسی جلسے میں دی گئی جس میں ایک بار ان کو طعنہ دیا گیا تھا اور جس کی وجہ سے یہ سنکھیا کھا کر مرنے پر آمادہ ہوئے تھے. یہ ایک سالانہ جلسہ ہوا کرتا تھا جس میں صرف گنی لوگ ہی بھاگ لیا کرتے تھے. ان کے بارے میں پنڈت سدرشناچاریہ اپنی مشہور کتاب میں یوں لکھتے ہیں—

"مصری سنگھ جی (نبات خاں) کے ونش میں انت میں رس بین خاں جی بھاری بین کار ہوئے. لوگ ان کو دوسرے نبات خاں جی کہتے تھے یہ پرتھم (شروع میں) ایسے ہی پھرا کرتے تھے. ایک دن ایک سماج میں نرادر (بےعزتی) پاکر پتا سے کھانے کو سنکھیا مانگا. پتا نے بہت سمجھایا، کہا کہ سنکھیا کھانے کی کوئی ضرورت نہیں، پرشرم (محنت) کرو، چوبیس دن میں [illegible] (لاثانی) استاد ہو گئے"

निर्मल शाह और रसबीन ख़ाँ दोनों ही बहुत बड़े गुनी थे. हम इन दोनों को इस ख़ानदान के आख़िरी बड़े गुनी कह सकते हैं. दोनों भाइयों में कौन ज़्यादा गुनी था यह कहना कठिन है. निर्मल शाह बीन के आचार्य और पंडित थे तो रसबीन खां एक मौलिक कलाकार. इन के हाथ में कुछ कुदरती मिठास ऐसी थी जो इस ख़ानदान में किसी को नहीं मिली. कह कर रुलाते थे. इधर निर्मल शाह को चारों बानी पर कमाल हासिल था पर हाथ में वह रस नहीं था जो छोटे नबात खां में था. छोटे नबात खां को तो लोग मिस्री सिंह का अवतार ही कहते थे. मशहूर था कि जिस दिन से जीवन शाह (इनके वालिद) ने इनकी तालीम शुरू की उस दिन से मिस्री सिंह की रूह इनमें उतर आई थी. इधर निर्मल शाह के बजाने के ढंग में रस और मिठास के बजाय रागों की गहरी जानकारी और हद दर्जे के रियाज़ का ही पता ज़्यादा चलता था. इन के जिस्म में ताक़त और दम के साथ ही इनकी याददाश्त भी बहुत ज़बरदस्त थी. यह बीन पर इतना मोटा तार चढ़ाते थे और तारों का खिंचाव इतना ऊँचा रखते थे कि कोई दूसरा इनकी बीन नहीं बजा सकता था. इनके बीन की आवाज़ इतनी बुलंद और ऊँची होती थी कि बड़े से बड़े जलसे में कोने कोने तक का आदमी बारीक से बारीक हरकतों तक को बख़ूबी सुन सकता था. बीन यों बड़ा नाज़ुक बाजा है जिस की बारीक आवाज़ों को पास बैठे हुए दस पाँच आदमी ही सुन सकते हैं.

निर्मलशाह जितना बजाने के फ़न में माहिर थे उससे कहीं

نرمل شاہ اور رس بین خاں دونوں ہی بہت بڑے گنی تھے۔ ہم ان دونوں کو اس خاندان کے آخری بڑے گنی کہہ سکتے ہیں۔ دونوں بھائیوں میں کون زیادہ گنی تھا یہ کہنا کٹھن ہے۔ نرمل شاہ بین کے آچاریہ اور پنڈت تھے تو رس بین خاں ایک مولک کلاکار۔ ان کے ہاتھ میں کچھ قدرتی مٹھاس ایسی تھی جو اس خاندان میں کسی کو نہیں ملی۔ کہہ کر رلاتے تھے۔ ادھر نرمل شاہ کو چاروں بانی پر کمال حاصل تھا۔ پر ہاتھ میں وہ رس نہیں تھا جو چھوٹے نبات خاں میں تھا۔ چھوٹے نبات خاں کو تو لوگ مصری سنگھ کا اوتار ہی کہتے تھے۔ مشہور تھا کہ جس دن سے جیون شاہ (ان کے والد) نے ان کی تعلیم شروع کی اس دن سے مصری سنگھ کی روح ان میں اتر آئی تھی۔ ادھر نرمل شاہ کے باجے بجانے کے ڈھنگ میں رس اور مٹھاس کے بجائے راگوں کی گہری جانکاری اور حد درجے کے ریاض کا ہی پتہ زیادہ چلتا تھا۔ ان کے جسم میں طاقت اور دم کے ساتھ ہی ان کی یادداشت بھی بہت زبردست تھی۔ یہ بین پر اتنا موٹا تار چڑھاتے تھے اور تاروں کا کھنچاؤ اتنا اونچا رکھتے تھے کہ کوئی دوسرا ان کی بین نہیں بجا سکتا تھا۔ ان کے بین کی آواز اتنی بلند اور اونچی ہوتی تھی کہ بڑے سے بڑے جلسے میں کونے کونے تک کا آدمی باریک سے باریک حرکتوں تک کو بخوبی سن سکتا تھا۔ بین یوں بڑا نازک باجا ہے جس کی باریک آوازوں کو پاس بیٹھے ہوئے دس پانچ آدمی ہی سن سکتے ہیں۔

نرمل شاہ جتنا بجانے کے فن میں ماہر تھے اس سے کہیں

ज्यादा तालीम देने का माद्दा उनमें था. यह विद्यादान में अपने घराने में सब से ज्यादा फ़ैयाज़ थे. सेनी घराने में यह रिवाज चला आया है कि यह अपनी औलाद के सिवा किसी बाहरी को अपनी खान्दानी विद्या नहीं सिखाते और सिखाते भी थे तो इधर उधर की चीज़ें जैसे ख्याल या सितार. धुरपद या बीन और किसी को नहीं सिखाते थे. निर्मल शाह पहले उस्ताद थे जिन्होंने अपने से बाहर के कुछ लोगों को सच्चे दिल से अपने घर की विद्या सिखाई. नतीजा यह हुआ कि कुछ ऐसे घराने चले जो तानसेन की औलाद न होते हुए भी इल्म में सेनियों से आगे निकल गये. इसका जस सबसे पहले निर्मल शाह को ही मिलेगा. इनके धुरपदी घराने में मशहूर मुशर्रफ़ खां के बुजुर्ग हुए. इस युग के सबसे बड़े धुरपदी और आलापिये उदयपुर के अलाबंदे खां और उनके बेटे नसीरुद्दीन खां हुए. यह दोनों लखनऊ की सन् १९२४ वाली आल इंडिया म्यूज़िक कान्फ़रेंस में शरीक हुए थे और लगातार ६ घंटे तक इनका आलाप ही चलता रहा. इस कानफ़रेन्स को रूप दिया था रामपुर के प्रिंस सआदत अली खां उर्फ़ छम्मन साहब, पं० भातखंडे और राजा नवाब अली साहब ने. हर एक स्वर की श्रुतियों का काम इन्होंने दिखाया जो शायद अब कोई भी नहीं कर पाता. अलाबंदे खां साहब के बेटे नसीरुद्दीन खां साहब यहां इलाहाबाद की दो तीन शुरू की कान्फ़रेंसों में शरीक हो चुके हैं. वह मेजर डा० रनजीत सिंह साहब के यहां उतरते थे जो उनके खास दोस्त थे. इन्होंने भी रात के १२ बजे से सुबह ६ बजे तक एक आसन से म्योर कालेज के विजयानगरम हाल में आलाप सुनाया है और जिसे सुनने का

زیادہ تعلیم دینے کا مادّہ اُن میں تھا. یہ ودیادان میں اپنے گھرانے میں سب سے زیادہ فیاض تھے. سینی گھرانے میں یہ رواج چلا آیا ہو کہ یہ اپنی اولاد کے سوا کسی باہری کو اپنی خاندانی ودیا نہیں سکھاتے اور سکھاتے بھی تھے تو اِدھر اُدھر کی چیزیں جیسے خیال یا ستار. دُھرپد یا بین اور کسی کو نہیں سکھاتے تھے. نرمل شاہ پہلے اُستاد تھے جنھوں نے اپنے گھرانے سے باہر کے کچھ لوگوں کو سچّے دل سے اپنے گھر کی وِدّیا سکھائی. نتیجہ یہ ہوا کہ ایسے گھرانے چلے جو تان سین کی اولاد نہ ہوتے ہوئے بھی علم سے سینیوں سے آگے نکل گئے. اس کا جس سب سے پہلے نرمل شاہ کو ہی ملے گا. ان کے دھرپدی گھرانے میں مشہور مشرف خاں کے بزرگ ہوئے. اس یگ کے سب سے بڑے دُھرپدی اور آلاپیے اودے پور کے الہ بندے خاں اور اُن کے بیٹے نصیرالدین خاں ہوئے. یہ دونوں لکھنؤ کی ۱۹۲۴ء والی آل انڈیا میوزک کانفرنس میں شریک ہوئے تھے اور لگاتار چھ گھنٹے تک ان کا آلاپ ہی چلتا رہا. اس کانفرنس کو روپ دیا تھا رام پور کے پرنس سعد علی خاں عرف چھمن صاحب، پنڈت بھات کھنڈے اور راجا نواب علی صاحب نے. ہر ایک سُر کی سرتیوں کا کام انھوں نے دکھایا جو شاید اب کوئی بھی نہیں کر پاتا. الہ بندے صاحب کے بیٹے نصیرالدین خاں صاحب یہاں الہ آباد کی دو تین شروع کی کانفرنسوں میں شریک ہو چکے ہیں. وہ میجر ڈاکٹر رنجیت سنگھ صاحب کے یہاں ٹھہرتے تھے جو ان کے خاص دوست تھے. انھوں نے بھی رات کے ۱۲ بجے سے صبح ۶ بجے تک ایک آسن سے میور کالج کے وجے نگرم ہال میں آلاپ سنایا ہے اور جسے سننے کا

इत्तफ़ाक़ इन सतरों के लिखने वाले को भी हुआ है. मेजर साहब ने इनको 'संगीत रतन' की पदवी दी थी जिसको यह फ़ख़्र से अपने नाम के साथ जोड़ते थे. इनका पहनावा, इनकी पगड़ी वग़ैरा बिलकुल राजपूतों की तरह होती थी और राजपूतों ही की तरह यह दाढ़ी चढ़ा कर बांधते थे. यह मेजर साहब के बंगले पर सुबह चार घंटे रोज़ नितनेम से रियाज़ करते थे. प्रयाग संगीत समिति के पहले प्रेसिडेंट डा० ताराचन्द साहब व मेजर साहब की कोशिश से डा० डी० आर० भट्टाचार्य की देखरेख में यूनिवर्सिटी म्यूज़िक एसोसियेशन और पहली यूनिवर्सिटी म्यूज़िक कान्फरेंस की थापना हुई जिसमें नसीरुद्दीन साहब शरीक थे. इस सूबे में और ख़ास कर इस शहर में संगीत के प्रचार की शुरुआत मेजर साहब से ही हुई जिसमें डा० ताराचन्द साहब और डा० डी० आर० भट्टाचार्य ने ख़ास तौर से हाथ बटाया. अलाबंदे ख़ां साहब के भाई ज़ाकिरुद्दीन ख़ां साहब थे. यह दोनों आम तौर से साथ साथ बैठकर गाते थे. दोनों में कौन बढ़ कर था यह कहना मुमकिन-नहीं.

मशहूर ख़्यालिये शकर मक्खन ख़ां निर्मल शाह के ही शागिर्द थे. पिछली सदी के सबसे बड़े बीनकार बंदेअली ख़ां इनके ख़्याली शिष्य परंपरा (चेलों की नसल) में पैदा हुये थे. मुराद ख़ां सरोदिये भी इसी परंपरा में थे जिनके घराने के सरोदनिवाज़ हफ़ीज़ अली ख़ां साहब आज हिन्दुस्तान के सबसे बड़े सरोदिये हैं. हिन्दुस्तान के सबसे बड़े सितारिये उस्ताद इमदाद ख़ां भी इसी परंपरा में हुए थे. इनके बेटे इनायत ख़ां यहाँ बराबर

اتفاق ان سطروں کے لکھنے والے کو بھی ہوا ہے۔ میجر صاحب نے ان کو سنگیت رتن کی پدوی دی تھی جس کو یہ فخر کے ساتھ اپنے نام کے ساتھ جوڑتے تھے۔ ان کا پہناوا، ان کی پگڑی وغیرہ بالکل راجپوتوں کی طرح ہوتی تھی اور راجپوتوں کی طرح یہ داڑھی چڑھا کر باندھتے تھے۔ یہ میجر صاحب کے بنگلے پر صبح چار گھنٹے روز نت نیم سے ریاض کرتے تھے۔ پریاگ سنگیت سمتی کے پہلے پریسیڈنٹ ڈاکٹر تاراچند صاحب و میجر صاحب کی کوشش سے ہی ڈاکٹر ڈی۔ آر۔ بھٹاچاریہ کی دیکھ ریکھ میں یونیورسٹی میوزک ایسوسی ایشن اور پہلی یونیورسٹی میوزک کانفرنس کی تھاپنا ہوئی جس میں نصیرالدین صاحب شریک تھے۔ اس صوبے میں اور خاص کر اس شہر میں سنگیت کے پرچار کی شروعات میجر صاحب سے ہی ہوئی جس میں ڈاکٹر تاراچند صاحب اور ڈاکٹر ڈی۔ آر۔ بھٹاچاریہ نے خاص طور سے ہاتھ بٹایا۔ الہ بندے خاں صاحب کے بھائی ذاکرالدین خاں صاحب تھے۔ یہ دونوں عام طور سے ساتھ ساتھ بیٹھ کر گاتے تھے۔ دونوں میں کون بڑھ کر تھا یہ کہنا ممکن نہیں۔

مشہور خیالئے شکر مکھن خاں نرمل شاہ کے شاگرد تھے۔ پچھلی صدی کے سب سے بڑے بین کار بندے علی خاں ان کے خیالی ششیہ پرم پرا (چیلوں کی نسل) میں پیدا ہوئے تھے۔ مراد خاں سرودیے بھی اسی پرم پرا میں تھے جن کے گھرانے کے سرودنواز حفیظ علی خاں صاحب آج ہندستان کے سب سے بڑے سرودیے ہیں۔ ہندستان کے سب سے بڑے ستاریے بھی استاد امداد خاں صاحب بھی اسی پرم پرا میں ہوئے تھے۔ ان کے بیٹے عنایت خاں یہاں برابر

आते रहे हैं और अपने वालिद के बाद सितार में सब से ज्यादा नाम इन्होंने ही किया.

इस तरह हम देखते हैं कि निर्मल शाह ने इस विद्या का खुले हाथ प्रचार किया. इसकी एक वजह यह भी हो सकती है कि इनके कोई पुत्र संतान (बेटा) नहीं थी, सिर्फ एक लड़की थी. वंस चला इनके भाई रसबीन खां (छोटे नबात खां) की औलाद से. उमराव खां रसबीन खां के बेटे थे और यह भी अपने बुज़ुर्गों के नाम बक़रार रख सके थे. उमराव खां ने भी अपने चचा की तरह बहुत से अच्छे अच्छे शागिर्द तैयार किये जिनमें वज़ीर कुतुबुद्दौला और गुलाम मुहम्मद खां बहुत मशहूर हैं. कुतुबुद्दौला को उन्होंने एक बहुत बड़े सितार पर बीन के पूरे आलाप की तालीम दी थी. यही यंत्र आगे चलकर 'सुरबहार' नाम से मशहूर हुआ जिसमें सज्जाद मुहम्मद खां, इमदाद खां और इनायत खां साहब ने कमाल हासिल किया. कुतुबुद्दौला अयोध्या के राजा के वज़ीर थे और यहीं उमराव खां अर्से तक रहे. गुलाम मुहम्मद खां के ही बेटे सज्जाद मुहम्मद खां साहब थे जो सुरबहार के आलाप में अपना सानी नहीं रखते थे और इन्हीं के खास शागिर्द थे उस्ताद इमदाद खाँ साहब. इनके बेटे इनायत खां ने भी जिन्हें हम लोगों ने यहाँ कई साल तक सुना है एक अर्से तक सज्जाद मुहम्मद खां से तालीम ली है. सज्जाद मुहम्मद खां साहब स्वर्गीय राजा सौरींद्र मोहन टैगोर के यहाँ अर्से तक रहे और उन्हें तंत्र की तालीम देते थे. यह साफ है कि सितार और सुरबहार के सबसे बड़े उस्तादों को रूप देने का जस भी उमराव खां बीनकार को ही है.

آتے رہے ہیں اور اپنے والد کے بعد ستار میں سب سے زیادہ نام انھوں نے ہی کیا۔

اس طرح ہم دیکھتے ہیں کہ نرمل شاہ نے اس ودیا کا کھلے ہاتھ پرچار کیا۔ اس کی وجہ یہ بھی ہوسکتی ہے کہ ان کے کوئی پتر سنتان (بیٹا) نہیں تھی۔ صرف ایک لڑکی تھی۔ بنس چلا ان کے بھائی رس بین خاں (چھوٹے نبات خاں) کی اولاد سے۔ امراؤ خاں رس بین خان کے بیٹے تھے اور یہ بھی اپنے بزرگوں کے نام کو برقرار رکھ سکے تھے۔ امراؤ خاں نے بھی اپنے چچا کی طرح بہت سے اچھے اچھے شاگرد تیار کئے جن میں وزیر قطب الدولہ اور غلام محمد خاں بہت مشہور ہیں۔ قطب الدولہ کو انھوں نے ایک بہت بڑے ستار پر بین کے پورے آلاپ کی تعلیم دی تھی۔ یہی یتر آگے چل کر 'سُربہار' نام سے مشہور ہوا جس میں سجاد محمد خاں، امداد خاں اور عنایت خاں صاحب نے کمال حاصل کیا۔ قطب الدولہ اجودھیا کے راجا کے وزیر تھے اور یہیں امراؤ خاں عرصے تک رہے۔ غلام محمد خاں کے ہی بیٹے سجاد محمد خاں صاحب تھے جو سُربہار کے آلاپ میں اپنا ثانی نہیں رکھتے تھے اور انھیں کے خاص شاگرد تھے اُستاد امداد خاں صاحب ان کے بیٹے عنایت خاں نے بھی جنھیں ہم لوگوں نے یہاں کئی سال تک سنا ہے ایک عرصے تک سجاد محمد خاں صاحب سے تعلیم لی ہے۔ سجاد محمد خاں صاحب سورگیہ راجا سورِیندر موہن ٹیگور کے یہاں عرصے تک رہے اور انھیں تنتر کی تعلیم دیتے تھے۔ یہ صاف ہے کہ ستار اور سُربہار کے سب سے بڑے اُستادوں کو روپ دینے کا جس بھی امراؤ خاں بین کار کو ہی ہے۔

उमराव खां के दो बेटे थे अमीर खां. और रहीम खां इनमें से अमीर खां ज़्यादा मशहूर हुए. इन्होंने भी कई अच्छे शागिर्द तय्यार किये जिनमें से बनारस के मिठाईलाल और मिर्ज़ापुर के पं० जोखूराम का नाम खास तौर से लिया जा सकता है.

अमीर खां साहब से ज़्यादा मशहूर हुए इनके लड़के और उमराव खां के पोते वज़ीर खां साहब जो नवाब रामपुर के गुरू थे. रामपुर में पहले इनके वालिद अमीर खां गये. उस वक़्त नवाब कल्बे अली खां के गुरू बहादुर सेन वहाँ पहले से मौजूद थे और उनके उस्ताद भी थे. बहादुर सेन धुरपदी और रबाबी थे और हिन्दुस्तान में उस वक़्त वह सब के ऊपर माने जाते थे. यह तानसेन के पुत्र बंस में थे. नवाब रामपुर की दिली मनशा थी कि दिल्ली दरबार की तरह उनके दरबार में देश के सबसे बड़े बड़े गुनी मौजूद हों. एक हद तक उनकी यह मनशा पूरी भी हुई. अमीर खां वीनकार और बहादुर सेन धुरपदी व रबाबी के सिवा उनके दरबार में बासर-अली खां ख्यालिये भी थे.

अमीर खां के इतंक़ाल के वक़्त हैदर अली खां साहब रामपुर के नवाब थे. अमीर खां ने नौजवान वज़ीर खां को इन्हीं के हाथ सौंपा.

वज़ीर खां इस जुग की एक बहुत बड़ी हस्ती थे. स्वर्गीय पंडित भातखंडे और राजा नवाब अली के यह गुरू थे. इनके बारे में हम अगले नम्बर में कुछ बतायेंगे.

امراؤ خاں کے دو بیٹے تھے امیر خاں اور رحیم خاں ان میں سے امیر خاں زیادہ مشہور ہوئے. انھوں نے بھی کئی اچھے شاگرد تیار کئے جن میں سے بنارس کے مٹھائی لال اور مرزا پور کے پنڈت جوکھو رام کا نام خاص طور سے لیا جاسکتا ہے.

امیر خاں صاحب سے زیادہ مشہور ہوئے ان کے لڑکے اور امراؤ خاں کے پوتے وزیر خاں صاحب جو نواب رام پور کے گرو تھے۔ رام پور میں پہلے ان کے والد امیر خاں گئے. اس وقت نواب کلب علی خاں کے گرو بہادر سین وہاں پہلے سے موجود تھے اور اُن کے اُستاد بھی تھے. بہادر سین دھرپدی اور ربابی تھے اور ہندستان میں اُس وقت وہ سب کے اوپر مانے جاتے تھے. یہ تان سین کے پُتر بنس میں تھے. نواب رام پور کی دلی منشا تھی کہ دلّی دربار کی طرح ان کے دربار میں دیش کے سب سے بڑے بڑے گنی موجود ہوں۔ ایک حد تک اُن کی یہ منشا پوری بھی ہوئی. امیر خاں بین کار اور بہادر سین دھرپدی و ربابی کے سوا اُن کے دربار میں باصر علی خاں خیالئے بھی تھے.

امیر خاں کے انتقال کے وقت حیدر علی خاں صاحب رام پور کے نواب تھے. امیر خاں نے نوجوان وزیر خاں کو انھیں کے ہاتھ سونپا.

وزیر خاں اس جگ کی ایک بہت بڑی ہستی تھے. سورگیہ پنڈت بھات کھنڈے اور راجا نواب علی کے یہ گرو تھے. ان کے بارے میں ہم اگلے نمبر میں کچھ بتائیں گے.

आज की दुनिया

(श्री '.फ़ुन्ज़ियन')

❋माउन्टबेटन के फ़ैसले को नेताओं का मनमाने अख़्तियार से मान लेना और गवर्नरों का उस पर अमल कराना❋

❋ब्रिटिश इन्डिया की हकूमतें एक दूसरे से आज़ाद मगर बर्तानिया के आधीन❋

❋सूबों के बटवारे में दुश्मनी के बीज ❋

❋वाइसराय के फ़ैसले से खूनी घरेलू लड़ाई का होना यक़ीनी❋

❋पैरामाउन्टसी (आला-अख़्तियार) के वापसी के असूल को छोड़ देने में अंगरेज़ों की चाल❋

माउन्टबेटन का फ़ैसला—

लार्ड माउन्टबेटन ने ४ जून को बहुत सी और बातों के साथ यह भी कहा—' मुमकिन है कि हमको नाव पर बैठा कर समन्दर में धक्का दे दिया जाए." अंगरेज़ अफ़सरों के ख़याल में 'हिन्द छोड़ो' का यही मतलब है. जनाब वाइसराय ने इस ताने से जो हमारे घाव पर नमक छिड़का है उसके हम कहाँ तक हक़दार हैं इस बात की जाँच हम नीचे लिखी हुई बातों पर विचार करके करेंगे—(१) राजकाजी (२) माली (३) फ़ौजी (४) हिन्दुस्तान के राजे महाराजे और हिन्दुस्तान का ग़ैर मुल्कों से ताल्लुक़.

آج کی دُنیا

(شری 'فرونزین')

٭ ماؤنٹ بیٹن کے فیصلے کو نیتاؤں کا من مانے اختیار سے مان لینا اور گورنروں کا اُس پر عمل کرانا ٭

٭ برٹش انڈیا کی حکومتیں ایک دوسرے سے آزاد مگر برطانیہ کے ادھین ٭

٭ صوبوں کے بٹوارے میں دشمنی کے بیج ٭

٭ وائسرائے کے فیصلے سے خونی گھریلو لڑائی کا ہونا یقینی ٭

٭ پیراماونٹسی (اعلیٰ اختیار) کے واپسی کے اصول کو چھوڑ دینے میں انگریزوں کی چال ٭

ماؤنٹ بیٹن کا فیصلہ—

لارڈ ماؤنٹ بیٹن نے ۴ جون کو بہت سی اور باتوں کے ساتھ یہ بھی کہا—"ممکن ہے ہم کو ناؤ پر بیٹھاکر سمندر میں دھکا دے دیا جائے۔" انگریز افسروں کے خیال میں 'ہند چھوڑو' کا یہی مطلب ہے. جناب وائسرائے نے اس طعنہ سے جو ہمارے گھاؤ پر نمک چھڑکا ہے اس کے ہم کہاں تک حق دار ہیں اس بات کی جانچ ہم نیچے لکھی ہوئی باتوں پر وچار کر کے کریں گے— (۱) راج کاجی (۲) مالی (۳) فوجی (۴) ہندستان کے راجے مہاراجے اور ہندستان کا غیر ملکوں سے تعلق.

अंगरेज़ी साम्राजी तदबीरों पर, जो सचमुच हमारे ख़िलाफ़ हैं, बहस करना आसान है पर अंगरेज़ी साम्राज के हिन्दुस्तानी मददगारों (काँगरेस और लीग) की बेतुकी चालों को समझना मुश्किल है. ज़ाहिर में मुसलिम लीग ने तो ईमानदारी से माउन्टबेटन के फ़ैसले को मान लिया है पर इससे जो ख़तरे पैदा होंगे उसे बहुत कम लोग समझते हैं. दूसरी तरफ़ काँगरेस के नेताओं ने आल इन्डिया काँगरेस कमेटी की इजाज़त बिना और जनता की राय पूछे बग़ैर ही इसको मान लिया और अब कहते हैं कि इससे आज़ादी हासिल होगी और हिन्दुस्तानी एकता प्राप्त होगी ! यह अजीब बात है.

पिछली फ़रवरी के हाउस आफ़ लार्डस के एक जलसे में, बादशाह की सरकार के बयान में हिन्दुस्तान के लिये 'फ़्रीडम' (आज़ादी) शब्द के इस्तेमाल पर कनज़रवेटिव पार्टी की तरफ़ से एतराज़ किया गया था. इसके जवाब में गवरमेन्ट की तरफ़ से यह कहा गया कि 'फ़्रीडम' लफ़्ज़ का इस्तेमाल लफ़्ज़ 'इनडिपेनडेन्स' (ख़ुदमुख़्तारी) की जगह ज़्यादा ठीक समझा गया और यह कि बादशाह की सरकार हिन्दुस्तान को बहुत हद तक आज़ादी देती है. इसका मतलब साफ़ है. एक कुत्ते को, जो एक छोटी सी ज़ंजीर में बँधा हो, न तो आज़ादी ही हासिल होती है और न ख़ुदमुख़्तारी. पर जिस कुत्ते को एक लम्बी ज़ंजीर से बाँध दिया गया हो उसके बारे में यह तो कहा जा सकता है कि उसको बड़ी हद तक आज़ादी हासिल है, मगर यह नहीं

انگریزی سامراجی تدبیروں پر، جو سچ مچ ہمارے خلاف ہیں، بحث کرنا آسان ہے پر انگریزی سامراج کے ہندستانی مددگاروں (کانگریس اور لیگ) کی بے تکی چالوں کو سمجھنا مشکل ہے. ظاہر میں مسلم لیگ نے تو ایمانداری سے ماؤنٹ بیٹن کے فیصلے کو مان لیا ہے پر اس سے جو خطرے پیدا ہوں گے اسے بہت کم لوگ سمجھتے ہیں. دوسری طرف کانگریس کے نیتاؤں نے آل انڈیا کانگریس کمیٹی کی اجازت بنا اور جنتا کی رائے پوچھے بغیر ہی اس کو مان لیا اور اب کہتے ہیں کہ اس سے آزادی حاصل ہوگی اور ہندستانی ایکتا پراپت ہوگی! یہ عجیب بات ہے.

پچھلی فروری کے ہاؤس آف لارڈس کے ایک جلسے میں بادشاہ کی سرکار کے بیان میں ہندستان کے لئے 'فریڈم' (آزادی) شبد کے استعمال پر کنزرویٹیو پارٹی کی طرف سے اعتراض کیا گیا تھا. اس کے جواب میں گورنمنٹ کی طرف سے یہ کہا گیا تھا کہ 'فریڈم' لفظ کا استعمال لفظ 'انڈپینڈنس' (خودمختاری) کی جگہ زیادہ ٹھیک سمجھا گیا اور یہ کہ بادشاہ کی سرکار ہندستان کو بہت حد تک آزادی دیتی ہے. اس کا مطلب صاف ہے. ایک کتے کو، جو ایک چھوٹی سی زنجیر میں بندھا ہو، نہ تو آزادی ہی حاصل ہوتی ہے اور نہ خودمختاری. پر جس کتے کو ایک لمبی زنجیر سے باندھ دیا گیا ہو اس کے بارے میں یہ تو کہا جا سکتا ہے کہ اس کو بڑی حد تک آزادی حاصل ہے، مگر یہ نہیں

कहा जा सकता कि वह खुदमुख्तार है. बादशाह की सरकार ने अब हिन्द का बटवारा कर दिया है और दोनों हिस्सों को डोमीनियन स्टेटस की शकल में काफ़ी आजादी दे दी है मगर 'इनडिपेनडेन्स' किसी को नहीं दी है.

इस बात पर ज़ोर देने के बाद कि लार्ड माउन्टबेटन के फ़ैसले से हिन्दुस्तान को इनडिपेनडेन्स (खुदमुख्तारी) हासिल होती है और इससे एका भी हो सकता है, कांगरेसी नेता खुद तो परदे के पीछे हो गए हैं और गांधी जी को आगे कर दिया है. इस वक़्त तो गांधी जी ही अंगरेज़ों और कांगरेसी नेताओं दोनों की हिमायत कर रहे हैं. वही हिन्दुओं को हिन्दुस्तान के बटवारे के लिये राज़ी करने की कोशिश करते हैं; बंगाल और पंजाब के उन हिन्दू और सिक्ख हिस्सों को राज़ी रखना चाहते हैं जिन्होंने पहले तो काँगरेस की हिदायत से सूबों के बटवारे के असूल को मान लिया लेकिन अब वह पाकिस्तान को मालदार और मज़बूत बनाने के लिये पाकिस्तान में ही शामिल किये जा रहे हैं.

फ़ैसले का संगीनों से मनवाया जाना—

३ जून को मिस्टर पिटर फ्री मैन ने हाउस आफ़ कामन्स में पूछा कि अगर हिन्दुस्तान की पार्टियाँ आपस में मिल गईं और आपस में पहले से ज़्यादा मेल हो गया तो इससे पैदा होने वाली हालत के लिये क्या इन्तज़ाम सोचा गया है. इस पर बड़े वज़ीर एटली ने जवाब दिया कि—'मेरे ख़याल में यह सोचना बहुत दूर की बात होगी. या दूसरे शब्दों में सवाल पूछने वाले का मतलब

کہا جاسکتا ہو کہ وہ خود مختار ہو. بادشاہ کی سرکار نے اب ہند کا بٹوارا کردیا ہو اور دونوں حصّوں کو ڈومینین اسٹیٹس کی شکل میں کافی آزادی دے دی ہو مگر 'انڈیپنڈنٹس' کسی کو نہیں دی ہو.

اِس بات پر زور دینے کے بعد لارڈ ماونٹ بیٹن کے فیصلے سے ہندستان کو انڈیپنڈینس (خود مختاری) حاصل ہوتی ہو اور اِس سے ایکا بھی ہوسکتا ہو، کانگریسی نیتا خود تو پردے کے پیچھے ہوگئے ہیں اور گاندھی جی کو آگے کردیا ہو. اِس وقت تو گاندھی جی ہی انگریزوں اور کانگریسی نیتاؤں دونوں کی حمایت کررہے ہیں. وہی ہندوؤں کو ہندستان کے بٹوارے کے لئے راضی کرنے کی کوشش کرتے ہیں؛ بنگال اور پنجاب کے اُن ہندو اور سکھ حصّوں کو راضی رکھنا چاہتے ہیں جنھوں نے پہلے تو کانگریس ہدایت سے صوبوں کے بٹوارے کے اصول کو مان لیا لیکن اب وہ پاکستان کو مالدار اور مضبوط بنانے کے لئے پاکستان میں ہی شامل کئے جارہے ہیں.

فیصلے کا سنگینوں سے منوایا جانا—

۳ جون کو مسٹر فری مین نے ہاؤس آف کامنس میں پوچھا کہ اگر ہندستان کی پارٹیاں آپس میں مل گئیں اور آپس میں پہلے سے زیادہ میل ہوگیا تو اس سے پیدا ہونے والی حالت کے لئے کیا انتظام سوچا گیا ہو. اِس پر بڑے وزیر ایٹلی نے جواب دیا کہ "میرے خیال میں یہ سوچنا بہت دور کی بات ہوگی. یا دوسرے شبدوں میں سوال پوچھنے والے کا مطلب

यह था कि अगर हिन्दुस्तानी पार्टियाँ अँगरेज़ी साम्राज के ख़िलाफ़ मिल जाएं तो उनके रोकने का क्या इन्तज़ाम किया गया है. एटली के बयान के मुताबिक़ माउन्टबेटन के फ़ैसले से हिन्दुस्तानियों का एका नामुमकिन है सिवा उस सूरत के कि जब वहाँ कोई इनक़लाब हो जाए. काँगरेस और लीग को हिन्दुस्तान के बटवारे के ज़रिये ताक़त में थोड़ा सा हिस्सा देना, जान बूझ कर आज़ादी के बहाने, जनता के दिल में अँगरेज़ी साम्राज की जड़ मज़बूत करना है.

पंडित नेहरू, सरदार पटेल और आचार्य कृपलानी ने वाइसराय का फ़ैसला बिना आल इन्डिया काँगरेस कमेटी की इजाज़त के मान लिया. इसके बाद १४ जून को आल इन्डिया काँगरेस कमेटी से इस फ़ैसले की मंज़ूरी लेना यह ज़ाहिर करता है कि आल इन्डिया काँगरेस कमेटी सिर्फ़ चन्द नेताओं की उँगली पर नाचती है. अगर आल इन्डिया काँगरेस कमेटी अपने माने हुए असूल पर ही क़ायम रहती और नेहरू, पटेल और कृपलानी के ख़िलाफ़ भी हो जाती तब भी कोई फ़ायदा न होता. क्योंकि नेताओं ने और ब्रिटिश गवरमेन्ट ने, जिसके फ़ायदे के लिये यह कारवाई की गई, मिल कर माउन्टबेटन के फ़ैसले की कामयाबी में किसी क़िस्म के विरोध को सख़्ती से दबाने का इरादा कर लिया था.

यूनियन कान्सटिट्यूशन ड्राफ्टिङ्ग और प्राविन्शिअल कान्सटिट्यूशन कमेटी के एक मिले जुले जलसे में, जो नई देहली में ९ जून को हुआ था, यह तय हुआ कि सूबाई गवरनरों को यह अख़्तियार दिया जाए कि 'देश के भीतर होने वाले ऐसे बलवों को

یہ تھا کہ اگر ہندستانی پارٹیاں انگریزی سامراج کے خلاف مل جائیں تو اُن کے روکنے کا کیا انتظام کیا گیا ہے. ایٹلی کے بیان کے مطابق ماونٹ بیٹن کے فیصلے سے ہندستانیوں کا ایکا ناممکن ہے سوا اس صورت کے کہ جب وہاں کوئی انقلاب ہو جائے. کانگریس اور لیگ کو ہندستان کے بٹوارے کے ذریعے طاقت میں تھوڑا سا حصہ دینا، جان بوجھ کر آزادی کے بہانے، جنتا کے دل میں انگریزی سامراج کی جڑ مضبوط کرنا ہے.

پنڈت نہرو، سردار پٹیل اور آچاریہ کرپلانی نے وائسرائے کا فیصلہ بنا آل انڈیا کانگریس کمیٹی کی اجازت کے مان لیا. اس کے بعد ۱۴ جون کو آل انڈیا کانگریس کمیٹی سے اس فیصلے کی منظوری لینا یہ ظاہر کرتا ہے کہ آل انڈیا کانگریس کمیٹی صرف چند نیتاؤں کی انگلی پر ناچتی ہے. اگر آل انڈیا کانگریس کمیٹی اپنے مانے ہوئے اصول پر ہی قایم رہتی اور نہرو، پٹیل اور کرپلانی کے خلاف بھی ہو جاتی تب بھی کوئی فائدہ نہ ہوتا. کیونکہ نیتاؤں نے اور برٹش گورنمنٹ نے، جس کے فائدے کے لئے یہ کارروائی کی گئی، مل کر ماونٹ بیٹن کے فیصلے کی کامیابی میں کسی قسم کے ورودھ کو سختی سے دبانے کا ارادہ کر لیا تھا.

یونین کانسٹی ٹیوشن ڈرافٹنگ اور پراونشل کانسٹی ٹیوشن کمیٹی کے ایک ملے جلے جلسے میں، جو نئی دہلی میں ۹ جون کو ہوا تھا، یہ طے ہوا کہ صوبائی گورنروں کو یہ اختیار دیا جائے کہ دیش کے بھیتر ہونے والے ایسے بلووں کو

रोकने के लिये मुनासिब कार्रवाई करें जिनसे इनके अपने सूबे के कान्सटिट्यूशन के टूट जाने का डर हो'. सूबाई गवरनरों को यह अख्तियार लार्ड माउन्टबेटन के फ़ैसले पर अमल कराने के लिये है. इन खास अख्तियारों से काम लेने के लिये सूबाई गवरनर सीधे फेडरल प्रेसीडेन्ट के ही मातहत होंगे. इस मामले में सूबाई वज़ीरों की कौन कहे, हिन्दुस्तान या पाकिस्तान के बड़े वज़ीरों तक का कोई अख्तियार न होगा. कैसी अच्छी आज़ादी हिन्दुस्तानियों की गरदन पर लादी जा रही है!

नेहरू, पटेल और कृपलानी को आल इन्डिया कॉंगरेस कमेटी से किसी ऐसे फ़ैसले को मान लेने का कोई अख्तियार नहीं मिला था जिससे हिन्दुस्तान के टुकड़े होते हों. पर इन नेताओं के इस फ़ैसले को मानते ही और आल इन्डिया कॉंगरेस कमेटी की मंज़ूरी से पहले ही फ़ैसले पर तेज़ी से अमल शुरू हो गया. १५ अगस्त तक तमाम कार्रवाई पूरी हो जाने की तारीख़ मुक़र्रर कर दी गई. अब रिपोर्टों से ऐसा मालूम होता है कि १५ अगस्त तक हिन्दुस्तान और पाकिस्तान को डोमीनियन स्टेटस न मिलेगा बल्कि उसके बाद कहीं उस वक़्त मिलेगा जब बादशाह की सरकार हिन्दुस्तानी फ़ौजों के बारे में अपनी पालिसी तै कर लेगी.

इस वक़्त तो बादशाह की सरकार की मन्शा ऐसी मालूम होती है कि तमाम फ़ौजें तो पाकिस्तान को दे दी जायं और लड़ाई का तमाम सामान हिन्दुस्तान को दे दिया जाए और अगर कॉंगरेस इस बात पर राज़ी न हो तो डोमीनियम स्टेटस न देकर सारी फ़ौज अंगरेज़ों के हाथ में रक्खी जाए. इस सब का नतीजा यह होगा कि

روکنے کے لئے مناسب کارروائی کریں جن سے ان کے اپنے صوبے کے کانسٹی ٹیوشن کے ٹوٹ جانے کا ڈر ہو'. صوبائی گورنروں کو یہ اختیار لارڈ ماؤنٹ بیٹن کے فیصلے پر عمل کرانے کے لئے ہے. اِن خاص اختیاروں سے کام لینے کے لئے صوبائی گورنر سیدھے فیڈرل پریسیڈنٹ کے ہی ماتحت ہوں گے. اِس معاملے میں صوبائی وزیروں کی کون کہے، ہندستان یا پاکستان کے بڑے وزیروں تک کا کوئی اختیار نہ ہوگا. کیسی اچھی آزادی ہندستانیوں کی گردن پر لادی جا رہی ہے!

نہرو، پٹیل اور کرپلانی کو آل انڈیا کانگریس کمیٹی نے کسی ایسے فیصلے کو مان لینے کا کوئی اختیار نہیں ملا تھا جس سے ہندستان کے ٹکڑے ہوتے ہوں. پر اِن نیتاؤں کے اِس فیصلے کو مانتے ہی اور آل انڈیا کانگریس کمیٹی کی منظوری سے پہلے ہی فیصلے پر تیزی سے عمل شروع ہوگیا. ۱۵ر اگست تک تمام کارروائی پوری ہو جانے کی تاریخ مقرر کردی گئی. اب رپورٹوں سے ایسا معلوم ہوتا ہے کہ ۱۵ر اگست تک ہندستان اور پاکستان کو ڈومینین اسٹیٹس نہ ملے گا بلکہ اس کے بعد کہیں اُس وقت ملے گا جب بادشاہ کی سرکار ہندستانی فوجوں کے بارے میں اپنی پالیسی طے کرے گی.

اِس وقت تو بادشاہ کی سرکار کی منشا ایسی معلوم ہوتی ہے کہ تمام فوجیں تو پاکستان کو دے دی جائیں اور لڑائی کا تمام سامان ہندستان کو دے دیا جائے اور اگر کانگریس اِس بات پر راضی نہ ہو تو ڈومینین اسٹیٹس نہ دے کر ساری فوج انگریزوں کے ہاتھ میں رکھی جائے. اِس سب کا نتیجہ یہ ہوگا کہ

आजादी की कौन कहे, डोमिनियन स्टेटस भी मिले या न मिले, मगर गवरनरों के संगीनों की जोर से बटवारा फौरन करा दिया जावेगा.

बटवारा मंज़ूर करने का अख़्तियार—

माउन्टबेटन के फ़ैसले को मान लेने का मेहरू, पटेल और कृपलानी को काँगरेस की तरफ़ से कोई अख़्तियार न था लेकिन अब उनकी तरफ़दार काँगरेस वर्किंग कमेटी, अप्रैल सन् १६४२ वाले एक रेज़ोल्यूशन के सिर्फ़ एक जुमले की आड़ लेकर इनके इस काम की मंज़ूरी चाहती है. वह वाक्य यों है—'फिर भी यह कमेटी देश के किसी हिस्से की जनता को हिन्दुस्तानी संघ या यूनियन में उसकी मर्ज़ी के खिलाफ़ शामिल होने के लिये जबरदस्ती मजबूर नहीं कर सकती.' यह वाक्य अपनी जगह से अलग कर लिया गया है और इसको तोड़ मरोड़ कर नेहरू, पटेल और कृपलानी के बचाव के काम के लाया जा रहा है.

जिस पैराग्राफ़ में से यह वाक्य लिया गया है अगर उस पैरा को पढ़ा जाए तो साफ़ मालूम हो जाता है कि जबरदस्ती किसी हिस्से के शामिल न किये जाने के माने यह नहीं होते कि देश का बटवारा मंज़ूर कर लिया जावे. यहाँ तक कि एक दूसरा रिज़ोल्यूशन भी आल इन्डिया काँगरेस कमेटी ने जुलाई सन् १६४२ में पास किया था जिसमें यह कहा गया है कि—'ऐसी तजवीज़ जिससे कोई रियासत या देश का कोई हिस्सा हिन्दुस्तानी संघ से अलग रहे और इस तरह हिन्दुस्तान के टुकड़े हो जाएं, उस रियासत या हिस्से के लिये और सारे देश के लिये नुक़सान पहुँचाने वाली होगी. इसलिये काँगरेस किसी ऐसी तजवीज़ पर राज़ी न होगी'.

آزادی کی کون کہے، ڈومینین اسٹیٹس بھی ملے یا نہ ملے، مگر گورنروں کی سنگینوں کے زور سے بٹوارہ فوراً کرا دیا جاوے گا.

بٹوارہ منظور کرنے کا اختیار—

ماونٹ بیٹن کے فیصلے کو مان لینے کا نہرو، پٹیل اور کرپلانی کو کانگریس کی طرف سے کوئی اختیار نہ تھا لیکن اب اُن کی طرفداری کانگریس ورکنگ کمیٹی، اپریل ۱۹۴۲ء والے ایک ریزولیوشن کے صرف ایک جملے کی آڑ لے کر ان کے اس کام کی منظوری چاہتی ہے. وہ واکیہ یوں ہے—'پھر بھی یہ کمیٹی دیش کے کسی حصے کی جنتا کو ہندستانی سنگھ یا یونین میں اس کی مرضی کے خلاف شامل ہونے کے لئے زبردستی مجبور نہیں کر سکتی.' یہ واکیہ اپنی جگہ سے الگ کر لیا گیا ہے اور اس کو توڑ مروڑ کر نہرو، پٹیل اور کرپلانی کے بچاؤ کے کام میں لایا جا رہا ہے.

جس پیراگراف میں سے یہ واکیہ لیا گیا ہے اگر اس پیرا کو پڑھا جائے تو صاف معلوم ہو جاتا ہے کہ زبردستی کسی حصے کے شامل نہ کئے جانے کے معنے یہ نہیں ہوتے کہ دیش کا بٹوارا منظور کر لیا جاوے. یہاں تک کہ ایک دوسرا ریزولیوشن بھی آل انڈیا کانگریس کمیٹی نے جولائی ۱۹۴۲ء میں پاس کیا تھا جس میں یہ کہا گیا ہے کہ—'ایسی تجویز جس سے کوئی ریاست یا دیش کا کوئی حصہ ہندستانی سنگھ سے الگ رہے اور اس طرح ہندستان کے ٹکڑے ہو جائیں، اس ریاست یا حصے کے لئے اور سارے دیش کے لئے نقصان پہنچانے والی ہوگی. اس لئے کانگریس کسی ایسی تجویز پر راضی نہ ہوگی'.

बाद में मौलाना अबुल कलाम आज़ाद ने कहा कि ऊपर कहे हुए दोनों रेज़ोल्यूशन एक दूसरे के ख़िलाफ़ नहीं हैं. अगर इनमें कुछ विरोध भी माना जाए तो जो तजवीज़ अप्रैल में पास हुई है उसके मुक़ाबले जुलाई वाली तजवीज़ की पाबन्दी ज़रूरी होगी. जुलाई वाली तजवीज़ में साफ़ तौर से बटवारे के सवाल पर फिर से विचार किया गया है और काँगरेस वालों के लिये असूल तै कर दिये गए हैं. ऐसी हालत में नेहरू पटेल और कृपलानी ने साफ़ तौर पर माउन्टबेटन के फ़ैसले को मान कर काँगरेस के असूलों के ख़िलाफ़ किया है. लेकिन शायद आल इन्डिया काँगरेस कमेटी का इनके काम को मंज़ूर कर लेना और भी ज़्यादा बेक़ायदा है. अब अँगरेज़ी साम्राज साम्राज की सेवा के लिये काँगरेस की डिक्टेटरी बिलकुल ज़ाहिर है.

मिस्टर मुकुन्द देसाई ने, जो पहले बम्बई काँगरेस बुलेटिन के एडीटर थे, प्रेस को बयान देते हुए कहा—'काँगरेस कान्सटिट्यूशन की भूमिका में पूरे देश के लिये पूरी आज़ादी हासिल करने को ही काँगरेस का असूल बताया गया है. काँगरेस के बड़े नेताओं जैसे गाँधी जी, पंडित जी या सरदार पटेल ने ब्रिटिश सरकार की मौजूदा चाल को बिना काँगरेस के खुले इजलास की मंजूरी के मान कर काँगरेस को धोका दिया है'.

मिस्टर देसाई आगे कहते हैं कि—'इस तदबीर को मानकर हम पच्छिम में ईरान, अफ़ग़ानिस्तान और सरहदी सूबे की रियासतों में और पूरब की तरफ़ बरमा में अँगरेज़ी साम्राज के पैर जमा

بعد میں مولانا ابوالکلام آزاد نے کہا کہ اوپر کہے ہوئے دونوں ریزولیوشن ایک دوسرے کے خلاف نہیں ہیں۔ اگر ان میں کچھ وِرودھ بھی مانا جائے تو جو تجویز اپریل میں پاس ہوئی ہے اس کے مقابلے جولائی والی تجویز کی پابندی ضروری ہوگی۔ جولائی والی تجویز میں صاف طور سے بٹوارے کے سوال پر پھر سے وچار کیا گیا ہے اور کانگریس والوں کے لئے اصول طے کر دئے گئے ہیں۔ ایسی حالت میں نہرو، پٹیل اور کرپلانی نے صاف طور پر ماونٹ بیٹن کے فیصلے کو مان کر کانگریس کے اصولوں کے خلاف کیا ہے۔ لیکن شاید آل انڈیا کانگریس کمیٹی کا ان کے کام کو منظور کر لینا اور بھی زیادہ بے قاعدہ ہے۔ اب انگریزی سامراج کی سیوا کے لئے کانگریس کی ڈکٹیٹری بالکل ظاہر ہے۔

مسٹر مکند دیسائی نے، جو پہلے کانگریس بلیٹین کے اڈیٹر تھے، پریس کو بیان دیتے ہوئے کہا — 'کانگریس کانسٹی ٹیوشن کی بھومکا میں پورے دیش کے لئے پوری آزادی حاصل کرنے کو ہی کانگریس کا اصول بتایا گیا ہے۔ کانگریس کے بڑے نیتاؤں جیسے گاندھی جی، پنڈت جی یا سردار پٹیل نے برٹش سرکار کی موجودہ چال کو بنا کانگریس کے کھلے اجلاس کی منظوری کے مان کر کانگریس کو دھوکا دیا ہے'۔

مسٹر دیسائی آگے کہتے ہیں کہ — اس تدبیر کو مان کر ہم پچھم میں ایران، افغانستان اور سرحدی صوبے کی ریاستوں میں اور پورب کی طرف برما میں انگریزی سامراج کے پیر جما

देंगे और चीन के सूबे यूनान की जनता के सोशलिस्ट ख़यालों को धक्का पहुँचायेंगे.

फ़ैसले का पोलिटिकल पहलू—

अब तक हमने इस मसले के आम पहलू पर रोशनी डाली है. मगर जहाँ तक माउन्टबेटन फ़ैसले के पोलिटिकल पहलू का ताल्लुक़ है, सबसे अहम बात यह है कि असल में यह फ़ैसला १६ मई सन् १९४६ की प्लान के मुक़ाबले में कोई नई चीज़ नहीं है. काँगरेस वाले कहते हैं कि यह फ़ैसला १६ मई की प्लान से बिल्कुल अलग है. पर यह बात ठीक नहीं है. इस फ़ैसले को होशियारी के साथ देखने से और ख़ास कर पैरा १ से ४ तक व पैरा १८ पर ध्यान देने से यह साफ़ मालूम हो जाता है कि यह सिर्फ़ १६ मई के प्लान की, जिसका सुधार ६ दिसम्बर और २० फ़रवरी के बयानों से हो चुका है, महज़ एक बदली हुई सूरत है.

पहले पैरा में बादशाह की सरकार ने यह कहा है कि शुरू का फ़ैसला ब्रिटिश इन्डिया की सब पार्टियों को मन्ज़ूर न था. दूसरे पैरा में कहा गया है कि शुरू वाली प्लान को काँगरेस ने तो मन्ज़ूर कर लिया था लेकिन मुस्लिम लीग ने मन्ज़ूर नहीं किया था. तीसरे पैरा में बताया गया है कि हिन्दुस्तानी पार्टियों में आपस में राज़ीनामा कराने के लिये ही यह फ़ैसला दिया गया है जिससे कि मुस्लिम लीग भी पहले वाली प्लान को मान ले और काँगरेस और लीग एक राय हो जायँ. पैराग्राफ़ चार में जो बिल्कुल साफ़ है कहा गया है कि 'बादशाह की सरकार को इत्मीनान हो गया है कि

دیں گے اور چین کے صوبے یونن کی جنتا کے سوشلسٹ خیالوں کو دھکا پہنچائیں گے۔

فیصلے کا پولٹیکل پہلو—

اب تک ہم نے اِس مسئلے کے عام پہلو پر روشنی ڈالی ہے، مگر جہاں تک ماونٹ بیٹن فیصلے کے پولٹیکل پہلو کا تعلق ہے سب سے اہم بات یہ ہے کہ اصل میں یہ فیصلہ ۱۶ مئی سنہ ۱۹۴۶ کی پلان کے مقابلے میں کوئی نئی چیز نہیں ہے۔ کانگریس والے کہتے ہیں کہ یہ فیصلہ ۱۶ مئی کی پلان سے بالکل الگ ہے۔ پر یہ بات ٹھیک نہیں ہے۔ اِس فیصلے کو ہوشیاری کے ساتھ دیکھنے سے اور خاصکر پیرا ایک سے ۴ تک و پیرا ۱۸ پر دھیان دینے سے یہ صاف معلوم ہو جاتا ہے کہ یہ صرف ۱۶ مئی کے پلان کی، جس کا سدھار ۶ دسمبر اور ۲۰ فروری کے بیانوں سے ہو چکا ہے، محض ایک بدلی ہوئی صورت ہے۔

پہلے پیرا میں بادشاہ کی سرکار نے یہ کہا ہے کہ شروع کا فیصلہ برٹش انڈیا کی سب پارٹیوں کو منظور نہ تھا۔ دوسرے پیرے میں کہا گیا ہے کہ شروع والی پلان کو کانگریس نے تو منظور کر لیا تھا لیکن مسلم لیگ نے منظور نہیں کیا تھا۔ تیسرے پیرا میں بتایا گیا ہے کہ ہندستانی پارٹیوں میں آپس میں راضی نامہ کرانے کے لئے ہی یہ فیصلہ دیا گیا ہے جس سے کہ مسلم لیگ بھی پہلے والی پلان کو مان لے اور کانگریس اور لیگ ایک رائے ہو جائیں۔ پیراگراف چار میں جو بالکل صاف ہے کہا گیا ہے کہ "بادشاہ کی سرکار کو اطمینان ہو گیا ہے کہ

जानने के लिये कि जनता हिन्दुस्तान में शामिल होना चाहती है पाकिस्तान में, नीचे दिया हुआ तरीक़ा ही सबसे अच्छा है.' इस तरह चौथे पैरा से यह बात बिल्कुल साफ़ हो जाती है कि इस फ़ैसले 'सबसे अच्छा अमली तरीक़ा' बयान किया गया है जिससे कि मुस्लिम लीग और कॉंगरेस दोनों पहले फ़ैसले को मन्ज़ूर कर लें. इस नये फ़ैसले में कोई उसूली सुधार नहीं किया गया है, सिर्फ़ शुरू के फ़ैसले को अमल में लाने की ग़रज़ से एक नया रास्ता बताया गया है. १८ वें पैरे में बादशाह की सरकार ने कहा है कि देसी रियासतों का मामला पहले ही फ़ैसले के अनुसार तै होगा (न असूल के सम्बन्ध में कोई फ़र्क़ है न उसके अमल में लाने के तरीक़े में). इससे यह साफ़ नतीजा निकलता है कि शुरू के फ़ैसले और इस नये फ़ैसले में फ़र्क़ सिर्फ़ इसे ब्रिटिश इन्डिया में लागू करने के तरीक़ पर है.

कॉंगरेस वाले इस बात पर क्यों ज़ोर देते हैं कि हाल वाला फ़ैसला पहले फ़ैसले से बिल्कुल अलग है. इसका सबब यह मालूम होता है कि वह मौजूदा फ़ैसले की तीन नुक़सान पहुँचाने वाली शर्तों को ग़लत बयान करना चाहते हैं. वह शर्तें यह हैं—

१—यह कि ब्रिटिश इन्डिया की हिन्दुस्तान और पाकिस्तान सरकारें एक दूसरे से आज़ाद हैं लेकिन बादशाह की सरकार से दोनों में से कोई आज़ाद नहीं है (देखो पैरा १६ व और २०).

२—यह कि हिन्दुस्तान और पाकिस्तान दोनों आज़ाद सरकारों को हिफ़ाज़त, माल और आने जाने के रास्तों के महकमों और उन सब महकमों के लिये जिनका सम्बन्ध

یہ جاننے کے لئے کہ جنتا ہندستان میں شامل ہونا چاہتی ہے کہ پاکستان میں، نیچے دیا ہوا طریقہ ہی سب سے اچھا ہے.' اس طرح چوتھے پیرا سے یہ بات بالکل صاف ہوجاتی ہے کہ اس فیصلے میں 'سب سے اچھا عملی طریقہ' بیان کیا گیا ہے. جس سے کہ مسلم لیگ اور کانگریس دونوں پہلے فیصلے کو منظور کرلیں. اس نئے فیصلے میں کوئی اصولی سُدھار نہیں کیا گیا ہے، صرف شروع کے فیصلے کو عمل میں لانے کی غرض سے ایک نیا راستہ بتایا گیا ہے. اٹھارہویں پیرے میں بادشاہ کی سرکار نے کہا ہے کہ دیسی ریاستوں کا معاملہ پہلے ہی فیصلے کے انوسار طے ہوگا (نہ اصول کے سمبندھ میں کوئی فرق ہے نہ اُس کے عمل میں لانے کے طریقے میں). اس سے یہ صاف نتیجہ نکلتا ہے کہ شروع کے فیصلے اور اس نئے فیصلے میں فرق صرف اسے برٹش انڈیا میں لاگو کرنے کے طریقے پر ہے.

کانگریس والے اس بات پر کیوں زور دیتے ہیں کہ حالی والا فیصلہ پہلے فیصلے سے بالکل الگ ہے. اس کا سبب یہ معلوم ہوتا ہے کہ وہ موجودہ فیصلے کی تین نقصان پہونچانے والی شرطوں کو غلط بیان کرنا چاہتے ہیں. یہ شرطیں یہ ہیں—

۱—یہ کہ برٹش انڈیا کی ہندستان اور پاکستان سرکاریں ایک دوسرے سے آزاد ہیں لیکن بادشاہ کی سرکار سے دونوں میں سے کوئی آزاد نہیں ہے (دیکھو پیرا ۱۹ و ۲۰).

۲—یہ کہ ہندستان اور پاکستان دونوں آزاد سرکاروں کو حفاظت، مال اور آنے جانے کے راستوں کے محکموں اور اُن سب محکموں کے لئے جن کا سمبندھ

इस समय सेन्ट्रल गवरमेन्ट से है बादशाह की सरकार से अपनी मिली जुली जिम्मेदारी की बातचीत करना चाहिये (पैरा १६ अ). इसका मतलब यह है कि पहले तो हिन्दुस्तान और पाकिस्तान को आज़ाद होने का ऐलान कर दिया गया लेकिन जो मुहकमें इस वक़्त सेन्ट्रल गवरमेन्ट के हाथ में हैं वह दोनों में से किसी को नहीं दिये गये और दूसरे यह कि यह सेन्ट्रल मुहकमें दोनों सरकारों की तरफ़ से बादशाह की सरकार के हाथ में रहेंगे क्योंकि दोनों सरकारें अलग अलग आज़ाद होने की वजह से एक सेन्टर में न हो सकेंगी.

३—देसी रियासतें हिन्दुस्तान और पाकिस्तान दोनों से आज़ाद रहेंगी. अगर वह चाहें तो इनमें से किसी एक से अपनी अपनी शर्तों पर सुलह की बात चीत कर सकती हैं या इनमें से किसी एक में शामिल हो सकती हैं. (पैरा १८)

सूबों का बटवारा—

असल में यह नया फ़ैसला शुरू वाले फ़ैसले की सुधरी सूरत है जिसको मुस्लिम लीग की पाकिस्तानी मांग को फ़ौरन मन्ज़ूर करने के लिये जारी किया गया है. दोनों में फ़रक़ यह है कि पहले फ़ैसले में पाकिस्तान १० साल के बाद मंज़ूर होने वाला था तो इस फ़ैसले में बंगाल और पंजाब के दो हिस्से कर दिये गये हैं. पाकिस्तान को फ़ौरन पा जाने के लिये मुस्लिम लीग को सूबों के हिस्से किये जाना मंज़ूर करना पड़ा है. यह बात कांग्रेस के मुआफ़िक़ है. क्योंकि इन सूबों के पूरे पूरे पाकिस्तान में शामिल हो जाने से कांगरेस की हिन्दुओं से सख़्त दुश्मनी हो जाती. और चूँकि हिन्दू

اِس سے سنٹرل گورنمنٹ سے ہو بادشاہ کی سرکار سے اپنی ملی جُلی ذمہ داری کی بات چیت کرنا چاہیئے (پیرا ۱۶ الف). اِس کا مطلب یہ ہو کہ پہلے تو ہندستان اور پاکستان کو آزاد ہونے کا اعلان کردیا گیا لیکن جو محکمے اِس وقت سنٹرل گورنمنٹ کے ہاتھ میں ہیں وہ دونوں میں سے کسی کو نہیں دئے گئے اور دوسرے یہ کہ یہ سنٹرل محکمے دونوں سرکاروں کی طرف سے بادشاہ کی سرکار کے ہاتھ میں رہیں گے کیونکہ دونوں سرکاریں الگ الگ آزاد ہونے کی وجہ سے ایک سنٹر میں نہ ہوسکیں گی.

۳-دیسی ریاستیں ہندستان اور پاکستان دونوں سے آزاد رہیں گی. اگر وہ چاہیں تو اِن میں سے کسی ایک سے اپنی اپنی شرطوں پر صلح کی بات چیت کرسکتی ہیں یا اِن میں سے کسی ایک میں شامل ہوسکتی ہیں. (پیرا ۱۸).

صوبوں کا بٹوارہ—

اصل میں یہ نیا فیصلہ شروع والے فیصلے کی سُدھری صورت ہو جس کو مسلم لیگ کی پاکستانی مانگ کو فوراً منظور کرنے کے لئے جاری کیا گیا ہو. دونوں میں فرق یہ ہو کہ پہلے فیصلے میں پاکستان ۱۰ سال کے بعد منظور ہونے والا تھا تو اس فیصلے میں بنگال اور پنجاب کے دو حصے کردئے گئے ہیں. پاکستان کو فوراً پاجانے کے لئے مسلم لیگ کو صوبوں کے حصے کئے جانا منظور کرنا پڑا ہو. یہ بات کانگریس کے موافق ہو. کیونکہ اِن صوبوں کے پورے پورے پاکستان میں شامل ہوجانے سے کانگریس کی ہندوؤں سے سخت دشمنی ہوجاتی. اور چونکہ ہندو

ह जानने के लिये कि जनता हिन्दुस्तान में शामिल होना चाहती है ा पाकिस्तान में, नीचे दिया हुआ तरीक़ा ही सबसे अच्छा है.' इस रह चौथे पैरा से यह बात बिल्कुल साफ़ हो जाती है कि इस फ़ैसले में 'सबसे अच्छा अमली तरीक़ा' बयान किया गया है जिससे कि मुस्लिम लीग और काँगरेस दोनों पहले फ़ैसले को मन्ज़ूर कर लें. इस नये फ़ैसले में कोई उसूली सुधार नहीं किया गया है, सिर्फ़ शुरू के फ़ैसले को अमल में लाने की ग़रज़ से एक नया रास्ता बताया गया है. १८ वें पैरे में बादशाह की सरकार ने कहा है कि देसी रियासतों का मामला पहले ही फ़ैसले के अनुसार से होगा (न असूल के सम्बन्ध में कोई फ़र्क़ है न उसके अमल में लाने के तरीक़े में). इससे यह साफ़ नतीजा निकलता है कि शुरू के फ़ैसले और इस नये फ़ैसले में फ़र्क़ सिर्फ़ इसे ब्रिटिश इन्डिया में लागू करने के तरीक़ पर है.

काँगरेस वाले इस बात पर क्यों ज़ोर देते हैं कि हाल वाला फ़ैसला पहले फ़ैसले से बिल्कुल अलग है. इसका सबब यह मालूम होता है कि वह मौजूदा फ़ैसले की तीन नुक़सान पहुँचाने वाली शर्तों को ग़लत बयान करना चाहते हैं. वह शर्तें यह हैं—

१—यह कि ब्रिटिश इन्डिया की हिन्दुस्तान और पाकिस्तान सरकारें एक दूसरे से आज़ाद हैं लेकिन बादशाह की सरकार से दोनों में से कोई आज़ाद नहीं है (देखो पैरा १६ ब और २०).

२—यह कि हिन्दुस्तान और पाकिस्तान दोनों आज़ाद सरकारों को हिफ़ाज़त, माल और आने जाने के रास्तों के [illegible] सब महकमों के लिये जिनका सम्बन्ध

یہ جاننے کے لئے کہ جنتا ہندستان میں شامل ہونا چاہتی ہے کہ پاکستان میں، نیچے دیا ہوا طریقہ ہی سب سے اچھا ہے.' اس طرح چوتھے پیرا سے یہ بات بالکل صاف ہوجاتی ہے کہ اس فیصلے میں 'سب سے اچھا عملی طریقہ' بیان کیا گیا ہے. جس سے کہ مسلم لیگ اور کانگریس دونوں پہلے فیصلے کو منظور کرلیں. اس نئے فیصلے میں کوئی اصولی سدھار نہیں کیا گیا ہے، صرف شروع کے فیصلے کو عمل میں لانے کی غرض سے ایک نیا راستہ بتایا گیا ہے. اٹھارہویں پیرے میں بادشاہ کی سرکار نے کہا ہے کہ دیسی ریاستوں کا معاملہ پہلے ہی فیصلے کے انوسار طے ہوگا (نہ اصول کے سمبندھ میں کوئی فرق ہے نہ اُس کے عمل میں لانے کے طریقے میں). اس سے یہ صاف نتیجہ نکلتا ہے کہ شروع کے فیصلے اور اس نئے فیصلے میں فرق صرف اسے برٹش انڈیا میں لاگو کرنے کے طریقے پر ہے.

کانگریس والے اس بات پر کیوں زور دیتے ہیں کہ حال والا فیصلہ پہلے فیصلے سے بالکل الگ ہے. اس کا سبب یہ معلوم ہوتا ہے کہ وہ موجودہ فیصلے کی تین نقصان پہونچانے والی شرطوں کو غلط بیان کرنا چاہتے ہیں. یہ شرط یہ ہے—

۱- یہ کہ برٹش انڈیا کی ہندستان اور پاکستان سرکاریں ایک دوسرے سے آزاد ہیں لیکن بادشاہ کی سرکار سے دونوں میں سے کوئی آزاد نہیں ہے (دیکھو پیرا ۱۶ و ۲۰).

۲- یہ کہ ہندستان اور پاکستان دونوں آزاد سرکاروں کو حفاظت، مال اور آنے جانے کے راستوں کے محکموں اور ان سب محکموں کے لئے جن کا سمبندھ

इस समय सेन्ट्रल गवरमेन्ट से है बादशाह की सरकार से अपनी मिली जुली ज़िम्मेदारी की बातचीत करना चाहिये (पैरा १६ अ). इसका मतलब यह है कि पहले तो हिन्दुस्तान और पाकिस्तान को आज़ाद होने का ऐलान कर दिया गया लेकिन जो मुहकमें इस वक़्त सेन्ट्रल गवरमेन्ट के हाथ में हैं वह दोनों में से किसी को नहीं दिये गये और दूसरे यह कि यह सेन्ट्रल मुहकमें दोनों सरकारों की तरफ़ से बादशाह की सरकार के हाथ में रहेंगे क्योंकि दोनों सरकारें अलग अलग आज़ाद होने की वजह से एक सेन्टर में न हो सकेंगी.

३—देसी रियासतें हिन्दुस्तान और पाकिस्तान दोनों से आज़ाद रहेंगी. अगर वह चाहें तो इनमें से किसी एक से अपनी अपनी शर्तों पर सुलह की बात चीत कर सकती हैं या इनमें से किसी एक में शामिल हो सकती हैं. (पैरा १८)

सूबों का बटवारा –

असल में यह नया फ़ैसला शुरू वाले फ़ैसले की सुधरी सूरत है जिसको मुस्लिम लीग की पाकिस्तानी मांग को फ़ौरन मन्ज़ूर करने के लिये जारी किया गया है. दोनों में फ़रक़ यह है कि पहले फ़ैसले में पाकिस्तान १० साल के बाद मंजूर होने वाला था तो इस फ़ैसले में बंगाल और पंजाब के दो हिस्से कर दिये गये हैं. पाकिस्तान को फ़ौरन पा जाने के लिये मुस्लिम लीग को सूबों के हिस्से किये जाना मंजूर करना पड़ा है. यह बात कांग्रेस के मुआफ़िक़ है. क्योंकि इन सूबों के पूरे पूरे पाकिस्तान में शामिल हो जाने से कांगरेस की हिन्दुओं से सख़्त दुश्मनी हो जाती. और चूँकि हिन्दू

اِس سمے سنٹرل گورنمنٹ سے ہو بادشاہ کی سرکار سے اپنی ملی جُلی ذمّہ داری کی بات چیت کرنا چاہیئے (پیرا ۱۶ الف). اِس کا مطلب یہ ہو کہ پہلے تو ہندستان اور پاکستان کو آزاد ہونے کا اعلان کر دیا گیا لیکن جو محکمے اِس وقت سنٹرل گورنمنٹ کے ہاتھ میں ہیں وہ دونوں میں سے کسی کو نہیں دئے گئے اور دوسرے یہ کہ یہ سنٹرل محکمے دونوں سرکاروں کی طرف سے بادشاہ کی سرکار کے ہاتھ میں رہیں گے کیونکہ دونوں سرکاریں الگ الگ آزاد ہونے کی وجہ سے ایک سنٹر میں نہ ہو سکیں گی۔

۳- دیسی ریاستیں ہندستان اور پاکستان دونوں سے آزاد رہیں گی۔ اگر وہ چاہیں تو اِن میں سے کسی ایک سے اپنی اپنی شرطوں پر صلح کی بات چیت کر سکتی ہیں یا اِن میں سے کسی ایک میں شامل ہو سکتی ہیں۔ (پیرا ۱۸)۔

صوبوں کا بٹوارہ—

اصل میں یہ نیا فیصلہ شروع والے فیصلے کی سُدھری صورت ہو جس کو مسلم لیگ کی پاکستانی مانگ کو فوراً منظور کرنے کے لئے جاری کیا گیا ہو۔ دونوں میں فرق یہ ہو کہ پہلے فیصلے میں پاکستان ۱۰ سال کے بعد منظور ہونے والا تھا تو اس فیصلے میں بنگال اور پنجاب کے دو حصّے کر دئے گئے ہیں۔ پاکستان کو فوراً پا جانے کے لئے مسلم لیگ کو صوبوں کے حصّے کئے جانا منظور کرنا پڑا ہو۔ یہ بات کانگریس کے موافق ہو۔ کیونکہ ان صوبوں کے پورے پورے پاکستان میں شامل ہو جانے سے کانگریس کی ہندوؤں سے سخت دشمنی ہو جاتی۔ اور چونکہ ہندو

ही काँगरेस का खास सहारा हैं इस लिये ऐसा न होने पर कांगरेस अपनी आजकल की हालत से बहुत कमज़ोर हो जाती.

इस तरह पर सूबों के बटवारे की शर्त ही इस ब्रिटिश फ़ैसले की कामयाबी की बुनियाद है और बटवारे की शर्त बिल्कुल अँगरेज़ी साम्राज के फ़ायदे के लिये है. इससे पाकिस्तान चाहे कट कर छोटा ही हो गया हो पर फ़ौरन क़ायम हो गया है और काँगरेस की पोज़ीशन हिन्दुओं के सामने कमज़ोर हो गई है. साथ ही इसके चूंकि पाकिस्तान कट कर छोटा हो गया है इसलिये लीग की ताक़त भी मुसलमानों के सामने कमज़ोर हो गई है. लेकिन दूसरी तरफ़ अँगरेज़ी साम्राज की पोज़ीशन और भी मज़बूत और क़ायम हो गई है सिर्फ़ इसलिये नहीं कि कांगरेस और लीग दोनों की ताक़तें कम हो गई हैं बल्कि इसलिये कि ताक़त की बागडोर और तमाम बुनियादी फ़ैसले अँगरेज़ों के हाथ में चले गए हैं. अब हमेशा के लिये हिन्दुस्तान और पाकिस्तान में राजकाजी, माली और फ़ौजी झगड़ों की बुनियाद पड़ गई है. हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के आपस के झगड़ों का फ़ैसला करने वाली अब बादशाह की सरकार हुआ करेगी. हिन्दुस्तान में अँगरेज़ी साम्राज की यह क़िलेबन्दी मौजूदा फ़ैसले की शर्तों से ही पैदा हुई है.

सूबों के बटवारे का तरीक़ा अजीब है. माउन्टबेटन फ़ैसले के सातवें पैरा में साफ़ साफ़ कहा गया है कि सबसे पहले पक्की तरह यह तै हो जाना चाहिये कि कोई सूबा अगर अपना बटवारा न कराना चाहे तो उस पूरे सूबे को या तो हिन्दुस्तान में रहना होगा या पाकिस्तान में. यह हिन्दुओं के लिये एक खतरनाक शर्त

ہی کانگریس کا خاص سہارا ہیں اس لئے ایسا نہ ہونے پر کانگریس اپنی آج کل کی حالت سے بہت کمزور ہوجاتی۔

اس طرح پر صوبوں کے بٹوارے کی شرط ہی اس برٹش فیصلے کی کامیابی کی بنیاد ہے اور بٹوارے کی شرط بالکل انگریزی سامراج کے فائدے کے لئے ہے۔ اس سے پاکستان چاہے کٹ کر چھوٹا ہی ہوگیا ہو پر فوراً قائم ہوگیا ہے اور کانگریس کی پوزیشن ہندوؤں کے سامنے کمزور ہوگئی ہے۔ ساتھ ہی اس کے چونکہ پاکستان کٹ کر چھوٹا ہوگیا ہے اس لئے لیگ کی طاقت بھی مسلمانوں کے سامنے کمزور ہوگئی ہے۔ لیکن دوسری طرف انگریزی سامراج کی پوزیشن اور بھی مضبوط اور قائم ہوگئی ہے صرف اس لئے نہیں کہ کانگریس اور لیگ دونوں کی طاقتیں کم ہوگئی ہیں بلکہ اس لئے کہ طاقت کی باگ ڈور اور تمام بنیادی فیصلے انگریزوں کے ہاتھ میں چلے گئے ہیں۔ اب ہمیشہ کے لئے ہندستان اور پاکستان میں راج کاجی، مالی اور فوجی جھگڑوں کی بنیاد پڑ گئی ہے۔ ہندستان اور پاکستان کے آپس کے جھگڑوں کا فیصلہ کرنے والی اب بادشاہ کی سرکار ہوا کرے گی۔ ہندستان میں انگریزی سامراج کی یہ قلعہ بندی موجودہ فیصلے کی شرطوں سے ہی پیدا ہوئی ہے۔

صوبوں کے بٹوارے کا طریقہ عجیب ہے۔ ماونٹ بیٹن فیصلے کے ساتویں پیرا میں صاف صاف کہا گیا ہے کہ سب سے پہلے پکی طرح یہ طے ہوجانا چاہئے کہ کوئی صوبہ اگر اپنا بٹوارہ نہ کرانا چاہے تو اس پورے صوبے کو یا تو ہندستان میں رکھنا ہوگا یا پاکستان میں۔ یہ ہندوؤں کے لئے ایک خطرناک شرط

है क्योंकि ऐसा मुमकिन है कि वोट ख़रीद लिये जाँय या जबरदस्ती और धोके से हासिल कर लिये जांय. यह मुमकिन है कि सूबाई एसेम्बलियों के मेम्बर पहले यह तै करें कि अगर बंगाल और पंजाब का बटवारा न हो तो बंगाल और पंजाब दोनों पूरे के पूरे पाकिस्तान में शामिल किये जाएँ. हिन्दू, सिक्ख और मुसलमान सब इस फ़ैसले पर राज़ी हो जायँगे क्योंकि ऐसा हो जाने पर हिन्दू और सिक्ख बाद में बटवारे की राय देने का पक्का इरादा कर लेंगे.

इसके बाद कि बंगाल या पंजाब पूरे पूरे हिन्दुस्तान में शामिल हों या पाकिस्तान में, फ़ैसले के मुताबिक़, बटवारा कुछ दिनों के लिये हो जायगा. इसके बाद फिर नया चुनाव होगा और नई सूबाई असेम्बली के मेम्बरों से गवर्नर जेनरल हदबन्दी कमीशन के अख़्तियार तै कर लेने के सम्बन्ध में राय लेंगे. यह कमीशन वाइसराय किसी पार्टी से सलाह लिये बिना ही मुक़र्रर करेंगे और यही कमीशन आख़िर में बटवारा तै करेगा (पैरा ८ व ९) यह हदबन्दी कमीशन 'और बातों का भी लिहाज़ रखेगा' जिनका कोई ज़िक्र इस फ़ैसले में नहीं है.

अब अगर इस तरह का हदबन्दी कमीशन कोई ऐसी हद तै कर देगा जो हिन्दुओं और सिक्खों के लिये इन्साफ़ के ख़िलाफ़ हो तो उनके लिये कोई चारा बाक़ी न रहेगा सिवाय इसके कि कुल पंजाब और बंगाल पाकिस्तान में शामिल कर दिया जाय (पैरा सात).

बादशाह की सरकार के अख़्तियार—

असल में इस फ़ैसले ने सूबा सरहद, सिन्ध और बलूचिस्तान

ہے کیونکہ ایسا ممکن ہے کہ ووٹ خرید لئے جائیں یا زبردستی اور دھوکے سے حاصل کر لئے جائیں۔ یہ ممکن ہے کہ صوبائی اسمبلیوں کے ممبر پہلے یہ طے کریں کہ اگر بنگال اور پنجاب کا بٹوارہ نہ ہوا، تو بنگال اور پنجاب دونوں پورے کے پورے پاکستان میں شامل کئے جائیں۔ ہندو، سکھ اور مسلمان سب اس فیصلے پر راضی ہو جائیں گے کیونکہ ایسا ہو جانے پر ہندو اور سکھ بعد میں بٹوارے کی رائے دینے کا پکا ارادہ کر لیں گے۔

اِس کے بعد کہ بنگال یا پنجاب پورے پورے ہندستان میں شامل ہوں یا پاکستان میں، فیصلے کے مطابق، بٹوارہ کچھ دنوں کے لئے ہو جائے گا۔ اِس کے بعد پھر نیا چناؤ ہوگا اور نئی صوبائی اسمبلی کے ممبروں سے گورنر جنرل حدبندی کمیشن کے اختیار طے کر لینے کے سمبندھ میں رائے لیں گے۔ یہ کمیشن وائسرائے کسی پارٹی سے صلاح لئے بنا ہی مقرر کریں گے اور یہی کمیشن آخر میں بٹوارہ طے کرے گا (پیرا ۸ و ۹) یہ حدبندی کمیشن 'اور باتوں کا بھی لحاظ رکھے گا' جن کا کوئی ذکر اس فیصلے میں نہیں ہے۔

اب اگر اِس طرح کا حدبندی کمیشن کوئی ایسی حد طے کر دے گا جو ہندؤں اور سکھوں کے لئے انصاف کے خلاف ہو تو اُن کے لئے کوئی چارہ باقی نہ رہے گا سوائے اِس کے کہ کُل پنجاب اور بنگال پاکستان میں شامل کر دیا جائے (پیرا سات)۔

بادشاہ کی سرکار کے اختیار—

اصل میں اِس فیصلے نے صوبہ سرحد، سندھ اور بلوچستان

को मि० जिन्ना के हाथों में सौंप दिया है कि वह उनको फ़ैसिस्ट पाकिस्तान में शामिल कर लें क्योंकि पाकिस्तान के डिक्टेटर की हैसियत से वही उत्तरी पच्छिमी हिन्दुस्तान की गद्दी के "वारिस" होंगे. वही फ़ैसले के पैराग्राफ़ १७ के अनुसार उत्तरी पच्छिमी सरहद के आज़ाद फ़िरक़ों से सुलह की बात चीत करेंगे और उनको पाकिस्तान के लिये हासिल कर लेंगे. पाकिस्तान में पंजाब के सबसे ज़्यादा उपजाऊ इलाक़े शामिल होंगे. सिन्ध को पाकिस्तान में बेइन्साफ़ी से शामिल किया जा रहा है क्योंकि उस सूबे की आबादी ५० फ़ीसदी हिन्दू है. सन् १९४१ की मर्दुमशुमारी में उनकी गिनती सिर्फ़ ३० फ़ीसदी बतलाई गई है और फ़ैसले की बुनियाद यही अदद रक्खे गए हैं.

यह साफ़ ज़ाहिर है कि मुस्लिम लीग की पाकिस्तान की माँग में ऐसे मुक़ाम शामिल हैं जो अंगरेज़ी साम्राज के लिये बड़े फ़ौजी काम के हैं, जैसे उत्तरी पच्छिमी सरहदी सूबा जिसमें सरहदी क़ौमों के ऐसे रक़बे भी शामिल हैं जिनसे सुलहनामे हैं. कहा जाता है कि इन इलाक़ों के बारे में मि० जिन्ना ने ब्रिटिश गवरमेन्ट से एक खुफ़िया राज़ीनामा कर लिया है जो लार्ड माउन्टबेटन के ज़रिये से हुआ है. "फ्री प्रेस" की लन्दन की एक ख़बर है कि—निहायत ख़ास ज़रिये से मालूम हुआ है कि लार्ड माउन्टबेटन ने अपने लन्दन जाने से पहले मि० जिन्ना से लिखा हुआ एक बयान ले लिया था. मगर मि० जिन्ना का कहना है कि उन्होंने ऐसा कोई लिखा हुआ बयान नहीं दिया.

चाहे मि० जिन्ना और ब्रिटिश गवरमेन्ट में कोई भीतरी

مسٹر جناح کے ہاتھ میں سونپ دیا ہے کہ وہ ان کو فیسسٹ پاکستان میں شامل کر لیں کیونکہ پاکستان کے ڈکٹیٹر کی حیثیت سے وہی اُتری پچھمی ہندستان کی گدی کے "وارث" ہوں گے. وہی فیصلے کے پیراگراف ۱۷ کے انوسار اُتری پچھمی سرحد کے آزاد فرقوں سے صلح کی بات چیت کریں گے اور اُن کو پاکستان کے لئے حاصل کر لیں گے. پاکستان میں پنجاب کے سب سے زیادہ اُپجاؤ علاقے شامل ہوں گے. سندھ کو پاکستان میں بے انصافی سے شامل کیا جا رہا ہے کیونکہ اُس صوبے کی آبادی ۵۰ فیصدی ہندو ہے. ۱۹۴۱ء کی مردم شماری میں اُن کی گنتی صرف ۳۰ فیصدی بتلائی گئی ہے اور فیصلے کی بنیاد یہی عدد رکھے گئے ہیں.

یہ صاف ظاہر ہے کہ مسلم لیگ کی پاکستان کی مانگ میں ایسے مقام شامل ہیں جو انگریزی سامراج کے لئے بڑے فوجی کام کے ہیں، جیسے اُتری پچھمی سرحدی صوبہ جس میں سرحدی قوموں کے ایسے رقبے بھی شامل ہیں جن سے صلح نامے ہیں. کہا جاتا ہے کہ ان علاقوں کے بارے میں مسٹر جناح نے برٹش گورنمنٹ سے ایک خفیہ راضی نامہ کر لیا ہے جو لارڈ ماونٹ بیٹن کے ذریعے سے ہوا ہے. "فری پریس" کی لندن کی ایک خبر ہے کہ — نہایت خاص ذریعہ سے معلوم ہوا ہے کہ لارڈ ماونٹ بیٹن نے اپنے لندن جانے سے پہلے مسٹر جناح سے لکھا ہوا ایک بیان لے لیا تھا. مگر مسٹر جناح کا کہنا ہے کہ اُنھوں نے ایسا کوئی لکھا ہوا بیان نہیں دیا.

چاہے مسٹر جناح اور برٹش گورنمنٹ میں کوئی بھیتری

समझौता हुआ हो या न हुआ हो पर इस फ़ैसले के आख़िरी लफ़्ज़ों से ब्रिटिश साम्राजी फ़ायदों को पहले से ज़्यादा मज़बूत कर लिया गया है. यह हिस्सा इस तरह है—"हिज़ एक्सीलेन्सी गवर्नर जेनरल आगे चल कर वक़्त बे वक़्त और भी ऐलान करते रहेंगे जिनकी ज़रूरत, ज़ाब्ते की कार्रवाई या किसी दूसरे मामले के सम्बन्ध में, ऊपर लिखे हुए इन्तज़ाम के अमल में लाने के लिये पड़ेगी." इससे गवर्नर जनरल को किसी भी काम के करने का पूरा अख़्तियार मिल जाता है. पाकिस्तान और हिन्दुस्तान या देसी रियासतों के सम्बन्ध में वह जो भी करना चाहें अपने अख़्तियार से कर सकते हैं. इस अख़्तियार के काम में लाने के लिये बेहद मौक़े हो सकते हैं.

(४)

इस तरह अंगरेज़ी साम्राज की पकड़ को हिन्दुस्तानियों के समर्थन से और ज़्यादा मज़बूत कर लिया किया गया है. असल में यह तमाम पोलिटिकल इन्तज़ाम इसलिये किये गए हैं जिससे कि अंगरेज़ी साम्राज के ख़िलाफ़ बढ़ते हुए क़ौमी विरोध के बावजूद, ब्रिटेन की माली और फ़ौजी लूट जारी रह सके. माउन्टबेटन के फ़ैसले का सबसे पहला नतीजा, माली दायरे, में यह हो सकता है कि ब्रिटेन स्टरलिंग बैलेन्स (पाउन्ड पावना) के अदा करने में टालमटोल कर जाए. हमारे पाउन्ड के फ़ैसले की बात चीत अब अंगरेज़ी एक्सचेकर के ज़रिये से होगी न कि इन्डिया आफिस के ज़रिये जैसा कि पहले ख़याल था.

इस तबदीली का नतीजा यह होगा कि ब्रिटिश ख़ज़ाना (ट्रेज़री) जिसे पोलिटिकल मामलों से कोई ताल्लुक़ नहीं है, वह हिन्दुस्तान

سمجھوتہ ہوا ہو یا نہ ہوا ہو پر اِس فیصلے کے آخری لفظوں سے برٹش سامراجی فائدوں کو پہلے سے زیادہ مضبوط کرلیا گیا ہے۔ یہ حصہ اِس طرح ہے— "ہز اکسلنسی گورنر جنرل آگے چل کر وقت بے وقت اور بھی اعلان کرتے رہیں گے جن کی ضرورت، ضابطہ کی کارروائی یا کسی دوسرے معاملہ کے سمبندھ میں، اوپر لکھے ہوئے انتظام کے عمل میں لانے کے لئے پڑے گی۔" اِس سے گورنر جنرل کو کسی بھی کام کے کرنے کا پورا اختیار مل جاتا ہے۔ پاکستان اور ہندستان یا دیسی ریاستوں کے سمبندھ میں وہ جو بھی کرنا چاہیں اپنے اختیار سے کرسکتے ہیں۔ اِس اختیار کے کام میں لانے کے لئے بے حد موقع ہوسکتے ہیں۔

(۴)

اِس طرح انگریزی سامراج کی پکڑ کو ہندستانیوں کے سمرتھن سے اور زیادہ مضبوط کرلیا گیا ہے۔ اصل میں یہ تمام پولٹیکل انتظام اِس لئے کئے گئے ہیں جس سے کہ انگریزی سامراج کے خلاف بڑھتے ہوئے قومی ورودھ کے باوجود، برٹین کی مالی اور فوجی لوٹ جاری رہ سکے۔ ماؤنٹ بیٹن کے فیصلے کا سب سے پہلا نتیجہ، مالی دائرے، میں یہ ہوسکتا ہے کہ برٹین اسٹرلنگ بیلنس (پاونڈ پاونا) کے ادا کرنے میں ٹال مٹول کرجائے۔ ہمارے پاونڈ پاونے کے فیصلے کی بات چیت اب انگریزی ایکسچیکر کے ذریعہ سے ہوگی نہ کہ انڈیا آفس کے ذریعے جیسا کہ پہلے خیال تھا۔

اِس تبدیلی کا نتیجہ یہ ہوگا کہ برٹش خزانہ (ٹریزری) جسے پولٹیکل معاملہ سے کوئی تعلق نہیں ہے، وہ ہندستان

के साथ कोई माली रियायत किसी पोलिटिकल फ़ायदे के एवज़ में न करेगा. इन्डिया आफ़िस के लिये तो यह मुमकिन था कि वह किसी पोलिटिकल फ़ायदे के बदले में पाउन्ड पावने के सम्बन्ध में कोई रियायत मंजूर करले क्योंकि इन्डिया आफ़िस को तो पोलिटिकल मामलों से वास्ता रहता है जैसे कि मौजूदा फ़ैसले से है लेकिन जहाँ तक हिन्दुस्तान के स्टरलिंग बैलेन्स का सम्बन्ध है इसमें ब्रिटेन की तरफ़ से से कोई रियायत नहीं होगी.

इसके सिवाय हिन्दुस्तान के बटवारे की वजह से पाउन्ड पावने के बटवारे में बहुत झंझट और उलझन पैदा होगी. ऐसा कहा जाता है कि जब ब्रिटिश ट्रेज़री एक मरतबा पाउन्ड पावने का फ़ैसला कर देगी तब यह काम हिन्दुस्तान और पाकिस्तान सरकारों का होगा कि वह अपने आपस में यह तै करें कि किसको कितनी रक़म मिलना चाहिये. इसका यह नतीजा होना ज़रूर होगा कि हिन्दुस्तान और पाकिस्तान में माली झगड़े पैदा हो जायंगे.

अलग अलग फ़ौजें—

यह बात ध्यान देने के क़ाबिल है कि माउन्टबेटन के फ़ैसले में, किसी ख़ास मतलब से, फ़ौज के बटवारे के सम्बन्ध में कोई ज़िक्र नहीं आया है. पैरा १६ अ में कहा गया है कि इन तमाम महकमों के बारे में, जो इस वक़्त सेन्टर से सम्बन्ध रखते हैं, दोनों नई सरकारों के बीच बातचीत शुरू होगी. इन में हिफ़ाज़त, ख़जाना और आने जाने के रास्तों के महकमें शामिल हैं. अगर हिन्दुस्तान और पाकिस्तान की सरकारों में आपस में बात चीत

کے ساتھ کوئی مالی رعایت کسی پولیٹیکل فائدے کے عوض میں نہ کرے گا۔ انڈیا آفس کے لئے تو یہ ممکن تھا کہ وہ کسی پولیٹیکل فائدے کے بدلے میں پاونڈ پاونے کے سمبندھ میں کوئی رعایت منظور کرلے کیونکہ انڈیا آفس کو تو پولیٹیکل معاملوں سے واسطہ رہتا ہے۔ جیسے کہ موجودہ فیصلے سے ہے لیکن جہاں تک ہندوستان کے اسٹرلنگ بیلنس کا سمبندھ ہے اس میں برٹین کی طرف سے کوئی رعایت نہ ہوگی۔

اس کے سوائے ہندوستان کے بٹوارے کی وجہ سے پاونڈ پاونے کے بٹوارے میں بہت جھنجھٹ اور الجھن پیدا ہوگی۔ ایسا کہا جاتا ہے کہ جب برٹین ٹریژری ایک مرتبہ پاونڈ پاونے کا فیصلہ کر دے گی تب یہ کام ہندوستان اور پاکستان سرکاروں کا ہوگا کہ وہ اپنے آپس میں یہ طے کریں کہ کس کو کتنی رقم ملنا چاہئے۔ اس کا یہ نتیجہ ضرور ہوگا کہ ہندوستان اور پاکستان میں مالی جھگڑے پیدا ہو جائیں۔

الگ الگ فوجیں—

یہ بات دھیان دینے کے قابل ہے کہ ماونٹ بیٹن کے فیصلے میں کسی خاص مطلب سے، فوج کے بٹوارے کے سمبندھ میں کوئی ذکر نہیں آیا ہے۔ پیرا ۱۶ الف میں کہا گیا ہے کہ ان تمام محکموں کے بارے میں، جو اس وقت سنٹر سے سمبندھ رکھتے ہیں، دونوں نئی سرکاروں کے بیچ بات چیت شروع ہوگی۔ ان میں حفاظت، خزانہ اور آنے جانے کے راستوں کے محکمے شامل ہیں۔ اگر ہندوستان اور پاکستان کی سرکاروں میں آپس میں بات چیت

होने पर कोई इन्तजाम या फ़ौजी संगठन बादशाह की सरकार के मातहत बचाव के महकमें के सम्बन्ध में तै नहो सका तो हमारे लिये सिर्फ़ दोसूरतें हैं. या तो फ़ौजों का बटवारा रजामन्दी से कर लिया जावे या फिर इस फ़ैसले के फ़िक़रा १६ ब के अनुसार बादशाह की सरकार फिर अपना फ़ैसला दे.

मुल्क की हिफ़ाजत के मामले की जिम्मेदारी (जिसमें आजकल सेन्ट्रल गवरमेन्ट के महकमे शामिल हैं) किस पर रहे, यह एक टेढ़ी खीर है. लेकिन आखरी फ़ैसला तो बादशाह की सरकार के हाथ में ही है. ऐसी हालत में यह कहना मुश्किल है कि फ़ौजों का बटवारा होगा भी या नहीं और अगर बटवारा हुआ तो किस असूल पर—मामला बिलकुल बादशाह की सरकार के हाथ में है. मान लो कि फ़ौजों का बटवारा होगा. मगर इस बात का ख़याल रहे कि दो आज़ाद हकूमतों. हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के सिवाय ऐसी हिन्दुस्तानी रियासतें भी हैं जिनसे बादशाह की सरकार के सुलहनामे हैं. इस तरह से हिन्दुस्तान में ४२ अलग अलग हिन्दुस्तानी फ़ौजें होंगी जो अलग अलग ४२ रियासतों के मातहत होंगी.

अगर फ़ौज न बटी तो आजकल की तरह वह बिलकुल अँगरेज़ों के मातहत होगी. अगर फ़ौज का बटवारा हो गया तो हिन्दुस्तान में घरेलू लड़ाई का अन्देशा है. इस सिलसिले में हाउस आफ़ लार्ड्स में जो बहस फ़रवरी के महीने में हुई थी उसकी याद दिलाना जरूरी है. टोरी यानी कनजरवेटिव पार्टी के लोगों ने कहा था कि हिन्दुस्तान की दो एक दूसरे के खिलाफ़ सरकारों को हकूमत का अख्तियार दिये जाने पर सिविल वार होने का डर है और यह

ہونے پر کوئی انتظام یا فوجی سنگٹھن بادشاہ کی سرکار کے ماتحت بچاؤ کے محکمے کے سمبندھ میں طے نہ ہوسکا تو ہمارے لئے صرف دو صورتیں ہیں. یا تو فوجوں کا بٹوارہ رضامندی سے کرلیا جاوے یا پھر اس فیصلے کے فقرہ ۱۶ ب کے انوسار بادشاہ کی سرکار پھر اپنا فیصلہ دے.

ملک کی حفاظت کے معاملے کی ذمہ داری (جس میں آج کل سنٹرل گورنمنٹ کے محکمے شامل ہیں) کس پر رہے، یہ ایک ٹیڑھی کھیر ہے. لیکن آخری فیصلہ تو بادشاہ کی سرکار کے ہاتھ میں ہی ہے. ایسی حالت میں یہ کہنا مشکل ہے کہ فوجوں کا بٹوارہ ہوگا بھی یا نہیں اور اگر بٹوارہ ہوا تو کس اصول پر — معاملہ بالکل بادشاہ کی سرکار کے ہاتھ میں ہے. مان لو کہ فوجوں کا بٹوارہ ہوگا. مگر اس بات کا خیال رہے کہ دو آزاد حکومتوں، ہندستان اور پاکستان کے سوا ایسی ہندستانی ریاستیں بھی ہیں جن سے بادشاہ کی سرکار کے صلح نامے ہیں. اس طرح سے ہندستان میں ۴۲ الگ الگ ہندستانی فوجیں ہوں گی جو الگ الگ ۴۲ ریاستوں کے ماتحت ہوں گی.

اگر فوج نہ بٹی تو آج کل کی طرح وہ بالکل انگریزوں کے ماتحت ہوگی. اگر فوج کا بٹوارہ ہوگیا تو ہندستان میں گھریلو لڑائی کا اندیشہ ہے. اس سلسلے میں ہاؤس آف لارڈس میں جو بحث فروری کے مہینے میں ہوئی تھی اس کی یاد دلانا ضروری ہے. ٹوری یعنی کنزرویٹیو پارٹی کے لوگوں نے کہا تھا کہ ہندستان کی دو ایک دوسرے کے خلاف سرکاروں کو حکومت کا اختیار دئے جانے پر سول وار ہونے کا ڈر ہے اور یہ

के साथ कोई माली रियायत किसी पोलिटिकल फ़ायदे के एवज़ में न करेगा. इन्डिया आफ़िस के लिये तो यह मुमकिन था कि वह किसी पोलिटिकल फ़ायदे के बदले में पाउन्ड पावने के सम्बन्ध में कोई रियायत मंज़ूर करले क्योंकि इन्डिया आफ़िस को तो पोलिटिकल मामलों से वास्ता रहता है जैसे कि मौजूदा फ़ैसले से है लेकिन जहाँ तक हिन्दुस्तान के स्टरलिंग बैलेन्स का सम्बन्ध है इसमें ब्रिटेन की तरफ़ से से कोई रियायत नहीं होगी.

इसके सिवाय हिन्दुस्तान के बटवारे की वजह से पाउन्ड पावने के बटवारे में बहुत झंझट और उलझन पैदा होगी. ऐसा कहा जाता है कि जब ब्रिटिश ट्रेजरी एक मरतबा पाउन्ड पावने का फ़ैसला कर देगी तब यह काम हिन्दुस्तान और पाकिस्तान सरकारों का होगा कि वह अपने आपस में यह तै करें कि किसको कितनी रक़म मिलना चाहिये. इसका यह नतीजा होना ज़रूर होगा कि हिन्दुस्तान और पाकिस्तान में माली झगड़े पैदा हो जायंगे.

अलग अलग फ़ौजें–

यह बात ध्यान देने के क़ाबिल है कि माउन्टबेटन के फ़ैसले में, किसी ख़ास मतलब से, फ़ौज के बटवारे के सम्बन्ध में कोई ज़िक्र नहीं आया है. पैरा १६ अ में कहा गया है कि इन तमाम महकमों के बारे में, जो इस वक़्त सेन्टर से सम्बन्ध रखते हैं, दोनों नई सरकारों के बीच बातचीत शुरू होगी. इन में हिफ़ाज़त, ख़ज़ाना और आने जाने के रास्तों के महकमें शामिल हैं. अगर हिन्दुस्तान और पाकिस्तान की सरकारों में आपस में बात चीत

(८३)

کے ساتھ کوئی مالی رعایت کسی پولٹیکل فائدے کے عوض میں نہ کرے گا۔ انڈیا آفس کے لئے تو یہ ممکن تھا کہ وہ کسی پولٹیکل فائدے کے بدلے میں پاونڈ پاونے کے سمبندھ میں کوئی رعایت منظور کرلے کیونکہ انڈیا آفس کو تو پولٹیکل معاملوں سے واسطہ رہتا ہے۔ جیسے کہ موجودہ فیصلے سے ہے لیکن جہاں تک ہندستان کے اسٹرلنگ بیلنس کا سمبندھ ہے اس میں برٹین کی طرف سے کوئی رعایت نہ ہوگی۔

اس کے سوائے ہندستان کے بٹوارے کی وجہ سے پاونڈ پاونے کے بٹوارے میں بہت جھنجھٹ اور اُلجھن پیدا ہوگی۔ ایسا کہا جاتا ہے کہ جب برٹش ٹریزری ایک مرتبہ پاونڈ پاونے کا فیصلہ کردے گی تب یہ کام ہندستان اور پاکستان سرکاروں کا ہوگا کہ وہ اپنے آپس میں یہ طے کریں کہ کس کو کتنی رقم ملنا چاہئے۔ اس کا یہ نتیجہ ضرور ہوگا کہ ہندستان اور پاکستان میں مالی جھگڑے پیدا ہو جائیں۔

الگ الگ فوجیں—

یہ بات دھیان دینے کے قابل ہے کہ ماونٹ بیٹن کے فیصلے میں کسی خاص مطلب سے، فوج کے بٹوارے کے سمبندھ میں کوئی ذکر نہیں آیا ہے۔ پیرا ۱۶ الف میں کہا گیا ہے کہ ان تمام محکموں کے بارے میں، جو اس وقت سنٹر سے سمبندھ رکھتے ہیں، دونوں نئی سرکاروں کے بیچ بات چیت شروع ہوگی۔ ان میں حفاظت، خزانہ اور آنے جانے کے راستوں کے محکمے شامل ہیں۔ اگر

होने पर कोई इन्तज़ाम या फ़ौजी संगठन बादशाह की सरकार के मातहत बचाव के महकमें के सम्बन्ध में तै नहो सका तो हमारे लिये सिर्फ़ दोसूरतें हैं. या तो फ़ौजों का बटवारा रज़ामन्दी से कर लिया जावे या फिर इस फ़ैसले के फ़िक़रा १६ ब के अनुसार बादशाह की सरकार फिर अपना फ़ैसला दे.

मुल्क की हिफ़ाज़त के मामले की जिम्मेदारी (जिसमें आजकल सेन्ट्रल गवरमेन्ट के महकमे शामिल हैं) किस पर रहे, यह एक टेढ़ी खीर है. लेकिन आखरी फ़ैसला तो बादशाह की सरकार के हाथ में ही है. ऐसी हालत में यह कहना मुश्किल है कि फ़ौजों का बटवारा होगा भी या नहीं और अगर बटवारा हुआ तो किस असूल पर—मामला बिलकुल बादशाह की सरकार के हाथ में है. मान लो कि फ़ौजों का बटवारा होगा. मगर इस बात का ख़याल रहे कि दो आज़ाद हकूमतों. हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के सिवाय ऐसी हिन्दुस्तानी रियासतें भी हैं जिनसे बादशाह की सरकार के सुलहनामे हैं. इस तरह से हिन्दुस्तान में ४२ अलग अलग हिन्दुस्तानी फ़ौजें होंगी जो अलग अलग ४२ रियासतों के मातहत होंगी.

अगर फ़ौज न बटी तो आजकल की तरह वह बिलकुल अँगरेज़ों के मातहत होगी. अगर फ़ौज का बटवारा हो गया तो हिन्दुस्तान में घरेलू लड़ाई का अन्देशा है. इस सिलसिले में हाउस आफ़ लार्ड्स में जो बहस फ़रवरी के महीने में हुई थी उसकी याद दिलाना जरूरी है. टोरी यानी कनज़रवेटिव पार्टी के लोगों ने कहा था कि हिन्दुस्तान की दो एक दूसरे के ख़िलाफ़ सरकारों को हकूमत का अख़्तियार दिये जाने पर सिविल वार होने का डर है और यह

ہونے پر کوئی انتظام یا فوجی سنگٹھن بادشاہ کی سرکار کے ماتحت بچاؤ کے محکمے کے سمبندھ میں طے نہ ہوسکا تو ہمارے لئے صرف دو صورتیں ہیں۔ یا تو فوجوں کا بٹوارہ رضامندی سے کرلیا جاوے یا پھر اس فیصلے کے فقرہ ۱۶ب کے انوسار بادشاہ کی سرکار پھر اپنا فیصلہ دے۔

ملک کی حفاظت کے معاملے کی ذمہ داری (جس میں آج کل سنٹرل گورنمنٹ کے محکمے شامل ہیں) کس پر رہے، یہ ایک ٹیڑھی کھیر ہے۔ لیکن آخری فیصلہ تو بادشاہ کی سرکار کے ہاتھ میں ہی ہے۔ ایسی حالت میں یہ کہنا مشکل ہے کہ فوجوں کا بٹوارہ ہوگا بھی یا نہیں اور اگر بٹوارہ ہوا تو کس اصول پر — معاملہ بالکل بادشاہ کی سرکار کے ہاتھ میں ہے۔ مان لو کہ فوجوں کا بٹوارہ ہوگا۔ مگر اس بات کا خیال رہے کہ دو آزاد حکومتوں، ہندستان اور پاکستان کے سوائے ایسی ہندستانی ریاستیں بھی ہیں جن سے بادشاہ کی سرکار کے صلح نامے ہیں۔ اس طرح سے ہندستان میں ۴۲ الگ الگ ہندستانی فوجیں ہوں گی جو الگ الگ ۴۲ ریاستوں کے ماتحت ہوں گی۔

اگر فوج نہ بٹی تو آج کل کی طرح وہ بالکل انگریزوں کے ماتحت ہوگی۔ اگر فوج کا بٹوارہ ہوگیا تو ہندستان میں گھریلو لڑائی کا اندیشہ ہے۔ اس سلسلے میں ہاؤس آف لارڈس میں جو بحث فروری کے مہینے میں ہوئی تھی اس کی یاد دلانا ضروری ہے۔ ٹوری یعنی کنزرویٹیو پارٹی کے لوگوں نے کہا تھا کہ ہندستان کی دو ایک دوسرے کے خلاف سرکاروں کو حکومت کا اختیار دئے جانے پر سول وار ہونے کا ڈر ہے اور یہ

भी डर है कि कहीं अमरीका और इंगलैन्ड की सरकारें एक दूसरे के ख़िलाफ़ शरीक न हो जायं. इन लोगों को जवाब देते हुए लार्ड पेथिक लारेन्स ने गवरमेंट की तरफ़ से मिस्टर चार्ल्स केसे का हवाला देते हुए कहा—"इसमें शक नहीं कि घरेलू लड़ाई का अन्देशा है मगर चूँकि सबको मालूम है कि अंगरेज़ी फ़ौज दो में से किसी को नहीं मिल सकती इसलिये यह ख़तरा बहुत कुछ कम हो जाता है."

बादशाह की सरकार ने मान लिया है कि इस हालत में घरेलू लड़ाई के बीज मौजूद हैं. लेकिन उनका जवाब यह है कि अंगरेज़ी साम्राज के लिये ख़तरा इस वजह से कम हो जाता है कि ऐसी घरेलू लड़ाई में अंगरेज़ों पर कोई तरफ़दारी का इलज़ाम नहीं लगा सकता. लार्ड पेथिक लारेन्स ने कहा कि इस क़िस्म की घरेलू लड़ाई से साम्राज खोने के बजाय 'हमारे और हिन्दुस्तान के बीच पहले से ज़्यादा मोहब्बत और दोस्ती रहेगी और दोनों का फ़ायदा इसी में है.' इससे यह भी ज़ाहिर होता है कि बादशाह की सरकार को पूरा भरोसा है कि इस बटवारे और दो ख़िलाफ़ पार्टियों और रियासतों के क़ायम हो जाने से हर एक पहले से भी ज़्यादा अंगरेज़ों के आधीन रहेगी. सिर्फ़ अंगरेज़ी साम्राज पहले से ज़्यादा महफ़ूज़ है बल्कि उसके साथ ही अमरीका के दख़ल देने का ख़तरा भी कम हो जाता है.

सरकार की फ़ौजी पालिसी—

सर जान मालकम ने १८३२ ई० में जब वह बम्बई के गवरनर थे कहा था (जिसका हवाला अदन रिपोर्ट सन् १८८४ में मौजूद है)—"पूरब में हमारा साम्राज तलवार के ज़ोर से क़ायम किया गया था और उसे तलवार के ज़ोर से ही क़ायम रक्खा जाना

بھی ڈر ہے کہ کہیں امریکا اور انگلینڈ کی سرکاریں ایک دوسرے کے خلاف شریک نہ ہو جائیں۔ ان لوگوں کو جواب دیتے ہوئے لارڈ پیتھک لارینس نے گورنمنٹ کی طرف سے مسٹر چارلس کیسے کا حوالہ دیتے ہوئے کہا۔"اس میں شک نہیں کہ گھریلو لڑائی کا اندیشہ ہے مگر چونکہ سب کو معلوم ہے کہ انگریزی فوج دو میں سے کسی کو نہیں مل سکتی اس لئے یہ خطرہ بہت کچھ کم ہو جاتا ہے۔"

بادشاہ کی سرکار نے مان لیا ہے کہ اس حالت میں گھریلو لڑائی کے بیج موجود ہیں۔ لیکن اُن کا جواب یہ ہے کہ انگریزی سامراج کے لئے خطرہ اس وجہ سے کم ہو جاتا ہے کہ ایسی گھریلو لڑائی میں انگریزوں پر کوئی طرفداری کا الزام نہیں لگا سکتا۔ لارڈ پیتھک لارنس نے کہا کہ اس قسم کی گھریلو لڑائی سے سامراج کھونے کے بجائے "ہمارے اور ہندستان کے بیچ پہلے سے زیادہ محبت اور دوستی رہے گی اور دونوں کا فائدہ اسی میں ہے۔" اس سے یہ بھی ظاہر ہوتا ہے کہ بادشاہ کی سرکار کو پورا بھروسہ ہے کہ اس بٹوارے اور دو خلاف پارٹیوں اور ریاستوں کے قائم ہو جانے سے ہر ایک پہلے سے بھی زیادہ انگریزوں کے آدھین رہے گی۔ صرف انگریزی سامراج پہلے سے زیادہ محفوظ ہے بلکہ اُس کے ساتھ ہی امریکا کے دخل دینے کا خطرہ بھی کم ہو جاتا ہے۔

سرکار کی فوجی پالیسی—

سرجان مالکم نے ۱۸۳۲ء میں جب وہ بمبئی کے گورنر تھے کہا تھا (جس کا حوالہ عدن رپورٹ ۱۸۸۴ء میں موجود ہے)۔ "پورب میں ہمارا سامراج تلوار کے زور سے قائم کیا گیا تھا اور اُسے تلوار کے زور سے ہی قائم رکھا جانا

चाहिये. हमारे साम्राज की कोई बुनियाद नहीं है और न कोई ऐसी बुनियाद इसकी हो सकती है जो हमारे साम्राज की इस खासियत को मिटा सके. और अगर हिन्दुस्तान की फ़ौज, खास कर देसी फ़ौज, ऐसी हालत में रक्खी न गई कि एक तरफ़ तो वह अच्छी तरह से हथियारबन्द हो और साथ ही उसके पूरी वफ़ादार भी रहे, तो कोई तिजारती, माली या अदालती तरीक़ा, जिसको हम जारी करें, हमारे लिये हमेशा फ़ायदा पहुँचाने वाला नहीं हो सकता." यह थी अंगरेज़ों की फ़ौजी पालिसी और अब भी इसी पालिसी पर काम हो रहा है—तलवार से हकूमत—इस नीति के लिये जो तरीक़ा काम में लाया जा रहा है वह इस अँगरेज़ी फ़ैसले की वजह से सिर्फ़ थोड़ा सा बदल गया है.

सन् १८५७ की बग़ावत अँगरेज़ों के लिये एक भयानक सबक़ थी. उसके बाद जाँच करने पर मालूम हुआ था कि उस वक़्त की फ़ौज सबको मिला कर बनाई गई थी. इसलिये अँगरेज़ों के ख़िलाफ़ सब क़ौमें मिल गईं. और हाल में आज़ाद हिन्द फ़ौज में भी ऐसा ही हुआ क्योंकि जापानियों ने सब क़ौमों के लोगों के साथ ही साथ कैम्पों में जमा कर दिया था. फिर इन्डियन नेवी रेटिंगज़ (समन्दरी फ़ौज के कर्मचारी) की बग़ावत में भी यही हुआ क्योंकि समन्दरी फ़ौज में जात पात का कोई फ़र्क़ नहीं रक्खा गया था. जनरल सर चार्ल्स नेपियर ने लिखा है कि—"जिस वक़्त इन बहादुर और क़ाबिल देसी सिपाहियों को मालूम होगा कि आपस में किस तरह मिलना चाहिये तो वह हम पर एक साथ धावा कर देंगे और हमारा खेल ख़तम हो जायगा."

सन १८५८ की पंजाब कमेटी की रिपोर्ट में सर जान लारेन्स,

چاہیئے. ہمارے سامراج کی کوئی بنیاد نہیں ہے اور نہ کوئی ایسی بنیاد اِس کی ہو سکتی ہے جو ہمارے سامراج کی اِس خاصیت کو مٹا سکے. اور اگر ہندستان کی فوج، خاص کر دیسی فوج، ایسی حالت میں رکھی نہ گئی کہ ایک طرف تو وہ اچھی طرح سے ہتھیار بند ہو اور ساتھ ہی اُس کے پوری وفادار بھی رہے، تو کوئی تجارتی، مالی یا عدالتی طریقہ، جس کو ہم جاری کریں، ہمارے لئے ہمیشہ فائدہ پہنچانے والا نہیں ہو سکتا." یہ تھی انگریزوں کی فوجی پالیسی اور اب بھی اِسی پالیسی پر کام ہو رہا ہے— تلوار سے حکومت— اِس نیتی کے لئے جو طریقہ کام میں لایا جا رہا ہے اِس انگریزی فیصلے کی وجہ سے صرف تھوڑا سا بدل گیا ہے.

۱۸۵۷ء کی بغاوت انگریزوں کے لئے ایک بھیانک سبق تھی. اُس کے بعد جانچ کرنے پر معلوم ہوا تھا کہ اُس وقت کی فوج سب کو ملا کر بنائی گئی تھی. اِس لئے انگریزوں کے خلاف سب قومیں مل گئیں. اور حال میں آزاد ہند فوج میں بھی ایسا ہی ہوا کیونکہ جاپانیوں نے سب قوموں کے لوگوں کو ساتھ ہی ساتھ کیمپوں میں جمع کر دیا تھا. پھر انڈین نیوی ریٹنگز (سمندری فوج کے کرمچاری) کی بغاوت میں بھی یہی ہوا کیونکہ سمندری فوج میں جات پات کا کوئی فرق نہیں رکھا گیا تھا. جنرل سر چارلس نیپیر نے لکھا ہے کہ— "جس وقت اِن بہادر اور قابل دیسی سپاہیوں کو معلوم ہوگا کہ آپس میں کس طرح ملنا چاہیئے تو وہ ہم پر ایک ساتھ دھاوا کر دیں گے اور ہمارا کھیل ختم ہو جائے گا."

۱۸۵۸ء کی پنجاب کمیٹی کی رپورٹ میں سر جان لارنس،

सर नेवल चैम्बरलेन और सर हरबर्ट एडवर्ड ने लिखा है—"चूँ कि हम हिन्दुस्तान में बड़ी फ़ौज के बिना काम नहीं चला सकते इसलिये हमारा ख़ास मक़सद यह है कि फ़ौज से कोई ख़तरा न होने पाए; और जहाँ देसी फ़ौजों के मुक़ाबले में योरोपियन फ़ौजों का होना ज़रूरी है वहाँ देसी फ़ौजों में भी आपस में फ़िरक़ावाराना खिंचाव बना रहना चाहिये. यह बात साबित हो चुकी है कि अलग अलग नसलों के लोगों को आपस में मिला देने से बहुत दिनों तक वह अलग अलग नहीं क़ायम रहते. उनके आपस के फ़रक़ को क़ायम रखना बहुत ज़रूरी है. जब तक यह फ़रक़ का ख़याल क़ायम रहता है एक मुल्क का रहने वाला मुसलमान दूसरे मुल्क के रहने वाले मुसलमान से नफ़रत करता है, ख़ौफ़ खाता है और उसको नापसन्द करता है. आइन्दा फ़ौजें सूबेवार होना चाहियें और ऐसे जुगराफ़ी हदों पर क़ायम रहना चाहियें जिनके बीच फ़रक़ और दुश्मनी ख़ूब अच्छी तरह हो."

हिन्दुस्तान में अंगरेज़ी फ़ौजी पालिसी अब तक यही थी और यही क़ायम है. लेकिन इस वक़्त इसके इस्तेमाल का तरीक़ा कुछ और ढंग का है. हिन्दुस्तान में सीधे सीधे अँगरेज़ी राज क़ायम रहने की जगह पर अब हमारे यहाँ आज़ाद मगर एक दूसरे के ख़िलाफ़ फ़िरक़ेवाराना हुकूमतें रहेंगी. राजा नवाबों की लकीर की फ़क़ीर हुकूमतें भी होंगी जिनमें से हर एक के पास अपनी आबादी की निस्बत से ज़्यादा फ़ौजें होंगी. हाल की रिपोर्टों से ज़ाहिर होता है कि पाकिस्तान में ग़ैर-मुसलिम फ़ौज भी होगी और हिन्दुस्तान में मुसलिम फ़ौज भी होगी. इस क़िस्म के इन्तज़ाम

سر نیول چیمبرلین اور سر ہربرٹ ایڈورڈ نے لکھا ہے—"چونکہ ہم ہندوستان میں بڑی فوج کے بنا کام نہیں چلا سکتے اس لئے ہمارا خاص مقصد یہ ہے کہ فوج سے کوئی خطرہ نہ ہونے پائے اور جہاں دیسی فوجوں کے مقابلے میں یوروپین فوجوں کا ہونا ضروری ہے وہاں دیسی فوجوں میں بھی آپس میں فرقہ وارانہ کھنچاؤ بنا رہنا چاہئے۔ یہ بات ثابت ہو چکی ہے کہ الگ الگ نسلوں کے لوگوں کو آپس میں ملا دینے سے بہت دنوں تک وہ الگ الگ نہیں قائم رہتے۔ ان کے آپس کے فرق کو قائم رکھنا بہت ضروری ہے۔ جب تک یہ فرق کا خیال قائم رہتا ہے ایک ملک کا رہنے والا مسلمان دوسرے ملک کے رہنے والے مسلمان سے نفرت کرتا ہے، خوف کھاتا ہے اور اس کو ناپسند کرتا ہے۔ آئندہ فوجیں صوبہ وار ہونا چاہئیں اور ایسے جغرافی حدوں پر قائم رہنا چاہئیں جن کے بیچ فرق اور دشمنی خوب اچھی طرح ہو۔"

ہندوستان میں انگریزی فوجی پالیسی اب تک یہی تھی اور یہی قائم ہے۔ لیکن اس وقت اس کے استعمال کا طریقہ کچھ اور ڈھنگ کا ہے۔ ہندوستان میں سیدھے سیدھے انگریزی راج قائم رہنے کی جگہ پہ اب ہمارے یہاں آزاد مگر ایک دوسرے کے خلاف فرقہ وارانہ حکومتیں رہیں گی۔ راجا نوابوں کی لکیر کی فقیر حکومتیں بھی ہوں گی جن میں سے ہر ایک کے پاس اپنی آبادی کی نسبت سے زیادہ فوجیں ہوں گی۔ حال کی رپورٹوں سے ظاہر ہوتا ہے کہ پاکستان میں غیر مسلم فوج بھی ہوگی اور ہندوستان میں مسلم فوج بھی ہوگی۔ اس قسم کے انتظام کا نتیجہ خطرناک ہی ہوگا۔

हिन्दुस्तान, पाकिस्तान और देसी रियासतों में सिर्फ़ जज़बाती दुशमनी ही न होगी और न यह सिर्फ़ पोलिटिकल ही होगी बल्कि माली भी होगी. पाकिस्तान अपना मुल्की और माली फैलाव सब से पहिले हिन्दुस्तान के ख़िलाफ़ चाहेगा. और हिन्दुस्तान पहले रियासतों के ख़िलाफ़ कार्रवाई करेगा जैसा कि कॉंगरेसी लीडरों की उन स्पीचों से ज़ाहिर होता है जो उन्होंने आल इन्डिया कॉंगरेस कमेटी के जून वाले जलसे में दी थीं कि हिन्दुस्तान दक्खिनी-पूरबी एशिया की ख़ास हकूमत होगी. रियासतें असूल से ही हिन्दुस्तान और पाकिस्तान दोनों के ख़िलाफ़ हैं क्योंकि यह दोनों अपनी अपनी गवरमेन्ट के रुकावट डालने पर भी तरक़्क़ीकरेंगी. जिसका असर रियासती जनता परपड़े बिना न रहेगा.

देसी रियासतें और विदेशी——

१६ मई. १९४६ वाले फ़ैसले में देसी रियासतों की हैसियत और उनके ताल्लुक़ दूसरी हिन्दुस्तानी रियासतों से, ब्रिटिश से और दूसरे मुल्कों से बड़ी हिकमत से बयान कर दिये गए हैं. इस नए फ़ैसले के फ़िकरा १८ में सिर्फ़ पिछले फ़ैसले का हवाला देकर उनका ज़िक्र कर दिया गया है. सबसे पहला ज़रूरी मसला आला-अख़्तियार (पैरामाउन्टसी) का है जो कि राजाओं को वापस कर दिया गया है. यह आला-अख़्तियार और बहुत तरह से हासिल होने के साथ साथ बर्तानिया को मुग़लों की सलतनत से मिला था यानी बर्तानिय ने मुग़ल बादशाहों से वरासत में पाया था. आला अख़्तियार की वरासत के सम्बन्ध में तीन रायें हैं यह तीनों एक दूसरे के ख़िलाफ़ हैं लेकिन तीनों ही क़ानूनी तौर पर

ہندستان، پاکستان اور دیسی ریاستوں میں صرف جذباتی دشمنی ہی نہ ہوگی اور نہ یہ صرف پولٹیکل ہی ہوگی بلکہ مالی بھی ہوگی۔ پاکستان اپنا مُلکی اور مالی پھیلاؤ سب سے پہلے ہندستان کے خلاف چاہے گا۔ اور ہندستان پہلے ریاستوں کے خلاف کارروائی کرے گا جیسا کہ کانگریسی لیڈروں کی اُن اسپیچوں سے ظاہر ہوتا ہے جو انھوں نے آل انڈیا کانگریس کمیٹی کے جون والے جلسے میں دی تھیں کہ ہندستان دکھنی پوربی ایشیا کی خاص حکومت ہوگی۔ ریاستیں اُصول سے ہی ہندستان اور پاکستان دونوں کے خلاف ہیں۔ کیونکہ یہ دونوں اپنی اپنی گورنمنٹ کے رُکاوٹ ڈالنے پر بھی ترقی کریں گی جس کا اثر ریاستی جنتا پر پڑے بنا نہ رہے گا۔

دیسی ریاستیں اور بدیشی——

۱۶ مئی ۱۹۴۶ والے فیصلے میں دیسی ریاستوں کی حیثیت اور اُن کے تعلق دوسری ہندستانی ریاستوں سے، برٹش سے اور دوسرے ملکوں سے بڑی حکمت سے بیان کردئے گئے ہیں۔ اِس نئے فیصلے کے فقرہ ۱۸ میں صرف پہلے فیصلے کا حوالہ دے کر اُن کا ذکر کردیا گیا ہے۔ سب سے پہلا ضروری مسئلہ اعلیٰ اختیار (پیرا ماونٹسی) کا ہے جو کہ راجاؤں کو واپس کردیا گیا ہے۔ یہ اعلیٰ اختیار اور بہت طرح سے حاصل ہونے کے ساتھ ساتھ برطانیہ کو مُغلوں کی سلطنت سے ملا تھا یعنی برطانیہ نے مُغل بادشاہوں سے وراثت میں پایا تھا۔ اعلیٰ اختیار کی وراثت کے سمبندھ میں تین رائیں ہیں۔ یہ تینوں ایک دوسرے کے خلاف ہیں لیکن تینوں ہی قانونی طور پر جائز ہیں۔

एक राय यह है, जो बादशाह की सरकार की भी है, कि बर्तानियाँ मुग़ल राज की वारिस है. अब चूँकि बर्तानिया की वरासत किसी ख़ास शख़्स को नहीं मिल रही है इसलिये हालत उस वक़्त की तरह हो जाती है जब कि मुग़ल राज बरबाद हो रहा था और जब बर्तानिया ने उसकी जगह ली थी. इसलिये आला-अख़्तियार ख़त्म हो जाना चाहिये. रियासतें आपस में एक दूसरे से बात चीत करके अपने सम्बन्ध तै कर लें. दूसरी राय यह है—हिन्दुस्तान और पाकिस्तान ने बर्तानियाँ से वरासत पाई है इसलिये इन दोनों को ही आला-अख़्तियार हासिल होना चाहिये. एक तीसरी राय यह है कि हिन्दुस्तान को बर्तानिय की वरासत हासिल हुई है इसलिये आला अख़्तियार सिर्फ़ हिन्दुस्तान को ही हासिल होना चाहिये.

अंगरेज़ी फ़ैसले की कारीगरी ही यह है कि वरासत पाने के असूल की तारीफ़ नहीं बतलाई गई है, हालाँ कि ख़ुद बादशाह की सरकार ने पहली राय पर कार्रवाई की है. यह एक बड़ी ख़तरनाक भूल है. इससे बादशाह की सरकार ने कई ऐसी रियासतें पैदा कर दी है जो एक दूसरे से आज़ाद हैं. मगर ब्रिटिश गवरमेन्ट से कोई आज़ाद नहीं है. रियासतें इस फ़ैसले की वजह से और आला-अख़्तियार के ख़त्म हो जाने से, जो इस फ़ैसले से ख़त्म कर दिया गया है, एक दूसरे से आज़ाद हैं. यह हम दिखला चुके हैं कि हिन्दुस्तान और पाकिस्तान दोनों ही अंगरेज़ों के आधीन हैं. पर देसी रियासतों की हालत क्या होगी, इसके बारे में कुछ कहा नहीं जा सकता.

देसी रियासतों को आज़ादी नहीं दी गई है. उनके लिये

ایک رائے یہ ہے۔ جو بادشاہ کی سرکار کی بھی ہے کہ برطانیہ مُغل راج کی وارث ہے۔ اب چونکہ برطانیہ کی وراثت کسی خاص شخص کو نہیں مل رہی ہے اس لئے حالت اُس وقت کی طرح ہو جاتی ہے جب کہ مُغل راج برباد ہو رہا تھا اور جب برطانیہ نے اُس کی جگہ لی تھی، اس لئے اعلیٰ اختیار ختم ہو جانا چاہئے۔ ریاستیں آپس میں ایک دوسرے سے بات چیت کرکے اپنے سمبندھ طے کر لیں۔ دوسری رائے یہ ہے — ہندستان اور پاکستان نے برطانیہ سے وراثت پائی ہے اس لئے اِن دونوں کو ہی اعلیٰ اختیار حاصل ہونا چاہئے۔ ایک تیسری رائے یہ ہے کہ ہندستان کو برطانیہ کی وراثت حاصل ہوئی ہے اس لئے اعلیٰ اختیار صرف ہندستان کو ہی حاصل ہونا چاہئے۔

انگریزی فیصلے کی کاری گری ہی یہ ہے کہ وراثت پانے کے اصول کی تعریف نہیں بتلائی گئی ہے، حالانکہ خود بادشاہ کی سرکار نے پہلی رائے پر کارروائی کی ہے۔ یہ ایک بڑی خطرناک بھول ہے۔ اس سے بادشاہ کی سرکار نے کئی ایسی ریاستیں پیدا کر دی ہیں جو ایک دوسرے سے آزاد ہیں۔ مگر برٹش گورنمنٹ سے کوئی آزاد نہیں ہے۔ ریاستیں اِس فیصلے کی وجہ سے اور اعلیٰ اختیار کے ختم ہو جانے سے، جو اس فیصلے سے ختم کر دیا گیا ہے، ایک دوسرے سے آزاد ہیں۔ یہ ہم دکھلا چکے ہیں کہ ہندستان اور پاکستان دونوں ہی انگریزوں کے آدھین ہیں۔ پر دیسی ریاستوں کی حالت کیا ہوگی، اس کے بارے میں کچھ کہا نہیں جا سکتا۔

دیسی ریاستوں کو آزادی نہیں دی گئی ہے۔ اُن کے لئے

सिर्फ़ बर्तानिया के आला-अख़्तियार को ख़त्म कर दिया गया है. इसका मतलब यह है कि वह हिन्दुस्तान की बाक़ी हुकूमतों से ख़ुद मुख़्तार है. बर्तानियाँ और देसी रिसायतों के ताल्लुक़ के बारे में बादशाह की सरकार ने ऐलान किया है कि इनको डोमीनियन स्टेटस का हक़ नहीं दिया जा सकता और न वह बर्तानिया या ग़ैर मुल्कों से कोई सीधा ताल्लुक़ रख सकते हैं. यह कैसे हो सकता हैं कि बर्तानिया आला अख्तियार भी छोड़ दे. मुग़ल सलतनत की वरासत भी छोड़ दे, रियासतों को ऐसी हालत में छोड़ दे जिसमें कि वह उस वक़्त थीं जबकि मुग़ल राज गिर रहा था और इस तरह रियासतों को आज़ाद कर दे और साथ ही साथ रियासतों को दूसरे मुल्कों से ताल्लुक़ क़ायम करने की इजाज़त भी न दे. यह अजीब बात है.

असल में ऐसा कोई अख़्तियार बर्तानिया को है ही नहीं. इस मामले में बादशाह की सरकार सिर्फ़ अपनी मनमानी कर रही है. बर्तानिया का मुग़ल सलतनत की वरासत छोड़ देने का मतलब यह है कि हिन्दुस्तान व पाकिस्तान भी ग़ैर मुल्कों से सीधा ताल्लुक़ पैदा करने का दावा कर सकते थे मगर चूँकि उनको सिर्फ़ डोमीनियन स्टेटस मिला है इसलिये वह ऐसा दावा नहीं कर सकते. देसी रियासतें असूल से तो ग़ैर मुल्कों से ताल्लुक़ पैदा करने का हक़ रखती हैं लेकिन अमल में यह हक़ नहीं पा सकतीं. असल में तो वह हिन्दुस्तान और पाकिस्तान दोनों या किसी एक के ज़रिये से बादशाह के सरकार के आधीन हैं. अगर कोई रियासत सच्ची आज़ादी चाहेगी तो बादशाह की सरकार फ़ौरन ही हिन्दुस्तान या पाकिस्तान या दोनों ही को आला-अख़्तियार सुपुर्द कर देगी·

صرف برطانیہ کے اعلیٰ اختیار کو ختم کر دیا گیا ہے۔ اس کا مطلب یہ ہے کہ وہ ہندستان کی باقی حکومتوں سے خود مختار ہیں۔ برطانیہ اور دیسی ریاستوں کے تعلق کے بارے میں بادشاہ کی سرکار نے اعلان کیا ہے کہ ان کو ڈومینین اسٹیٹس کا حق نہیں دیا جا سکتا اور نہ وہ برطانیہ یا غیر ملکوں سے کوئی سیدھا تعلق رکھ سکتی ہیں۔ یہ کیسے ہو سکتا ہے کہ برطانیہ اعلیٰ اختیار بھی چھوڑ دے، مغل سلطنت کی وراثت بھی چھوڑ دے، ریاستوں کو ایسی حالت میں چھوڑ دے جس میں کہ وہ اس وقت تھیں جب کہ مغل راج گر رہا تھا اور اس طرح ریاستوں کو آزاد کر دے اور ساتھ ہی ساتھ ریاستوں کو دوسرے ملکوں سے تعلق قائم کرنے کی اجازت بھی نہ دے۔ یہ عجیب بات ہے۔

اصل میں ایسا کوئی اختیار برطانیہ کو ہے ہی نہیں۔ اس معاملہ میں بادشاہ کی سرکار صرف اپنی من مانی کر رہی ہے۔ برطانیہ کا مغل سلطنت کی وراثت چھوڑ دینے کا مطلب یہ ہے کہ ہندستان اور پاکستان بھی غیر ملکوں سے سیدھا تعلق پیدا کرنے کا دعویٰ کر سکتے تھے مگر چونکہ ان کو صرف ڈومینین اسٹیٹس ملا ہے اس لئے وہ ایسا دعویٰ نہیں کر سکتے۔ دیسی ریاستیں اصول سے تو غیر ملکوں سے تعلق پیدا کرنے کا حق رکھتی ہیں لیکن عمل میں یہ حق نہیں پا سکتیں۔ اصل میں تو وہ ہندستان اور پاکستان دونوں یا کسی ایک کے ذریعہ سے بادشاہ کی سرکار کے آدھین ہیں۔ اگر کوئی ریاست سچی آزادی چاہے گی تو بادشاہ کی سرکار فوراً ہی ہندستان یا پاکستان یا دونوں ہی کو اعلیٰ اختیار سپرد کر دے گی۔

फ़ैसले में वरासत के तीनों असूलों में से कोई भी शामिल नहीं है. इस तरह पर ऐसी बाग़ी रियासत को सलतनत से बाहर जाने की इजाज़त नहीं होगी.

अगर किसी वक़्त हिन्दुस्तान या पाकिस्तान में से कोई या दोनों पैरा २० के मुताबिक़ सलतनत से अलग होना चाहें तो वह ऐसा नहीं कर सकते क्योंकि फ़ैसले में आला-अख़्तियार के वरासत के बारे में कोई ज़िक्र नहीं है. अगर हिन्दुस्तान सलतनत से अलग होना चाहेगा तो बादशाह की सरकार पाकिस्तान को आला-अख़्तियार दे सकती है और अगर पाकिस्तान सलतनत से बाहर होना चाहेगा तो वह हिन्दुस्तान को वारिस क़रार दे सकती है. अगर हिन्दुस्तान और पाकिस्तान दोनों सलतनत से अलग होना चाहें तो बादशाह की सरकार कह सकती है कि आला-अख़्तियार सिर्फ़ रियासतों के लिये छोड़ दिया गया है और ब्रिटिश इन्डिया की कोई हुकूमत या हुकूमतें ताज की वारिस नहीं हो सकतीं. यह फ़ैसला क़ानून के मुताबिक़ पूरे तौर पर जायज़ समझा जाएगा. बादशाह की सरकार फ़ौज के ज़रिये उस पर अमल कराएगी और इसमें अमरीका उसको मदद देगा.

१५ जून सन्' ४७

فیصلے میں وراثت کے تینوں اصولوں میں سے کوئی بھی شامل نہیں ہے۔ اس طرح پر ایسی باغی ریاست کو سلطنت سے باہر جانے کی اجازت نہیں ہوگی۔

اگر کسی وقت ہندستان یا پاکستان میں سے کوئی یا دونوں پیرا ۲۰ کے مطابق سلطنت سے الگ ہونا چاہیں تو وہ ایسا نہیں کرسکتے کیونکہ فیصلے میں اعلیٰ اختیار کی وراثت کے بارے میں کوئی ذکر نہیں ہے۔ اگر ہندستان سلطنت سے الگ ہونا چاہے گا تو بادشاہ کی سرکار پاکستان کو اعلیٰ اختیار دے سکتی ہے اور اگر پاکستان سلطنت سے باہر ہونا چاہے گا تو وہ ہندستان کو وارث قرار دے سکتی ہے۔ اگر ہندستان اور پاکستان دونوں سلطنت سے الگ ہونا چاہیں تو بادشاہ کی سرکار کہہ سکتی ہے کہ اعلیٰ اختیار صرف ریاستوں کے لئے چھوڑ دیا گیا ہے اور برٹش انڈیا کی کوئی حکومت یا حکومتیں تاج کی وارث نہیں ہوسکتیں۔ یہ فیصلہ قانون کے مطابق پورے طور پر جائز سمجھا جائے گا۔ بادشاہ کی سرکار فوج کے ذریعہ اس پر عمل کرائے گی اور اس میں امریکہ اس کو مدد دے گا۔

۱۵ جون ۴۷ء

कुछ किताबें

(१) कल्पना कानन—लिखने वाले श्री ब्रिजलाल बियाणी. सफ़े ८०, लिखावट नागरी. क़ीमत दो रुपये, पता—हिन्द प्रकाशन. राजस्थान भवन, अकोला (बरार).

इस किताब के लिखने वाले श्री ब्रिजलाल बियाणी बरार के मशहूर देश भक्त हैं. किताब से मालूम होता है कि देश भक्त होने के साथ साथ वह अच्छे लिखने वाले भी हैं. सन् १९४३ में ब्रिजलाल जी वेलोर जेल में क़ैद थे. वहीं उन्होंने यह छोटे छोटे तेरह मज़मून लिखे जो इस किताब के रूप में शाया कर दिये गए हैं. मज़मूनों में भाषा की सुन्दरता है. नाज़ुक और ऊँचे विचार हैं. ख़यालों का ख़ास उड़ान है. छोटी छोटी बातों से ज़िन्दगी के लिये काफ़ी सबक़ भी है. मालूम होता है कि सचमुच जेल के अकेलेपन में एक मस्त और विचारवान इन्सान का दिल और दिमाग़ कितनी अच्छी तरह काम कर सकता है. किताब की ज़बान हिन्दुस्तानी नहीं, ज़रा मुश्किल हिन्दी है. हमें यक़ीन है कि अगर बियाणी जी उर्दू अदब से थोड़ी जानकारी हासिल करलें तो उनके शब्दों और मुहावरों का ख़ज़ाना और भी मालामाल हो जाय और वह क़ौमी ज़बान हिन्दुस्तानी के फलने फूलने में बहुत बड़ी मदद दे सकें. फिर भी हम चाहते हैं कि जो लोग आजकल के ऐसे हिन्दी साहित्य को पढ़ना चाहें जो आर्ट यानी कला या अदब की निगाह से ऊँचे दरजे की कही जा सके, वह इस किताब को ज़रूर पढ़ें.

—सुन्दरलाल

کچھ کتابیں

(۱) کلپنا کانن — لکھنے والے شری برج لال بیانی، صفحے ۸۰، لکھاوٹ ناگری، قیمت دو روپیہ، پتہ — ہند پرکاشن راجستھان بھون، اکولا (برار)۔

اس کتاب کے لکھنے والے شری برج لال بیانی برار کے مشہور دیش بھگت ہیں۔ کتاب سے معلوم ہوتا ہے کہ دیش بھگت ہونے کے ساتھ ساتھ وہ اچھے لکھنے والے بھی ہیں۔ سنہ ۱۹۴۳ء میں برج لال جی ویلور جیل میں قید تھے۔ وہیں انھوں نے چھوٹے چھوٹے تیرہ مضمون لکھے جو اس کتاب کے روپ میں شایع کر دئے گئے ہیں۔ مضمونوں میں بھاشا کی سندرتا ہے، نازک اور اونچے وچار ہیں۔ خیالوں کا خاص اڑان ہے۔ چھوٹی چھوٹی باتوں سے زندگی کے لئے کافی سبق بھی ہے۔ معلوم ہوتا ہے کہ سچ مچ جیل کے اکیلے پن میں ایک مست اور وچاروان انسان کا دل اور دماغ کتنی اچھی طرح کام کر سکتا ہے۔ کتاب کی زبان ہندستانی نہیں، ذرا مشکل ہندی ہے۔ ہمیں یقین ہے کہ اگر بیانی جی اردو ادب سے تھوڑی جانکاری حاصل کر لیں تو ان کے شبدوں اور محاوروں کا خزانہ اور بھی مالامال ہو جائے اور وہ قومی زبان ہندستانی کے پھلنے پھولنے میں بہت بڑی مدد دے سکیں۔ پھر بھی ہم چاہتے ہیں کہ جو لوگ آجکل کے ایسے ہندی ساہتیہ کو پڑھنا چاہیں جو آرٹ یعنی کلا یا ادب کی نگاہ سے اونچے درجے کی کہی جا سکے، وہ اس کتاب کو ضرور پڑھیں۔

— سندرلال

(२) **इनसान**—लिखने वाले श्री काशीराम चावला, सफ़े २५६, क़ीमत एक रुपया चार आने, लिखावट उरदू, पता—रीगल पबलिशिंग कम्पनी, कपूरथला.

इस किताब में लेखक ने यह बताया है कि सच्चे इनसान के क्या गुन होते हैं जिनको हासिल करके वह दुनिया के तख़्ते को बदल देते हैं और ख़ुद सच्चाई के रास्ते से जा लगते हैं. किताब १२ अध्यायों में बटी है. "इनसानियत क्या है" में लेखक का एक शेर—

दर्दे दिल पासे वफ़ा जज़बए ईमाँ होना
आदमीयत है यही और यही इनसाँ होना

अच्छा असर पैदा करता है. 'इनसान और उसका ख़ालिक़' में ख़ुदा को ठीक ठीक समझने पर ख़ास जोर दिया गया है. 'इनसान और उसका दिल' में लेखक का एक शेर है—

ज़र्फ़ नापाक है तो उसमें है हर शय नापाक
दिल नहीं साफ़ तो क्या ख़ाक इबादत होगी

और इसी पर कबीर का एक दोहा है—

मन के हारे हार है, मन के जीते जीत.

'इनसान और उसके ख़यालात' में लेखक ने कुछ तरकीबें बताई हैं जिन पर अमल करने से विचार उँचे उठ सकते हैं. 'इनसान और उसकी ख़ुशी' में कुछ मशहूर पच्छिमी फ़िलासफ़रों [illegible] का कहना है कि इनसान को तक़दीर पर

(۲) **انسان**— لکھنے والے شری کاشی رام چاولا، صفحے ۲۵۶، قیمت ایک روپیہ چار آنے، لکھاوٹ اردو، پتہ— ریگل پبلشنگ کمپنی، کپورتھلا۔

اس کتاب میں لیکھک نے یہ بتایا ہے کہ سچے انسان کے کیا گن ہوتے ہیں جن کو حاصل کرکے وہ دنیا کے تختے کو بدل دیتے ہیں اور خود سچائی کے راستے سے جا لگتے ہیں۔ کتاب ۱۲ ادھیایوں میں بٹی ہے۔ "انسانیت کیا ہے" میں لیکھک کا ایک شعر—

دردِ دل پاسِ وفا جذبۂ ایماں ہونا
آدمیت ہے یہی اور یہی انساں ہونا

اچھا اثر پیدا کرتا ہے۔ 'انسان اور اس کا خالق' میں خدا کو ٹھیک ٹھیک سمجھنے پر خاص زور دیا گیا ہے۔ 'انسان اور اس کا دل' میں لیکھک کا ایک شعر ہے—

ظرف ناپاک ہے تو اس میں ہے ہر شے ناپاک
دل نہیں صاف تو کیا خاک عبادت ہوگی

اور اسی پر کبیر کا ایک دوہا ہے—

من کے ہارے ہار ہے، من کے جیتے جیت۔

'انسان اور اس کے خیالات' میں لیکھک نے کچھ ترکیبیں بتائی ہیں جن پر عمل کرنے سے وچار اونچے اٹھ سکتے ہیں۔ 'انسان اور اس کی خوشی' میں کچھ مشہور پچھمی فلاسفروں کی رائیں دی ہوئی ہیں۔ لیکھک کا کہنا ہے کہ انسان کو تقدیر پر

ही भरोसा करके अपनी तरफ़ से मेहनत करने में कोई कमी न करना चहिये. वह सीधी सादी और ख़ुदा पसन्द जिन्दगी को अच्छा बताते हैं

किताब आज कल बहुत ही काम की है. अगर इसे ग़ौर से पढ़ कर उसकी बताई हुई बातों पर अमल किया जाय तो इनसान बहुत ऊँचा उठ सकता है. कमी सिर्फ़ इतनी है कि यह किताब ऐसी आसान बोली में नहीं लिखी गई जो घर घर में बोली जाती है और जिसे सब समझते हैं. यह कमी खटकती है.

—गनेश प्रसाद

नगीने —लिखने वाले श्री सुदर्शन. सफ़े २०७, लिखावट नागरी क़ीमत तीन रुपये, पता— वोरा ऐंड कंपनी पब्लिशर्स लिमिटेड, ३ राउंड बिल्डिंग, कालबादेवी रोड, बम्बई २.

सुदर्शन जी एक मशहूर कहानी लेखक हैं इस किताब में उन की १४ कहानियाँ शाया हुई हैं कहानियाँ सभी अच्छी हैं कुछ कहानियाँ तो बहुत ही ऊँचे, नाज़ुक विचारों और उम्दा नसीहतों से भरी हुई हैं "कवि का चुनाव" नाम की कहानी में सच्चे कवि की सिफ़त पर रोशनी डाली गई है. "गंगासिह" नाम की कहानी में नाज़ुक ख़याली ऊँचे दरजे की है. "कलयुग नहीं, करयुग है यह" में हिन्दुस्तानी और विलायती तहज़ीब की अच्छी मुठभेड़ है जिसमें हिन्दुस्तानी सभ्यता की जीत होती है. "अरस्तु और ईरानी रमणी" एक संजीदा सबक से भरी हुई कहानी है. "केरेस्कोनिया" मज़ाक और नसीहत से भरी है. इसमें यह दिखाया गया है कि आसान भाषा ही क़ाबलियत

ہی بھروسہ کرکے اپنی طرف سے محنت کرنے میں کوئی کمی نہ کرنا چاہئے. وہ سیدھی سادی اور خداپسند زندگی کو اچھا بتاتے ہیں.

کتاب آج کل بہت کام کی ہے. اگر اسے غور سے پڑھ کر اس کی بتائی ہوئی باتوں پر عمل کیا جائے تو انسان بہت اونچا اٹھ سکتا ہے. کمی صرف اتنی ہے کہ یہ کتاب ایسی آسان بولی میں نہیں لکھی گئی جو گھر گھر میں بولی جاتی ہے اور جسے سب سمجھتے ہیں. یہ کمی کھٹکتی ہے.

—سندر لال

نگینے—لکھنے والے شری سدرشن، صفحے ۲۰۷، لکھاوٹ ناگری قیمت تین روپیے، پتہ— بورا اینڈ کمپنی پبلشرس لمٹیڈ، ۳ راؤنڈ بلڈنگ، کالبادیوی روڈ، بمبئی ۲.

سدرشن جی ایک مشہور کہانی لیکھک ہیں اس کتاب میں ان کی ۱۴ کہانیاں شائع ہوئی ہیں کہانیاں سبھی اچھی ہیں کچھ کہانیاں تو بہت ہی اونچے نازک وچاروں اور عمدہ نصیحتوں سے بھری ہوئی ہیں "کوی کا چناؤ" نام کی کہانی میں سچے کوی کی صفت پر روشنی ڈالی گئی ہے. "گنگا سنگھ" نام کی کہانی میں نازک خیالی اونچے درجے کی ہے "کلجگ نہیں، کرجگ ہے یہ" میں ہندستانی اور ولایتی تہذیبوں کی اچھی مڈبھیڑ ہے جس میں ہندستانی سبھیتا کی جیت ہوتی ہے. "ارسطو اور ایرانی رمنی" ایک سنجیدہ سبق سے بھری ہوئی کہانی ہے. "کیریسکانیا" مذاق اور نصیحت سے بھری ہے. اس میں یہ دکھایا گیا ہے کہ آسان بھاشا ہی قابلیت

की कसौटी है न कि ऐसी मुश्किल भाषा जो किसी के समझ में ही न आ सके. "चैन नगर के चार बेकार" नाम की कहानी सचमुच बहुत अच्छी है. चार बेकारों की आड़ लेकर लेखक ने बड़े राज़ की बात लिख डाली है. कहानी ग़ौर से पढ़ने लायक़ है. "मनुष्य की कसौटी" अछूतोद्धार की तरफ़दारी में एक बोलती हुई कहानी है. "पाप के पथ पर" नाम की कहानी आख़ीर तक तो बहुत अच्छी है, तबियत को हिला देती है मगर इसका आख़िर खटकता है.

कहानियों की भाषा सुन्दर है और तर्ज़ ऐसा है कि पढ़ने वाला आसानी से उसमें डूब सकता है. ज़बान आसन हिन्दी है. कही कहीं पर छपाई की ग़ल्तियाँ रह गई हैं

—गनेश प्रसाद

हमारी राय

बरतानिया की नई तजवीज़-

इंडिया के बटवारे की बात काँगरेस और लीग दोनों ने मान ली है. पर ख़ुशी दोनों में से किसी के चहरे पर नहीं है. दोनों में से किसी को तसल्ली नहीं है. दोनों के दिल भी साफ़ नहीं हुए मालूम होते. ख़ुशी, तसल्ली और सफ़ाई हो भी नहीं सकती. अभी तक दोनों कुल हिन्दुस्तान की मालिक थीं, बिचवक़िया सरकार में दोनों बैठी राज कर रही थीं, असलो न सही नक़ली ही सही. नक़ली असली भी हो जाता पर अब ? अब दोनों इंडिया के टुकड़ों की रानी रह जायंगी. लीग रह जायेगी पाकिस्तानी और

کی کسوٹی ہو نہ کہ ایسی مشکل بھاشا جو کسی کے سمجھ میں ہی نہ آسکے. "چین نگر کے چار بیکار" نام کی کہانی سچ مچ بہت اچھی ہو. چار بیکاروں کی آڑ لے کر لیکھک نے بڑے راز کی بات لکھ ڈالی ہو. کہانی غور سے پڑھنے لائق ہو. "منش کی کسوٹی" اچھوت ادّھار کی طرفداری میں ایک بولتی ہوئی کہانی ہو. "پاپ کے پتھ پر" نام کی کہانی آخر تک تو بہت اچھی ہو، طبیعت کو ہلا دیتی ہو مگر اس کا آخر کھٹکتا ہو.

کہانیوں کی بھاشا سندر ہو اور طرز ایسا ہو کہ پڑھنے والا آسانی سے اس میں ڈوب سکتا ہو. زبان آسان ہندی ہو. کہیں کہیں پر چھپائی کی غلطیاں رہ گئی ہیں.

— گنیش پرشاد

ہماری رائے

برطانیہ کی نئی تجویز—

انڈیا کے بٹوارے کی بات کانگریس اور لیگ دونوں نے مان لی ہو پر خوشی دونوں میں سے کسی کے چہرے پر نہیں ہو. دونوں میں سے کسی کو تسلّی نہیں ہو. دونوں کے دل بھی صاف نہیں ہوئے معلوم ہوتے. خوشی، تسلّی اور صفائی ہو بھی نہیں سکتی. ابھی تک دونوں کل ہندستان کی مالک تھیں، بیچ وقتی سرکار میں دونوں بیٹھی راج کر رہی تھیں، اصلی نہ سہی نقلی ہی سہی. نقلی اصلی بھی ہو جاتا پر اب؟ اب دونوں انڈیا کے ٹکڑوں کی رانی رہ جائیں گی. لیگ رہ جائے گی پاکستانی اور

काँगरेस कहलायेगी हिन्दुस्तानी ! 'इंडियन नैशनल काँगरेस' पंख लगा कर उड़ गई और यही किया 'आल इंडिया मुसलिम लीग' ने. और उड़ादी किसने ? जिसकी मुट्ठी में आज सारा इंडिया है, उसने.

लीगियों का यह दावा था कि हुकूमत वह अच्छी कर सकते थे क्यों कि उनको हुकूमत का काम छोड़े अभी सौ बरस भी नहीं हुए. उधर कांगरेस कहती थी कि कांगरेसी अच्छी हुकूमत कर सकते थे क्योंकि हुकूमत करने का दिन उन ही की मेहनत और कुरबानी से पास आ पाया था. काँगरेस अगर ख़ालिस हिन्दू जमात होती तब भी अपनी तादद की वजह से इंडिया की बागडोर उसके हाथ में आती और अब वह हिन्दू न होकर अपने को इंडियन कहती है तब तो किसी को हुकूमत की घोड़ी की बाग थमाते और भी झिझक न रह जाती. काँगरेस का यह भी कहना है कि वह लीग से उमर में भी बड़ी है. अब लीग को लीजिये. लीग है ख़ालिस मुसलमानी जमात, पर इस से क्या ? उसने कुछ दिनों में ही यह साबित कर दिखाया है कि वह काँगरेस से कहीं ज्यादा ठोस है. और इंडिया पर हुकूमत करने में काँगरेस से कहीं ज्यादा क़ाबिल है. उसकी दलील है हुकूमत करने के मामले में गिनती की बुनियाद पर फ़ैसला नहीं होना चाहिये, क्योंकि गिनती में कम मुसलमान पहले इंडिया-जोड़ अफ़ग़ानिस्तान पर राज कर चुके हैं. सैकड़ों बरस कर चुके हैं. और अच्छे ढंग से कर चुके हैं. जिन पर उनका राज था उनकी शाबाशी पा चुके हैं. और आज भी तो गिनती में बहुत कम अंगरेज़ इंडिया पर हुकूमत कर रहे हैं. हुकूमत करने में गिनती का क्या

کانگریس کہلائے گی ہندستانی! "انڈین نیشنل کانگریس" پنکھ لگا کر اڑ گئی اور یہی کیا "آل انڈیا مسلم لیگ" نے. اور اڑا دی کس نے؟ جس کی مٹھی میں آج سارا انڈیا ہے، اس نے.

لیگیوں کا یہ دعوی تھا کہ حکومت وہ اچھی کر سکتے تھے کیونکہ ان کو حکومت کا کام چھوڑے ابھی سو برس بھی نہیں ہوئے. ادھر کانگریس کہتی تھی کہ کانگریسی اچھی حکومت کر سکتے تھے کیونکہ حکومت کرنے کا دن ان ہی کی محنت اور قربانی سے پاس آ پایا تھا. کانگریس اگر خالص ہندو جماعت ہوتی تب بھی اپنی تعداد کی وجہ سے انڈیا کی باگ ڈور اس کے ہاتھ میں آتی اور اب وہ ہندو نہ ہوکر اپنے کو انڈین کہتی ہے تب تو کسی کو حکومت کی گھوڑی کی باگ تھماتے اور بھی جھجھک نہ رہ جاتی. کانگریس کا یہ بھی کہنا ہے کہ وہ لیگ سے عمر میں بھی بڑی ہے. اب لیگ کو لیجئے. لیگ ہے خالص مسلمانی جماعت، پر اس سے کیا؟ اس نے کچھ دنوں میں ہی یہ ثابت کر دکھایا ہے کہ وہ کانگریس سے کہیں زیادہ ٹھوس ہے، اور انڈیا پر حکومت کرنے میں کانگریس سے کہیں زیادہ قابل ہے. اس کی دلیل ہے حکومت کرنے کے معاملے میں گنتی کی بنیاد پر فیصلہ نہیں ہونا چاہئے، کیونکہ گنتی میں کم مسلمان پہلے انڈیا جوڑ افغانستان پر راج کر چکے ہیں. سینکڑوں برس کر چکے ہیں. اور اچھے ڈھنگ سے کر چکے ہیں. جن پر ان کا راج تھا ان کی شاباشی پا چکے ہیں. اور آج بھی تو گنتی میں بہت کم انگریز انڈیا پر حکومت کر رہے ہیں. حکومت کرنے میں گنتی کا کیا

सवाल ? लेकिन अगर गिनती ही सब कुछ है और काँगरेस इसी पर अड़ी हुई है तब इंडिया के दो हिस्से कर दिये जायें. जिस हिस्से में मुसलमान ज्यादा हों वहाँ लीग हुकूमत करे और बाक़ी पर काँगरेस. काँगरेस ने लीग को लीग के लफ़्ज़ों में ही फाँस लिया और बोली, ठीक, मगर टुकड़े ऐसे किये जायें और टुकड़ों के टुकड़े भी किये जायें यहाँ तक कि ख़ालिस मुसलमानों का टुकड़ा रह जाये या टुकड़े रह जायें ! लीग इस दलील और इनसाफ़ से तड़प कर रह गई और ताक में बैठे अंगरेज़ ने उसकी तड़पन मिटाने के बहाने थपथपाया, जिस थपथपाहट का नतीजा है आज इंडिया का टुकड़े टुकड़े हो जाना.

लीग अगर मुल्की बटवारे की जगह इख़्तयारी बटवारे पर अड़ गई होती तो बहुत नफ़े में रहती और बहुत जल्दी हिन्दुस्तान के हिन्दुओं के दिल की मालिक बन बैठती. सेन्टर में महकमे लेकर अगर उस ने मज़हबी ख्याल को छोड़ कर क़ौमी यानी राष्ट्रीय ख्याल से काम लिया होता तो वह हिन्दुओं और काँगरेसियों दोनों पर छा गई होती. लीग ने सन् इक्कीस से सबक़ क्यों न लिया ! सचमुच लीग हुकूमत कर दिखाना चाहती थी और इंडिया को चमकाना चाहती थी, इसलाम तो आप चमकता, पर पाकिस्तान का बे मतलब का शोर मचाते ही ताक में लगे अंगरेज़ और चालाक काँगरेस उस पर टूट पड़ी. पाकिस्तान को पकड़ा अंगरेज़ ने और पीछे उसी से चिपक गई काँगरेस. पर तारीफ़ यह कि कहलवाया लीग के मुँह से 'पाकिस्तान लेकर रहेंगे'. अगर यह आवाज़ काँगरेस की तरफ़ से उठती कि मुसलमानों या लीगियों को अलग बसा कर

سوال؟ لیکن اگر گنتی ہی سب کچھ ہے اور کانگریس اسی پر اڑی ہوئی ہے تب انڈیا کے دو حصّے کر دئے جائیں. جس حصّے میں مسلمان زیادہ ہوں وہاں لیگ حکومت کرے اور باقی پر کانگریس. کانگریس نے لیگ کو لیگ کے لفظوں میں ہی پھانس لیا اور بولی، ٹھیک، مگر ٹکڑے ایسے کئے جائیں اور ٹکڑوں کے ٹکڑے بھی کئے جائیں یہاں تک کہ خالص مسلمانوں کا ٹکڑا رہ جائے یا ٹکڑے رہ جائیں! لیگ اس دلیل اور انصاف سے تڑپ کر رہ گئی اور تاک میں بیٹھے انگریز نے اس کی تڑپن مٹانے کے بہانے تھپتھپایا، جس تھپتھپاہٹ کا نتیجہ ہے آج انڈیا کا ٹکڑے ٹکڑے ہو جانا.

لیگ اگر ملکی بٹوارے کی جگہ اختیاری بٹوارے پر اڑ گئی ہوتی تو بہت نفع میں رہتی اور بہت جلدی ہندستان کے ہندؤں کے دل کی مالک بن بیٹھتی. سنٹر میں محکمے لے کر اگر اس نے مذہبی خیال کو چھوڑ کر قومی یعنی راشٹریہ خیال سے کام لیا ہوتا تو وہ ہندؤں اور کانگریسیوں دونوں پر چھا گئی ہوتی. لیگ نے سنہ اکیس سے سبق کیوں نہ لیا! سچ مچ لیگ حکومت کر دکھانا چاہتی تھی اور انڈیا کو چمکانا چاہتی تھی، اسلام تو آپ چمکتا، پر پاکستان کا بے مطلب کا شور مچاتا ہی تاک میں لگے انگریز اور چالاک کانگریس اس پر ٹوٹ پڑی. پاکستان کو پکڑا انگریزوں نے اور پیچھے اسی سے چپک گئی کانگریس. پر تعریف یہ کہ کہلوایا لیگ کے منہ سے 'پاکستان لے کر رہیں گے'. اگر یہ آواز کانگریس کی طرف سے اٹھتی کہ مسلمانوں یا لیگیوں کو الگ بسا کر

रहेंगे तो नक़्शा कुछ और ही होता और लीग इंडिया के कोने कोने में फैल गई होती और बहुत ताक़तवर होती. तब अंगरेज़ क्या चाल चलता, यह बताया जा सकता है, पर बेकार.

लीग हिन्दुओं और काँगरेसियों पर कैसे छा जाती ? इसकी वजह है. पर वह है हमारी अपनी, और किसी की भी हो सकती है. वजह यह है कि कि लीग इसलामी जमात है और मुसलमानों में ज़्यादा आदमी साफ़ दिल, खुली तबियत, और जोखम उठाने को तैयार मिलते हैं. हिन्दुओं में यह सिफ़त कम में पाई जाती है. मुसलमानों की यह सिफ़त चमके बग़ैर न रहती और जल्दी ही वह सब के प्यारे बन जाते और छा ही जाते.

अंगरेज़ ने सारा मज़ा किरकिरा कर दिया. अंगरेज़ समझता है और ख़ूब समझता है कि हुकूमत ग़ैरों पर ही हुआ करती है, अपनों की तो ख़िदमत हुआ करती है. अपनो पर हुकूमत का आनंद ही नहीं आता. अब पाकिस्तान को काँगरेस ने अपनी चालाकी से पाक-पाकिस्तान बनाकर लीग की हुकूमत की मिठाई में कड़वा चिरायता डाल दिया और सब मज़ा बिगाड़ दिया. अगर हमारी इस राय पर काँगरेस और लीग दोनों हम पर पिल पड़ें और कहें, 'नहीं, हम हुकूमत को ख़िदमत करना ही मानते हैं' तब हमारा जवाब यह होगा, जनाब, ख़िदमत ग़ैरों की हुआ करती है, अपनों की ख़िदमत से काम हो सकता है नाम नहीं और नाम किसको नहीं चाहिये ? यों लीग और काँगरेस दोनों को, अंगरेज़ ने, न ख़िदमत का रक्खा और न हुकूमत का ! इंडिया की मिली जुली एक सरकार में हुकूमत का भी मज़ा मिलता और ख़िदमत का भी

رہیں گے تو نقشہ کچھ اور ہی ہوتا اور لیگ انڈیا کے کونے کونے میں پھیل گئی ہوتی اور بہت طاقتور ہوتی. تب انگریز کیا چال چلتا، یہ بتایا جاسکتا ہے، پر بیکار.

لیگ ہندوؤں اور کانگریسیوں پر کیسے چھا جاتی؟ اس کی وجہ ہے. پر وہ ہے ہماری اپنی، اور کسی کی بھی ہوسکتی ہے. وجہ یہ ہے کہ لیگ اسلامی جماعت ہے اور مسلمانوں میں زیادہ آدمی صاف دل، کھلی طبیعت، اور جوکھم اٹھانے کو تیار ملتے ہیں. ہندوؤں میں یہ صفت کم میں پائی جاتی ہے. مسلمانوں کی یہ صفت چمکے بغیر نہ رہتی اور جلدی ہی وہ سب کے پیارے بن جاتے اور چھا ہی جاتے.

انگریز نے سارا مزہ کرکرا کردیا. انگریز سمجھتا ہے اور خوب سمجھتا ہے کہ حکومت غیروں پر ہی ہوا کرتی ہے، اپنوں کی تو خدمت ہوا کرتی ہے. اپنوں پر حکومت کا آنند ہی نہیں آتا. اب پاکستان کو کانگریس نے اپنی چالاکی سے پاک پاکستان بناکر لیگ کی حکومت کی مٹھائی میں کڑوا چرایتا ڈال دیا اور سب مزہ بگاڑ دیا. اگر ہماری اس رائے پر کانگریس اور لیگ دونوں ہم پر پل پڑیں. اور کہیں "نہیں، ہم حکومت کو خدمت کرنا ہی مانتے ہیں"، تب ہمارا جواب یہ ہوگا، جناب، خدمت غیروں کی ہوا کرتی ہے، اپنوں کی خدمت سے کام ہوسکتا ہے نام نہیں اور نام کس کو نہیں چاہیئے؟ یوں لیگ اور کانگریس دونوں کو، انگریز نے، نہ خدمت کا رکھا اور نہ حکومت کا! انڈیا کی ملی جلی ایک سرکار میں حکومت کا بھی مزہ ملتا اور خدمت کا بھی

और फिर दोनों की ज़िम्मेदारी मिली जुली होने मे इंडिया खिल उठती और चमक उठती मगर तब तो किसी की आँख में काँटा बन कर खटकती.

खैर, अभी कुछ नहीं बिगड़ा, बंटवारा करते करते एके पर पहुंचा जा सकता है और नज़र लगाये बैठी दुनिया को हैरत में डाला जा सकता है.

—भगवानदीन

९ जून '४७

اور پھر دونوں کی ذمہ داری ملی جلی ہونے میں انڈیا کھل اٹھتی اور چمک اٹھتی مگر تب تو کسی کی آنکھ میں کانٹا بن کر کھٹکتی۔

خیر، ابھی کچھ نہیں بگڑا، بٹوارہ کرتے کرتے ایکے پر پہنچا جاسکتا ہے اور نظر لگائے بیٹھی دنیا کو حیرت میں ڈالا جاسکتا ہے۔

—بھگوان دین

۹ جون ۴۷ء

"नया हिन्द" के बारे में एक ग़लत बयानी

नक़ल ख़त जो सम्पादक 'भारत' के नाम १५ जुलाई को भेजा गया है—

श्री मान सम्पादक जी 'भारत' इलाहाबाद.

आशा है इस पत्र को जल्दी ही 'भारत' में ठीक जगह देकर मुझे मशकूर करेंगे.

लगभग सात हफ़्ते बाहर रहने के बाद ९ जुलाई को मैं इलाहाबाद वापस आया तो मालूम हुआ कि 'भारत' के किसी अंक में 'नया हिन्द' की बाबत कोई ख़ास ख़बर छपी है. १० को सवेरे एक ज़रूरी काम से मुझे फिर दिल्ली के लिये चल देना पड़ा. यहां ११ को मुझे 'भारत' का वह अंक पढ़ने को मिला जिसमें नई दिल्ली से २५ जून को भेजी हुई आपके 'विशेष प्रतिनिधि' (ख़ास नुमाइन्दे) की कुछ मार्के की ख़बर 'हिन्दुस्तान में लीग कुचक्र' (लीग की साज़िश) शीर्षक (सुर्ख़ी) से छपी है. उसी ख़बर के आधार पर सम्पादक के नाम श्री सुबोध कुमार एम० ए० का बनारस से भेजा हुआ पत्र भी 'भारत' के एक बाद के अंक में पढ़ने को मिला. मैं यहाँ सिर्फ़ आपके प्रतिनिधि की भेजी हुई उस मूल (असल) ख़बर की ही बात करना चाहता हूँ. उसमें सबसे बड़ी बात जिस पर सारी इमारत खड़ी की गई है यह है कि—

بھوتا اور لیگ ۔ ایڈ

" نیا ھند " کے بارے میں ایک غلط بیانی —

نقل خط جو سمپادک 'بھارت' کے نام ۱۵ جولائی کو بھیجا گیا ھے —

شری مان سمپادک جی "بھارت" الہ آباد -

آشا ھے اس پتر کو جلدی ھی 'بھارت' میں ٹھیک جگہ دیکر مجھے مشکور کرینگے -

لگ بھگ سات ھفتے باھر رھنے کے بعد ۹ جولائی کو میں الہ آباد واپس آیا تو معلوم ھوا کہ 'بھارت' کے کسی انک میں 'نیا ھند' کی بابت کوئی خاص خبر چھپی ھے - دس کو سویرے ایک ضروری کام سے مجھے پھر دلی کے لئے چلدینا پڑا یہاں ۱۱ کو مجھے 'بھارت' کا وہ انک پڑھنے کو ملا جس میں نئی دلی سے ۲۵ جون کو بھیجی ھوئی آپ کے 'وشیش پرتی ندھی' (خاص نمایندہ) کی کچھہ معرکے کی خبر 'ھندستان میں لیگ کچکر' (لیگ کی سازش شیرشک (سرخی) سے چھپی ھے - اُسی خبر کے آدھار پر سمپادک کے نام شری سو بودھہ کمار ایم - اے کا بنارس سے بھیجا ھوا پتر بھی 'بھارت' کے ایک بعد کے انک میں پڑھنے کو ملا - میں یہاں صرف آپ کے پرتی ندھی کی بھیجی ھوئی اُس مول (اصل) خبر کی ھی بات کرنا چاھتا ھوں - اس میں سب سے بڑی بات جس پر ساری عمارت کھڑی کی گئی ھے یہ ھے کہ —

"मुझे विश्वस्त सूत्र (मोतबिर ज़राय) से ज्ञात (मालूम) हुआ है कि चौदहवीं सदी की मुसलिम संस्कृति (कलचर) का स्वप्न (ख़्वाब) देखने वाले हैदराबाद राज्य की ओर (तरफ़) से मुसलिम संस्कृति का गुणगान करने तथा काँगरेस के नेताओं की कटु आलोचना (कड़ी नुक्ताचीनी) करने के लिये हिन्दुस्तान के जिन पत्रों को पर्याप्त आर्थिक सहायता (काफ़ी रुपये की मदद) दी गई है और भविष्य (मुस्तक़बिल) में भी बराबर दी जाने का आश्वासन (वादा) दिया गया है उनमें इलाहाबाद का 'नया हिन्द' प्रमुख (ख़ास) है ."

इस बारे में सिर्फ़ इतना कह देना ज़रूरी है कि 'नया हिन्द' हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी इलाहाबाद का मुखपत्र (परचा) है. मैं उस सोसाइटी का सेक्रेटरी हूँ. हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी को या 'नया हिन्द' को या मुझे आज तक कभी एक पैसा भी किसी रूप में निज़ाम या उनकी सरकार से नहीं मिला और न आगे के लिये किसी तरह का 'आश्वासन' ही मिला है .

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी कोई हिन्दू या मुसलिम या किसी एक फ़िरक़े की संस्था नहीं है. उसके मेम्बरों और पदाधिकारियों (ओहदेदारों) में हिन्दू, मुसलमान, ईसाई और पारसी सब धर्मों के ऐसे लोग शामिल हैं जो मुल्क में अपनी जगह रखते हैं. उसका एक अपना मिशन है. वह मिशन है सब धर्मों और पंथों के लोगों में मेल मिलाप एकता का बढ़ाना और फैलाना. इसलिये हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी को किसी से भी अपने मिशन के लिये चंदा स्वीकार करने (मंज़ूर करने) में कोई इनकार न होगा. मैंने जो ऊपर निज़ाम से अब तक एक पैसा न मिलने की बात लिखी

" مجھے وشوست سوتر (معتبر ذرایع) سے گیات (معلوم) ہوا ہے کہ چودھویں صدی کی مسلم سنسکرتی (کلچر) کا سوپن (خواب) دیکھنے والے حیدرآباد راج کی اور (طرف) سے مسلم سنسکرتی کا گن گان کرنے تتھا کانگریس کے نیتاؤں کی کٹو آلوچنا (کڑی نکتہ چینی) کرنے کے لئے ہندستان کے جن پتروں کو پریاپت آرتھک سہایتا (کافی روپیہ کی مدد) دی گئی ہے اور بھوشیہ (مستقبل) میں بھی برابر دیئے جانے کا آشواسن (وعدہ) دیا گیا ہے اُن میں الہ آباد کا ' نیا ہند ' پر مکھ (خاص) ہے "

اس بارے میں صرف اتنا کہہ دینا ضروری ہے کہ ' نیا ہند ' ہندستانی کلچر سوسایٹی الہ آباد کا مکھ پتر پرچا ہے - میں اُس سوسایٹی کا سکریٹری ہوں - ہندوستانی کلچر سوسایٹی کو یا ' نیا ہند ' کو یا مجھے آج تک کبھی ایک پیسہ بھی کسی روپ میں نظام یا اُن کی سرکار سے نہیں ملا اور نہ آگے کے لئے کسی طرح کا آشواسن ہی ملا ہے -

ہندستانی کلچر سوسایٹی کوئی ہندو یا مسلم یا کسی ایک فرقے کی سنستھا نہیں ہے - اُس کے ممبروں اور پدادھکاریوں (عہدیداروں) میں ہندو، مسلمان، عیسائی اور پارسی سب دھرموں کے ایسے لوگ شامل ہیں جو ملک میں اپنی جگہ رکھتے ہیں - اُس کا ایک اپنا مشن ہے - وہ مشن ہے سب دھرموں اور پنتھوں کے لوگوں میں میل ملاپ ایکتا کا بڑھانا اور پھیلانا - اسلئے ہندستانی کلچر سوسایٹی کو کسی سے بھی اپنے مشن کے لئے چندہ سوئیکار کرنے (منظور کرنے) میں کوئی انکار نہ ہوگا - میں نے جو اوپر نظام سے ابتک ایک پیسہ نہ ملنے کی بات لکھی

है वह केवल आपके प्रतिनिधि की जानकारी को ठीक करने के लिये.

मैं यह भी बतादूं कि हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी को अभी तक सबसे बड़ी धन की सहायता दिल्ली सरकार से मिली है. श्री राज-गोपालाचारी के वज़ीर तालीम होने के दिनों में हमें पिछले साल के बजट से छै हज़ार रुपये की रक़म मिली थी और आगेके लिये अधिक 'आश्वासन' (ज्यादा वादा) भी दिया गया था. चुनांचे मौलाना अबुल-कलाम आज़ाद के चार्ज लेने के बाद सोसाइटी के लिये अगले तीन साल में मिलाकर पचास हज़ार की रक़म और मंजूर की गई है. 'नया हिन्द' की फ़ाइल से ज़ाहिर है कि अगर दिल्ली सरकार की मदद, जिसके लिये हम उनके मशकूर हैं, 'नया हिन्द' को उस सरकार या उसके मेम्बरों की, अपनी राय के मुताबिक़, कड़ी आलोचना करने से नहीं रोक सकी तो किसी भी हिन्दू या मुसलमान राजा या रईस की मदद उसे उस बात के कहने से नहीं रोक सकती जिसे वह सच और देश के लिये फ़ायदे की समझता हो.

दूसरी अजीब बात जो उस ख़बर में छपी है यह है— "कहा जाता है कि यह गतिविधि (हरकतें) देख कर गांधी जी को भी चोट पहुँची है और उन्होंने इस संबंध में कुछ पूछ ताछ भी की है. किन्तु जानकार क्षेत्रों (हलकों) का ख़याल है कि इसका भी 'नया हिन्द' के कारनामों पर कोई असर न पड़ेगा."

इसका संबंध गांधी जी से था. मैं उस दिन दिल्ली में था. मेरा फ़र्ज़ था कि आपके अख़बार की कतरन गांधी जी को दिखा दूं. उसे पढ़ कर गांधी जी को उतना ही दुख हुआ जितना

ہے وہ کیول آپ کے پرتی ندھی کی جانکاری کو ٹھیک کرنے کے لئے -

میں یہ بھی بتادوں کہ ہندوستانی کلچر سوسایٹی کو ابھی تک سب سے بڑی دھن کی سہایتا دلی سرکار سے ملی ہے - شری راج گوپال آچاریہ کے وزیر تعلیم ہونے کے دنوں میں ہمیں پچھلے سال کے بجٹ سے چھہ ہزار روپیہ کی رقم ملی تھی اور آگے کے لئے ادھک 'آشواسن' (زیادہ وعدہ) بھی دیا گیا تھا - چنانچہ مولانا ابولکلام آزاد کے چارج لینے کے بعد سوسایٹی کے لئے اگلے تین سال میں ملاکر پچاس ہزار کی رقم اور منظور کی گئی ہے - 'نیا ہند' کی فائیل سے ظاہر ہے کہ اگر دلی سرکار کی مدد جس کے لئے ہم اُن کے مشکور ہیں 'نیا ہند' کو اُس سرکار یا اُسکے ممبروں کی 'اپنی رائے' کے مطابق کڑی آلوچنا کرنے سے نہیں روک سکی تو کسی بھی ہندو یا مسلمان راجا یا رئیس کی مدد اُسے اُس بات کے کہنے سے نہیں روک سکتی جسے وہ سچ اور دیش کے لئے فائدے کی سمجھتا ہو-

دوسری عجیب بات جو اُس خبر میں چھپی ہے یہ ہے — "کہا جاتا ہے کہ یہ گتی ودھی (حرکتیں) دیکھ کر گاندھی جی کو بھی چوٹ پہونچی ہے اور اُنھوں نے اس سمبندھ میں کچھ پوچھہ تاچھہ بھی کی ہے کنتو جانکار کشیتروں (حلقوں) کا خیال ہے کہ اس کا بھی 'نیا ہند' کے کار ناموں پر کوئی اثر نہ پڑیگا -"

اس کا سمبندھ گاندھی جی سے تھا - میں اس دن دلی میں تھا - میرا فرض تھا کہ آپ کے اخبار کی کترن گاندھی جی کو دکھا دوں - اُسے پڑھ کر گاندھی جی کو اُتنا ہی دکھ ہوا جتنا

मुझे. आपके 'विशेष प्रतिनिधि' (खास नुमाइन्दे) की भेजी हुई खबर का यह हिस्सा भी बिल्कुल गलत और बे बुनियाद है.

खबर के तीसरे हिस्से में ऊपर की बातों से कुछ नतीजे निकाले गये हैं और कुछ राय ज़ाहिर की गई है जिस पर मैं कुछ नहीं कहना चाहता.

अब रहा जून के 'नया हिन्द' का वह नोट जिस पर खफ़ा होकर यह सब गलतबयानियों की इमारत खड़ी की गई. मैंने उस नोट को फिर से पढ़ा. गांधी जी को भी दिखाया. मैंने जो कुछ उसमें लिखा है मेरी अब भी वही पक्की राय है. मैं टंडन जी को आज चालीस बरस से पूरी घनिष्टता (बेतकल्लुफ़ी) के साथ जानता हूँ. उनके अनेक गुणों के लिये मेरे दिल में आदर है. मैं उन्हें अपना मित्र और बड़ा भाई मानता हूँ. पर जिस तरह की हिंसा या प्रतिहिंसा (जवाबी हिंसा) की तैयारी में वह इस वक़्त देश के लोगों को लगाना चाहते हैं वह उस कांग्रेस की निगाह से, जो देश के सब लोगों की मिली जुली संस्था है और जिसने अभी तक भी अहिंसा को अपना असूल बना रक्खा है, हरगिज़ ठीक नहीं. यह बिल्कुल पक्की बात है कि कांग्रेस अगर एक बार उस तरह के हिंसा के मार्ग पर चल पड़ी तो वह दूसरी हिन्दू महासभा बने बगैर नहीं रह सकती. अगर हमारे दिल में उसे हिन्दू महासभा बना देना न भी हो तब भी हिन्दुस्तान के अन्दर हिन्दुओं का ज़बरदस्त बहुमत (अक्सरियत) होने की वजह से यह रास्ता हमें उस मंज़िल तक पहुँचाये बिना नहीं रह सकता. अगर, भगवान न करें, ऐसा हुआ तो देश के सब

مجھے - آپ کے 'وشیش پرتی ندھی' (خاص نمایندے) کی بھیجی ہوئی خبر کا یہ حصہ بھی بالکل غلط اور بے بنیاد ہے -

خبر کے تیسرے حصے میں اوپر کی باتوں سے کچھ نتیجے نکالے گئے ہیں اور کچھ رائے ظاہر کی گئی ہے جس پر میں کچھ نہیں کہنا چاہتا -

اب رہا جون کے 'نیا ہند' کا وہ نوٹ جس پر خفا ہو کر یہ سب غلط بیانیوں کی عمارت کھڑی کی گئی - میں نے اُس نوٹ کو پھر سے پڑھا - گاندھی جی کو بھی دکھایا . میں نے جو کچھ اُس میں لکھا ہے میری اب بھی وہی پکی رائے ہے - میں ٹنڈن جی کو آج چالیس برس سے پوری گھنشٹتا (بے تکلفی) کے ساتھ جانتا ہوں - اُن کے انیک گُنوں کے لئے میرے دل میں آدر ہے - میں اُنہیں اپنا متر اور بڑا بھائی مانتا ہوں . پر جس طرح کی ہنسا یا پرتی ہنسا (جوابی ہنسا) کی تیاری میں وہ اس وقت دیش کے لوگوں کو لگانا چاہتے ہیں وہ اُس کانگریس کی نگاہ سے' جو دیش کے سب لوگوں کی ملی جلی سنستھا ہے اور جس نے ابھی تک بھی اہنسا کو اپنا اصول بنا رکھا ہے' ہرگز ٹھیک نہیں- یہ بالکل پکی بات ہے کہ کانگریس اگر ایک بار اس طرح کے ہنسا کے مارگ پر چل پڑی تو وہ دوسری ہندو مہاسبھا بنے بغیر نہیں رہ سکتی - اگر ہمارے دل میں اُسے ہندو مہاسبھا بنا دینا نہ بھی ہو تب بھی ہندستان کے اندر ہندوؤں کا زبردست بہومت (اکثریت) ہونے کی وجہ سے یہ راستہ ہمیں اس منزل تک پہونچائے بنا نہیں رہ سکتا - اگر بھگوان نہ کریں ایسا ہوا تو دیش کے سب

रहने वालों की मिली जुली कांग्रेस मर जायगी. मैं इसे इस देश के लिये सबसे बड़ी बदक़िस्मती मानता हूँ.

रही ज़बान की बात. 'नया हिन्द' हिन्दी और उर्दू के मेल से बनी हुई एक मिली जुली बामहावरा हिन्दुस्तानी का समर्थक है और उसके लिये नागरी और उर्दू दोनों लिखावटों को अपनाए हुए है' 'नया हिन्द' के जीवन का यह एक ख़ास मक़सद है. हाल के बटवारे के बाद भी मुझे देश का भला इसी में दिखाई देता है. यही गांधी जी की भी राय है और मैं समझता हूँ 'नया हिन्द' के उन प्रेमियों की भी जिनके सहारे 'नया हिन्द' चल रहा है.

मेरी यह भी साफ़ राय है कि मुल्क में दो सरकारें क़ायम हो जाने के बाद हमारी ज़िम्मेदारी और बढ़ गई है. अब पहले से भी ज़्यादा हिन्दुस्तान सरकार की भलमनसी, बड़प्पन और सलामती इसी में है कि वह अपने अमल से यह दिखलावे कि उसका राज मुसलमानों, ईसाइयों और दूसरों के लिये ठीक वैसा ही और उतने ही फ़ायदे का है जितना हिन्दुओं के लिये. इसी तरह पाकिस्तान सरकार की भलमनसी, बड़प्पन और सलामती इसी में है कि वह यह दिखला दे कि उसके राज में मुसलिम और ग़ैर मुसलिम के लिये किसी तरह का कोई फ़र्क़ नहीं. हम अगर चाहें तो इस बटवारे से भी फ़ायदा उठा कर मुल्क को स्वर्ग (बहिश्त) बना सकते हैं. इसके ख़िलाफ़ सोचना और अमल करना मुल्क को बरबादी की तरफ़ ले जाना है.

رہنے والوں کی ملی جلی کانگریس مر جائیگی ۔ میں اِسے اس دیش کے لئے سب سے بڑی بدقسمتی مانتا ہوں ۔

رہی زبان کی بات ۔ "نیا ہند" ہندی اور اردو کے میل سے بنی ہوئی ایک ملی جلی با محاورہ ہندستانی کا سمرتھک ہے اور اُس کے لئے ناگری اور اردو دونوں لکھاوٹوں کو اپنائے ہوئے ہے ۔ "نیا ہند" کے جیون کا یہ ایک خاص مقصد ہے ۔ حال کے بٹوارے کے بعد بھی مجھے دیش کا بھلا اسی میں دکھائی دیتا ہے ۔ یہی گاندھی جی کی بھی رائے ہے اور میں سمجھتا ہوں 'نیا ہند' کے اُن پریمیوں کی بھی جن کے سہارے 'نیا ہند' چل رہا ہے ۔

میری یہ بھی صاف رائے ہے کہ ملک میں دو سرکاریں قائم ہو جانے کے بعد ہماری ذمے داری اور بڑھ گئی ہے ۔ اب پہلے سے بھی زیادہ ہندستان سرکار کی بھل منسی ۔ بڑپن اور سلامتی اسی میں ہے کہ وہ اپنے عمل سے یہ دکھلاوے کہ اُس کا راج مسلمانوں، عیسائیوں اور دوسروں کے لئے ٹھیک ویسا ہی اور اُتنے ہی فائدے کا ہے جتنا ہندوں کے لئے ۔ اسی طرح پاکستان سرکار کی بھل منسی، بڑپن اور سلامتی اسی میں ہے کہ وہ یہ دکھلادے کہ اُس کے راج میں مسلم اور غیر مسلم کے لئے کسی طرح کا کوئی فرق نہیں ۔ ہم اگر چاہیں تو اس بٹوارے سے بھی فائدہ اُٹھا کر ملک کو سورگ (بہشت) بنا سکتے ہیں ۔ اس کے خلاف سوچنا اور عمل کرنا ملک کو بربادی کی طرف لیجانا ہے ۔

ایک غلط بیانی — جولائی سنہ '۴۷

मैं इन बातों पर इससे ज़्यादा बहस नहीं करना चाहता. कोई भाई समझने समझाने के लिये लिखना चाहें तो 'नया हिन्द' के कालम खुले हुये हैं.

मैं यह ख़त गांधी जी को दिखला कर और उनकी रज़ामन्दी से भेज रहा हूँ.

१५ जुलाई सन् '४७

आपका भाई

सुन्दरलाल

میں ان باتوں پر اس سے زیادہ بحث نہیں کرنا چاہتا - کوئی بھائی سمجھنے سمجھانے کے لئے لکھنا چاہیں تو 'نیا ہند' کے کالم کھلے ہوئے ہیں -

میں یہ خط گاندھی جی کو دکھلا کر اور اُن کی رضا مندی سے بھیج رہا ہوں -

۱۵ جولائی سنہ ۴۷ ع

آپکا بھائی -

سندر لال

"गीता और क़ुरान"

लेखक—पंडित सुन्दरलाल

इस किताब के शुरू में दुनिया के सब बड़े बड़े धर्मों की एकता को दिखाया गया है और सब धर्मों की किताबों से हवाले दे दे कर मिलती जुलती बुनियादी सचाइयों को बयान किया गया है.

उसके बाद गीता के लिखे जाने के वक़्त की इस देश की हालत, गीता के बड़प्पन और एक एक अध्याय को लेकर गीता की तालीम को बतलाया गया है.

आखिर में क़ुरान से पहले की अरब की हालत, क़ुरान के बड़प्पन और एक एक बात पर क़ुरान की तालीम को बयान किया गया है. इस में क़ुरान का पांच सौ से ऊपर आयतों का लफ़्ज़ी तरजुमा दिया गया है. यह भी बताया गया है कि क़ुरान में जेहाद, आक़िबत, आख़िरत, जन्नत, जहन्नम, काफ़िर वग़ैरा किसे कहा गया है.

जो लोग सब धर्मों की एकता को समझना चाहें या हिन्दू धर्म और इसलाम दोनों को इन दो अमर पुस्तकों की सच्ची जानकारी हासिल करना चाहें उन्हें इस किताब को ज़रूर पढ़ना चाहिये.

किताब आसान हिन्दुस्तानी ज़बान में, नागरी और उर्दू दोनों लिखावटों में अलग अलग मिल सकती है. पौने तीन सौ सफ़े की सुन्दर जिल्द बंधी किताब की क़ीमत सिर्फ़ ढाई रुपए. डाक ख़र्च अलग.

मैनेजर "नया हिन्द"

३३ बाई का बाग़, इलाहाबाद

"گیتا اور قرآن"

لیکھک - پنڈت سندر لال

اس کتاب کے شروع میں دنیا کے سب بڑے بڑے دھرموں کی ایکتا کو دکھایا گیا ہے اور سب دھرموں کی کتابوں سے حوالے دے دے کر ملتی جلتی بنیادی سچائیوں کو بیان کیا گیا ہے۔

اسکے بعد گیتا کے لکھے جانے کے وقت کی اس دیش کی حالت، گیتا کے بڑپن اور ایک ایک ادھیائے کو لیکر گیتا کی تعلیم کو بتلایا گیا ہے۔

آخر میں قرآن سے پہلے عرب کی حالت، قرآن کے بڑپن اور ایک ایک بات پر قرآن کی تعلیم کو بیان کیا گیا ہے۔ اسمیں قرآن کی پانچ سو سے اوپر آیتوں کا لفظی ترجمہ دیا گیا ہے۔ یہ بھی بتایا گیا ہے کہ قرآن میں جہاد، عاقبت، آخرت، جنت، جہنم، کافر وغیرہ کسے کہا گیا ہے۔

جو لوگ سب دھرموں کی ایکتا کو سمجھنا چاہیں یا ہندو دھرم اور اسلام دونوں کی ان دو امر پستکوں کی سچی جانکاری حاصل کرنا چاہیں انہیں اس کتاب کو ضرور پڑھنا چاہئے۔

کتاب آسان ہندستانی زبان میں ناگری اور اردو دونوں لکھاوٹوں میں الگ الگ مل سکتی ہے۔ پونے تین سو صفحے کی سندر جلد بندھی کتاب کی قیمت صرف ڈھائی روپیہ - ڈاک خرچ الگ۔

منیجر 'نیا ہند'

۳۳ - بائی کا باغ، الہ آباد

Printer—Bishambhar Nath, Vishwavani Press, South Malaka, Allahabad.

Registered No. —210.

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी

मक़सद—

(१) एक ऐसी हिन्दुस्तानी कलचर का बढ़ाना, फैलाना और प्रचार करना जिसमें सब हिन्दुस्तानी शामिल हों.

(२) एकता फैलाने के लिये किताबों, अख़बारों, रिसालों वग़ैरह का छापना.

(३) पढ़ाई घरों, किताब घरों, सभाओं, कानफ़रेन्सों, लेक्चरों से सब धर्मों, जातों, बिरादरियों और फ़िर्क़ों में आपस का मेल बढ़ाना.

—०—

सोसाइटी के प्रेसीडेन्ट—सर तेज बहादुर सप्रू; वाइस प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास और डा० अब्दुल हक़; गवर्निंग बाडी के प्रेसीडेन्ट—डा० भगवानदास; सेक्रेटरी—पं० सुन्दरलाल; ख़ज़ान्ची—डा० ताराचन्द.

गवर्निंग बाडी के और मेम्बर—

डा० सय्यदमहमूद, मि० अब्दुल मजीद ख़्वाजा, मौलवी सय्यद सुलेमान नदवी, मि० मंज़र अली सोख़्ता, श्री बी० जी० खेर, मि० एस० के० रुद्रा, पं० विशम्भर नाथ.

—•—

सोसाइटी की बम्बई शाख़ का दफ़्तर—

जहाँगीर वाडिया बिल्डिङ्ग, ५१ महात्मा गान्धी रोड, फ़ोर्ट बम्बई.

बम्बई शाख़ की मैनेजिंग कमेटी के मेम्बर—

श्री बी० जी० खेर, श्रीमती सोफ़िया वाडिया, प्रिन्सपल ए० ए० ए० फ़ैज़ी, श्री एम० एच० पकवासा, श्रीमती हंसा मेहता, सय्यद अबदुल्ला बरेलवी, मि० के० वी० शाह.

मेम्बरी के क़ायदों के लिए लिखिए.

सुन्दर लाल,

सेक्रेटरी हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी,

३३ बाई का बाग़, इलाहाबाद.

नोट—सोसाइटी के मेम्बरों को "नया हिन्द" और सोसाइटी की सब किताबें वग़ैरह दो तिहाई दाम पर मिलती हैं.

هندستانی کلچر سوسائٹی

مقصد—

(۱) ایک ایسی هندستانی کلچر کا بڑهانا' پهیلانا اور پرچار کرنا جس میں سب هندستانی شامل هوں ۔

(۲) ایکتا پهیلانے کے لئے کتابوں' اخباروں' رسالوں وغیرہ کا چهاپنا ۔

(۳) پڑهائی گهروں' کتاب گهروں' سبهاؤں' کانفرنسوں' لکچروں سے سب دهرموں' جاتوں' برادریوں اور فرقوں میں آپس کا میل بڑهانا ۔

—:o:—

سوسائٹی کے پریسیڈنٹ — سرتیج بهادر سپرو؛ وائس پریسیڈنٹ—ڈاکٹر بهگوان داس اور ڈاکٹر عبدالحق؛ گورننگ باڈی کے پریسیڈنٹ—ڈاکٹر بهگوان داس؛ سکریٹری—پنڈت سندر لال؛ خزانچی—ڈاکٹر تارا چند ۔

گورننگ باڈی کے اور ممبر—

ڈاکٹر سید محمود' مسٹر عبدالمجید خواجه' مولوی سید سلیمان ندوی' مسٹر منظر علی سوخته' شری بی جی کهیر' مسٹر ایس کے رودرا' پنڈت بشمبهر ناتهه ۔

—:o:—

سوسائٹی کی بمبئی شاخ کا دفتر—

جهانگیر واڈیا بلڈنگ' ۵۱ مهاتما گاندهی روڈ' فورٹ بمبئی ۔

بمبئی شاخ کی منیجنگ کمیٹی کے ممبر—

شری بی - جی - کهیر' شریمتی صوفیاواڈیا' پرنسپل اے - اے - اے فیضی' شری ایم - ایچ - پکواسا' شریمتی هنسا مهتا' سید عبدالله بریلوی' مسٹر کے - وی - شاہ ۔

ممبری کے قاعدوں کے لئے لکهئے ۔

سندر لال

سکریٹری هندستانی کلچر سوسائٹی'

۳۳ بائی کا باغ' اله آباد ۔

نوٹ—سوسائٹی کے ممبروں کو "نیا هند" اور سوسائٹی کی سب کتابیں وغیرہ دو تهائی دام پر ملتی هیں ۔

हिन्दुस्तानी कल्चर सोसाइटी का परचा

एडीटर—

ताराचन्द, भगवानदीन, मुज़फ़्फ़र हुसन, विशम्भरनाथ, सुन्दरलाल

अगस्त १९४७

क़ीमत—हिन्दुस्तान में छै रुपए साल. बाहर दस रुपए साल.
एक परचा दस आने.

मैनेजर
"नया हिन्द"

३३ बाई का बाग़, इलाहाबाद.

هندستانی کلچر سوسائٹی کا پرچا

اڈیٹر—

تارا چند' بھگوان دین' مظفر حسن' بشمبھر ناتھ' سندرلال۔

اگست ۱۹۴۷

ت—ہندستان میں چھہ روپیہ سال. باہر دس روپیہ سال۔
ایک پرچا دس آنے۔

منیجر—'نیا ہند'

ا بائی کا باغ' الہ‌آباد۔

नया हिन्द — نیا ہند

जिल्द ३ अगस्त '४७ नम्बर २

جلد۳ اگست سنہ ۱۹۴۷ نمبر۲

जात आदमी, प्रेम धर्म है. हिन्दुस्तानी बोली.
'नया हिन्द' पहुँचेगा घर घर लिये प्रेम की झोली.

جات آدمی، پریم دھرم ہے، ہندستانی بولی،
'نیا ہند' پہنچے گا گھر گھر لئے پریم کی جھولی۔

गीत

(हज़रत परवाज़ जाफ़री)

दुनिया अन्धी दुनिया फ़रेबी प्रेम यहाँ की रीत नहीं
कामी, चंचल, पापी. निगुरी प्रीत नहीं है प्रीत नहीं.

जीवन भी एक खेल है साजन, हार जहाँ है जीत नहीं
दुनिया में, मैं देख चुका हूँ. कोई किसी का मीत नहीं.

छेड़ते क्यों हो सुख का गाना टूट गया जब मन का तार
दिल है बिरोगी, आँखें झरना, यह कोई अच्छा गीत नहीं.

گیت

(حضرت پرواز جعفری)

دنیا اندھی، دنیا فریبی، پریم یہاں کی ریت نہیں
کامی، چنچل، پاپی، نگری، پریت نہیں ہے پریت نہیں
جیون بھی اک کھیل ہے ساجن، ہار جہاں ہے جیت نہیں
دنیا میں، میں دیکھ چکا ہوں، کوئی کسی کا میت نہیں
چھیڑتے کیوں ہو سکھ کا گانا ٹوٹ گیا جب من کا تار
دل ہے بروگی، آنکھیں جھرنا، یہ کوئی اچھا گیت نہیں

धर्म क्या है

(हज़रत मौलाना अबूसईद साहब झुमकावी, चम्पारन.)

धर्म क्या है ? इस सवाल का जवाब देने से पहले कुछ बातें बयान करना ज़रूरी हैं.

(१) यूरोप और अमरीका में जब से साइन्स, नई तहज़ीब और नए रंग की राजनीति के साथ साथ अधर्म की आँधी ज़ोर शोर से उठी और ख़ास कर पूरबी रूस के आकाश में खब चली और ऐसी बही कि धर्म की सारी इमारतों की एक एक ईंट को अपने बहाव में बहा कर ले गई तो हमारा एशिया भी, जिसकी तहज़ीब, कलचर और राजनीति धर्म के सहारे थीं इसके असर से न बच सका.

(२) सारी दुनिया में सनातन धर्म, आर्य समाज, पारसी, जैन, बौद्ध, कनफ़्यूशियस, यहूदी, ईसाई, इस्लाम, सिक्ख और ब्रह्म समाज वग़ैरा इन्हीं धर्मों का बोल बाला था. एशिया के नौनिहाल सपूतों ने जब यूरोप और अमरीका के नए इल्म और फ़न और नए फ़लसफ़े और साइन्स को पढ़ा, क़ौमों और हुकूमतों की लड़ाइयों को पढ़ा तो उनको मालूम हुआ कि इन लड़ाइयों का बहुत बड़ा हिस्सा धार्मिक लड़ाइयां ही हैं. और एक इन्सान की नसल में अलग अलग क़ौमें और जमातें बनना भी अलग अलग धर्मों का नतीजा है और धर्मों की नींव एक ऐसी निराकार ज़ात पर है, जिसका जानना और जिसकी बातों को समझना

دھرم کیا ہے

(حضرت مولانا ابوسعید صاحب جھمکاوی، چمپارن)

دھرم کیا ہے؟ اس سوال کا جواب دینے سے پہلے کچھ باتیں بیان کرنا ضروری ہیں۔

(۱) یورپ اور امریکا میں جب سے سائنس، نئی تہذیب اور نئے رنگ کی راجنیت کے ساتھ ساتھ ادھرم کی آندھی زور شور سے اٹھی اور خاص کر پوربی روس کے آکاش میں خوب چلی اور ایسی بہی کہ دھرم کی ساری عمارتوں کی ایک ایک اینٹ کو اپنے بہاؤ میں بہا کر لے گئی تو ہمارا ایشیا بھی، جس کی تہذیب، کلچر اور راجنیت دھرم کے سہارے تھیں اس کے اثر سے نہ بچ سکا۔

(۲) ساری دنیا میں سناتن دھرم، آریہ سماج، پارسی، جین، بودھ، کنفیوشس، یہودی، عیسائی، اسلام، سکھ اور برہم سماج وغیرہ انہیں دھرموں کا بول بالا تھا۔ ایشیا کے نونہال سپوتوں نے جب یورپ اور امریکا کے نئے علم اور فن اور نئے فلسفے اور سائنس کو پڑھا، قوموں اور حکومتوں کی لڑائیوں کو پڑھا تو ان کو معلوم ہوا کہ ان لڑائیوں کا بہت بڑا حصہ دھارمک لڑائیاں ہی ہیں۔ اور ایک انسان کی نسل میں الگ الگ قومیں اور جماعتیں بننا بھی الگ الگ دھرموں کا نتیجہ ہے اور دھرموں کی نیو ایک ایسی نراکار ذات پر ہے، جس کا جاننا اور جس کی باتوں کو سمجھنا

इन्सान की शक्ति से बाहर है. जब नए फ़लसफ़े और साइन्स में यह पढ़ा कि जो चीज़ हमारे हवास यानी इन्द्रियों के इल्म में नहीं आ सकती उसको मानना हमारे लिये ज़रूरी नहीं है तो इन धर्मों के मानने वालों के लिये जिनका जन्म कर्म और धर्म के गहवारों में हुआ था, नई तालीम पाने के बाद धर्म का बन्धन ढीला पड़ गया.

(३) हमारे ज़माने के आलिम और पंडित, सच पूछो तो, न विद्वान हैं और न सच्चे पंडित. इन्होंने धर्म को रूह और उसके शरीर किसी को ठीक नहीं समझा. उन्होंने धर्म के नाप तोल के बाट सिर्फ़ लिखी हुई पुस्तक पोथियों को ही बना रक्खा है और उस पर सितम यह है कि जो कुछ उनकी पुस्तक पोथियों में लिखा हुआ है वही सच है और दूसरों को पुस्तक पोथियों का लिखा झूट है. इसी वजह से दुनिया में एक इन्सानी क़ौम के अन्दर अलग अलग धर्म पाये जाते हैं.

जब नए इल्म और साइन्स के पढ़ने वालों ने एक इन्सानी क़ौम के लिये अलग अलग और रंग बिरंगे धर्म देखे और देखा कि हर धर्म वाला अपने धर्म को सच्चा और दूसरे धर्म को झूटा बताता है और इस सच्चे और झूटे की जांच के लिये अपनी ही पुस्तक, अपनी ही सोसाइटी और अपने ही बाप दादा के रीति रिवाज और रहन सहन को ठीक माने हुए है और उस निराकार का नाम लेकर अपने रीति रिवाज का प्रचार करता है जिसका ठीक ठीक जानना मनुष्य की शक्तियों से बाहर है तो नए ज्ञानियों, विज्ञानियों के दिल में धर्म के लिये कोई जगह न रही.

انسان کی شکتی سے باہر ہے۔ جب نئے فلسفے اور سائنس میں یہ پڑھا کہ جو چیز ہمارے حواس یعنی اندریوں کے علم میں نہیں آسکتی اس کو ماننا ہمارے لئے ضروری نہیں ہے تو ان دھرموں کے ماننے والوں کے لئے جن کا جنم کرم اور دھرم کے گہواروں میں ہوا تھا، نئی تعلیم پانے کے بعد دھرم کا بندھن ڈھیلا پڑ گیا۔

(۳) ہمارے زمانے کے عالم اور پنڈت، سچ پوچھو تو، نہ ودوان ہیں اور نہ سچے پنڈت۔ انھوں نے دھرم کی روح اور اس کے شریر کسی کو ٹھیک نہیں سمجھا۔ انھوں نے دھرم کے ناپ تول کے باٹ صرف لکھی ہوئی پستک پوتھیوں کو ہی بنا رکھا ہے اور اس پر ستم یہ ہے کہ جو کچھ ان کی پستک پوتھیوں میں لکھا ہوا ہے وہی سچ ہے اور دوسروں کی پستک پوتھیوں کا لکھا جھوٹ ہے۔ اسی وجہ سے دنیا میں ایک انسانی قوم کے اندر الگ الگ دھرم پائے جاتے ہیں۔

جب نئے علم اور سائنس کے پڑھنے والوں نے ایک انسانی قوم کے لئے الگ الگ اور رنگ برنگے دھرم دیکھے اور دیکھا کہ ہر دھرم والا اپنے دھرم کو سچا اور دوسرے دھرم کو جھوٹا بتاتا ہے اور اس سچے اور جھوٹے کی جانچ کے لئے اپنی ہی پستک اپنی ہی سوسائٹی اور اپنے ہی باپ دادا کے ریت رواج اور رہن سہن کو ٹھیک مانے ہوئے ہے اور اس نراکار کا نام لیکر اپنے ریت رواج کا پرچار کرتا ہے جس کا ٹھیک ٹھیک جاننا منش کی شکتیوں سے باہر ہے تو نئے گیانیوں، وگیانیوں کے دل میں دھرم کے لئے کوئی جگہ نہ رہی۔

(४) मैंने सन् १९१० में किसी अख़बार में पढ़ा था कि रूस के अन्दर बाकू में एक कानफ़रेन्स हुई. उसमें दुनिया के हर धर्म के बड़े बड़े प्रचारक बुलाए गए. उन्होंने अपने अपने धर्म को पेश किया. इन अलग अलग धर्मों की अनगिनत बातें एक दूसरे से ऐसी जुदा जुदा थीं कि उनका एक करना और उनके खरे खोटे को समझना बड़ा मुश्किल था. इस लिये रूस का ज़ार धर्म को छोड़ कर अधर्म की राह पर चल पड़ा. ज़ार की देखा देखी वहाँ की नौकरशाही, सारे पढ़े लिखे धन दौलत वाले और उनकी देखा देखी साधारन अनपढ़ लोगों ने भी अपने मन से धर्म को त्याग कर अपने अपने मनकी राह पकड़ ली.

मेरी आँखें ३७ साल से इसके ढूंढने में लगी हुई हैं कि हिंदुस्तान में एकता, आपस में प्रेम और शान्ति क़ायम करने के लिये कोई ऐसे नेकदिल समझदार लोगों की सोसाइटी कमर बाँध कर खड़ी हो जो कम से कम भारत के तमाम धर्मों को सामने रख कर सब धर्मों की उन बातों को एक जगह इकट्ठा करने की कोशिश करे जो सब में पाई जाती हों.

(५) हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी इलाहाबाद का छपा "नया हिन्द" का इश्तिहार मेरी नज़र से गुज़रा जिसमें मज़मून लिखने वालों की जानकारी के लिये सात नम्बरों में यह बताया गया है कि इन्हें ध्यान में रख कर मज़मून लिखे कि जिससे एक हिन्दुस्तानी कलचर और मेल मिलाप की जिन्दगी सारे भारत में फैले.

(۴) میں نے ۱۹۱۰ء میں کسی اخبار میں پڑھا تھا کہ روس کے اندر باکو میں ایک کانفرنس ہوئی۔ اس میں دُنیا کے ہر دھرم کے بڑے بڑے پرچارک بُلائے گئے۔ انھوں نے اپنے اپنے دھرم کو پیش کیا۔ ان الگ الگ دھرموں کی اَن گنت باتیں ایک دوسرے سے ایسی جدا جدا تھیں کہ ان کا ایک کرنا اور اُن کے کھرے کھوٹے کو سمجھنا بڑا مشکل تھا۔ اس لئے روس کا زار دھرم کو چھوڑ کر ادھرم کی راہ پر چل پڑا۔ زار کی دیکھا دیکھی وہاں کی نوکرشاہی، سارے پڑھے لکھے دھن دولت والے اور اُن کی دیکھا دیکھی سادھارن اَن پڑھ لوگوں نے بھی اپنے من سے دھرم کو تیاگ کر اپنے اپنے من کی راہ پکڑ لی۔

میری آنکھیں ۳۷ سال سے اس کے ڈھونڈھنے میں لگی ہوئی ہیں کہ ہندستان میں ایکتا، آپس میں پریم اور شانتی قایم کرنے کے لئے کوئی ایسے نیک دل سمجھدار لوگوں کی سوسائٹی کمر باندھ کر کھڑی ہو جو کم سے کم بھارت کے تمام دھرموں کو سامنے رکھ کر سب دھرموں کی اُن باتوں کو ایک جگہ اکٹھا کرنے کی کوشش کرے جو سب میں پائی جاتی ہوں۔

(۵) ہندستانی کلچر سوسائٹی الہ آباد کا چھپا "نیا ہند" کا اشتہار میری نظر سے گزرا جس میں مضمون لکھنے والوں کی جان کاری کے لئے سات نمبروں میں یہ بتایا گیا ہے کہ انھیں دھیان میں رکھ کر مضمون لکھے کہ جس سے ایک ہندستانی کلچر اور میل ملاپ کی زندگی سارے بھارت میں پھیلے۔

जब मैंने "नया हिन्द" का यह इश्तिहार पढ़ा तो मेरी ख़ुशी की कोई हद न रही और इससे भी ज़्यादा ख़ुशी इस बात पर हुई कि इस सोसाइटी का बुनियादी पत्थर एक ऐसे प्रेम धारी इन्सान के हाथों से रक्खा गया है जिसका नाम सुन्दरलाल है और जो किसी की तरफ़दारी न करने में हिन्दुस्तान में बे मिसाल है.

मुझको पूरी आशा है कि हिन्दू, सनातनी, आर्य, जैन, बौद्ध, यहूदी, ईसाई, मुसलमान, सिक्ख और ब्रह्मसमाजी वग़ैरा धर्मों के आलिम आचार्य और धर्म से प्रेम रखने वाले भाई ज़रूर धर्म की एकता, क़ौम की एकता, ज़बान, कलचर, तहज़ीब, अदब, रस्म व रिवाज की एकता क़ायम करने में हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी की मदद करेंगे और इस नेककाम में पीछे न रहेंगे.

(६) मैं संस्कृत और उसका व्याकरन नहीं जानता, मगर यह जानता हूँ कि धर्म शब्द इतना पुराना है कि उसकी पैदाइश का सही वक़्त नहीं बताया जा सकता. यह भी नहीं कहा जा सकता कि संस्कृत ज़बान का जन्म किस मुल्क और किस ज़माने में हुआ और धर्म का शब्द उसमें कब शामिल किया गया. हर ज़बान में व्याकरन असल ज़बान के बाद देर से बनता है. यह उसी वक़्त बनता है जब असल ज़बान अपनी जन्मभूमि से निकल कर ऐसे देशों में जाती है कि जहाँ के लोग ग़ैर ज़बान बोलते हों. व्याकरन बनने की असली वजह यही होती है कि वह उनको ठीक ठीक बोलने का ढंग बताए.

جب میں نے 'نیا ہند' کا یہ اشتہار پڑھا تو میری خوشی کی کوئی حد نہ رہی اور اس سے بھی زیادہ خوشی اس بات پر ہوئی کہ اس سوسائٹی کا بنیادی پتھر ایک ایسے پریم دھاری انسان کے ہاتھوں سے رکھا گیا ہے جس کا نام سندر لال ہے اور جو کسی کی طرفداری نہ کرنے میں ہندستان میں بے مثال ہے۔

مجھ کو پوری آشا ہے کہ ہندو، سناتنی، آریہ، جین، بودھ، یہودی، عیسائی، مسلمان، سکھ اور برہمو سماجی وغیرہ دھرموں کے عالم آچاریہ اور دھرم سے پریم رکھنے والے بھائی ضرور دھرم کی ایکتا، قوم کی ایکتا، زبان، کلچر، تہذیب، ادب، رسم و رواج کی ایکتا قایم کرنے میں ہندستانی کلچر سوسائٹی کی مدد کریں گے اور اس نیک کام میں پیچھے نہ رہیں گے۔

(۶) میں سنسکرت اور اس کا ویاکرن نہیں جانتا، مگر یہ جانتا ہوں کہ دھرم شبد اتنا پرانا ہے کہ اس کی پیدائش کا صحیح وقت نہیں بتایا جا سکتا۔ یہ بھی نہیں کہا جا سکتا کہ سنسکرت زبان کا جنم کس ملک اور کس زمانے میں ہوا اور دھرم کا شبد اس میں کب شامل کیا گیا۔ ہر زبان میں ویاکرن اصل زبان کے بعد دیر سے بنتا ہے۔ یہ اسی وقت بنتا ہے جب اصل زبان اپنی جنم بھومی سے نکل کر ایسے دیشوں میں جاتی ہے کہ جہاں کے لوگ غیر زبان بولتے ہوں۔ ویاکرن بننے کی اصلی وجہ یہی ہوتی ہے کہ وہ ان کو ٹھیک ٹھیک بولنے کا ڈھنگ بتائے۔

मैं जो कुछ भी धर्म शब्द के बारे में कहूँगा हो सकता है कि संस्कृत और अरबी व्याकरन मेरा साथ न दें. मेरे बयान में कुछ फर्क़ हो तो विद्वान लोग यह कह कर कि व्याकरन में ऐसा नहीं है टाल न दें बल्कि शब्दों और उनके अर्थों की गहराई में जाकर जो मनलगती बात हो उसीको अपनायें.

धर्म शब्द—

धर्म का शब्द ध र,म. से बना है. अब सवाल यह है कि धर्म चार अक्षर वाला शब्द है या तीन अक्षर वाला और अगर तीन अक्षर वाला है तो कौन कौन हरफ़ अस्ल हैं. यह तो सबको मालूम है कि धर्म तीन अक्षर वाला है और अस्ल धातु 'धृ' है और उसका 'म' अलहदा है और धृ + म से मिल कर धर्म बना है.

(५८)

संस्कृत की 'धृ' धातु की जगह अरबी ज़बान में दहरुन शब्द मौजूद है और 'म' की जगह 'उम्मुन' पाया जाता है. इन दोनों शब्दों को जब मिलाया जाय तो संस्कृत में 'धर्म' और अरबी में 'दहरउम' या 'दहरुलउम' बन जाता है.

संस्कृत में 'धृ' के अर्थ जहाँ बहुत से हैं वहाँ चाल चलन और प्रनाली के भी हैं. अरबी में भी 'दहर' के माने बहुत हैं. इन मानों में ज़माना और उसकी गर्दिश, आदत यानी चाल चलन और इरादा भी हैं.

संस्कृत धर्म का 'म' शायद ओम् का मुख़फ़्फ़फ़ यानी हल्का किया हुआ है...

میں جو کچھ بھی دھرم شبد کے بارے میں کہوں گا ہو سکتا ہے کہ سنسکرت اور عربی ویاکرن میرا ساتھ نہ دیں. میرے بیان میں کچھ فرق ہو تو ودوان لوگ یہ کہہ کر کہ ویاکرن میں ایسا نہیں ہے ٹال نہ دیں بلکہ شبدوں اور ان کے ارتھوں کی گہرائی میں جاکر جو من لگتی بات ہو اسی کو اپنائیں.

دھرم شبد—

دھرم کا شبد د،ھ،ر،م سے بنا ہے. اب سوال یہ ہے کہ دھرم چار اکشر والا شبد ہے یا تین اکشر والا اور اگر تین اکشر والا ہے تو کون کون حرف اصل ہیں. یہ تو سب کو معلوم ہے کہ دھرم تین اکشر والا ہے اور اصل دھاتو دھری ہے اور اس کا 'م' علاحدہ ہے اور دھری + م سے مل کر دھرم بنا ہے.

سنسکرت کی 'دھری' دھاتو کی جگہ عربی زبان میں 'دھرٌ' شبد موجود ہے اور 'م' کی جگہ 'اُمٌ' پایا جاتا ہے. ان دونوں شبدوں کو جب ملایا جائے تو سنسکرت میں 'دھرم' اور عربی میں 'دھرالم' یا 'دھر الام' بن جاتا ہے.

سنسکرت میں 'دھری' کے ارتھ جہاں بہت سے ہیں وہاں چال چلن اور پرنالی کے بھی ہیں. عربی میں بھی 'دھر' کے معنے بہت ہیں. ان معنوں میں زمانہ اور اس کی گردش، عادت یعنی چال چلن اور ارادہ بھی ہیں.

سنسکرت دھرم کا 'م' شاید اوم کا مخفف یعنی ہلکا کیا ہوا ہے. زیادہ بولنے سے ایسا اکثر ہوا کرتا ہے.

संस्कृत का ओम् इबरी (यहूदी) ज़बान का 'एम' और अरबी ज़बान का 'उम्मुन' एक ही थैले के चट्टे बट्टे हैं. अरबी ज़बान में 'उम्मुन' के माने 'अस्लुलशाई' यानी हर चीज़ की जड़ के हैं. माँ बाप को भी 'उम्' कहा जाता है क्यों कि वह अपनी औलाद का अस्ल या जड़ होते हैं. 'उम्' उसको भी कहते हैं जिस पर चीज़ों का सहारा हो. संस्कृत में ओम् और इबरी में 'एम' उस निराकार और 'लैस मसलही शैउन' ज़ात को कहा जाता है जो सारे संसार और कुल कायनात (सृष्टि) की जड़ है. संसार की सारी चीज़ें अपनी ज़ात और अपने गुनों के साथ उसी ओम् और एम के सहारे खड़ी हैं. दूसरे शब्दों में सारा संसार अगर एक अथाह और बे किनार शरीर है तो उसका आत्मा ओम् और एम है जिसको फ़ारसी में ख़ुदा और अरबी में अल्लाह कहते हैं.

अब संस्कृत के धर्म और अरबी के दहरुलउम के माने ख़ुदा का दस्तूर, ख़ुदा का चलन और ख़ुदा का क़ानून होते हैं.

इस्लाम में धर्म को दीन के शब्द से बयान किया है जिसके मानी बदला, आदत, हुक्म फ़ैसला, परहेज़गारी, इबादत और वह सारी चीज़ें हैं जिनके ज़रिये भगवान, ख़ुदा की भक्ति की जाय. चूँकि धर्म के ही ज़रिये से भगवान की भक्ति की जाती है इसलिये इसको दीन कहा है.

धर्म को 'इस्लाम' भी कहा जाता है. 'सिलमुन' के माने मेल मिलाप और सुलह के हैं. 'सिलमुन' से इस्लाम बना तो इसके माने सुलह में दाख़िल होने केहैं. चूँकि अरब देश में नास्तिक बेराहमिया,

سنسکرت کا اوم عبری (یہودی) زبان کا 'ایم' اور عربی زبان کا 'اُمّ' ایک ہی تھیلے کے چٹّے بٹّے ہیں۔ عربی زبان میں 'اُمّ' کے معنے 'اصل الشئی' یعنی ہر چیز کی جڑ کے ہیں۔ ماں باپ کو بھی 'اُم' کہا جاتا ہے کیونکہ وہ اپنی اولاد کی اصل یا جڑ ہوتے ہیں۔ 'اُم' اُس کو بھی کہتے ہیں کہ جس پر چیزوں کا سہارا ہو۔ سنسکرت میں اوم اور عبری میں 'ایم' اُس نراکار اور لیس کمثلہٖ شئی ذات کو کہا جاتا ہے جو سارے سنسار اور کُل کائنات (سرشٹی) کی جڑ ہے۔ سنسار کی ساری چیزیں اپنی ذات اور اپنے گُنوں کے ساتھ اُسی اوم اور ایم کے سہارے کھڑی ہیں۔ دوسرے شبدوں میں سارا سنسار اگر ایک اتھاہ اور بے کنار شریر ہے تو اُس کا آتما اوم اور ایم ہے جس کو فارسی میں خدا اور عربی میں اللہ کہتے ہیں۔

اب سنسکرت کے دھرم اور عربی کے دھرالام کے معنی خدا کا دستور، خدا کا چلن اور خدا کا قانون ہوتے ہیں۔

اسلام میں دھرم کو دین کے شبد سے بیان کیا ہے جس کے معنے بدلہ، عادت، حکم فیصلہ، پرہیزگاری، عبادت اور وہ ساری چیزیں ہیں جن کے ذریعے بھگوان، خدا کی بھکتی کی جائے۔ چونکہ دھرم کے ہی ذریعے سے بھگوان کی بھکتی کی جاتی ہے اِس لئے اِس کو دین کہا ہے۔

دھرم کو 'اسلام' بھی کہا جاتا ہے۔ 'سلمٌ' کے معنے میل ملاپ اور صلح کے ہیں۔ 'سلمٌ' سے اسلام بنا تو اس کے معنے صلح میں داخل ہونے کے ہیں۔ چونکہ عرب دیش میں ناستک بیرہمیہ،

इब्राहीमी साबई, मजूस, यहूद, ईसाई मिल मिला कर सात धर्म के लोग थे जो एक दूसरे के 'धर्म ग्रन्थों' ऋषी मुनि और अवतारों को बुरा भला कहते और दुश्मनी करते थे. क़ुरान मजीद ने अपने मानने वालों को इस बात से सख़्ती के साथ रोका और सब धर्मों से सुलह का हाथ बढ़ाया. चूँकि अरब के इस धर्म ने सुलह का ऐलान किया इसलिये जो शख़्स इस जमात में मिलता उसको मुस्लिम और इस सुलह चाहने वाली समाज को इसलाम कहा जाने लगा.

इसलाम में धर्म को शरअ और शरीयत भी कहा गया है जिसके मानी उस साफ़ सुथरे और चौड़े रास्ते के हैं जिस पर चल कर इन्सान ईश्वर तक पहुँच सकता है. इसी को मज़हब भी कहते हैं क्योंकि अरबी में मज़हब के माने रास्ते के हैं. क़ुरान ने इसी धर्म को "सिराते मुस्तक़ीम" भी कहा है—जिसके माने "सीधे रास्ते" के हैं. कहीं इसको "सिराते हमीद" भी कहा गया है जिसके माने सुन्दर रास्ते के हैं. क़ुरान मजीद में धर्म को "फ़ितरतुल्ला" भी कहा गया है जिसके माने ख़ुदा के उस दस्तूर और क़ानून के हैं जिसकी पाबन्दी करने से इस दुनिया में और मौत के बाद की दुनिया में आदमी को मुसीबतों से मुक्ति (निजात) मिलती है. इसी को 'सबीलेरब्ब' कहा गया है जिसके माने पालनहार की उस राह उसके उस क़ानून के हैं जिसके ज़रिये से वह निराकार ओम् मनुष्य के शरीर और आत्मा दोनों का पालन करता है.

(११०)

ابراہیمی، صابئی، مجوس، یہود، عیسائی مل ملا کر سات دھرم کے لوگ تھے جو ایک دوسرے کے دھرم گرنتھوں، رشی منی اور اوتاروں کو برا بھلا کہتے اور دشمنی کرتے تھے. قرآن مجید نے اپنے ماننے والوں کو اس بات سے سختی کے ساتھ روکا اور سب دھرموں سے صلح کا ہاتھ بڑھایا. چونکہ عرب کے اس دھرم نے صلح کا اعلان کیا اس لئے جو شخص اس جماعت میں ملتا اُس کو مسلم اور اِس صلح چاہنے والی سماج کو اسلام کہا جانے لگا.

اسلام میں دھرم کو شرع اور شریعت بھی کہا گیا ہے جس کے معنی اُس صاف ستھرے اور چوڑے راستے کے ہیں جس پر چل کر انسان ایشور تک پہنچ سکتا ہے. اسی کو مذہب بھی کہتے ہیں کیونکہ عربی میں مذہب کے معنے راستے کے ہیں. قرآن نے اسی دھرم کو "صراط مستقیم" بھی کہا ہے جس کے معنے "سیدھے راستے" کے ہیں. کہیں اس کو "صراط حمید" بھی کہا گیا ہے جس کے معنے سُندر راستے کے ہیں. قرآن مجید میں دھرم کو "فطرت اللہ" بھی کہا گیا ہے جس کے معنے خدا کے اُس دستور اور قانون کے ہیں جس کی پابندی کرنے سے اس دنیا میں اور موت کے بعد کی دنیا میں آدمی کو مصیبتوں سے مکتی (نجات) دلاتی ہے. اسی کو "سبیل رب" کہا گیا ہے جس کے معنے پالن ہار کی اُس راہ اُس کے اُس قانون کے ہیں جس کے ذریعے سے وہ نراکار اوم منش کے شریر اور آتما دونوں کا پالن کرتا ہے.

समाज की पुस्तकों और किताबों को पेश करना इसलिये मुनासिब ख्याल नहीं करते कि दूसरी धार्मिक समाजें और ख़ास कर कालिजों युनिवर्सिटियों के नए पढ़े लिखे जो नई साइन्स की तालीम पाए हुए हैं और जो सिरे से धर्म को ही नहीं मानते किसी ख़ास धार्मिक समाज की पुस्तकों पर कैसे यक़ीन रख सकते हैं. इसलिये हमको मुनासिब है कि हम ख़ुद उस ओम् के हाथ की उस बनाई हुई किताब उस पुस्तक से धर्म के होने और उसके सच्चे होने के सुबूत पेश करें जिस पर सब का इत्तफ़ाक़ हो कि यह किताब ना तरफ़दार और ठीक ईश्वर की किताब है. अब यह सवाल पैदा होता है कि ईश्वर की ऐसी कौन पुस्तक है जिस पर सारे धार्मिक समाजों और ख़ास कर धर्म के न मानने वाले आलिमों का इत्तफ़ाक़ है कि यह ईश्वर के हाथ की बनाई हुई पुस्तक है ? इस सवाल का जवाब है कि वह किताब यह आलम है और वह पुस्तक, यह ब्रह्मान्ड है

आलम शब्द—

आलम अरबी ज़बान का शब्द है जिसकी धातु अलमुन है जिसके माने "अलामत" निशान यानी चिन्ह के हैं. आलम ऐसी चीज़ को कहा जाता है जो किसी बे निशान यानी निराकार के लिये चिन्ह और निशान का काम दे. सारा संसार उस निराकार बे मिसाल और बे नज़ीर ख़ुदा, परमेश्वर का रोशन निशान और चिन्ह है. इसलिये पूरे मौजूदात (अस्तित्व) को आलम कहते हैं.

यह भी हो सकता है कि आलम की धातु इल्मुन हो जिसके माने ज्ञान या जानने के हैं. तो आलम वह आला यानी जन्त्र हुआ जिसके ज़रिये से अनदेखी, अनसुनी, अनसमझी और

سماج کی پُستکوں اور کتابوں کو پیش کرنا اِس لئے مناسب خیال نہیں کرتے کہ دوسری دھارمک سماجیں اور خاص کر کالجوں یونیورسٹیوں کے نئے پڑھے لکھے جو نئی سائنس کی تعلیم پائے ہوئے ہیں اور جو سِرے سے دھرم کو ہی نہیں مانتے کسی خاص دھارمک سماج کی پستکوں پر کیسے یقین رکھ سکتے ہیں. اِس لئے ہم کو مناسب ہے کہ ہم خود اُس اوم کے ہاتھ کی اُس بنائی ہوئی کتاب اُس پستک سے دھرم کے ہونے اور اُس کے سچّے ہونے کے ثبوت پیش کریں جس پر سب کا اتفاق ہو کہ یہ کتاب نا طرفدار اور ٹھیک ایشور کی کتاب ہے. اب یہ سوال پیدا ہوتا ہے کہ ایشور کی ایسی کون پستک ہے جس پر سارے دھارمک سماجوں اور خاص کر دھرم کے نہ ماننے والے عالموں کا اتفاق ہے کہ یہ ایشور کے ہاتھ کی بنائی ہوئی پستک ہے؟ اِس سوال کا جواب ہے کہ وہ کتاب یہ عالم ہے اور وہ پستک یہ برہمانڈ ہے.

عالم شبد—

عالم عربی زبان کا شبد ہے جس کی دھاتو علمٌ ہے جس کے معنے "علامت" نشان یعنی چنھ کے ہیں. عالم ایسی چیز کو کہا جاتا ہے جو کسی بے نشان یعنی نراکار کے لئے چنھ اور نشان کا کام دے. سارا سنسار اُس نراکار بے مثال اور بے نظیر خدا، پرمیشور کا روشن نشان اور چنھ ہے. اِس لئے پورے موجودات (استتو) کو عالم کہتے ہیں.

یہ بھی ہوسکتا ہے کہ عالم کی دھاتو عِلمٌ ہو جس کے معنے گیان یا جاننے کے ہیں. تو عالم وہ آلہ یعنی جنتر ہوا جس کے ذریعے سے آن دیکھی، آن سُنی، آن سمجھی اور

अनजानी चीज़ जानी जाय. ओम् और उसका तमाम काम हमारे तमाम ज़ाहिरी इद्राकात यानी मनुष्य की सारी इन्द्रियों के ज्ञान से बाहर है और इस जहान से उस निराकार सर्व शक्तिमान की ज़ात और उसके गुनों का ज्ञान होता है तो इन सब मौजूदात को आलम कहते हैं जिसका बहुवचन (जमा) आलमीन, आलमून और अवालम होता है.

जो आदमी इस संसार की हस्ती से उस अविनाशी हस्ती का और इस संसार की अनगिनत चीज़ों के गुनों से उस सर्व शक्तिमान की एक एक शक्ति का इल्म हासिल करता है उसे आलिम कहा जाता है.

ब्रह्मान्ड शब्द—

मेरे नज़दीक ब्रह्म शब्द भी दो शब्दों से मिलकर बना है. एक 'ब्रह' और दूसरा 'म'. ब्रह शब्द की जगह अरबी ज़बान में बरहतुन है जिसके माने दलील, सुबूत, बुरहान, बयान या प्रमान हैं. दूसरा शब्द 'म' है जिसका मतलब मैं ऊपर बयान कर चुका हूँ. मेरे नज़दीक कर्म और जन्म का 'म' भी इन्हीं मानों में आया है. अब संस्कृत का 'ब्रह्म' और अरबी का 'बरहतउम' एक ही शब्द हो गया जिसके माने ईश्वर का प्रमान, ख़ुदा का सबूत हुए. सारा संसार और उसकी एक एक चीज़ उस निराकार के होने का प्रमान है. उस सर्व शक्तिमान की एक एक शक्ति और एक एक गुन का हर एक चीज़ अपने अनगिनत गुनों से साफ़ सुबूत दे रही है. इसीलिये इस पूरे संसार को ब्रह्म कहा जाता है और चूँकि साइन्स के आचार्यों के ख़याल से ब्रह्म गोल मोल है [illegible] ता है जो विद्वान

ان جانی چیز جانی جائے. اوم اور اُس کا تمام کام ہمارے تمام ظاہری ادراکات یعنی منش کی ساری اندریوں کے گیان سے باہر ہے اور اس جہان سے اُس نراکار سرو شکتی مان کی ذات اور اُس کے گنوں کا گیان ہوتا ہے تو ان سب موجودات کو عالم کہتے ہیں جس کا بہوبچن (جمع) عالمین، عالمون اور عوالم ہوتا ہے.

جو آدمی اس سنسار کی ہستی سے اُس اوناشی ہستی کا اور اس سنسار کی ان گنت چیزوں کے گنوں سے اُس سرب شکتی مان کی ایک ایک شکتی کا علم حاصل کرتا ہے اُسے عالم کہا جاتا ہے.

برہمانڈ شبد—

میرے نزدیک برہم شبد بھی دو شبدوں سے مل کر بنا ہے. ایک "برہ" اور دوسرا 'م'. برہ شبد کی جگہ عربی زبان میں برہتہ ہے جس کے معنے دلیل، ثبوت، بُرہان، بیان یا پرمان ہیں. دوسرا شبد 'م' ہے جس کا مطلب میں اوپر بیان کر چکا ہوں. میرے نزدیک کرم اور جنم کا 'م' بھی انھیں معنوں میں آیا ہے. اب سنسکرت کا 'برہم' اور عربی کا 'برہتہ ام' ایک ہی شبد ہو گیا جس کے معنے ایشور کا پرمان، خدا کا ثبوت ہوئے. سارا سنسار اور اُسکی ایک ایک چیز اُس نراکار کے ہونے کا پرمان ہے. اُس سرب شکتی مان کی ایک ایک شکتی اور ایک ایک گن کا ہر ایک چیز اپنے ان گنت گنوں سے صاف ثبوت دے رہی ہے. اسی لئے اس پورے سنسار کو برہم کہا جاتا ہے اور چونکہ سائنس کے آچاریوں کے خیال سے برہم گول مول ہے اس لئے اُس کو برہمانڈ کہا جاتا ہے. جو ودوان

ब्रह्म या ब्रह्मान्ड की एक एक चीज़ और उसके गुनों का पूरा इल्म रखते हैं और इसके भेद को समझ बूझ कर उस निराकार की ज़ात और उस सर्व शक्तिमान की एक एक शक्ति को ब्रह्मान्ड से ढूंढ ढूंढ कर उसका प्रचार करते हैं वही सच्चे ब्राह्मण हैं.

हमारी ज़मीन चौबीस हज़ार मील का एक गोल कुर्रा या गेंद है जिसका कुतुर (व्यास) आठ हज़ार मील का है. कहा जाता है कि इसके अंदर बीच में चार हज़ार मील कुतुर का एक गोल शीशे का गर्म और खौलता हुआ कुर्रा है और इसके ऊपर एक हज़ार मील मोटा सब तरफ़ धातों का खोल है. फिर इस खोल पर एक हज़ार मील मोटा सब तरफ़ पत्थरों का खोल है और फिर उस पर क़रीब तीस मील मोटा यह ख़ाकी खोल है जिसको ज़मीन का छिलका और कशरे अर्ज़ कहते हैं. इस ज़मीन के दो तिहाई छिलके पर लहरें मारते हुए समन्दर, बहते हुए नदी नाले, दरिया, जमे हुए पहाड़, खड़े हुए गाछ (दरख़्त) और फल, फैली हुई छोटी बड़ी लताएं और बेलें और हज़ारों रंग के ज़मीन पर रेंगते और चलते फिरते और पानी में तैरते और हवा में उड़ते हुए जानवर हैं. फिर सारी ज़मीन पर हर तरफ़ मीलों मोटा हवा का दल है जिसमें कोहा बादल बिजली और ढाई लाख मील दूर पर चमकता हुआ चाँद है. यह सारी चीज़ें एक दूसरे को खींचने वाली शक्तियों से बँधी हुई ज़मीन के गिर्दा गिर्द घूमती हैं. सच पूछो तो ज़मीन एक मेहा, मेख़ या खूंटा है और यह सारी चीज़ें इसके गिर्द घूमती फिरती हैं. हम इन्हीं सारी चीज़ों को मिला कर निज़ामे अर्ज़ी या विश्व कहते हैं जो लाखों मील में फैला हुआ है.

(१२०)

برہم یا برہمانڈ کی ایک ایک چیز اور اُس کے گُنوں کا پورا علم رکھتے ہیں اور اُس کے بھید کو سمجھ بوجھ کر اُس نراکار کی ذات اور اُس سرب شکتیمان کی ایک ایک شکتی کو برہمانڈ سے ڈھونڈھ ڈھونڈھ کر اُس کا پرچار کرتے ہیں وہی سچے براہمن ہیں۔

ہماری زمین چوبیس ہزار میل کا ایک گول کُرہ یا گیند ہے جس کا قطر (بیاس) آٹھ ہزار میل کا ہے۔ کہا جاتا ہے کہ اِس کے اندر بیچ میں چار ہزار میل قطر کا ایک گول شیشے کا گرم اور کھولتا ہوا کرہ ہے اور اس کے اوپر ایک ہزار میل موٹا سب طرف دھاتوں کا خول ہے۔ پھر اِس خول پر ایک ہزار میل موٹا سب طرف پتھروں کا خول ہے اور اُس پر قریب ۳۰ میل موٹا یہ خاکی خول ہے جس کو زمین کا چھلکا اور قشر ارض کہتے ہیں۔ اِس زمین کے دو تہائی چھلکے پر لہریں مارتے ہوئے سمندر، بہتے ہوئے ندی نالے دریا، جمے ہوئے پہاڑ، کھڑے ہوئے گاچھ (درخت) اور پھل، پھیلی ہوئی چھوٹی بڑی لتائیں اور بیلیں اور ہزاروں رنگ کے زمین پر رینگتے اور چلتے پھرتے اور پانی میں تیرتے اور ہوا میں اُڑتے ہوئے جانور ہیں۔ پھر ساری زمین پر ہر طرف میلوں موٹا ہوا کا دَل ہے جس میں کوہا بادل بجلی اور ڈھائی لاکھ میل دُور پر چمکتا ہوا چاند ہے۔ یہ ساری چیزیں ایک دوسرے کو کھینچنے والی شکتیوں سے بندھی ہوئی زمین کے گرداگرد گھومتی ہیں۔ سچ پوچھو تو زمین ایک میہا، میخ یا کھونٹا ہے اور یہ ساری چیزیں اِس کے گرد گھومتی پھرتی ہیں۔ ہم اِنھیں ساری چیزوں کو ملا کر نظام ارضی یا وشو کہتے ہیں جو لاکھوں میل میں پھیلا ہوا ہے۔

हमारी जमीन और उसके आस पास अतारद (बुध), जोहरा (शुक्र), मिर्रीख़ (मंगल), मुश्तरी (ब्रहस्पति), जुहल (सनीचर), यूरिनस, नैपच्यू वग़ैरा बड़े बड़े सैय्यारे हैं और इनके अलावा क़रीब दो सौ के और छोटे छोटे सैय्यारे हैं जो हमारे सूरज के गिर्दा गिर्द आकाश के अरबों मीलों में घूमते फिरते हैं.

अरबी जबान में सूरज को सिराज कहते हैं. इन दोनों शब्दों की एक धातु यानी स, र, ज है जिसके माने रोशन चिराग़ के हैं. कहा जाता है कि हमारी जमीन से सूरज तेरह लाख गुना बड़ा है. इसके ऊपर का खोल आग के मसालों का है जो हर वक़्त जलता और रोशन रहा करता है. इसकी लपटें चार चार लाख मील तक दौड़ती हैं. सब के सब सय्यारे सूरज से टपक कर गिरे हैं और गिरने के बाद भी वह सूरज की उन गैसों से पलते बढ़ते हैं जो इसके शोलों से बाहर होकर आकाश में फैलती हैं. इन बातों को ध्यान में रखते हुए कहा जा सकता है कि सूरज के जगत में जो दो सौ सैय्यारे सूरज से बँधे हुए हैं यह उसकी औलाद और सूरज उनके बाप के मानिन्द है. इसी वास्ते अरबी जबान में सूरज को शम्स भी कहा जाता है जिसके माने बाप के हैं और पानी के उस चशमें यानी सोते के भी हैं जिससे बाग़ बग़ीचे और खेतियाँ सींची जाती हैं.

यह अरबों मील आकाश में जो सूरज और उसका पूरा कुनबा क़बीला फैला पड़ा है इनमें एक दूसरे से रूठ रूठव्वल नहीं, एक दूसरे में नोच खसोट नहीं बल्कि हर एक में रवादारी है और यह सब एक दूसरे को बाक़ायदा फ़ायदा पहुंचाने और फ़ायदा हासिल करने में लगे हुए हैं. इन सब को मिला कर जो सूरत पैदा होती है उसको

ہماری زمین اور اس کے آس پاس عطارد (بدھ)، زہرہ (شکر)، مریخ (منگل)، مشتری (برہسپتی)، زحل (سنیچر)، یورینس، نیپچیون وغیرہ جیسے بڑے بڑے سیارے ہیں اور ان کے علاوہ قریب دو سو کے اور چھوٹے چھوٹے سیارے ہیں جو ہمارے سورج کے گرداگرد آکاش کے اربوں میلوں میں گھومتے پھرتے ہیں۔

عربی زبان میں سورج کو سراج کہتے ہیں۔ ان دونوں شبدوں کی ایک دھاتو یعنی س، ر، ج ہے جس کے معنی روشن چراغ کے ہیں۔ کہا جاتا ہے کہ ہماری زمین سے سورج تیرہ لاکھ گنا بڑا ہے۔ اس کے اوپر کا خول آگ کے مسالوں کا ہے جو ہر وقت جلتا اور روشن رہا کرتا ہے۔ اس کی لپٹیں چار چار لاکھ میل تک دوڑتی ہیں۔ سب کے سب سیارے سورج سے ٹپک کر گرے ہیں اور گرنے کے بعد بھی وہ سورج کی ان گیسوں سے پلتے بڑھتے ہیں جو اس کے شعلوں سے باہر ہو کر آکاش میں پھیلتی ہیں۔ ان باتوں کو دھیان میں رکھتے ہوئے کہا جا سکتا ہے کہ سورج کے جگت میں جو دو سو سیارے سورج سے بندھے ہوئے ہیں یہ اس کی اولاد اور سورج ان کے باپ کے مانند ہے۔ اسی واسطے عربی زبان میں سورج کو شمس بھی کہا جاتا ہے جس کے معنے باپ کے ہیں اور پانی کے اس چشمے یعنی سوتے کے بھی ہیں جس سے باغ بغیچے اور کھیتیاں سینچی جاتی ہیں۔

یہ اربوں میل آکاش میں جو سورج اور اس کا پورا کنبہ قبیلہ پھیلا پڑا ہے ان میں ایک دوسرے سے روٹھ رٹھوّل نہیں، ایک دوسرے میں نوچ کھسوٹ نہیں۔ بلکہ ہر ایک میں رواداری ہے اور یہ سب ایک دوسرے کو باقاعدہ فائدہ پہونچانے اور فائدہ حاصل کرنے میں لگے ہوئے ہیں۔ ان سب کو ملا کر جو صورت پیدا ہوتی ہے اس کو

हम निज़ामे शम्सी और उसी को सूरज महाराज का जगत कहते हैं.

आकाश में जो जगमगाते और झिलमिल करते अनगिनत तारे दिखाई देते हैं, कहा जाता है कि यह हमारे सूरज के रूप के छोटे बड़े चार अरब से ज्यादा रोशन सूरज हैं जो आकाश के महासंखों मील में मोतियों की तरह बिखरे पड़े हैं. मगर यह अरबों सूरज आपस में एक दूसरे से बेलगाव नहीं हैं. जिस तरह एक ख़ूब घने दरख़्त के पत्ते डालियाँ और मोटे डाले मिलते जुलते सब के सब एक जड़ से जा मिलते हैं ठीक उसी तरह यह सब सूरज आपस में खिंचाव से बँधे हुए हैं और इन अरबों छोटे बड़े सूरजों का सिलसिला किसी एक महासूरज पर पहुँच कर ख़त्म हो जाता है. इस महासूरज को अरबी में 'शमशुश्शमूश' यानी सूरजों का सूरज कहते हैं और क़ुरान मजीद में इसका नाम अर्श बताया गया है. यही अर्श अरबों सूरजों का मरकज़ (केन्द्र) है जिसके गिर्दा गिर्द यह सारे सूरज चक्कर लगा रहे हैं. इस अर्शे अज़ीम के महासंखों मील में फैले हुए जगत की हदें जहाँ पहुँच कर ख़त्म होती हैं उस मन्डल को क़ुरान मजीद ने कुर्सी कहा है. ग़रज़ यह कि अर्श अज़ीम और उसकी लम्बी और चौड़ी कुर्सी के अंदर जो अरबों सूरजों की झुरमुट अर्श के हर तरफ़ घूमते फिरते और कीर्तन करते नज़र आती है, यह सब मिल जुल कर ब्रह्मान्ड का स्वरूप है.

यहाँ यह बात भी ज़ाहिर है कि इस अथाह आकाश में हमारे इस ब्रह्मान्ड की तरह अनगिनत ब्रह्मान्ड हैं जो रब्बुल आलमीन और रब्बुल अर्शुल अज़ीम व करीम के बेपायाँ भंडार से रोज़ी हासिल करके परवरिश पा रहे हैं.

ہم نظام شمسی اور اسی کو سورج مہاراج کا جگت کہتے ہیں.

آکاش میں جو جگمگاتے اور جھلمل کرتے ان گنت تارے دکھائی دیتے ہیں، کہا جاتا ہے کہ یہ ہمارے سورج کے روپ کے چھوٹے بڑے چار ارب سے زیادہ روشن سورج ہیں جو آکاش کے مہاسنکھوں میل میں موتیوں کی طرح بکھرے پڑے ہیں. مگر یہ اربوں سورج آپس میں ایک دوسرے سے بے لگاؤ نہیں ہیں جس طرح ایک خوب گھنے درخت کے پتے ڈالیاں اور موٹے ڈالے ملتے جلتے سب کے سب ایک جڑ سے جا ملتے ہیں ٹھیک اسی طرح یہ سب سورج آپس میں کھچاؤ سے بندھے ہوئے ہیں اور ان اربوں چھوٹے بڑے سورجوں کا سلسلہ کسی ایک مہاسورج پر پہنچ کر ختم ہو جاتا ہے. اس مہاسورج کو عربی میں شمس الشموس یعنی سورجوں کا سورج کہتے ہیں اور قرآن مجید میں اس کا نام عرش بتایا گیا ہے. یہی عرش اربوں سورجوں کا مرکز (کیندر) ہے جس کے گرداگرد یہ سارے سورج چکر لگا رہے ہیں. اس عرش عظیم کے مہاسنکھوں میل میں پھیلے ہوئے جگت کی حدیں جہاں پہنچ کر ختم ہوتی ہیں اس منڈل کو قرآن مجید نے کرسی کہا ہے. غرض یہ کہ عرش عظیم اور اس کی لمبی اور چوڑی کرسی کے اندر جو اربوں سورجوں کی جھرمٹ عرش کے ہر طرف گھومتے پھرتے اور کیرتن کرتے نظر آتی ہے یہ سب مل جل کر برہمانڈ کا سروپ ہے.

یہاں یہ بات بھی ظاہر ہو کہ اس اتھاہ آکاش میں ہمارے اس برہمانڈ کی طرح ان گنت برہمانڈ ہیں جو رب العالمین اور رب العرش العظیم و کریم کے بے پایاں بھنڈار سے روزی حاصل کر کے پرورش پا رہے ہیں.

आलमे खल्क़—

ब्रह्मान्ड के स्वरूप में जमीन, चाँद और सूरज वग़ैरा ऐसी माद्दी चीजें जो मनुष्य की पाँचों इन्द्रियों में से किसी न किसी एक इन्द्रिय के ज्ञान में आ सकती हैं, जैसे रंग, रूप, हलका, भारी, छोटा, बड़ा वग़ैरा सब आलमे खल्क़ कही जाती हैं.

आलमे अम्र—

लेकिन ब्रह्मान्ड के स्वरूप में दूसरी ऐसी चीजें भी पाई जाती हैं, जो मनुष्य की इन्द्रियों के ज्ञान में नहीं आतीं और न आ सकती हैं, जैसे सुख, दुख, खुशी, ग़म, रहम, गुस्सा, दोस्ती, दुश्मनी, प्रेम, भूक प्यास. मनुष्य के अंग अंग और रग रग में ऐसी शक्तियाँ काम कर रही हैं जिनका न कोई रंग है न स्वरूप, न वह किसी इन्द्रिय के ज्ञान में समा सकती हैं. इसी तरह ब्रह्मान्ड के हर जर्रों और इन जर्रों से बनी हुई चीजें जैसे जानवर, दरख्त, पहाड़, जमीन, चाँद सूरज, सितारे और सैय्यारे वग़ैरा हैं. इन सब में अलग अलग शक्तियाँ मौजूद हैं जो इनके बनाने और बिगाड़ने में यानी तामीर और तखरीब में लगी हुई हैं. इनसे ऊपर बहुत सी आत्माएँ देवता या दूत हैं जिनको अरबी में रूह और मलायका और फ़ारसी में जान और फरिश्ते कहते हैं. यह सभी चीजें जिनकी सूरत मनुष्य की इन्द्रियों के ज्ञान में नहीं आती आलमे अम्र कहलाती हैं. आलमे खल्क़ को जड़ जगत और आलमे अम्र को चेतन जगत कहते हैं. आलमे अम्र यानी चेतन जगत की दुनिया जो बे रंग और बे रूप की है अपने अन्दर बे इन्तहा जोर और ताक़त रखती है और माद्दी दुनिया के एक एक जर्रे पर छाई हुई है. कोई भी

عالمِ خلق—

برہمانڈ کے سروپ میں زمین، چاند اور سورج وغیرہ ایسی مادی چیزیں جو منش کی پانچوں اندریوں میں سے کسی نہ کسی ایک اندری کے گیان میں آسکتی ہیں، جیسے رنگ، روپ، ہلکا، بھاری، چھوٹا بڑا وغیرہ سب عالمِ خلق کہی جاتی ہیں۔

عالمِ امر—

لیکن برہمانڈ کے سروپ میں دوسری ایسی چیزیں بھی پائی جاتی ہیں جو منش کی اندریوں کے گیان میں نہیں آتیں اور نہ آسکتی ہیں، جیسے سکھ، دکھ، خوشی، غم، رحم، غصہ، دوستی، دشمنی، پریم، بھوک پیاس۔ منش کے انگ انگ اور رگ رگ میں ایسی شکتیاں کام کر رہی ہیں جن کا نہ کوئی رنگ ہے نہ سروپ، نہ وہ کسی اندری کے گیان میں سما سکتی ہیں۔ اسی طرح برہمانڈ کا ہر ذرہ اور ان ذروں سے بنی ہوئی چیزیں جیسے جانور، درخت، پہاڑ، زمین، چاند، سورج، ستارے اور سیارے وغیرہ ہیں۔ ان سب میں الگ الگ شکتیاں موجود ہیں جو ان کے بنانے اور بگاڑنے یعنی تعمیر اور تخریب میں لگی ہوئی ہیں۔ ان سے اوپر بہت سی آتمائیں، دیوتا یا دوت ہیں جن کو عربی میں روح اور ملائکہ اور فارسی میں جان اور فرشتے کہتے ہیں۔ یہ سبھی چیزیں جن کی صورت منش کی اندریوں کے گیان میں نہیں آتی عالمِ امر کہلاتی ہیں۔ عالمِ خلق کو جڑ جگت اور عالمِ امر کو چیتن جگت کہتے ہیں۔ عالمِ امر یعنی چیتن جگت کی دنیا جو بے رنگ اور بے روپ کی ہے اپنے اندر بے انتہا زور اور طاقت رکھتی ہے اور مادی دنیا کے ایک ایک ذرے پر چھائی ہوئی ہے۔ کوئی بھی

ऐसा ज़र्रा नहीं जिस पर इनका क़ब्ज़ा न हो. सच पूछो तो पूरे ब्रह्मान्ड की एक एक चीज़ के बनाने बिगाड़ने, चलत, फिरत, उतार चढ़ाव बल्कि इनकी मौत हयात में इन्हीं का हाथ काम कर रहा है.

ब्रह्मान्ड में या चेतन जगत में बेशुमार ताक़तें, बेइन्तहा रूहें हैं. मगर आसानी के लिये इनको चार हिस्सों में बाँटा जा सकता है.

(१) वह शक्तियाँ जो ब्रह्मान्ड की एक एक चीज़ के बनाने, बढ़ाने और इकट्ठा करने में लगी हुई हैं. इन शक्तियों का सिलसिला एक बड़ी शक्ति पर ख़त्म होता है जिसे इस्लाम में मैकाईल फ़रिश्ता कहा गया है. हिन्दू धर्म में उसी का नाम ब्रह्मा है.

(२) वह शक्तियाँ जो ब्रह्मान्ड की एक एक चीज़ के घटाने, बिगाड़ने और आख़ीर दर्जे उसको मौत के घाट उतारने पर कारबन्द हैं. इनका सिलसिला उस बड़ी शक्ति पर ख़त्म होता है जिसे इस्लाम में इज़राईल फ़रिश्ता कहा गया है और हिन्दू धर्म में इसे यमराज नाम दिया गया है.

(३) वह शक्तियाँ जो ब्रह्मान्ड की एक एक चीज़ का दूसरी चीज़ों के साथ इस तरह मेल मिलाप पैदा करती हैं जिसके ज़रिये वह दूसरों से फ़ायदा हासिल करने और दूसरों को फ़ायदा पहुँचाने और ख़ुद नाजायज़ नुकसान न उठाने और न दूसरों को नाजायज़ नुक़सान पहुँचाने में लगी हैं. इन्हीं शक्तियों से समाजें और संगठन क़ायम होते हैं. इसी जज़्बे मेल मिलाप से पूरे ब्रह्मान्ड का संगठन क़ायम है और एक ज़र्रे से लेकर अर्शे अज़ीम तक ब्रह्मान्ड का पूरा शरीर अपने ख़ास रूप में नज़र आता है. इन शक्तियों का सिलसिला जिस बड़ी शक्ति पर ख़त्म होता है इस्लाम

ایسا ذرہ نہیں جس پر ان کا قبضہ نہ ہو۔ سچ پوچھو تو پورے برہمانڈ کی ایک ایک چیز کے بنانے، بگاڑنے، چلت، پھرت، اتار، چڑھاؤ بلکہ ان کی موت حیات میں ان ہی کا ہاتھ کام کر رہا ہے۔

برہمانڈ میں یا چیتن جگت میں بیشمار طاقتیں بے انتہا روحیں ہیں۔ مگر آسانی کے لئے ان کو چار حصوں میں بانٹا جا سکتا ہے۔

(۱) وہ شکتیاں جو برہمانڈ کی ایک ایک چیز کے بنانے، بڑھانے اور اکٹھا کرنے میں لگی ہوئی ہیں۔ ان شکتیوں کا سلسلہ ایک بڑی شکتی پر ختم ہوتا ہے جسے اسلام میں میکائیل فرشتہ کہا گیا ہے۔ ہندو دھرم میں اُسی کا نام برہما ہے۔

(۲) وہ شکتیاں جو برہمانڈ کی ایک ایک چیز کے گھٹانے، بگاڑنے اور آخیر درجے اس کو موت کے گھاٹ اتارنے پر کاربند ہیں۔ ان کا سلسلہ اس بڑی شکتی پر ختم ہوتا ہے جسے اسلام میں عزرائیل فرشتہ کہا گیا ہے اور ہندو دھرم میں اسے یمراج نام دیا گیا ہے۔

(۳) وہ شکتیاں جو برہمانڈ کی ایک ایک چیز کا دوسری چیزوں کے ساتھ اس طرح میل ملاپ پیدا کرتی ہیں جس کے ذریعہ وہ دوسروں سے فائدہ حاصل کرنے اور دوسروں کو فائدہ پہنچانے اور خود ناجائز نقصان نہ اٹھانے اور نہ دوسروں کو ناجائز نقصان پہنچانے میں لگی ہیں۔ انھیں شکتیوں سے سماجیں اور سنگٹھن قایم ہوتے ہیں۔ اسی جذبہ میل ملاپ سے پورے برہمانڈ کا سنگٹھن قایم ہے اور ایک ذرے سے لے کر عرش عظیم تک برہمانڈ کا پورا شریر اپنے خاص روپ میں نظر آتا ہے۔ ان شکتیوں کا سلسلہ جس بڑی شکتی پر ختم ہوتا ہے اسلام

में उसे जिब्रील फ़रिश्ता कहा गया है. शायद सनातन धर्म में उसी को विष्नु कहते हैं. अवतारों, रसूलों और नबियों का साफ़ रोशन और पवित्र दिल इसी शक्ति का रेडियो बक्स होता है.

(४) वह शक्तियाँ जो नम्बर ३ के बिल्कुल मुक़ाबिल हैं जो एक दूसरे को अलहदा और एक दूसरे को पुरज़े पुरज़े कर देती हैं. पूरे ब्रह्मान्ड की फ़िज़ा, लय और महाप्रलय इन्हीं के हाथों होता है. इन शक्तियों का सिलसिला जिस बड़ी शक्ति पर ख़त्म होता है इस्लाम में उसे इसराफ़ील कहा गया है. हिन्दू धर्म में उसे शिव या महादेव कहा जाता है.

यह पूरा आलमे अम्र यानी चेतन जगत पूरे ब्रह्मान्ड के माद्दी आलम याने आलमे ख़ल्क़ पर छाया हुआ है और इसी आलमे अम्र के बल बूते पर पूरा ब्रह्मान्ड और उसका एक एक ज़र्रा नाच रहा है. इसका रूप और वजूद किसी माद्दी आलम का मोहताज नहीं. इसके तत्त्व यानी अनासिर उस ओम के अनगिनत जलाली और जमाली गुनों का फल हैं जो अपनी ज़ात से निराकार है लेकिन यह अनगिनत गुन भी कसरत से क़िल्लत और क़िल्लत से कसरत यानी एक से बहुत और बहुत से एक के सिलसिले में जकड़े हुए हैं. जहाँ यह सिलसिला ख़त्म होता है उसी मुक़ाम से उस निराकार का भेद मालूम होने लगता है.

इन शक्तियों और आत्माओं का ब्रह्मान्ड जो सैय्यारों, सितारों, चाँद सूरज और अर्श कुर्सी के ब्रह्मान्ड को चला रहा है उसकी कोई चीज़ भी मुंह छुट और बेलगाम नहीं. इनमें कहीं भी बेअसूली या बेक़ायदगी नहीं और न बेज़ाब्तगी

میں اُسے جبریل فرشتہ کہا گیا ہے. شاید سناتن دھرم میں اسی کو وشنو کہتے ہیں. اوتاروں، رسولوں اور نبیوں کا صاف روشن اور پوتر دل اسی شکتی کا ریڈیو بکس ہوتا ہے.

(۴) وہ شکتیاں جو نمبر ۳ کے بالکل مقابل ہیں جو ایک دوسرے کو علاحدہ اور ایک دوسرے کو پُرزے پُرزے کر دیتی ہیں. پورے برہمانڈ کی فضا، لے اور مہاپرلے اِن ہی کے ہاتھوں ہوتا ہے. اِن شکتیوں کا سلسلہ جس بڑی شکتی پر ختم ہوتا ہے اسلام میں اُسے اسرافیل کہا گیا ہے. ہندو دھرم میں اُسے شیو یا مہادیو کہا جاتا ہے.

یہ پورا عالمِ امر یعنی چیتن جگت پورے برہمانڈ کے مادّی عالم یعنی عالمِ خلق پر چھایا ہوا ہے اور اسی عالمِ امر کے بل بوتے پہ پورا برہمانڈ اور اُس کا ایک ایک ذرّہ ناچ رہا ہے. اِس کا روپ اور وجود کسی مادّی عالم کا محتاج نہیں. اِس کے تتو یعنی عناصر اُس اوم کے اَن گنت جلالی اور جمالی گنوں کا پھل ہیں جو اپنی ذات سے نراکار ہے. لیکن یہ اَن گنت گن بھی کثرت سے قلّت اور قلّت سے کثرت یعنی ایک سے بہت اور بہت سے ایک کے سلسلے میں جکڑے ہوئے ہیں. جہاں یہ سلسلہ ختم ہوتا ہے اُسی مقام سے اُس نراکار کا بھید معلوم ہونے لگتا ہے.

اِن شکتیوں اور آتماؤں کا برہمانڈ جو سیّاروں، ستاروں، چاند سورج اور عرش کرسی کے برہمانڈ کو چلا رہا ہے اُس کی کوئی چیز بھی مُنہ چھوٹ اور بے لگام نہیں.

[illegible]

या अन्याय है. बल्कि यह सारा कारखाना ठीक ठीक किसी क़ानून के मातहत चलता दिखाई देता है. मालूम होता है कि इस कारखाने का एक एक ज़र्रा अपने उसूल और अपने क़ानून, अपने दस्तूर और अपने क़ायदे के मुताबिक़ काम कर रहा है. जब तक वह उसूल से और क़ायदे से काम करता है. उससे काम लिया जाता है और जब वह बेउसूली और बेक़ायदगी करता है और सुधार के लायक़ भी नहीं रहता तो उसको अलहदा करके जहन्नुम की भट्टी में गिरा दिया जाता है. यह क़ानून और चलन का सिलसिला भी इसी तरह बढ़ता रहता है यहाँ तक कि इसकी आख़िरी कड़ी उस निराकार ओम् तक जा पहुँचती है. इसी सिलसिले और क़ानून का नाम धर्म है जो पूरे ब्रह्मान्ड में जारी और सारी. व्यापक और फैला हुआ है.

मनुष--

मनुष को मनुष्य या मानस भी कहते हैं. अरबी में उसकी जगह मूनिस लफ़्ज़ है जिसकी धातु उन्स है. इन्सान लफ़्ज़ भी इसी धातु से बना है. उन्स के माने मेल मुहब्बत के हैं. अब मनुष्य के माने मेरे नज़दीक मेल मुहब्बत करने वाले के हुए. ख़ुदा ने आदमी की सृष्टि में मेल मुहब्बत इसी वास्ते रक्खा है कि इन्सान अपने शरीर और आत्मा के पालन करने में एक दूसरे का मोहताज रहे और जब तक आपस में मेल मोहब्बत न रक्खेगा उस वक़्त तक वह न दूसरों से फ़ायदा उठा सकता है और न दूसरों को फ़ायदा पहुँचा सकता है.

आदमी का ढाँचा -

देखने में आदमी का ढाँचा, सर, गर्दन, दो हाथ, सीना, पीठ पेट और दो टांगें नज़र आती हैं. यह ढाँचा चमड़ा, गोश्त और

یا انیائے ہے۔ بلکہ یہ سارا کارخانہ ٹھیک ٹھیک کسی قانون کے ماتحت چلتا دکھائی دیتا ہے۔ معلوم ہوتا ہے کہ اس کارخانے کا ایک ایک ذرّہ اپنے اصول اور اپنے قانون، اپنے دستور اور اپنے قاعدے کے مطابق کام کر رہا ہے۔ جب تک وہ اصول سے اور قاعدے سے کام کرتا ہے، اُس سے کام لیا جاتا ہے اور جب وہ بے اُصول اور بے قاعدگی کرتا ہے اور سُدھار کے لائق بھی نہیں رہتا تو اُس کو علٰحدہ کر کے جہنم کی بھٹی میں گرا دیا جاتا ہے۔ یہ قانون اور چلن کا سلسلہ بھی اسی طرح بڑھتا رہتا ہے یہاں تک کہ اس کی آخری کڑی اُس نراکار اوم تک جا پہنچتی ہے۔ اسی سلسلے اور قانون کا نام دھرم ہے جو پورے برہمانڈ میں جاری اور ساری، ویاپک اور پھیلا ہوا ہے۔

منش —

منش کو منشیہ یا مانس بھی کہتے ہیں۔ عربی میں اُس کی جگہ مونس لفظ ہے جس کی دھاتو اُنس ہے۔ انسان لفظ بھی اسی دھاتو سے بنا ہے۔ اُنس کے معنے میل محبت کے ہیں۔ اب منشیہ کے معنے میرے نزدیک میل محبت کرنے والے کے ہوئے۔ خدا نے آدمی کی سرشٹی میں میل محبت اسی واسطے رکھا ہے کہ انسان اپنے شریر اور آتما کے پالن کرنے میں ایک دوسرے کا محتاج رہے اور جب تک آپس میں میل محبت نہ رکھے گا اُس وقت تک وہ نہ دوسروں سے فائدہ اٹھا سکتا ہے اور نہ دوسروں کو فائدہ پہنچا سکتا ہے۔

آدمی کا ڈھانچہ —

دیکھنے میں آدمی کا ڈھانچہ، سر، گردن، دو ہاتھ، سینہ، پیٹھ، پیٹ اور دو ٹانگیں نظر آتی ہیں۔ یہ ڈھانچہ چمڑا، گوشت اور

हड्डियों से बना हुआ है. इसमें छोटी बड़ी पहाड़ों की तरह की दो सौ अड़तालीस हड्डियाँ हैं. इनको बाँधने के लिये साढ़े सात सौ रस्सियाँ हैं यानी पट्ठे हैं. तीन सौ साठ बारीक बारीक नालियाँ और तीन सौ नव्वे नहरें. सर के अन्दर ख़ानों में भेजा, आँख, कान, नाक, ज़बान. सीने में फेफड़े. पेट में जिगर, तिल्ली, पित्त, आँतें, मेदा, गुर्दे और मसाने हैं. ऊपर से चमड़ा और उस पर बाल और रुआँ मौजूद है. यह सारी चीज़ें एक दूसरे से मिलती जुलती सब की सब उस गोश्त के लोथड़े पर पहुँचती हैं जो सीने के बाँयें तरफ़ उलटा लटका हुआ कमल की तरह धक धक करता है, गोया बाल और चमड़ा आदमी के शरीर की कुरसी और यह धक धक करने वाला दिल इस शरीर का अर्श है. यह ही आदमी का वह ढाँचा है जिसका लगाव आलमे ख़ल्क़ यानी माद्दी दुनिया से है.

मगर आदमी के हाथ पैर की उँगलियों से लेकर सर की चुंदिया तक अन्दर से बाहर तक हड्डी के एक एक ज़र्रे और गोश्त पोस्त की एक एक रग और उसके रेशे रेशे पर अलग अलग अनगिनत शक्तियों का जाल फैला हुआ है और हर शक्ति अपने काम में लगी हुई है.

आदमी की इन सारी शक्तियों को हम दो भागों में बाँट सकते हैं. एक वह शक्तियाँ जो आदमी की ख़्वाहिश और इरादे के बग़ैर सोते जागते होश और बेहोशी में हर वक़्त अपने काम में लगी हुई हैं जैसे खाना खाने के बाद उसे मेदे में पकाना और हज़म करना, ख़ून, पित्त, सौदा, बलग़म, वग़ैरा को बना कर अलग अलग करना, ख़ून को साफ़ करके दिल तक पहुँचाना और फिर दिल से [illegible] नहरों और नालियों के ज़रिये अन्दर और बाहर

ہڈیوں سے بنا ہوا ہے. اِس میں چھوٹی بڑی پہاڑوں کی طرح کی دو سو اڑتالیس ہڈیاں ہیں۔ اِن کو باندھنے کے لئے ساڑھے سات سو رسّیاں ہیں یعنی پٹھے ہیں۔ تین سو ساٹھ باریک باریک نالیاں اور تین سو نوّے نہریں۔ سر کے اندر خانوں میں بھیجا، آنکھ، کان، ناک، زبان۔ سینے میں پھیپھڑے، پیٹ میں جگر، تلی، پت، آنتیں، معدہ، گردے اور مسانے ہیں۔ اوپر سے چمڑا اور اُس پر بال اور رُوواں موجود ہے۔ یہ ساری چیزیں ایک دوسرے سے ملتی جلتی سب کی سب اُس گوشت کے لوتھڑے پر پہنچتی ہے جو سینے کے بائیں طرف اُلٹا لٹکا ہوا کمل کی طرح دھک دھک کرتا ہے، گویا بال اور چمڑا آدمی کے شریر کی کرسی اور دھک دھک کرنے والا دل شریر کا عرش ہے۔ یہ ہی آدمی کا وہ ڈھانچہ ہے جس کا لگاؤ عالمِ خلق یعنی مادّی دُنیا سے ہے۔

مگر آدمی کے ہاتھ پیر کی اُنگلیوں سے لے کر سر کی چُندیا تک اندر سے باہر تک ہڈی کے ایک ایک ذرّے اور گوشت پوست کی ایک ایک رگ اور اُس کے ریشے ریشے پر الگ الگ اَن گنت شکتیوں کا جال پھیلا ہوا ہے اور ہر شکتی اپنے کام میں لگی ہوئی ہے۔

آدمی کی اِن ساری شکتیوں کو ہم دو بھاگوں میں بانٹ سکتے ہیں۔ ایک وہ شکتیاں جو آدمی کی خواہش اور ارادے کے بغیر سوتے جاگتے ہوش اور بے ہوشی میں ہر وقت اپنے کام میں لگی ہوئی ہیں جیسے کھانا کھانے کے بعد اُسے معدہ میں پکانا اور ہضم کرنا، خون، پت، سودا، بلغم وغیرہ کو بنا کر الگ الگ کرنا، خون کو صاف کرکے دل تک پہنچانا اور پھر دل سے تمام نہروں اور نالیوں کے ذریعے اندر اور باہر

के सारे अंग एज़ाओं तक पहुँचाना, पित्त को पित्ते में, सौदा को तिल्ली में और बलग़म को सर पर ले जाना. फिर मौक़े से उनको ख़ारिज कर देना वग़ैरा वग़ैरा. इन कामों में आदमी के अख़्तियार और इरादे को दख़ल नहीं है. हमको भी इन शक्तियों से बहस करने की ज़रूरत नहीं.

दूसरी शक्तियाँ वह हैं जिनको आदमी अपने अख़्तियार से काम में लाता है, मसलन आंख से देखना, कान से सुनना, नाक से सूंघना, मुंह और ज़बान से खाना, पीना, चखना और बोलना, हाथ पैर से काम लेना. यही वह शक्तियाँ हैं जिनसे मनुष्य अपनी ख़्वाहिश से ख़ुद दूसरों से जायज़ या नाजायज़ फ़ायदा उठाता है और दूसरों को जायज़ या नाजायज़ फ़ायदा या नुक़सान पहुँचाता है.

आदमी पैदा होने के वक़्त से लेकर जब तक कि उसमें समझ बूझ नहीं आ जाती अपनी इन इरादी और अख़्तियारी शक्तियों को सिर्फ़ अपनी नफ़्स की ख़ाहिश, अपने निजी स्वार्थ के कहने पर चलाता है. और चूँकि यह ख़ाहिश अन्धी और बे समझ है और अपने असली फ़ायदे या आने वाले नफ़े या नुक़सान से बे ख़बर होती है इसलिये ईश्वर ने इसको सूझ बूझ यानी अक़्ल और फ़िक्र की शक्तियों के नीचे रक्खा है. लेकिन यह शक्तियां चूँकि पीछे पैदा होती हैं और धीरे धीरे बढ़ती हैं इसलिये ख़ाहिश आदमी के क़ाबू में जल्दी नहीं आती और चूँकि ख़ाहिश बेउसूली होती है इसलिये भगवान ने सबको इन उसूलों का पाबन्द बनाया है कि जो उसको जायज़ फ़ायदा उठाने और दूसरों को जायज़ फ़ायदा पहुँचाने और ख़ुद भी नाजायज़ नुक़सान से बचने और दूसरों को

کے سارے انگ اعضاؤں تک پہنچانا، پت کو پتے میں، سودا کو تلی میں اور بلغم کو سر پر لے جانا. پھر موقع سے اُن کو خارج کر دینا وغیرہ. اِن کاموں میں آدمی کے اختیار اور ارادے کو دخل نہیں ہے. ہم کو بھی اِن شکتیوں سے بحث کرنے کی ضرورت نہیں.

دوسری شکتیاں وہ ہیں جن کو آدمی اپنے اختیار سے کام میں لاتا ہے، مثلاً آنکھ سے دیکھنا، کان سے سُننا، ناک سے سونگھنا، مُنہ اور زبان سے کھانا، پینا، چکھنا اور بولنا، ہاتھ پیر سے کام لینا یہی وہ شکتیاں ہیں جن سے منشیہ اپنی خواہش سے خود دوسروں سے جایز یا ناجایز فائدہ اُٹھاتا ہے اور دوسروں کو جایز یا ناجایز فائدہ یا نقصان پہنچاتا ہے.

آدمی پیدا ہونے کے وقت سے لے کر جب تک کہ اُس میں سمجھ بوجھ نہیں آجاتی اپنی اِن ارادی اور اختیاری شکتیوں کو صرف اپنی نفس کی خواہش، اپنے نجی سوارتھ کے کہنے پر چلاتا ہے. اور چونکہ یہ خواہش اندھی اور بے سمجھ ہے اور اپنے اصلی فائدے یا آنے والے نفع یا نقصان سے بے خبر ہوتی ہے اِس لئے ایشور نے اس کو سوجھ بوجھ یعنی عقل اور فکر کی شکتیوں کے نیچے رکھا ہے. لیکن یہ شکتیاں چونکہ پیچھے پیدا ہوتی ہیں اور دھیرے دھیرے بڑھتی ہیں اِس لئے خواہش آدمی کے قابو میں جلدی نہیں آتی اور چونکہ خواہش بے اصولی ہوتی ہے اِس لئے بھگوان نے سب کو اِن اصولوں کا پابند بنایا ہے کہ جو اُس کو جائز فائدہ اٹھانے اور دوسروں کو جائز فائدہ پہنچانے اور خود بھی ناجائز نقصان سے بچنے اور دوسروں کو

नाजायज नुक़सान न पहुँचाने में मदद दें· इन्हीं उसूलों, क़ायदों और इसी दस्तूर का नाम जो ख़्वाहिश को बाउसूल चलाता है, धर्म है.

आख़ीर में एक बात और. वह यह है कि माया और प्रेम में कमी और ज्यादती, मौक़ा बे मौक़ा और वक़्त बे वक़्त होती रहती है. इनका यह गुन और काम और इनसे ख़तरा ऐसा आम है कि हर बुद्धिमान पर पूरी तरह ज़ाहिर है. इसीलिये यह दोनों चीजें धर्म के ताबे की गई हैं और धर्म इन सबसे ऊँचा है. निचोड़ यह कि धर्म सिर्फ़ उन इन्साफ़ वाले नियम और क़ायदों का नाम है जो मनुष्य की सारी इरादी और अख़्तियारी शक्तियों पर राज करने के लिये ख़ुदा ने मुक़र्रर किये हैं. इनका राज इतना लम्बा चौड़ा है कि ब्रह्मान्ड के एक एक ज़र्रे से लेकर सारे आलम तक और अवतार, रसूल, ऋषि, मुनि, नबी, वली से लेकर छोटे से छोटे आदमी तक कोई भी बाहर नहीं हो सकता है. यह नियम क़ायदा और क़ानून जैसा हम दिखा चुके है, मुहब्बत और रवादारी और एक दूसरे को फ़ायदा पहुँचाने का क़ानून है. इसी में सबका भला है.

ناجائز نقصان نہ پہنچانے میں مدد دیں۔ انھیں اصولوں، قاعدوں اور اسی دستور کا نام جو خواہش کو با اصول چلاتا ہے، دھرم ہے۔

آخر میں ایک بات اور۔ وہ یہ ہے کہ مایا اور پریم میں کمی اور زیادتی، موقع بے موقع اور وقت بے وقت ہوتی رہتی ہے۔ ان کا یہ گن اور کام اور ان سے خطرہ ایسا عام ہے کہ ہر بدھمان پر پوری طرح ظاہر ہے۔ اس لئے یہ دونوں چیزیں دھرم کے تابع کی گئی ہیں اور دھرم ان سب سے اونچا ہے۔ نچوڑ یہ کہ دھرم صرف ان انصاف والے نیم اور قاعدوں کا نام ہے جو منشیہ کی ساری ارادی اور اختیاری شکتیوں پر راج کرنے کے لئے خدا نے مقرر کئے ہیں۔ ان کا راج اتنا لمبا چوڑا ہے کہ برہمانڈ کے ایک ایک ذرّے سے لے کر سارے عالم تک اور اوتار، رسول، رشی، منی، نبی، ولی سے لے کر چھوٹے سے چھوٹے آدمی تک کوئی بھی باہر نہیں ہو سکتا ہے۔ یہ نیم قاعدہ اور قانون جیسا ہم دکھا چکے ہیں، محبت اور رواداری اور ایک دوسرے کو فائدہ پہنچانے کا قانون ہے۔ اسی میں سب کا بھلا ہے۔

तीन गीत❀

(रवीन्द्रनाथ ठाकुर)

(१)

बेफ़ायदा

ज़िन्दगी में मोहब्बत का पुट दिये बग़ैर तेरा सवेरे सवेरे आसमान को गानों से भर देना, तारों की माला गूंथना, फूलों का बिस्तर बिछाना, दक्खनी हवा का कानों में आ आ कर भेद कहना यह सब बेफ़ायदा है—

ज़िन्दगी में मोहब्बत दिये बग़ैर तेरे आसमान का मेरी तरफ़ ताकना, मेरे दिल का पल-पल पागल होकर उस समन्दर में किश्ती चलाना जिसका वह किनारा नहीं जानता—यह सब बेफ़ायदा है—

(गीतमाला से)

---

(२)

दुख दर्द का फल

मेरे सब काँटों को बरकत देकर एक दिन फूल फूटेगा ही. मेरा सब दर्द रंगीन होकर गुलाब की तरह खिलेगा ही. मेरा बहुत दिनों तक आसमान की तरफ़ तकना फल लायगा ही. दक्खिनी हवा दौड़ती आयगी और मेरे दिल को बेचैन करके ख़ुशबू की दौलत सब जगह बखेर देगी—

تین گیت❀

(رومیندر ناتھ ٹھاکر)

(۱)

بے فائدہ

زندگی میں محبت کا پُٹ دیئے بغیر تیرا سویرے سویرے آسمان کو گانوں سے بھر دینا، تاروں کی مالا گونتھنا، پھولوں کا بستر بچھانا، دکھنی ہوا کا کانوں میں آ آ کر بھید کہنا یہ سب بے فائدہ ہے—

زندگی میں محبت دیئے بغیر تیرے آسمان کا میری طرف تاکنا، میرے دل کا پل پل پاگل ہوکر اُس سمندر میں کشتی چلانا جس کا وہ کنارہ نہیں جانتا—یہ سب بے فائدہ ہے—

(گیت مالا سے)

---

(۲)

دُکھ درد کا پھل

میرے سب کانٹوں کو برکت دے کر ایک دن پھول پھوٹے گا ہی. میرا سب درد رنگین ہوکر گلاب کی طرح کھلے گا ہی. میرا بہت دنوں تک آسمان کی طرف تکنا پھل لائے گا ہی. دکھنی ہوا دَوڑتی آئے گی اور میرے دل کو بےچین کرکے خوشبو کی دولت سب جگہ بکھیر دے گی—

❀ بنگلہ سے ترجمہ—گ۰م

मेरी सब शर्म दूर हो जायगी जब मेरे पास औरों के देने के लायक़ दौलत होगी—

जब मेरी जिन्दगी पूजा की शकल अख़्तियार करेगी—

जब रात के ख़त्म होने के वक़्त मेरा दोस्त मुझे आकर छुएगा और मेरे फूल की सब पंखड़ियां उसके पाव में झड़ जायंगी.

(गीतमाला से)

---

(३)

जो कभी ख़त्म नहीं होता

मैं जानता हूँ जिन्दगी में जितनी बार मैं पूजा पूरी तरह से नहीं कर सका वह बिल्कुल बे सूद नहीं गई. जो फूल खिलने से पहले ही झरकर ज़मीन पर गिर पड़ा है, जिस नदी का बहना रेगिस्तान में बन्द हो गया है, मैं जानता हूँ वह भी बे सूद नहीं.

आज भी जो जिन्दगी में पीछे रहे हुए हैं मैं जानता हूँ वह भी बे सूद नहीं हैं.

अपनी बीना से जो राग मैं नहीं निकाल सका वह तेरी बीना के तार पर बज रहे हैं; सो मैं जानता हूँ वह भी बे सूद नहीं हैं—

(गीतान्जली से)

बंगला से तरजुमा——गु० म०

میری سب شرم دور ہو جائے گی جب میرے پاس اوروں کے دینے کے لائق دولت ہوگی—

جب میری زندگی پوجا کی شکل اختیار کرے گی—

جب رات کے ختم ہونے کے وقت میرا دوست مجھے آکر چھوئے گا اور میرے پھول کی سب پنکھڑیاں اُس کے پاؤں میں جھڑ جائیں گی۔

(گیت مالا سے)

(۳)

جو کبھی ختم نہیں ہوتا

میں جانتا ہوں زندگی میں جتنی بار میں پوجا پوری طرح سے نہیں کر سکا وہ بالکل بےسود نہیں گئی جو پھول کھلنے سے پہلے ہی جھڑ کر زمین پر گر پڑا ہے، جس ندی کا بہنا ریگستان میں بند ہو گیا ہے، میں جانتا ہوں وہ بھی بےسود نہیں۔

آج بھی جو زندگی میں پیچھے رہے ہوئے ہیں میں جانتا ہوں وہ بھی بےسود نہیں ہیں۔

اپنی بینا سے جو راگ میں نہیں نکال سکا وہ تیری بینا کے تار پر بج رہے ہیں؛ سو میں جانتا ہوں وہ بھی بےسود نہیں ہیں—

(گیتانجلی سے)

नया हिन्द की साल गिरह

(अबदुल हलीम साहब अन्सारी, आर्टिस्ट, भोपाल)

नया हिन्द ने पहली जुलाई की सुहानी सुबह को ५ बज कर १८ मिनट पर गंगा जमना के संगम पर जन्म लिया है—एक सुन्दर और उत्तम संगम पर गजरदम उसका जन्म विशाल वर्ष के ऊपर गोया नया हिन्द का एक उज्वल दर्शन है—सोमवार उसका जन्म दिन और प्रयाग उसका वतन !

जैसे ही उसने जन्म लिया गोया गंगा जमना के पवित्र जल से उजल कर वह दुनिया के सामने आया. यानी 'विष्णु' के पांव के धोवन से स्नान लेकर या 'शंकर' के सर के सोतों से नहा धोकर.

चाहे गंगा जल 'विष्णु' के पांव का धोवन हो, चाहे 'शंकर' के बालों का निचोड़--पर इस पर श्रद्धा (अक़ीदत) रखने वालों के लिये यह जल अस्ल में "आस्मानी गंगा जल" है. इसी लिए यह पाक और पवित्र है.

इतने से विद्वान का ध्यान देखो और उसकी सूझ बूझ कि उसने जन्म घाट पर आते ही और होश की आंख खोलते ही गंगा जमना के मेल मिलाप से इत्तहाद का सबक़ सीखा, एकता की शिक्षा ली और अब एकता की शिक्षा दे रहा है. वह एकता और समता दोनों का मतवाला है.

अगर कोई मुझसे पूछे—'नया हिन्द' का धर्म क्या है ? मैं बे झिझक और बे तकान कह सकता हूँ कि प्रेम उसका धर्म है और प्रेम ही उसका 'कर्म कान्ड' (शरियत).

वह अपनी छोटी सी बित पर लेकिन अपनी हिम्मत

نیا ہند کی سال گرہ

(عبدالحلیم صاحب انصاری، آرٹسٹ، بھوپال)

نیا ہند نے پہلی جولائی کی سہانی صبح کو ۵ بج کر ۱۸ منٹ پر گنگا جمنا کے سنگم پر جنم لیا ہے— ایک سُندر اور اُتّم سنگم پر گجردم اُس کا جنم وشال ورش کے اوپر گویا نیا ہند کا ایک اُوجّل درشن ہے— سوموار اُس کا جنم دن اور پریاگ اُس کا وطن!

جیسے ہی اُس نے جنم لیا گویا گنگا جمنا کے پوِتر جل سے اُجل کر وہ دُنیا کے سامنے آیا. یعنی 'وشنو' کے پاؤں کے دھوون سے اشنان لے کر یا 'شنکر' کے سر کے سوتوں سے نہا دھوکر.

چاہے گنگا جل 'وشنو' کے پاؤں کا دھوون ہو، چاہے 'شنکر' کے بالوں کا نچوڑ— پر اِس پر شردھا (عقیدت) رکھنے والوں کے لئے یہ جل اصل میں "آسمانی گنگا جل" ہے. اِسی لئے یہ پاک اور پوِتر ہے.

اِتنے سے وِدوان کا دھیان دیکھو اور اُس کی سوجھ بوجھ کہ اُس نے جنم گھاٹ پر آتے ہی اور ہوش کی آنکھ کھولتے ہی گنگا جمنا کے میل مِلاپ سے اتحاد کا سبق سیکھا، ایکتا کی شکشا لی اور اب ایکتا کی شکشا دے رہا ہے. وہ ایکتا اور سمتا دونوں کا متوالا ہے.

اگر کوئی مجھ سے پوچھے— 'نیا ہند' کا دھرم کیا ہے؟ میں بے جھجک اور بے تکان کہہ سکتا ہوں کہ پریم اُس کا دھرم ہے اور پریم ہی اُس کا 'کرم کانڈ' (شریعت).

وہ اپنی چھوٹی سی بت پر لیکن اپنی ہمت

पर इस पार से उस पार जा रहा है—प्रेम का प्रचार करता हुआ और जीवन का उपदेश देता हुआ. धीरज उसका सहारा है, शान्ति उसकी मंज़िल !

उसकी ज़िन्दगी का बहाव बहुत तेज़ है और मौज दर मौज उसकी नाव बड़े लोच से आगे बढ़ रही है. झटकोलों की उसे परवाह नहीं, हचकोलों में उसे आनन्द है. लेकिन एकता का राग है कि उसको साध रहा है और प्रेमी मौजों से खे खे कर उसे आगे बढ़ाए लिये चला जा रहा है.

दिसम्बर सन '४६ में जब यह छै महीने की उम्र को पहुँचा है तो उसके दांत निकले थे. इन्हीं दाँतों से उसने दुशमनी की गांठें काटीं, बहुत से झगड़े चुकाये, बहुत से दिल मिलाये और बहुत से टूटे शीशे जोड़े.

अब जुलाई सन् '४७ में वह एक साल की उम्र को पहुंचा है इसलिये पांव पांव चलने लगा है, उसके पैरों में जान आ गई है, उसके बाज़ू भी मज़बूत हो गये हैं. उसकी ज़बान भी खुल गई है, उसका क़दम भी जमता जा रहा है. अब यह ज़िन्दगी के मैदान में खेलने के क़ाबिल है और जीवन सागर में तैरने के लायक़ !

आज के अगस्त में वह अपनी उम्र के दूसरे साल में क़दम रख रहा है. कल की जुलाई में उसकी उम्र की एक गांठ लग चुकी है. वहीं उसकी सालगिरह की तक़रीब थी—यानी "वर्षगांठ उत्सव"

मैं 'नया हिन्द' और 'नया हिन्द' के इदारे (संस्था) को इस तक़रीब पर मुबारकबाद पेश करता हूँ और बधाई देता हूँ हर प्रेमी भाई को—यानी हर उसके सेवक और हर उसके लेखक को.

मैं जानता हूँ कि 'नया हिन्द' के सेवकों और प्रेमियों ने बड़े प्रेम

پر اِس پار سے اُس پار جا رہا ہی—پریم کا پرچار کرتا ہوا اور جیون کا اُپدیش دیتا ہوا۔ دھیرج اُس کا سہارا ہی، شانتی اُس کی منزل!

اُس کی زندگی کا بہاؤ بہت تیز ہی اور موج در موج اُس کی ناؤ بڑے لوچ سے آگے بڑھ رہی ہی۔ جھٹکولوں کی اُسے پرواہ نہیں، ہچکولوں میں اُسے آنند ہی۔ لیکن ایکتا کا راگ ہی کہ اُس کو سادھ رہا ہی اور پریمی موجوں سے کھِے کھِے کر اُسے آگے بڑھائے لئے چلا جا رہا ہی۔

دسمبر ۴۶ء میں جب یہ چھ مہینے کی عمر کو پہنچا ہی تو اُس کے دانت نکلے تھے۔ اِنھیں دانتوں سے اُس نے دشمنی کی گانٹھیں کاٹیں، بہت سے جھگڑے چکائے، بہت سے دل ملائے اور بہت سے ٹوٹے شیشے جوڑے۔

اب جولائی ۴۷ء میں وہ ایک سال کی عمر کو پہونچا ہی اِس لئے پاؤں پاؤں چلنے لگا ہی، اُس کے پیروں میں جان آگئی ہی، اُس کے بازو بھی مضبوط ہوگئے ہیں، اُس کی زبان بھی کھُل گئی ہی، اُس کا قدم بھی جمتا جا رہا ہی۔ اب یہ زندگی کے میدان میں کھیلنے کے قابل ہی اور جیون ساگر میں تیرنے کے لائق!

آج کے اگست میں وہ اپنی عمر کے دوسرے سال میں قدم رکھ رہا ہے۔ کل کی جولائی میں اُس کی عمر کی ایک گانٹھ لگ چکی ہی۔ وہی اُس کی سال گرہ کی تقریب تھی—یعنی "ورش گانٹھ اُتسو"!

میں 'نیا ہند' اور 'نیا ہند' کے ادارے (سنستھا) کو اِس تقریب پر مبارکباد پیش کرتا ہوں اور بدھائی دیتا ہوں ہر پریمی بھائی کو—یعنی ہر اُس کے سیوک اور ہر اُس کے لیکھک کو۔

प्यार से उसे पाल पोसकर परवान चढ़ाया है. इसकी जबान में मिठास है और इसके स्वभाव में लुभावपन ! सदाचार से उसको सँवारा है, उदारता की उसको तालीम दी है यानी रवादारी उसमें कूट कूट कर भरी है—'नया हिन्द' प्रेम के हीरे को गांठ में बधाँ कर आगे को बढ़ा चला जा रहा है. और उसकी रोशनी से वह 'सारे भारत वर्ष' में प्रेम का उजाला फैला रहा है.—जिससे प्रेमियों की आंखों को ठंडक पहुंच रही है. दिल को तस्कीन मिल रही है और आत्मा को संतोष !

'नया हिन्द' ! चूंकि प्रेम की गोद में पला है इसलिये प्रेम उसकी घुट्टी में है और प्रेम उसकी मन की बस्ती में है. वह प्रेम का प्यासा भी और पिलाने वाला भी——यानी प्यासों की प्यास बुझाने वाला भी और शान्ति की खोज लगाने वाला भी !

बेशक नेकी का वह नेता है और भारत माता का वह नेक बेटा है. इसी कारन जिन्दगी का वह सुधारक है और इन्सानियत का ख़ादिम !

सब जानते हैं कि "श्री कृष्ण" जी ने जमना जी में कूदकर और डुबकी लगाकर गेंद निकाली थी जो खेलते खेलते "बलरामजी" के हाथ से जमना जी की गोद में जा पड़ी थी. इसी तरह 'नया हिन्द' भी "एकता और मुक्ति का मोती" निकालने की धुन में 'प्रेम की गंगा' में डूबा हुआ है. चाहे वह किसी के भी हाथ से गिरकर गुम हो गया हो पर वह उसे संगम पर रखकर दुनिया की निगाह में लाना ही चाहता है—यही उसके जन्म और जीवन का पहला और आख़िरी मक़सद है.

پیار سے اُسے پال پوس کر پروان چڑھایا ہے. اِس کی زبان میں مٹھاس ہے اور اِس کے سبھاؤ میں لبھاؤپن ! سداچار سے اُس کو سنوارا ہے، اُدارتا کی اُس کو تعلیم دی ہے یعنی رواداری اُس میں کوٹ کوٹ کر بھری ہے— 'نیا ہند' پریم کے ہیرے کو گانٹھ میں باندھ کر آگے کو بڑھا چلا جا رہا ہے. اور اُس کی روشنی سے وہ 'سارے بھارت ورش' میں پریم کا اُجالا پھیلا رہا ہے.—جس سے پریمیوں کی آنکھوں کو ٹھنڈک پہنچ رہی ہے. دل کو تسکین مل رہی ہے اور آتما کو سنتوش !

'نیا ہند' چونکہ پریم کی گود میں پلا ہے اِس لئے پریم اُس کی گھٹی میں ہے اور پریم اُس کی من کی بستی میں ہے. وہ پریم کا پیاسا بھی اور پلانے والا بھی——یعنی پیاسوں کی پیاس بجھانے والا بھی اور شانتی کی کھوج لگانے والا بھی !

بیشک نیکی کا وہ نیتا ہے اور بھارت ماتا کا وہ نیک بیٹا ہے. اِسی کارن زندگی کا وہ سُدھارک ہے اور انسانیت کا خادم !

سب جانتے ہیں کہ "شری کرشن" جی نے جمنا جی میں کود کر اور ڈبکی لگا کر گیند نکالی تھی جو کھیلتے کھیلتے "بلرام جی" کے ہاتھ سے جمنا جی کی گود میں جا پڑی تھی. اِسی طرح 'نیا ہند' بھی "ایکتا اور مُکتی کا موتی" نکالنے کی دُھن میں 'پریم کی گنگا' میں ڈوبا ہوا ہے. چاہے وہ کسی کے بھی ہاتھ سے گر کر گُم ہو گیا ہو پر وہ اُسے سنگم پر رکھ کر دُنیا کی نگاہ میں لانا ہی چاہتا ہے—یہی اُس کے جنم اور جیون کا پہلا اور آخری مقصد ہے.

उर्दू शायरी का मर्म*

(श्री अयोध्या प्रसाद गोयलीय)

कवि या लेखक जो कुछ लिखता है, उसे हर जगह उसका अपना विचार या आपबीती ही समझ लेना बड़ी भूल है. लेखक या कवि अपने चारों तरफ़ जो कुछ देखता है, सुनता है, अनुभव करता है या ज़रूरत महसूस करता है, उसे अपने रँग में रँग देता है. अगर ऐसी हर तसवीर को कलाकार की तसवीर समझ लिया जाय तो इससे ज्यादा कलाकार का अपमान और क्या होगा ?

इसी तरह की समझ से तंग आकर मशहूर हास्य-लेखक मिर्ज़ा अज़ीम बेग चग़ताई ने उर्दू साहित्य के आलोचक डा० अन्दलीब शादानी एम० ए., पी एच० डी० को ९ अक्तूबर १९४० के ख़त में लिखा था--

"मैं अफ़साने (कहानियाँ) लिखता हूँ.कोई गुज़रा हुआ वाक़ा आंखों से देखा या सुना, उठाकर लिख दिया. ख्वाह(चाहे) वह अपनी मरज़ी के सख्त खिलाफ़ ही क्यों न हो. मसलन मेरे नाविल 'कोलतार' के बाब 'आलू के भुरते' की हीरोइन. मैं ऐसी गधी औरत को पांच जूते मारने लायक़ समझता हूँ. और हज़रत नक्क़ाद (आचोलक) फ़रमाते हैं कि मैं तालीम देता हूँ कि औरत ऐसी ही हो. हालां कि बस चले तो तालीम दूं कि मार पांच जूते. ख्वाजा

*उर्दू शायरी पर लेखक की आने वाली किताब का एक हिस्सा

—एडिटर

اُردو شاعری کا مرم*

(شری ایودھیا پرساد گوئلیہ)

کوی یا لیکھک جو کچھ لکھتا ہے، اُسے ہر جگہ اُس کا اپنا وچار یا آپ بیتی ہی سمجھ لینا بڑی بھول ہے. لیکھک یا کوی اپنے چاروں طرف جو کچھ دیکھتا ہے، سُنتا ہے، انوبھو کرتا ہے یا ضرورت محسوس کرتا ہے، اُسے اپنے رنگ میں رنگ دیتا ہے. اگر ایسی ہر تصویر کو کلاکار کی تصویر سمجھ لیا جائے تو اِس سے زیادہ کلاکار کا اپمان اور کیا ہوگا؟

اِسی طرح کی سمجھ سے تنگ آکر مشہور ہاسیہ لیکھک مرزا عظیم بیگ چغتائی نے اُردو ساہتیہ کے آلوچک ڈاکٹر عندلیب شادانی ایم. اے، پی. ایچ. ڈی. کو ۹/اکتوبر ۱۹۴۰ کے خط میں لکھا تھا:—

"میں افسانے (کہانیاں) لکھتا ہوں. کوئی گزرا ہوا واقعہ آنکھوں سے دیکھا یا سُنا، اُٹھاکر لکھ دیا. خواہ (چاہے) وہ اپنی مرضی کے سخت خلاف ہی کیوں نہ ہو. مثلاً میرے ناول 'کولتار' کے باب 'آلو کے بھُرتے' کی ہیروئن. میں ایسی گدھی عورت کو پانچ جُوتے مارنے لائق سمجھتا ہوں. اور حضرت نقّاد (آلوچک) فرماتے ہیں کہ میں تعلیم دیتا ہوں کہ عورت ایسی ہی ہو. حالانکہ بس چلے تو تعلیم دوں کہ مار پانچ جُوتے. خواجہ

*اُردو شاعری پر لیکھک کی آنے والی کتاب کا ایک حصہ.

— ایڈیٹر

हुसन निजामी इस 'कोलतार' के बाब "अंजामे नफ़रत" को पढ़कर अख़बार में तनक़ीद (समालोचना) करते हैं कि अज़ीमबेग ने नसीहत दी है कि औरतें अकेली सफ़र न करें. हालां कि मेरा दस्तूर और अमल यह है कि मैं जवान लड़की को तनहा (अकेली) अलीगढ़ से जोधपुर बुलाता और भेजता हूँ; और सख्त हिदायत करता हूँ कि ऐसा ही करो. मुसीबत या आफ़त आएगी तो आने दो.

जब कुछ अपने कने रखते थे, तब भी ख़र्च था लड़कों का
अबजो फ़क़ीर हुए फिरते हैं "मीर" उन्हीं की बदौलत है.

मालूम नहीं आप इस शेर को 'मीर' के हस्बहाल (अपनाहाल) क्यों समझते हैं. इसमें आप को वह लानत क्यों नहीं दिखाई देती, जो शायर पब्लिक पर भेज रहा है. बिल्कुल इसी तरह शौकत थानवी ने लखनऊ के जोरुओं के गुलामों पर चोट की. तो एक साहब ने इसको शौकत के हस्बहाल कह दिया है. आप लिखते हैं 'शौकत अपनी बेगम की जूतियाँ खाते रहे हैं'."※

(९६)

उर्दू शायर खास कर ग़ज़ल कहने वाले गुल व बुलबुल, साक़ी व शराब, हुस्न व इश्क़ के बहाने दार्शनिक बात फ़लसफ़े की, रूहा-नियत की और राजनीतिक बातें बड़े बड़े मार्के की इस खूबी से कह देते हैं कि दिल में घर कर जाँय. और कानों को पता तक न लगे.

ग़ज़ल कहने वाले शायरों में बहुत से अपनी निजी जिन्दगी में पूरे नेक, मज़हबी और सदाचारी रहे. मगर हमेशा मज़हबी लोगों और परहेज़गारों का मज़ाक़ उड़ाते रहे. 'ज़ौक़' ऐसे ही लोगों में से थे.

'दाग़' देहलवी और 'रियाज़' ख़ैराबादी ने कभी शराब छुई भी

※ 'शायर' मार्च १९४८ सफ़ा ३२—३३

حسن نظامی اِس 'کول تار' کے باب "انجام نفرت" کو پڑھ کر اخبار میں تنقید (سمالوچنا) کرتے ہیں کہ عظیم بیگ نے نصیحت دی ہے کہ عورتیں اکیلی سفر نہ کریں. حالانکہ میرا دستور اور عمل یہ ہے کہ میں جوان لڑکی کو تنہا (اکیلی) علی گڈھ سے جودھپور بُلاتا اور بھیجتا ہوں؛ اور سخت ہدایت کرتا ہوں کہ ایسا ہی کرو، مصیبت یا آفت آئیگی تو آنے دو.

جب کچھ اپنے کنے رکھتے تھے، تب بھی خرچ تھا لڑکوں کا
اب جو فقیر ہوئے پھرتے ہیں "میر" اُنھیں کی بدولت ہے.

معلوم نہیں آپ اِس شعر کو 'میر' کے حسب حال (اپنا حال) کیوں سمجھتے ہیں. اِس میں آپ کو وہ لعنت کیوں نہیں دکھائی دیتی، جو شاعر پبلک پر بھیج رہا ہے. بالکل اِسی طرح شوکت تھانوی نے لکھنؤ کے جورؤں کے غلاموں پر چوٹ کی، تو ایک صاحب نے اس کو شوکت کے حسب حال کہہ دیا. آپ لکھتے ہیں 'شوکت اپنی بیگم کی جوتیاں کھاتے رہے ہیں'."※

اُردو شاعر خاص کر غزل کہنے والے گُل و بُلبُل، ساقی و شراب، حُسن و عشق کے بہانے دارشنک بات فلسفے کی، روحانیت کی اور راجنیتک باتیں بڑے بڑے معرکے کی اِس خوبی سے کہہ دیتے ہیں کہ دل میں گھر کر جائیں، اور کانوں کو پتہ تک نہ لگے.

غزل کہنے والے شاعروں میں بہت سے اپنی نجی زندگی میں پورے نیک، مذہبی اور سداچاری رہے. مگر ہمیشہ مذہبی لوگوں اور پرہیزگاروں کا مذاق اُڑاتے رہے. 'ذوق' ایسے ہی لوگوں میں سے تھے.

داغ دہلوی اور ریاض خیرآبادی نے کبھی شراب چھوئی بھی

※ شاعر، مارچ ۱۹۴۸ء صفحہ ۳۲—۳۳

नहीं, मगर इनके कलाम को देखकर किसी को यक़ीन नहीं होता कि यह अछूते बचे होंगे. उन्होंने खुद अपने जीवन में यह भेद किसी को न बताया. शायद वह जानते थे कि किसी को यक़ीन न आयगा. 'असग़र' गोण्डवी. जैसे नेक आदमी जिनके साये में आकर मशहूर रिन्द "जिगर" मुरादाबादी भी तौबा कर लेते थे. हुस्नो-इश्क़, साक़ी व शराब पर उम्र भर लिखते रहे क्यों कि ग़ज़ल का मैदान ही ऐसा है, कोई कितना ही ख़याल की उड़ान ले, आख़िर में उसे उतरना इसी जगह होगा. बक़ौल ग़ालिब—

बनती नहीं है बादाओ साग़र कहे बग़ैर.

उर्दू शायरी में कुछ इस्तलाहें, कुछ शब्द ऐसे हैं जो बार बार काम में आते हैं और जिनको समझे बिना शायरी का असली मतलब या मर्म समझ में नहीं आता. इन्हीं शब्दों का सहारा लेकर उर्दू शायर अपनी तरंग में सब कुछ कह जाते हैं. इसलिये पहले उनको जान लेना ज़रूरी है. आसानी के लिये हमने ऐसे शब्दों को चार—१ गुलशन, २ मयख़ाना, ३ इश्क़ और ४ सेहरा— हिस्सों में बांट दिया है. इन में बहुत कर हमने उन शायरों का कलाम दिया है जिनको ३१ शायरों की क़ैद की वजह से हम पुस्तक में नहीं दे सके. हालांकि आतिश, नासिख़, नसीम, रियाज़, सायल, बे ख़ुद, आग़ाशायर, कैफ़ी, साहिर, मायल, जलील, अज़ीज़, सफ़ी, ज़रीफ़, नूह, आरज़ू, दिल, अहसन जैसे—बाकमाल उस्ताद और बिस्मिल इलाहाबादी, बहज़ाद लखनवी, पं० हरिचन्द अख़्तर, त्रिलोक चन्द्र महरूम जैसे सब को प्यारे कलाकारों का पुस्तक में ज़िक्र

बादाओ साग़र = शराब और प्याला.

نہیں، مگر اِن کے کلام کو دیکھ کر کسی کو یقین نہیں ہوتا کہ یہ اچھوتے بچے ہوں گے. اُنھوں نے خود اپنے جیون میں یہ بھید کسی کو نہ بتایا، شاید وہ جانتے تھے کہ کسی کو یقین نہ آئے گا. اصغرؔ گونڈوی جیسے نیک آدمی جن کے سائے میں آکر مشہور رند "جگرؔ" مرادآبادی بھی توبہ کر لیتے تھے حسن و عشق، ساقی و شراب پر عمر بھر لکھتے رہے کیونکہ غزل کا میدان ہی ایسا ہے، کوئی کتنا ہی خیال کی اُڑان لے، آخر میں اُسے اُترنا اِسی جگہ ہوگا. بقول غالب ——

بنتی نہیں ہے بادہ و ساغر کے بغیر

اردو شاعری میں کچھ اصطلاحیں، کچھ شبد ایسے ہیں جو بار بار کام میں آتے ہیں اور جن کو سمجھے بنا شاعری کا اصلی مطلب یا مرم سمجھ میں نہیں آتا. انھیں شبدوں کا سہارا لے کر اردو شاعر اپنی ترنگ میں سب کچھ کہہ جاتے ہیں. اِس لئے پہلے اُن کو جان لینا ضروری ہے. آسانی کے لئے ہم نے ایسے شبدوں کو چار —— (۱) گلشن (۲) میخانہ (۳) عشق اور (۴) صحرا —— حصوں میں بانٹ دیا ہے. اُن میں بہت کر ہم نے اُن شاعروں کا کلام دیا ہے جن کو ۳۱ شاعروں کی قید کی وجہ سے ہم پستک میں نہیں دے سکے. حالانکہ آتش، ناسخ، نسیم، ریاض، سائل، بیخود، آغا شاعر، کیفی، ساحر، مائل، جلیل، عزیز، صفی، ظریف، نوح، آرزو، دل، احسن جیسے باکمال استاد اور بسمل الہ آبادی، بہزاد لکھنوی، پنڈت ہری چند اختر، ترلوک چند محروم جیسے سب کو پیارے کلاکاروں کا پستک میں ذکر

न करना बड़ी भारी गुस्ताख़ी है. हम इनमें से कितने ही शायरों को मुशायरों में बार बार सुन कर भी नहीं अघाए मगर कोई तो तादाद रखनी ही थी. इसलिये इच्छा होते हुए भी बहुत सा चुना हुआ कलाम छोड़ना पड़ा. इन हिस्सों में इन शायरों के एक एक दो दो शेर देने का लोभ नहीं जीत सके. इस लिये यह हिस्सा ज़रा लम्बा हो गया

—गुलशन = चमन, बाग़—

गुल = फूल, बुलबुल का प्रेम पात्र

बुलबुल = मीठा बोलने वाला सुन्दर पंछी, गुल पर आशिक़

आशियाँ = घोंसला

क़फ़स = पिंजरा

बाग़बाँ = बाग़ का रक्षक, माली.

गुलचीं = फूल तोड़ने वाला

सैयाद = अहेरी, शिकारी

इस गुलशन की आड़ में उर्दू शायरों ने बड़े बड़े मार्के के तीर चलाए हैं. और इस ख़ूबी से कि हज़ारों का ख़ून हो जाय. पर दामन पर दाग़ तक न आने पाए. ज़ालिमों और सितमगरों के डर से सच्ची बात कहना, मज़लूमों को उनका फ़र्ज़ बताना जब नामुमकिन हो जाता है तब शायर ऐसी भाषा में अपने दिल के फफोले फोड़ता है, कि उसका मतलब भी पूरा हो जाय और ज़ालिम को और ज़्यादा ज़ुल्म का बहाना भी न मिलने पाये. गुलशन में इसी तरह के राजनैतिक दांव पेंच देखने को मिलते हैं. दर असल

चमन = वतन, देश

نہ کرنا بڑی بھاری گستاخی ہے۔ ہم اِن میں سے کتنے ہی شاعروں کو مشاعروں میں بار بار سن کر بھی نہیں اگھائے مگر کوئی تو تعداد رکھنی ہی تھی۔ اِس لئے اچھا ہوتے ہوئے بھی بہت سا چنا ہوا کلام چھوڑنا پڑا۔ اِن حصوں میں ان شاعروں کے ایک ایک دو دو شعر دینے کا لوبھ نہیں جیت سکے۔ اِس لئے یہ حصہ ذرا لمبا ہوگیا۔

گلشن = چمن، باغ

گل = پھول، بلبل کا پریم پاتر

بلبل = میٹھا بولنے والا سندر پنچھی، گل پر عاشق

آشیاں = گھونسلا

قفس = پنجرا

باغباں = باغ کا رکشک، مالی

گل چیں = پھول توڑنے والا

صیاد = اہیری، شکاری

اِس گلشن کی آڑ میں اُردو شاعروں نے بڑے بڑے معرکے کے تیر چلائے ہیں اور اِس خوبی سے کہ ہزاروں کا خون ہوجائے، پر دامن پر داغ تک نہ آنے پائے۔ ظالموں اور ستمگروں کے ڈر سے سچی بات کہنا، مظلوموں کو اُن کا فرض بتانا جب ناممکن ہوجاتا ہے تب شاعر ایسی بھاشا میں اپنے دل کے پھپھولے پھوڑتا ہے کہ اُس کا مطلب بھی پورا ہوجائے اور ظالم کو اور زیادہ ظلم کا بہانہ بھی نہ ملنے پائے۔ گلشن میں اسی طرح کے راج نیتک داؤ پیچ دیکھنے کو ملتے ہیں۔ در اصل

چمن = وطن، دیش

गुल = गुलाम आदमी का प्रेम पात्र, देश, धन, आबरू वग़ैरा
आशियाँ = गुलाम का घर
क़फ़स = जेल ख़ाना
बाग़बाँ = देश भक्त नेता
गुलचीं = लालची लुटेरा, देश का दुशमन
सैयाद = गुलाम बनाने वाला, विदेशी हाकिम.
इसी निगाह से गुलशन की सैर कीजिये.

चमन—जो लोग अपने आज़ादी के दिनों को बिल्कुल भूल गए और गुलामी ही में मस्त हैं उन्हे सामने रख कर कहा है—

बूए ख़िज़ाँ से मस्त हैं, याद हमें बहार क्या।
हमतो चमन परस्त हैं, फूल कहाँ के, ख़ार क्या॥

—फ़ानी बदायूनी

जो लोग इस दुनिया के बाग़ में खुले रहकर भी गुलाम हैं उन पर जेलख़ाने के क़ैदी भी तरस खाते हैं—

नहीं मालूम किस हालत में हूँ मैं बाग़े आलम में।
क़फ़स वाले भी मुझको देखकर फ़रियाद करते हैं॥

—साक़िब लखनवी

फिर उन लोगों का ज़िक्र है जो अपनी आन और आज़ादी को बिल्कुल भूल कर ग़ैरों की गुलामी में ही ख़ुश हैं—

ख़ुद फ़रामोश क़फ़स में हैं चमन याद नहीं।
ग़ैर के हो गए ऐसे कि वतन याद नहीं॥

—साक़िब लखनवी

گل = غلام آدمی کا پریم پاتر، دیش، دھن، آبرو وغیرہ
آشیاں = غلام کا گھر
قفس = جیل خانہ
باغباں = دیش بھگت، نیتا
گلچیں = لالچی لٹیرا، دیش کا دشمن
صیاد = غلام بنانے والا، ودیشی حاکم
اسی نگاہ سے گلشن کی سیر کیجئے!

چمن— جو لوگ اپنی آزادی کے دنوں کو بالکل بھول گئے اور غلامی ہی میں مست ہیں انھیں سامنے رکھ کر کہا ہے—

بوئے خزاں سے مست ہیں، یاد ہمیں بہار کیا
ہم تو چمن پرست ہیں، پھول کہاں کے، خار کیا

— فانی بدایونی

جو لوگ اس دنیا کے باغ میں کھلے رہ کر بھی غلام ہیں ان پر جیل خانے کے قیدی بھی ترس کھاتے ہیں—

نہیں معلوم کس حالت میں ہوں میں باغ عالم میں
قفس والے بھی مجھ کو دیکھ کر فریاد کرتے ہیں

— ثاقب لکھنوی

پھر ان لوگوں کا ذکر ہے جو اپنی آن اور آزادی کو بالکل بھول کر غیروں کی غلامی میں ہی خوش ہیں—

خود فراموش قفس میں ہیں چمن یاد نہیں غیر کے ہو گئے ایسے کہ وطن یاد نہیں

— ثاقب لکھنوی

دنیا کے عیش، آرام میں پڑ کر آزادی [illegible]

को न भूल जाय--

सैरे चमनसे दिल न लगाओ चले चलो।
फ़सल बहार पाँव की ज़ंजीर हो न जाय॥

—यास लखनवी

दुनिया की चन्दरोज़ा ज़िन्दगी और इसके दुखों को बयान करते हुए कहा है—

मुक़ामे परवरिशे आहो नाला है यह चमन।
न सैरे गुलके लिये है न आशियाँ के लिये॥

—सर इक़बाल

(गुल) **गुल**—दुनिया में असली आंखों वाले यानी किसी चीज़ की ठीक क़दर करने वाले कितने कम होते हैं इसे यूँ कहा गया है—

हज़ारों साल नर्गिस अपनी बेनूरी पै रोती है।
बड़ी मुशकिल से होता है,चमन में दीदावर पैदा

—इक़बाल

सारी उमर ग़ुलाम, मुसीबतों में पड़ी हुई या नाकाम ज़िन्दगी को यूँ बयान किया गया है—

कोइ इन फूलों की क़िस्मत देखना।
ज़िन्दगी काँटों में पल कर रह गई॥

—अर्शी भोपाली

और लीजे—

बूए ख़िज़ां = पतझड़ की बू, ख़ार = काँटे, ख़ुद फ़रामोश = अपने को भूले हुए; आहो नाला = रोना चिल्लाना,

کو نہ بھول جائے—

سیرِ چمن سے دل نہ لگاؤ چلے چلو
فصلِ بہار پاؤں کی زنجیر ہو نہ جائے

— یاس لکھنوی

دنیا کی چند روزہ زندگی اور اس کے دُکھوں کو بیان کرتے ہوئے کہا ہے—

مقامِ پرورشِ آہ و نالہ ہے یہ چمن
نہ سیرِ گل کے لئے ہے نہ آشیاں کے لئے

— سر اقبال

گل
دنیا میں اصلی آنکھوں والے یعنی کسی چیز کی ٹھیک قدر کرنے والے کتنے کم ہوتے ہیں اسے یوں کہا گیا ہے— (گل)

ہزاروں سال نرگس اپنی بے نوری پہ روتی ہے
بڑی مشکل سے ہوتا ہے چمن میں دیدہ ور پیدا

— اقبال

ساری عمر غلام، مصیبتوں میں پڑی ہوئی یا ناکام زندگی کو یوں بیان کیا گیا ہے—

کوئی ان پھولوں کی قسمت دیکھنا
زندگی کانٹوں میں پل کر رہ گئی

— عرشی بھوپالی

اور لیجئے—

بوئے خزاں = پت جھڑ کی بو۔ خار = کانٹے۔ خود فراموش = اپنے کو بھولے ہوئے؛ آہ و نالہ = رونا چلّانا،

गुञ्चों के मुस्कराने पै कहते हैं हँस के फूल ।
अपना करो ख़याल हमारी तो कट गई ॥

—शाद अज़ीमाबादी

कुछ और नाज़ुक ख़याल—

शाख़ों से बर्गेगुल नहीं झड़ते हैं बाग़ में ।
ज़ेवर उतर रहा है उरूसे बहार का ॥

—अमीर मीनाई

सुबह को राज़े गुलो शबनम खुला ।
हँसने वाले रात भर रोते रहे ॥

—साक़िब लखनवी

रफ़ीक़ों से रक़ीब अच्छे जो जल कर नाम लेते हैं ।
गुलों से ख़ार बेहतर हैं जो दामन थाम लेते हैं ॥

—गुमनाम

घमन्ड के ऊपर सुनिये—

किया ग़रूर गुल ने जब रंग-ओ-रूप औ बू का ।
मारे हवा ने झोंके शबनम ने मुँह पै थूका ॥

—गुमनाम

बुलबुल—

इसे गुलदम और अन्दलीब भी कहते हैं. बुलबुल और

नर्गिस = एक फूल जो आंख से मिलता है, बेनूरी = रोशनी का न होना, दीदावर = आखों वाला, गुंचों = कलियों, बर्गेगुल = फूल की पंखड़ियाँ, ज़ेवर = गहना, उरूसे बहार = बहार की दुलहिन, राज़ = रहस्य, रफ़ीक़ = दोस्त, रक़ीब = प्रतिस्पर्धी.

غنچوں کے مسکرانے پہ کہتے ہیں ہنس کے پھول
اپنا کرو خیال ہماری تو کٹ گئی

— شاد عظیم آبادی

کچھ اور نازک خیال —

شاخوں سے برگ گل نہیں جھڑتے ہیں باغ میں
زیور اتر رہا ہے عروس بہار کا

— امیر مینائی

صبح کو راز گل و شبنم کھلا
ہنسنے والے رات بھر روتے رہے

— ثاقب لکھنوی

رفیقوں سے رقیب اچھے جو جل کر نام لیتے ہیں
گلوں سے خار بہتر ہیں جو دامن تھام لیتے ہیں

— گمنام

گھمنڈ کے اوپر سنئے —

کیا غرور گل نے جب رنگ و روپ و بو کا
مارے ہوا نے جھونکے شبنم نے منہ پہ تھوکا

— گمنام

بلبل —

اسے گلدم اور عندلیب بھی کہتے ہیں۔ بلبل اور

نرگس = ایک پھول جو آنکھ سے ملتا ہے، بے نوری = روشنی کا نہ ہونا، دیدہ ور = آنکھوں والا، غنچہ = کلیاں، برگ گل = پھول کی پنکھڑیاں، زیور = گہنا، [illegible]

गुल के प्रेम को कैसी अच्छी तरह बयान किया गया है—

> झाड़नी है कौन से गुल की नज़र ।
> बुलबुलें फिरती हैं क्यों तिनके लिये ॥

और देखिये—

> फट पड़ा एक आस्मां, बुलबुल के दिल पर रात को ।
> रख दिया फूलों पै मुंह शबनम ने जिस दम प्यार से ॥
>
> —साक़िब लखनवी

बुलबुल के गुल से प्रेम और अपने किसी प्रीतम से प्रेम की यकरंगी बयान करते हुए "रिन्द" साहब फ़र्माते हैं—

> आ अन्दलीब ! मिल के करें आहोज़ारियाँ ।
> तू पुकारे हाय गुल ! मैं पुकारूँ हाय दिल !

आशियाना—

मुल्क की हालत इतनी दर्दनाक हो रही है कि—

> दिल घुट रहा है आप से आप आशियाने में ।
> अच्छी नहीं चमन की हवा इस ज़माने में ॥
>
> —साक़िब लखनवी

चार दिन के सुख में भी आगे का ख़तरा दिखाई देता था. क्या फबती हुई बात कही है—

> चार दिन की इस बुलन्दी में भी थी पस्ती निहाँ ।
> आशियाने से नज़र आता था घर सैयाद का ॥
>
> —साक़िब लखनवी

शबनम = ओस, आहोज़ारी = रोना चिल्लाना.
बुलन्दी = चढ़ाई, पस्ती – गिरा[illegible]

گل کے پریم کو کیسی اچھی طرح بیان کیا گیا ہے—

> جھاڑنی ہے کون سے گل کی نظر بلبلیں پھرتی ہیں کیوں تنکے لئے

اور دیکھئے—

> پھٹ پڑا ایک آسماں بلبل کے دل پر رات کو
> رکھ دیا پھولوں پہ منہ شبنم نے جس دم پیار سے
>
> — ثاقب لکھنوی

بلبل کے گل سے پریم اور اپنے کسی پریتم سے پریم کی یکرنگی بیان کرتے ہوئے "رند" صاحب فرماتے ہیں—

> آ عندلیب! مل کے کریں آہ و زاریاں تو پکارے ہائے گل! میں پکاروں ہائے دل

آشیانہ—

ملک کی حالت اتنی دردناک ہو رہی ہے کہ—

> دل گھٹ رہا ہے آپ سے آپ آشیانے میں
> اچھی نہیں چمن کی ہوا اس زمانے میں
>
> — ثاقب لکھنوی

چار دن کے سکھ میں بھی آگے کا خطرہ دکھائی دیتا تھا۔ کیسی پھبتی ہوئی بات کہی ہے—

> چار دن کی اس بلندی میں بھی تھی پستی نہاں
> آشیانے سے نظر آتا تھا گھر صیاد کا
>
> — ثاقب لکھنوی

شبنم = اوس، آہ و زاری = رونا چلانا۔

गुलामी के सुनहरे कटघरे से आज़ादी का घास फूस का झोपड़ा कितना अच्छा है—

क़फ़स की तीलियाँ अच्छी हैं तिनकों से नशेमन के।
यह सब कुछ है, मगर सैयाद! दिल पर क्या इजारा है॥
क़फ़स और आशियाँ का फ़र्क़, ऐ सैयाद! सुन मुझ से।
यह तेरी दस्तकारी है, उसे मैंने बनाया है॥

—साक़िब लखनवी

पराए क़ब्ज़े में आ जाने से घर का जल जाना अच्छा—

जब मैं नहीं तो बाग़ में उसका मुक़ाम क्यों?
अच्छा हुआ कि लग गई आग आशियाने में॥

—साक़िब लखनवी

हमारे ऊपर और ज़्यादा सितम न ढाए जाने की वजह दुशमन की दया नहीं, बल्कि—

गिरी न बर्क़ कुछ इस ख़ौफ़ से, मेरे होते।
तड़प के आग बुझादूँ न आशियाने की॥

—फ़ानी बदायूनी

जेल ख़ाने में उजड़े हुए घर की याद—

गुलशन से उठ के मेरा मकाँ दिल में आ गया।
एक दाग़ बन गया है, नशेमन जला हुआ॥

—साक़िब लखनवी

चार दिन के ऐश में आदमी असली नफ़े नुक़सान को भूल जाता है—

नशेमन = घोंसला या घर, बर्क़ = बिजली.

غلامی کے سنہرے کٹگھرے سے آزادی کا گھاس پھوس کا جھونپڑا کتنا اچھا ہے—

قفس کی تیلیاں اچھی ہیں تنکوں سے نشیمن کے
یہ سب کچھ ہے، مگر صیاد! دل پر کیا اجارہ ہے
قفس اور آشیاں کا فرق، اے صیاد! سن مجھ سے
یہ تیری دستکاری ہے، اسے میں نے بنایا ہے

— ثاقب لکھنوی

پرائے قبضہ میں آجانے سے گھر کا جل جانا اچھا—

جب میں نہیں تو باغ میں اس کا مقام کیوں؟
اچھا ہوا کہ لگ گئی آگ آشیانے میں

— ثاقب لکھنوی

ہمارے اوپر اور زیادہ ستم نہ ڈھائے جانے کی وجہ دشمن کی دیا نہیں، بلکہ—

گری نہ برق کچھ اس خوف سے، میرے ہوتے
تڑپ کے آگ بجھادوں نہ آشیانے کی

— فانی بدایونی

جیل خانے میں اجڑے ہوئے گھر کی یاد—

گلشن سے اٹھ کے میرا مکاں دل میں آ گیا
ایک داغ بن گیا ہے، نشیمن جلا ہوا

— ثاقب لکھنوی

چار دن کے عیش میں آدمی اصلی نفع نقصان کو بھول جاتا ہے—

نشیمن = گھونسلا یا گھر، برق = بجلی۔

बहारों में यह होश ही कब रहा था।
कि जलती है क्या शै, कहाँ आशियाँ है ॥
—मदहोश ग्वालियरी

इसी तरह—

उस साल फ़स्लेगुल में उजड़ा था बनते बनते।
रहता तो आशियाँ को अब एक साल होता ॥
—आसी लखनवी

और सुनिये—

तामीरे आशियाँ से मैंने यह राज़ पाया।
अहले नवा के हक़ में बिजली है आशियाना ॥
—इक़बाल

क़फ़स—

ऐ ज़ालिम शिकारी ! हम अगर अपनी गुलामी को अभी ख़त्म नहीं कर पाए तो इससे इतरा मत, अभी हम में सच्ची तड़प की कमी है, तड़प हो तो कोई गुलामी नहीं ठहर सकती, ज़रा और सब्र कर—

दरे क़फ़स न खुला, क़द्रे सब्र कर सैयाद !
तड़पते हम तो पहाड़ों में रास्ता करते ॥

क़ैद ख़ाने में घर की यानी गुलामी में आज़ादी की याद नहीं जाती—

हो गये बरसों कि आँखों की खटक जाती नहीं।
जब कोई तिनका उड़ा, घर अपना याद आया मुझे ॥

शै = चीज़, दर क़फ़स = पिंजरे का दरवाज़ा, क़द्रे = थोड़ा, अहलेनवा = दौलतमन्द

بہاروں میں یہ ہوش ہی کب رہا تھا کہ جلتی ہے کیا شے، کہاں آشیاں ہے
— مدہوش گوالیاری

اسی طرح—

اُس سال فصلِ گُل میں اجڑا تھا بنتے بنتے
رہتا تو آشیاں کو اب ایک سال ہوتا
— عاصی لکھنوی

اور سُنیے—

تعمیرِ آشیاں سے میں نے یہ راز پایا
اہلِ نوا کے حق میں بجلی ہے آشیانہ
— اقبال

قفس—

اے ظالم شکاری ! ہم اگر اپنی غلامی کو ابھی ختم نہیں کر پائے تو اِس سے اِترا مت، ابھی ہم میں سچّی تڑپ کی کمی ہے، تڑپ ہو تو کوئی غلامی نہیں ٹھہر سکتی، ذرا اور صبر کر—

درِ قفس نہ کھُلا قدرے صبر کر صیّاد
تڑپتے ہم تو پہاڑوں میں راستہ کرتے

قید خانے میں گھر کی یعنی غلامی میں آزادی کی یاد نہیں جاتی—

ہو گئے برسوں کہ آنکھوں کی کھٹک جاتی نہیں
جب کوئی تنکا اُڑا، گھر اپنا یاد آیا مجھے

شے = چیز، درِ قفس = پنجرے کا دروازہ، قدرے = تھوڑا! اہلِ نوا ...

वतन के लिये जेल जाएँ और अपने ही लोग हँसी उड़ाएं, यानी हमारी गुलामी दूसरों के लिये तमाशा है—

क़ैदेग़म भी दिल लगी है हँसने वालों के लिये।
अन्दलीब आकर क़फ़स में इक तमाशा हो गई ॥

कुछ और नमूने—

गुलशन बहार पर था नशेमन बना लिया।
मैं क्यों हुआ असीर, मेरा क्या कुसूर था ॥

नीचे के शेर में कितनी हसरत है—

मेरी क़ैद क्या दिलशिकन माजरा था।
बहार आई थी, आशियाँ बन चुका था ॥

—साक़िब लखनवी

हमीं नावाक़िफ़े रस्मेचमन थे ऐ क़फ़स वालो।
फ़लक से अहद ले लेते तो फ़िक्रे आशियाँ करते ॥
छोड़ा ही क्या है लूटने वालों ने मेरे पास।
इक ज़िन्दगी है सो वह कोई दिन की और है ॥

—आसी लखनवी

बाग़बाँ—

बाग़ की रखवाली करनेवाला और पौदों को सींचने वाला. यह बुलबुल का तरफ़दार समझा जाता है. पर जब कभी इसकी बेपरवाही से गुलशन का कुछ नुकसान होने लगता है तो बुलबुल से नहीं सहा जाता.

असीर = क़ैदी,' दिलशिकन माजरा = दिल तोड़ने वाली बात, रस्मेचमन = चमन के रिवाज, फ़लक = आसमान, अहद = वादा,

وطن کے لئے جیل جائیں اور اپنے ہی لوگ ہنسی اُڑائیں یعنی ہماری غلامی دوسروں کے لئے تماشا ہے—

قیدِ غم بھی دل لگی ہے ہنسنے والوں کے لئے
عندلیب آکر قفس میں اک تماشا ہو گئی

کچھ اور نمونے—

گلشن بہار پر تھا نشیمن بنا لیا میں کیوں ہوا اسیر میرا کیا قصور تھا

نیچے کے شعر میں کتنی حسرت ہے—

میری قید کیا دل شکن ماجرا تھا بہار آئی تھی، آشیاں بن چکا تھا

— ثاقب لکھنوی

ہمیں ناواقفِ رسمِ چمن تھے اے قفس والو
فلک سے عہد لے لیتے تو فکرِ آشیاں کرتے
چھوڑا ہی کیا ہے لوٹنے والوں نے میرے پاس
اک زندگی ہے سو وہ کوئی دن کی اور ہے

— آسی لکھنوی

باغباں—

باغ کی رکھوالی کرنے والا اور پودوں کو سینچنے والا یہ بلبل کا طرف دار سمجھا جاتا ہے. پر جب کبھی اس کی بے پروائی سے گلشن کا کچھ نقصان ہونے لگتا ہے تو بلبل سے نہیں سہا جاتا.

اسیر = قیدی، دل شکن ماجرا = دل توڑنے والی بات، رسمِ چمن = چمن کے رواج، فلک = آسمان، عہد = وعدہ،

निशाने बर्गेगुल तक भी, न छोड़ इस बाग़ में गुलचीं ।
तेरी क़िस्मत से रज़्म आराइयाँ हैं बाग़बानों में ॥

—इक़बाल

सैयाद तो है ही ज़ालिम, पर जब बाग़बाँ भी जुल्म करने लगता है तब बुलबुल के रंज की कोई हद नहीं रहती. रक्षक ही भक्षक बन जाय, अपने ही पराये हो जाँय, तब दिलों पर क्या गुज़रती है, मुलाहिज़ा फ़रमाइये—

बाग़बाँ ने आग दी जब आशियाने को मेरे ।
जिन पै तकिया था, वही पत्ते हवा देने लगे ॥

—साक़िब लखनवी

[बुलबुल कहती है:—बाग़ के माली ने ही जब मेरे घोंसले को आग लगाई तब औरों के ज़ुलमोसितम को क्या कहूँ, जिन पत्तों पर मेरा तकिया था वह पत्ते भी उड़ उड़ कर आग को भड़काने में मदद देने लगे.]

जब मुसीबत आती है, तब अपने भी पराए हो जाते हैं, जिनसे बहुत कुछ आशाएँ थीं वह भी सताने पर उतारू हो जाते हैं. कुछ शेर देखिये—

बहुत उम्मीद थी जिनसे, हुए वह मेहरबाँ क़ातिल ।
हमारे क़त्ल करने को, बने ख़ुद पासबाँ क़ातिल ॥

—गुमनाम

बर्गेगुल = फूल की पंखड़ी, गुलचीं = फूल तोड़ने वाला, रज़्म आराइयां = लड़ाई की तय्यारियां,
पासबाँ = रक्षक,

نشانِ برگ و گُل تک بھی، نہ چھوڑ اِس باغ میں گلچیں
تری قسمت سے رزم آرائیاں ہیں باغبانوں میں

— اقبال

صیّاد تو ہے ہی ظالم، پر جب باغبان بھی ظلم کرنے لگتا ہے تب بلبل کے رنج کی کوئی حد نہیں رہتی. رکشک ہی بھکشک بن جائے، اپنے ہی پرائے ہو جائیں، تب دلوں پر کیا گزرتی ہے. ملاحظہ فرمائیے—

باغباں نے آگ دی جب آشیانے کو مرے
جن پہ تکیہ تھا، وہی پتّے ہوا دینے لگے

— ثاقب لکھنوی

[بلبل کہتی ہے:— باغ کے مالی نے ہی جب میرے گھونسلے کو آگ لگائی تب اوروں کے ظلم و ستم کو کیا کہوں، جن پتّوں پر میرا تکیہ تھا وہ پتّے بھی اُڑ اُڑ کر آگ کو بھڑکانے میں مدد دینے لگے.]

جب مصیبت آتی ہے، تب اپنے بھی پرائے ہو جاتے ہیں، جن سے بہت کچھ آشائیں تھیں وہ بھی ستانے پر اُتارو ہو جاتے ہیں، کچھ شعر دیکھئے—

بہت اُمید تھی جن سے، ہوئے وہ مہرباں قاتل
ہمارے قتل کرنے کو، بنے خود پاسباں قاتل

— گمنام

برگِ گُل = پھول کی پنکھڑی، گلچیں = پھول توڑنے والا، رزم آرائیاں = لڑائی کی تیاریاں،
پاسباں = رکشک،

होता नहीं है कोई, बुरे वक़्त में शरीक।
पत्ते भी भागते हैं, ख़िज़ाँ में शजर से दूर ॥

—गुमनाम

सियह बख़्ती में कब कोई, किसी का साथ देता है।
कि तारीकी में साया भी, जुदा होता है इन्साँ से ॥

—गुमनाम

कौन होता है बुरे वक़्त की हालत का शरीक।
मरते दम आँख को देखा है कि फिर जाती है ॥

—गुमनाम

दोस्तों से हमने वह सदमें उठाए जान पर
दिल से दुश्मन की अदावत का गिला जाता रहा ॥

—हाली

यह ग़म नहीं है वह, जिसे कोई बँटा सके।
ग़मख़्वारी अपनी रहने दे, ऐ ग़मगुसार, बस ॥
दें ग़ैर दुश्मनी का हमारी ख़याल छोड़।
यों दुशमनी के वास्ते काफ़ी हैं यार, बस ॥

—हाली

गुलचीं—

फूल तोड़ने वाला. यह बुलबुल को क़तई पसन्द नहीं, उसके दर्द को देखिये—

ख़िज़ां = पतझड़, शजर = पेड़, सियहबख़्ती = बदक़िस्मती, अदावत = दुशमनी, गिला = शिकायत, ग़मख़्वारी = हमदर्दी, ग़मगुसार = हमदर्द.

ہوتا نہیں ہے کوئی، بُرے وقت میں شریک
پتے بھی بھاگتے ہیں، خزاں میں شجر سے دور

— گمنام

سیہ بختی میں کب کوئی کسی کا ساتھ دیتا ہے
کہ تاریکی میں سایہ بھی، جُدا رہتا ہے انساں سے

— گمنام

کون ہوتا ہے بُرے وقت کی حالت کا شریک
مرتے دم آنکھ کو دیکھا ہے کہ پھر جاتی ہے

— گمنام

دوستوں سے ہم نے وہ صدمے اُٹھائے جان پر
دل سے دشمن کی عداوت کا گلا جاتا رہا

— حالی

یہ غم نہیں ہے وہ جسے کوئی بٹا سکے غم خواری اپنی رہنے دے، اے غمگسار بس
دیں غیر دشمنی کا ہماری خیال چھوڑ یوں دشمنی کے واسطے کافی ہیں یار بس

— حالی

گلچیں—

پھول توڑنے والا. یہ بُلبُل کو قطعی پسند نہیں. اُس کے درد کو دیکھئے—

خزاں = پت جھڑ، شجر = پیڑ، سیہ بختی = بد قسمتی، عداوت = دُشمنی،

वाए क़िस्मत ! कि चमन में हूँ, मगर शाद नहीं।
जौरे गुलचीं मुझे क्या कम है, जो सैयाद नहीं॥

—रहमत

सैयाद—

शिकारी जो बुलबुल को उसके घोंसले से छुड़ाकर पिंजरे में बन्द कर देता है. बुलबुल को सताना उसका काम है. यह गुलशन उजाड़ता है, आशियाने को आग लगाता है. पिंजरे में बन्द बुलबुल गुलामी से घबराकर सैयाद के आगे गिड़गिड़ाते हुए कहता है:—

आज़ाद मुझको करदे ओ क़ैद करने वाले।
मैं बेज़बाँ हूँ क़ैदी, तू छोड़ कर दुआ ले॥

—इक़बाल

जिसकी आत्मा, जिसका दिल और दिमाग़ आज़ाद है. वह पिंजरे के अन्दर भी अपना चमन किस तरह बना लेता है—

बना लेता है मौजे ख़ूने दिल से इक चमन अपना।
वह पाबन्दे क़फ़स जो फ़ितरतन आज़ाद होता है॥

—असग़र गोण्डवी

जो क़ैदी सैयाद ही के शिकवे शिकायत करने में लगे हुए हैं वह उड़ने के मज़े को नहीं जानते—

वाए=हाय ! शाद=ख़ुश. जौर=ज़ुल्म.

मौजे ख़ूने दिल=दिल के ख़ून की लहर. पाबन्द=क़ैदी. फ़ितरतन=अपनी तबीयत से.

وائے قسمت! کہ چمن میں ہوں، مگر شاد نہیں
جورِ گل چیں مجھے کیا کم ہے، جو صیاد نہیں

—"رحمت"

صیاد—

شکاری جو بُلبل کو اُس کے گھونسلے سے چھُڑا کر پنجرے میں بند کر دیتا ہے. بُلبُل کو ستانا اُس کا کام ہے. یہ گلشن اُجاڑتا ہے، آشیانے کو آگ لگاتا ہے، پنجرے میں بند بلبل غلامی سے گھبرا کر صیاد کے آگے گڑگڑاتے ہوئے کہتا ہے—

آزاد مجھ کو کر دے او قید کرنے والے
میں بے زباں ہوں قیدی، تو چھوڑ کر دُعا لے

—اقبال

جس کی آتما، جس کا دل اور دماغ آزاد ہے، وہ پنجرے کے اندر بھی اپنا چمن کس طرح بنا لیتا ہے—

بنا لیتا ہے موجِ خونِ دل سے اِک چمن اپنا
وہ پابندِ قفس جو فطرتاً آزاد ہوتا ہے

—اصغر گونڈوی

جو قیدی صیاد ہی کے شکوے شکایت کرنے میں لگے ہوئے ہیں وہ اُڑنے کے مزے کو نہیں جانتے—

وائے = ہائے! شاد = خوش. جور = ظلم.

موجِ خونِ دل = دل کے خون کی لہر. پابند = قیدی. فطرتاً = اپنی طبیعت سے.

यह सब ना-आश्नाए, लज़्ज़ते परवाज़ हैं शायद।
असीरों में अभी तक शिकवये सैयाद होता है॥

—असग़र गोण्डवी

परवस पंछी अत्याचार सहते सहते जब तंग आ जाता है, तब उसका मन होता है कि अत्याचारी पर बिजली ही पड़ जाय तो अच्छा—

बर्क़ गिरने को गिरी लेकिन ज़रा बचकर गिरी।
आँच तक आने न पाई ख़ानए सैयाद पर॥

—बर्क़

जब अपने दो दुशमन आपसी लड़ाई में लग जाएँ तो सताए हुओं या गुलामों को आज़ाद होने का मौक़ा मिल जाता है—

सुनते हैं गुलचीं से झगड़ा हो गया सैयाद का।
हम सफ़ीरो आज मौक़ा है मुबारिकबाद का॥

—दाग़

कुछ और देखिये—

चमन सैयाद ने सींचा यहाँ तक ख़ूने बुलबुल से।
कि आख़िर रंग बन कर फूट निकला आरिज़े गुल से॥

—गुमनाम

ना आशना=न जानने वाले. परवाज़=उड़ना, असीरों=क़ैदियों. बर्क़=बिजली. ख़ानए सय्याद=सय्याद का घर.
हम सफ़ीरो=एक ही तरह की बोली बोलने वाले. आरिज़े गुल=फूलों के कल्लों.

یہ سب نا آشنائے۔ لذّتِ پرواز ہیں شاید
اسیروں میں ابھی تک شکوۂ صیّاد ہوتا ہے

— اصغر گونڈوی

پربس پنچھی اتیاچار سہتے سہتے جب تنگ آجاتا ہے تب اس کا من ہوتا ہے کہ اتیاچاری پر بجلی ہی پڑ جائے تو اچھا—

برق گرنے کو گری لیکن ذرا بچ کر گری
آنچ تک آنے نہ پائی خانۂ صیّاد پر

— برق

جب اپنے دو دشمن آپسی لڑائی میں لگ جائیں تو ستائے ہوؤں یا غلاموں کو آزاد ہونے کا موقع مل جاتا ہے—

سنتے ہیں گل چیں سے جھگڑا ہو گیا صیّاد کا
ہم صفیرو آج موقع ہے مبارکباد کا

— داغ

کچھ اور دیکھئے—

چمن صیّاد نے سینچا یہاں تک خونِ بلبل سے
کہ آخر رنگ بن کر پھوٹ نکلا عارضِ گل سے

— گمنام

ناآشنائے = نہ جاننے والے۔ پرواز = اڑنا۔ اسیروں = قیدیوں۔
برق = بجلی۔ خانۂ صیّاد = صیّاد کا گھر۔
ہم صفیرو = ایک ہی طرح کی بولی بولنے والے۔ عارضِ گل = پھولوں کے گالوں۔

न तड़पने की इजाज़त है न फ़रियाद की है।
घुट के मर जाऊँ यह मर्ज़ी मेरे सैयाद की है॥

—शाद

गले पै छुरी क्यों नहीं फेर देते।
असीरों को बे बालोपर करने वाले॥

—यगाना चंगेज़ी

यहाँ कोताहिये ज़ौक़े अमल है ख़ुद गिरफ़्तारी।
जहाँ बाज़ू सिमटते हैं वहीं सैयाद होता है॥

—असग़र गोण्डवी

कल बहुत नाज़ाँ उरूजे बख़्त पर सैयाद था।
बात इतनी थी कि मैं था क़ैद, वह आज़ाद था॥

—साक़िब लखनवी

मैं तो था मजबूर रहने पर कि था पाबन्दे इश्क़।
कोई पूछे बाग़ में क्या काम था सैयाद का॥

—साक़िब लखनवी

बे बालो पर=परकटे, कोताहिये ज़ौक़े अमल=काम करने के शौक की कमी, नाज़ाँ=घमण्ड करने वाला, उरूजे बख़्त=ऊँची क़िस्मत.

نہ تڑپنے کی اجازت ہے نہ فریاد کی ہے
گھٹ کے مر جاؤں یہ مرضی مرے صیاد کی ہے

— شاد

گلے پہ چھری کیوں نہیں پھیر دیتے
اسیروں کو بے بال و پر کرنے والے

— یگانہ چنگیزی

یہاں کوتاہیٔ ذوقِ عمل ہے خود گرفتاری
جہاں بازو سمٹتے ہیں وہیں صیاد ہوتا ہے

اصغر گونڈوی

کل بہت نازاں عروجِ بخت پہ صیاد تھا
بات اتنی تھی کہ میں تھا قید، وہ آزاد تھا

— ثاقب لکھنوی

میں تو تھا مجبور رہنے پر کہ تھا پابندِ عشق
کوئی پوچھے باغ میں کیا کام تھا صیاد کا

— ثاقب لکھنوی

بے بال و پر = پر کٹے، کوتاہیٔ ذوقِ عمل = کام کرنے کے شوق کی کمی۔
نازاں = گھمنڈ کرنے والا، عروجِ بخت = اونچی قسمت۔

जलियान वाला बाग़ की कुछ यादगारें

(श्री रामजी दूर)

[आज से अट्ठाइस साल पहले जलियान वाला बाग़ के क़त्ले आम के बाद कांगरेस ने जो कमेटी पंजाब के ज़ुल्मों की तहक़ीक़ात करने और लोगों को तसल्ली देने के लिये मुक़र्रिर की थी उसमें पं० मोती लाल जी के साथ श्री राम जी दर भी गए थे. वहां जो जो कुछ उन्होंने देखा और सुना वह उनकी डायरी में मौजूद है उसमें से कुछ सच्ची बातें उन्होंने हमें लिख भेजी हैं. हम इन्हें थोड़ी थोड़ी करके 'नया हिन्द' के पढ़ने वालों के सामने रखेंगे. —एडिटर]

(१)

ख़ून में रंगे कपड़े

जलियान वाला बाग़ के क़तले आम के बाद कुल पंजाब में मारशल ला जारी किया गया था. इस जंगली क़ानून के ख़तम होने के ६ महीने बाद मुझे पंजाब जाने का मौक़ा हुआ. तब मैं स्वर्गीय पं० मोती लाल जी नेहरू के चलाए हुए "इन्डिपेन्डेन्ट" अख़बार में सब एडिटर था. कांग्रेस ने मोतीलाल जी की राय से पंजाब की ख़ौफ़नाक घटनाओं की जांच के लिये एक कमेटी क़ायम की. इसी कमेटी के सिलसिले में मुझे भी पंडित जी ने पंजाब बुलवा लिया था.

हमारे साथियों में पंडित जवाहर लाल जी, बाबू पुरुषोत्तम

جلیان والا باغ کی کچھ یادگاریں

(شری رام جی در)

[آج سے اٹھائیس سال پہلے جلیان والا باغ کے قتلِ عام کے بعد کانگریس نے جو کمیٹی پنجاب کے ظلموں کی تحقیقات کرنے اور لوگوں کو تسلی دینے کے لئے مقرر کی تھی اُس میں پنڈت موتی لال جی کے ساتھ شری رام جی در بھی گئے تھے. وہاں جو جو کچھ اُنھوں نے دیکھا اور سُنا اُن کی ڈائری میں موجود ہے اُس میں سے کچھ سچی باتیں اُنھوں نے ہمیں لکھ بھیجی ہیں. ہم اِنھیں تھوڑی تھوڑی کرکے "نیا ہند" کے پڑھنے والوں کے سامنے رکھیں گے.
— ایڈیٹر]

(۱)

خون میں رنگے کپڑے

جلیان والا باغ کے قتلِ عام کے بعد کُل پنجاب میں مارشل لا جاری کیا گیا تھا. اِس جنگلی قانون کے ختم ہونے کے ۶ مہینے بعد مجھے پنجاب جانے کا موقع ہوا. تب میں سورگیہ پنڈت موتی لال جی نہرو کے چلائے ہوئے "انڈیپنڈنٹ" اخبار میں سب ایڈیٹر تھا. کانگریس نے موتی لال جی کی رائے سے پنجاب کی خوفناک گھٹناؤں کی جانچ کے لئے ایک کمیٹی قایم کی. اِسی کمیٹی کے سلسلے میں مجھے بھی پنڈت جی نے پنجاب بلوا لیا تھا.

ہمارے ساتھیوں میں پنڈت جواہر لال جی، بابو پرشوتم

दास जी टंडन और मरहूम सैयद हैदर मेंहदी साहब भी थे.

हमारा काम ज्यादातर मज़लूमों के बयान लेना और ख़ास ख़ास जगहों की फ़ोटो लेना था.

मारशल ला की वजह से कुल पंजाब सहमा हुआ था. पंजाब को उस ज़माने में कोई पूछने वाला न था. न किसी पंजाबी की यह हिम्मत थी कि किसी से फ़रियाद कर सके और न किसी ग़ैर पंजाबी का बूता था कि वह पंजाब की मदद की ग़रज़ से वहां क़दम रक्खे.

जैसे सन् सत्तावन के ग़दर के बाद लोग दहशत खा गए थे वही हालत पंजाबियों के दिल दिमाग़ की थी.

पंजाब कुछ अरसे के लिये यतीम बन गया था.

ऐसे दर्दनाक और ख़तरनाक ज़माने में पंडित मोतीलाल जी नेहरू पंजाब पहुँचे.

मुसीबत की मारी जनता ने उन्हें भगवान की देन समझा —ग़नीमत समझा. लोग समझते थे कि कोई देवता आकाश से उनकी मदद को आया है.

लोगों को ढारस बंधा, मगर मार इतनी करारी खाई थी और जख़्म अभी इतने कच्चे थे कि मोतीलाल जी को और हम लोगों को पबलिक के दिल में जगह तो मिली पर वह अपने दिल की बात जाहिर नहीं कर सकते थे.

मारशल ला हट गया था पर सी० आई० डी० और पुलिस का का ज़ुल्म जारी था.

हम सब लाहौर में लाला हरकिशन लाल के आलीशान

داس جی ٹنڈن اور مرحوم سید حیدر مہدی صاحب بھی تھے.

ہمارا کام زیادہ تر مظلوموں کے بیان لینا اور خاص خاص جگہوں کی فوٹو لینا تھا.

مارشل لا کی وجہ سے کُل پنجاب سہما ہوا تھا. پنجاب کو اُس زمانے میں کوئی پوچھنے والا نہ تھا. نہ کسی پنجابی کی یہ ہمت تھی کہ کسی سے فریاد کر سکے اور نہ کسی غیر پنجابی کا بوتا تھا کہ وہ پنجاب کی مدد کی غرض سے وہاں قدم رکھے.

جیسے ۵۷ء کے غدر کے بعد لوگ دہشت کھا گئے تھے وہی حالت پنجابیوں کے دل دماغ کی تھی.

پنجاب کچھ عرصے کے لئے یتیم بن گیا تھا.

ایسے دردناک اور خطرناک زمانے میں پنڈت موتی لال جی نہرو پنجاب پہنچے.

مصیبت کی ماری جنتا نے اُنھیں بھگوان کی دین سمجھا۔ غنیمت سمجھا. لوگ سمجھتے تھے کہ کوئی دیوتا آکاش سے اُن کی مدد کو آیا ہے.

لوگوں کو ڈھارس بندھا اگر مار اتنی کراری کھائی تھی اور زخم ابھی اتنے کچے تھے کہ موتی لال جی کو اور ہم لوگوں کو پبلک کے دل میں جگہ تو ملی پر وہ اپنے دل کی بات ظاہر نہیں کر سکتے تھے.

مارشل لا ہٹ گیا تھا پر سی. آئی. ڈی. اور پولیس کا ظلم جاری تھا.

ہم سب لاہور میں لالہ ہر کشن لال کے عالی شان

बंगले में टिके थे. हमारे बंगले के चारों तरफ़ ख़ुफ़िया पुलिस दिन रात चक्कर लगाती—मगर छिप कर.

अपने काम के सिलसिले में हमारी पार्टी ने पंजाब के बहुत से शहरों का दौरा किया.

एक दिन मैं अकेला अमृतसर की एक सड़क पर जा रहा था. उस ज़माने में मेरी उमर क़रीब २३ के होगी. मैं अचकन पाजामा और पेशावरी टोपी पहने था.

एकाएक किसी ने बड़ी नरमी और शराफ़त से मेरे पास आकर कहा "आदाब अर्ज़ है साहबज़ादे"!

घूम कर देखा तो एक मुसलमान बुज़ुर्ग के दर्शन हुए. वह वाक़ई दर्शन के लायक़ थे. उमर क़रीब ७० के होगी. सफ़ेद लम्बी ख़ूबसूरत दाढ़ी, सुडौल नक़्शा, कपड़ों से ज़ईफ़ी व ग़रीबी साफ़ दिखती थी, मगर उससे ज़्यादा साफ़ उनकी तहज़ीब के चिन्ह थे. उनके चेहरे की बनावट उन मुग़ल बादशाहों से मिलती जुलती थी जिनकी तसवीरों से मुग़ल ज़माने की तारीख़ के पढ़ने वाले वाक़िफ़ हैं.

"ख़ुदावन्द ताला तुम्हारा भला करे"! उन बुज़ुर्ग ने मुझे दुआ दी. "पंडित जी का एहसान हम कभी नहीं भूल सकते. जब ख़ुदा भी हमें भूल गया था तब पंडितजी हमारी मदद को आए!"

मैं कुछ सवाल करना चाहता था कि उस बुड्ढे ने फिर कहा—"मेरी भी कुछ अर्ज़ है".

मैंने पूछा "फ़रमाइये".

بنگلے میں ٹکے تھے۔ ہمارے بنگلے کے چاروں طرف خفیہ پولیس دن رات چکر لگاتی — مگر چھپ کر۔

اپنے کام کے سلسلے میں ہماری پارٹی نے پنجاب کے بہت سے شہروں کا دورہ کیا۔

ایک دن میں اکیلا امرتسر کی ایک سڑک پر جا رہا تھا۔ اُس زمانے میں میری عمر قریب ۲۳ کے ہوگی۔ میں اچکن پاجاما اور پیشاوری ٹوپی پہنے تھا۔

یکایک کسی نے بڑی نرمی اور شرافت سے میرے پاس آکر کہا "آداب عرض ہے صاحبزادے"!

گھوم کر دیکھا تو ایک مسلمان بزرگ کے درشن ہوئے۔ وہ واقعی درشن کے لائق تھے۔ عمر قریب ۷۰ کے ہوگی۔ سفید لمبی خوبصورت ڈاڑھی، سڈول نقشہ، کپڑوں سے ضعیفی و غریبی صاف دکھتی مگر اس سے زیادہ صاف اُن کی تہذیب کے چنھ تھے۔ اُن کے چہرے کی بناوٹ اُن مغل بادشاہوں سے ملتی جلتی تھی جن کی تصویروں سے مغل زمانے کی تاریخ کے پڑھنے والے واقف ہیں۔

"خداوند تعالیٰ تمہارا بھلا کرے"! اُن بزرگ نے مجھے دعا دی۔ "پنڈت جی کا احسان ہم کبھی نہیں بھول سکتے۔ جب خدا بھی ہمیں بھول گیا تھا تب پنڈت جی ہماری مدد کو آئے!"

میں کچھ سوال کرنا چاہتا تھا کہ اُس بڈھے نے پھر کہا — "میری بھی کچھ عرض ہے"۔

میں نے پوچھا "فرمایئے"۔

निगाहें चार होते ही हो गया था. मगर—मैं पंजाब में था. मुझे अच्छी तरह पता था कि वहां सांपों व बिच्छुओं की तरह क़दम क़दम पर पुलिस के जासूस रूप बदल बदल कर घूमा करते थे.

एक घड़ी के लिये मुझे इस शरीफ़ बुड्ढे पर भी शक हुआ.

मगर मेरे दिल में ग़रीबों व मुसीबतज़दों के लिये हमदर्दी थी और उस दिन मेरी दुनिया में—यानी हिन्दुस्तान में—पंजाब से बढ़कर और कोई हिस्सा इतना चुटैल न था.

मैंने हिम्मत करके उन बुज़ुर्ग से कहा—"फ़रमाइये मैं आपकी क्या ख़िदमत कर सकता हूँ!"

दबी ज़बान से इधर उधर ताकते हुए उन्होंने कहा—"ज़रा तकलीफ़ गवारा करके इस गली में चले आइये तो मैं आपको अपना दुखड़ा सुनाऊँ."

उनकी निगाहों व बदन की हरकत से मुझे पूरा इतमीनान हो चला कि वह भी किसी से डर रहे हैं. डर सिवा पुलिस के और किसका हो सकता था?

मैं साथ गली में बढ़ा.

हम चलते गए और उन्होंने मुझे बतलाया कि उनका नौजवान एकलौता बेटा जलियान वाला बाग़ में जनरल डायर की गोली का शिकार हो चुका था.

उसकी दर्दनाक कहानी सुनकर मेरा दिल भर आया. तब उन्होंने मुझसे बड़ी नम्रता से कहा—"अगर आप मेरे ग़रीबख़ाने पर चले चलें तो मैं आपको एक पोशीदा चीज़ दिखाऊँ."

मुझसे न कहते नहीं बना. इनकार भी कैसे करता. आख़िर

نگاہیں چار ہوتے ہی ہو گیا تھا. مگر— میں پنجاب میں تھا. مجھے اچھی طرح پتہ تھا کہ وہاں سانپوں و بچھوؤں کی طرح قدم قدم پر پولیس کے جاسوس روپ بدل بدل کر گھوما کرتے تھے.

ایک گھڑی کے لئے مجھے اِس شریف بڈھے پر بھی شک ہوا.

مگر میرے دل میں غریبوں و مصیبت زدوں کے لئے ہمدردی تھی اور اُس دن میری دُنیا میں—یعنی ہندستان میں—پنجاب سے بڑھ کر اور کوئی حصہ اِتنا چوٹیل نہ تھا.

میں نے ہمّت کرکے اُن بزرگ سے کہا—"فرمائیے میں آپ کی کیا خدمت کرسکتا ہوں!"

دبی زبان سے اِدھر اُدھر تاکتے ہوئے اُنھوں نے کہا—"ذرا تکلیف گوارہ کرکے اِس گلی میں چلے آئیے تو میں آپ کو اپنا دکھڑا سُناؤں!"

اُن کی نگاہوں و بدن کی حرکت سے مجھے پورا اطمینان ہو چلا کہ وہ بھی کسی سے ڈر رہے ہیں. ڈر سوا پولیس کے اور کس کا ہو سکتا تھا؟

میں ساتھ گلی میں بڑھا.

ہم چلتے گئے اور اُنھوں نے مجھے بتلایا کہ اُن کا نوجوان اِکلوتا بیٹا جلیان والا باغ میں جنرل ڈائر کی گولی کا شکار ہو چکا تھا.

اُس کی دردناک کہانی سُن کر میرا دل بھر آیا. تب اُنھوں نے مجھ سے بڑی نمرتا سے کہا—"اگر آپ میرے غریب خانے پر چلے چلیں تو میں آپ کو ایک پوشیدہ چیز دکھاؤں!"

مجھ سے نہ کہتے نہیں بنا. انکار بھی کیسے کرتا. آخر

मैं पंजाब गया क्यों था. मज़लूमों के बारे में असली हालत मालूम करने.

कुछ दूर चल कर हम एक और तंग गली में रुके. यह इस शरीफ़ बुड्ढे का मकान था. बहुत छोटा सा मकान जैसा ग़रीबों की तक़दीर में बदा है.

हम अंदर घुसे. मुशकिल से दो गज़ का आंगन होगा.

बूढ़े ने आवाज़ दी. कुछ नाम लेकर पुकारा. दुपट्टा मुंह पर ज़रा आगे खेंच कर एक कम उमर औरत आधी सीढ़ियों पर आई.

बुड्ढे ने गम्भीर आवाज़ में उससे कहा "बेटी ला तो वह पोटली."

(हिन्दी)

ज़रा सी देर में उस औरत ने एक गंदी कपड़े की पोटली हमारे सामने डाल दी और ख़ुद घूंगट करे खड़ी रही.

बुड्ढे ने पोटली खोली. उसके हाथ कांप रहे थे. मैं भी सांस रोके हैरान हो उसके हाथों को देख रहा था. इतने में दो गोरे गोरे प्यारे मासूम बच्चे, भी मेरे पास आकर खड़े हो गए. पोटली खोल कर बुड्ढे ने एक अचकन और एक पाजामा जो ख़ुश्क ख़ून में बसा हुआ था उठा कर मुझे दिखाया और कहा—"यह हैं मेरे प्यारे बेटे के ख़ूनी कपड़े........". बूढ़े की आवाज़ में एक डरावना और पुरमानी असर था. मैं थोड़ी देर सकते की हालत में खड़ा रहा. कुछ कहते न बना. कुछ समझ में नहीं आया.

फिर मैं बोल उठा—"यह आपने क्यों रख छोड़े हैं....इनको फेंक दीजिये....यह आपको बराबर तकलीफ़ देंगे........".

[illegible]

میں پنجاب گیا کیوں تھا. مظلوموں کے بارے میں اصلی حالت معلوم کرنے.

کچھ دور چل کر ہم ایک اور تنگ گلی میں رُکے. یہ اِس شریف بڈھے کا مکان تھا. بہت چھوٹا سا مکان جیسا غریبوں کی تقدیر میں بدا ہے.

ہم اندر گھسے. مشکل سے دو گز کا آنگن ہوگا.

بڈھے نے آواز دی. کچھ نام لے کر پکارا. دوپٹہ منہ پر ذرا آگے کھینچ کر ایک کم عمر عورت آدھی سیڑھیوں پر آئی.

بوڑھے نے گمبھیر آواز میں اُس سے کہا "بیٹی لا تو وہ پوٹلی."

(اردو)

ذرا سی دیر میں اُس عورت نے ایک گندی کپڑے کی پوٹلی ہمارے سامنے ڈال دی اور خود گھونگھٹ کرے کھڑی رہی.

بوڑھے نے پوٹلی کھولی. اُس کے ہاتھ کانپ رہے تھے. میں بھی سانس روکے حیران ہو اُس کے ہاتھوں کو دیکھ رہا تھا. اتنے میں دو گورے گورے پیارے معصوم بچے بھی میرے پاس آکر کھڑے ہوگئے. پوٹلی کھول کر بوڑھے نے ایک اچکن اور ایک پاجامہ جو خشک خون میں بسا ہوا تھا اُٹھا کر مجھے دکھایا اور کہا— "یہ ہیں میرے پیارے بیٹے کے خونی کپڑے......" بوڑھے کی آواز میں ایک ڈراونا اور پُرمعنی اثر تھا. میں تھوڑی دیر سکتے کی حالت میں کھڑا رہا. کچھ کہتے نہ بنا. کچھ سمجھ میں نہیں آیا.

پھر میں بول اُٹھا— "یہ آپ نے کیوں رکھ چھوڑے ہیں... ان کو پھینک دیجئے...... یہ آپ کو برابر تکلیف دیں گے ....."

بوڑھے نے کانپتے ہوئے مگر دبنگ لہجہ میں جواب دیا...

मैंने जान के रक्खे हैं." फिर उन दो प्यारे बच्चों की तरफ़ इशारा करके बोला—"यह मेरे पोते हैं···मेरे बेटे की याद हैं···जब यह बड़े होंगे तो मैं इन्हें यह कपड़े दिखाऊँगा जिससे इन्हें मालूम हो कि इनके बाप की मौत का कौन ज़िम्मेवार है·······"बुड्ढे का गला भर आया, उसने एक सर्द सांस खींच कर "आह !" कहा.

मेरी आंखें भी तर हो गईं.

मेरे पास कोई जवाब न था.

मैंने बच्चों को चूमा और रोता हुआ रुख़सत हुआ.

चलते वक़्त मैंने उस बुज़ुर्ग से कहा—"आप बहादुर हैं. मैं आपका क़िस्सा पंडित जी के कानों तक पहुँचा दूंगा."

बुड्ढे ने दुआ दी "अल्लाह तुम्हें बड़ी उमर दे !"

---

(२)

एक दर्दनाक नज़ारा

नामुमकिन था कि हिन्दुस्तान का एक बड़ा हिस्सा घायल होकर तड़प रहा हो और मालवीय जी उसके ज़ख़मों पर मरहम पट्टी लगाने न जाएं.

थोड़े ही दिनों बाद मालवीय जी भी पंजाब आ गए. उन्होंने भी लोगों से मिलना और उनके बयान लेना शुरू कर दिया.

मालवीय जी के पास भी लोग अपनी अपनी दुख की गठरियां लेकर आने लगे. और मालवीय जी बड़े ध्यान और हमदर्दी से एक एक मर्द व औरत का रोना सुनते. हमारा काम इन बयानों को काग़ज़ पर दर्ज करना था. आख़िर में बयान देने वालों के अंगूठों के छाप या दस्तख़त करवाए जाते थे.

میں نے جان کے رکھے ہیں!" پھر اُن دو پیارے بچّوں کی طرف اشارہ کرکے بولا—"یہ میرے پوتے ہیں..... میرے بیٹے کی یاد ہیں ... جب یہ بڑے ہوں گے تو میں انھیں یہ کپڑے دکھاؤں گا جس سے انھیں معلوم ہو کہ ان کے باپ کی موت کا کون ذمّہ وار ہے" بڈھے کا گلا بھر آیا، اُس نے ایک سرد سانس کھینچ کر "آہ!" کہا۔

میری آنکھیں بھی تر ہوگئیں۔

میرے پاس کوئی جواب نہ تھا۔

میں نے بچّوں کو چوما اور روتا ہوا رخصت ہوا۔

چلتے وقت، میں نے اُس بزرگ سے کہا—"آپ بہادر ہیں۔ میں آپ کا قصّہ پنڈت جی کے کانوں تک پہنچا دوں گا!"

بڈھے نے دعا دی "اللہ تمھیں بڑی عمر دے!"

---

(۲)

ایک دردناک نظارہ

ناممکن تھا کہ ہندستان کا ایک بڑا حصّہ گھایل ہوکر تڑپ رہا ہو اور مالوی جی اس کے زخموں پر مرہم پٹّی لگانے نہ جائیں۔

تھوڑے ہی دنوں بعد مالوی جی بھی پنجاب آگئے۔ انھوں نے بھی لوگوں سے ملنا اور اُن کے بیان لینا شروع کردیا۔

مالوی جی کے پاس بھی لوگ اپنی اپنی دُکھ کی گٹھریاں لے کر آنے لگے۔ اور مالوی جی بڑے دھیان اور ہمدردی سے ایک ایک مرد و عورت کا رونا سُنتے۔ ہمارا کام ان بیانوں کو کاغذ پر درج کرنا تھا۔ آخر میں بیان دینے والوں کے انگوٹھوں کے چھاپ یا دستخط کروائے جاتے تھے۔

एक दिन की बात है. मालवीय जी के पास एक पंजाबी औरत आई. रंग साफ़, उमर में ५० से ज़्यादा न होगी मगर वक़्त से पहले बुढ़ापे ने उसके बदन में झुर्रियां डाल दी थीं. आंखें चुंधियाई हुई. पैरों से ज़मीन टटोलते हुए उसने आकर मालवीय जी के पैरों पर अपना माथा टेक दिया और ज़ोर ज़ोर से रोने लगी.

मालवीय जी ने बड़े प्रेम से कहा—"माता ! धीरज रक्खो, भगवान पर भरोसा करो."

वह औरत फिर सीधी होकर बैठी और पंजाबी बोली में रो रोकर कहने लगी—"मालवीय जी महाराज, आप हमारे पिता हो, आप ही हमारे भगवान हो.....मेरा बेटा मुझे दिलादो.........".

इस औरत के बेटे को काले पानी की सज़ा दी गई थी.

"माता.........धीरज धरो मैं तुम्हारे बेटे के छूटने के लिये खुद कोशिश करूँगा." मालवीय जी ने उसे दिलासा दिलाने की कोशिश की. फिर उन्होंने पूछा—'तुम्हारी आंखें कैसे ख़राब हुईं ?"

उसने सिसक सिसक कर जवाब दिया—"महाराज मेरी आंखें बिलकुल चंगी थीं.........बेटे के अलग होने के ग़म में रोते रोते मेरी आंखों की रोशनी चली गई है". फिर उस औरत ने अपना सिर मालवीय जी के पैरों के पास रख कर कहा—

"मुझे आप मेरा बेटा दिला दिजिये.........मुझे पूरा यक़ीन है कि उसे देख कर मेरी आंखों की रोशनी फिर वापस आजायगी........"

वह औरत फूट फूट कर और रोई.

मैं भी बड़ी देर से अपने कलेजे को थामें सब देख रहा था. अब मुझसे भी आंसू रोके न गए. उस जगह और लोग भी थे. शायद

ایک دن کی بات ہے مالوی جی کے پاس ایک پنجابی عورت آئی. رنگ صاف، عمر میں پچاس سے زیادہ نہ ہوگی مگر وقت سے پہلے بڑھاپے نے اُس کے بدن میں جھریاں ڈال دی تھیں. آنکھیں چُندھیائی ہوئی. پیروں سے زمین ٹٹولتے ہوئے اُس نے آکر مالوی جی کے پیروں پر اپنا ماتھا ٹیک دیا اور زور زور سے رونے لگی.

مالوی جی نے بڑے پریم سے کہا—"ماتا دھیرج رکھو، بھگوان پر بھروسہ کرو."

وہ عورت پھر سیدھی ہوکر بیٹھی اور پنجابی بولی میں رو رو کر کہنے لگی—"مالوی جی مہاراج! آپ ہمارے پتا ہو، آپ ہی ہمارے بھگوان ہو...... میرا بیٹا مجھے دلا دو......."

اس عورت کے بیٹے کو کالے پانی کی سزا دی گئی تھی.

"ماتا..... دھیرج دھرو میں تمہارے بیٹے کے چھوٹنے کے لئے خود کوشش کروں گا." مالوی جی نے اُسے دلاسہ دلانے کی کوشش کی پھر انھوں نے پوچھا—"تمھاری آنکھیں کیسے خراب ہوئیں؟"

اُس نے سسک سسک کر جواب دیا—"مہاراج، میری آنکھیں بالکل چنگی تھیں...... بیٹے کے الگ ہونے کے غم میں روتے روتے میری آنکھوں کی روشنی چلی گئی ہے." پھر اُس عورت نے اپنا سر مالوی جی کے پیروں کے پاس رکھ کر کہا—

"مجھے آپ میرا بیٹا دلا دیجئے...... مجھے پورا یقین ہے کہ اُسے دیکھ کر میری آنکھوں کی روشنی پھر واپس آجائے گی......."

وہ عورت پھوٹ پھوٹ کر اور روئی.

میں بھی بڑی دیر سے اپنے کلیجے کو تھامے سب دیکھ رہا تھا. اب مجھ سے بھی آنسو روکے نہ گئے. اُس جگہ اور لوگ بھی تھے. شاید

टंडनजी भी थे. उनकी भी आंखें नम हो चली थीं .सब ही के दिल भर आए थे. वह दृश्य ही ऐसा था.

मगर मालवीय जी महाराज एक पत्थर की मूरत की तरह बिना एक आंसू टपकाए गम्भीर आवाज़ से उस औरत से बराबर कहते— "धीरज धरो माता.........भगवान तुम्हें बहुत जल्द तुम्हारे बेटे से मिला देंगे."

मुझे बड़ा ताज्जुब हो रहा था कि मालवीय जी जैसे कोमल दिल की आंख से आंसू क्यों नहीं निकलते.

मुझसे न रहा गया. मैंने बड़ी सादगी से पूछा—' क्यों महाराज. आप रोते क्यों नहीं हैं.........आप के दिल में इतना दर्द औरों के लिये भरा है फिर आंखों से आंसू क्यों नहीं निकलते ?"

मालवीय जी और गम्भीर हो गए और अंगरेजी में एक एक शब्द को धीमे धीमे मगर ज़ोर देकर कहा—' रामजी ! मेरा दिल खून के आंसू बहा रहा है.........अगर मैं आंखों से आंसू निकलने दूं तो मैं मुल्क की ख़िदमत नहीं कर सकता .... मेरे हाथ पैर फूल जायेंगे ....मैं बेकार हो जाऊँगा."

ٹنڈن جی بھی تھے. اُن کی بھی آنکھیں نم ہو چلی تھیں. سب ہی کے دل بھر آئے تھے. وہ درشیہ ہی ایسا تھا.

مگر مالویہ جی مہاراج ایک پتھر کی مورت کی طرح بنا ایک آنسو ٹپکائے گمبھیر آواز سے اُس عورت سے برابر کہتے— "دھیرج دھرو ماتا...... بھگوان تمھیں بہت جلد تمھارے بیٹے سے ملا دیں گے."

مجھے بڑا تعجب ہو رہا تھا کہ مالویہ جی جیسے کومل دل کی آنکھ سے آنسو کیوں نہیں نکلتے.

مجھ سے نہ رہا گیا. میں نے بڑی سادگی سے پوچھا— "کیوں مہاراج! آپ روتے کیوں نہیں ہیں...... آپ کے دل میں اتنا درد اوروں کے لئے بھرا ہے پھر آنکھوں سے آنسو کیوں نہیں نکلتے؟"

مالویہ جی اور گمبھیر ہو گئے اور انگریزی میں ایک ایک شبد کو دھیمے دھیمے مگر زور دے کر کہا— "رام جی میرا دل خون کے آنسو بہا رہا ہے...... اگر میں آنکھوں سے آنسو نکلنے دوں تو میں ملک کی خدمت نہیں کر سکتا...... میرے ہاتھ پیر پھول جائیں گے...... میں بے کار ہو جاؤں گا."

क्या देखा ?

(अबदुल हलीम साहब अंसारी. आर्टिस्ट. भोपाल)

मैंने अक्तूबर के 'नया हिन्द' में लिखा था कि 'नया हिन्द' की जन्मपत्री पता देती है कि इसी लगन और चाल से देश गुलामी के जाल से निकलेगा और नया साल का संदेश इन शब्दों में दिया था—गुलामी का नाश और हमारा राज (और) देश का भाग जागे, उसका दुश्मन भागे. आज आप देख रहे हैं कि देश का भाग जागता नज़र आ रहा है. और दुश्मन भागता दिखाई दे रहा है और वह खुद भी देख रहा है. इसके अलावा मुख्तसर तौर पर हम यह भी दिखला देना चाहते हैं कि इसने अपनी एक साल की उमर में भारत में क्या देखा ? उसने हिन्दू मुसलिम त्योहार देखे, हिन्दू मुसलिम फ़साद देखे. ईद देखी. बक़रीद देखी. शान्ति देखी. क़ुरबानी देखी. दशहरा देखा, आशूरा* देखा. दिवाली की रोशनियां देखीं, होली की रंगरलियां देखीं, बड़ा दिन देखा नया दिन देखा, रामनौमी देखी. बसन्त पंचमी देखी. जन्माष्टमी देखी-फ़ाक़ों का भूत काल देखा, माल का बड़ा हाल देखा. इंसानों का शिकार देखा, लाशों का अंबार देखा. बच्चों को गाजर मूली की तरह कटते देखा, और सड़कों पर कुत्तों की तरह मरते देखा—दिन दहाड़े खून खच्चर देखे, इंसानों के सीनों में खंजर देखे.

लीग और कांग्रेस की तू तू मैं मैं सुनी. नेताओं की

* मुहर्रम की दस तारीख

کیا دیکھا؟

(عبدالحلیم صاحب انصاری، آرٹسٹ، بھوپال)

میں نے اکتوبر کے 'نیا ہند' میں لکھا تھا کہ 'نیا ہند' کی جنم پتری پتہ دیتی ہے کہ اسی لگن اور چال سے دیش غلامی کے جال سے نکلے گا اور نیا سال کا سندیش ان شبدوں میں دیا تھا — غلامی کا ناش اور ہمارا راج (اور) دیش کا بھاگ جاگے، اس کا دشمن بھاگے۔ آج آپ دیکھ رہے ہیں کہ دیش کا بھاگ جاگتا نظر آ رہا ہے۔ اور دشمن بھاگتا دکھائی دے رہا ہے اور وہ خود بھی دیکھ رہا ہے۔ اس کے علاوہ مختصر طور پر ہم یہ بھی دکھلا دینا چاہتے ہیں کہ اس نے اپنی ایک سال کی عمر میں بھارت میں کیا دیکھا؟ اس نے ہندو مسلم تیوہار دیکھے، ہندو مسلم فساد دیکھے، عید دیکھی، بقرعید دیکھی، شانتی دیکھی، قربانی دیکھی، دسہرہ دیکھا، عاشورہ[1] دیکھا، دیوالی کی روشنیاں دیکھیں، ہولی کی رنگ رلیاں دیکھیں، بڑا دن دیکھا، نیا دن دیکھا، رام نومی دیکھی، بسنت پنچمی دیکھی، جنم اشٹمی دیکھی۔ فاقوں کا بھوت کال دیکھا، مال کا بڑا حال دیکھا۔ انسانوں کا شکار دیکھا، لاشوں کا انبار دیکھا، بچوں کو گاجر مولی کی طرح کٹتے دیکھا، اور سڑکوں پر کتوں کی طرح مرتے دیکھا — دن دہاڑے خون خچر دیکھے، انسانوں کے سینوں میں خنجر دیکھے۔

لیگ اور کانگریس کی تو تو میں میں سنی، نیتاؤں کی

[1] محرم کی دس تاریخ

रस्साकशी देखी, शब्दों की गरमा गरमी देखी, उनके विचारों में दिल की भड़ास देखी, गोया भारत में जहन्नुम की आग देखी.

कलकत्ते में मल्लाहों (जहाज़ वालों) का एका देखा गोया समन्दर में बग़ावत का जोश देखा, तूफ़ान देखा, अंगरेज़ की घबराहट देखी, हुकूमत की बौखलाहट देखी. आज़ादी की मशीन में तेज़ हरकत देखी, उसी वक़्त वज़ारती मिशन की चलत फिरत देखी—बंगाल का काल, पंजाब का सैलाब, मुल्तान का तूफ़ान देखा. अमृतसर में ख़ूनी मंज़र देखा. और जलता हुआ मन्दिर देखा. अन्दर जिसके तपता हुआ बुत देखा मगर चुप देखा.

भारत की सियासत देखी, अंगरेज़ की शरारत देखी, और अपनों की हिमाक़त देखी. नेताओं की नेतागिरी देखी. देश की तबाही देखी. जनता की ख़राबी देखी. जब जनता ने लीडर के दिलमें खोट देखी अपने दिल में चोट देखी—

जनता का बुरा हाल देखा, भूका देखा, नंगा देखा, और ख़राब उसका सदाचार देखा.

पापों का प्रचार देखा, गुनाहों का बाज़ार देखा. और देखा देवियों के दामन उसने चाक किये, मां बेटियों पर हाथ साफ़ किये. यह कोई आज़ादी की लगन है या शैतानी पन ? क्या यह इंसान हैं या इंसान के भेस में शैतान ?

एटली का पैग़ाम सुना, वाइसराय का ऐलान सुना, गोया पच्छिमी ख़ुदाओं का फ़रमान सुना या लंदन के आसमानों का कलाम सुना, आज़ादी की तसवीर देखी, नेहरू का बयान सुना, जिन्ना की स्पीच सुनी और कांग्रेस की कहानी, कृपलानी की ज़बानी सुनी !

رسّاکشی دیکھی، شبدوں کی گرما گرمی دیکھی۔ اُن کے وچاروں میں دل کی بھڑاس دیکھی، گویا بھارت میں جہنّم کی آگ دیکھی۔

کلکتہ میں ملّاحوں (جہاز والوں) کا ایکا دیکھا گویا سمندر میں بغاوت کا جوش دیکھا، طوفان دیکھا، انگریزوں کی گھبراہٹ دیکھی، حکومت کی بوکھلاہٹ دیکھی۔ آزادی کی مشین میں تیز حرکت دیکھی، اُسی وقت وزارتی مشن کی چلت پھرت دیکھی — بنگال کا کال، پنجاب کا سیلاب، ملتان کا طوفان دیکھا۔ امرتسر میں خونی منظر دیکھا۔ اور جلتا ہوا مندر دیکھا۔ اندر جس کے تپتا ہوا بُت دیکھا مگر چُپ دیکھا۔

بھارت کی سیاست دیکھی، انگریزوں کی شرارت دیکھی، اور اپنوں کی حماقت دیکھی۔ نیتاؤں کی نیتاگری دیکھی۔ دیش کی تباہی دیکھی۔ جنتا کی خرابی دیکھی۔ جب جنتا نے لیڈر کے دل میں کھوٹ دیکھی اپنے دل میں چوٹ دیکھی —

جنتا کا بُرا حال دیکھا، بھوکا دیکھا، ننگا دیکھا، اور خراب اُس کا سداچار دیکھا۔

پاپوں کا پرچار دیکھا، گناہوں کا بازار دیکھا۔ اور دیکھا دیویوں کے دامن اُس نے چاک کیے، ماں بیٹیوں پر ہاتھ صاف کیے۔ یہ کوئی آزادی کی لگن ہے یا شیطانی پن؟ کیا یہ انسان ہیں یا انسان کے بھیس میں شیطان؟

ایٹلی کا پیغام سُنا، وائسرائے کا اعلان سُنا، گویا پچھمی خداؤں کا فرمان سُنا یا لندن کے آسمانوں کا کلام سُنا، آزادی کی تصویر دیکھی، نہرو کا بیان سُنا، جناح کی اسپیچ سُنی اور کانگریس کی کہانی، کرپلانی کی زبانی سُنی !

—बंगाल की तक़सीम देखी, पंजाब की तक़सीम देखी, पाकिस्तान की नई तरकीब देखी, नया हिन्दुस्तान देखा. नया क़ानून नया विधान देखा. बटवारे के नक़शे देखे. भारत के हिस्से बखरे देखे. माता के टुकड़े टुकड़े देखे. जमातों के झगड़े तनते देखे, मुस्तक़बिल में जिनके शोले बनते देखे, लेकिन वह आज देखे.

कामों की नई तंज़ीम देखी. तामीर की नई स्कीम देखी. बड़े बड़े चन्दे देखे, गरम गरम जज़्बे देखे. और कहीं ठंडे ठंडे हौसले देखे. किसी की बात गिरती देखी, किसी की कमान चढ़ती देखी. घमंड की तलवार के टुकड़े देखे. और क़दमों में उनके रेज़े देखे—बहुत से सियासत के बेटे ऐसे देखे, सकते में उनको बैठे देखे, या अक़्ल के उनकी तोते उड़ते देखे—और क्या देखा ? बहुत से झूटे समझौते देखे, बहुत से वादे टूटे देखे. बहुत से हलक़े खोटे देखे—और कहीं आज़ादी के शोशे झड़ते देखे, कहीं शब्दों के ज़ेर ज़बर गिरते देखे. कहीं हवाई क़िले बनते देखे. कहीं ख़यालो महल गिरते देखे. और क़िस्मत पर पत्थर पड़ते देखे.

जनता की उठान देखी, जमहूरियत का तूफ़ान देखा. इनक़लाब की तुग़यानी में राजधानी की कश्ती देखी. राजों को मौजों के थपेड़े सहते देखा. नवाबों को इनक़लाब के तमाचे खाते देखा. हाल से बदहाल देखा.

आज की सियासत में भंगी नवाज़ी देखी. भंगी की बस्ती देखी. बस्ती की पस्ती देखी और महात्मा जी की बुलन्द हस्ती देखी. शरीफ़ों की दुरगत देखी. शराफ़त को पिसते देखा, मिटते देखा.

—بنگال کی تقسیم دیکھی، پنجاب کی تقسیم دیکھی، پاکستان کی نئی ترکیب دیکھی، نیا ہندستان دیکھا، نیا قانون نیا ودھان دیکھا، بٹوارے کے نقشے دیکھے، بھارت کے حصے بخرے دیکھے، ماتا کے ٹکڑے ٹکڑے دیکھے، جماعتوں کے جھگڑے تنتے دیکھے، مستقبل میں جن کے شعلے بنتے دیکھے، لیکن وہ آج دیکھے۔

کاموں کی نئی تنظیم دیکھی، تعمیر کی نئی اسکیم دیکھی، بڑے بڑے چندے دیکھے، گرم گرم جذبے دیکھے، اور کہیں ٹھنڈے ٹھنڈے حوصلے دیکھے، کسی کی بات گرتی دیکھی، کسی کی کمان چڑھتی دیکھی، گھمنڈ کی تلوار کے ٹکڑے دیکھے، اور قدموں میں ان کے ریزے دیکھے۔ بہت سے سیاست کے بیٹے ایسے دیکھے، سکتے میں ان کو بیٹھے دیکھے، یا عقل کے ان کی طوطے اڑتے دیکھے— اور کیا دیکھا؟ بہت سے جھوٹے سمجھوتے دیکھے، بہت سے وعدے ٹوٹے دیکھے، بہت سے حلقے کھوٹے دیکھے— اور کہیں آزادی کے شوشے جھڑتے دیکھے، کہیں شبدوں کے زیر زبر گرتے دیکھے، کہیں ہوائی قلعے بنتے دیکھے، کہیں خیالی محل گرتے دیکھے، اور قسمت پر پتھر پڑتے دیکھے۔

جنتا کی اٹھان دیکھی، جمہوریت کا طوفان دیکھا، انقلاب کی طغیانی میں راجدھانی کی کشتی دیکھی، راجوں کو موجوں کے تھپیڑے سہتے دیکھا، نوابوں کو انقلاب کے طمانچے کھاتے دیکھا، حال سے بدحال دیکھا۔

آج کی سیاست میں بھنگی نوازی دیکھی، بھنگی کی بستی دیکھی، بستی کی پستی دیکھی اور مہاتما جی کی بلند ہستی دیکھی، شریفوں کی درگت دیکھی، شرافت کو پستے دیکھا، مٹتے دیکھے۔

शरीफ़ को गिरता देखा. रज़ील को उठता देखा. समता का यह निराला नक़शा देखा. मज़दूर राज देखा लेकिन मज़दूर को नंगा भूका देखा, चीख़ता चिल्लाता देखा.

पाकिस्तान का प्लान देखा. और फिर, हिन्दू मुसलमान देखा, तलवार देखी, गुप्ती देखी, बरछी देखी. और बरछी की नज़र तिरछी देखी—हिन्दू देखा सिख देखा कृपान देखा. और बे कृपान मुसलमान देखा—और क्या देखा ?

किसी की सदारत बदली, किसी की वज़ारत बदली. किसी की कुरसी बदली, किसी की फ़ितरत बदली. किसी की काठी बदली, किसी की रानी बदली, किसी की टमटम बदली. किसी की बेगम बदली. किसी का विचार बदला, किसी का लिबास बदला. किसी का दिमाग़ बदला, किसी का ख़याल पलटा.

ख़्वाब बदला, ख़्वाब की ताबीर बदली ! किसी का धर्म बदला, किसी की सियासत बदली, किसी की रियासत बदली. किसी की बस्ती बदली, किसी की हस्ती बदली.

अंगरेज़ की अय्यारी देखी. क्रिप्स की मक्कारी देखी. अमरीका की सरमायादारी देखी. रूस की निगाह देखी. उसकी नियत भांपी, उसके मक़सद का प्रचार समझा और संसार का उसे सालार समझा—सर पर एक सफ़ेद भूत देखा यानी सोवियट रूस देखा !

और इसने अपनी उम्र के एक चक्कर में दो चन्द्रग्रहन देखे. (१) १४ जून सन् १९४६ को और (२) ८ दिसम्बर को.

यह तमाम वह हादसे और इन्क़लाब हैं जो एक साल के अन्दर अन्दर इसके सामने आए और इन्सानों की बस्ती में रहकर

شریف کو گرتا دیکھا۔ رذیل کو اٹھتا دیکھا۔ سمتا کا یہ نرالا نقشہ دیکھا۔ مزدور راج دیکھا لیکن مزدور کو ننگا بھوکا دیکھا، چیختا چلاتا دیکھا۔

پاکستان کا پلان دیکھا۔ اور پھر، ہندو مسلمان دیکھا، تلوار دیکھی، گپتی دیکھی، برچھی دیکھی۔ اور برچھی کی نظر ترچھی دیکھی — ہندو دیکھا سکھ دیکھا کرپان دیکھا۔ اور بے کرپان مسلمان دیکھا — اور کیا دیکھا ؟

کسی کی صدارت بدلی، کسی کی وزارت بدلی، کسی کی کرسی بدلی، کسی کی فطرت بدلی، کسی کی کاٹھی بدلی، کسی کی رانی بدلی، کسی کی ٹم ٹم بدلی۔ کسی کی بیگم بدلی۔ کسی کا وچار بدلا، کسی کا لباس بدلا۔ کسی کا دماغ بدلا، کسی کا خیال پلٹا۔

خواب بدلا، خواب کی تعبیر بدلی! کسی کا دھرم بدلا، کسی کی سیاست بدلی، کسی کی ریاست بدلی، کسی کی بستی بدلی، کسی کی ہستی بدلی۔

انگریز کی عیاری دیکھی۔ کرپس کی مکاری دیکھی۔ امریکا کی سرمایہ داری دیکھی۔ روس کی نگاہ دیکھی۔ اس کی نیت بھانپی، اس کے مقصد کا پرچار سمجھا اور سنسار کا اسے سالار سمجھا — سر پر ایک سفید بھوت دیکھا یعنی سویٹ روس دیکھا!

اور اس نے اپنی عمر کے ایک چکر میں دو چندر گرہن دیکھے۔

(۱) ۱۴ر جون ۱۹۴۶ء کو اور (۲) ۸ر دسمبر کو۔

یہ تمام وہ حادثے اور انقلاب ہیں جو ایک سال کے اندر اندر اس کے سامنے آئے اور انسانوں کی [illegible]

इसने खूनी वारदात और मारकाट के ऐसे ऐसे समय देखे जिनको देखकर वह कांप उठा, चीख़ पड़ा. और इंसान की बेरहमी उसके कठोर दिल और जानवर पन को देखकर उसे बड़ा ही दुख और अचरज हुआ. और जब भी वह खूनी मंज़र उसके सामने आजाते हैं तो वह अपने धड़कते हुए दिल पर हाथ रख लेता है— और आंखें मीच लेता है——खुदा की सृष्टि (मख़लूक) में जो सृष्टि सबसे बुज़ुर्ग है उसका नाम है "इंसान" और ईसार (त्याग). हमदर्दी और मुहब्बत तमग़ा है इंसान की इंसानियत और शराफ़त का. फिर एक दूसरे से भागने का कारन आख़िर ?

नया हिन्द ! अभी अभी खूनी हिन्दुस्तान से गुज़रा है,—और खूनी तूफ़ान से निकलकर शान्ति की फ़िज़ा पैदा करने में अपना काम किये जारहा है. और अपनी लगन में लगा हुआ है. लेकिन एक नाज़ुक और महान तूफ़ान फिर भी इसकी नजर में है. इसलिये वह इस विचार में डूबा हुआ और सहमा हुआ है कि अगर हिन्दुस्तान में थुक्का फ़ज़ीती का यही रंग ढंग रहा और आज के इंसान का यही चाल चलन तो—

आगे आगे देखिये होता है क्या ?

اِس نے خونی واردات اور مارکاٹ کے ایسے ایسے سمے دیکھے جن کو دیکھ کر وہ کانپ اُٹھا، چیخ پڑا۔ اور انسان کی بیرحمی اُس کے کٹھور دل اور جانورپن کو دیکھ کر اُسے بڑا ہی دُکھ اور اچرج ہوا۔ اور جب بھی وہ خونی منظر اُس کے سامنے آجاتے ہیں تو وہ اپنے دھڑکتے ہوئے دل پر ہاتھ رکھ لیتا ہے— اور آنکھیں میچ لیتا ہے—— خدا کی سرشٹی (مخلوق) میں جو سرشٹی سب سے بزرگ ہے اُس کا نام ہے "انسان" اور ایثار (تیاگ) ہمدردی اور محبت تمغہ ہے انسان کی انسانیت اور شرافت کا، پھر ایک دوسرے سے بھاگنے کا کارن آخر؟

نیا ہند! ابھی ابھی خونی ہندستان سے گزرا ہے— اور خونی طوفان سے نکل کر شانتی کی فضا پیدا کرنے میں اپنا کام کئے جارہا ہے۔ اور اپنی لگن میں لگا ہوا ہے۔ لیکن ایک نازک اور مہان طوفان پھر بھی اِس کی نظر میں ہے۔ اِس لئے وہ اِس وچار میں ڈوبا ہوا اور سہما ہوا ہے کہ اگر ہندستان میں تھکا فضیحتی کا یہی رنگ ڈھنگ رہا اور آج کے انسان کا یہی چال چلن تو—

آگے آگے دیکھئے ہوتا ہے کیا؟

हाय हिन्द !

(लाला हनुवन्त सहाय, देहली)

जिस प्यारे वतन की आज़ादी की ख़ातिर हज़ारों आदमी अपनी सारी उमर अंग्रेज़ी साम्राज से लड़ने और उसको सर ज़मीन हिन्दुस्तान से उखाड़ फेंकने के लिये जद्दोजहद करते रहे आज वहां नई शकल में बृटिश साम्राज की जड़ें मज़बूत होते और लाखों बेगुनाहों के जान माल को ज़ाया होते देखकर जो सदमा दिल को पहुँचता है वह बयान से बाहर है सबसे ज़्यादा दुख इस बात का है कि देश की अकेली क़ौमी संस्था इन्डियन नेशनल कांग्रेस, जिसके साथ मुल्क की आज़ादी का पिछले ४० साल से गहरा सम्बन्ध रहा है, बृटिश हुकूमत की आज कल की उस तजवीज़ को मान लेने के लिये तैयार हो गई जिससे मुल्क और उसकी आज़ादी की स्पिरिट दोनों के चिथड़े उड़ रहे हैं. कांग्रेस के बड़े से बड़े लीडरों ने इस तजवीज़ को मान लेने की पुरज़ोर सिफ़ारिश ही नहीं की बल्कि वह उसको मुल्क की रज़ामन्दी हासिल करने से पहले ही अमली जामा पहनाने में लगे हुए नज़र आए.

अव्वल तो यह हरगिज़ किसी दलील से भी नहीं माना जा सकता कि हिन्दू और मुसलमान दो ऐसी अलग अलग क़ौमें हैं जो एक मुल्क में साथ साथ या एक हुकूमत के मातहत नहीं रह सकतीं. सारी पिछली तारीख़ और ख़ुद आज कल की

ہائے ہند!

(لالہ ہنونت سہائے، دہلی)

جس پیارے وطن کی آزادی کی خاطر ہزاروں آدمی اپنی ساری عمر انگریزی سامراج سے لڑنے اور اُس کو سرزمین ہندستان سے اکھاڑ پھینکنے کے لئے جدوجہد کرتے رہے آج وہاں نئی شکل میں برٹش سامراج کی جڑیں مضبوط ہوتے اور لاکھوں بے گناہوں کے جان مال کو ضایع ہوتے دیکھ کر جو صدمہ دل کو پہنچتا ہے وہ بیان سے باہر ہے. سب سے زیادہ دکھ اس بات کا ہے کہ دیش کی اکیلی قومی سنستھا انڈین نیشنل کانگریس، جس کے ساتھ ملک کی آزادی کا پچھلے ۴۰ سال سے گہرا سمبندھ رہا ہے، برٹش حکومت کی آج کل کی اُس تجویز کو مان لینے کے لئے تیار ہو گئی جس سے ملک اور اس کی آزادی کی اسپرٹ دونوں کے چیتھڑے اُڑ رہے ہیں. کانگریس کے بڑے سے بڑے لیڈروں نے اس تجویز کو مان لینے کی پُرزور سفارش ہی نہیں کی بلکہ وہ اُس کو ملک کی رضامندی حاصل کرنے سے پہلے ہی عملی جامہ پہنانے میں لگے ہوئے نظر آئے.

اوّل تو یہ ہرگز کسی دلیل سے بھی نہیں مانا جا سکتا کہ ہندو اور مسلمان دو ایسی الگ الگ قومیں ہیں جو ایک ملک میں ساتھ ساتھ یا ایک حکومت کے ماتحت نہیں رہ سکتیں. ساری پچھلی تاریخ اور خود آج کل کی

सूरत इसके ख़िलाफ़ गवाही दे रही है. इस ग़लत अलाप की बिना पर देश के बटवारे और बटे हुए इलाक़ों की हिफ़ाज़त के लिये बृटिश साम्राज का साया मंजूर करना जो "डॉमीनियन स्टेटस" या "बृटिश कामनवेल्थ" के नामों से पुकारा जाता है सारे हिंदुस्तान और उसके हर हिस्से की सही और असली आज़ादी का बिल्कुल गला घोंटना है.

कांग्रेसी नेताओं का यह ख़्याल कि नया पाकिस्तान आर्थिक निगाह से तरक़्क़ी नहीं कर सकेगा और अपनी आज़ादी को भी क़ायम नहीं रख सकेगा और इसलिये फिर बाक़ी हिन्दुस्तान से बहुत जल्द आ मिलेगा या ऐसे बर्तानवी वादों पर विश्वास करना, कि पाकिस्तान के अलावा बाक़ी हिन्दुस्तान के और टुकड़े नहीं किये जायंगे और बर्तानवी फ़ौजें और अफ़सर जल्दी ही हिन्दुस्तान से पूरे तौर पर कूच कर जायंगे और हुकूमत की पूरी बागडोर हिन्दुस्तान और पाकिस्तान की हुकूमतों को सौंप दी जायगी. सामने की हालत और ज़माने की चाल से आंखें फेरना है.

(१४८)

बर्तानिया की तरफ़ से आज़ादी का सब्ज़ बाग़ पहले पहल उस वक़्त जब कि पिछली जंग में बर्तानिया बहुत गिरी हुई हालत और पस्ती के दौर में से गुज़र रहा था. 'क्रिप्स तजवीज़ों' की शकल में दिखाया गया. जिसको कांग्रेस ने मुल्क के लिये मुज़िर और बुरा ख़्याल करके नामंजूर कर दिया. उसके बाद ही कांग्रेस के 'हिंद छोड़ो!' तजवीज़ के पास करने पर तमाम कांग्रेसी नेताओं को पकड़ कर जेलों में ठूँस दिया गया और 'क्रिप्स आफ़र' से ज़्यादा

صورت اِس کے خلاف گواہی دے رہی ہے. اِس غلط الاپ کی بنا پر دیش کے بٹوارے اور بٹے ہوئے علاقوں کی حفاظت کے لئے برٹش سامراج کا سایہ منظور کرنا جو "ڈومینین اسٹیٹس" یا "برٹش کامن ویلتھ" کے ناموں سے پکارا جاتا ہے سارے ہندستان اور اس کے ہر حصّے کی صحیح اور اصلی آزادی کا بالکل گلا گھونٹنا ہے.

کانگریسی نیتاؤں کا یہ خیال کہ نیا پاکستان آرتھک نگاہ سے ترقّی نہیں کر سکے گا اور اپنی آزادی کو بھی قایم نہیں رکھ سکے گا اور اِس لئے پھر باقی ہندستان سے بہت جلد آ ملے گا یا ایسے برطانوی وعدوں پر وشواس کرنا، کہ پاکستان کے علاوہ باقی ہندستان کے اور ٹکڑے نہیں کئے جائیں گے اور برطانوی فوجیں اور افسر جلدی ہی ہندستان سے پورے طور پر کوچ کر جائیں گے اور حکومت کی پوری باگ ڈور ہندستان اور پاکستان کی حکومتوں کو سونپ دی جائے گی، سامنے کی حالت اور زمانے کی چال سے آنکھیں پھیرنا ہے.

برطانیہ کی طرف سے آزادی کا سبز باغ پہلے پہل اُس وقت جب کہ پچھلی جنگ میں برطانیہ بہت گری ہوئی حالت اور پستی کے دور میں سے گزر رہا تھا، "کرپس تجویزوں" کی شکل میں دکھایا گیا، جس کو کانگریس نے ملک کے لئے مضر اور برا خیال کر کے نامنظور کر دیا. اُس کے بعد ہی کانگریس کے "ہند چھوڑو"! تجویز کے پاس کرنے پر تمام کانگریسی نیتاؤں کو پکڑ کر جیلوں میں ٹھونس دیا گیا اور "کرپس آفر" سے زیادہ بہتر کوئی چیز دینے کا ذکر تک نہیں کیا گیا. لیکن اِس

अरसे में चन्द बहुत ही मार्के की घटनाएं हुईं. नेताजी सुभाष चन्द्र बोस के जगमगाते कारनामों की हिन्दुस्तान में ग़ैर जानकारी को देखकर और सन् १९४२ की तहरीक को कुचल देने के बाद मुल्क में आज़ादी के जोश को ठंडा हुआ समझ कर अंगरेज़ी हुकूमत ने आज़ाद हिन्द के कुछ बहादुर अफ़सरों पर मुक़दमा चलाने की जुर्रत की. इस मुक़दमें में जो आज़ाद हिन्द फ़ौज के कारनामों, उनकी क़ाबलियत और क़ुरबानियों के हाल खुले उन्होंने मुल्क भर में नये सिरे से क़ौमी रूह फूंक दी और देश भक्ति के जज़्बों को इतना उभार दिया कि बर्तानवी हुकूमत के सब से महफ़ूज़ हल्क़ों यानी हिन्दुस्तानी फ़ौजों, जंगी बेड़ों पुलिस और जंगी हवाई महकमों तक में बिला फ़र्क़ मज़हब या मिल्लत ग़ैर मुल्की हुकूमत को उखाड़ फेंकने की खुल्लम खुल्ला कोशिशें होने लगीं. इस उल्टी गंगा को बहते देखकर बर्तानवी हुकूमत के अंग्रेज़ नेता घबड़ा गए. लेकिन राज काज में अपनी होशियारी की वजह से वह फ़ौरन ऐसी चाल खेले कि जिसकी वजह से न सिर्फ़ उठता हुआ तूफ़ान ही आन की आन में बैठ गया बल्कि उसके दुबारा उठने का डर भी अरसे के लिये मिट गया. यानी उन्होंने फ़ौरन पार्लिमेन्टरी कमेटी और कैबिनेट मिशन को एक दूसरे के बाद भेजकर हिन्दुस्तान को बहुत जल्द मुकम्मिल तौर पर आज़ाद कर देने का एलान करा दिया और इसी सिलसिले में बातचीत करने के लिये कांग्रेस लीडरों को भी तुरन्त रिहा कर दिया.

ज़ाहिर है कि हिन्दुस्तानी फ़ौज, जंगी बेड़ों, पुलिस और हवाई बेड़े की बग़ावत कांग्रेसी नेताओं या कारकुनों की कोशिशों

عرصہ میں چند بہت ہی معرکے کی گھٹنائیں ہوئیں۔ نیتا جی سوبھاش چندر بوس کے جگمگاتے کارناموں کی ہندوستان میں غیر جانکاری کو دیکھ کر اور ۱۹۴۲ء کی تحریک کو کچل دینے کے بعد ملک میں آزادی کے جوش کو ٹھنڈا ہوا سمجھ کر انگریزی حکومت نے آزاد ہند کے کچھ بہادر افسروں پر مقدمہ چلانے کی جرأت کی۔ اس مقدمہ میں جو آزاد ہند فوج کے کارناموں، اُن کی قابلیت اور قربانیوں کے حال کھلے انھوں نے ملک بھر میں نئے سرے سے قومی روح پھونک دی اور دیش بھگتی کے جذبوں کو اتنا ابھار دیا کہ برطانوی حکومت کے سب سے محفوظ حلقوں یعنی ہندستانی فوجوں، جنگی بیڑوں، پولیس اور جنگی ہوائی محکموں تک میں بلا فرق مذہب یا ملت غیر ملکی حکومت کو اکھاڑ پھینکنے کی کھلم کھلا کوششیں ہونے لگیں۔ اس اُلٹی گنگا کو بہتے دیکھ کر برطانوی حکومت کے انگریز نیتا گھبرا گئے۔ لیکن راج کاج میں اپنی ہوشیاری کی وجہ سے وہ فوراً ایسی چال کھیلے کہ جس کی وجہ سے نہ صرف اُٹھتا ہوا طوفان ہی آن کی آن میں بیٹھ گیا بلکہ اس کے دوبارہ اُٹھنے کا ڈر بھی عرصہ کے لئے مٹ گیا۔ یعنی انھوں نے فوراً پارلیمنٹری کمیٹی اور کیبنیٹ مشن کو ایک دوسرے کے بعد بھیج کر ہندستان کو بہت جلد مکمل طور پر آزاد کر دینے کا اعلان کر دیا اور اسی سلسلے میں بات چیت کرنے کے لئے کانگریس لیڈروں کو بھی تُرنت رہا کر دیا۔

ظاہر ہے کہ ہندستانی فوج، جنگی بیڑوں، پولیس اور ہوائی بیڑے کی بغاوت کانگریسی نیتاؤں یا کارکنوں کی کوششوں

का नतीजा नहीं थी. दूसरी इनक़लाबी ताक़तें इनकी तह में थीं. लेकिन बर्तानवी हाकिम इन नए इनक़लाबी नेताओं के साथ समझौते की बातचीत करना ठीक नहीं समझते थे. इसके ख़िलाफ़ कांग्रेसी लीडरों के साथ समझौता करना बहुत आसान और आस भरा नज़र आता था. इसी वजह से बर्तानवी नुमाइन्दों ने कांग्रेसी नेताओं की रिहाई के फ़ौरन बाद उनसे समझौते की बातचीत शुरू कर दी.

यह बात चीत जिन जिन दर्जों से गुज़री उनका इस लेख में दुहराना फ़ज़ूल है. अख़बारों के पढ़ने वाले उन सबसे अच्छी तरह वाक़िफ़ हैं. बातचीत के शुरू होते ही एकदम जो क़त्ल, लूट, ग़ारतगरी और गुंडागरदी का दौर शुरू हुआ और अभी तक जगह जगह जारी है. वह दिन की धूप की तरह सब पर रोशन है. इस गुंडागरदी को उसके बाहरी रूप की वजह से फ़िरक़ावाराना फ़िसाद या ख़ानाजंगी समझना बिल्कुल ग़लत और धोका है. फ़िरक़ावाराना फ़िसाद किसी एक फ़िरक़े की तरफ़ से किसी ख़ास गुस्सा दिला देने वाली कार्रवाई का नतीजा होते हैं. बेगुनाह कम तादाद मर्दों औरतों बच्चों और बूढ़ों पर जो सदियों और हज़ारों बरस से साथ साथ रहते सहते चले आए हैं अचानक हमले करना और बिला फ़रक़ क़त्ल और ग़ारतगरी और इंसानियत तक के ख़िलाफ़ ज़ुल्म ढाना जिसकी मिसाल इस तहज़ीबदार हिन्दुस्तान के पिछले ज़माने के किसी दौर में ढूंढे नहीं मिलती, किसी तरह भी हिन्दुस्तानियों की फ़ितरत, आदत, या क़ुदरती दुश्मनी का नतीजा नहीं बताया जा सकता चाहे

کا نتیجہ نہیں تھی۔ دوسری انقلابی طاقتیں اِن کی تہ میں تھیں لیکن برطانوی حاکم اِن نئے انقلابی نیتاؤں کے ساتھ سمجھوتے کی بات چیت کرنا ٹھیک نہیں سمجھتے تھے۔ اِس کے خلاف کانگریسی لیڈروں کے ساتھ سمجھوتا کرنا بہت آسان اور آس بھرا نظر آتا تھا۔ اِسی وجہ سے برطانوی نمائندوں نے کانگریسی نیتاؤں کی رہائی کے فوراً بعد اُن سے سمجھوتے کی بات چیت شروع کر دی۔

یہ بات چیت جن جن درجوں سے گزری اُن کا اِس لیکھ میں دوہرانا فضول ہے۔ اخباروں کے پڑھنے والے اُن سب سے اچھی طرح واقف ہیں۔ بات چیت کے شروع ہوتے ہی ایک دم جو قتل لوٹ، غارت گری اور گنڈاگردی کا دَور شروع ہوا اور ابھی تک جگہ جگہ جاری ہے، وہ دن کی دھوپ کی طرح سب پر روشن ہے۔ اِس گنڈاگردی کو اُس کے باہری روپ کی وجہ سے فرقہ وارانہ فساد یا خانہ جنگی سمجھنا بالکل غلط اور دھوکا ہے۔ فرقہ وارانہ فساد کسی ایک فرقے کی طرف سے کسی خاص غصّہ دلا دینے والی کارروائی کا نتیجہ ہوتے ہیں۔ بےگناہ کم تعداد مردوں عورتوں بچّوں اور بوڑھوں پر جو صدیوں اور ہزاروں برس سے ساتھ ساتھ رہتے سہتے چلے آئے ہیں اچانک حملے کرنا اور بلا فرق قتل اور غارت گری اور انسانیت تک کے خلاف ظلم ڈھانا جس کی مثال اِس تہذیب دار ہندستان کے پچھلے زمانے کے کسی دَور میں ڈھونڈھے نہیں ملتی، کسی طرح بھی ہندستانیوں کی فطرت، عادت، یا قدرتی دشمنی کا نتیجہ نہیں بتایا جا سکتا ہے

इन फ़िसादों की बाहरी शकल फ़िरक़ावाराना हो क्यों न हो. ग़ौर से देखा जाय तो मालूम होगा कि यह झगड़े फ़िरक़ावाराना झगड़े नहीं हैं. क्यों कि—

(१) इन फ़िसादों की ख़बरों के साथ साथ बार बार यह बात भी मोतबिर तौर पर कही जाती रही है कि हमला करने वाले फ़िसादी गिरोहों के नेता बाहर के या ग़ैर सूबों के थे जिनमें फ़ौजी पेन्शनर या पुलिस के कुछ अफ़सर भी शामिल थे. मुक़ामी गुंडे और जुनूनी मिजाज के आदमी, जाहिर है, काफ़ी तादाद में इनके साथ हो जाते थे.

(१६१)

(२) अख़बारों में यह ख़बर भी बार बार छपती रही है कि सूबों के गवर्नरों ने और हिन्दुस्तान के गवर्नर जनरल ने बावजूद दिल्ली सरकार के वज़ीरों की ज़ोरदार सिफ़ारिशों के फ़िसाद को दबाने के लिये अपने ख़ास अख़्तियारों का या तो बिल्कुल इस्तेमाल नहीं किया या मुनासिब वक़्त पर नहीं किया.

(३) आम तौर पर एक वक़्त में एक जगह पर झगड़े खड़े हुए. दूसरी जगह कुछ देर बाद चमके. और एकही सूबे में एक वक़्त एक तरफ़ और कुछ अरसे बाद दूसरी तरफ़, जहां एक फ़िरक़े की आबादी कसरत में हुई, जैसा कि पंजाब में रावल पिंडी और अमृतसर की ग़ारतगरी के बाद गुड़गांव के जिले में. यह बात अच्छी तरह ग़ौर करने की है.

लाज़मी तौर पर यह ख़याल होता है कि एक ही काफ़ी बड़ा गिरोह है जिसमें आमतौर पर शायद फ़ौजी पेन्शनर और कुछ पुलिस वाले भी शामिल हैं जो जगह जगह आग लगाता और लगवाता फिरता है.

اِن فسادوں کی باہری شکل فرقہ وارانہ ہی کیوں نہ ہو۔ غور سے دیکھا جائے تو معلوم ہوگا کہ یہ جھگڑے فرقہ وارانہ جھگڑے نہیں ہیں۔ کیوں کہ ـــ

(۱) اِن فسادوں کی خبروں کے ساتھ ساتھ بار بار یہ بات بھی معتبر طور پر کہی جاتی رہی ہے کہ حملہ کرنے والے فسادی گروہوں کے نیتا باہر کے یا غیر صوبوں کے تھے جن میں فوجی پینشنر یا پولیس کے کچھ افسر بھی شامل تھے۔ مقامی گنڈے اور جنونی مزاج کے آدمی، ظاہر ہے، کافی تعداد میں ان کے ساتھ ہو جاتے تھے۔

(۲) اخباروں میں یہ خبر بھی بار بار چھپتی رہی ہے کہ صوبوں کے گورنروں نے اور ہندوستان کے گورنر جنرل نے باوجود دلّی سرکار کے وزیروں کی زوردار سفارشوں کے فساد کو دبانے کے لیے اپنے خاص اختیاروں کا یا تو بالکل استعمال نہیں کیا یا مناسب وقت پر نہیں کیا۔

(۳) عام طور پر ایک وقت میں ایک جگہ پر جھگڑے کھڑے ہوئے۔ دوسری جگہ کچھ دیر بعد چمکے۔ اور ایک ہی صوبہ میں ایک وقت ایک طرف اور کچھ عرصہ بعد دوسری طرف جہاں ایک فرقہ کی آبادی کثرت میں ہوئی، جیسا کہ پنجاب میں راولپنڈی اور امرتسر کی غنڈاگردی کے بعد گڑگاؤں کے ضلع میں۔ یہ بات اچھی طرح غور کرنے کی ہے۔

لازمی طور پر یہ خیال ہوتا ہے کہ ایک ہی کافی بڑا گروہ ہے جس میں عام طور پر شاید فوجی پینشنر اور کچھ پولیس والے بھی شامل ہیں جو جگہ جگہ آگ لگاتا اور لگواتا پھرتا ہے۔

अगर इन फ़िसादों को ज़्यादा तादाद वालों और कम तादाद वालों के बीच एक दूसरे पर क़ाबू पाने के लिये झगड़े समझा जाय तो सिवाय सूबा बिहार के और किसी ज़्यादा हिन्दुओं वाले सूबों में कम तादाद मुसलमानों पर इसी क़िस्म के ज़ुल्म क्यों न ढाए गये.

अगर इन झगड़ों को फ़िरक़ेवारना ही माना जाय तो सवाल होता है कि सरहदी सूबों में दूसरे मुक़ामों की तरह फ़िरक़ेवाराना शकल में फ़िसाद शुरू होकर फ़ौरन बाद में मुसलिम लीग और मुसलिम क़ौमी गवरमेन्ट के बीच क्यों बदल गया ? सरहदी सूबा सबसे ज़्यादा मुसलिम तादाद रखने वाला सूबा है. और वहां की सरकार के मेम्बरों में भी मुसलिम ज़्यादा हैं फिर अगर यह हिन्दू मुसलिम झगड़े हैं तो मुसलमानों के दो दलों में क्यों होने लगे ?

एक बात मुसलमानों के बारे में यह कही जाती थी कि वह जगह जगह इस लिये सरकशी दिखा रहे थे कि वह सब अपना एक अलग मुल्क यानी 'पाकिस्तान' बनाना चाहते थे जिसको मुल्क की ग़ैर मुसलिम आबादी नहीं बनने देती थी. लेकिन जब हिन्दुओं या ग़ैर मुसलिमों ने पाकिस्तान के असूल पर पाकिस्तानी इलाक़ों से ज़्यादा हिन्दू इलाक़ों को अलग करने की मांग पेश की तो कुछ मुसलिम लीगी नेता इसकी मुख़ालफ़त करने लगे. सिर्फ़ इतना ही नहीं बल्कि यह वादा करने लगे कि 'पाकिस्तान' में कम तादाद ग़ैर मुसलिम के तमाम हक़ों की पूरी हिफ़ाज़त की जायगी और वह पाकिस्तान छोड़कर न जांय. इसके ख़िलाफ़ बिहार में कुछ क़ौमी रहनुमाओं की कामयाब कोशिशों की वजह से फ़िसाद का न सिर्फ़ ख़ातमा ही कर दिया गया बल्कि चले जाने वाले मुसलमानों का

اگر ان فسادوں کو زیادہ تعداد والوں اور کم تعداد والوں کے بیچ ایک دوسرے پر قابو پانے کے لئے جھگڑے سمجھا جائے تو سوائے صوبہ بہار کے اور کسی زیادہ ہندوؤں والے صوبوں میں کم تعداد مسلمانوں پر اسی قسم کے ظلم کیوں نہ ڈھائے گئے.

اگر ان جھگڑوں کو فرقہ وارانہ ہی مانا جائے تو سوال ہوتا ہے کہ سرحدی صوبوں میں دوسرے مقاموں کی طرح فرقہ وارانہ شکل میں فساد شروع ہوکر فوراً بعد میں مسلم لیگ اور مسلم قومی گورنمنٹ کے بیچ کیوں بدل گیا؟ سرحدی صوبہ سب سے زیادہ مسلم تعداد رکھنے والا صوبہ ہے. اور وہاں کی سرکار کے ممبروں میں بھی مسلم زیادہ ہیں پھر اگر یہ ہندو مسلم جھگڑے ہیں تو مسلمانوں کے دو دلوں میں کیوں ہونے لگے؟

ایک بات مسلمانوں کے بارے میں یہ کہی جاتی تھی کہ وہ جگہ جگہ اس لئے سرکشی دکھا رہے تھے کہ وہ سب اپنا ایک الگ ملک یعنی 'پاکستان' بنانا چاہتے تھے جس کو ملک کی غیر مسلم آبادی نہیں بننے دیتی تھی لیکن جب ہندوؤں یا غیر مسلموں نے پاکستان کے اصول پر پاکستانی علاقوں سے زیادہ ہندو علاقوں کو الگ کرنے کی مانگ پیش کی تو کچھ مسلم لیگی نیتا اس کی مخالفت کرنے لگے. صرف اتنا ہی نہیں بلکہ یہ وعدہ کرنے لگے کہ 'پاکستان' میں کم تعداد غیر مسلم کے تمام حقوں کی پوری حفاظت کی جائے گی اور وہ پاکستان چھوڑ کر نہ جائیں. اس کے خلاف بہار میں کچھ قومی رہنماؤں کی کامیاب کوششوں کی وجہ سے فساد کا نہ صرف خاتمہ ہی کر دیا گیا بلکہ چلے جانے والے مسلمانوں کا

इतमीनान भी कर दिया गया. फिर भी अरसे तक कुछ मुस्लिम लीगी नेता बिहार के मुसलमानों को वहां से चले जाने के लिये जोरों से उभारते रहे और उनको बंगाल और सिन्ध जैसे दूर के सूबों में आबाद करने के इन्तजाम करते रहे है.

'पाकिस्तान' के बारे में यह बात बिल्कुल सच्ची है कि अगर वह भी उतना ही आज़ाद रहना चाहता है जैसा बाक़ी हिन्दुस्तान तो न वह आर्थिक लिहाज़ से अपना राज काज चला सकता है न बाहर के हमलों से महफ़ूज़ रह सकता है. फिर भी मुसलमान नेता पाकिस्तान क्यों क़ायम करना चाहते हैं ?

इन पहेलियों और सवालों का हल ढूंढने के लिये पहले दो राज़ों की हक़ीक़त जान लेना ज़रूरी है. अव्वल मुस्लिम लीग की बुनियाद और दूसरे बर्तानवी राज के ख़ातमे की असलियत.

(१५२)

यह बात किसी से छिपी नहीं कि मुस्लिम लीग शुरू में बर्तानवी साम्राज के ख़िताब वालों. वफ़ादारों और सरमायादारों की जमात थी. और अबभी एक दर्जे तक इन्हीं नेताओं की सरदारी में चल रही है. इससे कोई इनकार नहीं कर सकता कि ख़िताब वालों और सरमायादारों की रहनुमाई में कोई जमहूरी संस्था या अवाम के फ़ायदे की जमात नहीं बन सकती. फिर मुस्लिम लीग कैसे आम मुसलमानों की सरपरस्त जमात बन गई. इसकी खोज के लिये बहुत गहराई में नहीं जाना है. मुस्लिम लीग की मांगें और बर्तानवी राज नेताओं की तजवीज़ें आम तौर पर मिलती रही हैं. यह एक खुली हक़ीक़त है. सिन्ध. सरहद. और बंगाल के गवर्नरों की कितने ही

اطمینان بھی کر دیا گیا. پھر بھی عرصہ تک کچھ مسلم لیگی نیتا بہار کے مسلمانوں کو وہاں سے چلے جانے کے لئے زوروں سے اُبھارتے رہے اور اُن کو بنگال اور سندھ جیسے دور کے صوبوں میں آباد کرنے کے انتظام کرتے رہے ہیں.

پاکستان کے بارے میں یہ بات بالکل سچ ہے کہ اگر وہ بھی اُتنا ہی آزاد رہنا چاہتا ہے جیسا باقی ہندوستان تو نہ وہ آرتھک لحاظ سے اپنا راج کاج چلا سکتا ہے نہ باہر کے حملوں سے محفوظ رہ سکتا ہے. پھر بھی مسلمان نیتا پاکستان کیوں قائم کرنا چاہتے ہیں ؟

اِن پہیلیوں اور سوالوں کا حل ڈھونڈھنے کے لئے پہلے دو رازوں کی حقیقت جان لینا ضروری ہے. اوّل مسلم لیگ کی بنیاد اور دوسرے برطانوی راج کے خاتمہ کی اصلیت.

(۱۵۲)

یہ بات کسی سے چھپی نہیں کہ مسلم لیگ شروع میں برطانوی سامراج کے خطاب والوں، وفاداروں اور سرمایہ داروں کی جماعت تھی اور اب بھی ایک درجہ تک انھیں نیتاؤں کی سرداری میں چل رہی ہے. اس سے کوئی انکار نہیں کر سکتا کہ خطاب والوں اور سرمایہ داروں کی رہنمائی میں کوئی جمہوری سنستھا یا عوام کے فائدے کی جماعت نہیں بن سکتی. پھر مسلم لیگ کیسے عام مسلمانوں کی سرپرست جماعت بن گئی. اس کی کھوج کے لئے بہت گہرائی میں نہیں جانا ہے. مسلم لیگ کی مانگیں اور برطانوی راج نیتاؤں کی تجویزیں عام طور پر ملتی رہی ہیں. یہ ایک کھلی حقیقت ہے. سندھ، سرحد اور بنگال کے گورنروں کی کتنے ہی

मामलों में मुसलिम लीग की खुल्लम खुल्ला तरफ़दारी से हिन्दुस्तान का कौन बशिन्दा वाक़िफ़ नहीं. हक़ीक़त में मुसलिम लीग की बहुत सी मांगें देखने में मुसलमानों के फ़ायदे के लिये बताई जाती रहीं, लेकिन बिला शुबह वह ज्यादातर मुसलमानों के फ़ायदे के लिये नहीं बल्कि बर्तानवी साम्राज को क़ायम रखने के हक़ में थीं. ज्यादातर साम्राजी ताक़त की मदद की वजह से ही मुसलिम लीग कामयाब होती रही, न कि अपनी माँग के वाजिब होने की वजह से.

"पाकिस्तान" में जब कम तादाद ग़ैर मुसलिम लोगों के हक़ों की पूरी हिफ़ाज़त के वादे किये जा रहे हैं जैसा कि बाक़ी हिन्दुस्तान में कम तादाद मुसलमानों के, तब ज्यादा मुसलमानों वाले सूबों को मिला कर एक अलग मुसलमान मुल्क बनाने से क्या फ़ायदा ? जमहूरी या लोक राज हुकूमत में अक्सरियत अक्सरियत ही रहेगी यानी बहुमत बहुमत और उसी की चलती रहेगी. अगर 'पाकिस्तान' इस ग़रज़ से बनाया जाता है कि तमाम हिन्दुस्तान में मुसलमानों को ज्यादा तादाद ग़ैर मुसलिम लोगों की मातहती न सहनी पड़े तो ज्यादा हिन्दू या ग़ैर मुसलिम सूबों में कम मुसलमान ग़ैर मुसलिमों की मातहती कैसे सहेंगे ? और अगर खास क़ानून के जरिये इनकी रक्षा की जा सकती है तो तमाम हिन्दुस्तान की हुकूमत में वैसे ही क़ानूनों के ज़रिये हिन्दुस्तान के तमाम मुसलमानों की मिलाकर हिफ़ाज़त क्यों नहीं की जा सकती ?

अ ल में 'इस्लाम खतरे में' या 'हिन्दू धर्म खतरे में' के दोनों वे बुनियाद गलत और ग्रामोफोन रिकार्ड की आवाज़ें हैं.

(१३४)

معاملوں میں مسلم لیگ کی کھلم کھلا طرفداری سے ہندوستان کا کون باشندہ واقف نہیں. حقیقت میں مسلم لیگ کی بہت سی مانگیں دیکھنے میں مسلمانوں کے فائدے کے لئے بتائی جاتی رہیں، لیکن بلاشبہ وہ زیادہ تر مسلمانوں کے فائدے کے لئے نہیں بلکہ برطانوی سامراج کو قائم رکھنے کے حق میں تھیں. زیادہ تر سامراجی طاقت کی مدد کی وجہ سے ہی مسلم لیگ کامیاب ہوتی رہی، نہ کہ اپنی مانگ کے واجب ہونے کی وجہ سے.

"پاکستان" میں جب کم تعداد غیر مسلم لوگوں کے حقوں کی پوری حفاظت کے وعدے کئے جا رہے ہیں جیسا کہ باقی ہندوستان میں کم تعداد مسلمانوں کے، تب زیادہ مسلمانوں والے صوبوں کو ملا کر ایک الگ مسلمان ملک بنانے سے کیا فائدہ؟ جمہوری یا لوک راج حکومت میں اکثریت اکثریت ہی رہے گی یعنی بہومت بہومت اور اسی کی چلتی رہے گی. اگر پاکستان اس غرض سے بنایا جاتا ہے کہ تمام ہندوستان میں مسلمانوں کو زیادہ تعداد غیر مسلم لوگوں کی ماتحتی نہ سہنی پڑے تو زیادہ ہندو یا غیر مسلم صوبوں میں کم مسلمان غیر مسلموں کی ماتحتی کیسے سہیں گے؟ اور اگر خاص قانون کے ذریعہ ان کی رکشا کی جا سکتی ہو تو تمام ہندوستان کی حکومت میں ویسے ہی قانونوں کے ذریعہ ہندوستان کے تمام مسلمانوں کی ملا کر حفاظت کیوں نہیں کی جا سکتی؟

اصل میں 'اسلام خطرے میں' یا 'ہندو دھرم خطرے میں' کے دونوں الاپ بے بنیاد، غلط اور گراموفون ریکارڈ کی آوازیں ہیں.

असली हक़ीक़त सिन्ध वग़ैरा के हाल के ऐलानों से ज़ाहिर हो जाती है. जिनमें यह बातें साफ़ तौर पर ज़ाहिर कर दी गई हैं (१)बर्तानवी अफ़सर सूबे में उन्हीं तनख़ाहों और शर्तों पर काम करते रहेंगे जिन पर बर्तानवी हकूमत के वक़्त में करते रहे हैं. (२) 'पाकिस्तान' बर्तानवी कामनवेल्थ में रहेगा. 'पाकिस्तान' और बर्तानिया के आर्थिक, तिजारती, सनती और सियासी ताल्लुक़ की ज्यादा जानकारी के लिये "Conflict of Nationalism in India" नाम की किताब को जिसका दीवाचा खुद मिस्टर जिन्ना ने लिखा है पढ़ना चाहिये. इस किताब के सफ़ा २२६ पर लिखा है—

"Economically too, the Muslim States being mainly agricultural, will prefer to enter into trade alliances with Great Britain and will exchange its natural produce and raw materials for the textiles and machinery of the former. British Capital will be attracted for investment in industrial and engineering projects in preference to capital from Hindú India. British experts, businessmen, engineers and Technicians will be employed in preference to those from Hindu India".

"मुसलिम इलाक़े ज्यादातर खेती पेशा है. इसलिये माली ख्याल से भी वह ग्रेट ब्रिटेन से तिजारती समझौते करना पसन्द करेंगे. वह अपने यहाँ की कुदरती पैदावार और कच्चे माल को

اصلی حقیقت سندھ وغیرہ کے حال کے اعلانوں سے ظاہر ہو جاتی
جن میں یہ باتیں صاف طور پر ظاہر کردی گئی ہیں۔ (۱) برطانوی افسر
صوبے میں انھیں تنخواہوں اور شرطوں پر کام کرتے رہیں گے جن پر
برطانوی حکومت کے وقت میں کرتے رہے ہیں۔ (۲) 'پاکستان' برطانوی
کامن ویلتھ میں رہے گا۔ 'پاکستان' اور برطانیہ کے آرتھک، تجارتی،
صنعتی اور سیاسی تعلق کی زیادہ جانکاری کے لیے "Conflict of
Nationalism in India" نام کی کتاب کو جس کا
دیباچہ خود مسٹر جناح نے لکھا ہے پڑھنا چاہیئے۔ اس کتاب کے صفحہ ۲۲۶ پر لکھا ہے

"Economically too, the Muslim states being mainly agricultural, will prefer to enter into trade alliances with Great Britain and will exchange its natural produce and raw materials for the textiles and machinery of the former. British Capital will be attracted for investment in industrial and engineering projects in preference to capital from Hindu India. British experts, businessmen, engineers and Technicians will be employed in preference to those from Hindu India."

"مسلم علاقے زیادہ تر کھیتی پیشہ ہیں۔ اس لئے مالی خیال سے بھی وہ گریٹ
برٹن سے تجارتی سمجھوتے کرنا پسند کریں گے۔ وہ اپنے یہاں کی قدرتی پیداوار اور کچے مال کو

देकर ब्रिटेन के बने हुए कपड़े और मशीने लेंगे. अपने कल कारखानों और इनजिनियरी की तजवीजों के लिये वह हिन्दू इंडिया से पूँजी न लेकर इंगलिस्तान से पूँजी लेना ज्यादा पसन्द करेंगे और अंगरेजी पूँजी वहाँ खिंचेगी. हिन्दू इंडिया के माहिरों, इनजिनियरों, व्यापारियों और कारीगारों पर अंगरेज माहिरों इनजिनियरों व्यापारियों और कारीगरों को तरजीह दी जावेगी और उन्हें नौकर रखा जावेगा."

आगे चल कर लिखा है कि अगर हिन्दुस्तान को डोमीनियन स्टेटस दिया जाय "तब भी बर्तानिया का फ़ायदा मुल्क के टुकड़े करने से ज्यादा अच्छी तरह पूरा होगा." सफ़ा २२७ पर लिखा है कि—"अगर हिन्दुस्तान को कामनवेल्थ आफ़ नेशन्स में शरीक करने का इरादा हो तब हिन्दुस्तान अपने आजकल के फैलाव और आबादी की रू से बाक़ी तमाम साथी हकूमतों की मिली हुई ताक़त से ज्यादा ताक़तवर होगा. और इस बिना पर मौक़ा आने पर अपनी आबादी की ज्यादती के मुआफ़िक़ अपनी राय की अहमियत की मांग करेगा—इसलिये इसका इलाज इसी में है कि हिन्दुस्तान को तीन या तीन से ज्यादा हिस्सों में बांट दिया जाय. ऐसा करने से साथी हकूमतों में ज्यादा बराबरी और ज्यादा एकसा बर्ताव का ख्याल पैदा हो जायगा."

(१६७.)

इससे साफ़ ज़ाहिर है कि पाकिस्तान के दावेदारों को मुसलमानों के फ़ायदों के मुक़ाबले में बर्तानिया के फ़ायदे की किस क़दर गहरी फ़िक्र रही है. यही इसकी जल्दी और इस क़दर कामयाबी [illegible] की रफ्तार को काँगरसी नेताओं की

دے کر برٹین کے بنے ہوئے کپڑے اور مشینیں لیں گے۔ اپنے کل کارخانوں اور انجینیری کی تجویزوں کے لئے وہ ہندو انڈیا سے پونجی لے کر انگلستان سے پونجی لینا زیادہ پسند کریں گے اور انگریزی پونجی وہاں کھنچے گی۔ ہندو انڈیا کے ماہروں، انجینیروں بیاپاریوں اور کاریگروں پر انگریز ماہروں، انجینیروں، بیاپاریوں اور کاریگروں کو ترجیح دی جاوے گی اور انھیں نوکر رکھا جاوے گا۔"

آگے چل کر لکھا ہے کہ اگر ہندوستان کو ڈومینین اسٹیٹس دیا جائے "تب بھی برطانیہ کا فائدہ ملک کے ٹکڑے کرنے سے زیادہ اچھی طرح پورا ہوگا۔" صفحہ ۲۲۷ پر لکھا ہے کہ — "اگر ہندوستان کو کامن ویلتھ آف نیشنس میں شریک کرنے کا ارادہ ہو تب ہندوستان اپنے آجکل کے پھیلاؤ اور آبادی کی رو سے باقی تمام ساتھی حکومتوں کی ملی ہوئی طاقت سے زیادہ طاقت ور ہوگا۔ اور اس بنا پر موقع آنے پر اپنی آبادی کی زیادتی کے موافق اپنی رائے کی اہمیت کی مانگ کرے گا۔ اس لئے اس کا علاج اسی میں ہے کہ ہندوستان کو تین یا تین سے زیادہ حصوں میں بانٹ دیا جائے۔ ایسا کرنے سے ساتھی حکومتوں میں زیادہ برابری اور زیادہ ایک سا برتاؤ کا خیال پیدا ہو جائے گا۔"

(۱۹۷)

اس سے صاف ظاہر ہے کہ پاکستان کے دعویداروں کو مسلمانوں کے فائدوں کے مقابلے میں برطانیہ کے فائدے کی کس قدر گہری فکر رہی ہے۔ یہی اس کی جلدی اور اس قدر کامیابی کا بھید ہے۔ اس کی ترقی کی رفتار کو کانگریسی نیتاؤں کی

वैधानिक पालिसी ने यानी लड़ाई और इनक़लाब से बचकर अंग्रेज़ से किसी तरह मिल जुल कर थोथे अख्तियार और नाम की ताक़त हासिल करने की हवस ने ज्यादा तेज़ कर दिया. हिन्दुस्तान की आज़ादी का सवाल बरतानिया और हिन्दुस्तान के बीच है. मुसलिम लीग की मांगें घरेलू मामला था जो देश की आज़ादी हासिल करने के बाद तै करना चाहिये था. लेकिन कांगरेस जिसको कि बर्तानवी साम्राज की मुख़ालिफ़ पार्टियों को संघटित करके आज साम्राजी ताक़तों के मुक़ाबले में जंग करनी थी. वैधानिक जाल या आईनी चक्कर में पड़ कर पुकार पुकार कर कह रही है कि अब उसकी बर्तानवी राज से कोई लड़ाई नहीं बल्कि सिर्फ़ मुल्क में गुंडागर्दी को ख़तम करना है. यह सिर्फ़ देश के टुकड़े कर देने से किस तरह हो सकेगा ? इनसे पूछो इन्होंने साम्राजी ख़ुश्की, समन्दरी और हवाई फ़ौजों और पुलिस की उठती हुई बग़ावतों को रोक तो दिया लेकिन आज तक उसके मुक़ाबले में आईनी ज़रियों से क्या हासिल किया ? क्या यह लोग उन देश भक्त बहादुरों को जो कांगरेस की दमन नीति या आईनी नीति की वजह से अंगरेज़ों के ज़ुल्मों के शिकार हुए या गोलियां खाकर मर गए या जेलों में पड़े सड़ रहे हैं. आज तक रिहा भी करा सके या उनको अंगरेज़ों के बदले की ज्यादतियों से बचा सके जिसका कि इन कांग्रेसी नेताओं ने उस वक़्त वादा किया था ? और तब से अब तक हुकूमत की बागडोर भी यही संभाले हुए हैं. कांगरेसी नेता अपनी बेबसी का इज़हार तो करते हैं लेकिन साथ ही अपनी ग़लती का इक़बाल भी क्यों नहीं करते ?

ویدھانک پالیسی نے یعنی لڑائی اور انقلاب سے بچ کر انگریز سے کسی طرح مل جل کر تھوتھے اختیار اور نام کی طاقت حاصل کرنے کی ہوس نے زیادہ تیز کر دیا. ہندستان کی آزادی کا سوال برطانیہ اور ہندستان کے بیچ ہے. مسلم لیگ کی مانگیں گھریلو معاملہ تھا جو دیش کی آزادی حاصل کرنے کے بعد طے کرنا چاہیے تھا. لیکن کانگریس جس کو کہ برطانوی سامراج کی مخالف پارٹیوں کو سنگٹھت کرکے آج سامراجی طاقتوں کے مقابلے میں جنگ کرنی تھی، ویدھانک جال یا آئینی چکر میں پڑ کر پکار پکار کر کہہ رہی ہے کہ اب اس کی برطانوی راج سے کوئی لڑائی نہیں بلکہ صرف ملک میں گنڈا گردی کو ختم کرنا ہے. یہ صرف دیش کے ٹکڑے کر دینے سے کس طرح ہو سکے گا؟ ان سے پوچھو انھوں نے سامراجی خشکی، سمندری اور ہوائی فوجوں اور پولیس کی اٹھتی ہوئی بغاوتوں کو روک تو دیا لیکن آج تک اس کے مقابلے میں آئینی ذریعوں سے کیا حاصل کیا؟ کیا یہ لوگ ان دیش بھگت بہادروں کو جو کانگریس کی دمن نیتی یا آئینی نیتی کی وجہ سے انگریزوں کے ظلموں کے شکار ہوئے یا گولیاں کھا کر مر گئے یا جیلوں میں پڑے سڑ رہے ہیں، آج تک رہا بھی کرا سکے یا ان کو انگریزوں کے بدلے کی زیادتیوں سے بچا سکے جس کا کہ ان کانگریسی نیتاؤں نے اس وقت وعدہ کیا تھا؟ اور تب سے اب تک حکومت کی باگ ڈور بھی یہی سنبھالے ہوئے ہیں. کانگریسی نیتا اپنی بے بسی کا اظہار تو کرتے ہیں لیکن ساتھ ہی اپنی غلطی کا اقبال بھی کیوں نہیں کرتے؟

हिन्दुस्तानियों को यह बात अच्छी तरह समझ लेनी चाहिये कि किसी भी पोलिटिकल ग़रज़ को पूरा करने के नाम पर लूट मार और ग़ारतगरी की वारदातें महज़ मुल्क के क़ौमी इत्तहाद और आपसी मुहव्बत को हमेशा के लिये तबाह करने के लिये की गई हैं, मुसलमानों या हिन्दुओं या किसी फ़िरक़े या पार्टी के फ़ायदे की ख़ातिर नहीं. और न यह वारदातें आपस के मन मुटाव, निफ़ाक़ या नस्ली या फ़िरक़ेवाराना दुश्मनी का नतीजा हैं जो बरतानवी साम्राज के ख़तम हो जाने के महज़ ऐलान पर उजागर हो गए. आज कौन हिन्दुस्तानी इस तारीख़ी सच्चाई से वाक़िफ़ नहीं कि बर्तानिया ने हिन्दुस्तान को अपनी ताक़त से जंग के जरिये हासिल नहीं किया, बल्कि उस वक्त के रईसों और हुक्मरानों को आपस में लड़ा कर और इस तरह दोनों फ़रीक़ों को कमज़ोर या ख़तम करके यह चालाक अय्यार आप क़ाबिज़ और मालिक बन बैठे. अब वह आज़ाद राजा या रियासतें तो बाक़ी नहीं रहीं. उनकी जगह अब यहां के मज़हबी फ़िरक़ों से काम लिया गया और अपनी पुरानी बन्दर बाँट पालिसी के मुआफ़िक़ नए बदले हुये अन्तर राष्ट्रीय ढाँचे में बर्तानवी साम्राज अपने को नए ढंग पर निर्मान और मज़बूत कर रहा है.

इस काम के लिये साम्राजी हाकिम यहां की तमाम मज़हबी, नसली या रिवाजी कमज़ोरियों और ढोंगों की आड़ लेकर मुल्की इत्तहाद और मुल्की संगठन को तबाह करके नये साम्राजी निज़ाम की बुनियादें डाल रहे हैं. हिन्दुस्तान के लोग इस धोके में न रहें कि महज़ कुछ
... वाले हो सकते हैं. थोड़े

ہندستانیوں کو یہ بات اچھی طرح سمجھ لینی چاہئے کہ کسی بھی پولیٹکل غرض کو پورا کرنے کے نام پر لوٹ مار اور غارتگری کی واردائیں محض ملک کے قومی اتحاد اور آپسی محبت کو ہمیشہ کے لئے تباہ کرنے کے لئے کی گئی ہیں، مسلمانوں یا ہندوؤں یا کسی فرقے یا پارٹی کے فائدے کی خاطر نہیں. اور نہ یہ واردائیں آپس کے من موٹاؤ، نفاق یا نسلی یا فرقہ وارانہ دشمنی کا نتیجہ ہیں جو برطانوی سامراج کے ختم ہوجانے کے محض اعلان پر اجاگر ہوگئے. آج کون ہندستانی اس تاریخی سچائی سے واقف نہیں کہ برطانیہ نے ہندستان کو اپنی طاقت سے جنگ کے ذریعہ حاصل نہیں کیا، بلکہ اس وقت کے رئیسوں اور حکمرانوں کو آپس میں لڑاکر اور اس طرح دونوں فریقوں کو کمزور یا ختم کرکے یہ چالاک عیار آپ قابض اور مالک بن بیٹھے. اب وہ آزاد راجا یا ریاستیں تو باقی نہیں رہیں. ان کی جگہ اب یہاں کے مذہبی فرقوں سے کام لیا گیا اور اپنی پرانی بندر بانٹ پالیسی کے موافق نئے بدلے ہوئے انتر راشٹریہ ڈھانچے میں برطانوی سامراج اپنے کو نئے ڈھنگ پر نرمان اور مضبوط کر رہا ہے.

اس کام کے لئے سامراجی حاکم یہاں کی تمام مذہبی، نسلی یا رواجی کمزوریوں اور ڈھونگوں کی آڑ لے کر ملکی اتحاد اور ملکی سنگٹھن کو تباہ کرکے نئے سامراجی نظام کی بنیادیں ڈال رہے ہیں. ہندستان کے لوگ اس دھوکے میں نہ رہیں کہ محض کچھ مسلمان ہی بٹوارے جیسی چیز کے چاہنے والے ہو سکتے ہیں. تھوڑے

अरसे में वह देखेंगे कि कितने ही राजे, नवाब और हिन्दुस्तानी फ़िरक़े जैसे अछूत, आदिवासी, और कई जात पात या मतों के फ़िरक़े अपने अपने लिये अलग अलग 'स्तान' क़ायम करने के दावे पेश करेंगे और, ज़ाहिर है, कि यह सब बरतानिया की हिफ़ाज़त में ही अपने को क़ायम रख सकेंगे. शायद बटवारे और बरबादी की तसवीर अधूरी रहेगी अगर हिन्दुस्तान में बसने वाले अंगरेज़ भी अपने लिये एक "अंगरेज़िस्तान" की मांग जल्दी या देर से न पेश करदें जो कि बाक़ी सब 'स्तानों' की निस्बत ज़्यादा आज़ाद, हावी और आख़ीर में सब का वारिस या मालिक साबित होगा. यह ख़तरा उसी हालत में है जब कि "हिन्द की आज़ादी" की यह आफ़त भरी बर्तानवी तजवीज़ कामयाब होती रही.

इस क़ौमी बरबादी के काम में कांग्रेसी नेता कुछ कम मदद अंगरेज़ की नहीं कर रहे हैं. आये दिन कांग्रेसी प्लेटफ़ार्म से यह आवाज़ें आती रहती हैं कि फ़ेडरेशन में आज़ाद सूबों को पुरानी भाषाओं और तहज़ीबों की बुनियाद पर बांटा जायगा और आज़ाद रक्खा जायगा. एक तरफ़ तो तमाम हिन्दुस्तान की एक राष्ट्र भाषा और एक तहज़ीब को तसलीम किया जाता है और दूसरी तरफ़ दक़ियानूसी फ़िरक़ों को नए सिरे से उभारने और रायज करने की कोशिश की जाती है. इसका लाज़मी नतीजा एक क़ौम की बहुत सी क़ौमें बनाने के सिवा और कुछ नहीं हो सकता. इसी असूल को मानने की वजह से आज जो फ़िरक़े अपने अलग अलग आज़ाद राज क़ायम करना चाहते हैं उनको बढ़ावा मिल रहा है.

अब रहा यह सवाल कि क्या बर्तानवी राज यहाँ सचमुच

عرصے میں وہ دیکھیں گے کہ کتنے ہی راجے، نواب اور ہندستانی فرقے جیسے اچھوت، آدی باسی، اور کئی جات پات یا متوں کے فرقے اپنے اپنے لئے الگ الگ 'استان' قایم کرنے کے دعوے پیش کریں گے اور، ظاہر ہے کہ یہ سب برطانیہ کی حفاظت میں ہی اپنے کو قایم رکھ سکیں گے. شاید بٹوارے اور بربادی کی تصویر ادھوری رہے گی اگر ہندستان میں بسنے والے انگریز بھی اپنے لئے ایک "انگریزستان" کی مانگ جلدی یا دیر سے نہ پیش کردیں جو کہ باقی سب 'استانوں' کی نسبت زیادہ آزاد، حاوی اور آخر میں سب کا وارث یا مالک ثابت ہوگا. یہ خطرہ اسی حالت میں ہے جب کہ "ہند کی آزادی" کی یہ آفت بھری برطانوی تجویز کامیاب ہوتی رہی.

اس قومی بربادی کے کام میں کانگریسی نیتا کچھ کم مدد انگریز کی نہیں کر رہے ہیں. آئے دن کانگریسی پلیٹ فارم سے یہ آوازیں آتی رہتی ہیں کہ فیڈریشن میں آزاد صوبوں کو پرانی بھاشاؤں اور تہذیبوں کی بنیاد پر بانٹا جائے گا اور آزاد رکھا جائے گا. ایک طرف تو تمام ہندستان کی ایک راشٹر بھاشا اور ایک تہذیب کو تسلیم کیا جاتا ہے اور دوسری طرف دقیانوسی فرقوں کو نئے سرے سے ابھارنے اور رائج کرنے کی کوشش کی جاتی ہے. اس کا لازمی نتیجہ ایک قوم کی بہت سی قومیں بنانے کے سوا اور کچھ نہیں ہوسکتا. اسی اصول کو ماننے کی وجہ سے آج جو فرقے اپنے الگ الگ آزاد راج قایم کرنا چاہتے ہیں ان کو بڑھاوا مل رہا ہے.

اب رہا یہ سوال کہ کیا برطانوی راج یہاں سچ مچ

खतम हो रहा है ? ऐलानों के मुताबिक—हां. लेकिन जो कुछ आंखों से दिखाई दे रहा है उसकी रोशनी में सिर्फ़ बर्तानवी राज को नया रूप दिया जा रहा है. जब बंदर बांट की पालिसी पर चलते हुए बर्तानियां वहां के करोड़ों बाशिन्दों पर मुट्ठी भर अफ़सरों और थोड़ी सी अंगरेजी फ़ौज के जरिये इस क़दर कामयाबी के साथ राज काज चलाता रहा है, तो इस देश में कई, नाम को आज़ाद लेकिन एक दूसरे की वैरी, हकूमतें बनाकर जिनकी तरक्क़ी, फ़ायदा बल्कि वजूद भी बग़ैर हमसाया हकूमतों को नुक़सान पहुंचाए मुशकिल दिखाई देगा और जो बग़ैर बर्तानिया की मदद के तरक्क़ी नहीं कर सकेंगी, बर्तानिया को इतने भी अंगरेज़ हाकिम और फ़ौज रखने की क्या जरूरत है ? आज कल की स्कीम के पूरा होने पर हिन्दुस्तान के बाशिन्दे, जाहिर है, आज़ाद रक़बों में रहने सहने के लिये बर्तानिया के हर तरह ज्यादा मुहताज होंगे. इस लिये बर्तानिया हिन्दुस्तानियों की दरख्वास्त पर खास खास मुक़ामों में अपने हाकिम, कारपरदाज़ और जरूरी फ़ौज रखने के अलावा राज काज के छोटे छोटे मामलों में दखल देने की जरूरत न देखेगा. निचोड़ यह कि बर्तानिया यहाँ से जा नहीं रहा है बल्कि पहले की तरह "सिर्फ़ हिन्दुतानियों की हिफ़ाज़त, भलाई और फ़ायदे की ख़ातिर, अपनी मरज़ी के खिलाफ़, हिन्दुस्तान में मौजूद रहेगा लेकिन बहुत थोड़ी ताक़त में, और इस बोझीली जिम्मेवारी के फ़र्ज़ हमेशा ही पूरे करता रहेगा". हिन्द के बाशिन्दे तसल्ली रक्खें.

ختم ہو رہا ہے؟ اعلانوں کے مطابق—ہاں۔ لیکن جو کچھ آنکھوں سے دکھائی دے رہا ہے اس کی روشنی میں صرف برطانوی راج کو نیا روپ دیا جا رہا ہے۔ جب بندر بانٹ کی پالیسی پہ چلتے ہوئے برطانیہ یہاں کے کروڑوں باشندوں پر مٹھی بھر افسروں اور تھوڑی سی انگریزی فوج کے ذریعہ اس قدر کامیابی کے ساتھ راج کاج چلاتا رہا ہے، تو اس دیش میں کئی، نام کو آزاد لیکن ایک دوسرے کی بیری، حکومتیں بنا کر جن کی ترقی، فائدہ بلکہ وجود بھی بغیر ہمسایہ حکومتوں کو نقصان پہنچائے مشکل دکھائی دے گا اور جو بغیر برطانیہ کی مدد کے ترقی نہیں کر سکیں گی، برطانیہ کو اتنے بھی انگریز حاکم اور فوج رکھنے کی کیا ضرورت ہے؟ آج کل کی اسکیم کے پورا ہونے پر ہندستان کے باشندے، ظاہر ہے، آزاد رقبوں میں رہنے سہنے کے لئے برطانیہ کے ہر طرح زیادہ محتاج ہوں گے۔ اس لئے برطانیہ ہندستانیوں کی درخواست پر خاص خاص مقاموں میں اپنے حاکم، کارپرداز اور ضروری فوج رکھنے کے علاوہ راج کاج کے چھوٹے چھوٹے معاملوں میں دخل دینے کی ضرورت نہ دیکھے گا۔ نچوڑ یہ کہ برطانیہ یہاں سے جا نہیں رہا ہے بلکہ پہلے ہی کی طرح "صرف ہندستانیوں کی حفاظت، بھلائی اور فائدے کی خاطر، اپنی مرضی کے خلاف، ہندستان میں موجود رہے گا لیکن بہت تھوڑی طاقت میں، اور اس بوجھیلی ذمہ داری کے فرض ہمیشہ ہی پورے کرتا رہے گا۔" ہند کے باشندے تسلی رکھیں۔

[illegible]

बर्तानिया में जंगी क़ाबलियत रखने वालों और उस्ताद कारीगरों और जानकारों की कमी हो गई. आज कल जब कि दूसरी आलमगीर जंग बहुत नजदीक नजर आ रही है यह जरूरत और भी बढ़ गई कि बर्तानवी फ़ौजें और दूसरी क़ौमी ताक़तें कारीगर वग़ैरा ज्यादा से ज्यादा तादाद में बर्तानिया की घरेलू हिफ़ाजत और क़ौमी काम के लिये हर वक़्त उसके हाथ में रहें. इसीलिये बर्तानिया के मातहत मुल्कों के राजकाजी ढाँचे में काया पलट तबदीलियां करना लाजमी हो गया. यही वजह हिन्दुस्तान में आजादी के ढोल पीटने की है. एशिया के दूसरे मुल्कों में भी बर्तानवी साम्राज के वहां से हट जाने की आवाजें उठने लगीं. सब जगह मुल्कों के बटवारे की नई चाल ने आजादी के प्यासे देश भक्तों की उमंगों और उम्मीदों पर पानी फेर रक्खा है. मिस्र, अरब, फ़िलस्तीन, हिन्दुस्तान, बरमा, मलाया वग़ैरा देश सब ही इस बटवारे के जाल से तंग और परेशान नजर आ रहे हैं. इतना ही नहीं, बर्तानिया जो अपने साम्राज का दुनिया में ख़ातमा करने का ढोल पीट रहा है और अपने सब मातहत मुल्कों को आजाद करने का ऐलान कर रहा है दूसरे साम्राजों की पुष्टि और मजबूती के लिये वहां की कमजोर रिआया पर ख़ुद बिन बुलाए दूसरे मुल्कों का ठेकेदार बन कर कौन से जुल्म नहीं ढा रहा है. जावा की हालत इसकी एक ताजा मिसाल है.

हिन्दुस्तानियों का यह समझना कि बर्तानिया सचमुच हिन्दुस्तान छोड़ रहा है अपने आप को सख़्त धोके में डालना है.

برطانیہ میں جنگی قابلیت رکھنے والوں اور اُستاد کاریگروں اور جانکاروں کی کمی ہوگئی. آج کل جب کہ دوسری عالمگیر جنگ بہت نزدیک نظر آرہی ہے یہ ضرورت اور بھی بڑھ گئی کہ برطانوی فوجیں اور دوسری قومی طاقتیں کاریگر وغیرہ زیادہ سے زیادہ تعداد میں برطانیہ کی گھریلو حفاظت اور قومی کام کے لئے ہر وقت اُس کے ہاتھ میں رہیں. اس لئے برطانیہ کے ماتحت ملکوں کے راج کاجی ڈھانچے میں کایا پلٹ تبدیلیاں کرنا لازمی ہوگیا. یہی وجہ ہندستان میں آزادی کے ڈھول پیٹنے کی ہے. ایشیا کے دوسرے ملکوں میں بھی برطانوی سامراج کے وہاں سے ہٹ جانے کی آوازیں اُٹھنے لگیں. سب جگہ ملکوں کے بٹوارے کی نئی چال نے آزادی کے پیاسے دیش بھگتوں کی اُمنگوں اور اُمیدوں پر پانی پھیر رکھا ہے. مصر، عرب، فلسطین، ہندستان، برما، ملایا وغیرہ دیش سب ہی اس بٹوارے کے جال سے تنگ اور پریشان نظر آرہے ہیں. اتنا ہی نہیں، برطانیہ جو اپنے سامراج کا دُنیا میں خاتمہ کرنے کا ڈھول پیٹ رہا ہے اور اپنے سب ماتحت ملکوں کو آزاد کرنے کا اعلان کر رہا ہے دوسرے سامراجوں کی پُشٹی اور مضبوطی کے لئے وہاں کی کمزور رعایا پر خود بن بُلائے دوسرے ملکوں کا ٹھیکیدار بن کر کون سے ظلم نہیں ڈھا رہا ہے. جاوا کی حالت اس کی ایک تازہ مثال ہے.

ہندستانیوں کا یہ سمجھنا کہ برطانیہ سچ مُچ ہندستان چھوڑ رہا ہے اپنے آپ کو سخت دھوکے میں ڈالنا ہے.

ज़ाहिर है कि अभी तक बर्तानिया की असली तजवीज़ का रूप परदे में ही है. इसलिये पूरे तौर पर यह नहीं कहा जा सकता कि बर्तानिया किस किस तरह हिन्दुस्तान को अपने चंगुल में रक्खेगा. लेकिन जो हालतें इस मुल्क में और बर्तानिया के मातहत दूसरे मुल्को में नज़र आ रही हैं इतना अन्दाज़ा लगाने के लिये कम नहीं कि ऊँट किस करवट बैठने को है.

हिन्दुस्तान के बटवारे पर बर्तानिया में ख़ुशी,

ख़ास ख़ास हिन्दुस्तानी रियासतों को हिन्दुस्तान की हुकूमत से अलग आज़ाद राज क़ायम करने की क़ानूनी आसानी और छिप छिप तरग़ीब,

और सारे मुल्क में फूट के बीजों और मसालों को उभा कर क़ौमी संगठन के ख़िलाफ़ संगठित और मज़बूर करना,

गवर्नरों और गवर्नर जनरल का शर्मनाक फ़िसाद को बन्द करने के लिये ठीक क़दम न उठाना,

यह सब चीज़ें साफ़ इस तरफ़ इशारा कर रही हैं कि "आने वाली आज़ादी" असल में क्या होगी—नाम की आज़ादी भी होगी या सिर्फ़ बढ़ती हुई बरबादी?

हम अपने हम वतनों को चेतावनी देना चाहते हैं कि वह इस "आज़ादी" के ऐलान को या बज़ाहिर मुल्क से अंगरेज़ी फ़ौजों के के चले जाने और अंगरेज़ अफ़सरों के न रहने को आगे के लिये अपनी अज़ादी या किसी सुख की अलामत न समझें.

अगर फ़िरक़ेवाराना भेद भाव बढ़ता गया, क़तल लूट

ظاہر ہے کہ ابھی تک برطانیہ کی اصلی تجویز کا روپ پردے میں ہی ہے. اِس لئے پورے طور پر یہ نہیں کہا جا سکتا کہ برطانیہ کس کس طرح ہندستان کو اپنے چنگل میں رکھے گا. لیکن جو حالتیں اِس ملک میں اور برطانیہ کے ماتحت دوسرے ملکوں میں نظر آ رہی ہیں اِتنا اندازہ لگانے کے لئے کم نہیں کہ اونٹ کس بل کروٹ بیٹھنے کو ہے.

ہندستان کے بٹوارے پر برطانیہ میں خوشی،

خاص خاص ہندستانی ریاستوں کو ہندستان کی حکومت سے الگ آزاد راج قایم کرنے کی قانونی آسانی اور چھپ چھپ ترغیب،

اور سارے ملک میں پھوٹ کے بیجوں اور مسالوں کو ابھار کر قومی سنگٹھن کے خلاف سنگٹھت اور مضبوط کرنا،

گورنروں اور گورنر جنرل کا شرمناک فسادوں کو بند کرنے کے لئے ٹھیک قدم نہ اٹھانا،

یہ سب چیزیں صاف اِس طرف اشارہ کر رہی ہیں کہ "آنے والی آزادی" اصل میں کیا ہوگی — نام کی آزادی بھی ہوگی یا صرف بڑھتی ہوئی بربادی؟

ہم اپنے ہم وطنوں کو چتاونی دینا چاہتے ہیں کہ وہ اِس "آزادی" کے اعلان کو یا بظاہر ملک سے انگریزی فوجوں کے چلے جانے اور انگریز افسروں کے نہ رہنے کو آگے کے لئے اپنی آزادی یا کسی سکھ کی علامت نہ سمجھیں.

اگر فرقہ وارانہ بھید بھاو بڑھتا گیا، قتل، لوٹ

ग़ारतगरी और तबाही के साधन जारी रहे तो यह फूट की मूर्ति बढ़ते बढ़ते और शकल अख़्तियार करके तमाम हिन्दुस्तानी क़ौम की असली हिलाकत और बरबादी का क़तई सबब होगी. अगर बर्तानिया की "आज़ादी" की तजवीज़ बर्तानवी मंशा के मुताबिक़ कामयाब हो गई तो यह नामुमकिन नहीं कि अगले पचास पछत्तर साल में हिन्दुओं और मुसलमानों दोनों का इस देश में नाम निशान बाक़ी न रहे और हिन्दुस्तान आस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैंड और अमरीका की तरह सिर्फ़ एक सफ़ेद बस्ती बन जाय. यह क़यास, ज़ाहिर है, कि सिर्फ़ एक क़यास ही है. पर राज काज (१०) में मुस्तक़बिल या भविष्य के हर मुमकिन पहलू को नज़र में रखना ज़रूरी है. और इसीलिये हमारे मुस्तक़बिल की यह तसवीर भी देश भक्तों की नज़र से ओझल नहीं रहनी चाहिये.

हिन्दुस्तान का बटवारा एक और आलमगीर ख़तरे का भी पेशख़ेमा यानी उसका श्री गनेश नज़र आता है. इसका सिलसिला सारे एशियाई मुल्कों में क़ायम किया जायगा. मिस्र में ख़ुद लीग के एक ख़ास बड़े लीडर के ज़रिये डोरे डाले जाने शुरू हो चुके हैं. मलाया के कुछ लोगों की तरफ़ से ऐसे ही बटवारे की मांग की आवाज़ सुनाई दे चुकी है. फ़िलस्तीन में यहूदियों का एक अलग मज़हबी राज बनाना और अरब में दो अलग अलग हकूमतें क़ायम करना सारे मुल्क को मिटाना है. ग़रज़ जीती जागती दुनिया में जब कि मज़हब की इस तरह की अहमियत का ख़ात्मा मुद्दतों पहले हो चुका है एशिया के मुल्कों यानी कमज़ोर और पस्त

غارت گری اور تباہی کے سادھن جاری رہے تو یہ پھوٹ کی مورتی بڑھتے بڑھتے اور شکل اختیار کرکے تمام ہندستانی قوم کی اصلی ہلاکت اور بربادی کا قطعی سبب ہوگی۔ اگر برطانیہ کی "آزادی" کی تجویز برطانوی منشاء کے مطابق کامیاب ہوگئی تو یہ ناممکن نہیں کہ اگلے پچاس پچھتر سال میں ہندوؤں اور مسلمانوں دونوں کا اس دیش میں نام نشان باقی نہ رہے اور ہندستان آسٹریلیا، نیوزیلینڈ اور امریکا کی طرح صرف ایک سفید بستی بن جائے۔ یہ قیاس، ظاہر ہے کہ صرف ایک قیاس ہی ہے۔ پر راج کاج میں مستقبل یا بھوشیہ کے ہر ممکن پہلو کو نظر میں رکھنا ضروری ہے۔ اور اسی لئے ہمارے مستقبل کی یہ تصویر بھی دیش بھگتوں (۱۰) کی نظر سے اوجھل نہیں رہنی چاہئے۔

ہندستان کا بٹوارہ ایک اور عالمگیر خطرے کا بھی پیش خیمہ یعنی اس کا شری گنیش نظر آتا ہے۔ اس کا سلسلہ سارے ایشیائی ملکوں میں قایم کیا جائے گا۔ مصر میں خود لیگ کے ایک خاص بڑے لیڈر کے ذریعے ڈورے ڈالے جانے شروع ہوچکے ہیں۔ ملایا کے کچھ لوگوں کی طرف سے ایسے ہی بٹوارے کی مانگ کی آواز سنائی دے چکی ہے۔ فلسطین میں یہودیوں کا ایک الگ مذہبی راج بنانا اور عرب میں دو الگ الگ حکومتیں قایم کرنا سارے ملک کو مٹانا ہے۔ غرض جیتی جاگتی دنیا میں جب کہ مذہب کی اس طرح کی اہمیت کا خاتمہ مدتوں پہلے ہوچکا ہے ایشیا کے ملکوں یعنی کمزور اور پست

क़ौमों को मज़हबी खोलों में क़ैद करना सिर्फ़ साम्राजी ताक़तों के लिये ज्यादा ताक़त और उनकी उमर में बढ़ौती के सिवा किसी भी एशियाई क़ौम या गिरोह के लिये फ़ायदे की चीज़ नहीं हो सकता.

ख़ुदा करे कि हिन्दुस्तान के और पाकिस्तान के हिन्दू और मुसलमान दोनों जल्दी ही एक दिन इस जाल की हक़ीक़त को समझें और इससे निकलने की सच्ची और अमली कोशिश करें. आईनी तरीक़ों पर चलने से फ़िरक़ेवाराना झगड़े ज्यादा बढ़ेंगे—घटेंगे नहीं. क़ानून या आईन सियासत की जगह नहीं ले सकता. सियासत की अमली बुनियाद आपस के सच्चे प्रेम और क़ुरबानी पर है. आईनी तरक़्क़ी की बुनियाद मौजूदा हुकूमत की इजाज़त पर है. मौजूदा हुकूमत से आज़ादी छीनने के लिये अमली क़दम उठाना चाहिये. आईन यानी वैधानिक कोशिश से कुछ सुधार हासिल किये जा सकते हैं, गुलामी दूर नहीं की जा सकती.

"हार"

(जनाब अल्ताफ़ मशहदी)

पच्छिम ने पूरब के अन्धे सूरज को बख़्शा उजियारा
डगमग डगमग करती नैया को सौंपा मज़बूत किनारा
देख समय को एक-रंगे सेह-रंगे परचम जोश में आए
क्रोध कपट के ख़ूनी तूफ़ाँ नींद से चौंके होश में आए
तसबीहों और मालाओं की दुनिया में भूचाल था आया
मन्दिर से मसजिद टकराई मसजिद से मन्दिर टकराया

सेह-रंगे = तिरंगे, परचम = झंडे.

قوموں کو مذہبی خولوں میں قید کرنا صرف سامراجی طاقتوں کے لئے زیادہ طاقت اور اُن کی عمر میں بڑھوتی کے سوا کسی بھی ایشیائی قوم یا گروہ کے لئے فائدے کی چیز نہیں ہو سکتا۔

خدا کرے کہ ہندستان کے اور پاکستان کے ہندو اور مسلمان دونوں جلدی ہی ایک دن اس جال کی حقیقت کو سمجھیں اور اس سے نکلنے کی سچی اور عملی کوشش کریں۔ آئینی طریقوں پر چلنے سے فرقہ وارانہ جھگڑے زیادہ بڑھیں گے۔ گھٹیں گے نہیں۔ قانون یا آئین سیاست کی جگہ نہیں لے سکتا۔ سیاست کی عملی بنیاد آپس کے سچے پریم اور قربانی پر ہے۔ آئینی ترقی کی بنیاد موجودہ حکومت کی اجازت پر ہے۔ موجودہ حکومت سے آزادی چھیننے کے لئے عملی قدم اٹھانا چاہئے۔ آئینی یعنی ویدھانک کوشش سے کچھ سدھار حاصل کئے جا سکتے ہیں، غلامی دور نہیں کی جا سکتی۔

"ہار"

(جناب الطاف مشہدی)

پچھم نے پورب کے اندھے سورج کو بخشا اُجیارا
ڈگمگ ڈگمگ کرتی نیّا کو سونپا مضبوط کنارا
دیکھ سمے کو ایک رنگے سہ رنگے پرچم جوش میں آئے
کرودھ کپٹ کے خونیں طوفاں نیند سے چونکے ہوش میں آئے
تسبیحوں اور مالاؤں کی دُنیا میں بھونچال تھا آیا
مندر سے مسجد ٹکرائی مسجد سے مندر ٹکرایا

سہ رنگے = ترنگے، پرچم = جھنڈے۔

एकता की अर्थी को लेकर काँधों पर निकले हमसाए
अपनों ने अपनों की लाशों से जंगल में शहर बसाए
मन में लेकर क्रोध की अग्नि होठों पर ज़हरीली बोली
इनसानों ने मिल कर खेली इनसानों के ख़ून से होली
सुन्दर और शर्मीली धरती के होठों पर चीख़ें काँपीं
लालच की व्याकुल दौड़ों में प्रीत लताएँ थक कर काँपीं.
मज़हब की अंधियारी उट्ठी शोलों की मालाएँ लेकर
शहरों को शमशान बनाने की मन में आशाएं लेकर
(४८) कलरवियों ने तोड़ के रख दी सुन्दरता की सुन्दर थाली
भेड़ों की सब रखवालों ने भेड़िये बन कर की रखवाली
लाशों की सीढ़ी से होकर ऊँचाई की गोद में पहुँचे
ऊँचे होने वाले गोया गहराई की गोद में पहुँचे
आशाओं के सूरज राहों में उजियारा बन कर फैले
ज़ुल्म के बादल लेकिन धरती पर अंधियारा बन कर फैले
योरप के बेटों ने जीवन की देवी को पत्थर मारे
अब मैं माना पच्छिम वालो! पच्छिम जीता और हम हारे.

—(उर्दू 'आज कल से')

कलरवियों = झगड़ालुओं.

ایکتا کی ارتھی کو لے کر کاندھوں پر نکلے ہمسائے
اپنوں نے اپنوں کی لاشوں سے جنگل میں شہر بسائے
من میں لے کر کرودھ کی اگنی ہونٹوں پر زہریلی بولی
انسانوں نے مل کر کھیلی انسانوں کے خوں سے ہولی
سُندر اور شرمیلی دھرتی کے ہونٹوں پر چیخیں کانپیں
لالچ کی بیاکل دوڑوں میں پیت لتائیں تھک کر کانپیں
مذہب کی اندھیاری اُٹھی شعلوں کی مالائیں لے کر
شہروں کو شمشان بنانے کی من میں آشائیں لے کر
کل رویوں نے توڑ کے رکھ دی سُندرتا کی سُندر تھالی
بھیڑوں کی سب رکھوالوں نے بھیڑیے بن کر کی رکھوالی
(۴۸) لاشوں کی سیڑھی سے ہو کر اونچائی کی گود میں پہنچے
اونچے ہونے والے گویا گہرائی کی گود میں پہنچے
آشاؤں کے سورج راہوں میں اُجیارا بن کر پھیلے
ظلم کے بادل لیکن دھرتی پر اندھیارا بن کر پھیلے
یورپ کے بیٹوں نے جیون کی دیوی کو پتھر مارے
اب میں مانا پچھم والو! پچھم جیتا اور ہم ہارے
(اردو 'آج کل' سے)

کل رویوں = جھگڑالوؤں۔

आज की दुनिया

(श्री 'फ़ुन्जियन')

❀ इनडिपेनडेन्स एक्ट से सन् १९३५ के इण्डिया ऐक्ट में कुछ तरमीमें और उस एक्ट का फिर से पक्का किया जाना ❀

❀ आगे कभी भी इधर से उधर इलाक़े अदले बदले जा सकने की गुन्जायश ❀

❀ हकूमतों के अन्दर हकूमतें और गवरनर जेनरल को दख़ल देने का अख़्तियार ❀

❀ नए भेस में साम्राजशाही की मज़बूती ❀

❀ अंगरेज़ी फ़ौजों को हिन्दुस्तान के अन्दर और बाहर ग़ैरमामूली हक़ ❀

❀ फ़ौजों पर दोअमली और उससे ख़तरे ❀

❀ हिंदुस्तान और पाकिस्तान क्राउन कालोनियों के बराबर❀

❀ क्राउन रेप्रेज़ेनटेटिव यानी गवरनर जनरल ब्रिटिश सरकार का एजेन्ट❀

❀ इन "आज़ाद डोमीनियनों" के अख़्तियारों में हमेशा की दस्तन्दाज़ी❀

सन् '३५ के एक्ट का दोहराया जाना—

हिन्दुस्तान की आज़ादी का जो क़ानून 'इन्डियन इनडिपेनडेन्स एक्ट' के नाम से इंगलिस्तान की पार्लिमेन्ट ने पास किया है उसमें

آج کی دُنیا

(شری 'فرنزین')

+ انڈیپنڈینس ایکٹ سے سنہ ۱۹۳۵ کے انڈیا ایکٹ میں کچھ ترمیمیں اور اُس ایکٹ کا پھر سے پکا کیا جانا +

+ آگے کبھی بھی ادھر سے اُدھر علاقے اَدلے بدلے جاسکنے کی گنجائش +

+ حکومتوں کے اندر حکومتیں اور گورنر جنرل کو دخل دینے کا اختیار +

+ نئے بھیس میں سامراج شاہی کی مضبوطی +

+ انگریزی فوجوں کو ہندستان کے اندر اور باہر غیر معمولی حق +

+ فوجوں پر دو عملی اور اُس سے خطرے +

+ ہندستان اور پاکستان کراؤن کالونیوں کے برابر +

+ کراؤن ریپریزنٹیٹیو یعنی گورنر جنرل برٹش سرکار کا ایجنٹ +

+ ان "آزاد ڈومینیوں" کے اختیاروں میں ہمیشہ کی دست اندازی +

سنہ ۳۵ کے ایکٹ کا دُہرایا جانا—

ہندستان کی آزادی کا جو قانون 'انڈین انڈیپنڈنس ایکٹ' کے نام سے انگلستان کی پارلیمنٹ نے پاس کیا ہے اُس میں

सब से पहली और सबसे बड़ी बात यह है कि यह नया क़ानून सिर्फ़ सन् १९३५ के गवरमेन्ट आफ़ इन्डिया एक्ट में कुछ तरमीम करके उसे फिर से पक्का कर देता है. तरमीमें जो की गई हैं वह यह हैं—हिन्दुस्तान के दो टुकड़े कर दिये गए, एक हिन्दुस्तान और दूसरा पाकिस्तान, हिन्दुस्तानी रियासतों पर से इंगलिस्तान के बादशाह की चौधरायत नाम के लिये हटा दी गई. और इन दोनों बातों से जो नई हालत पैदा हुई उसके लिये मुनासिब इन्तज़ाम कर दिया गया.

अगर यही आज़ादी है तो सन् '३५ के जिस क़ानून के मातहत अब तक हम पर हकूमत होती थी उसके रहते भी हम आज़ाद थे, बल्कि उस वक़्त इतना और अच्छा था कि मुल्क के दो टुकड़े नहीं हुए थे.

नए क़ानून के शुरू ही में, उसके प्रीएमबल में लिखा है कि—"सन् '३५ के गवरमेन्ट आफ़ इन्डिया एक्ट में कुछ बातें ऐसी थीं जिनका सम्बन्ध इन दो नई अलग अलग 'डोमीनियनों'❀ के बाहर से था, उनकी जगह दूसरी चीज़ें रखना और इन अलग अलग डोमीनियनों के क़ायम होने से जो नई हालतें पैदा होंगी उनका इन्तज़ाम करना" इस बिल का मक़सद है. यही बात बिल

❀ कैनेडा, आस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैन्ड जैसे उन मुल्कों को इंगलिस्तान की 'डोमीनियन' कहा जाता है जिनके पुराने वाशिन्दों को मिटा कर अंगरेज़ वहाँ जा बसे हैं और जहाँ की सरकारें कुछ बातों में आज़ाद और कुछ में इंगलिस्तान के मातहत और उसके साथ नत्थी हैं. —एडिटर

سب سے پہلی اور سب سے بڑی بات یہ ہے کہ یہ نیا قانون صرف ۱۹۳۵ء کے گورنمنٹ آف انڈیا ایکٹ میں کچھ ترمیم کرکے اُسے پھر سے پکا کر دیتا ہے۔ ترمیمیں جو کی گئی ہیں وہ یہ ہیں— ہندستان کے دو ٹکڑے کر دئے گئے، ایک ہندستان اور دوسرا پاکستان، ہندستانی ریاستوں پر سے انگلستان کے بادشاہ کی چودھرایت نام کے لئے ہٹا دی گئی، اور ان دونوں باتوں سے جو نئی حالت پیدا ہوئی اُس کے لئے مناسب انتظام کر دیا گیا۔

مگر یہی آزادی ہے تو ۳۵ء کے جس قانون کے ماتحت اب تک ہم پر حکومت ہوتی تھی اُس کے رہتے بھی ہم آزاد تھے، بلکہ اُس وقت اتنا اور اچھا تھا کہ ملک کے دو ٹکڑے نہیں ہوئے تھے۔

نئے قانون کے شروع ہی میں، اُس کے پریمبل میں لکھا ہے کہ "۳۵ء کے گورنمنٹ آف انڈیا ایکٹ میں کچھ باتیں ایسی تھیں جن کا سمبندھ ان دو نئی الگ الگ ڈومینینوں❀ کے باہر سے تھا، اُن کی جگہ دوسری چیزیں رکھنا اور ان الگ الگ ڈومینینوں کے قایم ہونے سے جو نئی حالتیں پیدا ہوں گی اُن کا انتظام کرنا" اس بل کا مقصد ہے۔ یہی بات بل

❀ کنیڈا، آسٹریلیا، نیوزیلینڈ جیسے اُن ملکوں کو انگلستان کی 'ڈومینین' کہا جاتا ہے جن کے پُرانے باشندوں کو مٹاکر انگریز وہاں جا بسے ہیں اور جہاں کی سرکاریں کچھ باتوں میں آزاد اور کچھ میں انگلستان کے ماتحت اور اُس کے ساتھ نتھی ہیں۔

—ایڈیٹر

की दफ़ा ८ सब सेक्शन १ और २ और दफ़ा १९ सब सेक्शन ४ में और भी साफ़ कर दी गई है.

सन् १९३५ का गवरमेंट आफ़ इन्डिया एक्ट रद्द नहीं हुआ. वह क़ायम है. और कुछ तरमीमों के साथ १५ अगस्त के बाद भी क़ायम रहेगा. उस एक्ट की जो बातें ज्यूं की त्यूँ क़ायम हैं उनमें सबसे ख़ास दफ़ा २ है. इस दफ़ा में यह बात फिर से साफ़ कर दी गई है कि इंगलिस्तान का बादशाह हिन्दुस्तान का असली अधिराज है. इंगलिस्तान की पार्लमेन्ट ही हिंदुस्तान के विधान में तबदीली करने के लिये जिम्मेवार है और हिन्दुस्तानी फ़ेडरेशन के सारे ढाँचे के ऊपर अमली तौर पर सेक्रेटरी आफ़ स्टेट के सब तरह के बेरोक अधिकार हैं.

सन् १९३५ के क़ानून का यही ख़ास हिस्सा था. नए क़ानून ने इसे ज्यूँ का त्यूँ क़ायम रक्खा है. इस क़ानून में तीन बातें साफ़ हैं—(१) हिन्दुस्तान और पाकिस्तान दोनों डोमिनियनों के ऊपर इंगलिस्तान का बादशाह अधिराज (सूज़रेन) बना रहेगा, (२) बजाय इसके कि इंगलिस्तान की पार्लिमेन्ट ही हिन्दुस्तानी विधान के लिये जिम्मेदार रहे, नए क़ानून की दफ़ा ८ सब सेक्शन १ और २ में यह बात साफ़ कर दी गई है कि यह दोनों डोमिनियन जो भी नए विधान अपने अपने यहाँ के लिये बनावें उनमें कोई बात सन् १९३५ के इन्डिया ऐक्ट या मौजूदा क़ानून के असूलों के ख़िलाफ़ नहीं होनी चाहिये, (३) नए क़ानून की दफ़ा १४ और १५ में लिखा है कि इस वक़्त और १५ अगस्त के बाद जितने अदा- ... में सेक्रेटरी आफ़ स्टेट (वज़ीर हिन्द) का काम

کی دفعہ ۸ سب سکشن ۱ اور ۲ اور دفعہ ۱۹ سب سکشن ۴ میں اور بھی صاف کر دی گئی ہے۔

۱۹۳۵ء کا گورنمنٹ آف انڈیا ایکٹ رد نہیں ہوا۔ وہ قایم ہے۔ اور کچھ ترمیموں کے ساتھ ۱۵ اگست کے بعد بھی قایم رہے گا۔ اس ایکٹ کی جو باتیں جیوں کی تیوں قایم ہیں ان میں سب سے خاص دفعہ ۲ ہے۔ اس دفعہ میں یہ بات پھر سے صاف کر دی گئی ہے کہ انگلستان کا بادشاہ ہندستان کا اصلی ادھراج ہے۔ انگلستان کی پارلیمنٹ ہی ہندستان کے ودھان میں تبدیلی کرنے کے لئے ذمے دار ہے اور ہندستانی فیڈریشن کے سارے ڈھانچے کے اوپر عملی طور پر سکریٹری آف اسٹیٹ کے سب طرح کے بے روک ادھکار ہیں۔

سن ۱۹۳۵ء کے قانون کا یہی خاص حصہ تھا۔ نئے قانون نے اسے جیوں کا تیوں قایم رکھا ہے۔ اس قانون میں تین باتیں صاف ہیں— (۱) ہندستان اور پاکستان دونوں ڈومینینوں کے اوپر انگلستان کا بادشاہ ادھراج (سوزرین) بنا رہے گا، (۲) بجائے اس کے کہ انگلستان کی پارلیمنٹ ہی ہندستانی ودھان کے لئے ذمہ دار رہے، نئے قانون کی دفعہ ۸ سب سکشن ۱ اور ۲ میں یہ بات صاف کر دی گئی ہے کہ یہ دونوں ڈومینین جو بھی نئے ودھان اپنے اپنے یہاں کے لئے بناویں ان میں کوئی بات ۱۹۳۵ء کے انڈیا ایکٹ یا موجودہ قانون کے اصولوں کے خلاف نہیں ہونی چاہئے، (۳) نئے قانون کی دفعہ ۱۴ اور ۱۵ میں لکھا ہے کہ اس وقت اور ۱۵ اگست کے بعد جتنے عدالتی مقدموں میں سکریٹری آف اسٹیٹ (وزیر ہند) کا کام

पड़ेगा उनमें सेक्रेटरी आफ़ स्टेट के सब अख़्तियार अंग्रेज़ हाई कमिश्नर के हाथों में रहेंगे.

हिन्दुस्तान और पाकिस्तान की सरहदें आख़री नहीं—

क़ानून के क्लाज़ २, दफ़ा २ और ३ में हिन्दुस्तान और "पाकिस्तान" की सरहदों का ज़िक्र है. क्लाज़ २, दफ़ा ३ में लिखा है कि—"इस दफ़ा की कोई बात दोनों डोमिनियनों में से किसी एक में किसी इलाक़े के किसी वक़्त शामिल किये जाने या किसी इलाक़े के अलग किये जाने को नहीं रोक सकेगी." इसके माने यह हैं कि हिन्दुस्तान और पाकिस्तान दोनों की सरहदें मोम की सी रहेंगी. उसी दफ़ा ३ में यह भी लिखा है कि १५ अगस्त के बाद कोई इलाक़ा "जो किसी डोमिनियन में शामिल रहेगा बग़ैर उस डोमिनियन की रज़ामन्दी के उससे अलग नहीं किया जा सकेगा". ज़ाहिर है यह रज़ामन्दी इस तरह का दबाव डाल कर भी ली जा सकती है जिससे देने वाले को इनकार करने की गुन्जायश न रहे.

बंगाल और आसाम के बारे में दफ़ा ३ सब सेक्शन २ और सब सेक्शन ३ बी के शब्द इतने गोल मोल हैं कि पूर्वी बंगाल (पाकिस्तान), आसाम और पच्छिमी बंगाल की कोई सरहदें आख़री समझी ही नहीं जा सकतीं. हो सकता है कि आसाम का कोई हिस्सा बड़ा या छोटा, जिसके बारे में वहाँ के लोगों की कोई राय भी न ली गई हो सिलहट के साथ साथ पूर्वी बंगाल में शामिल कर लिया जावे. दफ़ा ३ सब सेक्शन ३ से

پڑے گا اُن میں سکریٹری آف اسٹیٹ کے سب اختیار انگریز ہائی کمشنر کے ہاتھوں میں رہیں گے.

ہندستان اور پاکستان کی سرحدیں آخری نہیں—

قانون کے کلاز ۲ دفعہ ۲ اور ۳ میں ہندستان اور "پاکستان" کی سرحدوں کا ذکر ہے. کلاز ۲، دفعہ ۳ میں لکھا ہے کہ —"اِس دفعہ کی کوئی بات دونوں ڈومینینوں میں سے کسی ایک میں کسی علاقے کے کسی وقت شامل کئے جانے یا کسی علاقے کے الگ کئے جانے کو نہیں روک سکے گی." اس کے معنے یہ ہیں کہ ہندستان اور پاکستان دونوں کی سرحدیں موم کی سی رہیں گی. اُسی دفعہ ۳ میں یہ بھی لکھا ہے کہ ۱۵ اگست کے بعد کوئی علاقہ "جو کسی ڈومینین میں شامل رہے گا بغیر اُس ڈومینین کی رضامندی کے اُس سے الگ نہیں کیا جا سکے گا". ظاہر ہے یہ رضامندی اِس طرح کا دباؤ ڈال کر بھی لی جا سکتی ہے جس سے دینے والے کو انکار کرنے کی گنجائش نہ رہے.

بنگال اور آسام کے بارے میں دفعہ ۳ سب سکشن ۲ اور سب سکشن ۳ بی کے شبد اتنے گول مول ہیں کہ پوربی بنگال (پاکستان)، آسام اور پچھمی بنگال کی کوئی سرحدیں آخری سمجھی ہی نہیں جا سکتیں. ہو سکتا ہے کہ آسام کا کوئی حصہ بڑا یا چھوٹا، جس کے بارے میں وہاں کے لوگوں کی کوئی رائے بھی نہ لی گئی ہو سلہٹ کے ساتھ ساتھ پوربی بنگال میں شامل کر لیا جاوے. دفعہ ۳ سب سکشن ۳ سے

मालूम होता है कि आसाम की सरहदें जब चाहें गवरनर जनरल की मर्ज़ी पर बदली जा सकती हैं. बिल की दफ़ा ९ में गवरनर जनरल को जो अख़्तियार दिया गया है सब सेक्शन ६ के साथ मिलाकर पढ़ा जावे तो यह डर बना रहता है कि आसाम का सूबा किसी भी वक़्त इतना छोटा और इस शकल का बना दिया जा सकता है कि उसका हिन्दुस्तान में रह सकना नामुमकिन हो जावे और आख़ीर में हिन्दुस्तान सरकार की रज़ामन्दी (?) से सारा आसाम पाकिस्तान में मिल जाए.

पिच्छमी पाकिस्तान—

अब रही पच्छिमी पाकिस्तान की बात. वहाँ की सरहदें भी वक़्त बे वक़्त बदलती रह सकती हैं. गवरनर जनरल दफ़ा ९ के मुताबिक़ अपने हुकुम से या दफ़ा ३ सब सेक्शन ३ के मुताबिक़ नए नए बाउन्डरी कमीशन मुक़र्रर कर के जो चाहे अदल बदल कर सकता है. गवरनर जनरल की ज़िम्मेवारी सिवाय इंगलिस्तान के बादशाह के और किसी की तरफ़ नहीं है. यह सच है कि गवरनर जनरल न अपने यहाँ की असेम्बली या पार्लिमेन्ट के नामन्ज़ूर किए हुए बिल को अपने दस्तख़त से सर्टीफ़ाई करके क़ानून बना सकता है और न पास किये हुए बिल को अपने वीटो से नापास कर सकता है. लेकिन दफ़ा ६ सब सेक्शन ३ के मुताबिक़ उसे यह पूरा हक़ है कि इंगलिस्तान के बादशाह के नाम पर डोमिनियन के सब क़ानूनों को अपनी मंज़ूरी दे, सिवा किसी उस क़ानून के जो इंगलिस्तान के किसी क़ानून को यहाँ के लिये रद्द करता हो. दफ़ा ६ सब सेक्शन ६ में

معلوم ہوتا ہے کہ آسام کی سرحدیں جب چاہیں گورنر جنرل کی مرضی پر بدلی جا سکتی ہیں. بل کی دفعہ ۹ میں گورنر جنرل کو جو اختیار دیا گیا ہے اُسے اگر دفعہ ۹ کے سب سکشن ۶ کے ساتھ ملاکر پڑھا جاوے تو یہ ڈر بنا رہتا ہے کہ آسام کا صوبہ کسی بھی وقت اتنا چھوٹا اور اس شکل کا بنا دیا جا سکتا ہے کہ اس کا ہندستان میں رہ سکنا ناممکن ہو جاوے اور آخر میں ہندستان سرکار کی رضامندی (؟) سے سارا آسام پاکستان میں مل جائے۔

پچھمی پاکستان—

اب رہی پچھمی پاکستان کی بات۔ وہاں کی سرحدیں بھی وقت بے وقت بدلتی رہ سکتی ہیں۔ گورنر جنرل دفعہ ۹ کے مطابق اپنے حکم سے یا دفعہ ۳ سب سکشن ۳ کے مطابق نئے نئے باؤنڈری کمیشن مقرر کر کے جو چاہے ادل بدل کر سکتا ہے۔ گورنر جنرل کی ذمہ داری سوائے انگلستان کے بادشاہ کے اور کسی کی طرف نہیں ہے۔ یہ سچ ہے کہ گورنر جنرل نہ اپنے یہاں کی اسمبلی یا پارلیمنٹ کے نامنظور کئے ہوئے بل کو اپنے دستخط سے سرٹیفائی کر کے قانون بنا سکتا ہے اور نہ پاس کئے ہوئے بل کو اپنے ووٹوں سے ناپاس کر سکتا ہے. لیکن دفعہ ۶ سب سکشن ۳ کے مطابق اُسے یہ پورا حق ہے کہ انگلستان کے بادشاہ کے نام پر ڈومینین کے سب قانون کو اپنی منظوری دے، سوا کسی اُس قانون کے جو انگلستان کے کسی قانون کو یہاں کے لئے رد کرتا ہو. دفعہ ۶ سب سکشن ۶ میں

यह भी साफ़ कर दिया गया है कि किसी डोमिनियन का कोई क़ानून अगर सन् '३५ के इन्डिया ऐक्ट या इस नए ऐक्ट के किसी असूली तौर पर ख़िलाफ़ (रिपगनेन्ट) होगा तो वह क़ानून नहीं चलेगा.

पंजाब के बारे में साफ़ लिखा है कि सन् '३५ के ऐक्ट वाले पुराने पंजाब को तोड़ कर जो नये दो सूबे पूर्वी पंजाब और पच्छिमी पंजाब नाम से बनेंगे वह मिला कर पहले के पंजाब से छोटे भी हो सकते हैं और बड़े भी. दफ़ा ४ सब सेक्शन २ में लिखा है कि—इन दोनों सूबों की सरहदें वह होंगी जो १५ अगस्त से पहले या उसके बाद गवरनर जनरल के मुक़र्रर किए हुए कोई बाउन्डरी कमीशन वक़्त वक़्त पर तय करदें." यानी गवरनर जनरल १५ अगस्त के बाद भी जब चाहे जितने नए बाउन्डरी कमीशन मुक़र्रर कर सकता है और हर कमीशन के ज़रिये पंजाब के दोनों सूबों की सरहदें हमेशा बदलती रह सकती हैं. इसका मतलब यह है कि पंजाब और उसके चारों तरफ़ के सूबों और रियासतों की सरहदें हमेशा खतरे में रहेंगी. ब्रिटिश साम्राजशाही को इस से जो फ़ायदा है वह साफ़ है.

हकूमतों के अन्दर हकूमतें—

नए क़ानून में एक बहुत बड़ी शरारत की चीज़ यह है कि हिन्दुस्तान और पाकिस्तान दोनों को दफ़ा ६ सबसेक्शन १ के मुताबिक़ कुछ ऐसे क़ानून बनाने का अख़्तियार भी दिया गया है जिनका अमल दरामद उनकी डोमिनियन से बाहर भी हो सके. इस तरह के अख़्तियारों का असर यह हो सकता है कि हर ज़िले, हर शहर, हर गाँव और हर झोपड़े का पाकिस्तान और हिन्दुस्तान

یہ بھی صاف کر دیا گیا ہو کہ کسی ڈومینین کا کوئی قانون اگر ۳۵ء کے انڈیا ایکٹ یا اس نئے ایکٹ کے کسی اصولی طور پہ خلاف (رپگنینٹ) ہوگا تو وہ قانون نہیں چلے گا۔

پنجاب کے بارے میں صاف لکھا ہو کہ ۳۵ء کے ایکٹ والے پرانے پنجاب کو توڑکر جو نئے دو صوبے پوربی پنجاب اور پچھمی پنجاب نام سے بنیں گے وہ ملاکر پہلے کے پنجاب سے چھوٹے بھی ہو سکتے ہیں اور بڑے بھی۔ دفعہ ۴ سب سکشن ۲ میں لکھا ہو کہ "ان دونوں صوبوں کی سرحدیں وہ ہوں گی جو ۱۵ اگست سے پہلے یا اس کے بعد گورنر جنرل کے مقرر کئے ہوئے کوئی باؤنڈری کمیشن وقت وقت پر طے کر دیں۔" یعنی گورنر جنرل ۱۵ اگست کے بعد بھی جب چاہے جتنے نئے باؤنڈری کمیشن مقرر کر سکتا ہو اور ہر کمیشن کے ذریعے پنجاب کے دونوں صوبوں کی سرحدیں ہمیشہ بدلتی رہ سکتی ہیں۔ اس کا مطلب یہ ہو کہ پنجاب اور اس کے چاروں طرف کے صوبوں اور ریاستوں کی سرحدیں ہمیشہ خطرے میں رہیں گی۔ برٹش سامراج شاہی کو اس سے جو فائدہ ہو وہ صاف ہو۔

حکومتوں کے اندر حکومتیں—

نئے قانون میں ایک بہت بڑی شرارت کی چیز یہ ہو کہ ہندستان اور پاکستان دونوں کو دفعہ ۶ سب سکشن ۱ کے مطابق کچھ ایسے قانون بنانے کا اختیار بھی دیا گیا ہو جن کا عمل درآمد ان کی ڈومینین سے باہر بھی ہو سکے۔ اس طرح کے اختیاروں کا اثر یہ ہو سکتا ہو کہ ہر ضلع، ہر شہر، ہر گاؤں اور ہر جھونپڑے کا پاکستان اور ہندستان

दोनों में इस तरह बटवारा हो जाय कि हिन्दू टुकड़ा अलग और मुसलिम टुकड़ा अलग.

इस बटवारे के बाद हिन्दुस्तान भर के कुल मुसलमानों में से पचास फ़ी सदी यानी आधे पाकिस्तान से बाहर होंगे. पाकिस्तान में हिन्दुओं और सिक्खों की तादाद मिलाकर २५ फ़ी सदी होगी. हिन्दुस्तान में १२ फ़ी सदी मुसलमान होंगे. नतीजा यह है कि अगर पाकिस्तान ने इस तरह के क़ानून पास किये तो हिन्दुस्तान के १२ फ़ी सदी मुसलमान हिन्दुस्तान में रहते हुए व्यापार करते हुए और कमाते हुए भी पाकिस्तान के क़ानूनों के मातहत होंगे, हिन्दुस्तान के क़ानूनों के नहीं. इसी तरह अगर हिन्दुस्तान ने ऐसे क़ानून बनाए तो पाकिस्तान के २५ फ़ी सदी हिन्दू और सिख हिन्दुस्तान के क़ानूनों के मातहत होंगे.

यह सब ख़तरे कहाँ तक सच्चे साबित हो सकते हैं यह बात बहुत बड़े दरजे तक गवरनर जनरल के हाथ में है. गवरनर जनरल के अख़्तियार बहुत बढ़े हुए हैं और यह अख़्तियार मामूली तौर पर ३१ मार्च सन् १९४८ तक चलेंगे. ३१ मार्च सन् १९४८ के बाद भी दफ़ा १९ के मुताबिक़ कुछ ख़ास चीज़ों में गवरनर जनरल के वही अख़्तियार होंगे जो सन् '३५ के एक्ट के मुताबिक़ थे. गवरनर जनरल अगर चाहे या दोनों जगह के गवरनर जनरल अगर मिल कर चाहें तो इन हथकंडों से पाकिस्तान और हिन्दुस्तान को या हिंदुओं मुसलमानों और सिक्खों को आए दिन एक दूसरे से लड़ाए रख सकते हैं और दोनों को मुसीबत में डाल सकते हैं.

دونوں میں اِس طرح بٹوارہ ہو جائے کہ ہندو ٹکڑا الگ اور مُسلم ٹکڑا الگ.

اِس بٹوارے کے بعد ہندستان بھر کے کُل مسلمانوں میں سے پچاس فی صدی یعنی آدھے پاکستان سے باہر ہوں گے. پاکستان میں ہندوؤں اور سِکھوں کی تعداد مِلاکر ۲۵ فی صدی ہوگی. ہندستان میں ۱۲ فی صدی مسلمان ہوں گے. نتیجہ یہ ہے کہ اگر پاکستان نے اِس طرح کے قانون پاس کئے تو ہندستان کے ۱۲ فی صدی مسلمان ہندستان میں رہتے ہوئے، بیوپار کرتے ہوئے اور کماتے ہوئے بھی پاکستان کے قانونوں کے ماتحت ہوں گے، ہندستان کے قانونوں کے نہیں. اِسی طرح اگر ہندستان نے ایسے قانون بنائے تو پاکستان کے ۲۵ فی صدی ہندو اور سِکھ ہندستان کے قانونوں کے ماتحت ہوں گے.

یہ سب خطرے کہاں تک سچّے ثابت ہو سکتے ہیں یہ بات بہت بڑے درجے تک گورنر جنرل کے ہاتھ میں ہے. گورنر جنرل کے اختیار بہت بڑھے ہوئے ہیں اور یہ اختیار معمولی طور پر ۳۱ مارچ سنہ ۱۹۴۸ء تک چلیں گے. ۳۱ مارچ سنہ ۱۹۴۸ء کے بعد بھی دفعہ ۱۹ کے مطابق کچھ خاص چیزوں میں گورنر جنرل کے وہی اختیار ہوں گے جو سنہ ۳۵ء کے ایکٹ کے مطابق تھے. گورنر جنرل اگر چاہے یا دونوں جگہ کے گورنر جنرل اگر مِل کر چاہیں تو اِن ہتھکنڈوں سے پاکستان اور ہندستان کو یا ہندوؤں مسلمانوں اور سِکھوں کو آئے دن ایک دوسرے سے لڑائے رکھ سکتے ہیں اور دونوں کو مصیبت میں ڈال سکتے ہیں.

नई तरह की "सेवा"—

पार्लिमेन्ट में 'इन्डिया इन्डिपेन्डेन्स बिल' की बाबत बोलते हुए बड़े वज़ीर एटली ने कहा कि—"हर आदमी यह समझ रहा है कि इंगलिस्तान हिंदुस्तान की जो सेवा कर रहा था उस सेवा का रूप अब बदल जाना चाहिये." हिंदुस्तान के आदमी अभी इसे पूरी तरह नहीं समझ रहे हैं. एटली साहब ने यह भी कहा कि—"हिंदुस्तान के व्यापारी हिंदुस्तान और इंगलिस्तान के लोगों के बीच व्यापार और तिजारत का जो काम करते रहे हैं जिससे दोनों मुल्कों को बड़ा फ़ायदा पहुंचा है उसे जारी रखने के लिये उन्हें आगे भी बड़ा हिस्सा लेना है." हिंदुस्तान के लोगों और बड़े बड़े व्यापारियों दोनों को यह बात भी अच्छी तरह समझ लेनी है. दूसरी तरफ़ यहां के कुछ बड़े बड़े व्यापारी खुद दक्खिन-एशिया की मंडियों पर क़ब्ज़ा जमाने की सोच रहे हैं.

एक तीसरी बात हमारे लिये समझ लेने की यह है कि १५ अगस्त के बाद हिन्दुस्तान और पाकिस्तान में जो अंग्रेज़ी फ़ौज रहेगी उसकी क्या हालत होगी. 'आरमी एक्ट' में जो तब्दीली हो रही है उसका ज़िक्र करते हुए एटली साहब ने कहा कि—"इस तब्दीली का एक मोटा असूल यह है कि अंगरेज़ी फ़ौज के अन्दरूनी मामलों में हिन्दुस्तान के गवरनर जनरल और दूसरे सिविल अफ़सर अब तक जो दख़ल दे सकते थे, वह दख़ल देने का अधिकार उनसे अब बिलकुल ले लिया जावे" यानी जो अंगरेज़ी फ़ौज अब आगे को इस मुल्क में रहेगी वह यहाँ के किसी सिविल अफ़सर के नीचे नहीं होगी. गवरनर जरनल तक

نئی طرح کی "سیوا"

پارلیمنٹ میں 'انڈیا انڈپینڈنس بل' کی بابت بولتے ہوئے بڑے وزیر ایٹلی نے کہا کہ—"ہر آدمی یہ سمجھ رہا ہے کہ انگلستان ہندستان کی جو سیوا کر رہا تھا اس سیوا کا روپ اب بدل جانا چاہئے۔" ہندستان کے آدمی ابھی اسے پوری طرح نہیں سمجھ رہے ہیں۔ ایٹلی صاحب نے یہ بھی کہا کہ—"ہندستان کے بیوپاری ہندستان اور انگلستان کے لوگوں کے بیچ بیوپار اور تجارت کا جو کام کرتے رہے ہیں جس سے دونوں ملکوں کو بڑا فائدہ پہنچا ہے اسے جاری رکھنے کے لئے انھیں آگے بھی بڑا حصہ لینا ہے۔" ہندستان کے لوگوں اور بڑے بڑے بیوپاریوں دونوں کو یہ بات بھی اچھی طرح سمجھ لینی ہے۔ دوسری طرف یہاں کے کچھ بڑے بڑے بیوپاری خود دکھن ایشیا کی منڈیوں پر قبضہ جمانے کی سوچ رہے ہیں۔

ایک تیسری بات ہمارے لئے سمجھ لینے کی یہ ہے کہ ۱۵ اگست کے بعد ہندستان اور پاکستان میں جو انگریزی فوج رہے گی اس کی کیا حالت ہوگی۔ 'آرمی ایکٹ' میں جو تبدیلی ہو رہی ہے اس کا ذکر کرتے ہوئے ایٹلی صاحب نے کہا کہ—"اس تبدیلی کا ایک موٹا اصول یہ ہے کہ انگریزی فوج کے اندرونی معاملوں میں ہندستان کے گورنر جنرل اور دوسرے سول افسر اب تک جو دخل دے سکتے تھے، وہ دخل دینے کے ادھکار ان سے اب بالکل لے لیا جاوے" یعنی جو انگریزی فوج اب آگے کو اس ملک میں رہے گی وہ یہاں کے کسی سول افسر کے نیچے نہیں ہوگی۔ گورنر جنرل تک

के नहीं. क्योंकि हो सकता है गवरनर जनरल कोई हिन्दुस्तानी हो. यहां की अंगरेज़ी फ़ौज सिर्फ़ अपने विदेशी अंगरेज़ अफ़सरों के मातहत होगी. यह चीज़ बहुत ही ख़तरनाक है. इस से कभी भी सारे मुल्क पर पूरी विदेशी फ़ौजी हकूमत क़ायम हो सकती है. अमरीका का प्रेसीडेन्ट एक सिविल अफ़सर है. वह वहां की सब हथियारबन्द फ़ौजों का सरदार है. इंगलिस्तान का बड़ा वज़ीर भी सिविल अफ़सर है. वह भी अपने मुल्क की सब हथियार बन्द फ़ौजों का सरदार है. पर हिन्दुस्तान की 'आज़ादी' और क़िस्म की है!

अब सवाल यह है कि १५ अगस्त के बाद अंगरेज़ी फ़ौज इस मुल्क में कब तक और रहेगी. एटली साहब ने पार्लिमेन्ट में (यूँ) बताया है कि—"उस वक़्त तक जब तक कि हिन्दुस्तानी फ़ौजों का बटवारा पूरा न हो जावे और जब तक कि दोनों डोमीनियन सरकारें उन फ़ौजों का पूरा इन्तज़ाम करने के क़ाबिल न हो जावें, तब तक इस वक़्त की तमाम हिन्दुस्तानी और अंगरेज़ी फ़ौजें आज कल के कमान्डर इन चीफ़ के मातहत और उसके इन्तज़ाम में रहेंगी." यानी जब तक कि हिन्दुस्तानी फ़ौजों का पूरा बटवारा न हो जावे और उसके बाद इंगलिस्तान की गवरमेन्ट को यह यक़ीन न हो जावे कि हिन्दुस्तान और पाकिस्तान की सरकारें अपने अपने यहां की फ़ौजों को रख सकती और उनका सब इन्तज़ाम कर सकती हैं, तब तक अंगरेज़ी फ़ौजें भी सारे हिन्दुस्तान में रहेंगी और अंगरेज़ी और हिन्दुस्तानी सब फ़ौजें अंगरेज़ कमान्डर इन चीफ़ के मातहत रहेंगी. ख़ुद कमान्डर इन चीफ़ एक मिली जुली डिफ़ेन्स कौन्सिल के मातहत ज़रूर होगा. पर वह सिर्फ़ हिन्दुस्तानी फ़ौजों के मामले में.

کے نہیں. کیونکہ ہو سکتا ہے گورنر جنرل کوئی ہندوستانی ہو. یہاں کی انگریزی فوج صرف اپنے بدیشی انگریز افسروں کے ماتحت ہوگی. یہ چیز بہت ہی خطرناک ہے. اس سے کبھی بھی سارے ملک پر پوری بدیشی، فوجی حکومت قایم ہو سکتی ہے. امریکا کا پریسیڈنٹ ایک سول افسر ہے. وہ وہاں کی سب ہتھیار بند فوجوں کا سردار ہے. انگلستان کا بڑا وزیر بھی سول افسر ہے. وہ بھی اپنے ملک کی سب ہتھیار بند فوجوں کا سردار ہے. پر ہندستان کی 'آزادی' اور قسم کی ہے!

اب سوال یہ ہے کہ ۱۵ اگست کے بعد انگریزی فوج اس ملک میں کب تک رہے گی. ایٹلی صاحب نے پارلیمنٹ میں بتایا ہے کہ—"اُس وقت تک جب تک کہ ہندستانی فوجوں (یوں) کا بٹوارہ پورا نہ ہو جاوے اور جب تک کہ دونوں ڈومینین سرکاریں اُن فوجوں کا پورا انتظام کرنے کے قابل نہ ہو جاویں، تب تک اِس وقت کی تمام ہندستانی اور انگریزی فوجیں آج کل کے کمانڈر ان چیف کے ماتحت اور اُس کے انتظام میں رہیں گی." یعنی جب تک کہ ہندستانی فوجوں کا پورا بٹوارہ نہ ہو جاوے اور اُس کے بعد انگلستان کی گورنمنٹ کو یہ یقین نہ ہو جاوے کہ ہندستان اور پاکستان کی سرکاریں اپنے اپنے یہاں کی فوجوں کو رکھ سکتی اور اُن کا سب انتظام کر سکتی ہیں، تب تک انگریزی فوجیں بھی سارے ہندستان میں رہیں گی اور انگریزی اور ہندستانی سب فوجیں انگریز کمانڈر ان چیف کے ماتحت رہیں گی. خود کمانڈر ان چیف ایک ملی جلی ڈفنس کونسل کے ماتحت ضرور ہوگا، پر وہ صرف ہندستانی فوجوں کے معاملے میں.

एटली साहब ने यह भी कहा कि—"जब ताक़त दोनों डोमीनियनों के हाथों में दे दी जावेगी तब फ़ौरन अंगरेज़ी फ़ौजों का हिन्दुस्तान से हटाया जाना शुरू हो जायगा ....उम्मीद की जाती है कि लगभग इस साल के आख़ीर तक यह काम पूरा हो जायगा." मतलब यह कि अंगरेज़ी फ़ौजें तभी हट सकती हैं जब ताक़त दोनों डोमीनियनों के हाथों में दे दी जावे. और ताक़त उस वक्त तक नहीं सौंपी जावेगी जब तक कि दोनों नई डोमीनियनों और इंगलिस्तान की सरकार के बीच नए अहदनामें और सुलहनामें न हो जावें. इन अहदनामों और सुलहनामों का होना ज़रूरी है, इन की शर्तें फिर जो भी हों. एटली साहब के शब्दों में इन अहदनामों का सम्बन्ध—"उन मामलों से होगा जो हिन्दुस्तान में हकूमत नए हाथों में सौंपे जाने से पैदा होंगे." दूसरे शब्दों में, इन अहदनामों में हकूमत सौंपे जाने की सूरतें होंगी और वह सूरतें इस तरह के फ़ौजी और तिजारती समझौते होंगे जिनसे हिन्दुस्तान ब्रिटिश साम्राजशाही के फ़ायदे के लिये उसके साथ बंधा रहे.

दोनों डोमीनियनों की फ़ौजें—

इंडिया इंडिपेन्डेन्स एक्ट से अंगरेज़ी जल की, थल की और हवाई फ़ौजें और हिन्दुस्तानी जल की, थल की और हवाई फ़ौजें दोनों बिल्कुल अलग अलग करदी गई हैं. साथ ही अंगरेज़ी फ़ौजों को पाकिस्तान और हिन्दुस्तान दोनों में एक ख़ास रुतबा दिया गया है. अंगरेज़ी फ़ौजें अकेले भी काम कर सकती हैं और हिन्दुस्तानी फ़ौजों के साथ मिलकर भी. पर किसी सूरत में भी वह किसी

ایٹلی صاحب نے یہ بھی کہا کہ—"جب طاقت دونوں ڈومینینوں کے ہاتھوں میں دے دی جاوے گی تب فوراً انگریزی فوجوں کا ہندستان سے ہٹایا جانا شروع ہوجائے گا..... امید کی جاتی ہے کہ لگ بھگ اس سال کے آخیر تک یہ کام پورا ہوجائے گا۔" مطلب یہ کہ انگریزی فوجیں تبھی ہٹ سکتی ہیں جب طاقت دونوں ڈومینینوں کے ہاتھوں میں دے دی جاوے۔ اور طاقت اس وقت تک نہیں سونپی جاوے گی جب تک کہ دونوں نئی ڈومینینوں اور انگلستان کی سرکار کے بیچ نئے عہدنامے اور صلح نامے نہ ہوجاویں۔ ان عہدناموں اور صلح ناموں کا ہونا ضروری ہے، ان کی شرطیں پھر جو بھی ہوں۔ ایٹلی صاحب کے شبدوں میں ان عہدناموں کا سمبندھ—"ان معاملوں سے ہوگا جو ہندستان میں حکومت نئے ہاتھوں میں سونپے جانے سے پیدا ہوں گے۔" دوسرے شبدوں میں، ان عہدناموں میں حکومت سونپے جانے کی صورتیں ہوں گی اور وہ صورتیں اس طرح کے فوجی اور تجارتی سمجھوتے ہوں گے جن سے ہندستان برٹش سامراج شاہی کے فائدے کے لئے اس کے ساتھ بندھا رہے۔

دونوں ڈومینینوں کی فوجیں—

انڈیا انڈیپنڈنس ایکٹ سے انگریزی جل کی، تھل کی اور ہوائی فوجیں اور ہندستانی جل کی، تھل کی اور ہوائی فوجیں دونوں بالکل الگ الگ کردی گئی ہیں۔ ساتھ ہی انگریزی فوجوں کو پاکستان اور ہندستان دونوں میں ایک خاص رتبہ دیا گیا ہے۔ انگریزی فوجیں اکیلے بھی کام کرسکتی ہیں اور ہندستانی فوجوں کے ساتھ مل کر بھی۔ پر کسی صورت میں بھی وہ کسی

हिन्दुस्तानी अफसर के मातहत न होंगी. सच यह है कि इन अंगरेजी फौजों की हैसियत ग़ैर मुल्की क़ाबिज़ फौजों (Army of Occupation) की सी ही रहेगी. और जब तक हकूमत दूसरे हाथों में न सौंप दी जायगी तब तक दोनों डोमिनियनों की हिन्दुस्तानी फ़ौजें इंगलिस्तान के बादशाह की फौजें ही कहलावेंगी और उस वक्त तक उनका काम सिर्फ़ अपनी अपनी डोमिनियन के अन्दर अमन कायम रखना होगा.

नये क़ानून में चार दफ़ाएं ऐसी हैं जिनका फौजों से खास सम्बन्ध है—दफ़ा ११, १२, १३ और १४. इन्हीं का निचोड़ हमने ऊपर दिया है.

दोनों डोमिनियनों की अपनी अपनी फ़ौजों के बारे में दो और बातें ध्यान देने की हैं. एक कुल फ़ौजी सामान और हथियारों का दोनों डोमिनियनों में बाँटा जाना और दूसरे इन फौजों का अंग्रेज़ी फ़ौजों से सम्बन्ध. अगर सामान के बटवारे में किसी भी डोमिनियन के साथ चालाकी या बेइन्साफ़ी या गहरी ग़लती बरती गई तो वह डोमिनियन दस पांच बरस तक अपनी फ़ौजों को ठीक ठीक हथियार बन्द रख सकने के बिलकुल नाक़ाबिल हो जायगी. मुमकिन है अपना बजट सँभालने के लिये उसे अपनी कुछ फौजें तोड़ देनी पड़ें.

दूसरी बात के बारे में किसी भी फ़ौजी काम जैसे किसी बलवे को दबाना, लड़ाई लड़ना वग़ैरा में अंग्रेज़ी फ़ौजों का पल्ला हिंदुस्तानी फौजों से हमेशा भारी रहेगा. बढ़िया क़िस्म का साइन्टिफ़िक और जंगी हवाई और तरह तरह का भारी सामान

ہندستانی افسر کے ماتحت نہ ہوں گی. سچ یہ ہے کہ ان انگریزی فوجوں کی حیثیت غیر ملکی قابض فوجوں (Army of Occupation) کی سی ہی رہے گی. اور جب تک حکومت دوسرے ہاتھوں میں نہ سونپ دی جائے گی تب تک دونوں ڈومینینوں کی ہندستانی فوجیں انگلستان کے بادشاہ کی فوجیں ہی کہلاویں گی اور اس وقت تک ان کا کام صرف اپنی اپنی ڈومینین کے اندر امن قایم رکھنا ہوگا.

نئے قانون میں چار دفعائیں ایسی ہیں جن کا فوجوں سے خاص سمبندھ ہے—دفعہ ۱۱، ۱۲، ۱۳ اور ۱۴. انھیں کا نچوڑ ہم نے اوپر دیا ہے.

دونوں ڈومینینوں کی اپنی اپنی فوجوں کے بارے میں دو اور باتیں دھیان دینے کی ہیں. ایک کل فوجی سامان اور ہتھیاروں کا دونوں ڈومینینوں میں بانٹا جانا اور دوسرے ان فوجوں کا انگریزی فوجوں سے سمبندھ. اگر سامان کے بٹوارے میں کسی بھی ڈومینین کے ساتھ چالاکی یا بے انصافی یا گہری غلطی برتی گئی تو وہ ڈومینین دس پانچ برس تک اپنی فوجوں کو ٹھیک ٹھیک ہتھیار بند رکھ سکنے کے بالکل ناقابل ہو جائے گی. ممکن ہے اپنا بجٹ سنبھالنے کے لئے اسے اپنی کچھ فوجیں توڑ دینی پڑیں.

دوسری بات کے بارے میں کسی بھی فوجی کام جیسے کسی بلوے کو دبانا، لڑائی لڑنا وغیرہ میں انگریزی فوجوں کا پلہ ہندستانی فوجوں سے ہمیشہ بھاری رہے گا. بڑھیا قسم کا سائنٹفک اور جنگی ہوائی اور طرح طرح کا بھاری سامان

और उसके माहिर अभी अंग्रेजी फ़ौज ही में होंगे. अभी बरसों, यहाँ तक कि असली आज़ादी मिलने के बाद भी बरसों तक इस तरह के सामान के लिये हिन्दुस्तान में पूरी सहूलियतें नहीं हो सकतीं और इस थोथी आज़ादी में तो कभी भी नहीं हो सकतीं. इस पर भी अंग्रेज़ी फ़ौजों और उनके अफ़सरों को यहां ख़ास अख्तियार दिये गए हैं और उनके रास्ते में वह रूकावटें न होंगी जो हिन्दुस्तानी फ़ौजों के रास्ते में होंगी.

दफ़ा १२ में साफ़ लिखा है कि—(१) अगर पाकिस्तान में या हिन्दुस्तान में या इस मुल्क में कहीं और अंग्रेज़ी फ़ौज का कोई आदमी कोई जुर्म करे तो उसे इस मुल्क के फ़ौजी क़ानून के मुताबिक़ सज़ा नहीं दी जा सकेगी. (२) पाकिस्तान का या हिन्दुस्तान का या मुल्क के किसी और हिस्से का कोई सिविल अफ़सर यहां तक कि गवरनर जनरल तक मुल्क भर में कहीं भी रहने वाले किसी अंग्रेज़ी फ़ौज के आदमी पर कोई हुकुम न चला सकेगा. (३) हिन्दुस्तान का फ़ौजी क़ानून सिर्फ़ हिन्दुस्तानी फ़ौजों के लिये होगा, अंगरेज़ी फ़ौजों के लिये नहीं. बावजूद इसके हिन्दुस्तान का कोई सिविल अफ़सर अगर किसी डोमिनियन में रहने वाली या हिन्दुस्तान में कहीं और रहने वाली किसी अंगरेज़ी फ़ौज की कोई ख़िदमत इस वक़्त करता होगा तो उसे वह ख़िदमत आगे भी बराबर जारी रखनी पड़ेगी. अँगरेज़ी फ़ौजी जहाज़ों पर भी इस मुल्क का कोई फ़ौजी जहाज़ी क़ानून नहीं लग सकेगा. यही हालत अँगरेज़ी हवाई फ़ौज की होगी.

दफ़ा १३ में लिखा है कि जब कि अँगरेज़ी जहाज़ी फ़ौज के

اور اس کے ماہر ابھی انگریزی فوج ہی میں ہوں گے. ابھی برسوں، یہاں تک کہ اصلی آزادی ملنے کے بعد بھی برسوں تک اس طرح کے سامان کے لئے ہندستان میں پوری سہولتیں نہیں ہو سکتیں اور اس تھوتھی آزادی میں تو کبھی بھی نہیں ہو سکتیں. اس پر بھی انگریزی فوجوں اور اُن کے افسروں کو یہاں خاص اختیار دئے گئے ہیں اور اُن کے راستے میں وہ رُکاوٹیں نہ ہوں گی جو ہندستانی فوجوں کے راستے میں ہوں گی.

دفعہ ۱۲ میں صاف لکھا ہے کہ—(۱) اگر پاکستان میں یا ہندستان میں یا اس ملک میں کہیں اور انگریزی فوج کا کوئی آدمی کوئی جرم کرے تو اُسے اس ملک کے فوجی قانون کے مطابق سزا نہیں دی جا سکے گی. (۲) پاکستان کا یا ہندستان کا یا ملک کے کسی اور حصے کا کوئی سول افسر یہاں تک کہ گورنر جنرل تک ملک بھر میں کہیں بھی رہنے والے کسی انگریزی فوج کے آدمی پر کوئی حکم نہ چلا سکے گا. (۳) ہندستان کا فوجی قانون صرف ہندستانی فوجوں کے لئے ہوگا، انگریزی فوجوں کے لئے نہیں. باوجود اس کے ہندستان کا کوئی سول افسر اگر کسی ڈومنین میں رہنے والی یا ہندستان میں کہیں اور رہنے والی کسی انگریزی فوج کی کوئی خدمت اس وقت کرتا ہوگا تو اُسے وہ خدمت آگے بھی برابر جاری رکھنی پڑے گی. انگریزی فوجی جہازوں پر بھی اس ملک کا کوئی فوجی جہازی قانون نہیں لگ سکے گا. یہی حالت انگریزی ہوائی فوج کی ہوگی.

دفعہ ۱۳ میں لکھا ہے کہ جب کہ انگریزی جہازی فوج کے

अफ़सर या सिपाही कैनेडा, आस्ट्रेलिया जैसी डोमिनियनों के क़ानूनों के मातहत होते हैं. वह हिन्दुस्तान या पाकिस्तान की डोमिनियन के किसी क़ानून के मातहत नहीं होंगे. इस मामले में हिन्दुस्तान और पाकिस्तान की डोमिनियन दूसरी डोमिनियनों से घटिया मानी गई हैं. दफ़ा १४ के मुताबिक़ इस मुल्क में कहीं भी रहने वाली अँगरेज़ी फ़ौजें इंगलिस्तान के बादशाह के ख़र्च पर नहीं रहेंगी. मालूम होता है उन पर क़ानून चलेगा उनका अपना और उनका ख़र्च देगा हिन्दुस्तान या पाकिस्तान या कोई हिन्दुस्तानी रियासत.

फ़ौजों में दो अमली—

अंगरेज़ी और हिन्दुस्तानी दोनों तरह की फ़ौजों के बारे में मिला कर चार सवाल और पैदा होते हैं—(१) क्या अंगरेज़ी फ़ौजें पाकिस्तान में, हिन्दुस्तान में और देसी रियासतों में १५ अगस्त के बाद भी रहेंगी? (२) क्या नई नई अंगरेज़ी फ़ौजें और कैनेडा, आस्ट्रेलिया जैसी ब्रिटिश डोमिनियनों की फ़ौजें कभी आगे पाकिस्तान में, हिन्दुस्तान में, या यहां की देसी रियासतों में काम कर सकेंगी? (३) क्या हिन्दुस्तान और पाकिस्तान की फ़ौजें सिर्फ़ अपने अपने इलाक़ों में ही अन्दरूनी शान्ति क़ायम रखने में काम में लाई जा सकेंगी, या वह दूसरी डोमीनियन में या देसी रियासतों में भी यह काम कर सकेंगी? (४) अगर हिन्दुस्तान और पाकिस्तान की फ़ौजें सिर्फ़ अन्दर का अमन क़ायम रखने के लिये हैं तो किसी डोमीनियन पर बाहर से हमला होने की सूरत में बचाव का क्या इंतज़ाम होगा?

افسر یا سپاہی کینیڈا، آسٹریلیا جیسی ڈومینینوں کے قانونوں کے ماتحت ہوتے ہیں، وہ ہندستان یا پاکستان کی ڈومینین کے کسی قانون کے ماتحت نہیں ہوں گے. اس معاملے میں ہندستان اور پاکستان کی ڈومینین دوسری ڈومینینوں سے گھٹیا مانی گئی ہیں. دفعہ ۱۴ کے مطابق اس ملک میں کہیں بھی رہنے والی انگریزی فوجیں انگلستان کے بادشاہ کے خرچ پر نہیں رہیں گی. معلوم ہوتا ہے اُن پر قانون چلے گا اُن کا اپنا اور اُن کا خرچ دے گا ہندستان یا پاکستان یا کوئی ہندستانی ریاست.

فوجوں میں دو عملی—

انگریزی اور ہندستانی دونوں طرح کی فوجوں کے بارے میں ملا کر چار سوال اور پیدا ہوتے ہیں— (۱) کیا انگریزی فوجیں پاکستان میں، ہندستان میں اور دیسی ریاستوں میں ۱۵ اگست کے بعد بھی رہیں گی؟ (۲) کیا نئی نئی انگریزی فوجیں اور کینیڈا، آسٹریلیا جیسی برٹش ڈومینینوں کی فوجیں کبھی آگے پاکستان میں، ہندستان میں، یا یہاں کی دیسی ریاستوں میں کام کر سکیں گی؟ (۳) کیا ہندستان اور پاکستان کی فوجیں صرف اپنے اپنے علاقوں میں ہی اندرونی شانتی قایم رکھنے میں کام میں لائی جا سکیں گی، یا وہ دوسری ڈومینین میں یا دیسی ریاستوں میں بھی یہ کام کر سکیں گی؟ (۴) اگر ہندستان اور پاکستان کی فوجیں صرف اندر کا امن قایم رکھنے کے لئے ہیں تو کسی ڈومینین پر باہر سے حملہ ہونے کی صورت میں بچاؤ کا کیا انتظام ہوگا؟

पहले सवाल का जवाब हम दे चुके हैं. सिर्फ़ इतना और बता देना बाक़ी है कि जो दो अमली चलाई जाने वाली है, उसमें कमान्डर इन चीफ़ इस मुल्क की सब देसी और अंगरेज़ी फ़ौजों का बड़ा अफ़सर होगा. अंगरेज़ी फ़ौजों के अख्तियार देसी फ़ौजों से बढ़े हुए होंगे. दूसरे सवाल का सम्बन्ध सारे हिन्दुस्तान के बचाव से है. इस क़ानून में इसका ज़िक्र नहीं है. हुकूमत के अख्तियार दिये जाने के बाद यह बात नए सिरे से तय होगी. तीसरे सवाल का जवाब यह है कि जब तक दो अमली ख़तम न हो तब तक पाकिस्तान और हिन्दुस्तान की देसी फ़ौजें सिर्फ़ अपनी अपनी डोमीनियन में ही काम कर सकेंगी. यह भी मालूम होता है कि जब कि इन दोनों में से कोई डोमीनियन किसी देसी रियासत पर चढ़ाई न कर सकेगी, कोई आज़ाद देसी रियासत अगर चाहे तो इनमें से किसी पर चढ़ाई कर सकेगी. बहर के हमले से अपने बचाव का इस क़ानून में कोई ज़िक्र नहीं है. यह बात भी हकूमत सौंपे जाने के बाद तय होगी कि जो ज़िम्मेवारी अब तक ब्रिटेन के ऊपर थी वह आगे को ब्रिटेन के ऊपर ही रहे या किसी और के.

कहा जाता है कि फ़ौज के ऊपर यह दो अमली थोड़े दिनों के लिये ही है. पर असल में यह दो अमली हकूमत सौंपे जाने के बाद भी जारी रह सकती है.

तीस जून को बटवारे की कौंसिल ने नई दिल्ली में यह तय किया कि १५ अगस्त के बाद उस वक़्त तक दोनों जगह की फ़ौजों पर यह दो अमली बराबर क़ायम रहेगी. जब तक कि फ़ौजों का बटवारा पूरा न हो जाय और दोनों सरकारें अपने अपने यहां

(ट्रैट)

پہلے سوال کا جواب ہم دے چکے ہیں. صرف اتنا اور بتا دینا باقی ہے کہ جو دو عملی چلائی جانے والی ہے، اس میں کمانڈر ان چیف اس ملک کی سب دیسی اور انگریزی فوجوں کا بڑا افسر ہوگا. انگریزی فوجوں کے اختیار دیسی فوجوں سے بڑھے ہوئے ہوں گے. دوسرے سوال کا سمبندھ سارے ہندستان کے بچاؤ سے ہے. اس قانون میں اس کا ذکر نہیں ہے. حکومت کے اختیار دئے جانے کے بعد یہ بات نئے سرے سے طے ہوگی. تیسرے سوال کا جواب یہ ہے کہ جب تک دو عملی ختم نہ ہو تب تک پاکستان اور ہندستان کی دیسی فوجیں صرف اپنی اپنی ڈومینین میں ہی کام کر سکیں گی. یہ بھی معلوم ہوتا ہے کہ جبکہ ان دونوں میں سے کوئی ڈومینین کسی دیسی ریاست پر چڑھائی نہ کر سکے گی، کوئی آزاد دیسی ریاست اگر چاہے تو ان میں سے کسی پر چڑھائی کر سکے گی. باہر کے حملے سے اپنے بچاؤ کا اس قانون میں کوئی ذکر نہیں ہے. یہ بات بھی حکومت سونپے جانے کے بعد طے ہوگی کہ جو ذمہ داری اب تک برٹین کے اوپر تھی وہ آگے کو برٹین کے اوپر ہی رہے یا کسی اور کے.

کہا جاتا ہے کہ فوج کے اوپر یہ دو عملی تھوڑے دنوں کے لئے ہی ہے. پر اصل میں یہ دو عملی حکومت سونپے جانے کے بعد بھی جاری رہ سکتی ہے.

تیس جون کے بٹوارے کی کونسل نے نئی دلی میں یہ طے کیا کہ ۱۵ اگست کے بعد اس وقت تک دونوں جگہ کی فوجوں پر یہ دو عملی برابر قایم رہے گی، جب تک کہ فوجوں کا بٹوارہ پورا نہ ہو جائے اور دونوں سرکاریں اپنے یہاں

की फ़ौजों को बनाए रखने और हथियार बन्द रखने के क़ाबिल न हो जावें. इसका मतलब यह है कि जब तक पाकिस्तान और हिन्दुस्तान दोनों में जंगी जहाज़, जंगी क़िलेबन्दियां, समुद्र के किनारे कीक़िले बन्दियां, हवाई जहाज़. टैंक एंजिन. भारी तोपखाने, हवाई तोपें. हवाई जहाज़ों के मुक़ाबले के समान. और तरह तरह के साइंटिफ़िक फ़ौजी सामान न बनने लगेंगे, या जब तक कि इन की जगह इन चीज़ों के लिये इंगलिस्तान जैसी किसी विदेशी ताक़त से पाकिस्तान या हिन्दुस्तान कोई समझौता न कर ले तब तक न अंगरेज़ी फ़ौज इस मुल्क से हटेगी और न यह दो अमली ख़त्म होगी.

फ़िरक़ेवाराना घरेलू जंग—

यह दो अमली क्या है ? १५ अगस्त के बाद मौजूदा कमांडर इन चीफ़ 'सुप्रीम कमांडर' कहलाने लगेगा. वह इस मुल्क की सब हथियार बन्द फ़ौजों का सबसे बड़ा अफ़सर होगा. सुप्रीम कमांडर एक डिफ़ेंस कौंसिल के सामने जिम्मेदार होगा. उस कौंसिल में वह ख़ुद होगा, दोनों गवरनर जनरल होंगे और दोनों डोमिनियनों के डिफ़ेन्स मिनिस्टर होंगे. दोनों गवरनर जनरल सिर्फ़ इङ्गलिस्तान के बादशाह के सामने जिम्मेदार होंगे और किसी के नहीं. सुप्रीम कमांडर अंगरेज़ होगा और किसी हिन्दुस्तानी के मातहत न होगा. दो अमली का मतलब यह है कि किसी बाहर की सरकार पर हमला करने या बाहर के हमले से अपना बचाव करने के लिये सुप्रीम कमांडर फ़ौजों को तैयार करेगा, इस पर भी

کی فوجوں کو بنائے رکھنے اور ہتھیار بند رکھنے کے قابل نہ ہو جاویں۔ اس کا مطلب یہ ہے کہ جب تک پاکستان اور ہندستان دونوں میں جنگی جہاز، جنگی قلعہ بندیاں، سمندر کے کنارے کی قلعہ بندیاں، ہوائی جہاز، ٹینک انجن، بھاری توپ خانے، ہوائی توپیں، ہوائی جہازوں کے مقابلے کے سامان، اور طرح طرح کے سائنٹفک فوجی سامان نہ بننے لگیں گے، یا جب تک کہ ان کی جگہ ان چیزوں کے لئے انگلستان جیسی کسی بدیشی طاقت سے پاکستان یا ہندستان کوئی سمجھوتا نہ کرے تب تک نہ انگریزی فوج اس ملک سے ہٹے گی اور نہ یہ دوعملی ختم ہوگی۔

فرقہ وارانہ گھریلو جنگ—

یہ دوعملی کیا ہے؟ ۱۵ اگست کے بعد موجودہ کمانڈر ان چیف "سپریم کمانڈر" کہلانے لگے گا۔ وہ اس ملک کی سب ہتھیار بند فوجوں کا سب سے بڑا افسر ہوگا۔ سپریم کمانڈر ایک ڈفنس کونسل کے سامنے ذمہ دار ہوگا۔ اس کونسل میں وہ خود ہوگا، دونوں گورنر جنرل ہوں گے اور دونوں ڈومینینوں کے ڈفنس منسٹر ہوں گے۔ دونوں گورنر جنرل صرف انگلستان کے بادشاہ کے سامنے ذمہ دار ہوں گے اور کسی کے نہیں۔ سپریم کمانڈر انگریز ہوگا اور کسی ہندستانی کے ماتحت نہ ہوگا۔ دوعملی کا مطلب یہ ہے کہ کسی باہر کی سرکار پر حملہ کرنے یا باہر کے حملے سے اپنا بچاؤ کرنے کے لئے سپریم کمانڈر فوجوں کو تیار کرے گا، اس پر بھی
یہ سمجھا جاتا ہے کہ اگر ہندستان اور پاکستان ...

लड़ाई हो जावे तो उसमें अंग्रेज़ों की कोई ज़िम्मेवारी नहीं. फ़रवरी में **हाउस आफ लार्डस्** में बोलते हुए लार्ड पैथिक लारेंस ने अपनी **सरकार की तरफ़** से कहा था कि हिन्दुस्तान में घरेलू जंग का ख़तरा **है पर** "चूंकि अंग्रेज़ी फ़ौज दोनों में से किसी को नहीं मिलेगी **इसलिये मैं समझता** हूँ कि इस जंग से ज्यादा नुक़सान नहीं होगा."

सुप्रीम कमांडर को यह तय करने का भी हक़ है कि फ़ौज के **किस हिस्से** को ज्यादे अच्छे हथियार दिये जावें या किसकी तालीम **पर** ज्यादे खर्च किया जावे. सुप्रीम कमांडर पाकिस्तान और **हिन्दुस्तान** की फ़ौजों के अलावा मुल्क के अन्दर की और सब फ़ौजों **का भी** अफ़सर होगा. यह दो अमली उस वक़्त तक जारी रहेगी **जब तक कि** पाकिस्तान और हिन्दुस्तान दोनों की सरकारें फ़ौजी **मामलों** के लिये, तिजारत के लिये और टेकनिकल जानकारों **और चीज़ों** की मदद के लिये इङ्गलिस्तान के साथ मुनासिब **समझौते** न करलें. हर सूरत में पाकिस्तान और हिन्दुस्तान **दोनों** की फ़ौजी और तिजारती वाग इङ्गलिस्तान के हाथों में रहेगी.

गवरनर जनरल के अख़्तियार—

महात्मा गांधी ने हाल में प्रार्थना के बाद अपनी एक **तक़रीर** में कहा था कि हिन्दुस्तान के गवरनर जनरल की **हैसियत** से लार्ड माउन्टबेटन की परख हो जायगी. उन्होंने यह **उम्मीद भी** ज़ाहिर की थी कि लार्ड माउन्टबेटन इस परख में पूरे **उतरेंगे.** इस तरह की बात गांधी जी ने मिस्टर जिन्ना के **बारे में** कही थी. सचमुच गवरनर जनरल का ओहदा बड़ा

(१९८)   (۱۹۸)

لڑائی ہو جاوے تو اُس میں انگریزوں کی کوئی ذمہ داری نہیں۔ فروری میں ہاؤس آف لارڈس میں بولتے ہوئے لارڈ پیتھک لارنس نے اپنی سرکار کی طرف سے کہا تھا کہ ہندستان میں گھریلو جنگ کا خطرہ ہے پر "چونکہ انگریزی فوج دونوں میں سے کسی کو نہیں ملے گی اس لئے میں سمجھتا ہوں کہ اس جنگ سے زیادہ نقصان نہیں ہوگا!"

سُپریم کمانڈر کو یہ طے کرنے کا بھی حق ہے کہ فوج کے کس حصے کو زیادہ اچھے ہتھیار دئے جاویں یا کس کی تعلیم پر زیادہ خرچ کیا جاوے۔ سُپریم کمانڈر پاکستان اور ہندستان کی فوجوں کے علاوہ ملک کے اندر کی اور سب فوجوں کا بھی افسر ہوگا۔ یہ دو عملی اُس وقت تک جاری رہے گی جب تک کہ پاکستان اور ہندستان دونوں کی سرکاریں فوجی معاملوں کے لئے، تجارت کے لئے اور ٹکنیکل جانکاروں اور چیزوں کی مدد کے لئے انگلستان کے ساتھ مناسب سمجھوتے نہ کرلیں۔ ہر صورت میں پاکستان اور ہندستان دونوں کی فوجی اور تجارتی باگ انگلستان کے ہاتھوں میں رہے گی۔

گورنر جنرل کے اختیار—

مہاتما گاندھی نے حال میں پرارتھنا کے بعد اپنی ایک تقریر میں کہا تھا کہ ہندستان کے گورنر جنرل کی حیثیت سے لارڈ ماؤنٹ بیٹن کی پرکھ ہو جائے گی۔ اُنھوں نے یہ اُمید بھی ظاہر کی تھی کہ لارڈ ماؤنٹ بیٹن اس پرکھ میں پورے اُتریں گے۔ اس طرح کی بات گاندھی جی نے مسٹر جناح کے بارے میں کہی تھی۔ سچ مچ گورنر جنرل کا عہدہ بڑا

अहम है. इनडिपेनडेन्स एक्ट में हिन्दुस्तान और पाकिस्तान दोनों के मामलों में गवरनर जनरलों को लगभग बे अन्त अख़्तियार दिये गए हैं. किसी किसी बात में यह अख़्तियार सन् १९३५ के गवरमेन्ट आफ़ इन्डिया एक्ट के अख़्तियारों से भी ज्यादा हैं. लेकिन नए क़ानून में यह समझ लिया गया है कि गवरनर जनरल इन अख़्तियारों को सोच समझ कर और इस सफ़ाई से काम में लावेगा कि जो लोग सन् १९३५ के क़ानून की नई तरमीम में 'आज़ादी' देखना चाहते हैं उनका धोका दूर न हो सके.

नये क़ानून में हिन्दुस्तान और पाकिस्तान दोनों के गवरनर जनरलों के अख़्तियार बराबर हैं. पर इसका यह मतलब नहीं कि १५ अगस्त के बाद दोनों गवरनर जनरल या अगर दोनों का एक गवरनर जनरल हो तो वह दोनों जगह अपने अख़्तियारों को अलग अलग तरह से काम में न लावे. ११ जुलाई को पार्लिमेन्ट में बंगाल के पिछले गवरनर सर जान एन्डरसन ने सवाल किया कि अगर दोनों हकूमतों के वज़ीर अपने अपने यहां के गवरनर जनरल को एक दूसरे के ख़िलाफ़ मशवरा दें तो क्या होगा? और ख़ास कर अगर दोनों का गवरनर जनरल एक हुआ और दोनों जगह के वज़ीरों ने उसे अलग अलग तरह की सलाह दी तो वह क्या करेगा? सर जान एन्डरसन को यह मालूम था कि दोनों गवरनर जनरल सिर्फ़ इङ्गलिस्तान के बादशाह के सामने ज़िम्मेदार हैं और किसी के नहीं, और बादशाह का मतलब है इङ्गलिस्तान का बडा वज़ीर और उनकी कैबिनेट. हिन्दुस्तान और

اہم ہے۔ انڈیپنڈنس ایکٹ میں ہندوستان اور پاکستان دونوں کے معاملوں میں گورنر جنرلوں کو لگ بھگ بے انت اختیار دئے گئے ہیں۔ کسی کسی بات میں یہ اختیار سنہ 1935ء کے گورنمنٹ آف انڈیا ایکٹ کے اختیاروں سے بھی زیادہ ہیں لیکن نئے قانون میں یہ سمجھ لیا گیا ہے کہ گورنر جنرل ان اختیاروں کو سوچ سمجھ کر اور اس صفائی سے کام میں لاوے گا کہ جو لوگ سنہ 1935ء کے قانون کی نئی ترمیم میں "آزادی" دیکھنا چاہتے ہیں ان کا دھوکا دور نہ ہو سکے۔

نئے قانون میں ہندوستان اور پاکستان دونوں کے گورنر جنرلوں کے اختیار برابر ہیں۔ پر اس کا یہ مطلب نہیں کہ 15 اگست کے بعد دونوں گورنر جنرل یا اگر دونوں کا ایک گورنر جنرل ہو تو وہ دونوں جگہ اپنے اختیاروں کو الگ الگ طرح سے کام میں نہ لاوے۔ 11 جولائی کو پارلیمنٹ میں بنگال کے پچھلے گورنر سر جان انڈرسن نے سوال کیا کہ اگر دونوں حکومتوں کے وزیر اپنے اپنے یہاں کے گورنر جنرل کو ایک دوسرے کے خلاف مشورہ دیں تو کیا ہوگا؟ اور خاص کر اگر دونوں کا گورنر جنرل ایک ہوا اور دونوں جگہ کے وزیروں نے اسے الگ الگ طرح کی صلاح دی تو وہ کیا کرے گا؟ سر جان انڈرسن کو یہ معلوم تھا کہ دونوں گورنر جنرل صرف انگلستان کے بادشاہ کے سامنے ذمہ دار ہیں اور کسی کے نہیں، اور بادشاہ کا مطلب ہے انگلستان کا بڑا وزیر اور ان کی کیبنٹ۔ ہندوستان اور
پاکستان [illegible]

एक्ट के क्लाज़ १९ के मुताबिक़ ख़ास ख़ास हालतों में दोनों गवरनर जनरलों को मिलकर काम करना पड़ेगा. ऐसी हालत में एक न एक गवरनर जनरल को अपने वज़ीरों की राय के ख़िलाफ़ काम करना होगा. और बहुत सी बातों में भी गवरनर जनरल अपनी मरज़ी से बे रोक काम कर सकते हैं.

नौआबादियों के गवरनर--

इङ्गलिस्तान के मातहत जिन मुल्कों की हक़ूमतों को डोमीनियन स्टेटस का नाम दिया जाता है उनमें असल में तीन तरह के मुल्क हैं. एक जो सिर्फ़ कालोनी यानी नौ-आबादी कहलाते हैं. दूसरे क्राउन कालोनी यानी शाही नौ-आबादी और तीसरे डोमीनियन. इनमें कालोनी से क्राउन कालोनी के और क्राउन कालोनी से डोमीनियन के अख़्तियार कुछ ज़्यादा होते हैं. इन सब के दरजों को बताने वाला इङ्गलिस्तान का ख़ास क़ानून सन् १९३१ का वेस्ट मिनिस्टर का क़ानून है. इस क़ानून को देखने से पता चलता है कि हिन्दुस्तान और पाकिस्तान की जो नई हक़ूमतें बनाई गई हैं उनका नाम तो कहने के लिये डोमीनियन बल्कि 'इनडिपेनडेन्ट डोमीनियन' रक्खा गया है लेकिन असल में उनके अख़्तियार और हैसियत क्राउन कालोनी के बराबर हैं.

इस तरह के सब मुल्क ब्रिटिश कामनवेल्थ में शामिल समझे जाते हैं यानी अँग्रेज़ी राज के हिस्से माने जाते हैं. इनमें पूरी तरह ख़ुदमुख़्तार सिर्फ़ यूनाइटेड किंगडम यानी इङ्गलिस्तान ही को कहा जा सकता है. उससे उतर कर वह मुल्क हैं जो सन्

ایکٹ کے کلاز ۱۹ کے مطابق خاص خاص حالتوں میں دونوں گورنر جنرلوں کو مل کر کام کرنا پڑے گا. ایسی حالت میں ایک نہ ایک گورنر جنرل کو اپنے وزیروں کی رائے کے خلاف کام کرنا ہوگا. اور بہت سی باتوں میں بھی گورنر جنرل اپنی مرضی سے بے روک کام کر سکتے ہیں.

نوآبادیوں کے گورنر

انگلستان کے ماتحت جن ملکوں کی حکومتوں کو ڈومینین اسٹیٹس کا نام دیا جاتا ہے ان میں اصل میں تین طرح کے ملک ہیں. ایک جو صرف کالونی یعنی نوآبادی کہلاتے ہیں. دوسرے کراؤن کالونی یعنی شاہی نوآبادی اور تیسرے ڈومینین. ان میں کالونی سے کراؤن کالونی کے اور کراؤن کالونی سے ڈومینین کے اختیار کچھ زیادہ ہوتے ہیں. ان سب کے درجوں کو بتانے والا انگلستان کا خاص قانون سنہ ۱۹۳۱ کا ویسٹ منسٹر کا قانون ہے. اس قانون کو دیکھنے سے پتہ چلتا ہے کہ ہندوستان اور پاکستان کی جو نئی حکومتیں بنائی گئی ہیں ان کا نام تو کہنے کے لئے ڈومینین بلکہ 'انڈیپنڈنٹ ڈومینین' رکھا گیا ہے لیکن اصل میں ان کے اختیار اور حیثیت کراؤن کالونی کے برابر ہیں.

اس طرح کے سب ملک برٹش کامن ویلتھ میں شامل سمجھے جاتے ہیں یعنی انگریزی راج کے حصے مانے جاتے ہیں. ان میں پوری طرح خودمختار صرف یونائیٹڈ کنگڈم یعنی انگلستان ہی کو کہا جا سکتا ہے. اس سے اتر کر وہ [illegible] ہیں جو سنہ ۱۹۳۱

१९३१ के क़ानून के मुताबिक़ आज़ाद ठहराए गए हैं. और तीसरे दर्जे पर वह हैं जिन्हें सन् १९३१ का क़ानून भी नहीं लगता जैसे हिन्दुस्तान और पाकिस्तान. इस तरह के सब मुल्क सन् १८६५ के इङ्गलिस्तान के क़ानून 'कोलोनिअल लाज़ वैलिडिटी एक्ट' के मातहत हैं. यानी अंग्रेज़ी साम्राज के अन्दर आज़ाद समझे जाने वाले मुल्कों में भी हिन्दुस्तान और पाकिस्तान का रुतबा बहुत नीचा है. दोनों सरकारों के क़ानून बनाने के अख़्तियार में दख़ल देने का जितना अख़्तियार यहाँ के गवरनर जनरल को दिया गया है उतना और डोमिनियनों के गवरनर जनरलों को नहीं है, और उसका यह दख़ल देना इङ्गलिस्तान के बादशाह के नुमाइन्दे की हैसियत से होगा. गवरनर जनरल के इन अख़्तियारों का बयान नए क़ानून की दफ़ा ६ सब सेक्शन ३ में दिया हुआ है. हम इससे ज़्यादा इसकी तफ़सील में नहीं जाना चाहते.

(४८७)

नए क़ानून में और भी कई इस तरह के दाव पेच हैं जिनसे हिंदुस्तान और पाकिस्तान दोनों की अपने अपने लिये जो चाहे क़ानून पास करने की आज़ादी बहुत कम हो जाती है, बल्कि महज़ नाम की रह जाती है, और आख़ीर में पूरी ताक़त फिर इङ्गलिस्तान के बादशाह और वहाँ की सरकार ही के हाथों में रह जाती है. इङ्गलिस्तान की पार्लिमेन्ट को हमेशा यह हक़ रहेगा कि जो जो अधिकार उसने दोनों "आज़ाद डोमीनियनों" को दिये हैं उन्हें जब चाहे घटावे, बढ़ावे या बदले.

नये क़ानून में जो जो दफ़ा थोड़ी बहुत भी आज़ादी की तरफ़

کے قانون کے مطابق آزاد ٹھہرائے گئے ہیں۔ اور تیسرے درجے پر وہ ہیں جنھیں سنہ ۱۹۳۱ کا قانون بھی نہیں لگتا جیسے ہندستان اور پاکستان۔ اس طرح کے سب ملک سنہ ۱۸۶۵ کے انگلستان کے قانون 'کولونیل لاز ویلیڈٹی ایکٹ' کے ماتحت ہیں۔ یعنی انگریزی سامراج کے اندر آزاد سمجھے جانے والے ملکوں میں بھی ہندستان اور پاکستان کا رتبہ بہت نیچا ہے۔ دونوں سرکاروں کے قانون بنانے کے اختیار میں دخل دینے کا جتنا اختیار یہاں کے گورنر جنرل کو دیا گیا ہے اتنا اور ڈومینیوں کے گورنر جنرلوں کو نہیں ہے، اور اس کا یہ دخل دینا انگلستان کے بادشاہ کے نمائندے کی حیثیت سے ہوگا۔ گورنر جنرل کے ان اختیاروں کا بیان نئے قانون کی دفعہ ۶ سب سکشن ۳ میں دیا ہوا ہے۔ ہم اس سے زیادہ اس کی تفصیل میں نہیں جانا چاہتے۔

نئے قانون میں اور بھی کئی اس طرح کے داؤ پیچ ہیں جن سے ہندستان اور پاکستان دونوں کی اپنے اپنے لئے جو چاہے قانون پاس کرنے کی آزادی بہت کم ہو جاتی ہے، بلکہ محض نام کی رہ جاتی ہے، اور آخر میں پوری طاقت پھر انگلستان کے بادشاہ اور وہاں کی سرکار ہی کے ہاتھوں میں رہ جاتی ہے۔ انگلستان کی پارلیمنٹ کو ہمیشہ یہ حق رہے گا کہ جو جو ادھکار اس نے دونوں "آزاد ڈومینیوں" کو دئے ہیں انھیں جب چاہے گھٹاوے، بڑھاوے یا بدلے۔

نئے قانون میں جو جو دفعہ تھوڑی بہت بھی آزادی کی طرف اشارہ کرتی ہوئی معلوم ہوتی ہیں وہ بہت درجے تک دھوکے کی ٹٹی

हैं. कुल क़ानून को मिला कर ध्यान से देखने पर यह बात बिलकुल साफ़ चमकने लगती है कि जो "आज़ादी" नया क़ानून हिन्दुस्तान या पाकिस्तान को दे रहा है वह सिर्फ़ छलावा है. मिस्टर एटली ने ११ जुलाई को कहा था कि इन दोनों हकूमतों को अपना नाम बदल लेने का भी अधिकार होगा. इसलिये कल अगर 'हिन्दुस्तान' की हकूमत अपना नाम "सावरेन रिपबलिक आफ़ इन्डिया" यानी हिन्दुस्तान की आज़ाद रिपबलिक या स्वाधीन जन तंत्र या जम्हूरी हकूमत भी रख ले तो उससे असलियत में फ़रक़ नहीं पड़ेगा.

ہیں. کُل قانون کو ملا کر دھیان سے دیکھنے پر یہ بات بالکل صاف چمکنے لگتی ہے کہ جو "آزادی" نیا قانون ہندستان یا پاکستان کو دے رہا ہے وہ صرف چھلاوا ہے. مسٹر ایٹلی نے ۱۱ جولائی کو کہا تھا کہ اِن دونوں حکومتوں کو اپنا نام بدل لینے کا بھی ادھکار ہوگا. اِس لئے کل اگر 'ہندستان' کی حکومت اپنا نام "ساورین ری پبلک آف انڈیا" یعنی ہندستان کی آزاد ری پبلک یا سوادھین جن تنتر یا جمہوری حکومت بھی رکھ لے تو اُس سے اصلیت میں فرق نہیں پڑے گا.

कुछ किताबें

मानव धर्म प्रचारक—लिखने वाले आचार्य जगतकुमार शास्त्री, सफ़े ३८४, क़ीमत चार रुपये, लिखावट नागरी. पता—साहित्य मंडल, दीवान हाल, दिल्ली.

गीता, कुरान शरीफ़ और क़रीब क़रीब सभी बड़ी किताबों में एक ही राय है कि जब जब धर्म की हानि होती है और पाप बढ़ता है. तब तब अच्छे लोगों को बचाने और दुष्टों को मारने के लिये और मज़हब को फिर से फैलाने के लिये बड़े लोग पैदा होते हैं. इस बात को नजर में रखते हुए अगर देखा जाय तो न जाने कितने ही धर्म के फैलाने वाले दुनिया में आए मगर इने गिने के ही बारे में तारीख़ हमें बताती हैं. इस किताब में दुनिया के उन बड़े लोगों में, उन्हीं ख़ास ख़ास लोगों का बयान है जिनके बारे में तारीख़ हमें काफ़ी अच्छी तरह बताती है, जैसे—राम, कृष्ण, बुद्ध, महावीर, अशोक, ईसा, मुहम्मद, कबीर, नानक, दयानन्द रामकृष्ण, विवेकानन्द, रामतीर्थ और गाँधी. इन्हीं बड़े लोगों की जीवनी और दुनिया के फ़ायदे के लिये उनकी नसीहतें इस किताब में दी हुई हैं. इस छोटी सी किताब में हमें थोड़े में ही बहुत कुछ मालूम हो जाता है. दुनिया के क़रीब क़रीब सभी मज़हबों से हमें आसानी से ही जानकारी हो जाती है और हमारे अन्दर यह समझने की सूझ पैदा हो जाती है कि मानव धर्म यानी इन्सानी धर्म असलियत में क्या है जिसे अमल मे लाने से इन्सान ख़ुशहाली के साथ जिन्दगी बसर कर सकता है. इस किताब की ज़बान आसान हिन्दी है जिसे सब अच्छी तरह समझ सकते हैं. यह किताब सभी के लिये लेखक की एक क़ीमती देन है. —गनेश प्रसाद

کچھ کتابیں

مانو دھرم پرچارک — لکھنے والے آچاریہ جگت کمار شاستری، صفحہ ۳۸۴، قیمت چار روپیہ، لکھاوٹ ناگری، پتہ — ساہتیہ منڈل، دیوان ہال، دلّی۔

گیتا، قرآن شریف اور قریب قریب سبھی بڑی کتابوں میں ایک ہی رائے ہے کہ جب جب دھرم کی ہانی ہوتی ہے اور پاپ بڑھتا ہے۔ تب تب اچھے لوگوں کو بچانے اور دُشٹوں کو مارنے کے لئے اور مذہب کو پھر سے پھیلانے کے لئے بڑے لوگ پیدا ہوتے ہیں۔ اس بات کو نظر میں رکھتے ہوئے اگر دیکھا جائے تو نہ جانے کتنے ہی دھرم کے پھیلانے والے دنیا میں آئے مگر اِنے گِنے کے ہی بارے میں تاریخ ہمیں بتاتی ہے۔ اس کتاب میں دُنیا کے اُن بڑے لوگوں میں اُنھیں خاص خاص لوگوں کا بیان ہے جن کے بارے میں تاریخ ہمیں کافی اچھی طرح بتاتی ہے، جیسے رام، کرشن، بدھ، مہاویر، اشوک، عیسیٰ، محمدؐ، کبیر، نانک، دیانند، رام کرشن، ویویکانند، رام تیرتھ اور گاندھی۔ انھیں بڑے لوگوں کی جیونی اور دُنیا کے فائدے کے لئے اُن کی نصیحتیں اس کتاب میں دی ہوئی ہیں۔ اس چھوٹی سی کتاب میں ہمیں تھوڑے میں ہی بہت کچھ معلوم ہو جاتا ہے۔ دُنیا کے قریب قریب سبھی مذہبوں سے ہمیں آسانی سے ہی جانکاری ہو جاتی ہے اور ہمارے اندر یہ سمجھنے کی سوجھ پیدا ہو جاتی ہے کہ مانو دھرم یعنی انسانی دھرم اصلیت میں کیا ہے جسے عمل میں لانے سے انسان خوش حالی کے ساتھ زندگی بسر کر سکتا ہے۔ اس کتاب کی زبان آسان ہندی ہے جسے سب اچھی طرح سمجھ سکتے ہیں۔ یہ کتاب سبھی کے لئے لیکھک کی ایک قیمتی دین ہے۔ — گنیش پرشاد

हमारी राय

इन्दोनीशिया पर हमला—

हाल ही में डच लोगों ने हवाई जहाज़ों से इन्दोनीशिया पर हमला बोल दिया था और वह अब तक चल रहा है. योरप की इस बेजा कारंवाई से दुनिया के बहुत से मुल्क नाखुश हैं पर डचों के ख़िलाफ़ आवाज़ उठाने में हिन्दुस्तान ने पहल की और हिन्दुस्तान के दोनों ही हिस्से पाकिस्तान और हिन्दुस्तान इस मामले में एक राय हैं और अपनी सकत भर इन्दोनीशिया की मदद करने के लिये कहते हैं और वक़्त पड़ने पर करेंगे भी.

दुनिया के नए बन्दोबस्त के मुताबिक़ इन्दोनीशिया को आज़ाद होने का इतना ही हक़ हासिल है जितना किसी और मुल्क को. फिर डच लोगों को यह हरगिज़ हक़ नहीं है कि वह किसी मुल्क को और ख़ास कर किसी नए एशियाई मुल्क को अपना ग़ुलाम बनाए रखें. डच लोगों ने अपने इस नाजायज़ काम से इतने नुक़सान किये हैं—

१—उन्होंने उन शर्तों को तोड़ा है जो उनमें और इन्दोनीशिया में हुई थीं. २—उन्होंने सब मुल्कों और ख़ास कर एशियाई मुल्कों को अपने ख़िलाफ़ नाराज़ कर लिया है. ३—यूनों (यू० ऐन० ओ०) को सीधे टेड़े कमज़ोर बना कर दुनिया के अमन में ख़लल का बीज बोया है.

पंडित जावहर लाल नेहरू और पाकिस्तान के होने वाले

ہماری رائے

انڈونیشیا پر حملہ—

حال ہی میں ڈچ لوگوں نے ہوائی جہازوں سے انڈونیشیا پر حملہ بول دیا تھا اور وہ اب تک چل رہا ہے. یورپ کی اس بیجا کارروائی سے دُنیا کے بہت سے ملک ناخوش ہیں پر ڈچوں کے خلاف آواز اُٹھانے میں ہندستان نے پہل کی اور ہندستان کے دونوں ہی حصّے پاکستان اور ہندستان اِس معاملے میں ایک رائے ہیں اور اپنی سکت بھر انڈونیشیا کی مدد کرنے کے لئے کہتے ہیں اور وقت پڑنے پر کریں گے بھی.

دُنیا کے نئے بندوبست کے مطابق انڈونیشیا کو آزاد ہونے کا اِتنا ہی حق حاصل ہے جتنا کسی اور ملک کو. پھر ڈچ لوگوں کو یہ ہرگز حق نہیں ہے کہ وہ کسی ملک کو اور خاص کر کسی نئے ایشیائی ملک کو اپنا غلام بنائے رکھیں. ڈچ لوگوں نے اپنے اس ناجائز کام سے اِتنے نقصان کئے ہیں—

۱—اُنھوں نے اُن شرطوں کو توڑا ہے جو اُن میں اور انڈونیشیا میں ہوئی تھیں. ۲—اُنھوں نے سب ملکوں اور خاص کر ایشیائی ملکوں کو اپنے خلاف ناراض کر لیا ہے. ۳—یونوں (یو. این. او) کو سیدھے ٹیڑھے کمزور بناکر دُنیا کے امن میں خلل کا بیج بویا ہے.

پنڈت جواہرلال نہرو اور پاکستان کے ہونے والے

गवर्नर जनरल जनाब जिन्ना साहब ने ठीक वक़्त पर अपने अपने बयान निकाल कर हिन्दुस्तान की ही नहीं सारी दुनिया की बड़ी ख़िदमत की है और इस काम में पहल करके दोनों ने साबित कर दिया है कि हिन्दुस्तान अपनी आज़ाद राय रखता है और वैसी राय बनाने की पूरी क़ाबलियत रखता है.

——भगवानदीन

पन्द्रह अगस्त—

हिन्दुस्तान को दो डोमिनियनों में बाँट दिया गया है. डोमिनियन अंगरेज़ी शब्द है जिसके मानी होते हैं मालिकी, यानी किसी की मालिकी. अब हिन्दुस्तान की दोनों डोमीनियन न अपनी मालिकी हो सकती हैं न एक दूसरे की मालिकी हो सकती है. इसीलिये यह दोनों बर्तानिया की डोमीनियन यानी मालिकी हैं. यानी इन पर सीधे टेढ़े दोनों तरह बर्तानिया का राज है. हां, वह रियासतें जो इन दोनों में से किसी में शामिल नहीं होना चाहतीं बेशक पूरी आज़ाद होंगी क्योंकि वह सिवा अपने और किसी क़ानून से बंधी हुई नहीं होंगी. पर यह रियासतें अलग अलग इतनी कमज़ोर हैं कि वह किसी न किसी डोमीनियन पतंग का पुन-छल्ला बने बग़ैर नहीं रह सकतीं या उनको ज़िन्दा रहने के लिये किसी न किसी दूसरे मुल्क से गहरी दोस्ती करनी होगी, जो आसान काम नहीं. बर्तानिया ने साफ़ कह ही दिया है कि बर्तानिया किसी और रियासत को तीसरी डोमिनियन नहीं बनाना चाहता और इसी लिये वह सच्चे जी से इस कोशिश में है कि

گورنر جنرل جناب جناح صاحب نے ٹھیک وقت پر اپنے اپنے بیان نکال کر ہندستان کی ہی نہیں ساری دُنیا کی بڑی خدمت کی ہے اور اس کام میں پہل کر کے دونوں نے ثابت کر دیا ہے کہ ہندستان اپنی آزاد رائے رکھتا ہے اور ویسی رائے بنانے کی پوری قابلیت رکھتا ہے۔

——بھگوان دین

پندرہ اگست——

ہندستان کو دو ڈومینیوں میں بانٹ دیا گیا ہے۔ ڈومینین انگریزی شبد ہے جس کے معنی ہوتے ہیں مالکی یعنی کسی کی مالکی۔ اب ہندستان کی دونوں ڈومینین نہ اپنی مالکی ہو سکتی ہیں نہ ایک دوسرے کی مالکی ہو سکتی ہے۔ اِس لئے یہ دونوں برطانیہ کی ڈومینین یعنی مالکی ہیں۔ یعنی اِن پر سیدھے ٹیڑھے دونوں طرح برطانیہ کا راج ہے۔ ہاں وہ ریاستیں جو اِن دونوں میں سے کسی میں شامل نہیں ہونا چاہتیں بےشک پوری آزاد ہوں گی کیونکہ وہ سوا اپنے اور کسی قانون سے بندھی ہوئی نہیں ہوں گی۔ پر یہ ریاستیں الگ الگ اِتنی کمزور ہیں کہ وہ کسی نہ کسی ڈومینین پتنگ کا پُن چھلّا بنے بغیر نہیں رہ سکتیں یا اُن کو زندہ رہنے کے لئے کسی نہ کسی دوسرے ملک سے گہری دوستی کرنی ہوگی، جو آسان کام نہیں۔ برطانیہ نے صاف کہہ ہی دیا ہے کہ برطانیہ کسی اور ریاست کو تیسری ڈومینین نہیں بنانا چاہتا اور اِسی لئے وہ سچّے جی سے اِس کوشش میں ہے کہ

हिन्दुस्तान की सब रियासतें किसी न किसी डोमिनियन में ज़रूर मिल जायं. अगर कोई रियासत डोमीनियन में नहीं मिलती तो वह क़ानून की रू से हर तरह आज़ाद तो हो जाती है. पर उसे न पाकिस्तान आज़ाद देखना चाहता है न हिन्दुस्तान और न बर्तानिया, क्योंकि वह कमज़ोर होने से किसी भी दोस्त या दुश्मन के हाथ में खेल सकती है, और बर्तानिया या बर्तानिया की हिन्दुस्तानी डोमिनियनों के लिये ख़तरनाक साबित हो सकती है. हां, अगर सारी रियासतें मिलकर एक फ़ेडरेशन बना लें और अपनी अन्दरूनी हुकूमत को अंग्रेज़ी या अमरीकी ढंग का बना लें तो बेशक उनका वह हिन्दुस्तानी फ़ेडरेशन बिल्कुल आज़ाद होगा और हिन्दुस्तान या पाकिस्तान की डोमिनियनों से हज़ार गुना ताक़तवर और दुनिया की नज़रों में और हिन्दुस्तान के आज़ादी पसन्दों की नज़रों में क़ाबिल क़द्र होगा. पर वैसा अब नहीं हो सकता और रियासतों को मजबूर डोमिनियनों में मिलकर बर्तानिया का राज ही मानना पड़ेगा.

स्वाधीन नाम का टीका लगाए इन दोनों डोमिनियनों को अभी मिला ही क्या है? मिला है सन् १९३५ के गवरमेन्ट एक्ट में कुछ सुधार. इन डोमीनियनों का रुतबा अभी कनाडा और आस्ट्रेलिया जैसा भी नहीं है. यह अपने ढंग की अनोखी डोमीनियनें बर्तानिया ने तैयार की हैं. नरम दल वेस्ट मिनिस्टर ढंग की डोमीनियन की हमेशा मांग करता रहा वह भी इस बार नहीं मिल पाई. आज़ादी की दो ज़रूरी चीज़ों फ़ौज और थैली में से इस वक्त सिर्फ एक चीज़ थैली मिली है, और थैली भी

ہندستان کی سب ریاستیں کسی نہ کسی ڈومینین میں ضرور مل جائیں۔ اگر کوئی ریاست ڈومینین میں نہیں ملتی تو وہ قانون کی رُو سے ہر طرح آزاد تو ہوجاتی ہے، پر اُسے نہ پاکستان آزاد دیکھنا چاہتا ہے نہ ہندستان اور نہ برطانیہ، کیونکہ وہ کمزور ہونے سے کسی بھی دوست یا دشمن کے ہاتھ میں کھیل سکتی ہے، اور برطانیہ یا برطانیہ کی ہندستانی ڈومینینوں کے لئے خطرناک ثابت ہوسکتی ہے۔ ہاں، اگر ساری ریاستیں مل کر ایک فیڈریشن بنالیں اور اپنی اندرونی حکومت کو انگریزی یا امریکی ڈھنگ کا بنالیں تو بےشک اُن کا وہ ہندستانی فیڈریشن بالکل آزاد ہوگا اور ہندستان یا پاکستان کی ڈومینینوں سے ہزار گُنا طاقتور اور دُنیا کی نظروں میں اور ہندستان کے آزادی پسندوں کی نظروں میں قابل قدر ہوگا۔ پر ویسا اب نہیں ہوسکتا اور ریاستوں کو مجبور ڈومینینوں میں مل کر برطانیہ کا راج ہی ماننا پڑے گا۔

سوادھین نام کا ٹیکا لگائے اِن دونوں ڈومینینوں کو ابھی ملا ہی کیا ہے؟ ملا ہے ۱۹۳۵ء کے گورنمنٹ ایکٹ میں کچھ سُدھار۔ اِن ڈومینینوں کا رُتبہ ابھی کناڈا اور آسٹریلیا جیسا بھی نہیں ہے۔ یہ اپنے ڈھنگ کی انوکھی ڈومینینیں برطانیہ نے تیار کی ہیں۔ نرم دل ویسٹ منسٹر ڈھنگ کی ڈومینین کی ہمیشہ مانگ کرتا رہا وہ بھی اِس بار نہیں مل پائی۔ آزادی کی دو ضروری چیزوں فوج اور تھیلی میں سے اِس وقت صرف ایک چیز تھیلی ملی ہے، اور تھیلی بھی

ऐसी जिसका बहुत सा रुपया अभी झगड़े में पड़ा हुआ है. वह कब मिलेगा, मिलेगा या न मिलेगा, पूरा मिलेगा या आधा मिलेगा इसका पता नहीं. हां, होशियारी और समझदारी से जो हल्की थैली हमें मिली है उससे एक न एक दिन पूरी आज़ादी हासिल की जा सकती है. यह सब समझ लेने के बाद १५ अगस्त का दिन हिन्दुस्तानियों के लिये किसी काम का भी नहीं रह जाता और ख़ुशी का तो बिल्कुल नहीं. हां, यह दिन बर्तानिया के राज नेताओं के चैन का सांस लेने का दिन है कि उन्होंने बड़ी होशियारी से हिन्दुस्तान को उस बात पर राज़ी कर लिया जिसमें बर्तानिया के सब दल ख़ुश हैं और हिन्दुस्तान की दोस्ती को भी धक्का नहीं पहुँचने दिया.

१५ अगस्त बर्तानिया के लिये ख़ुशी का दिन हो सकता है न कि हिन्दुस्तान के लिये.

—भगवान दीन

आज़ादी का यह दिन !

दुनिया के मुल्कों में हिन्दुस्तान को छोड़ कर किसी मुल्क में इतने समझदार आदमी ऐसे नहीं मिल सकते जो आपस में कट मर कर और एक दूसरे के साथ जानवरों से गिरा हुआ बरताव करने के बाद अपने बरसों के ज़बरदस्ती से माने हुए मालिक के हाथ से कुछ रिआयतें पाकर उसे आज़ादी का नाम दे बैठें. और फिर इतनी समझदारी भी करें कि दुनिया के सामने बग़लें बजा बजा कर नाचने लगें.

ज़रा तो सोचिये कि क्या बर्तानिया इतना नासमझ है कि

(२००)

ایسی جس کا بہت سا روپیہ ابھی جھگڑے میں پڑا ہوا ہے. وہ کب ملےگا، ملےگا یا نہ ملےگا، پورا ملےگا یا آدھا ملےگا اِس کا پتہ نہیں. ہاں، ہوشیاری اور سمجھداری سے جو ہلکی تھیلی ہمیں ملی ہے اس سے ایک نہ ایک دن پوری آزادی حاصل کی جا سکتی ہے. یہ سب سمجھ لینے کے بعد ۱۵ اگست کا دن ہندستانیوں کے لئے کسی کام کا بھی نہیں رہ جاتا اور خوشی کا تو بالکل نہیں. ہاں، یہ دن برطانیہ کے راج نیتاؤں کے چین کا سانس لینے کا دن ہے کہ انھوں نے بڑی ہوشیاری سے ہندستان کو اس بات پر راضی کر لیا جس میں برطانیہ کے سب دل خوش ہیں اور ہندستان کی دوستی کو بھی دھکا نہیں پہنچنے دیا.

۱۵ اگست برطانیہ کے لئے خوشی کا دن ہو سکتا ہے نہ کہ ہندستان کے لئے.

—بھگوان دین

آزادی کا یہ دن !

دُنیا کے ملکوں میں ہندستان کو چھوڑکر کسی مُلک میں اتنے سمجھدار آدمی ایسے نہیں مل سکتے جو آپس میں کٹ مرکر اور ایک دوسرے کے ساتھ جانوروں سے گرا ہوا برتاؤ کرنے کے بعد اپنے برسوں کے زبردستی سے مانے ہوئے مالک کے ہاتھ سے کچھ رعایتیں پاکر اُسے آزادی کا نام دے بیٹھیں. اور پھر اتنی سمجھداری بھی کریں کہ دُنیا کے سامنے بغلیں بجا بجاکر ناچنے لگیں.

ذرا تو سوچئے کہ کیا برطانیہ اتنا ناسمجھ ہے کہ

कलकत्ता, नोआखाली, बिहार, गढ़, पंजाब और फ्रंटियर के आपसी जंगली कारनामों के बाद आप के हाथ में पूरी आज़ादी थमा देगा. यह तो हो सकता है कि अगर वह १५ अगस्त सन् '४६ से पहले आठ आने आज़ादी देने वाला था तो अब आप को छै आने पर ही राज़ी करले और यही उसने किया. ऐसी हालत में आप भी यही करते. ज़रा सोचिये अगर आप सूद पर रुपया उठाने का काम करते हैं और किन्हीं दो भाइयों का रुपया आप के यहां बे सूद जमा है और अगर वह दोनों मिल कर अपना रुपया मांगने आएं और आप किसी वजह से पूरा रुपया न दे कर बारह आना देने को तैयार हों और इतने में ही दोनों आपस में लड़ बैठें तो क्या आप उनके हाथ में १२ आने की जगह रुपया थमा देंगे ? अगर आप ऐसा करेंगे तो आप सूदखोरों की नज़रों में निरे बेवक़ूफ़ समझे जायंगे. आप ऐसा करेंगे भी नहीं. आप बारह आने की जगह चार आने देने की कोशिश करेंगे और दोनों छै आने पर खुश हो जायंगे. खुलासा यह कि हमारे इस आपसी झगड़े ने हमको वह भी नहीं मिलने दिया जो कांग्रेस की सेवाओं और लीग की होशियारी के बल पर हम ऐंठ सकते थे, और अब हिन्दू महासभा डाइरेक्ट ऐक्शन करके इस पाए हुए में से भी कुछ खो सकती है, अंगरेज़ की जेब से और कुछ नहीं निकलवा सकती हाँ, अगर लीग का डाइरेक्ट ऐक्शन अपनों पर न हो कर डाइरेक्ट होता या महासभा का होने वाला डाइरेक्ट ऐक्शन अपनों पर न हो कर डाइरेक्ट हो तो नतीजा अहिंसा के फ़लसफ़े के मुताबिक़ आज़ादी न भी होता या न भी हो

(२०८)

کلکتہ، نواکھالی، بہار، گڑھ، پنجاب اور فرنٹیر کے آپسی جنگلی کارناموں کے بعد آپ کے ہاتھ میں پوری آزادی تھما دے گا۔ یہ تو ہوسکتا ہو کہ اگر وہ ۱۵ اگست سنہ ۴۶ سے پہلے آٹھ آنے آزادی دینے والا تھا تو اب آپ کو چھ آنے پر ہی راضی کرلے اور یہی اس نے کیا۔ ایسی حالت میں آپ بھی یہی کرتے۔ ذرا سوچئے اگر آپ سود پر روپیہ اٹھانے کا کام کرتے ہیں اور کنھیں دو بھائیوں کا روپیہ آپ کے یہاں بے سود جمع ہو اور اگر وہ دونوں مل کر اپنا روپیہ مانگنے آئیں اور آپ کسی وجہ سے پورا روپیہ نہ دے کر بارہ آنہ دینے کو تیار ہوں اور اتنے میں ہی دونوں آپس میں لڑ بیٹھیں تو کیا آپ اُن کے ہاتھ میں بارہ آنے کی جگہ روپیہ تھما دیں گے؟ اگر آپ ایسا کریں گے تو آپ سودخوروں کی نظروں میں نرے بے وقوف سمجھے جائیں گے۔ آپ ایسا کریں گے بھی نہیں۔ آپ بارہ آنے کی جگہ چار آنے دینے کی کوشش کریں گے اور دونوں چھ آنے پر خوش ہو جائیں گے۔ خلاصہ یہ کہ ہمارے اس آپسی جھگڑے نے ہم کو وہ بھی نہیں ملنے دیا جو کانگریس کی سیواؤں اور لیگ کی ہوشیاری کے بل پر ہم اینٹھ سکتے تھے، اور اب ہندو مہاسبھا ڈائرکٹ ایکشن کرکے اس پائے ہوئے میں سے بھی کچھ کھو سکتی ہو، انگریز کی جیب سے اور کچھ نہیں نکلوا سکتی۔ ہاں اگر لیگ کا ڈائرکٹ ایکشن اپنوں پر نہ ہو کر ڈائرکٹ ہوتا یا مہاسبھا کا ہونے والا ڈائرکٹ ایکشن اپنوں پر نہ ہو کر ڈائرکٹ ہو تو نتیجہ اہنسا کے فلسفہ کے مطابق آزادی نہ بھی ہوتا یا نہ بھی ہو

(۲۰۸)

तो भी यह नतीजा जरूर होता, जरूर हो, कि हिन्दू मुसलमान. हिन्दू मुसलमान न रहकर, एक हिन्दुस्तानी नेशन बन जाते या बन जायं पर वैसा तो शायद अभी ईश्वर को मंजूर नहीं.

हम नहीं समझते कि आजादी की मंजिल पूरी तै न करने पर भी क्यों हिन्दुस्तान के राजनेता इस बात पर तुले हुए हैं कि हिन्दुस्तान की जनता यह समझ ले कि वह आजादी की आखिरी मंजिल तय कर चुकी. हनोज़ दिल्ली दूर अस्त

—भगवान दीन

हिन्दुस्तानी और दो लिखावटें—

कांग्रेस ने जिस दिन यह तै किया कि हिन्दुस्तानी बोली सारे हिन्दुस्तान की बोली हो उस दिन, इसमें शक नहीं, उसके दिल के एक कोने में मुसलमानों को तसल्ली देने का भी खयाल था. पर वह खयाल सोलह आने में से पाव आना या इससे भी कम था. अगर हिन्दुस्तान में सन् इक्कीस में सारे हिन्दुस्तानी हिन्दू हो गए होते तब भी कांग्रेस को यही तरीक़ा अपनाना पड़ता, यानी यह कि हिन्दुस्तानी बोली को हिन्दुस्तान की बोली बनाना पड़ता, न कि पंडिताऊ हिन्दी या मुल्लाई उर्दू को. या अगर सन् इक्कीस ही में सारा हिन्दुस्तान इसलाम स्वीकार कर लेता तब भी कांग्रेस के तरीक़े में कोई फ़र्क़ न आता. कांग्रेस के सामने अंगरेज़ी बोली थी और उसकी जगह लेने के लिये हिन्दुस्तानी के सिवा और कोई बोली नहीं हो सकती थी. यह सोचना ही ग़लत है कि कांग्रेस ने हिन्दुस्तानी को मुसलमानों से दब कर या उनको खुश करने के लिये अपनाया है.

تو بھی یہ نتیجہ ضرور ہوتا، ضرور ہو، کہ ہندو مسلمان، ہندو مسلمان نہ رہ کر، ایک ہندستانی نیشن بن جاتے یا بن جائیں پر ویسا تو شاید ابھی ایشور کو منظور نہیں.

ہم نہیں سمجھتے کہ آزادی کی منزل پوری طے نہ کرنے پر بھی کیوں ہندستان کے راج نیتا اس بات پر تلے ہوئے ہیں کہ ہندستان کی جنتا یہ سمجھ لے کہ وہ آزادی کی آخری منزل طے کر چکی. ہنوز دلی دور است.

—بھگوان دین

ہندستانی اور دو لکھاوٹیں—

کانگریس نے جس دن یہ طے کیا کہ ہندستانی بولی سارے ہندستان کی بولی ہو اس دن، اس میں شک نہیں، اس کے دل کے ایک کونے میں مسلمانوں کو تسلی دینے کا بھی خیال تھا. پر وہ خیال سولہ آنے میں سے پاؤ آنہ یا اس سے بھی کم تھا. اگر ہندستان میں سنہ اکیس میں سارے ہندستانی ہندو ہو گئے ہوتے تب بھی کانگریس کو یہی طریقہ اپنانا پڑتا، یعنی یہ کہ ہندستانی بولی کو ہندستان کی بولی بنانا پڑتا، نہ کہ پنڈتاؤ ہندی یا ملائی اردو کو. یا اگر سنہ اکیس ہی میں سارا ہندستان اسلام سویکار کر لیتا تب بھی کانگریس کے طریقے میں کوئی فرق نہ آتا. کانگریس کے سامنے انگریزی بولی تھی اور اس کی جگہ لینے کے لئے ہندستانی کے سوا اور کوئی بولی نہیں ہو سکتی تھی. یہ سوچنا ہی غلط ہے کہ کانگریس نے ہندستانی کو مسلمانوں سے دب کر یا ان کو خوش کرنے کے لئے اپنایا ہے.

कांग्रेस के इस राजनेतापन से अगर मुसलमान खुश हो गए हों तो यह कांग्रेस की खुशक़िस्मती. कांग्रेस ने तो सिर्फ़ हिन्दुतान और हिन्दुस्तानियों का सुभीता देखा. हिन्दुस्तानियों में मुसलमान, ईसाई, पारसी उतने ही शामिल हैं जितने हिन्दू. उसके सामने हिन्दुस्तानी बोली तै करते वक़्त हिन्दू मुसलमान इतने नहीं थे जितने पंजाब, सिन्ध, बम्बई, मद्रास, उड़ीसा, बंगाल, आसाम, बिहार वग़ैरा सूबे. इस लिये हिन्दुस्तान के पाकिस्तान और हिन्दुस्तान नाम की दो डोमीनियन बन जाने से हिन्दुस्तानी बोली की जरूरत कम नहीं रह जाती. हमारा तो यह भी ख़याल है कि हिन्दुस्तानी बोली के बारे में पाकिस्तान भी शायद जल्दी या देर में हमारा तरीक़ा ही अख्तियार करे. पर हम उस तरफ़ आंख उठा कर ही क्यों देखें ? हम अपने सुभीते की सोचें और हमारा सुभीता इसी में है कि हम उस हिन्दुस्तानी पर डटे रहें जो सब के काम की चीज़ है. इसमें सरकार को हुकूमत करने का सुभीता है और जनता को सरकार की कार्रवाई समझने का सुभीता है. हिन्दुस्तानी के ख़िलाफ़ हिन्दी उर्दू की आवाज़ उठाना जनता के फ़ायदे की चीज़ नहीं, इने गिने पंडितों और मुल्लाओं के फ़ायदे की भले ही हो. जनता को इस अन्दोलन में पड़ कर ऐसे ही पछताना होगा जैसे उन ग़रीब आदमियों को पछताना पड़ रहा है जिन्होंने बहक कर नोआखाली और बिहार वग़ैरा के जंगली कामों में हिस्सा लिया.

अब रही लिखावट की बात. दोनों लिखावटों पर इस वक़्त गांधी जी के सिवाय बहुत से कांग्रेस वाले भी ज्यादा जोर नहीं दे रहे हैं पर हम पूरे ज़ोर के साथ कह सकते हैं कि हमारा भला दोनों

کانگریس کے اِس راج نیتاپن سے اگر مسلمان خوش ہوگئے ہوں تو یہ کانگریس کی خوش قسمتی. کانگریس نے تو صرف ہندستان اور ہندستانیوں کا سُبھیتا دیکھا. ہندستانیوں میں مسلمان، عیسائی، پارسی اُتنے ہی شامل ہیں جتنے ہندو. اُس کے سامنے ہندستانی بولی طے کرتے وقت ہندو مسلمان اِتنے نہیں تھے جتنے پنجاب، سندھ، بمبئی، مدراس، اُڑیسہ، بنگال، آسام، بہار وغیرہ صوبے. اِس لئے ہندستان کے پاکستان اور ہندستان نام کی دو ڈومنین بن جانے سے ہندستانی بولی کی ضرورت کم نہیں رہ جاتی. ہمارا تو یہ بھی خیال ہے کہ ہندستانی بولی کے بارے میں پاکستان بھی شاید جلدی یا دیر میں ہمارا طریقہ ہی اختیار کرے. پر ہم اُس طرف آنکھ اُٹھاکر ہی کیوں دیکھیں؟ ہم اپنے سُبھیتے کی سوچیں اور ہمارا سُبھیتا اِسی میں ہے کہ ہم اُس ہندستانی پر ڈٹے رہیں جو سب کے کام کی چیز ہے. اِس میں سرکار کو حکومت کرنے کا سُبھیتا ہے اور جنتا کو سرکار کی کارروائی سمجھنے کا سُبھیتا ہے. ہندستانی کے خلاف ہندی اُردو کی آواز اُٹھانا جنتا کے فائدے کی چیز نہیں، اِنے گِنے پنڈتوں اور مُلاؤں کے فائدے کی بھلے ہی ہو. جنتا کو اِس اندولن میں پڑ کر ایسے ہی پچھتانا ہوگا جیسے اُن غریب آدمیوں کو پچھتانا پڑ رہا ہے جنھوں نے بہک کر نواکھالی اور بہار وغیرہ کے جنگلی کاموں میں حصہ لیا.

اب رہی لکھاوٹ کی بات. دونوں لکھاوٹوں پر اِس وقت گاندھی جی کے سوائے بہت سے کانگریس والے بھی زیادہ زور نہیں دے رہے ہیں. پر ہم پورے زور کے ساتھ کہہ سکتے ہیں کہ ہمارا بھلا دونوں

लिखावटों के चलते रहने में ही है. अगर आज हिन्दुस्तान को सारी जनता सिर्फ़ उर्दू लिखावट पर राज़ी हो जाय तो हम उसके खिलाफ़ होंगे और अगर वह सिर्फ़ नागरी लिखावट पर राज़ी हो जाय तो हम इसके भी खिलाफ़ होंगे. जब हम दो लिखावटों की बात करते हैं तब, हम सच कहते हैं, हमारे दिल में मुसलमानों का रत्ती भर ख्याल नहीं है. असल बात यह है कि हम दोनों लिखावटों को जारी रख कर दोनों के ही इस रूप को ख़त्म कर देना चाहते हैं. दोनों में से कोई और न दोनों मिलकर ही हमारी आज की जरूरतों को पूरा कर सकती हैं. दोनों लिखावटें मुल्क के हाथ में पड़कर न हिन्दू रह जाती हैं न मुसलमान, दोनों ही हिन्दुस्तानी हो जाती हैं, और फिर यह न अरबी फ़ारसी के क़ायदों से बँध सकती हैं और न संस्कृत के. वह हिन्दुस्तानी हो कर अपना रूप बदलने के लिये आज़ाद हो जाती हैं. नागरी ई, ऊ, ऐ, ए और पेट चिरा प साफ़ करके ऐसी ही खुश है जैसे आज का जवान मूछें मुड़ा कर या आज की लड़कियां बाल कटा कर. उर्दू लिखावट बहुत जल्दी से, साद, ज़ाद, तो, ज़ो, वग़ैरा से हल्की होकर जल्दी आज़ादी से उड़ सकेगी और जहां नहीं भी पहुँच सकती थी पहुँच सकेगी. दस बरस भी न लगेंगे कि यह दोनों लिखावटें मिलकर एक तीसरी लिखावट में बदल जायंगी, और वह अपनी हिन्दुस्तानियत लिये होगी, इस लिये और सिर्फ़ इसी लिये रोमन लिखावट हमारी आंखों पर नहीं चढ़ती. दस बरस की दिक़्क़तों से हम क्यों घबरायें. यही वजह है कि हम दोनों लिखावटों पर ज़ोर देते हैं. किसी एक ही को अपना कर हम उसमें मनचाहा और ज़रूरी बदलाव न कर

لکھاوٹوں کے چلتے رہنے میں ہی ہے۔ اگر آج ہندستان کی ساری جنتا صرف اُردو لکھاوٹ پر راضی ہو جائے تو ہم اس کے خلاف ہوں گے اور اگر وہ صرف ناگری لکھاوٹ پر راضی ہو جائے تو ہم اس کے بھی خلاف ہوں گے۔ جب ہم دو لکھاوٹوں کی بات کرتے ہیں تب، ہم سچ کہتے ہیں، ہمارے دل میں مسلمانوں کا رتی بھر خیال نہیں ہے۔ اصل بات یہ ہے کہ ہم دونوں لکھاوٹوں کو جاری رکھ کر دونوں کے ہی اس روپ کو ختم کر دینا چاہتے ہیں۔ دونوں میں سے کوئی اور نہ دونوں مل کر ہی ہماری آج کی ضرورتوں کو پورا کر سکتی ہیں۔ دونوں لکھاوٹیں ملک کے ہاتھ میں پڑ کر نہ ہندو رہ جاتی ہیں نہ مسلمان، دونوں ہی ہندستانی ہو جاتی ہیں، اور پھر یہ نہ عربی فارسی کے قاعدوں سے بندھ سکتی ہیں اور نہ سنسکرت کے۔ وہ ہندستانی ہو کر اپنا روپ بدلنے کے لئے آزاد ہو جاتی ہیں۔ ناگری ای، اُو، اے، اَے اور پیٹ چرا پ صاف کر کے ایسی ہی خوش ہے جیسے آج کا جوان مونچھیں منڈا کر یا آج کی لڑکیاں بال کٹا کر۔ اُردو لکھاوٹ بہت جلدی سے ص، ض، ط، ظ وغیرہ سے ہلکی ہو کر جلدی آزادی سے اُڑ سکے گی اور جہاں نہیں بھی پہنچ سکتی تھی پہنچ سکے گی۔ دس برس بھی نہ لگیں گے کہ یہ دونوں لکھاوٹیں مل کر ایک تیسری لکھاوٹ میں بدل جائیں گی، اور وہ اپنی ہندستانیت لئے ہوگی، اس لئے اور صرف اسی لئے رومن لکھاوٹ ہماری آنکھوں پر نہیں چڑھتی۔ دس برس کی دقتوں سے ہم کیوں گھبرائیں۔ یہی وجہ ہے کہ ہم دونوں لکھاوٹوں پر زور دیتے ہیں۔ کسی ایک ہی کو اپنا کر ہم اس میں من چاہا اور ضروری بدلاؤ نہ کر

सकेंगे, वह हमें बांध लेगी, हम उसे न बांध सकेंगे.

यह ख्याल तो दिमाग़ से निकाल ही देना चाहिये कि हिन्दुस्तानी बोली और दोनों लिखावटों के जारी रखने में हम किसी से डर दब रहे हैं या किसी की मन्नत समाजत कर रहे हैं.

—भगवान दीन

गान्धीजी और अमृतसरी बौखलहट —

अगर इस वक़्त मुल्क छाती पर रखी हुई ग़ुलामी की सिल को जान की बाज़ी लगा कर फेंकने की कोशिश में न लगा हुआ होता तो हम अमृतसर में गांधी जी को काले झंडे दिखाने की बात को इतना भी न समझते जितना उनके हाथ मे एक फांस लग जाने को. आज हम इस न कुछ बात के लिये कुछ न कुछ लिखने के लिये मजबूर हैं क्यों कि यह बात बालू का कन होते हुए भी हमारी आंख में गिर कर कसक रही है.

होश सँभालने से आज तक जिस गांधी ने हिन्दू धर्म के प्राण अहिंसा और सच्चाई की वेदी पर अपने ऐशो आराम को क़ुरबान करके अपने प्यारे मुल्क हिन्दुस्तान को अपने तरीक़े से आज़ाद करने की कोशिश में अपनी उम्र के बासठ बरस लगा दिये उसको हिन्दू धर्मी कहलाने वाले कुछ बौखलाए नौजवान काले झंडे दिखाएं. यह उनके सिवा और किसी को न जचेगा. बासठ बरस कम नहीं होते. इतने में चौथी पीढ़ी शुरू हो जाती है और हिन्दुस्तान की औसत उम्र के हिसाब से दो पीढ़ियां ख़तम हो लेती हैं.

हम जानते हैं गांधी जी बेहद तपे हुए सोने हैं. घिसो, छेदो, तपाओ, पीटो उनमें से मैल न ढूँढ पाओगे. हम यह भी जानते हैं

سکیں گے، وہ ہمیں باندھ لے گی، ہم اُسے نہ باندھ سکیں گے.

یہ خیال تو دماغ سے نکال ہی دینا چاہئے کہ ہندستانی بولی اور دونوں لکھاوٹوں کے جاری رکھنے میں ہم کسی سے ڈر دب رہے ہیں یا کسی کی منّت سماجت کر رہے ہیں.

—بھگوان دین

گاندھی جی اور امرتسری بوکھلاہٹ —

اگر اس وقت مُلک چھاتی پر رکھی ہوئی غلامی کی سِل کو جان کی بازی لگا کر پھینکنے کی کوشش میں نہ لگا ہوا ہوتا تو ہم امرتسر میں گاندھی جی کو کالے جھنڈے دکھانے کی بات کو اتنا بھی نہ سمجھتے جتنا اُن کے ہاتھ میں ایک پھانس لگ جانے کو. آج ہم اس نہ کچھ بات کے لئے کچھ نہ کچھ لکھنے کے لئے مجبور ہیں کیونکہ یہ بات بالو کا کن ہوتے ہوئے بھی ہماری آنکھ میں گر کر کسک رہی ہے.

ہوش سنبھالنے سے آج تک جس گاندھی نے ہندو دھرم کے پران اہنسا اور سچّائی کی ویدی پر اپنے عیش و آرام کو قربان کر کے اپنے پیارے ملک ہندستان کو اپنے طریقے سے آزاد کرنے کی کوشش میں اپنی عمر کے باسٹھ برس لگا دیئے اُس کو ہندو دھرمی کہلانے والے کچھ بوکھلائے نوجوان کالے جھنڈے دکھائیں، یہ اُن کے سوا اور کسی کو نہ جچے گا. باسٹھ برس کم نہیں ہوتے. اتنے میں چوتھی پیڑھی شروع ہو جاتی ہے اور ہندستان کی اوسط عمر کے حساب سے دو پیڑھیاں ختم ہو لیتی ہیں.

ہم جانتے ہیں گاندھی جی بے حد تپے ہوئے سونے ہیں. گھِسو، چھیدو، تپاؤ، پیٹو ان میں سے میل نہ ڈھونڈھ پاؤ گے. ہم یہ بھی جانتے ہیں

कि उन पर इस तमाशे का शायद कुछ भी असर न हुआ होगा क्यों कि हम अपनी आंखों उन पर कई बार इससे ज्यादे ज़ोर के वार होते हुए देख चुके हैं और उनमें से उन्हें निकलते हुए भी देख चुके हैं. हम जानते हैं कि वह पानी की तरह पतले हैं. टुकड़े टुकड़े होने पर भी उनका मन एक छन में फिर ज्यों का त्यों हो जाता है. हम जानते हैं कि वह स्प्रिंग की तरह सुकड़े हुए बैठे रहते हैं. उन्हें सीधा करने के लिये कई हाथियों का बल चाहिये और फिर छुटे तो फिर सुकड़ कर बैठ जाते हैं. उन्हें हिमायती या हिमायतियों की ज़रुरत नहीं, फिर हम किस खेत की मूली हैं कि हम उनकी हिमायत में कुछ लिखें.

(४०६) हमें तो तरस आता है उन झंडे दिखाने वालों पर कि वह सोचें कि वह क्या कर गुज़रे हैं, किसके बहकाए कर गुज़रे हैं, किस लिये कर गुज़रे हैं और किसके लिये कर गुज़रे हैं. दुनिया उन्हें आज ऊकेगी और उनके बेटे पोते और न जाने कितनी अगली संतानें उनके किये पर अपनी गरदनें झुका लेंगी

—भगवान दीन

کہ اُن پر اِس تماشے کا شاید کچھ بھی اثر نہ ہوا ہوگا کیونکہ ہم اپنی آنکھوں اُن پر کئی بار اِس سے زیادہ زور کے وار ہوتے ہوئے دیکھ چکے ہیں اور اُن میں سے اُنھیں نکلتے ہوئے بھی دیکھ چکے ہیں۔ ہم جانتے ہیں کہ وہ پانی کی طرح پتلے ہیں ٹکڑے ٹکڑے ہونے پر بھی اُن کا من ایک چھن میں پھر جیوں کا تیوں ہوجاتا ہے۔ ہم جانتے ہیں کہ وہ اسپرنگ کی طرح سکڑے ہوئے بیٹھے رہتے ہیں۔ اُنھیں سیدھا کرنے کے لئے کئی ہاتھیوں کا بل چاہئے اور پھر چھوٹے تو پھر سکڑ کر بیٹھ جاتے ہیں۔ اُنھیں حمایتی یا حمایتیوں کی ضرورت نہیں، پھر ہم کس کھیت کی مولی ہیں کہ ہم اُن کی حمایت میں کچھ لکھیں۔

ہمیں تو ترس آتا ہے اُن جھنڈے دکھانے والوں پر کہ وہ سوچیں کہ وہ کیا کر گزرے ہیں، کس کے بہکائے کر گزرے ہیں، کس لئے کر گزرے ہیں اور کس کے لئے کر گزرے ہیں۔ دنیا اُنھیں آج اوکے گی اور اُن کے بیٹے پوتے اور نہ جانے کتنی اگلی سنتانیں اُن کے کئے پر اپنی گردنیں جھکا لیں گی۔

—بھگوان دین

“गीता और .कुरान”

लेखक—पंडित सुन्दरलाल

इस किताब के शुरू में दुनिया के सब बड़े बड़े धर्मों की एकता को दिखाया गया है और सब धर्मों की किताबों से हवाले दे देकर मिलती जुलती बुनियादी सचाइयों को बयान किया गया है.

उसके बाद गीता के लिखे जाने के वक़्त की इस देश की हालत, गीता के बड़प्पन और एक एक अध्याय को लेकर गीता की तालीम को बतलाया गया है.

आख़िर में .कुरान से पहले की अरब की हालत, .कुरान के बड़प्पन और एक एक बात पर .कुरान की तालीम को बयान किया गया है. इस में .कुरान की पांच सौ से ऊपर आयतों का लफ़्ज़ी तरजुमा दिया गया है. यह भी बताया गया है कि .कुरान में जेहाद, आक़ेबत, आख़ेरत, जन्नत, जहन्नम, काफ़िर वग़ैरा किसे कहा गया है.

जो लोग सब धर्मों की एकता को समझना चाहें या हिन्दू धर्म और इसलाम दोनों की इन दो अमर पुस्तकों की सच्ची जानकारी हासिल करना चाहें उन्हें इस किताब को ज़रूर पढ़ना चाहिये.

किताब आसान हिन्दुस्तानी ज़बान में, नागरी और उर्दू दोनों लिखावटों में अलग अलग मिल सकती है. पौने तीन सौ सफ़े की सुन्दर जिल्द बँधी किताब की क़ीमत सिर्फ़ ढाई रुपए. डाक ख़र्च अलग.

मैनेजर “नया हिन्द”
३३ बाई का बाग़, इलाहाबाद

”گیتا اور قران“

لیکھک - پنڈت سندر لال

اس کتاب کے شروع میں دنیا کے سب بڑے بڑے دھرموں کی ایکتا کو دکھایا گیا ھے اور سب دھرموں کی کتابوں سے حوالے دے دے کر ملتی جلتی بنیادی سچائیوں کو بیان کیا گیا ھے.

اسکے بعد گیتا کے لکھے جانے کے وقت کی اس دیش کی حالت، گیتا کے بڑپن اور ایک ایک ادھیائے کو لیکر گیتا کی تعلیم کو بتلایا گیا ھے.

آخر میں قرآن سے پہلے عرب کی حالت، قرآن کے بڑپن اور ایک ایک بات پر قرآن کی تعلیم کو بیان کیا گیا ھے. اسمیں قرآن کی پانچ سو سے اوپر آیتوں کا لفظی ترجمہ دیا گیا ھے. یہ بھی بتایا گیا ھے کہ قرآن میں جہاد، عاقبت، آخرت، جنت، جہنم، کافر وغیرہ کسے کہا گیا ھے.

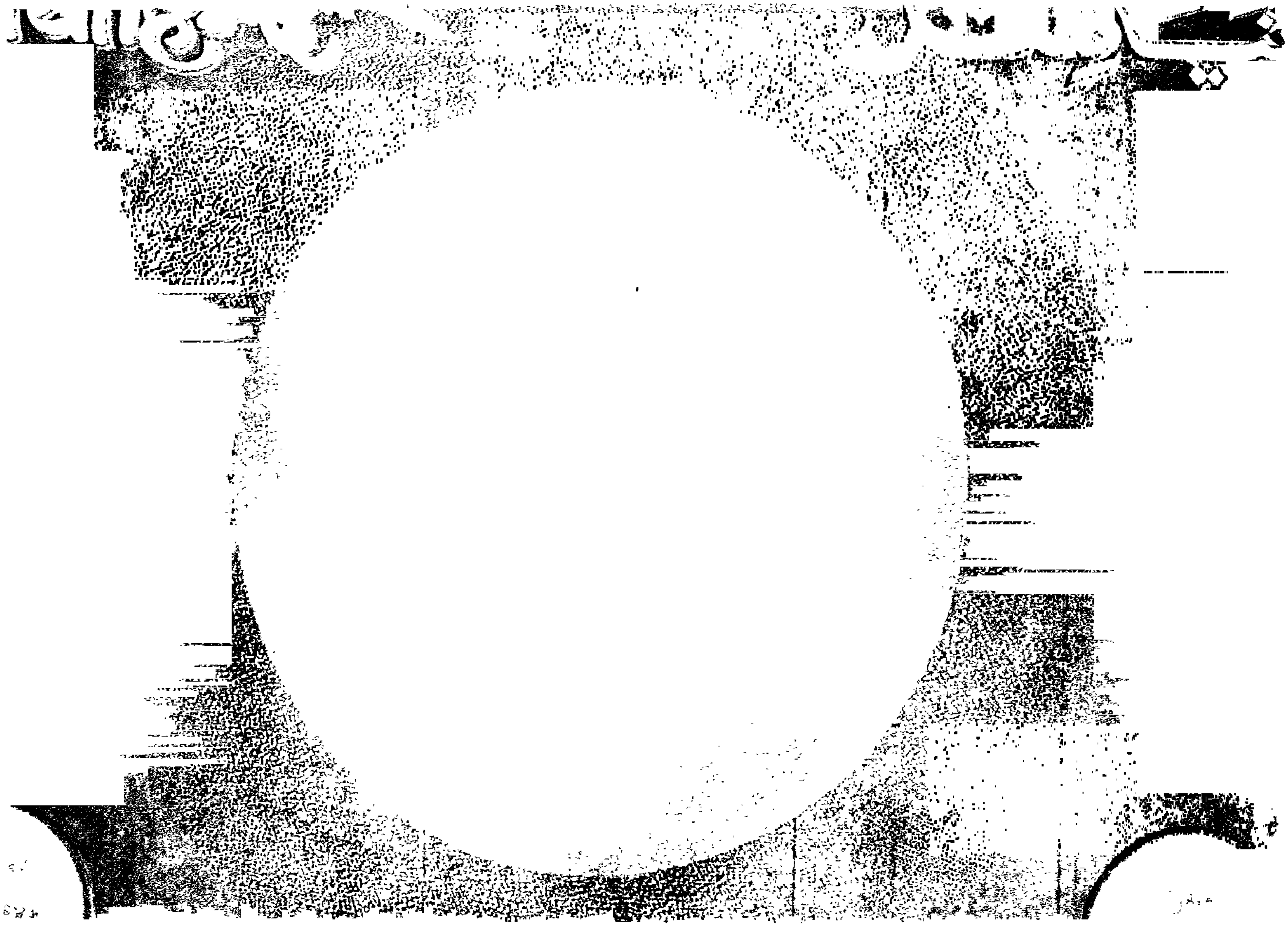
جو لوگ سب دھرموں کی ایکتا کو سمجھنا چاھیں یا ھندو دھرم اور اسلام دونوں کی ان دو امر پستکوں کی سچی جانکاری حاصل کرنا چاھیں انھیں اس کتاب کو ضرور پڑھنا چاھئے.

کتاب ہندستانی زبان میں ناگری اور اُردو دونوں لکھاوٹوں میں الگ الگ مل سکتی ھے. پونے تین سو صفحے کی سندر جلد بندھی کتاب کی قیمت صرف ڈھائی روپیہ - ڈاک خرچ الگ.

منیجر ’نیا ھند‘
۳۳ - بائی کا باغ، الہآباد

Printer—Bishambhar Nath, Vishwavani Press, South Malaka, Allahabad.
Publisher—Bishambhar Nath for Hindustani Culture Society, 33 Bai ka Bagh, Al[illegible]

Registered No. —210.



"नया हिन्द"

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी का परचा

एडिटर—

ताराचन्द, भगवानदीन, मुज़फ़्फ़र हसन, विशम्भरनाथ, सुन्दरलाल

सितम्बर १९४७

क़ीमत—हिन्दुस्तान में छै रुपए साल. बाहर दस रुपए साल.

एक परचा दस आने.

मैनेजर

४८ माई का बाग़, इलाहाबाद. "नया हिन्द"

"نیا ھند"

ھندستانی کلچر سوسائٹی کا پرچا

اڈیٹر—

تارا چند، بھگوان دین، مظفر حسن، بشمبھر ناتھ، سندر لال۔

ستمبر ۱۹۴۷

قیمت—ھندستان میں چھ روپیہ سال، باھر دس روپیہ سال۔

ایک پرچا دس آنے۔

۴۸ مائی کا باغ الہ آباد۔ منیجر—"نیا ھند"

नया हिन्द

जिल्द ३ सितम्बर '४७ नम्बर ३

जात आदमी, प्रेम धर्म है, हिन्दुस्तानी बोली.
'नया हिन्द' पहुँचेगा घर घर, लिये प्रेम की झोली.

"सपन पूजा"

[अकरम साहब, एडिटर "हुमा," इलाहाबाद]

नैनों से ढलक कर दो आंसू—चरनों पै किसी के थर्राए.
आकाश में बिजली कौंध गई—धरती को सौ सौ बल आए.

इक मस्त पुजारी देवी के—चरनों में सीस झुकाए हुए.
बैठा था अधूरे जीवन के—पूरन की आस लगाए हुए.

इतने में पवन का इक झोंका—आया मस्ती बरसाता हुआ.
और लग गई आंख पुजारी की—पल भर में नींद का माता हुआ.
—फिर सपने किसी ने दिखलाए.

पत्थर की नियारी मूरत ने—देवी का रूप किया धारन.
वह भोला पुजारी कांप उठा—और लेने लगा हिचकोले मन.

نیا ہند

جلد ۳ ستمبر ۴۷ء نمبر ۳

جات آدمی، پریم دھرم ہے، ہندستانی بولی
'نیا ہند' پہنچے گا گھر گھر، لئے پریم کی جھولی.

"سپن پوجا"

[اکرم صاحب، ایڈیٹر "ہما" الہ آباد]

نینوں سے ڈھلک کر دو آنسو — چرنوں پہ کسی کے تھرائے
آکاش میں بجلی کوندھ گئی — دھرتی کو سو سو بل آئے.

اک مست پجاری دیوی کے — چرنوں میں سیس جھکائے ہوئے.
بیٹھا تھا ادھورے جیون کے — پورن کی آس لگائے ہوئے.

اتنے میں پون کا اک جھونکا — آیا مستی برساتا ہوا.
اور لگ گئی آنکھ پجاری کی — پل بھر میں نیند کا ماتا ہوا.
— پھر سپنے کسی نے دکھلائے.

پتھر کی نیاری مورت نے — دیوی کا روپ کیا دھارن.
وہ بھولا پجاری کانپ اٹھا — اور لینے لگا ہچکولے من.

मुसका के कहा यह देवी ने—आ मेरी शरन ओ मतवारे.
आ मेरे पुजारी मेरे लिये—नव जीवन दीप जला प्यारे.

———

मैं तेरे प्रेम की मतवाली—तू मेरे प्रेम का मतवाला.
तेरा प्रेम अमर, तेरा रूप अमर—मेरे मन्दिर का तू उजियाला.

———

बतला मुझे ओ मेरे प्रेमी—क्यों नैनों से टपकाए मोती.
बोला यह पुजारी बेकल हो—सुन ए मेरे जीवन की ज्योती.

———

तेरे दरशन की थी प्यास मुझे—थी जीवन भर से आस मुझे.
एक बार बुला ले देवी मेरी—कोमल चरनों के पास मुझे.

———

सुन कर बिनती यह पुजारी की—देवी भी तड़प कर बोल उठी.
आ आज पुजारिन बन के तेरी—मैं ख़ुद अब तुझ को पूजूँगी.

———

और फिर वह पुजारी के चरनो में—जब झुकने लगी तब शरमाकर.
आन गिरा ख़ुद प्रेम पुजारी—देवी के चरनों मे आकर.

———

और झूम उठा मन ख़ुश होकर—जैसे हो नया जीवन पाया.
चूम के कोमल चरनों को—वह नीर नयन में भर लाया.

———

और देखते देखते देवी फिर—पत्थर की मूरत बन बैठी.
वह सुन्दर सपना टूट गया—और खुल गई आंख पुजारी की.
फिर उसकी भीगी पलकों मे—दो नीर उलझ कर थर्राए.
आकाश में बिजली कौंध गई—धरती को सौ सौ बल आए.

مسکا کے کہا یہ دیوی نے — آ میری شرن او متوارے۔
آ میرے پجاری میرے لئے — نو جیون دیپ جلا پیارے۔

———

میں تیرے پریم کی متوالی — تو میرے پریم کا متوالا
تیرا پریم امر، تیرا روپ امر — میرے مندر کا تو اجیالا۔

———

بتلا مجھے او میرے پریمی — کیوں نینوں سے ٹپکائے موتی۔
بولا یہ پجاری بے کل ہو — سن اے میرے جیون کی جیوتی۔
تیرے درشن کی تھی پیاس مجھے — تھی جیون بھر سے آس مجھے۔
اک بار بلا لے دیوی میری — کومل چرنوں کے پاس مجھے۔

———

سن کر بنتی یہ پجاری کی — دیوی بھی تڑپ کر بول اٹھی۔
آ آج پجارن بن کے تیری — میں خود اب تجھ کو پوجوں گی۔
اور پھر وہ پجاری کے چرنوں میں — جب جھکنے لگی تب شرماکر۔
آن گرا خود پریم پجاری — دیوی کے چرنوں میں آکر۔
اور جھوم اٹھا من خوش ہوکر — جیسے ہو نیا جیون پایا۔
چوم کے کومل چرنوں کو — وہ نیر نین میں بھر لایا۔

———

اور دیکھتے دیکھتے دیوی پھر — پتھر کی مورت بن بیٹھی۔
وہ سندر سپنا ٹوٹ گیا — اور کھل گئی آنکھ پجاری کی
پھر اس کی بھیگی پلکوں میں — دو نیر الجھ کر تھرائے۔

हिन्दी का पहला मुसलमान कवि

अब्दुर्रहमान

(भाई याज्ञवल्क्य अजमेरी)

आज हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच की खाई बढ़ती जा रही है और इसे बढ़ाने में ग़ैरों के साथ साथ मुल्क वालों का भी हाथ है. आज ऐसा मालूम होता है मानों हम सदा एक दूसरे के दुशमन रहे हैं, लेकिन तारीख़ इस बात की गवाह है कि हम दोनों हिन्दू और मुसलमान इस मुल्क में सगे भाइयों की तरह सैकड़ों बरस से रहते आए हैं. हम दोनों की नसों में एक ही पुरखों का ख़ून है. मज़हब के जुदा होते हुए भी हमारा मुल्क एक रहा है, उसकी भाषा उसके साहित्य और उसकी कला को हिन्दुओं और मुसलमानों ने साथ मिलकर बनाया और बढ़ाया है. हिन्दी उर्दू का झगड़ा इस देश में बसने वाले आम हिन्दुओं और मुसलमानों का झगड़ा नहीं है. आज की खड़ी बोली को बनाने और तरक़्क़ी देने में मुसलमान कवियों का बड़ा हाथ रहा है.

हमें भूलना नहीं चाहिये उस वक़्त जब कि हिन्दी का साहित्य अभी बचपन में ही था जब कि हिन्दी की कविता शुरू ही हुई थी बल्कि आज कल की खड़ी बोली हिन्दी का अभी यह रूप भी नहीं बना था, सिद्ध कवि सरहपा ने ७६० ईस्वी में जब हिन्दू समाज की रूढ़ियों के ख़िलाफ़ अपनी आवाज़ उठाई थी तब से आधी सदी पहले (७१२ ई० में) मुलतान और सिन्ध पर मुसलमानों

ہندی کا پہلا مسلمان کوی

عبدالرحمان

(بھائی یگیہ ولکیہ اجمیری)

آج ہندوؤں اور مسلمانوں کے بیچ کی کھائی بڑھتی جا رہی ہو اور اسے بڑھانے میں غیروں کے ساتھ ساتھ ملک والوں کا بھی ہاتھ ہو. آج ایسا معلوم ہوتا ہو مانوں ہم سدا ایک دوسرے کے دشمن رہے ہیں، لیکن تاریخ اِس بات کی گواہ ہو کہ ہم دونوں ہندو اور مسلمان اِس ملک میں سگے بھائیوں کی طرح سیکڑوں برس سے رہتے آئے ہیں. ہم دونوں کی نسوں میں ایک ہی پُرکھوں کا خون ہو. مذہب کے جُدا ہوتے ہوئے بھی ہمارا ملک ایک رہا ہو، اُس کی بھاشا اُس کے ساہتیہ اور اُس کی کلا کو ہندوؤں اور مسلمانوں نے ساتھ مل کر بنایا اور بڑھایا ہو. ہندی اُردو کا جھگڑا اِس دیش میں بسنے والے عام ہندوؤں اور مسلمانوں کا جھگڑا نہیں ہو. آج کی کھڑی بولی کو بنانے اور ترقّی دینے میں مسلمان کویوں کا بڑا ہاتھ رہا ہو.

ہمیں بھولنا نہیں چاہیے اُس وقت جب کہ ہندی کا ساہتیہ ابھی بچپن میں ہی تھا جب کہ ہندی کی کویتا شروع ہی ہوئی تھی بلکہ آج کل کی کھڑی بولی ہندی کا ابھی یہ روپ بھی نہیں بنا تھا، سِدھ کوی سرہپا نے ۷۶۰ عیسوی میں جب ہندو سماج کی روڑھیوں کے خلاف اپنی آواز اُٹھائی تھی تب سے آدھی صدی پہلے (۷۱۲ عیسوی میں) ملتان اور سندھ پر مسلمانوں

का क़ब्ज़ा हो चुका था. उन दिनों हिन्दुस्तान अपनी दौलत के लिये दुनिया में मशहूर था. बाहर वाले इसे सोने की चिड़िया समझते थे. यहाँ के बने बारीक कपड़े दुनिया के अमीरज़ादों के मन भाते थे हिन्दुस्तान में कपड़ों की तिजारत से बेशुमार दौलत आती थी. अकेले रोम से ही हर साल पौने दो करोड़ रुपया इस मुल्क में इसी कपड़े की बदौलत आता था. लेकिन कपड़े के 'कारीगरों का यहां क्या हाल था ? हिन्दू समाज में उनकी कोई इज़्ज़त न थी. वह नीच समझे जाते थे. वह ही क्यों हाथ की कारीगरी से ज़िन्दगी बसर करने वाली तमाम जातियाँ यहाँ नीच समझी जाती थीं. ऊँच होने का ठेका लिया था ब्राह्मनों ने जो मुफ़्तख़ोर, अत्याचारी राजों रजवाड़ों के एजेण्ट थे. इन ब्राह्मनों, क्षत्रियों और बनियों के अलावा सब नीच समझे जाते थे- मुल्क के करोड़ों बाशिन्दों की इज़्ज़त जान माल पर ब्राह्मनों और ठाकुरों का क़ब्ज़ा था जो इन जातियों को अपने साथ बैठाकर खाना खिलाना तो दूर रहा, एक लाइन में खड़े होकर मरने का हक़ भी देने को तैयार न थे. इस लिये इन क़ौमों के दिलों में अन्दर ही अन्दर एक असन्तोश और बग़ावत उबल रही थी. ऐसे वक़्त में इसलाम का इस देश में आना इनके लिये ज़िन्दगी का सन्देश था. तब का इसलाम आज के इसलाम से ज़्यादा क्रान्तिकारी था. उसका सबसे ज़बरदस्त खिचाव था भाई चारा और छूतछात का न होना. यही वजह थी कि कपड़े बुनने वालों के दल के दल इसलाम के झंडे के नीचे आगए.

इन कपड़े बुनने वाले पटकारों में ही कबीर और अब्दुर्रहमान ऐसे कवि पैदा हुए. मालूम होता है शुरू ज़माने से ही कपड़ा बुनने

کا قبضہ ہو چکا تھا۔ اُن دنوں ہندستان اپنی دولت کے لئے دُنیا میں مشہور تھا۔ باہر والے اسے سونے کی چڑیا سمجھتے تھے۔ یہاں کے بنے باریک کپڑے دُنیا کے امیرزادوں کے من بھاتے تھے۔ ہندستان میں کپڑوں کی تجارت سے بےشمار دولت آتی تھی۔ اکیلے روم سے ہی ہر سال پونے دو کروڑ روپیہ اس ملک میں اسی کپڑے کی بدولت آتا تھا۔ لیکن کپڑے کے کاریگروں کا یہاں کیا حال تھا؟ ہندو سماج میں اُن کی کوئی عزت نہ تھی۔ وہ نیچ سمجھے جاتے تھے۔ وہ ہی کیوں ہاتھ کی کاریگری سے زندگی بسر کرنے والی تمام جاتیاں یہاں نیچ سمجھی جاتی تھیں۔ اونچ ہونے کا ٹھیکہ لیا تھا برہمنوں نے جو مفت خور، اتیاچاری راجوں رجواڑوں کے ایجنٹ تھے۔ اِن برہمنوں، چھتریوں اور بنیوں کے علاوہ سب نیچ سمجھے جاتے تھے۔ ملک کے کروڑوں باشندوں کی عزت جان مال پر برہمنوں اور ٹھاکروں کا قبضہ تھا جو اِن جاتیوں کو اپنے ساتھ بٹھاکر کھانا کھلانا تو دور رہا، ایک لائن میں کھڑے ہوکر مرنے کا حق بھی دینے کو تیار نہ تھے۔ اس لئے اِن قوموں کے دلوں میں اندر ہی اندر ایک اسنتوش اور بغاوت اُبل رہی تھی۔ ایسے وقت میں اسلام کا اِس دیش میں آنا اِن کے لئے زندگی کا سندیش تھا۔ تب کا اسلام آج کے اسلام سے زیادہ کرانتی کاری تھا۔ اُس کا سب سے زبردست کھچاؤ تھا بھائی چارا اور چھوت چھات کا نہ ہونا۔ یہی وجہ تھی کہ کپڑے بُننے والوں کے دل کے دل اسلام کے جھنڈے کے نیچے آ گئے۔

اِن کپڑے بُننے والے پٹکاروں میں ہی کبیر اور عبدالرحمان ایسے کوی پیدا ہوئے۔ معلوم ہوتا ہے شروع زمانے سے ہی کپڑا بُننے

वालों के कविता का शौक़ रहा है क्यों कि ऋग्वेद में भी जगह जगह ज़िक्र आता है कि—"ऊन के धागे से कवि लोग कपड़े बुनते हैं."

जब उस पुरानी हिन्दी कविता का आग़ाज़ हो रहा था—आठवीं सदी के पिछले हिस्से में—पूरे उत्तरी हिन्दुस्तान की बोल चाल की एक ही भाषा थी "अपभ्रंश" जिसका दूसरा नाम 'देसी' भाषा है. मालूम होता है दरबारी पन्डितों और कवियों ने आम लोगों से अपनी नफ़रत ज़ाहिर करने के लिये ही 'देसी' भाषा को "अपभ्रंश" नाम दिया था. इसके मानी हैं "बहुत बिगड़ी हुई." वह इसे संस्कृत से जिसे वह 'देवबानी' यानी देवताओं की बोली कहते थे बिगड़ा हुआ समझते थे. आठवीं सदी से बारहवीं सदी तक क़रीब क़रीब सारे उत्तर हिन्दुस्तान में एक ही बोली बोली जाती थी—तब तक बंगाली, गुजराती, मराठी, उड़िया, ब्रज भाषा, पंजाबी वग़ैरा का जनम नहीं हुआ था. यही वजह है उस वक़्त के जितने कवि मिलते हैं चाहे वह बंगाल के हों या पंजाब के, गुजरात के हों या बिहार के, सब की भाषा एकही है 'देसी'. आज की हिन्दी को देखते यह बहुत दूर की चीज़ मालूम पड़ेगी, लेकिन आपको मालूम होना चाहिये कि इसी के पेट से हिन्दी का जनम हुआ है. बीच के कवियों ने इसका अहसान भुला कर सिर्फ़ अपनी कमज़ोरी ही नहीं दिखलाई बल्कि हिन्दी की भी बहुत बड़ी हानि की. इस बेपरवाही की वजह क्या थी? इस समय के बहुत से कवि जैन और बौद्ध थे जिनसे हिन्दू ख़ास कर ब्राह्मन बहुत जलते थे. कुछ मुसलमान थे या जनता के कवि जिन्हें ब्राह्मन लोग तुच्छ और नीच समझते थे. इस लिये उन्होंने उनकी क़दर नहीं की.

والوں کو کویتا کا شوق رہا ہے کیونکہ رگ وید میں بھی جگہ جگہ ذکر آتا ہے کہ—"اون کے دھاگے سے کوی لوگ کپڑے بُنتے ہیں!"

جب اُس پرانی ہندی کویتا کا آغاز ہو رہا تھا—آٹھویں صدی کے پچھلے حصے میں—پورے اُتری ہندستان کی بول چال کی ایک ہی بھاشا تھی "اپبھرنش" جس کا دوسرا نام 'دیسی' بھاشا ہے. معلوم ہوتا ہے درباری پنڈتوں اور کویوں نے عام لوگوں سے اپنی نفرت ظاہر کرنے کے لئے ہی 'دیسی' بھاشا کو "اپبھرنش" نام دیا تھا. اس کے معنی ہیں "بہت بگڑی ہوئی." وہ اِسے سنسکرت سے جسے وہ 'دیوبانی' یعنی دیوتاؤں کی بولی کہتے تھے بگڑا ہوا سمجھتے تھے. آٹھویں صدی سے بارھویں صدی تک قریب قریب سارے اُتر ہندستان میں ایک ہی بولی بولی جاتی تھی—تب تک بنگالی، گجراتی، مراٹھی، اُڑیا، برج بھاشا، پنجابی وغیرہ کا جنم نہیں ہوا تھا. یہی وجہ ہے اُس وقت کے جتنے کوی ملتے ہیں چاہے وہ بنگال کے ہوں یا پنجاب کے، گجرات کے ہوں یا بہار کے، سب کی بھاشا ایک ہی ہے 'دیسی'. آج کی ہندی کو دیکھتے یہ بہت دور کی چیز معلوم پڑے گی، لیکن آپ کو معلوم ہونا چاہیئے کہ اِسی کے پیٹ سے ہندی کا جنم ہوا ہے. بیچ کے کویوں نے اِس کا احسان بھلا کر صرف اپنی کمزوری ہی نہیں دکھلائی بلکہ ہندی کی بھی بہت بڑی ہانی کی. اِس بےپرواہی کی وجہ کیا تھی؟ اِس سمے کے بہت سے کوی جین اور بودھ تھے جن سے ہندو خاص کر براہمن بہت جلتے تھے. کچھ مسلمان تھے یا جنتا کے کوی جنھیں براہمن لوگ تُچھ اور نیچ سمجھتے تھے. اِس لئے انھوں نے اُن کی قدر نہیں کی.

कितना अचरज होता है यह देखकर कि अब्दुर्रहमान (ई० सन् १०१०)से लेकर कुतबन (ई० १४९३) तक हमें किसी मुसलमान कवि की कोई रचना नहीं मिलती. इसकी वजह यह थी कि मुसलमान होने के नाते उन्हें हिन्दू सामन्तों के पुस्तकालयों में जगह नहीं मिली और इसी वजह से मुसलमान बादशाहों ने भी अपने किताब घरों में उन्हें जगह न दी. फिर जनता के कंठ के आसरे कब तक वह ज़िन्दा रह सकती थी.

कवि अब्दुर्रहमान का जन्म मुलतान में सन् १०१० में एक जुलाहा घर में हुआ था. इनके पिता का नाम मीर हुसेन था. उन्होंने अपना हाल इस तरह बताया है—

तह विहाए संभूओ आरद्दो मीरसेणस्स
तह तणओं कुल कमलो पाइअ कव्वेसु गीय विशयेशु ॥

इनकी बनाई एक किताब 'सन्नेह रासय' (सन्देश रासक) एक जैन पुस्तकालय की मेहरबानी से मिली है. इसका कुछ हिस्सा यहां पंडित राहुल सांकृत्यायन ने अपनी 'हिन्दी काव्य धारा' में दिया है. कवि अब्दुर्रहमान प्रेम और बिरह (हिज्र) के कवि थे. उनकी बोली ख़ूब मँजी हुई और शब्दों का चुनाव बहुत सुन्दर है. उन्होंने अपनी कहानी अपने समय के समाज के जीवन से चुनी है. उनकी कहानी के नायक (हीरो) और नायिका (हीरोइन) कोई राजकुमार या राजकुमारी नहीं हैं. न कालिदास के यक्ष की तरह कोई देवता ही हैं. वह एक मामूली ब्यापारी है जो ब्यापार के सिलसिले में मुलतान से खम्भात जाता है. उसे गए हुए एक लम्बा अरसा बीत गया है. घर पर उसकी

کتنا اچرج ہوتا ہے یہ دیکھ کر کہ عبدالرحمان (۱۰۱۰ء) سے لے کر کتبن (عیسوی ۹۳) ان تک ہمیں کسی مسلمان کوی کی کوئی رچنا نہیں ملتی۔ اس کی وجہ یہ تھی کہ مسلمان ہونے کے ناتے انھیں ہندو سامنتوں کے پستکالیوں میں جگہ نہیں ملی اور اسی وجہ سے مسلمان بادشاہوں نے بھی اپنے کتاب گھروں میں انھیں جگہ نہ دی۔ پھر جنتا کے کنٹھ کے آسرے کب تک وہ زندہ رہ سکتی تھی۔

کوی عبدالرحمان کا جنم ملتان میں ۱۰۱۰ء میں ایک جولاہا گھرانے میں ہوا تھا۔ ان کے پتا کا نام میر حسین تھا۔ انھوں نے اپنا حال اس طرح بتایا ہے—

نہ وہائے سنبھوئے آرددو میرسینس
نہ تینو گل کملو پائیہ کوّلیسو وگیہ وشیشو

ان کی بنائی ایک کتاب "سنیہہ راسیہ" (سندیش راسک) ایک جین پستکالے کی مہربانی سے ملی ہے۔ اس کا کچھ حصہ یہاں پنڈت راہل سانکرتیاین نے اپنی "ہندی کاویہ دھارا" میں دیا ہے۔ کوی عبدالرحمان پریم اور برہ (ہجر) کے کوی تھے۔ ان کی بولی خوب منجی ہوئی اور شبدوں کا چناؤ بہت سندر ہے۔ انھوں نے اپنی کہانی اپنے سمے کے سماج کے جیون سے چنی ہے۔ ان کی کہانی کے نایک (ہیرو) اور نایکا (ہیروئن) کوئی راج کمار یا راج کماری نہیں ہیں۔ نہ کالی داس کے یکش کی طرح کوئی دیوتا ہی ہیں۔ وہ ایک معمولی بیوپاری ہے جو بیوپار کے سلسلے میں ملتان سے کھمبھات جاتا ہے۔ اسے گئے ہوئے ایک لمبا عرصہ بیت گیا ہے۔ گھر پر اس کی

नौजवान पत्नी है जिसके बिरह का बयान कवि ने किया है. नीचे हम उसके कुछ हिस्से देते हैं. नायिका की तसवीर मुलाहिज़ा फ़रमाइये—

धम्मिल्लउ मुक्क मुह विज्जंभइ अरु अंग मोड़ई।
विरहानल संतविय ससइ दीह कर साह तोड़ई ॥

बिखरे हुए बाल मुह पर छिटके हैं, जँभाई ले रही है और अंगड़ाई तोड़ रही है, बिरह की आग से जल रही है, लम्बे सांस ले रही है और हाथों की उगलियां चटखा रही है.

एक मुसाफ़िर को देख कर उसे कुछ कहने के लिये जब वह चलती है तब उसकी क्या हालत होती है, देखिये—

तथा मनहर चल्लन्ती चंचल रमणभरी
छुटी खिसकि रसनावलि किंकिणि रवपसरी

इतना ही नहीं कि करधनी टूट कर गिर पड़ी बस बात खतम हो गई. करधनी के ज़मीन पर से उठाते ही मोती का हार टूट कर खिसक पड़ा. उसके कुछ दाने चुने थे कि तब तक पाज़ेब पैर से निकल भागी. मोती सड़क पर बिखरे ही रह गए. उन्हें छोड़ कर जब पाज़ेबों को उठाने लपकी कि सिर से ओढ़नी खिसक पड़ी, फिर उसे ठीक कर वह चलदी—उसकी बेपरवाही का यह हाल था—

"कुरती फटी हुई थी, जहां तहां छेद हो रहे थे. और उसकी छातियां झलक रही थीं. उनको शरमाकर अपने हाथों से वह ढक रही थी मानों सोने के घड़ों को कमलों से ढांक रही हो."

मुसाफ़िर के पास पहुंच कर भर्राई हुई आवाज़ में बोली—

نوجوان پتنی ہے جس کے برہ کا بیان کوی نے کیا ہے. نیچے ہم اس کے کچھ حصے دیتے ہیں. نایکا کی تصویر ملاحظہ فرمایئے—

دھمّلو مکّ مُوہ وجّمبھئی اور انگ موڑئی
برہانل سنتویہ سسئی دیہہ کر ساہ توڑئی

بکھرے ہوئے بال مُنہ پر چھٹکے ہیں، جمبھائی لے رہی ہے اور انگڑائی توڑ رہی ہے، برہ کی آگ سے جل رہی ہے، لمبے سانس لے رہی ہے اور ہاتھوں کی اُنگلیاں چٹخا رہی ہے.

ایک مسافر کو دیکھ کر اُسے کچھ کہنے کے لئے جب وہ چلتی ہے تب اُس کی کیا حالت ہوتی ہے، دیکھئے—

تتھا من ہر چلنتی چنچل رمن بھری
چھٹی کھسک رسناولی کنکن روپسری

اتنا ہی نہیں کہ کردھنی ٹوٹ کر گر پڑی بس بات ختم ہو گئی. کردھنی کے زمین پر سے اُٹھاتے ہی موتی کا ہار ٹوٹ کر کھسک پڑا. اُس کے کچھ دانے چُنے تھے کہ تب تک پازیب پیر سے نکل بھاگی. موتی سڑک پر بکھرے ہی رہ گئے. اُنھیں چھوڑ کر جب پازیبوں کو اُٹھانے لپکی کہ سر سے اوڑھنی کھسک پڑی، پھر اُسے ٹھیک کر وہ چل دی—اُس کی بےپرواہی کا یہ حال تھا—

"کُرتی پھٹی ہوئی تھی، جہاں تہاں چھید ہو رہے تھے اور اُس کی چھاتیاں جھلک رہی تھیں. اُن کو شرما کر اپنے ہاتھوں سے وہ ڈھک رہی تھی مانوں سونے کے گھڑوں کو کنول سے ڈھانک رہی ہو."

مسافر کے پاس پہنچ کر بھرائی ہوئی آواز میں بولی—

"ठहर ! ठहर !! मुसाफ़िर पल भर के लिये ठहर जा और धीरज से जो कुछ मैं कह रही हूँ सुन, छिन भर के लिये पसीज".

मुसाफ़िर उसकी बात सुन कर रुक जाता है. पास आकर वह उसका नाम धाम पूछती है—मुसाफ़िर उसे बताता है—कि वह मुलतान का रहने वाला है और उसके मालिक ने उसे एक चिट्ठी देकर खंभात भेजा है. खंभात का नाम सुन कर नायिका सकते की सी हालत में आ गई. फिर कुछ देर चुप रह कर बोली—

"मुसाफ़िर खंभात का नाम सुन कर मेरे बदन में सनसनी फैल जाती है. वहां मेरे अच्छे पीतम जिन्होंने मुझे विरह में जलाया है—रहते हैं. बहुत काल बीत गया अभी तक वह निर्दयी नहीं आए. रे मुसाफ़िर ! मैं उनके पास अपना संदेसा भेजना चाहती हूँ"—पर "जिसके जाने के बाद विरह की आग ने जल कर उसे राख नहीं कर दिया उसके पत्थर मन को क्या संदेश दिया जाय ? जिसके परदेस चले जाने पर मैं उसके वियोग में मर न गई. हे मुसाफ़िर ! उस पीतम को संदेश देते हुए मुझे शर्म आती है."

लेकिन शर्म से भी काम नहीं चलता क्यों कि—"शर्म के कारन अगर मैं अपने दुख को मन में ही रखे रहूँ तो यह रखा भी तो नहीं जाता—तू एक गाथा पढ़ना और हाथ पकड़ कर पीतम को मना लेना. गाथा यह है—

"तव विरह चोटहिं चूर चूर नष्ट जो ना अंग हुए।
सो आज कल मिलन उत्सहेहिं नाथ ठहरे हुए ।।"

इसके बाद मेरा यह संदेश कहना——

"पीतम के विरह की आग से जल कर जो मैं सुरलोक (जन्नत)

"ٹھہر! ٹھہر!! مسافر پل بھر کے لئے ٹھہر جا اور دھیرج سے جو کچھ میں کہہ رہی ہوں سُن، چھِن بھر کے لئے پسیج!"

مسافر اُس کی بات سُن کر رُک جاتا ہے. پاس آکر وہ اُس کا نام دھام پوچھتی ہے—مسافر اُسے بتاتا ہے—کہ وہ ملتان کا رہنے والا ہے اور اُس کے مالک نے اُسے ایک چِٹھّی دے کر کھمبھات بھیجا ہے. کھمبھات کا نام سُن کر نایکا سکتے کی سی حالت میں آگئی. پھر کچھ دیر چُپ رہ کر بولی—

"مسافر کھمبھات کا نام سُن کر میرے بدن میں سنسنی پھیل جاتی ہے. وہاں میرے اچھے پیتم جنھوں نے مجھے برہ میں جلایا ہے—رہتے ہیں. بہت کال بیت گیا ابھی تک وہ نردئی نہیں آئے. رے مسافر! میں اُن کے پاس اپنا سندیسا بھیجنا چاہتی ہوں."—پر "جس کے جانے کے بعد برہ کی آگ نے جلا کر اُسے راکھ نہیں کردیا اُس کے پتھّر من کو کیا سندیش دیا جائے؟ جس کے پردیس چلے جانے پر میں اس کے ویوگ میں مر نہ گئی، ہے مسافر! اس پیتم کو سندیش دیتے ہوئے مجھے شرم آتی ہے."

لیکن شرم سے بھی کام نہیں چلتا کیونکہ—"شرم کے کارن اگر میں اپنے دُکھ کو من میں رکھے رہوں تو یہ رکھا بھی نہیں جاتا—تو ایک گاتھا پڑھنا اور ہاتھ پکڑ کر پیتم کو منا لینا. گاتھا یہ ہے—

"تو برہ چوٹہیں چور چور نشٹ جو نا انگ ہوئے
سو آج کل مِلن اُتسہیں ناتھ ٹھہرے ہوئے"

اِس کے بعد میرا یہ سندیش کہنا—

"پیتم کے برہ کی آگ سے جل کر جو میں سُرلوک (جنّت)

की चली जाती तो यह अच्छा न होता क्योंकि तुम मेरे मन में बैठे हो.

"कन्थ ! तुम्हारे मन में रहते हुए मैं विरह से हार नहीं मान सकती क्योंकि मरने से बढ़ कर हार जाने का दुख है.

"इतनी बड़ी हार कैसे सही जाय—तुम्हारा हौसला कहाँ गया ? जिस तन से तुम खेलते थे उसे अब बिरह जला रहा है.

"बिरह ने निर्दयी हो कर देह पर चोट की है पर मैंने तुम्हारी इज्जत का ख्याल करके दिल नहीं टूटने दिया.

"अब बिरह मुझसे नहीं सहा जाता, इस लिये विलाप कर रही हूँ. रूप को गवाह मान कर आप मेरी रक्षा करें......."

"कहने को तो बहुत कुछ है पर मुझसे कहा नहीं जाता. कंन उंगली में जो आने वाली अंगूठी थी अब वह बाँह में आती है." हद है दुबलेपन की ! तेज ख़त्म होगया, बाल बिखर गए. कंचन सी मैं काली पड़ गई.

"हे निशाचर ! (दरिन्दे) मैं तेरे बिरह में निशाचरी बन गई."

"मुसाफ़िर ! कहूँ भी तो क्या कहूँ ? जिसने मुझे विरह के कुहर में लाकर छोड़ दिया है, जिस धन के लोभी निरमोही ने मुझे अकेला छोड़ दिया है, मैं उसे क्या संदेसा भेजूं ?"

यह सब कहते कहते नायिका छिन भर के लिए पत्थर की मूरत की तरह चुप खड़ी रहती है. मुसाफ़िर के तसल्ली देने पर शरमा कर आँसू पोछती हुई बोली—

"खोल खोल कर कह नहीं सकती. कामके बानों (शहवत के देवता के तीरों) से बिंधी हूँ—यह मेरी अवस्था तुम देख ही रहे हो, कंथ से कह देना." इस तरह संदेसा भी देती जाती थी और संदेसा न देने की बात

کو چلی جاتی تو یہ اچھا نہ ہوتا کیونکہ تم میرے من میں بیٹھے ہو۔

"کنتھ! تمھارے من میں رہتے ہوئے میں برہ سے ہار نہیں مان سکتی کیونکہ مرنے سے بڑھ کر ہار جانے کا دکھ ہے۔

"اتنی بڑی ہار کیسے سہی جائے — تمھارا حوصلہ کہاں گیا؟ جس تن سے تم کھیلتے تھے اُسے اب برہ جلا رہا ہے۔

"برہ نے نردئی ہوکر دیہہ پر چوٹ کی ہے پر میں نے تمھاری عزت کا خیال کرکے دل نہیں ٹوٹنے دیا۔

"اب برہ مجھ سے نہیں سہا جاتا، اس لئے ولاپ کر رہی ہوں۔ روپ کو گواہ مان کر آپ میری رکشا کریں......"

"کہنے کو تو بہت کچھ ہے پر مجھ سے کہا نہیں جاتا۔ کن انگلی میں جو آنے والی انگوٹھی تھی اب وہ بانہہ میں آتی ہے۔" حد ہے دُبلے پن کی! تیج ختم ہوگیا، بال بکھر گئے، کنچن سی میں کالی پڑ گئی۔

"ہے نشاچر! (درندے) میں تیرے برہ میں نشاچری بن گئی۔"

"مسافر! کہوں بھی تو کیا کہوں؟ جس نے مجھے برہ کے کہر میں لاکر چھوڑ دیا ہے، جس دھن کے لوبھی نرموہی نے مجھے اکیلا چھوڑ دیا ہے، میں اُسے کیا سندیسا بھیجوں؟"

یہ سب کہتے کہتے نایکا چھن بھر کے لئے پتھر کی مورت کی طرح چپ کھڑی رہتی ہے۔ مسافر کے تسلی دینے پر شرماکر آنسو پونچھتی ہوئی بولی —

"کھول کھول کر کہہ نہیں سکتی۔ کام کے بانوں (شہوت کے دیوتا کے تیروں) سے بندھی ہوں — یہ میری اوستھا تم دیکھ ہی رہے ہو، کنتھ سے کہہ دینا۔" اس طرح سندیسا بھی دیتی جاتی تھی اور سندیسا نہ دینے کی بات

भी कहती जाती थी. मुसाफ़िर ने कहा—सुन्दरी! रोकर मेरा अशगुन न करो—इन आंसुओं को रोक लो. सुन्दरी ने कहा—"मुसाफ़िर! तुम जाओ तुम्हारा काम सिद्ध होगा. मैं रो नहीं रही, विरह की आग का धुआं आंखों से निकल रहा है". मुसाफ़िर को अब उसकी बातों में रस आ रहा था. उसने नायिका से पूछा—कब से तुमने विरह की आग के इस धुंए को ढाँप रखा था? इस पर वियोगन ने गरमी से लेकर बसन्त तक की अपनी हालत बयान करदी—

"जब नाथ घर पर थे गर्मी आ गई थी, पर सुख मेरी मुट्ठी में रहता था." लेकिन उनके चले जाने के बाद—

(२२४)

"भयंकर लपटों ने जलाना शुरू कर दिया. सूरज की किरनों से ज़मीन पर जंगल के तिनके जल कर राख होगए. आसमान के नीचे जो गरम झक्खड़ चल रहे थे अंगों को छूते ही जला देते थे. ठंडक के लिये जो चंदन का लेप करती थी वह ऊपर ही सूख जाता था."

इस तरह वियोगन के जिस्म को जला कर गरमी के चले जाने के बाद—"बरसात आई, पर पीतम न आए. चारों तरफ़ घोर अंधेरा छा गया, आसमान में ग़ुस्से से बादल गरज रहे थे—बिजली तड़क रही थी. मेंढकों का टर्राना सुना नहीं जाता था—सिर पर बैठी कोयल बोलती थी उसका सुर मैं कैसे सहती? अरी रात! आज जो कुछ मेरे दिल मे कहने लायक़ है वह तीनों लोकों में नहीं समाता, दुख में तू चौगुनी हो जाती है. और सुख में छीज जाती है. इस तरह

...मैं —

بھی کہتی جاتی تھی. مسافر نے کہا ـــ سُندری! رو کر میرا اشگُن نہ کر ـــ اِن آنسوؤں کو روک لو. سُندری نے کہا ـــ "مسافر! تم جاؤ تمھارا کام سدھ ہوگا. میں رو نہیں رہی، برہ کی آگ کا دُھواں آنکھوں سے نکل رہا ہے". مسافر کو اب اُس کی باتوں میں رس آ رہا تھا. اُس نے نایکا سے پوچھا ـــ کب سے تم نے برہ کی آگ کے اِس دُھوئیں کو ڈھانپ رکھا تھا؟ اِس پر ویوگن نے گرمی سے لے کر بسنت تک کی اپنی حالت بیان کر دی ـــ

"جب ناتھ گھر پر تھے گرمی آ گئی تھی، پر سُکھ میری مُٹھی میں رہتا تھا." لیکن اُن کے چلے جانے کے بعد ـــ

(۲۲۴)

"بھینکر لپٹوں نے جلانا شروع کر دیا، سورج کی کرنوں سے زمین پر جنگل کے تنکے جل کر راکھ ہوگئے. آسمان کے نیچے جو گرم جھکڑ چل رہے تھے انگوں کو چھوتے ہی جلا دیتے تھے. ٹھنڈک کے لئے جو چندن کا لیپ کرتی تھی وہ اوپر ہی سوکھ جاتا تھا."

اِس طرح ویوگن کے جسم کو جلا کر گرمی کے چلے جانے کے بعد ـــ "برسات آئی، پر پیتم نہ آئے. چاروں طرف گھور اندھیرا چھا گیا، آسمان میں غصّے سے بادل گرج رہے تھے ـــ بجلی تڑک رہی تھی. مینڈکوں کا ٹرّانا سنا نہیں جاتا تھا ـــ سر پر بیٹھی کویل بولتی تھی اُس کا سُر میں کیسے سہتی؟ اری رات! آج جو کچھ میرے دل میں کہنے لائق ہے وہ تینوں لوکوں میں نہیں سماتا، دُکھ میں تو چوگنی ہو جاتی ہے اور سُکھ میں چھیج جاتی ہے. اِس طرح روتے دھوتے ـــ گیت گاتے پراکرت ...

आने की बाट में दक्खिन की तरफ़ देखती रही कि अगस्त्य ऋषि (एक तारे का नाम) को देखा"—तब मुझे पता चला "बरसात बीत गई, पर पीतम परदेस में ही रहे लौटे नहीं. आसमान के बादल फट गए. सुन्दर तारे दीखने लगे. पानी इतना निर्मल हो गया कि उसमें अपनी परछांई भी साफ़ दीखने लगी. कीचड़ सूख गई, सरदो में क्रौंच (एक चिड़िया) का शब्द सहा न जाता था. हंस के आने की राह देखते देखते मैं मर रही थी—जगह जगह सुन्दर औरतें सरोवरों के किनारे अपने प्यारों के साथ घूम रही थीं. लिपे पुते घर बड़े सुहावने मालूम होते थे. नवेलियों की सेज सुख से सुहानी थी. नए चांद की रेखा हाथ में लिये दिवाली के दिये चमचमा रहे थे. मै बड़ी चाह लिये पीतम का पथ निहार रही थी कि पाले से भरा हेमंत (पतझड़) भी आ पहुंचा——

"अब दिन उंगली की बराबर हो गया और रात ब्रह्मा के युग के बराबर लंबी हो गई. हे कन्थ! पतझड़ में भी अगर घर लौट कर न आओगे तो क्या मूर्ख! खल! पापी! मेरे मरने पर आओगे!"

पर पीतम न आए.

शिशिर ऋतु (सरदी) का बयान करते हुए लिखा है—

"शिशिर आ पहुँचा. नाथ अब भी दूर थे—आकाश में कठोर खुश्क हवा के झक्खड़ चलने लगे. पेड़ों के फूल पत्ते झड़ गए, छाया न रही. पंछियों ने उन्हें छोड़ दिया. दिशाएं अंधेरे से भर गईं. कुहरा छा गया. कुन्द चतुर्थी के त्यौहार में नवेलियां अपने अपने पीतम के साथ सेज पर गईं—ऐसे समय में भी मेरी सेज अकेली थी, मुसाफ़िर! मैंने पीतम के पास अपने मन को दूत बना कर

آنے کی باٹ میں دکھن کی طرف دیکھتی رہی کہ اگست رشی (ایک تارے کا نام) کو دیکھا"۔ تب مجھے پتہ چلا "برسات بیت گئی، پر پیتم پردیس میں ہی رہے لوٹے نہیں. آسمان کے بادل پھٹ گئے. سُندر تارے دکھنے لگے. پانی اتنا نرمل ہوگیا کہ اس میں اپنی پرچھائیں بھی صاف دکھنے لگی. کیچڑ سوکھ گئی سردی میں کرونچ (ایک چڑیا) کا شبد سہا نہ جاتا تھا. ہنس کے آنے کی راہ دیکھتے دیکھتے میں مر رہی تھی— جگہ جگہ سُندر عورتیں سروروں کے کنارے اپنے پیاروں کے ساتھ گھوم رہی تھیں. لیپے پُتے گھر بڑے سُہاونے معلوم ہوتے تھے. نویلیوں کی سیج سُکھ سے سُہانی تھی. نئے چاند کی ریکھا ہاتھ میں لئے دیوالی کے دیے چمچما رہے تھے. میں بڑی چاہ لئے پیتم کا پنتھ نہار رہی تھی کہ پالے سے بھرا ہیمنت (پت جھڑ) بھی آ پہنچا—

"اب دن انگلی کی برابر ہوگیا اور رات برہما کے یگ کے برابر لمبی ہوگئی. ہے کنتھ! پت جھڑ میں بھی اگر گھر لوٹ کر نہ آؤگے تو کیا مُورکھ! کھل! پاپی! میرے مرنے پر آؤگے!"

پر پیتم نہ آئے.

شِشر رتو (سردی) کا بیان کرتے ہوئے لکھا ہے—

"شِشر آ پہنچا. ناتھ اب بھی دور تھے. آکاش میں کٹھور خشک ہوا کے جھکّڑ چلنے لگے. پیڑوں کے پھول پتّے جھڑ گئے، چھایا نہ رہی. پنچھیوں نے انھیں چھوڑ دیا. دشائیں اندھیرے سے بھر گئیں. کہرا چھا گیا. کُند چترتھی کے تیوہار میں نویلیاں اپنے اپنے پیتم کے ساتھ سیج پر گئیں— ایسے سمے میں بھی میری سیج اکیلی تھی، مسافر! میں نے پیتم کے پاس اپنے من کو دُوت بنا کر

भेजा. पर मन कुछ हनूमान तो था नहीं, वह लौट कर न आया वहीं जाकर रह गया"—

> मैं दियहु हृदय ना प्राप्त प्रिय हुई उपमा एहि कहु कवन
> शृंगार्थ गई गदही (सो पुनि) पेखु हराई निज श्रवन ॥

इसी तरह तन के तिनकों को जला कर शिशिर भी चल बसा. मनोहर बसन्त का मौसम आ गया. दक्खिन की हवा बहने लगी. बियोगनों के दिल में कामदेव की आग तेज़ हो उठी. बिना पानी के बादल देह जलाने लगे. कोई अब कैसे सह सकता था ?

इस तरह बसन्त भी बीत गया. पीतम न आए. इस के बाद नायिका ने अपने मन में सोचा कि अब तक न जाने मैं क्या क्या अनाप शनाप बकती रही हूँ—उसने मुसाफ़िर से कहा—"मुसाफ़िरा ! अगर मैंने बिरह के कारन कुछ बेजा कह दिया है तो तुम कठोर बातों को मत कहना जो नरमी से भरा हो वही कहना. ऐसी बात कहना जिससे पीतम नाराज़ न हो जायं"

यह कह कर उसने मुसाफ़िर को कारज सिद्ध का आशीर्बाद दिया और घर की तरफ़ लौट चली. अभी अपने घर तक पंहुची भी न थी कि उसने मार्ग में अपने पीतम को खड़ा पाया—काव्य की कथा यहीं ख़त्म हो जाती है. आख़ीर में कवि अपने पाठकों को आशीर्बाद देता है—

> जिमि अंचितहू कार्य तासु सिभ्झेहु छणार्ध महंत
> तैस पढ़न्त सुनन्तहू, जयतु अनादि अनन्त ॥

بھیجا۔ پر من کچھ ہنومان تو تھا نہیں، وہ لوٹ کر نہ آیا وہیں جاکر رہ گیا“—

> میں دِئے ہو ہردے نا پراپت پریہ ہوئی اُپما ایہی کہو کون
> سرنگارتھ گئی گدھی (سو پُنی) پیکھو ہرائی نج شرون

اِسی طرح تن کے تنکوں کو جلاکر ششر بھی چل بسا۔ منوہر بسنت کا موسم آگیا۔ دکھن کی ہوا بہنے لگی۔ ویوگنوں کے دل میں کام دیو کی آگ تیز ہو اُٹھی۔ بنا پانی کے بادل دیہہ جلانے لگے۔ کوئی اب کیسے سہہ سکتا تھا؟

اِس طرح بسنت بھی بیت گیا۔ پیتم نہ آئے۔ اِس کے بعد نایکا نے اپنے من میں سوچا کہ اب تک نہ جانے میں کیا کیا اناپ شناپ بکتی رہی ہوں— اُس نے مسافر سے کہا ”مسافر! اگر میں نے برہ کے کارن کچھ بے جا کہہ دیا ہے تو تم کٹھور باتوں کو مت کہنا جو نرمی سے بھرا ہو وہی کہنا۔ ایسی بات کہنا جس سے پیتم ناراض نہ ہو جائیں“

یہ کہہ کر اُس نے مسافر کو کارج سدھی کا آشیرباد دیا اور گھر کی طرف لوٹ چلی۔ ابھی اپنے گھر تک پہنچی بھی نہ تھی کہ اُس نے مارگ میں اپنے پیتم کو کھڑا پایا— کاویہ کی کتھا یہیں ختم ہوجاتی ہے۔ آخر میں کوی اپنے پاٹھکوں کو آشیرباد دیتا ہے—

> جمی اچنتہو کارئیہ تاسو سجھیہو چھنادھ مہنت
> تیس پڑھنت سنتہو جیتو انادی اننت

कवि अब्दुर्रहमान जनता के कवि थे. वह कपड़ा बुनते थे और प्रेम और विरह के गीत गाते थे. दरबार का उनको कोई सहारा न था इसी लिये उनकी कविता दरबारीपन से बची हुई है. कौन जानता है कि इस तरह न जाने कितने कवि हुए होंगे जिनकी कविताएँ किसी पारखी को न पाकर अकाल में ही नष्ट हो गईं. ऐसे सैकड़ों हज़ारों कवियों की मेहनत से ही हमारी बोली का साहित्य बढ़ता रहा है. यह कवि चाहे जैन रहे हों या बौद्ध, हिन्दू रहे हों या मुसलमान इसी देश की सन्तान थे. उन्होंने भरसक अपनी भाषा की सेवा की. उसके काव्य साहित्य को आगे बढ़ाने की कोशिश की. उन्हीं की कोशिशों से आज हिन्दी बोली इस जगह पंहुची है. हमें उनका अहसान मानना चाहिये. सिर्फ़ अहसान ही नहीं बल्कि उनके आदर्श को पालना चाहिये और हिन्दू मुसलिम भेद भाव के बिना हिन्दुस्तान और उसकी बोली का हित करना चाहिये.

کوی عبدالرحمان جنتا کے کوی تھے. وہ کپڑا بُنتے تھے اور پریم اور برہ کے گیت گاتے تھے. دربار کا اُن کو کوئی سہارا نہ تھا اسی لئے اُن کی کویتا درباری پن سے بچی ہوئی ہے. کون جانتا ہے کہ اس طرح نہ جانے کتنے کوی ہوئے ہوں گے جن کی کویتائیں کسی پارکھی کو نہ پاکر اکال میں ہی نشٹ ہوگئیں. ایسے سیکڑوں ہزاروں کویوں کی محنت سے ہی ہماری بولی کا ساہتیہ بڑھتا رہا ہے. یہ کوی چاہے جین رہے ہوں یا بودھ، ہندو رہے ہوں یا مسلمان اسی دیش کی سنتان تھے. اُنھوں نے بھرسک اپنی بھاشا کی سیوا کی. اُس کے کاویہ ساہتیہ کو آگے بڑھانے کی کوشش کی. اُنھیں کی کوششوں سے آج ہندی بولی اس جگہ پہنچی ہے. ہمیں اُن کا احسان ماننا چاہئے. صرف احسان ہی نہیں بلکہ اُن کے آدرش کو پالنا چاہئے اور ہندو مسلم بھید بھاؤ کے بنا ہندستان اور اُس کی بولی کا ہت کرنا چاہئے.

पूजा के तीन गीत*

(रबीन्द्र नाथ ठाकुर)

(१)

मालिक ! तूने मुझे बहुत कुछ बख्शा है मगर तब भी मेरी ख्वाहिशें पूरी नहीं हुईं. मेरी गरीबी दूर नहीं हुई. मेरी आंसुओं की धारा पोंछी नहीं गई और न मेरे अन्दर की प्यास बुझी है.

तू ने मुझे जिन्दगी बख्शी है. मन बख्शा है. जिन्दगी जैसे प्यारे रिश्तेदार बख्शे हैं मीठी मीठी हलकी हलकी हवा. नीला खूबसूरत आसमान और दिल ललचाने वाली सब्ज़ ज़मीन.

अगर इतना कुछ दिया है तो, ऐ दोस्त ! तुझे और भी ज्यादा देना होगा. क्यों कि अब तो बग़ैर तुम्हें पाए मैं कभी भी वापस नहीं जाऊँगा.

("गीत वितान" से)

(२)

बार बार तूने मुझे वापस कर दिया है.

इस लिये मेरी पूजा का फूल खिला नहीं, दुख की रात खतम नहीं हुई और न तेरे और मेरे बीच का परदा दूर हुआ है. जिन्दगी के अन्दर जो मिठास भरी है वह कौन सी बरकत वाली घड़ी में मुझे महसूस होगी ?

मालिक ! कब तुम मेरा तन मन और धन क़बूल करोगे ?

("गीत वितान" से)

*बँगला से तरजुमा—गु. म.

پُوجا کے تین گیت*

(ربیندر ناتھ ٹھاکر)

(۱)

مالک تو نے مجھے بہت کچھ بخشا ہے مگر تب بھی میری خواہشیں پوری نہیں ہوئیں. میری غریبی دور نہیں ہوئی. میری آنسوؤں کی دھارا پونچھی نہیں گئی اور نہ میرے اندر کی پیاس بجھی ہے.

تو نے مجھے زندگی بخشی ہے. من بخشا ہے. زندگی جیسے پیارے رشتہ دار بخشے ہیں. میٹھی میٹھی ہلکی ہلکی ہوا، نیلا خوبصورت آسمان اور دل للچانے والی سبز زمین.

اگر اتنا کچھ دیا ہے تو، اے دوست! تجھے اور بھی زیادہ دینا ہوگا. کیونکہ اب تو بغیر تمھیں پائے میں کبھی بھی واپس نہیں جاؤں گا.

("گیت وِتان" سے)

(۲)

بار بار تو نے مجھے واپس کر دیا ہے.

اس لئے میری پوجا کا پھول کھلا نہیں، دکھ کی رات ختم نہیں ہوئی اور نہ تیرے اور میرے بیچ کا پردہ دور ہوا ہے. زندگی کے اندر جو مٹھاس بھری ہے وہ کون سی برکت والی گھڑی میں مجھے محسوس ہوگی؟

مالک! کب تم میرا تن من اور دھن قبول کروگے؟

("گیت وتان" سے)

* بنگلہ سے ترجمہ— گ. م.

(३)

जिनकी मुहब्बत में मैं तुम्हें भूल गया हूँ वह तो मुझे मुहब्बत करते नहीं. वह आते हैं और फिर दूर चले जाते हैं. और मैं अकेला रह जाता हूँ.

दो दिन की हँसी खतम हो जाती है. बत्ती बुझ जाती है. तब मेरे आंसू पोंछने को कौन रहता है? पुकार पुकार कर मैं रह जाता हूँ.

जो कुछ मुझे मिलता है उसे मैं अपने घर ले जाता हूँ ताकि उससे मैं अपने दिल को बहला सकूं. मगर हाय ! आखिर में जब मैं देखता हूँ तो क्या पाता हूँ ? सब कुछ टूट फूट जाता है और मिट्टी मिट्टी में मिल जाती है.

सुख की आशा में इच्छा लिये तरसता हूँ और दुख के सागर में डूब मरता हूँ. तब कौन जाने सूरज चांद और तारे कहां गुम हो जाते हैं. क्योंकि तुमको मैं कहीं भी देख नहीं पाता.

("गीत वितान" से)

हम विश्वास क्यों खोयें ?

(श्री काका साहब कालेलकर)

लोग पूछते हैं जब देश के "पाकिस्तान" और "हिन्दुस्तान" नाम से दो टुकड़े हो चुके, तब राष्ट्रभाषा हिन्दुस्तानी का क्या होगा ? आपकी नीति में कोई फ़र्क होगा या नहीं ? पाकिस्तान में तो

جن کی محبت میں میں تمھیں بھول گیا ہوں وہ تو مجھ سے محبت کرتے نہیں۔ وہ آتے ہیں اور پھر دور چلے جاتے ہیں۔ اور میں اکیلا رہ جاتا ہوں۔

دو دن کی ہنسی ختم ہو جاتی ہے۔ بتی بجھ جاتی ہے۔ تب میرے آنسو پونچھنے کو کون رہتا ہے؟ پکار پکار کر میں رہ جاتا ہوں۔

جو کچھ مجھے ملتا ہے اسے میں اپنے گھر لے جاتا ہوں تاکہ اس سے میں اپنے دل کو بہلا سکوں۔ مگر ہائے! آخر میں جب میں دیکھتا ہوں تو کیا پاتا ہوں؟ سب کچھ ٹوٹ پھوٹ جاتا ہے اور مٹی مٹی میں مل جاتی ہے۔

سُکھ کی آشا میں اچھا لئے ترستا ہوں اور دُکھ کے ساگر میں ڈوب مرتا ہوں۔ تب کون جانے سورج چاند اور تارے کہاں گم ہو جاتے ہیں۔ کیونکہ تم کو میں کہیں بھی دیکھ نہیں پاتا۔

("گیت وتان" سے)

ہم وشواس کیوں کھوئیں؟

(راشٹری کاکا صاحب کالیلکر)

لوگ پوچھتے ہیں جب دیش کے "پاکستان" اور "ہندستان" نام سے دو ٹکڑے ہو چکے، تب راشٹر بھاشا ہندستانی کا کیا ہوگا؟ آپ کی نیتی میں کوئی فرق ہوگا یا نہیں؟ پاکستان میں تو

मुसलमानों का राज होगा. वहाँ सब जगह अुरदू ही चलेगी. वहाँ का राज भी शायद इसलाम कीं शरीयत के मुताबिक़ ही चले. अैसी हालत में बाक़ी बचे हिन्दुस्तान की राष्ट्रभाषा कैसी होगी ? अुसकी लिपि कौन सी होगी ?

हिन्दुस्तानी का प्रचार करनेवाले प्रचारक भी पूछते हैं कि अब लोगों को हम क्या कहें ? जिस अेकता की दुहाअी देकर हम हिन्दुस्तानी का और अुसके लिये दो लिपियाँ होनी ही चाहियें इस का प्रचार करते थे वह अेकता तो अब रही नहीं, अब हम लोगों को क्या समझायें.

प्रान्तों की सरकारें भी कह सकती हैं कि 'अब हम हिन्दुस्तानी के लिये नागरी और अुरदू दो लिपियाँ लाज़मी तौर पर कैसे सिखा सकते हैं ? मिली जुली हिन्दुस्तानी तो हम चला सकते हैं, पर अगर पाकिस्तान में अुरदू भाषा और लिपि लाज़मी की गअी तो हम भी नागरी लिपि को राष्ट्र लिपि बनाकर अुसे लाज़मी तौर पर चला सकते हैं. जो लोग अुरदू लिपि सीखना चाहें या उर्दू लिपि के ज़रिये हिन्दुस्तानी सीखना चाहें अुन्हें अुतनी सहूलियत भी दे देंगे. लेकिन सारी जनता के अूपर अब तो हम दो लिपियाँ हरगिज़ लाद नहीं सकते.'

इस वक़्त देश की हालत अैसी डावाँडोल हो गई है, और लोगों के दिलों को जिस तरह बहका दिया गया है कि शान्ति से सोचना भी मुश्किल हो गया है.

देश की हालत और देश के भविष्य का पूरा विचार करके हमने तो तय किया है कि आज तक जो नीति हमने चलाअी, आयंदा के

مسلمانوں کا راج ہوگا. وہاں سب جگہ اُردو ہی چلے گی. وہاں کا راج بھی شاید اسلام کی شریعت کے مطابق ہی چلے. ایسی حالت میں باقی بچے ہندستان کی راشٹر بھاشا کیسی ہوگی؟ اُس کی لپی کون سی ہوگی؟

ہندستانی کا پرچار کرنے والے پرچارک بھی پوچھتے ہیں کہ اب لوگوں کو ہم کیا کہیں؟ جس ایکتا کی دُہائی دے کر ہم ہندستانی کا اور اُس کے لئے دو لپیاں ہونی ہی چاہئے اِس کا پرچار کرتے تھے وہ ایکتا تو اب رہی نہیں، اب ہم لوگوں کو کیا سمجھائیں.

پرانتوں کی سرکاریں بھی کہہ سکتی ہیں کہ اب ہم ہندستانی کے لئے ناگری اور اُردو دو لپیاں لازمی طور پر کیسے سکھا سکتے ہیں؟ ملی جلی ہندستانی تو ہم چلا سکتے ہیں، پر اگر پاکستان میں اُردو بھاشا اور لپی لازمی کی گئی تو ہم بھی ناگری لپی کو راشٹر لپی بناکر اُسے لازمی طور پر چلا سکتے ہیں. جو لوگ اُردو لپی سیکھنا چاہیں یا اُردو لپی کے ذریعہ ہندستانی سیکھنا چاہیں اُنھیں اُتنی سہولت بھی دے دیں گے. لیکن ساری جنتا کے اوپر اب تو ہم دو لپیاں ہرگز لاد نہیں سکتے.

اِس وقت دیش کی حالت ایسی ڈانواں ڈول ہوگئی ہے، اور لوگوں کے دلوں کو جس طرح بہکا دیا گیا ہے کہ شانتی سے سوچنا بھی مشکل ہوگیا ہے.

دیش کی حالت اور دیش کے بھوشیہ کا پورا وچار کرکے ہم نے تو طے کیا ہے کہ آج تک جو نیتی ہم نے چلائی، آیندہ کے

लिये भी वही सही है. वही हम चलायेंगे. यानी जहाँ तक हिन्दुस्तानी प्रचार सभा का ताल्लुक़ है, हम आसान हिन्दी और सहल अुरदू के मिलाने से जो हिन्दुस्तानी बनती है, अुसी को राष्ट्र-भाषा मानेंगे और अुसके लिये नागरी और अुरदू—दोनों लिपियाँ लाज़मी तौर पर सीखना ज़रूरी मानेंगे.

पाकिस्तान में लीगी मुसलमानों का बहुमत होगा, लेकिन वह सारा मुल्क मुसलमानों का नहीं है. वहाँ रहने वाले मुसलमान हिन्दू, ख्रिस्ती सब का वह मुल्क होगा.

और जो असली देश है, जिसे हम "हिन्दुस्तान" कहने के बजाय "हिन्द" कहना ज्यादा पसन्द करते हैं, अुसमें हिन्दुओं की तादाद भले ही सब से ज्यादा हो, लेकिन वह भी सिर्फ़ हिन्दुओं का मुल्क नहीं है. यहाँ रहनेवाले हिन्दू, मुसलमान, अीसाअी, पारसी सभी लोगों का यह देश है. यहाँ हम सब लोग अपने को अेक राष्ट्र मानते हैं. अपनी अेक क़ौमियत दिन ब दिन मजबूत करके उसे बढ़ाने की हम कोशिश करेंगे. यहाँ के जो मुसलमान अपने को परदेसी समझेंगे अुनकी बात वह जानें. हम तो हिन्दुस्तान के सब बाशिन्दों को अेक ही समझते हैं.

अपने देश की संस्कृति को पहले पहल हम आर्य संस्कृति कहते थे. जो आर्य नहीं थे अुन्हें "अनार्य " या "दस्यु" कह कर हम दूर रखते थे. बाद में यह नीति बदल कर हम लोगों ने सभी को अपनाने वाली हिन्दू संस्कृति क़ायम की, जिसमें आर्य. अनार्य. शक, हूण, मंगोलियन सब अेक हो गये.

अब अितिहास क्रम में अेक क़दम आगे बढ़ने के दिन आ गए हैं.

لئے بھی وہی صحیح ہے۔ وہی ہم چلائیں گے۔ یعنی جہاں تک ہندستانی پرچار سبھا کا تعلق ہے، ہم آسان ہندی اور سہل اردو کے ملانے سے جو ہندستانی بنتی ہے، اسی کو راشٹر بھاشا مانیں گے اور اس کے لئے ناگری اور اردو — دونوں لپیاں لازمی طور پر سیکھنا ضروری مانیں گے۔

پاکستان میں لیگی مسلمانوں کا بہومت ہوگا، لیکن وہ سارا ملک مسلمانوں کا نہیں ہے۔ وہاں رہنے والے مسلمان ہندو کرستی سب کا وہ ملک ہوگا۔

اور جو اصلی دیش ہے، جسے ہم "ہندستان" کہنے کے بجائے "ہند" کہنا زیادہ پسند کرتے ہیں، اس میں ہندوؤں کی تعداد بھلے ہی سب سے زیادہ ہو، لیکن وہ بھی صرف ہندوؤں کا ملک نہیں ہے۔ یہاں رہنے والے ہندو، مسلمان، عیسائی، پارسی سبھی لوگوں کا یہ دیش ہے۔ یہاں ہم سب لوگ اپنے کو ایک راشٹر مانتے ہیں۔ اپنی ایک قومیت دن بدن مضبوط کرکے اسے بڑھانے کی ہم کوشش کریں گے۔ یہاں کے جو مسلمان اپنے کو پردیسی سمجھیں گے ان کی بات وہ جانیں۔ ہم تو ہندستان کے سب باشندوں کو ایک ہی سمجھتے ہیں۔

اپنے دیش کی سنسکرتی کو پہلے پہل ہم آریہ سنسکرتی کہتے تھے۔ جو آریہ نہیں تھے انہیں "اناریہ" یا "دسیو" کہہ کر ہم دور رکھتے تھے۔ بعد میں یہ نیتی بدل کر ہم لوگوں نے سبھی کو اپنانے والی ہندو سنسکرتی قائم کی جس میں آریہ، اناریہ، شک، ہن، منگولین سب ایک ہو گئے۔

اب اتہاس کرم میں ایک قدم آگے بڑھنے کے دن آ گئے ہیں۔

अब हम हिन्दू संस्कृति की जगह हिन्दुस्तानी संस्कृति क़ायम करने जा रहे हैं. साठ साल से काँगरेस यही काम करती आयी है. पाकिस्तान बन जाने से हिन्द का मिशन बदल नहीं सकता. हिन्द में मुसलमान, क्रिस्ती, पारसी सब लोगों को बाहरी न समझ कर अुन के साथ हम संस्कृति के बारे में अेक रूप बनना चाहते हैं. हमारा अुनका राष्ट्री जीवन ओतप्रोत और अेक ही होगा. "जुदा जुदा चुनाव" (Separate electorate) का ज़हर—जिसने यह सारी बला खड़ी कर दी है—हमें दूर करना होगा. सभी को सन्तोष हो, सभी को आत्म-विकास के लिये बराबर का मौक़ा मिले. अैसा अिन्तज़ाम करना पड़ेगा. समाजी निगाह से या तालीम के बारे में जो पिछड़े हुअे हैं अुन्हें आगे लाने के लिये पूरी कोशिशें करनी होंगी.

मुस्लिम लीग ने पाकिस्तान हासिल किया अिसलिये हमारे सवाल बदल नहीं गअे हैं. सुलझ भी नहीं गअे हैं. लेकिन अब हम अपनी अन्दरूनी अेकता ज्यादा अच्छी तरह से मज़बूत कर सकेंगे. और अगर हम अपनी सैकड़ों और हज़ारों बरस की कमज़ोरियाँ दूर कर सके और हिन्द को अेक जीव, अेक प्राण बना सके तो किसी दिन पाकिस्तान के लोगों को भी अपनी तरफ़ खींच सकेंगे. अितना ही नहीं, बल्कि द्वेष और अविश्वास की हवा को हटा कर सारी दुनिया को बन्धु भाव का सन्देश भी दे सकेंगे.

हमारे देश के आज टुकड़े हो गअे हैं, यह कोअी मामूली बात नहीं है. अिस दुघटना से अगर हम सबक़ न सीखे और तंग दिल हो गअे तो जो फूट आज शुरू हुअी है वह आगे बढ़ती जायगी और हमें [illegible] तरन्त की लाभ हानि की दृष्टि से

[illegible]

اب ہم ہندو سنسکرتی کی جگہ ہندستانی سنسکرتی قایم کرنے جا رہے ہیں۔ ساٹھ سال سے کانگریس یہی کام کرتی آئی ہے۔ پاکستان بن جانے سے ہند کا مشن بدل نہیں سکتا۔ ہند میں مسلمان، کرسچین، پارسی سب لوگوں کو باہری نہ سمجھ کر اُن کے ساتھ ہم سنسکرتی کے بارے میں ایک روپ بننا چاہتے ہیں۔ ہمارا اُن کا راشٹری جیون اوت پروت اور ایک ہی ہوگا۔ "جُدا جُدا چناؤ" (Separate electorate) کا زہر جس نے یہ ساری بلا کھڑی کر دی ہے ہمیں دور کرنا ہوگا۔ سبھی کو سنتوش ہو، سبھی کو آتم وکاس کے لئے برابر کا موقع ملے۔ ایسا انتظام کرنا پڑے گا۔ سماجی نگاہ سے یا تعلیم کے بارے میں جو پچھڑے ہوئے ہیں انہیں آگے لانے کے لئے پوری کوششیں کرنی ہوں گی۔

مسلم لیگ نے پاکستان حاصل کیا اس لئے ہمارے سوال بدل نہیں گئے ہیں۔ سلجھے بھی نہیں گئے ہیں۔ لیکن اب ہم اپنی اندرونی ایکتا زیادہ اچھی طرح سے مضبوط کر سکیں گے۔ اور اگر ہم اپنی سیکڑوں اور ہزاروں برس کی کمزوریاں دور کر سکے اور ہند کو ایک جیو، ایک پران بنا سکے تو کسی دن پاکستان کے لوگوں کو بھی اپنی طرف کھینچ سکیں گے۔ اتنا ہی نہیں، بلکہ دویش اور اوشواس کی ہوا کو ہٹا کر ساری دنیا کو بندھو بھاؤ کا سندیش بھی دے سکیں گے۔

ہمارے دیش کے آج ٹکڑے ہو گئے ہیں، یہ کوئی معمولی بات نہیں ہے۔ اس درگھٹنا سے اگر ہم سبق نہ سیکھے اور تنگ دل ہو گئے تو جو پھوٹ آج شروع ہوئی ہے وہ آگے بڑھتی جائے گی اور ہمیں وناش کی طرف لے جائے گی۔ تُرنت کی لابھ ہانی کی درشٹی سے

देखने के यह दिन नहीं हैं. आज हमारी मानवता को, 'आदमियत' को, बचाने का सवाल सबसे बड़ा है. अब हम हिन्दू धर्म और हिन्दू संस्कृति को लेकर बैठ नहीं सकते हैं. अब हमें हिन्दुस्तानी संस्कृति की तरफ़ बढ़ना है. अिसके लिये हमें मिली जुली हिन्दुस्तानी का दोनों लिपियों के साथ प्रचार करना चाहिये. हिन्दुस्तानी प्रचार सभा के इम्तहानों में नागरी और अुरदू दोनों लिखावटों का सीखना ज़रूरी होगा. हमारी प्रचार सभा हिन्दुस्तान और पाकिस्तान—सारे मुल्क को यही नसीहत देगी कि दोनों लिपियों के साथ हिन्दुस्तानी सीखें. मानना या न मानना लोगों की मरज़ी की बात है. अगर लोग मान जायेंगे तो सरकारों को भी मानना पड़ेगा. तब तक सूबाअी सरकारों का यह फ़र्ज़ होगा कि जनता जहाँ तक जाने के लिये तैयार हो वहाँ तक अुसे जाने के लिये वह हर तरह का बढ़ावा दें और फूट की तरफ़ ले जाने वाली जितनी भी ताक़तें हों अुनका मुक़ाबला करती रहें.

दुनिया की अब हालत अैसी हो गअी है कि या तो सब देश आपस में लड़ कर मनुष्य जाति को ही खतम कर दें. या अपने होश सम्भाल कर सब के साथ मेल जोल करके बन्धुता को क़ायम करें. हमारा फ़र्ज़ हमारे सामने साफ़ है. हमें तो हिन्द की भी सेवा करनी है और पाकिस्तान के लोगों की भी. हम अपना विश्वास क्यों खोअें ? आज जो लोग नहीं मानते हैं वह भी कल हमारे पास आने वाले हैं ही. हमें अपनी नीति तंग नहीं करनी है.

دیکھنے کے یہ دن نہیں ہیں. آج ہماری مانوتا کو، 'آدمیت' کو بچانے کا سوال سب سے بڑا ہے. اب ہم ہندو دھرم اور ہندو سنسکرتی کو لے کر بیٹھ نہیں سکتے ہیں. اب ہمیں ہندستانی سنسکرتی کی طرف بڑھنا ہے. اِس کے لئے ہمیں ملی جلی ہندستانی کا دونوں لپیوں کے ساتھ پرچار کرنا چاہیئے. ہندستانی پرچار سبھا کے امتحانوں میں ناگری اور اُردو دونوں لکھاوٹوں کا سیکھنا ضروری ہوگا. ہماری پرچار سبھا ہندستان اور پاکستان — سارے ملک کو یہی نصیحت دے گی کہ دونوں لپیوں کے ساتھ ہندستانی سیکھیں. ماننا یا نہ ماننا لوگوں کی مرضی کی بات ہے. اگر لوگ مان جائیں گے تو سرکاروں کو بھی ماننا پڑے گا. تب تک صوبائی سرکاروں کا یہ فرض ہوگا کہ جنتا جہاں تک جانے کے لئے تیار ہو وہاں تک اُسے جانے کے لئے وہ ہر طرح کا بڑھاوا دیں اور پھوٹ کی طرف لے جانے والی جتنی بھی طاقتیں ہوں اُن کا مقابلہ کرتی رہیں.

دُنیا کی اب حالت ایسی ہوگئی ہے کہ یا تو سب دیش آپس میں لڑکر منشیہ جاتی کو ہی ختم کر دیں، یا اپنے ہوش سنبھال کر سب کے ساتھ میل جول کرکے بندھوتا کو قایم کریں ہمارا فرض ہمارے سامنے صاف ہے. ہمیں تو ہند کی بھی سیوا کرنی ہے اور پاکستان کے لوگوں کی بھی. ہم اپنا وشواس کیوں کھوئیں ؟ آج جو لوگ نہیں مانتے ہیں وہ بھی کل ہمارے پاس آنے والے ہیں ہی، ہمیں اپنی نیتی تنگ نہیں کرنی ہے.

मौलाना महमूदुल हसन

(भाई रतन लाल बंसल फ़िरोज़ाबादी)

वलीउल्लाई जमात के छटे इमाम मौलाना महमूदुल हसन साहब ने जमात की बागडोर पूरी तरह तो सन् १६०५ में हाजी रशीद अहमद साहब गंगोही के मरने के बाद अपने हाथ में ली, पर इस तहरीक में काम करना उन्होंने मौलाना क़ासिम साहब के सामने शुरू कर दिया था और उनके काम को देख मौलाना क़ासिम साहब को यक़ीन हो गया था कि वलीउल्लाई तहरीक मौलाना महमूदुल हसन साहब की लीडरी में अच्छी तरह फल-फूल सकेगी.

मौलाना महमूदुल हसन साहब की पैदायश १२६७ हि० में देवबन्द में हुई थी. उनके बाप मौलाना ज़ुल्फ़िक़ार अली खां और ताऊ मौलाना महताब अली साहब वलीउल्लाई तहरीक के पुराने मददगार थे और उन इने गिने आदमियों में से थे जिनकी मदद से ही सन् १८६७ ई० के उस ज़माने में मौलाना क़ासिम साहब इस मदरसे को क़ायम करने में कामयाब हो सके थे. मदरसे के सबसे पहिले विद्यार्थी भी मौलाना महमूदुल हसन ही थे. कुछ ही दिनों में मौलाना क़ासिम साहब ने अपने इस ग़ैर मामूली शागिर्द की छिपी ताक़त को पहिचान लिया और मज़हबी तालीम के साथ साथ जमात के असली असूल और उसके मक़सद भी उन्हें समझा दिये. कितनी ही रातें मौलाना महमूदुल हसन साहब ने उन

مولانا محمود الحسن

(بھائی رتن لال بنسل فیروز آبادی)

ولی اللہی جماعت کے چھٹے امام مولانا محمود الحسن صاحب نے جماعت کی باگ ڈور پوری طرح تو ۱۹۰۵ء میں حاجی رشید احمد صاحب گنگوہی کے مرنے کے بعد اپنے ہاتھ میں لی. پر اِس تحریک میں کام کرنا انھوں نے مولانا قاسم صاحب کے سامنے شروع کر دیا تھا اور اُن کے کام کو دیکھ مولانا قاسم صاحب کو یقین ہوگیا تھا کہ ولی اللہی تحریک مولانا محمود الحسن صاحب کی لیڈری میں اچھی طرح پھل پھول سکے گی.

مولانا محمود الحسن صاحب کی پیدائش ۱۲۶۷ھ میں دیوبند میں ہوئی تھی. اُن کے باپ مولانا ذوالفقار علی خاں اور تاؤ مولانا مہتاب علی صاحب ولی اللہی تحریک کے پُرانے مددگار تھے اور اُن اِنے گِنے آدمیوں میں سے تھے جن کی مدد سے ہی ۱۸۶۷ء کے اُس زمانے میں مولانا قاسم صاحب اِس مدرسے کو قایم کرنے میں کامیاب ہو سکے تھے. مدرسے کے سب سے پہلے وِدّیارتھی بھی مولانا محمود الحسن ہی تھے. کچھ ہی دنوں میں مولانا قاسم صاحب نے اپنے اِس غیر معمولی شاگرد کی چھپی طاقت کو پہچان لیا اور مذہبی تعلیم کے ساتھ ساتھ جماعت کے اصلی اصول اور اُس کے مقصد بھی اُنھیں سمجھا دئے. کتنی ہی راتیں مولانا محمود الحسن صاحب نے اِس

कहानी को सुनने में बितादीं जिसकी एक एक घटना शहीदों के ख़ून के ज़िक्र से गूँज रही थी. इस तरह बचपन में ही उनके दिल में मुल्क की आज़ादी की लगन पैदा हो गई और उन्होंने यह ठान लिया कि वह अपनी ज़िन्दगी का एक एक पल इसी काम में बिताएँगे.

९ जनवरी सन् १८७४ को देवबन्द मदरसे के जिन पाँच विद्यार्थियों के सर पर फ़ज़ीलत की पगड़ी बँधी यानी जिन्हें डिगरियाँ मिलीं. उनमें एक वह भी थे. इसके बाद उन्होंने मदरसे में ही बिना तनख़ाह पढ़ाना शुरू कर दिया. सन् १८७५ में सिर्फ़ पच्चीस रुपये माहवार पर वह मदरसे के चौथे मुदर्रिस हुए और उन्होंने देवबन्द के विद्यार्थियों में अपना काम शुरु कर दिया.

(२२७)

सन् १८७८ में उनके उस्ताद मौलाना क़ासिम साहब अचानक चल बसे. इसका उन पर गहरा असर हुआ. मौलाना क़ासिम साहब उनको अपने बेटे की तरह प्यार करते थे. इसके एक साल बाद उन्होंने देवबन्द के कुछ उस्तादों और तालिब इल्मों को मिलाकर 'समरतुल तर्बियत' के नाम से एक नए संगठन की नींव डाली. ख़ुशक़िस्मती से वलीउल्लाई जमात के चौथे इमाम हाजी इमदादुल्ला उस वक़्त तक मक्का में ज़िन्दा थे. मौलाना महमूदुल हसन हज्ज के बहाने उनके पास मक्का गए और उनसे अपने प्रोग्राम की बाबत हिदायतें हासिल कीं. इसके बाद मौलाना हिन्दुस्तान वापस आ गए.

उस वक़्त हिन्दुस्तान में फिर एक नई राजकाजी हलचल नज़र आने लगी थी. ब्रिटिश हुकूमत भी उसे मिटा देने के

کہانی کو سننے میں بتا دیں جس کی ایک ایک گھٹنا شہیدوں کے خون کے ذکر سے گونج رہی تھی۔ اس طرح بچپن میں ہی اُن کے دل میں ملک کی آزادی کی لگن پیدا ہوگئی اور اُنھوں نے یہ ٹھان لیا کہ وہ اپنی زندگی کا ایک ایک پل اِسی کام میں بتائیں گے۔

۹ر جنوری ۱۸۷۴ء کو دیوبند مدرسے کے جن پانچ ودّیارتھیوں کے سر پر فضیلت کی پگڑی بندھی یعنی جنھیں ڈگریاں ملیں، اُن میں ایک وہ بھی تھے۔ اِس کے بعد اُنھوں نے مدرسے میں ہی بنا تنخواہ پڑھانا شروع کردیا۔ ۱۸۷۵ء میں صرف پچیس روپے ماہوار پر وہ مدرسے کے چوتھے مدرّس ہوئے اور اُنھوں نے دیوبند کے ودّیارتھیوں میں اپنا کام شروع کردیا۔

(۲۲۷)

۱۸۷۸ء میں اُن کے اُستاد مولانا قاسم صاحب اچانک چل بسے۔ اِس کا اُن پر گہرا اثر ہوا۔ مولانا قاسم صاحب اُن کو اپنے بیٹے کی طرح پیار کرتے تھے۔ اِس کے ایک سال بعد اُنھوں نے دیوبند کے کچھ اُستادوں اور طالب علموں کو ملاکر 'ثمرۃ التربیت' کے نام سے ایک نئے سنگٹھن کی نیو ڈالی۔ خوش قسمتی سے ولی اللہی جماعت کے چوتھے امام حاجی امداد اللہ اُس وقت تک مکّہ میں زندہ تھے۔ مولانا محمود الحسن حج کے بہانے اُن کے پاس مکّہ گئے اور اُن سے اپنے پروگرام کی بابت ہدایتیں حاصل کیں۔ اِس کے بعد مولانا ہندستان واپس آگئے۔

اُس وقت ہندستان میں پھر ایک نئی راج کاجی ہلچل نظر آنے لگی تھی۔ برٹش حکومت بھی اُسے مٹا دینے کے

लिये पर्दे की ओट से आए दिन एक नई चाल चल रही थी. हुकूमत को सबसे बड़ी घबराहट यह थी कि आज़ादी की जो लगन अभी तक मुसलमानों में ही ज़ोर पर थी, वह अब हिन्दुओं में भी फैलती जा रही थी. यह लार्ड लिटन का ज़माना था. जिससे ज़्यादा तंगनज़र और हिन्दुस्तान के भले बुरे को न सोचने वाला वायसराय अब तक शायद कोई दूसरा नहीं आया. उसी ज़माने में दक्खिन का वह मशहूर अकाल पड़ा, जिसमें पचास लाख से ज़्यादा हिन्दुस्तानी मक्खियों की तरह मर गए. लार्ड लिटन पर इसका कुछ भी असर नहीं हुआ. उसने एक तरफ़ तो अफ़ग़ानिस्तान पर चढ़ाई कर दी और दूसरी तरफ़ दिल्ली में एक शानदार दरबार करने का सरंजाम शुरू कर दिया. भूकों मरते हिन्दुस्तानियों के ज़ख़्मों पर यह नमक छिड़कना था. नतीजा यह हुआ कि एक तरफ़ दक्खिन में और दूसरी तरफ़ पंजाब में अंगरेज़ी हुकूमत के ख़िलाफ़ लोग उठ खड़े हुए. यह तहरीकें जल्द ही दबा दी गईं, लेकिन इस बात का सबूत दे गईं कि सन् १८५७ के बाद भी हिन्दुस्तान में कुछ ऐसे लोग हैं जो ब्रिटिश हुकूमत के ख़िलाफ़ हथियार लेकर खड़े हो सकते हैं.

हुकूमत ने इस जोश को दबाने के लिये एक तरफ़ कौंसिलें क़ायम करके कुछ मामूली से हक़ हिन्दुस्तानियों को दिये तो दूसरी तरफ़ प्रेस एक्ट और हथियार छीनने का क़ानून बना कर लोगों को दबाना शुरू किया. इसके साथ ही एक तीसरी चाल फूट डालने की थी, जो पहिली दोनों चालों से भी ज़्यादा कामयाब रही और आज तक जारी है. बुरा यह हुआ कि मुल्क के कुछ बड़े बड़े

لئے پردے کی اوٹ سے آئے دن ایک نئی چال چل رہی تھی. حکومت کو سب سے بڑی گھبراہٹ یہ تھی کہ آزادی کی جو لگن ابھی تک مسلمانوں میں ہی زور پر تھی، وہ اب ہندوؤں میں بھی پھیلتی جا رہی تھی۔ یہ لارڈ لٹن کا زمانہ تھا، جس سے زیادہ تنگ نظر اور ہندستان کے بھلے بُرے کو نہ سوچنے والا وائسرائے اب تک شاید کوئی دوسرا نہیں آیا۔ اُسی زمانے میں دکھن کا وہ مشہور اکال پڑا، جس میں پچاس لاکھ سے زیادہ ہندستانی مکھیوں کی طرح مر گئے۔ لارڈ لٹن پر اِس کا کچھ بھی اثر نہیں ہوا۔ اُس نے ایک طرف تو افغانستان پر چڑھائی کر دی اور دوسری طرف دلّی میں ایک شاندار دربار کرنے کا سرانجام شروع کر دیا۔ بھوکوں مرتے ہندستانیوں کے زخموں پر یہ نمک چھڑکنا تھا۔ نتیجہ یہ ہوا کہ ایک طرف دکھن میں اور دوسری طرف پنجاب میں انگریزی حکومت کے خلاف لوگ اُٹھ کھڑے ہوئے۔ یہ تحریکیں جلد ہی دبا دی گئیں لیکن اِس بات کا ثبوت دے گئیں کہ ۱۸۵۷ء کے بعد بھی ہندستان میں کچھ ایسے لوگ ہیں جو برٹش حکومت کے خلاف ہتھیار لے کر کھڑے ہو سکتے ہیں۔

حکومت نے اِس جوش کو دبانے کے لئے ایک طرف کونسلیں قایم کر کے کچھ معمولی سے حق ہندستانیوں کو دئے تو دوسری طرف پریس ایکٹ اور ہتھیار چھیننے کا قانون بنا کر لوگوں کو دبانا شروع کیا۔ اِس کے ساتھ ہی ایک تیسری چال پھوٹ ڈالنے کی تھی، جو پہلی دونوں چالوں سے بھی زیادہ کامیاب رہی اور آج تک جاری ہے۔ بُرا یہ ہوا کہ ملک کے کچھ بڑے بڑے

समझदार और असर वाले लोग भी हकूमत के इस जाल में फँस गए, और फँसते रहे और मुल्क की आज़ादी के उस नन्हे से पौदे को, जिसे एक तरफ़ देवबन्द की जमात और दूसरी तरफ़ दक्खिन बंगाल व पंजाब में उठती हुई उमंगें सींच रही थीं, नुक़सान पहुँचाते रहे.

मौलाना महमूदुल हसन इन हालतों में भी बराबर अपने काम में लगे रहे और 'समरतुल तर्वियत' के संगठन को मज़बूत करने की कोशिश करते रहे, पर वह कोशिश कुछ फल न ला सकी. इसके बाद अपने थोड़े से चुने हुए साथियों के सहारे वह अपने काम में लगे रहे. उस वक़्त उनका ख़याल था कि चूँकि हिन्दुस्तानियों से हथियार छीन लिये गये हैं इस लिये जब तक कोई ग़ैर मुल्की हकूमत हमारी मदद पर न हो. तब तक आज़ादी की जंग शुरू नहीं की जा सकती. इसके लिये उनकी नज़र काबुल पर गई. हिन्दुस्तान और अफ़ग़ानिस्तान की हदें मिली होने की वजह से वहीं से मदद मिलना सबसे ज़्यादा आसान था. इसके साथ ही हिन्दुस्तान की सरहद पर बसे हुए आज़ाद क़बीलों की मदद हासिल करने का ख़याल भी उनके दिल में उठा, क्योंकि वहीं वलीउल्लाई जमात की वह दूसरी शाख़ जो सन् १८२४ में सय्यद अहमद बरेलवी के साथ हिन्दुस्तान से हिजरत करके सरहद पर चली गई थी अभी तक अपना काम कर रही थी. मौलाना महमूदुल हसन ने मदरसा देवबन्द के उन तालिब इल्मों के सहारे जो आज़ाद क़बीलों से आए थे अपना ताल्लुक़ वहीं से क़ायम किया और वह उसमें कामयाब हुए. आज़ाद क़बीलों के

سمجھدار اور اثر والے لوگ بھی حکومت کے اس جال میں پھنس گئے اور پھنستے رہے اور ملک کی آزادی کے اُس ننھے سے پودے کو، جسے ایک طرف دیوبند کی جماعت اور دوسری طرف دکھن بنگال و پنجاب میں اٹھتی ہوئی اُمنگیں سینچ رہی تھیں، نقصان پہنچاتے رہے۔

مولانا محمود الحسن ان حالتوں میں بھی برابر اپنے کام میں لگے رہے اور 'ثمرۃ التربیت' کے سنگھٹن کو مضبوط کرنے کی کوشش کرتے رہے، پر وہ کوشش کچھ پھل نہ لا سکی۔ اس کے بعد اپنے تھوڑے سے چُنے ہوئے ساتھیوں کے سہارے وہ اپنے کام میں لگے رہے۔ اس وقت اُن کا خیال تھا کہ چونکہ ہندستانیوں سے ہتھیار چھین لئے گئے ہیں اس لئے جب تک کوئی غیر ملکی حکومت ہماری مدد پر نہ ہو، تب تک آزادی کی جنگ شروع نہیں کی جا سکتی۔ اس کے لئے ان کی نظر کابل پر گئی۔ ہندستان اور افغانستان کی حدیں ملی ہونے کی وجہ سے وہیں سے مدد ملنا سب سے زیادہ آسان تھا۔ اس کے ساتھ ہی ہندستان کی سرحد پر بسے ہوئے آزاد قبیلوں کی مدد حاصل کرنے کا خیال بھی ان کے دل میں اٹھا، کیونکہ وہیں ولی اللٰہی جماعت کی وہ دوسری شاخ جو ۱۸۲۴ء میں سید احمد بریلوی کے ساتھ ہندستان سے ہجرت کر کے سرحد پر چلی گئی تھی، ابھی تک اپنا کام کر رہی تھی۔ مولانا محمود الحسن نے مدرسہ دیوبند کے اُن طالب علموں کے سہارے جو آزاد قبیلوں سے آئے تھے اپنا تعلق وہیں سے قایم کیا اور وہ اس میں کامیاب ہوئے۔ آزاد قبیلوں کے

इलाक़े के एक बड़े असर वाले सरदार तुरंगजई के हाजी साहब से उनकी पुरानी जान पहचान थी. नतीजा यह हुआ कि सन् १८५७ की आज़ादी की लड़ाई में हाजी इमदादुल्ला साहब आज़ाद क़बीलों की मदद लेने और वलीउल्लाई जमात की इन दोनों शाख़ों को मिलाने की जिस कोशिश में नाकामयाब हुए थे जमाने की जरूरतों से मौलाना महमूदुल हसन अब उसमें कामयाब हुए. अब इन आजाद क़बीलों के दूत और आदमी बराबर उनके पास आने जाने लगे.

अफ़ग़ानिस्तान में उस वक़्त अमीर हबीबुल्ला का राज था. मौलाना ने फ़ौरन ही उनसे और उनके कुछ बड़े बड़े सरदारों और भाइयों से लिखा पढ़ी शुरू की. इन भाइयों में ख़ास शाहज़ादा नसरुल्ला ख़ाँ थे, जिन्होंने सन् १८९८ में इंगलिस्तान जाकर वहाँ की पार्लिमेन्ट के मेम्बरों और ब्रिटिश सरकार के अफ़सरों से बड़े जोर के साथ कहा था कि अफ़ग़ानिस्तान की हकूमत में अंगरेज़ों का जो दख़ल है वह फ़ौरन उठा लिया जाय. उनकी बात उस वक़्त नहीं सुनी गई, जिससे उन्होंने अंग्रेज़ों की मुख़ालफ़त में 'जमीय्यते सियासिया' के नाम से अफ़ग़ानिस्तान में एक संगठन बनाना शुरू कर दिया. मौलाना महमूदुल हसन ने इस 'जमीय्यत' से भी अपना सम्बन्ध क़ायम कर लिया था और उनके कुछ ख़ास अफ़ग़ान शागिंद उसमें बढ़ कर हिस्सा ले रहे थे.

इसके बाद उन्होंने फिर हिन्दुस्तान में अपने संगठन को मज़बूत करने की तरफ़ ध्यान दिया. इस वक़्त तक हिन्दुस्तानियों के दिलों में अंगरेज़ों और अंग्रेज़ी राज का उतना डर नहीं रह गया

علاقے کے ایک بڑے اثر والے سردار تُرنگ زئی کے حاجی صاحب سے اُن کی پُرانی جان پہچان تھی. نتیجہ یہ ہوا کہ ۱۸۵۷ء کی آزادی کی لڑائی میں حاجی امداد اللہ صاحب آزاد قبیلوں کی مدد لینے اور ولی اللّٰہی جماعت کی ان دونوں شاخوں کو ملانے کی جس کوشش میں ناکامیاب ہوئے تھے، زمانے کی ضرورتوں سے مولانا محمود الحسن اب اُس میں کامیاب ہوئے. اب اِن آزاد قبیلوں کے دوت اور آدمی برابر اُن کے پاس آنے جانے لگے.

افغانستان میں اُس وقت امیر حبیب اللہ کا راج تھا. مولانا نے فوراً ہی اُن سے اور اُن کے کچھ بڑے بڑے سرداروں اور بھائیوں سے لکھا پڑھی شروع کی. اِن بھائیوں میں خاص شہزادہ نصر اللہ خاں تھے، جنھوں نے ۱۸۹۸ء میں انگلستان جاکر وہاں کی پارلیمنٹ کے ممبروں اور برٹش سرکار کے افسروں سے بڑے زور کے ساتھ کہا تھا کہ افغانستان کی حکومت میں انگریزوں کا جو دخل ہے وہ فوراً اُٹھا لیا جائے. اُن کی بات اُس وقت نہیں سُنی گئی، جس سے اُنھوں نے انگریزوں کی مخالفت میں 'جمعیت سیاسیہ' کے نام سے افغانستان میں ایک سنگٹھن بنانا شروع کر دیا. مولانا محمود الحسن نے اِس 'جمعیت' سے بھی اپنا سمبندھ قایم کر لیا تھا اور اُن کے کچھ خاص افغان شاگرد اُس میں بڑھ کر حصہ لے رہے تھے.

اِس کے بعد اُنھوں نے پھر ہندستان میں اپنے سنگٹھن کو مضبوط کرنے کی طرف دھیان دیا. اِس وقت تک ہندستانیوں کے دلوں میں انگریزوں اور انگریزی راج کا اُتنا ڈر نہیں رہ گیا

था. साथ ही मौलाना महमूदुल हसन को मौलाना उबेदुल्ला सिन्धी व मौलाना क़ासिम साहब के धेवते मुहम्मद मियाँ अन्सारी जैसे शागिर्द भी मिल गए थे. मौलाना की सादा और मेहनत की ज़िन्दगी, सचाई और ख़ुदा परस्ती ने काफ़ी असर पैदा कर लिया था और डा० मुख़्तार अहमद अन्सारी जैसे लोग उनके मुरीद बन चुके थे.

(२४२)

सन् १९०९ के आस पास मौलाना की हिदायतों के मुताबिक़ उनके शागिर्द मौलाना उबेदुल्ला सिन्धी ने मदरसा देवबन्द में 'जमीयतुल अन्सार' के नाम से एक नया संगठन क़ायम किया, जिसमें देवबन्द के मदरसे से निकले विद्यार्थी शरीक थे. सन् १९१० में देवबन्द के मदरसे का जो शानदार कनवोकेशन हुआ उसमें इस जमात के क़ायम होने का एलान किया गया और अगले साल उसका सालाना जलसा करने का भी एलान हुआ. इसी एलान के मुताबिक़ 'जमीयतुल अन्सार' का पहला जलसा १५-१६-१७ अप्रैल सन् १९११ ई० को मुरादाबाद में हुआ, जिसमें इस संगठन के असूलों पर रोशनी डालते हुए मौलाना महमूदुल हसन के गुरु भाई मौलाना अहमद हसन मुहद्दिस अमरोही ने अपनी तक़रीर में कहा था—

"बाज़ नई रोशनी के शैदाई (प्रेमी) कहते हैं कि जमीयतुल अन्सार ओल्ड बायज़ एसोसिएशन की नक़ल है, लेकिन यह बात हरगिज़ सही नहीं. जमीयतुल अन्सार की तहरीक अब से तीस बरस पहले शुरू हो गई थी; और उस तहरीक के बानी मदरसे आलिया के वह तालिब इल्म थे जो आज उलूम (इलमों)

تھا. ساتھ ہی مولانا محمود الحسن کو مولانا عبیداللہ سندھی و مولانا قاسم صاحب کے دھیوتے محمد میاں انصاری جیسے شاگرد بھی مل گئے تھے. مولانا کی سادہ اور محنت کی زندگی، سچائی اور خدا پرستی نے کافی اثر پیدا کر لیا تھا اور ڈاکٹر مختار احمد انصاری جیسے لوگ اُن کے مُرید بن چکے تھے.

سنہ ۱۹۰۹ء کے آس پاس مولانا کی ہدایتوں کے مطابق اُن کے شاگرد مولانا عبیداللہ سندھی نے مدرسہ دیوبند میں 'جمعیت الانصار' کے نام سے ایک نیا سنگٹھن قایم کیا، جس میں دیوبند کے مدرسے سے نکلے ودیارتھی شریک تھے. سنہ ۱۹۱۰ء میں دیوبند کے مدرسے کا جو شاندار کنووکیشن ہوا اُس میں اِس جماعت کے قایم ہونے کا اعلان کیا گیا اور اگلے سال اُس کا سالانہ جلسہ کرنے کا بھی اعلان ہوا. اِسی اعلان کے مطابق 'جمعیت الانصار' کا پہلا جلسہ ۱۵-۱۶-۱۷ اپریل سنہ ۱۹۱۱ء کو مُرادآباد میں ہوا، جس میں اِس سنگٹھن کے اصولوں پر روشنی ڈالتے ہوئے مولانا محمود الحسن کے گرو بھائی مولانا احمد حسن محدّث امروہی نے اپنی تقریر میں کہا تھا—

"بعض نئی روشنی کے شیدائی (پریمی) کہتے ہیں کہ جمعیت الانصار اولڈ بوائز ایسوسی ایشن کی نقل ہے، لیکن یہ بات ہرگز صحیح نہیں. جمعیت الانصار کی تحریک اب سے تیس برس پہلے شروع ہو گئی تھی، اور اُس تحریک کے بانی مدرسہ عالیہ کے وہ طالب علم تھے، جو آج علوم (علموں)

के सर चश्मा (दरिया) हैं और आफ़तावे फ़नून (हुनर के सूरज) हैं और जिनकी ज़ात बाबरकात (बरकत वाली ज़ात) पर आज ज़माना जिस क़दर नाज़ करे थोड़ा है. लेकिन यह तहरीक उस वक़्त ज़माने की ज़रूरतों से मुताल्लिक़ न थी. इस लिये रुक गई और आख़िर इस कुल्लिये (असूल) की बिना पर कि ज़रूरत हर चीज़ को अपने आप पैदा कर देती है. १९०९ से इस अंजुमन को दुबारा ज़िन्दा कर के 'जमीयतुल अन्सार' नाम रक्खा गया. जमीयतुल अन्सार हरगिज़ किसी अंजुमन की नक़ल नहीं है और न किसी ज़ाती मक़ासिद (निजी फ़ायदे) से बहैसियत दुनियावी इसका ताल्लुक़ है. वल्कि इसके मक़सद वह ज़रूरी मक़सद हैं, जिनकी आज कल बहुत ज़रूरत है."

इस हवाले से ज़ाहिर है कि जमीयतुल अन्सार 'समरतुल तर्बियत' का ही दूसरा रूप थी.

एक तरफ़ मौलाना महमूदुल हसन अपने संगठन को मज़बूत बनाते जा रहे थे. दूसरी तरफ़ हकूमत भी ख़ामोश नहीं बैठी थी. मदरसे के चलाने वालों ने अंगरेज़ सरकार से रुपये की मदद लेने से बार बार इनकार किया था. मदरसे के बानी मौलाना क़ासिम साहब व उनके साथियों की ज़िन्दगी के हालात सरकार को मालूम थे. हकूमत के दिल में काफ़ी डर पैदा हो चुका था. सन् १९१० में साहबज़ादा आफ़ताब अहमद ख़ाँ की तजवीज़ पर मदरसा देवबन्द की इन्तज़ामिया कमेटी ने यह तय किया कि हर साल मदरसा देवबन्द के कुछ तालिब इल्म अंगरेज़ी

کے سرچشمہ (دریا) ہیں اور آفتابِ فنون (ہنر کے سورج) ہیں اور جن کی ذات بابرکات (برکت والی ذات) پر آج زمانہ جس قدر ناز کرے تھوڑا ہے. لیکن یہ تحریک اُس وقت زمانے کی ضرورتوں سے متعلق نہ تھی، اس لئے رُک گئی اور آخر اس کلیہ (اصول) کی بنا پر کہ ضرورت ہر چیز کو اپنے آپ پیدا کردیتی ہے، ۱۹۰۹ سے اِس انجمن کو دوبارہ زندہ کرکے 'جمعیت الانصار' نام رکھا گیا. جمعیت الانصار ہرگز کسی انجمن کی نقل نہیں ہے اور نہ کسی ذاتی مقاصد (نجی فائدے) سے بحیثیت دنیاوی اِس کا تعلق ہے. بلکہ اِس کے مقصد وہ ضروری مقصد ہیں جن کی آج کل بہت ضرورت ہے."

اِس حوالے سے ظاہر ہے کہ جمعیت الانصار 'ثمرۃ التربیت' کا ہی دوسرا روپ تھی.

ایک طرف مولانا محمود الحسن اپنے سنگٹھن کو مضبوط بناتے جا رہے تھے، دوسری طرف حکومت بھی خاموش نہیں بیٹھی تھی. مدرسے کے چلانے والوں نے انگریز سرکار سے روپیے کی مدد لینے سے بار بار انکار کیا تھا، مدرسے کے بانی مولانا قاسم صاحب و اُن کے ساتھیوں کی زندگی کے حالات سرکار کو معلوم تھے. حکومت کے دل میں کافی ڈر پیدا ہوچکا تھا. سنہ ۱۹۱۰ میں صاحبزادہ آفتاب احمد خاں کی تجویز پر مدرسہ دیوبند کی انتظامیہ کمیٹی نے یہ طے کیا کہ ہر سال مدرسہ دیوبند کے کچھ طالب علم انگریزی

पढ़ने के लिये अलीगढ़ कालेज जाँय और अलीगढ़ कालेज के कुछ तालिब इल्म अरबी की तालीम के लिये मदरसा देवबन्द भेजे जांय. इस तजवीज़ के मुताबिक़ अलीगढ़ कालेज के विद्यार्थियों का जो पहला जत्था देवबन्द आया उसी के एक विद्यार्थी अनीस अहमद को सरकार ने अपनी तरफ़ फोड़ लिया और वह मौलाना महमूदुल हसन की तमाम हलचलों की रिपोर्ट हकूमत तक पहुँचाने लगा. उन दिनों मौलाना और उनके साथियों की ख़ास बैठकें एक तहख़ाने में हुआ करती थीं, जिसमें सरहद व काबुल से आए हुए वह लोग भी, जो मौलाना के मिशन में शरीक थे, शामिल हुआ करते थे. अनीस अहमद को उस तहख़ाने की बैठकों का हाल तो नहीं मालूम होता था, लेकिन वह उन आने जाने वालों के फ़ोटो लेकर हकूमत तक पहुँचाते रहते थे. नतीजा यह हुआ कि हकूमत को हालां कि मौलाना के असली भेद नहीं मालूम हो सके फिर भी वह इतना तो जान ही गई कि मौलाना कोई एक बहुत बड़ी साज़िश अंगरेज़ों के ख़िलाफ़ खड़ी कर रहे हैं.

कुछ दिन बाद ही तुरंगज़ई के हाजी साहब ने सरहद पर मदरसे क़ायम करने शुरू किये. वलीउल्लाई जमात का अपने असूलों के प्रचार के लिये ऐसे मदरसों का क़ायम करना एक पुराना तरीक़ा था. तुरंगज़ई के हाजी साहब को अपने इस काम में अपने गांव के पास में ही एक सच्चे और मेहनती नौजवान की मदद भी हासिल हो गई, जो बाद में बहुत मशहूर सियासी लीडर हुआ. यह नौजवान खान अब्दुल ग़फ़्फ़ार खां

پڑھنے کے لئے علی گڈھ کالج جائیں اور علی گڈھ کالج کے کچھ طالب علم عربی کی تعلیم کے لئے مدرسہ دیوبند بھیجے جائیں۔ اس تجویز کے مطابق علی گڈھ کالج کے ودیارتھیوں کا جو پہلا جتھا دیوبند آیا، اسی کے ایک ودیارتھی انیس احمد کو سرکار نے اپنی طرف پھوڑ لیا اور وہ مولانا محمود الحسن کی تمام ہلچلوں کی رپورٹ حکومت تک پہنچانے لگا۔ ان دنوں مولانا اور ان کے ساتھیوں کی خاص بیٹھکیں ایک تہ خانے میں ہوا کرتی تھیں، جس میں سرحد و کابل سے آئے ہوئے وہ لوگ بھی، جو مولانا کے مشن میں شریک تھے، شامل ہوا کرتے تھے۔ انیس احمد کو اس تہ خانے کی بیٹھکوں کا حال تو نہیں معلوم ہوتا تھا، لیکن وہ ان آنے جانے والوں کے فوٹو لے کر حکومت تک پہنچاتے رہتے تھے۔ نتیجہ یہ ہوا کہ حکومت کو حالانکہ مولانا کے اصلی بھید نہیں معلوم ہو سکے، پھر بھی وہ اتنا تو جان ہی گئی کہ مولانا کوئی ایک بہت بڑی سازش انگریزوں کے خلاف کھڑی کر رہے ہیں۔

کچھ دن بعد ہی ترنگ زئی کے حاجی صاحب نے سرحد پر مدرسے قایم کرنے شروع کئے۔ ولی اللہی جماعت کا اپنے اصولوں کے پرچار کے لئے ایسے مدرسوں کا قایم کرنا ایک پرانا طریقہ تھا۔ ترنگ زئی کے حاجی صاحب کو اپنے اس کام میں اپنے گاؤں کے پاس میں ہی ایک سچے اور محنتی نوجوان کی مدد بھی حاصل ہو گئی، جو بعد میں بہت مشہور

साहब थे, जो आज सरहदी गान्धी के नाम से तमाम हिन्दुस्तान में मशहूर हैं. लेकिन इस बात को इने गिने लोग ही जानते हैं कि उनको सियासत के मैदान में खींचने वाले वलीउल्लाई जमात के ही एक मेम्बर तुरंगज़ई के हाजी साहब थे.

सरकार ने फ़ौरन सरहद के यह मदरसे जबरन बन्द कर दिये और हाजी साहब पर कुछ पाबन्दियाँ लगाने या उनको क़ैद करने की भी कोशिश की. इस पर मौलाना को हिदायत के मुताबिक़ हाजी साहब आज़ाद क़बीलों में चले गए. उन्होंने वहाँ पठानों का संगठन शुरू कर दिया कुछ दिन बाद मौलाना महमूदुल हसन ने मदरसा देवबन्द के एक पुराने विद्यार्थी मौलाना सैफ़ुर्रहमान को आज़ाद क़बीलों में संगठन के लिये तुरंगज़ई के हाजी साहब के पास भेजा. मौलाना सैफ़ुर्रहमान पेशावर के नज़दीक के ही रहने वाले थे और मदरसा देवबन्द में उन्होंने तालीम पाई थी. कुछ दिन टोंक में पढ़ा कर वह दिल्ली में फ़तहपुरी मदरसे के हेड मास्टर हो गए थे. तुरंगज़ई के हाजी साहब के पास पहुँच कर उन्होंने पठानों का काफ़ी संगठन किया. इसके बाद वह इसी काम से काबुल चले गए. पर बाद में सरकारी दबाव और चालों ने उन्हें इस सही पर ख़तरनाक रास्ते से अलग कर दिया.

मौलाना महमूदुल हसन का प्रोग्राम यह था कि काबुल से लेकर हिन्दुस्तान के ठेठ दूसरे कोने तक एक संगठन फैल जाय. वह संगठन जब पूरा हो जाय तो काबुल और आज़ाद क़बीलों की एक फ़ौज हिन्दुस्तान पर हमला करे. मुल्क के भीतर का संगठन

صاحب تھے، جو آج سرحدی گاندھی کے نام سے تمام ہندستان میں مشہور ہیں. لیکن اس بات کو اِنے گِنے لوگ ہی جانتے ہیں کہ اُن کو سیاست کے میدان میں کھینچنے والے ولی اللہی جماعت کے ہی ایک ممبر ترنگ زئی کے حاجی صاحب تھے.

سرکار نے فوراً سرحد کے یہ مدرسے جبراً بند کردئے اور حاجی صاحب پر کچھ پابندیاں لگانے یا اُن کو قید کرنے کی بھی کوشش کی. اِس پر مولانا کی ہدایت کے مطابق حاجی صاحب آزاد قبیلوں میں چلے گئے. اُنھوں نے وہاں پٹھانوں کا سنگٹھن شروع کردیا. کچھ دن بعد مولانا محمود الحسن نے مدرسہ دیوبند کے ایک پرانے ودیارتھی مولانا سیف الرحمان کو آزاد قبیلوں میں سنگٹھن کے لئے ترنگ زئی کے حاجی صاحب کے پاس بھیجا. مولانا سیف الرحمان پیشاور کے نزدیک کے ہی رہنے والے تھے اور مدرسہ دیوبند میں اُنھوں نے تعلیم پائی تھی. کچھ دن ٹونک میں پڑھاکر وہ دلی میں فتح پوری مدرسے کے ہیڈ ماسٹر ہوگئے تھے. ترنگ زئی کے حاجی صاحب کے پاس پہنچکر اُنھوں نے پٹھانوں کا کافی سنگٹھن کیا. اِس کے بعد وہ اِسی کام سے کابل چلے گئے. پر بعد میں سرکاری دباؤ اور چالوں نے انھیں اِس صحیح پر خطرناک راستے سے الگ کردیا.

مولانا محمود الحسن کا پروگرام یہ تھا کہ کابل سے لیکر ہندستان کے ٹھیٹھ دوسرے کونے تک ایک سنگٹھن پھیل جائے. وہ سنگٹھن جب پورا ہوجائے تو کابل اور آزاد قبیلوں کی ایک فوج ہندستان پر حملہ کرے. ملک کے بھیتر کا سنگٹھن،

उस वक़्त मुल्क के भीतर से लड़ाई छेड़ दे और इस तरह अंगरेज़ी हुकूमत को उखाड़ फेंका जाय.

कुछ दिनों बाद जब टर्की और बलकान रियासतों में लड़ाई छिड़ी, तो मौलाना और उनकी पार्टी ने टर्की की मदद करने का फ़ैसला किया. इसी फ़ैसले के मुताबिक़ डाक्टर अन्सारी साहब एक डाक्टरी मिशन लेकर तुर्की गए. इसके कुछ दिन बाद सन् १९१४ में यूरोपियन जङ्ग का ऐलान हो गया. मौलाना ने फ़ौरन तय कर लिया कि ब्रिटिश हकूमत के ख़िलाफ़ हथियार उठाने का यह सबसे अच्छा मौक़ा है. उन्होंने इसके लिये अपने संगठन की कड़ियाँ और भी मज़बूत करनी शुरू कर दीं. इस वक़्त तक वह दिल्ली में भी 'नज़ारतुल मआरिफ़' के नाम से एक मदरसा क़ायम कर चुके थे, जो दर असल वलीउल्लाई जमात के क्रान्तिकारी संगठन की एक शाख़ था. इस मदरसे का तमाम बोझ मौलाना महमूदुल हसन साहब के ख़ास शागिर्द और उनकी सियासत के राज़दाँ मौलाना उबैदुल्ला सिन्धी पर था और मदरसे की मदद डा० अन्सारी, हकीम अजमल ख़ाँ वग़ैरा भी करते रहते थे, जो मौलाना के मुरीद और उनके दोस्तों में से थे.

इसी ज़माने में हिन्दुस्तान के एक दूसरे मौलवी अब्दुल हक़ हक़्क़ानी ने यह फ़तवा दिया कि तुर्की के ख़िलाफ़ अंगरेज़ों की मदद करना जायज़ है. इस फ़तवे पर कुछ और मौलवियों के भी दस्तख़त थे. कुछ दिन बाद यह फ़तवा दस्तख़तों के लिये मौलाना महमूदुल हसन साहब के सामने पेश किया गया. मौलाना महमूदुल हसन ठंडे मिज़ाज के थे और अपने सियासी

(२४६)

اُس وقت ملک کے بھیتر سے لڑائی چھیڑ دے اور اِس طرح انگریزی حکومت کو اُکھاڑ پھینکا جائے.

کچھ دنوں بعد جب ٹرکی اور بلکان ریاستوں میں لڑائی چھڑی، تو مولانا اور اُن کی پارٹی نے ٹرکی کی مدد کرنے کا فیصلہ کیا. اِسی فیصلے کے مطابق ڈاکٹر انصاری صاحب ایک ڈاکٹری مشن لے کر ترکی گئے. اِس کے کچھ دن بعد ۱۹۱۴ء میں یوروپین جنگ کا اعلان ہو گیا. مولانا نے فوراً طے کر لیا کہ برٹش حکومت کے خلاف ہتھیار اُٹھانے کا یہ سب سے اچھا موقع ہے. اُنھوں نے اِس کے لئے اپنے سنگٹھن کی کڑیاں اور بھی مضبوط کرنی شروع کر دیں. اِس وقت تک وہ دلّی میں بھی 'نظارۃ المعارف' کے نام سے ایک مدرسہ قایم کر چکے تھے، جو دراصل ولی اللّٰہی جماعت کے کرانت کاری سنگٹھن کی ایک شاخ تھا. اِس مدرسے کا تمام بوجھ مولانا محمود الحسن صاحب کے خاص شاگرد اور اُن کی سیاست کے رازداں مولانا عبیداللہ سندھی پر تھا اور مدرسے کی مدد ڈاکٹر انصاری، حکیم اجمل خاں وغیرہ بھی کرتے رہتے تھے، جو مولانا کے مُرید اور اُن کے دوستوں میں سے تھے.

اِسی زمانے میں ہندستان کے ایک دوسرے مولوی عبدالحق حقّانی نے یہ فتویٰ دیا کہ ٹرکی کے خلاف انگریزوں کی مدد کرنا جائز ہے. اِس فتوے پر کچھ اور مولویوں کے بھی دستخط تھے. کچھ دن بعد یہ فتویٰ دستخطوں کے لئے مولانا محمود الحسن صاحب کے سامنے پیش کیا گیا. مولانا محمود الحسن ٹھنڈے مزاج کے تھے اور اپنے سیاسی

ख़याल सिवा अपने ख़ास शागिर्दों के आम तौर पर जाहिर नहीं किया करते थे. लेकिन जब यह फ़तवा एक आम जलसे में उनके सामने पेश किया गया, तो उन्होंने अपने मिज़ाज के ख़िलाफ़ बड़े सख्त लफ़्ज़ों में उस फ़तवे की बुराई की और उसे उठाकर फेंक दिया. उस ज़माने में यह एक आम अफ़वाह फैलाई गई थी कि अंगरेज़ हकूमत हिन्दुस्तान में अपनी ज़रा भी मुख़ालफ़त बरदाश्त नहीं करेगी और जो भी उसके रास्ते में आवेगा उसे पूरी तरह कुचल देगी. मौलाना जानते थे कि इस फ़तवे के बारे में चुप रहना हकूमत की धमकी को मंज़ूर कर लेना और तमाम मुल्क के सामने डर की एक बुरी मिसाल खड़ा कर देना है, इस लिय उन्होंने तमाम ख़तरों को पहचानते हुए भी उसके बारे में ऐसा सख्त रवय्या अख़्तियार किया. उनके इस बरताव से उनके साथियों में बड़ी सनसनी फैल गई और लोग यह उम्मेद करने लगे कि मौलाना फ़ौरन गिरफ़्तार कर लिये जावेंगे, लेकिन उस वक़्त हकूमत की हिम्मत उन पर हाथ डालने की न हुई, हालाँकि इसके बाद मौलाना को हकूमत के हाथों इससे बीसियों गुनी ज्यादा तकलीफें उठानी पड़ीं.

अगस्त सन् १९१५ में मौलाना ने अपने ख़ास शागिर्द उबेदुल्ला सिन्धी को काबुल भेजा. उबेदुल्ला सिन्धी ने लिखा है कि मौलाना ने जब उनको काबुल जाने का हुकुम दिया, तब कोई ख़ास प्रोग्राम उन्हें नहीं दिया. काबुल पहुँच कर उनको मालूम हुआ कि मौलाना ने पिछले बीसियों बरसों से वहाँ मैदान तय्यार कर लिया था. जब उबेदुल्ला सिन्धी जनरल नादिर ख़ाँ से मिले तब उनको यह देखकर

خیال سوا اپنے خاص شاگردوں کے عام طور پر ظاہر نہیں کیا کرتے تھے، لیکن جب یہ فتویٰ ایک عام جلسے میں اُن کے سامنے پیش کیا گیا، تو اُنھوں نے اپنے مزاج کے خلاف بڑے سخت لفظوں میں اُس فتوے کی بُرائی کی اور اُسے اُٹھاکر پھینک دیا۔ اُس زمانے میں یہ ایک عام افواہ پھیلائی گئی تھی کہ انگریز حکومت ہندستان میں اپنی ذرا بھی مخالفت برداشت نہیں کرے گی اور جو بھی اُس کے راستے میں آوے گا اُسے پوری طرح کچل دے گی۔ مولانا جانتے تھے کہ اِس فتوے کے بارے میں چپ رہنا حکومت کی دھمکی کو منظور کرلینا اور تمام ملک کے سامنے ڈر کی ایک بُری مثال کھڑی کردینا ہے، اِس لئے اُنھوں نے تمام خطروں کو پہچانتے ہوئے بھی اُس کے بارے میں ایسا سخت رویّہ اختیار کیا۔ اِن کے اِس برتاؤ سے اُن کے ساتھیوں میں بڑی سنسنی پھیل گئی اور لوگ یہ اُمید کرنے لگے کہ مولانا فوراً گرفتار کرلئے جاویں گے، لیکن اُس وقت حکومت کی ہمّت اُن پر ہاتھ ڈالنے کی نہ ہوئی، حالانکہ اِس کے بعد مولانا کو حکومت کے ہاتھوں اِس سے بیسیوں گنی زیادہ تکلیفیں اُٹھانی پڑیں۔

اگست ۱۹۱۵ء میں مولانا نے اپنے خاص شاگرد عبیداللہ سندھی کو کابل بھیجا۔ عبیداللہ سندھی نے لکھا ہے کہ مولانا نے جب اُن کو کابل جانے کا حکم دیا، تب کوئی خاص پروگرام اُنھیں نہیں دیا۔ کابل پہنچ کر اُن کو معلوم ہوا کہ مولانا نے پچھلے بیسیوں برسوں سے وہاں میدان تیار کرلیا تھا۔ جب عبیداللہ سندھی جنرل نادر خاں سے ملے تب اُن کو یہ دیکھ کر

बहुत हैरत हुई कि जनरल नादिर ख़ाँ उनकी बाबत पहले से बहुत कुछ जानते थे. इसके बाद काबुल में इस जमात के कारकुनों ने जो कुछ किया, उसकी एक लम्बी कहानी है. थोड़े से में यह कहा जा सकता है कि काबुल के तख़्त से अंगरेज़ों के हिमायती अमीर हबीबुल्ला को हटा कर उनकी जगह अंगरेज़ों के सख़्त मुख़ालिफ़ अमानुल्ला ख़ाँ को बैठाने और अंगरेज़ों के पंजों से अफ़ग़ानिस्तान को आज़ाद कराने में बहुत बड़ा हाथ मौलाना महमूदुल हसन और उनके शागिर्दों का था. यह एक ऐसी बात है, जिसे लोग बढ़ा कर कही हुई समझ सकते हैं, लेकिन अब ज़माना आ गया है कि इसके पूरे सबूत भी पेश किये जा सकते हैं.

मौलाना उबेदुल्ला सिन्धी को काबुल भेजने के एक महीने बाद १८ सितम्बर १९१५ को मौलाना महमूदुल हसन साहब भी अपने कुछ ख़ास शागिर्दों के साथ हज के बहाने मक्का चल दिये. हुकूमत को अपने जासूस अनीस अहमद के ज़रिये मौलाना की इन हलचलों की बातें मालूम होती रहती थीं. जब मौलाना को हिन्दुस्तान से बाहर जाते देखा तो हुकूमत का माथा ठनका. मौलाना के बम्बई पहुँचते पहुँचते वहाँ के अफ़सरों को मौलाना की गिरफ़्तारी का हुकुम भेजा गया. हुकुम कुछ देर से पहुँचा. वह उस वक़्त मिला जब बीसियों हज़ार मुसलमान समन्दर के किनारे खड़े अपने इस इमाम को बिदा कर रहे थे. इस के बाद जहाज़ के कप्तान को मौलाना की गिरफ़्तारी का हुकुम दे दिया गया. वह भी किसी वजह से अमल में न आ सका. नतीजा यह हुआ

بہت حیرت ہوئی کہ جنرل نادر خاں اُن کی بابت پہلے سے بہت کچھ جانتے تھے. اِس کے بعد کابل میں اِس جماعت کے کارکنوں نے جو کچھ کیا، اُس کی ایک لمبی کہانی ہے. تھوڑے سے میں یہ کہا جاسکتا ہے کہ کابل کے تخت سے انگریزوں کے حمایتی امیر حبیب اللہ کو ہٹاکر اُن کی جگہ انگریزوں کے سخت مخالف امان اللہ خاں کو بٹھانے اور انگریزوں کے پنجوں سے افغانستان کو آزاد کرانے میں بہت بڑا ہاتھ مولانا محمود الحسن اور اُن کے شاگردوں کا تھا. یہ ایک ایسی بات ہے، جسے لوگ بڑھاکر کہی ہوئی سمجھ سکتے ہیں، لیکن اب زمانہ آگیا ہے کہ اُس کے پورے ثبوت بھی پیش کئے جاسکتے ہیں.

مولانا عبید اللہ سندھی کو کابل بھیجنے کے ایک مہینہ بعد ۱۸ ستمبر ۱۹۱۵ کو مولانا محمود الحسن صاحب بھی اپنے کچھ خاص شاگردوں کے ساتھ حج کے بہانے مکہ چل دئے. حکومت کو اپنے جاسوس انیس احمد کے ذریعے مولانا کی اِن ہلچلوں کی باتیں معلوم ہوتی رہتی تھیں. جب مولانا کو ہندستان سے باہر جاتے دیکھا تو حکومت کا ماتھا ٹھنکا. مولانا کے بمبئی پہنچتے پہنچتے وہاں کے افسروں کو مولانا کی گرفتاری کا حکم بھیجا گیا. حکم کچھ دیر سے پہنچا. وہ اُس وقت ملا جب بیسیوں ہزار مسلمان سمندر کے کنارے کھڑے اپنے اِس امام کو بدا کر رہے تھے. اِس کے بعد جہاز کے کپتان کو مولانا کی گرفتاری کا حکم دے دیا گیا. وہ بھی کسی وجہ سے عمل میں نہ آسکا. نتیجہ یہ ہوا

कि मौलाना मय अपने साथियों के हेजाज़ पहुँच गए. वहीं वह हेजाज़ के गवर्नर ग़ालिब पाशा से मिले और उनसे आज़ाद क़बीलों के लिये एक ख़त हासिल किया, जिसमें तुर्की सरकार को मौलाना का मददगार बताया गया और क़बीलों से यह अपील की गई थी कि वह अंगरेज़ों के ख़िलाफ़ संगठित होकर लड़ाई छेड़ दें. रौलट कमेटी की रिपोर्ट में इस ख़त का ज़िक्र 'ग़ालिब नामा' के नाम से किया गया है.

ग़ालिब पाशा के इस ख़त को मौलाना के एक ख़ास शागिर्द मुहम्मद मियाँ अन्सारी लेकर चले और हिन्दुस्तान होते हुए आज़ाद क़बीलों में वह ख़त पहुँचा कर काबुल पहुँच गए. इस के बाद मौलाना मक्का और मदीना पहुँचे. वहीं मौलाना महमूदुल हसन के एक दूसरे शागिर्द मौलाना हुसैन अहमद साहब पहिले से रह रहे थे. मौलाना को हुसैन अहमद साहब से काफ़ी मदद मिली.

मदीने में मौलाना ने तुर्की हकूमत के जंगी वज़ीर अनवर पाशा और एक दूसरे फ़ौजी अफ़सर जमाल पाशा से मुलाक़ात की. अनवर पाशा मौलाना की बाबत पहिले से सुन चुके थे. उन्होंने मौलाना को पूरी मदद देने का वादा किया. साथ ही यह भी कहा कि "असली मदद तो आपके मुल्क के ही लोग दे सकते हैं और इसके लिये ज़रूरी यह है कि आप ग़ैर मुसलमानों को भी अपने साथ लें." अनवर पाशा की इन बातों का मौलाना पर गहरा असर पड़ा. उन्होंने काबुल में काम करने वाले अपने साथियों को यह सन्देसा भेजा कि वह ग़ैर मुसलमानों को ख़ास तरीक़े पर अपनी तहरीक में शरीक करें और उनको ज़िम्मेदारी की जगहें

کہ مولانا مع اپنے ساتھیوں کے حجاز پہنچ گئے۔ وہاں وہ حجاز کے گورنر غالب پاشا سے ملے اور اُن سے آزاد قبیلوں کے لئے ایک خط حاصل کیا، جس میں ترکی سرکار کو مولانا کا مددگار بتایا گیا اور قبیلوں سے یہ اپیل کی گئی تھی کہ وہ انگریزوں کے خلاف سنگٹھت ہوکر لڑائی چھیڑ دیں۔ رولٹ کمیٹی کی رپورٹ میں اس خط کا ذکر 'غالب نامہ' کے نام سے کیا گیا ہے۔

غالب پاشا کے اس خط کو مولانا کے ایک خاص شاگرد محمد میاں انصاری لے کر چلے اور ہندستان ہوتے ہوئے آزاد قبیلوں میں وہ خط پہنچاکر کابل پہنچ گئے۔ اس کے بعد مولانا مکہ اور مدینہ پہنچے۔ وہاں مولانا محمود الحسن کے ایک دوسرے شاگرد مولانا حسین احمد صاحب پہلے سے رہ رہے تھے۔ مولانا کو حسین احمد صاحب سے کافی مدد ملی۔

مدینے میں مولانا نے ترکی حکومت کے جنگی وزیر انور پاشا اور ایک دوسرے فوجی افسر جمال پاشا سے ملاقات کی۔ انور پاشا مولانا کی بابت پہلے سے سُن چکے تھے۔ انھوں نے مولانا کو پوری مدد دینے کا وعدہ کیا۔ ساتھ ہی یہ بھی کہا کہ "اصلی مدد تو آپ کے ملک کے ہی لوگ دے سکتے ہیں اور اس کے لئے ضروری یہ ہو کہ آپ غیرمسلمانوں کو بھی اپنے ساتھ لیں۔" انور پاشا کی ان باتوں کا مولانا پر گہرا اثر پڑا۔ انھوں نے کابل میں کام کرنے والے اپنے ساتھیوں کو یہ سندیسا بھیجا کہ وہ غیرمسلمانوں کو خاص طریقے پر اپنی تحریک میں شریک کریں اور اُن کو ذمہ داری کی جگہیں

देकर यह इतमीनान दिलाने की कोशिश करें कि इस तहरीक का मतलब सिर्फ मुल्क की आज़ादी है, न कि हिन्दुस्तान पर फिर से मुसलमानों की हुकूमत क़ायम करना. इस संदेसे के मुताबिक़ राजा महेन्द्र प्रताप को हिन्दुस्तान की उस आरज़ी सरकार का प्रेसीडेन्ट बनाया गया जो काबुल में मौलाना उबैदुल्ला सिन्धी वग़ैरा ने क़ायम की थी. वह इस तरह की पहली सरकार थी. जिसकी याद नेता जी सुभाषचन्द्र बोस ने जापान, स्याम और बर्मा में आज़ाद हिन्द सरकार क़ायम करके बीसियों बरस बाद फिर से ताज़ा कर दी.

इसी वक़्त अनवर पाशा की सलाह से यह भी तय हुआ कि मौलाना महमूदुल हसन साहब ख़ुद भी आज़ाद क़बीलों में पहुँचें. इसका इन्तज़ाम हो ही रहा था कि मक्का का हाकिम शरीफ़ हुसैन अंगरेज़ों से मिल गया. उसने तुर्की हुकूमत के ख़िलाफ़ बग़ावत का झंडा खड़ा कर दिया. मौलाना इसका नतीजा जानते थे. उन्होंने मक्का से निकल जाने की काफ़ी कोशिश की पर नाकाम रहे और मय अपने साथियों के १७ सितम्बर १९१६ को गिरफ़्तार कर लिये गए. इसके बाद क़रीब चार साल तक वह माल्टा के फ़ौजी क़ैदख़ाने में नजरबन्द रक्खे गए. इन चार साल में उनको व उनके साथियों को जो सख़्त तकलीफ़ें उठानी पड़ीं, उनको बयान करने के लिये कई मोटी मोटी जिल्दें भी नाकाफ़ी होंगी. शुरू में तो सभी को यक़ीन था कि फाँसी दे दी जायगी और इसी यक़ीन के मुताबिक़ मौलाना के एक साथी अज़ीज़ गुल साहब सरहदी अपनी गर्दन दबा दबा कर देखा करते थे कि फाँसी के वक़्त कितनी तकलीफ़

دے کر یہ اطمینان دلانے کی کوشش کریں کہ اس تحریک کا مطلب صرف ملک کی آزادی ہے، نہ کہ ہندستان پر پھر سے مسلمانوں کی حکومت قایم کرنا۔ اس سندیسے کے مطابق راجا مہندر پرتاپ کو ہندستان کی اس عارضی سرکار کا پریسیڈنٹ بنایا گیا جو کابل میں مولانا عبیداللہ سندھی وغیرہ نے قایم کی تھی۔ وہ اس طرح کی پہلی سرکار تھی، جس کی یاد نیتاجی سبھاش چندر بوس نے جاپان، سیام اور برما میں آزاد ہند سرکار قایم کر کے بیسیوں برس بعد پھر سے تازہ کر دی۔

اسی وقت انور پاشا کی صلاح سے یہ بھی طے ہوا کہ مولانا محمود الحسن صاحب خود بھی آزاد قبیلوں میں پہنچیں۔ اس کا انتظام ہو ہی رہا تھا کہ مکّہ کا حاکم شریف حسین انگریزوں سے مل گیا۔ اس نے ترکی حکومت کے خلاف بغاوت کا جھنڈا کھڑا کر دیا۔ مولانا اس کا نتیجہ جانتے تھے۔ انھوں نے مکّہ سے نکل جانے کی کافی کوشش کی پر ناکام رہے اور مع اپنے ساتھیوں کے ۱۷ ستمبر ۱۹۱۶ کو گرفتار کر لیے گئے۔ اس کے بعد قریب چار سال تک وہ مالٹا کے فوجی قیدخانے میں نظربند رکھے گئے۔ ان چار سال میں ان کو و ان کے ساتھیوں کو جو سخت تکلیفیں اٹھانی پڑیں، ان کو بیان کرنے کے لئے کئی موٹی موٹی جلدیں بھی ناکافی ہوں گی۔ شروع میں تو سبھی کو یقین تھا کہ پھانسی دیدی جائے گی اور اسی یقین کے مطابق مولانا کے ایک ساتھی عزیز گل صاحب سرحدی اپنی گردن دبا دبا کر دیکھا کرتے تھے کہ پھانسی کے وقت کتنی تکلیف

होती है. बाद में हकूमत ने किसी मसलहत से फाँसी तो न दी. पर यह चार साल की नज़रबन्दी फाँसी से ज़्यादा तकलीफ़ की थी. मौलाना और उनके साथियों ने ख़ुशी ख़ुशी यह सब सहा और कभी अपने माथे पर शिकन भी नहीं आने दी. मौलाना के एक साथी हकीम नसरत हुसैन साहब का तो माल्टा में ही इन्तक़ाल भी हो गया. आज भी माल्टा में मुल्क के इस देश भक्त सपूत की क़ब्र एक सुनसान जगह में बनी हुई है और "नै चिराग़े नै गुले" उस दिन का इन्तज़ार कर रही है जब आज़ाद हिन्दुस्तान उसकी अहमियत समझेगा.

मई सन १९२० के आख़िरी हफ़्ते में मौलाना महमूदुल हसन साहब इस नज़रबन्दी से रिहा होकर अपने साथियों के साथ बम्बई पहुँचे. उस वक़्त तक ख़िलाफ़त की तहरीक शुरू हो चुकी थी. हकूमत को डर था कि मौलाना भी आकर कहीं इसमें शरीक न हो जाँय. इस लिये जहाज़ पर ही ख़ुफ़िया पुलिस के कुछ अफ़सर और एक कोई मौलवी रहीम बख़्श साहब मौलाना से मिले और उनको यह समझाने की कोशिश की कि वह बम्बई के किसी इस्तक़बालिया जुलूस में शरीक न हों और न ख़िलाफ़त से अपना कोई सम्बन्ध दिखावें, बल्कि चुपचाप देवबन्द चले जाँय.

मौलाना ने इन लोगों को कोई जवाब नहीं दिया. उनको ख़ुद जुलूस वग़ैरा में शरीक होना अच्छा नहीं लगता था. लेकिन इस मशविरे में जो इशारा था. उसकी वजह से उन्होंने ख़िलाफ़त कमेटी को अपना स्वागत करने की इजाज़त दे दी. इसके बाद तो देवबन्द तक हर स्टेशन पर उनका शाही इस्तक़बाल हुआ. इस

نیا ہند مولانا محمود الحسن ستمبر ۴۷ء

ہوتی ہے۔ بعد میں حکومت نے کسی مصلحت سے پھانسی تو نہ دی پر یہ چار سال کی نظربندی پھانسی سے زیادہ تکلیف کی تھی۔ مولانا اور ان کے ساتھیوں نے خوشی خوشی یہ سب سہا اور کبھی اپنے ماتھے پر شکن بھی نہیں آنے دی۔ مولانا کے ایک ساتھی حکیم نصرت حسین صاحب کا تو مالٹا میں ہی انتقال بھی ہو گیا آج بھی مالٹا میں ملک کے اس دیش بھگت سپوت کی قبر ایک سنسان جگہ میں بنی ہوئی ہے اور "نے چراغے نے گلے" اس دن کا انتظار کر رہی ہے جب آزاد ہندستان اس کی اہمیت سمجھے گا۔

مئی سنہ ۱۹۲۰ء کے آخری ہفتے میں مولانا محمود الحسن صاحب اس نظربندی سے رہا ہو کر اپنے ساتھیوں کے ساتھ بمبئی پہنچے۔ اس وقت تک خلافت کی تحریک شروع ہو چکی تھی۔ حکومت کو ڈر تھا کہ مولانا بھی آکر کہیں اس میں شریک نہ ہو جائیں۔ اس لئے جہاز پر ہی خفیہ پولیس کے کچھ افسر اور ایک کوئی مولوی رحیم بخش صاحب مولانا سے ملے اور ان کو یہ سمجھانے کی کوشش کی کہ وہ بمبئی کے کسی استقبالیہ جلوس میں شریک نہ ہوں اور نہ خلافت سے اپنا کوئی سمبندھ دکھاویں، بلکہ چپ چاپ دیوبند چلے جائیں۔

مولانا نے ان لوگوں کو کوئی جواب نہیں دیا۔ ان کو خود جلوس وغیرہ میں شریک ہونا اچھا نہیں لگتا تھا۔ لیکن اس مشورہ میں جو اشارہ تھا، اس کی وجہ سے انھوں نے خلافت کمیٹی کو اپنا سواگت کرنے کی اجازت دے دی۔ اس کے بعد تو دیوبند تک ہر اسٹیشن پر ان کا شاہی استقبال ہوا۔ اس

तरह उन्होंने हकूमत को यह जता दिया कि चार साल की नज़र-बन्दी की तकलीफ़ें उनकी सेहत और जिस्म पर भले ही कितना भी असर डाल सकी हों, पर उनकी उमंगों पर उनका कोई असर नहीं है. मुल्क की आज़ादी की चाह अब भी उसी तरह उनके दिल में मौजूद है.

देवबन्द आकर मौलाना महमूदुल हसन साहब ने अपने तमाम ख़ास साथियों को इकट्ठा करके हकूमत के ख़िलाफ़ लड़ने का एक प्रोग्राम उनके सामने रक्खा. इसके साथ ही उन्होंने यह भी अपने साथियों से पूछा कि अंगरेज़ों और अंगरेज़ी हकूमत के ख़िलाफ़ उनके दिल में जो नफ़रत है, वह सिर्फ़ इस वजह से तो नहीं है कि ज़ाती तौर पर उनको इनके ज़रिए तकलीफ़ें उठानी पड़ी हैं. यह बात साबित करती है कि मौलाना ख़ुद अपनी बाबत भी कितनी गहराई के साथ सोचा करते थे.

मौलाना महमूदुल हसन ने यह नया प्रोग्राम ऐसा बनाया था, जिसमें आम जनता हिस्सा ले सके. वह अब तक यह अच्छी तरह समझ चुके थे कि सिर्फ़ सियासी साज़िशों से आज़ादी की लड़ाई आगे नहीं बढ़ सकती. इसी सचाई को हिन्दुस्तान के दूसरे क्रान्तिकारियों ने सन् १९३५-३६ के बाद समझा और वह भी बम पिस्तौलों का सहारा छोड़ कर जनता यानी किसान मज़दूरों का संगठन करने लगे. मौलाना महमूदुल हसन ने इस सचाई को पन्द्रह बरस पहले समझ लिया था. यह उनकी दूरन्देशी की एक दूसरी मिसाल है.

नज़रबन्दी के इन चार बरस में मौलाना की सेहत बिल्कुल गिर

طرح اُنھوں نے حکومت کو یہ جتا دیا کہ چار سال کی نظربندی کی تکلیفیں اُن کی صحت اور جسم پر بھلے ہی کتنا بھی اثر ڈال سکی ہوں، پر اُن کی اُمنگوں پر اُن کا کوئی اثر نہیں ہے۔ ملک کی آزادی کی چاہ اب بھی اُسی طرح اُن کے دل میں موجود ہے۔

دیوبند آکر مولانا محمود الحسن صاحب نے اپنے تمام خاص ساتھیوں کو اکٹھا کرکے حکومت کے خلاف لڑنے کا ایک پروگرام اُن کے سامنے رکھا۔ اِس کے ساتھ ہی اُنھوں نے یہ بھی اپنے ساتھیوں سے پوچھا کہ انگریزوں اور انگریزی حکومت کے خلاف اُن کے دل میں جو نفرت ہے، وہ صرف اِس وجہ سے تو نہیں ہے کہ ذاتی طور پر اُن کو اِن کے ذریعے تکلیفیں اُٹھانی پڑی ہیں۔ یہ بات ثابت کرتی ہے کہ مولانا خود اپنی بابت بھی کتنی گہرائی کے ساتھ سوچا کرتے تھے۔

مولانا محمود الحسن نے یہ نیا پروگرام ایسا بنایا تھا جس میں عام جنتا حصہ لے سکے۔ وہ اب تک یہ اچھی طرح سمجھ چکے تھے کہ صرف سیاسی سازشوں سے آزادی کی لڑائی آگے نہیں بڑھ سکتی۔ اِسی سچائی کو ہندستان کے دوسرے کرانتی کاریوں نے ۱۹۳۵-۳۶ء کے بعد سمجھا اور وہ بھی بم پستولوں کا سہارا چھوڑ کر جنتا یعنی کسان مزدوروں کا سنگٹھن کرنے لگے۔ مولانا محمود الحسن نے اِس سچائی کو پندرہ برس پہلے سمجھ لیا تھا۔ یہ اُن کی دوراندیشی کی ایک دوسری مثال ہے۔

نظربندی کے اِن چار برس میں مولانا کی صحت بالکل گر

गई थी. गठिया का दर्द उनको दिन रात परेशान करता था, साथ ही दम दम पर पेशाब जाने का रोग भी पैदा हो गया था. डाक्टरों की राय थी कि मौलाना आराम करें, लेकिन मौलाना को एक पल के लिये भी चैन नहीं था. वह दिन रात घूमते रहते थे. इसके कुछ दिन पहले 'जमीयत उल उलमा' के नाम से एक जमात क़ायम की जा चुकी थी, जो मुल्क की आज़ादी के लिये एक खुला प्रोग्राम जनता के सामने रखने का मिशन लेकर शुरू हुई थी. मौलाना ने इस ख़याल को बहुत पसन्द किया. वह दिन रात उसके संगठन को मज़बूत करने की कोशिश में जुटे रहने लगे. इस मेहनत का नतीजा यह हुआ कि उनको तपेदिक़ हो गया. डाक्टरों ने फिर यह बतलाया कि मौलाना का जिस्म थोड़ी सी भी मेहनत बर्दाश्त नहीं कर सकता, लेकिन मौलाना को एक पल भी बेकार खोना गवारा नहीं था. दिन रात बुख़ार में भुनते हुए वह तजवीज़ों के मसविदे लिखने व साथियों को हिदायतें देने में जुटे रहते थे.

इसी ज़माने में अलीगढ़ यूनिवर्सिटी के कुछ आज़ाद ख़याल विद्यार्थियों ने उनसे अपने जलसे की सदारत करने की दरख़्वास्त की. मौलाना इस वक़्त हिलने जुलने से भी मजबूर थे. डोली में लेट कर वह स्टेशन पहुँचे. इसी हालत में अलीगढ़ तक का सफ़र किया. वहाँ पहुँच कर २९ अक्टूबर सन् १९२० को जलसे की सदारत की. यह उनकी आख़िरी तक़रीर थी, जिसमें मुल्क की आज़ादी के लिये सब कुछ दाँव पर लगा देने की अपील उन्होंने बड़े पुरदर्द लफ़्ज़ों में की थी. यह जलसा अलीगढ़

[illegible] کا درد اُن کو دن رات پریشان کرتا تھا، ساتھ ہی [illegible] پیشاب جانے کا روگ بھی پیدا ہوگیا تھا۔ ڈاکٹروں کی [illegible] کہ مولانا آرام کریں، لیکن مولانا کو ایک پل کے لئے بھی چین نہیں تھا۔ وہ دن رات گھومتے رہتے تھے۔ اِس کے کچھ دن پہلے 'جمعیت العلماء' کے نام سے ایک جماعت قایم کی جا چکی تھی، جو ملک کی آزادی کے لئے ایک کھلا پروگرام جنتا کے سامنے رکھنے کا مشن لے کر شروع ہوئی تھی۔ مولانا نے اِس خیال کو بہت پسند کیا۔ وہ دن رات اُس کے سنگٹھن کو مضبوط کرنے کی کوشش میں جُٹے رہنے لگے۔ اِس محنت کا نتیجہ یہ ہوا کہ اُن کو تپ دق ہوگئی۔ ڈاکٹروں نے پھر یہ بتلایا کہ مولانا کا جسم تھوڑی سی بھی محنت برداشت نہیں کرسکتا، لیکن مولانا کو ایک پل بھی بیکار کھونا گوارہ نہیں تھا۔ دن رات بُخار میں بھُنتے ہوئے وہ تجویزوں کے مسودے لکھنے و ساتھیوں کو ہدایتیں دینے میں جُٹے رہتے تھے۔

اِسی زمانے میں علی گڑھ یونیورسٹی کے کچھ آزاد خیال ودیارتھیوں نے اُن سے اپنے جلسے کی صدارت کرنے کی درخواست کی۔ مولانا اِس وقت ہلنے جُلنے سے بھی مجبور تھے۔ ڈولی میں لیٹ کر وہ سٹیشن پہنچے۔ اِسی حالت میں علی گڑھ تک کا سفر کیا۔ وہاں پہنچکر ۲۹ اکتوبر ۱۹۲۰ء کو جلسے کی صدارت کی۔ یہ اُن کی آخری تقریر تھی، جس میں ملک کی آزادی کے لئے سب کچھ داؤں پر لگا دینے کی اپیل اُنھوں نے بڑے پُردرد لفظوں میں کی تھی۔ یہ جلسہ علی گڑھ

कालेज के उन विद्यार्थियों का था, जिन्होंने खिलाफ़त तहरीक के प्रोग्राम के मुताबिक़ अलीगढ़ यूनीवर्सिटी इस लिये छोड़ दी थी, क्योंकि वह सरकारी मदद पर चलती थी. इसी वक़्त मौलाना महमूदुल हसन साहब के हाथों से 'जामिया मिल्लिया इस्लामिया' मदरसे की भी नींव रक्खी गई जो आज भी मदरसा देवबन्द की तरह दिल्ली में क़ौमी तालीम का एक खास मरकज़ है. इसके ठीक एक महीने बाद ३० अक्तूबर सन् १९२० ई० को दिल्ली में डाक्टर अंसारी साहब की कोठी पर मौलाना महमूदुल हसन साहब का इन्तक़ाल हुआ. कहा जाता है कि मरने से कुछ घंटे पहले ही आज़ाद क़बीलों के इलाक़े से आए हुए कुछ आदमियों को उन्होंने हिदायतें दी थीं और चूँकि सुनने और बोलने की ताक़त उस वक़्त बहुत कम हो गई थी, इसलिये मौलाना के मुंह पर कान रख कर सरहद के उन पठानों ने मौलाना की यह आखिरी बातें सुनी थीं.

मौलाना महमूदुल हसन साहब ने अपनी इमामत के ज़माने में पिछले दो सौ बरस से चली आ रही वलीउल्लाई तहरीक में दो खास नई बातें की. पहली यह कि उन्होंने ग़ैर मुसलमानों को शरीक करके इस तहरीक को सच्चे मानों में तमाम हिन्दुस्तान की तहरीक बना दिया और दूसरी यह कि इसमें आम जनता को शरीक करके वह उसे एक नया रास्ता दिखा गए.

(२४४)

کالج کے اُن ودّیارتھیوں کا تھا، جنھوں نے خلافت تحریک کے پروگرام کے مطابق علی گڑھ یونیورسٹی اس لئے چھوڑ دی تھی، کیونکہ وہ سرکاری مدد پر چلتی تھی۔ اسی وقت مولانا محمود الحسن صاحب کے ہاتھوں سے 'جامعہ ملیہ اسلامیہ' مدرسے کی بھی نیو رکھی گئی جو آج بھی مدرسہ دیوبند کی طرح دلّی میں قومی تعلیم کا ایک خاص مرکز ہے۔ اس کے ٹھیک ایک مہینے بعد ۳۰ اکتوبر سنہ ۱۹۲۰ء کو دلّی میں ڈاکٹر انصاری صاحب کی کوٹھی پر مولانا محمود الحسن صاحب کا انتقال ہوا۔ کہا جاتا ہے کہ مرنے سے کچھ گھنٹے پہلے ہی آزاد قبیلوں کے علاقے سے آئے ہوئے کچھ آدمیوں کو اُنھوں نے ہدایتیں دی تھیں اور چونکہ سننے اور بولنے کی طاقت اُس وقت بہت کم ہو گئی تھی، اِس لئے مولانا کے مُنہ پر کان رکھ کر سرحد کے اُن پٹھانوں نے مولانا کی یہ آخری باتیں سُنی تھیں۔

مولانا محمود الحسن صاحب نے اپنی امامت کے زمانے میں پچھلے دو سو برس سے چلی آ رہی ولی اللٰہی تحریک میں دو خاص نئی باتیں کیں۔ پہلی یہ کہ اُنھوں نے غیر مسلمانوں کو شریک کرکے تحریک کو سچے معنوں میں تمام ہندستان کی تحریک بنا دیا اور دوسری یہ کہ اِس میں عام جنتا کو شریک کرکے وہ اسے ایک نیا راستہ دکھا گئے۔

(۲۴۴)

गुलामों का नाच

(डा० मसूद हुसैन खाँ. अलीगढ़ यूनीवर्सिटी)

खी खी खी खी !
मेरे अन्दर
आज हँसी फिर माता काली

"सात पियासें"[१] जाग उठी हैं
इस तन में
नाच रहा है मन भैरों की
हर हर गत पर
लेकिन कैसे भर पाऊंगा
सातों खप्पर
खून कहां है सोच यही
खी खी खी खी खी !!

सब से बड़ा है तेरा खप्पर
बूढ़े दादा
मुन्डों को भी तू है चाहता
ताकि बना के उनकी माला
डाल गले में नाचे आहा !

१—वह सात नसलें जो गुलामी में गुज़री हैं.

غلاموں کا ناچ

(ڈاکٹر مسعود حسن خاں، علی گڑھ یونیورسٹی)

کھی کھی کھی کھی !
میرے اندر
آج ہنسی پھر ماتا کالی

"سات پیاسیں"[۱] جاگ اٹھی ہیں
اس تن میں
ناچ رہا ہے من بھیروں کی
ہر ہر گت پر
لیکن کیسے بھر پاؤں گا
ساتوں کھپر
خون کہاں ہے سوچ یہی
کھی کھی کھی کھی !!

سب سے بڑا ہے تیرا کھپّر
بوڑھے دادا
منڈوں کو بھی تو ہے چاہتا
تاکہ بنا کے اُن کی مالا
ڈال گلے میں ناچے آہا !

۱؎ وہ سات نسلیں جو غلامی میں گزری ہیں۔

क्यों कि तेरे खून में नाचीं थीं उनकी तलवारें !!
अब जी भर के नाच
और जी भर के पी
तेरे साथ तेरे क़दमों पर
नाचेंगे हम भी
खी खी खी खी खी !!

रोक सकें क्या यह ज़ंजीरें
यह तो देंगी ताल
नाचो नाचो. सातों नाचें
इक चक्कर में
इस मैदां से
हिन्दुस्तां से
बच के न जाए कोई भी !
खी खी खी खी खी !!

[डा० साहब ने इन लाइनों में तसवीर खेंची है कि ग़ुलाम कैसे सोचते हैं. यानी इस तरह सोचना आज़ाद और ख़ुददार इनसान की शान के ख़िलाफ़ है.—एडिटर]

(२५४)

کیونکہ تیرے خون میں ناچیں تھیں اُن کی تلواریں!!

اب جی بھر کے ناچ
اور جی بھر کے پی
تیرے ساتھ تیرے قدموں پر
ناچیں گے ہم بھی
کھی کھی کھی کھی کھی !!

روک سکیں کیا یہ زنجیریں
یہ تو دیں گی تال
ناچو ناچو، ساتوں ناچیں
اِس چکّر میں
اِس میداں سے
ہندستاں سے
بچ کے نہ جائے کوئی بھی !
کھی کھی کھی کھی کھی !!

[ڈاکٹر صاحب نے ان لائنوں میں تصویر کھینچی ہے کہ غلام کیسے سوچتے ہیں. یعنی اِس طرح سوچنا آزاد اور خوددار انسان کی شان کے خلاف ہے.— ایڈیٹر]

(۲۴۵)

हिन्दुस्तानी कलचर और संगीत

(पंडित गनेश प्रसाद द्विवेदी)

(६)

पिछले लेख में हम मुहम्मद वज़ीर ख़ाँ साहब बीनकार तक पहुँचे थे. यह इस युग के आख़िरी बड़े बीनकार थे. इन की पैदायश १८६० ईसवीं के आस पास हुई थी. उस वक़्त इनके पिता अमीर ख़ां रामपुर के नवाब कलबे अली ख़ां के दरबारी बीनकार थे. मशहूर सुरसिंगारिये बहादुर सेन ख़ाँ भी उन दिनों रामपुर में ही थे. सात आठ बरस की उम्र से ही वज़ीर ख़ाँ ने अपने पिता से बीन और धुरपद की तालीम पानी शुरू की थी. इनके नाना बहादुर सेन के कोई औलाद नहीं थी. इसी से इन्होंने भी जी खोल कर वज़ीर ख़ां को रबाब और धुरपद की तालीम देनी शुरू की. बीस बरस की उमर होने के पहले ही इन्होंने बीन. रबाब और धुरपद में अच्छी जानकारी हासिल कर ली. बहादुर सेन और अमीर ख़ां जी जान से इन्हें तालीम दे रहे थे. बहादुर सेन रबाब और सुरसिंगार दोनों में अपना सानी नहीं रखते थे और अमीर ख़ां बीन और गाने में. दोनों में होड़ सी लग गई थी कि कौन अपने फ़न में वज़ीर ख़ां को ज़्यादा होशियार कर सकता है. नतीजा यह हुआ कि वज़ीर ख़ां को इतनी पूरी और सब चीज़ों की शिक्षा मिली जितनी शायद ही किसी गुनी को मिल

ہندستانی کلچر اور سنگیت

(پنڈت گنیش پرشاد دویدی)

(۶)

پچھلے لیکھ میں ہم محمد وزیر خاں صاحب بین کار تک پہنچے تھے. یہ اِس یُگ کے آخری بڑے بین کار تھے. اِن کی پیدائش ۱۸۶۰ عیسوی کے آس پاس ہوئی تھی. اُس وقت اِن کے پتا امیر خاں رامپور کے نواب کلب علی خاں کے درباری بین کار تھے. مشہور سُرسنگاریے بہادر سین خاں بھی اُن دنوں رامپور میں ہی تھے. سات آٹھ برس کی عمر سے ہی وزیر خاں نے اپنے پتا سے بین اور دُھرپد کی تعلیم پانی شروع کی تھی. اِن کے نانا بہادر سین کے کوئی اولاد نہیں تھی. اِسی سے اِنھوں نے بھی جی کھول کر وزیر خاں کو رباب اور دُھرپد کی تعلیم دینی شروع کی. بیس برس کی عمر ہونے کے پہلے ہی اُنھوں نے بین، رباب اور دُھرپد میں اچھی جان کاری حاصل کر لی. بہادر سین اور امیر خاں جی جان سے اِنھیں تعلیم دے رہے تھے. بہادر سین رباب اور سُرسنگار دونوں میں اپنا ثانی نہیں رکھتے تھے اور امیر خاں بین اور گانے میں. دونوں میں ہوڑ سی لگ گئی تھی کہ کون اپنے فن میں وزیر خاں کو زیادہ ہوشیار کر سکتا ہے. نتیجہ یہ ہوا کہ وزیر خاں کو اِتنی پوری اور سب چیزوں کی سکشا ملی جتنی شاید ہی کسی گُنی کو مل

सकी हो. कल्बे अली ख़ां के सामने ही वज़ीर ख़ां उनके दरबारी कलावंत हो चुके थे. उनके इंतक़ाल के बाद उनके भाई हैदर अली वज़ीर ख़ां साहब को भिलसी ले गए. हैदर अली ख़ां ख़ुद एक ऊँचे दरजे के गुनी थे. उन्हों ने तानसेन के घराने के कई बड़े उस्तादों से तालीम पाई थी. अमीर ख़ां बीनकार के भी वह शागिर्द थे. भिलसी में हैदर अली ख़ां की अपनी निजी ज़मींदारी थी. वहां उन्होंने छै बरस तक वज़ीर ख़ां को बड़े प्रेम से रक्खा. इसी बीच नवाब रामपुर के घराने की ही एक लड़की से वज़ीर ख़ां की शादी हुई जिसका सारा इंतज़ाम ख़ुद हैदर अली ख़ां ने किया था.

(२५४)

संगीत के सिवा वज़ीर ख़ां ने ब्राह्मन पंडितों से रामायन, महाभारत और पुरानों की शिक्षा भी ली थी, और संस्कृत व हिंदी दोनों की अच्छी जानकारी हासिल कर ली थी. संगीत पर लिखी हुई संस्कृत की पुरानी पोथियों को इन्होंने पंडितों से पढ़ा और कुछ के तर्जुमें भी इन्होंने उर्दू में किये जो इनके पोते दबीर ख़ां साहब के पास मौजूद हैं. इसके सिवा पुरान की कथाओं के आधार पर इन्होंने कुछ नाटक हिन्दी में रचे जो मौजूद हैं पर अभी तक छप नहीं सके. हमें इन पोथियों के देखने का इत्तफ़ाक़ हुआ है. ख़ास कर इन्होंने जो नाटक लिखे हैं वह संगीत और साहित्य (अदब) दोनों के लिहाज़ से ऊँचे दर्जे की चीज़ें हैं. इनके नाटक उस शैली में हैं जिसे आज दिन हिन्दी में 'गीति नाटक' कहा जाता है. इनमें एक्टरों की बात चीत गाने में ही है और रागों का चुनाव, रचना के रस को ध्यान में

سکی ہو۔ کلب علی خاں کے سامنے ہی وزیر خاں اُن کے درباری کلاونت ہو چکے تھے۔ اُن کے انتقال کے بعد اُن کے بھائی حیدر علی وزیر خاں صاحب کو بھلسی لے گئے۔ حیدر علی خاں خود ایک اونچے درجے کے گنی تھے۔ انھوں نے تان سین کے گھرانے کے کئی بڑے اُستادوں سے تعلیم پائی تھی۔ امیر خاں بین کار کے بھی وہ شاگرد تھے۔ بھلسی میں حیدر علی خاں کی اپنی نجی زمینداری تھی۔ وہاں اُنھوں نے چھ برس تک وزیر خاں کو بڑے پریم سے رکھا۔ اسی بیچ نواب رام پور کے گھرانے کی ہی ایک لڑکی سے وزیر خاں کی شادی ہوئی جس کا سارا انتظام خود حیدر علی خاں نے کیا تھا۔

(۲۵۴)

سنگیت کے سوا وزیر خاں نے براہمن پنڈتوں سے رامائن، مہابھارت اور پرانوں کی شکشا بھی لی تھی، اور سنسکرت و ہندی دونوں کی اچھی جانکاری حاصل کر لی تھی۔ سنگیت پر لکھی ہوئی سنسکرت کی پرانی پوتھیوں کو انھوں نے پنڈتوں سے پڑھا اور کچھ کے ترجمے بھی انھوں نے اُردو میں کئے جو اِن کے پوتے دبیر خاں صاحب کے پاس موجود ہیں۔ اِس کے سوا پُران کی کتھاؤں کے آدھار پر انھوں نے کچھ ناٹک ہندی میں رچے جو موجود ہیں پر ابھی تک چھپ نہیں سکے۔ ہمیں اِن پوتھیوں کے دیکھنے کا اتفاق ہوا ہے۔ خاص کر انھوں نے جو ناٹک لکھے ہیں وہ سنگیت اور ساہتیہ (ادب) دونوں کے لحاظ سے اونچے درجے کی چیزیں ہیں۔ اِن کے ناٹک اُس شیلی میں ہیں جسے آج دن ہندی میں گیت ناٹک کہا جاتا ہے۔ اِن میں ایکٹروں کی بات چیت گانے میں ہی ہے اور راگوں کا چُناؤ، رچنا کے رس کو دھیان میں

रखकर, इतना सुन्दर और कला से भरा हुआ मिलता है कि जी ख़ुश हो जाता है. हिन्दी शायरी यह ब्रज भाषा में करते थे. इनके गीतों में संगीत का हिस्सा बहुत ज्यादा और ऊँचे दर्जे का होता था. इन सब के सिवा इन्हें चित्रकारी का भी शौक़ था.

कई बरस भिलसी रहने के बाद वज़ीर ख़ां साहब हैदर अली ख़ां से छुट्टी लेकर कुछ दिन देस बिदेस घूमने के लिये बाहर निकले. सबसे पहले वह बनारस आए. उन दिनों काशीराज के दरबार में इनके दो नाना सादिक़ अली और निसार अली ख़ां रहते थे. यह दोनों रबाबिये थे. वज़ीर ख़ां की तालीम को इन्होंने और आगे बढ़ाया. वज़ीर ख़ां को बहुत सी ऐसी चीजें यहां सीखने को मिलीं जो अभी तक वह न सीख पाए थे.

इसके बाद वज़ीर ख़ां कई बरस कलकत्ते में रहे. मुंशी जी नाम के कलकत्ते के एक मुसलमान रईस इनके ख़ास प्रेमी थे. इन्हीं के यहां यह ज्यादातर रहते थे. इनके अलावा महाराजा यतींद्र मोहन टैगोर, राजा दुनी शील, तारा प्रसाद घोष और यादवेन्द्र बाबू जैसे रईस गुनियों ने इनकी सोहबत में ख़ूब ख़ूब फ़ायदा उठाया. इन्हीं रईसों के यहां इनका गाना और जलसे होते थे. इस बीच इन्होंने बंगला भाषा से भी जानकारी हासिल करली, बंगला बोलते तो इतना साफ़ कि मानो बंगाली ही हों. कोई भी सच्चा प्रेमी जो सुनने या सीखने की ग़रज़ से इनके पास पहुँच जाता था उसे यह निरास नहीं करते थे. पर उन पेशेवर उस्तादों को जो इनकी चीज़ों के उड़ा लेने की नियत से इनके पीछे लगे रहते

دیکھ کر، اتنا سُندر اور کلا سے بھرا ہوا ملتا ہے کہ جی خوش ہو جاتا ہے۔ ہندی شاعری یہ برج بھاشا میں کرتے تھے۔ اِن کے گیتوں میں سنگیت کا حصہ بہت زیادہ اور اونچے درجے کا ہوتا تھا۔ اِن سب کے سوا اِنھیں چترکاری کا بھی شوق تھا۔

کئی برس بھلسی رہنے کے بعد وزیر خاں صاحب حیدر علی خاں سے چھٹی لےکر کچھ دن دیس بدیس گھومنے کے لئے باہر نکلے۔ سب سے پہلے وہ بنارس آئے۔ اُن دنوں کاشی راج کے دربار میں اِن کے دو نانا صادق علی اور نثار علی خاں رہتے تھے۔ یہ دونوں رباییے تھے۔ وزیر خاں کی تعلیم کو اِنھوں نے اور آگے بڑھایا۔ وزیر خاں کو بہت سی ایسی چیزیں یہاں سیکھنے کو ملیں جو ابھی تک وہ نہ سیکھ پائے تھے۔

اِس کے بعد وزیر خاں کئی برس کلکتے میں رہے۔ منشی جی نام کے کلکتے کے ایک مسلمان رئیس اِن کے خاص پریمی تھے۔ اِنھیں کے یہاں یہ زیادہ تر رہتے تھے۔ ان کے علاوہ مہاراجا یتندر موہن ٹیگور، راجا دُنی شِل، تارا پرساد گھوش اور یادویندر بابو جیسے رئیس گُنیوں نے اِن کی صحبت میں خوب خوب فائدہ اُٹھایا۔ اِنھیں رئیسوں کے یہاں اِن کا گانا اور جلسے ہوتے تھے۔ اِس بیچ اِنھوں نے بنگلہ بھاشا سے بھی جانکاری حاصل کر لی، بنگلہ بولتے تو اتنا صاف کہ مانو بنگالی ہی ہوں۔ کوئی بھی سچا پریمی جو سننے یا سیکھنے کی غرض سے اِن کے پاس پہنچ جاتا تھا اُسے یہ نراس نہیں کرتے تھے۔ پر اُن پیشہ ور اُستادوں کو جو ان کی چیزوں کے اُڑا لینے کی نیت سے اِن کے پیچھے لگے رہتے

थे, यह अपनी खास चीजें नहीं सुनाते थे. इसी से कुछ लोग इन्हें घमंडी भी कहते थे.

वज़ीर खां लगभग सात आठ बरस कलकत्ते रहे. पर इनके बारे में आम शिकायत यह रही कि इन्होंने अपने बंस के लोगों के सिवा और किसी को सिखाना तो दूर रहा. जी खोल कर सुनाना भी पसंद न किया. कभी कभी बड़े रईसों की दावतों या जलसों में कुछ बीन या सुरसिंगार सुना दिया करते थे. सात आठ बरस में दस पांच मुजरे इनके ऐसे हुए जो लोगों को अभी तक याद हैं. क्योंकि इनका गाना बजाना सुने हुए कुछ लोग अभी तक जिन्दा हैं. बंगाल के गोबरडाँगा के मशहूर रईस ज्ञानदा प्रसन्न बाबू के यहां एक बार इन्होंने चांदनी केदारा नाम के राग का जी खोल कर आलाप एक आसन से छै घंटे तक बजाया था जिसकी याद अभी तक लोग करते हैं कि बीन पर ऐसी आलाप नहीं सुनी गई. ऐसे मौक़े दो ही एक हुए.

(२४८)

कलकत्ते में जिन लोगों को इन्होंने सिखाया उनमें दो को हम जानते हैं वह हैं बंगाल के मशहूर रईस बाबू तारा प्रसाद घोष और प्रमथनाथ बनर्जी. बनर्जी साहब को इन्होंने रुद्र वीणा (रुदबीन) सिखलाई थी. इसका चलन सिर्फ़ दकन खास कर मद्रास सूबे में है. इससे जाहिर है कि करनाटक स्कूल के संगीत की भी पूरी जानकारी इनको थी.

इसी बीच रामपुर से फिर इनको बुलाहट आई. उस वक़्त हामिद अली खां गद्दी पर थे. उन्होंने वज़ीर खां साहब को गुरू बनाकर उनसे बाक़ायदा तालीम लेनी शुरू की. उनके बड़े बेटे

تھے، یہ اپنی خاص چیزیں نہیں سناتے تھے. اسی سے کچھ لوگ انھیں گھمنڈی بھی کہتے تھے.

وزیر خاں لگ بھگ سات آٹھ برس کلکتے رہے، پر ان کے بارے میں عام شکایت یہ رہی کہ انھوں نے اپنے بنس کے لوگوں کے سوا اور کسی کو سکھانا تو دور رہا، جی کھول کر سنانا بھی پسند نہ کیا. کبھی کبھی بڑے رئیسوں کی دعوتوں یا جلسوں میں کچھ بین یا سُرسنگار سُنا دیا کرتے تھے. سات آٹھ برس میں دس پانچ مجرے ان کے ایسے ہوئے جو لوگوں کو ابھی تک یاد ہیں، کیونکہ ان کا گانا بجانا سُنے ہوئے کچھ لوگ ابھی تک زندہ ہیں. بنگال کے گوبرڈانگا کے مشہور رئیس گیاندا پرسن بابو کے یہاں ایک بار انھوں نے چاندنی کیدارا نام کے راگ کا جی کھول کر آلاپ ایک آسن سے چھ گھنٹے تک بجایا تھا جس کی یاد ابھی تک لوگ کرتے ہیں کہ بین پر ایسی آلاپ نہیں سُنی گئی. ایسے موقع دو ہی ایک ہوئے.

(۲۴۸)

کلکتے میں جن لوگوں کو انھوں نے سکھایا اُن میں دو کو ہم جانتے ہیں وہ ہیں بنگال کے مشہور رئیس بابو تارا پرشاد گھوش اور پرمتھناتھ بنرجی. بنرجی صاحب کو انھوں نے رُدر بینا (رُدبین) سکھلائی تھی. اس کا چلن صرف دکن خاص کر مدراس صوبے میں ہے. اس سے ظاہر ہے کہ کرناٹک اسکول کے سنگیت کی بھی پوری جان کاری ان کو تھی.

اسی بیچ رام پور سے پھر ان کو بُلاہٹ آئی. اُس وقت حامد علی خاں گدی پر تھے. انھوں نے وزیر خاں صاحب کو گرو

नज़ीर ख़ां उर्फ़ प्यारे मियां की तालीम इन्होंने कलकत्ते में ही शुरू कर दी थी. नवाब बहादुर के चाचा हैदर अली ख़ां ने ही नवाब को संगीत का शौक़ पैदा कराया था. नवाब बहादुर को गाने में ज़्यादा दिलचस्पी थी इस लिये थोड़ी बीन की तालीम देकर इन्होंने उन्हें धुरपद और धमार ही ज़्यादा याद करवाए.

अब यह टिक कर रामपुर रहने लगे. कलकत्ते में एक तरह से जम गए थे, पर इनके पुराने प्रेमी हैदर अली ख़ां ने जिन्होंने इन्हें भिलसी में अर्से तक बड़े आदर के साथ रक्खा था, ज़ोर देकर इनसे कलकत्ता छुड़वाया और सदा के लिये फिर से रामपुर में टिका दिया. इन्होंने नवाब बहादुर को बड़े जतन से तालीम दी जिसके फल से वह ध्रुपद धमार में अच्छी ख़ासी महारत हासिल कर सके. और नवाब रामपुर ने इनकी क़द्र भी बहुत की. हमेशा अपने साथ रखते थे. इनको एक अलग आलीशान कोठी मय पूरे स्टाफ़ के दे रक्खी थी. इनको महाराजा काशमीर ने बहुत बड़ी तनख़ाह का लालच देकर बुलाने की कोशिश की पर रामपुर छोड़ कर फिर कहीं जाने को इनका जी नहीं चाहा.

वज़ीर ख़ां साहब की जवानी में जिन लोगों को इनसे तालीम पाने का इत्तफ़ाक़ हुआ था उनमें ख़ास यह हैं—बीनकार मुहम्मद हुसैन, सितारिये अब्दुर रहीम, हार्मोनियम बजाने वाले सैयद अब्बन अली, सितारिये नसीर अली, और कलकत्ते के मशहूर रईस यादवेन्द्र बाबू ज़मींदार पंचेनगढ़.

نظیر خاں عرف پیارے میاں کی تعلیم انھوں نے کلکتے میں ہی شروع کر دی تھی. نواب بہادر کے چاچا حیدر علی خاں نے ہی نواب کو سنگیت کا شوق پیدا کرایا تھا. نواب بہادر کو گانے میں زیادہ دلچسپی تھی اس لئے تھوڑی بین کی تعلیم دے کر انھوں نے انھیں دھرپد اور دھمار ہی زیادہ یاد کروائے.

اب یہ ٹک کر رام پور رہنے لگے. کلکتے میں ایک طرح سے جم گئے تھے، پر ان کے پرانے پریمی حیدر علی خاں نے جنھوں نے انھیں بھلسی میں برسوں تک بڑے آدر کے ساتھ رکھا تھا، زور دے کر ان سے کلکتہ چھڑوایا اور سدا کے لئے پھر سے رام پور میں ٹکا دیا. انھوں نے نواب بہادر کو بڑے جتن سے تعلیم دی جس کے پھل سے وہ دھرپد دھمار میں اچھی خاصی مہارت حاصل کر سکے. اور نواب رام پور نے ان کی قدر بھی بہت کی. ہمیشہ اپنے ساتھ رکھتے تھے. ان کو ایک الگ عالی شان کوٹھی مع پورے اسٹاف کے دے رکھی تھی. ان کو مہاراجا کاشمیر نے بہت بڑی تنخواہ کا لالچ دے کر بلانے کی کوشش کی پر رام پور چھوڑ کر پھر کہیں جانے کو ان کا جی نہیں چاہا.

وزیر خاں صاحب کی جوانی میں جن لوگوں کو ان سے تعلیم پانے کا اتفاق ہوا تھا ان میں خاص یہ ہیں—بین کار محمد حسین، ستاریے عبدالرحیم، ہارمونیم بجانے والے سید ابن علی، ستاریے نصیر علی، اور کلکتے کے مشہور رئیس یادویندر بابو زمیندار پنچیت گڑھ.

पर इनके ख़ास शागिर्द जो इस वक़्त ज़िंदा हैं और जिनकी गिनती हिन्दुस्तान के सबसे बड़े उस्तादों में है वह हैं मैहर राज्य के दरबारी गुनी उस्ताद अलाउद्दीन ख़ां और ग्वालियर दरबार के गुनी उस्ताद हफ़ीज़ अली ख़ां सरोद निवाज़. अला उद्दीन ख़ां की पैदायश पूरब बंगाल के किसी ज़िले में हुई थी. यह बड़े ग़रीब किसान ख़ानदान के बच्चे थे. इन्हें बेहद शौक़ था गाने बजाने का. वज़ीर ख़ां साहब एक बार मैमनसिंह (पूरब बंगाल) के राजा के यहां दावत में गए थे. वहीं इनका बाजा सुन घरबार छोड़ यह इनके साथ हो लिये और साथ साथ कलकत्ते चले आए. कई बार गिड़गिड़ा कर इन्होंने ख़ां साहब से तालीम देने की विनती की. पर ख़ां साहब किसी राजा रईस से कम ठाठ बाट से नहीं रहते थे और मिज़ाज में हद दरजे की रईसी भरी हुई थी. उन्होंने कह दिया कि "मैं भिखमंगों को नहीं सिखाता, जाओ कोई दूसरा काम सीखो, क्या करोगे गाना बजाना सीख कर." पर यह न माने, कम से कम यह प्रार्थना की कि मुझे अपनी ख़िदमत में रख लीजिये. यह भी नामंज़ूर हुआ. ख़ां साहब को डर था कि ऐसों का क्या ठीक. कुछ क़ीमती चीज़ें लेकर चंपत हो जाय तो हम इसे कहां खोजते फिरेंगे. पर यह माने नहीं. बरसों पीछे लगे रहे. भूके आधे पेट इनके दरवाज़े पर पड़े रहते थे और जब यह बाहर निकलते तो सलाम करते थे. ख़ां साहब इनका सलाम भी नहीं लेते थे. पर जब इन्हें मालूम हुआ कि यह अकसर कई दिन भूके पड़े रहते हैं इस उम्मीद में कि शायद किसी वक़्त इनकी बीन सुनने को मिल जाय. तब

پر ان کے خاص شاگرد جو اس وقت زندہ ہیں اور جن کی گنتی ہندستان کے سب سے بڑے استادوں میں ہے وہ ہیں میہر راجیہ کے درباری گنی استاد علاؤالدین خاں اور گوالیر دربار کے گنی استاد حفیظ علی خاں سرود نواز. علاءالدین خاں کی پیدائش پورب بنگال کے کسی ضلع میں ہوئی تھی. یہ بڑے غریب کسان خاندان کے بچے تھے. انھیں بے حد شوق تھا گانے بجانے کا. وزیر خاں صاحب ایک بار میمن سنگھ (پورب بنگال) کے راجا کے یہاں دعوت میں گئے تھے. وہیں ان کا باجا سن گھر بار چھوڑ یہ ان کے ساتھ ہو لئے اور ساتھ ساتھ کلکتے چلے آئے. کئی بار گڑگڑا کر انھوں نے خاں صاحب سے تعلیم دینے کی بنتی کی. پر خاں صاحب کسی راجا رئیس سے کم ٹھاٹھ باٹ نہیں رکھتے تھے اور مزاج میں حد درجے کی رئیسی بھری ہوئی تھی. انھوں نے کہہ دیا کہ "میں بھک منگوں کو نہیں سکھاتا، جاؤ کوئی دوسرا کام سیکھو، کیا کروگے گانا بجانا سیکھ کر." پر یہ نہ مانے، کم سے کم یہ پرارتھنا کی کہ مجھے اپنی خدمت میں رکھ لیجئے. یہ بھی نامنظور ہوا. خاں صاحب کو ڈر تھا کہ ایسوں کا کیا ٹھیک، کچھ قیمتی چیزیں لے کر چمپت ہو جائے تو ہم اسے کہاں کھوجتے پھریں گے. پر یہ مانے نہیں. برسوں پیچھے لگے رہے، بھوکے آدھے پیٹ ان کے دروازے پر پڑے رہتے تھے اور جب یہ باہر نکلتے تو سلام کرتے تھے. خاں صاحب ان کا سلام بھی نہیں لیتے تھے. پر جب انھیں معلوم ہوا کہ یہ اکثر کئی دن بھوکے پڑے رہتے ہیں اس امید میں کہ شاید کسی وقت ان کی بین سننے کو مل جائے. تب

ख़ां साहब का दिल कुछ पिघला. और इन्होंने यह हुक्म दे दिया कि वह 'भिखमंगा' जब दिखाई पड़े तो उसके खाने पीने का इन्तज़ाम कर दिया जाया करे. बिना किसी ख़िदमत का मौक़ा पाए अलाउद्दीन ने खाने से इनकार कर दिया. यह बड़े आत्माभिमानी हैं यह ख़बर जब ख़ां साहब को मिली तो उनका माथा ठनका. और इन्हें अपने पास बुलाकर बहुत समझाया बुझाया कि यह इल्म हासिल करना तुम्हारे बस के बाहर की बात है. पर इन्होंने अपनी हठ नहीं छोड़ी.

इसी बीच ख़ां साहब की बुलाहट रामपुर से आई और वह सदा के लिये बंगाल छोड़ कर चले गए. कुछ दिन बाद अलाउद्दीन भी गिरते पड़ते रामपुर पहुँचे और ख़ां साहब को सलाम किया. वह हैरान थे. कुछ दिन तक रामपुर में भी इन्होंने इनका सलाम न लिया, पर जब उन्हें पक्का यक़ीन हो गया कि अगर इसे तालीम न दूंगा तो वह जान दे देगा तो कुछ पिघले. रामपुर अलाउद्दीन के लिये विलायत से कम न था. यहां न वह किसी की बोली समझते थे न उनकी कोई समझता था. कलकत्ते में यह किसी तरह घूमकर गुज़र बसर कर लेते थे, इनके अज़ीज़ वहां थे, पर यहां इनका कोई नहीं था. अंत में वज़ीर ख़ां साहब ने इन्हें अपनी ख़िदमत में ले लिया और पूरे दो बरस तक ख़िदमत ही लेते रहे, तालीम कुछ नहीं दी. इनके सब्र और शौक़ का इम्तहान गोया लिया जा रहा था. इनके दिमाग़ और याददाश्त और सब्र की कड़ी परीक्षा ख़ां साहब लेते रहे. यह पखावज पहले से जानते थे. आख़िर ख़ां साहब ने

خاں صاحب کا کچھ دل پگھلا۔ اور اِنھوں نے یہ حکم دے دیا کہ وہ 'بھک منگا' جب دکھلائی پڑے تو اُس کے کھانے پینے کا انتظام کر دیا جایا کرے۔ بنا کسی خدمت کا موقع پائے علاءالدین نے کھانے سے انکار کر دیا۔ یہ بڑے اتما بھمانی ہیں یہ خبر جب خاں صاحب کو ملی تو اُن کا ماتھا ٹھنکا۔ اور اِنھیں اپنے پاس بلاکر بہت سمجھایا بجھایا کہ یہ علم حاصل کرنا تمھارے بس کے باہر کی بات ہے۔ پر اِنھوں نے اپنی ہٹ نہیں چھوڑی۔

اسی بیچ خاں صاحب کی بلاہٹ رام پور سے آئی اور وہ سدا کے لئے بنگال چھوڑ کر چلے گئے۔ کچھ دن بعد علاءالدین بھی گرتے پڑتے رام پور پہنچے اور خاں صاحب کو سلام کیا۔ وہ حیران تھے۔ کچھ دن تک رام پور میں بھی اِنھوں نے اِن کا سلام نہ لیا، پر جب اُنھیں پکا یقین ہو گیا کہ اگر اِسے تعلیم نہ دوں گا تو وہ جان دے دے گا تو کچھ پگھلے۔ رام پور علاءالدین کے لئے ولایت سے کم نہ تھا۔ یہاں نہ وہ کسی کی بولی سمجھتے تھے نہ اُن کی کوئی سمجھتا تھا۔ کلکتے میں یہ کسی طرح گھوم کر گذر بسر کر لیتے تھے، اِن کے عزیز وہاں تھے، پر یہاں اِن کا کوئی نہیں تھا۔ انت میں وزیر خاں صاحب نے اِنھیں اپنی خدمت میں لے لیا اور پورے دو برس تک خدمت ہی لیتے رہے، تعلیم کچھ نہیں دی۔ اِن کے صبر اور شوق کا امتحان گویا لیا جا رہا تھا۔ اِن کے دماغ اور یادداشت اور صبر کی بڑی پریکشا خاں صاحب لیتے رہے۔ یہ پکھاوج پہلے سے جانتے تھے۔ آخر خاں صاحب نے

इनको तालीम देनी शुरू की. इनकी समझ और याददाश्त बहुत ऊंचे दर्जे की थी. अलाउद्दीन साहब का कहना है कि कलकत्ते से रामपुर वापस आने के बाद से लेकर जब तक खां साहब जिन्दा रहे तब तक लगातार यानी लगभग अठारह बरस तक यह उनसे तालीम लेते रहे. गाने बजाने की मुकम्मिल जानकारी आज जितनी हम अलाउद्दीन खां साहब में पाते हैं उतनी शायद ही किसी में हो.

अलाउद्दीन साहब का क़िस्सा हमने ज़रा तफ़सील से इस लिये कहा जिससे मालूम हो जाय कि किसी बड़े उस्ताद से इल्म सीखना एक मामूली आदमी के लिये कितना कठिन है. पर अलाउद्दीन साहब धुन के ऐसे पक्के निकले कि खां साहब को सिखाना ही पड़ा और फिर तो ऐसा सिखाया कि जितना शायद और दूसरे किसी को नहीं. अलाउद्दीन साहब के साथ एक दिक़्क़त और है. वह बैंहथ्ये हैं और सब बाजे उल्टे हाथ से बजाते हैं. इस लिये इनके लिये सब बाजे खास तौर से उल्टे बनते हैं जो दूसरा कोई नहीं बजा सकता और न यह किसी दूसरे का बाजा बजा सकते हैं. शुरू में इनके पास पैसे भी नहीं थे कि अपने लिये बाजा बनवा सकें. पर सब तरह से कसौटी पर कस कर जब खां साहब ने इन्हें खरा पाया. तो फिर इन्हें किसी चीज़ के लिये फ़िकर करने की ज़रूरत न रही.

अलाउद्दीन खां साहब ने खास तौर से सरोद सीखा और इसके बाद रबाब और सुर सिंगार. बेला (वायलिन) में भी यह कमाल करते हैं. इनके अलावा और भी कितने ही बाजे

اِن کو تعلیم دینی شروع کی۔ ان کی سمجھ اور یادداشت بہت اونچے درجے کی تھی۔ علاءالدین صاحب کا کہنا ہے کہ کلکتے سے رام پور واپس آنے کے بعد سے لے کر جب تک خاں صاحب زندہ رہے تب تک لگاتار یعنی لگ بھگ اٹھارہ برس تک یہ اُن سے تعلیم لیتے رہے۔ گانے بجانے کی مکمل جان کاری آج جتنی ہم علاءالدین خاں صاحب میں پاتے ہیں اُتنی شاید ہی کسی میں ہو۔

علاءالدین صاحب کا قصہ ہم نے ذرا تفصیل سے اِس لیے کہا جس سے معلوم ہو جائے کہ کسی بڑے اُستاد سے علم سیکھنا ایک معمولی آدمی کے لیے کتنا کٹھن ہے۔ پر علاءالدین صاحب دُھن کے ایسے پکے نکلے کہ خاں صاحب کو سکھانا ہی پڑا اور پھر تو ایسا سکھایا کہ جتنا شاید اور دوسرے کسی کو نہیں۔ علاءالدین (۲۵۴)
صاحب کے ساتھ ایک دقّت اور ہے۔ وہ بائیں ہتھے ہیں اور سب باجے اُلٹے ہاتھ سے بجاتے ہیں۔ اِس لیے اِن کے لیے سب باجے خاص طور سے اُلٹے بنتے ہیں جو دوسرا کوئی نہیں بجا سکتا اور نہ یہ کسی دوسرے کا باجا بجا سکتے ہیں۔ شروع میں اِن کے پاس پیسے بھی نہیں تھے کہ اپنے لیے باجا بنوا سکیں۔ پر سب طرح سے کسوٹی پر کس کر جب خاں صاحب نے انھیں کھرا پایا، تو پھر انھیں کسی چیز کے لیے فکر کرنے کی ضرورت نہ رہی۔

علاءالدین خاں صاحب نے خاص طور سے سرود سیکھا اور اِس کے بعد رباب اور سُر سنگار۔ بیلا (وایلن) میں بھی یہ کمال کرتے ہیں۔ اِن کے علاوہ اور بھی کتنے ہی باجے

यह बखूबी बजा लेते हैं जैसे पखावज, तबला, सितार, बैंजो, मंडोलीन, सुरमंडल, जलतरंग वग़ैरा. धुरपद धमार भी इन्हें बहुत याद हैं. हिन्दुस्तान में कोई एक आदमी ऐसा नहीं है जो इतने बाजे बजा सकता हो या संगीत के बारे में इतनी सबतरफ़ा जानकारी रखता हो. इनकी आवाज़ बड़ी रूखी है. पर पुराने ख्याल, धुरपद, होटी (धंमार) वग़ैरा जितनी तादाद में इनको याद हैं इतने शायद ही किसी गवैये को याद हों. तबला और पखावज तो यह ऐसा बजाते हैं कि सुनने से मालूम होता है कि उमर भर यही किया है. मशहूर उदय शंकर (नतक) की पार्टी के साथ यह यूरोप और अमरीका वग़ैरा हो आए हैं और इनके इल्म और कसब की तौरीफ़ फ़्रांस और आस्ट्रिया के बड़े बड़े संगीत अलोचकों ने की है. हिन्दुस्तान में इस समय यंत्र संगीत के जो दो सब से बड़े उस्ताद हैं उनमें से एक यह हैं. और दूसरे हैं सरोद नवाज़ उस्ताद हफ़ीज़ अली. यह दोनों ही उस्ताद वज़ीर ख़ां साहब के शागिर्द हैं.

(२५४)

उस्ताद अलाउद्दीन ख़ां ने सिर्फ़ वज़ीर ख़ां साहब से ही सीखा और बहुत अर्से तक सीखा. पर हफ़ीज़ अली ख़ां अपने वालिद नन्हें ख़ां साहब से पूरी तालीम पा चुके थे. सिर्फ़ उसे पक्का करने और जिला देने के लिये दो बरस को रामपुर में ख़ां साहब से सीखने गए थे. यह दोनों ही उस्ताद हिन्दुस्तान में बड़े हर-दिल अज़ीज़ हैं. हफ़ीज़ अली ख़ां साहब सिवा सरोद के और किसी बाजे पर हाथ नहीं रखते. पर इसमें अपना सानी भी नहीं रखते. इनके हाथ में एक कुदरती मिठास है और 'सुरावट' है जो इस वक्त और किसी उस्ताद के हाथ में नहीं है

یہ بخوبی بجا لیتے ہیں جیسے پکھاوج، طبلہ، ستار، بینجو، مینڈولین، سُرمنڈل، جل ترنگ وغیرہ دھرپد دھمار بھی اِنھیں بہت یاد ہیں۔ ہندستان میں کوئی ایک آدمی ایسا نہیں ہے جو اِتنے باجے بجا سکتا ہو یا سنگیت کے بارے میں اِتنی سب طرفہ جانکاری رکھتا ہو۔ اِن کی آواز بڑی روکھی ہے۔ پر پُرانے خیال، دھرپد، ہوری (دھمار) وغیرہ جتنی تعداد میں اِن کو یاد ہیں اِتنے شاید ہی کسی گویّے کو یاد ہوں۔ طبلہ اور پکھاوج تو یہ ایسا بجاتے ہیں کہ سُننے سے معلوم ہوتا ہے کہ عمر بھر یہی کیا ہے۔ مشہور اُدے شنکر (نرتک) کی پارٹی کے ساتھ یورپ اور امریکا وغیرہ ہو آئے ہیں اور اِن کے علم اور کسب کی تعریف فرانس اور آسٹریا کے بڑے بڑے سنگیت آلوچکوں نے کی ہے۔ ہندستان میں اِس سمے ینتر سنگیت کے جو دو سب سے بڑے اُستاد ہیں ان میں سے ایک یہ ہیں، اور دوسرے ہیں سرود نواز اُستاد حفیظ علی۔ یہ دونوں اُستاد وزیر خاں صاحب کے شاگرد ہیں۔

(٢٥٤)

اُستاد علاءالدین خاں نے صرف وزیر خاں صاحب سے ہی سیکھا اور بہت عرصے تک سیکھا۔ پر حفیظ علی خاں اپنے والد ننھے خاں صاحب سے پوری تعلیم پا چکے تھے۔ صرف اُسے پکّا کرنے اور جِلا دینے کے لئے دو برس کو رام پور میں خاں صاحب سے سیکھنے گئے تھے۔ یہ دونوں ہی اُستاد ہندستان میں بڑے ہر دلعزیز ہیں۔ حفیظ علی خاں صاحب سوا سرود کے اور کسی باجے پر ہاتھ نہیں رکھتے، پر اِس میں اپنا ثانی بھی نہیں رکھتے۔ اِن کے ہاتھ میں ایک قدرتی مٹھاس ہے اور 'سُراوٹ' ہے

कानफरेंस या जलसों में समा कैसे बांधना चाहिये इस फ़न में भी यह बेजोड़ हैं. जलसों में इन के बाद फिर और किसी का गाना बजाना जमना एक नामुमकिन बात है. रागों में बर्ते जाने वाले सुरों के जितने मुमकिन मेल हो सकते हैं उन में से किन को और किस तामीर के साथ कहाँ और कैसे लगाना चाहिये इस को जितना हफ़ीज़ अली साहब ने समझा है उतना शायद ही किसी और ने समझा हो. राग हानि किये बिना एक किसी ख़ास राग में यकसाँ या मिलती जुलती तासीर वाले और और दूसरे रागों की छाया दिखाते चलना. 'आविर्भाव' 'तिरोभाव' के सहारे किसी ख़ास राग में विवादी सुरों को लगाते चलना और राग को बिगाड़ने के बजाय और सुघड़ बनाते चलना इन्हीं के हिस्से आया है.

इन दोनों ही उस्तादों की देस भर में बड़ी मांग है और इलाहाबाद में तो हर साल इनके दर्शन होते हैं. रेडियो से भी अक्सर यह सुने जाते हैं. पर हफ़ीज़ अली खां साहब आम तौर से रेडियो स्टेशनों से बजाना नापसंद करते हैं. वह रेडियो और सिनेमा के ख़िलाफ़ हैं और इनको संगीत का दुश्मन समझते हैं.

इनके सिवा संगीत की दुनिया की दो और बड़ी हस्तियां वज़ीर खां साहब की शागिर्द थीं. इन के नाम हैं स्वर्गीय पं० विष्णु नारायण भातखंडे और राजा नवाब अली. राजा नवाब अली ख़ास कर मुहम्मद अली ख़ाँ रबाबिये के ही शागिर्द थे पर वज़ीर ख़ाँ साहब को भी वह मानते थे. भातखंडे

کانفرنس یا جلسوں میں سماں کیسے باندھنا چاہیے اِس فن میں بھی یہ بے جوڑ ہیں. جلسوں میں اِن کے بعد پھر اور کسی کا گانا بجانا جمنا ایک ناممکن بات ہی. راگوں میں برتے جانے والے سُروں کے جتنے ممکن میل ہوسکتے ہیں اُن میں سے کس کو اور کس تعمیر کے ساتھ کہاں اور کیسے لگانا چاہیے اِس کو جتنا حفیظ علی صاحب نے سمجھا ہی اُتنا شاید ہی کسی اور نے سمجھا ہو. راگ ہانی کئے بنا ایک کسی خاص راگ میں یکساں یا مِلتی جُلتی تاثیر والے اور اور دوسرے راگوں کی چھایا دکھاتے چلنا، 'آوِربھاو' 'تِروبھاو' کے سہارے کسی خاص راگ میں وِوادی سُروں کو لگاتے چلنا اور راگ کو بگاڑنے کے بجائے اور سگھڑ بناتے چلنا اِنھیں کے حصے آیا ہی.

(۲۵۵)

اِن دونوں ہی اُستادوں کی دیس بھر میں بڑی مانگ ہی اور الہ آباد میں تو ہر سال اِن کے درشن ہوتے ہیں. ریڈیو سے بھی اکثر یہ سُنے جاتے ہیں، پر حفیظ علی خاں صاحب عام طور سے ریڈیو اسٹیشنوں سے بجانا ناپسند کرتے ہیں. وہ ریڈیو اور سنیما کے خلاف ہیں اور اُن کو سنگیت کا دُشمن سمجھتے ہیں.

اِن کے سوا سنگیت کی دُنیا کی دو اور بڑی ہستیاں وزیر خاں صاحب کی شاگرد تھیں. اِن کے نام ہیں سورگیہ پنڈت وشنو نارائن بھات کھنڈے اور راجا نواب علی. راجا نواب علی خاص کر محمد علی خاں ربابیے کے ہی شاگرد تھے پر وزیر خاں صاحب کو بھی وہ مانتے تھے. بھات کھنڈے

साहब ने जिन ख्यालों व ध्रुपदों की स्वरलिपि अपनी किताबों (हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति भाग १ से ६) में दी है उनमें से बहुत सी इनको वज़ीर ख़ाँ साहब से मिली थीं. पंडित जी के संग्रह में कुल दो हज़ार से ऊपर ख्याल. ध्रुपद. धमार. सादरा और तरानों की सुरलिपियां दी गई हैं. इतना बड़ा संग्रह किसी देश के संगीत में अभी तक नहीं हुआ है. इस संग्रह के सिलसिले में जब पंडित जी ने देश भर के उस्तादों के पास दौरा शुरू किया तो रामपुर भी गए. वज़ीर ख़ाँ ने पहले इनको चीज़ें देने से साफ़ इनकार कर दिया था. अंत में जब यह गंडा बँधा कर उनके शागिर्द हुए तब वह राज़ी हुए. छिप कर भी इनकी बहुत सी चीज़ों की स्वरलिपि पंडित जी ने कर डाली थी. पंडित जी का स्वर ज्ञान और राग ज्ञान इतना ज़बरदस्त था कि किसी गवैये के गले से या यंत्र पर राग को सुनते सुनते उसकी स्वरलिपि करते चलते थे. यह उन्हीं का हक़ था और फिर किसी हद तक उनके पटु शिष्य श्री कृष्ण रातनजनकर साहब में भी यह माद्दा पाया जाता है. यह इस वक़्त लखनऊ के मारिस कालेज आफ़ हिन्दुस्तानी म्यूज़िक के प्रिंसिपल हैं. यह कालेज अब 'भातखंडे यूनिवर्सिटी' कहलाता है. इसकी थापना पंडित जी और राजा नवाब अली ने मिल कर की थी. हिन्दुस्तान में इससे बड़ा और कोई संगीत का कालेज नहीं है. रातनजनकर साहब के सुरज्ञान और फ़ौरन सुरलिपि करने की अनोखी शक्ति की एक मिसाल हम यहाँ देना चाहते हैं.

लखनऊ के एक पुराने उस्ताद हैं जिन्हें उस्ताद ख़ुर्शेद अल

صاحب نے جن خیالوں و دُھرپدوں کی سورلپی اپنی کتابوں (ہندستانی سنگیت پدھتی بھاگ ۱ سے ۶) میں دی ہے اُن میں سے بہت سی اِن کو وزیر خاں صاحب سے ملی تھیں۔ پنڈت جی کے سنگرہ میں کُل دو ہزار سے اوپر خیال، دُھرپد، دھمار، سادرا اور ترانوں کی سُرلپیاں دی گئی ہیں۔ اتنا بڑا سنگرہ کسی دیش کے سنگیت میں ابھی تک نہیں ہوا ہے۔ اِس سنگرہ کے سلسلے میں جب پنڈت جی نے دیش بھر کے اُستادوں کے پاس دورہ شروع کیا تو رام پور بھی گئے۔ وزیر خاں نے پہلے اِن کو چیزیں دینے سے صاف انکار کر دیا تھا۔ انت میں جب یہ گنڈا بندھا کر اُن کے شاگرد (۲۵۲)
ہوئے تب وہ راضی ہوئے۔ چھپ کر بھی اِن کی بہت سی چیزوں کی سورلپی پنڈت جی نے کر ڈالی تھی۔ پنڈت جی کا سورگیان اور راگ گیان اتنا زبردست تھا کہ کسی گوئیے کے گلے سے یا یَنتر پر راگ کو سُنتے سُنتے اُس کی سورلپی کرتے چلتے تھے۔ یہ اُنھیں کا حق تھا اور پھر کسی حد تک اُن کے پٹو شِشیہ شری کرشن راتنجنکر صاحب میں بھی یہ مادّہ پایا جاتا ہے۔ یہ اِس وقت لکھنؤ کے مارس کالج آف ہندستانی میوزک کے پرنسپل ہیں۔ یہ کالج اب 'بھات کھنڈے یونیورسٹی' کہلاتا ہے۔ اِس کی تھاپنا پنڈت جی اور راجا نواب علی نے مل کر کی تھی۔ ہندستان میں اِس سے بڑا اور کوئی سنگیت کا کالج نہیں ہے۔ راتنجنکر صاحب کے سُرگیان اور فوراً سُرلپی کرنے کی انوکھی شکتی کی ایک مثال ہم یہاں دینا چاہتے ہیں۔

لکھنؤ کے ایک پُرانے اُستاد ہیں جنھیں اُستاد خورشید علی

कहते हैं. इनकी उम्र इस वक़्त १०० से ज्यादा है. यह लखनऊ के आखरी नवाब वाजिद अली शाह के दरबारी थे. एक बार बड़े आदर के साथ लखनऊ के मारिस कालेज में प्रिंसिपल साहब ने इनका गाना करवाया. गाना शुरू करने के पहले इन्होंने पुराने संगीत के बारे में अपनी कुछ राय ज़ाहिर की थी और उस सिलसिले में कहा था कि नोटेशन या स्वरलिपि पद्धति से हिन्दुस्तानी संगीत कभी नहीं सीखा जा सकता क्योंकि हमारी पुरानी गायकी की बंदिशें इतनी उलझी हुई हैं कि उनकी सही स्वरलिपि हो ही नहीं सकती. साथ ही आपने बातों बातों में यह भी कहा कि पंडित जी की किताबों में जो सुर लिपियां दी गई हैं वह ज्यादा तर ग़लत हैं. इसके बाद गाना शुरू करते करते आपने चुनौती के तौर पर यह भी कहा कि मैं एक पुरानी चीज़ गा रहा हूँ कोई कर तो दे इसकी स्वरलिपि.

प्रिंसिपल साहब उनके बग़ल ही में बैठे हुए सब सुन रहे थे. पर उस वक़्त उस्ताद ख़ुर्शेद अली उनके व उनके कालेज के मेहमान थे और साथ ही बड़े बुज़ुर्ग थे. उन्होंने उन्हें टोकना मुनासिब नहीं समझा पर गाना शुरू होने के साथ ही चुपचाप उनके पीछे पेंसिल और नोटबुक लेकर बैठ गए. लोगों ने देखा कि जब तक गाना चलता रहा, प्रिंसिपल साहब ध्यान मग्न और एक दिल हो कर लगातार लिखते ही रहे. सुनने वालों ने जो सामने बैठे थे उनकी यह हरकत देखी पर ख़ुरशेद अली साहब न देख सके क्यों कि उनके पीछे जो दो तानपूरा छेड़ने वाले बैठे थे उनके पीछे प्रिंसिपल साहब बैठे थे.

کہتے ہیں۔ ان کی عمر اس وقت ۱۰۰ سے زیادہ ہے۔ یہ لکھنؤ کے آخری نواب واجد علی شاہ کے درباری تھے۔ ایک بار بڑے آدر کے ساتھ لکھنؤ کے مارس کالج میں پرنسپل صاحب نے ان کا گانا کروایا۔ گانا شروع کرنے کے پہلے انھوں نے پرانے سنگیت کے بارے میں اپنی کچھ رائے ظاہر کی تھی اور اس سلسلے میں کہا تھا کہ نوٹیشن یا سورلپی پدھتی سے ہندستانی سنگیت کبھی نہیں سیکھا جاسکتا کیونکہ ہماری پرانی گائکی کی بندشیں اتنی الجھی ہوئی ہیں کہ ان کی صحیح سورلپی ہو ہی نہیں سکتی۔ ساتھ ہی آپ نے باتوں باتوں میں یہ بھی کہا کہ پنڈت جی کی کتابوں میں جو سرلپیاں دی گئی ہیں وہ زیادہ تر غلط ہیں۔ اس کے بعد گانا شروع کرتے کرتے آپ نے چنوتی کے طور پر یہ بھی کہا کہ میں ایک پرانی چیز گا رہا ہوں کوئی کر تو دے اس کی سورلپی۔

پرنسپل صاحب ان کے بغل ہی میں بیٹھے ہوئے سب سن رہے تھے۔ پر اس وقت استاد خورشید علی ان کے و ان کے کالج کے مہمان تھے اور ساتھ ہی بڑے بزرگ تھے۔ انھوں نے انھیں ٹوکنا مناسب نہیں سمجھا پر گانا شروع ہونے کے ساتھ ہی چپ چاپ ان کے پیچھے پنسل اور نوٹ بک لے کر بیٹھ گئے۔ لوگوں نے دیکھا کہ جب تک گانا چلتا رہا، پرنسپل صاحب دھیان مگن اور ایک دل ہو کر لگاتار لکھتے ہی رہے۔ سننے والوں نے جو سامنے بیٹھے تھے ان کی یہ حرکت دیکھی پر خورشید علی صاحب نہ دیکھ سکے کیونکہ ان کے پیچھے جو دو تان پورا چھیڑنے والے بیٹھے تھے ان کے پیچھے پرنسپل صاحب بیٹھے تھے۔

गाना खत्म हुआ, प्रिंसिपल साहब कालेज की तरफ़ से खाँ साहब का शुक्रिया करने उठे और इस रस्म को मुनासिब लफ़्ज़ों में पूरी कर उन्होंने स्वरलिपि के बारे में खाँ साहब ने जो राय ज़ाहिर की थी उस पर मुलायम लफ़्ज़ों में अपनी नाइत्तफ़ाक़ी बताई और साथ ही यह भी पूछा कि खाँ साहब ने जो चीज़ अभी गाई है क्या आप लोग उसे फिर से सुनना पसंद करेंगे ? लोगों ने तो बड़े तपाक से सुनने की हठ की ही पर खाँ साहब ने ख़ास तौर से सुनने की ख़ाहिश ज़ाहिर की. आख़िर प्रिंसिपल साहब तानपूरा लेकर सामने वही नोट बुक खोल कर बैठ गए. स्थायी अंतरे वह ज्यों का त्यों सुना गए यानी 'नायकी' की हू बहू तसवीर इन्होंने रख दी और फिर 'गायकी'✻ में खाँ साहब की कही ज़्यादातर ताने और 'वहलावे' भी ज्यों के त्यों कह गए और

✻ पुराने गानों में 'स्थायी' और 'अन्तरे' यह दो भाग और ध्रुपदों में इन दो के अलावा 'संचारी' व 'आभोग' नाम से दो भाग और होते हैं. यह पुराने नायकों के रचे हुए हैं जैसे तानसेन, वैजू, गोपाल, सदारंग वग़ैरा. इसी से गाने की मूल रचना को 'नायकी' कहते हैं. और भातखंडे की किताबों में सिर्फ़ 'नायकी' की स्वरलिपियां ही दी गई हैं. नायकी गाने के बाद चीज़ का 'विस्तार' या फैलाव 'वहलावों' (स्थायी को दूसरे ढंग से बढ़ा कर आलापों में ज़ाहिर करना) आलापों, तानों आदि के ज़रिये से होता है. इस हिस्से को 'गायकी' कहते हैं. यह ग़ैर ज़रूरी है और हर गवैया अपने ढंग से इन्हें करता है. असल है 'नायकी'. इस में परिवर्तन या रद्दबदल नहीं होना चाहिये.

گانا ختم ہوا، پرنسپل صاحب کالج کی طرف سے خاں صاحب کا شکریہ کرنے اُٹھے اور اِس رسم کو مناسب لفظوں میں پوری کر اُنھوں نے سور لپی کے بارے میں خاں صاحب نے جو رائے ظاہر کی تھی اُس پر ملائم لفظوں میں اپنی نااتفاقی بتائی اور ساتھ ہی یہ بھی پوچھا کہ خاں صاحب نے جو چیز ابھی گائی ہے کیا آپ لوگ اُسے پھر سے سننا پسند کریں گے؟ لوگوں نے تو بڑے تپاک سے سننے کی ہٹ کی ہی پر خاں صاحب نے خاص طور سے سننے کی خواہش ظاہر کی۔ آخر پرنسپل صاحب تان پورا لے کر سامنے وہی نوٹ بک کھول کر بیٹھ گئے۔ استھائی انترے وہ جیوں کا تیوں سنا گئے یعنی 'نایکی' کی ہو بہو تصویر انھوں نے رکھ دی اور پھر 'گایکی'✻ میں خاں صاحب کی کہی زیادہ تر تانیں اور 'بہلاوے' بھی جیوں کے تیوں کہہ گئے اور

✻ پرانے گانوں میں 'استھائی' اور 'انترے' یہ دو بھاگ اور دھرپدوں میں اِن دو کے علاوہ 'سنچاری' و 'آبھوگ' نام سے دو بھاگ اور ہوتے ہیں۔ یہ پرانے نایکوں کے رچے ہوئے ہیں جیسے تان سین، بیجو، گوپال، سدارنگ وغیرہ۔ اِسی سے گانے کی مول رچنا کو 'نایکی' کہتے ہیں۔ اور بھات کھنڈے کی کتابوں میں صرف 'نایکی' کی سور لپیاں ہی دی گئی ہیں۔ نایکی گانے کے بعد چیز کا 'وستار' یا پھیلاؤ 'بہلاووں' (استھائی کو دوسرے ڈھنگ سے بڑھا کر آلاپوں میں ظاہر کرنا) آلاپوں، تانوں آدی کے ذریعے سے ہوتا ہے۔ اِس حصے کو 'گایکی' کہتے ہیں۔ یہ غیر ضروری ہے اور ہر گویا اپنے ڈھنگ سے اِنھیں کرتا ہے۔ اصل ہے 'نایکی'۔ اِس میں پرورتن یا رد بدل نہیں ہونا چاہئے۔

उन्हीं के ढंग के और उन्हीं वज़न व मिक़दार की बहुत सी अपनी तानें भी कहीं. ख़ाँ साहब आँखें फाड़ कर भौंचक्के से शुरू से आख़िर तक सुनते रहे और आख़िर में उनके मुंह से यह अल्फ़ाज़ निकले कि "यह लौंडा आदमी है या भूत ?" उन्होंने इस बात को क़बूल किया कि नायकी की सही स्वरलिपि तुमने की और तानें भी मेरे अंदाज़ की कहीं. प्रिंसिपल साहब ने बड़े अदब से उनकी इज़्ज़त करते हुए उनकी दुआ माँगी और उन्होंने ख़ुश हो उनकी पीठ पर हाथ रक्खा.

पंडित भातखंडे इन प्रिंसिपल साहब के गुरू थे. उन्होंने अपनी किताब के चौथे भाग में (पृष्ट ६) उन सब उस्तादों की फ़ेहरिस्त दी है जिनसे उन्हें चीज़ें मिलीं. इनमें मोहम्मद अली (लड़के की तरफ़ से तानसेन की आख़िरी औलाद जिन की चर्चा हम आगे करेंगे) और वज़ीर अली ख़ाँ साहब को अपना गुरू बताया है. इनके सिवा और जिन लोगों के नाम लिये हैं उनमें मुसलमान गुनी ही ज़्यादा हैं जैसे—

नवाब बहादुर हिज़ हाइनेस हामिद अली ख़ान रामपुर, साहब ज़ादे सआदत अली ख़ां रामपुर. ख़ां साहब मुहम्मद अली ख़ां; बासित ख़ां रामपुर; ख़ां साहेब वज़ीर ख़ां व अमीर ख़ां रामपुर; ख़ां साहेब मुहम्मद अली ख़ां कोठी वाल जयपुर मनरंग घराने के; आशिक़ अली ख़ां जयपुर; अमहद अली ख़ां जयपुर; हैदर ख़ां (बैराम ख़ां के शागिर्द); ख़ां साहब फैयाज़ ख़ां 'आफ़ताब मौसूक़ी' बड़ोदा; रङ्गीले घराने के (मौजूद हैं) ख़ां साहब अमीर ख़ां 'गुलाब सागर' जलतरंग नवाज़ बड़ोदा.

اِنھیں کے ڈھنگ کے اور اُنھیں وزن و مقدار کی بہت سی اپنی تانیں بھی کہیں. خاں صاحب آنکھیں پھاڑ کر بھوچکے سے شروع سے آخر تک سُنتے رہے اور آخر میں اُن کے مُنہ سے یہ الفاظ نکلے کہ "یہ لونڈا آدمی ہو یا بھوت؟" اُنھوں نے اِس بات کو قبول کیا کہ نایکی کی صحیح سودلپی تم نے کی اور تانیں بھی میرے انداز کی کہیں. پرنسپل صاحب نے بڑے ادب سے اُن کی عزت کرتے ہوئے اُن کی دعا مانگی اور اُنھوں نے خوش ہو اُن کی پیٹھ پر ہاتھ رکھا.

پنڈت بھات کھنڈے اِن پرنسپل صاحب کے گرو تھے. اُنھوں نے اپنی کتاب کے چوتھے بھاگ میں (پرسٹ ٦) اُن سب اُستادوں کی فہرست دی ہو جن سے اُنھیں چیزیں ملیں. اِن میں محمد علی (لڑکے کی طرف سے تان سین کی آخری اولاد جن کی چرچا ہم آگے کریں گے) اور وزیر علی خاں صاحب کو اپنا گرو بتایا ہو. اِن کے سوا اور جن لوگوں کے نام لئے ہیں اُس میں مسلمان گنی ہی زیادہ ہیں جیسے—

نواب بہادر ہز ہائنس حامد علی خاں رام پور، صاحبزادے سعادت علی خاں رام پور، خاں صاحب محمد علی خاں؛ باسط خاں رام پور؛ خاں صاحب وزیر خاں و امیر خاں رام پور، خاں صاحب محمد علی خاں کوٹھی وال جے پور من رنگ گھرانے کے؛ عاشق علی خاں جے پور؛ احمد علی خاں جے پور؛ حیدر خاں (بیرام خاں کے شاگرد)؛ خاں صاحب فیاض خاں 'آفتاب موسیقی' بڑودہ؛ رنگیلے گھرانے کے (موجود ہیں) خاں صاحب امیر خاں 'گلاب ساگر' جل ترنگ نواز بڑودہ.

इनके सिवा नथ्थन खां, पीर बख्श ग्वालियर, अब्दुल्ला खां बम्बई, अमीन खां मिरज वग़ैरा के हिन्दू शागिर्दों का भी नाम दिया है जिन्होंने इन्हें चीजें दीं और स्वर लिपि या तो अपने सामने करवादी या इनकी स्वर लिपि को फिर से सुनकर तसदीक़ किया. इस किताब में यह भी लिखा है कि इन चीजों को ऊपर कहे हुए उस्तादों से सीख कर पंडित जी ने ग्रामोफ़ोन रेकार्ड में उनकी नायकी भरी और वह रेकार्ड मौजूद हैं. उन्हीं रेकार्डों के सहारे यह सुर लिपियां बनी हैं. इन सुर लिपियों के सही होने में हमें शुबह न करना चाहिये. हाँ सुरलिपि पद्धति की ही जो कामियां हैं उनके लिये बेशक मजबूरी है, और साथ ही यह भी कह सकते हैं कि जो लोग सीधे किसी घराने के उस्ताद से इन चीजों को सीख सकें उनकी तालीम बेशक ज्यादा पक्की होगी. पर जिस वक़्त पंडित जी ने इस काम को हाथ में लिया उस वक़्त यह घराने बड़ी तेज़ी से मिट रहे थे और यह तय था कि अगर उन्होंने यह काम इतनी असाधारन मेहनत और बहुत बड़ा त्याग कर और बेशुमार दौलत ख़र्च कर न किया होता तो आज यह मिट चुकी थीं. आज से सात आठ सौ बरस पहले तक की चीजें इन के विराट संग्रह में हैं. मंझले जमाने के हिंदू अपनी संस्कृति की सब चीजों को भूल चुके थे. उन्हें सिवा भजन और ख़ुदा की याद के और कुछ सूझता ही नहीं था. उस जमाने की जो कुछ कविता मिलती है वह या तो भक्ति की है या राजा रईसों की तारीफ़ में उनके फ़र्मायश की कविता जैसे नायिका भेद, ख़टरित, बारहमासा, या कुछ सूफ़ी और

اِن کے سوا نتھن خاں، پیر بخش گوالیر، عبداللہ خاں بمبئی، امین خاں مرج وغیرہ کے ہندو شاگردوں کا بھی نام دیا ہے جنھوں نے اِنھیں چیزیں دیں اور سورلپی یا تو اپنے سامنے کروادی یا اِن کی سورلپی کو پھر سے سُن کر تصدیق کیا۔ اِس کتاب میں یہ بھی لکھا ہے کہ اِن چیزوں کو اوپر کہے ہوئے اُستادوں سے سیکھ کر پنڈت جی نے گراموفون ریکارڈ میں اُن کی نایکی بھری اور وہ ریکارڈ موجود ہیں۔ اُنھیں ریکارڈوں کے سہارے یہ سُرلپیاں بنی ہیں۔ اِن سُرلپیوں کے صحیح ہونے میں ہمیں شبہ نہ کرنا چاہیے۔ ہاں سُرلپی پدھتی کی ہی جو کمیاں ہیں اُن کے لئے بے شک مجبوری ہے، اور ساتھ ہی یہ بھی کہہ سکتے ہیں کہ جو لوگ سیدھے کسی گھرانے کے اُستاد سے اِن چیزوں کو سیکھ سکیں اُن کی تعلیم بے شک زیادہ پکی ہوگی۔ پر جس وقت پنڈت جی نے اِس کام کو ہاتھ میں لیا اُس وقت یہ گھرانے بڑی تیزی سے مٹ رہے تھے اور یہ طے تھا کہ اگر اُنھوں نے یہ کام اِتنی اسادھارن محنت اور بہت بڑا تیاگ کر اور بے شمار دولت خرچ کر نہ کیا ہوتا تو آج یہ مٹ چکی تھیں۔ آج سے سات آٹھ سو برس پہلے تک کی چیزیں اِن کے وراٹ سنگرہ میں ہیں۔ منجھلے زمانے کے ہندو اپنی سنسکرتی کی سب چیزوں کو بھول چکے تھے۔ اُنھیں سوا بھجن اور خدا کی یاد کے اور کچھ سوجھتا ہی نہیں تھا۔ اُس زمانے کی جو کچھ کویتا ملتی ہے وہ یا تو بھکتی کی ہے یا راجا رئیسوں کی تعریف میں اُن کے فرمائش کی کویتا جیسے نایکا بھید، کھٹ رتو، بارہ ماسا، یا کچھ صوفی اور

रहस्यवाद की कविता. जहां तक समझ में आता है हिन्दू जिनकी वह विद्या थी, इससे दिलचस्पी छोड़ चुके थे. मुसलमानों ने ही इस इल्म को जिन्दा रक्खा. और उन्हीं की मदद से पंडित भातखंडे, राजा नवाब अली, पंडित विष्णु दिगंबर वग़ैरा इन चीज़ों को रेकार्ड करा सके और स्वरलिपि कर सके.

हमारी पुरानी और मंझली संस्कृति का इस संगीत से कितना बड़ा सम्बन्ध है यह कोई भी समझ सकता है, और ऊपर कहे मुताबिक़ जब हम इस पर ग़ौर करते हैं कि मुसलमानों की देन इस मामले में कितनी ज्यादा है तो हमें बड़ा अचरज होता है.

वज़ीर ख़ां साहब के तीन लड़के थे. नज़ीर ख़ां (प्यारे मियां), नसीर ख़ां, व सग़ीर ख़ां. इनमें बड़े लड़के नज़ीर ख़ां की तालीम पूरी हो चुकी थी. गाने की तरफ़ इन की ज्यादा दिलचस्पी देख कर इन्हें ध्रुपद, धमार और आलापचारी की ही तालीम ज्यादा मिली थी और इंदौर दरबार में इनकी तैनाती भी हो चुकी थी कि यकायक हैज़े की बीमारी से इनका इंतक़ाल हो गया. बुढ़ापे में यह सदमा वज़ीर अली साहब न बरदाश्त कर सके और इस के दो या तीन बरस बाद सन् १९२७ में ख़ुद भी चल बसे. ख़ुशवक़्ती से छोटे लड़के सग़ीर ख़ां और पोते दबीर ख़ां की तालीम एक हद तक ख़ां साहब पूरी कर गए थे. सग़ीर ख़ां को गाने की तालीम मिली थी और दबीर ख़ां को बीन की.

वज़ीर ख़ां साहब के इंतक़ाल के कुछ दिन बाद नवाब बहादुर हामिद अली ख़ां भी चल बसे और इनके दरबार

رہسیواد کی کویتا۔ جہاں تک سمجھ میں آتا ہے ہندو جن کی یہ ودیا تھی، اس سے دلچسپی چھوڑ چکے تھے۔ مسلمانوں نے ہی اس علم کو زندہ رکھا، اور انھیں کی مدد سے پنڈت بھات کھنڈے، راجا نواب علی، پنڈت وشنو دگمبر وغیرہ ان چیزوں کو ریکارڈ کرا سکے اور سوَرلپی کر سکے۔

ہماری پرانی اور منجھلی سنسکرتی کا اس سنگیت سے کتنا بڑا سمبندھ ہے یہ کوئی بھی سمجھ سکتا ہے، اور اوپر کے مطابق جب ہم اس پر غور کرتے ہیں کہ مسلمانوں کی دین اس معاملے میں کتنی زیادہ ہے تو ہمیں بڑا اچرج ہوتا ہے۔

وزیر خاں صاحب کے تین لڑکے تھے۔ نظیر خاں (پیارے میاں)، نصیر خاں، و صغیر خاں۔ ان میں بڑے لڑکے نظیر خاں کی تعلیم پوری ہو چکی تھی۔ گانے کی طرف ان کی زیادہ دلچسپی دیکھ کر انھیں دھرپد، دھمار اور آلاپ چاری کی ہی تعلیم زیادہ ملی تھی اور اندور دربار میں ان کی تعیناتی بھی ہو چکی تھی کہ یکایک ہیضہ کی بیماری سے ان کا انتقال ہو گیا۔ بڑھاپے میں یہ صدمہ وزیر علی صاحب نہ برداشت کر سکے اور اس کے دو یا تین برس بعد ۱۹۲۷ء میں خود بھی چل بسے۔ خوش وقتی سے چھوٹے لڑکے صغیر خاں اور پوتے دبیر خاں کی تعلیم ایک حد تک خاں صاحب پوری کر گئے تھے۔ صغیر خاں کو گانے کی تعلیم ملی تھی اور دبیر خاں کو بین کی۔

وزیر خاں صاحب کے انتقال کے کچھ دن بعد نواب ... علی خاں بھی چل بسے اور ان کے دربار

की गाने बजाने की मजलिस टूट सी गई. खलीफा सग़ीर ख़ां रामपुर छोड़ कर कलकत्ते चले गए और वहाँ स्वर्गीय महाराजा सर सुरेन्द्रमोहन टैगोर के पोते कुमार क्षेमेंद्र मोहन टैगोर के गुरू के रूप में तैनात हुए. इनके सिवा मशहूर गायक कृष्ण चन्द्र दे (सूरदास) ने भी इन से तालीम लेनी शुरू की. मैमन सिंह गौरीपुर के रईस वीरेन्द्र कुमार राय चौधरी भी इन्हीं के शागिर्द हैं. यह और इन के पिता ब्रजेन्द्र किशोर राय चौधरी सेनी संगीत के मशहूर हिमायती व प्रचार करने वाले हैं और इन्होंने कलकत्ते में 'सेनी संगीत विद्यालय' नाम का एक कालेज भी खुलवाया है जिस में वज़ीर ख़ां और मुहम्मद अली ख़ां के वंश के लोग तानसेन् के घराने की विद्या का प्रचार कर रहे हैं. मुहम्मद दबीर ख़ां इस वक़्त क़रीब ३५ बरस के हैं और बीन में काफ़ी महारत हासिल कर चुके है. हमें दुख है कि ख़ां साहब इनकी तालीम पूरी करने के पहले ही चल बसे, पर इन्होंने अपनी मेहनत से बहुत तरक़्क़ी की है और दिन पर दिन करते जा रहे हैं.

बीनकार ख़ानदान के सब ख़ास लोगों की चर्चा हम कर चुके. यह बंस जैसा कि हम कह चुके हैं तानसेन की लड़की सरस्वती से चला था जिसकी शादी मिस्री सिंह से हुई थी. अब हम तानसेन के लड़के बिलास ख़ां के बंस के लोगों की चर्चा करेंगे.

کی گانے بجانے کی مجلس ٹوٹ سی گئی. خلیفہ صغیر خاں رام پور چھوڑ کر کلکتے چلے گئے اور وہاں سورگیہ مہاراجا سر سریندر موہن ٹیگور کے پوتے کمار کشیمیندر موہن ٹیگور کے گرو کے روپ میں تعینات ہوئے. ان کے سوا مشہور گایک کرشن چندر دے (سور داس) نے بھی ان سے تعلیم لینی شروع کی. میمن سنگھ گوری پور کے رئیس بیریندر کمار رائے چودھری بھی انھیں کے شاگرد ہیں. یہ اور ان کے پتا برجیندر کشور رائے چودھری سینی سنگیت کے مشہور حمایتی و پرچار کرنے والے ہیں اور انھوں نے کلکتے میں 'سینی سنگیت ودیالے' نام کا ایک کالج بھی کھلوایا ہے جس میں وزیر خاں اور محمد علی خاں کے بنش کے لوگ تان سین کے گھرانے کی ودیا کا پرچار کر رہے ہیں. محمد دبیر خاں اس وقت قریب ۳۵ برس کے ہیں اور بین میں کافی مہارت حاصل کر چکے ہیں. ہمیں دکھ ہے کہ خاں صاحب ان کی تعلیم پوری کرنے کے پہلے ہی چل بسے، پر انھوں نے اپنی محنت سے بہت ترقی کی ہے اور دن پر دن کرتے جا رہے ہیں.

بین کار خاندان کے سب خاص لوگوں کی چرچا ہم کر چکے. یہ بنس جیسا کہ ہم کہہ چکے ہیں تان سین کی لڑکی سرسوتی سے چلا تھا جس کی شادی مصری سنگھ سے ہوئی تھی. اب ہم تان سین کے لڑکے ولاس خاں کے بنس کے لوگوں کی چرچا کریں گے.

जलियानवाला बाग़ की कुछ यादगारें

(भाई रामजी दर)

(३)

ज़बरदस्ती के मेहमान

अब गुजरानवाला जाने की तय्यारी हुई. यह वह जगह थी जहाँ मारशल्ला के ज़माने में शहर के बड़े बड़े लोगों को एक ही रस्सी से सब के हाथ बाँध कर सरे बाज़ार पैदल जानवरों की तरह चक्कर लगवाया गया था, इस लिये कि वहां की जनता फिर कभी अंगरेज़ी ज़ुल्मों के ख़िलाफ़ सिर उठाने की हिम्मत न करे.

रात का वक़्त था—शायद आधी रात बीत चुकी थी—हमारी रेल गुजरानवाला स्टेशन पर पहुँची. हमारी टोली में टन्डन जी, हैदर मेंहदी साहब और एक पंजाबी सज्जन थे. उनका नाम याद नहीं, मगर उनकी घनी दाढ़ी, नाटा क़द, जिसमानी व दिमाग़ी फुरती और गुजरानवाला के हालात से जानकारी के हम क़ायल थे. हमारे साथ अगर यह न होते तो उस अजनबी जगह—और ख़ास कर उस अजीब ग़रीब ज़माने में—हमें अपने काम में और ज़्यादा मुशकिलें आतीं.

स्टेशन पर उतरते ही ऐसा जान पड़ा कि हम किसी उजड़े देश में आ पहुँचे. असल में उस समय वह था भी उजड़ा देश. पहले पबलिक ने जोश में आकर स्टेशन जला दिया था और

جلیان والا باغ کی کچھ یادگار

(بھائی رام جی در)

(۳)

زبردستی کے مہمان

اب گجرانوالہ جانے کی تیاری ہوئی۔ یہ وہ جگہ تھی جہاں مارشل لا کے زمانے میں شہر کے بڑے بڑے لوگوں کو ایک ہی رسّی سے سب کے ہاتھ باندھ کر سر بازار پیدل جانوروں کی طرح چکر لگوایا گیا تھا، اس لئے کہ وہاں کی جنتا پھر کبھی انگریزی ظلموں کے خلاف سر اُٹھانے کی ہمت نہ کرے۔

رات کا وقت تھا — شاید آدھی رات بیت چکی تھی — ہماری ریل گجرانوالہ اسٹیشن پر پہنچی۔ ہماری ٹولی میں ٹنڈن جی، حیدر مہدی صاحب اور ایک پنجابی سجن تھے۔ اُن کا نام یاد نہیں، مگر اُن کی گھنی داڑھی، ناٹا قد، جسمانی و دماغی پھُرتی اور گجرانوالہ کے حالات سے جان کاری کے ہم قائل تھے۔ ہمارے ساتھ اگر یہ نہ ہوتے تو اُس اجنبی جگہ — اور خاصکر اُس عجیب غریب زمانے میں — ہمیں اپنے کام میں اور زیادہ مشکلیں آتیں۔

اسٹیشن پر اُترتے ہی ایسا جان پڑا کہ ہم کسی اُجڑے دیش میں آ پہنچے۔ اصل میں اُس سمے وہ تھا بھی اُجڑا دیش۔ پہلے پبلک نے جوش میں آکر اسٹیشن جلا دیا تھا اور

उसके जवाब में अंगरेज़ी हाकिमों ने जनता के घरों को बरबाद कर दिया था और दिलों को सहमा दिया था.

हमने चाहा कि कोई कुली असबाब उठाने को मिले. वहां कुली कहां? एक दो दिखाई भी दिये तो उन्होंने हमारी मदद करने से बहाना किया. टिकट कलकृर, स्टेशन मास्टर, हर एक ने हम से बेरुख़ी बरती. हमारे पंजाबी दोस्त व सलाहकार ने हमें बतलाया कि यह सब ख़ुफ़िया पुलिस के डर का नतीजा है.

हमें बाद को पता चला कि जब हम अमृतसर से गुजरानवाला को रवाना हुए थे उसी दम पुलिस ने गुजरानवाला ख़बर भेज दी थी कि जितनी अड़चनें हमारे काम में लगाई जा सकें, लगाई जायें.

हम सब ने अपना असबाब ख़ुद ढोकर पैदल एक वकील साहब के बंगले तक पहुँचाया जो स्टेशन के पास ही था और जहां हमारे टिकने का इन पंजाबी सज्जन ने इन्तज़ाम किया था.

जब हम वकील साहब के बंगले पर पहुंचे तो हाते में घुस कर हमने बरामदे में से कमरों के दरवाज़ों को हलके हलके खट-खटाया. कुछ आवाज़ें भी दीं. मगर कोई जवाब नहीं मिला. कुछ देर तक हम सब रुक रुक कर खटखटाया किये. कुछ समझ में न आया कि आख़िर क्या बात है कि अन्दर से कोई बोलता नहीं.

पराए मकान में हमारा कोई बस तो था नहीं. अचरज ज़रूर हुआ. मगर हमने यही मुनासिब समझा कि किसी तरह से बरामदे ही में रात काट लें, सुबह देखा जायगा.

हम चारों ने बरामदे में ज़मीन और एक बेंच पर कुछ घन्टे

ऑं ' ली

اُس کے جواب میں انگریزی حاکموں نے جنتا کے گھروں کو برباد کر دیا تھا اور دلوں کو سہما دیا تھا.

ہم نے چاہا کہ کوئی قلی اسباب اُٹھانے کو ملے. وہاں قلی کہاں؟ ایک دو دکھائی بھی دیئے تو اُنھوں نے ہماری مدد کرنے سے بہانہ کیا. ٹکٹ کلکٹر، اسٹیشن ماسٹر، ہر ایک نے ہم سے بےرخی برتی. ہمارے پنجابی دوست و صلاح کار نے ہمیں بتلایا کہ یہ سب خفیہ پولیس کے ڈر کا نتیجہ ہے.

ہمیں بعد کو پتہ چلا کہ جب ہم امرتسر سے گجرانوالہ کو روانہ ہوئے تھے اُسی دم پولیس نے گجرانوالہ خبر بھیج دی تھی کہ جتنی اڑچنیں ہمارے کام میں لگائی جا سکیں، لگائی جائیں.

ہم سب نے اپنا اسباب خود ڈھو کر پیدل ایک وکیل صاحب کے بنگلے تک پہنچایا جو اسٹیشن کے پاس ہی تھا اور جہاں ہمارے ٹکنے کا اِن پنجابی سجن نے انتظام کیا تھا.

جب ہم وکیل صاحب کے بنگلے پر پہنچے تو حاطے میں گھس کر ہم نے برآمدے میں سے کمروں کے دروازوں کو ہلکے ہلکے کھٹکھٹایا. کچھ آوازیں بھی دیں. مگر کوئی جواب نہیں ملا. کچھ دیر تک ہم سب رُک رُک کر کھٹکھٹایا کئے. کچھ سمجھ میں نہیں آیا کہ آخر کیا بات ہے کہ اندر سے کوئی بولتا نہیں.

پرائے مکان میں ہمارا کوئی بس تو تھا نہیں. اچرج ضرور ہوا. مگر ہم نے یہی مناسب سمجھا کہ کسی طرح سے برآمدے ہی میں رات کاٹ لیں، صبح دیکھا جائے گا.

ہم چاروں نے برآمدے میں زمین اور ایک بینچ پر کچھ گھنٹے مل ...

तड़का हुआ. बड़ी उम्मीद में हमारी आंखें खुलीं कि वकील साहब के दरशन होंगे. मगर काफ़ी दिन चढ़े उन्होंने हलके से चोर की तरह अपनी शकल दिखाई और बग़लें झांकते हुए, कुछ खोए हुए से बोले—"अच्छा आप लोग आगए.........कब आए......... आप को कोई तकलीफ़ तो नहीं हुई ?"

हमने उनसे रात का क़िस्सा सुनाया तो सिर खुजलाते घबराते हुए कहने लगे—"मैं बड़ी परेशानी में फँसा हूँ.........घर में बच्चा होने वाला है.........आपकी खातिर करने से मजबूर हूँ.........."उनकी बातों के तर्ज़ से साफ़ ज़ाहिर था कि उनके दिल में कुछ है और कह कुछ रहे हैं. बहुत परेशान ज़रूर दिखते थे.

"अच्छा आप लोगों के खाने का मैं इन्तज़ाम करता हूँ......... घर में तो इस वक़्त मैं कुछ कर नहीं सकता ....बाज़ार से सब ठीक हो जायगा" वकील साहब ने बड़ी परेशानी के साथ कहा.

फिर वकील साहब ने हमारे पंजाबी मित्र से कुछ अकेले में बातें कीं. तब हमें पता चला कि बिचारे वकील साहब हमको अपने यहां टिकाने से डर रहे थे. कुछ दिन पहले शहर के पुलिस अफसरों ने उनको साफ़ इशारा कर दिया था कि अगर उन्होंने हमें अपने घर में पनाह दी तो उनके लिये अच्छा न होगा.

और यह वकील साहब भी उन बुज़ुर्गों में से थे जो कुछ ही महीने पहले हाथ बाँध कर सड़कों पर घुमाए गए थे और नंगी संगीन चढ़ी बंदूक़ें लिये सिपाही साथ थे. उस बेइज़्ज़ती और ज़ुल्म का असर अभी तक इनके ऊपर छाया हुआ था. अलावा इसके अभी गुजरानवाला क्या पूरे पंजाब भर में पुलिस का रौब बैठा हुआ था.

تڑکا ہوا. بڑی اُمید میں ہماری آنکھیں کھلیں کہ وکیل صاحب کے درشن ہوں گے. مگر کافی دن چڑھے اُنھوں نے ہلکے سے چور کی طرح اپنی شکل دکھائی اور بغلیں جھانکتے ہوئے، کچھ کھوئے ہوئے سے بولے—"اچھا آپ لوگ آگئے... کب آئے.... آپ کو کوئی تکلیف تو نہیں ہوئی؟"

ہم نے اُن سے رات کا قصہ سُنایا تو سر کھجلاتے گھبراتے ہوئے کہنے لگے—"میں بڑی پریشانی میں پھنسا ہوں.... گھر میں بچہ ہونے والا ہے..... آپ کی خاطر کرنے سے مجبور ہوں...." اُن کی باتوں کے طرز سے صاف ظاہر تھا کہ اُن کے دل میں کچھ ہے اور کہہ کچھ رہے ہیں. بہت پریشان ضرور دیکھتے تھے.

"اچھا آپ لوگوں کے کھانے کا میں انتظام کرتا ہوں.... گھر میں تو اِس وقت میں کچھ نہیں کرسکتا..... بازار سے سب ٹھیک ہو جائے گا" وکیل صاحب نے بڑی پریشانی کے ساتھ کہا.

پھر وکیل صاحب نے ہمارے پنجابی مترسے کچھ اکیلے میں باتیں کیں. تب ہمیں پتہ چلا کہ بیچارے وکیل صاحب ہم کو اپنے یہاں ٹھہرانے سے ڈر رہے تھے. کچھ دن پہلے شہر کے پولیس افسروں نے اُن کو صاف اشارہ کردیا تھا کہ اگر اُنھوں نے ہمیں اپنے گھر میں پناہ دی تو اُن کے لئے اچھا نہ ہوگا.

اور یہ وکیل صاحب بھی اُن بزرگوں میں سے تھے جو کچھ ہی مہینے پہلے ہاتھ باندھ کر سڑکوں پر گھمائے گئے تھے اور ننگی سنگین چڑھی بندوقیں لئے سپاہی ساتھ تھے. اُس بے عزتی اور ظلم کا اثر ابھی تک اُن کے اوپر چھایا ہوا تھا. علاوہ اس کے ابھی گجرانوالہ کیا پورے پنجاب بھر میں پولیس کا رعب بیٹھا ہوا تھا.

हमें वकील साहब से पूरी हमदर्दी थी. उन्हें ज़्यादा तकलीफ़ देना उनके साथ बेइन्साफ़ी व दुशमनी करना था. हमने उनका भोजन तो ज़रूर स्वीकार किया और बड़े शौक़ से अपना पेट भरा ! तंदूर की घी चुपड़ी रोटियाँ दही के साथ बड़ी अच्छी लगीं.

हमने आपस में सलाह कर के यह तय किया कि हम उसी दिन किसी दूसरे मकान में चले जायंगे. यह बात हमने वकील साहब से भी कह दी. इसको सुनकर उनके चेहरे पर रौनक़ आ गई. तब उन्होंने हमसे भी साफ़ लफ़्ज़ों में कहा—"मुझे बड़ी शर्मिन्दगी है. पर आप जानते नहीं कि यहां क्या क्या ज़ुल्म हुए हैं. अभी अभी मेरे पास पुलिस का एक संदेसा आया था. उसमें धमकी थी कि अगर मैंने आप को अपना मेहमान बनाया तो मेरी ख़ैर नहीं.........अब आप ही बतलाइये.........मुझे यहीं रहना है.........कैसे पुलिस से बैर करूं.........यहां तो आज इन्हीं का राज है."

हमने उनको पूरा इतमीनान दिलाया कि हम जितनी जल्द हो सकेगा उनका मकान छोड़ देंगे और बिना ज़रा सा भी बुरा माने.

---

(४)

हमारा बायकाट

अब हमें फ़िक्र हुई कि जाएं तो कहाँ जाएं. इस आड़े वक़्त हमारे पंजाबी दोस्त काम आए. उन्होंने कहा—"आप ज़रा देर सबर कीजिये. देखिये मैं बाज़ार में जाकर मकान ठीक करने की तरक़ीब लड़ाता हूँ".

कुछ घंटों बाद वह लौट कर आए और बोले—"चलिये.

ہمیں وکیل صاحب سے پوری ہمدردی تھی. اُنھیں زیادہ تکلیف دینا اُن کے ساتھ بے انصافی و دشمنی کرنا تھی. ہم نے اُن کا بھوجن تو ضرور سویکار کیا اور بڑے شوق سے اپنا پیٹ بھرا! تندور کی گھی چپڑی روٹیاں دہی کے ساتھ بڑی اچھی لگیں.

ہم نے آپس میں صلاح کر کے یہ طے کیا کہ ہم اسی دن کسی دوسرے مکان میں چلے جائیں گے. یہ بات ہم نے وکیل صاحب سے بھی کہہ دی. اس کو سُن کر اُن کے چہرے پر رونق آگئی. تب انھوں نے ہم سے بھی صاف لفظوں میں کہا— "مجھے بڑی شرمندگی ہی پر آپ جانتے نہیں کہ یہاں کیا کیا ظلم ہوئے ہیں. ابھی ابھی میرے پاس پولیس کا ایک سندیسا آیا تھا. اُس میں دھمکی تھی کہ اگر میں نے آپ کو اپنا مہمان بنایا تو میری خیر نہیں..... اب آپ ہی بتلایئے...... مجھے یہیں رہنا ہے...... کیسے پولیس سے بیر کروں...... یہاں تو آج انھیں کا راج ہے"

ہم نے اُن کو پورا اطمینان دلایا کہ ہم جتنی جلد ہو سکے گا اُن کا مکان چھوڑ دیں گے اور بنا ذرا سا بھی بُرا مانے.

(۴)

ہمارا بائی کاٹ

اب ہمیں فکر ہوئی کہ جائیں تو کہاں جائیں. اس آڑے وقت ہمارے پنجابی دوست کام آئے. انھوں نے کہا— "آپ ذرا دیر صبر کیجئے. دیکھئے میں بازار میں جاکر مکان ٹھیک کرنے کی ترکیب لڑاتا ہوں"

मकान तय हो गया. मैं ताला भी डाल आया हूँ".

"कैसे ...... तुम्हें कामयाबी कैसे हुई ?" हम सब ने पूछा.

बोले—"अजी साहब ! कुछ न पूछिये. पूरा शहर ख़ुफ़िया पुलिस से थर्राता है. न मालूम मैंने कितनों से मकान के लिये कहा. हर एक ने साफ़ इनकार कर दिया. कहने लगे हम काँगरेस वालों को मकान देकर क्या अपना घर उजड़वादें ...... मैं बिलकुल निराश हो चला था. इत्तफ़ाक़ से ...... ख़ुशक़िस्मती से ...... एक बनिये को मैंने फांसा. उसने पूछा आप कौन हैं ? मैंने कहा, मैं एक वैद हूँ. औषधालय खोलना चाहता हूँ. वह शायद बीमार था. दवा व इलाज की लालच में उसने मकान किराये पर देना मंजूर कर लिया. मैंने उसे बयाना भी दे दिया और झट अपना ताला डाल दिया".

हम सब को बड़ी हंसी आई और दिल में अपने पंजाबी मित्र की क़दर भी हुई.

वकील साहब से रुख़सत होकर नए मकान में प्रवेश कया.

ज्यों ही हमने इस मकान में क़दम रक्खा, मालिक मकान ने हमसे हाथ जोड़ कर कहना शुरू किया कि हम उसके मकान को छोड़ कर फ़ौरन चले जायं. उसको भी पुलिस वालों ने डराना धमकाना जारी कर दिया था.

हमने उसकी हिम्मत बढ़ाने की कोशिश की और उससे वादा किया कि थोड़े ही दिनों में हम अपना काम करके चले जायंगे. यह भी कहा कि हम बड़े हाकिमों से कह कर उसको पुलिस के ज़ुल्म से बचाने की कोशिश करेंगे. बनिया हमारी एक न मानता

مکان طے ہوگیا. میں تالا بھی ڈال آیا ہوں"

"کیسے. تمھیں کامیابی کیسے ہوئی؟" ہم سب نے پوچھا.

بولے—"اجی صاحب! کچھ نہ پوچھئے. پورا شہر خفیہ پولیس سے تھرّاتا ہے. نہ معلوم میں نے کتنوں سے مکان کے لئے کہا. ہر ایک نے صاف انکار کردیا. کہنے لگے ہم کانگریس والوں کو مکان دے کر کیا اپنا گھر اُجڑوا دیں...... میں بالکل نراش ہوچلا تھا. اتفاق سے.... خوش قسمتی سے...... ایک بنئے کو میں نے پھانسا. اُس نے پوچھا آپ کون ہیں؟ میں نے کہا، میں ایک وید ہوں، اوشدھالے کھولنا چاہتا ہوں. وہ شاید بیمار تھا. دوا و علاج کی لالچ میں اُس نے مکان کرائے پر دینا منظور کرلیا. میں نے اُسے بیعانہ بھی دے دیا. اور جھٹ اپنا تالا ڈال دیا"

ہم سب کو بڑی ہنسی آئی اور دل میں اپنے پنجابی متر کی قدر بھی ہوئی.

وکیل صاحب سے رخصت ہوکر نئے مکان میں پرویش کیا.

جیوں ہی ہم نے اِس مکان میں قدم رکھا، مالک مکان نے ہم سے ہاتھ جوڑ کر کہنا شروع کیا کہ ہم اُس کے مکان کو چھوڑ کر فوراً چلے جائیں. اُس کو بھی پولیس والوں نے ڈرانا دھمکانا جاری کردیا تھا.

ہم نے اُس کی ہمّت بڑھانے کی کوشش کی اور اُس سے وعدہ کیا کہ تھوڑے ہی دنوں میں ہم اپنا کام کرکے چلے جائیں گے. یہ بھی کہا کہ ہم بڑے حاکموں سے کہہ کر اُس کو پولیس کے ظلم سے بچانے کی کوشش کریں گے. بنیا ہماری ایک نہ مانتا

और यही कहता—"हम मर जायंगे............आप मकान छोड़ दीजिये".

हमने भी ठान लिया था कि हम बिना अपना काम पूरा किये यहाँ से न हटेंगे. और अगर हटते भी तो जाते कहाँ? कोरा वापस अमृतसर जाना पड़ता.

मकान क्या था एक खिलौना था. ज़रा अंगड़ाई ली और सिर छत से टकराया. ज़ोर से कूदें तो शायद छत बैठ जाय. दो मंज़िले पर हमें सिर्फ़ एक कमरा मिला था जो एक बड़े बक्स की तरह था.

हमने चाहा कि लोगों से बयान जमा करें, मगर कोई हमारे सवालों का जवाब न देता. बस यही इशारे से कहता—"देखिये वह ख़ुफ़िया पुलिस घेरे खड़ी है.........आप गए और उसने हमको सताया".

(१६८)

बड़ी मुशकिल से कुछ बयान मिले. हमको नाई की ज़रूरत हुई. पड़ोसियों से नाई के लिये कहा. सब ने यही जवाब दिया—"आप के पास नाई आने से इनकार करते हैं......पुलिस से बिचारे डरते हैं......आपकी हजामत अगर वह बनाने की हिम्मत करें तो पुलिस उनके घर भर की हजामत बना देगी...... कैसे आएं?"

हमारी टट्टी साफ़ करने से भंगी ने आने से इनकार किया. बल्कि यूँ कहना सच होगा कि पुलिस ने उन्हें धमका कर हमारा बायकाट करवाया. ग़नीमत थी की पुराने ज़माने का संडास था.

खाने को हम पैदल जाकर दुकान पर जाते. शरमा शरमी

اور یہی کہتا — "ہم مر جائیں گے....... آپ مکان چھوڑ دیجئے"۔

ہم نے بھی ٹھان لیا تھا کہ ہم بنا اپنا کام پورا کئے یہاں سے نہ ہٹیں گے۔ اور اگر ہٹتے بھی تو جاتے کہاں؟ کورا واپس امرتسر جانا پڑتا۔

مکان کیا تھا ایک کھلونا تھا۔ ذرا انگڑائی لی اور سر چھت سے ٹکرایا۔ زور سے کودیں تو شاید چھت بیٹھ جائے۔ دو منزلے پر ہمیں صرف ایک کمرہ ملا تھا جو ایک بڑے بکس کی طرح تھا۔

ہم نے چاہا کہ لوگوں سے بیان جمع کریں، مگر کوئی ہمارے سوالوں کا جواب نہ دیتا۔ بس یہی اشارے سے کہتا — "دیکھئے وہ خفیہ پولیس گھیرے کھڑی ہے...... آپ گئے اور اس نے ہم کو ستایا"۔

(۱۶۸)

بڑی مشکل سے کچھ بیان ملے۔ ہم کو نائی کی ضرورت ہوئی۔ پڑوسیوں سے نائی کے لئے کہا۔ سب نے یہی جواب دیا — "آپ کے پاس نائی آنے سے انکار کرتے ہیں...... پولیس سے بیچارے ڈرتے ہیں...... آپ کی حجامت اگر وہ بنانے کی ہمت کریں تو پولیس اُن کے گھر بھر کی حجامت بنا دے گی...... کیسے آئیں؟"

ہماری ٹٹی صاف کرنے سے بھنگی نے آنے سے انکار کیا۔ بلکہ یوں کہنا سچ ہوگا کہ پولیس نے انھیں دھمکا کر ہمارا بائیکاٹ کروایا۔ غنیمت تھی کہ پرانے زمانے کا سنڈاس تھا۔

کھانے کو ہم پیدل جا کر دکان پر جاتے۔ شرما شرمی

हलवाई या नानबाई हमारे हाथ खाने की चीज़ें बेचता, मगर चलते वक़्त कहता—"देखिये! आप गए और पुलिस ने सताया."

धोबी ने भी हमारा बायकाट किया. उसके सिर पर भी पुलिस का डंडा था.

ग़रज़ कि दो दिन में ही हमारा रहना वहाँ काफ़ी मुसीबत हो गया था.

حلوائی یا نان بائی ہمارے ہاتھ کھانے کی چیزیں بیچتا. مگر چلتے وقت کہتا — "دیکھئے! آپ گئے اور پولیس نے ستایا."

دھوبی نے بھی ہمارا بائیکاٹ کیا. اُس کے سر پر بھی پولیس کا ڈنڈا تھا.

غرض کہ دو دن میں ہی ہمارا رہنا وہاں کافی مُصیبت ہوگیا تھا.

दो दोस्त

(कौसरी बेगम, लखनऊ)

"भाई रशीद ! अगर हो सके तो आठ आने और दे दो. राम ने चाहा तो कल से नवाब साहब के यहां काम करने लगूँगा. पहली तनखाह में सबसे पहले तुम्हारे दाम अदा करूंगा. भाई तुमने आठ दिन से हमारा पेट पाला है वहाँ आज और रहम करो" ग़रीब माधो ने इल्तजा करते हुए कहा.

"माधो ! मुझे यह तुम्हारा लहजा पसन्द नहीं है. मालूम होता है भीक मांग रहे हो. जैसे इक्का साथ चला कर दोस्त रहे वैसे अब भी हैं. अगर मुझे तुमसे इनकार होता तो पहले ही दिन बहाने करके एक कौड़ी न देता" रशीद ने माधो को मुख़ातिब करते हुए कहा जो अभी तक शरम से सर झुकाए था.

"तुम ठहरो मैं अभी घर से दाम लाता हूँ." रशीद चला गया. माधो का यह हाल कि रशीद का इतना अपनापा देखकर बोझ से दबा जा रहा था. "देखो शहर की फ़िज़ा कैसी ख़राब हो रही है. लेकिन रशीद ने मेरे साथ कितना अच्छा सलूक किया. दुनिया पापियों ही से नहीं भरी है. इसमें नेक इनसान भी हैं. अगर शरीफ़ हूँ, उमर भर एहसान मानूँगा. रशीद जानता है कि अगर आज मेरा घोड़ा न मर गया होता, मैं उसके आगे हाथ क्यों फैलाता—मजबूरी का भला हो वह सब कुछ करा लेती है."

माधो यह सोच ही रहा था कि रशीद दाम लिये हुए आया

دو دوست

(کوثری بیگم لکھنؤ)

"بھائی رشید! اگر ہو سکے تو آٹھ آنے اور دے دو. رام نے چاہا تو کل سے نواب صاحب کے یہاں کام کرنے لگوں گا. پہلی تنخواہ میں سب سے پہلے تمہارے دام ادا کردوں گا. بھائی تم نے آٹھ دن سے ہمارا پیٹ پالا ہے. وہاں آج اور رحم کرو" غریب مادھو نے التجا کرتے ہوئے کہا۔

"مادھو! مجھے یہ تمہارا لہجہ پسند نہیں ہے. معلوم ہوتا ہے کہ بھیک مانگ رہے ہو. جیسے یکّہ ساتھ چلا کر دوست رہے ویسے اب بھی ہیں. اگر مجھے تم سے انکار ہوتا تو پہلے ہی دن بہانے کر کے ایک کوڑی نہ دیتا" رشید نے مادھو کو مخاطب کرتے ہوئے کہا جو ابھی تک شرم سے سر جھکائے تھا.

"تم ٹھہرو میں ابھی گھر سے دام لاتا ہوں." رشید چلا گیا. مادھو کا یہ حال کہ رشید کا اتنا اپنایا دیکھ کر بوجھ سے دبا جا رہا تھا. "دیکھو شہر کی فضا کیسی خراب ہو رہی ہے. لیکن رشید نے میرے ساتھ کتنا اچھا سلوک کیا. دُنیا پاپیوں ہی سے نہیں بھری ہے. اس میں نیک انسان بھی ہیں. اگر شریف ہوں، عمر بھر احسان مانوں گا. رشید جانتا ہے کہ اگر آج میرا گھوڑا نہ مر گیا ہوتا، میں اُس کے آگے ہاتھ کیوں پھیلاتا — مجبوری کا بھلا ہو وہ سب کچھ کرا لیتی ہے."

مادھو یہ سوچ ہی رہا تھا کہ رشید دام لئے ہوئے آیا

और उसके सपुर्द किये. माधो चाहता था अब उठे. रशीद बोला "अमें यार ! चिलम तो पीते जाओ."

माधो पास बैठ कर हुक्के पर की चिलम लेकर लम्बे लम्बे कश भरने लगा. दोनों बातें करने लगे.

रशीद—"अमें माधो ! अब मोटर बसों के आगे तो हमारी पेश नहीं जाती. मुश्किल से आज कल आठ दस आने रोज़ाना मिलते हैं, जहां एक रुपया तो ज़रूर वरना दो दो रुपये तक मिल चुके हैं."

माधो—"हां भाई ! फिर क्या किया जाय हम सब ने क्या कोशिश नहीं की ? हड़ताल की. जलसे किये. मुनिसपल्टी से भी रोये पीटे. लेकिन उनको क्या ग़रज़ पड़ी थी कि हम ग़रीबों की सुनते."

रशीद—"मेरी राय यह थी कि क़तई हड़ताल न की जाए. लेकिन मजबूरी पड़ गई. क्यों कि सभों की रोज़ी इसी पर थी. भाई ! बाज़ों ने तो दो दो तीन तीन फ़ाक़े तक किये."

माधो—"हाँ यार ! जैसी अब मैं अंधेरी नगरी देखता हूँ अपनी इस पच्चीस साल की उमर में कभी नहीं देखी. आख़िर हमारे बाप दादा भी तो यही काम करते थे. सारा घर खाता पीता. लेकिन यह कांगरेस सरकार क्या आई आफ़त आगई. जिस तरफ़ देखो कांगरेसी गुल्ला मचाते फिर रहे हैं—ख़ुद मेहनत करो. अपने हाथ पांव चलाओ. दस्तकारी सीखो, यह करो, वह करो. आख़िरकार लोगों ने अपने हाथ पैर चलाना शुरू किये. बड़े बड़े कांगरेसी अमीर उमरा चौक से अमीना बाद तक पैदल भागे चले जाते हैं. कहीं जलसा

اور اُس کے سپرد کئے۔ مادھو چاہتا تھا اب اُٹھے۔ رشید بولا "امیں یار! چلم تو پیتے جاؤ۔"

مادھو پاس بیٹھ کر حقے پر کی چلم لے کر لمبے لمبے کش بھرنے لگا۔ دونوں باتیں کرنے لگے۔

رشید—"امیں مادھو! اب موٹر بسوں کے آگے تو ہماری پیش نہیں جاتی۔ مشکل سے آج کل آٹھ دس آنے روزانہ ملتے ہیں، جہاں ایک روپیہ تو ضرور ورنہ دو دو روپیے تک مل چکے ہیں۔"

مادھو—"ہاں بھائی! پھر کیا کیا جائے ہم سب نے کیا کوشش نہیں کی؟ ہڑتال کی، جلسے کئے، منسپلٹی سے بھی روئے پیٹے، لیکن اُن کو کیا غرض پڑی تھی کہ ہم غریبوں کی سنتے۔"

رشید—"میری رائے یہ تھی کہ قطعی ہڑتال نہ کی جائے، لیکن مجبوری پڑ گئی۔ کیونکہ سبھوں کی روزی اسی پر تھی، بھائی! بعضوں نے تو دو دو تین تین فاقے تک کئے۔"

مادھو—"ہاں یار! جیسی اب میں اندھیری نگری دیکھتا ہوں اپنی اس پچیس سال کی عمر میں کبھی نہیں دیکھی۔ آخر ہمارے باپ دادا بھی تو یہی کام کرتے تھے۔ سارا گھر کھاتا پیتا۔ لیکن یہ کانگریس سرکار کیا آئی آفت آگئی۔ جس طرف دیکھو کانگریسی غلا مچاتے پھر رہے ہیں — خود محنت کرو۔ اپنے ہاتھ پاؤں چلاؤ۔ دستکاری سیکھو، یہ کرو، وہ کرو۔ آخر کار لوگوں نے اپنے ہاتھ پیر چلانا شروع کئے۔ بڑے بڑے کانگریسی امیر اُمرا چوک سے امین آباد تک پیدل بھاگے چلے جاتے ہیں۔ کہیں جلسہ

हुआ शेरवानी पहन कर पैदल चल दिये. यह भी ख्याल नहीं करते कि हमारा गुज़र कहां से होगा. जब बड़े बड़े पैदल जाते हैं तो ग़रीबों का क्या ज़िक्र ."

रशीद (हंसकर)—"वाह दोस्त ! तुम तो पूरे आलिम हो गए हो."

माधो—"आलिम वालिम क्या ? जिसके ऊपर बीते है वही जानता है. अगर आज तुमने सहारा न दिया होता तो ताज्जुब नहीं कि घोड़े के साथ मैं भी चल बसा होता. क्या मैं तुम्हारा एहसान कभी भूल सकता हूँ ?"

रशीद—"अब भाई ! इसमें एहसान की क्या बात है यह तो इंसानी हमदरदी है."

माधो—"और मैं रोता हूँ कि अब इंसानी हमदरदी कहां रही. इंसान इंसान को खाये जाता है, हिन्दू मुसलमान को और मुसलमान हिन्दू को मारे डालते हैं. जमींदार और किसान जंग का मैदान अलग क़ायम किये हुये हैं. कांगरेसी और मुसलिम-लीगियों में आये दिन झगड़े होते हैं."

रशीद —"वाह भइये ! तुम नहीं समझे, यह इनक़लाब है, इनक़लाब."

माधो—"राम राम ! राम ऐसे इनक़लाब से बचाए. दो वक़्त पेट भर कर रोटी खाते थे सो अब एक ही वक़्त रह गई."

रशीद—"अमें ! छोड़ो इन बातों को, मेरी समझ में एक बात आ गई. वह यह कि मेरे पास कुछ रुपये हैं. इससे एक घोड़ा ख़रीद लूँ और तुम उसको अपने ताँगे में चलाओ, और जो कुछ आ[illegible]मानदारी से आधा बांट लो."

ہوا شیروانی پہن کر پیدل چل دیئے ۔ یہ بھی خیال نہیں کرتے کہ ہمارا گزر کہاں سے ہوگا ۔ جب بڑے بڑے پیدل جاتے ہیں تو غریبوں کا کیا ذکر ۔"

رشید (ہنس کر) — "واہ دوست ! تم تو پورے عالم ہوگئے ہو ۔"

مادھو — "عالم والم کیا ؟ جس کے اوپر بیتے ہے وہی جانتا ہے ۔ اگر آج تم نے سہارا نہ دیا ہوتا تو تعجب نہیں کہ گھوڑے کے ساتھ میں بھی چل بسا ہوتا ۔ کیا میں تمہارا احسان کبھی بھول سکتا ہوں ؟"

رشید — "اب بھائی ! اس میں احسان کی کیا بات ہے یہ تو انسانی ہمدردی ہے ۔"

مادھو — "اور میں روتا ہوں کہ اب انسانی ہمدردی کہاں رہی ۔ انسان انسان کو کھائے جاتا ہے ، ہندو مسلمان کو اور مسلمان ہندو کو مارے ڈالتے ہیں ۔ زمیندار اور کسان جنگ کا میدان الگ قائم کئے ہوئے ہیں ۔ کانگریسی اور مسلم لیگیوں میں آئے دن جھگڑے ہوتے ہیں ۔"

رشید — "واہ بھیے ! تم نہیں سمجھے ، یہ انقلاب ہے ، انقلاب ۔"

مادھو — "رام رام ! رام ایسے انقلاب سے بچائے ۔ دو وقت پیٹ بھر کر روٹی کھاتے تھے سو اب ایک ہی وقت رہ گئی ۔"

رشید — "امیں ! چھوڑو ان باتوں کو ، میری سمجھ میں ایک بات آگئی ۔ وہ یہ کہ میرے پاس کچھ روپئے ہیں ۔ اس سے ایک گھوڑا خرید لوں اور تم اس کو اپنے تانگے میں چلاؤ ، اور جو کچھ آئے ایمانداری سے آدھا بانٹ لو ۔"

माधो—"वाह ! इससे बढ़ कर और क्या बात हो सकती है ! तुम ख़ुदा का नाम लेकर घोड़ा ख़रीद लो. मैं तांगा चलाऊंगा. गौ खाऊं अगर तुमसे बेइमानी करूँ!"

रशीद—"अमें भाई ! अब जाओ, कल सुबह को आ जाना, इतवार है. नख़ास चलकर कोई घोड़ा ख़रीद लेंगे."

माधो ख़ुशी ख़ुशी घर चला गया जैसे उसको दोनों जहान की दौलत मिल गई हो. इंसान को अपने पेशे और हमपेशा वालों से कितनी मुहब्बत होती थी. जुवारी जुवे में अपने साथियों के साथ क्या घुल मिल कर बैठता है. अजनबी चोर दूसरे चोरों से मिल कर कितना ख़ुश होता है, जैसे उसी का भाई है. यही आलम उस वक़्त माधो का था. उसको अपने पेशे में एक ख़ुशी महसूस हुई थी. अपने साथियों से मिल कर बात चीत करने में लुत्फ़ आता था. दिन भर की कमाई ज्यादा हो या कम, पेट भर रोटी मिले या न मिले लेकिन वह ख़ुश नज़र आता था. घोड़े की मालिश एक मशक़्क़त है लेकिन वह इसे हँस हँस कर करता. लेकिन जब से उसका घोड़ा मर गया था वह दिन रात उदास रहता था. उसकी माँ को भी घोड़े के मर जाने का ग़म था लेकिन वह बेटे का ग़म ग़लत करने के लिये हंसती थी.

माधो भी माँ को देख कर मुसकरा देता. वह आरज़ी हंसी होती थी. आज कोई माधो को देखे, बात बात पर उछला जा रहा है. रात भर ख़ुशी से नींद न आई.

नवाब साहब के यहां नौकरी करता, दिन भर छुट्टी न मिलती, हर वक़्त डांट डपट हुआ करती, कभी टमटम, तो कभी घोड़े की

مادھو۔ "واہ! اس سے بڑھ کر اور کیا بات ہو سکتی ہے! تم خدا کا نام لے کر گھوڑا خرید لو۔ میں تانگا چلاؤں گا۔ گئو کھاؤں اگر تم سے بے ایمانی کروں!"

رشید۔ "امیں بھائی! اب جاؤ، کل صبح کو آجانا، اتوار ہے۔ نخاس چل کر کوئی گھوڑا خرید لیں گے۔"

مادھو خوشی خوشی گھر چلا گیا جیسے اس کو دونوں جہان کی دولت مل گئی ہو۔ انسان کو اپنے پیشے اور ہم پیشہ والوں سے کتنی محبت ہوتی تھی۔ جواری جوے میں اپنے ساتھیوں کے ساتھ کیا گھل مل کر بیٹھتا ہے۔ اجنبی چور دوسرے چوروں سے مل کر کتنا خوش ہوتا ہے، جیسے اسی کا بھائی ہے۔ وہی عالم اس وقت مادھو کا تھا۔ اس کو اپنے پیشے میں ایک خوشی محسوس ہوئی تھی۔ اپنے ساتھیوں سے مل کر بات چیت کرنے میں لطف آتا تھا۔ دن بھر کی کمائی زیادہ ہو یا کم، پیٹ بھر روٹی ملے یا نہ ملے لیکن وہ خوش نظر آتا تھا۔ گھوڑے کی مالش ایک مشقت ہے لیکن وہ اسے ہنس ہنس کر کرتا۔ لیکن جب سے اس کا گھوڑا مر گیا تھا وہ دن رات اداس رہتا تھا۔ اس کی ماں کو بھی گھوڑے کے مر جانے کا غم تھا لیکن وہ بیٹے کا غم غلط کرنے کے لئے ہنستی تھی۔ (۲۸۴)

مادھو بھی ماں کو دیکھ کر مسکرا دیتا۔ وہ عارضی ہنسی ہوتی تھی۔ آج کوئی مادھو کو دیکھے، بات بات پر اچھلا جا رہا ہے۔ رات بھر خوشی سے نیند نہ آئی۔

نواب صاحب کے یہاں نوکری کرتا، دن بھر چھٹی نہ ملتی،

सफ़ाई पर एतराज़ किया करते, अब मैं आज़ाद रहूँगा, जिधर तबियत में आयगा टहला टहला फिरूँगा. कोई पूछने वाला भी होगा ? कैसी प्यारी है ज़िन्दगी आज़ादी की, उसकी आंख लग गई. वह ख्वाब में भी यही देखा किया कि तांगा हाँक रहा है. चौक—चौक—नख़ास—अरे भाई, स्टेशन, है कोई सवारी ? साथियों की चीख पुकार से कान पड़ी आवाज़ सुनाई नहीं दे रही है.

भाई महमूद ! ज़रा बीड़ी पिलाओ यार ! अभी तक मेरे दो ही चक्कर हुए. तीसरे चक्कर का पता नहीं, अमें माधो ! तुम्हारी भी ख़ूब बातें हैं. अरे ख़ुश नसीब हो कि तुम्हारे दो चक्कर भी हो गए. यहाँ तो अभी वैसे ही निहार मुंह खड़े हैं. रात भर वह इसी क़िस्म की बातें ख्वाब में सुना और देखा किया कि जैसे बीता ज़माना था.

सुबह होते ही माधो ने तांगा निकाल कर धोना शुरू किया. मां ने जब उसको इस हालत में देखा तो बहुत ताज्जुब में हुई. पास आकर पूछा—"आज यह सफ़ाई तांगे की क्यों की जा रही है?"

माधो—"अरे माँ ! क़िस्मत चमक उठी—रशीद ने आज घोड़ा लेने के लिये तै किया है. हमारा उसका आधा साझा हो जायगा. अभी यों ही ठीक है. क्यों माँ ?"

"हां ! हां ! बहुत अच्छा है. लाओ अब मैं तांगा साफ़ करूँ, तुम रोटी खा कर जाओ नहीं तो देर हो जायगी."

माधो—"अरे रहने दो माँ ! अब तुम बुड्ढी हो गई हो. बचपने में बहुत सेवा की. अब कुछ दिनों हमें सेवा करने दो."

صفائی پر اعتراض کیا کرتے، اب میں آزاد رہوں گا، جدھر طبیعت میں آئے گا ٹہلا ٹہلا پھروں گا. کوئی پوچھنے والا بھی ہوگا؟ کیسی پیاری ہے زندگی آزادی کی، اس کی آنکھ لگ گئی. وہ خواب میں بھی یہی دیکھا کیا کہ تانگا ہانک رہا ہے. چوک — چوک — نخاس — ارے بھائی، اسٹیشن، ہے کوئی سواری؟ ساتھیوں کی چیخ پکار سے کان پڑی آواز سنائی نہیں دے رہی ہے.

بھائی محمود! ذرا بیڑی پلاؤ یار! ابھی تک میرے دو ہی چکر ہوئے. تیسرے چکر کا پتہ نہیں. ایں مادھو! تمھاری بھی خوب باتیں ہیں. ارے خوش نصیب ہو کہ تمھارے دو چکر بھی ہوگئے. یہاں تو ابھی ویسے ہی نہار منھ کھڑے ہیں. رات بھر وہ اسی قسم کی باتیں خواب میں سنا اور دیکھا کیا کہ جیسے بیتا زمانہ تھا.

صبح ہوتے ہی مادھو نے تانگا نکال کر دھونا شروع کیا. ماں نے جب اس کو اس حالت میں دیکھا تو بہت تعجب میں ہوئی. پاس آکر پوچھا، "آج یہ صفائی تانگے کی کیوں کی جا رہی ہے؟"

مادھو — "ارے ماں! قسمت چمک اٹھی — رشید نے آج گھوڑا لینے کے لئے طے کیا ہے. ہمارا اس کا آدھا ساجھا ہوجائے گا. ابھی یوں ہی ٹھیک ہے. کیوں ماں؟"

"ہاں! ہاں! بہت اچھا ہے. لاؤ اب میں تانگا صاف کروں، تم روٹی کھا کر جاؤ نہیں تو دیر ہو جائے گی."

مادھو — "ارے رہنے دو ماں! اب تم بڈھی ہوگئی ہو. بچپنے میں بہت سیوا کی. اب کچھ دنوں ہمیں سیوا کرنے دو."

मां—"बेटा! मुझे कपड़ा दे, मैं तुझे ख़ुश ही देखना चाहती हूँ. अगर तुझे मेरी सेवा का ख़्याल है तो हर वक़्त ख़ुश रहा कर." माँ कपड़ा लेकर तांगा साफ़ करने लगी. माधो ने जल्दी से रोटी खाई और रशीद का साथ लेकर नख़ास जा पहुंचा.

"यह नहीं ठीक है, अमें! इसका पैर लंगड़ा है. हाँ भाई! क्या क़ीमत है?" "यह अच्छा घोड़ा है, एक सौ पचास रुपया?"

"अच्छा लाओ." "एक सौ बीस रुपये का दे दो." "अभ तक तांगे में जुता तक तो है नहीं."

लिखाई पढ़ाई हो गई. और रुपया दे दिया गया. माधो घोड़े को लेकर चलता है. "रशीद!—घोड़ा नया है तो क्या, चार दिन में दुरुस्त हो जायगा." रशीद—"हां भाई! अब यह तुम्हारा काम है."

माधो फिर ख़ुशी ख़ुशी चलने लगता है कि उसके पास से एक मोटर गुज़री. उसके हार्न से घोड़ा भड़का. नया तो था ही. बेतहाशा भागा. लेकिन ग़रीब माधो ने भी उसकी रस्सी न छोड़ी थी, न छोड़ी, कि कहीं भाग न जाय जो सारे मंसूबे ख़ाक में मिल जाँय. वह इसी ख़्याल में रस्सी से लपटा चला गया कि एक मरतबा बिजली के खम्भे से लड़ पड़ा और संभले संभले कि पेशानी पर चोट खाई, चारो खाने चित्त. मुट्ठी ढीली पड़ गई, रस्सी दाब से छुट गई, घोड़ा मोटर के सामने होकर भागा और वहीं ख़तम हो गया. मोटर उलटते उलटते बची. रशीद घोड़े को भूल माधो की तरफ़ दौड़ा. माधो अब बेसुध था. मोटर वाले से रशीद को उम्मेद थी कि वह माधो को अस्पताल तक ले चलेगा. पर उसने

ماں — "بیٹا! مجھے کپڑا دے، میں تجھے خوش ہی دیکھنا چاہتی ہوں. اگر تجھے میری سیوا کا خیال ہے تو ہر وقت خوش رہا کر." ماں کپڑا لے کر تانگا صاف کرنے لگی. مادھو نے جلدی سے روٹی کھائی اور رشید کو ساتھ لے کر نخاس جا پہنچا.

"یہ نہیں ٹھیک ہے، امیں! اس کا پیر لنگڑا ہے. ہاں بھائی! کیا قیمت ہے؟" "یہ اچھا گھوڑا ہے، ایک سو پچاس روپیہ؟"

"اچھا لاؤ." "ایک سو بیس روپئے کا دے دو." "ابھی تک تانگے میں جتا تک تو ہے نہیں."

لکھائی پڑھائی ہو گئی. اور روپیہ دے دیا گیا. مادھو گھوڑے کو لے کر چلتا ہے. "رشید! — گھوڑا نیا ہے تو کیا، چار دن میں درست ہو جائے گا." رشید "ہاں بھائی! اب یہ تمہارا کام ہے."

مادھو پھر خوشی خوشی چلنے لگتا ہے کہ اس کے پاس سے ایک موٹر گزری. اس کے ہارن سے گھوڑا بھڑکا. نیا تو تھا ہی بے تحاشا بھاگا. لیکن غریب مادھو نے بھی اس کی رسی نہ چھوڑی تھی، نہ چھوڑی، کہ کہیں بھاگ نہ جائے جو سارے منصوبے خاک میں مل جائیں. وہ اسی خیال میں رسی سے لپٹا چلا گیا کہ ایک مرتبہ بجلی کے کھمبے سے لڑ پڑا اور سنبھلے سنبھلے کہ پیشانی پر چوٹ کھائی، چاروں خانے چت. مٹھی ڈھیلی پڑ گئی، رسی داب سے چھوٹ گئی، گھوڑا موٹر کے سامنے ہو کر بھاگا اور وہیں ختم ہو گیا. موٹر الٹتے الٹتے بچی. رشید گھوڑے کو بھول مادھو کی طرف دوڑا. مادھو اب بے سدھ تھا. موٹر والے سے رشید کو امید تھی کہ وہ مادھو کو اسپتال تک لے چلے گا. پر اس نے

सो रशीद को ही उलटे आड़े हाथों लिया. उससे जान छुड़ा रशीद ने फ़ौरन एक तांगा पकड़ा और उसमें माधो को लाद सीधा अस्पताल पहुँचा.

ग़रीब होने के नाते देर पर देर होने लगी. ख़ुशामद दरामद से काम चलते न देख, पास के सारे रुपए फेंक उसने माधो के लिये अस्पताल में जगह बना ही ली. जगह मिलते ही माधो अस्पताल का हो गया और इतना हो गया कि दूसरे दिन शाम के पॉंच बजे तक वह रशीद का कोई भी न था. रशीद मुंह लटकाए घर लौट रहा था. उसकी हिम्मत न होती थी कि वह माधो की मां को इस सब मामले की ख़बर दे. वह इस मामले में अपने को ही क़सूरवार समझता था. सोचता जाता था—न में घोड़ा ख़रीदता और न माधो की जान ख़तरे में पड़ती. जानते बूझते नया घोड़ा ख़रीदा ही क्यों? और अगर ख़रीद ही लिया था तो ख़ुद ही क्यों न संभाला? माधो की मां मुझे क्या कहेगी? मैं उस बुढ़िया की किस तरह तसल्ली करूँगा. अपने बेटे का हाल सुन कर उसके जी पर कैसी बीतेगी? मैं न जाऊंगा, न जाऊंगा. बुढ़िया को सुनाने से फ़ायदा ही क्या? हां मगर माधो के घर न पहुँचने से वह ज़रूर बेचैन हो जायगी. पर इस बेचैनी को वह यह समझ कर दूर कर लेगी कि रशीद के यहां सो गया होगा! कई बार पहले वैसा हो भी चुका है. इसी सोच विचार में वह घर पहुँच गया. और फिर उसने यही फैसला किया कि बुढ़िया को अभी ख़बर नहीं देनी चाहिये.

वह खाना खाने बैठा पर खाया न गया. उसकी बीवी ने वजह जानना चाही. पर वह उड़ा गया. बाहर चल दिया. ११ बजे लौटा और चुपचाप चारपाई पर पड़ गया. किस की

تو رشید کو ہی اُلٹے آڑے ہاتھوں لیا. اُس سے جان چھڑا کر رشید نے فوراً ایک تانگا پکڑا اور اُس میں مادھو کو لاد سیدھا اسپتال پہنچا.

غریب ہونے کے ناتے دیر پر دیر ہونے لگی. خوشامد درآمد سے کام چلتے نہ دیکھ پاس کے سارے روپئے پھینک اُس نے مادھو کے لئے اسپتال میں جگہ بنا ہی لی. جگہ ملتے ہی مادھو اسپتال کا ہوگیا اور اتنا ہوگیا کہ دوسرے دن شام کے پانچ بجے تک وہ رشید کا کوئی بھی نہ تھا. رشید مُنہ لٹکائے گھر لوٹ رہا تھا. اُس کی ہمّت نہ ہوتی تھی کہ وہ مادھو کی ماں کو اِس سب معاملے کی خبر دے. وہ اِس معاملے میں اپنے کو ہی قصوروار سمجھتا تھا. سوچتا جاتا تھا، نہ میں گھوڑا خریدتا اور نہ مادھو کی جان خطرے میں پڑتی. جانتے بوجھتے نیا گھوڑا خریدا ہی کیوں؟ اور اگر خرید ہی لیا تھا تو خود ہی کیوں نہ سنبھالا؟ مادھو کی ماں مجھے کیا کہے گی؟ میں اُس بڑھیا کی کس طرح تسلّی کروں گا. اپنے بیٹے کا حال سُن کر اُس کے جی پر کیسی بیتے گی؟ میں نہ جاؤں گا، نہ جاؤں گا. بڑھیا کو سُنانے سے فائدہ ہی کیا؟ ہاں مگر مادھو کے گھر نہ پہنچنے سے وہ ضرور بے چین ہوجائے گی. پر اِس بے چینی کو وہ یہ سمجھ کر دُور کرلے گی کہ رشید کے یہاں سو گیا ہوگا! کئی بار پہلے ویسا ہو بھی چکا ہے. اِسی سوچ وچار میں وہ گھر پہنچ گیا. اور پھر اُس نے فیصلہ کیا کہ بڑھیا کو ابھی خبر نہیں دینی چاہئے.

وہ کھانا کھانے بیٹھا پر کھایا نہ گیا. اُس کی بیوی نے وجہ جاننا چاہی. پر وہ اُڑا گیا. باہر چل دیا. ۱۱ بجے لوٹا اور چُپ چاپ چارپائی پر پڑ گیا. کس کی

नींद ! रात दूभर हो गई. सुबह हुई, पर बड़ी मुशकिल से हुई. बाहर निकला. साथियों से बातें करते करते पता चला कि अस्पताल में सुबह भी मरीज़ से मिलने देते हैं.

....

माधो—मैं कहाँ हूँ ! तुम कौन हो ?

नर्स—घबराओ नहीं. तुम अस्पताल में हो.

माधो—क्यों ?

नर्स—रशीद तुम्हारे कौन होते हैं ?

माधो—साथ खेले हैं, भाई होते हैं.

नर्स—वही कहते थे तुम घोड़ा लिये जाते थे—तार के खम्भे से टक्कर खाई—घोड़ा छुट गया. वह मोटर से मर गया. तुम........

माधो—(बात काट कर) घोड़ा मर गया ? मो ....

आगे कुछ न कह पाया और फिर बेहोश हो गया. थोड़ी देर में उसको होश तो फिर आ गया पर रात को कई बार चौंका. उसकी ज़बान पर एक ही बात थी—'घोड़ा मर गया ! अब क्या होगा ?'

....

सुबह जैसे ही रशीद माधो से मिलने पहुंचा, नर्स ने मिलने देने से पहले सारी हालत से रशीद को आगाह कर दिया.

रशीद—अमें माधो. यह क्या घोड़ा मर गया. घोड़ा मर गया की रट लगाए हुए हो. हो तो मज़े में ?

माधो—घोड़ा मर गया ! अब क्या होगा ?

रशीद—किसका घोड़ा ? कैसा घोड़ा ? कौन मर गया ?

माधो—रशीद का घोड़ा और मैंने मार दिया.

रशीद—तुम होश में तो हो ? यह क्या बक रहे हो ? कौन कहता है ?

نیند ! رات دوبھر ہوگئی. صبح ہوئی، پر بڑی مشکل سے ہوئی. باہر نکلا. ساتھیوں سے باتیں کرتے کرتے پتہ چلا کہ اسپتال میں صبح بھی مریض سے ملنے دیتے ہیں.

....

مادھو— میں کہاں ہوں ! تم کون ہو ؟

نرس— گھبراؤ نہیں. تم اسپتال میں ہو.

مادھو— کیوں ؟

نرس— رشید تمہارے کون ہوتے ہیں ؟

مادھو— ساتھ کھیلے ہیں، بھائی ہوتے ہیں.

نرس— وہی کہتے تھے تم گھوڑا لئے جاتے تھے— تار کے کھمبے سے ٹکر کھائی— گھوڑا چھوٹ گیا؛ وہ موٹر سے مرگیا. تم........

مادھو— (بات کاٹ کر) گھوڑا مرگیا ؟ مو........

آگے کچھ نہ کہہ پایا اور پھر بے ہوش ہوگیا. تھوڑی دیر میں اس کو ہوش، تو پھر آگیا پر رات کو کئی بار چونکا. اس کی زبان پر ایک ہی بات تھی— 'گھوڑا مرگیا ! اب کیا ہوگا ؟'

....

صبح جیسے ہی رشید مادھو سے ملنے پہنچا، نرس نے ملنے دینے سے پہلے ساری حالت سے رشید کو آگاہ کر دیا.

رشید— ائیں مادھو، یہ کیا گھوڑا مرگیا، گھوڑا مرگیا کی رٹ لگائے ہوئے ہو. ہو تو مزے میں ؟

مادھو— گھوڑا مرگیا ! اب کیا ہوگا ؟

رشید— کس کا گھوڑا ؟ کیسا گھوڑا ؟ کون مرگیا ؟

مادھو— رشید کا گھوڑا اور میں نے مار دیا.

رشید— تم ہوش میں تو ہو ؟ یہ کیا بک رہے ہو ؟ کون کہتا ہے ؟

माधो—नर्स.

रशीद—क्या ?

माधो—घोड़ा मर गया.

रशीद—किसने कहा ?

माधो—तुमने

रशीद—मैंने ? मैंने तो कहा था घोड़ा डर गया.

माधो—यह बात !

रशीद—हाँ, यह बात.

माधो पलंग से एक दम उछल पड़ा और रशीद के गले मिल कर बोला—मैं बिल्कुल अच्छा हूँ, चलो घर. दोनों चल दिये. नर्स की हिम्मत ही न हुई कि रोकती. रास्ते में रशीद माधो से बोला—दोस्त एक बात कहूँ अगर बुरा न मानो ?

माधो—हां, कहो बुरा क्यों मानूँगा ?

रशीद—वह घोड़ा मुझको मनहूस जंचा. मैं पांच रुपए कम लेकर उसको वापस कर आया.

माधो—यार, बिलकुल ठीक किया. मैं तो १२० रुपये जुटाने के सोच में सनाका खा गया था. अब तो पाँच ही चुकाने पड़ेंगे.

रशीद—तो, अगर घोड़ा मर गया होता तो तुम मेरे रुपए चुकाते ? और मैं ले लेता ? लानत है ऐसी दोस्ती पर ! घोड़ा अल्लाह का मारा मरा और दाम चुकाए माधो ! दोस्त ! खूब !! तो तुमने रशीद को इतना ओछा समझ लिया ?

माधो का दम ऊपर का ऊपर और नीचे का नीचे.

مادھو — نرس۔

رشید — کیا؟

مادھو — گھوڑا مر گیا۔

رشید — کس نے کہا؟

مادھو — تم نے۔

رشید — میں نے؟ میں نے تو کہا تھا گھوڑا ڈر گیا۔

مادھو — یہ بات!

رشید — ہاں، یہ بات۔

مادھو پلنگ سے ایک دم اچھل پڑا اور رشید کے گلے مل کر بولا — میں بالکل اچھا ہوں، چلو گھر۔ دونوں چل دیے۔ نرس کی ہمت ہی نہ ہوئی کہ روکتی۔ راستے میں رشید مادھو سے بولا — دوست ایک بات کہوں اگر برا نہ مانو؟

مادھو — ہاں کہو برا کیوں مانوں گا؟

رشید — وہ گھوڑا مجھ کو منحوس جنچا۔ میں پانچ روپے کم لے کر اس کو واپس کر آیا۔

مادھو — یار بالکل ٹھیک کیا۔ میں تو ۱۲۰ روپے جٹانے کے سوچ میں سناٹا کھا گیا تھا۔ اب تو پانچ ہی چکانے پڑیں گے۔

رشید — تو، اگر گھوڑا مر گیا ہوتا تو تم میرے روپے چکاتے؟ اور میں لے لیتا؟ لعنت ہے ایسی دوستی پر! گھوڑا اللہ کا مارا مرا اور دام چکائے مادھو! دوست! خوب!! تو تم نے رشید کو اتنا اوچھا سمجھ لیا؟

مادھو کا دم اوپر کا اوپر اور نیچے کا نیچے۔

आज की दुनिया

(क़ौमी ख़िदमतगार)

❀ हिन्दुस्तान और पाकिस्तान की "आज़ाद डोमिनियनें" न 'आज़ाद' हैं न 'डोमिनियन' ❀

❀ अंगरेज़ी फ़ौज का इस मुल्क से हटाया जाना ! ❀

❀ नैपाल और अफ़ग़ानिस्तान ❀

❀ देसी रियासतें, हिन्दुस्तान, पाकिस्तान और इंगलिस्तान ❀

(४५)

'नया हिन्द' के एक पिछले लेख में दिखाया जा चुका है कि सन १९४७ का इनडिपेनडेन्स आफ़ इन्डिया एक्ट कोई नई चीज़ नहीं है. सन १९३५ का गवरमेन्ट आफ़ इन्डिया एक्ट ही अभी तक चल रहा है और नए एक्ट ने उसमें कुछ मामूली से जोड़ तोड़ कर दिये हैं. नए एक्ट की दफ़ा ९ में लिखा है कि "गवरनर जनरल सन १९३५ के गवरमेन्ट आफ़ इन्डिया एक्ट में जो कमी बेशी या अदल बदल करना ठीक समझेगा उनको एक हुकुम की शकल में जारी करा देगा." इसी के मुताबिक़ गवरनर जनरल ने उस पुराने क़ानून में कुछ कमी बेशी और अदल बदल किये और उन्हें हिन्दुस्तान के सामने रख दिया. बस यही सन '४७ का इनडिपेनडेन्स एक्ट है. ज़रूरत के मुताबिक़ यही कमी बेशी और अदल बदल करते रहने का अख़्तियार गवरनर जनरल को आगे भी रहेगा. यह भी ख़याल रहे कि सन १९३५ के क़ानून

آج کی دُنیا

(قومی خدمت گار)

❀ ہندستان اور پاکستان کی "آزاد ڈومینینیں"
نہ "آزاد" ہیں نہ "ڈومینین" ❀

❀ انگریزی فوج کا اِس ملک سے ہٹایا جانا! ❀

❀ نیپال اور افغانستان ❀

❀ دیسی ریاستیں، ہندستان، پاکستان اور انگلستان ❀

(٤٥)

'نیا ہند' کے ایک پچھلے لیکھ میں دکھایا جا چکا ہے کہ ۱۹۴۷ء کا انڈپینڈنس آف انڈیا ایکٹ کوئی نئی چیز نہیں ہے. ۱۹۳۵ء کا گورنمنٹ آف انڈیا ایکٹ ہی ابھی تک چل رہا ہے اور نئے ایکٹ نے اُس میں کچھ معمولی سے جوڑ توڑ کر دئے ہیں. نئے ایکٹ کی دفعہ ۹ میں لکھا ہے کہ "گورنر جنرل ۱۹۳۵ء کے گورنمنٹ آف انڈیا ایکٹ میں جو کمی بیشی یا اَدل بدل کرنا ٹھیک سمجھے گا اُن کو ایک حکم کی شکل میں جاری کرا دے گا." اِسی کے مطابق گورنر جنرل نے اُس پرانے قانون میں کچھ کمی بیشی اور اَدل بدل کئے اور اُنھیں ہندستان کے سامنے رکھ دیا. بس یہی ۴۷ء کا انڈپینڈنس ایکٹ ہے. ضرورت کے مطابق یہی کمی بیشی اور اَدل بدل کرتے رہنے کا اختیار گورنر جنرل کو آگے بھی رہے گا. یہ بھی خیال رہے کہ ۱۹۳۵ء کے قانون

की ३२१ दफ़े में से २१६ ज्यूँ की त्यूँ क़ायम हैं. बाक़ी १०५ कुछ बदली हैं जिनका वास्ता हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के अलग अलग किये जाने से है. आगे को गवरनर जनरल को फिर अख़्तियार है कि वह जब ज़रूरत समझे इन्हें अदले बदले यानी दोनों नई डोमिनियनों या नई हकूमतों के अख़्तियारों का घटाना बढ़ाना गवरनर जनरल के हाथ में है और गवरनर जनरल चाहे हिन्दुस्तानी हो चाहे अंगरेज़ इंगलिस्तान के बादशाह का आदमी और उन्हीं का मुक़र्रर किया हुआ यानी इंगलिस्तान की सरकार का वफ़ादार है.

इंगलिस्तान की पार्लिमेन्ट कोई क़ानून बनावे तो दुनिया की किसी अदालत में यह बहस नहीं की जा सकती कि वह क़ानून जायज़ है या नाजायज़. न कोई अदालत उसे नाजायज़ कह सकती है. पर हमारे नए क़ानून के मुताबिक़ हिन्दुस्तान या पाकिस्तान की धारा सभाएं अगर कोई क़ानून बनावें तो यहाँ की बड़ी अदालत (सुप्रीम कोर्ट) या कोई अदालत उस क़ानून को नाजायज़ ठहरा सकती है और रद्द कर सकती है.

सच यह है कि हिन्दुस्तान और पाकिस्तान—जिन्हें 'आज़ाद डोमिनियनें' बताया जा रहा है—न आज़ाद हैं और न डोमिनियन. देश से बाहर के मामले और दूसरी आज़ाद हकूमतों से सम्बन्ध तो अलग रहा. देश के अन्दर के इन्तज़ाम में भी यह "आज़ाद" नहीं हैं. जब तक इनके इन्तज़ाम

کی ۳۲۱ دفعہ میں سے ۲۱۶ جیوں کی تیوں قایم ہیں باقی ۱۰۵ کچھ بدلی ہیں جن کا واسطہ ہندستان اور پاکستان کے الگ الگ کئے جانے سے ہے. آگے کو گورنر جنرل کو پھر اختیار ہے کہ وہ جب ضرورت سمجھے اِنھیں اُدلے بدلے یعنی دونوں نئی ڈومینینوں یا نئی حکومتوں کے اختیاروں کا گھٹانا بڑھانا گورنر جنرل کے ہاتھ میں ہے اور گورنر جنرل چاہے ہندستانی ہو چاہے انگریز انگلستان کے بادشاہ کا آدمی اور اُنھیں کا مقرّر کیا ہوا یعنی انگلستان کی سرکار کا وفادار ہے.

انگلستان کی پارلیمنٹ کوئی قانون بناوے تو دُنیا کی کسی عدالت میں یہ بحث نہیں کی جا سکتی کہ وہ قانون جائز ہے یا ناجائز، نہ کوئی عدالت اسے ناجائز کہہ سکتی ہے، پر ہمارے نئے قانون کے مطابق ہندستان یا پاکستان کی دھارا سبھائیں اگر کوئی قانون بناویں تو یہاں کی بڑی عدالت (سپریم کورٹ) یا کوئی عدالت اُس قانون کو ناجائز ٹھہرا سکتی ہے اور رد کر سکتی ہے.

سچ یہ ہے کہ ہندستان اور پاکستان — جنھیں 'آزاد ڈومینینیں' بتایا جا رہا ہے — نہ آزاد ہیں اور نہ ڈومینین. دیش سے باہر کے معاملے اور دوسری آزاد حکومتوں سے سمبندھ تو الگ رہا، دیش کے اندر کے انتظام میں بھی یہ "آزاد" نہیں ہیں. جب تک اِن کے انتظام سے انگلستان کا بادشاہ اور وہاں کی پارلیمنٹ خوش رہیں تب

तक यह जैसा चाहें इन्तजाम करें, और ज्योंही इनकी किसी बात से इंगलिस्तान के बादशाह या वहाँ की पार्लिमेन्ट नाराज़ हुए त्योंही उन्हें इनको रोकने और दख़ल देने का पूरा अख्तियार है. एक ख़ास बात इस नए क़ानून में यह रक्खी गई है कि इंगलिस्तान की सरकार हमारे देश की इन दोनों हुकूमतों के कामों में दख़ल न देकर इनके अख्तियारों में दख़ल देगी यानी उन्हें ज़रूरत के मुताबिक़ कम ज़्यादा करती रहेगी. यह दख़ल और भी ज़्यादा ख़तरे का हो सकता है और है. पर अंगरेज़ सरकार ने इसे क़ानूनन इतना पक्का कर लिया है कि इंगलिस्तान की पार्लिमेन्ट के इस तरह के किसी फ़ैसले के ख़िलाफ़ हिन्दुस्तान या पाकिस्तान किसी से अपील भी नहीं कर सकते.

नए क़ानून के मुताबिक़ जिस तरह पाकिस्तान और हिन्दुस्तान के गवरनर जनरलों को इंगलिस्तान का बादशाह मुक़र्रर करता है उसी तरह दोनों जगह के वज़ीरों को गवरनर जनरल मुक़र्रर करता है, वज़ीर गवरनर जनरल को मुक़र्रर नहीं करते.

डोमिनियन के मामले में यहाँ एक मिसाल देना बेजा न होगा. न्यू फ़ाउन्डलैन्ड एक डोमिनियन है जो वेस्ट मिन्सटर के क़ानून के मुताबिक़ बनी है. हिन्दुस्तान और पाकिस्तान उस क़ानून के मुताबिक़ नहीं बने. उन मानों में यह दोनों डोमिनियन हैं भी नहीं. इनका रुतबा और आज़ादी का दरजा न्यूफ़ाउन्डलैन्ड से बहुत कम है. फिर भी सन् १९३३ में इंगलिस्तान की पार्लिमेन्ट ने न्यू फ़ाउन्डलैन्ड एक्ट पास करके वहां की सरकार को मुअत्तिल

تک یہ جیسا چاہیں انتظام کریں، اور جیوں ہی اِن کی کسی بات سے انگلستان کے بادشاہ یا وہاں کی پارلیمنٹ ناراض ہوئے تیوں ہی اُنھیں اِن کو روکنے اور دخل دینے کا پورا اختیار ہے۔ ایک خاص بات اِس نئے قانون میں یہ رکھی گئی ہے کہ انگلستان کی سرکار ہمارے دیش کی اِن دونوں حکومتوں کے کاموں میں دخل نہ دے کر اِن کے اختیاروں میں دخل دے گی یعنی اُنھیں ضرورت کے مطابق کم زیادہ کرتی رہے گی۔ یہ دخل اور بھی زیادہ خطرے کا ہو سکتا ہے اور ہے۔ پر انگریز سرکار نے اسے قانوناً اتنا پکا کر لیا ہے کہ انگلستان کی پارلیمنٹ کے اِس طرح کے کسی فیصلے کے خلاف ہندستان یا پاکستان کسی سے اپیل بھی نہیں کر سکتے۔

نئے قانون کے مطابق جس طرح پاکستان اور ہندستان کے گورنر جنرلوں کو انگلستان کا بادشاہ مقرر کرتا ہے اُسی طرح دونوں جگہ کے وزیروں کو گورنر جنرل مقرر کرتا ہے، وزیر گورنر جنرل کو مقرر نہیں کرتے۔

ڈومنین کے معاملے میں یہاں ایک مثال دینا بیجا نہ ہوگا۔ نیو فاؤنڈلینڈ ایک ڈومینین ہے جو ویسٹ منسٹر کے قانون کے مطابق بنی ہے۔ ہندستان اور پاکستان اُس قانون کے مطابق نہیں بنے۔ اُن معنوں میں یہ دونوں ڈومنین ہیں بھی نہیں۔ اِن کا رتبہ اور آزادی کا درجہ نیو فاؤنڈلینڈ سے بہت کم ہے۔ پھر بھی ۱۹۳۳ء میں انگلستان کی پارلیمنٹ نے نیو فاؤنڈلینڈ ایکٹ پاس کر کے وہاں کی سرکار کو معطل

कर दिया और उस मुल्क से डोमिनियन के अधिकार छीन लिये. इसी तरह इंगलिस्तान की पार्लिमेन्ट कभी भी हिन्दुस्तान या पाकिस्तान से उनके आजकल के अधिकार छीन सकती है. फ़रक़ यह है कि जिस क़ानून से न्यू फ़ाउन्डलैंन्ड की डोमिनियन बनी थी उसके मुताबिक़ वहां की सरकार को मुअत्तिल करने से पहले वहां की धारा सभा की रज़ामन्दी लेनी पड़ी. हिन्दुस्तान या पाकिस्तान के लिये यहां की किसी धारा सभा की इस तरह की रज़ामन्दी की भी ज़रूरत नहीं होगी.

जहां तक अंगरेज़ी फ़ौजों के इस मुल्क से हटा लिये जाने की बात है नए क़ानून के मुताबिक़ यह फ़ौजें उस वक़्त हटाई जानी शुरू होंगी जब पूरे अख़्तियार हिन्दुस्तानियों को दिये जा चुकेंगे. पूरे अख़्तियार उस वक़्त तक नहीं दिये जा सकते जब तक इस मुल्क की दोनों 'आज़ाद सरकारों और इंगलिस्तान के बीच नए सुलहनामे न लिख जांय.' इंगलिस्तान की सरकार का इन सुलहनामों को मंज़ूर कर लेना ज़रूरी है. इसके बाद भी "अंगरेज़ी फ़ौजों के हटा लिये जाने" का मतलब सिर्फ़ यह है कि इस मुल्क की दोनों सरकारों की अपनी अपनी फ़ौजों में अंगरेज़ी कम्पनियां नहीं रहेंगी और अफ़सर भी जहां तक मुमकिन होगा हिन्दुस्तानी होंगे. यह मतलब नहीं है कि इंगलिस्तान के बादशाह की अपनी 'इम्पीरियल' फ़ौजें भी यहां नहीं रह सकेंगी. जो नए सुलहनामें होंगे उनमें एक शर्त यह होगी कि हिन्दुस्तान और पाकिस्तान में ब्रिटिश गवरमेन्ट के फ़ौजी मिशन को रहने की इजाज़त हो. यह फ़ौजी मिशन हिन्दुस्तान या पाकिस्तान के क़ानून के मातहत न होंगे

نیا ہند آج کی دُنیا ستمبر ۴۷ء

کر دیا اور اُس ملک سے ڈومینین کے ادھکار چھین لئے۔ اِسی طرح انگلستان کی پارلیمنٹ کبھی بھی ہندستان یا پاکستان سے اُن کے آج کل کے ادھکار چھین سکتی ہے، فرق یہ ہے کہ جس قانون سے نیوفاؤنڈلینڈ کی ڈومینین بنی تھی اُس کے مطابق وہاں کی سرکار کو معطل کرنے سے پہلے وہاں کی دھارا سبھا کی رضامندی لینی پڑی۔ ہندستان یا پاکستان کے لئے یہاں کی کسی دھارا سبھا کی اِس طرح کی رضامندی کی بھی ضرورت نہیں ہوگی۔

جہاں تک انگریزی فوجوں کے اِس ملک سے ہٹا لئے جانے کی بات ہے نئے قانون کے مطابق یہ فوجیں اُس وقت ہٹائی جانی شروع ہوں گی جب پورے اختیار ہندستانیوں کو دئے جا چکیں گے۔ پورے اختیار اُس وقت تک نہیں دئے جا سکتے جب تک اِس ملک کی دونوں "آزاد سرکاروں اور انگلستان کے بیچ نئے صلح نامے نہ لکھ جائیں"۔ انگلستان کی سرکار کا ان صلح ناموں کو منظور کر لینا ضروری ہے۔ اِس کے بعد بھی "انگریزی فوجوں کے ہٹا لئے جانے" کا مطلب صرف یہ ہے کہ اِس ملک کی دونوں سرکاروں کی اپنی اپنی فوجوں میں انگریزی کمپنیاں نہیں رہیں گی اور افسر بھی جہاں تک ممکن ہوگا ہندستانی ہوں گے۔ یہ مطلب نہیں ہے کہ انگلستان کے بادشاہ کی اپنی "امپیریل" فوجیں بھی یہاں نہیں رہ سکیں گی۔ جو نئے صلح نامے ہوں گے اُن میں ایک شرط یہ ہوگی کہ ہندستان اور پاکستان میں برٹش گورنمنٹ کے فوجی مشن کو رہنے کی اجازت ہو۔ یہ فوجی مشن ہندستان یا پاکستان کے قانون کے ماتحت نہ ہونگے

लेकिन दोनों जगह को फ़ौजें जरूरत के वक़्त इन मिशनों के मातहत और उनके हुकुम से काम करेंगी. इसके अलावा इन दोनों नई सरकारों की फ़ौजों में भी बहुत से बड़े बड़े अफ़सर और टेकनिकल दस्तों के छोटे अफ़सर तक अंगरेज़ ही रहेंगे. यह सब बातें नए क़ानून को और मिस्टर एटली जैसों की तक़रीरों को ध्यान से पढ़ने पर साफ़ दिखाई दे जाती हैं. ग्रीस और चीन दोनों में जो ब्रिटिश और अमरीकन फ़ौजी मिशन काम कर रहे हैं उनसे हमें बहुत कुछ असलियत का पता लग सकता है.

(ऊ) आज कल की फ़ौजों और लड़ाई के नए तरीक़ों ने दुनिया को बहुत बदल दिया है. लड़ाई का भारी से भारी सामान और फ़ौजें तक आज कल हवाई जहाज़ों से आती जाती हैं. इस तरह का एक फ़ौज ले जाने वाला हवाई जहाज़ मामूली तौर पर अपने अड्डे से चारों तरफ़ ११७० मील दूर तक दौड़ लगाता है, लड़ाकू हवाई जहाज़ १२०० मील और बममार १६०० मील. यह भी कम है. अमरीका का जहाज़ 'कान्सटीलेशन' (सी. ६९) घंटे में २२५ मील जाता है, २८० मन का वज़न ले जाता है और एक उड़ान में ४५०० मील की ख़बर लेता है. अमरीका ही का दूसरा हवाई जहाज़ 'कान्सटिट्यूशन' घंटे में ३०० मील जाता है, ९८० मन वज़न ले जा सकता है और एक उड़ान में ६००० मील की ख़बर लेता है. इसलिये आज कल ज़मीन के ऊपर सब जगह बड़ी बड़ी छावनियां रखने की ज़रूरत नहीं है. ज़रूरत सिर्फ़ इस बात की है कि इस तरह के हवाई और समन्दरी अड्डे हों जिनमें कहीं १५०० मील से ज़्यादा

لیکن دونوں جگہ کی فوجیں ضرورت کے وقت اِن مشنوں کے ماتحت اور اُن کے حکم سے کام کریں گی۔ اِس کے علاوہ اِن دونوں نئی سرکاروں کی فوجوں میں بھی بہت سے بڑے بڑے افسر اور ٹکنیکل دستوں کے چھوٹے افسر تک انگریز ہی رہیں گے۔ یہ سب باتیں نئے قانون کو اور مسٹر ایٹلی جیسوں کی تقریروں کو دھیان سے پڑھنے پر صاف دکھائی دے جاتی ہیں۔ فرانس اور چین دونوں میں جو برٹش اور امریکن فوجی مشن کام کر رہے ہیں اُن سے ہمیں بہت کچھ اصلیت کا پتہ چل سکتا ہے۔

آج کل کی فوجوں اور لڑائی کے نئے طریقوں نے دُنیا کو بہت بدل دیا ہے۔ لڑائی کا بھاری سے بھاری سامان اور فوجیں تک آج کل ہوائی جہازوں سے آتی جاتی ہیں۔ اِس طرح کا ایک فوج لے جانے والا ہوائی جہاز معمولی طور پر اپنے اڈّے سے چاروں طرف ۱۱۷۰ میل دُور تک دَوڑ لگاتا ہے۔ لڑاکو ہوائی جہاز ۱۲۰۰ میل اور بم مار ۱۹۰۰ میل۔ یہ بھی کم ہے۔ امریکا کا جہاز 'کانسٹی لیشن' (سی۔ ۶۹) گھنٹے میں ۲۲۵ میل جاتا ہے، ۲۸۰ من کا وزن لے جاتا ہے اور ایک اُڑان میں ۴۵۰۰ میل کی خبر لیتا ہے۔ امریکا ہی کا دوسرا ہوائی جہاز 'کانسٹی ٹیوشن' گھنٹے میں ۳۰۰ میل جاتا ہے، ۹۸۰ من وزن لے جاسکتا ہے اور ایک اُڑان میں ۶۰۰۰ میل کی خبر لیتا ہے۔ اِس لئے آج کل زمین کے اوپر سب جگہ بڑی بڑی چھاؤنیاں رکھنے کی ضرورت نہیں ہے۔ ضرورت صرف اِس بات کی ہے کہ اِس طرح کے ہوائی اور سمندری اڈّے ہوں جن میں کہیں ۱۵۰۰ میل سے زیادہ

फ़ासला न हो. आज कल अगर लड़ाई का एलार्म बज जावे तो डेढ़ घंटे के अन्दर फ़ौज ख़ास अड्डे से १६०० मील दूर तक कहीं भी पहुँच सकती है. सिंगापुर, रंगून, कोलम्बो और कराची में अंगरेज़ों के हवाई और समन्दरी दोनों तरह के अड्डे हैं. सिकन्दराबाद (हैदराबाद, दक्खिन) और गिलगिट (काशमीर) में ज़बरदस्त हवाई अड्डे हैं. सारे हिन्दुस्तान और पाकिस्तान और आस पास के रास्तों पर क़ाबू रखने के लिये यह बिलकुल काफ़ी हैं. पर इन अव्वल दर्जे के अड्डों के अलावा अंगरेज़ों के और छोटे बड़े अड्डे नैपाल में, हिन्दुस्तान और पाकिस्तान में और रियासतों में इस तरह बिखरे हुए हैं कि कहीं भी दो अड्डों में ५०० मील से ज़्यादा फ़ासला नहीं है. अन्दमन और निकोबार टापुओं में अंगरेज़ बसाए जा रहे हैं. इसी तरह अदन में भी अंगरेज़ बसाए जावेंगे (इनडिपेनडेन्स एक्ट दफ़ा १६). कहने को अन्दमन और निकोबार हिन्दुस्तान में शामिल रहेंगे और अदन पाकिस्तान में रहेगा. दोनों तरफ़ के यह नाके अंगरेज़ी समन्दर फ़ौज के लिये बहुत बड़े अड्डे होंगे.

एक सवाल गोरखा फ़ौजों का था. इंगलिस्तान की सरकार ने इसे भी बड़ी ख़ूबसूरती से हल कर लिया है. नैपाल की सरकार और इंगलिस्तान की सरकार में समझौता हो गया है. इंगलिस्तान की अपनी इम्पीरियल फ़ौज में गोरखे भरती हो सकते हैं और होंगे. हिन्दुस्तान या पाकिस्तान की फ़ौजों में गोरखे भरती नहीं होंगे. इसका मतलब यह है कि अंगरेज़ी फ़ौज की तरह गोरखा फ़ौज भी यहां अंगरेज़ अफ़सरों के मातहत इम्पीरियल

فاصلہ نہ ہو. آج کل اگر لڑائی کا الارم بج جاوے تو ڈیڑھ گھنٹے کے اندر فوج خاص اڈے سے ۱۹۰۰ میل دُور تک کہیں بھی پہنچ سکتی ہے. سنگاپور، رنگون، کولمبو اور کراچی میں انگریزوں کے ہوائی اور سمندری دونوں طرح کے اڈے ہیں. سکندرآباد (حیدرآباد دکھن) اور گلگت (کاشمیر) میں زبردست ہوائی اڈے ہیں. سارے ہندستان اور پاکستان اور آس پاس کے راستوں پر قابو رکھنے کے لئے یہ بالکل کافی ہیں. پر ان اوّل درجے کے اڈوں کے علاوہ انگریزوں کے اور چھوٹے بڑے اڈے نیپال میں، ہندستان اور پاکستان میں اور ریاستوں میں اس طرح بکھرے ہوتے ہیں کہ کہیں بھی دو اڈوں میں ۵۰۰ میل سے زیادہ فاصلہ نہیں ہے. انڈمن اور نکوبار ٹاپوؤں میں انگریز بسائے جا رہے ہیں. اسی طرح عدن میں بھی انگریز بسائے جاویں گے (انڈپینڈنس ایکٹ دفعہ ۱۶). کہنے کو انڈمن اور نکوبار ہندستان میں شامل رہیں گے اور عدن پاکستان میں رہے گا. دونوں طرف کے یہ ناکے انگریزی سمندری فوج کے لئے بہت بڑے اڈے ہوں گے.

ایک سوال گورکھا فوجوں کا تھا. انگلستان کی سرکار نے اسے بھی بڑی خوبصورتی سے حل کر لیا ہے. نیپال کی سرکار اور انگلستان کی سرکار میں سمجھوتا ہو گیا ہے. انگلستان کی اپنی امپیریل فوج میں گورکھے بھرتی ہو سکتے ہیں اور ہوں گے. ہندستان یا پاکستان کی فوجوں میں گورکھے بھرتی نہیں ہوں گے. اس کا مطلب یہ ہے کہ انگریزی فوج کی طرح گورکھا فوج بھی یہاں انگریز افسروں کے ماتحت امپیریل

फ़ौज की हैसियत से रह सकेगी. यह गोरखा फ़ौज हिन्दुस्तान **या पाकिस्तान के क़ानूनों के** ताबे नहीं होगी. यह ताबे होगी सीधी **इंगलिस्तान** की सरकार के.

एक और दिक़्क़त थी. नैपाल के चारों तरफ़ पहाड़ और **ज़मीन है.** फिर वहां की फ़ौजें निकलें कैसे. सन १८२३ में **हिन्दुस्तान और** नैपाल के बीच समझौता हुआ था कि दोनों मुल्कों **का तिजारती** माल और आदमी दोनों मुल्कों से आ जा सकेंगे. **बस उसी के** मुताबिक़ अब यह तय कर लिया गया कि अंगरेज़ **सरकार की** गोरखा फ़ौजें हिन्दुस्तान और पाकिस्तान दोनों में होकर **बेरोक आ** जा सकेंगी. हमें याद रखना चाहिये कि पिछली जंग में **क़रीब** ५० गोरखा बटैलियन थीं जो अंगरेज़ अफ़सरों के मातहत **काम** कर रही थीं. इंगलिस्तान में आदमियों की बहुत कमी पड़ **रही है** पर उससे इंगलिस्तान को फ़ौजों की दिक़्क़त नहीं **हो** सकती.

लेकिन अफ़ग़ानिस्तान अंगरेज़ी चौगान के लिये कभी भी ऐसा **अच्छा मैदान** नहीं बन सका जैसा नैपाल. अफ़ग़ानिस्तान की सरहद **रूस से** मिली हुई है. सरहद ही की तरह कुछ दिल भी मिलते **मालूम** होते हैं. इधर अंगरेज़ इस फ़िक्र में हैं कि कुछ अरब **रियासतों** की जो फ़ेडरेशन अंग्रेज़ अपनी तरफ़दारी और अपने **मतलब के लिये** बना रहे हैं उस फ़ेडरेशन में हमारे यहाँ के **पाकिस्तान** को भी **शामिल** करा दें. अफ़ग़ानिस्तान के लिये यह **एक बहुत बड़ा ख़तरा है.** इसी लिये अफ़ग़ानिस्तान सूबे सरहद **के पाकिस्तान में मिलाये जाने के ख़िलाफ़ है और "पठानिस्तान"**

فوج کی حیثیت سے رہ سکے گی. یہ گورکھا فوج ہندستان یا پاکستان کے قانونوں کے تابع نہیں ہوگی. یہ تابع ہوگی سیدھی انگلستان کے سرکار کے.

ایک اور دقّت تھی. نیپال کے چاروں طرف پہاڑ اور زمین ہے. پھر وہاں کی فوجیں نکلیں کیسے. سنہ ۱۸۲۳ میں ہندستان اور نیپال کے بیچ سمجھوتا ہوا تھا کہ دونوں ملکوں کا تجارتی مال اور آدمی دونوں ملکوں سے آجا سکیں گے. بس اسی کے مطابق اب یہ طے کرلیا گیا کہ انگریز سرکار کی گورکھا فوجیں ہندستان اور پاکستان دونوں میں ہوکر بے روک آجا سکیں گی. ہمیں یاد رکھنا چاہیئے کہ پچھلی جنگ میں قریب ۵۰ گورکھا بٹلین تھیں جو انگریز افسروں کے ماتحت کام کر رہی تھیں. انگلستان میں آدمیوں کی بہت کمی پڑ رہی ہے پر اُس سے انگلستان (۲۶۵) کو فوجوں کی دقّت نہیں ہوسکتی.

لیکن افغانستان انگریزی چوگان کے لئے کبھی بھی ایسا اچھا میدان نہیں بن سکا جیسا نیپال. افغانستان کی سرحد رُوس سے ملی ہوئی ہے. سرحد کی طرح کچھ دل بھی ملتے معلوم ہوتے ہیں. اِدھر انگریز اِس فکر میں ہیں کہ کچھ عرب ریاستوں کی جو فیڈریشن انگریز اپنی طرفداری اور اپنے مطلب کے لئے بنا رہے ہیں اُس فیڈریشن میں ہمارے یہاں کے پاکستان کو بھی شامل کرادیں. افغانستان کے لئے یہ ایک بہت بڑا خطرہ ہے. اِسی لئے افغانستان صوبہ سرحد کے پاکستان میں ملائے جانے کے خلاف ہے اور "پٹھانستان"

की तजवीज़ के ज़ोरों से हक़ में है. इसीलिये अफ़ग़ानिस्तान की सरकार ने यह माँग तक अंगरेज़ों के सामने पेश करदी कि 'डयूरेन्ड लाइन' से सिन्ध नदी तक का सारा इलाक़ा अफ़ग़ानिस्तान को दे दिया जावे. बात बिल्कुल बेजा भी नहीं. इस इलाक़े में ४१७८००० अफ़ग़ान क़ौम के लोग रहते हैं. फिर सारी अफ़ग़ान क़ौम का एक मिला हुआ आज़ाद राज क्यों न हो ? इसी के लिये अफ़ग़ानिस्तान का बड़ा वज़ीर ख़ुद लन्दन और अमरीका गया था. यह भी ख़बर आई थी कि अफ़ग़ानिस्तान पठानिस्तान के इस सवाल को यू० एन० ओ० की पंचायत के सामने पेश करने वाला है. काबुल से ख़बर आ चुकी है कि अफ़ग़ान सरकार और सारी अफ़ग़ान क़ौम सरहद के पाकिस्तान में मिलाये जाने को अपने लिये एक चुनौती समझती है. दूसरी तरफ़ अँगरेज़ अफ़ग़ानिस्तान से तिजारती और फ़ौजी समझौता भी करना चाहते हैं और सरहद का पाकिस्तान में शामिल करना भी जरूरी समझते हैं. हिन्दुस्तान के उत्तर पच्छिम की यह गड़बड़ बहुत बड़े ख़तरे से ख़ाली नहीं है. कौन जानता है कि अगली जंग की पहली चिनगारी कहाँ से धधक उठे.

देसी रियासतों के मामले को नए क़ानून ने इतना उलझा दिया है कि रियासतें न पूरी तरह आज़ाद छोड़ी गई हैं और न हिन्दुस्तान या पाकिस्तान से पूरी तरह बँधी हुई. कई बातों में रियासतें जितना हिन्दुस्तान या पाकिस्तान के कामों में दख़ल दे सकेंगी उतना हिंदुस्तान ⋯ पाकिस्तान रियासतों के कामों में दख़ल नहीं दे सकेंगे. अँग्रेज

کی تجویز کے زوروں سے حق میں ہے. اس لئے افغانستان کی سرکار نے یہ مانگ تک انگریزوں کے سامنے پیش کردی کہ 'ڈیورینڈ لائن' سے سندھ ندی تک کا سارا علاقہ افغانستان کو دے دیا جاوے. بات بالکل بیجا بھی نہیں. اس علاقے میں ۴۱۷۸۰۰۰ افغان قوم کے لوگ رہتے ہیں. پھر ساری افغان قوم کا ایک ملا ہوا آزاد راج کیوں نہ ہو؟ اسی کیلئے افغانستان کا بڑا وزیر خود لندن اور امریکا گیا تھا. یہ بھی خبر آئی تھی کہ افغانستان پٹھانستان کے اس سوال کو یو. این. او. کی پنچایت کے سامنے پیش کرنے والا ہے. کابل سے خبر آچکی ہے کہ افغان سرکار اور ساری افغان قوم سرحد کے پاکستان میں ملائے جانے کو اپنے لئے ایک چنوتی سمجھتی ہے. دوسری طرف انگریز افغانستان سے تجارتی اور فوجی سمجھوتا بھی کرنا چاہتے ہیں اور سرحد کا پاکستان میں شامل کرنا بھی ضروری سمجھتے ہیں. ہندستان کے اُتر پچھم کی یہ گڑبڑ بہت بڑے خطرے سے خالی نہیں ہے. کون جانتا ہے کہ اگلی جنگ کی پہلی چنگاری کہاں سے دھدھک اٹھے.

دیسی ریاستوں کے معاملے کو نئے قانون نے اتنا الجھا دیا ہے کہ ریاستیں نہ پوری طرح آزاد چھوڑی گئی ہیں اور نہ ہندستان یا پاکستان سے پوری طرح بندھی ہوئی. کئی باتوں میں ریاستیں جتنا ہندستان یا پاکستان کے کاموں میں دخل دے سکیں گی اتنا ہندستان یا پاکستان ریاستوں کے کاموں میں دخل نہیں دے سکیں گے.
گ . . . ر

हम तफ़सील में जाना नहीं चाहते. पर नए क़ानून से साफ़ है कि इंगलिस्तान की सरकार रियासतों के जरिये से हिन्दुस्तान और पाकिस्तान पर अपना फ़ौजी असर रक्खेगी, और हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के जरिये रियासतों पर अपना राजक़ाजी असर रक्खेगी. दोनों पर अंगरेज़ सरकार का जो सीधा असर है वह अलग रहा. हिन्दुस्तान या पाकिस्तान में से कोई किसी रियासत में कोई ऐसी बात नहीं कर सकता जो अँगरेज़ सरकार की मरज़ी के ख़िलाफ़ हो (इनडिपेनडेन्स एक्ट, दफ़ा ७). अंगरेज़ सरकार किसी रियासत को आज़ाद रियासत नहीं मानती. दोनों में से किसी एक आज़ाद डोमिनियन से जुड़ कर ही कोई रियासत थोड़ी बहुत आज़ाद समझी जा सकती है. और जोड़ ऐसा ख़तरनाक रक्खा गया है कि हर रियासत को हर तरफ़ से अपने बचाव के लिये अंग्रेज़ों का सहारा लेना ही पड़ेगा और अंगरेज़ों की हर मांग पूरी करनी पड़ेगी, फिर चाहे वह माँग हिन्दुस्तान के ख़िलाफ़ हो चाहे पाकिस्तान के और चाहे किसी दूसरी रियासत के. इस मामले में नया क़ानून और दूसरे साथ के काग़ज़ बहुत ही ख़तरे से भरे हुए हैं.

यह ठीक है कि इंगलिस्तान की सरकार को जो भी अपनी चाल या अपनी साम्राजशाही का रूप बदलना पड़ा है वह अपनी कमज़ोरी और अपने घर की मुसीबतों की वजह से बदलना पड़ा है. इंगलिस्तान में आदमियों की इतनी कमी है कि कारख़ानों के लिये मज़दूर तक नहीं मिलते. लाज़मी फ़ौजी ख़िदमत के साल घटाने पड़ गए हैं. एक तरफ़ साम्राज का कुनबा बढ़ता चला जा रहा है और दूसरी तरफ़ उस कुनबे को पालने या उसकी हिफ़ाज़त

ہم تفصیل میں جانا نہیں چاہتے. پر نئے قانون سے صاف ہے کہ انگلستان کی سرکار ریاستوں کے ذریعے سے ہندستان اور پاکستان پر اپنا فوجی اثر رکھے گی، اور ہندستان اور پاکستان کے ذریعے ریاستوں پر اپنا راج کاجی اثر رکھے گی. دونوں پر انگریز سرکار کا جو سیدھا اثر ہے وہ الگ رہا. ہندستان یا پاکستان میں سے کوئی کسی ریاست میں کوئی ایسی بات نہیں کر سکتا جو انگریز سرکار کی مرضی کے خلاف ہو (انڈیپنڈنس ایکٹ، دفعہ ۷). انگریز سرکار کسی ریاست کو آزاد ریاست نہیں مانتی. دونوں میں سے کسی ایک آزاد ڈومینین سے جُڑ کر ہی کوئی ریاست تھوڑی بہت آزاد سمجھی جا سکتی ہے. اور جوڑ ایسا خطرناک رکھا گیا ہے کہ ہر ریاست کو ہر طرف سے اپنے بچاؤ کے لئے انگریزوں کا سہارا لینا ہی پڑے گا اور انگریزوں کی ہر مانگ پوری کرنی پڑے گی پھر چاہے وہ مانگ ہندستان کے خلاف ہو چاہے پاکستان کے اور چاہے کسی دوسری ریاست کے. اس معاملے میں نیا قانون اور دوسرے ساتھ کے کاغذ بہت ہی خطرے سے بھرے ہوئے ہیں.

یہ ٹھیک ہے کہ انگلستان کی سرکار کو جو بھی اپنی چال یا اپنی سامراج شاہی کا رُوپ بدلنا پڑا ہے وہ اپنی کمزوری اور اپنے گھر کی مصیبتوں کی وجہ سے بدلنا پڑا ہے. انگلستان میں آدمیوں کی اتنی کمی ہے کہ کارخانوں کے لئے مزدور تک نہیں ملتے. لازمی فوجی خدمت کے سال گھٹانے پڑ گئے ہیں. ایک طرف سامراج کا کنبہ بڑھتا چلا جا رہا ہے اور دوسری طرف اس کنبے کو پالنے یا اس کی حفاظت

करने का सामान बेहद घटता जा रहा है. जिस तरह हिन्दुस्तानी फ़ौज में अपने मुल्क और क़ौम का ख़याल बढ़ता जा रहा है इसी तरह अंगरेज़ी फ़ौज में इस तरह के नए रँगरूटों की तादाद बढ़ती जा रही है जो हथियार बन्द नाज़ियों से तो लड़ लेंगे पर निहत्थी जनता पर बम बरसाने में शायद कुछ आनाकानी करें. इस संकट में अंगरेज़ सरकार बहुत होशियारी से अपने को सँभालने की कोशिश कर रही है.

---

(५५)

कुछ किताबें

ग़रीबी या अमीरी—लिखने वाले सेठ गोविन्द दास, सफ़े १६५, लिखावट नागरी, क़ीमत दो रुपये. पता—हिन्दुस्तानी एकेडेमी इलाहाबाद यू० पी०

सेठ गोविन्द दास जी एक ऊँचे दरजे के नाटक लिखने वाले हैं. उनकी कितनी ही सुन्दर किताबें आज हमारे सामने मौजूद हैं. यह किताब भी पाँच अंकों में उन्हीं का एक नाटक है. १९३८ में जब सेठ जी अफ़्रीका से हिन्दुस्तान लौट रहे थे तो जहाज़ में ही इस किताब का प्लाट उनके दिमाग़ में तैयार हुआ था. अफ़्रीका में उन्होंने जो कुछ देखा और वहाँ हिन्दुस्तानियों की हालत को जहां तक भी उन्होंने सुना और समझा, इस प्लाट की शकल में उनके दिमाग़ में चक्कर काटने लगा. और १९४१ में जबलपूर जेल में वही सब कुछ उनके कलम से इस किताब की शकल

کرنے کا سامان بے حد گھٹتا جا رہا ہے۔ جس طرح ہندستانی فوج میں اپنے ملک اور قوم کا خیال بڑھتا جا رہا ہے اسی طرح انگریزی فوج میں اس طرح کے نئے رنگروٹوں کی تعداد بڑھتی جا رہی ہے جو ہتھیار بند ناریوں سے تو لڑ لیں گے پر نہتے جنتا پر بم برسانے میں شاید کچھ آناکانی کریں۔ اس سنکٹ میں انگریز سرکار بہت ہوشیاری سے اپنے کو سنبھالنے کی کوشش کر رہی ہے۔

کچھ کتابیں

غریبی یا امیری — لکھنے والے سیٹھ گووند داس، صفحے ۱۶۵، لکھاوٹ ناگری، قیمت دو روپئے، پتہ — ہندستانی اکیڈیمی الہ آباد یو۔ پی۔

سیٹھ گووند داس جی ایک اونچے درجے کے ناٹک لکھنے والے ہیں۔ ان کی کتنی ہی سُندر کتابیں آج ہمارے سامنے موجود ہیں۔ یہ کتاب بھی پانچ انکوں میں اُنھیں کا ایک ناٹک ہے۔ ۱۹۳۸ میں جب سیٹھ جی افریقہ سے ہندستان لوٹ رہے تھے تو جہاز میں ہی اس کتاب کا پلاٹ اُن کے دماغ میں تیار ہوا تھا۔ افریقہ میں اُنھوں نے جو کچھ دیکھا اور وہاں ہندستانیوں کی حالت کو جہاں تک بھی اُنھوں نے سُنا اور سمجھا، اس پلاٹ کی شکل میں اُن کے دماغ میں چکر کاٹنے لگا۔ اور ۱۹۴۱ میں جبل پور جیل میں وہی سب کچھ اُن کے قلم سے اس کتاب کی شکل

में निकला. आज जो अमीरी और ग़रीबी के बीच इतना बड़ा फ़रक़ दिखाई पड़ता है, ग़रीबों पर जो बीतती है और उससे जो बदअमनी फैल रही है उसकी एक झांकी हमें इस किताब में देखने को मिलती है. इस किताब पर सेठ जी को हिन्दुस्तानी एकेडेमी, इलाहाबाद की तरफ़ से १२००) का इनाम भी १९४५ में मिल चुका है. इस किताब का प्लाट यों है :—

लक्ष्मीदास अफ्रीका में एक बड़े अमीर व्यापारी हैं. अचला उन्हीं की ख़ूबसूरत जवान लड़की है. विद्याभूषण अचला का एक सुन्दर, नौजवान मगर ग़रीब दोस्त है. दोनों आपस में शादी करना चाहते हैं. मगर विद्याभूषण कहता है कि जब तक अचला अपने बाप की तमाम दौलत और जायदाद को, जिसको उन्होंने ग़रीबों का ख़ून बहा कर बड़ी बेरहमी और ज़ुल्म से पैदा किया था, छोड़ न देगी, वह उससे शादी न करेगा. कुछ दिनों बाद विद्याभूषण अचला को बिना बताए हिन्दुस्तान के लिये रवाना होता है. अचला भी उसका पीछा करती है. जहाज़ पर ही दोनों मिलते हैं. अचला उसकी शर्तों को मान लेती है और हिन्दुस्तान आकर दोनों शादी कर लेते हैं. विद्याभूषण तब भी लक्ष्मीदास के लाख कहने पर भी उसकी दौलत क़बूल नहीं करता और ग़रीबी में ही ख़ुश रहता है. कुछ दिनों बाद अचला का बच्चा बीमार पड़ता है और इस मजबूरी की वजह से अपने पति की राय से अचला को अपने बाप से मदद लेनी पड़ती है. धीरे धीरे अचला का जीवन फिर अमीरी में बदल जाता है. इसी वजह से मियाँ बीवी में खटपट होती है और अचला अपने पति

میں نکلا۔ آج جو امیری اور غریبی کے بیچ اتنا بڑا فرق دکھائی پڑتا ہے، غریبوں پر جو بیتتی ہے اور اس سے جو بدامنی پھیل رہی ہے اس کی ایک جھانکی ہمیں اس کتاب میں دیکھنے کو ملتی ہے۔ اس کتاب پر سیٹھ جی کو ہندستانی اکیڈیمی، الہ آباد کی طرف سے ۱۲۰۰ روپیہ کا انعام بھی ۱۹۴۵ میں مل چکا ہے۔ اس کتاب کا پلاٹ یوں ہے:—

لکشمی داس افریقہ میں ایک بڑے امیر بیوپاری ہیں۔ اچلا انھیں کی خوبصورت جوان لڑکی ہے۔ ودیا بھوشن اچلا کا ایک سندر، نوجوان مگر غریب دوست ہے۔ دونوں آپس میں شادی کرنا چاہتے ہیں مگر ودیا بھوشن کہتا ہے کہ جب تک اچلا اپنے باپ کی تمام دولت اور جائداد کو، جس کو انھوں نے غریبوں کا خون بہاکر بڑی بیرحمی اور ظلم سے پیدا کیا تھا، چھوڑ نہ دے گی وہ اس سے شادی نہ کرے گا۔ کچھ دنوں بعد ودیا بھوشن اچلا کو بنا بتائے ہندستان کے لئے روانہ ہوتا ہے۔ اچلا بھی اس کا پیچھا کرتی ہے۔ جہاز پر ہی دونوں ملتے ہیں۔ اچلا اس کی شرطوں کو مان لیتی ہے اور ہندستان آکر دونوں شادی کر لیتے ہیں۔ ودیا بھوشن تب بھی لکشمی داس کے لاکھ کہنے پر بھی اس کی دولت قبول نہیں کرتا اور غریبی میں ہی خوش رہتا ہے۔ کچھ دنوں بعد اچلا کا بچہ بیمار پڑتا ہے اور اس مجبوری کی وجہ سے اپنے پتی کی رائے سے اچلا کو اپنے باپ سے مدد لینی پڑتی ہے۔ دھیرے دھیرے اچلا کا جیون پھر امیری میں بدل جاتا ہے۔ اسی وجہ سے میاں بیوی میں کھٹ پٹ ہوتی ہے اور اچلا اپنے پتی

को छोड़ अपने बेटे सरस्वती चन्द को ले अफ्रीका अपने बाप के पास चली जाती है. तीन साल में ही अचला का मन फिर अपने पति के लिये बेचैन हो उठता है. विद्याभूषण की हालत भी बुरी हो जाती है. वह बुरी तरह शराब और सिगरेट पीने लगता है. अचला अपने बाप की मरज़ी के ख़िलाफ़ हिन्दुस्तान चली आती है. मगर अपने पति से छिप कर एक गाँव में एक आदर्श जीवन बिताने लगती है. लक्ष्मीदास इसी दुख में मर जाते हैं और अचला उनकी सारी मिल्कियत दान कर देती है. इसी ख़बर को अख़बारों में देख कर विद्याभूषण ख़ुद जाकर अचला से मिलता है मगर दिल की बीमारी की वजह से वहीं फ़ौरन मर जाता है. अचला उसी तरह चुपचाप इज़्ज़त के साथ अपने दिन काटती रहती है. उसका लड़का आगे चल कर एक बड़ा कलाकार हो जाता है.

किताब में कहीं कहीं कुछ भाव दिल को हिला देने वाले हैं. ज़बान आसान हिन्दी है जिसे सब समझ सकते हैं.

—गनेश प्रसाद

کو چھوڑ اپنے بیٹے سرسوتی چند کو لے افریقہ اپنے باپ کے پاس چلی جاتی ہے. تین سال میں ہی اچلا کا من پھر اپنے پتی کے لئے بےچین ہو اٹھتا ہے. ودیابھوشن کی حالت بھی بری ہو جاتی ہے. وہ بری طرح شراب اور سگریٹ پینے لگتا ہے. اچلا اپنے باپ کی مرضی کے خلاف ہندستان چلی آتی ہے. مگر اپنے پتی سے چھپ کر ایک گاؤں میں ایک آدرش جیون بتانے لگتی ہے. لکشمی داس اسی دکھ میں مر جاتے ہیں اور اچلا ان کی ساری ملکیت دان کر دیتی ہے. اسی خبر کو اخباروں میں دیکھ کر ودیابھوشن خود جا کر اچلا سے ملتا ہے مگر دل کی بیماری کی وجہ سے وہیں فوراً مر جاتا ہے. اچلا اسی طرح چپ چاپ عزت کے ساتھ اپنے دن کاٹتی رہتی ہے. اس کا لڑکا آگے چل کر ایک بڑا کلاکار ہو جاتا ہے.

کتاب میں کہیں کہیں کچھ بھاؤ دل کو ہلا دینے والے ہیں. زبان آسان ہندی ہے جسے سب سمجھ سکتے ہیں.

—گنیش پرشاد

हमारी राय

पंजाब की बरबादी—

पंजाब की दर्दनाक ख़बरें सारे मुल्क में फैल चुकी हैं. साफ़ ज़ाहिर है कि यह काम न बेचारी आम जनता का है. न सिर्फ़ थोड़े से सिरफिरे धर्मान्ध या फ़िरक़ापरस्त पागलों का. यह काम है बाज़ाब्ता संगठित जत्थों का जिनके पास बम, बम फेंकने की बन्दूक़ों, मशीन गनों जैसे क़ीमती और भारी हथियारों के अलावा सब तरह का सामान और पैसा है और जो मज़े में एक जगह से दूसरी जगह, एक ज़िले से दूसरे ज़िले आते जाते रहते हैं. सैकड़ों और हज़ारों को गाजर मूली की तरह काटते हैं, गांव के गांव जला देते हैं और तेज़ी से चलती हुई रेलगाड़ियों को रोक कर उनके मुसाफ़िरों का सफ़ाया कर देते हैं. इन जत्थों में क़रीब क़रीब सब फ़ौज से लौटे हुए सिपाही हैं और इनके सरदार सब इसी तरह के फ़ौजी अफ़सर हैं. हमने यह भी सुना है कि कुछ ज़िलों में जैसे गुड़गांव और रोहतक में कई जगह हज़ारों हिन्दुओं सिखों और मुसलमानों ने मिलकर बैठकर यह क़समें खाईं कि हम आपस में मेल से रहेंगे और एक दूसरे की हिफ़ाज़त करेंगे. अपनी इस क़सम को पक्का करने के लिये सबने वहां के रिवाज के मुताबिक़ एक लोटे में नमक डाला, फिर भी इन जत्थों का काम जारी है.

जो हज़ारों और लाखों मुसीबतज़दा लोग दूसरे सूबों और शहरों में पनाह ले रहे हैं उनमें एक ख़ासी तादाद ऐसे लोगों की भी है जिनका काम ही दूसरी जगह के अपने हम मज़हब

ہماری رائے

پنجاب کی بربادی—

پنجاب کی دردناک خبریں سارے ملک میں پھیل چکی ہیں۔ صاف ظاہر ہے کہ یہ کام نہ بیچاری عام جنتا کا ہے، نہ صرف تھوڑے سے سرپھرے دھرماندھ یا فرقہ پرست پاگلوں کا۔ یہ کام ہے باضابطہ سنگٹھت جتھوں کا جن کے پاس بم، بم پھینکنے کی بندوقوں، مشین گنوں جیسے قیمتی اور بھاری ہتھیاروں کے علاوہ سب طرح کا سامان اور پیسہ ہے اور جو مزے میں ایک جگہ سے دوسری جگہ، ایک ضلع سے دوسرے ضلع آتے جاتے رہتے ہیں۔ سیکڑوں اور ہزاروں کو گاجر مولی کی طرح کاٹتے ہیں، گانوں کے گانوں جلا دیتے ہیں اور تیزی سے چلتی ہوئی ریل گاڑیوں کو روک کر ان کے مسافروں کا صفایا کر دیتے ہیں۔ ان جتھوں میں قریب قریب سب فوج سے لوٹے ہوئے سپاہی ہیں اور ان کے سردار سب اسی طرح کے فوجی افسر ہیں۔ ہم نے یہ بھی سنا ہے کہ کچھ ضلعوں میں جیسے گڑگانوں اور روہتک میں کئی جگہ ہزاروں ہندوؤں، سکھوں اور مسلمانوں نے مل کر بیٹھ کر یہ قسمیں کھائیں کہ ہم آپس میں میل سے رہیں گے اور ایک دوسرے کی حفاظت کریں گے۔ اپنی اس قسم کو پکا کرنے کے لئے سب نے وہاں کے رواج کے مطابق ایک لوٹے میں نمک ڈالا، پھر بھی ان جتھوں کا کام جاری ہے۔

جو ہزاروں اور لاکھوں مصیبت زدہ لوگ دوسرے صوبوں اور شہروں میں پناہ لے رہے ہیں ان میں ایک خاصی تعداد ایسے لوگوں کی بھی ہے جن کا کام ہی دوسری جگہ کے اپنے ہم مذہب

लोगों को अपने ऊपर ज़ुल्मों की कहानी बढ़ा बढ़ा कर सुनाना, जोश दिलाना और इस आग को फैलाना मालूम होता है. पंजाब के दोनों हिस्सों के बीच की फ़ौज के ख़िलाफ़ जान बचा कर भागते हुए लोगों को क़त्ल करने की शिकायतें बार बार आ रही हैं. शेख़ुपुरा में पंडित जवाहर लाल नेहरू को खुले बताया गया कि उस शहर के १५ हज़ार हिन्दुओं और सिखों में से दस हज़ार को फ़ौज और पुलिस ने क़त्ल किया वग़ैरा वग़ैरा. यह सब कौन करा रहा है और कैसे और क्यों हो रहा है ?

इंगलिस्तान ही के एक मशहूर इन्साफ़ पसन्द अख़बार "मैनचैस्टर गारजियन ने हाल के एक लेख में चार बातों को साफ़ साफ़ माना है—

(१) यह कि इस तरह के हमले बग़ैर पहले से पूरी पूरी और देर तक की तय्यारी और बाज़ब्ता संगठन के नहीं हो सकते थे.

(२) यह कि पुलिस ने बहुत पहले से अंगरेज़ सरकार को इनकी इत्तला दे दी थी, और अंगरेज़ों को अच्छी तरह मालूम था कि बाउन्डरी कमीशन का फ़ैसला होते ही क्या होने वाला है.

(३) यह कि अभी तक हकूमत की बाग हिन्दुस्तानियों के हाथों में नहीं है. ,अंगरेज़ों ही के हाथों में है. हिन्दुस्तान और पाकिस्तान दोनों तरफ़ की फ़ौजों का एक सुप्रीम कमान्डर अंग्रेज़ है. दोनों तरफ़ की फ़ौजों के अलग अलग कमान्डर इन चीफ़ भी अंग्रेज़ हैं, इधर का गवरनर जनरल अंग्रेज़ और उधर पच्छिम पंजाब का गवरनर अंग्रेज़.

(४) यह कि अगर वह लोग जिनके हाथों में मुल्क की

لوگوں کو اپنے اوپر ظلموں کی کہانی بڑھا بڑھا کر سنانا، جوش دلانا اور اس آگ کو پھیلانا معلوم ہوتا ہے۔ پنجاب کے دونوں حصّوں کے بیچ کی فوج کے خلاف جان بچا کر بھاگتے ہوئے لوگوں کو قتل کرنے کی شکایتیں بار بار آ رہی ہیں۔ شیخوپورہ میں پنڈت جواہر لال نہرو کو کھلے بتایا گیا کہ اُس شہر کے ۱۵ ہزار ہندوؤں اور سکھوں میں سے دس ہزار کو فوج اور پولیس نے قتل کیا وغیرہ وغیرہ۔ یہ سب کون کرا رہا ہے اور کیسے اور کیوں ہو رہا ہے؟

انگلستان ہی کے ایک مشہور انصاف پسند اخبار "مین چیسٹر گارجین" نے حال کے ایک لیکھ میں چار باتوں کو صاف صاف مانا ہے—

(۱) یہ کہ اس طرح کے حملے بغیر پہلے سے پوری پوری اور دیر تک کی تیاری اور باضابطہ سنگٹھن کے نہیں ہو سکتے تھے۔

(۲) یہ کہ پولیس نے بہت پہلے سے انگریز سرکار کو ان کی اطلاع دے دی تھی، اور انگریزوں کو اچھی طرح معلوم تھا کہ باؤنڈری کمیشن کا فیصلہ ہوتے ہی کیا ہونے والا ہے۔

(۳) یہ کہ ابھی تک حکومت کی باگ ہندوستانیوں کے ہاتھوں میں نہیں ہے۔ انگریزوں ہی کے ہاتھوں میں ہے۔ ہندوستان اور پاکستان دونوں طرف کی فوجوں کا ایک سپریم کمانڈر انگریز ہے، دونوں طرف کی فوجوں کے الگ الگ کمانڈر ان چیف بھی انگریز ہیں، اِدھر کا گورنر جنرل انگریز اور اُدھر پچھم پنجاب کا گورنر انگریز۔

(۴) یہ کہ اگر وہ لوگ جن کے ہاتھوں میں ملک کی

असली बाग है चाहते तो यह सब बुरी से बुरी आफ़तें आन की आन में बन्द हो सकती थीं और बन्द हो सकती हैं.

हमें ख़याल होता है कि शायद पाकिस्तान और हिन्दुस्तान दोनों के सच्चे हिन्दुस्तानी देश भक्त नेता अब तक यह महसूस करने लगे होंगे कि उनका अभी से आज़ादी के ढोल पीटना और ख़ुशियां मनाना थोथा था और जनता को अनजाने धोके में डालना था. मुल्क की असली बाग पूरी तरह ग़ैरों के हाथों में है और कसती जा रही है. हमें पिछले हज़ार बरस के देश भर में फैले हुए मुसलिम राज, हिन्दूराज या मिले जुले राज के इतिहास में से कोई एक पन्ना निकाल कर दिखलादे जिसमें लिखा हो कि कहीं की भी एक मज़हब की जनता ने अपने दूसरे मज़हब के पड़ोसियों पर इस तरह के हमले किये हैं. यह एक बाज़ाब्ता प्लैन है हिन्दू, मुसलिम और सिख जनता से यह मनवा लेने की कि आख़िर अंगरेज़ी राज अपने कहलाने वाले राज से अच्छा था, हिन्दुस्तानियों को नाक़ाबिल साबित करने की और इंगलिस्तान के फ़ौजी पंजे को इस मुल्क के ऊपर और ज़्यादा मज़बूती के साथ कस लेने की.

इलाज भी साफ़ है. हमें अपनी आंखों की पट्टियों को खोलना है, अपने दिलों को जीतना और साफ़ करना है. हिन्दू मुसलमानों को मिलाना है और सच्ची आज़ादी हासिल करने को इससे ज़्यादा क़ुरबानियों के लिये तय्यार होना है. काम पहाड़ की चढ़ाई है पर दूसरा कोई रास्ता नहीं.

१/९/४७ —सुन्दरलाल

اصلی باگ ہو چاہتے تو یہ سب بُری سے بُری آفتیں آن کی آن میں بند ہوسکتی تھیں اور بند ہوسکتی ہیں۔

ہمیں خیال ہوتا ہو کہ شاید پاکستان اور ہندستان دونوں کے سچّے ہندستانی دیش بھگت نیتا اب تک یہ محسوس کرنے لگے ہونگے کہ اُن کا ابھی سے آزادی کے ڈھول پیٹنا اور خوشیاں منانا تھوتھا تھا اور جنتا کو اَن جانے دھوکے میں ڈالنا تھا. مُلک کی اصلی باگ پوری طرح غیروں کے ہاتھوں میں ہو اور کستی جارہی ہو. ہمیں پچھلے ہزار برس کے دیش بھر میں پھیلے ہوئے مسلم راج، ہندو راج یا ملے جلے راج کے اتہاس میں سے کوئی ایک مذہب کی جنتا نے اپنے دوسرے مذہب کے پڑوسیوں پر اس طرح کے حملے کیے ہیں. یہ ایک باضابطہ پلین ہو ہندو، مسلم اور سکھ جنتا سے یہ منوا لینے کی کہ آخر انگریزی راج اپنے کہلانے والے راج سے اچھا تھا، ہندستانیوں کو ناقابل ثابت کرنے کی اور انگلستان کے فوجی پنجے کو اس ملک کے اوپر اور زیادہ مضبوطی کے ساتھ کس لینے کی۔

علاج بھی صاف ہو. ہمیں اپنی آنکھوں کی پٹیوں کو کھولنا ہو، اپنے دلوں کو جیتنا اور صاف کرنا ہو، ہندو مسلمانوں کو ملانا ہو اور سچی آزادی حاصل کرنے کو اس سے زیادہ قربانیوں کے لئے تیار ہونا ہو. کام پہاڑ کی چڑھائی ہو پر دوسرا کوئی راستہ نہیں۔

—— سندر لال

۴۷/۹/۱

बला की बरदाश्त—

हिज़ एक्सेलेंसी माउन्ट बेटन पर निछावर हो जाने को जी चाहता है. उन्होंने सन् ४८ के जून के आख़िर में पूरी आज़ादी की बात कह कर सन् २१ के उन गांधी जी को भी बहुत पीछे छोड़ दिया है जिन्होंने साल भर में स्वराज दिलाने की बात कह कर हिन्दुस्तान के छोटे बड़े सभी को पागल बना दिया था. हिन्दुस्तान के हिन्दू मुसलमान राज नेताओं को आज आज़ादी की देवी सामने खड़ी नज़र आने लगी और उनकी वजह से सारी जनता को भी वह कुछ कुछ दिखाई देने लगी है. यही वजह है कि करोड़ों का माल लुट रहा है और लाखों जाने ख़तम हो रही हैं पर सब के सब उसकी कुछ परवाह किये बग़ैर जून '४८ की तरफ़ दौड़े जा रहे हैं. लाट साहब ने हमारे राज नेताओं में बला की बरदाश्त पैदा कर दी है. शायद यह बरदाश्त उनमें लाट साहब के पास कुर्सी पर बैठते ही अपने आप आ गई हो पर इसमें शक नहीं कि आ ज़रूर गई है.

(३०५)

आज अगर कांग्रेस कांग्रेस होती और लीग लीग होती तो आज जो ज़ुल्म हिन्दुस्तानियों पर टूट रहे हैं उनके शुरू होते ही ज़मीन आसमान एक कर दिये गए होते. दोनों ने मिल कर एक ही आवाज़ उठाई होती—मौजूदा गवरनर जनरल या गवरनर जनरलों को फ़ौरन वापस बुलाया जाय और उनकी कैबिनेट फ़ौरन बर्ख़ास्त कर दी जाय—पर अब तो दोनों अगर चुप नहीं बैठी हैं तो ऐसे हिल रही हैं मानों उन पर किसी ने पानी फूक कर छिड़क दिया हो. न जाने क्यों वह उस काम को अपना ही समझ

بلا کی برداشت—

ہز ایکسلنسی ماؤنٹ بیٹن پر نچھاور ہو جانے کو جی چاہتا ہے۔ اُنھوں نے ۴۸ء کے جون کے آخر میں پوری آزادی کی بات کہکر ۲۱ء کے اُن گاندھی جی کو بھی بہت پیچھے چھوڑ دیا ہے جنھوں نے سال بھر میں سوراج دلانے کی بات کہکر ہندستان کے چھوٹے بڑے سبھی کو پاگل بنا دیا تھا۔ ہندستان کے ہندو مسلمان راج نیتاؤں کو آج آزادی کی دیوی سامنے کھڑی نظر آنے لگی اور اُن کی وجہ سے ساری جنتا کو بھی وہ کچھ کچھ دکھائی دینے لگی ہے۔ یہی وجہ ہے کہ کروڑوں کا مال لُٹ رہا ہے اور لاکھوں جانیں ختم ہو رہی ہیں پر سب کے سب اُس کی کچھ پرواہ کئے بغیر جون ۴۸ کی طرف دوڑے جا رہے ہیں۔ لاٹ صاحب نے ہمارے راج نیتاؤں میں بلا کی برداشت پیدا کر دی ہے۔ شاید یہ برداشت اُن میں لاٹ صاحب کے پاس کُرسی پر بیٹھتے ہی اپنے آپ آ گئی ہو پر اِس میں شک نہیں کہ آ ضرور گئی ہے۔ (۳۰۵)

آج اگر کانگریس کانگریس ہوتی اور لیگ لیگ ہوتی تو آج جو ظلم ہندستانیوں پر ٹوٹ رہے ہیں اُن کے شروع ہوتے ہی زمین آسمان ایک کر دئے گئے ہوتے۔ دونوں نے مل کر ایک ہی آواز اُٹھائی ہوتی— موجودہ گورنر جنرل یا گورنر جنرلوں کو فوراً واپس بُلایا جائے اور اُن کی کیبنیٹ فوراً برخاست کر دی جائے— پر اب تو دونوں اگر چُپ نہیں بیٹھی ہیں تو ایسی ہل رہی ہیں مانوں اُن پر کسی نے پانی پھونک کر چھڑک دیا ہو۔ نہ جانے کیوں وہ اُس کام کو اپنا ہی سمجھ

रहीं हैं जिसकी पूरी ज़िम्मेदारी असल में उनकी नहीं है. मैनचेस्टर गार्जियन ने इस जादू को यह कर तोड़ दिया है कि अभी हिन्दुस्तान में अंग्रेज़ों का ही राज है, क्योंकि वहां के गवरनर जनरल और कमान्डर इन चीफ़ और और भी बड़े बड़े फ़ौजी अफ़सर और कई गवरनर तक अंग्रेज़ ही हैं. पर इस जादू के तोड़ ने भी कांग्रेस और लीग बीवियों पर अभी तक कोई असर नहीं किया. इस लिये उनकी तरफ़ से हमको मजबूर होकर यह कहना पड़ता है कि.—

हिन्दुस्तानी और पाकिस्तानी दोनों सरकारें इस क़ाबिल साबित नहीं हुई कि वह हिन्दुस्तान और पाकिस्तान की जान माल की हिफ़ाज़त कर सकें. और अब उनको चाहिये कि जितनी जल्दी हो सके वह अपना काम किसी और के सिपुर्द करें और अगर किसी वजह से वह अपनी यह ज़िम्मेदारी अपने गवरनरों पर फेंक रही हों तो उनको इस्तीफ़ा देने के लिये मजबूर करें और अगर गवरनर भी अपनी ज़िम्मेदारी फ़ौजी, सिविल या पुलिस अफ़सरों के सिर मढ़ना चाहें तो उन फ़ौजी सिविल या पुलिस अफ़सरों के ख़िलाफ़ मुक़द्दमे चलाये जांय और उनको फ़ौरन मुअत्तल कर दिया जाय. अगर यह सब नहीं किया जाता तो इस लूट और ख़ून के ज़िम्मेदार वह गुन्डे और सिर फिरे नहीं समझे जा सकते जिनकी बातों से हमारी आखों के लिये यह जुल्म ढाए गए हैं. इस लूट और ख़ून की ज़िम्मेदारी से हिन्दुस्तानी सरकार किसी तरह नहीं बच सकती और बरतानिया तो किसी तरह अपने को कम ज़िम्मेदार नहीं समझ सकता.

अगर ऊपर बताई बातों में से कोई एक भी न हुई तो हमारा

(२५४)

رہی ہیں جس کی پوری ذمّہ داری اصل میں اُن کی نہیں ہے۔ مینچیسٹر گارجین نے اِس جادو کو یہ کہکر توڑ دیا کہ ابھی ہندستان میں انگریزوں کا ہی راج ہے، کیونکہ وہاں کے گورنر جنرل اور کمانڈر اِن چیف اور بھی بڑے بڑے فوجی افسر اور کئی گورنر تک انگریز ہی ہیں۔ پر اِس جادو کے توڑنے بھی کانگریس اور لیگ بیویوں پر ابھی تک کوئی اثر نہیں کیا۔ اِس لئے اُن کی طرف سے ہم کو مجبور ہوکر یہ کہنا پڑتا ہے کہ:-

ہندستانی اور پاکستانی دونوں سرکاریں اِس قابل ثابت نہیں ہوئیں کہ وہ ہندستان اور پاکستان کی جان مال کی حفاظت کر سکیں۔ اور اب اُن کو چاہئے کہ جتنی جلدی ہو سکے وہ اپنا کام کسی اور کے سپرد کریں اور اگر کسی وجہ سے وہ اپنی یہ ذمّہ داری اپنے گورنروں پر پھینک رہی ہوں تو اُن کو استعفیٰ دینے کے لئے مجبور کریں اور اگر گورنر بھی اپنی ذمّہ داری فوجی، سول یا پولیس افسروں کے سر منڈھنا چاہیں تو اُن فوجی سول یا پولیس افسروں کے خلاف مقدمے چلائے جائیں اور اُن کو فوراً معطّل کر دیا جائے۔ اگر یہ سب نہیں کیا جاتا تو اِس لوٹ اور خون کے ذمّہ دار وہ گنڈے اور سر پھرے نہیں سمجھے جا سکتے جن کی باتوں سے ہماری آنکھوں کے لئے یہ ظلم ڈھائے گئے ہیں۔ اِس لوٹ اور خون کی ذمّہ داری سے ہندستانی سرکار کسی طرح نہیں بچ سکتی اور برطانیہ تو کسی طرح اپنے کو کم ذمّہ دار نہیں سمجھ سکتا۔

اگر اوپر بتائی باتوں میں سے کوئی ایک بھی نہ ہوئی تو ہمارا

(۲۵۵)

यह ख़याल है कि यह लूट पाट और यह मार धाड़ हरगिज़ कम न होगी बल्कि बढ़ते बढ़ते शर्मनाक घरेलू लड़ाई का रूप ले लेगी और फिर हमतो यही कहते रहेंगे कि हमारे राज नेताओं में है बला की बरदाश्त. !

—भगवान दीन
१—९—४७

ख़ून की बाढ़ कैसे रुके ?

बदला लेने की आग हिन्दू और मुसलमान दोनों में भड़क उठी है और वह हर मिनट तेज़ी के साथ बढ़ती जा रही है क्योंकि हर मिनट उसको ख़ूराक मिल रही है. वह बदला लेने की आग आसानी से सरकार के सपुर्द नहीं की जा सकती क्योंकि सरकार ने अभी तक यह साबित नहीं किया कि वह बदला लेने वालों की बदले की प्यास बुझा सकती है. पंडित जवाहर लाल जी का यह कहना कि बदला लेने का काम जनता का नहीं सरकार का है ठीक है सही, पर जनता के गले उतरने वाला हरगिज़ नहीं है क्योंकि हालही में जनता अपनी ताक़त से कांगरेसियों को जेल से निकालने की कोशिश कर चुकी है और उन कोशिशों के लिये बहुतों ने उसकी पीठ भी ठोकी है और उसने उस कोशिश का कुछ नतीजा भी देखा है. इस लिये वह आसानी से अपना यह काम सरकार के हाथ में न सौंपेगी. यह ठीक है कि इसके नतीजे बहुत बुरे होंगे पर भड़क में बुरे नतीजों की तरफ़ ध्यान नहीं जायगा. इस लिये अब सिवाय इसके

یہ خیال ہی کہ یہ لوٹ پاٹ اور یہ مار دھاڑ ہرگز کم نہ ہوگی بلکہ بڑھتے بڑھتے شرمناک گھریلو لڑائی کا روپ لے لے گی اور پھر ہم تو یہی کہتے رہیں گے کہ ہمارے راج نیتاؤں میں ہی بلا کی برداشت!

—بھگوان دین
۱—۹—۴۷

خون کی باڑھ کیسے رُکے؟

بدلہ لینے کی آگ ہندو اور مسلمان دونوں میں بھڑک اٹھی ہی اور وہ ہر منٹ تیزی کے ساتھ بڑھتی جا رہی ہی کیونکہ ہر منٹ اس کو خوراک مل رہی ہی۔ وہ بدلہ لینے کی آگ آسانی سے سرکار کے سپرد نہیں کی جاسکتی کیونکہ سرکار نے ابھی تک یہ ثابت نہیں کیا کہ وہ بدلہ لینے والوں کی بدلے کی پیاس بجھا سکتی ہی۔ پنڈت جواہر لال جی کا یہ کہنا کہ بدلہ لینے کا کام جنتا کا نہیں سرکار کا ہی ٹھیک ہی صحیح، پر جنتا کے گلے اترنے والا ہرگز نہیں ہی کیونکہ حال ہی میں جنتا اپنی طاقت سے کانگریسیوں کو جیل سے نکالنے کی کوشش کر چکی ہی اور ان کوششوں کے لئے بہتوں نے اس کی پیٹھ بھی ٹھوکی ہی اور اس نے اس کوشش کا نتیجہ بھی دیکھا ہی۔ اس لئے وہ آسانی سے اپنا یہ کام سرکار کے ہاتھ میں نہ سونپے گی۔ یہ ٹھیک ہی کہ اس کے نتیجے بہت برے ہوں گے پر بھڑک میں برے نتیجوں کی طرف دھیان نہیں جائے گا۔ اس لئے اب سوائے اس کے

कोई तरीक़ा नहीं है कि सरकार या तो ख़ुद खुल्लम खुल्ला नेक नियती से जनता की रहनुमाई करे और उसकी लीडर बन बैठे और कुछ दूर उसके साथ चलकर उसको ठीक राह पर ले आए और अमन क़ायम होने के बाद वही तरीक़े अख़्तियार करे जो आज कलकत्ते में गांधी जी और सुहरावर्दी साहब मिलकर कर रहे हैं. इस रास्ते से कामयाबी बहुत जल्दी होगी. फ़ौजों की मदद से अव्वल तो यह मुमकिन नहीं कि जल्दी से भड़की हुई आग बुझाई जा सके और अगर बहुत ताक़त के ज़रिये किसी तरह वह बुझाई भी जा सकी तो बुझेगी नहीं दबी रहेगी और फिर कभी भी भड़क उठेगी.

यह तो समझ ही लेना चाहिये कि यह आग लगी हुई नहीं है लगाई गई है—नहीं तो क्या कभी सूबों के बटवारे नहीं हुए हैं? बम्बई से सिन्ध काटा गया कोई ख़ून नहीं हुआ. पंजाब से फ्रांटियर काटा गया कोई जान नहीं गई. एन. डबल्यू. पी. का यू. पी. बना कोई माल नहीं लुटा. फिर आज ही यह क्यों? लगी आग बुझाना मुशिकल होता है नामुमकिन भी होता है पर लगाई आग बुझाना बहुत आसान होता है. गांधी जी और सुहरावर्दी की तरह दो साफ़ दिल और सच्चे दिल बड़ी आसानी से लगाई को बुझा सकते हैं और यह ख़ून की बाढ़ आसानी से रोकी जा सकती है.

—भगवान दीन
१—९—४७

کوئی طریقہ نہیں ہے کہ سرکار یا تو خود کھلم کھلا نیک نیتی سے جنتا کی رہنمائی کرے اور اس کی لیڈر بن بیٹھے اور کچھ دور اس کے ساتھ چل کر اس کو ٹھیک راہ پر لے آئے اور امن قائم ہونے کے بعد وہی طریقے اختیار کرے جو آج کلکتے میں گاندھی جی اور سہروردی صاحب مل کر کر رہے ہیں. اس راستے سے کامیابی بہت جلدی ہوگی. فوجوں کی مدد سے اول تو یہ ممکن نہیں کہ جلدی سے بھڑکی ہوئی آگ بجھائی جا سکے اور اگر بہت طاقت کے ذریعے کسی طرح وہ بجھائی بھی جا سکی تو بجھے گی نہیں دبی رہے گی اور پھر کبھی بھی بھڑک اٹھے گی.

یہ تو سمجھ ہی لینا چاہئے کہ یہ آگ لگی ہوئی نہیں ہے لگائی گئی (۲۵۷)
ہے—نہیں تو کیا کبھی صوبوں کے بٹوارے نہیں ہوئے ہیں؟ بمبئی سے سندھ کاٹا گیا کوئی خون نہیں ہوا. پنجاب سے فرانٹیر کاٹا گیا کوئی جان نہیں گئی. این. ڈبلیو. پی. کا یو. پی. بنا کوئی مال نہیں لٹا. پھر آج ہی یہ کیوں؟ لگی آگ بجھانا مشکل ہوتا ہے ناممکن بھی ہوتا ہے پر لگائی آگ بجھانا بہت آسان ہوتا ہے. گاندھی جی اور سہروردی کی طرح دو صاف دل اور سچے دل بڑی آسانی سے لگائی کو بجھا سکتے ہیں اور یہ خون کی باڑھ آسانی سے روکی جا سکتی ہے.

—بھگوان دین
۱—۹—۴۷

हिंदुस्तानी—

नीचे लिखी गश्ती चिट्ठी विधान सभा, नई दिल्ली के सब मेम्बरों के नाम भेजी गई है—

४८ बाई का बाग़
इलाहाबाद
४ सितम्बर '४७

भाई साहब,

इन्डियन नेशनल कांग्रेस की वर्किंग कमेटी ने सन् १९२१ में यह तजवीज़ पास की थी कि "देवनागरी और उर्दू दोनों लिखावटों में हिन्दुस्तानी" ही कांग्रेस की लिखने बोलने की ज़बान होनी चाहिये. सन् १९२५ में इन्डियन नेशनल कांग्रेस ने अपने विधान में भी यह बात शामिल करली कि हिन्दुस्तानी ही कांग्रेस की दफ़्तरी ज़बान है. सन् १९३८ में वर्किंग कमेटी ने अपने एक ठहराव के ज़रिये फिर यह बात साफ़ करदी कि हिन्दुस्तानी ही मुल्क की "क़ौमी ज़बान" है और "हिन्दुस्तानी उत्तर के ज़्यादातर लोगों की वह ज़बान है जो देवनागरी या उर्दू दोनों लिखावटों में लिखी जा सकती है." इस तरह कांग्रेस ने बहुत सोच समझ कर यह तय किया है कि प्रान्तों प्रान्तों के बीच काम के लिये और कुल हिन्द कामों के लिये हिन्दुस्तान की एक क़ौमी ज़बान हो. और वह ज़बान हिन्दुस्तानी हो जो नागरी और उर्दू दोनों हरफ़ों में लिखी जा सके.

इसमें यह साफ़ कर दिया गया है कि हिन्दुस्तानी का मतलब क्या है. हिन्दुस्तानी वह खड़ी बोली है जो उत्तर हिन्दुस्तान

ہندستانی—

نیچے لکھی گشتی چٹھی ودھان سبھا، نئی دلّی کے سب ممبروں کے نام بھیجی گئی ہے—

۴۸ بائی کا باغ
الہ آباد
۴ ستمبر سنہ ۴۷ء

بھائی صاحب،

انڈین نیشنل کانگریس کی ورکنگ کمیٹی نے سنہ ۱۹۲۱ء میں یہ تجویز پاس کی تھی کہ "دیوناگری اور اردو دونوں لکھاوٹوں میں ہندستانی" ہی کانگریس کی لکھنے بولنے کی زبان ہونی چاہئے. سنہ ۱۹۲۵ء میں انڈین نیشنل کانگریس نے اپنے ودھان میں بھی یہ بات شامل کرلی کہ ہندستانی ہی کانگریس کی دفتری زبان ہے. سنہ ۱۹۳۸ء میں ورکنگ کمیٹی نے اپنے ایک ٹھہراؤ کے ذریعے پھر یہ بات صاف کردی کہ ہندستانی ہی ملک کی "قومی زبان" ہے اور "ہندستانی اُتّر کے زیادہ تر لوگوں کی وہ زبان ہے جو دیوناگری یا اردو دونوں لکھاوٹوں میں لکھی جاسکتی ہے." اس طرح کانگریس نے بہت سوچ سمجھ کر یہ طے کیا ہے کہ پرانتوں پرانتوں کے بیچ کام کے لئے اور کُل ہند کاموں کے لئے ہندستان کی ایک قومی زبان ہو. اور وہ زبان ہندستانی ہو جو ناگری اور اردو دونوں حرفوں میں لکھی جاسکے.

اس میں یہ صاف کردیا گیا ہے کہ ہندستانی کا مطلب کیا ہے. ہندستانی وہ کھڑی بولی ہے جو اُتّر ہندستان

(۳۵۴)

के बहुत से इलाक़े में हिन्दू मुसलमान सब मिल कर बोलते हैं, जो हिन्दी उर्दू दोनों की बुनियाद है, और जो देश भर के ज़्यादातर लोग समझते हैं. संस्कृत भरी हिन्दी और फ़ारसी अरबी भरी उर्दू दोनों के बहुत से देश भक्त जानकारों की यह राय है कि इस हिन्दुस्तानी को अगर खुले दिल से बिना तरफ़दारी किये हिन्दी और उर्दू दोनों के ख़ज़ानों से और कुछ बाहरी बोलियों के ख़ज़ानों से भी मालामाल किया जावे और आम जनता की बोली से भी पूरा फ़ायदा उठाया जावे तो हमारी यह हिन्दुस्तानी हिन्दी और उर्दू दोनों की अलग अलग बहती धाराओं को पूरी तरह मिलाकर एक कर सकती है, उन दोनों से ज़्यादा मालामाल बन सकती है. और धर्म, फ़लसफ़े, साइंस वग़ैरा की ऊँची से ऊँची बातें उसमें कही और लिखी जा सकती हैं. इस तरह हमारी बोली हिन्दुस्तानी देश के फटते हुए दिलों को मिलाने वाली और देश की सब से अनमोल पूंजी है.

दिल्ली की नई विधान सभा देश के आगे के राज काज के ढांचे को तय्यार करने का बहुत बड़ा और गहरी ज़िम्मेवारी का काम कर रही है. विधान सभा की कारवाई के क़ायदों में और हिन्दुस्तानी यूनियन के आगे के विधान के उस मसवदे में जो पं० जवाहर लाल नेहरू ने पेश किया है दोनों में यह मान लिया गया है कि "हिन्दुस्तानी" ही अपनी दोनों शकलों में और दोनों लिखावटों में हिन्दुस्तान की क़ौमी ज़बान है.

इसके बाद हिन्दुस्तान और पाकिस्तान की दो अलग अलग सरकारें बनने का फ़ैसला हुआ. बहुत से देश भक्त हिन्दू और मुसल-

کے بہت سے علاقے میں ہندو مسلمان سب مل کر بولتے ہیں، جو ہندی اردو دونوں کی بنیاد ہے اور جو دیش بھر کے زیادہ تر لوگ سمجھتے ہیں۔ سنسکرت بھری ہندی اور فارسی عربی بھری اردو دونوں کے بہت سے دیش بھگت جانکاروں کی یہ رائے ہے کہ اس ہندستانی کو اگر کھلے دل سے بنا طرفداری کئے ہندی اور اردو دونوں کے خزانوں سے اور کچھ باہری بولیوں کے خزانوں سے بھی مالامال کیا جاوے اور عام جنتا کی بولی سے بھی پورا فائدہ اٹھایا جاوے تو ہماری یہ ہندستانی ہندی اور اردو دونوں کی الگ الگ بہتی دھاراؤں کو پوری طرح ملا کر ایک کر سکتی ہے، ان دونوں سے زیادہ مالامال بن سکتی ہے۔ اور دھرم، فلسفے، سائنس وغیرہ کی اونچی سے اونچی باتیں اس میں کہی اور لکھی جا سکتی ہیں۔ اس طرح ہماری بولی ہندستانی دیش کے پھٹتے ہوئے دلوں کو ملانے والی اور دیش کی سب سے انمول پونجی ہے۔

دلی کی نئی ودھان سبھا دیش کے آگے کے راج کاج کے ڈھانچے کو تیار کرنے کا بہت بڑا اور گہری ذمہ داری کا کام کر رہی ہے۔ ودھان سبھا کی کارروائی کے قاعدوں میں اور ہندستانی یونین کے آگے کے ودھان کے اس مسودے میں جو پنڈت جواہر لال نہرو نے پیش کیا ہے دونوں میں یہ مان لیا گیا ہے کہ "ہندستانی" ہی اپنی دونوں شکلوں میں اور دونوں لکھاوٹوں میں ہندستان کی قومی زبان ہے۔

اس کے بعد ہندستان اور پاکستان کی دو الگ الگ سرکاریں بننے کا فیصلہ ہوا۔ بہت سے دیش بھگت ہندو اور مسلمان

मान भाइयों के दिल पर इससे चोट लगी. कुछ हिन्दू भाइयों ने क़ुदरती तौर पर यह आवाज़ उठाई कि अब हिन्दुस्तान की क़ौमी बोली आसान मिली जुली हिन्दुस्तानी न हो कर हिन्दी हो, और वह दोनों लिपियों में न लिखी जाकर नागरी लिपि में ही लिखी जावे. इसी लिये हमें यह ख़त आप की सेवा में भेजना पड़ा

हम बड़ी नम्रता से आप का ध्यान इस तरफ़ दिलाना चाहते हैं कि हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के अलग अलग हो जाने से देश का यह सवाल हल नहीं हो गया है, और न इस तरह हल हो सकता है. पांच करोड़ मुसलमान भाई हिन्दुस्तान में और कम से कम तीन करोड़ हिन्दू सिख भाई पाकिस्तान में हैं और रहेंगे. पाकिस्तान और हिन्दुस्तान के कभी न कभी फिर मिल कर एक हो जाने की आस भी हमने अभी नहीं छोड़ी है. जनता के दिल की हालत और राज काज के ढांचे दोनों सदा बदलते रहे हैं और आगे भी बदलेंगे. इस लिये हमें कोई बात ऐसी नहीं करनी चाहिये जिससे देश की जनता के किसी भी हिस्से का दिल दुखे, या जिसकी वजह से कोई भी अपने यहां की सरकार को सोलह आने अपना न कह सके, या जिससे आगे के लिये मुल्क के फिर एक होने के रास्ते में आसानी होने की जगह रुकावटें बढ़ें.

बटवारा कमेटी के सामने पाकिस्तान और हिन्दुस्तान दोनों के बड़े से बड़े नेताओं ने यह बचन दिया है कि दोनों जगह के कम तादाद लोगों का धर्म, उनकी कलचर और उनकी बोली का पूरा रख रखाव किया जायगा. हिन्दुस्तान ही को लीजिये. अगर हमने इस बचन को स्कूलों, यूनीवर्सिटियों और कचहरियों के दो

بھائیوں کے دل پر اس سے چوٹ لگی۔ کچھ ہندو بھائیوں نے قدرتی طور پر یہ آواز اٹھائی کہ اب ہندستان کی قومی بولی آسان ملی جلی ہندستانی نہ ہوکر ہندی ہو، اور وہ دونوں لپیوں میں نہ لکھی جاکر ناگری لپی میں ہی لکھی جاوے۔ اسی لئے ہمیں یہ خط آپ کی سیوا میں بھیجنا پڑا۔

ہم بڑی نمرتا سے آپ کا دھیان اس طرف دلانا چاہتے ہیں کہ ہندستان اور پاکستان کے الگ الگ ہوجانے سے دیش کا یہ سوال حل نہیں ہوگیا ہے، اور نہ اس طرح حل ہوسکتا ہے۔ پانچ کروڑ مسلمان بھائی ہندستان میں اور کم سے کم تین کروڑ ہندو سکھ بھائی پاکستان میں ہیں اور رہیں گے۔ پاکستان اور ہندستان کے کبھی نہ کبھی پھر مل کر ایک ہوجانے کی آس بھی ہم نے ابھی نہیں چھوڑی ہے۔ جنتا کے دل کی حالت اور راج کاج کے ڈھانچے دونوں سدا بدلتے رہے ہیں اور آگے بھی بدلیں گے۔ اس لئے ہمیں کوئی بات ایسی نہیں کرنی چاہئے جس سے دیش کی جنتا کے کسی بھی حصے کا دل دکھے، یا جس کی وجہ سے کوئی بھی اپنے یہاں کی سرکار کو سولہ آنے اپنا نہ کرسکے، یا جس سے آگے کے لئے ملک کے پھر ایک ہونے کے راستے میں آسانی ہونے کی جگہ رکاوٹیں بڑھیں۔

بٹوارہ کمیٹی کے سامنے پاکستان اور ہندستان دونوں کے بڑے سے بڑے نیتاؤں نے یہ بچن دیا ہے کہ دونوں جگہ کے کم تعداد لوگوں کا دھرم، ان کی کلچر اور ان کی بولی کا پورا رکھ رکھاؤ کیا جائے گا۔ ہندستان ہی کو لیجئے۔ اگر ہم نے

अलग अलग सिलसिले खड़े करके पूरा किया तो देश में फूट का सामान और बढ़ जावेगा.

इस सबसे बढ़कर हमें ग़रीब आम जनता की आसानी और भलाई की तरफ़ देखना है जिसमें हिन्दू मुसलमान और सब शामिल हैं. संस्कृत भरी हिन्दी और फ़ारसी अरबी भरी उर्दू दोनों ही आम जनता के लिये लोहे के चने होंगी. उनकी मुशकिलों को हज़ार गुना बढ़ा देंगी. जनता की भलाई और उनकी बढ़वारी तो मिली जुली चलती हुई आसान हिन्दुस्तानी ही में है.

हमारी इस हिन्दुस्तानी को ज़्यादा संस्कृत भरी होने या ज़्यादा अरबी फ़ारसी लदी होने से बचाने के लिये यह भी ज़रूरी है कि हम नागरी और उर्दू दोनों लिखावटों को अपनी क़ौमी लिखावटें मानें. आज कल की हालत में सिर्फ़ नागरी लिपि अपनाने से ज़बान का संस्कृत भरी हो जाना और सिर्फ़ उर्दू लिपि अपनाने से उसका अरबी फ़ारसी लदी हो जाना नहीं बच सकता. दोनों के अपनाने से ही हम दोनों के मुशकिल शब्दों से बच सकेंगे और बीच की आसान मिली जुली राह पकड़ सकेंगे. साथ ही उर्दू हिन्दी दोनों को जाने बिना हम दोनों को मिलाकर एक नहीं कर सकते. और दोनों लिखावटों को जाने और अपनाए बिना हम हिन्दी और उर्दू दोनों को नहीं जान सकते. आगे जाकर देश की लिखावट एक रहेगी या दो या कौनसी रहेगी और उसका रूप कितना बदलेगा यह वक़्त और ज़रूरत अपने आप तय कर लेंगी.

जावा से लेकर मिस्र तक के बहुत से देशों से मेल जोल बढ़ाने के लिये और एक दूसरे को समझने समझाने के लिये भी उर्दू

الگ الگ سلسلے کھڑے کرکے پورا کیا تو دیش میں پھوٹ کا سامان اور بڑھ جاوے گا۔

اس سب سے بڑھ کر ہمیں غریب عام جنتا کی آسانی اور بھلائی کی طرف دیکھنا ہے جس میں ہندو مسلمان اور سب شامل ہیں۔ سنسکرت بھری ہندی اور فارسی عربی بھری اردو دونوں ہی عام جنتا کے لئے لوہے کے چنے ہوں گی۔ اُن کی مشکلوں کو ہزار گنا بڑھا دیں گی۔ جنتا کی بھلائی اور اُن کی بڑھواری تو ملی جلی چلتی ہوئی آسان ہندستانی ہی میں ہے۔

ہماری اس ہندستانی کو زیادہ سنسکرت بھری ہونے یا زیادہ عربی فارسی لدی ہونے سے بچانے کے لئے یہ بھی ضروری ہے کہ ہم ناگری اور اردو دونوں لکھاوٹوں کو اپنی قومی لکھاوٹیں مانیں۔ آج کل کی حالت میں صرف ناگری لپی اپنانے سے زبان کا سنسکرت بھری ہو جانا اور صرف اردو لپی اپنانے سے اس کا عربی فارسی لدی ہو جانا نہیں بچ سکتا۔ دونوں کے اپنانے سے ہی ہم دونوں کے مشکل شبدوں سے بچ سکیں گے اور بیچ کی آسان ملی جلی راہ پکڑ سکیں گے۔ ساتھ ہی اردو ہندی دونوں کو جانے بنا ہم دونوں کو ملا کر ایک نہیں کر سکتے اور دونوں لکھاوٹوں کو جانے اور اپنائے بنا ہم ہندی اور اردو دونوں کو نہیں جان سکتے۔ آگے جا کر دیش کی لکھاوٹ ایک رہے گی یا دو یا کون سی رہے گی اور اس کا روپ کتنا بدلے گا یہ وقت اور ضرورت اپنے آپ طے کر لیں گی۔

جاوا سے لے کر مصر تک کے بہت سے دیشوں سے میل جول بڑھانے کے لئے اور ایک دوسرے کو سمجھنے سمجھانے کے لئے بھی اردو

लिपि से हमें बहुत बड़ी मदद मिल सकती है. इन पड़ोसी मुल्कों के साथ हमारी क़िस्मत कई तरह से बंधी हुई है. कई मिसालें हमारे सामने हैं पर हम इस ख़त को और बढ़ाना नहीं चाहते.

हमारी आप से प्रार्थना है कि आप इस सवाल के सब पहलुओं पर ग़ौर करते हुए देश को इस वक़्त किसी तरह की भी तंग-नज़री की तरफ़ जाने से रोकें और आगे के भले और आम जनता के भले और सब के भले को देखते हुए हिन्दुस्तानी और उसकी दोनों लिखावटों को ही मुल्क की क़ौमी ज़बान और उसक लिखावटें बनाए रखें.

हम हैं आप के भाई

सुन्दरलाल. सेक्रेटरी हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी, इलाहाबाद

ताराचन्द, वाइस चान्सलर इलाहाबाद यूनीवर्सिटी

श्रीमती पेरिन बहन केप्टन के नाम महात्मा गांधी ने हाल के एक ख़त में हिन्दुस्तानी के सवाल पर लिखा है—

"कल जो कुछ मैंने हिन्दुस्तानी के बारे में कहा उसे तुमने देखा. तुमको और मुझको इस काम पर इतनी मेहनत करनी चाहिये कि अगर हम मर भी जांय तो परवाह नहीं. हमको हिम्मत नहीं हारना चाहिये. दोनों लिपि में हिन्दुस्तानी लिखने और हिन्दुस्तानी बोलने की कोशिश करो. यह मुसीबत दो महीनों के लिये टल गई है. इस दुख भरे वक़्त में काम करने वाले बहुत कुछ कर सकते हैं."

لپی سے ہمیں بہت بڑی مدد مل سکتی ہے. ان پڑوسی ملکوں کے ساتھ ہماری قسمت کئی طرح سے بندھی ہوئی ہے. کئی مثالیں ہمارے سامنے ہیں پر ہم اس خط کو اور بڑھانا نہیں چاہتے.

ہماری آپ سے پرارتھنا ہے کہ آپ اس سوال کے سب پہلوؤں پر غور کرتے ہوئے دیش کو اس وقت کسی طرح کی بھی تنگ نظری کی طرف جانے سے روکیں اور آگے کے بھلے اور عام جنتا کے بھلے اور سب کے بھلے کو دیکھتے ہوئے ہندستانی اور اس کی دونوں لکھاوٹوں کو ہی ملک کی قومی زبان اور اس کی لکھاوٹیں بنائے رکھیں.

ہم ہیں آپ کے بھائی

سندرلال، سکریٹری ہندستانی کلچر سوسائٹی، الہ آباد

تاراچند، وائس چانسلر الہ آباد یونیورسٹی

شریمتی پیرن بہن کیپٹن کے نام مہاتما گاندھی نے حال کے ایک خط میں ہندستانی کے سوال پر لکھا ہے—

"کل جو کچھ میں نے ہندستانی کے بارے میں کہا اسے تم نے دیکھا. تم کو اور مجھ کو اس کام پر اتنی محنت کرنی چاہئے کہ اگر ہم مر بھی جائیں تو پرواہ نہیں. ہم کو ہمت نہیں ہارنا چاہئے. دونوں لپی میں ہندستانی لکھنے اور ہندستانی بولنے کی کوشش کرو. یہ مصیبت دو مہینوں کے لئے ٹل گئی ہے. اس دکھ بھرے وقت میں کام کرنے والے بہت کچھ کر سکتے ہیں."

'मुसीबत' से गांधी जी का इशारा साफ़ विधान सभा के कुछ मेम्बरों की हाल की नई तजवीज़ से है.

श्रीमती पेरिन बहन केप्टन ही के नाम हाल के एक ख़त में पं० जवाहर लाल जी नेहरू ने लिखा है—

"हिन्दुस्तानी को निकाल देने का सवाल तो बिलकुल अलग रहा, मैं तो आईन बनाने वाली असेम्बली और पार्टी के मेम्बरों में इसके ख़िलाफ़ लड़ता रहा हूँ. जहां तक ख़ुद मेरा सवाल है मैं इस बारे में साफ़ साफ़ कहता हूँ कि हिन्दुस्तानी को निकाल कर उसकी जगह जिसे शुद्ध हिन्दी कहा जाता है लाना बहुत ही बुरी बात होगी."

पंडित जवाहर लाल जी नेहरू का संदेशा

१७-८-४७ की बम्बई की हिन्दुस्तानी कान्फ़रेन्स के नाम

कई बरस हुए नेशनल कांग्रेस ने तय किया था कि हिन्दुस्तानी को मुल्क की क़ौमी ज़बान की हैसियत से अपनाया और बढ़ाया जावे. मैं समझता हूँ कि यह हर निगाह से अक़्लमन्दी का फ़ैसला है. शायद मैं हिन्दुस्तानी की तरफ़दारी इस लिये करता हूँ क्योंकि हिन्दुस्तानी मेरे घर की ज़बान है. पर मेरी राय ज़्यादा दूर तक की बातें सोच कर क़ायम हुई है.

ज़रूरी है कि हिन्दुस्तानी वही ज़बान होगी जो ज़्यादातर हिन्दुस्तानी बोलने वाले आम तौर पर बोलते या सीधे सादे ढंग से लिखते हैं. इसका मतलब यह है कि जिन जिन बोलियों

'مصیبت' سے گاندھی جی کا اشارہ صاف ودھان سبھا کے کچھ ممبروں کی حال کی نئی تجویز سے ہے۔

شریمتی پیرن بہن کیپٹن ہی کے نام حال کے ایک خط میں پنڈت جواہر لال جی نہرو نے لکھا ہے—

"ہندستانی کو نکال دینے کا سوال تو بالکل الگ رہا، میں تو آئین بنانے والی اسمبلی اور پارٹی کے ممبروں میں اس کے خلاف لڑتا رہا ہوں۔ جہاں تک خود میرا سوال ہے میں اس بارے میں صاف صاف کہتا ہوں کہ ہندستانی کو نکال کر اس کی جگہ جسے شدھ ہندی کہا جاتا ہے لانا بہت ہی بری بات ہوگی۔"

پنڈت جواہر لال جی نہرو کا سندیشہ

۱۷-۸-۴۷ کی بمبئی کی ہندستانی کانفرنس کے نام

کئی برس ہوئے نیشنل کانگریس نے طے کیا تھا کہ ہندستانی کو ملک کی قومی زبان کی حیثیت سے اپنایا اور بڑھایا جاوے۔ میں سمجھتا ہوں کہ یہ ہر نگاہ سے عقلمندی کا فیصلہ ہے۔ شاید میں ہندستانی کی طرفداری اس لئے کرتا ہوں کیونکہ ہندستانی میرے گھر کی زبان ہے۔ پر میری رائے زیادہ دور تک کی باتیں سوچ کر قائم ہوئی ہے۔

ضروری ہے کہ ہندستانی وہی زبان ہوگی جو زیادہ تر ہندستانی بولنے والے عام طور پر بولتے یا سیدھے سادے ڈھنگ سے لکھتے ہیں۔ اس کا مطلب یہ ہے کہ جن جن بولیوں

से मिलकर हिन्दुस्तानी बोली बनी है. उन सब का हिस्सा हिन्दुस्तानी में रहना चाहिये, और हिन्दुस्तानी न ज़्यादा संस्कृत भरी होनी चाहिये और न ज़्यादा फ़ारसी भरी. क्योंकि ऐसा करने से यह करोड़ों जनता की चीज़ न रह जायगी.

यह सच है कि हिन्दी और उर्दू के अलग अलग अदबी रूप बन गए हैं. असल में यह दोनों एक ही ज़बान हैं. इन दोनों अदबी रूपों में से किसी को मिटाने या दबाने की ज़रूरत नहीं है. हालां कि इनमें से बहुत से रूप ऐसे हैं जो बहुत ही बनावटी हैं और मामूली या औसत आदमी की समझ से बाहर हैं. अदबी लोगों के छोटे छोटे गिरोहों का ज़बान के बढ़ने पर असर तो
२०४ क़ुदरती तौर पर पड़ता है. पर कोई भी बड़ी ज़बान इस तरह के छोटे अदबी गिरोहों के सहारे नहीं फल फूल सकती.

ज़बान ज़बरदस्ती नहीं बनाई जा सकती. वह अपने आप बनती और बढ़ती है. फिर भी हम ज़बान की इस बात में मदद कर सकते हैं कि वह एक ख़ास दिशा में बढ़े. मैं समझता हूँ कि हमें अपनी बात चीत में और अपने लिखने में ऐसी ज़बान बढ़ाने की कोशिश करनी चाहिये जो दोनों अलग अलग अदबी रूपों के कुछ बीच की चीज़ हो, और जिसे आसानी के लिये हिंदुस्तानी कहा जाता है.

हिन्दुस्तानी क़ौम एक मिली जुली क़ौम है. हिन्दुस्तान की हकूमत भी एक मिली जुली हकूमत है. अगर हिन्दुस्तान को बड़ा होना है तो उसे अपना यह मिला जुला रूप बनाए रखना होगा. अपनी ज़िन्दगी के बुनियादी असूलों पर क़ायम रहते हुए बाहर

سے مل کر ہندستانی بولی بنی ہے۔ اُن سب کا حصّہ ہندستانی میں رہنا چاہئے، اور ہندستانی نہ زیادہ سنسکرت بھری ہونی چاہئے اور نہ زیادہ فارسی بھری۔ کیونکہ ایسا کرنے سے یہ کروڑوں جنتا کی چیز نہ رہ جائے گی۔

یہ سچ ہے کہ ہندی اور اُردو کے الگ الگ ادبی روپ بن گئے ہیں۔ اصل میں یہ دونوں ایک ہی زبان ہیں۔ اِن دونوں ادبی روپوں میں سے کسی کو مٹانے یا دبانے کی ضرورت نہیں ہے۔ حالاں کہ اِن میں سے بہت سے روپ ایسے ہیں جو بہت ہی بناوٹی ہیں اور معمولی یا اوسط آدمی کی سمجھ سے باہر ہیں۔ ادبی لوگوں کے چھوٹے
چھوٹے گروہوں کا زبان کے بڑھنے پر اثر تو قدرتی طور پر پڑتا ہے، ٢٠٤
پر کوئی بھی بڑی زبان اِس طرح کے چھوٹے ادبی گروہوں کے سہارے نہیں پھل پھول سکتی۔

زبان زبردستی نہیں بنائی جا سکتی۔ وہ اپنے آپ بنتی اور بڑھتی ہے۔ پھر بھی ہم زبان کی اِس بات میں مدد کر سکتے ہیں کہ وہ ایک خاص دشا میں بڑھے۔ میں سمجھتا ہوں کہ ہمیں اپنی بات چیت میں اور اپنے لکھنے میں ایسی زبان بڑھانے کی کوشش کرنی چاہئے جو دونوں الگ الگ ادبی روپوں کے کچھ بیچ کی چیز ہو، اور جسے آسانی کے لئے ہندستانی کہا جاتا ہے۔

ہندستانی قوم ایک ملی جلی قوم ہے۔ ہندستان کی حکومت بھی ایک ملی جلی حکومت ہے۔ اگر ہندستان کو بڑا ہونا ہے تو اسے اپنا یہ ملا جلا روپ بنائے رکھنا ہوگا۔ اپنی زندگی کے بنیادی اصولوں پر قائم رہتے ہوئے باہر

के विचारों और असरों को अपने अन्दर लेते रहना होगा. यह मेल जोल ही हिन्दुस्तानी ज़िन्दगी और हिन्दुस्तानी कलचर की एक ख़ास चीज़ रहा है. इसी मेल जोल का एक ख़ास रूप और बड़ा बामाने रूप हिन्दुस्तानी है. हिन्दुस्तानी बहुत से बड़े बड़े ख़ज़ानों से शब्द और महावरे लेकर बढ़ सकती है और मैं समझता हूँ कि बहुत जल्द एक ज़बरदस्त ज़बान बन सकती है जिसमें सब तरह की चीज़ें लिखी और कही जा सकें. इसलिये मैं उम्मीद करता हूँ कि हिन्दुस्तानी को अपनाया और बढ़ाया जावेगा.

नई दिल्ली

१२ अगस्त १९४७ **जवाहर लाल नेहरू**

(अंग्रेज़ी से)

हिन्दी या हिन्दुस्तानी

(महात्मा गाँधी)

श्रीमती पेरिन बहन कैप्टन लिखती हैं कि:—

"दिल्ली रेडियो पर मुझे यह सुनकर बड़ा दरद और शरम मालूम हुई कि विधान सभा के कुछ अपने ही लोग हमारी उस राष्ट्रभाषा को गद्दी से उतारना चाहते हैं जिसके लिये हम बरसों से लड़ते रहे हैं. सबसे ज्यादा चोट लगाने वाली बात यह है कि कांग्रेस के कई पुराने लोग भी आज इस तरह अपना दिमाग़ खो बैठे हैं कि जिस चीज़ को उन्होंने मेहनत से बनाया. जिसे प्यार से अपनाया, उसी को तोड़ने पर उतारू हो गए हैं. मुझे

کے وچاروں اور اثروں کو اپنے اندر لیتے رہنا ہوگا. میل جول ہی ہندستانی زندگی اور ہندستانی کلچر کی ایک خاص چیز رہا ہے. اسی میل جول کا ایک خاص روپ اور بڑا بامعنے روپ ہندستانی ہے. ہندستانی بہت سے بڑے بڑے خزانوں سے شبد اور محاورے لے کر بڑھ سکتی ہے اور میں سمجھتا ہوں کہ بہت جلد ایک زبردست زبان بن سکتی ہے جس میں سب طرح کی چیزیں لکھی اور کہی جا سکیں. اس لئے میں امید کرتا ہوں کہ ہندستانی کو اپنایا اور بڑھایا جاوے گا.

نئی دلی

۱۲ اگست ۱۹۴۷ **جواہر لال نہرو**

(انگریزی سے)

ہندی یا ہندستانی

(مہاتما گاندھی)

شریمتی پیرن بہن کیپٹن لکھتی ہیں کہ:—

"دلی ریڈیو پر مجھے یہ سن کر بڑا درد اور شرم معلوم ہوئی کہ ودھان سبھا کے کچھ اپنے ہی لوگ ہماری اس راشٹر بھاشا کو گدی سے اتارنا چاہتے ہیں جس کے لئے ہم برسوں سے لڑتے رہے ہیں. سب سے زیادہ چوٹ لگانے والی بات یہ ہے کہ کانگریس کے کئی پرانے لوگ بھی آج اس طرح اپنا دماغ کھو بیٹھے ہیں کہ جس چیز کو انھوں نے محنت سے بنایا، جسے پیار سے اپنایا، اسی کو توڑ [illegible] ہو گئے [illegible]

आशा थी कि हमारे बड़े बड़े नेता तो बुद्धिमानी और राजनीति से काम लेंगे. मेहरबानी करके साफ़ साफ़ लिखिये कि आप इस बारे में क्या चाहते हैं ?

(१) हमारी हिन्दुस्तानी कमेटी क्या करे ? (२) हमारे ईमानदारी और त्याग की भावना वाले हिन्दुस्तानी प्रचारक क्या करें ? (३) हमारे देश के रहने वाले जो हिन्दू, मुसलमान, पारसी. ईसाई और यहूदी काँग्रेस के ठहराव में मानी हुई हिन्दुस्तानी को स्वीकार कर चुके हैं और उसे प्यार करते हैं वह क्या करें ?

"मैं जानती हूँ कि आप बहुत कामों में फँसे हुए हैं मगर इस काम के लिये भी आप को चन्द मिनट तो निकालने ही होंगे. क्यों कि मैं समझती हूँ कि अच्छे दिनों में मुल्क को एक करने वाली मज़बूत से मज़बूत कड़ियों में से यह एक कड़ी है. हमने तो अखंड हिन्दुस्तान की तसवीर ही अपनी आखों के सामने हमेशा रखी है और उसी के लिये सारी ज़िन्दगी काम किया है. कल हमारी एक क्लास के क़रीब २५ नौजवान मेरे पास आए और कहने लगे, 'हमें तो हिन्दुस्तानी प्रिय है, साहित्य के हिन्दी और उर्दू दोनों रूप प्रिय हैं. हम हिन्दुस्तानी का राष्ट्रीय महत्व भी जानते हैं. कुछ तंग दिल लोग क्यों हमारा क्षेत्र संकुचित करना चाहते हैं ?' कृपा करके हमारे दोस्तों को दुशमनी और नफ़रत के पंजे में फँसकर दूरंदेशी खोने से रोकिये. नहीं तो कन्या कुमारी से लेकर कशमीर तक और आसाम से लेकर सिन्ध तक के सारे देश को सच्ची दोस्ती और दिली मुहब्बत की ज़ंजीर में बांधने की उम्मीद ख़तम हो जायगी."

آشا تھی کہ ہمارے بڑے بڑے نیتا تو بدھیمانی اور راجنیتی سے کام لیں گے۔ مہربانی کرکے صاف صاف لکھئے کہ آپ اِس بارے میں کیا چاہتے ہیں؟

(۱) ہماری ہندستانی کمیٹی کیا کرے؟ (۲) ہمارے ایمانداری اور تیاگ کی بھاؤنا والے ہندستانی پرچارک کیا کریں؟ (۳) ہمارے دیش کے رہنے والے جو ہندو، مسلمان، پارسی، عیسائی اور یہودی کانگریس کے ٹھہراؤ میں مانی ہوئی ہندستانی کو سویکار کر چکے ہیں اور اُسے پیار کرتے ہیں وہ کیا کریں؟

"میں جانتی ہوں کہ آپ بہت کاموں میں پھنسے ہوئے ہیں مگر اِس کام کے لئے بھی آپ کو چند منٹ تو نکالنے ہی ہوں گے۔ کیونکہ میں سمجھتی ہوں کہ اچھے دنوں میں ملک کو ایک کرنے والی مضبوط سے مضبوط کڑیوں میں سے یہ ایک کڑی ہے۔ ہم نے تو اکھنڈ ہندستان کی تصویر ہی اپنی آنکھوں کے سامنے ہمیشہ رکھی ہے اور اُسی کے لئے ساری زندگی کام کیا ہے۔ کل ہماری ایک کلاس کے قریب ۲۵ نوجوان میرے پاس آئے اور کہنے لگے، 'ہمیں تو ہندستانی پریہ ہے، ساہتیہ کے ہندی اور اُردو دونوں روپ پریہ ہیں۔ ہم ہندستانی کا راشٹریہ مہتو بھی جانتے ہیں۔ کچھ تنگ دل لوگ کیوں ہمارا کشیتر سنکچت کرنا چاہتے ہیں؟' کرپا کرکے ہمارے دوستوں کو دشمنی اور نفرت کے پنجے میں پھنس کر دور اندیشی کھونے سے روکئے۔ نہیں تو کنیا کماری سے لے کر کشمیر تک اور آسام سے لے کر سندھ تک کے سارے دیش کو سچی دوستی اور دلی محبت کی زنجیر میں باندھنے

श्री पेरिन बहन की तरह बहुत से दूसरे देश भक्त भी, चाहे वह काँग्रेस वाले कहलाते हों या न कहलाते हों बहुत दुखी हैं. यह ख़त लिखे जाने के बाद राष्ट्रभाषा के सवाल का फ़ैसला क़रीब दो माह के लिये मुल्तवी हो गया है. जब विधान सभा फिर मिलेगी तब इस चीज़ का फ़ैसला होगा. यह अच्छी बात है. इससे लोगों को ठंडे दिल से और साफ़ दिमाग़ से सोचने का मौक़ा मिलेगा.

हिन्दुओं को अपने प्रत्यक्ष या परोक्ष बरताव से मुसलिम लीग के इस बयान को ग़लत साबित कर दिखाना है कि हिन्दुस्तान के हिन्दुओं और मुसलमानों का धरम अलग अलग होने की वजह से वह एक नहीं बल्कि दो राष्ट्र हैं. काँग्रेस की पैदायश से ही काँग्रेस वालों ने यह एलान किया है कि हिन्दुस्तान एक राष्ट्र है जिसमें दुनिया के हर धरम और हर फ़िरक़े के लोग रहते हैं. काँग्रेस से कई बार भूलें हुई हैं फिर भी कसौटी पर कसे जाने के समय अक्सर उसने अपने इस दावे को साबित कर दिखाया है कि हिन्दुस्तान के रहने वाले सारे हिन्दुस्तानी एक राष्ट्र हैं.

पेरिन बहन उन दादा भाई नौरोजी की पोती हैं जो हिन्दुस्तान के पितामह थे और आज भी हैं.

फ़िरोज़ शाह मेहता बम्बई सूबे के बेताज बादशाह बने और दादा भाई नौरोजी के बाद कांग्रेस में उन्हीं की चलती थी यह अधिकार उन्हें उनकी निस्वार्थ सेवा की वजह से मिला था.

और बदरुद्दीन तय्यब जी कौन थे ? वह एक समय कांग्रेस के प्रेसिडेन्ट थे. क्या वे पक्के मुसलमान न थे. मुसलमान होने के कारन

شری پیرن بہن کی طرح بہت سے دوسرے دیش بھکت بھی، چاہے وہ کانگریس والے کہلاتے ہوں یا نہ کہلاتے ہوں بہت دُکھی ہیں. یہ خط لکھے جانے کے بعد راشٹر بھاشا کے سوال کا فیصلہ قریب دو ماہ کے لئے ملتوی ہو گیا ہے. جب ودھان سبھا پھر ملے گی تب اِس چیز کا فیصلہ ہوگا. یہ اچھی بات ہے. اِس سے لوگوں کو ٹھنڈے دل سے اور صاف دماغ سے سوچنے کا موقع ملے گا.

ہندوؤں کو اپنے پرتیکش یا پروکش برتاؤ سے مسلم لیگ کے اِس بیان کو غلط ثابت کر دکھانا ہے کہ ہندستان کے ہندوؤں اور مسلمانوں کا دھرم الگ الگ ہونے کی وجہ سے وہ ایک نہیں بلکہ دو راشٹر ہیں. کانگریس کی پیدائش سے ہی کانگریس والوں نے یہ اعلان کیا ہے کہ ہندستان ایک راشٹر ہے جس میں دُنیا کے ہر دھرم اور ہر فرقے کے لوگ رہتے ہیں. کانگریس سے کئی بار بھولیں ہوئی ہیں پھر بھی کسوٹی پر کسے جانے کے سمے اکثر اُس نے اپنے اِس دعوے کو ثابت کر دکھایا ہے کہ ہندستان کے رہنے والے سارے ہندستانی ایک راشٹر ہیں.

پیرن بہن اُن دادا بھائی نوروجی کی پوتی ہیں جو ہندستان کے پتامہ تھے اور آج بھی ہیں.

فیروز شاہ مہتا بمبئی صوبے کے بے تاج بادشاہ بنے اور دادا بھائی نوروجی کے بعد کانگریس میں اُنھیں کی چلتی تھی. یہ ادھکار اُنھیں اُن کی نسوارتھ سیوا کی وجہ سے ملا تھا.

اور بدرالدین طیب جی کون تھے؟ وہ ایک سمے کانگریس کے پریسیڈنٹ تھے. کیا وے پکے مسلمان نہ تھے. مسلمان ہونے کے کارن کیا،

क्या उनके हिन्दुस्तानी होने में कोई कमी थी ? हिन्दुस्तान में कई धरम हैं मगर राष्ट्रीयता एक ही है और यह बात मैं आज भी कहने की हिम्मत करता हूँ जब कि हिन्दुस्तान के दो टुकड़े हो चुके हैं. यह टुकड़े शायद लम्बे अरसे तक कायम रहें, मगर हमें एक मिनट के लिये भी एक दूसरे के दुशमन नहीं बनना चाहिये. लड़ाइ के लिये दो की जरूरत होती है. ताली दो हाथ से बजती है, मगर दोस्ती एक तरफ़ से भी हो सकती है. दोस्ती सौदा नहीं है. यह दोस्ती जिसका दूसरा नाम अहिंसा या मुहब्बत है बुज़दिलों का काम नहीं, बल्कि बहादुरों और दूरंदेश लोगों का काम है.

(३०५)

मैं पेरिन बहन की इस बात से सहमत हूँ कि न तो देव नागरी लिपि में लिखी हुई और संस्कृत शब्दों से भरी हिन्दी और न फ़ारसी लिपि में लिखी हुई फ़ारसी लफ़्ज़ों से भरी हुई उर्दू ही हिन्दुस्तान की दो या ज्यादा जातियों को एक दूसरी से बांधने वाली ज़ंजीर बन सकती हैं. यह काम तो दोनों के मेल से बनी हुई हिन्दुस्तानी ही कर सकती है, जो दोनों से ज्यादा स्वाभाविक है और देव नागरी या फारसी लिपि में लिखी जाती है. हिन्दी और उर्दू का मिलाप स्वाभाविक तौर पर बरसों से होता आया है. कुदरती बातों की तरह यह भी धीमे धीमे हो रहा है, मगर हो रहा है. यह बात पक्की है. जिस तरह मैं उर्दू भाषा और लिपि सीख रहा हूँ उसी तरह मेरा मुसलमान भाई भी मेरी भाषा और लिपि सीखने समझने की कोशिश करता है या नहीं इसकी मुझे कोई परवाह

اُن کے ہندستانی ہونے میں کوئی کمی تھی ؟ ہندستان میں کئی دھرم ہیں مگر راشٹریتا ایک ہی ہے اور یہ بات میں آج بھی کہنے کی ہمت کرتا ہوں جب کہ ہندستان کے دو ٹکڑے ہو چکے ہیں۔ یہ ٹکڑے شاید لمبے عرصے تک قائم رہیں، مگر ہمیں ایک منٹ کے لئے بھی ایک دوسرے کے دشمن نہیں بننا چاہیئے. لڑائی کے لئے دو کی ضرورت ہوتی ہے؛ تالی دو ہاتھ سے بجتی ہے، مگر دوستی ایک طرف سے بھی ہو سکتی ہے. دوستی سودا نہیں ہے. یہ دوستی جس کا دوسرا نام اہنسا یا محبت ہے بزدلوں کا کام نہیں، بلکہ بہادروں اور دور اندیش لوگوں کا کام ہے.

میں پیرن بہن کی اِس بات سے سہمت ہوں کہ نہ تو دیو ناگری لپی میں لکھی ہوئی اور سنسکرت شبدوں سے بھری ہندی اور نہ فارسی لپی میں لکھی ہوئی فارسی لفظوں سے بھری ہوئی اردو ہی ہندستان کی دو یا زیادہ جاتیوں کو ایک دوسری سے باندھنے والی زنجیر بن سکتی ہیں. یہ کام تو دونوں کے میل سے بنی ہوئی ہندستانی ہی کر سکتی ہے، جو دونوں سے زیادہ سوابھاوک ہے اور دیوناگری یا فارسی لپی میں لکھی جاتی ہے. ہندی اور اُردو کا ملاپ سوابھاوک طور پہ برسوں سے ہوتا آیا ہے. قدرتی باتوں کی طرح یہ بھی دھیمے دھیمے ہو رہا ہے. مگر ہو رہا ہے، یہ بات پکی ہے. جس طرح میں اُردو بھاشا اور لپی سیکھ رہا ہوں اُسی طرح میرا مسلمان بھائی بھی میری بھاشا اور لپی سیکھنے اور سمجھنے کی کوشش کرتا ہے یا نہیں اِس کی مجھے کوئی پرواہ نہیں. اگر وہ ایسا نہیں کرتا، تو نقصان اُسی کا

तो उसकी भाषा सीख कर फ़ायदा ही उठाता हूँ. मैं ने कई मौलवियों से बातें की हैं. हिन्दुस्तानी में उन्हें अपनी बात समझाने में मुझे कोई दिक़्क़त नहीं मालूम हुई. अगरचे मैंने उनकी फ़ारसी शब्दों से भरी ऊँची उर्दू बोलने का ढोंग करने की कभी कोशिश नहीं की. आम तौर पर इसमें नुक़सान उनका है. मैं ने तो हमेशा फ़ायदा ही उठाया है. मुझे विश्वास है कि जो बात मेरे लिये सच है वह बहुतों के लिये सच है :—

अब पेरिन बहन के ख़ास सवालों को लूँ:—

(१) हिन्दुस्तानी कमेटी के हर मेम्बर को अपने अक़ीदे पर अमल करना है, यानी उसे दोनों लिपियां सीखनी हैं, और हिन्दी और उर्दू के मिलावट से बनी हुई भाषा हिन्दुस्तानी पर क़ाबू पाना है. यह तभी होगा जब सादी उर्दू का मेहनत के साथ अभ्यास किया जायगा और यह पहली ज़रूरत पूरी करने के बाद यानी ख़ुद हिन्दुस्तानी सीख लेने के बाद उसे (मेम्बर को) चाहिये कि वह दूसरों को हिन्दुस्तानी सीखने के लिये कहे.

(२) अगर हिन्दुस्तानी प्रचारक ईमानदार और त्यागी हैं तो उनके आस पास के वातावरन पर उनकी बात का असर पड़े बिना न रहेगा.

(३) जो लोग हिन्दुस्तानी को राष्ट्र भाषा मानते हैं और उसे प्यार करते हैं उन्हें इसका सबूत देने के लिये उन लोगों से हमेशा सिर्फ़ हिन्दुस्तानी में ही बोलना चाहिये या ख़त लिखना चाहिये जो उनकी मादरी ज़बान नहीं जानते. इस तरह तामिलनाड का आदमी अपने यहां के आदमी से तामिल में बोलेगा मगर दूसरे

تو اُس کی بھاشا سیکھکر فائدہ ہی اُٹھاتا ہوں. میں نے کئی مولویوں سے باتیں کی ہیں. ہندستانی میں اُنھیں اپنی بات سمجھانے میں مجھے کوئی دقت نہیں معلوم ہوئی. اگرچہ میں نے اُن کی فارسی شبدوں سے بھری اونچی اُردو بولنے کا ڈھونگ کرنے کی کبھی کوشش نہیں کی. عام طور پر اِس میں نقصان اُن کا ہے. میں نے تو ہمیشہ فائدہ ہی اُٹھایا ہے. مجھے وشواس ہے کہ جو بات میرے لئے سچ ہے وہ بہتوں کے لئے سچ ہے :—

اب پیرن بہن کے خاص سوالوں کو لوں :—

(۱) ہندستانی کمیٹی کے ہر ممبر کو اپنے عقیدے پر عمل کرنا ہے، یعنی اُسے دونوں لپیاں سیکھنی ہیں، اور ہندی اور اُردو کے ملاوٹ سے بنی ہوئی بھاشا ہندستانی پر قابو پانا ہے. یہ تبھی ہوگا جب سادی اُردو کا محنت کے ساتھ ابھیاس کیا جائے گا اور یہ پہلی ضرورت پوری کرنے کے بعد یعنی خود ہندستانی سیکھ لینے کے بعد اُسے (ممبر کو) چاہئے کہ وہ دوسروں کو ہندستانی سیکھنے کے لئے کہے.

(۲) اگر ہندستانی پرچارک ایمان دار اور تیاگی ہیں تو اُن کے آس پاس کے واتاورن پر اُن کی بات کا اثر پڑے بنا نہ رہیگا

(۳) جو لوگ ہندستانی کو راشٹر بھاشا مانتے ہیں اور اُسے پیار کرتے ہیں اُنھیں اِس کا ثبوت دینے کے لئے اُن لوگوں سے ہمیشہ صرف ہندستانی میں ہی بولنا چاہئے یا خط لکھنا چاہئے جو اُن کی مادری زبان نہیں جانتے. اِس طرح تامل ناڈ [illegible] بولیگا مگر دوسرے

नया हिन्द   हमारी राय   सितम्बर सन् '४७

प्रान्तों के लोगों के साथ हिन्दुस्तानी में बात करेगा. आज की तरह अंगरेजी में नहीं—

नई दिल्ली

२७-७-४७   मोहनदास करमचन्द गांधी

(हरिजन सेवक से)

نیا ہند   ہماری رائے   ستمبر ۴۷ء

پرانتوں کے لوگوں کے ساتھ ہندستانی میں بات کرے گا۔ آج کی طرح انگریزی میں نہیں ـــ

نئی دلی

۲۷-۷-۴۷   موہن داس کرم چند گاندھی

(ہرجن سیوک سے)

"गीता और क़ुरान"

लेखक—पंडित सुन्दरलाल

इस किताब के शुरू में दुनिया के सब बड़े बड़े धर्मों की एकता को दिखाया गया है और सब धर्मों की किताबों से हवाले दे देकर मिलती जुलती बुनियादी सचाइयों को बयान किया गया है.

उसके बाद गीता के लिखे जाने के वक़्त की इस देश की हालत, गीता के बड़प्पन और एक एक अध्याय को लेकर गीता की तालीम को बतलाया गया है.

आखिर में क़ुरान से पहले की अरब की हालत, क़ुरान के बड़प्पन और एक एक बात पर क़ुरान की तालीम को बयान किया गया है. इस में क़ुरान की पांच सौ से ऊपर आयतों का लफ़्ज़ी तरजुमा दिया गया है. यह भी बताया गया है कि क़ुरान में जेहाद, आक़िबत, आख़िरत, जन्नत, जहन्नम, काफ़िर वग़ैरा किसे कहा गया है.

जो लोग सब धर्मों की एकता को समझना चाहें या हिन्दू धर्म और इसलाम दोनों की इन दो अमर पुस्तकों की सच्ची जानकारी हासिल करना चाहें उन्हें इस किताब को ज़रूर पढ़ना चाहिये.

किताब आसान हिन्दुस्तानी ज़बान में, नागरी और उर्दू दोनों लिखावटों में अलग अलग मिल सकती है. पौने तीन सौ सफ़े की सुन्दर जिल्द बंधी किताब की क़ीमत सिर्फ़ ढाई रुपए. डाक खर्च अलग.

मैनेजर "नया हिन्द"

४८ बाई का बाग़, इलाहाबाद

"گیتا اور قرآن"

لیکھک - پنڈت سندر لال

اس کتاب کے شروع میں دنیا کے سب بڑے بڑے دھرموں کی ایکتا کو دکھایا گیا ھے اور سب دھرموں کی کتابوں سے حوالے دے دے کر ملتی جلتی بنیادی سچائیوں کو بیان کیا گیا ھے

اسکے بعد گیتا کے لکھے جانے کے وقت کی اس دیش کی حالت، گیتا کے بڑپن اور ایک ایک ادھیائے کو لیکر گیتا کی تعلیم کو بتلایا گیا ھے.

آخر میں قرآن سے پہلے عرب کی حالت، قرآن کے بڑپن اور ایک ایک بات پر قرآن کی تعلیم کو بیان کیا گیا ھے. اسمیں قرآن کی پانچ سو سے اوپر آیتوں کا لفظی ترجمہ دیا گیا ھے. یہ بھی بتایا گیا ھے کہ قرآن میں جہاد، عاقبت، آخرت، جنت، جہنم، کافر وغیرہ کسے کہا گیا ھے.

جو لوگ سب دھرموں کی ایکتا کو سمجھنا چاھیں یا ھندو دھرم اور اسلام دونوں کی ان دو امر پستکوں کی سچی جانکاری حاصل کرنا چاھیں انھیں اس کتاب کو ضرور پڑھنا چاھئے.

کتاب ھندستانی زبان میں ناگری اور اُردو دونوں لکھاوٹوں میں الگ الگ مل سکتی ھے. پونے تین سو صفحے کی سندر جلد بندھی کتاب کی قیمت صرف ڈھائی روپیہ - ڈاک خرچ الگ.

منیجر "نیا ھند"

۴۸ - بائی کا باغ، الہ آباد

Printer—Bishambhar Nath, Visiwavani Press. South Malaka, Allahabad.

Publisher—Bishambhar Nath for Hindustani Culture Society, 48 Bai ka Bagh, Allahabad.

"नया हिन्द"

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी का परचा

एडिटर—

ताराचन्द, भगवानदीन, मुज़फ़्फ़र हसन, विशम्भरनाथ, सुन्दरलाल

अक्तूबर १९४७

क़ीमत—हिन्दुस्तान में छै रुपए साल. बाहर दस रुपए साल, एक परचा दस आने.

"نیا ہند"

ہندستانی کلچر سوسائٹی کا پرچا

ایڈیٹر—

تارا چند، بھگوان دین، مظفر حسن، بشمبھر ناتھ، سندرلال۔

اکتوبر ۱۹۴۷

قیمت—ہندستان میں چھ روپیہ سال، باہر دس روپیہ سال۔ ایک پرچا دس آنے۔

۴۸ بائی کا باغ، الہ آباد۔

नया हिन्दुस्तान

जिल्द ३ अक्तूबर '४७ नम्बर ४

جلد۳ اکتوبر ۴۷ء نمبر۴

जात आदमी. प्रेम धर्म है, हिन्दुस्तानी बोली.
'नया हिन्द' पहुँचेगा घर घर. लिये प्रेम की झोली.

جات آدمی، پریم دھرم ہے، ہندستانی بولی،
دُنیا ہند پہنچے گا گھر گھر لئے پریم کی جھولی۔

सच्ची बात—

(पं० वासुदेव मिश्र शास्त्री, कालाकाँकर)

एक मां के पुत्र जितने,
धरम उतने दीन उतने !
अपनी ढपली अपना गाना,
बेसुरा छेड़ा तराना !
कौन हिन्दू ? कौन मुसलिम ?
कौन बामन ? कौन पासी ?
अपने मतलब के हैं भूले.
जिन पै भूले देश बासी !

سچّی بات

(پنڈت واسودیو مشر شاستری، کالاکانکر)

ایک ماں کے پُتر جتنے،
دھرم اُتنے دین اُتنے!
اپنی ڈھپلی اپنا گانا،
بے سُرا چھیڑا ترانا!
کون ہندو؟ کون مسلم؟
کون بامن؟ کون پاسی؟
اپنے مطلب کے ہیں بھولے
جن پہ بھولے دیش باسی!

हाथ रँग कर, ऐ नमाज़ी !
हाथ रँग कर, ऐ पुजारी !
कैसा सिजदा, कैसी पूजा ?
माँ तड़पती है बिचारी !

क्यों तोड़ता है गुल बता.
है कुफ़्र का तुमको पता ?
माली चमन का देखता
क्यों माफ़ होगी यह ख़ता !

इस बाहमी शैतानियत को,
माँ की ख़ातिर तू भगा,
सोए हुओं को इनक़लाबी,
जोश देकर तू जगा,

हैं वेद बतलाते यही,
क़ुरआन भी कहता यही,
इनसान गुल हैं एक चमन के,
माली है जिसका एकही।

हर गुलसे तुमको प्रेम हो !
हर गुल को तुमसे प्रेम हो !
ख़ुशबू से महके सब जहाँ !
दीनों धरम का नेम हो !

ہاتھ رنگ کر اے نمازی!
ہاتھ رنگ کر اے پجاری!
کیسا سجدہ، کیسی پوجا؟
ماں تڑپتی ہے بچاری!

کیوں توڑتا ہے گل بتا
ہے کفر کا تجھ کو پتا؟
مالی چمن کا دیکھتا،
کیوں معاف ہوگی یہ خطا!

اس باہمی شیطانیت کو،
ماں کی خاطر تو بھگا،
سوئے ہوؤں کو انقلابی،
جوش دے کر تو جگا،

ہیں وید بتلاتے یہی،
قرآن بھی کہتا یہی،
انسان گل ہیں ایک چمن کے،
مالی ہے جس کا ایک ہی

ہر گل سے تجھ کو پریم ہو!
ہر گل کو تجھ سے پریم ہو!
خوشبو سے مہکے سب جہاں!
دین و دھرم کا نیم ہو!

सब मज़हबों की एकता

(डाक्टर भगवान दास, बनारस)

जब सब धर्म मजहबों की एकता की बात की जाती है तो लोग कई तरह के एतराज उठाते हैं. कुछ लोग तो यह कहते हैं कि आप सब मजहबों में से मोटी मोटी एकता की बातें एक जगह जमा कर देते हैं. तो उन छोटी छोटी बातों को भी साफ़ साफ़ लिखिये जिनमें एक मजहब और दूसरे मजहब में फ़रक़ है. जो आदमी हर मजहब की या किसी मजहब की हर छोटी बड़ी बात को जानना जरूरी समझे उसके लिये यह कहना ठीक है. पर यह पंडितों और आलिमों की बहस है. दिमाग़ की चीज है. अमली और दिल की चीज नहीं. इसके अलावा छोटे छोटे और बारीक फ़रक़ों पर तो जरूरत से ज्यादा जोर दिया ही जा रहा है. इन फ़रक़ों पर अमल भी काफ़ी किया जा रहा है. इससे इनसानी समाज को बेहद नुक़सान भी पहुँच रहा है. एक सी और एकता की बातों से लोगों ने आंखें फिरा रक्खी हैं जिससे दुनिया साफ़ घाटे में है. दिमाग़ी ख़याल से देखें तब भी जिन बातों में एक मजहब और दूसरे मजहब में फ़रक़ है वह बातें ऊपर की हैं, यानी वह बुनियादी या जरूरी नहीं हैं. और जो बातें सब में पाई जाती हैं वही बुनियादी हैं, वही असल हैं. इसलिए उन बुनियादी चीजों पर जिनमें सब मजहबों की एक राय है ज्यादा जोर देना चाहिये. अभी तक इन पर काफ़ी जोर नहीं दिया गया

سب مذہبوں کی ایکتا

(ڈاکٹر بھگوان داس، بنارس)

جب سب دھرم مذہبوں کی ایکتا کی بات کی جاتی ہے تو لوگ کئی طرح کے اعتراض اٹھاتے ہیں۔ کچھ لوگ تو یہ کہتے ہیں کہ آپ سب مذہبوں میں سے موٹی موٹی ایکتا کی باتیں ایک جگہ جمع کر دیتے ہیں، تو ان چھوٹی چھوٹی باتوں کو بھی صاف صاف لکھئے جن میں ایک مذہب اور دوسرے مذہب میں فرق ہے۔ جو آدمی ہر مذہب کی یا کسی مذہب کی ہر چھوٹی بڑی بات کو جاننا ضروری سمجھے اس کے لئے یہ کہنا ٹھیک ہے۔ پر یہ پنڈتوں اور عالموں کی بحث ہے، دماغ کی چیز ہے، عملی اور دل کی چیز نہیں۔ اس کے علاوہ چھوٹے چھوٹے اور باریک فرقوں پر تو ضرورت سے زیادہ زور دیا ہی جا رہا ہے۔ ان فرقوں پر عمل بھی کافی کیا جا رہا ہے۔ اس سے انسانی سماج کو بے حد نقصان بھی پہنچ رہا ہے۔ ایک سی اور ایکتا کی باتوں سے لوگوں نے آنکھیں پھرا رکھی ہیں جس سے دنیا صاف گھاٹے میں ہے۔ دماغی خیال سے دیکھیں تب بھی جن باتوں میں ایک مذہب اور دوسرے مذہب میں فرق ہے وہ باتیں اوپر کی ہیں یعنی وہ بنیادی یا ضروری نہیں ہیں اور جو باتیں سب میں پائی جاتی ہیں وہی بنیادی ہیں، وہی اصل ہیں۔ اس لئے ان بنیادی چیزوں پر جن میں سب مذہبوں کی ایک رائے ہے زیادہ زور دینا چاہئے۔ ابھی تک ان پر کافی زور نہیں دیا گیا

के लिये जरूरी होती है, इससे आगे बढ़ते ही यह ख़ुदी आदमी के अपने लिये और दूसरों के लिये दोनों के लिये बरबादी का कारन बन जाती है. तब जाकर आदमी की रूह सच्चे परमार्थ. सबके भले, बरदाश्त. धीरज, रवादारी. नेक समझ और हमदर्दी की तरफ़ मुड़ती है. वह देखती है कि हक़ीक़त या सचाई सब की सब के अन्दर है. बड़े छोटे, बालक बूढ़े. कमज़ोर ताक़तवर में फ़रक़ तो हैं पर यह सब फ़रक़ दिखावे के और एक ख़ास हद के अन्दर ही हैं. इन पर ज्यादा ज़ोर देना बुरा है. आदमी को आदमी बनने के लिये न ताक़त का ज़रा सा भी घमंड होना चाहिये और न दूसरे की कमज़ोरी को ज़रा भी नफ़रत की निगाह से देखना चाहिये.

कोई आदमी यह दावा नहीं कर सकता कि उसका शरीर ऐसे ज़र्रों या ऐसे परमाणुओं का बना हुआ है जो पहले कभी कहीं थे ही नहीं, यानी जो उसी के लिये वजूद में आए. जाहिर है कि हर शरीर का हर ज़र्रा अनगिनत जिस्मों में से होकर निकल चुका है और इस शरीर के मिट जाने के बाद भी अनगिनत शरीरों में से निकलेगा और निकलता रहेगा. इस पर भी दो आदमियों के रूपों में कुछ न कुछ फ़रक़ होता ही है. यह दूसरी बात है. इसी तरह हर दिमाग़ का हर ख़याल. हर जज़बा. हर भाव दूसरे अनगिनत दिमाग़ों में से होकर निकल चुका है और अनगिनत दूसरे दिमाग़ों में से होकर निकलेगा. उसकी गढ़त और बनावट में फ़रक़ पड़ता रहता है यह अलग बात है. इसी फ़रक़ से हर एक का दिमाग़ अपना अपना दिमाग़ बनता

کے لئے ضروری ہوتی ہے، اس سے آگے بڑھتے ہی یہ خودی آدمی کے اپنے لئے اور دوسروں کے لئے دونوں کے لئے بربادی کا کارن بن جاتی ہے. تب جاکر آدمی کی روح سچّے پرمارتھ، سب کے بھلے، برداشت، دھیرج، رواداری، نیک سمجھ اور ہمدردی کی طرف مڑتی ہے. وہ دیکھتی ہے کہ حقیقت یا سچائی سب کی سب کے اندر ہے. بڑے چھوٹے، بالک بوڑھے، کمزور طاقتور میں فرق تو ہیں پر یہ سب فرق دکھاوے کے اور ایک خاص حد کے اندر ہی ہیں. ان پر زیادہ زور دینا بُرا ہے. آدمی کو آدمی بننے کے لئے نہ طاقت کا ذرا سا بھی گھمنڈ ہونا چاہئے اور نہ دوسرے کی کمزوری کو ذرا بھی نفرت کی نگاہ سے دیکھنا چاہئے.

کوئی آدمی یہ دعویٰ نہیں کرسکتا کہ اس کا شریر ایسے ذرّوں یا ایسے پرمانوؤں کا بنا ہوا ہے جو پہلے کبھی کہیں تھے ہی نہیں، یعنی جو اسی کے لئے وجود میں آئے. ظاہر ہے کہ ہر شریر کا ہر ذرّہ ان گنت جسموں میں سے ہوکر نکل چکا ہے اور اس شریر کے مٹ جانے کے بعد بھی ان گنت شریروں میں سے نکلے گا اور نکلتا رہے گا. اس پر بھی دو آدمیوں کے روپوں میں کچھ نہ کچھ فرق ہوتا ہی ہے، یہ دوسری بات ہے. اسی طرح ہر دماغ کا ہر خیال، ہر جذبہ، ہر بھاؤ دوسرے ان گنت دماغوں میں سے ہوکر نکل چکا ہے اور ان گنت دوسرے دماغوں میں سے ہوکر نکلے گا. اس کی گڑھت اور بناوٹ میں فرق پڑتا رہتا ہے یہ الگ بات ہے. اسی فرق سے ہر ایک کا دماغ اپنا اپنا دماغ بنتا

है, वैसे ही जैसे हर एक का शरीर अपना अपना ही शरीर बनता है. हम इन फ़रक़ों को भी ज़रूर समझें और मानें. इन्हीं फ़रक़ों से 'मैं' 'तू' और 'वह' वजूद में आते हैं. पर हम इन फ़रक़ों को, बदलने वाली चीज़, आनी जानी चीज़ समझें और उस हक़ीक़त को जो सब में और सबके अन्दर रमी हुई है ज़्यादा बड़ी, ज़्यादा टिकाऊ और ज़्यादा बुनियादी समझें. ख़ुदी की भी अपनी क़ीमत है, पर उसकी बेजा क़द्र हमें मिटा देने वाली होगी. सब की यानी सबके भले की या सबके अन्दर काम करने वाली जान की हमें ज़्यादा क़द्र करनी चाहिये. इसी से 'हर आदमी सबके लिये और सब हर एक के लिये' हो सकेगा. सिर्फ़ इसी से समाजी ज़िन्दगी, मिली जुली ज़िन्दगी, या अलग अलग 'मैं' और 'तू' की जगह एक 'हम' क़ायम हो सकेगा और हम सबका भला मुमकिन होगा.

कमी यह है कि अभी हम में से ज़्यादातर के दिमाग़ उस कम उमरी या लड़कपन की हालत में हैं जिसमें आदमी को अपने 'अनोखेपन' में ज़्यादा मज़ा आता है और अपने को कुल का यानी सारी इनसानी क़ौम के जिस्म का एक हिस्सा समझने में उतना आनन्द नहीं आता. लेकिन यह ऊँची प्यास भी हर दिल के अन्दर मौजूद है. हमने अभी उसे पहचाना नहीं है. कोई आदमी भी सदा बिल्कुल अकेला ही रहना नहीं चाहता. फिर उसका अनोखापन भी कौन देखेगा और मानेगा? आदमी दूसरों से मिलना चाहता ही है. दूसरों से बँधना चाहता है. यह प्यास ही जब और ऊँची और गहरी हो जाती है तो आदमी की रूह

ہے، ویسے ہی جیسے ہر ایک کا شریر اپنا اپنا ہی شریر بنتا ہے. ہم اِن فرقوں کو بھی ضرور سمجھیں اور مانیں. اِنھیں فرقوں سے 'میں' 'تو' اور 'وہ' وجود میں آتے ہیں. پر ہم اِن فرقوں کو بدلنے والی چیز، آنی جانی چیز سمجھیں اور اُس حقیقت کو جو سب میں اور سب کے اندر رمی ہوئی ہے زیادہ بڑی، زیادہ ٹِکاؤ اور زیادہ بنیادی سمجھیں. خودی کی بھی اپنی قیمت ہے پر اُس کی بےجا قدر ہمیں مٹا دینے والی ہوگی. سب کی یعنی سب کے بھلے کی یا سب کے اندر کام کرنے والی جان کی ہمیں زیادہ قدر کرنی چاہئے۔ اِسی سے 'ہر آدمی سب کے لئے اور سب ہر ایک کے لئے' ہو سکے گا. صرف اِسی سے سماجی زندگی، ملی جلی زندگی، یا الگ الگ 'میں' اور 'تو' کی جگہ ایک 'ہم' قائم ہو سکے گا اور ہم سب کا بھلا ممکن ہوگا.

کمی یہ ہے کہ ابھی ہم میں سے زیادہ تر کے دماغ اُس کم عمری یا لڑکپن کی حالت میں ہیں جس میں آدمی کو اپنے 'انوکھے پن' میں زیادہ مزہ آتا ہے اور اپنے کو کُل کا یعنی ساری انسانی قوم کے جسم کا ایک حصّہ سمجھنے میں اُتنا آنند نہیں آتا. لیکن یہ اونچی پیاس بھی ہر دل کے اندر موجود ہے. ہم نے ابھی اُسے پہچانا نہیں ہے. کوئی آدمی بھی سدا بالکل اکیلا ہی رہنا نہیں چاہتا. پھر اُس کا انوکھاپن بھی کون دیکھے گا اور مانے گا؟ آدمی دوسروں سے ملنا چاہتا ہی ہے. دوسروں سے بندھنا چاہتا ہے. یہ پیاس ہی جب اور اونچی اور گہری ہو جاتی ہے تو آدمی کی روح

को उस 'रूहे कुल' से जा बाँधती है जहाँ पहुँच कर आदमी अपनी हक़ीक़त और अपने खोए हुए रुतबे को पहचानता है. तभी उसे असली अपनापन मिलता है, पूरा और सच्चा आनन्द मिलता है.

पर जिस तरह हम अलग अलग आदमियों के वजूद को नहीं मिटा सकते उसी तरह अलग अलग मज़हबों के वजूद को बिलकुल मिटा देने की कोशिश भी फ़ज़ूल है. लेकिन हमें इन अलग अलग मज़हबों के अलगपन को कम करना है. जहाँ तक हो सके इनमें मेल बैठाना है और दुनिया को जैसे और मामलों में वैसे ही मज़हब के मामले में भी एकता की तरफ़ ले जाना है. लोगों के दिलों को धीरे धीरे इधर मोड़ना है. यह काम ना मुमकिन नहीं है. यह भी उतना ही क़ुदरती और ज़रूरी है जितना खुदी का होना बल्कि उससे कहीं ज़्यादा ज़रूरी है.

(३१८)

कुछ पढ़े लिखे विद्वान इस बात के साबित करने के चक्कर में पड़ जाते हैं कि बाद के मजहबों ने पहले के मज़हबों से नक़ल की है. की है या नहीं इसका पता लगाने की क़ीमत थोड़े से विद्वानों के लिये कुछ हो सकती है. पर कहीं ज़्यादा जानने और समझने की चीज़ आम लोगों के लिये और सब के लिये यह है कि अगर मज़हबों ने एक दूसरे से नक़ल की भी है तो क्यों की है. क्या इसका यह सबब नहीं है कि सब मज़हब और सब सचाई की बात करने वाले 'एक ही अनादि अनन्त सचाई' की नक़ल करते रहे हैं ? किसी के सामने और कुछ नक़ल करने के लिये था ही नहीं. नई नसलें पुरानी नसलों में से पैदा होती हैं. नई क़ौमें पुरानी क़ौमों

کو اُس 'روحِ کُل' سے جا باندھتی ہے جہاں پہنچ کر آدمی اپنی حقیقت اور اپنے کھوئے ہوئے رُتبے کو پہچانتا ہے. تبھی اُسے اصلی اپناپن ملتا ہے. پورا اور سچّا آنند ملتا ہے.

پر جس طرح ہم الگ الگ آدمیوں کے وجود کو نہیں مٹا سکتے اسی طرح الگ الگ مذہبوں کے وجود کو بالکل مٹا دینے کی کوشش بھی فضول ہے. لیکن ہمیں ان الگ الگ مذہبوں کے الگ پن کو کم کرنا ہے، جہاں تک ہوسکے اِن میں میل بیٹھانا ہے اور دُنیا کو جیسے اور معاملوں میں ویسے ہی مذہب کے معاملے میں بھی ایکتا کی طرف لے جانا ہے. لوگوں کے دلوں کو دھیرے دھیرے ادھر موڑنا ہے. یہ کام نا ممکن نہیں ہے. یہ بھی اُتنا ہی قدرتی اور ضروری ہے جتنا خودی کا ہونا بلکہ اُس سے کہیں زیادہ ضروری ہے.

(۳۱۸)

کچھ پڑھے لکھے ودوان اِس بات کے ثابت کرنے کے چکّر میں پڑجاتے ہیں کہ بعد کے مذہبوں نے پہلے کے مذہبوں سے نقل کی ہے. کی ہے یا نہیں اِس کا پتہ لگانے کی قیمت تھوڑے سے ودوانوں کے لئے کچھ ہوسکتی ہے. پر کہیں زیادہ جاننے اور سمجھنے کی چیز عام لوگوں کے لئے اور سب کے لئے یہ ہے کہ اگر مذہبوں نے ایک دوسرے سے نقل کی بھی ہے تو کیوں کی ہے. کیا اِس کا یہ سبب نہیں ہے کہ سب مذہب اور سب سچّائی کی بات کرنے والے 'ایک ہی انادی اننت سچّائی' کی نقل کرتے رہے ہیں؟ کسی کے سامنے اور کچھ نقل کرنے کے لئے تھا ہی نہیں. نئی نسلیں پُرانی نسلوں سے پیدا ہوتی ہیں. نئی قومیں پُرانی قوموں

और उनकी नौआबादियों में से उग पड़ती हैं. पुराने दियों से नए **चिराग़ रोशन** किये जाते हैं. पर वह जान. वह जोति (नूर). वह **शक्ति** (क़ुदरत) जो इन सब बदलती रहने वाली सूरतों में से **झलक रही है और इन्हें** चला रही है, इन सबसे ऊपर है, इन सब में से होकर वह बह रही है. वही इन सब शकलों को पैदा करती है. जिस चीज़ की नक़ल की जावे वह अगर हक़ है. सचाई है. **तो नक़ल करना** इज़्ज़त की बात है **और** फ़र्ज़ है. और जो कोई नई, **अनोखी** चीज़ पैदा की जा रही है वह अगर 'झूट' है तो अनोखा या मौलिक होना ज़िल्लत की बात है. अनोखापन या **नयापन** सिर्फ़ फ़ानी (नश्वर) चीज़ों में ही हो सकता है. और फ़ानी चीज़ें सब बातिल (असत्य) होती हैं. सचाई में नयापन नहीं हो सकता, क्योंकि जो हमेशा से है और हमेशा रहेगा वही सच है. वही है. उसकी नक़ल करनी चाहिये और नक़ल ही हो सकती है. यह नक़ल बड़ी मेहनत से करनी चाहिये. यही बड़ी बात है. सचाई का 'कापी राइट' नहीं होता. उसमें किसी का पट्टा नहीं है. पर ठीक बात तो यह है कि कभी किसी मज़हब के क़ायम करने वाले को किसी सच्ची बड़ी रूह को कभी 'नक़ल' करने की ज़रूरत ही नहीं पड़ी. रूहानी ज़िन्दगी का दरिया हमेशा बहता रहता है. जिस किसी को रूहानी प्यास होती है वह अपना डोल उसमें डुबो कर उसे भर सकता है. वही एक सच्चाई अलग अलग अपने आज़ाद तरीक़े से हर नए मुतलाशी, नए पैग़म्बर, नए ऋषि और नए तीर्थंकर के सीने में अन्दर से उबलती और जोश मारती रहती है.

اور اُن کی نوآبادیوں میں سے اُگ پڑتی ہیں۔ پُرانے دیوں سے نئے چراغ روشن کئے جاتے ہیں۔ پر وہ جان، وہ جوتی (نور)، وہ شکتی (قدرت) جو اِن سب بدلتی رہنے والی صورتوں میں سے جھلک رہی ہے اور اُنھیں چلا رہی ہے، اِن سب سے اوپر ہے۔ اِن سب میں سے ہوکر وہ بہ رہی ہے۔ وہی اِن سب شکلوں کو پیدا کرتی ہے۔ جس چیز کی نقل کی جاوے وہ اگر حق ہے، سچائی ہے تو نقل کرنا عزت کی بات ہے اور فرض ہے اور جو کوئی نئی، انوکھی چیز پیدا کی جا رہی ہے وہ اگر 'جھوٹ' ہے تو انوکھا یا موَلِک ہونا ذلت کی بات ہے۔ انوکھاپن یا نیاپن صرف فانی (نشور) چیزوں میں ہی ہوسکتا ہے۔ اور فانی چیزیں سب باطل (استیہ) ہوتی ہیں۔ سچائی میں نیاپن نہیں ہوسکتا کیونکہ جو ہمیشہ سے ہے اور ہمیشہ رہےگا وہی سچ ہے۔ وہی ہے۔ اُس کی نقل کرنی چاہئے اور نقل ہی ہوسکتی ہے۔ یہ نقل بڑی محنت سے کرنی چاہئے۔ یہی بڑی بات ہے۔ سچائی کا 'کاپی رائٹ' نہیں ہوتا۔ اس میں کسی کا پٹہ نہیں ہے۔ پر ٹھیک بات تو یہ ہے کہ کبھی کسی مذہب کے قایم کرنے والے کو کسی سچی بڑی روح کو کبھی 'نقل' کرنے کی ضرورت ہی نہیں پڑی۔ روحانی زندگی کا دریا ہمیشہ بہتا رہتا ہے۔ جس کسی کو روحانی پیاس ہوتی ہے وہ اپنا ڈول اُس میں ڈبوکر اُسے بھر سکتا ہے۔ وہی ایک سچائی الگ الگ اپنے آزاد طریقے سے ہر نئے متلاشی، نئے پیغمبر، نئے رشی اور نئے تیرتھنکر کے سینے میں اندر سے اُبلتی اور جوش مارتی رہتی ہے۔

इस एकता को समझने के लिये दूसरों या दूसरे धर्मों की बेक़दरी करने. उन्हें छोटा दिखाने या उनका मज़ाक़ उड़ाने की जगह उन्हें समझना, उनकी क़दर करना और उनकी इज़्ज़त करना ज़्यादा अच्छा है. दूसरों की बुराई या कमी को देखने की निस्बत उनकी अच्छी अच्छी बातों को देखना ज़्यादा फ़ायदे का है. एक दूसरे के फ़रकों को निगाह में रखने की निस्बत मेल की बातों पर निगाह रखना ज़्यादा काम का है. लड़ने की निस्बत सुलह से रहना ज़्यादा अच्छा है.

फ़लसफ़े में और साइन्स में. दर्शन में और विज्ञान में. दोनों में हर बात और हर क़ायदे को समझने के लिये उसके पीछे दूसरी बातों और दूसरे क़ायदों को जानने की ज़रूरत पड़ती है. यह सिलसिला बराबर पीछे को चलता रहता है, यहाँ तक कि इसका कोई सिरा दिखाई नहीं देता. आख़ीर में हम उस अनन्त आत्मा. उस रूहे कुल, उस परम चेतन तक पहुँच जाते हैं जिसकी चेतनना में हमारी जागने की हालत. सपने की हालत और गहरी नींद की हालत तीनों सब समा जाती हैं. उस रूहे कुल में कायनात की सारी शकलें बनती और बिगड़ती रहती हैं. सब माद्दी और रूहानी. जड़ और चेतन क़ानून उसी के बनाए और उसी के मातहत हैं. उसी अनन्त आत्मा. उसी रूहे कुल में जाकर सब मज़हब. सब फ़लसफ़े. सब साइन्स. सब क़ानून और सब हुनर मिल जाते हैं. उसी से वह सब फिर निकलते हैं. यह सिलसिला फिर बे अन्त दिखाई देता है. जब हम उस सच्चाई तक पहुँच जाते हैं तब हमें सब सवालों का जवाब मिल जाता है, हमारे सब

اِس ایکتا کو سمجھنے کے لئے دوسروں یا دوسرے دھرموں کی بے قدری کرنے، اُنھیں چھوٹا دکھانے یا اُن کا مذاق اُڑانے کی جگہ اُنھیں سمجھنا، اُن کی قدر کرنا اور اُن کی عزت کرنا زیادہ اچھا ہے۔ دوسروں کی بُرائی یا کمی کو دیکھنے کی نسبت اُن کی اچھی اچھی باتوں کو دیکھنا زیادہ فائدے کا ہے۔ ایک دوسرے کے فرقوں کو نگاہ میں رکھنے کی نسبت میل کی باتوں پر نگاہ رکھنا زیادہ کام کا ہے۔ لڑنے کی نسبت صلح سے رہنا زیادہ اچھا ہے۔

فلسفے میں اور سائنس میں، درشن میں اور وگیان میں، دونوں میں ہر بات اور ہر قاعدے کو سمجھنے کے لئے اُس کے پیچھے دوسری باتوں اور دوسرے قاعدوں کو جاننے کی ضرورت پڑتی ہے۔ یہ سلسلہ برابر پیچھے کو چلتا رہتا ہے یہاں تک کہ اس کا کوئی سرا دکھائی نہیں دیتا۔ آخیر میں ہم اُس اننت آتما، اُس روحِ کُل، اُس پرم چیتن تک پہنچ جاتے ہیں جس کی چیتنتا میں ہماری جاگنے کی حالت، سپنے کی حالت اور گہری نیند کی حالت تینوں سب سما جاتی ہیں۔ اِس روحِ کُل میں کائنات کی ساری شکلیں بنتی اور بگڑتی رہتی ہیں۔ سب مادّی اور روحانی، جڑ اور چیتن، قانون اُسی کے بنائے اور اُسی کے ماتحت ہیں۔ اُسی اننت آتما، اُسی روحِ کُل میں جاکر سب مذہب، سب فلسفے، سب سائنس، سب قانون اور سب ہُنر مل جاتے ہیں۔ اُسی سے وہ سب پھر نکلتے ہیں۔ یہ سلسلہ پھر بے انت دکھائی دیتا ہے۔ جب ہم اُس سچائی تک پہنچ جاتے ہیں تب ہمیں سب سوالوں کا جواب مل جاتا ہے ہمارے سب

शक दूर हो जाते हैं. हम आखिरी संगम, आखिरी समन्वय मजमे-उल-बहरैन तक पहुंच गए. हमारी आत्मा को पूरी शान्ति, रूह को पूरा इतमीनान मिल जाता है.

इस संगम पर पहुँचे बग़ैर इनसानी समाज को न इस दुनिया में सुख मिल सकता है, न दूसरी दुनिया में. हमारे मजहबी जंग, हमारी फ़िरक़ेवाराना लड़ाइयां. हिन्दू मुसलमानों के झगड़े, हिंदुओं हिन्दुओं के झगड़े, जात जात के झगड़े, शिया सुन्नी के झगड़े, अरबों और यहूदियों के झगड़े, यहूदियों और जरमनों के झगड़े, अगली पिछली लड़ाइयाँ, सब की असली वजह असल में इसी एक मेल की कमी है, इसी एकता को अपने अन्दर न समझ सकना है. जिस दरजे तक भी हम इसे अपने अन्दर पैदा कर सकें और समझ सकें उसी दरजे तक हम इन मुसीबतों से बच सकते हैं.

जितनी रूहानी, दिमाग़ी और जिस्मानी बारूदें हमने जमा कर ली हैं उन सबको चाहे एक दूसरे को मारकाट कर और चाहे सच्चाई और दूरन्देशी से एक दूसरे को समझ कर और एक दूसरे से राज़ी होकर जब हम ख़तम कर देंगे तब सारी इनसानी ज़िन्दगी और आपस के सम्बन्धों को नए सिर से और नए ढंग से क़ायम करके हमें इस तरह का एक बहुत बड़ा संगम बनाना ही पड़ेगा, नया मेल जोल क़ायम करना पड़ेगा, एक ऐसे नए और ज़बरदस्त गठान को रूप देना होगा जिसमें सब खप जायं और जिसमें हमारी इनसानी ज़िन्दगी के सब पहलू रूहानी और माद्दी शख़्सी और समाजी समा जावें-

شک دور ہو جاتے ہیں، ہم آخری سنگم، آخری سمنوے مجمع البحرین تک پہنچ گئے. ہماری آتما کو پوری شانتی روح کو پورا اطمینان مل جاتا ہے.

اس سنگم پر پہنچے بغیر انسانی سماج کو نہ اس دنیا میں سکھ مل سکتا ہے، نہ دوسری دنیا میں. ہمارے مذہبی جنگ ہماری فرقے وارانہ لڑائیاں، ہندو مسلمانوں کے جھگڑے، ہندوؤں ہندوؤں کے جھگڑے، جات جات کے جھگڑے، شیعہ سنی کے جھگڑے، عربوں اور یہودیوں کے جھگڑے، یہودیوں اور جرمنوں کے جھگڑے، اگلی پچھلی لڑائیاں، سب کی اصلی وجہ اصل میں اسی ایک میل کی کمی ہے، اسی ایکتا کو اپنے اندر نہ سمجھ سکنا ہے. جس درجے تک بھی ہم اسے اپنے اندر پیدا کر سکیں اور سمجھ سکیں اسی درجے تک ہم ان مصیبتوں سے بچ سکتے ہیں.

جتنی روحانی، دماغی اور جسمانی بارودیں ہم نے جمع کر لی ہیں ان سب کو چاہے ایک دوسرے کو مار کاٹ کر اور چاہے سچائی اور دور اندیشی سے ایک دوسرے کو سمجھ کر اور ایک دوسرے سے راضی ہو کر جب ہم ختم کر دیں گے تب ساری انسانی زندگی اور آپس کے سمبندھوں کو نئے سرے سے اور نئے ڈھنگ سے قایم کر کے، ہمیں اس طرح کا ایک بہت بڑا سنگم بنانا ہی پڑے گا، نیا میل جول قایم کرنا پڑے گا، ایک ایسے نئے اور زبردست گٹھان کو روپ دینا ہوگا جس میں سب کھپ جائیں اور جس میں ہماری انسانی زندگی کے سب پہلو روحانی اور مادی، شخصی اور سماجی سما جاویں.

इसी का एक नया तजरबा रूस में हो रहा है. अगर वह सब तरह कामयाब समझा गया तो हर जगह उसकी नक़ल होने लगेगी. अगर वह कुछ ख़ास बातों में नाकाम रहा—और उसके नाकाम होने का ही डर है, क्योंकि उसमें वह जहरों को चूमने वाली, भरोसा पैदा करने वाली, सचाई और हमदर्दी को जनम देने वाली रचनात्मक रूहानी ख़ुराक नहीं है—तो फिर दूसरा रास्ता सिर्फ़ एक ऐसे विश्व व्यापक, आलमगीर मज़हब, मज़हबे इनसानियत, मानव धर्म को क़ायम करना है जो सब अलग अलग धर्मों को मिलाकर एक कर दे, जिसमें सबके दिल और दिमाग़ मिल जावें, जो सब को रूहानी ख़ुराक दे, जिससे बिखराव और फूट के सब तरह तरह के जहर इनसानी क़ौम के जिस्म से निकल कर बाहर हो जावें, इस बड़े जिस्म के सब रग पट्ठे एक दूसरे से गठते चले जावें, प्रेम बढ़े, भरोसा बढ़े, और सारा इनसानी समाज एक ख़ानदान माना जाने लगे. इसी से समाजी संगठन की वह ठीक ठीक तरतीब पैदा होगी जिसमें सब अपने अपने सुभाव और शक्ति के मुताबिक़ सबके भले के कामों में लग सकेंगे.

सब मुल्कों और सब क़ौमों की पाक किताबें हमें इसी का उपदेश दे रही हैं और इसी तरफ़ ले जाना चाह रही हैं. यह कोई नई राह नहीं है. धर्म या मज़हब को अगर ज़िन्दा रहना है तो उसे इनसानी क़ौम के लिये इस दुनिया में और दूसरी दुनिया में ज़्यादा से ज़्यादा सुख और ज़्यादा से ज़्यादा तरक़्क़ी के सामान पैदा करके दिखाने होंगे.

दीन, धर्म या मज़हब के बाहरी रूपों और ग़लत रूपों पर

اِس کا ایک نیا تجربہ روس میں ہو رہا ہے۔ اگر وہ سب طرح کامیاب سمجھا گیا تو ہر جگہ اُس کی نقل ہونے لگے گی۔ اگر وہ کچھ خاص باتوں میں ناکام رہا—اور اُس کے ناکام ہونے کا ہی ڈر ہے کیونکہ اس میں وہ زہروں کو چوسنے والی، بھروسہ پیدا کرنے والی سچائی اور ہمدردی کو جنم دینے والی رچناتمک روحانی خوراک نہیں ہے—تو پھر دوسرا راستہ صرف ایک ایسے وشو ویاپک عالمگیر مذہب، مذہبِ انسانیت، مانو دھرم کو قایم کرنا ہے جو سب الگ الگ دھرموں کو ملا کر ایک کر دے، جس میں سب کے دل اور دماغ مل جاویں، جو سب کو روحانی خوراک دے، جس سے بکھراؤ اور پھوٹ کے سب طرح طرح کے زہر انسانی قوم کے جسم سے نکل کر باہر ہو جاویں، اِس بڑے جسم کے سب رگ پٹھے ایک دوسرے سے گٹھتے چلے جاویں، پریم بڑھے، بھروسہ بڑھے اور سارا انسانی سماج ایک خاندان مانا جانے لگے۔ اِسی سے سماجی سنگٹھن کی وہ ٹھیک ٹھیک ترتیب پیدا ہوگی جس میں سب اپنے اپنے سبھاؤ اور شکتی کے مطابق سب کے بھلے کے کاموں میں لگ سکیں گے۔

سب ملکوں اور سب قوموں کی پاک کتابیں ہمیں اِسی کا اُپدیش دے رہی ہیں اور اِسی طرف لے جانا چاہ رہی ہیں۔ یہ کوئی نئی راہ نہیں ہے۔ دھرم یا مذہب کو اگر زندہ رہنا ہے تو اُسے انسانی قوم کے لئے اِس دُنیا میں اور دوسری دنیا میں زیادہ سے زیادہ سُکھ اور زیادہ سے زیادہ ترقی کے سامان پیدا کر کے دکھانے ہوں گے۔

دین، دھرم یا مذہب کے باہری روپوں اور غلط روپوں پر

ज़ोर देना—और यह ही मज़हब मज़हब में फ़रक़ करने वाली चीज़ें हैं— और दीन धर्म की उस असलियत को सामने न रखना-जो सब मज़हबों को असलियत है—इन्हीं का ही यह नतीजा है कि आज दुनिया में अपनी अपनी हकूमत को क़ायम रखने के लिये बेचैन हाकिम, और अपने अपने बड़प्पन को बनाए रखने की फ़िक्र में बड़े बड़े नेता न सिर्फ़ अँधेरे में राह टटोल रहे हैं बल्कि 'अंधों को राह दिखाने वाले अंधों' की तरह राजकाजी जंगों, माली लड़ाइयों और फ़िरक़ेवाराना मारकाट के ज़रिये इस दुनिया को भयंकर नरक बनाए हुए हैं, और जिन का भला करना चाहते हैं, या कम से कम करने का दावा करते हैं उन्हीं के जिस्मों. इख़लाक़ और रूहों सब को बरबाद कर रहे हैं.

कोई यह नहीं कह सकता कि उसे 'सच्ची राह' दिखाई नहीं देती. हमने ख़ुद अपनी आंखें उस राह से फेर रक्खी हैं. सच्चे दीन धरम का सूरज अब भी पूरी तेज़ी के साथ चमक रहा है. उसकी किरनें बराबर चारों तरफ़ फैल रही हैं. इन राजकाजी हाकिमों और नेताओं को सिर्फ़ अपने आँखों पर से पट्टियाँ खोल कर फेंकनी हैं. यह पट्टियाँ हैं अहंकार की. अपनी अपनी राष्ट्रीयता को ढपली की—मेरा राष्ट्र. मेरी क़ौम, मेरा दीन. मेरा धर्म. इन पट्टियों को उतार कर उसकी जगह इन्हें मानवता. इन्सानियत की ऐनकें लगानी हैं. ऐसा करते ही उन्हें अपनी और सब की सुख, शान्ति का रास्ता साफ़ दिखाई दे जावेगा. हमारी सब बड़ी बड़ी मज़हबी किताबें बार बार जगह जगह और साफ़ साफ़ बता रही हैं कि वह रास्ता क्या है और इनसानी समाज को उसके असली

(३६३)

زور دینا — اور یہ ہی مذہب مذہب میں فرق کرنے والی چیزیں ہیں — اور دین دھرم کی اُس اصلیت کو سامنے نہ رکھنا — جو سب مذہبوں کی اصلیت ہے — انھیں کا ہی یہ نتیجہ ہے کہ آج دُنیا میں اپنی اپنی حکومت کو قایم رکھنے کے لئے بے چین حاکم اور اپنے اپنے بڑپن کو بنائے رکھنے کی فکر میں بڑے بڑے نیتا نہ صرف اندھیرے میں راہ ٹٹول رہے ہیں بلکہ 'اندھوں کو راہ دکھلانے والے اندھوں' کی طرح راج کاجی جنگوں، مالی لڑائیوں اور فرقے وارانہ مارکاٹ کے ذریعے اِس دُنیا کو بھینکر نرک بنائے ہوئے ہیں اور جن کا بھلا کرنا چاہتے ہیں یا کم سے کم کرنے کا دعوی کرتے ہیں اُنھیں کے جسموں، اخلاق اور روحوں سب کو برباد کر رہے ہیں۔

کوئی یہ نہیں کہہ سکتا کہ اُسے سچی راہ دکھائی نہیں دیتی۔ ہم نے خود اپنی آنکھیں اُس راہ سے پھیر رکھی ہیں۔ سچے دین دھرم کا سورج اب بھی پوری تیزی کے ساتھ چمک رہا ہے۔ اُس کی کرنیں برابر چاروں طرف پھیل رہی ہیں۔ اِن راج کاجی حاکموں اور نیتاؤں کو صرف اپنی آنکھوں پر سے پٹیاں کھول کر پھینکنی ہیں۔ یہ پٹیاں ہیں اہنکار کی، اپنی اپنی راشٹریتا کی ڈھپلی کی — میرا راشٹر، میری قوم، میرا دین، میرا دھرم۔ اِن پٹیوں کو اُتار کر اُس کی جگہ انھیں مانوتا، انسانیت کی عینک لگانی ہے۔ ایسا کرتے ہی اُنھیں اپنی اور سب کی سُکھ، شانتی کا راستہ صاف دکھائی دے جاوے گا۔ ہماری سب بڑی بڑی مذہبی کتابیں بار بار جگہ جگہ اور صاف صاف بتا رہی ہیں کہ وہ راستہ کیا ہے اور انسانی سماج کو اُس کے اصلی

भले के लिये किस तरह तरतीब देना और चलाना चाहिये.

अगर सब अलग अलग धर्मों के इस तरह के बड़े बड़े विद्वान जिनके दिमाग़ साफ़ और दिल बड़े हों और जो सबके भले को सच्चाई से सोचते हों मिल कर छोटे बड़े दरजों के लिये इस तरह की किताबें तय्यार कर दें जिनमें सब अलग अलग धर्मों की किताबों से एक सी बातें लेकर इस आलमगीर विश्वव्यापी मानव धर्म, मज़हबे इनसानियत के सब मोटे मोटे असूल बयान किये गए हों और उन पर अमल की मिसालें भी उन्हीं धर्मों की किताबों से ले लेकर दी गई हों तो दुनिया का और ख़ास कर आगे आने वाली नसलों का बहुत बड़ा कल्यान हो सकता है. इस तरह की किताबें सब ज़बानों में, सब मज़हबों के लोगों में, सब स्कूलों और कालिजों में चलाई और फैलाई जा सकती हैं.

आगे के लेखों में हम इसी तरह के कुछ मोटे मोटे असूल और उनकी मिसालें देने की कोशिश करेंगे जिससे काम की राह निकले और सब का भला हो.

ओम्!   आमीन!   एमन!

इस मज़मून पर ज़्यादा जानकारी के लिये लेखक की अंग्रेज़ी किताब 'The Essential Unity of All Religions' पढ़िये.

بھلے کے لئے کس طرح ترتیب دینا اور چلانا چاہئے۔

اگر سب الگ الگ دھرموں کے اس طرح کے بڑے بڑے ودوان جن کے دماغ صاف اور دل بڑے ہوں اور جو سب کے بھلے کو سچائی سے سوچتے ہوں مل کر چھوٹے بڑے درجوں کے لئے اس طرح کی کتابیں تیار کر دیں جن میں سب الگ الگ دھرموں کی کتابوں سے ایک سی باتیں لے کر اس عالمگیر وشودیاپی مانو دھرم مذہب انسانیت کے سب موٹے موٹے اصول بیان کئے گئے ہوں اور ان پر عمل کی مثالیں بھی انھیں دھرموں کی کتابوں سے لے لے کر دی گئی ہوں تو دنیا کا اور خاص کر آگے آنے والی نسلوں کا بہت بڑا کلیان ہوسکتا ہے۔ اس طرح کی کتابیں سب زبانوں میں سب مذہبوں کے لوگوں میں، سب اسکولوں اور کالجوں میں چلائی اور پھیلائی جاسکتی ہیں۔

آگے کے لیکھوں میں ہم اسی طرح کے کچھ موٹے موٹے اصول اور ان کی مثالیں دینے کی کوشش کریں گے جس سے کام کی راہ نکلے اور سب کا بھلا ہو۔

اوم   آمین!   ایمن!

اس مضمون پر زیادہ جانکاری کے لئے لیکھک کی انگریزی کتاب 'The Essential Unity of All Religions'

राह देखना*

(रवीन्द्र नाथ ठाकुर)

मेरी ख़ुशी राह देखने में ही है.
जहाँ धूप छाँव एक दूसरे के साथ खेलती हैं
बरसात आती है और बसंत आता है.
मेरे सामने से कौन ख़बर लेकर आते जाते हैं ?
मैं अपने आप में ही ख़ुश रहता हूँ.
भीनी भीनी हवा चल रही है
मैं सारे दिन आंखें बिछाए दरवाजे पर रहूँगा.
जब यकायक शुभ घड़ी आयगी तभी उसका
दरशन होगा. तब तक पल पल अपनी मौज में
गाता हूँ और ठहर ठहर कर कभी कभी उसकी
ख़ुशबू आती है.

मेरी ख़ुशी राह देखने में ही है.

('गीति माला' से)

---

* बंगला से तरजुमा—गु. म.

راہ دیکھنا*

(ربندر ناتھ ٹھاکر)

میری خوشی راہ دیکھنے میں ہی ہے۔
جہاں دھوپ چھاؤں ایک دوسرے کے ساتھ کھیلتی ہیں
برسات آتی ہے اور بسنت آتا ہے۔
میرے سامنے سے کون خبر لے کر آتے جاتے ہیں؟
میں اپنے آپ میں ہی خوش رہتا ہوں۔
بھینی بھینی ہوا چل رہی ہے
میں سارے دن آنکھیں بچھائے دروازے پر رہوں گا
جب یکایک شبھ گھڑی آئے گی تبھی اس کا
درشن ہوگا تب تک پل پل اپنی موج میں
گاتا ہوں اور ٹھہر ٹھہر کر کبھی کبھی اس کی
خوشبو آتی ہے۔
میری خوشی راہ دیکھنے میں ہی ہے۔

('گیت مالا' سے)

---

* بنگلہ سے ترجمہ — گ. م.

इसलाम

अपने को अल्लाह की मरज़ी पर छोड़ देना,

मज़हबी रवादारी

"ऐ ईमान वालो ! किसी पर भी शक करने से बहुत बहुत बचो. क्योंकि इसमें शक नहीं कभी कभी शक करना गुनाह होता है. और दूसरों की बुराइयाँ ढूँढते न फिरो. दूसरों की पीठ पीछे बुराई न करो. क्या तुममें से कोई अपने मुर्दा भाई का मांस खाना पसन्द करेगा ? नहीं. तुम ऐसे काम से नफ़रत करते हो (इसी तरह दूसरों की पीठ पीछे बुराई करने से भी बचो). अल्लाह की तरफ़ अपने फ़र्ज़ का ख़्याल रक्खो. इसमें शक नहीं अल्लाह बार बार माफ़ करने वाला और दयावान है" (क़ुरान ४९—१२)

इतिहास इस बात की मिसालों से भरा पड़ा है कि अलग अलग धर्मों और अवतारों, तीर्थंकरों और पैग़म्बरों की बाबत ग़लत और तंग विचारों के फैलने फैलाने से दुनिया को कितना नुक़सान पहुँचा है. यही हाल हमारे मुल्क में भी हुआ है और हो रहा है. हमें यहाँ इन चीज़ों के राजकाजी या दूसरे पहलुओं से कोई मतलब नहीं. हम सिर्फ़ यह कहना चाहते हैं कि इन ग़लत फ़हमियों से इनसानी क़ौम की तरक्क़ी को और ख़ास कर हमारे मुल्क हिन्दुस्तान को बहुत नुक़सान पहुँचा है. हम यहाँ दिखाना चाहते हैं कि अरब के पैग़म्बर ने जिस इसलाम की तालीम दी थी वह इसलाम क्या है. यह हम क़ुरान से और रसूल के उपदेशों से ही बताना चाहते हैं

रूहानी इल्म के किसी बड़े उपदेशक ने आज तक कभी कोई

(۳۲۶)

اسلام

(اپنے کو اللہ کی مرضی پر چھوڑ دینا)

مذہبی رواداری

"اے ایمان والو! کسی پر بھی شک کرنے سے بہت بہت بچو. کیونکہ اس میں شک نہیں کبھی کبھی شک کرنا گناہ ہوتا ہے. اور دوسروں کی برائیاں ڈھونڈھتے نہ پھرو. دوسروں کی پیٹھ پیچھے برائی نہ کرو. کیا تم میں سے کوئی اپنے مردہ بھائی کا مانس کھانا پسند کرے گا؟ نہیں. تم ایسے کام سے نفرت کرتے ہو (اسی طرح دوسروں کی پیٹھ پیچھے برائی کرنے سے بھی بچو). اللہ کی طرف اپنے فرض کا خیال رکھو. اس میں شک نہیں اللہ بار بار معاف کرنے والا اور دیاوان ہے" (قرآن ۴۹—۱۲)

اتہاس اس بات کی مثالوں سے بھرا پڑا ہے کہ الگ الگ دھرموں اور اوتاروں تیرتھینکروں اور پیغمبروں کی بابت غلط اور تنگ دیاروں کے پھیلنے پھیلانے سے دنیا کو کتنا نقصان پہنچا ہے. یہی حال ہمارے ملک میں بھی ہوا ہے اور ہو رہا ہے. ہمیں یہاں ان چیزوں کے راج کاجی یا دوسرے پہلوؤں سے کوئی مطلب نہیں. ہم صرف یہ کہنا چاہتے ہیں کہ ان غلط فہمیوں سے انسانی قوم کی ترقی کو اور خاص کر ہمارے ملک ہندستان کو بہت نقصان پہنچا ہے. ہم یہاں دکھانا چاہتے ہیں کہ عرب کے پیغمبر نے جس اسلام کی تعلیم دی تھی وہ اسلام کیا ہے. یہ ہم قرآن سے اور رسول کے اپدیشوں سے ہی بتانا چاہتے ہیں.

روحانی علم کے کسی بڑے اپدیشک نے آج تک کبھی کوئی

अलग मज़हब चलाया ही नहीं. इस तरह के सब राह दिखाने वाले मज़हब के बिगड़े हुए रूप को हटा कर उसे नया और ठीक रूप देते रहे हैं, बिगड़े हुए को सुधारते रहे हैं. ख़ास कर जिन लोगों में वह पैदा हुए उनकी दिमाग़ी और इख़लाक़ी जिन्दगी में जो बुराइयाँ पैदा हो गई थीं उनको उन्होंने दिखलाया और उनसे लड़े. कृष्ण महाराज ने कलयुग के शुरू में अवतार लिया. उन्होंने कोई नया मज़हब नहीं चलाया. बुद्ध भगवान राज घराने में पैदा हुए थे. उन्होंने भी कोई नया धर्म नहीं चलाया. उन्होंने सिर्फ़ धर्म के रूप को सुधारा. उन्हें इनसानी क़ौम के अपने सब भाइयों से प्रेम था. इनकी धार्मिक ज़िन्दगी में महात्मा बुद्ध ने जहालत और अंध विश्वास भरे हुए पाए. इन्हीं को उन्होंने हटाने की कोशिश की. चीन के महात्मा लाओत्ज़े और महात्मा कंफ्यूशियस, इसी तरह हज़रत ईसा और दूसरे पैग़म्बरों ने बिगड़े हुए धर्म को ही सुधारा. यही सब देशों और सब ज़मानों में होता रहा है. यही हज़रत मोहम्मद ने किया.

हर रूहानी राह दिखाने वाले के चले जाने के बाद उसके मानने वाले जिनमें समझ कम और जोश ज़्यादा होता है किसी न किसी शकल में पुरोहित, मुल्ला या पादरी बन बैठते हैं. वह अपने हादी की बताई हुई असली राह से हट जाते हैं. इसी तरह तरह तरह के अलग धर्म मज़हब खड़े हो जाते हैं. पोप, पुरोहित, मोबिद और मौलाना ही इन अलग अलग मज़हबों को ज़िन्दा रखते हैं. सच यह है कि हर मज़हब का सबसे ज़्यादा नुक़सान उसी के मानने वालों ने पहुँचाया है.

الگ مذہب چلایا ہی نہیں۔ اس طرح کے سب راہ دکھانے والے مذہب کے بگڑے ہوئے روپ کو ہٹا کر اُسے نیا اور ٹھیک روپ دیتے رہے ہیں، بگڑے ہوئے کو سُدھارتے رہے ہیں۔ خاص کر جن لوگوں میں وہ پیدا ہوئے اُن کی دماغی اور اخلاقی زندگی میں جو بُرائیاں پیدا ہو گئی تھیں اُن کو اُنھوں نے دکھلایا اور اُن سے لڑے۔ کرشن مہاراج نے کلجگ کے شروع میں اوتار لیا۔ اُنھوں نے کوئی نیا مذہب نہیں چلایا۔ بُدھ بھگوان راج گھرانے میں پیدا ہوئے تھے۔ اُنھوں نے بھی کوئی نیا دھرم نہیں چلایا۔ اُنھوں نے صرف دھرم کے روپ کو سُدھارا۔ اُنھیں انسانی قوم کے اپنے سب بھائیوں سے پریم تھا۔ ان کی دھارمک زندگی میں مہاتما بُدھ نے جہالت اور اندھ وشواش بھرے ہوئے پائے۔ انھیں کو اُنھوں نے ہٹانے کی کوشش کی۔ چین کے مہاتما لاؤ تزے اور مہاتما کنفیوشیس، اسی طرح حضرت عیسٰی اور دوسرے پیغمبروں نے بگڑے ہوئے دھرم کو ہی سُدھارا۔ یہی سب دیشوں اور سب زمانوں میں ہوتا رہا ہے۔ یہی حضرت محمدؐ نے کیا۔

ہر روحانی راہ دکھانے والے کے چلے جانے کے بعد اُس کے ماننے والے جن میں سمجھ کم اور جوش زیادہ ہوتا ہے کسی نہ کسی شکل میں پروہت، مُلّا یا پادری بن بیٹھتے ہیں۔ وہ اپنے ہادی کی بتائی ہوئی اصلی راہ سے ہٹ جاتے ہیں۔ اسی طرح طرح طرح کے الگ دھرم مذہب کھڑے ہو جاتے ہیں۔ پوپ، پروہت، موبد اور مولانا ہی ان الگ الگ مذہبوں کو زندہ رکھتے ہیں۔ سچ یہ ہے کہ ہر مذہب کو سب سے زیادہ نقصان اُسی کے ماننے والوں نے پہنچایا ہے۔

इस बात को समझने के लिये यह जरूरी है कि हम हर मजहब के शुरू की हालत को और जिस जमाने और जिन हालतों में वह पैदा हुआ उन्हें अच्छी तरह समझें. हर मजहब का बानी बिगड़ी हुई राह को सीधा करने की कोशिश करता है, कोई नई राह बनाने की नहीं. वह सारी दुनिया के लिये बात करता है, अपने लिये नहीं. पुरोहित पंडे और मौलवी फिर उस राह को टेढ़ी करके एक फ़िरक़ा या सम्प्रदाय चला बैठते हैं. असली पैग़म्बर के उपदेश मार्फ़त और ज्ञान से भरे होते है. उनसे दुनिया को रोशनी मिलती है. पुरोहित पंडे जो कुछ कहते हैं उससे जहालत अन्ध विश्वास और तास्सुब बढ़ता है. दुनिया के सब पैग़म्बरों की बताई हुई राह को इसी तरह नुक़सान पहुँचा है और इसी तरह अरब के पैग़म्बर के नेक और पाक मिशन को नुक़सान पहुँचा है.

सन् ५७१ ई० में मोहम्मद साहब का जनम हुआ था. उस वक़्त की अरब देश की हालत को "इसलाम इन दि वर्ल्ड" नामी किताब के लेखक मशहूर मुसलमान आलिम जकी अली साहब ने इस तरह बयान किया है—

"पांचवीं और छटीं सदी ईसवी में एशिया और योरप दोनों के अन्दर पुरानी तहज़ीबें गिर रही थीं और पुरानी कलचर मिट रही थी. इसके बाद अगली सदी ही में एक ऐसी क़ौम के लोगों ने इतिहास की बहती हुई धार को जोर के साथ बदल दिया कि जिनसे इसकी उम्मीद न थी. ख़ाना बदोश बदू अरबों ने अपने रेगिस्तान से ऊँटों पर निकल कर उधर रोम और ... की ... ने मोर्चा लिया. ईरान का खसरो नंग

اس بات کو سمجھنے کے لئے یہ ضروری ہے کہ ہم ہر مذہب کے شروع کی حالت کو اور جس زمانے اور جن حالتوں میں وہ پیدا ہوا انھیں اچھی طرح سمجھیں. ہر مذہب کا بانی بگڑی ہوئی راہ کو سیدھی کرنے کی کوشش کرتا ہے. کوئی نئی راہ بنانے کی نہیں. وہ ساری دنیا کے لئے بات کرتا ہے اپنے لئے نہیں. پروہت پنڈے اور مولوی پھر اس راہ کو ٹیڑھی کرکے ایک فرقہ یا سمپرداے چلا بیٹھتے ہیں. اصلی پیغمبر کے اپدیش معرفت اور گیان سے بھرے ہوتے ہیں. ان سے دنیا کو روشنی ملتی ہے. پروہت پنڈے جو کچھ کہتے ہیں اس سے جہالت اندھ وشواس اور تعصب بڑھتا ہے. دنیا کے سب پیغمبروں کی بتائی ہوئی راہ کو اسی طرح نقصان پہونچا ہے اور اسی طرح عرب کے پیغمبر کے نیک اور پاک مشن کو نقصان پہونچا ہے.

سن ۵۷۱ء میں محمد صاحب کا جنم ہوا تھا. اس وقت کی عرب دیش کی حالت کو "اسلام ان دی ورلڈ" نامی کتاب کے لیکھک مشہور مسلمان عالم زکی علی صاحب نے اس طرح بیان کیا ہے.

"پانچویں اور چھٹی صدی عیسوی میں ایشیا اور یورپ دونوں کے اندر پرانی تہذیبیں گر رہی تھیں اور پرانی کلچر مٹ رہی تھی. اس کے بعد اگلی صدی ہی میں ایک ایسی قوم کے لوگوں نے اتہاس کی بہتی ہوئی دھار کو زور کے ساتھ بدل دیا کہ جن سے اس کی امید نہ تھی. خانہ بدوش بدو عربوں نے اپنے ریگستان سے اونٹوں پر نکل ادھر روم اور ادھر ایران کی سلطنت سے مورچہ لیا. ایران کا خسرو دنگ

रह गया. उसने पूछा "तुम कौन हो कि इतनी बड़ी सल्तनत पर हमला करो ? दुनिया की क़ौमों में तुम सब से ग़रीब और सब से जाहिल हो और तुममें आपस में सब से ज़्यादा फूट है." अरब दूत ने बिना झिझके जवाब दिया—"जो कुछ आप कह रहे हैं वह सब किसी ज़माने में ठीक था. अरब लोग जानवरों की मोटी ऊन के कपड़े पहनते थे, हरी छिपकलियाँ (?) खाते थे. अपनी छोटी छोटी लड़कियों को ज़िन्दा दफ़न कर देते थे, मुर्दा जानवर खाते थे, गरम गरम ख़ून पी जाते थे, अपने रिश्तेदारों को मार डालते थे और लूट के माल पर फ़ख़्र करते थे, हमें भले बुरे की कोई तमीज़ नहीं थी, न हम यह बता सकते थे कि क्या जायज़ है और क्या नाजायज़ है. लेकिन अब यह सब बिल्कुल नहीं रहा. अल्लाह ने हम पर रहम करके एक पाक पैग़म्बर हमारे पास भेजा जिसने हमें एक पाक किताब दी जिससे हमें यह तालीम मिलती है कि सच्चा दीन क्या है."

इस तरह के हालात में क़ुरैश ख़ानदान के अन्दर मुहम्मद साहब का जन्म हुआ था. सात बरस की उमर तक उनके माँ बाप चल बसे थे. उनके ताऊ अबू तालिब ने उन्हें पाला. वह तिजारत के काम में लग गए. उन्होंने बेवा ख़दीजा के यहाँ नौकरी करली. ख़दीजा ख़ुद बहुत होशियार व्यापारी थी. बाद में मोहम्मद साहब ने ख़दीजा से शादी करली. जब वह पैग़म्बर हुए तो ख़दीजा ही सबसे पहले उन पर ईमान लाई. ख़दीजा के यहाँ नौकरी करते हुए मोहम्मद साहब ऊपर से देखने में तो ऊँट पर सवारी करते थे और ख़दीजा को मुनाफ़ा कमा कर देते थे, लेकिन अन्दर की

رہ گیا۔ اُس نے پوچھا "تم کون ہو کہ اِتنی بڑی سلطنت پر حملہ کرو؟ دُنیا کی قوموں میں تم سب سے غریب اور سب سے جاہل ہو اور تم میں آپس میں سب سے زیادہ پھوٹ ہے۔" عرب دوت نے بنا جھجھکے جواب دیا—"جو کچھ آپ کہہ رہے ہیں وہ سب کسی زمانے میں ٹھیک تھا۔ عرب لوگ جانوروں کی موٹی اُون کے کپڑے پہنتے تھے۔ ہری چھپکلیاں (؟) کھاتے تھے۔ اپنی چھوٹی چھوٹی لڑکیوں کو زندہ دفن کر دیتے تھے، مُردہ جانور کھاتے تھے گرم گرم خون پی جاتے تھے، اپنے رشتہ داروں کو مار ڈالتے تھے اور لوٹ کے مال پر فخر کرتے تھے، ہمیں بھلے بُرے کی کوئی تمیز نہیں تھی، نہ ہم یہ بتا سکتے تھے کہ کیا جائز ہے اور کیا ناجائز ہے۔ لیکن اب یہ سب بالکل نہیں رہا۔ اللہ نے ہم پر رحم کرکے ایک پاک پیغمبر ہمارے پاس بھیجا جس نے ہمیں ایک پاک کتاب دی جس سے ہمیں یہ تعلیم ملتی ہے کہ سچا دین کیا ہے۔"

اِس طرح کے حالات میں قریش خاندان کے اندر محمدؐ صاحب کا جنم ہوا تھا۔ سات برس کی عمر تک اُن کے ماں باپ چل بسے تھے۔ اُن کے تاؤ ابوطالب نے اُنھیں پالا۔ وہ تجارت کے کام میں لگ گئے۔ اُنھوں نے بیوہ خدیجہ کے یہاں نوکری کر لی۔ خدیجہ خود بہت ہوشیار بیوپاری تھیں۔ بعد میں محمد صاحب نے خدیجہ سے شادی کر لی۔ جب وہ پیغمبر ہوئے تو خدیجہ ہی سب سے پہلے اُن پر ایمان لائی۔ خدیجہ کے یہاں نوکری کرتے ہوئے محمد صاحب اوپر سے دیکھنے میں تو اونٹ پر سواری کرتے تھے اور خدیجہ کو منافع کما کر دیتے تھے، لیکن اندر کی

जिन्दगी में उनकी आत्मा उनके मन और नफ़स पर सवारी कर रही थी और दुनिया के छोटे छोटे धन्दों से उन्हें दूर और ऊपर उठाए लिये जा रही थी.

लोगों के ग़लत विश्वासों और उनकी गिरी हुई हालत को देख कर कुछ समझदारों को उन्हें सुधारने की सूझी. एक सोसाइटी क़ायम की गई जिन्हें हनीफ़ कहते थे. 'हनीफ़' उसे कहते हैं जो धर्म के मामले में झूटी बातों को छोड़कर सच्चाई की तरफ़ झुके. जो लोग अल्लाह की जगह अपने अपने अलग अलग ख़ुदाओं या देवी देवताओं को पूजते थे और फिर उनके नाम पर लड़ते थे उन्हें इन हनीफ़ लोगों ने ग़लत बताया, इन्होंने सचाई को जानने की कोशिश की. आंख बन्द करके वह किसी चीज़ को नहीं मानते थे. लेकिन सबसे रवादारी बरतते थे. वह अपने को बहुत छोटा बताते और मानते थे. वह उन बुरी और झूटी बातों के ख़िलाफ़ थे जो उस वक़्त मज़हब के नाम पर चल रही थीं. सच्चे सुधारकों की तरह उन्होंने यह सोचना समझना शुरू किया कि पुराने मज़हबों में से क्या रखना चाहिये और क्या नहीं. हनीफ़ लोग हज़रत इब्राहीम के पुराने दीन को उन सब ग़लत बातों से पाक करना चाहते थे जो उसमें आ घुसी थीं. वह चाहते थे कि लोग फ़र्ज़ी "अल्लाह की बेटियों" की पूजा करने के बजाय सिर्फ़ एक अल्लाह की पूजा करें. इन "बेटियों" की पूजा भी अरब में बहुत ही गंदे और इख़लाक़ से गिरे हुए ढंग से होती थी.

(३४०)

[illegible] साहब हनीफ़ सोसाइटी में शामिल हो गए. उधर

زندگی میں اُن کی آتما اُن کے من اور نفس پر سواری کر رہی تھی اور دنیا کے چھوٹے چھوٹے دھندوں سے اُنھیں دُور اور اُوپر اُٹھائے لئے جا رہی تھی۔

لوگوں کے غلط وشواسوں اور اُن کی گری ہوئی حالت کو دیکھ کر کچھ سمجھداروں کو اُنھیں سُدھارنے کی سُوجھی۔ ایک سوسائٹی قایم کی گئی جنھیں حنیف کہتے تھے۔ "حنیف" اُسے کہتے ہیں جو دھرم کے معاملے میں جھوٹی باتوں کو چھوڑکر سچائی کی طرف جھکے۔ جو لوگ اللہ کی جگہ اپنے اپنے الگ الگ خداؤں یا دیوی دیوتاؤں کو پوجتے تھے اور پھر اُن کے نام پر لڑتے تھے اُنھیں اِن حنیف لوگوں نے غلط بتایا، اِنھوں نے سچائی کو جاننے کی کوشش کی۔ آنکھ بند کرکے وہ کسی چیز کو نہیں مانتے تھے۔ لیکن سب سے روا داری برتتے تھے۔ وہ اپنے کو بہت چھوٹا بتاتے اور مانتے تھے۔ وہ اُن بُری اور جھوٹی باتوں کے خلاف تھے جو اُس وقت مذہب کے نام پر چل رہی تھیں۔ سچے سُدھارکوں کی طرح اُنھوں نے یہ سوچنا سمجھنا شروع کیا کہ پرانے مذہبوں میں سے کیا رکھنا چاہیے اور کیا نہیں۔ حنیف لوگ حضرت ابراہیم کے پُرانے دین کو اُن سب غلط باتوں سے پاک کرنا چاہتے تھے جو اُس میں آگھسی تھیں۔ وہ چاہتے تھے کہ لوگ فرضی "اللہ کی بیٹیوں" کی پوجا کرنے کے بجائے صرف ایک اللہ کی پوجا کریں۔ اِن "بیٹیوں" کی پوجا بھی عرب میں بہت ہی گندے اور اخلاق سے گرے ہوئے ڈھنگ سے ہوتی تھی۔

محمد صاحب حنیف سوسائٹی میں شامل ہو گئے۔ اُدھر

अपनी तिजारती ईमानदारी, सचाई और ऊँचे इख़लाक़ की वजह से वह "अल अमीन" यानी 'भरोसे के' मशहूर हो चुके थे.

काबा मक्के में पहले से मौजूद था. हज़रत इब्राहीम ने एक अल्लाह की पूजा के लिये इसे क़ायम किया था. काबे की इमारत बड़ी नहीं है. पर अपने ख़ास ढंग की है. यह एक चौकोर इमारत है जो चौबिस हाथ लम्बी, तेइस हाथ चौड़ी और सत्ताइस हाथ ऊँची है. इसमें सिर्फ़ पूरब की तरफ़ एक दरवाज़ा है जिससे अन्दर रोशनी जा सकती है. उत्तर पूरब के कोने में बाहर की तरफ़ 'संगे असवद' नाम का काला पत्थर लगा हुआ है. कहा जाता है कि यह पत्थर सीधा आसमान से आया था. पहले बिल्कुल बरफ़ की तरह सफ़ेद था. पर बाद में लोगों के गुनाहों की वजह से काला पड़ गया. "सफ़ेद पत्थर" जिसे इस्माइल की क़ब्र कहा जाता है काबे से उत्तर में है और हज़रत इब्राहीम का मुक़ाम पूरब में है. हनीफ़ लोग इस पुरानी रिवायत को मानते थे कि अल्लाह ने हज़रत इब्राहीम और इस्माइल को काबे की तामीर का हुकुम दिया था. मोहम्मद साहब भी इसे मानते थे. क़ुरान में इसका साफ़ ज़िक्र आता है. लिखा है—

"और जब हम (अल्लाह) ने इस घर को लोगों के आने की जगह और हिफ़ाज़त की जगह बनाया और उनसे कहा कि इब्राहीम के मुक़ाम पर अपने लिये दुआ करने की जगह मुक़र्रर करो, और हमने इब्राहीम और इस्माईल को हिदायत की कि मेरे इस मकान को पाक करो, उन लोगों के लिये जो यहाँ परिक्रमा करें और जो यहाँ रहें बन्दगी करने के लिये और यहाँ झुकें और

اپنی تجارتی ایمان داری، سچائی اور اونچے اخلاق کی وجہ سے وہ "الامین" یعنی 'بھروسے کے' مشہور ہو چکے تھے.

کعبہ مکّہ میں پہلے سے موجود تھا. حضرت ابراہیم نے ایک اللہ کی پوجا کے لئے اسے قایم کیا تھا. کعبے کی عمارت بڑی نہیں ہے. پر اپنے خاص ڈھنگ کی ہے. یہ ایک چوکور عمارت ہے جو چوبیس ہاتھ لمبی، تیئیس ہاتھ چوڑی اور ستائیس ہاتھ اونچی ہے. اس میں صرف پورب کی طرف ایک دروازہ ہے جس سے اندر روشنی جا سکتی ہے. اتر پورب کے کونے میں باہر کی طرف 'سنگِ اسود' نام کا کالا پتھر لگا ہوا ہے. کہا جاتا ہے کہ یہ پتھر سیدھا آسمان سے آیا تھا. پہلے بالکل برف کی طرح سفید تھا. پر بعد میں لوگوں کے گناہوں کی وجہ سے کالا پڑ گیا. "سفید پتھر" جسے اسمٰعیل کی قبر کہا جاتا ہے کعبہ سے اتر میں ہے اور حضرت ابراہیم کا مقام پورب میں ہے. حنیف لوگ اس پرانی روایت کو مانتے تھے کہ اللہ نے حضرت ابراہیم اور اسماعیل کو کعبے کی تعمیر کا حکم دیا تھا. محمد صاحب بھی اسے مانتے تھے. قرآن میں اس کا صاف ذکر آتا ہے. لکھا ہے—

"اور جب ہم (اللہ) نے اس گھر کو لوگوں کے آنے کی جگہ اور حفاظت کی جگہ بنایا اور اُن سے کہا کہ ابراہیمؑ کے مقام پر اپنے لئے دُعا کرنے کی جگہ مقرر کرو، اور ہم نے ابراہیم اور اسماعیلؑ کو ہدایت کی کہ میرے اس مکان کو پاک کرو، اُن لوگوں کے لئے جو یہاں پرکرما کریں اور جو یہاں رہیں بندگی کرنے کے لئے اور یہاں جھکیں اور

सिजदा करें." (क़ुरान २-१२५)

यह याद रखना बहुत जरूरी है कि हजरत मोहम्मद शुरू में ही हनीफ़ सोसाइटी के मेम्बर थे. इससे उनके आगे की सारी ज़िन्दगी आसानी से समझ में आने लगती है और उनकी अन्दरूनी रूहानी तरक़्क़ी एक लगातार चीज़ मालूम होती है. रूहानी मारफ़त और रोशनी और कमाल की तरफ़ वह बराबर बढ़ते रहे.

लिखा है कि हर साल एक महीना वह हिरा नाम की पहाड़ी में जाकर अकेले रहा करते थे. वहां रोज़ा रखते थे और अल्लाह से रोशनी के लिये दुआएं मांगते थे. जब उनकी उमर क़रीब चालीस बरस की हुई तो एक दिन उसी महीने में उनके ऊपर एक ख़ास हालत तारी हो गई. उस अजीब हालत में उनसे कहा गया "पढ़". मोहम्मद साहब "अनपढ़" थे. वह लिखना पढ़ना न जानते थे. पर रूह की बातों में वह अनजान न थे. उन्होंने अपने अन्दर की आँख से देखा और अन्दर के कान से सुना. मोहम्मद साहब उस संदेसे को समझ गए. "वह लफ़्ज़ उनके दिल के ऊपर हमेशा के लिये नक़्श हो गए." इस रूहानी तजरबे के साथ साथ पैग़म्बर की हैसियत से मोहम्मद साहब की ज़िन्दगी शुरू हुई.

(३४६)

यह संदेसा क्या था ? "ऐलान कर. अपने अल्लाह के नाम पर ऐलान कर." मोहम्मद साहब बहुत मुनकसिर यानी नरम मिज़ाज के थे. उन्हें यक़ीन न आया कि दुनिया को सुधारने के लिये अल्लाह का पैग़ाम उनके सपुर्द किया जा रहा है. वह ख़दीजा के पास दौड़कर गए. ख़दीजा ने उनसे कहा—"आप अल अमीन हैं. —— ——ने किसी ऐसे आदमी की ज़रूरत है जो ईमान वालों को

سجدہ کریں۔" (قرآن ۲-۱۲۵)

یہ یاد رکھنا بہت ضروری ہے کہ حضرت محمدؐ شروع میں ہی حنیف سوسائٹی کے ممبر تھے۔ اس سے اُن کے آگے کی ساری زندگی آسانی سے سمجھ میں آنے لگتی ہے اور اُن کی اندرونی روحانی ترقی ایک لگاتار چیز معلوم ہوتی ہے۔ روحانی معرفت اور روشنی اور کمال کی طرف وہ برابر بڑھتے رہے۔

لکھا ہے کہ ہر سال ایک مہینہ وہ حرا نام کی پہاڑی میں جاکر اکیلے رہا کرتے تھے۔ وہاں روزہ رکھتے تھے اور اللہ سے روشنی کے لئے دعائیں مانگتے تھے۔ جب اُن کی عمر قریب چالیس برس کی ہوئی تو ایک دن اُسی مہینے میں اُن کے اوپر ایک خاص حالت طاری ہوگئی۔ اُس عجیب حالت میں اُن سے کہا گیا "پڑھو" محمد صاحب "اَن پڑھ" تھے۔ وہ لکھنا پڑھنا نہ جانتے تھے۔ پر روح کی باتوں میں وہ اَن جان نہ تھے۔ اُنھوں نے اپنے اندر کی آنکھ سے دیکھا اور اندر کے کان سے سُنا۔ محمد صاحب اُس سندیسے کو سمجھ گئے۔ "وہ لفظ اُن کے دل کے اوپر ہمیشہ کے لئے نقش ہوگئے۔" اس روحانی تجربے کے ساتھ ساتھ پیغمبر کی حیثیت سے محمد صاحب کی زندگی شروع ہوئی۔

یہ سندیسہ کیا تھا؟ "اعلان کر، اپنے اللہ کے نام پر اعلان کر۔" محمد صاحب بہت منکسر یعنی نرم مزاج کے تھے۔ انھیں یقین نہ آیا کہ سدھارنے کے لئے اللہ کا پیغام اُن کے سپرد کیا جا رہا ہے۔ وہ خدیجہ کے پاس دوڑکر گئے۔ خدیجہ نے اُن سے کہا—"آپ الامین ہیں۔ اللہ کو کسی ایسے آدمی کی ضرورت ہے جو ایمان والوں کو

हिदायत कर सके. अल्लाह ने इसके लिये आपको चुना है." ख़दीजा सबसे पहले मोहम्मद साहब पर ईमान लाई. उसके बाद उनके चचेरे भाई अली और ग़ुलाम ज़ैद. इस तरह सबसे पहले तीन ईमान लाने वाले सच्ची जम्हूरियत के नुमाइन्दे थे—ख़ाविंद और बीवी, मालिक और नौकर, बूढ़ा और जवान. बड़ी समझ के साथ मोहम्मद साहब पहले तीन साल तक सिर्फ़ थोड़े से साथियों को लेकर ख़ामोशी से काम करते रहे. यह लोग चुपचाप मेहनत करते थे और अल्लाह के जो पैग़ाम मोहम्मद साहब के ज़रिये आते थे उन्हें लिख कर रखते जाते थे. जब तक इन पैग़ामों को आम करने का वक़्त नहीं आया तब तक यह हिफ़ाज़त से रक्खे गए.

पुराने मज़हब के मानने वाले बहुत ताक़तवर थे. मोहम्मद साहब के मानने वालों की तादाद बढ़ती गई. लेकिन तीन साल के बाद भी जब उन्होंने खुले प्रचार करना शुरू कर दिया, लोगों ने उनका विरोध किया. मोहम्मद साहब को अपने ही देश और धरम के लोगों से लड़ना पड़ा, क्योंकि वह लोग उनका पैग़ाम सुनने को और पुराने दीन में से बाद की बुराइयों और अन्धी मानताओं को निकाल कर उसे पाक करने के लिये तय्यार न थे. यह लोग मोहम्मद साहब से बेहद ग़ैरियत बरतते थे और बड़े ज़ोरों के साथ मुख़ालफ़त करते थे. फिर भी मोहम्मद साहब उन्हें न दुश्मन समझते थे और न उनसे लड़ते थे. वह बड़े सब्र और नरमी के साथ उन्हें समझने समझाने की कोशिश करते थे. बाद के दिनों में भी उनकी यही चाल रही. अपने ख़िलाफ़ लड़ने वाले सब दुशमनों की तरफ़ वह उदारता और बरदाश्त ही दिखाते रहे. यह तरीक़ा

ہدایت کرسکے۔ اللہ نے اِس کے لئے آپ کو چُنا ہے۔" خدیجہ سب سے پہلے محمد صاحب پر ایمان لائی۔ اِس کے بعد اُن کے چچیرے بھائی علیؓ اور غلام زید۔ اِس طرح سب سے پہلے تین ایمان لانے والے سچی جمہوریت کے نمائندے تھے — خاوند اور بیوی، مالک اور نوکر، بڈھا اور جوان۔ بڑی سمجھ کے ساتھ محمد صاحب پہلے تین سال تک صرف تھوڑے سے ساتھیوں کو لے کر خاموشی سے کام کرتے رہے۔ یہ لوگ چُپ چاپ محنت کرتے تھے اور اللہ کے جو پیغام محمد صاحب کے ذریعے آتے تھے اُنھیں لکھ کر رکھے جاتے تھے۔ جب تک اِن پیغاموں کو عام کرنے کا وقت نہیں آیا تب تک یہ حفاظت سے رکھے گئے۔

پُرانے مذہب کے ماننے والے بہت طاقت ور تھے۔ محمد صاحب کے ماننے والوں کی تعداد بڑھتی گئی۔ لیکن تین سال کے بعد بھی جب اُنھوں نے کھُلے پرچار کرنا شروع کر دیا، لوگوں نے اُن کا ورودھ کیا۔ محمد صاحب کو اپنے ہی دیش اور دھرم کے لوگوں سے لڑنا پڑا، کیونکہ وہ لوگ اُن کا پیغام سُننے کو اور پُرانے دین میں سے بعد کی بُرائی اور اندھی مانتاؤں کو نکال کر اُسے پاک کرنے کے لئے تیار نہ تھے۔ یہ لوگ محمد صاحب سے بے حد غیریت برتتے تھے اور بڑے زوروں کے ساتھ مخالفت کرتے تھے۔ پھر بھی محمد صاحب اُنھیں نہ دشمن سمجھتے تھے اور نہ اُن سے لڑتے تھے۔ وہ بڑے صبر اور نرمی کے ساتھ اُنھیں سمجھنے سمجھانے کی کوشش کرتے تھے۔ بعد کے دنوں میں بھی اُن کی یہی چال رہی۔ اپنے خلاف لڑنے والے سب دشمنوں کی طرف وہ اُدارتا اور برداشت ہی دکھاتے رہے۔ [illegible]

उन हिदायतों के बिल्कुल मुताबिक़ था जो अल्लाह से उन्हें मिलती थीं. उन्होंने अपने पैग़ाम का नाम 'इसलाम' रक्खा, जिसका मतलब है "अल्लाह की मरज़ी पर अपने को छोड़ देना".

"लेकिन अगर यह लोग तुम्हारे साथ झगड़ा करें तो इनसे कह दो कि मैंने बिलकुल अपने आप को अल्लाह की मरज़ी पर छोड़ दिया है. और जितने मेरे साथ हैं सब ने. और उन लोगों से जिनके पास पहले की मज़हबी किताबें आ चुकी हैं या जो अन-पढ़ हैं उन सबसे कहो कि क्या तुम भी अल्लाह की हिदायतों के सामने सर झुकाते हो? (यही इसलाम शब्द के माने हैं.) पस अगर वह मानते हैं तो सचमुच वह ठीक रास्ते पर हैं. और अगर नहीं मानते तो तुम्हारा काम सिर्फ़ उन तक संदेसा पहुँचा देना था. और अल्लाह ख़ुद अपने बंदों को देखता है". (कुरान ३—१९).

और फिर—

"रसूल उसे मानता है जो अल्लाह ने उसे हिदायत की है और दूसरे सब ईमान वाले भी उसे मानते हैं. वह सब अल्लाह को मानते हैं, अल्लाह के फ़रिश्तों को मानते हैं. अल्लाह की भेजी हुई सब मज़हबी किताबों को मानते हैं. और अल्लाह के सब रसूलों को मानते हैं. इन रसूलों रसूलों में हम कोई किसी तरह का फ़रक़ नहीं करते और वह कहते हैं—ऐ हमारे अल्लाह हम सुनते हैं और अमल करते हैं. हम तुझसे माफ़ी चाहते हैं. सबको आख़िर तेरे ही पास लौट कर जाना है." (कुरान २—२८५)

اُن ہدایتوں کے بالکل مطابق تھا جو اللہ سے اُنھیں ملتی تھیں. اُنھوں نے اپنے پیغام کا نام "اسلام" رکھا، جس کا مطلب ہے "اللہ کی مرضی پر اپنے کو چھوڑ دینا."

"لیکن اگر یہ لوگ تمھارے ساتھ جھگڑا کریں تو ان سے کہہ دو کہ میں نے بالکل اپنے آپ کو اللہ کی مرضی پر چھوڑ دیا ہے اور جتنے میرے ساتھ ہیں سب نے. اور اُن لوگوں سے جن کے پاس پہلے کی مذہبی کتابیں آچکی ہیں یا جو اَن پڑھ ہیں اُن سب سے کہو کہ کیا تم بھی اللہ کی ہدایتوں کے سامنے سر جھکاتے ہو؟ (یہی اسلام شبد کے معنے ہیں.) پس اگر وہ مانتے ہیں تو سچ مچ وہ ٹھیک راستے پر ہیں. اور اگر نہیں مانتے تو تمھارا کام صرف اُن تک سندیسہ پہونچا دینا تھا، اور اللہ خود اپنے بندوں کو دیکھتا ہے" (قرآن ۳—۱۹)

اور پھر—

"رسول اُسے مانتا ہے جو اللہ نے اُسے ہدایت کی ہے اور دوسرے سب ایمان والے بھی اُسے مانتے ہیں. وہ سب اللہ کو مانتے ہیں، اللہ کے فرشتوں کو مانتے ہیں. اللہ کی بھیجی ہوئی سب مذہبی کتابوں کو مانتے ہیں. اور اللہ کے سب رسولوں کو مانتے ہیں. ان رسولوں میں ہم کوئی کسی طرح کا فرق نہیں کرتے اور وہ کہتے ہیں—اے ہمارے اللہ ہم سنتے ہیں اور عمل کرتے ہیں. ہم تجھ سے معافی چاہتے ہیں. سب کو آخر تیرے ہی پاس لوٹ کر جانا ہے." (قرآن ۲—۲۸۵)

خدا یا ایشور کا اللہ نام اسلام کے پیغمبر نے ایجاد

नहीं किया. यह पहले से चला आ रहा था. पहले की मजहबी किताबें अल्लाह ही के पैग़ाम हैं और ऊपर की आयतों में इन सब पहले के पैग़ामों को ठीक माना गया है. किसी न किसी शकल में इसलाम—जिसका मतलब है इनसान का अपने को अल्लाह की मरजी पर छोड़ देना यानी अपने को ईश्वर के अर्पण कर देना—यही हमेशा हर पैग़ाम का सार या लुब्बे लुबाब रहा है. लोग इस सार को भूल कर और इससे भटक कर इसमें बुराइयाँ मिला देते थे. जब जब ऐसा हुआ तब तब अल्लाह ने फिर ठीक रास्ता दिखाया और नया पैग़ाम भेजा. कुरान की यह आयतें गीता के चौथे अध्याय के सातवें और आठवें मशहूर श्लोकों से कितनी मिलती हुई हैं. और लिखा है कि—

"और लोग एक अल्लाह के सिवा जिन दूसरों को पूजते हैं उन्हें तुम बुरा न कहो. ताकि कहीं नादानी में आकर वह अल्लाह को बुरा न कह बैठें. इस तरह हमने यह कर दिया है कि हर क़ौम को अपने ही काम अच्छे लगते हैं. फिर सब को अल्लाह ही के पास लौट कर जाना है और अल्लाह उन्हें बता देगा कि वह क्या करते थे." कुरान (६—१०९)

कुरान में लिखा है कि—

"मजहब के मामले में किसी तरह की जबरदस्ती नहीं होनी चाहिये." (२—२५६)

क्या नीचे लिखी आयत से ज्यादा साफ़ मजहबी रवादारी की कोई बात हो सकती है—

"कहदो कि हम अल्लाह को मानते हैं और जो हिदायत

(३३४)

نہیں کیا. یہ پہلے سے چلا آرہا تھا. پہلے کی مذہبی کتابیں اللہ ہی کے پیغام ہیں اور اوپر کی آیتوں میں اِن سب پہلے کے پیغاموں کو ٹھیک مانا گیا ہے. کسی نہ کسی شکل میں اسلام—جس کا مطلب ہے انسان کا اپنے کو اللہ کی مرضی پر چھوڑ دینا یعنی اپنے کو ایشور کے ارپن کر دینا—یہی ہمیشہ ہر پیغام کا سار یا لُبِ لباب رہا ہے. لوگ اِس سار کو بھول کر اور اِس سے بھٹک کر اِس میں بُرائیاں ملا دیتے تھے. جب جب ایسا ہوا تب تب اللہ نے پھر ٹھیک راستہ دکھایا اور نیا پیغام بھیجا. قرآن کی یہی آیتیں گیتا کے چوتھے ادھیائے کے ساتویں اور آٹھویں مشہور شلوکوں سے کتنی ملتی ہوئی ہیں اور لکھا ہے کہ—

"اور لوگ ایک اللہ کے سوا جن دوسروں کو پوجتے ہیں انھیں تم بُرا نہ کہو، تاکہ کہیں نادانی میں آکر وہ اللہ کو بُرا نہ کہہ بیٹھیں. اِس طرح ہم نے یہ کر دیا ہے کہ ہر قوم کو اپنے ہی کام اچھے لگتے ہیں. پھر سب کو اللہ ہی کے پاس لوٹ کر جانا ہے اور اللہ انھیں بتا دے گا کہ وہ کیا کرتے تھے." قرآن (۶—۱۰۹)

قرآن میں لکھا ہے کہ—

"مذہب کے معاملے میں کسی طرح کی زبردستی نہیں ہونی چاہئے." (۲—۲۵۶)

کیا نیچے لکھی آیت سے زیادہ صاف مذہبی رواداری کی کوئی بات ہو سکتی ہے—

"کہہ دو کہ ہم اللہ کو مانتے ہیں اور جو ہدایت

(۳۳۴)

हमें अल्लाह से मिली है उसे मानते हैं और जो हिदायतें इब्राहीम को, इस्माईल को, इसाक़ को और याक़ूब को और क़ौमों को, और जो कुछ मूसा को और ईसा को और दूसरे नबियों को अल्लाह से मिला था उन सब को मानते हैं. हम उन सबमें किसी तरह का फ़रक़ नहीं करते और हमने अल्लाह ही की मरज़ी पर अपने को छोड़ रक्खा है." (क़ुरान २-१३६)

इसलाम का पैग़म्बर मानता था कि—"अल्लाह तक पहुँचने के उतने ही रास्ते हैं जितने आदमियों के सांस." मोहम्मद साहब ने इनसानी क़ौम के पुराने गुरुओं को बहुत साफ़ लफ़्ज़ों में माना और अपनाया है. क़ुरान में लिखा है कि—

"तमाम इनसान एक ही क़ौम हैं. अल्लाह ने उन सब में अपने पैग़म्बर भेजे ताकि उन्हें नेक कामों के नतीजों की खुश खबरी दें और बुरे कामों के नतीजों से आगाह करें. और अल्लाह ने उनके साथ किताबें भेजीं जिनमें सच्चाई है ताकि जिन बातों में लोगों में फ़रक़ था उनमें वह उससे ठीक फ़ैसला कर सकें, और वही लोग जिन्हें किताबों से हिदायत करदी गई थी. साफ़ साफ़ दलीलों के आने के बाद भी फिर उसके बारे में अपनी अपनी राय बनाकर आपस में लड़ने लगे. पस. अल्लाह ने उन लोगों को जो ईमान रखते हैं उस बात में सच्चाई की राह दिखादी जिसमें वह एक दूसरे से अलग अलग तरह सोचते थे. और अल्लाह जिसे चाहता है ठीक रास्ता दिखाता है." (क़ुरान, २-२१३)

क़ुरान की नीचे की आयतें आजकल के उन लोगों के लिये ... चाहे वह किसी भी

ہمیں اللہ سے ملی ہو اُسے مانتے ہیں اور جو ہدایتیں ابراہیمؑ کو، اسماعیل کو، اسحاقؑ کو اور یعقوبؑ کو اور قوموں کو، اور جو کچھ موسیٰؑ کو اور عیسٰیؑ کو اور دوسرے نبیوں کو اللہ سے ملی تھیں اُن سب کو مانتے ہیں۔ ہم اُن سب میں کسی طرح کا فرق نہیں کرتے اور ہم نے اللہ ہی کی مرضی پر اپنے کو چھوڑ رکھا ہے۔" (قرآن ۲—۱۳۶)

اسلام کا پیغمبر مانتا تھا کہ—"اللہ تک پہنچنے کے اُتنے ہی راستے ہیں جتنے آدمیوں کے سانس!" محمدؐ صاحب نے انسانی قوم کے پُرانے گُروؤں کو بہت صاف لفظوں میں مانا اور اپنایا ہے۔ قرآن میں لکھا ہے کہ—

"تمام انسان ایک ہی قوم ہیں۔ اللہ نے اُن سب میں اپنے پیغمبر بھیجے تاکہ اُنھیں نیک کاموں کے نتیجوں کی خوش خبری دیں اور بُرے کاموں کے نتیجوں سے آگاہ کریں، اور اللہ نے اُن کے ساتھ کتابیں بھیجیں جن میں سچائی ہے تاکہ جن باتوں میں لوگوں میں فرق تھا اُن میں وہ اُس سے ٹھیک فیصلہ کر سکیں، اور وہی لوگ جنھیں کتابوں سے ہدایت کر دی گئی تھی، صاف صاف دلیلوں کے آنے کے بعد بھی پھر اُس کے بارے میں اپنی اپنی رائے بنا کر آپس میں لڑنے لگے۔ پس، اللہ نے اُن لوگوں کو جو ایمان رکھتے ہیں اُس بات میں سچائی کی راہ دکھا دی جس میں وہ ایک دوسرے سے الگ الگ طرح سوچتے تھے، اور اللہ جسے چاہتا ہے ٹھیک راستہ دکھاتا ہے۔" (قرآن ۲—۲۱۳)

قرآن کی نیچے کی آیتیں آج کل کے اُن لوگوں کے لئے بہت ٹھیک ...

मजहब के हों—दूसरों को लाने की धुन में लगे रहते हैं—

"और वह लोग कहते हैं कि सिवाय उसके जो यहूदी हो या सिवाय उसके जो ईसाई हो और कोई जन्नत में नहीं जा सकता. यह सब इन लोगों के वहम हैं. इनसे कहो कि अगर तुम सच्चे हो तो सबूत लाकर दिखलाओ." (क़ुरान २–१११)

"और जो कोई नेक काम करता है. चाहे मर्द हो या औरत और ईमान रखता है वह जन्नत में जायगा. उनके साथ ज़रा भी ज्यादती नहीं की जायगी." (क़ुरान ४–१२४)

आम तौर पर लोग यह समझते हैं कि इसलाम एक फ़ौजी मजहब है. यह बात जितनी हज़रत ईसा के ईसाई मजहब के बारे में ग़लत है उतनी ही इसलाम के बारे में ग़लत है. यह दूसरी बात है कि दोनों मजहबों के कुछ मुतास्सिब लोग खौफ़नाक जंगों और ख़ूंरेज़ी के गुनाहों के ज़िम्मेवार रहे हैं. मोहम्मद साहब ने तशद्दुद या हिंसा नहीं बल्कि अदम तशद्दुद यानी अहिंसा की तालीम दी है. और उनके पीछे चलकर अल्लाह के इश्क़ में सरशार सूफ़ियों ने भी यही किया है—

(३३९)

"और जो कोई सब्र करता है और दूसरों को माफ़ कर देता है, इसमें कोई शक नहीं कि यही उन कामों में से है जिनको इरादा करके करना चाहिये." (क़ुरान. ४२–४३)

"अगर कोई किसी के साथ बुराई करे तो उसे उतनी ही सज़ा दी जा सकती है, लेकिन जो कोई माफ़ कर देता है और बुराई करने वाले का सुधार करता है उसे अल्लाह से इनाम मिलेगा क्योंकि इसमें शक नहीं अल्लाह किसी ज़ुल्म करने वाले को प्यार

مذہب کے ہوں — دوسروں کو لانے کی دُھن میں لگے رہتے ہیں —

"اور وہ لوگ کہتے ہیں کہ سوائے اُس کے جو یہودی ہو یا سوائے اُس کے جو عیسائی ہو اور کوئی جنّت میں نہیں جاسکتا۔ یہ سب اِن لوگوں کے واہم ہیں۔ اِن سے کہو کہ اگر تم سچّے ہو تو ثبوت لاکر دکھلاؤ" (قرآن ۲ — ۱۱۱)

"اور جو کوئی نیک کام کرتا ہے، چاہے مرد ہو یا عورت اور ایمان رکھتا ہے وہ جنّت میں جائے گا۔ اُن کے ساتھ ذرا بھی زیادتی نہیں کی جائے گی۔" (قرآن ۴ — ۱۲۴)

عام طور پر لوگ یہ سمجھتے ہیں کہ اسلام ایک فوجی مذہب ہے۔ یہ بات جتنی حضرت عیسیٰؑ کے عیسائی مذہب کے بارے میں غلط ہے اُتنی ہی اسلام کے بارے میں غلط ہے۔ یہ دوسری بات ہے کہ دونوں مذہبوں کے کچھ متعصب لوگ خوفناک جنگوں اور خونریزی کے گناہوں کے ذمّہ دار رہے ہیں۔ محمدؐ صاحب نے تشدّد یا ہنسا نہیں بلکہ عدم تشدّد یعنی اہنسا کی تعلیم دی ہے۔ اور اُن کے پیچھے چل کر اللہ کے عشق میں سرشار صوفیوں نے بھی یہی کیا ہے —

(۳۳۹)

"اور جو کوئی صبر کرتا ہے اور دوسروں کو معاف کر دیتا ہے، اس میں کوئی شک نہیں کہ یہی اُن کاموں میں سے ہے جن کو ارادہ کرکے کرنا چاہئے۔" (قرآن، ۴۲ — ۴۳)

"اگر کوئی کسی کے ساتھ بُرائی کرے تو اُسے اُتنی ہی سزا دی جاسکتی ہے، لیکن جو کوئی معاف کر دیتا ہے اور بُرائی کرنے والے کا سُدھار کرتا ہے اُسے اللہ سے انعام ملے گا، کیونکہ اس میں شک نہیں اللہ کسی ظُلم کرنے والے کو پیار

नहीं करता." (कुरान, ४२-४०)

"और उस रहमान अल्लाह की सच्ची इबादत करने वाले वह हैं जो ज़मीन के ऊपर झुक कर चलते हैं और जब कभी जाहिल लोग उनसे कुछ (ऐसी वैसी बात) कहते हैं तो वह जवाब में कहते है—सलाम !"(कुरान २५-६३)

दुनिया में चारों तरफ़ जो हसद, नफ़रत और गुस्सा फैला हुआ है वह इसलाम के असूलों के कितना खिलाफ़ है ! ग़ैर मुसलिम लोग यह सब अपने मज़हबों के नाम से, या जिन्हें वह अपने "असूल" बताते हैं उनके नाम पर करें या न करें, लेकिन जो मुसलमान दूसरों को क़तल करने में और इस तरह के कामों में दूसरों से मुक़ाबला करने में अपने रसूल का नाम लेते हैं वह उस रसूल की इज़्ज़त नहीं बढ़ाते जिसने "क़लम" को तलवार से कहीं ज़्यादा ताक़तवर बताया है.

पुरानी दुनिया के अपने से पहले के पैग़म्बरों की इज़्ज़त करने में, ईमान से मोहब्बत करने में, हद दरजे की रवादारी में, गहराई से सब को समझने में, अपने अन्दर की आत्मा को अल्लाह की मरज़ी पर छोड़ देने का उपदेश देने में और सब के साथ अमन और सलामती से रहने की हिदायत करने में, मोहम्मद साहब इल्मे इलाही यानी ब्रह्म विद्या के माहिरों के लम्बे सिलसिले में से थे. वह इनसानी क़ौम और उनकी रूहों से सच्चा प्रेम करने वाले बड़े से बड़े बुज़ुर्गों में से थे. —(दि थियासाफ़िकल मूवमेन्ट से)

نہیں کرتا" (قرآن ۴۲ — ۴۰)

"اور اُس رحمان اللہ کی سچی عبادت کرنے والے وہ ہیں جو زمین کے اوپر جھک کر چلتے ہیں اور جب کبھی جاہل لوگ اُن سے کچھ (ایسی ویسی بات) کہتے ہیں تو وہ جواب میں کہتے ہیں سلام!" (قرآن ۲۵—۶۳)

دُنیا میں چاروں طرف جو حسد نفرت اور غصہ پھیلا ہوا ہے وہ اسلام کے اصولوں سے کتنا خلاف ہے! غیر مسلم لوگ یہ سب اپنے مذہبوں کے نام سے، یا جنھیں وہ اپنے "اصول" بتاتے ہیں اُن کے نام پر کریں یا نہ کریں، لیکن جو مسلمان دوسروں کو قتل کرنے میں اور اس طرح کے کاموں میں دوسروں سے مقابلہ کرنے میں اپنے رسول کا نام لیتے ہیں وہ اُس رسول کی عزت نہیں بڑھاتے جس نے "قلم" کو تلوار سے کہیں زیادہ طاقت ور بتایا ہے۔

پرانی دُنیا کے اپنے سے پہلے کے پیغمبروں کی عزت کرنے میں، ایمان سے محبت کرنے میں، حد درجے کی رواداری میں، گہرائی سے سب کو سمجھنے میں، اپنے اندر کی آتما کو اللہ کی مرضی پر چھوڑ دینے کا اُپدیش دینے میں اور سب کے ساتھ امن اور سلامتی سے رہنے کی ہدایت کرنے میں، محمد صاحب علمِ الٰہی یعنی برہم ودیا کے ماہروں کے لمبے سلسلے میں سے تھے۔ وہ انسانی قوم اور اُن کی روحوں سے سچا پریم کرنے والے بڑے سے بڑے بزرگوں میں سے تھے۔

(— دی تھیاسافیکل موومنٹ سے)

बिकट कहानी

(प्रोफ़ेसर सय्यद मसीहुज़्ज़मा जायसी. इलाहाबाद यूनीवर्सिटी)

'बिकट कहानी' एक मसनवी है. मसनवी ऐसी नज़म को कहते हैं जिसके शेर एक दूसरे से सम्बन्ध रखते हों. और दोनों मिसरों का क़ाफ़िया एक सा हो. मुझे बिकट कहानी की दो किताबें मिल सकी हैं. यह दोनों नवल किशोर प्रेस लखनऊ की छपी हैं. लेकिन न छपने का साल ही लिखा है और न लिखने वाले का नाम ही. मसनवी अल्लाह की तारीफ़ से शुरू होती है. इसके बाद मोहम्मद साहब की तारीफ़ है. इसके अलावा बिकट कहानी में क़रीब क़रीब तमाम हिन्दू त्यौहारों और उनके मनाने के ढङ्ग को बड़े प्रेम के साथ बयान किया गया है. अल्लाह और मोहम्मद साहब की तारीफ़ मुसलमानी राज के दिनों में उर्दू के हिन्दू लिखने वाले भी अपनी किताबों में करते थे और हिन्दू त्यौहारों के मनाने का ढङ्ग मुसलमान भी ख़ूब जानते थे इस लिये इस किताब की बोली या बातों मे यह फ़ैसला नहीं किया जा सकता कि इसका लिखने वाला हिन्दू था या मुसलमान.❋

❋इसी तरह उस ज़माने की मुसलमानों की नागरी या हिन्दी में लिखी बहुत सी किताबें मिलती हैं जो 'श्री गनेशाय नमः' 'श्री सरस्वत्यै नमः' 'श्री राम चन्द्राय नमः' जैसे फ़िक़रों से शुरू होती हैं.

यह चीज़ किताब की ज़बान या लिपि और आपस के मेल मिलाप से ताल्लुक़ रखती थी—एडीटर.

بکٹ کہانی

(پروفیسر سیّد مسیح الزّماں جائسی، الہ آباد یونیورسٹی)

بکٹ کہانی ایک مثنوی ہے. مثنوی ایسی نظم کو کہتے ہیں جس کے شعر ایک دوسرے سے سمبندھ رکھتے ہوں، اور دونوں مصرعوں کا قافیہ ایک سا ہو. مجھے بکٹ کہانی کی دو کتابیں مل سکی ہیں. یہ دونوں نول کشور پریس لکھنؤ کی چھپی ہیں. لیکن نہ چھپنے کا سال ہی لکھا ہے اور نہ لکھنے والے کا نام ہے. مثنوی اللہ کی تعریف سے شروع ہوتی ہے. اس کے بعد محمدؐ صاحب کی تعریف ہے. اس کے علاوہ بکٹ کہانی میں قریب قریب تمام ہندو تیوہاروں اور ان کے منانے کے ڈھنگ کو بڑے پریم کے ساتھ بیان کیا گیا ہے. اللہ اور محمدؐ صاحب کی تعریف مسلمانی راج کے دنوں میں اُردو کے ہندو لکھنے والے بھی اپنی کتابوں میں کرتے تھے اور ہندو تیوہاروں کو منانے کا ڈھنگ مسلمان بھی خوب جانتے تھے اس لئے اس کتاب کی بولی یا باتوں سے یہ فیصلہ نہیں کیا جاسکتا کہ اس کا لکھنے والا ہندو تھا یا مسلمان.❋

❋اسی طرح اُس زمانے کی مسلمانوں کی ناگری یا ہندی میں لکھی بہت سی کتابیں ملتی ہیں جو 'شری گنیشائے نمہ' 'شری سرسوتئے نمہ' 'شری رام چندرائے نمہ' جیسے فقروں سے شروع ہوتی ہیں.

یہ چیز کتاب کی زبان یا لپی اور آپس کے میل ملاپ سے تعلق رکھتی تھی — اڈیٹر.

इस मसनवी पर एक नज़र डालने से इस पर भाषा की शायरी का गहरा असर मिलता है. उर्दू की और मसनवियों से अलग इसमें मोहब्बत औरत की तरफ़ से ज़ाहिर की गई है और न सिर्फ़ फ़ेल यानी क्रियाएं यह बताती हैं कि एक औरत बोल रही है बल्कि बयान के तरीक़े और ढङ्ग मे भी औरत के जज़्बे और ख़्याल ज़ाहिर होते हैं. यह मसनवी इस तरह शुरू होती है—

मेरा एक साँवरे के साथ दिल मिल
हुआ मानिन्द गुल ख़ुश वक़्त खिल खिल

रही मैं रात दिन उस साथ ख़ुश हाल
लिया मैं अपने जी को ऐसा जंजाल

अरी मैं क्या कहूँ तुमसे सखी री
विरह की आग मुझ दिल में लगी री

कहूँ क्या यक बयक उस साँवरे ने
किया क़स्द[1] ऐ सखी उस साँवरे ने.❀

मना मैंने बहुत रो रो किया री
दिया अपनी सुनाई दिल की सारी

कहा मैंने बहुत समझा के उसको
कि इस रुत में अकेली कर न मुझको

❀ इस शेर में क़ाफ़िया नहीं है. मगर छपा ऐसा ही है.

اِس مثنوی پر ایک نظر ڈالنے سے اِس پر بھاشا کی شاعری کا گہرا اثر ملتا ہے. اُردو کی اور مثنویوں سے الگ اِس میں محبت عورت کی طرف سے ظاہر کی گئی ہے اور نہ صرف فعل یعنی کریائیں یہ بتاتی ہیں کہ ایک عورت بول رہی ہے بلکہ بیان کے طریقے اور ڈھنگ سے بھی عورت کے جذبے اور خیال ظاہر ہوتے ہیں.
یہ مثنوی اِس طرح شروع ہوتی ہے—

میرا ایک سانورے کے ساتھ دل مِل
ہوا مانند گُل خوش وقت کھِل کھِل

رہی میں رات دن اُس ساتھ خوش حال
لیا میں اپنے جی کو ایسا جنجال

اری میں کیا کہوں تجھ سے سکھی ری
برہ کی آگ مجھ دل میں لگی ری

کہوں کیا یک بیک اُس سانورے نے
کیا قصد[1] اے سکھی اُس سانورے نے

منع میں نے بہت رو رو کیا ری
بتھا اپنی سُنائی دل کی ساری

کہا میں نے بہت سمجھا کے اُس کو
کہ اِس رُت میں اکیلی کر نہ مجھ کو

❀ اِس شعر میں قافیہ نہیں ہے. مگر چھپا ایسا ہی ہے.

[1] قصد = ارادہ

सजन तुम छोड़ कर मुझको न जाओ
सजन बिरहा अगिन में ना जलाओ
पिया तुझ बिन जलूँगी मैं अगिन में
लगाऊँ आग सारे तन बदन में

....

अकेली तुझ बिना कैसे रहूँगी
दुख ऊपर दुख पिया कैसे सहूँगी
मैं अपना दर्दे ग़म किससे कहूँगी
और इस ग़म से कब जीती रहूँगी
तजूँगी तुझ बिना सिंगार अपना
रहूँगी मैं सजन मन मार अपना
पिया तुम बिन मैं काजल कब करूँगी
लिबास अपना मैं बालम सब धरूँगी

....

....

अँधेरी रैन में तुझ बिन डरूँगी
अकेली सेज पर कैसे रहूँगी
अगर बिरहा निपट मुझ जी में बीती
नहीं पाने के फिर तुम मुझ को जीती
मोहब्बत की मारी इसी तरह उसे रोकती रही

سجن تم چھوڑکر مجھ کو نہ جاؤ
سجن برہا اگن میں نا جلاؤ
پیا تجھ بن جلوں گی میں اگن میں
لگاؤں آگ سارے تن بدن میں۔

. . . .

اکیلی تجھ بنا کیسے رہوں گی
دکھ اوپر دکھ پیا کیسے سہوں گی
میں اپنا دردِ غم کس سے کہوں گی
رہے اس غم سے کب جیتی رہوں گی۔
تجوں گی تجھ بنا سنگار اپنا
رہوں گی میں سجن من مار اپنا
پیا تم بن میں کاجل کب کروں گی
لباس اپنا میں بالم سب دھروں گی۔

. . . .

. . . .

اندھیری رین میں تجھ بن ڈروں گی
اکیلی سیج پر کیسے رہوں گی۔
اگر برہا نپٹ مجھ جی میں بیتی
نہیں پانے کے پھر تم مجھ کو جیتی
محبت کی ماری اسی طرح اسے روکتی رہی

लेकिन—

कही मैं सौ तरह समझा उसे बात
न मानी उसने कुछ हैहात हैहात[१]
किया अपना सफ़र मुझ छोड़ अकेली
मेरी सब में विरहा ने लाज ले ली

पिया के चले जाने पर उसकी याद में बराबर तड़पती रही और जैसे जैसे रुत बदलती रही वैसे वैसे इसका दर्द भी नई सूरतों से सामने आता रहा.

चुनांचे—

असाढ़ आया मुझे दुख देते देते
सदा आंसू सेती मुंह धोते धोते
फिरूँ बेकल पिया बिन दर बदर मैं
पुकारूँ नित सजन को घर ब घर मैं
अरी सब नार पिय के संग बोलें
गिरह अपने पिया के जी से खोलें
फिरूँ पिय ढूंढती मैं हर तरफ़ रे
नए दुख से दीवानी मैं भई रे.
हमन सी बिरहनी रोती फिरै है
ग़मे हिजरां[२] का नित दुखड़ा भरै है

१. हैहात = अफ़सोस

لیکن—

کہی میں سَو طرح سمجھا اُسے بات
نہ مانی اُس نے کچھ ہیہات ہیہات[۱]
کیا اپنا سفر مجھ چھوڑ اکیلی
میری سب میں برہا نے لاج لے لی

پیا کے چلے جانے پر اُس کی یاد میں برابر تڑپتی رہی اور جیسے جیسے رُت بدلتی رہی ویسے ویسے اِس کا درد بھی نئی صورتوں سے سامنے آتا رہا۔

چنانچہ—

اساڑھ آیا مجھے دُکھ دیتے دیتے
سدا آنسو سیتی مُنہ دھوتے دھوتے
پھروں بےکل پیا بن در بدر میں
پُکاروں نِت سجن کو گھر بہ گھر میں
اری سب نار پیا کے سنگ بولیں
گرہ اپنے پیا کے جی سے کھولیں
پھروں پیا ڈھونڈھتی میں ہر طرف رے
نئے دُکھ سے دِوانی میں بھئی رے۔
ہمن سی وِرہنی روتی پھرے ہیں
غمِ ہجراں کا نِت دُکھڑا بھرے ہیں

۱۔ ہیہات = افسوس   ۲۔ غمِ ہجراں [illegible]

सखी निस दिन मेरा रोते कटे है
मेरी इस दर्द से छाती फटे है.

हुई थी किस घड़ी मुझसे जुदाई
फिर आने क्यों नहीं जी चाहता जी

सखी री इब्तेदा[१] बरसात का है
बिरहा वैराग से जी अब डरा है.

घटा हर तरफ़ से उमँडी खड़ी रे
अटारी में लगी देखूँ खड़ी रे

उमँड कर लाल बादल आवते हैं
बिरहा की आग दिल में लावते हैं

घटा को देख मैं रो रो खड़ी हूँ
गरज फिर आ सतावे बिरहनी कूँ

इस बिछड़ी हुई की यही हालत रही कि सावन आ गया और अपने साथ एक नई आफ़त लाया—

अरी जब मोर बन से कूकता है
मेरा आवाज़ सुन जी सूखता है

पपीहा फिर दिलावे याद पी की
अगिन दूनी लगावे आग जी की

सभी सखियाँ पिया संग झूलती हैं
पिया के साथ नागिन बूझती हैं

१. इब्तेदा = शुरू

سکھی نِس دن میرا روتے کٹے ہے
میری اِس درد سے چھاتی پھٹے ہے

ہوئی تھی کس گھڑی مجھ سے جدائی
پھر آنے کیوں نہیں جی چاہتا جی

سکھی ری ابتدا[۱] برسات کا ہے
برہا بیراگ سے جی اب ڈرا ہے

گھٹا ہر طرف سے اُمڈی کھڑی رے
اٹاری میں لگی دیکھوں کھڑی رے

اُمنڈ کر لال بادل آوتے ہیں
برہا کی آگ دل میں لاوتے ہیں

گھٹا کو دیکھ میں رو رو کھڑی ہوں
گرج پھر آ ستاوے برہنی کوں

اِس بچھڑی ہوئی کی یہی حالت رہی کہ ساون آ گیا اور اپنے ساتھ ایک نئی آفت لایا—

اری جب مور بن سے کوکتا ہے
میرا آواز سن جی سوکھتا ہے

پپیہا پھر دلاوے یاد پی کی
اگن دونی لگاوے آگ جی کی

سبھی سکھیاں پیا سنگ جھولتی ہیں
پیا کے ساتھ ناگن بوجھتی ہیں

۱ ابتدا = شروع

अरी जब कूक कोयल की सुनाई
तमामी तन बदन में आग लाई
हँडोले झूलते हैं सब सखी री
फिरूँ मैं ढूंढती पी दर बदर री
पिया के साथ जाकर नार सारी
लगाती हैं वह मेंहदी हाथ कारी
घटा काली में देख और रात काली
क़यामत[१] देख उनकी जुल्फ़ काली
मुझे आवे सजन नित याद मेरा
न जानूँ कब करेगा आय फेरा
सलोनों को सखी सब सुख करत हैं
सलोनों[२] बिन अरी हम दुख मरत हैं
पड़ें बूँदें खड़ी रोऊँ अकेली
मुझे बरसात रुत हैगी दुहेली

....

....

विकट मौसम निपट बरसात है रे
क़यामत वह अँधेरी रात है रे
और जब यह महीना भी ज्यों त्यों ख़तम हुआ तो

اری جب کوک کویل کی سُنائی
تمامی تن بدن میں آگ لائی
ہنڈولے جھولتے ہیں سب سکھی ری
پھروں میں ڈھونڈھتی پی در بدر ری
پیا کے ساتھ جاکر نار ساری
لگاتی ہیں وہ مہندی ہاتھ کاری
گھٹا کالی میں دیکھ اور رات کالی
قیامت[۱] دیکھ اُن کی زلف کالی
مجھے آوے سجن نِت یاد میرا
نہ جانوں کب کرے گا آئے پھیرا
سلونوں کو سکھی سب سکھ کرت ہیں
سلونوں[۲] بن اری ہم دُکھ مرت ہیں
پڑیں بوندیں کھڑی روؤں اکیلی
مجھے برسات رُت ہے گی دُہیلی

. . . .

. . . .

بکٹ موسم نپٹ برسات ہے رے
قیامت وہ اندھیری رات ہے رے
اور جب یہ مہینہ بھی جیوں تیوں ختم ہوا تو

۱ قیامت = مصیبت۔ ۲ سلونوں ...

दूसरा आया—

आया भादों मुझे तरसावता है
घटा ग़म की सखी बरसावता है

अँधेरी रैन जब चमके है जुगनू
निपट होती हूँ मैं बेजान मजनू

अरी इस रात के रोशन सितारे
मेरी लेखे तो हैं अंगारे सारे

कबूतर जा ख़बर ला दे पिया की
सहूँगी किस तरह बिपदा सदा की

....

....

मैं देखत बाट पी, बौरा गई रे
अकेली बिन पिया दौरा गई रे

भादों भी गुज़रा मगर पिया न आए—

फिरूँ पंडित जगत के पूछती रे
दसहरा और दिवाली पूजती रे

पिया के आवने का दिन न आया
बहुत तावीज़ और मन्तर पढ़ाया

निकालूँ फाल और रम्माल ढूँढूँ
हर एक से पी की अपने बात पूछूँ

دوسرا آیا—

آیا بھادوں مجھے ترساوتا ہے
گھٹا غم کی سکھی برساوتا ہے

اندھیری رین جب چمکے ہے جگنو
نپٹ ہوتی ہوں میں بے جان مجنو

اری اس رات کے روشن ستارے
میری لیکھے تو ہیں انگارے سارے

کبوتر جا خبر لا دے پیا کی
سہونگی کس طرح بپدا سدا کی

....

....

میں دیکھت باٹ پی باؤرا گئی رے
اکیلی بن پیا دورا گئی رے

بھادوں بھی گزرا مگر پیا نہ آئے—

پھروں پنڈت جگت کے پوچھتی رے
دسہرا اور دیوالی پوجتی رے

پیا کے آونے کا دن نہ آیا
بہت تعویذ اور منتر پڑھایا

نکالوں فال اور رمال ڈھونڈھوں
ہر ایک سے پی کی اپنے بات پوچھوں

मौसम बदला तो जुदाई ने तकलीफ़ पहुँचाने की और सूरत निकाली—

गया अगहन सखी दुख दे घनेरा
किया सरमा ने आ मुझ पास डेरा

सलोना री मेरा कित रम रहा है
मेरा आकर लबों पर दम रहा है

दुख देने वाले पिया की शिकायत के बजाय वह अब अपने ही को इलज़ाम देती है—

मैं दुशमन जी की अपने आप हूँगी
किसी को बैठ कर क्या दोष दूँगी

कोई भी जान अपनी खोवता है
बेगाने वास्ते यूँ रोवता है

लगाई है जहाँ में पीत सबने
गँवाया कब किसी ने जी को अपने

इतने में दूसरों को मगन और चोहलें करती देखती है तो दिल और भी तड़प उठता है. सुनिये क्या तैयारियाँ हैं—

अरी सब नार बदलें भेस अपने
करें कंघी नहावें केस अपने

लगाकर हर घड़ी बनबन कटारी
करें मिस्सी दिखावें पान सुपारी

मुख ऊपर नागनी वह ज़ुल्फ़ खोली

موسم بدلا تو جُدائی نے تکلیف پہنچانے کی اور صورت نکالی—

گیا اگہن سکھی دُکھ دے گھنیرا
کیا سرما نے آ مجھ پاس ڈیرا

سلونا ری میرا کت رم رہا ہے
میرا آ کر لبوں پر دم رہا ہے

دُکھ دینے والے پیا کی شکایت کے بجائے وہ اب اپنے ہی کو الزام دیتی ہے—

میں دشمن جی کی اپنے آپ ہوں گی
کسی کو بیٹھ کر کیا دوش دوں گی

کوئی بھی جان اپنی کھووتا ہے
بیگانے واسطے یوں رووتا ہے

لگائی ہے جہاں میں پیت سب نے
گنوایا کب کسی نے جی کو اپنے

اتنے میں دوسروں کو مگن اور چہلیں کرتی دیکھتی ہے تو دل اور بھی تڑپ اٹھتا ہے. سنئے کیا تیاریاں ہیں—

اری سب نار بدلیں بھیس اپنے
کریں کنگھی نہا دیں کیس اپنے

لگا کر ہر گھڑی بن بن کٹاری
کریں مسّی دکھا دیں پان سپاری

مکھ اوپر ناگنی وہ زلف کھولی
پہن کر لال اودی رنگ چولا

वह आके अपने पी के संग खेलें
बतासे और खिलौने पी को देवें
रचा के हाथ और मेंहदी लगा के
धरें हैं तोरनी सर पर पिया के

और इससे इस बिरहा की मारी पर क्या गुज़रती है—

अरी बस क्या कहूँ तुझसे सखीरी
नहीं कुछ बात कहने की सखीरी

देर तो हो रही है लेकिन ज़रा देखें कि चाँदनी रात में उसके बेचैन दिल की क्या हालत दिखाई दी—

यकायक आके छिटकी चाँदनी रे
मेरे डसने को निकली चाँदनी रे

... .

हुई है चाँदनी की रात ज्यूँ दिन
मेरे लेखे अँधरी है पिया बिन

कभी मैं ज़ख़्म अपना फिर से खोलूँ
अरी इस चांदनी मार न जीऊँ

पिया बिन चाँदनी नित आ सतावे
सदा मुझ साथ आ झगड़ा मचावे

अँधेरी रैन तो कटती थी मेरी
पिया बिन चाँदनी कैसे कटे री

चाँदनी के बाद देखिये होली जैसा राग और रंग का त्योहार इस पर क्या असर करता है—

وہ آکے اپنے پی کے سنگ کھیلیں
بتاسے اور کھلونے پی کو دیویں
رچا کے ہاتھ اور مہندی لگا کے
دھریں ہیں تورنی سر پر پیا کے

اور اس سے اس برہا کی ماری پر کیا گزرتی ہے—

اری بس کیا کہوں تجھ سے سکھی ری
نہیں کچھ بات کہنے کی سکھی ری

دیر تو ہو رہی ہے لیکن ذرا دیکھیں کہ چاندنی رات میں اس کے بے چین دل کی کیا حالت دکھائی دی—

یکایک آکے چھٹکی چاندنی رے
میرے ڈسنے کو نکلی چاندنی رے

. . . .

ہوئی ہے چاندنی کی رات جیوں دن
میرے لیکھے اندھیری ہے پیا بن

کبھی میں زخم اپنا پھر سے کھولوں
اری اس چاندنی مارے نہ جیوں

پیا بن چاندنی نت آ ستاوے
سدا مجھ ساتھ آ جھگڑا مچاوے

اندھیری رین تو کٹتی تھی میری
پیا بن چاندنی کیسے کٹے ری

چاندنی کے بعد دیکھئے ہولی جیسا راگ اور رنگ کا تیوہار
[illegible]

करें सब नारियाँ अश्नान नहावें
लगा कर हाथ को मेंहदी रचावें
लगा कर पान को मुंह नार सारी
पिया के संग बैठी सब से न्यारी
गले में पहिर कर बद्धी व हैकल
पिया के साथ बैठी अपने रिल मिल
पहर सोने के बाज़ू बंद पाज़ेब
करें हँस हँस के अपनी हर घड़ी ज़ेब
बनावें हर घड़ी सज दिल बरी को
मज़ा लूटें पिया की दिल बरी की
ख़ुशी होकर गले पी को लगावें
अरी धन नार जिनको पी मनावें

....

....

लिये हाथों में पिचकारी फिरत हैं
अबीर अपने पिया के मुख मलत हैं
गुलाल और रंग सब कुछ फेंकती हैं
गुलाब और मुश्क इसमें मेलती हैं
अरी आलम में होरी मच रही है
दफ़ औ मिरदंग को गत लग रही है
[illegible] महलों में बस बाजे हैं झांझन

کریں سب ناریاں اشنان نہاویں
لگاکر ہاتھ کو مہندی رچاویں
لگاکر پان کو مُنہ نار ساری
پیا کے سنگ بیٹھی سب سے نیاری
گلے میں پہرکر بدّی و ہیکل
پیا کے ساتھ بیٹھی اپنے رِل مل
پہر سونے کے بازو بند پازیب
کریں ہنس ہنس کے اپنی ہر گھڑی زیب
بنادیں ہر گھڑی سج دلبری کی
مزا لوٹیں پیا کی دلبری کی
خوشی ہوکر گلے پی کو لگاویں
اری دھن نار جن کو پی مناویں

. . . .

. . . .

لئے ہاتھوں میں پچکاری پھرت ہیں
عبیر اپنے پیا کے مکھ ملت ہیں
گلال اور رنگ سب کچھ پھینکتی ہیں
گلاب اور مشک اس میں میلتی ہیں
اری عالم میں ہوری مچ رہی ہے
دف اور مردنگ کی گت لگ رہی ہے

सभी हँस हँस के पी के संग बोलें
ख़ुशी सेती पिया के संग झूलें

....

रँगोली चूँदरी पर रंग डारें
भई होरी में बौरी सारी नारें

अजी यह देख कर हंगामे होली
मेरे जी पर क़यामत आज होली

रहें सब ख़ुश मैं लोहू पीवती हूँ
यह हसरत देखने को जीवती हूँ

गर्मी के आने पर भी दुखिया की मुसीबत कम न हुई और पिय का ग़म बराबर उसकी जान को लगा रहा—

बियाबां में फिरें उड़ते बगूले
बिरहा के संग मेरा जिउ झूले

बसंत और पंच में सब मिल मनावें
सदा हम बिरहनी दुख दर्द गावें

नहीं मिलता मुझे पी कि करूँ क्या ?
न नींद आई कि देखूँ ख़्वाब में जा

लेकिन बैसाख बीतने के बाद जब जेठ आया—

गया बैसाख जेठ अब आ लगा है
पिया का शौक़ मुझ दिल में रचा है

سبھی ہنس ہنس کے پی کے سنگ بولیں
خوشی سیتی پیا کے سنگ جھولیں

. . . .

رنگیلی چُندری پر رنگ ڈاریں
بھئی ہوری میں بوری ساری ناریں

اجی یہ دیکھ کر ہنگامے ہولی
میرے جی پر قیامت آج ہولی

رہیں سب خوش میں لوہو پیوتی ہوں
یہ حسرت دیکھنے کو جیوتی ہوں

گرمی کے آنے پر بھی دکھیا کی مصیبت کم نہ ہوئی اور پیا کا غم برابر اُس کی جان کو لگا رہا—

بیاباں میں پھریں اُڑتے بگولے
برہا کے سنگ میرا جیو جھولے

بسنت اور پنچ میں سب مل مناویں
سدا ہم برہنی دکھ درد گاویں

نہیں ملتا مجھے پی کہ کروں کیا!
نہ نیند آئی کہ دیکھوں خواب میں جا

لیکن بیساکھ بیتنے کے بعد جب جیٹھ آیا—

گیا بیساکھ جیٹھ اب آ لگا ہے
پیا کا شوق مجھ دل میں رچا ہے

مہینہ جیٹھ کا آیا خوشی سے
پھرا قاصد میرا پی کی خبر لے

महीना जेठ का आया ख़ुशी से
फिरा क़ासिद मेरा पी की ख़बर ले

शताब आने का वादा पी के लाया
किसी दुखिया को मुझ सुखिया बनाया

और ज़रा इस बिरहनी का शौक़ देखिये—

अरे क़ासिद तेरे बल बल मेरा जी
कहा तूने कि आता है मेरा पी

क़दम जिस राह में तूने धरा हो
बुहारूँ मैं पलक से उस जगह को

अजी गर्मी में कितना जी जलाएं
तमामी साज़ इशरत का रचाएं

बनाए ख़स के बँगले बाग़ अन्दर
किया नहरों से जारी बाग़ यकसर

मैं पेश अज़ आमदे दिलबर शताबी
तामामी साज़ इशरत का रचा जी

जब इन्तज़ार में लगे हुए कान पी के आने की ख़बर सुनते हैं तो—

यकायक मैं सुना आए पियारे
छबीले जब सती दर पर हमारे

बयां क्यूँ कर करूँ मैं इस ख़ुशी को
[illegible] मैं अपने पी को

شتاب آنے کا وعدہ پی کے لایا
کسی دکھیا کو مجھ سکھیاں بنایا

اور ذرا برہنی کا شوق دیکھئے—

ارے قاصد تیرے بل بل میرا جی
کہا تونے کہ آتا ہے میرا پی

قدم جس راہ میں تو نے دھرا ہو
بہاروں میں پلک سے اس جگہ کو

اجی گرمی میں کتنا جی جلائیں
تمامی ساز عشرت کا رچائیں

بنائے خس کے بنگلے باغ اندر
کیا نہروں سے جاری باغ یکسر

میں پیش از آمدے دلبر شتابی
تمامی ساز عشرت کا رچا جی

جب انتظار میں لگے ہوئے کان پی کے آنے کی خبر سنتے ہیں تو—

یکایک میں سنا آئے پیارے
چھبیلے جب ستی در پر ہمارے

بیاں کیونکر کروں میں اس خوشی کو
کہ دیکھا جب گھڑی میں اپنے پی کو
تمامی عمر کے میں درد بھولی

और इसी के बयान पर क़िस्सा ख़त्म है जिसके बाद कुछ शेरों में शायर ने बताया है कि यह प्रेम कहानी ज़ाहिर में तो दो आदमियों के जुदा होकर बेचैन होने और फिर मिल जाने का क़िस्सा है लेकिन असल में ख़ुदा के इश्क़ से मतलब है—

यह आया दिल में कहिये एक कहानी
बयाँ हो जिसमें सोज़े दिल निहानी

ज़बाँ हर चंद है सादी ज़नानी
व लेकिन दर्दे दिल की है कहानी

लगी जो बात दिल की मुनक़सिम है
सजन जो दर्द का पूछो तो कम है

अगर समझे कोई अज़राह तहक़ीक़
ख़ुदा के इश्क़ की हैगी यह तदक़ीक़

पिया कौन और सजन देखूँ कहाँ है
उसी महबूब का जलवा अयाँ है

दिलों में हैगी उसके इश्क़ की आग
जिसे देखो उसे है उसका बैराग

सबसे ज़्यादा ध्यान देने के लायक़ तो इस मसनवी की ज़बान है जो मीठी और दर्दीली होने के साथ आम तौर पर लोगों की समझ में आ सकती है. यूँ तो ज़नानी ज़बान में शेर कहने के लिये उर्दू में रेख़ती के नाम से एक अलग चीज़ ही है लेकिन इसमें जिन लोगों ने लिखा है वह इस इरादे में कामयाब न हो सके कि औरतों के जज़बे हमारे अदब में जगह पा जाएं. विकट कहानी

اور اسی کے بیان پر قصہ ختم ہے جس کے بعد کچھ شعروں میں شاعر نے بتایا ہے کہ یہ پریم کہانی ظاہر میں تو دو آدمیوں کے جدا ہو کر بے چین ہونے اور پھر مل جانے کا قصہ ہے لیکن اصل میں خدا کے عشق سے مطلب ہے—

یہ آیا دل میں کہئے ایک کہانی
بیاں ہو جس میں سوزِ دل نہانی

زباں ہر چند ہے سادی زنانی
و لیکن دردِ دل کی ہے کہانی

لگی جو بات دل کی منقسم ہے
سجن جو درد کا پوچھو تو کم ہے

اگر سمجھے کوئی از راہِ تحقیق
خدا کے عشق کی ہے گی یہ تدقیق

پیا کون اور سجن دیکھوں کہاں ہے
اُس محبت کا جلوہ عیاں ہے

دلوں میں ہے گی اُس کے عشق کی آگ
جسے دیکھو اُسے ہے اُس کا بیراگ

سب سے زیادہ دھیان دینے کے لائق تو اس مثنوی کی زبان ہے جو میٹھی اور دردیلی ہونے کے ساتھ عام طور پر لوگوں کی سمجھ میں آ سکتی ہے۔ یوں تو زنانی زبان میں شعر کہنے کے لئے اردو میں ریختی کے نام سے ایک الگ چیز ہی ہے لیکن اس میں جن لوگوں نے لکھا ہے وہ اس ارادے میں کامیاب نہ ہو سکے کہ عورتوں کے جذبے ہمارے ادب میں جگہ پا جائیں۔ بکٹ کہانی

में यह कमी दूर करने की अच्छी कोशिश मिलती है. इसमें हर मौसम की हालत और उसके साथ ही साथ एक बिरह की मारी के जज़्बे ऐसे मज़े से बयान किये गए हैं कि इन शेरों में सचमुच एक औरत का नाज़ुक दिल धड़कता मालूम होता है. एक ऐसी औरत का दिल जो अपने पी की मोहब्बत में मतवाला हो रहा है. जिसकी दुनिया पिया के बिछड़ जाने से अँधेरी हो जाती है. जिसे हर मौसम, हर त्योहार, हर मौक़ा सजन की याद दिला के तड़पाता है. बिकट कहानी की ज़बान बताती है कि इसका लिखने वाला लखनऊ या दिल्ली किसी ख़ास स्कूल का आदमी नहीं. जगह जगह दक्खिनी ज़बान की तरह 'से' के बजाय 'सों', 'को' की जगह 'कों' आया है लेकिन हर जगह ऐसा नहीं है. बहुत से ऐसे शेर हैं जहाँ 'को' आज कल की तरह लाया गया है. 'मेरे दिल' के बजाय 'मुझ दिल' 'पिया के संग' की जगह 'पिया संग' वग़ैरा और एक जगह तो फ़ारसी की तरह 'घर ब घर' लिख दिया है. इससे पता चलता है कि बिकट कहानी ऐसे ज़माने में लिखी गई जब लखनऊ स्कूल की ज़बान की सख़्तियाँ आम तौर पर रिवाज में न आई थीं.

यह सतरें यहीं तक लिखी गई थीं कि इब्राहीम अली ख़ाँ 'ख़लील' के फ़ारसी तज़करे 'गुलज़ारे इब्राहीम' और मीर हसन के तज़करे में कुछ ऐसी सतरें दिखाई दीं जिनसे पता चला कि बिकट कहानी के लिखने वाले कमाल शाह मोहम्मद अफ़ज़ल इलाहाबादी हैं. लिखा है उन्हें एक शख़्स गोपाल से मोहब्बत हो गई थी. उसी हाल पर यह मसनवी लिखी गई. 'अफ़ज़ल' इलाहाबादी ... यहाँ के मशहर सफ़ी

میں یہ کمی دور کرنے کی اچھی کوشش ملتی ہے۔ اس میں ہر موسم کی حالت اور اس کے ساتھ ہی ساتھ ایک برہ کی ماری کے جذبے ایسے مزے سے بیان کیے گئے ہیں کہ ان شعروں میں سچ مچ ایک عورت کا نازک دل دھڑکتا معلوم ہوتا ہے۔ ایک ایسی عورت کا دل جو اپنے پی کی محبت میں متوالی ہو رہی ہے۔ جس کی دنیا پیا کے بچھڑ جانے سے اندھیری ہو جاتی ہے۔ جسے ہر موسم، ہر تیوہار، ہر موقع سجن کی یاد دلا کے تڑپاتا ہے۔ بکٹ کہانی کی زبان بتاتی ہے کہ اس کا لکھنے والا لکھنؤ یا دلی کسی خاص اسکول کا آدمی نہیں۔ جگہ جگہ دکھنی زبان کی طرح 'سے' کے بجائے 'سوں'، 'کو' کی جگہ 'کوں' آیا ہے لیکن ہر جگہ ایسا نہیں ہے۔ بہت سے ایسے شعر ہیں جہاں 'کو' آج کل کی طرح لایا گیا ہے۔ 'میرے دل' کے بجائے 'مجھ دل' 'پیا کے سنگ' کی جگہ 'پیا سنگ' وغیرہ اور ایک جگہ تو فارسی کی طرح 'گھر بہ گھر' لکھ دیا ہے۔ اس سے پتہ چلتا ہے کہ بکٹ کہانی ایسے زمانے میں لکھی گئی جب لکھنؤ اسکول کی زبان کی سختیاں عام طور پر رواج میں نہ آئی تھیں۔

یہ سطریں یہیں تک لکھی گئی تھیں کہ ابراہیم علی خاں 'خلیل' کے فارسی تذکرے 'گلزار ابراہیم' اور میر حسن کے تذکرے میں کچھ ایسی سطریں دکھائی دیں جن سے پتہ چلا کہ بکٹ کہانی کے لکھنے والے کمال شاہ محمد افضل الہ آبادی ہیں۔ لکھا ہے انھیں ایک شخص گوپال سے محبت ہو گئی تھی۔ اسی حال پر یہ مثنوی لکھی گئی۔ افضل الہ آبادی کا زیادہ حال تو معلوم نہیں مگر ...

घराने के थे. इसीलिये उन्होंने बिकट कहानी के खात्मे पर सूफ़ियाना रंग दे दिया है.

लेकिन चूंकि भाषा की शायरी में कृश्न जी का कैरेक्टर बहुत आता है. इसलिये ताज्जुब की बात नहीं अगर 'अफ़ज़ल' ने बिकट कहानी में 'साँवरे' और 'गोपाल' से कृश्न जी का ही ज़िक्र किया हो. मीर हसन ने ग़लती से 'गोपाल' को कोई आदमी समझ लिया.

बिकट कहानी कोई ख़ास कहानी नहीं लेकिन इसकी ज़बान ऐसी ज़रूर है जिसमें भाषा के शब्द बहुत ज़्यादा हैं लेकिन क़रीब क़रीब यह सारे लफ़्ज़ ऐसे हैं जो हमारी रोज़ की बोल चाल में दाख़िल हैं और हम उन्हें आसानी से समझ सकते हैं.

گھرانے کے تھے. اس لئے انھوں نے بکٹ کہانی کے خاتمے پر صوفیانہ رنگ دے دیا ہے.

لیکن چونکہ بھاشا کی شاعری میں کرشن جی کا کیریکٹر بہت آتا ہے. اس لئے تعجب کی بات نہیں اگر 'افضل' نے بکٹ کہانی میں 'سانورے' اور 'گوپال' سے کرشن جی کا ہی ذکر کیا ہو. میر حسن نے غلطی سے 'گوپال' کو کوئی آدمی سمجھ لیا.

بکٹ کہانی کوئی خاص کہانی نہیں لیکن اس کی زبان ایسی ضرور ہے جس میں بھاشا کے شبد بہت زیادہ ہیں لیکن قریب قریب یہ سارے لفظ ایسے ہیں جو ہماری روز کی بول چال میں داخل ہیں اور ہم انھیں آسانی سے سمجھ سکتے ہیں.

एकता और भी ज़्यादा ख़तरे में !

(भाई ओंकार नाथ जी शास्त्री)

माली और राजकाजी निगाह से इंडिया और पाकिस्तान ने क्या पाया इस पर यहां बहस करने की मेरी मंशा नहीं है. मुझे सिर्फ़ कलचर के पहलू पर ग़ौर करना है. नया हिन्द के पिछले नम्बर में एक मज़मून में मैंने लिखा था—'भारत के हिन्दू मुसलमानों का सदियों से बोली, लेन देन, रहन सहन, कला, दर्शन, इल्म हुनर, गाना बजाना, मज़ाक, मेले तमाशे, खेल कूद सबमें मेल मिलाप चला आता है.' ऐसा मालूम होता है कि सदियों से बढ़ता हुआ यह मेल मिलाप कुछ दिनों के लिये ख़तरे में पड़ गया है.

जिन समय यह मज़मून लिखा जा रहा है कलकत्ते से कुछ ख़बरें आई हैं उनसे मालूम होता है कि महात्मा गांधी की कोशिशों का नतीजा वहां अच्छा हो रहा है. कलकत्ते के लीगी असर के मुसलमानों को इधर बरसों के बाद शायद पहली बार यह मालूम हो रहा है कि दर असल 'अल्लाहो अकबर' का नारा सिर्फ़ काफ़िरों को चिढ़ाने के लिये नहीं है. हिन्दू भी यह समझते मालूम होते हैं कि एक ही जगह पर गीता और क़ुरान के श्लोक और आयतें प्रार्थना के रूप में पढ़ी जा सकती हैं. इस तरह की सुलह की फ़िज़ा में कौन कौन बातें काम कर रही हैं यहां उन पर बहस छेड़ने का मेरा इरादा नहीं. पर यह बात साफ़ है कि ... नों में दिखाई देने

ایکتا اور بھی زیادہ خطرے میں !

(بھائی اونکار ناتھ جی شاستری)

مالی اور راج کاجی نگاہ سے انڈیا اور پاکستان نے کیا پایا اس پر یہاں بحث کرنے کی میری منشا نہیں ہے. مجھے صرف کلچر کے پہلو پر غور کرنا ہے. نیا ہند کے پچھلے نمبر میں ایک مضمون میں میں نے لکھا تھا— 'بھارت کے ہندو مسلمانوں کا صدیوں سے بولی، لین دین، رہن سہن، کلا، درشن، علم ہنر، گانا بجانا، مذاق، میل تماشے، کھیل کود سب میں میل ملاپ چلا آتا ہے.' ایسا معلوم ہوتا ہے کہ صدیوں سے بڑھتا ہوا یہ میل ملاپ کچھ دنوں کے لئے خطرے میں پڑ گیا ہے.

جس سمے یہ مضمون لکھا جا رہا ہے کلکتے سے کچھ خبریں آئی ہیں ان سے معلوم ہوتا ہے کہ مہاتما گاندھی کی کوششوں کا نتیجہ وہاں اچھا ہو رہا ہے. کلکتے کے لیگی اثر کے مسلمانوں کو ادھر برسوں کے بعد شاید پہلی بار یہ معلوم ہو رہا ہے کہ دراصل 'اللہ اکبر' کا نعرہ صرف کافروں کو چڑھانے کیلئے نہیں ہے. ہندو بھی یہ سمجھتے معلوم ہوتے ہیں کہ ایک ہی جگہ پر گیتا اور قرآن کے شلوک اور آیتیں پرارتھنا کے روپ میں پڑھی جا سکتی ہیں. اس طرح کی صلح کی فضا میں کون کون باتیں کام کر رہی ہیں یہاں ان پر بحث چھیڑنے کا میرا ارادہ نہیں. پر یہ بات صاف ہے کہ کلکتے کے اس طرح کے سماچار کالے بادلوں میں دکھائی دینے

वाली रुपहली लकीर की तरह हैं. अभी पंजाब की हालत में कोई ख़ास सुधार नहीं हुआ है अभी भी ख़बरें आ रही हैं कि सरहदी इलाक़ों के दंगों को फ़ौजी सख्तियों से दबाया जा रहा है. यह बात साफ़ है कि जब तक इस तरह की हालत क़ायम रहती है तहज़ीब और तमद्दुन का मेल मिलाप उससे कहीं ज़्यादा ख़तरे में है जितना आज से कुछ दिनों पहिले था.

इस हालत में हिन्दू सभा और हिन्दू सभाई कांग्रेसियों को ख़ूब बन आई है. अब तक जब ब्रिटिश सरकार से लड़ने की बात उठाई जाती थी हिन्दू सभा कभी मैदान में नहीं आई. असल में शुरू से हिन्दू महासभा की तारीख़ कम या ज़्यादा बुज़दिली की तारीख़ रही है. आज़ादी की लड़ाई में इसने मुसलिम लीग की तरह ही बहुत करके ब्रिटिश राज का साथ दिया है. मुल्क में जब जब आईनी या काग़ज़ी हल चल ने ज़ोर पकड़ा है तब तब हिन्दू सभा की बौखलाहट ने भी ज़ोर दिखाया है. इस सभा का यही ख़ास काम रहा है कि कौंसिलों और बोर्डों में पहुँचा जावे और लम्बी लम्बी तक़रीरें की जावें. फिर मुसलिम लीग क्यों पीछे रहती, जिसका जन्म ही इस बात के लिये कराया गया था कि आज़ादी की लड़ाई में रोड़े अटकें. लेकिन अब तक कांगरेस के सामने हिन्दू सभा दबी सी थी, लीग ज़्यादा खुली थी. आज हिन्दू सभा ख़ूब खुलना चाहती है. यह बात और है कि मुल्क के बड़े बड़े सरमायादार आज भी हिन्दू सभा की इतनी धाक मानने के लिये तैय्यार नहीं हैं. क्यों, क्यों कि कांगरेस ख़ुद हिन्दुओं से ख़ाली नहीं है. और अगर कांगरेस को पाकिस्तान की मांग

والی روپہلی لکیر کی طرح ہیں. ابھی پنجاب کی حالت میں کوئی خاص سُدھار نہیں ہوا ہے. ابھی بھی خبریں آ رہی ہیں کہ سرحدی علاقوں کے دنگوں کو فوجی سختیوں سے دبایا جا رہا ہے. یہ بات صاف ہے کہ جب تک اِس طرح کی حالت قایم رہتی ہے تہذیب اور تمدّن کا میل مِلاپ اُس سے کہیں زیادہ خطرے میں ہے جتنا آج سے کچھ دنوں پہلے تھا.

اِس حالت میں ہندو سبھا اور ہندو سبھائی کانگریسیوں کی خوب بن آئی ہے. اب تک جب برٹش سرکار سے لڑنے کی بات اُٹھائی جاتی تھی ہندو سبھا کبھی میدان میں نہیں آئی. اصل میں شروع سے ہندو مہاسبھا کی تاریخ کم یا زیادہ بُزدلی کی تاریخ رہی ہے. آزادی کی لڑائی میں اِس نے مسلم لیگ کی طرح ہی بہت کر کے برٹش راج کا ساتھ دیا ہے. ملک میں جب جب آئینی یا کاغذی ہل چل نے زور پکڑا ہے تب تب ہندو سبھا کی بوکھلاہٹ نے بھی زور دکھایا ہے. اِس سبھا کا یہی خاص کام رہا ہے کہ کونسلوں اور بورڈوں میں پہنچا جاوے اور لمبی لمبی تقریریں کی جاویں. پھر مسلم لیگ کیوں پیچھے رہتی، جس کا جنم ہی اِس بات کے لئے کرایا گیا تھا کہ آزادی کی لڑائی میں روڑے اٹکیں. لیکن اب تک کانگریس کے سامنے ہندو سبھا دبی سی تھی، لیگ زیادہ کھلی تھی. آج ہندو سبھا خوب کھلنا چاہتی ہے. یہ بات اور ہے کہ ملک کے بڑے بڑے سرمایہ دار آج بھی ہندو سبھا کی اِتنی دھاک ماننے کے لئے تیار نہیں ہیں. کیوں، کیونکہ کانگریس خود ہندوؤں سے خالی نہیں ہے. اور اگر کانگریس کو پاکستان کی مانگ

के सामने झुकना पड़ा है, तो इस लिये नहीं कि कांगरेस हिन्दुओं के नफ़े नुक़सान का ध्यान नहीं रखती थी, बल्कि इसलिये कि वह जिस ढंग की आज़ादी की लड़ाई लड़ती रही है, उसका नतीजा इससे अच्छा नहीं हो सकता था. हाँ, तो कांगरेसी हिन्दू पहिले बनिया है फिर हिन्दू. बनिया होने के नाते उसे सारे हिन्दुस्तान का बाज़ार चाहिये था. उसने देखा कि यह मुमकिन नहीं, जो मिला उसपर समझौता किया. अब भी वह अपनी इस ग़रज़ को भूला नहीं है. लेकिन इसके पूरे होने की उसे उम्मीद नहीं मालूम होती. फिर हिन्दूपन को क्यों और दबाया जाय. इसके लिये कुछ न कुछ मौक़ा आ ही गया है, नहीं तो महज़ नाम की आज़ादी के जलसों के सिलसिले में कांगरेस का हिन्दूपन क्यों जग उठता ? अगर पाकिस्तान में इसलाम के रीति रिवाज के मुताबिक़ ख़ुशियां मनाई गई हों तो हिन्दुस्तान में क्यों न हिन्दू रीति रिवाज बरते जाँय. १५ अगस्त के समाचार किससे छिपे हैं ? हवन, यज्ञ, देव पूजा, वेद पाठ, राम कृष्ण, गंगा जमुना सरस्वती, पूरा बन्दे-मातरम्, सभी याद आगए. मैं यह नहीं कहता कि हिन्दू जनता का अपनी ख़ुशी हिन्दू रस्म रिवाज के मुताबिक़ मनाना ग़लत था. कहता महज़ यह हूँ कि क्या वजह है कि कुल हिन्द नेशनल काँगरेस के सरकारी और दफ़्तरी जलसे हिन्दूपन के रंग में हुए ? क्या इस लिये कि पाकिस्तान का जवाब देना था ? क्या इसलिये कि कांगरेस का अब तक का राष्ट्रीयता का प्रचार सिर्फ़ ढोंग था और असल में मिस्टर जिन्ना का साम्प्रदायिक 'राष्ट्रवाद' यानी

کے سامنے جھکنا پڑا ہے، تو اس لئے نہیں کہ کانگریس ہندوؤں کے نفع نقصان کا دھیان نہیں رکھتی تھی، بلکہ اس لئے کہ وہ جس ڈھنگ کی آزادی کی لڑائی لڑتی رہی ہے، اس کا نتیجہ اس سے اچھا نہیں ہو سکتا تھا۔ ہاں تو کانگریسی ہندو پہلے بنیا ہے پھر ہندو۔ بنیا ہونے کے ناتے اسے سارے ہندستان کا بازار چاہئے تھا۔ اس نے دیکھا کہ یہ ممکن نہیں، جو ملا اس پر سمجھوتا کیا۔ اب بھی وہ اپنی اس غرض کو بھولا نہیں ہے۔ لیکن اس کے پورا ہونے کی اسے امید نہیں معلوم ہوتی۔ پھر ہندوپن کو کیوں اور دبایا جائے۔ اس کے لئے کچھ نہ کچھ موقع آ ہی گیا ہے، نہیں تو محض نام کی آزادی کے جلسوں کے سلسلے میں کانگریس کا ہندوپن کیوں جگ اٹھتا؟ اگر پاکستان میں اسلام کے ریت رواج کے مطابق خوشیاں منائی گئی ہوں تو ہندستان میں کیوں نہ ہندو ریت رواج برتے جائیں۔ ۱۵ اگست کے سماچار کس سے چھپے ہیں؟ ہون، یگ، دیو پوجا، وید پاٹھ، رام کرشن، گنگا جمنا سرسوتی، پورا بندے ماترم سبھی یاد آ گئے۔ میں یہ نہیں کہتا کہ ہندو جنتا کا اپنی خوشی ہندو رسم رواج کے مطابق منانا غلط تھا۔ کہتا محض یہ ہوں کہ کیا وجہ ہے کہ کل ہند نیشنل کانگریس کے سرکاری اور دفتری جلسے ہندوپن کے رنگ میں ہوئے؟ کیا اس لئے کہ پاکستان کا جواب دینا تھا؟ کیا اس لئے کہ کانگریس کا اب تک کا راشٹریتا کا پرچار صرف ڈھونگ تھا اور اصل میں مسٹر جناح کا سامپردایک 'راشٹر واد' یعنی مذہبی قومیت کا نعرہ صحیح تھا! کیا اب سچے معنوں میں

'इण्डिया' 'हिन्दु' स्तान हो गया ?

मेरा ख़याल है कि इस तरह की बौखलाहट अच्छी नहीं है. आज पल भर के लिये यह बातें कितनी भी भली मालूम होती हों पर राज की तरफ़ से किसी ख़ास धर्म को बढ़ावा मिलना ख़तरे से ख़ाली नहीं है. ब्रिटिश साम्राज्यशाही इन बातों को ख़ूब 'वाच' कर रही है. पाकिस्तान को और हिन्दुस्तान को आज वह जान बूझ कर ढील दे रही है कि दोनों सरकारों के बीच की खाई इतनी बढ़ जाय कि फिर दोनों का मिलना नामुमकिन हो. तभी वह दोनों को लड़ाती हुई अपने साम्राजी पंजे को मज़बूती से कसे रख सकती है. वह अच्छी तरह समझती है कि अब दंगों को छोटे मोटे कारनों से टिकाऊ नहीं बनाया जा सकता. अब उनकी बुनियादें और भी गहराई में जानी चाहियें. जब तहज़ीब और तमद्दुन की, धर्म और मज़हब की, कला और साहित्य की लड़ाई इतना ज़ोर पकड़ जायेगी कि दो 'अलग अलग' राज एलानिया अपनी अपनी तरफ़दारी बरतने लगेंगे तो फिर दोनों का आपसी झगड़ा हमेशा के लिये क़ायम होकर रहेगा और ब्रिटिश क़ौम की माली लूट भी जारी रहेगी.

कलचर, तहज़ीब और तमद्दुन की एकता का मतलब क्या है ? क्या सचमुच यह इतना डरावना सवाल है कि इससे किसी पढ़े लिखे आदमी को चाहे वह किसी मज़हब का हो डरना चाहिये ? हर्गिज़ नहीं. इस साइन्स के ज़माने में संसार के कोने कोने के आदमियों को आपस में नाता जोड़ने का जो बेजोड़ मौक़ा मिला है, वह उन्हें बरबस एकता की ज़ंजीर में बांध रहा है. हर एक दूसरे की भाषा, भेषभूषा, रहन

'انڈیا' 'ہندو' ستان ہوگیا؟

میرا خیال ہے کہ اس طرح کی بوکھلاہٹ اچھی نہیں ہے۔ آج پل بھر کے لئے یہ باتیں کتنی بھی بھلی معلوم ہوتی ہوں پر راج کی طرف سے کسی خاص دھرم کو بڑھاوا ملنا خطرے سے خالی نہیں ہے۔ برٹش سامراج شاہی ان باتوں کو خوب 'واچ' کر رہی ہے۔ پاکستان کو اور ہندستان کو آج وہ جان بوجھ کر ڈھیل دے رہی ہے کہ دونوں سرکاروں کے بیچ کی کھائی اتنی بڑھ جائے کہ پھر دونوں کا ملنا ناممکن ہو۔ تبھی وہ دونوں کو لڑاتی ہوئی اپنے سامراجی پنجے کو مضبوطی سے کسے رکھ سکتی ہے۔ وہ اچھی طرح سمجھتی ہے کہ اب دنگوں کو چھوٹے موٹے کارنوں سے ٹکاؤ نہیں بنایا جاسکتا۔ اب ان کی بنیادیں اور بھی گہرائی میں جانی چاہئیں۔ جب تہذیب اور تمدن کی، دھرم اور مذہب کی، کلا اور ساہتیہ کی لڑائی اتنا زور پکڑ جائے گی کہ دو 'الگ الگ راج' علانیہ اپنی اپنی طرفداری برتنے لگیں گے تو پھر دونوں کا آپسی جھگڑا ہمیشہ کے لئے قایم ہو کر رہے گا اور برٹش قوم کی مالی لوٹ بھی جاری رہے گی۔

کلچر، تہذیب اور تمدن کی ایکتا کا مطلب کیا ہے؟ کیا سچ مچ یہ اتنا ڈراؤنا سوال ہے کہ اس سے کسی پڑھے لکھے آدمی کو چاہے وہ کسی مذہب کا ہو ڈرنا چاہئے؟ ہرگز نہیں۔ اس سائنس کے زمانے میں سنسار کے کونے کونے کے آدمیوں کو آپس میں ناتا جوڑنے کا جو بےجوڑ موقع ملا ہے وہ انھیں بربس ایکتا کی زنجیر میں باندھ رہا ہے۔ ہر ایک دوسرے کی بھاشا، بھیس بھوشا، رہن

सहन, खान पान, हुनर और रीति रिवाज बरबस सीख रहा है. इस विकास को ज़बरदस्ती रोकना जहालत है. ज़िन्दगी बसर करने के जो ढंग और जो असूल देस बिदेस के आदमियों ने बनाए हैं वह ज़रूरत और ज़माने के मुताबिक़ हैं. ज्ञान और तालीम के बढ़ने के साथ इन बातों में तरक़्क़ी होना ज़रूरी है. एक दूसरे से मिलकर भी इनसानी क़ौम अगर अपनी तंग निगाह को बनाए रखती है और कलचर और तहज़ीब, कला और साहित्य की तरक़्क़ी को रोकने की कोशिश करती है, तो यह उसकी भूल है. यह कहना कि दो या ज्यादा तहज़ीबों का मिलाना बुरा है भूल है. कुछ लोग इसे ख़िचड़ी कहकर इसका मज़ाक उड़ाते हैं पर खिचड़ी हमेशा बुरी नहीं होती—असल में खिचड़ी का भी एक अपना स्वाद होता है जो दाल चावल में अलग अलग नहीं होता. और हर अच्छे से अच्छा खाना खिचड़ी ही तो होता है. पर मैं ख़िचड़ी पकाने की बात भी नहीं करता, मैं तो ऐसे मेल मिलाप की बात करता हूँ. जिसमें बनावट नाम के लिये भी न हो. कला और तमद्दुन को मैं सिर्फ़ इतना चाहता हूँ कि आज़ाद छोड़ दिया जाय. जनता को अपना काम चलाने की आज़ादी हो. उसे ज्यादा से ज्यादा लोगों के, ज्यादा से ज्यादा तहज़ीबों के साथ मेल जोल का मौक़ा मिले. इधर साइन्स का प्रचार बढ़ता रहेगा. साइन्स में इतनी शक्ति है कि वह एक नई सभ्यता, नई तहज़ीब और नई कलचर का विकास करके रहेगी, जिसमें सभी पुरानी अच्छी बातों का मेल होगा. और साथ ही यह व्यापक यानी आलम गीर कलचर सबको ख़ुश रख सकेगी.

سہن، کھان پان، ہُنر اور ریت رواج بربس سیکھ رہا ہے۔ اِس وکاس کو زبردستی روکنا جہالت ہے۔ زندگی بسر کرنے کے جو ڈھنگ اور جو اُصول دیس بدیس کے آدمیوں نے بنائے ہیں وہ ضرورت اور زمانے کے مطابق ہیں۔ گیان اور تعلیم کے بڑھنے کے ساتھ اِن باتوں میں ترقّی ہونا ضروری ہے۔ ایک دوسرے سے مل کر بھی انسانی قوم اگر اپنی تنگ نگاہ کو بنائے رکھتی ہے اور کلچر اور تہذیب، کلا اور ساہتیہ کی ترقّی کو روکنے کی کوشش کرتی ہے تو یہ اُس کی بھول ہے۔ یہ کہنا کہ دو یا زیادہ تہذیبوں کا ملانا برا ہے بھول ہے۔ کچھ لوگ اِسے کھچڑی کہہ کر اِس کا مذاق اُڑاتے ہیں پر کھچڑی ہمیشہ بُری نہیں ہوتی — اصل میں کھچڑی کا بھی ایک اپنا سواد ہوتا ہے جو دال چاول میں الگ الگ نہیں ہوتا۔ اور ہر اچھے سے اچھا کھانا کھچڑی ہی تو ہوتا ہے۔ پر میں کھچڑی پکانے کی بات بھی نہیں کرتا۔ میں تو ایسے میل ملاپ کی بات کرتا ہوں، جس میں بناوٹ نام کے لئے بھی نہ ہو۔ کلا اور تمدّن کو میں صرف اِتنا چاہتا ہوں کہ آزاد چھوڑ دیا جائے۔ جنتا کو اپنا کام چلانے کی آزادی ہو، اُسے زیادہ سے زیادہ لوگوں کے زیادہ سے زیادہ تہذیبوں کے ساتھ میل جول کا موقع ملے۔ اِدھر سائنس کا پرچار بڑھتا رہے گا۔ سائنس میں اِتنی شکتی ہے کہ وہ ایک نئی سبھیتا، نئی تہذیب اور نئی کلچر کا وکاس کرکے رہے گی، جس میں سبھی پُرانی اچھی باتوں کا میل ہوگا، اور ساتھ ہی یہ ویاپک یعنی عالم گیر کلچر سب کو خوش رکھ سکے گی۔

एकता (Unity in Diversity) यानी रवादारी की ज़रूरत है. वहाँ किसी को भी मिसाल के लिये अलग अलग कलाओं और भाषाओं पर बराबर अधिकार रखने में गुरेज़ नहीं होगा, गर्व होगा, दूसरों को जानने समझने का फ़ख़्र होगा. मेरा ख़याल है कि वह ज़माना आके रहेगा जिसमें आम जनता भी दस पाँच ज़बानों की ज़ानकारी रख सके. जहाँ तक झूठी मानताओं की बात है, साइन्स उन्हें बेमुरौअती से छांटती जायगी. इससे किसी को नाराज़ नहीं होना चाहिये. समझदार आदमी इस मंज़िल की तरफ़ बढ़ेंगे और मौजूदा ख़तरे में बहजाने से अपने को बचाएंगे.

—※—

ایکتا (Unity in Diversity) یعنی رواداری کی ضرورت ہے، وہاں کسی کو بھی مثال کے لئے الگ الگ کلاؤں اور بھاشاؤں پر برابر ادھکار رکھنے میں گریز نہیں ہوگا، گرو ہوگا، دوسروں کو جاننے سمجھنے کا فخر ہوگا۔ میرا خیال ہے کہ وہ زمانہ آکے رہے گا جس میں عام جنتا بھی دس پانچ زبانوں کی جانکاری رکھ سکے۔ جہاں تک جھوٹی مانتاؤں کی بات ہے، سائنس انھیں بے مروّتی سے چھانٹتی جائے گی۔ اس سے کسی کو ناراض نہیں ہونا چاہیئے۔ سمجھدار آدمی اس منزل کی طرف بڑھیں گے اور موجودہ خطرے میں بہ جانے سے اپنے کو بچائیں گے۔

—·:<·>✻<·>:·—

और उन्हीं का फैसला मानो. पंच परमेश्वर ही सबसे बड़ी अदालत है. उससे बड़ी अदालत इस दुनिया में नहीं है. भारती बाबा और रमज़ान खुद गांव की पंचायत में नहीं थे पर पंच भी उनका बहुत मान करते थे. इस तरह के घरेलू मामलों में जिनमें पंचों की पहुँच नहीं थी. लोग भारती बाबा और रमज़ान के पास जाते थे.

गांव में सिख लड़का खड्गसिंह और मुसलमान नौजवान बरकत अली बड़े जोशीले थे. दोनों में गरम खून था. मुल्क की बिगड़ती हुई फ़िरक़ेवाराना हवा का इन दोनों पर असर था. दोनों हेकड़ी में एक दूसरे से बढ़कर थे. खड्गसिंह कहा करता—"जब तक खड्गसिंह के पास खड्ग है तब तक उसे कोई नहीं दबा सकता." वह सदा किसी न किसी से उलझते रहता था. इनसे गाँव के भाई चारे को हमेशा ख़तरा रहता था. खड्गसिंह कई बार भारती बाबा से भी बहस करता था पर उसे हमेशा झेंपना पड़ता था. रमज़ान तो बरक़त अली से साफ़ कह देता—"तेरे दिल में मैल भरा है। तू इस्लाम को समझने के क़ाबिल ही नहीं."

एक दिन गुरुद्वारे में भारती बाबा रोज़ की तरह अपना पाठ कर रहे थे. कई लोगों के साथ खड्गसिंह भी वहाँ बैठा था. अपने पाठ में भारती बाबा ने कहना शुरू किया—"दुनिया में न कोई धर्म छोटा है, न कोई धर्म बड़ा है. सब मज़हब अच्छे और इज़्ज़त के क़ाबिल हैं. भगवान ने संसार बनाया और इसमें रहने के लिये आदमी बनाए. आदमी आदमी के आपसी मतभेद ने इतने धर्म बना दिये. जड़ में सब एक हैं. संसार का असली धर्म … यह सारे मानव समाज का

اور اُنھیں کا فیصلہ مانو. پنچ پرمیشور ہی سب سے بڑی عدالت ہے. اُس سے بڑی عدالت اِس دُنیا میں نہیں ہے. بھارتی بابا اور رمضان خود گاؤں کی پنچایت میں نہیں تھے پر پنچ بھی اُن کا بہت مان کرتے تھے. اِس طرح کے گھریلو معاملوں میں جن میں پنچوں کی پہنچ نہیں تھی، لوگ بھارتی بابا اور رمضان کے پاس جاتے تھے.

گاؤں میں سکھ لڑکا کھڑک سنگھ اور مسلمان نوجوان برکت علی بڑے جوشیلے تھے. دونوں میں گرم خون تھا. ملک کی بگڑتی ہوئی فرقہ وارانہ ہوا کا اِن دونوں پر اثر تھا. دونوں ہیکڑی میں ایک دوسرے سے بڑھ کر تھے. کھڑک سنگھ کہا کرتا—"جب تک کھڑک سنگھ کے پاس کھنڈا ہے تب تک اُسے کوئی نہیں دبا سکتا!" وہ سدا کسی نہ کسی سے اُلجھتے رہتا تھا. اِن سے گاؤں کے بھائی چارے کو ہمیشہ خطرہ رہتا تھا. کھڑک سنگھ کئی بار بھارتی بابا سے بھی بحث کرتا تھا پر اُسے ہمیشہ جھینپنا پڑتا تھا. رمضان تو برکت علی سے صاف کہہ دیتا—"تیرے دل میں میل بھرا ہے، تو اسلام کو سمجھنے کے قابل ہی نہیں!"

ایک دن گرودوارے میں بھارتی بابا روز کی طرح اپنا پاٹھ کر رہے تھے. کئی لوگوں کے ساتھ کھڑک سنگھ بھی وہاں بیٹھا تھا. اپنے پاٹھ میں بھارتی بابا نے کہنا شروع کیا—"دُنیا میں نہ کوئی دھرم چھوٹا ہے، نہ کوئی دھرم بڑا ہے. سب مذہب اچھے اور عزت کے قابل ہیں. بھگوان نے سنسار بنایا اور اِس میں رہنے کے لئے آدمی بنائے. آدمی کے آپسی مت بھید نے اِتنے دھرم بنا دئے. جڑ میں سب ایک ہیں. سنسار کا اصلی دھرم یا دھرم، مذہب انسانیت ہے. یہ سارے مانو سماج کا

धर्म है. सचाई, प्रेम और त्याग इसके असूल हैं. यह तीनों हममें त्याग और क़ुरबानी की भावना पैदा करते हैं. सब धर्मों की ग़रज़ एक ही है—ईश्वर को पाना. सब धर्म उसी ग़रज़ को पूरा करने के अलग अलग साधन हैं. हमें दुनिया के किसी भी धर्म की हँसी नहीं करनी चाहिये. धर्म का नाम लेकर लड़ना निरी मूर्खता है. बाबा नानक हमारे सामने मिसाल हैं. उन्होंने बताया है कि दुनिया में एक ही ईश्वर है पर अलग अलग लोग उसे अलग अलग नामों से पुकारते हैं. कोई उसे 'राम' कहता है तो कोई 'रहीम' कोई केशो कहता है तो कोई करीम."

खड्ग सिंह अब तक भारती बाबा के लिहाज़ से चुप था. अब वह अपने को न रोक सका. उसने खड़े होकर पूछा—"बाबा! आपने बाबा नानक की तो बातें बता दीं. हमें ज़रा गुरू गोविन्द सिंह का भी तो हाल बताइये. उनकी भावना कैसी रही होगी. मज़हब के नाम पर उनके दो लड़कों को चुनवा दिया गया था और ख़ुद उन्हें भी तंग किया गया था."

(३७४)

भारती बाबा ने शान्ति के साथ कहा—"खड्ग सिंह ने जो पूछा ठीक पूछा है. मैं जब गुरू गोविन्द सिंह के बारे में सोचता हूँ तो मेरा दिल प्रेम और आनंद से भर जाता है. उस शेर दिल महापुरुष पर सिखों को ही नहीं सारे भारतवर्ष को फ़ख्र होना चाहिये. उन्होंने धार्मिक आज़ादी के लिये युद्ध छेड़ा था. यह अधिकार आदमी का जन्म-सिद्ध अधिकार है. मनुष्य के अधिकारों के लिये लड़ना मनुष्यता के लिये लड़ना है. गुरू गोविन्द सिंह ने ख़ुद कभी किसी की मज़हबी आज़ादी पर हमला नहीं किया. उन्होंने

دھرم ہے۔ سچائی، پریم اور تیاگ اس کے اصول ہیں۔ یہ تینوں ہم میں تیاگ اور قربانی کی بھاونا پیدا کرتے ہیں۔ سب دھرموں کی غرض ایک ہی ہے— ایشور کو پانا۔ سب دھرم اسی غرض کو پورا کرنے کے الگ الگ سادھن ہیں۔ ہمیں دنیا کے کسی دھرم کی ہنسی نہیں کرنی چاہیئے۔ دھرم کا نام لے کر لڑنا نری مورکھتا ہے۔ بابا نانک ہمارے سامنے مثال ہیں۔ انھوں نے بتایا ہے کہ دنیا میں ایک ہی ایشور ہے پر الگ الگ لوگ اسے الگ الگ ناموں سے پکارتے ہیں۔ کوئی اسے 'رام' کہتا ہے تو کوئی 'رحیم' کوئی کیشو کہتا ہے تو کوئی کریم!"

کھڑک سنگھ اب تک بھارتی بابا کے لحاظ سے چپ تھا۔ اب وہ اپنے کو نہ روک سکا۔ اس نے کھڑے ہوکر پوچھا— "بابا! آپ نے بابا نانک کی باتیں بتا دیں۔ ہمیں ذرا گرو گووند سنگھ کا بھی تو حال بتایئے۔ ان کی بھاونا کیسی رہی ہوگی۔ مذہب کے نام پر ان کے لڑکوں کو چنوا دیا گیا تھا اور خود انھیں بھی تنگ کیا گیا تھا!"

بھارتی بابا نے شانتی کے ساتھ کہا— کھڑک سنگھ نے جو پوچھا ٹھیک پوچھا ہے میں جب گرو گووند سنگھ کے بارے میں سوچتا ہوں تو میرا دل پریم اور آنند سے بھر جاتا ہے۔ اس شیر دل مہاپرش پر سکھوں کو ہی نہیں سارے بھارت ورش کو فخر ہونا چاہیئے۔ انھوں نے دھارمک آزادی کے لئے یدھ چھیڑا تھا۔ یہ ادھکار آدمی کا جنم سدھ ادھکار ہے۔ منش کے ادھکاروں کے لئے لڑنا منشتا کے لئے لڑنا ہے۔ گرو گووند سنگھ نے خود کبھی کسی کی مذہبی آزادی پر حملہ نہیں کیا۔ انھوں نے

दीन धर्म को सच्चे रूप में समझा था. अपने धर्म की रक्षा के लिये उन्होंने तलवार निकाली पर उस तलवार से किसी के धर्म पर वार नहीं किया. वह सब के साथ न्याय चाहते थे. उनकी तलवार में शक्ति थी पर उन्होंने उस शक्ति का गलत इस्तेमाल कभी नहीं किया. अगर उन्होंने धर्म के नाम पर जुल्म किया होता तो बूढ़े भारती को बचपन में खेलने के लिये रमजान न मिलता और खड़्गसिंह को बरकत न मिलता. गुरू गोबिन्द सिंह दूसरों का धर्म मिटा कर स्वर्ग पाने की आशा नहीं करते थे. जो कोई धर्म के नाम पर लड़ता है या दूसरे धर्म को मिटाने की कोशिश करता है उसे न तो स्वर्ग में जगह मिलती है न नरक ही में. स्वर्ग में तो उसके लिये स्थान ही नहीं होता पर नरक वाले भी कहते हैं कि ऐसे पाप की सजा यहाँ भी कहाँ ? उस आदमी की आत्मा तड़फड़ाती रहती है. आखीर में खुद भगवान ही उसका न्याय करेंगे." इस जवाब ने खड़्गसिंह का मुंह बंद सा कर दिया. फिर भी सबकी आशा के खिलाफ उसने कहा—"बाबा ! आप बहुत पुराने जमाने की बातें कर रहे हैं. अब जमाना बदल गया है. अब हमारे देश में दो क़ौमें हैं हिन्दू और मुसलमान. दोनों में अब पहले का नाता नहीं है. आज कल जगह जगह यह आपस में लड़ते हैं. मुसलमान पाकिस्तान की बेजा मांग खड़ी कर एक तूफ़ान उठा रहे हैं. यह हम हिन्दुओं को छेड़ते हैं और दंगा फ़िसाद करते हैं. धर्म के नाम पर यह लड़ते हैं. जब तक यह रहेंगे हमारी गुलामी नहीं मिटेगी. हम सिखों का भी फ़र्ज है कि अपनी तलवारें तय्यार रखें."

भारती बाबा ने नाराज होकर कहा—"देखो खड़्गसिंह ! यह

(४६२)

دین دھرم کو سچے روپ میں سمجھا تھا. اپنے دھرم کی رکشا کے لئے اُنھوں نے تلوار نکالی پر اُس تلوار سے کسی کے دھرم پر وار نہیں کیا. وہ سب کے ساتھ نیائے چاہتے تھے. اُن کی تلوار میں شکتی تھی پر اُنھوں نے اُس شکتی کا غلط استعمال کبھی نہیں کیا. اگر اُنھوں نے دھرم کے نام پر ظلم کیا ہوتا تو بوڑھے بھارتی کو بچپن میں کھیلنے کے لئے رمضان نہ ملتا اور کھڑک سنگھ کو برکت نہ ملتا. گرو گووند سنگھ دوسروں کا دھرم مٹا کر سورگ پانے کی آشا نہیں کرتے تھے. جو کوئی دھرم کے نام پر لڑتا ہے یا دوسرے دھرم کو مٹانے کی کوشش کرتا ہے اُسے نہ تو سورگ میں جگہ ملتی ہے نہ نرک ہی میں. سورگ میں تو اُس کے لئے استھان ہی نہیں ہوتا پر نرک والے بھی کہتے ہیں کہ ایسے پاپ کی سزا یہاں بھی کہاں! اُس آدمی کی آتما تڑپھڑاتی رہتی ہے. آخر میں خود بھگوان ہی اُس کا نیائے کریں گے." اِس جواب نے کھڑک سنگھ کا منہ بند سا کر دیا. پھر بھی سب کی آشا کے خلاف اُس نے کہا—"بابا! آپ بہت پُرانے زمانے کی باتیں کر رہے ہیں. اب زمانہ بدل گیا ہے. اب ہمارے دیش میں دو قومیں ہیں ہندو اور مسلمان. دونوں میں اب پہلے کا ناتا نہیں ہے. آج کل جگہ جگہ یہ آپس میں لڑتے ہیں. مسلمان پاکستان کی بے جا مانگ کھڑی کر ایک طوفان اُٹھا رہے ہیں. یہ ہم ہندوؤں کو چھیڑتے ہیں اور دنگا فساد کرتے ہیں. دھرم کے نام پر یہ لڑتے ہیں. جب تک یہ رہیں گے ہماری غلامی نہیں مٹے گی. ہم سکھوں کا بھی فرض ہے کہ اپنی تلواریں تیار رکھیں."

بھارتی بابا نے ناراض ہو کر کہا—"دیکھو کھڑک سنگھ!

भगवान का दरबार है यहाँ हम प्रेम और एकता का पाठ पढ़ने आते हैं. यहाँ न कोई छोटा है न कोई बड़ा. यहाँ दुनिया के सब लोग बराबर हैं. तुम इस तरह की बातें यहाँ मत. किया करो. यहाँ का मैदान प्रेम का ही होना चाहिये. आपसी लड़ाई और फूट की बातों के लिये बाहर के मैदान में बहुत जगह है. मैं किसी आदमी की भूलों के कारन किसी क़ौम या धर्म को बदनाम नहीं कर सकता. जो दंगे फ़िसाद करते हैं वह किसी धर्म के नहीं होते. कोई धर्म इनका पाठ नहीं पढ़ाता. दंगे फ़िसाद करने वाले मानव धर्म से दूर हैं, इस लिये किसी भी धर्म के नहीं हैं. ख़ैर जो भी हो मैं गुरुद्वारे में तुम्हें इस तरह की बातें करने की इजाज़त नहीं देता और उम्मीद करता हूँ कि आगे कोई ऐसी बातें यहाँ न करेगा.

खड्गसिंह का मुँह लाल हो गया. वह चुपचाप बैठ गया. भारती बाबा पर गुस्सा दिखाना उसकी शक्ति से परे था.

भारती बाबा ने खड्गसिंह को चुप तो कर दिया पर खड्गसिंह की बातों को वह सोचते रहे पाकिस्तान का सवाल देश के सामने आ चुका था. भारती बाबा कभी कभी 'वीर अर्जुन' पढ़ते या सुन लेते थे जगह जगह दंगों की ख़बरों से उनके दिल को बड़ी ठेस लगती थी. एक दिन इस बारे में उन्होंने रमज़ान से बातें करने का फ़ैसला किया. उन्होंने बातों ही बातों में पूछा—"क्यों रमज़ान ! अगर तुम्हें कहा जाय कि सब मुसलमान एक जगह रहें और हिन्दू दूसरी जगह रहें, तो तुम ख़ुश होगे या दुखी ? मानलो तिवाना में मुसलमान ही रहें और हिन्दुओं को निकाल दें तो तुमको कैसा लगेगा ?"
रमज़ान ने कहा—"मैं क्यों ख़ुश होने चला ? मैं अपने इतने

بھگوان کا دربار ہے۔ یہاں ہم پریم اور ایکتا کا پاٹھ پڑھنے آتے ہیں۔ یہاں نہ کوئی چھوٹا ہے نہ کوئی بڑا۔ یہاں دُنیا کے سب لوگ برابر ہیں۔ تم اِس طرح کی باتیں یہاں مت کیا کرو۔ یہاں کا میدان پریم کا ہی ہونا چاہیئے۔ آپسی لڑائی اور پھوٹ کی باتوں کے لئے باہر کے میدان میں بہت جگہ ہے۔ میں کسی آدمی کی بھولوں کے کارن کسی قوم یا دھرم کو بدنام نہیں کرسکتا۔ جو دنگے فساد کرتے ہیں وہ کسی دھرم کے نہیں ہوتے۔ کوئی دھرم اِن کا پاٹھ نہیں پڑھاتا۔ دنگے فساد کرنے والے مانو دھرم سے دُور ہیں اِس لئے کسی بھی دھرم کے نہیں ہیں۔ خیر جو بھی ہو میں گوردوارے میں تمھیں اِس طرح کی باتیں کرنے کی اجازت نہیں دیتا اور اُمید کرتا ہوں کہ آگے کوئی ایسی باتیں یہاں نہ کریگا۔

کھڑک سنگھ کا مُنہ لال ہوگیا۔ وہ چُپ چاپ بیٹھ گیا۔ بھارتی بابا پر غصہ دکھانا اُس کی شکتی سے پرے تھا۔

بھارتی بابا نے کھڑک سنگھ کو چُپ تو کردیا پر کھڑک سنگھ کی باتوں کو وہ سوچتے رہے۔ پاکستان کا سوال دیش کے سامنے آچکا تھا۔ بھارتی بابا کبھی کبھی 'بیر ارجن' پڑھتے یا سُن لیتے تھے، جگہ جگہ دنگوں کی خبروں سے اُن کے دل کو بڑی ٹھیس لگتی تھی۔ ایک دن اِس بارے میں اُنھوں نے رمضان سے باتیں کرنے کا فیصلہ کیا۔ اُنھوں نے باتوں ہی باتوں میں پوچھا "کیوں رمضان! اگر تمھیں کہا جائے کہ سب مسلمان ایک جگہ رہیں اور ہندو دوسری جگہ رہیں، تو تم خوش ہوگے یا دُکھی؟ مان لو تِوانا میں مسلمان ہی رہیں اور ہندوؤں کو نکال دیں تو تم کو کیسا لگے گا؟"
رمضان نے کہا— "میں کیوں خوش ہونے چلا؟ میں اپنے اتنے

दिनों के दोस्तों को हिन्दू होने की वजह से कैसे छोड़ सकता हूँ? यह तो महज़ बेवक़ूफ़ी होगी! फिर तुम लोग भी यह गाँव कैसे छोड़ सकते हो! यहीं पले, यहीं खेले और यहीं इतने दिन काटे. भारती भैया! भारती बाबा ने फिर पूछा— "क्यों रमज़ान! तुम पाकिस्तान नहीं चाहते क्या?" रमज़ान हँस पड़ा. उसने जल्दी ही गम्भीर होकर कहा— "मैं तो सारी दुनिया को पाक मानता हूँ. यह दुनिया ख़ुदा ने ही तो बनाई है. अपना वतन तो पाक है ही. फिर दूसरे पाकिस्तान की ज़रूरत कहां? भारती भइया! तुमसे अलग होकर क्या मैं ख़ुश हो सकूँगा और क्या मुझसे अलग होने पर तुम को ख़ुशी होगी?" रमज़ान कुछ देर के लिये ठहर गया. उसने फिर कहना शुरू किया— "मैं जब पढ़ता हूँ कि हिन्दुओं ने मसजिद को लूटा और मुसलमानों ने मंदिर को तोड़ा तो ग़ुस्से से भर जाता हूँ. यों तो आपस की लड़ाई ही सबसे बुरी चीज़ है, पर मंदिर और मसजिद तो सबकी इज़्ज़त के हैं. न जाने इनको नुक़सान पहुंचा कर लोगों को क्या मिलता है. मंदिर तोड़कर न तो मुसलमान ही इसलाम की कोई ख़िदमत करते हैं और न हिन्दू मसजिद गिरा कर अपने मज़हब को बढ़ा सकते हैं. यह काम कमीनेपन की निशानी है. सच कहता हूँ भारती भइया मेरे रहते न तो कोई मुसलमान तुम्हारे गुरुद्वारे को हाथ लगा सकेगा और न कोई हिन्दू मेरे जीते जी मसजिद की ईंट हिला सकेगा." भारती बाबा को अपने मित्र से ऐसी ही आशा थी. दोनों फिर उधर की बातें करने लगे.

समय बदलने लगा. सारे मुल्क में हिन्दू मुस्लिम दंगे शुरू हो

دنوں کے دوستوں کو ہندو ہونے کی وجہ سے کیسے چھوڑ سکتا ہوں؟ یہ تو محض بے وقوفی ہوگی! پھر تم لوگ بھی یہ گاؤں کیسے چھوڑ سکتے ہو! یہیں پلے، یہیں کھیلے اور یہیں اتنے دن کاٹے۔ بھارتی بھیّا! بھارتی بابا نے پھر پوچھا— "کیوں رمضان! تم پاکستان نہیں چاہتے کیا؟" رمضان ہنس پڑا۔ اس نے جلدی ہی گمبھیر ہوکر کہا— "میں تو ساری دُنیا کو پاک مانتا ہوں۔ یہ دُنیا خدا ہی نے تو بنائی ہے۔ اپنا وطن تو پاک ہے ہی۔ پھر دوسرے پاکستان کی ضرورت کہاں؟ بھارتی بھیّا! تم سے الگ ہوکر کیا میں خوش ہو سکوں گا اور کیا مجھ سے الگ ہونے پر تم کو خوشی ہوگی؟" رمضان کچھ دیر کے لئے ٹھہر گیا۔ اس نے پھر کہنا شروع کیا— "میں جب پڑھتا ہوں کہ ہندوؤں نے مسجد کو لُوٹا اور مسلمانوں نے مندر کو توڑا تو غصّے سے بھر جاتا ہوں۔ یوں تو آپس کی لڑائی ہی سب سے بُری چیز ہے، پر مندر اور مسجد تو سب کی عزّت کے ہیں۔ نہ جانے ان کو نقصان پہنچا کر لوگوں کو کیا ملتا ہے۔ مندر توڑ کر نہ تو مسلمان ہی اسلام کی کوئی خدمت کرتے ہیں اور نہ ہندو مسجد گرا کر اپنے مذہب کو بڑھا سکتے ہیں۔ یہ کام کمینے پن کی نشانی ہے۔ سچ کہتا ہوں بھارتی بھیّا میرے رہتے نہ تو کوئی مسلمان تمہارے گرودوارے کو ہاتھ لگا سکے گا اور نہ کوئی ہندو میرے جیتے جی مسجد کی اینٹ ہلا سکے گا۔" بھارتی بابا کو اپنے متر سے ایسی ہی آشا تھی۔ دونوں پھر اُدھر کی باتیں کرنے لگے۔

गए. तबाही और बरबादी का राज था. भाई भाई के ख़ून का प्यासा हो रहा था. छुरेबाज़ी का डर सब तरफ़ छा गया था. पंजाब में यह लपटें ज़ोर पर थीं. वहाँ रोज़ दंगे होते थे. यह ख़ूनख़राबी देख नादिरशाह अपनी क़ब्र में शर्मा रहा था और अकबर अपनी क़ब्र में अपना सिर धुन रहा था. नादिरशाह का क़त्लेआम भी इसके सामने फीका था. क्लाइव और वारेनहेस्टिंग्ज़ की तड़फड़ाती लाशें ब्रिटिश राज को यों जमते देख अपनी क़बरों में शांत हो गई थीं.

तिवाना में मुसलमान सिर्फ़ क़रीब एक सौ थे. वह बहुत डरे हुए रहते थे. वहाँ अब तक शान्ति थी. पंजाब भर में दो तीन जगह ही ऐसी थीं जो इस आग से बची थीं. खड्ग सिंह को यह बरदाश्त न था. वह नोआखाली जैसी जगहों का बदला लेना चाहता था. वह तिवाना के मुसलमानों को तहस नहस करने की तय्यारी कर रहा था. उसने तय कर लिया. उसे कई साथी भी मिल गए. न जाने कैसे बरक़त अली को इसकी ख़बर मिल गई. पास के एक गाँव में मुसलमानों की ज़्यादा बस्ती थी. तिवाना के सब मुसलमानों ने वहीं जाकर रहने का फ़ैसला किया. बरक़तअली को गुस्सा त बहुत आया पर लाचार था. उसने क़सम खाई 'मुसलमानों को लाकर यहाँ क़त्लेआम न करा दिया तो मेरा नाम बरक़तअली नहीं.' सब जाने के लिये राज़ी हो गए, पर रमज़ान राज़ी न हुआ. उसने वहाँ ही मसजिद में रहना ठीक समझा. उसे भारती बाबा पर पूरा भरोसा था. लोगों ने बहुत समझाया पर उस पर कुछ असर न हुआ. सब चले गए. अकेला रमज़ान मसजिद में जा बैठा.

ہو گئے۔ تباہی اور بربادی کا راج تھا۔ بھائی بھائی کے خون کا پیاسا ہو رہا تھا۔ چھرے بازی کا ڈر سب طرف چھا گیا تھا۔ پنجاب میں یہ لپٹیں زور پر تھیں۔ وہاں روز دنگے ہوتے تھے۔ یہ خون خرابی دیکھ نادر شاہ اپنی قبر میں شرما رہا تھا اور اکبر اپنی قبر میں اپنا سر دھن رہا تھا۔ نادر شاہ کا قتل عام بھی اس کے سامنے پھیکا تھا۔ کلائیو اور وارن ہیسٹنگز کی تڑپھڑاتی لاشیں برٹش راج کو یوں جمتے دیکھ اپنی قبروں میں شانت ہو گئی تھیں۔

توانا میں مسلمان صرف قریب ایک سو تھے۔ وہ بہت ڈرے ہوئے رہتے تھے۔ وہاں اب تک شانتی تھی۔ پنجاب بھر میں دو تین جگہ ہی ایسی تھیں جو اس آگ سے بچی تھیں۔ کھڑک سنگھ کو یہ برداشت نہ تھا وہ نواکھالی جیسی جگہوں کا بدلہ لینا چاہتا تھا۔ وہ توانا کے مسلمانوں کو تہس نہس کرنے کی تیاری کر رہا تھا۔ اس نے طے کر لیا۔ اسے کئی ساتھی بھی مل گئے۔ نہ جانے کیسے برکت علی کو اس کی خبر مل گئی۔ پاس کے ایک گاؤں میں مسلمانوں کی زیادہ بستی تھی۔ توانا کے سب مسلمانوں نے وہیں جا کر رہنے کا فیصلہ کیا۔ برکت علی کو غصہ تو بہت آیا پر لاچار تھا۔ اس نے قسم کھائی "مسلمانوں کو لا کر یہاں قتل عام نہ کرا دیا تو میرا نام برکت علی نہیں" سب جانے کے لئے راضی ہو گئے، پر رمضان راضی نہ ہوا۔ اس نے وہاں ہی مسجد میں رہنا ٹھیک سمجھا۔ اسے بھارتی بابا پہ بھروسا تھا۔ لوگوں نے بہت سمجھایا پر اس پر کچھ اثر نہ ہوا۔ سب چلے گئے۔ اکیلا رمضان مسجد میں جا بیٹھا۔

यह सब रातों रात हो गया. खड्गसिंह ने यह देखा तो वह बहुत बौखलाया. उसने मसजिद और मुसलमानों के घरों को ही तहस नहस करने की सोची. वह कुछ आदमियों को ले मसजिद की तरफ चला. यह टोली नारे लगाती चली. अचानक उन्हें मसजिद के छोटे से दरवाजे पर रमज़ान खड़ा मिला. रमज़ान ने कहा—"भाइयों ! अगर दोस्त के नाते आप आना चाहते हैं तो आइये. मैं ख़िदमत के लिये तय्यार हूँ. पर अगर दुशमन बन कर मसजिद में घुसना है तो आपको मेरी लाश पर से जाना होगा". लोगों ने नारा लगाया—"नोआखाली का बदला लेके रहेंगे". खड्गसिंह ने कहा—"चचा ! तुम बूढ़े हो. हमें तुमसे कुछ दुशमनी नहीं है. हमें अपना बदला लेना है. तुम हमारी राह छोड़ दो. तुम सीधी तरह राह न छोड़ोगे तो हमें सख्ती करनी पड़ेगी." रमज़ान ने फ़ख्र से कहा—"भइया ! तुमको बदला लेना है तो लोगों से लो. मसजिद ने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है ? मुझे जो कहना था कह चुका. तुम्हें भी जो करना हो करो." खड्गसिंह लाल हो गया. भारती बाबा यह सब देख रहे थे. वह पास की दीवार के पीछे थे. खड्गसिंह ने तलवार निकालते हुए कहा—"मुझे कोई दोष न देना. ईश्वर नहीं चाहता कि हम सीधी तौर से घुसें. हम अपना काम कर के रहेंगे." वह रमज़ान की तरफ बढ़ ही रहा था कि आवाज़ आई—"ठहरो खड्गसिंह ! तुम्हें इनसानियत दोष देगी. तवारीख़ तुम पर थूकेगी !" सब ने भारती बाबा को पीछे खड़े देखा.

भारती बाबा ने आते ही कहा—"रमज़ान ! तुम हट जाओ.

یہ سب راتوں رات ہوگیا. کھڑک سنگھ نے یہ دیکھا تو وہ بہت بوکھلایا. اس نے مسجد اور مسلمانوں کے گھروں کو ہی تحس نحس کرنے کی سوچی. وہ کچھ آدمیوں کو لے مسجد کی طرف چلا. یہ ٹولی نعرے لگاتی چلی. اچانک انھیں مسجد کے چھوٹے سے دروازے پر رمضان کھڑا ملا. رمضان نے کہا— "بھائیو! اگر دوست کے ناتے آپ آنا چاہتے ہیں تو آئیے. میں خدمت کے لئے تیار ہوں. پر اگر دشمن بن کر مسجد میں گھسنا ہے تو آپ کو میری لاش پر سے جانا ہوگا." لوگوں نے نعرہ لگایا— "نواکھالی کا بدلہ لے کر رہیں گے." کھڑک سنگھ نے کہا— "چچا! تم بوڑھے ہو. ہمیں تم سے کچھ دشمنی نہیں ہے. ہمیں اپنا بدلہ لینا ہے. تم ہماری راہ چھوڑ دو. تم سیدھی طرح راہ نہ چھوڑوگے تو ہمیں سختی کرنی پڑے گی." رمضان نے فخر سے کہا— "بھیا! تم کو بدلہ لینا ہے تو لوگوں سے لو. مسجد نے تمھارا کیا بگاڑا ہے؟ مجھے کہنا تھا وہ کہہ چکا. تمھیں بھی جو کرنا ہو کرو." کھڑک سنگھ لال ہوگیا. بھارتی بابا یہ سب دیکھ رہے تھے. وہ پاس کی دیوار کے پیچھے تھے. کھڑک سنگھ نے تلوار نکالتے ہوئے کہا— "مجھے کوئی دوش نہ دینا. ایشور نہیں چاہتا کہ ہم سیدھی طور سے گھسیں. ہم اپنا کام کر کے رہیں گے." وہ رمضان کی طرف بڑھ ہی رہا تھا کہ آواز آئی— "ٹھہرو کھڑک سنگھ! تمھیں انسانیت دوش دے گی. تاریخ تم پر تھوکے گی!" سب نے بھارتی بابا کو پیچھے کھڑے دیکھا.

بھارتی بابا نے آتے ہی کہا— "رمضان تم ہٹ جاؤ.

मुझे भगवान पर भरोसा है. मसजिद में भी भगवान है. उसके लिये मैं मरने को तय्यार हूँ. किसी को भीतर घुसना है तो मेरी लाश पर से जाना पड़ेगा." भारती बाबा को मसजिद के दरवाज़े पर खड़े देख खड्गसिंह को छोड़ सब एक एक कर लौट गए. खड्गसिंह की आंखों में आंसू आ गए. उसने आगे बढ़ भारती बाबा को प्रनाम किया और कहा—"बाबा ! मुझे माफ़ करो!" प्रेम से उसके सिर पर हाथ फेर कर भारती बाबा ने कहा—"भूल सबसे होती है, बेटा ! तू भगवान से ही माफ़ी माँग. अब इस बात को तू भूल जा. चल मेरे साथ भीतर चल. देख इसमें और अपने गुरुद्वारे में कुछ भी फ़रक़ है ? चल हम तीनों भजन करेंगे." तीनों भीतर चले गए.

कुछ ही देर में मसजिद में भारती बाबा का मधुर स्वर गूँज उठा—"भज मन राम रहीमा, भज मन कृष्न करीमा." गाँव वाले इसे सुन रहे थे. बाबा भारती के बाद रहमान और खड्गसिंह इसे दुहराते जाते थे.

مجھے بھگوان پر بھروسا ہے. مسجد میں بھی بھگوان ہے. اُس کے لیے میں مرنے کو تیار ہوں. کسی کو بھیتر گھسنا ہو تو میری لاش پر سے جانا پڑے گا." بھارتی بابا کو مسجد کے دروازے پر کھڑے دیکھ کھڑک سنگھ کو چھوڑ سب ایک ایک کر لوٹ گئے. کھڑک سنگھ کی آنکھوں میں آنسو آ گئے. اُس نے آگے بڑھ بھارتی بابا کو پرنام کیا اور کہا— "بابا! مجھے معاف کرو!" پریم سے اُس کے سر پر ہاتھ پھیر کر بھارتی بابا نے کہا— "بھول سب سے ہوتی ہے، بیٹا! تو بھگوان سے ہی معافی مانگ. اب اِس بات کو تو بھول جا. چل میرے ساتھ بھیتر چل. دیکھ اِس میں اور اپنے گرودوارے میں کچھ بھی فرق ہے؟ چل ہم تینوں بھجن کریں گے." تینوں بھیتر چلے گئے.

کچھ ہی دیر میں مسجد میں بھارتی بابا کا مدھر سُور گونج اُٹھا— "بھج من رام رحیم، بھج من کرشن کریم" گاؤں والے اِسے سن رہے تھے. بابا بھارتی کے بعد رمضان اور کھڑک سنگھ اِسے دُہراتے جاتے تھے.

हिन्दू मुसलिम ब्योहार

(भाई चन्द्रदत्त सेनानी)

'अगर हिन्दू धर्म को जिन्दा रहना है तो हिन्दू समाज की आज कल की जात पात और दायरबन्दी जरूर मिट जानी चाहिये'—गांधी जी, 'लीडर' १३–२–४७

'जब तक कि ऊंची जात के हिन्दुओं में नीची जात के हिन्दुओं को सामाजिक तौर से खरा नहीं लिया जाता, और उनके साथ इज्जत और ईमानदारी नहीं बरती जाती तब तक छोटी जात के हिन्दू अपने को बड़ी जात के हिन्दुओं से ठीक मुसलमानों की तरह अलग ही समझेंगे, और उनकी बड़ी बड़ी बातों के भुलावे में नहीं आवेंगे'—डा० अम्बेदकर, 'गांधी और कांग्रेस ने छोटी जातों के लिये क्या किया' नाम की किताब से

'सदियों से हिन्दू और मुसलमान दो क़ौमों की तरह रहे हैं. उनकी संस्कृति, धर्म और सामाजिक बर्ताव अलग अलग हैं. इसके अलावा हिन्दू समाज का ढांचा इस ढंग का है कि उसमें मुसलमानों के, अपना वजूद क़ायम रखते हुये, घुल मिल सकने की कोई गुंजाइश नहीं—इस लिये अच्छा ही है कि दोनों अलग अलग होकर अपने अपने हिस्से—हिन्दुस्तान और पाकिस्तान—की तरक़्क़ी अपनी अपनी समझ के मुताबिक़ करें'—मि० जिन्नाह, 'तक़रीरें'.

ہندو مسلم بیوہار

(بھائی چندردت سینانی)

"اگر ہندو دھرم کو زندہ رہنا ہو تو ہندو سماج کی آج کل کی جات پات اور دائرے بندی ضرور مٹ جانی چاہئے" گاندھی جی، 'لیڈر' ۱۳—۲—۴۷

"جب تک کہ اونچی جات کے ہندوؤں میں نیچی جات کے ہندوؤں کو سماجک طور سے کھرا نہیں لیا جاتا، اور اُن کے ساتھ عزت اور ایمانداری نہیں برتی جاتی تب تک چھوٹی جات کے ہندو اپنے کو بڑی جات کے ہندوؤں سے ٹھیک مسلمانوں کی طرح الگ ہی سمجھیں گے، اور اُن کی بڑی بڑی باتوں کے بھلاوے میں نہیں آویں گے"— ڈاکٹر امبیدکر، 'گاندھی اور کانگریس نے چھوٹی جاتوں کے لئے کیا کیا' نام کی کتاب سے

"صدیوں سے ہندو اور مسلمان دو قوموں کی طرح رہے ہیں۔ اُن کی سنسکرتی، دھرم اور سماجک برتاؤ الگ الگ ہیں۔ اس کے علاوہ ہندو سماج کا ڈھانچا اس ڈھنگ کا ہو کہ اُس میں مسلمانوں کے، اپنا وجود قایم رکھتے ہوئے گھُل مِل سکنے کی کوئی گنجائش نہیں— اس لئے اچھا ہی ہو کہ دونوں الگ الگ ہوکر اپنے اپنے حصے— ہندستان اور پاکستان— کی ترقی اپنی اپنی سمجھ کے مطابق کریں"— مسٹر جناح، 'تقریریں'

'अगर ऊंची जात के हिन्दू समाजी मामलों में तानाशाही बरतना छोड़ दें और सब के साथ प्रेम बराबरी और आदर का व्योहार करें तो कोई वजह नहीं कि मुसलमान अपनी पाकिस्तान की मांग को क्यों न वापिस लेलें'—'डान' १८ मार्च १९४४, "मार्च, आफ टाइम्स" लेख से.

यह ठीक है कि हिन्दू मुसलिम झगड़े के पीछे ब्रटिश साम्राजशाही का हाथ रहा है. पर इसमें भी शक नहीं. इसकी जड़ हम लोगों के आपसी व्योहार में मौजूद है.

आज कल के हिन्दू मिली जुली नसल से हैं. इस लिये उनका यह डर कि समाजी मेल मिलाप का दरवाजा सब के लिये खोलते ही वह "वर्ण संकर" यानी खिचड़ी नसल के हो जायंगे, बे बुनियाद है न ऐसा करने से उनके धर्म जाने का डर है. हिन्दुस्तान के मुसलमान ज्यादातर हिन्दू नसल से ही हैं. इसलिये उनका अपना लगाव बिदेस के मुसलमानों के साथ लगाना और अपने को हिन्दुओं से अलग करने की खींचतान करना 'तमाचे का जवाब तलवार' से देने की गलती के बराबर है.

समाजी आजादी और समाजी एकता के बिना हिन्दुओं और मुसलमानों का आपसी जीवन जहरीला ही बना रहेगा. इतना ही नहीं, बल्कि इसके बगैर सारा हिन्दू समाज टुकड़े टुकड़े रहेगा और उसमें समय समय पर फूट का ज्वारभाटा आता रहेगा जो उसे और भी तोड़ फोड़ कर बरबाद करता रहेगा.

हिन्दुओं की छुआ छूत और समाजी कट्टरता काफ़ी तकलीफ़-देह है. हिन्दू समाज खुले आम मुसलमानों के साथ जो अनादर

'اگر اونچی جات کے ہندو سماجی معاملوں میں تاناشاہی برتنا چھوڑ دیں اور سب کے ساتھ پریم برابری اور آدر کا بیوہار کریں تو کوئی وجہ نہیں کہ مسلمان اپنی پاکستان کی مانگ کو کیوں نہ واپس لے لیں'۔ 'ڈان' ۱۸ مارچ ۱۹۴۴، "مارچ، آف ٹائمس" لیکھ سے۔

یہ ٹھیک ہے کہ ہندو مسلم جھگڑے کے پیچھے برٹش سامراج شاہی کا ہاتھ رہا ہے، پر اس میں بھی شک نہیں، اس کی جڑ ہم لوگوں کے آپسی بیوہار میں موجود ہے۔

آج کل کے ہندو ملی جلی نسل سے ہیں۔ اس لئے اُن کا یہ ڈر کہ سماجی میل ملاپ کا دروازہ سب کے لئے کھولتے ہی وہ "ورن سنکر" یعنی کھچڑی نسل کے ہو جائیں گے، بے بنیاد ہے نہ ایسا کرنے سے اُن کے دھرم جانے کا ڈر ٹھیک ہے۔ ہندستان کے مسلمان زیادہ تر ہندو نسل سے ہی ہیں۔ اس لئے اُن کا اپنا لگاؤ بدیس کے مسلمانوں کے ساتھ لگانا اور اپنے کو ہندوؤں سے الگ کرنے کی کھینچ تان کرنا 'طمانچے کا جواب تلوار' سے دینے کی غلطی کے برابر ہے۔

سماجی آزادی اور سماجی ایکتا کے بنا ہندوؤں اور مسلمانوں کا آپسی جیون زہریلا ہی بنا رہے گا۔ اتنا ہی نہیں، بلکہ اس کے بغیر سارا ہندو سماج ٹکڑے ٹکڑے رہے گا اور اُس میں سمے سمے پر پھوٹ کا جوار بھاٹا آتا رہے گا اور اُسے اور بھی توڑ پھوڑ کر برباد کرتا رہے گا۔

ہندوؤں کی چھوا چھوت اور سماجی کٹرتا کافی تکلیف دہ ہے۔ ہندو سماج کھلے عام مسلمانوں کے ساتھ جو انادر

और बाइकाट का सलूक करता रहा है वह भी मुसलमानों की नाराज़गी का एक ख़ास कारन है.

मुसलमानों की मज़हबी कट्टरता कभी कभी ज़ुलमी हो जाती है. हिन्दुओं को ज़बरदस्ती मुसलमान बनाने का जो वहशियाना रवैया वह कभी कभी अख़्तियार करते हैं उससे हिन्दू उनसे चिढ़ते और अलग रहते हैं. आजकल के ज़माने में ज़बरदस्ती किसी का धर्म बदलना अपने मज़हब और तहज़ीब की हँसी उड़वाना और अपनी तरक़्क़ी पर कुल्हाड़ी मारना है. हिन्दुओं के धार्मिक अन्ध-विश्वासों — संतान, सम्पत्ति, शादी और सफलता के लिये देवी देवताओं की पूजा, रोग, ग़रीबी और मौत से बचने के लिये जादू, टोना, झाड़फूँक, या भूत प्रेतों की ख़ुशामद, आफ़त से बचने के लिये यज्ञ और पाठ कराना, पाप धोने के लिये गंगा में नहाना और पितरों को सुख भेजने के लिये दान, भोज और पूजा, भविष्य अच्छा बनाने के लिये जोतिषी के यहां साइत बिचरवाना, हाथ दिखाना या कुँडली-जचवाने दौड़ दौड़ कर पहुँचना, जानवरों या कीड़े मकोड़ों को तो बचाने में लगना पर आदमियों के लिये हिंसा या नफ़रत अपने दिलों में पालना और उनकी जान लेने तक से न झिझकना, सारी उम्र विषय भोग में ख़र्च करने में बहुत हानि न देखना पर आप-पसन्द विवाह से 'धर्म' 'मर्यादा' और 'परलोक' को नष्ट समझना, थोड़ी सी उम्र के अन्दर तीन तीन शादियां करते शरम न आना पर जवान बेवा के विवाह के ख़्याल पर गाज गिरने का डर महसूस करना, जैसे नासमझी के कामों ने उन्हें निकम्मा और बुज़दिल बना रखा है.

(३८३)

اور بائی کاٹ کا سلوک کرتا رہا ہے وہ بھی مسلمانوں کی ناراضگی کا ایک خاص کارن ہے۔

مسلمانوں کی مذہبی کٹرتا کبھی کبھی ظلمی ہو جاتی ہے۔ ہندوؤں کو زبردستی مسلمان بنانے کا جو وحشیانہ رویہ وہ کبھی کبھی اختیار کرتے ہیں اس سے ہندو ان سے چڑھتے اور الگ رہتے ہیں۔ آج کل کے زمانے میں زبردستی کسی کا دھرم بدلنا اپنے مذہب اور تہذیب کی ہنسی اڑوانا اور اپنی ترقی پر کلہاڑی مارنا ہے۔ ہندوؤں کے دھارمک اندھ وشواسوں ـ سنتان، سمپتی، شادی، اور سپھلتا کے لئے دیوی دیوتاؤں کی پوجا، روگ، غریبی اور موت سے بچنے کے لئے جادو، ٹونا، جھاڑ پھونک، یا بھوت پریتوں کی خوشامد، آفت سے بچنے کے لئے یگیہ اور پاٹھ کرانا، پاپ دھونے کے لئے گنگا میں نہانا اور پتروں کو سکھ بھیجنے کے لئے دان، بھوج اور پوجا، بھوشیہ اچھا بنانے کے لئے جوتشی کے یہاں ساعت بچروانا، ہاتھ دکھانا یا کنڈلی جچوانے دوڑ دوڑ کر پہنچنا، جانوروں یا کیڑے مکوڑوں کو تو بچانے میں لگنا پر آدمیوں کے لئے ہنسا یا نفرت اپنے دلوں میں پالنا اور ان کی جان تک لینے سے نہ جھجکنا، ساری عمر وشے بھوگ میں خرچ کرنے میں بہت ہانی نہ دیکھنا پر آپ پسند وواہ سے 'دھرم' 'مریادا' اور 'پرلوک' کو نشٹ سمجھنا، تھوڑی سی عمر کے اندر تین تین شادیاں کرتے شرم نہ آنا پر جوان بیوہ کے وواہ کے خیال پر گاج گرنے کا ڈر محسوس کرنا جیسے ناسمجھی کے کاموں نے انھیں نکما اور بزدل بنا رکھا ہے۔

मुसलमानों की समाजी कुरीतियों जैसे—औरतों का चहार दीवारी में बन्द रखना, बहुत नजदीकी रिश्ते दारों के लड़के लड़कियों में शादी, जबरिया विवाह वगैरा ने उन्हें पिछड़ा हुआ और कुन्द जेहन बना रखा है.

मुसलमानों से सच्चा मेल जोल करने के लिये हिन्दुओं को अपने अन्दर दूसरे की इज्जत, ईमानदारी और दिल से रवादारी को पैदा करना और समाजी मेल और खाने पीने के दायरे को चौड़ा करना जरूरी है.

हिन्दुओं से मेल जोल बढ़ाने के लिये मुसलमानों को अपने अन्दर सदाचार, ऐतमाद, मेहनत, सफ़ाई और किफायत शारी की आदतों को बढ़ाना है.

हिन्दुओं का एक आदर्श "इन्द्रिय दमन" यानी नफ्स पर क़ाबू पाना है. मुसलमानों का एक आदर्श "इमानदारी" है. लेकिन यह दोनों ही आदर्श जिन्दगी को पूरा बनाने के लिये जरूरी हैं.

हिन्दुओं की कमजोरी, ईमानदारी की कमी और लालच है. मुसलमानों की कमज़ोरी शहवत यानी वासना पर क़ाबू न होना और सदाचार की कमी है. दोनों ही कमज़ोरियां एक हद के बाहर बहुत खतरनाक हैं.

मुसलमानों की इस कमजोरी से झुंझलाकर हिन्दुओं ने मुसलमानों से दिलफाड़ नफ़रत की है. और अपनी ईमानदारी की कमी से मुसलमानों को चूसा और गरीब बनाया है. हिन्दुओं की पैसा परस्ती से भड़क कर मुसलमानों ने हिन्दुओं की दौलत

مسلمانوں کی سماجی کوریتیوں جیسے — عورتوں کو چار دیواری میں بند رکھنا، بہت نزدیکی رشتے داروں کے لڑکے لڑکیوں میں شادی، جبریہ وواہ وغیرہ نے انھیں پچھڑا ہوا اور کند ذہن بنا رکھا ہے.

مسلمانوں سے سچا میل جول کرنے کے لئے ہندوؤں کو اپنے اندر دوسروں کی عزت، ایمان داری اور دل سے رواداری کو پیدا کرنا اور سماجی میل اور کھانے پینے کے دائرے کو چوڑا کرنا ضروری ہے.

ہندوؤں سے میل جول بڑھانے کے لئے مسلمانوں کو اپنے اندر سداچار، اعتماد، محنت، صفائی اور کفایت شعاری کی عادتوں کو بڑھانا ہے.

ہندوؤں کا ایک آدرش "اندریہ دمن" یعنی نفس پر قابو پانا ہے. مسلمانوں کا ایک آدرش "ایمان داری" ہے. لیکن یہ دونوں ہی آدرش زندگی کو پورا بنانے کے لئے ضروری ہیں.

ہندوؤں کی کمزوری، ایمانداری کی کمی اور لالچ ہے. مسلمانوں کی کمزوری شہوت یعنی واسنا پر قابو نہ ہونا اور سداچار کی کمی ہے. دونوں ہی کمزوریاں ایک حد کے باہر بہت خطرناک ہیں.

مسلمانوں کی اس کمزوری سے جھنجھلاکر ہندوؤں نے مسلمانوں سے دل پھاڑ نفرت کی ہے، اور اپنی ایمان داری کی کمی سے مسلمانوں کو چوسا اور غریب بنایا ہے. ہندوؤں کی پیسہ پرستی سے بھڑک کر مسلمانوں نے ہندوؤں کی دولت

पर हमले किये हैं और 'अपनी शहवत पर क़ाबू रख सकने की कमी' से उन्होंने हिन्दुओं की आबरू पर हमले किये हैं. यह दूसरी बात है कि अब मुसलमानों में भी कुछ पैसा परस्त हो चले हैं और हिन्दुओं में भी शहवत या वासना के ग़ुलाम पाए जाते हैं.

हिन्दुओं की नफ़रत ने दिल जलाए हैं. मुसलमानों की हिंसा ने ग़ज़ब ढाए हैं. हिन्दुओं की नफ़रत ने मुसलमानों में हिंसा उभारी है. मुसलमानों की हिंसा ने हिन्दुओं में सुलगी नफ़रत भड़काई है.

हिन्दुओं ने उर्दू की बायकाट की आवाज़ उठा कर और मुसलमानों ने हिन्दी के बायकाट की आवाज़ उठाकर एक दूसरे के ख़िलाफ़ नफ़रत और हिंसा की धार पैनी की है.

(३८७)

नतीजा यह हुआ है कि दोनों ने मूर्ख बटेर की तरह खुलेआम एक दूसरे का अपमान और नुक़सान करके अपने चारों तरफ़ दुनिया के तमाशबीनों को इकट्ठा कर लिया है और अपने अपने दाम चढ़वा कर ग़ुलामी के पिंजरे एक से दो कर लिये हैं.

हिन्दुओं का आपस में मुसलमानों के लिये अपमान का शब्द इस्तेमाल करना या उनका मख़ौल उड़ाना उनकी अपनी संस्कृति पर एक बड़ा लांछन है. मुसलमानों का हिन्दू औरतों के साथ ज़ोर ज़बरदस्ती करना या उनको देख लफ़ंगई करना इंसानी तहज़ीब पर एक बड़ा धब्बा है.

हिन्दुओं का कर्त्तव्य है कि वह अपने अन्दर से नफ़रत निकालें. मुसलमानों का फ़र्ज़ है कि वह अपने अन्दर से हिंसा निकालें. दोनों को आज़ादी और सुख की तरफ़ ले चलने का यही एक रास्ता है. आजकल इसके ख़िलाफ़ दोनों एक दूसरे की बुराइयों

پر حملے کئے ہیں اور اپنی شہوت پر قابو رکھ سکنے کی کمی' سے اُنھوں نے ہندوؤں کی آبرو پر حملے کئے ہیں. یہ دوسری بات ہے کہ اب مسلمانوں میں بھی کچھ پیسہ پرستی ہو چلی ہے اور ہندوؤں میں بھی شہوت یا واسنا کے غلام پائے جاتے ہیں.

ہندوؤں کی نفرت نے دل جلائے ہیں. مسلمانوں کی ہنسا نے غضب ڈھائے ہیں. ہندوؤں کی نفرت نے مسلمانوں کی ہنسا اُبھاری ہے. مسلمانوں کی ہنسا نے ہندوؤں میں سُلگی نفرت بھڑکائی ہے.

ہندوؤں نے اُردو کی بائیکاٹ کی آواز اُٹھاکر اور مسلمانوں نے ہندی کے بائیکاٹ کی آواز اُٹھاکر ایک دوسرے کے خلاف نفرت اور ہنسا کی دھار پینی کی ہے. (۳۸۷)

نتیجہ یہ ہوا ہے کہ دونوں نے مورکھ بٹیر کی طرح کھلے عام ایک دوسرے کا اپمان اور نقصان کرکے اپنے چاروں طرف دُنیا کے تماش بینوں کو اکٹھا کر لیا ہے اور اپنے اپنے دام چڑھواکر غلامی کے پنجرے ایک سے دو کر لئے ہیں.

ہندوؤں کا آپس میں مسلمانوں کے لئے اپمان کا شبد استعمال کرنا یا اُن کا مخول اُڑانا اُن کا اپنی سنسکرتی پر ایک بڑا لانچھن ہے. مسلمانوں کا ہندو عورتوں کے ساتھ زور زبردستی کرنا یا اُن کو دیکھ لفنگائی کرنا انسانی تہذیب پر ایک بڑا دھبّہ ہے.

ہندوؤں کا کرتویہ ہے کہ وہ اپنے اندر سے نفرت نکالیں. مسلمانوں کا فرض ہے کہ وہ اپنے اندر سے ہنسا نکالیں. دونوں کو آزادی اور سُکھ کی طرف لے چلنے کا یہی ایک

برائیوں

की नक़ल करने और उनमें बढ़ा चढ़ी करने की कोशिश कर रहे हैं. यह बरबादी का रास्ता है.

बड़ी तादाद होने के नाते हिन्दुओं की एक और ज़िम्मेदारी यह है कि वह अपने ब्योहार, ख़्याल और काम से यह साबित कर दें (ख़ाली ज़बान से नहीं) कि उनके ज़रिये मुसलमानों के साथ मज़हबी, कलचरी, भाषाई, या माली ज़बरदस्ती या बेईमानी नहीं होती, और न उनके साथ नफ़रत ही दिखाई जाती है. मुसलमानों को चाहिये कि वह नेकी, पाक ज़िन्दगी और मीठे ब्योहार से हिन्दुओं के अन्दर से नफ़रत और शक को निकाल फेंकें. इसी तरह "हिन्दू धर्म का बड़प्पन" और "इसलाम की अज़मत" दोनों सच्ची साबित हो सकती हैं.

इतना हो जाने पर कोई वजह नहीं कि मुसलमान हिन्दुओं से बिगड़े रहें या हिन्दू मुसलमानों से रूठे रहें.

हिन्दुस्तान की फूट की जड़ नफ़रत है जिसकी खाद समाजी तंग नज़री है जो दूसरी तरफ़ धर्म जाने के डर और बेईमानी को भी बढ़ावा देती है. मुसलमानों में आपसी बरताव और ईमानदारी की ख़ूबियां हैं. हिन्दुओं में इख़लाक़ी और दिमाग़ी विकास की ख़ूबियां हैं. समझदार लोगों का फ़र्ज़ है कि वह मुसलमानों में इख़लाक़ी पहलू और हिन्दुओं में ब्योहारी पहलू बढ़ावें.

यही और सिर्फ़ यही एक इलाज है जिससे हिन्दू मुसलिम समाजी एकता का ज़बरदस्त इनक़लाब मिनटों में उनके सारे पुराने कलंकों पर सफ़ेदी फेर सकता है—हां थोड़ी सी दिमाग़ी तकलीफ़ के बाद.

کی نقل کرنے اور اُن میں بڑھا چڑھی کرنے کی کوشش کر رہے ہیں۔ یہ بربادی کا راستہ ہے۔

بڑی تعداد ہونے کے ناتے ہندوؤں کی ایک اور ذمہ داری یہ ہے کہ وہ اپنے بیوہار، خیال اور کام سے یہ ثابت کر دیں (خالی زبان سے نہیں) کہ اُن کے ذریعے مسلمانوں کے ساتھ مذہبی، کلچری، بھاشائی، یا مالی زبردستی یا بے ایمانی نہیں ہوتی، اور نہ اُن کے ساتھ نفرت ہی دکھائی جاتی ہے۔ مسلمانوں کو چاہیے کہ وہ نیکی، پاک زندگی اور میٹھے بیوہار سے ہندوؤں کے اندر سے نفرت اور شک کو نکال پھینکیں۔ اسی طرح "ہندو دھرم کا بڑپن" اور "اسلام کی عظمت" دونوں سچی ثابت ہو سکتی ہیں۔

اتنا ہو جانے پر کوئی وجہ نہیں کہ مسلمان ہندوؤں سے بگڑے رہیں یا ہندو مسلمانوں سے روٹھے رہیں۔

ہندستان کی پھوٹ کی جڑ نفرت ہے جس کی کھاد سماجی تنگ نظری ہے جو دوسری طرف دھرم جانے کے ڈر اور بے ایمانی کو بھی بڑھاوا دیتی ہے۔ مسلمانوں میں آپسی برتاؤ اور ایمانداری کی خوبیاں ہیں۔ ہندوؤں میں اخلاقی اور دماغی وکاس کی خوبیاں ہیں۔ سمجھدار لوگوں کا فرض ہے کہ وہ مسلمانوں میں اخلاقی پہلو اور ہندوؤں میں بیوہاری پہلو بڑھاویں۔

یہی اور صرف یہی ایک علاج ہے جس سے ہندو مسلم سماجی ایکتا کا زبردست انقلاب منٹوں میں اُن کے سارے پرانے کلنکوں پر سفیدی پھیر سکتا ہے — ہاں تھوڑی سی دماغی تکلیف کے بعد۔

छोटी जात के हिन्दुओं के साथ बड़ी जात वाले हिन्दुओं का ब्योहार कुछ कम बुरा नहीं है. उनके साथ ईमानदारी और सम्मान की जरूरत है.

समाजी फूट की परेशानियों के अलावा बेईमानी करने की आजादी होने की वजह से मेहनतियों और सरमायेदारों के बीच की कशमकश एक नई उलझन पैदा कर रही है.

मेहनती इंसान क़ाबिले इज़्ज़त है चाहे वह हिन्दू हो या मुसलमान. मेहनती इंसान की हिफ़ाज़त और उसकी आबरू की लड़ाई ही स्वराज की सच्ची लड़ाई है.

जिस स्वराज में बेईमानों और बदचलनों का ज़ोर होगा, और जिस समाज में बेईमानी और छीन झपट का आज कल का ढांचा बना रहेगा, वह स्वराज या वह समाज फ़िरक़ेवाराना सवाल को हल नहीं कर सकेगा, क्योंकि उसमें मेहनत करने वालों, किसानों मजदूरों का चूसा जाना बराबर होता रहेगा.

वही हकूमत जिसमें बड़ी बड़ी पूँजी, जमीन, मकान, मशीन वग़ैरा का ठीक ठीक बटवारा होगा और वह समाज जिसमें ईमानदारी को सब से ऊँची जगह दी जायगी, ग़रीबी, बेकारी, और तंगनज़री को दूर कर सकते हैं. उन्हीं में सब की जरूरतों के पूरा होने और काम मिलने की गारन्टी दी जा सकती है. ऐसी हकूमत के चलाने वाले साफ़ दिल और ईमानदार इनसान होंगे, गुलाम बनाने वाले, बेईमान या तास्सुबी हिन्दू या मुसलमान नहीं.

چھوٹی جات کے ہندوؤں کے ساتھ بڑی جات والے ہندوؤں کا بیوہار کچھ کم برا نہیں ہے۔ ان کے ساتھ ایمان داری اور سمّان کی ضرورت ہے۔

سماجی پھوٹ کی پریشانیوں کے علاوہ بے ایمانی کرنے کی آزادی ہونے کی وجہ سے محنتیوں اور سرمایہ داروں کے بیچ کی کشمکش ایک نئی الجھن پیدا کر رہی ہے۔

محنتی انسان قابلِ عزت ہے چاہے وہ ہندو ہو یا مسلمان۔ محنتی انسان کی حفاظت اور اس کی آبرو کی لڑائی ہی سوراج کی سچی لڑائی ہے۔

جس سوراج میں بے ایمانوں اور بدچلنوں کا زور ہوگا، اور جس سماج میں بے ایمانی اور چھین جھپٹ کا آج کل کا ڈھانچا بنا رہے گا، وہ سوراج یا وہ سماج فرقے وارانہ سوال کو حل نہیں کر سکے گا، کیونکہ اس میں محنت کرنے والوں، کسانوں مزدوروں کا چوسا جانا برابر ہوتا رہے گا۔

وہی حکومت جس میں بڑی بڑی پونجی، زمین، مکان، مشین وغیرہ کا ٹھیک ٹھیک بٹوارہ ہوگا اور وہ سماج جس میں ایمان داری کو سب سے اونچی جگہ دی جائے گی، غریبی، بے کاری، اور تنگ نظری کو دور کر سکتے ہیں۔ انہیں میں سب کی ضرورتوں کے پورا ہونے اور کام ملنے کی گارنٹی دی جا سکتی ہے۔ ایسی حکومت کے چلانے والے صاف دل اور ایمان دار انسان ہوں گے، غلام بنانے والے، بے ایمان یا تعصبی ہندو یا مسلمان نہیں۔

आज की दुनिया

(क़ौमी ख़िदमतगार)

❀ बाबू-राज या फ़िरक़ेवाराना राज दोनों का नतीजा घरेलू जंग ❀

❀ हिन्दुस्तान को माली मुसीबत और उसका हल ❀

❀ बाबू-राज के गुल पहले पाकिस्तान में खिले ❀

❀ चीन में अमरीका का फ़ौजी दख़ल ❀

❀ चांगकाई शेक की मौत का सर पर मँडलाना ❀

❀ डाकू अमरीका तीसरी बड़ी जंग के लिये तय्यार ❀

हमारे मुल्क में बाबू-राज—जर्मनी और इटली के राज को अंगरेज़ी में फ़ासिज़्म कहा जाता था. हमारे मुल्क की बोली में हमें उसका तरजुमा मालूम होता है बाबू-राज. पाकिस्तान में और हिन्दुस्तान में जो नए राज इस वक़्त क़ायम हैं वह जनता के राज या जन-राज नहीं हैं. वह बाबू-राज हैं यानी उन बाबुओं के राज जो अपने को जनता से चुनवा लेना जानते हैं. इस मुल्क में सच्चा जन राज क़ायम होने में अभी कुछ दिन और लगेंगे.

इन्हीं हिन्दू और मुसलिम बाबुओं में से कुछ ऐसे भी हैं जो हिन्दुओं और मुसलमानों को लड़ा कर या पाकिस्तान और हिन्दुस्तान को लड़ा कर घरेलू जंग खड़ी कर देना चाहते हैं. लीग या काँगरेस कोई इस तरह के लोगों से बिल्कुल ख़ाली नहीं हैं यह लोग अपने पीछे चलने वाले मुसलमानों और हिन्दुओं से तो यही कहते हैं कि इस लड़ाई में उनकी पार्टी की जीत होगी, पर

آج کی دُنیا

(قومی خدمت گار)

❀ بابو راج یا فرقے وارانہ راج دونوں کا نتیجہ گھریلو جنگ ❀

❀ ہندستان کی مالی مصیبت اور اُس کا حل ❀

❀ بابو راج کے گُل پہلے پاکستان میں کھِلے ❀

❀ چین میں امریکا کا فوجی دخل ❀

❀ چانگ کائی شیک کی موت کا سر پر منڈلانا ❀

❀ ڈاکو امریکا تیسری بڑی جنگ کے لیئے تیار ❀

ہمارے ملک میں بابو راج—جرمنی اور اٹلی کے راج کو انگریزی میں فاسزم کہا جاتا تھا. ہمارے ملک کی بولی میں ہمیں اُس کا ترجمہ معلوم ہوتا ہے بابو راج. پاکستان میں اور ہندستان میں جو نئے راج اِس وقت قایم ہیں وہ جنتا کے راج یا جن راج نہیں ہیں. وہ بابو راج ہیں یعنی اُن بابوؤں کے راج جو اپنے کو جنتا سے چنوا لینا جانتے ہیں. اِس ملک میں سچّا جن راج قایم ہونے میں ابھی کچھ دن اور لگیں گے.

اِنھیں ہندو اور مسلم بابوؤں میں سے کچھ ایسے بھی ہیں جو ہندوؤں اور مسلمانوں کو لڑا کر یا پاکستان اور ہندستان کو لڑا کر گھریلو جنگ کھڑی کر دینا چاہتے ہیں. لیگ یا کانگریس کوئی اِس طرح کے لوگوں سے بالکل خالی نہیں ہیں یہ لوگ اپنے پیچھے چلنے والے مسلمانوں اور ہندوؤں سے تو یہی کہتے ہیں کہ اِس لڑائی میں اُن کی پارٹی کی جیت ہوگی، پر

वह अन्दर से खूब जानते हैं कि भाई भाई की इस लड़ाई में आखीर में कभी किसी एक की जीत हो ही नहीं सकती. इस लड़ाई को उकसाने से उनका असली मतलब यह है कि ग़रीब और करोड़ों हिन्दू मुसलिम जनता का ध्यान उनके इस फ़िरक़ेवाराना या अधफ़िरक़ेवाराना राज और उसकी मुसीबतों से हट कर जन-उठान, जन-राज और उसके सुख चैन की तरफ़ न जाने पावे.

इसी तरह के लोगों की बदौलत इस मुल्क में आज नरक उतरा हुआ दिखाई दे रहा है. लाखों हिन्दुओं, मुसलमानों और सिक्खों ने अपने को मिटाकर हिन्दुस्तान के दो टुकड़े किये जाने को मंजूर कर लिया है. अब अगर, भगवान न करे, घरेलू जंग चल पड़ी तो लाखों ही बे गुनाह और क़ुरबान होंगे, और अँगरेज़ों की चलाई हुई फ़िरक़ापरस्ती और फ़िरक़ापरस्त बाबू हकूमतें और मज़बूती से जम जावेंगी.

इस तरह की घरेलू लड़ाई में किसी एक की जीत इसलिये भी नहीं हो सकती क्यों कि किसी एक की जीत हो जाने से सारे हिन्दुस्तान में फिर एक मिली जुली मज़बूत हकूमत क़ायम हो जावेगी जिसके सामने फिर ब्रिटिश साम्राजशाही की न चल सकेगी. इस लिये ब्रिटेन को ख़ुद यह फ़िक्र रहेगी कि किसी एक की जीत न हो पाए. इसके लिये ज़रूरत होगी तो ब्रिटेन बड़ी आसानी से, और ऐसे कि किसी को शिकायत भी न हो सके, साम्राजी फ़ौजों से भी पूरा पूरा काम लेगा. इन बाबुओं में से भी कुछ ऐसे हैं जो कम से कम अभी और कुछ दिनों एक हकूमत या अखंड हिन्दुस्तान नहीं चाहते. क्योंकि वह जानते हैं कि जहाँ आजकल

وہ اندر سے خوب جانتے ہیں کہ بھائی بھائی کی اس لڑائی میں آخر میں کبھی کسی ایک کی جیت ہو ہی نہیں سکتی۔ اس لڑائی کو اکسانے سے اُن کا اصلی مطلب یہ ہے کہ غریب اور کروڑوں ہندو مسلم جنتا کا دھیان اُن کے اس فرقےوارانہ یا ادھ فرقےوارانہ راج اور اُس کی مصیبتوں سے ہٹ کر جن اٹھان، جن راج اور اُس کے سکھ چین کی طرف نہ جانے پاوے۔

اسی طرح کے لوگوں کی بدولت اس ملک میں آج نرک اترا ہوا دکھائی دے رہا ہے۔ لاکھوں ہندوؤں، مسلمانوں اور سکھوں نے اپنے کو مٹا کر ہندستان کے دو ٹکڑے کیے جانے کو منظور کر لیا ہے۔ اب اگر، بھگوان نہ کرے، گھریلو جنگ چل پڑی تو لاکھوں ہی بے گناہ اور قربان ہوں گے، اور انگریزوں کی چلائی ہوئی فرقہ پرستی اور فرقہ پرست بابو حکومتیں اور مضبوطی سے جم جاویں گی۔

اس طرح کی گھریلو لڑائی میں کسی ایک کی جیت اس لئے بھی نہیں ہو سکتی کیونکہ کسی ایک کی جیت ہو جانے سے سارے ہندستان میں پھر ایک ملی جلی مضبوط حکومت قائم ہو جاوے گی جس کے سامنے پھر برٹش سامراج شاہی کی نہ چل سکے گی۔ اس لئے برٹین کو خود یہ فکر رہے گی کہ کسی ایک کی جیت نہ ہو پائے۔ اس کے لئے ضرورت ہوگی تو برٹین بڑی آسانی سے، اور ایسے کہ کسی کو شکایت بھی نہ ہو سکے، سامراجی فوجوں سے بھی پورا پورا کام لے گا۔ ان بابوؤں میں سے بھی کچھ ایسے ہیں جو کم سے کم ابھی اور کچھ دنوں ایک حکومت یا اکھنڈ ہندستان نہیں چاہتے۔ کیونکہ وہ جانتے ہیں کہ جہاں آج کل

के साँचे का एक अखंड राज क़ायम हुआ वहाँ तुरन्त ही चीन की तरह ग़रीबों, किसानों और मज़दूरों का जगह जगह उठान शुरू हो जावेगा. इसीलिये लीग बटवारा चाहती थी और इसीलिये कांग्रेस को उसे "मजबूर होकर मानना पड़ा".

सारे हिंदुस्तान भर में भूक, नंग और बीमारियों की जो ज़बरदस्त मुसीबत इस वक़्त करोड़ों पर छाई हुई है, जो पहले कभी देखने या सुनने में नहीं आई थी, उसकी तरफ़ से लोगों का ध्यान बटा देने के लिये यह घरेलू जंग इन बाबुओं और उनके चालाक अंग्रेज़ साथियों के हाथों में बहुत अच्छा हथियार मिल गया है. लोगों की यह मुसीबतें बटवारे से और बढ़ गई हैं. आजकल का बाबू-राज उन्हें हल नहीं कर सकता. इसके लिये हमें अपना सारा माली, तिजारती और कारबारी ढांचा ही बदलना पड़ेगा. मुल्क के कारबार को और मुल्क में दौलत पैदा करने के ज़रियों को उन करोड़पतियों और अरबपतियों के हाथों से छीन लेना पड़ेगा जो इस बाबू-राज क़ायम होने के भी पहले से अंग्रेज़ और अमरीकी पूँजीपतियों के साथ समझौते करके इस मुल्क को बेच रहे हैं और जनता की ग़रीबी की जड़ों को और भी मज़बूत कर रहे हैं. दोनों में से कोई बाबू-राज इसके लिये तय्यार नहीं है. इनमें और उन पूँजीपतियों में खुली साज़बाज़ है.

(५६)

मेल से ही अखंडता फिर हो सकती है—

मुसलिम जनता पर बटवारे की माँग का इलज़ाम लगाना ग़लत है. उनकी सी हालत में हिंदू भी ऐसा ही करते. पंजाब

کے سانچے کا ایک اکھنڈ راج قایم ہوا وہاں ترنت ہی چین کی طرح غریبوں، کسانوں اور مزدوروں کا جگہ جگہ اٹھان شروع ہو جاوے گا. اسی لئے لیگ بٹوارہ چاہتی تھی اور اسی لئے کانگریس کو اسے "مجبور ہوکر ماننا پڑا".

سارے ہندستان بھر میں بھوک، ننگ اور بیماریوں کی جو زبردست مصیبت اس وقت کروڑوں پر چھائی ہوئی ہے، جو پہلے کبھی دیکھنے یا سننے میں نہیں آئی تھی، اس کی طرف سے لوگوں کا دھیان بٹا دینے کے لئے یہ گھریلو جنگ ان بابوؤں اور ان کے چالاک انگریز ساتھیوں کے ہاتھوں میں بہت اچھا ہتھیار مل گیا ہے. لوگوں کی یہ مصیبتیں بٹوارے سے اور بڑھ گئی ہیں. آج کل کا بابو راج انھیں حل نہیں کر سکتا. اس کے لئے ہمیں اپنا سارا مالی، تجارتی اور کاروباری ڈھانچا ہی بدلنا پڑے گا. ملک کے کاروبار کو اور ملک میں دولت پیدا کرنے کے ذریعے کو ان کروڑپتیوں اور ارب پتیوں کے ہاتھوں سے چھین لینا پڑے گا جو اس بابو راج قایم ہونے کے بھی پہلے سے انگریز اور امریکی پونجی پتیوں کے ساتھ سمجھوتے کرکے اس ملک کو بیچ رہے ہیں اور جنتا کی غریبی کی جڑوں کو اور بھی مضبوط کر رہے ہیں. دونوں میں سے کوئی بابو راج اس کے لئے تیار نہیں ہے. ان میں اور ان پونجی پتیوں میں کھلی سازباز ہے.

(۵۶)

میل سے ہی اکھنڈتا پھر ہو سکتی ہے—

مسلم جنتا پر بٹوارے کی مانگ کا الزام لگانا غلط ہے. ان کی سی حالت میں ہندو بھی ایسا ہی کرتے. پنجاب

और बंगाल दोनों में हिंदुओं ने यही किया भी. मुसलिम बाबू-राज के बहकाए और असर में नादान मुसलमानों ने पाकिस्तान की मांग की और हिंदू या कांग्रेसी बाबू-राज के बहकाए और असर में भोले हिंदुओं और सिक्खों ने बंगाल और पंजाब में अपने अपने सूबों के बटवारे पर ज़िद की. दोनों में से कोई यह न देख पाया कि असली रोग बाबू-राज और फ़िरक़ेवाराना राज में है, फिर चाहे वह हिन्दुओं का हो चाहे मुसलमानों का. इन्हें मिटाए बिना जनता के दुख दूर नहीं हो सकते.

लोग धीरे धीरे इस कड़वी सचाई को समझते जा रहे हैं और तजरबे से समझेंगे. किसी के यह कह देने से कि हमारा राज फ़िरक़ेवाराना नहीं राष्ट्रीय है, धोके में नहीं आना चाहिये. कसौटी यह है कि मुल्क की दौलत और दौलत पैदा करने के साधन जनता के हाथों में हैं या इस फ़िरक़े या उस फ़िरक़े के कुछ अमीरों के हाथों में. दुनिया के दुख दूर होने के लिये सब पैदावार के साधनों और माल के बटवार के साधनों पर राष्ट्र का यानी जनता का क़ब्ज़ा होना चाहिये. मुल्क की दौलत उस जनता के हाथों में होनी चाहिये जो अपना पसीना बहा कर उसे ज़मीन में से पैदा करती है या मेहनत मज़दूरी से उसे बढ़ाती है. यही सच्ची राष्ट्रीय हकूमत या क़ौमी हकूमत की कसौटी है.

(३६०)

हिन्दुस्तान और पाकिस्तान दोनों में यह हो जावे तो दोनों फिर तुरन्त मिल जावें क्योंकि इस तरह के इन्तज़ाम में मिल जुल कर काम करने का मैदान जितना बड़ा होगा उतना ही हर चीज़ सस्ती होगी, अच्छी होगी और उतना ही अच्छा चीज़ों का बटवारा

اور بنگال دونوں میں ہندوؤں نے یہی کیا بھی. مسلم بابو راج کے بہکائے اور اثر میں نادان مسلمانوں نے پاکستان کی مانگ کی اور ہندو یا کانگریسی بابو راج کے بہکائے اور اثر میں بھولے ہندوؤں اور سکھوں نے بنگال اور پنجاب میں اپنے اپنے صوبوں کے بٹوارے پر ضد کی. دونوں میں سے کوئی یہ نہ دیکھ پایا کہ اصلی روگ بابو راج اور فرقے وارانہ راج میں ہے، پھر چاہے وہ ہندوؤں کا ہو چاہے مسلمانوں کا. انھیں مٹائے بنا جنتا کے دُکھ دُور نہیں ہو سکتے.

لوگ دھیرے دھیرے اِس کڑوی سچائی کو سمجھتے جا رہے ہیں اور تجربے سے سمجھیں گے. کسی کے یہ کہہ دینے سے کہ ہمارا راج فرقے وارانہ نہیں راشٹریہ ہے، دھوکے میں نہیں آنا چاہئے. کسوٹی یہ ہے کہ ملک کی دولت اور دولت پیدا کرنے کے سادھن جنتا کے ہاتھوں میں ہیں یا اِس فرقے یا اُس فرقے کے کچھ امیروں کے ہاتھوں میں. دُنیا کے دُکھ دُور ہونے کے لئے سب پیداوار کے سادھنوں مال کے بٹوارے کے سادھنوں پر راشٹر کا یعنی جنتا کا قبضہ ہونا چاہئے. ملک کی دولت اُس جنتا کے ہاتھوں میں ہونی چاہئے جو اپنا پسینہ بہا کر اُسے زمین میں سے پیدا کرتی ہے یا محنت مزدوری سے اُسے بڑھاتی ہے. یہی سچی راشٹریہ حکومت یا قومی حکومت کی کسوٹی ہے.

ہندستان اور پاکستان دونوں میں یہ ہو جاوے تو دونوں پھر تُرنت مل جاویں کیونکہ اِس طرح کے انتظام میں مِل جُل کر کام کرنے کا میدان جتنا بڑھا ہوگا اُتنا ہی ہر چیز سستی ہوگی اچھی ہوگی اور اُتنا ہی اچھا چیزوں کا بٹوارہ

होगा. कारबारी कामों में इस तरह का मेल मिलाप बिना राजकाजी मेल मिलाप के ठीक तरह नहीं चल सकता, और जहाँ कारबार और राजकाज में मेल मिलाप हुआ कि फिर फ़ौजी मेल मिलाप भी नहीं रुक सकता क्यों कि फिर जनता की धन दौलत और उनके साधनों को बिदेसी, साम्राजी लुटेरों से बचाने के लिये मिलना जरूरी हो जाता है. थोड़े से बड़े लोगों के हाथ में दौलत इसके ठीक उलटे नतीजे पैदा करती है और जनता की बरबादी का कारन बनती है.

जैसा कारबारी राजकाजी और फ़ौजी मेल मिलाप हम कह रहे हैं उसके रास्ते में कलचर, भाषा या मज़हब कोई रुकावट नहीं डाल सकता. पंजाब में हिन्दू, मुसलमान और सिक्ख खासे अच्छे मिल कर रहते थे और मिलकर कारबार करते थे. इसी तरह बंगाल में हिन्दू और मुसलमान रहते थे. पर अंगरेज़ों ने अपने मतलब के लिये मुल्क के टुकड़े करना चाहा और हमारे कुछ बाबू लोग खुशी से राज़ी हो गए. नतीजा हुआ अंगरेज़ी साम्राजशाही और हिन्दुस्तानी बाबू-राज की वेदी पर हिन्दुस्तानी जनता को बलि चढ़ा दिया जाना.

(४६)

हमारी माली मुसीबत—

देश में करोड़ों आदमियों का खाने पीने और अपना नंग ढकने तक से तंग होना, करोड़ों का भूके पेट सोना और जनता की ग़रीबी का बढ़ते जाना तो सबको दिखाई दे ही रहा है, ख़याल यह है कि आगे आगे मुल्क की हालत इससे भी कहीं बुरी होगी. लोग अपनी

ہوگا. کاریاری کاموں میں اِس طرح کا میل ملاپ بِنا راج کاجی میل ملاپ کے ٹھیک طرح نہیں چل سکتا، اور جہاں کاربار اور راج کاج میں میل ملاپ ہوا کہ پھر فوجی میل ملاپ بھی نہیں رُک سکتا کیونکہ پھر جنتا کی دھن دولت اور اُن کے سادھنوں کو بدیسی، سامراجی لُٹیروں سے بچانے کے لئے ملنا ضروری ہوجاتا ہے. تھوڑے سے بڑے لوگوں کے ہاتھ میں دولت اِس کے ٹھیک اُلٹے نتیجے پیدا کرتی ہے اور جنتا کی بربادی کا کارن بنتی ہے.

جیسا کاربار راج کاجی اور فوجی میل ملاپ ہم کہہ رہے ہیں اُس کے راستے میں کلچر، بھاشا یا مذہب کوئی رُکاوٹ نہیں ڈال سکتا. پنجاب میں ہندو، مسلمان اور سکھ خاصے اچھے مل کر رہتے تھے اور مل کر کاربار کرتے تھے. اِسی طرح بنگال میں ہندو اور مسلمان رہتے تھے. پر انگریزوں نے اپنے مطلب کے لئے ملک کے ٹکڑے کرنا چاہا اور ہمارے کچھ بابو لوگ خوشی سے راضی ہوگئے. نتیجہ ہوا انگریزی سامراج شاہی اور ہندستانی بابو راج کی ویدی پر ہندستانی جنتا کی بل چڑھا دیا جانا.

ہماری مالی مصیبت—

دیش میں کروڑوں آدمیوں کا کھانے پینے اور اپنا ننگ ڈھکنے تک سے تنگ ہونا، کروڑوں کا بھوکے پیٹ سونا اور جنتا کی غریبی کا بڑھتے جانا تو سب کو دکھائی دے رہا ہے، خیال یہ ہے کہ آگے آگے ملک کی حالت اِس سے بھی کہیں بُری ہوگی. لوگ اپنی

और बंगाल दोनों में हिंदुओं ने यही किया भी. मुसलिम बाबू-राज के बहकाए और असर में नादान मुसलमानों ने पाकिस्तान की मांग का और हिंदू या कांग्रेसी बाबू-राज के बहकाए और असर में भोले हिंदुओं और सिक्खों ने बंगाल और पंजाब में अपने अपने सूबों के बटवारे पर जिद की. दोनों में से कोई यह न देख पाया कि असली रोग बाबू-राज और फ़िरक़ेवाराना राज में है, फिर चाहे वह हिन्दुओं का हो चाहे मुसलमानों का. इन्हें मिटाए बिना जनता के दुख दूर नहीं हो सकते.

(२४७)

लोग धीरे धीरे इस कड़वी सचाई को समझते जा रहे हैं और तजरबे से समझेंगे. किसी के यह कह देने से कि हमारा राज फ़िरक़ेवाराना नहीं राष्ट्रीय है, धोके में नहीं आना चाहिये. कसौटी यह है कि मुल्क की दौलत और दौलत पैदा करने के साधन जनता के हाथों में हैं या इस फ़िरक़े या उस फ़िरक़े के कुछ अमीरों के हाथों में. दुनिया के दुख दूर होने के लिये सब पैदावार के साधनों और माल के बटवारे के साधनों पर राष्ट्र का यानी जनता का क़ब्ज़ा होना चाहिये. मुल्क की दौलत उस जनता के हाथों में होनी चाहिये जो अपना पसीना बहा कर उसे ज़मीन में से पैदा करती है या मेहनत मज़दूरी से उसे बढ़ाती है. यही सच्ची राष्ट्रीय हकूमत या क़ौमी हकूमत की कसौटी है.

हिन्दुस्तान और पाकिस्तान दोनों में यह हो जावे तो दोनों फिर तुरन्त मिल जावें क्योंकि इस तरह के इन्तज़ाम में मिल जुल कर काम करने का मैदान जितना बड़ा होगा उतना ही हर चीज़ सस्ती होगी, अच्छी होगी और उतना ही अच्छा चीज़ों का बटवारा

اور بنگال دونوں میں ہندوؤں نے یہی کیا بھی. مسلم بابو راج کے بہکائے اور اثر میں نادان مسلمانوں نے پاکستان کی مانگ کی اور ہندو یا کانگریسی بابو راج کے بہکائے اور اثر میں بھولے ہندوؤں اور سکھوں نے بنگال اور پنجاب میں اپنے اپنے صوبوں کے بٹوارے پر ضد کی. دونوں میں سے کوئی یہ نہ دیکھ پایا کہ اصلی روگ بابو راج اور فرقے والانہ راج میں ہے، پھر چاہے وہ ہندوؤں کا ہو چاہے مسلمانوں کا. انھیں مٹائے بنا جنتا کے دُکھ دُور نہیں ہوسکتے.

(۲۴۷)

لوگ دھیرے دھیرے اس کڑوی سچائی کو سمجھتے جارہے ہیں اور تجربے سے سمجھیں گے. کسی کے یہ کہہ دینے سے کہ ہمارا راج فرقے والانہ نہیں راشٹریہ ہے، دھوکے میں نہیں آنا چاہئے. کسوٹی یہ ہے کہ ملک کی دولت اور دولت پیدا کرنے کے سادھن جنتا کے ہاتھوں میں ہیں یا اس فرقے یا اُس فرقے کے کچھ امیروں کے ہاتھوں میں. دُنیا کے دُکھ دُور ہونے کے لئے سب پیداوار کے سادھنوں مال کے بٹوارے کے سادھنوں پر راشٹر کا یعنی جنتا کا قبضہ ہونا چاہئے. ملک کی دولت اُس جنتا کے ہاتھوں میں ہونی چاہئے جو اپنا پسینہ بہاکر اُسے زمین میں سے پیدا کرتی ہے یا محنت مزدوری سے اُسے بڑھاتی ہے. یہی سچی راشٹریہ حکومت یا قومی حکومت کی کسوٹی ہے.

ہندستان اور پاکستان دونوں میں یہ ہوجاوے تو دونوں پھر تُرنت مل جاویں کیونکہ اس طرح کے انتظام میں مل جُل کر کام کرنے کا میدان جتنا بڑھا ہوگا اُتنا ہی ہر چیز سستی ہوگی اچھی ہوگی اور اُتنا ہی اچھا چیزوں کا بٹوارہ

होगा. कारबारी कामों में इस तरह का मेल मिलाप बिना राजकाजी मेल मिलाप के ठीक तरह नहीं चल सकता, और जहाँ कारबार और राजकाज में मेल मिलाप हुआ कि फिर फ़ौजी मेल मिलाप भी नहीं रुक सकता क्यों कि फिर जनता की धन दौलत और उनके साधनों को बिदेसी, साम्राजी लुटेरों से बचाने के लिये मिलना जरूरी हो जाता है. थोड़े से बड़े लोगों के हाथ में दौलत इसके ठीक उलटे नतीजे पैदा करती है और जनता की बरबादी का कारन बनती है.

जैसा कारबारी राजकाजी और फ़ौजी मेल मिलाप हम कह रहे हैं उसके रास्ते में कलचर, भाषा या मज़हब कोई रुकावट नहीं डाल सकता. पंजाब में हिन्दू, मुसलमान और सिक्ख खासे अच्छे मिल कर रहते थे और मिलकर कारबार करते थे. इसी तरह बंगाल में हिन्दू और मुसलमान रहते थे. पर अंगरेज़ों ने अपने मतलब के लिये मुल्क के टुकड़े करना चाहा और हमारे कुछ बाबू लोग खुशी से राज़ी हो गए. नतीजा हुआ अंगरेज़ी साम्राजशाही और हिन्दुस्तानी बाबू-राज की वेदी पर हिन्दुस्तानी जनता की बलि चढ़ा दिया जाना.

हमारी माली मुसीबत——

देश में करोड़ों आदमियों का खाने पीने और अपना नंग ढकने तक से तंग होना, करोड़ों का भूके पेट सोना और जनता की गरीबी का बढ़ते जाना तो सबको दिखाई दे ही रहा है, खयाल यह है कि आगे आगे मुल्क की हालत इससे भी कहीं बुरी होगी. लोग अपनी

ہوگا. کاربادی کاموں میں اِس طرح کا میل ملاپ بِنا راج کاجی میل ملاپ کے ٹھیک طرح نہیں چل سکتا، اور جہاں کاربار اور راج کاج میں میل ملاپ ہوا کہ پھر فوجی میل ملاپ بھی نہیں رُک سکتا کیونکہ پھر جنتا کی دھن دولت اور اُن کے سادھنوں کو بدیسی، سامراجی لُٹیروں سے بچانے کے لئے ملنا ضروری ہوجاتا ہے. تھوڑے سے بڑے لوگوں کے ہاتھ میں دولت اِس کے ٹھیک اُلٹے نتیجے پیدا کرتی ہے اور جنتا کی بربادی کا کارن بنتی ہے.

جیسا کاروباری راج کاجی اور فوجی میل ملاپ ہم کہہ رہے ہیں اُس کے راستے میں کلچر، بھاشا یا مذہب کوئی رُکاوٹ نہیں ڈال سکتا. پنجاب میں ہندو، مسلمان اور سکھ خاصے اچھے مل کر رہتے تھے اور مل کر کاربار کرتے تھے. اِسی طرح بنگال میں ہندو اور مسلمان رہتے تھے. پر انگریزوں نے اپنے مطلب کے لئے ملک کے ٹکڑے کرنا چاہا اور ہمارے کچھ بابو لوگ خوشی سے راضی ہوگئے. نتیجہ ہوا انگریزی سامراج شاہی اور ہندستانی بابو راج کی ویدی پر ہندستانی جنتا کی بل چڑھا دیا جانا.

ہماری مالی مصیبت ——

دیش میں کروڑوں آدمیوں کا کھانے پینے اور اپنا ننگ ڈھکنے تک سے تنگ ہونا، کروڑوں کا بھوکے پیٹ سونا اور جنتا کی غریبی کا بڑھتے جانا تو سب کو دکھائی دے ہی رہا ہے، خیال یہ ہے کہ آگے آگے ملک کی حالت اِس سے بھی کہیں بُری ہوگی. لوگ اپنی

इस मुसीबत को तो धीरे धीरे समझते जा रहे हैं पर उसके असली कारनों और इलाज को बहुत कम समझ पा रहे हैं. हमारी इस मुसीबत की जड़ें बहुत पीछे से शुरू हुई हैं. पिछली जंग ने इन्हें अच्छी तरह सींचा है. अब अंग्रेज सरकार ने यह फ़ैसला करके कि हम अपने ब्रिटिश सिक्कों यानी स्टरलिंग की जगह अमरीकी सिक्के यानी डालर नहीं ख़रीद सकते, हमारी इस माली और तिजारती मुसीबत को और भी बढ़ा दिया है. इसका मतलब यह है कि हम जो कुछ ख़रीदना बेचना करें वह इंगलिस्तान ही से करें जहां स्टरलिंग चलता है. अमरीका या किसी और ऐसे देश से न कर सकें जहाँ डालर चलता है. यह जान बूझ कर हमारी तिजारत और कारबार का गला घोंटना है और हमें मजबूर करना है कि हम इंगलिस्तान ही को अपना कच्चा माल बेचें और जो कुछ ख़रीदें वह भी इंगलिस्तान ही से ख़रीदें. यह है दिखावटी आज़ादी के साथ ज़बरदस्त तिजारती और माली गुलामी.

इङ्गलिस्तान और अमरीका के बीच जो समझौता अमरीकी कर्ज़ों के बारे में हुआ है उसमें इङ्गलिस्तान ने यह वादा किया था कि १५ जुलाई १९४७ के बाद से स्टरलिंग की जगह डालर ख़रीदने की लोगों को खुली इजाज़त देदी जावेगी. इंगलिस्तान का इस वक़्त का फ़ैसला उस समझौते के ख़िलाफ़ है. ऐसा क्यों हुआ ? क्यों कि इङ्गलिस्तान अपने पास के सब डालर ख़र्च कर चुका और अमरीका से माल ख़रीदने के लिये इंगलिस्तान को ख़ुद डालरों की ज़रूरत है. उधर अमरीका उस वक़्त तक इंगलिस्तान को और डालर देने

اِس مصیبت کو تو دھیرے دھیرے سمجھتے جا رہے ہیں پر اُس کے اصلی کارنوں اور علاج کو بہت کم سمجھ پا رہے ہیں۔ ہماری اِس مصیبت کی جڑیں بہت پیچھے سے شروع ہوئی ہیں۔ پچھلی جنگ نے اِنھیں اچھی طرح سینچا ہے۔ اب انگریز سرکار نے یہ فیصلہ کرکے کہ ہم اپنے برٹش سِکّوں یعنی سٹرلنگ کی جگہ امریکی سکّے یعنی ڈالر نہیں خرید سکتے، ہماری اِس مالی اور تجارتی مصیبت کو اور بھی بڑھا دیا ہے۔ اِس کا مطلب یہ ہے کہ ہم جو کچھ خریدنا بیچنا کریں وہ انگلستان ہی سے کریں جہاں سٹرلنگ چلتا ہے، امریکا یا کسی اور ایسے دیش سے نہ کر سکیں جہاں ڈالر چلتا ہے۔ یہ جان بوجھ کر ہماری تجارت اور کاروبار کا گلا گھونٹنا ہے اور ہمیں مجبور کرنا ہے کہ ہم انگلستان ہی کو اپنا کچّا مال بیچیں اور جو کچھ خریدیں وہ بھی انگلستان ہی سے خریدیں۔ یہ ہے دکھاوٹی آزادی کے ساتھ زبردست تجارتی اور مالی غلامی۔

انگلستان اور امریکا کے بیچ جو سمجھوتا امریکی قرضے کے بارے میں ہوا ہے اُس میں انگلستان نے یہ وعدہ کیا تھا کہ ۱۵ جولائی ۱۹۴۷ کے بعد سے سٹرلنگ کی جگہ ڈالر خریدنے کی لوگوں کو کھلی اجازت دے دی جاوے گی۔ انگلستان کا اِس وقت کا فیصلہ اُس سمجھوتے کے خلاف ہے۔ ایسا کیوں ہوا؟ کیونکہ انگلستان اپنے پاس کے سب ڈالر خرچ کر چکا اور امریکا سے مال خریدنے کے لئے انگلستان کو خود ڈالروں کی ضرورت ہے۔ اُدھر امریکا اُس وقت تک انگلستان کو اور ڈالر دینے

के लिये तय्यार नहीं है जब तक अमरीका को ब्रिटिश साम्राज भर में तिजारत करने की खुली इजाज़त न दे दी जावे और इंगलिस्तान ने जो साम्राज के दूसरे देशों के साथ तिजारत करने का एक तरह का ठेका अपने हाथ में ले रक्खा है वह न तोड़ दिया जावे. इंगलिस्तान इसके लिये तय्यार नहीं. वह चाहता है कि साम्राज के दूसरे देश अमरीका के साथ तिजारत न कर इङ्गलिस्तान ही के साथ करें और अमरीका के साथ भी जो कुछ थोड़ी बहुत तिजारत करें वह भी इङ्गलिस्तान की मार्फ़त करें.

१४ अगस्त सन् १९४७ को इङ्गलिस्तान के ज़िम्मे हिन्दुस्तान का कर्ज़ा १६ अरब रुपए के बराबर था. इसी को स्टरलिंग बैलेंस कहा जाता है. उस दिन इङ्गलिस्तान और हिन्दुस्तान में जिस समझौते पर दस्तख़त हुए उसके मुताबिक़ इङ्गलिस्तान का फ़र्ज़ था कि यह कर्ज़ा अदा करदे यानी १६ अरब रुपए तक का माल हिन्दुस्तान इङ्गलिस्तान से, अमरीका से या जिस मुल्क से चाहे ख़रीद सके. इङ्गलिस्तान ने हज़ार हुज्जतें करके अपने इस वादे को तोड़ दिया. हिन्दुस्तान को जो खाने की चीज़ों की कमी पड़ रही है वह इङ्गलिस्तान से नहीं मिल सकतीं. सिर्फ़ अमरीका से या अमरीका की मार्फ़त ही मिल सकती हैं. आज कल कई कारनों से हिन्दुस्तान को साल में कम से कम पौने चार करोड़ टन (१ टन =२८ मन) नाज की बाहर से ज़रूरत होती है. नाज की कमी से जनता में बहुत ज्यादा बदअमनी न फैल जावे इसलिये इङ्गलिस्तान ने हिन्दुस्तान को यह इजाज़त दे दी है कि वह साढ़े तीन करोड़ पौन्ड के डालर ख़रीद कर उससे बाहर से नाज

کے لئے تیار نہیں ہے جب تک امریکا کو برٹش سامراج بھر میں تجارت کرنے کی کھلی اجازت نہ دی جاوے اور انگلستان نے جو سامراج کے دوسرے دیشوں کے ساتھ تجارت کرنے کا ایک طرح کا ٹھیکا اپنے ہاتھ میں لے رکھا ہے وہ نہ توڑ دیا جاوے۔ انگلستان اس کے لئے تیار نہیں۔ وہ چاہتا ہے کہ سامراج کے دوسرے دیش امریکا کے ساتھ تجارت نہ کر انگلستان ہی کے ساتھ کریں اور امریکا کے ساتھ بھی جو کچھ تھوڑی بہت تجارت کریں وہ بھی انگلستان کی معرفت کریں۔

۱۴ اگست سنہ ۱۹۴۷ کو انگلستان کے ذمے ہندستان کا قرضہ ۱۶ ارب روپئے کے برابر تھا۔ اسی کو سٹرلنگ بیلنس کہا جاتا ہے۔ اس دن انگلستان اور ہندستان میں جس سمجھوتے پر دستخط ہوئے اس کے مطابق انگلستان کا فرض تھا کہ یہ قرضہ ادا کردے یعنی ۱۶ ارب روپئے تک کا مال ہندستان انگلستان سے، امریکا سے یا جس ملک سے چاہے خرید سکے۔ انگلستان نے ہزار حجتیں کرکے اپنے اس وعدے کو توڑ دیا۔ ہندستان کو جو کھانے کی چیزوں کی کمی پڑ رہی ہے وہ انگلستان سے نہیں مل سکتیں۔ صرف امریکا سے یا امریکا کی معرفت ہی مل سکتی ہیں۔ آج کل کئی کارنوں سے ہندستان کو سال میں کم سے کم پونے چار کروڑ ٹن (۱ ٹن =۲۸ من) ناج کی باہر سے ضرورت ہوتی ہے۔ ناج کی کمی سے جنتا میں بہت زیادہ بدامنی نہ پھیل جاوے اس لئے انگلستان نے ہندستان کو یہ اجازت دے دی ہے کہ وہ ساڑھے تین کروڑ پاونڈ کے ڈالر خرید کر اس سے باہر سے ناج

मँगाले. इससे हिंन्दुस्तान की कुल कमी का एक कोना भी नहीं पूरा हो सकता.

हमारी मुसीबत की एक वजह यह है कि हमारी सरकार जान बूझ कर बहुत ऊँचे दामों बाहर से नाज ख़रीदती रही है ताकि लंदन से जो हम क़र्ज़ा लेना है वह किसी तरह ख़ूब घट जावे. अगर ज़मींदारी का रिवाज ख़तम कर दिया जावे, खेती बाड़ी में साइन्स की नई ईजादों से फ़ायदा उठाया जावे और हर गाँव के किसान मिल कर खेती बाड़ी करें तो हमारी खेती की पैदावार बेहद बढ़ सकती है. इङ्गलिस्तान हमारा कर्ज़ा अदा कर दे तो हम इन चीज़ों में बहुत तरक़्क़ी कर सकते हैं. पर इङ्गलिस्तान न यह चाहता है और न इसके लिये तय्यार है. नतीजा यह है कि हमारी हालत और गिरती जा रही है. इङ्गलिस्तान उल्टा इस कोशिश में है कि पिछली जंग की वजह से इङ्गलिस्तान की कारीगरी और कारबार जो पिछड़ गया है उसे किसी तरह हमारे पैसे से, हमें दबा कर और हमें ज़बरदस्ती अपना गाहक बना कर उसे फिर से ठीक करले. हिन्दुस्तान और पाकिस्तान दोनों की सरकारें इस तरह फँस गई हैं कि वह आसानी से इङ्गलिस्तान के इस जाल से नहीं निकल सकतीं. हमारे कच्चे माल और हमारी मंडियों के क़ब्ज़े पर ही इङ्गलिस्तान मौज उड़ा सकता है और इन नए बाबू राजों के ज़रिये इङ्गलिस्तान ने अपने इस इन्तज़ाम को और पक्का कर लिया है.

(३५६)

हमारी माली दिक़्क़तों को दूर करने के लिये हमारी नई सरकार ने पाँच इलाज सोचे हैं—(१) ज़मीन और कारख़ानों की पैदावार को बढ़ाना, (२) चीज़ों की क़ीमतों पर कड़ा 'कन्ट्रोल.' (३) 'राशनिंग'

منگالے. اس سے ہندستان کی کُل کمی کا ایک کونا بھی نہیں پورا ہوسکتا.

ہماری مصیبت کی ایک وجہ یہ ہی کہ ہماری سرکار جان بوجھ کر بہت اونچے داموں باہر سے ناج خریدتی رہی ہی تاکہ لندن سے جو ہمیں قرضہ لینا ہی وہ کسی طرح خوب گھٹ جاوے. اگر زمینداری کا رواج ختم کردیا جاوے، کھیتی باڑی میں سائنس کی نئی ایجادوں سے فائدہ اُٹھایا جاوے اور ہر گاؤں کے کسان مل کر کھیتی باڑی کریں تو ہماری کھیتی کی پیداوار بےحد بڑھ سکتی ہی. انگلستان ہمارا قرضہ ادا کردے تو ہم ان چیزوں میں بہت ترقی کرسکتے ہیں. پر انگلستان نہ یہ چاہتا ہی اور نہ اس کے لئے تیار ہی. نتیجہ یہ ہی کہ ہماری حالت اور گرتی جارہی ہی. انگلستان اُلٹا اس کوشش میں ہی کہ پچھلی جنگ کی وجہ سے انگلستان کی کاریگری اور کاربار جو پچھڑ گیا ہی اُسے کسی طرح ہمارے پیسے سے، ہمیں دبا کر اور ہمیں زبردستی اپنا گاہک بناکر اُسے پھر سے ٹھیک کرلے. ہندستان اور پاکستان دونوں کی سرکاریں اس طرح پھنس گئی ہیں کہ وہ آسانی سے انگلستان کے اس جال سے نہیں نکل سکتیں. ہمارے کچے مال اور ہماری منڈیوں کے قبضے پر ہی انگلستان موج اُڑا سکتا ہی اور ان نئے بابو راجوں کے ذریعے انگلستان نے اپنے اس انتظام کو اور پکا کرلیا ہی.

(۳۵۶)

ہماری مالی دقتوں کو دور کرنے کے لئے ہماری نئی سرکار نے علاج سوچے ہیں—(۱) زمین اور کارخانوں کی پیداوار کو بڑھانا، (۲) چیزوں کی قیمتوں پر کڑا کنٹرول، (۳) راشننگ

वग़ैरा के ज़रिये लोगों के ख़र्च को हद के अन्दर रखना, (४) कारख़ानों में मज़दूरों से ज़्यादा घंटे काम लेना और (५) हिन्दुस्तान से कच्चा माल ख़ूब बाहर भेजना, जिससे हमें दूसरे मुल्कों के सिक्के मिल सकें और उनसे हम विदेशों में विदेशी माल ख़रीद सकें.

यह पाँचों तजवीज़ें ब्रिटेन को मोटा करने वाली और हिन्दुस्तान को बरबाद करने वाली हैं.

हमारी सरकार का ख़याल है कि हमारी माली दिक़्क़तों के सात कारन हैं—(१) खाने के सामान की बेहद कमी, (२) कपड़े की कमी, (३) लोगों के ख़र्च का बढ़ना, (४) क़ीमतों का बढ़ते जाना, (५) मज़दूरों में बेचैनी, (६) ज़मीन और कारख़ानों दोनों की पैदावार का घटते जाना और (७) विदेशों से माल ख़रीदने के लिये विदेशी सिक्कों की कमी.

जो आदमी थोड़ा बहुत भी इन चीज़ों को समझता है वह देख सकता है कि यह सातों हमारी मुसीबत के सबब नहीं हैं बल्कि उसके नतीजे हैं. अगर हमारा राज सचमुच जनता के फ़ायदे को देख कर चलाया गया होता तो इनमें से कोई बात पैदा न होती.

सरकार के सोचे हुए इलाज भी बिलकुल निकम्मे हैं. ज़मीन की पैदावार उस वक़्त तक नहीं बढ़ सकती जब तक हम किसान के ऊपर के क़र्ज़ों को रद्द करके उसके बोझ को हलका न करदें और उसे खेती की पैदावार को बढ़ाने में ख़ुद अपना फ़ायदा दिखाई न दे. इसके कुछ उपाय हम ऊपर बता चुके हैं. इसी तरह कारख़ानों की पैदावार भी तब तक नहीं बढ़ सकती जब तक मज़दूर को

وغیرہ کے ذریعے لوگوں کے خرچ کو حد کے اندر رکھنا، (۴) کارخانوں میں مزدوروں سے زیادہ گھنٹے کام لینا اور (۵) ہندستان سے کچا مال خوب باہر بھیجنا. جس سے ہمیں دوسرے ملکوں کے سکّے مل سکیں اور اُن سے ہم ودیشوں میں ودیشی مال خرید سکیں.

یہ پانچوں تجویزیں برٹین کو موٹا کرنے والی اور ہندستان کو برباد کرنے والی ہیں.

ہماری سرکار کا خیال ہے کہ ہماری مالی دقتوں کے سات کارن ہیں— (۱) کھانے کے سامان کی بے حد کمی، (۲) کپڑے کی کمی، (۳) لوگوں کے خرچ کا بڑھنا، (۴) قیمتوں کا بڑھتے جانا، (۵) مزدوروں میں بےچینی، (۶) زمین اور کارخانوں دونوں کی پیداوار کا گھٹتے جانا اور (۷) ودیشوں سے مال خریدنے کے لئے ودیشی سکّوں کی کمی.

جو آدمی تھوڑا بہت بھی ان چیزوں کو سمجھتا ہے وہ دیکھ سکتا ہے کہ یہ ساتوں ہماری مصیبت کے سبب نہیں ہیں بلکہ اس کے نتیجے ہیں. اگر ہمارا راج سچ مچ جنتا کے فائدے کو دیکھ کر چلایا گیا ہوتا تو ان میں سے کوئی بات پیدا نہ ہوتی.

سرکار کے سوچے ہوئے علاج بھی بالکل نکمے ہیں. زمین کی پیداوار اُس وقت تک نہیں بڑھ سکتی جب تک ہم کسان کے اوپر کے قرضوں کو رد کرکے اس کے بوجھ کو ہلکا نہ کر دیں اور اُسے کھیتی کی پیداوار کو بڑھانے میں خود اپنا فائدہ دکھائی نہ دے. اس کے کچھ اپائے ہم اوپر بتا چکے ہیں. اسی طرح کارخانوں کی پیداوار بھی تب تک نہیں بڑھ سکتی جب تک مزدور کو

उसमें अपना फ़ायदा दिखाई न दे. यह सब तब तक नहीं हो सकता जब तक हमारे राज का ढाँचा ही पूरी तरह न बदले.

सरकार के 'कन्ट्रोल' और 'राशनिंग' से चोर बाज़ारों का पैदा होना लाज़मी है. मज़दूरों से ज़्यादा घंटे काम लेना और उन्हें खाना कपड़ा इतनी मंहगाई से मिलना और उनको मज़दूरी का न बढ़ना उनमें बेचैनी और गोलमाल पैदा किये बिना नहीं रह सकता, जिससे पुलिसी की लाठियों और फ़ौज की ज़रूरत और भी ज़्यादा बढ़ेगी. दूसरे मुल्कों के सिक्के लेने के लिये यहाँ के कच्चे माल को बाहर भेजना और भी ना समझी की बात है. इससे यहाँ नाज की कमी, मँहगाई और मुसीबत बढ़ती ही जावेगी.

नतीजा यह कि हमारी सब मुसीबतों का असली इलाज सिर्फ़ एक है और वह इस बाबू राज की जगह वह जन-राज क़ायम करना है जिसका हम ऊपर जिक्र कर चुके हैं.

मुसलमानों मुसलमानों में--

पाकिस्तान के अन्दर खास कर सिन्ध में यह ज़ोर की हलचल शुरू हो गई कि "सिन्ध सिर्फ़ सिन्धियों के लिये है." यानी बाहर के जो मुसलमान एक एक महकमें और एक एक कारबार के अन्दर वहाँ घुसा दिये गए हैं उनकी सिन्धी मुसलमानों को जबरदस्त शिकायत है. पाकिस्तानी सरकार इस हलचल को दबाने की पूरी कोशिश कर रही है. इसमें खास कर दिल्ली से गए हुए मुसलमान व्यापारियों और सिन्धी मुसलमान व्यापारियों में बहुत बड़ी लाग डाट चल पड़ी है. कुछ जानकारों का तो यहाँ तक खयाल है

اُس میں اپنا فائدہ دکھائی نہ دے۔ یہ سب تب تک نہیں ہو سکتا جب تک ہمارے راج کا ڈھانچا ہی پوری طرح نہ بدلے۔

سرکار کے 'کنٹرول' اور 'راشننگ' سے چور بازاروں کا پیدا ہونا لازمی ہے۔ مزدوروں سے زیادہ گھنٹے کام لینا اور اُنھیں کھانا کپڑا اِتنی مہنگائی سے ملنا اور اُن کی مزدوری کا نہ بڑھنا اُن میں بے چینی اور گول مال پیدا کئے بنا نہیں رہ سکتا، جس سے پولیس کی لاٹھیوں اور فوج کی ضرورت اور بھی زیادہ بڑھے گی۔ دوسرے ملکوں کے سکے لینے کے لئے یہاں کے کچے مال کو باہر بھیجنا اور بھی ناسمجھی کی بات ہے۔ اِس سے یہاں ناج کی کمی، مہنگائی اور مصیبت بڑھتی ہی جاوے گی۔

نتیجہ یہ کہ ہماری سب مصیبتوں کا اصلی علاج صرف ایک ہے اور وہ اِس بابو راج کی جگہ وہ جن راج قایم کرنا ہے جس کا ہم اوپر ذکر کر چکے ہیں۔

مسلمانوں مسلمانوں میں—

پاکستان کے اندر خاص کر سندھ میں یہ زور کی ہل چل شروع ہو گئی کہ "سندھ صرف سندھیوں کے لئے ہے۔" یعنی باہر کے جو مسلمان ایک ایک محکمے اور ایک ایک کاروبار کے اندر وہاں گھسا دئے گئے ہیں اُن کی سندھی مسلمانوں کو زبردست شکایت ہے۔ پاکستانی سرکار اِس ہل چل کو دبانے کی پوری کوشش کر رہی ہے۔ اِس میں خاص کر دلی سے گئے ہوئے مسلمان بیوپاریوں اور سندھی مسلمان بیوپاریوں میں بہت بڑی لاگ ڈانٹ چل پڑی ہے۔ کچھ جانکاروں کا تو یہاں تک خیال ہے

कि "अगर आज सिन्ध के मुसलमानों की राय इस बात में ली जावे कि वह पाकिस्तान में रहना चाहते हैं या आजाद सिन्ध चाहते हैं तो अस्सी फी सदी लोग आजाद सिन्ध के हक में राय देंगे"

सरहद और आस पास के क़बीलों के पठान भी इसी चीज़ से बचना चाह रहे हैं कि बाहर के मुसलमान पूँजीपति उनके यहां पहुंच कर उनकी रही सही खुशहाली को भी ख़तम न कर दें.

असली मुसीबत पाकिस्तान और हिंदुस्तान दोनों में एक ही है और वह मुसीबत है बाबुओं और पूँजीपतियों के राज से जनता की बरबादी. जल्दी या देर में इससे जनता का उठना और सच्चा जन राज क़ायम करना लाज़मी है. उसी दिन को टलाने के लिये जहां और तरकीबें की जा रही हैं वहाँ एक तरकीब यह हिन्दू मुसलिम झगड़े भी हैं

चीन का छुटकारा--

ख़बर आई है कि चांग काई शेक ने अमरीका से दो अरब डालर का क़र्ज़ा और मांगा है और उसके साथ बेहद फौजी सामान, हथियार, हवाई जहाज़ वग़ैरा, वग़ैरा यहां तक कि काफ़ी फौजें भी. पुराना क़र्ज़ा अलग रहा. इसकी वजह यह है कि चीन के कम्यूनिस्ट बढ़ते चले जा रहे हैं और अगर चाँग काई शेक और कम्यूनिस्ट को लड़ाई ने पलटा न खाया तो हो सकता है इस साल के आख़ीर तक चांग काई शेक की हालत लाइलाज हो जावे. चांग काई शेक के पार्टी के लोग और अमरीका भी वहां के कम्यूनिस्ट लोगों को "डाकू," "राज के दुशमन" वग़ैरा नामों से पुकारते हैं और उन्हें ख़तम कर

کہ "اگر آج سندھ کے مسلمانوں کی رائے اِس بات میں لی جاوے کہ وہ پاکستان میں رہنا چاہتے ہیں یا آزاد سندھ چاہتے ہیں تو اسّی فی صدی لوگ آزاد سندھ کے حق میں رائے دیں گے"

سرحد اور آس پاس کے قبیلوں کے پٹھان بھی اِسی چیز سے بچنا چاہ رہے ہیں کہ باہر کے مسلمان پونجی پتی اُن کے یہاں پہنچکر اُن کی رہی سہی خوش حالی کو بھی ختم نہ کر دیں۔

اصلی مصیبت پاکستان اور ہندوستان دونوں میں ایک ہی ہے اور وہ مصیبت ہے بابوؤں اور پونجی پتیوں کے راج سے جنتا کی بربادی جلدی یا دیر میں اِس سے جنتا کا اُٹھنا اور سچا جن راج قایم کرنا لازمی ہے۔ اُسی دن کو ٹلانے کے لئے جہاں اور ترکیبیں کی جا رہی ہیں وہاں ایک ترکیب یہ ہندو مسلم جھگڑے بھی ہیں۔

چین کا چھٹکارہ ___

خبر آئی ہے کہ چانگ کائی شیک نے امریکا سے دو ارب ڈالر کا قرضہ اور مانگا ہے اور اُس کے ساتھ بے حد فوجی سامان، ہتھیار، ہوائی جہاز وغیرہ وغیرہ یہاں تک کہ کافی فوجیں بھی۔ پُرانا قرضہ الگ رہا۔ اِس کی وجہ یہ ہے کہ چین کے کمیونسٹ بڑھتے چلے جا رہے ہیں اور اگر چانگ کائی شیک اور کمیونسٹ کی لڑائی نے پلٹا نہ کھایا تو ہو سکتا ہے اِس سال کے آخر تک چانگ کائی شیک کی حالت لاعلاج ہو جاوے۔ چانگ کائی شیک کے پارٹی کے لوگ اور امریکی بھی وہاں کے کمیونسٹ لوگوں کو "ڈاکو" "راج کے دشمن" وغیرہ ناموں سے پکارتے ہیں اور اُنھیں ختم

देने के लिये चीन को ही खतम कर देने के लिये तय्यार हैं. इस वक़्त चांग काई शेक की तरफ़ से इस घरेलू लड़ाई में, कहा जाता है, क़रीब छै अरब पैंसठ करोड़ रुपया सालाना खर्च हो रहा है. फ़ौजों को जिन्दा रखने के लिये किसानों के साथ जो ज़बरदस्ती की जा रही है वह अलग. मुल्क बरबाद हो रहा है. चारों तरफ़ बेचैनी बढ़ रही है. लोग चिल्ला रहे हैं कि लड़ाई बन्द करो. दस साल से ऊपर इस घरेलू लड़ाई को शुरू हुए हो गए. पर चांग काई शेक की जीत और दूर हटती जा रही है. मालूम होता है अमरीका की ज़बरदस्त मदद भी काम नहीं दे रही है. चांग काई शेक के पास इस वक़्त बीस लाख से ऊपर फ़ौजें हैं. पर मंचूरिया जहां उसकी सबसे अच्छी फ़ौजें थीं क़रीब क़रीब चांग काई शेक के हाथों से निकल गया. जनता जगह जगह कम्यूनिस्टों का साथ दे रही है. कई अमरीकी जानकारों और सेनापतियों ने भी यह राय ज़ाहिर की है कि ज़मीन चांग काई शेक के पैरों के नीचे से खिसकती मालूम हो रही है. खुद चांग काई शेक की पार्टी के अन्दर झगड़े खड़े हो गए हैं.

ऐसी हालत में बहुत से राष्ट्रीय खयाल के चीनी अमरीका वालों से चिल्ला चिल्ला कर कह रहे हैं "यांग लाओ ये" जिसका मतलब है 'ए बिदेसी बाप हमें बचा'! पर यह बिदेसी बाप चीन और चांग काई शेक दोनों की मुसीबतों से अपना घर भरने के फ़िक्र में है. हो सकता है कि चांग काई शेक की हकूमत अभी दस बरस और चल जावे. इसकी वजह यह है कि अगर कम्यूनिस्ट लोग चांग काई शेक को पूरी तरह हरा दें तो अमरीका फिर खुले

کر دینے کے لئے چین کو ہی ختم کر دینے کے لئے تیار ہیں. اس وقت چانگ کائی شیک کی طرف سے اس گھریلو لڑائی میں کہا جاتا ہے، قریب چھ ارب پینسٹھ کروڑ روپیہ سالانہ خرچ ہو رہا ہے. فوجوں کو زندہ رکھنے کے لئے کسانوں کے ساتھ جو زبردستی کی جا رہی ہے وہ الگ. ملک برباد ہو رہا ہے. چاروں طرف بے چینی بڑھ رہی ہے. لوگ چلا رہے ہیں کہ لڑائی بند کرو. دس سال سے اوپر اس گھریلو لڑائی کو شروع ہوئے ہو گئے. پر چانگ کائی شیک کی جیت اور دور ہٹتی جا رہی ہے. معلوم ہوتا ہے کہ زبردست مدد بھی کام نہیں دے رہی ہے. چانگ کائی شیک کے پاس اس وقت بیس لاکھ سے اوپر فوجیں ہیں پر منچوریا جہاں اس کی سب سے اچھی فوجیں تھیں قریب قریب چانگ کائی شیک کے ہاتھوں سے نکل گیا. جنتا جگہ جگہ کمیونسٹوں کا ساتھ دے رہی ہے. کئی امریکی جانکاروں اور سیناپتیوں نے بھی یہ رائے ظاہر کی ہے کہ زمین چانگ کائی شیک کے پیروں کے نیچے سے کھسکتی معلوم ہو رہی ہے. خود چانگ کائی شیک کی پارٹی کے اندر جھگڑے کھڑے ہو گئے ہیں.

ایسی حالت میں بہت سے راشٹریہ خیال کے چینی امریکا والوں سے چلا چلا کر کہہ رہے ہیں "یانگ لاؤ یے" جس کا مطلب ہے 'اے بدیسی باپ ہمیں بچا'! پر یہ بدیسی باپ چین اور چانگ کائی شیک دونوں کی مصیبتوں سے اپنا گھر بھرنے کے فکر میں ہیں. ہو سکتا ہے کہ چانگ کائی شیک کی حکومت ابھی دس برس اور چل جاوے. اس کی وجہ یہ ہے کہ اگر کمیونسٹ لوگ چانگ کائی شیک کو پوری طرح ہرا دیں تو امریکا پھر کھلے

चीन पर हमला कर बैठेगा जिससे तीसरी बड़ी जंग शुरू हो जावेगी. लोग इसे बचाने की कोशिश कर रहे हैं.

तीसरी बड़ी जंग दिखाई दे रही है--

पिछले ३० अगस्त को कैनेडा के अंग्रेज गवरनर जनरल वाई काउन्ट एलेकज़ेन्डर ने न्यूयार्क में कहा था—"अमरीका को चाहिये कि ग्रीस को ज़रूर मदद भेजे चाहे इसकी वजह से रूस से लड़ना ही क्यों न पड़ जाय. अमरीका का यह फ़र्ज़ है. हमें अपने दोस्तों का साथ देना चाहिये". वाई काउन्ट एलेकज़ेन्डर के ख़याल के आदमी ख़ुद अमरीका में भी कम नहीं हैं. जून के आख़ीर में अमरीका के मशहूर जनरल आइसेनहोवर ने सेनेट की एक कमेटी के सामने कहा था—"अमरीका के लड़ाई के महकमें ने सन् १९४८ के लिये ख़र्च का जो अन्दाज़ा लगाया है वह यह समझ कर नहीं लगाया गया कि सन '४८ में जंग होगी. लेकिन वह यह सोच कर भी नहीं लगाया गया कि सन् '४८ में जंग नहीं होगी." जनरल आइसेनहोवर के लफ़्ज़ एक पक्के राजनेता के लफ़्ज़ हैं. दूसरे शब्दों में यह कहा जा सकता है—"हम जंग नहीं चाहते, हम माल चाहते हैं, लेकिन माल नहीं मिलेगा तो हम जंग करेंगे." जो माल अमरीका चाहता है वह इन मुल्कों में है—(१) ग्रीस, (२) चीन, (३) जर्मनी, (४) फ्राँस, (५) इटली. अमरीका इन सबकी तरफ़ तेज़ी से लपक रहा है और साथ ही साथ सरी जंग की भी ज़बरदस्त तय्यारियाँ कर रहा है. अंग्रेज़ों की तरह अमरीका भी दूसरे मुल्कों के राजकाजी नेताओं से काम लेना ख़ूब जानता है.

چین پر حملہ کر بیٹھے گا جس سے تیسری بڑی جنگ شروع ہو جاوے گی، لوگ اسے بچانے کی کوشش کر رہے ہیں۔

تیسری بڑی جنگ دکھائی دے رہی ہے—

پچھلے ۳۰ اگست کو کینیڈا کے انگریز گورنر جنرل وائی کاؤنٹ الکزنڈر نے نیویارک میں کہا تھا—"امریکا کو چاہیئے کہ گریس کو ضرور مدد بھیجے چاہے اس کی وجہ سے روس سے لڑنا ہی کیوں نہ پڑ جائے۔ امریکا کا یہ فرض ہے۔ ہمیں اپنے دوستوں کا ساتھ دینا چاہیئے"۔ وائی کاؤنٹ الکزنڈر کے خیال کے آدمی خود امریکا میں بھی کم نہیں ہیں۔ جون کے آخر میں امریکا کے مشہور جنرل آئیسن ہوور نے سینیٹ کی ایک کمیٹی کے سامنے کہا تھا— "امریکا کے لڑائی کے محکمے نے سنہ ۱۹۴۸ کے لئے خرچ کا جو اندازہ لگایا ہے وہ یہ سمجھ کر نہیں لگایا گیا کہ سنہ ۴۸ میں جنگ ہوگی، لیکن وہ یہ سوچ کر بھی نہیں لگایا گیا ہے کہ سنہ ۴۸ میں جنگ نہیں ہوگی۔" جنرل آئیسن ہوور کے لفظ ایک پکے راج نیتا کے لفظ ہیں۔ دوسرے شبدوں میں یہ کہا جا سکتا ہے— "ہم جنگ نہیں چاہتے، ہم مال چاہتے ہیں، لیکن مال نہیں ملے گا تو ہم جنگ کریں گے۔" جو مال امریکا چاہتا ہے وہ ان ملکوں میں ہے— (۱) گریس، (۲) چین، (۳) جرمنی، (۴) فرانس، (۵) اٹلی۔ امریکا ان سب کی طرف تیزی سے لپک رہا ہے اور ساتھ ساتھ تیسری جنگ کی بھی زبردست تیاریاں کر رہا ہے۔ انگریزوں کی طرح امریکا بھی دوسرے ملکوں کے راج کاجی نیتاؤں سے کام لینا خوب جانتا ہے۔

सन् १९४८ के बजट में प्रेसीडेन्ट ट्रूमैन ने सैंतीस अरब रुपए से ऊपर फ़ौजी खर्च के लिये रक्खा है यानी कुल अमरीकी बजट का क़रीब क़रीब एक तिहाई. फ़ौजी खर्च के लिये और सब खर्चों को कम किया जा रहा है. खुद अमरीका में भी नोटों की तादाद बढ़ती जा रही है. माली संकट के डर से अमरीकी सरकार भी ख़ाली नहीं है. चीज़ों की क़ीमत सन १९४६ से ढाई गुना है. पूँजी-पतियों का मुनाफ़ा भी क़रीब क़रीब उसी औसत से बढ़ा है. राष्ट्र की पैदावार घट रही है. पर अमरीका को ज़्यादा ग़रज़ है पैसेफ़िक महासागर में अपने फ़ौजी अड्डे बनाने से, उत्तर एटलान्टिक महासागर में अड्डे बनाने से, बीच एशिया में अपनी जहाज़ी फ़ौजें फैला देने से. हर अमरीकी को सिपाही बना देने से औ सारे अमरीका इङ्गलिस्तान और पच्छिमी योरप को अमरीकी ढंग के नए हथियारों से भर देने से. अमरीका तेज़ी के साथ तीसरी जंग की तरफ़ जा रहा है

سنہ ۱۹۴۸ کے بجٹ میں پریسیڈنٹ ٹرومین نے سینتیس ارب روپئے سے اوپر فوجی خرچ کے لئے رکھا ہے یعنی کُل امریکی بجٹ کا قریب قریب ایک تہائی. فوجی خرچ کے لئے اور سب خرچوں کو کم کیا جا رہا ہے. خود امریکا میں بھی نوٹوں کی تعداد بڑھتی جا رہی ہے. مالی سنکٹ کے ڈر سے امریکی سرکار بھی خالی نہیں ہے. چیزوں کی قیمت سنہ ۱۹۴۶ سے ڈھائی گنی ہے. پونجی پتیوں کا منافع بھی قریب قریب اُسی اوسط سے بڑھا ہے. راشٹر کی پیداوار گھٹ رہی ہے. پر امریکا کو زیادہ غرض ہے پیسفک مہاساگر میں اپنے فوجی اڈے بنانے سے، اُتر ایٹلانٹک مہاساگر میں اڈے بنانے سے، بیچ ایشیا میں اپنی جہازی فوجیں پھیلا دینے سے، ہر امریکی کو سپاہی بنا دینے سے اور سارے امریکا انگلستان اور پچھمی یورپ کو امریکی ڈھنگ کے نئے ہتھیاروں سے بھر دینے سے. امریکا تیزی کے ساتھ تیسری جنگ کی طرف جا رہا ہے.

हमारी राय

दो अक्तूबर—

दो अकतूबर न जाने कितनी पुरानी है. पर आने वाली दो अक्तूबर को हम उन्नासीवीं दो अक्तूबर कह कर ही याद करेंगे. क्योंकि वह देश के प्यारे गांधी जी का जनम दिन है. दुनिया भर के प्यारे हो जाने की वजह से उनकी जन्म भूमि बहुत पीछे पड़ गई. दुनिया भर की मानी हुई शख़्सियत को तारीख़ से ही याद रखना ठीक है, आसानी भी इसी में है. गांधी जी ने अपने क़स्बे या अपने देश को ही नहीं चमकाया. सारी दुनिया का माथा ऊँचा किया है. कुमारी पर्ल बक का कहना ठीक ही है कि 'गांधी जी अब एक व्यक्ति नहीं हैं बल्कि इस दुखी संसार में रहने का एक तरीक़ा हैं.'

रेगमाल (सैन्ड पेपर) लकड़ी को इसलिये नहीं रगड़ता कि वह उसे चिकनी बना दे, क्योंकि वही रेगमाल उँगली को रगड़ कर उसमें ख़ून निकाल देगा, सान हीरे को इसलिये नहीं रगड़ती कि वह उसे चमकाना चाहती है, क्योंकि वह लकड़ी को रगड़ कर उसके परख़चे उड़ा देगी पर चमका न पाएगी, आग सोने को चमकाने के लिये नहीं गरम करती क्योंकि अगर ऐसा होता तो वह पीतल को भी चमका देती, असल में लकड़ी, हीरे और सोने में चिकनापन, दमक और चमक पहले से ही मौजूद है. ठीक यही हाल गांधी जी का है. दुनिया उन्हें इसलिये गाली नहीं देती

ہماری رائے

دو اکتوبر—

دو اکتوبر نہ جانے کتنی پرانی ہے۔ پر آنے والی دو اکتوبر کو ہم اُنّیسویں دو اکتوبر کہہ کر ہی یاد کریں گے، کیونکہ وہ دیش کے پیارے گاندھی جی کا جنم دن ہے۔ دنیا بھر کے پیارے ہو جانے کی وجہ سے اُن کی جنم بھومی بہت پیچھے پڑ گئی۔ دنیا بھر کی مانی ہوئی شخصیت کو تاریخ سے ہی یاد رکھنا ٹھیک ہے، آسانی بھی اسی میں ہے۔ گاندھی جی نے اپنے قصبے یا اپنے دیش کو ہی نہیں چمکایا، ساری دنیا کا ماتھا اونچا کیا ہے۔ کماری پرل بک کا کہنا ٹھیک ہی ہے کہ گاندھی جی اب ایک ویکتی نہیں ہیں بلکہ اس دکھی سنسار میں رہنے کا ایک طریقہ ہیں؛

ریگ مال (سینڈ پیپر) لکڑی کو اس لئے نہیں رگڑتا کہ وہ اُسے چکنی بنا دے، کیونکہ وہی ریگ مال اُنگلی کو رگڑ کر اس میں خون نکال دے گا، سان ہیرے کو اس لئے نہیں رگڑتی کہ وہ اُسے چمکانا چاہتی ہے، کیونکہ وہ لکڑی کو رگڑ کر اس کے پرخچے اُڑا دے گی پر چمکا نہ پائے گی، آگ سونے کو چمکانے کے لئے نہیں گرم کرتی کیونکہ اگر ایسا ہوتا تو وہ پیتل کو بھی چمکا دیتی، اصل میں لکڑی، ہیرے اور سونے میں چکناپن، دمک اور چمک پہلے سے ہی موجود ہیں۔ ٹھیک یہی حال گاندھی جی کا ہے۔ دنیا انھیں اس لئے گالی نہیں دیتی

कि वह उन्हें ऊँचा उठाना चाहती है. अगर ऐसा होता तो दुनिया ने गाली दे-देकर सैकड़ों ही को ऊँचा उठा दिया होता. दुनिया गांधी जी को इसलिये नहीं सताती कि वह उनको सबकी नज़रों में इज़्ज़त की जगह देना चाहती है. अगर ऐसा होता तो दुनिया सता सता कर कितनों ही को महातमा बना देती असल बात यह है कि गांधी जी खुद ही कुछ ऐसी चीज़ के बने हुए हैं कि उन्हें रगड़ो, उन्हें मारो, काटो या उन्हें सताओ वह तो वही रहेंगे जो वह हैं.

गांधी जी जिस सचाई और अहिंसा पर आज अड़े हुए हैं उस पर तो वह बचपन से अड़े हुए हैं. पर आज उनकी यह अड़ दुनिया भर को बुरी लग रही है और हिंदुस्तान के बहुत से हिंदुओं को तो एक आंख नहीं सुहाती. पर वह क्या करें. किसी को बुरी लगे लगा करे. किसी को न सुहाए न सुहाए. वह तो सिर से पैर तक सच और अहिंसा के पुतले हैं और वही रहेंगे. सूरज ने गरमियों में करोड़ों की गालियां खा कर चमकना नहीं छोड़ा और चाँद ने कितनी ही वियोगिनियों के उलाहने सुन कर ठंडक पहुँचाना नहीं छोड़ा, तब गांधी जी कैसे उस चीज़ को छोड़ सकते हैं जिसके वह बने हुए हैं. गांधी जी का सच और अहिंसा छोड़ना गांधी का खतम हो जाना है.

यह मार काट चार दिन रहने वाली चीज़ है. मार काट का दूसरा नाम है 'गरमाई हुई अहिंसा'. लूट पाट का दूसरा नाम है 'गरमाया हुआ सत्य'. गरमाया हुआ पानी ठंडा होता ही है और उसके ठंडे रहने में ही दुनिया का भला है. ठीक इसी तरह से

کہ وہ اُنھیں اونچا اُٹھانا چاہتی ہے۔ اگر ایسا ہوتا تو دُنیا نے گالی دے دے کر سیکڑوں ہی کو اونچا اُٹھا دیا ہوتا۔ دُنیا گاندھی جی کو اس لئے نہیں ستاتی کہ وہ اُن کو سب کی نظروں میں عزّت کی جگہ دینا چاہتی ہے۔ اگر ایسا ہوتا تو دُنیا ستا ستا کر کتنوں ہی کو مہاتما بنا دیتی۔ اصل بات یہ ہے کہ گاندھی جی خود ہی کچھ ایسی چیز کے بنے ہوئے ہیں کہ اُنھیں رگڑو، اُنھیں مارو، کاٹو یا اُنھیں ستاؤ وہ تو وہی رہیں گے جو وہ ہیں۔

گاندھی جی جس سچائی اور اہنسا پر آج اڑے ہوئے ہیں اُس پر تو وہ بچپن سے اڑے ہوئے ہیں، پر آج اُن کی یہ اڑ دُنیا بھر کو بُری لگ رہی ہے اور ہندستان کے بہت سے ہندوؤں کو تو ایک آنکھ نہیں سُہاتی۔ پر وہ کیا کریں۔ کسی کو بُری لگے لگا کرے۔ کسی کو نہ سُہائے نہ سُہائے۔ وہ تو سر سے پیر تک سچ اور اہنسا کے پُتلے ہیں اور وہی رہیں گے۔ سورج نے گرمیوں میں کروڑوں کی گالیاں کھا کر چمکنا نہیں چھوڑا اور چاند نے کتنی ہی ویوگنیوں کے اُلاہنے سُن کر ٹھنڈک پہنچانا نہیں چھوڑا، تب گاندھی جی کیسے اس چیز کو چھوڑ سکتے ہیں جس کے وہ بنے ہوئے ہیں۔ گاندھی جی کا سچ اور اہنسا چھوڑنا گاندھی کا ختم ہو جانا ہے۔

یہ مار کاٹ چار دن رہنے والی چیز ہے۔ مار کاٹ کا دوسرا نام ہے 'گرمائی ہوئی اہنسا'۔ لوٹ پاٹ کا دوسرا نام ہے 'گرمایا ہوا ستیہ'۔ گرمایا ہوا پانی ٹھنڈا ہوتا ہی ہے اور اس کے ٹھنڈے رہنے [illegible]

'गरमाई हुई अहिंसा' और 'गरमाया हुआ सत्य' ठंडे होंगे ही. फिर गांधी जी क्यों ख़ुद गरमा कर ऐसा कर डालें जिसके लिये उनको भी हम सब की तरह पछताना पड़े.

हम बहुत छोटे हैं. हमको ज़रा ज़रा देर में पछताना पड़ता है और बड़े बड़े पछतावे करने पड़ते हैं. गांधी जी बहुत बड़े हैं. उनको अपने किये पर शायद ही कभी पछताना पड़ता हो. पछताना अच्छी चीज़ नहीं. इतना ही नहीं पछताना बुरी चीज़ है और गांधी जी पछताने के लिये कोई काम क्यों करें. सुखी रहने के लिये गांधी जी की नक़ल करो, तब बोलो 'गांधी जी की जय' ! और 'जय हिंद !'

—भगवान दीन

२३ सितम्बर सन् '४७

आबादी की अदल बदल—

बुख़ार में, नशे में और ग़ुस्से में आदमी जितनी बातें बकता है वह बहुत कर वह होती हैं जिनको वह जी से कभी नहीं चाहता. आज पाकिस्तानियों और हिन्दुस्तानियों को बुख़ार भी चढ़ा हुआ है, नशा भी है और ग़ुस्सा तो बेहद है ही. ऐसी हालत में आबादी की अदल बदल के लिये शोर मचाने के वही माने हो सकते हैं जो बुख़ार में किसी ऐसा बकने वाले के हुआ करते हैं. बुख़ार वाले की बातें तनदुरुस्त आदमी को हँसते हँसते सुन लेना चाहिये. उनसे न भड़कने की ज़रूरत है. न उन पर सोच करने की. घरों में यह रोज़ ही होता है. नशे में आए दिन किस के घर बर्तन

'گرمائی ہوئی اہنسا' اور 'گرمایا ہوا ستیہ' ٹھنڈے ہوں گے ہی. پھر
گاندھی جی کیوں خود گرما کر ایسا کر ڈالیں جس کے لئے اُن کو بھی
ہم سب کی طرح پچھتانا پڑے.

ہم بہت چھوٹے ہیں' ہم کو ذرا ذرا دیر میں پچھتانا پڑتا ہے
اور بڑے بڑے پچھتاوے کرنے پڑتے ہیں. گاندھی جی بہت بڑے
ہیں. اُن کو اپنے کئے پر شاید ہی پچھتانا پڑتا ہو. پچھتانا اچھی
چیز نہیں، اتنا ہی نہیں پچھتانا بُری چیز ہے اور گاندھی جی پچھتانے
کے لئے کوئی کام کیوں کریں. سُکھی رہنے کے لئے گاندھی جی کی
نقل کرو، تب بولو 'گاندھی جی کی جے'! اور 'جے ہند'!

بھگوان دین

۲۳ ستمبر سنہ ۴۷

آبادی کی ادل بدل—

بُخار میں، نشے میں اور غُصے میں آدمی جتنی باتیں بکتا ہے
وہ بہت کر وہ ہوتی ہیں جن کو وہ جی سے کبھی نہیں چاہتا.
آج پاکستانیوں اور ہندستانیوں کو بُخار بھی چڑھا ہوا ہے،
نشہ بھی ہے اور غصّہ تو بے حد ہے ہی. ایسی حالت میں آبادی
کی ادل بدل کے لئے شور مچانے کے وہی معنے ہو سکتے ہیں
جو بُخار میں کسی ایسا بکنے والے کے ہوا کرتے ہیں. بُخار
والے کی باتیں تندرست آدمی کو ہنستے ہنستے سُن لینا چاہئے.
اُن سے نہ بھڑکنے کی ضرورت ہے، نہ اُن پر سوچ کرنے کی.
گھروں میں یہ روز ہی ہوتا ہے. نشے میں آئے دن کسی کے گھر برتن

नहीं टूटते और किसके यहाँ बच्चे नहीं पिटते. पर समझदार भाई बहन और माएं यह सब बरदाश्त कर लेती हैं, टूटी फूटी चीजों को समेट कर रख लेती हैं और जहाँ तक बने बहुत सी चीजों को टूटने फूटने से बचा लेती हैं. ठीक इसी तरह से आज की हवा में समझदारों का यही काम है कि वह अपने अपने हिस्से की आबादी को दूसरे हिस्से में जाने से रोकें. जो चल पड़े हों उन्हें समझाकर वापस लाएं. जो दूसरे मुल्क में पहुँच चुके हों उन्हें वापस बुलाने की सारी मुनासिब कोशिशें करें. इसी में उनका और सारी दुनिया का भला है.

दुनिया में कोई मुल्क ऐसा नहीं है जहाँ एक ही धरम के आदमी बसते हों या एक ही तरह के आदमी बसते हों यानी एक ही खयाल के. फिर कैसे हिन्दुस्तान और पाकिस्तान यह सोच रहे हैं कि वह अपने यहाँ एक ही धर्म के मानने वालों को बसाएंगे, और एक ही खयाल के आदमियों को जगह देंगे. मुसलमानों में खुद शिया, सुन्नी, नेचरी, आग़ा खानी, बहाई और न जाने कितने अलहदा अलहदा खयाल के लोग हैं. अगर यह सब पाकिस्तान में बस सकेंगे तो हिन्दुओं या सिक्खों के बसने में क्या दिक्कत हो सकती है. हिन्दुओं में तो पहले ही से जैन, बौद्ध, शाक्त, शैव, सिख, आर्य समाजी, राधा स्वामी न जाने कितने मत और खयाल वाले शामिल हैं. जब यह सब हिन्दुस्तान में बस सकते हैं तो मुसलमान क्यों नहीं बस सकते. बस सकने का सवाल नहीं, हिन्दुस्तान में हिन्दुओं की भलाई के लिये मुसलमानों का रहना जरूरी

نہیں ٹوٹتے اور کس کے یہاں بچے نہیں پٹتے۔ پر سمجھ دار بھائی بہن اور مائیں یہ سب برداشت کر لیتی ہیں، ٹوٹی پھوٹی چیزوں کو سمیٹ کر رکھ لیتی ہیں اور جہاں تک بنے بہت سی چیزوں کو ٹوٹنے پھوٹنے سے بچا لیتی ہیں. ٹھیک اسی طرح سے آج کی ہوا میں سمجھ داروں کا یہی کام ہے کہ وہ اپنے اپنے حصے کی آبادی کو دوسرے حصے میں جانے سے روکیں. جو چل پڑے ہوں انھیں سمجھا کر واپس لائیں. جو دوسرے ملک میں پہنچ چکے ہوں انھیں واپس بلانے کی ساری مناسب کوششیں کریں. اسی میں ان کا اور ساری دنیا کا بھلا ہے.

دنیا میں کوئی ملک ایسا نہیں ہے جہاں ایک ہی دھرم کے آدمی بستے ہوں یا ایک ہی طرح کے آدمی بستے ہوں یعنی ایک ہی خیال کے. پھر کیسے ہندستان اور پاکستان یہ سوچ رہے ہیں کہ وہ اپنے یہاں ایک ہی دھرم کے ماننے والوں کو بسائیں گے، اور ایک ہی خیال کے آدمیوں کو جگہ دیں گے. مسلمانوں میں خود شیعہ، سنی، نیچری، آغا خانی بہائی اور نہ جانے کتنے علحدہ علحدہ خیال کے لوگ ہیں. اگر یہ سب پاکستان میں بس سکیں گے تو ہندوؤں یا سکھوں کے بسنے میں کیا دقت ہو سکتی ہے. ہندوؤں میں تو پہلے ہی سے جین، بودھ، شاکت، شیو، سکھ، آریہ سماجی، رادھا سوامی نہ جانے کتنے مت اور خیال والے شامل ہیں. جب یہ سب ہندستان میں بس سکتے ہیں تو مسلمان کیوں نہیں بس سکتے. بس سکنے کا سوال نہیں، ہندستان میں ہندوؤں کی بھلائی کے لئے مسلمانوں کا رہنا ضروری ہے اور پاکستان میں اسلام کی بھلائی اسی میں ہے کہ وہ ہندوؤں

को अपने यहाँ बसने दे. जिस तरह हिन्दी और उर्दू लिखावटें हिन्दुस्तानी नदी को उबल कर फ़ारसी अरबी या संस्कृत की तरफ़ जाने से रोकने के लिये जरूरी हैं उसी तरह पाकिस्तान और हिन्दुस्तान में नेशनियत की नदी को उबल कर हिन्दू और मुसलमान पने में बदलने से रोकने के लिये हिन्दू और मुसलमानों का दोनों जगह बसना और रहना जरूरी है. नेशनियत नाम ही है कई धर्म वालों का मिल कर रहना और उस मुल्क की ख़ातिर क़ुरबान होने की क़ाबिलियत रखना. नेशनियत हमेशा से जमात की चीज़ रही है और जमात की ही चीज़ है. धरम हमेशा से एक आदमी की चीज़ रहा है और बढ़ कर जमात का भी बन जाता रहा है. बुद्ध पहले अकेले बौद्ध थे. महावीर अकेले ही जैन पर नेशन कभी एक आदमी की सुनने में नहीं आई. धरम मिल्कियत का क़ायल नहीं. नेशन मिल्कियत के बिना बनती नहीं. मोहम्मद साहब ने ख़ुदा के दरबार में जाने से पहले हज़रत आयशा से पूछ लिया था कि हमारे पास कुछ है तो नहीं. उन्होंने जवाब दिया कि-हाँ कुछ सिक्के हैं. इसलाम के पैग़म्बर ने उसी वक़्त हुकुम दिया कि उन सिक्कों को फ़ौरन ग़रीबों में बाँट दिया जावे ताकि वह ख़ुदा के सामने यह न कह सकें कि वह किसी चीज़ के मालिक भी थे. हिन्दू धरम भी ऐसी मिसालों से भरा पड़ा है. इसलिये धरम जमात की चीज़ नहीं हो सकती. वह तो एक एक आदमी का अलग ही रहेगा और इसी में सबका भला है. यूँ नेशनियत को अपने में सब धर्म वालों और सब ख़याल वालों को जगह देनी पड़ेगी. आज का जोश कम होने दीजिये पाकिस्तान को बुला

کو اپنے یہاں بسنے دے. جس طرح ہندی اور اُردو لکھاوٹیں ہندستانی ندی کو اُبل کر فارسی عربی یا سنسکرت کی طرف جانے سے روکنے کے لئے ضروری ہیں اُسی طرح پاکستان اور ہندستان میں نیشنیت کی ندی کو اُبل کر ہندو اور مسلمان پنے میں بدلنے سے روکنے کے لئے ہندو اور مسلمانوں کا دونوں جگہ بسنا اور رہنا ضروری ہے. نیشنیت نام ہی ہے کئی دھرم والوں کا مل کر رہنا اور اُس ملک کی خاطر قربان ہونے کی قابلیت رکھنا. نیشنیت ہمیشہ سے جماعت کی چیز رہی ہے اور جماعت کی ہی چیز ہے. دھرم ہمیشہ سے ایک آدمی کی چیز رہا ہے اور بڑھ کر جماعت کا بھی بن جاتا رہا ہے. بُدھ پہلے اکیلے بودھ تھے، مہابیر اکیلے ہی جین پر نیشن کبھی ایک آدمی کی سننے میں نہیں آئی. دھرم ملکیت کا قائل نہیں. نیشن ملکیت کے بنا بنتی نہیں. محمد صاحب نے خدا کے دربار میں جانے سے پہلے حضرت عائشہ سے پوچھ لیا تھا کہ ہمارے پاس کچھ ہے تو نہیں. اُنھوں نے جواب دیا کہ ہاں کچھ سکے ہیں. اسلام کے پیغمبر نے اُسی وقت حکم دیا کہ اُن سکّوں کو فوراً غریبوں میں بانٹ دیا جاوے تاکہ وہ خدا کے سامنے یہ نہ کہہ سکیں کہ وہ کسی چیز کے مالک بھی تھے. ہندو دھرم بھی ایسی مثالوں سے بھرا پڑا ہے. اِس لئے دھرم جماعت کی چیز نہیں ہو سکتی. وہ تو ایک ایک آدمی کا الگ ہی رہے گا اور اِسی میں سب کا بھلا ہے. یوں نیشنیت کو اپنے میں سب دھرم والوں اور سب خیال والوں کو جگہ دینی پڑے گی. آج کا جوش کم ہونے دیجئے پاکستان کو بُلا

बुला कर हिन्दुओं को बसाना पड़ेगा. हिन्दुस्तान को गान्धी जी के रहते शायद ऐसी ज़रूरत न पड़ेगी क्यों कि वह मुसलमानों को जाने ही नहीं देंगे.

आबादी बदल कर पाकिस्तान और हिंदुस्तान की नौसिखिया सरकारें शायद यह सोचती हों कि हम भाग जाने वालों की ज़मीन और माल की मालिक बन जायंगी और यों मालदार हो जायंगी पर वह यह नहीं सोचतीं कि वह ऐसा करने में ऐसा ही कर रही हैं जैसा उस शख़्स ने किया था जिसके पास सोने का अंडा देने वाली मुर्गी थी. कमाने वाले दिमाग़ों को मुल्क से बाहर निकाल कर मुल्क कुछ दिन के लिये ही मालदार बन सकता है हमेशा के लिये नहीं. कमाऊ पूत को घर से निकाल कर उसके भाई कुछ पैसा उससे ज़रूर छीन सकते हैं पर उसकी कमाई की क़ाबिलियत में से रत्ती भर नहीं पा सकते. मिसाल के लिये इंदौर के एक बड़े सेठ ने वहां के राजा से न बनने पर इंदौर से निकल जाना तय किया. तो राजा घबरा उठा और उसने उसको राज़ी करके अपने यहां बसाए रखना ही ठीक समझा नहीं तो इंदौर की शान हीउठ जाती. आबादी के अदल बदल का जोश ठंडा होने पर दोनों सरकारों को हाथ मल कर पछताना पड़ेगा. पर जो पछताने के लिये ही पैदा हुए हैं वह जोश में क्यों किसी की सुनने लगें.

आबादी के अदल बदल को रोकना जनता का पहला काम होना चाहिये. इसकी ख़ातिर उन्हें सरकारों से लड़ बैठना चाहिये.

بُلاکر ہندوؤں کو بسانا پڑے گا. ہندستان کو گاندھی جی کے رہتے شاید ایسی ضرورت نہ پڑے گی کیونکہ وہ مسلمانوں کو جانے ہی نہیں دیں گے.

آبادی بدل کر پاکستان اور ہندستان کی نوسکھیا سرکاریں شاید یہ سوچتی ہوں کہ ہم بھاگ جانے والوں کی زمین اور مال کی مالک بن جائیں گی اور یوں مال دار ہوجائیں گی پر وہ یہ نہیں سوچتیں کہ وہ ایسا کرنے میں ایسا ہی کر رہی ہیں جیسا اُس شخص نے کیا تھا جس کے پاس سونے کا انڈا دینے والی مُرغی تھی. کمانے والے دماغوں کو ملک سے باہر نکال کر ملک کچھ دن کے لئے ہی مالدار بن سکتا ہے ہمیشہ کے لئے نہیں. کماؤ پوت کو گھر سے نکال کر اُس کے بھائی کچھ پیسہ اُس سے ضرور چھین سکتے ہیں پر اُس کی کمائی کی قابلیت میں سے رتی بھر نہیں پا سکتے. مثال کے لئے اندور کے ایک بڑے سیٹھ نے وہاں کے راجا سے نہ بننے پر اندور سے نکل جانا طے کیا، تو راجا گھبرا اُٹھا اور اُس نے اُس کو راضی کرکے اپنے یہاں بسائے رکھنا ہی ٹھیک سمجھا نہیں تو اندور کی شان ہی اُٹھ جاتی. آبادی کے ادل بدل کا جوش ٹھنڈا ہونے پر دونوں سرکاروں کو ہاتھ مل کر پچھتانا پڑے گا. پر جو پچھتانے کے لئے ہی پیدا ہوئے ہیں وہ جوش میں کیوں کسی کی سُننے لگیں.

آبادی کے ادل بدل کو روکنا جنتا کا پہلا کام ہونا چاہئے. اِس کی خاطر اُنھیں سرکاروں سے لڑ بیٹھنا چاہئے. اُن کو بدل ڈالنا چاہئے.

होगी तो यह नौबत ही नहीं आयेगी क्योंकि वह आबादी के अदल बदल के लिये तय्यार ही नहीं होगी. आबादी की पूरी अदल बदल के बाद पाकिस्तान में शिया सुन्नी. मुग़ल पठान, सिन्धी बम्बइये झगड़े उठें या न उठें हिंदुस्तान में तो दस बरस के अन्दर ही सिक्ख आर्य समाजी, जैनी सनातनी झगड़े खड़े हो जायंगे. इन झगड़ों में सरकार या सरकारों का भला भले ही हो जनता की कोई भलाई नहीं.

आबादी की अदल बदल और इस मार काट और लूट पाट से जाने अन जाने दोनों सरकारों का एक माने में भला हो रहा है क्योंकि आज दोनों सरकारों की जनता इस झगड़े की वजह से जो मिलता है उसे ही खा कर रह जाती है और ज्यादा शोर नहीं मचाती. अगर आज यह झगड़े न होते तो पाकिस्तान और हिन्दुस्तान की जनता ने दोनों सरकारों का नाक में दम कर दिया होता. इन लड़ाई दंगों की वजह से एसेम्बलियां सरकार से किसी बात को पूछताछ ही नहीं कर सकतीं. जनता को खुद ही समझ कर अपने भले के लिये इस मार काट को बन्द कर देना चाहिये. और बाहर गई हुई आबादी को फ़ौरन बुला लेना चाहिये. पंजाबी ज़रा तो सोचें कि पच्छिमी बंगाल से आए हुए बंगाली मुसलमान पच्छिमी पंजाब में बस कर उनके ज्यादा नज़दीक हो सकते हैं या फिर वापस बुलाए हुए वह पंजाबी हिन्दू जो एक मरतबा उनके दोस्त और साथी रह चुके हैं. हिन्दुस्तानी ज़रा छाती पर हाथ धर कर बिचारें कि कैसे वह दोस्त और साथी मुसलमानों को निकाल कर और उनकी जगह अजनबी पंजाबियों को बसा कर खुश रह

ہوگی تو یہ نوبت ہی نہیں آئے گی کیونکہ وہ آبادی کے ادل بدل کے لئے تیار ہی نہیں ہوگی۔ آبادی کی پوری ادل بدل کے بعد پاکستان میں شیعہ سنی، مغل پٹھان، سندھی بمبئیے جھگڑے اٹھیں یا نہ اٹھیں ہندستان میں تو دس برس کے اندر ہی سکھ آریہ سماجی جینی سناتنی جھگڑے کھڑے ہوجائیں گے۔ ان جھگڑوں میں سرکار یا سرکاروں کا بھلا بھلے ہی ہو جنتا کی کوئی بھلائی نہیں۔

آبادی کی ادل بدل اور اس مار کاٹ اور لوٹ پاٹ سے جانے ان جانے دونوں سرکاروں کا ایک معنے میں بھلا ہو رہا ہے کیونکہ آج دونوں سرکاروں کی جنتا اس جھگڑے کی وجہ سے جو ملتا ہے اسے ہی کھاکر رہ جاتی ہے اور زیادہ شور نہیں مچاتی۔ اگر آج یہ جھگڑے نہ ہوتے تو پاکستان اور ہندستان کی جنتا نے دونوں سرکاروں کا ناک میں دم کردیا ہوتا۔ ان لڑائی دنگوں کی وجہ سے اسمبلیاں سرکار سے کسی بات کی پوچھ تاچھ ہی نہیں کرسکتیں۔ جنتا کو خود ہی سمجھ کر اپنے بھلے کے لئے اس مار کاٹ کو بند کردینا چاہیے، اور باہر گئی ہوئی آبادی کو فوراً بلا لینا چاہیے۔ پنجابی ذرا تو سوچیں کہ پچھمی بنگال سے آئے ہوئے بنگالی مسلمان پچھمی پنجاب میں بس کر ان کے زیادہ نزدیک ہوسکتے ہیں یا پھر واپس بلائے ہوئے وہ پنجابی ہندو جو ایک مرتبہ ان کے دوست اور ساتھی رہ چکے ہیں۔ ہندستانی ذرا چھاتی پر ہاتھ دھر کر بچاریں کہ کیسے وہ دوست اور ساتھی مسلمانوں کو نکال کر اور ان کی جگہ اجنبی پنجابیوں کو بسا کر خوش رہ

सकते हैं. आज हम जोश में हैं तब भी पंजाब से बच कर भागे हुओं को यहाँ हमेशा के लिये बसा कर हम ज्यादा खुश नहीं हैं. जोश कम होने पर तो हम सर पकड़ कर रोएंगे. उनको हमारे साथ घुलने मिलने में बरसों ही लगेंगे और तब तक तो सब को अक़ल आ ही जायगी और सब अपनी अपनी जगह लौट चुकेंगे. मतलब यह है कि इस वक़्त जो यह अदल बदल हो रही है वह बिल्कुल ग़लत है और इस ग़लती से जितनी जल्दी बचा जाए उतना ही ठीक.

अगर यह आबादी की अदल बदल, मार काट और लूट पाट का सिलसिला छै महीने भी और चलता रहा तो फिर पाकिस्तानी और हिन्दुस्तानी यह अच्छी तरह समझ लें कि वह आज़ादी की देवी जिन्होंने उनको अपने पट खोल कर दर्शन दिये हैं अपना दरवाज़ा बन्द कर लेंगी और गुलामी रानी का फिर से राज क़ायम हो जावेगा. कौन समझदार है जो ऐसा चाहेगा. पर समझदारी अब है कहाँ ? जोश के वह पास नहीं फटक सकती. दोनों सरकारें, पाकिस्तान और हिन्दुस्तान की जनता ज़रा जोश कम करें तो गांधी जी की बात ही नहीं समझ में आने लगेगी, वह सबके सब उन्हीं के सुर में सुर मिला कर पुकारने लगेंगे—हमें गुलामी नहीं चाहिये इसलिये हम न आबादी का अदल बदल चाहते हैं और न मार पीट को ही जारी रखना चाहते हैं.

ज़रा जोश कम कीजिये, मार काट, लूट पाट और आबादी की अदल बदल कड़वी लगने लगेगी और नशा उतरने पर ज़हर ... होने लगेगी

سکتے ہیں۔ آج ہم جوش میں ہیں تب بھی پنجاب سے بچ کر بھاگے ہوؤں کو یہاں ہمیشہ کے لئے بسا کر ہم زیادہ خوش نہیں ہیں۔ جوش کم ہونے پر تو ہم سر پکڑ کر روئیں گے۔ اُن کو ہمارے ساتھ گھلنے ملنے میں برسوں ہی لگیں گے اور تب تک تو سب کو عقل آ ہی جائے گی اور سب اپنی اپنی جگہ لوٹ چکیں گے۔ مطلب یہ ہے کہ اس وقت جو یہ اَدل بدل ہو رہی ہے وہ بالکل غلط ہے اور اس غلطی سے جتنی جلدی بچا جائے اُتنا ہی ٹھیک۔

اگر یہ آبادی کی اَدل بدل، مار کاٹ اور لوٹ پاٹ کا سلسلہ چھ مہینے بھی اور چلتا رہا تو پھر پاکستانی اور ہندستانی یہ اچھی طرح سمجھ لیں کہ وہ آزادی کی دیوی جنھوں نے اُن کو اپنے پٹ کھول کر درشن دئے ہیں اپنا دروازہ بند کر لیں گی اور غلامی رانی کا پھر سے راج قایم ہو جاوے گا۔ کون سمجھدار ہے جو ایسا چاہے گا۔ پر سمجھداری اب ہے کہاں؟ جوش کے وہ پاس نہیں پھٹک سکتی۔ دونوں سرکاریں، پاکستان اور ہندستان کی جنتا ذرا جوش کم کریں تو گاندھی جی کی بات ہی نہیں سمجھ میں آنے لگے گی، وہ سب کے سب انھیں کے سُر میں سُر ملا کر پکارنے لگیں گے — ہمیں غلامی نہیں چاہئے اِس لئے ہم نہ آبادی کا اَدل بدل چاہتے ہیں اور نہ مار پیٹ کو ہی جاری رکھنا چاہتے ہیں۔

ذرا جوش کم کیجئے، مارکاٹ، لوٹ پاٹ اور آبادی کی اَدل بدل کڑوی لگنے لگے گی اور نشہ اُترنے پر زہر معلوم

पछताने से पहले ही चिड़ियों को खेत चुगने से रोको.

—भगवान दीन

२३—९—४७

निन्यानवे की क़ुरबानी—

यू० पी० के बड़े वज़ीर ही नहीं यू० पी० की जनता भी आज किसी किसी मुसलमान के लिये निन्यानवे आदमियों की क़ुरबानी करने के लिये तैयार है. निन्यानवे ही नहीं. किसी किसी के लिये जनता नौ सौ निन्यानवे और नौ हज़ार नौ सौ निन्यानवे तक की क़ुरबानी करने के लिये तैयार हो सकती है. मिसाल के लिये सरहद के गांधी ख़ान अब्दुल ग़फ्फ़ार ख़ां या कांगरेस के कई साल रहे हुए सदर और आज कल के तालीमी वज़ीर मौलाना अबुलकलाम आज़ाद. यह और ऐसी ही और बहुत सी हस्तियां मुल्क में आज मौजूद हैं जिनके लिये हिन्दू जनता को हज़ारों की तादाद में क़ुरबान हो जाने के लिये किसी सूबे के वज़ीर आज़म की तक़रीर की ज़रूरत नहीं पड़ेगी. फिर न जाने क्यों निन्यानवे की बलि को लेकर सूबे में एक नया आन्दोलन खड़ा किया जा रहा है.

एक मुसलमान के लिये निन्यानवे की बलि देने की बात न जाने लीडर और अमृत बाज़ार पत्रिका दोनों ही अख़बारों ने क्यों पंत जी से न कहलवाकर सिर्फ़ अपनी क़लम से सुर्ख़ी में ज़ाहिर की है. इसमें क्या भेद है हम कुछ समझ नहीं पा रहे हैं. फिर भी हम यह मान कर चलते हैं कि यह लफ़्ज़ सचमुच पंत जी के मुंह से निकले.

(३९९)

پچھتانے سے پہلے ہی چڑیوں کو کھیت چگنے سے روکو.

—بھگوان دین

۲۳—۹—۴۷

ننانوے کی قربانی—

یو. پی. کے بڑے وزیر ہی نہیں یو. پی. کی جنتا بھی آج کسی کسی مسلمان کے لئے ننانوے آدمیوں کی قربانی کرنے کے لئے تیار ہے. ننانوے ہی نہیں، کسی کسی کے لئے جنتا نو سو اور نو ہزار نو سو ننانوے تک کی قربانی کرنے کے لئے تیار ہو سکتی ہے. مثال کے لئے سرحد کے گاندھی خان عبدالغفار خان یا کانگریس کے کئی سال رہے ہوئے صدر اور آج کل کے تعلیمی وزیر مولانا ابوالکلام آزاد. یہ اور ایسی ہی اور بہت سی ہستیاں ملک میں آج موجود ہیں جن کے لئے ہندو جنتا کو ہزاروں کی تعداد میں قربان ہو جانے کے لئے کسی صوبے کے وزیر اعظم کی تقریر کی ضرورت نہیں پڑے گی. پھر نہ جانے کیوں ننانوے کی بلی کو لے کر صوبے میں ایک اندولن کھڑا کیا جا رہا ہے.

ایک مسلمان کے لئے ننانوے کی بلی دینے کی بات نہ جانے لیڈر اور امرت بازار پتریکا دونوں ہی اخباروں نے کیوں پنت جی سے نہ کہلوا کر صرف اپنی قلم سے سرخی میں ظاہر کی ہے. اس میں کیا بھید ہے ہم کچھ سمجھ نہیں پا رہے ہیں. پھر بھی ہم یہ مان کر چلتے ہیں کہ یہ لفظ سچ مچ پنت جی کے منہ سے نکلے.

(۳۹۹)

(१) इन लफ़्ज़ों के यह माने लगाना कि किसी चोर, उचक्के, ज़ानी, बदमाश या ख़ून से हाथ रँगे मुसलमान की जान बचाने के लिये पंत जी किन्हीं निन्यानवे बेगुनाह भले हिन्दुओं को क़ुरबान कर देंगे, पंत जी के साथ ही ग़ैरइंसाफ़ी करना नहीं है बल्कि अपनी पढ़ाई लिखाई पर भी पानी फेरना है—और भाषन देने वाले की भाषा को न समझने का सबूत देना है.

(२) या इन लफ़्ज़ों के यह मानी लगाना कि किसी ऐरे ग़ैरे नत्थू ख़ैरे मुसलमान की जान बचाने के लिये पंत जी किन्हीं अच्छे निन्यानवे हिन्दुओं को क़ुरबान कर देंगे, अपनी समझ का दिवाला पीटना होगा.

(३) या इन लफ़्ज़ों के यह मानी लगाना कि किसी एक हिन्दू के ज़रिये एक मुसलमान के मारे जाने पर उस एक मारने वाले के पकड़ लिये जाने पर भी किन्हीं और अट्ठानवे हिन्दुओं को ढूँढ कर उस एक मुसलमान की ख़ातिर फांसी के तख़्ते पर चढ़ा दिया जायगा, यह साबित करना है कि माने लगाने वाला न बोली के तरीक़ों से वाक़िफ़ है और न यह ही समझता है कि बोलने वाला असल में कहना क्या चाहता है.

इन लफ़्ज़ों के ज्यों के त्यों माने निकालना या तो बोलने वाले के साथ अपने पुराने कीने को बाहर निकालना है या जान बूझ कर जनता को भड़काना है. हम यह बेशक मानते हैं कि पंतजी के अगर यही लफ़्ज़ हैं तो वह राजनेतापने की तराज़ू पर कुछ हलके बेशक उतरते हैं. पर सूबे का बड़ा वज़ीर कोरा राजनेता ही नहीं होता

... है और पंतजी ने अगर यह लफ़्ज़

(۱) اِن لفظوں کے یہ معنے لگانا کہ کسی چور، اُچکّے، زانی، بدمعاش یا خون سے ہاتھ رنگے مسلمان کی جان بچانے کے لئے پنت جی کنہیں ننانوے بےگناہ بھلے ہندوؤں کو قربان کر دیں گے، پنت جی کے ساتھ ہی غیر انصافی کرنا نہیں ہے بلکہ اپنی پڑھائی لکھائی پر بھی پانی پھیرنا ہے اور بھاشن دینے والے کی بھاشا کو نہ سمجھنے کا ثبوت دینا ہے۔

(۲) یا اِن لفظوں کے یہ معنی لگانا کہ کسی ایرے غیرے نتھو خیرے مسلمان کی جان بچانے کے لئے پنت جی کنہیں اچھے ننانوے ہندوؤں کو قربان کر دیں گے، اپنی سمجھ کا دوالہ پیٹنا ہوگا۔

(۳) یا اِن لفظوں کے یہ معنی لگانا کہ کسی ایک ہندو کے ذریعے ایک مسلمان کے مارے جانے پر اُس ایک مارنے والے کے پکڑ لئے جانے پر بھی کنہیں اور اٹھانوے ہندوؤں کو ڈھونڈھ کر اُس ایک مسلمان کی خاطر پھانسی کے تختے پر چڑھا دیا جائے گا، یہ ثابت کرنا ہے کہ معنے لگانے والا نہ بولی کے طریقوں سے واقف ہے اور نہ یہ ہی سمجھتا ہے کہ بولنے والا اصل میں کہنا کیا چاہتا ہے۔

اِن لفظوں کے جیوں کے تیوں معنے نکالنا یا تو بولنے والے کے ساتھ اپنے پُرانے کینے کو باہر نکالنا ہے یا جان بوجھ کر جنتا کو بھڑکانا ہے۔ ہم یہ بےشک مانتے ہیں کہ پنت جی کے اگر یہی لفظ ہیں تو وہ راج نیتاپنے کی ترازو پر کچھ ہلکے بےشک اُترتے ہیں۔ پر صوبے کا بڑا وزیر کورا راج نیتا ہی نہیں ...

कहे हैं तो उसी जनरली के नाते कहे हैं. इसका मतलब सिर्फ़ इतना और इतना ही है कि वह हिन्दू जो समझे नासमझे सरकार को मटिया मेट करने पर उतारू हो गए हैं होश में आजायं और समझलें कि वह किसी बेगुनाह मुसलमान की जान नहीं ले सकते और किसी गुनहगार की भी जान लेने में क़ानून की हदों से बाहर नहीं जा सकते.

पंतजी सब हिन्दुओं पर नहीं सिर्फ़ बाग़ी हिन्दुओं के दिल पर यह नक़्श कर देना चाहते हैं कि वह उनका मुक़ाबला करने के लिये हर तरह तैयार हैं. असल में निन्यानवे हिन्दुओं की जो भीड़ किसी एक मुसलमान की जान लेना चाहती है वह इस लिये गोली से नहीं उड़ाई जायगी कि वह एक ऐसे आदमी की जान ले रही है जो उस फ़िरक़े से ताल्लुक़ रखता है जिसकी तादाद सूबे में जान लेने वाले फ़िरक़े से बहुत कम है. बल्कि वह निन्यानवे इसलिये सज़ा के क़ाबिल हैं क्योंकि वह सरकार के खिलाफ़ सरकारी क़ानूनों को तोड़कर अमन में खलल डालना चाहते हैं और बग़ावत का झंडा खड़ा करना चाहते हैं. पंतजी की तक़रीर एक जनरल की हैसियत से मौक़े को हो सकती है. सूबे भर में जिस तरह हवा बिगड़ी हुई है उसे क़ाबू में रखने के लिये कुछ सख़्ती की ज़रूरत है. अगर ऐसे मौक़े का सरकार ने कभी फ़ायदा उठा ही लिया तो वह सिर्फ़ मुसलमानों की खिदमत नहीं, हिन्दुओं की भी सच्ची ख़िदमत कर सकेगी. वह जहां एक मुसलमान के कट जाने पर निन्यानवे को क़ुरबान कर रही है वहां वह यह भी करती है कि एक मुसलमान को बचा कर किसी दूसरी जगह सैकड़ों

کہے ہیں تو اُسی جنرلی کے ناتے کہے ہیں۔ اس کا مطلب صرف اتنا اور اتنا ہی ہے کہ وہ ہندو جو سمجھے ناسمجھے سرکار کو ملیا میٹ کرنے پر اُتارو ہوگئے ہیں ہوش میں آجائیں اور سمجھ لیں کہ وہ کسی بے گناہ مسلمان کی جان نہیں لے سکتے اور کسی گناہ گار کی بھی جان لینے میں قانون کی حدوں سے باہر نہیں جاسکتے۔

پنت جی سب ہندوؤں پر نہیں صرف باغی ہندوؤں کے دل پر یہ نقش کردینا چاہتے ہیں کہ وہ اُن کا مقابلہ کرنے کے لئے ہر طرح تیار ہیں۔ اصل میں ننانوے ہندوؤں کی جو بھیڑ کسی ایک مسلمان کی جان لینا چاہتی ہو وہ اِس لئے گولی سے نہیں اُڑائی جائے گی کہ وہ ایک ایسے آدمی کی جان لے رہی ہو جو اُس فرقے سے تعلق رکھتا ہو جس کی تعداد صوبے میں جان لینے والے فرقے سے بہت کم ہو بلکہ وہ ننانوے اِس لئے سزا کے قابل ہیں کیونکہ وہ سرکار کے خلاف سرکاری قانونوں کو توڑ کر امن میں خلل ڈالنا چاہتے ہیں اور بغاوت کا جھنڈا کھڑا کرنا چاہتے ہیں۔ پنت جی کی تقریر ایک جنرل کی حیثیت سے موقع کی ہوسکتی ہے۔ صوبے بھر میں جس طرح ہوا بگڑی ہوئی ہے اُسے قابو میں رکھنے کے لئے کچھ سختی کی ضرورت ہے۔ اگر ایسے موقع کا سرکار نے کبھی فائدہ اُٹھا ہی لیا تو وہ صرف مسلمانوں کی خدمت نہیں، ہندوؤں کی بھی سچی خدمت کرسکے گی۔ وہ جہاں ایک مسلمان کے کٹ جانے پر ننانوے کو قربان کر رہی ہو وہاں وہ یہ بھی کرتی ہو کہ ایک مسلمان کو بچاکر کسی دوسری جگہ سیکڑوں

नहीं हजारों हिन्दुओं को बचा लेती हैं और करोड़ों को फिर गुलामी के फन्दे में फंसने से बचाती है. हमें पूरा भरोसा है कि यू० पी० सरकार को कभी ऐसा करने के लिये मजबूर न होना पड़ेगा क्योंकि सूबे के हिन्दू कह भले ही कुछ लें पर इतने नासमझ नहीं हैं कि वह ऐसी गलती करके सिर्फ अपने सूबे को ही नहीं सारे हिन्दुस्तान को आफत में डालना मुनासिब समझें.

सूबे की जनता से हमारी यह ही दरख्वास्त है कि वह पंतजी के लफ्ज़ों के वह ही माने लगा ले जो उनके पीछे पीछे हैं न कि वह जो खींच तान कर उनमें से पैदा किये जा सकते हैं.

जहां तक हमारी अक़्ल काम करती है हमें ऐसा मालूम होता है कि पंतजी ने शायद यह कहा होगा कि निन्यानवे हिन्दुओं को उस एक बेगुनाह मुसलमान की जान बचाने के लिये कुरबान हो जाना चाहिये जो उनके मुहल्ले या उनके बीच में रहता है और इस तरह हिन्दू बहादुरी की लाज रखना चाहिये. कोई रिपोर्टर निन्यानवे की कुरबानी ले उड़ा और राई को पर्वत बना दिया.

—भगवान दीन

१९ सितम्बर '४७

इस नोट के लिखे जाने के दूसरे दिन अखबारों में खबर छपी कि पंतजी ने ठीक वही बात कही थी जो इस नोट के आखीर में बताई गई है—एडिटर

जान बचा कर भागे हुओं से--

जान बचा कर भागना बहादुरों के लिये भी हमेशा बुरी बात नहीं होती. शेर भी जिसकी बहादुरी की मिसाल इनसान को

نہیں ہزاروں ہندوؤں کو بچا لیتی ہے اور کروڑوں کو پھر غلامی کے پھندے میں پھنسنے سے بچاتی ہے۔ ہمیں پورا بھروسا ہے کہ یو۔ پی۔ سرکار کو کبھی ایسا کرنے کے لئے مجبور نہ ہونا پڑے گا کیونکہ صوبے کے ہندو کہہ بھلے ہی کچھ لیں پر اتنے ناسمجھ نہیں ہیں کہ وہ ایسی غلطی کرکے صرف اپنے صوبے کو ہی نہیں سارے ہندستان کو آفت میں ڈالنا مناسب سمجھیں۔

صوبے کی جنتا سے ہماری یہ ہی درخواست ہے کہ وہ پنت جی کے لفظوں کے وہ ہی معنے لگا لے جو اُن کے پیچھے پیچھے ہیں نہ کہ وہ جو کھینچ تان کر اُس میں سے پیدا کئے جا سکتے ہیں۔

جہاں تک ہماری عقل کام کرتی ہے ہمیں ایسا معلوم ہوتا ہے کہ پنت جی نے شاید یہ کہا ہوگا کہ ننانوے ہندوؤں کو اُس ایک بے گناہ مسلمان کی جان بچانے کے لئے قربان ہو جانا چاہئے جو اُن کے محلے یا اُن کے بیچ میں رہتا ہے اور اِس طرح ہندو بہادری کی لاج رکھنا چاہئے۔ کوئی رپورٹر ننانوے کی قربانی لے اُڑا اور رائی کو پربت بنا دیا۔

—بھگوان دین

۱۹ ستمبر سنہ ۴۷ء

اِس نوٹ کے لکھے جانے کے دوسرے دن اخباروں میں خبر چھپی کہ پنت جی نے ٹھیک وہی بات کہی تھی جو اِس نوٹ کے آخر میں بتائی گئی ہے— ایڈیٹر

جان بچا کر بھاگے ہوؤں سے—

جان بچا کر بھاگنا بہادروں کے لئے بھی ہمیشہ بُری بات نہیں ہوتی۔ شیر بھی جس کی بہادری کی مثال

दी जाती है. कभी कभी जान बचा कर भागता है. जंगल में आग लग जाने पर सभी जानवर जान बचा कर भागते हैं. आदमी भी भागते हैं. कृष्ण भगवान भी मथुरा से द्वारका भागे थे. पर आज तो बड़े बड़े बहादुर बड़े प्रेम से उनका 'रणछोड़' नाम लेकर बहादुरी का घूँट पीते हैं. कायरपन भागने में नहीं है. कायरपन मन की एक हालत का नाम है. गीदड़ भी अगर डर कर खड़ा का खड़ा रह जाय तो शेर का नाम नहीं पायगा. मतलब यह कि डटे रहकर मर जाने में ही बहादुरी नहीं है, बहादुरी है निडर होकर और जानबूझ कर औरों को और अपनी जान बचाने में, फिर चाहे वह डट कर बचाई जाय या भाग कर बचाई जाय. बहादुरी मन में रहती है. पैरों में नहीं और हाथों में भी नहीं. जिसके सिर्फ हाथ पाँव बहादुर हैं यानी जो ख़ूब मारता काटता और भाग जाता है वह कायर है. जिसका मन बहादुर है वह सच्चा बहादुर है. वह मारे काटेगा भी और भागेगा भी. यह हुई उसूल की बात. इसी उसूल की कसौटी पर कायर और बहादुर के दीन धरम की जाँच होती है.

(३०४)

पंजाब से जान बचा कर भागे हुओं में शेर भी हैं, गाय भी हैं और गीदड़ भी. वहाँ तो आग लग गई थी. सभी को भागना चाहिये था. और भाग कर जान बचाली, सबने ठीक किया. पर यहाँ पहुँच कर क़दम क़दम पर उनकी जाँच हो रही है. शेर अपने कारनामें दिखा रहे हैं. गाय अपने और गीदड़ अपने. शेर बचकर भागेगा पर खिसियाएगा नहीं, गीदड़ पर कभी थाप नहीं जमाएगा. गीदड़ का पेट फाड़ कर वह कभी अपने पंजे को नापाक नहीं करेगा और दूसरे जानवर का मारा हुआ शिकार भी नहीं खायगा. चूहा

دی جاتی ہے، کبھی کبھی جان بچاکر بھاگتا ہے. جنگل میں آگ لگ جانے پر سبھی جانور جان بچاکر بھاگتے ہیں. آدمی بھی بھاگتے ہیں. کرشن بھگوان بھی متھرا سے دوارکا بھاگے تھے، پر آج تو بڑے بڑے بہادر بڑے پریم سے اُن کا 'رن چھوڑ' نام لے کر بہادری کا گھونٹ پیتے ہیں. کایرپن بھاگنے میں نہیں ہے. کایرپن من کی ایک حالت کا نام ہے. گیدڑ بھی اگر ڈر کر کھڑے کا کھڑا رہ جائے تو شیر کا نام نہیں پائے گا. مطلب یہ ہے کہ ڈٹے رہ کر مرجانے میں ہی بہادری نہیں ہے، بہادری ہے نڈر ہوکر اور جان بوجھ کر اَوروں کی اور اپنی جان بچانے میں، پھر چاہے یہ ڈٹ کر بچائی جائے یا بھاگ کر بچائی جائے. بہادری من میں رہتی ہے، پیروں میں نہیں اور ہاتھوں میں بھی نہیں. جس کے صرف ہاتھ پاؤں بہادر ہیں یعنی جو خوب مارتا کاٹتا اور بھاگ جاتا ہے وہ کایر ہے. جس کا من بہادر ہے وہ سچا بہادر ہے. وہ مارے کاٹے گا بھی اور بھاگے گا بھی. یہ ہوئی اُصول کی بات. اِسی اُصول کی کسوٹی پر کایر اور بہادر کے دین دھرم کی جانچ ہوتی ہے.

پنجاب سے جان بچاکر بھاگے ہوؤں میں شیر بھی ہیں، گائے بھی ہیں اور گیدڑ بھی. وہاں تو آگ لگ گئی تھی سبھی کو بھاگنا چاہئے تھا. اور بھاگ کر جان بچالی، سب نے ٹھیک کیا. پر یہاں پہنچ کر قدم قدم پر اُن کی جانچ ہو رہی ہے. شیر اپنے کارنامے دکھا رہے ہیں، گائے اپنے اور گیدڑ اپنے. شیر بچ کر بھاگے گا پر کھسیائے گا نہیں، گیدڑ پر کبھی تھاپ نہیں جمائے گا. گیدڑ کا پیٹ پھاڑ کر وہ کبھی اپنے پنجے کو ناپاک نہیں کرے گا اور دوسرے جانور کا مارا ہوا شکار بھی نہیں کھائے گا. چوہا

उसकी पीठ पर घूमे. उसके कान में घुसे तो भी वह नाराज़ होकर अपनी डाढ़ नहीं चमकाएगा. उसका बहादुर मन उसके साथ है और उसको कोई धक्का नहीं पहुँचा. पाँव का काम ही भागना है. चाहे आगे भागें चाहे पीछे. वही पाँव बहादुरों के मन के हुकुम से भागते हैं और वही पाँव कायरों के मन को भगा कर ले जाते हैं और वही पाँव भोले भाले आदमियों के मन को बहादुरों के पीछे पीछे भागने को कहते हैं और ख़ुद भी भागते हैं.

पाकिस्तान से भाग कर यहाँ जो सच्चे बहादुर आए हैं वह ज्यादा-तर सिक्ख हैं. वह सभी जैसे बहादुर हैं वैसे ही तलवार के धनी भी हैं. पहले हम उन्हीं से दो बातें करना चाहते हैं.

(४०४)

हमारे सिक्ख बहादुरो, इसमें शक नहीं कि तुम्हारे साथ ऐसे ज़ुल्म हुए हैं जिन को आम आदमी बरदाश्त नहीं कर सकता पर तुम्हारी गिनती आम अदमियों में नहीं है. तुम तो गुरू के पाँच प्यारों में से हो. तुममें तो बेहद बरदाश्त होनी चाहिये. इसके यह माने हरगिज़ नहीं हैं कि तुम ज़ालिम का ज़ुल्म सहे जाओ. ज़ुल्म की जड़ काटना तो बहादुर का काम है और साधू और धर्मात्मा सभी का का काम है और ज़ुल्म की जड़ काटने में तो गान्धी जी सबसे ज्यादा लगे हुए हैं. पर ज़ालिम के ज़ुल्म की नक़ल कर बैठना न बहादुरी है न धर्म. यह ठीक है कि तलवार के धनी होते हुए तुम्हारे बाज़ू लड़ने के लिये फड़कते होंगे तो उनके लिये तो आज हिन्दुस्तान में बेहद काम पड़ा है. जिसकी जान ली जा रही हो उसके बचाने में अपने बाज़ू से काम लो. जिसको रेल से फेंका जा रहा हो उसको अपने बाज़ुओं की ताक़त से हरगिज़ न फिंकने दो,

اُس کی پیٹھ پر گھومے، اُسکے کان میں گھسے تو بھی وہ ناراض ہوکر اپنی ڈاڑھ نہیں چمکائے گا۔ اُس کا بہادر من اُس کے ساتھ ہے اور اُس کو کوئی دھکا نہیں پہنچا۔ پاؤں کا کام ہی بھاگنا ہے، چاہے آگے بھاگیں چاہے پیچھے۔ وہی پاؤں بہادروں کے من کے حکم سے بھاگتے ہیں اور وہی پاؤں کایروں کے من کو بھگاکر لے جاتے ہیں اور وہی پاؤں بھولے بھالے آدمیوں کے من کو بہادروں کے پیچھے پیچھے بھاگنے کو کہتے ہیں اور خود بھی بھاگتے ہیں۔

پاکستان سے بھاگ کر یہاں جو سچے بہادر آئے ہیں وہ زیادہ تر سکھ ہیں۔ وہ سبھی جیسے بہادر ہیں ویسے ہی تلوار کے دھنی بھی ہیں۔ پہلے ہم انھیں سے دو باتیں کرنا چاہتے ہیں۔

(۴۰۴)

ہمارے سکھ بہادرو، اس میں شک نہیں کہ تمھارے ساتھ ایسے ظلم ہوئے ہیں جن کو عام آدمی برداشت نہیں کرسکتا۔ پر تمھاری گنتی عام آدمیوں میں نہیں ہے۔ تم تو گرو کے پانچ پیاروں میں سے ہو۔ تم میں تو بے حد برداشت ہونی چاہئے۔ اس کے یہ معنے ہرگز نہیں ہیں کہ تم ظالم کا ظلم سہے جاؤ۔ ظلم کی جڑ کاٹنا تو بہادر کا کام ہے اور سادھو اور دھرماتما سبھی کا کام ہے اور ظلم کی جڑ کاٹنے میں تو گاندھی جی سب سے زیادہ لگے ہوئے ہیں۔ پر ظالم کے ظلم کی نقل کر بیٹھنا نہ بہادری ہے نہ دھرم۔ یہ ٹھیک ہے کہ تلوار کے دھنی ہوتے ہوئے تمھارے بازو لڑنے کے لئے پھڑکتے ہوں گے تو اُن کے لئے تو آج ہندستان میں بے حد کام پڑا ہے۔ جس کی جان لی جا رہی ہو اُس کے بچانے میں اپنے بازو سے کام لو۔ جس کو ریل سے پھینکا جا رہا ہو اُس کو اپنے بازوؤں کی طاقت سے ہرگز نہ پھینکنے دو،

जिस औरत को कोई भगाए लिये जा रहा हो या उसकी इज्ज़त पर हमला कर रहा हो तो उस पर अपने बाज़ुओं की ताक़त की आज़माइश करो. आग लगाने वालों को पकड़ पकड़ कर लाओ और अगर माफ़ न कर सको तो सज़ा के लिये सरकार के सुपुर्द करो. मतलब यह कि अपनी तलवार को हिंसा का औज़ार न बनाओ, अहिंसा का औज़ार बनाओ. औरों की और अपनी जान बचाने में उठी तलवार की हिमायत क़ानून भी करता है और धर्म भी. और वह तलवार अहिंसा का औज़ार ही समझी जाती है. इसमें शक नहीं कि इस धर्म को तुम समझते आए हो और समझते भी हो और हम समझते हैं कि आगे भी समझते रहोगे. पर इस वक़्त तुम्हारा यह कहना कि—इस ज़ोर की उथल पुथल में यह धर्म हमसे नहीं निभ रहा है और नहीं निभ सकता, हम पागल से हो गए हैं, न आगा पीछा देखते हैं न भला बुरा देखते हैं. हम समझाए नहीं समझ सकते. हम धर्म को ख़ूब समझते हैं पर इस वक़्त हम क्या करें. हम से रहा ही नहीं जाता—इन सब का यह जवाब है कि धर्म तो पक्का धर्म वही है जो मुसीबत के वक़्त और आग में पड़ कर भी खरा उतरे. मामूली हालत में तो धर्म कोई भी निभा लेता है. आग में पड़ कर जो धर्म निभाए वही बहादुर और वही सूर. सच्चे बहादुर धर्म कभी हाथ से नहीं खोते. शेर पिंजड़े में उमर बिता देगा पर बैल की तरह आदमी की गाड़ी कभी नहीं खींचेगा. तुम भी सच्चे बहादुर के नाते ज़ुल्म सहोगे. करोगे नहीं. तुम अपने बच्चे के मारने वाले के बच्चे को नहीं मारोगे. तुम्हारा सच्चा गुस्सा मारने वाले पर उतरेगा. कुत्ता और गीदड़ उस बाँस को

(४०४)

جس عورت کو کوئی بھگائے لئے جا رہا ہو یا اُس کی عزت پر حملہ کر رہا ہو تو اُس پر اپنے بازوؤں کی طاقت کی آزمائش کرو۔ آگ لگانے والوں کو پکڑ پکڑ کر لاؤ اور اگر معاف نہ کر سکو تو سزا کے لئے سرکار کے سپرد کرو۔ مطلب یہ کہ اپنی تلوار کو ہنسا کا اوزار نہ بناؤ، اہنسا کا اوزار بناؤ۔ اوروں کی اور اپنی جان بچانے میں اُٹھی تلوار کی حمایت قانون بھی کرتا ہے اور دھرم بھی۔ اور وہ تلوار اہنسا کا اوزار ہی سمجھی جاتی ہے۔ اس میں شک نہیں کہ اس دھرم کو تم سمجھتے آئے ہو اور سمجھتے بھی ہو اور ہم سمجھتے ہیں کہ آگے بھی سمجھتے رہوگے۔ پر اس وقت تمہارا یہ کہنا کہ — اس زور کی اُتھل پتھل میں یہ دھرم ہم سے نہیں نبھ رہا ہے اور نہیں نبھ سکتا، ہم پاگل سے ہو گئے ہیں، نہ آگا پیچھا دیکھتے ہیں نہ بھلا بُرا دیکھتے ہیں، ہم سمجھائے نہیں سمجھ سکتے، ہم دھرم کو خوب سمجھتے ہیں پر اس وقت ہم کیا کریں، ہم سے رہا ہی نہیں جاتا — ان سب کا یہ جواب ہے کہ دھرم تو پکا دھرم وہی ہے جو مصیبت کے وقت اور آگ میں پڑ کر بھی کھرا اُترے۔ معمولی حالت میں تو دھرم کوئی بھی نبھا لیتا ہے۔ آگ میں پڑ کر جو دھرم نبھائے وہی بہادر اور وہی سُور۔ سچے بہادر دھرم کبھی ہاتھ سے نہیں کھوتے۔ شیر پنجڑے میں عمر بتا دے گا پر بیل کی طرح آدمی کی گاڑی کبھی نہیں کھینچے گا۔ تم بھی سچے بہادر کے ناتے ظلم سہوگے، کروگے نہیں۔ تم اپنے بچے کے مارنے والے کے بچے کو نہیں مارو گے۔ تمہارا سچا غصہ مارنے والے پر اُترے گا۔ کتا اور گیدڑ اُس بانس کو

(۴۰۵)

कभी कभी चबा बैठते हैं जिससे वह पीटे गए हों पर शेर हमेशा बाँस चलाने वाले पर हमला करता है. मतलब यह कि बहादुरी जिसके मन की खासियत हो गई है वह कभी बच्चों को सता नहीं सकता. लड़कियों को उड़ा नहीं सकता. औरतों को बेइज्ज़त नहीं कर सकता. उनको मार डालने की बात तो एक तरफ़.

हमारे सिख बहादुरो. आज कल की हवा में तुम को यह सिखाना तो बेकार है कि इस आपसी मारकाट का नतीजा ज़रूरी तौर से गुलामी है. और गुलामी भी एक की नहीं. दो की नहीं. दस की नहीं, बल्कि सारे मुल्क की. और उसको तो तुम बरदाश्त ही कैसे कर सकते हो. और अगर वह तुम्हारे किसी जल्दबाज़ काम के ज़रिये आए तो वह सिर्फ़ तुम्हें ही बदनाम न करेगी. उसका असर आगे और पीछे दूर तक होगा.

पाकिस्तान से भाग कर आए हुए दूसरे लोग वह हैं जो मामूली ग्रहस्थ हैं और जो अपने यहाँ के बहादुरों की नक़ल करके उनके पीछे पीछे चल पड़े थे. लीजिये अब उनसे भी कुछ बातें करलें.

आपने अपने बड़ों की नकल की यह ठीक किया. आप हमारे मेहमान हैं यह बात भी ठीक है. पर मेहमान अगर अपना धरम छोड़ बैठे तो मेहमानदारी करने वाले पर कई गुना बोझल हो जाता है. और अगर अपना धर्म निभाता रहे तो महीनों और बरसों भी भारी नहीं होता. इतना ही नहीं ऊँचे दरजे का मेहमान तो मेहमानदार का बोझ भी चौथे दिन अपने कंधे पर रख लेने में ही ख़ुशी मानता है. मिसाल के लिये एक बात सुनिये.

ईरान के शहर शीराज़ के एक बुज़ुर्ग हिन्दुस्तान में किसी

کبھی کبھی چبا بیٹھتے ہیں جس سے وہ پیٹے گئے ہوں پر شیر ہمیشہ بانس چلانے والے پر حملہ کرتا ہے. مطلب یہ ہے کہ بہادری جس کے من کی خاصیت ہو گئی ہو وہ کبھی بچوں کو ستا نہیں سکتا. لڑکیوں کو اڑا نہیں سکتا. عورتوں کو بے عزت نہیں کر سکتا. ان کو مار ڈالنے کی بات تو ایک طرف.

ہمارے سکھ بہادرو! آج کل کی ہوا میں تم کو یہ سکھانا تو بیکار ہے کہ اس آپسی مارکاٹ کا نتیجہ ضروری طور سے غلامی ہے. اور غلامی بھی ایک کی نہیں، دو کی نہیں، دس کی نہیں، بلکہ سارے ملک کی. اور اس کو تو تم برداشت ہی کیسے کر سکتے ہو. اور اگر وہ تمہارے کسی جلد باز کام کے ذریعے آئے تو وہ صرف تمہیں ہی بدنام نہ کرے گی. اس کا اثر آگے اور پیچھے دور تک ہوگا.

پاکستان سے بھاگ کر آئے ہوئے دوسرے لوگ وہ ہیں جو معمولی گرہستھ ہیں اور جو اپنے یہاں کے بہادروں کی نقل کر کے ان کے پیچھے پیچھے چل پڑے تھے. لیجئے اب ان سے بھی کچھ باتیں کر لیں.

آپ نے اپنے بڑوں کی نقل کی یہ ٹھیک کیا. آپ ہمارے مہمان ہیں یہ بات بھی ٹھیک ہے. پر مہمان اگر اپنا دھرم چھوڑ بیٹھے تو مہمان داری کرنے والے پر کئی گنا بوجھ ہو جاتا ہے. اور اگر اپنا دھرم نبھاتا رہے تو مہینوں اور برسوں بھی بھاری نہیں ہوتا. اتنا ہی نہیں اونچے درجے کا مہمان تو مہمان دار کا بوجھ بھی چوتھے دن اپنے کندھے پر رکھ لینے میں ہی خوشی مانتا ہے. مثال کے لئے ایک بات سنئے

बादशाह के मेहमान हुए. बादशाह ने ४० रोज़ तक उनकी बड़ी ख़ातिर की. मगर उनसे यह पूछने पर कि आज की दावत कैसी रही शीराज़ी साहब से यही जवाब मिलता रहा—"दावते शीराज़" यानी दावत देना तो शीराज़ी ही जानते हैं. बादशाह क्या कहता, मन मार कर रह गया. शीराज़ी साहब की वापसी पर बादशाह ने अपना एक मातबिर आदमी उनके साथ कर दिया और उससे यह कह दिया कि वह शीराज़ जाकर यह पता लगाए कि वहाँ दावतें कैसी होती हैं. जब शीराज़ी साहब बादशाह के उस आदमी को लेकर शीराज़ पहुँचे तो पहले दिन उन्होंने उस को वही खाना खिलाया जो उस दिन घर पर बना हुआ मौजूद मिला. और वह भी पेट भर नहीं था क्या कि जो कुछ बना था उसमें ख़ुद शीराज़ी साहब और उनका मेहमान साथी दोनों शामिल थे. मेहमान ने पहला दिन समझ कर अपनी तसल्ली करली और दूसरे दिन "दावते शीराज़" के लिये तय्यार रहा. पर दूसरे दिन भी दोनों वक़्त तरकारी, चटनी, रोटी और प्याज़ के सिवा कुछ न था. उस दिन भी मेहमान ने ज्यों त्यों अपने मन को समझा लिया यानी यह समझ लिया कि 'दावते शीराज़' के लिये कुछ तय्यारियाँ करना ज़रूरी होता होगा और इसलिये वह आज कैसे हो सकती थी. पर तीसरे चौथे दिन भी जब उसे सिर्फ़ चटनी, रोटी ही मिली और तरकारी और प्याज़ भी ग़ायब हो गया तो उससे न रहा और पूछ ही बैठा कि—हज़रत वह दावत शीराज़' कहाँ है. जवाब में शीराज़ी साहब बोले—रोज़ आप 'दावते शीराज़' ही तो खा रहे हैं. मेहमान ने बड़े ताज्जुब के साथ कहा कि—यह है 'दावते

(१०४)

بادشاہ کے مہمان ہوئے. بادشاہ نے ۴۰ روز تک اُن کی بڑی خاطر کی. مگر اُن سے یہ پوچھنے پر کہ آج کی دعوت کیسی رہی شیرازی صاحب سے یہی جواب ملتا رہا—"دعوتِ شیراز" یعنی دعوت دینا تو شیرازی ہی جانتے ہیں. بادشاہ کیا کہتا 'من مار کر رہ گیا. شیرازی صاحب کی واپسی پر بادشاہ نے اپنا ایک معتبر آدمی اُن کے ساتھ کر دیا اور اُس سے یہ کہہ دیا کہ وہ شیراز جا کر یہ پتہ لگائے کہ وہاں دعوتیں کیسی ہوتی ہیں. جب شیرازی صاحب بادشاہ کے اُس آدمی کو لے کر شیراز پہنچے تو پہلے دن انھوں نے اُس کو وہی کھانا کھلایا جو اُس دن گھر پر بنا ہوا موجود ملا. اور وہ بھی پیٹ بھر نہیں تھا کیونکہ جو کچھ بنا تھا اُس میں خود شیرازی صاحب اور اُن کا مہمان ساتھی دونوں شامل تھے. مہمان نے پہلا دن سمجھ کر اپنی تسلی کر لی اور دوسرے دن "دعوتِ شیراز" کے لئے تیار رہا. پر دوسرے دن بھی دونوں وقت ترکاری، چٹنی، روٹی اور پیاز کے سوا کچھ نہ تھا. اُس دن بھی مہمان نے جیوں تیوں اپنے من کو سمجھا لیا یعنی یہ سمجھ لیا کہ "دعوتِ شیراز" کے لئے کچھ تیاریاں کرنا ضروری ہوتی ہوں گی اور اس لئے وہ آج کیسے ہو سکتی تھی. پر تیسرے چوتھے دن بھی جب اُسے صرف چٹنی، روٹی ہی ملی اور ترکاری اور پیاز بھی غائب ہو گیا تو اُس سے نہ رہا گیا اور پوچھ ہی بیٹھا کہ—حضرت وہ 'دعوتِ شیراز' کہاں ہے. جواب میں شیرازی صاحب بولے—روز آپ 'دعوتِ شیراز' ہی تو کھا رہے ہیں. مہمان نے بڑے تعجب کے ساتھ کہا کہ—یہ ہے 'دعوتِ

(۱۰۴)

शीराज़' ! शीराज़ी बोले—जी हाँ, यही है. आप मेरे यहाँ बरसों रहिये, मुझे भारी न मालूम होंगे. मैं आपके यहाँ ४० दिन में ही आपको अखरने लगा था और आप यह चाहते थे कि जल्दी से जल्दी आप का मकान मैं छोड़ दूँ. मगर मैं, मेरे बीवी बच्चे यह चाहते हैं कि आप कभी यहाँ से न जांय और यहीं रहें क्यों कि आप को वजह से हमारे घर का खर्च कुछ बढ़ा तो है ही नहीं.

ऐ पंजाब से आए हुए ग्रहस्थियों, अगर आप ज़रा अपना भी सहारा लगाएं तो हम आपको कोई तकलीफ़ न होने देंगे. लेकिन अगर आपने अपना सहारा छोड़ दिया तो न हम आपको सँभाल सकेंगे और न अपने को. जागता हुआ बच्चा अगर एक नम्बर का बोझा होता है तो सोया हुआ बच्चा दो नम्बर का और मचला हुआ तो दस नम्बर का. आपमें से कुछ तो सोए हुए हैं और बहुत हैं मचले हुए. जागे हुए शायद ही एक दो हों. अब कहिये हम आप को कैसे सँभालें. अगर आपने हमको अपने लिये बुरा सोचने वाला बना दिया तो न आप का भला और न हमारा भला. हमारे घरमें आप चैन पाने के लिये आए हैं. अगर हमारे पास चैन न हुआ तो हम आपको कहाँ से दे सकेंगे. हममें फूट डाल कर आप शायद तन ढक लें और पेट भरलें पर चैन न पा सकेंगे. फूट डाल कर हमारे पास से ही चैन भाग जाएगा. हम आपको कहाँ से देंगे. और आप हमसे कैसे पा लेंगे. आप यहाँ फूट और ज़ुल्म के बीज न बोइये. हाँ, आप हमारा चैन चुराइये, चैन लूटिये क्यों कि वह विद्या की तरह चुराने और लूटने से और बढ़ता ही है उसमें हमारा आपका दोनों का भला है दिल की जलन और

شیراز' ! شیرازی بولے — جی ہاں' یہی ہے. آپ میرے یہاں برسوں رہیئے' مجھے بھاری نہ معلوم ہوں گے. میں آپ کے یہاں ۴۰ دن میں ہی آپ کو اکھرنے لگا تھا اور آپ یہ چاہتے تھے کہ جلدی سے جلدی آپ کا مکان میں چھوڑ دوں. مگر میں' میرے بیوی بچے یہ چاہتے ہیں کہ آپ کبھی یہاں سے نہ جائیں اور یہیں رہیں کیونکہ آپ کی وجہ سے ہمارے گھر کا خرچ کچھ بڑھا تو ہے ہی نہیں.

اے پنجاب سے آئے ہوئے گرہستھیوں' اگر آپ ذرا اپنا بھی سہارا لگائیں تو ہم آپ کو کوئی تکلیف نہ ہونے دیں گے. لیکن اگر آپ نے اپنا سہارا چھوڑ دیا تو نہ ہم آپ کو سنبھال سکیں گے اور نہ اپنے کو. جاگتا ہوا بچہ اگر ایک نمبر کا بوجھا ہوتا ہے تو سویا ہوا بچہ دو نمبر کا اور مچلا ہوا تو دس نمبر کا. آپ میں سے کچھ تو سوئے ہوئے ہیں اور بہت ہیں مچلے ہوئے. جاگے ہوئے شاید ہی ایک دو ہوں. اب کہیے ہم آپ کو کیسے سنبھالیں. اگر آپ نے ہم کو اپنے لیے برا سوچنے والا بنا دیا تو نہ آپ کا بھلا اور نہ ہمارا بھلا. ہمارے گھر میں آپ چین پانے کے لیے آئے ہیں. اگر ہمارے پاس چین نہ ہوا تو ہم آپ کو کہاں سے دے سکیں گے. ہم میں پھوٹ ڈال کر آپ شاید تن ڈھک لیں اور پیٹ بھر لیں پر چین نہ پا سکیں گے. پھوٹ ڈال کر ہمارے پاس سے ہی چین بھاگ جائے گا. ہم آپ کو کہاں سے دیں گے. اور آپ ہم سے کیسے پائیں گے. آپ یہاں پھوٹ اور ظلم کے بیج نہ بوئیے. ہاں' آپ ہمارا چین چرائیے' چین لوٹیے کیونکہ وہ ودیا کی طرح چرانے اور لوٹنے سے اور بڑھتا ہی ہے. اس میں ہمارا آپ کا دونوں کا بھلا ہے. دل کی جلن اور

दिल की आग बदले से बढ़ती और भड़कती है, रत्ती भर कम नहीं होती. और अगर उस बदले में कहीं जुल्म भी शामिल हो तब तो ज़मीन पर ही दोज़ख़ आजाता है. स्वर्ग तक नरक में बदल जाता है. वह जलन और आग तो कम होगी इनसाफ़ से और बुझेगी माफ़ी से. खुजली खुजाने से कभी दूर नहीं हुई. खुजाकर सब पछताए ही हैं. उसी तरह जुल्म की जलन जुल्म से कभी दूर नहीं होती. जुल्म करके पछताना ही पड़ता है. खुजली को मिटाने के लिये तेज़ दवा लगानी ही पड़ती है. जुल्म की जलन को कम करने के लिये इनसाफ़ का खारी और माफ़ी का कड़वा घूँट पीना ही पड़ेगा. आप सचमुच रोगी हैं. हम आपका भला चाहते हैं, हमारी सुनिये. यहाँ की सरकार भी आपका भला चाहती है, उसकी ध्यान से सुनिये. और गाँधी जी आपके सच्चे डाक्टर हैं. उनकी कड़वी दवा एक घूँट गले से उतार कर देखिये तो, अभी आराम मिलेगा. हाथ पाँव न फुलाइये. उससे कुछ हाथ नहीं आयगा. आप ज़रा अपना ज़ोर लगाइये और ईश्वर आपके साथ हज़ार गुना ज़ोर लगा देगा. आपकी अपनी मदद के बिना दुनिया की कोई ताक़त आपका भला नहीं कर सकती.

२५.९.४७ —भगवान दीन

हम यह चाहते हैं—

जैनों की अपनी अलग गायत्री और अपना अलग कलमा है. उसमें उन्होंने सबसे पहले सर झुकाया है जीवन मुक्तों को, और उसके बाद मुक्त आत्माओं को. जब उनसे पूछा गया कि आपने दूसरे नम्बर को पहला नम्बर क्यों दिया तो उनसे जवाब

دل کی آگ بدلے سے بڑھتی اور بھڑکتی ہے، رتی بھر کم نہیں ہوتی. اور اگر اُس بدلے میں کہیں ظلم بھی شامل ہو تب تو زمین پر ہی دوزخ آجاتی ہے. سورگ تک نرک میں بدل جاتا ہے. وہ جلن اور آگ تو کم ہوگی انصاف سے اور بجھے گی معافی سے. کھجلی کھجانے سے کبھی دور نہیں ہوئی. کھجا کر سب پچھتائے ہی ہیں. اسی طرح ظلم کی جلن ظلم سے کبھی دور نہیں ہوتی. ظلم کرکے پچھتانا ہی پڑتا ہے. کھجلی کو مٹانے کے لئے تیز دوا لگانی ہی پڑتی ہے. ظلم کی جلن کو کم کرنے کے لئے انصاف کا کھاری اور معافی کا کڑوا گھونٹ پینا ہی پڑے گا. آپ سچ مچ روگی ہیں. ہم آپ کا بھلا چاہتے ہیں، ہماری سنیے. یہاں کی سرکار بھی آپ کا بھلا چاہتی ہے، اُس کی دھیان سے سنیے. اور گاندھی جی آپ کے سچے ڈاکٹر ہیں. اُن کی کڑوی دوا ایک گھونٹ گلے سے اُتار کر دیکھیے تو، ابھی آرام ملے گا. ہاتھ پاؤں نہ پھلائیے. اُس سے کچھ ہاتھ نہیں آئے گا. آپ ذرا اپنا زور لگائیے اور ایشور آپ کے ساتھ ہزار گنا زور لگا دے گا. آپ کو اپنی مدد کے بنا دنیا کی کوئی طاقت آپ کا بھلا نہیں کر سکتی.

—بھگوان دین

۲۵—۹—۴۷

ہم یہ چاہتے ہیں—

جینوں کی اپنی الگ گایتری اور اپنا الگ کلمہ ہے. اُس میں انھوں نے سب سے پہلے سر جھکایا ہے جیون مکتوں کو، اور اُس کے بعد مکت آتماؤں کو جب اُن سے پوچھا گیا کہ آپ نے دوسرے نمبر کو پہلا نمبر کیوں دیا تو اُن سے جواب

मिला कि हम दुनियादार हैं, हमको मुक्त आत्माओं से कुछ फ़ायदा नहीं पहुँच सकता, हमारा भला तो जीवन मुक्त ही कर सकते हैं, क्योंकि वह दुनिया में हैं और इस नाते कम ज्यादा दुनियादार भी हैं. हमको जैनों की यह बात बड़ी जँची और इसीलिये हम हज़रत मोहम्मद को बहुत से सन्तों से ऊँचा समझते हैं. वजह साफ़ है. उन्होंने जो धर्म की बातें बताईं उनको कह कर ही नहीं रह गए. उन्होंने बादशाह बन कर अपने बताए धर्म के मुताबिक़ राज करके भी दिखा दिया. जिस वजह से हम हज़रत मोहम्मद को बहुत से संतों से बड़ा समझते हैं उसी क़िस्म की एक बात में हम क़ायदे आज़म मोहम्मद अली जिन्नाह, गवर्नर जनरल पाकिस्तान को महात्मा मोहन दास करमचन्द गांधी—हिन्दुस्तान की शान, सच्चे हिन्दू, हिन्दुओं के सरताज—से बड़ा समझने के लिये मजबूर हैं. क़ायदे आज़म ने जो कुछ कहा उसको पूरा कर दिखाने की ज़िम्मेवारी अपने सिर ली और पाकिस्तान की बादशाही को आगे बढ़ कर लिया और उसकी ज़िम्मेदारी को अपने सर पर संभाला. इस तरह उन्होंने अपने मुसलमान साथियों को और अपने, हमेशा के लिये नहीं, काम निकालने भर के लिये माने हुए, हिन्दू दुश्मनों को इस बात का मौक़ा दिया कि वह उनको (क़ायदे आज़म को) अच्छी तरह परख लें कि वह जैसा कहते हैं वैसा पाकिस्तान क़ायम कर सकते हैं या नहीं. हम इस बहस में नहीं जाना चाहते कि पाकिस्तान कैसा क़ायम हुआ या आगे कैसा बनेगा. हम तो सिर्फ़ यह ही कहना चाहते हैं कि उन्होंने सबको अपनी जांच का पूरा मौक़ा दिया. अब जनता उनको

ملا کہ ہم دُنیادار ہیں، ہم کو مُکت آتماؤں سے کچھ فائدہ نہیں پہنچ سکتا
ہمارا بھلا تو جیون مُکت ہی کر سکتے ہیں کیونکہ وہ دُنیا میں ہیں اور
اِس ناتے کم زیادہ دُنیادار بھی ہیں۔ ہم کو جینیوں کی یہ بات بڑی جنچی
اور اِس لئے ہم حضرت محمدؐ کو بہت سے سنتوں سے اونچا سمجھتے ہیں۔
وجہ صاف ہے۔ اُنھوں نے جو دھرم کی باتیں بتائیں اُن کو کہہ کر ہی
نہیں رہ گئے۔ اُنھوں نے بادشاہ بن کر اپنے بتائے دھرم کے مطابق
راج کرکے بھی دکھا دیا۔ جس وجہ سے ہم حضرت محمدؐ کو بہت سے
سنتوں سے بڑا سمجھتے ہیں اُسی قسم کی ایک بات میں ہم قائدِ اعظم
محمد علی جناح، گورنر جنرل پاکستان کو مہاتما موہن داس کرم چند
گاندھی — ہندستان کی شان، سچّے ہندو، ہندوؤں کے سرتاج —
سے بڑا سمجھنے کے لئے مجبور ہیں۔ قائدِ اعظم نے جو کچھ کہا اُس کو
پورا کر دکھانے کی ذمّہ داری اپنے سر لی اور پاکستان کی بادشاہی
کو آگے بڑھ کر لیا اور اُس کی ذمّہ داری کو اپنے سر پر سنبھالا۔
اِس طرح اُنھوں نے اپنے مسلمان ساتھیوں کو اور اپنے، ہمیشہ
کے لئے نہیں، کام نکالنے بھر کے لئے مانے ہوئے، ہندو
دشمنوں کو اِس بات کا موقع دیا کہ وہ اُن کو (قائدِ اعظم کو) اچھی
طرح پرکھ لیں کہ وہ جیسا کہتے ہیں ویسا پاکستان قائم کر سکتے
ہیں یا نہیں۔ ہم اِس بحث میں نہیں جانا چاہتے کہ
پاکستان کیسا قائم ہوا، یا آگے کیسا بنے گا۔
ہم تو صرف یہ ہی کہنا چاہتے ہیں کہ اُنھوں نے
سب کو اپنی جانچ کا پورا موقع دیا۔ اب جنتا اُن کو

(४२४)

और उनके पाकिस्तान को परख ले और फिर जो मुनासिब समझे, करे, यानी उन्हें बनाए रखे और बढ़ाए, या उतारे. ठीक यही बात हम महात्मा गांधी से चाहते हैं. इनका इधर उधर घूमना—कभी बिहार में अमन क़ायम करना, कभी नोआखाली में शान्ति की जड़ जमाना, कभी कलकत्ते के लोगों में प्रेम प्रीत बढ़ाना, कभी दिल्ली में डरे हुए और बचकर भागे हुओं को तसल्ली देना और उनमें आपसी मेल बढ़ाना—भले ही बड़े काम की बात हो पर इतने काम की बात नहीं है जितनी ताकत लगाकर वह की जा रही है. हमारे विश्वास के मुताबिक़ महात्मा जी की इतनी ताकत से हिन्दुस्तान बहुत बड़ा फ़ायदा उठा सकता था. अगर महात्मा जी हिन्दुस्तानी यूनियन की गवरनर जनरली सँभाल लेते या अगर उनकी राय में वह जनरली कोरी दिखावे की चीज़ है, जो हक़ीक़त में है तो नहीं. और जो उनके सँभालने पर और भी ज़्यादा ठोस हो जाती क्योंकि उनके सारे वज़ीर उनके अपने ही तो हैं, तो फिर वह बड़े वज़ीर बन कर ही वह कर दिखाते जिसको वह मुद्दत से अपने मन में रखे हुए हैं और जिसका वह घूम घूम कर प्रचार करते फिरते हैं यानी बे-फ़ौज-औरबे-पुलिस की सरकार. बड़े वज़ीर होकर या गवरनर जनरली का काम हाथ में लेकर उनके उस काम में कोई दिक़्क़त नहीं आ सकती जो काम वह आज कर रहे हैं. वज़ीर या गवरनर जनरल होते हुए भी वह बिहार, नोआखाली, कलकत्ता, दिल्ली या और आगे लाहौर और कराची वग़ैरा जाकर वही काम करते रह सकते हैं जो आज कर रहे हैं. अगर माउन्टबेटन साहब दोनों डोमीनियन को सम्भाल सकते हैं, जो सचमुच

(۴۲۴)

اور اُن کے پاکستان کو پرکھ لے اور پھر جو مناسب سمجھے، کرے، یعنی اُنھیں بنائے رکھے اور بڑھائے، یا اُتارے۔ ٹھیک یہی بات ہم مہاتما گاندھی سے چاہتے ہیں۔ اِن کا اِدھر اُدھر گھومنا — کبھی بہار میں امن قایم کرنا، کبھی نواکھالی میں شانتی کی جڑ جمانا، کبھی کلکتہ کے لوگوں میں پریم پریت بڑھانا، کبھی دلی میں ڈرے ہوئے اور بچ کر بھاگے ہوؤں کو تسلی دینا اور اُن میں آپسی میل بڑھانا — بھلے ہی بڑے کام کی بات ہو پر اِتنے کام کی بات نہیں ہے جتنی طاقت لگا کر وہ کی جا رہی ہے۔ ہمارے وشواس کے مطابق مہاتما جی کی اِتنی طاقت سے ہندستان بہت بڑا فائدہ اُٹھا سکتا تھا۔ اگر مہاتما جی ہندستانی یونین کی گورنر جنرلی سنبھال لیتے یا اگر اُن کی رائے میں وہ جنرلی کوری دکھاوے کی چیز ہے، جو حقیقت میں ہے تو نہیں، اور جو اُن کے سنبھالنے پر اَور بھی زیادہ ٹھوس ہو جاتی کیونکہ اُن کے سارے وزیر اُن کے اپنے ہی تو ہیں، تو پھر وہ بڑے وزیر بن کر ہی وہ کر دکھاتے جس کو وہ مدت سے اپنے من میں رکھے ہوئے ہیں اور جس کا وہ گھوم گھوم کر پرچار کرتے پھرتے ہیں یعنی بے فوج اور بے پولیس کی سرکار۔ بڑے وزیر ہو کر یا گورنر جنرلی کا کام ہاتھ میں لے کر اُن کے اُس کام میں کوئی دقت نہیں آسکتی جو کام آج وہ کر رہے ہیں۔ وزیر یا گورنر جنرل ہوتے ہوئے بھی وہ بہار، نواکھالی، کلکتہ، دلی یا اور آگے لاہور اور کراچی وغیرہ جا کر وہی کام کرتے رہ سکتے ہیں جو آج کر رہے ہیں۔ اگر ماؤنٹ بیٹن صاحب دونوں ڈومینین کو سنبھال سکتے ہیں جو سچ مچ

उन्हें मिल भी रही थीं पर किसी वजह से एक उनके हाथ से खिसक गई, तो फिर महात्मा गांधी सिर्फ़ एक डोमीनियन संभालने और दूसरा लोगों को समझाने का काम, क्यों नहीं कर सकते ?

यह ठीक है कि शुरू में जो सरकार बनी, जिन हालतों में बनी और जिन ताक़तों और शरतों के साथ बनी वह ऐसी नहीं थीं जो बिलकुल उनके (गांधी जी के) मन लगती हों, इस लिये उन्होंने उसका (सरकार का) साथ तो दिया, उसको आशीर्वाद भी दिया पर उसमें कोई हिस्सा नहीं लिया और यह ठीक ही किया. पर अब तो वह (गांधी जी) उसको (सरकार को) हर तरह ठीक समझते हैं और लोगों से कहते हैं कि जो सौदा उनके नेताओं ने कर लिया उसको ठीक मान कर हर तरह उनका (नेताओं का) साथ देना चाहिये, फिर शुरू में हिस्सा न लेने की बात का ज़ोर अब कम हो जाना चाहिये और उनको सीधे सरकार का हाथ बँटाने में कोई दिक़्क़त न होनी चाहिये. हाथ तो टेढ़े सीधे अब भी वह बँटा ही रहे हैं. पर इस तरह हाथ बँटाने से हमारी तसल्ली नहीं और न हम ऐसे ख्याल वालों की. ऐसे ख्याल वालों की तादाद कांगरेस में और बाहर बहुत ज्यादा है.

यह जो कुछ हम लिख रहे हैं यह समझ कर तो लिख ही रहे हैं कि जिस तरह की सरकार अब बन गयी है वह ऐसी नहीं है जिसकी वजह से कांगरेस के सिद्धान्त को धका पहुँचा हो और इतना धक्का पहुँचा हो कि कांगरेस अब पुरानी कांगरेस ही न रह गई हो. अगर गांधी जी की राय में ऐसा हुआ होता तो वह ज़रूर लोगों के लिये कांगरेस छोड़ने की आवाज़ उठाते

اُنھیں مل بھی رہی تھیں پر کسی وجہ سے ایک اُن کے ہاتھ سے کھسک گئی، تو پھر مہاتما گاندھی صرف ایک ڈومینین سنبھالنے اور دوسرا لوگوں کو سمجھانے کا کام، کیوں نہیں کر سکتے ؟

یہ ٹھیک ہے کہ شروع میں جو سرکار بنی، جن حالتوں میں بنی اور جن طاقتوں اور شرطوں کے ساتھ بنی وہ ایسی نہیں تھی جو بالکل اُن کے (گاندھی جی کے) من لگتی ہو، اس لئے اُنھوں نے اُس کا (سرکار کا) ساتھ تو دیا، اُس کو آشرباد بھی دیا پر اُس میں کوئی حصہ نہیں لیا اور یہ ٹھیک ہی کیا. پر اب تو وہ (گاندھی جی) اُس کو (سرکار کو) ہر طرح ٹھیک سمجھتے ہیں اور لوگوں سے کہتے ہیں کہ جو سودا اُن کے نیتاؤں نے کر لیا اُس کو ٹھیک مان کر ہر طرح اُن کا (نیتاؤں کا) ساتھ دینا چاہئے، پھر شروع میں حصہ نہ لینے کی بات کا زور اب کم ہو جانا چاہئے اور اُن کو سیدھے سرکار کا ہاتھ بٹانے میں کوئی دقت نہ ہونی چاہئے. ہاتھ تو ٹیڑھے سیدھے اب بھی وہ بٹا ہی رہے ہیں. پر اِس طرح ہاتھ بٹانے سے ہماری تسلی نہیں اور نہ ہم ایسے خیال والوں کی. ایسے خیال والوں کی تعداد کانگریس میں اور باہر بہت زیادہ ہے.

یہ جو کچھ ہم لکھ رہے ہیں یہ سمجھ کر تو لکھ ہی رہے ہیں کہ جس طرح کی سرکار اب بن گئی ہے وہ ایسی نہیں ہے جس کی وجہ سے کانگریس کے سدھانت کو دھکا پہنچا ہو اور اتنا دھکا پہنچا ہو کہ کانگریس اب پرانی کانگریس ہی نہ رہ گئی ہو. اگر گاندھی جی کی رائے میں ایسا ہوا ہوتا تو وہ ضرور لوگوں کے لئے کانگریس چھوڑنے کی آواز اُٹھاتے

पर ऐसी कोई आवाज़ उन्होंने नहीं उठाई. इसलिये यह वजह भी उनके सरकार सँभालने की राह में नहीं अड़ती.

रही यह बात कि गवरनर जनरल या वज़ीर बन कर उनके महात्मापने को कुछ धक्का लगता और फिर उनके उपदेश इतने असरदार न रह जाते जितने अब हैं तो हम यह मानने को तैयार नहीं. इस तरह के सैकड़ों इलज़ाम, आये दिन, उनके सिर थोपे जाते हैं और वह अपनी दलीलों से उन्हें ऐसा धो डालते हैं मानो कभी थोपे ही नहीं गए थे. अब उनकी सचाई की धाक हिन्दुस्तान के हिन्दू मुसलमानों पर ही नहीं एशिया, योरप और नई दुनिया तक के सब मुल्कों पर इतनी छा गई है कि उनकी दलीलों के बाद उनकी सचाई सब की नज़रों में दूध की धुली रह जाती है. सौ दो सौ की तसल्ली शायद न भी होती हो पर वह तो चांद में कलौंच की तरह गांधी जी की सचाई को बढ़ाने में मदद ही करती है. और फिर मुसलमानों में पैग़म्बर साहब खुद दीन दुनिया दोनों का काम सँभाले हुए थे, हिन्दुओं में कृष्ण भगवान योगी भी थे और राजा भी. सभी धर्मों में ऐसी मिसालें मिलती ही हैं तो महात्मा जी के दोनों काम सम्भालने पर उनके असर को क्यों धक्का पहुँचेगा? यह ठीक ही है कि गवनर जनरल हो कर या वज़ीर बनकर वह या तो तनख़ाह लेंगे ही नहीं, या अगर लेंगे तो अपने गुज़ारे भर के लिये. इस लिये उनके असर को ग्रहन न लगकर उल्टी दुगुनी चमक ही मिलेगी और एक बहुत बड़ा आदर्श भी क़ायम हो जायगा.

यह कहना कि उनका दो चार दिन में उन्नासीवां साल लगने वाला है और अब वह बहुत बूढ़े हो गए हैं, उनका अपमान

پر ایسی کوئی آواز انھوں نے نہیں اٹھائی: اس لئے یہ وجہ بھی اُن کے سرکار سنبھالنے کی راہ میں نہیں اَڑتی.

رہی یہ بات کہ گورنر جنرل یا وزیر بن کر اُن کے مہاتماپنے کو کچھ دھکا لگتا اور پھر اُن کے اُپدیش اتنے اثردار نہ رہ جاتے جتنے اب ہیں تو ہم یہ ماننے کو تیار نہیں. اس طرح کے سیکڑوں الزام، آئے دن، اُن کے سر تھوپے جاتے ہیں اور وہ اپنی دلیلوں سے انھیں ایسا دھو ڈالتے ہیں مانو کبھی تھوپے ہی نہیں گئے تھے. اب اُن کی سچائی کی دھاک ہندستان کے ہندو مسلمانوں پر ہی نہیں ایشیا، یورپ اور نئی دُنیا تک کے سب ملکوں پر اتنی چھا گئی ہے کہ اُن کی دلیلوں کے بعد اُن کی سچائی سب کی نظروں میں دودھ کی دُھلی رہ جاتی ہے. سو دو سو کی تسلی شاید نہ بھی ہوتی ہو پر وہ تو چاند میں کلونچ کی طرح گاندھی جی کی سچائی کو بڑھانے میں مدد ہی کرتی ہے. اور پھر مسلمانوں میں پیغمبر صاحب خود دین دُنیا دونوں کا کام سنبھالے ہوئے تھے، ہندوؤں میں کرشن بھگوان یوگی بھی تھے اور راجا بھی. سبھی دھرموں میں ایسی مثالیں ملتی ہی ہیں تو مہاتما جی کے دونوں کام سنبھالنے پر اُن کے اثر کو کیوں دھکا پہنچے گا؟ یہ ٹھیک ہی ہے کہ گورنر جنرل ہو کر یا وزیر بن کر وہ یا تو تنخواہ لیں گے ہی نہیں، یا اگر لیں گے تو اپنے گزارے بھر کے لئے. اس لئے اُن کے اثر کو گرہن نہ لگ کر اُلٹی دُگنی چمک ہی ملے گی اور ایک بہت بڑا آدرش بھی قایم ہو جائے گا.

یہ کہنا کہ اُن کا دو چار دن میں اُناسیواں سال لگنے والا ہے اور اب وہ بہت بوڑھے ہو گئے ہیں، اُن کا اپمان

करना है. सौ बरस जीने वालों के लिये हिन्दुस्तानी कहावत है 'साठा सो पाठा'. फिर १२५ बरस जीने की उम्मीद रखने वाले के लिये 'पचासी सो पाठा' मानना ही पड़ेगा और फिर पाकिस्तान के गवरनर जनरल ही कौन कम उमर वाले हैं ? इस लिये बुढ़ापे की दलील कोरी टालने की दलील हो सकती है, हमारे गले उतरने वाली नहीं.

यह कहना कि यह दो काम बहुत बड़े होंगे और सँभाले नहीं सँभल सकते आजकल के इंतज़ाम को न समझना है. अंगरेज़ ने हुकूमत की मशीन को ऐसा बढ़िया बना दिया है कि वह बिना वज़ीरों और बिना गवनरों और गवनर जनरलों के विलायत से, बैठे बैठे भी चल सकती है. लन्दन का इंडिया आफ़िस है, हां, ज़रा उसने नाम बदल दिया है. सन् १९३५ के गवरमन्ट आफ़ इंडिया एक्ट की दफ़े ९३ के चमत्कार किससे छिपे हुए हैं. गवनर जनरल और वज़ीरों का काम सिर्फ़ पालिसी तय करना होता है यानी सिर्फ़ काम करने की नीति बता देना होता है. बाक़ी काम सेक्रेटरी सब सँभाल लेते हैं. जभी तो सारे वज़ीर हवाई जहाज़ों में इधर से उधर उड़ते नज़र आते हैं. यह दूसरी बात है कि कोई गवरनर मंगलदास पकवासा जी की तरह पांच घंटे डटकर काम करे. इसलिये महात्मा गांधी बिला किसी दिक़्क़त के दोनों काम संभाल सकते हैं.

(४१०)

यह कहना कि कांग्रेसी ऐसा नहीं चाहते, शायद कभी ठीक रहा हो, आज तो उल्टा है. आज तो शायद हिन्दू महासभा [illegible] दुश्मन मालूम होती है सच का

کرنا ہے. سو برس جینے والوں کے لئے ہندستانی کہاوت ہے 'ساٹھا سو پاٹھا' پھر ۱۲۵ برس جینے کی اُمید رکھنے والے کے لئے 'پچاسی سو پاٹھا' ماننا ہی پڑے گا. اور پھر پاکستان کے گورنر جنرل ہی کون کم عمر والے ہیں ؟ اِس لئے بڑھاپے کی دلیل کوری ٹالنے کی دلیل ہو سکتی ہے، ہمارے گلے اُترنے والی نہیں.

یہ کہنا کہ یہ دو کام بہت بڑے ہوں گے اور سنبھالے نہیں سنبھل سکتے آج کل کے انتظام کو نہ سمجھنا ہے. انگریز نے حکومت کی مشین کو ایسا بڑھیا بنا دیا ہے کہ وہ بنا وزیروں اور بنا گورنروں اور گورنر جنرلوں کے ولایت سے، بیٹھے بیٹھے بھی چل سکتی ہے. لندن کا انڈیا آفس ہے، ہاں، ذرا اُس نے نام بدل دیا ہے. ۱۹۳۵ء کے گورنمنٹ آف انڈیا ایکٹ کی دفعہ ۹۳ کے چمتکار کس سے چھپے ہوئے ہیں. گورنر جنرل اور وزیروں کا کام صرف پالیسی طے کرنا ہوتا ہے یعنی صرف کام کرنے کی نیتی بتا دینی ہوتی ہے. باقی کام سکریٹری سب سنبھال لیتے ہیں. جبھی تو سارے وزیر ہوائی جہازوں میں اِدھر سے اُدھر اُڑتے نظر آتے ہیں. یہ دوسری بات ہے کہ کوئی گورنر منگل داس پکواسا جی کی طرح پانچ گھنٹے ڈٹ کر کام کرے. اِس لئے مہاتما گاندھی بلا کسی دقت کے دونوں کام سنبھال سکتے ہیں.

یہ کہنا کہ کانگریسی ایسا نہیں چاہتے، شاید کبھی ٹھیک رہا ہو، آج تو اُلٹا ہے. آج تو شاید ہندو مہاسبھا بھی جو دیکھنے [illegible]

सब इस मामले पर एक राय होकर पुकार उठेगी—'हां, ऐसा ही हो'. हिन्दुस्तानी यूनियन के मुसलमान ही नहीं पाकिस्तान के मुसलमान भी ऐसा ही चाहेंगे और अगर उनसे राय ली जाय तो वह भी एक दिल होकर यही कहेंगे—ऐसा ही हो'. इसलिये ऐसे डर को यहां कोई जगह नहीं रह जाती.

हम यह सिर्फ़ इसलिये नहीं चाहते कि हिन्दुस्तान में बहुत जल्दी मारकाट ख़तम हो जायगी और हिन्दुस्तानी यूनियन और पाकिस्तान में बहुत जल्दी दिलीदोस्ती क़ायम हो जायगी बल्कि इस लिये चाहते हैं कि आने वाली अगली बेहद डरावनी दुनिया की लड़ाई की जड़ इससे कट जायगी और सारी दुनिया अहिंसा के तरीक़े को मान लेगी, सचाई को अपनाएगी. प्रेम को बढ़ाएगी, और तोपों तलवारों को तोड़ तोड़ कर हल बनाएगी या हथौड़ों हसियों में बदल देगी. इसमें कोई शक नहीं दुनिया के सभी मुल्क घबराए हुए हैं, जी से अमन चाहते हैं, सुनने समझने को तैयार हैं. पर उन्हें कोई करके दिखाए तो. कोरी बातों से उनकी तसल्ली नहीं होगी. हिन्दुस्तान में अमन क़ायम हो जाने के बाद और बे-फ़ौज-बे-पुलिस की हकूमत बन जाने के बाद किसकी मजाल है जो 'पाकिस्तान हिन्दुस्तान' की तरफ़ मुंह करके उस ख़ुदा की याद न करे जो रहमान और रहीम है और जो सचमुच अपने बन्दों में मारकाट को पसन्द नहीं करता.

साफ़ और खुली बात यह है कि हम यह चाहते हैं कि क़ायदे आज़म की तरह महत्मा जी भी लोगों को अपनी परख का मौक़ा दें और लोगों को भी चाहिये कि वह उनका जी जान से साथ दें

سب اِس معاملے پر ایک رائے ہوکر پکار اُٹھے گی — ہاں، ایسا ہی ہو، ہندستانی یونین کے مسلمان ہی نہیں پاکستان کے مسلمان بھی ایسا ہی چاہیں گے اور اگر اُن سے رائے لی جائے تو وہ بھی ایک دل ہوکر یہی کہیں گے — ایسا ہی ہو، اِس لئے ایسے ڈر کو یہاں کوئی جگہ نہیں رہ جاتی۔

ہم یہ صرف اِس لئے نہیں چاہتے کہ ہندستان میں بہت جلدی مارکاٹ ختم ہوجائے گی اور ہندستانی یونین اور پاکستان میں بہت جلدی دلی دوستی قایم ہوجائے گی بلکہ اِس لئے چاہتے ہیں کہ آنے والی اگلی بے حد ڈراونی دُنیا کی لڑائی کی جڑ اِس سے کٹ جائے گی اور ساری دُنیا اہنسا کے طریقے کو مان لے گی، سچائی کو اپنائے گی۔ پریم کو بڑھائے گی، اور توپوں تلواروں کو توڑ توڑ کر ہل بنائے گی یا ہتھوڑوں ہنسیوں میں بدل دے گی۔ اِس میں کوئی شک نہیں دُنیا کے سبھی ملک گھبرائے ہوئے ہیں، جی سے امن چاہتے ہیں، سُننے سمجھنے کو تیار ہیں، پر اُنھیں کوئی کر کے دکھلائے تو۔ کوری باتوں سے اُن کی تسلّی نہیں ہوگی۔ ہندستان میں امن قایم ہوجانے کے بعد اور بے فوج - بے پولیس کی حکومت بن جانے کے بعد کس کی مجال ہے جو پاکستان ہندستان کی طرف مُنہ کرکے اُس خدا کو یاد نہ کرے جو رحمان اور رحیم ہے اور جو سچ مچ اپنے بندوں میں مارکاٹ کو پسند نہیں کرتا۔

صاف اور کھلی بات یہ ہے کہ ہم یہ چاہتے ہیں کہ قائدِ اعظم کی طرح مہاتما جی بھی لوگوں کو اپنی پرکھ کا موقع دیں اور لوگوں کو بھی چاہئے کہ وہ اُن کا جی جان سے ساتھ دیں

जब कि वह इस अनोखे तजरबे में लगे हुए हों. लोगों से हमारा मतलब है कांगरेस के जिम्मेदार आदमी. सरकारी अफ़सर और देश के समझदार मुखिया.

हम समझते हैं हम जो चाहते हैं कुछ ज्यादा नहीं चाहते.

२६–९–४७ —भगवान दीन

جب کہ وہ اس انوکھے تجربے میں لگے ہوئے ہوں۔ لوگوں سے ہمارا مطلب ہے کانگریس کے ذمہ دار آدمی، سرکاری افسر اور دیش کے سمجھ دار مکھیا۔

ہم سمجھتے ہیں ہم جو چاہتے ہیں کچھ زیادہ نہیں چاہتے۔

—بھگوان دین

۴۷—۹—۲۶

"गीता और क़ुरान"

लेखक—पंडित सुन्दरलाल

इस किताब के शुरू में दुनिया के सब बड़े बड़े धर्मों की एकता को दिखाया गया है और सब धर्मों की किताबों से हवाले दे देकर मिलती जुलती बुनियादी सचाइयों को बयान किया गया है.

उसके बाद गीता के लिखे जाने के वक़्त की इस देश की हालत, गीता के बड़प्पन और एक एक अध्याय को लेकर गीता की तालीम को बतलाया गया है.

आख़िर में क़ुरान से पहले की अरब की हालत, क़ुरान के बड़प्पन और एक एक बात पर क़ुरान की तालीम को बयान किया गया है. इस में क़ुरान की पांच सौ से ऊपर आयतों का लफ़्ज़ी तरजुमा दिया गया है. यह भी बताया गया है कि क़ुरान में जेहाद, आक़िबत, आख़िरत, जन्नत, जहन्नम, काफ़िर वग़ैरा किसे कहा गया है.

जो लोग सब धर्मों की एकता को समझना चाहें या हिन्दू धर्म और इसलाम दोनों की इन दो अमर पुस्तकों की सच्ची जानकारी हासिल करना चाहें उन्हें इस किताब को ज़रूर पढ़ना चाहिये.

किताब आसान हिन्दुस्तानी ज़बान में, नागरी और उर्दू दोनों लिखावटों में अलग अलग मिल सकती है. पौने तीन सौ सफ़े की सुन्दर जिल्द बंधी किताब की क़ीमत सिर्फ़ ढाई रुपए. डाक ख़र्च अलग.

मैनेजर "नया हिन्द"

४८ बाई का बाग़, इलाहाबाद

"گیتا ارو قرآن"

لیکھک - پنڈت سندر لال

اس کتاب کے شروع میں دنیا کے سب بڑے بڑے دھرموں کی ایکتا کو دکھایا گیا ھے اور سب دھرموں کی کتابوں سے حوالے دے دے کر ملتی جلتی بنیادی سچائیوں کو بیان کیا گیا ھے.

اسکے بعد گیتا کے لکھے جانے کے وقت کی اس دیش کی حالت، گیتا کے بڑپن اور ایک ایک ادھیائے کو لیکر گیتا کی تعلیم کو بتلایا گیا ھے.

آخر میں قرآن سے پہلے عرب کی حالت، قرآن کے بڑپن اور ایک ایک بات پر قرآن کی تعلیم کو بیان کیا گیا ھے. اسمیں قرآن کی پانچ سو سے اوپر آیتوں کا لفظی ترجمہ دیا گیا ھے. یہ بھی بتایا گیا ھے کہ قرآن میں جہاد، عاقبت، آخرت، جنت، جہنم، کافر وغیرہ کسے کہا گیا ھے.

جو لوگ سب دھرموں کی ایکتا کو سمجھنا چاھیں یا ھندو دھرم اور اسلام دونوں کی ان دو امر پستکوں کی سچی جانکاری حاصل کرنا چاھیں انھیں اس کتاب کو ضرور پڑھنا چاھئے.

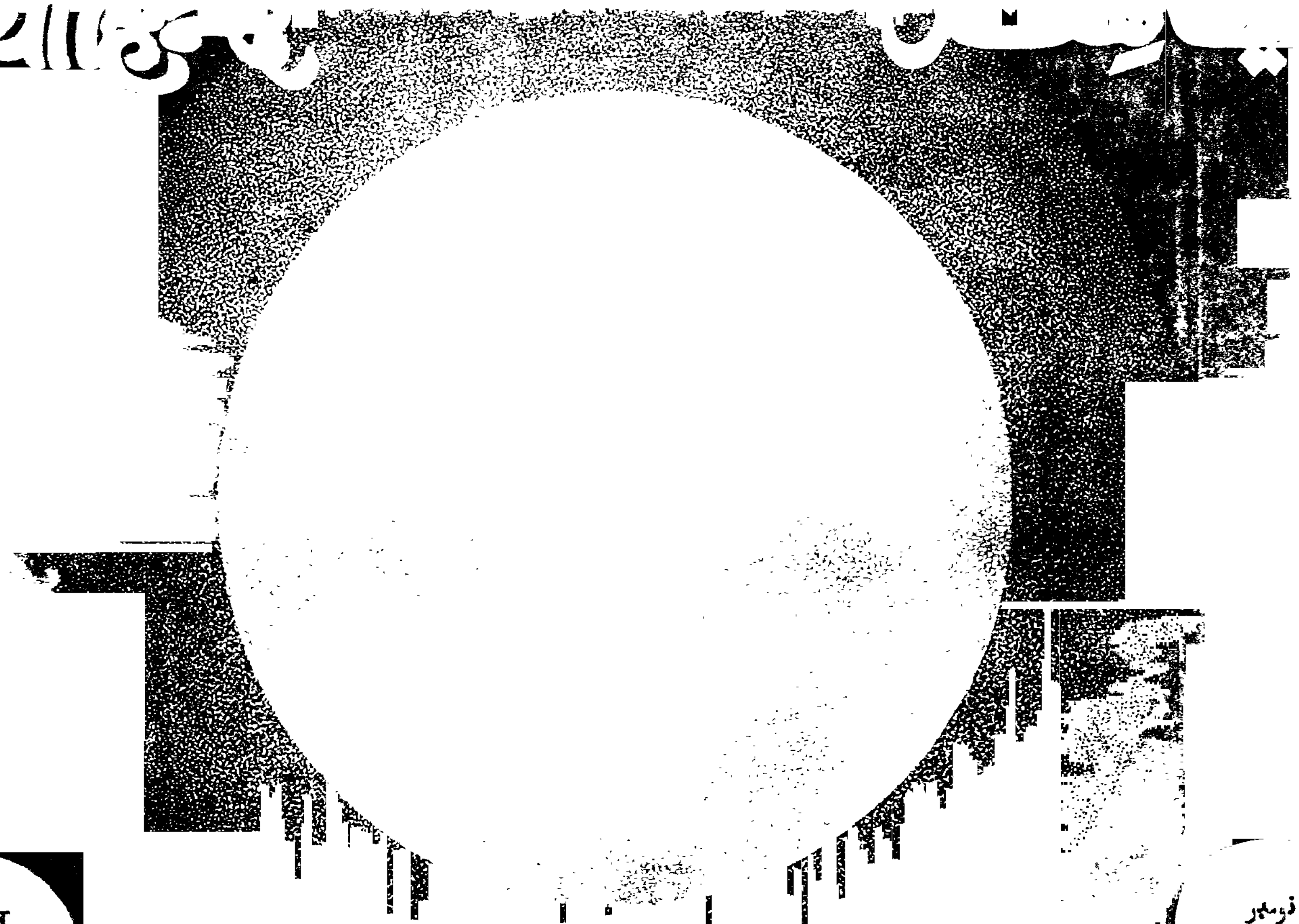
کتاب ہندستانی زبان میں ناگری اور اُردو دونوں لکھاوٹوں میں الگ الگ مل سکتی ھے. پونے تین سو صفحے کی سندر جلد بندھی کتاب کی قیمت صرف ڈھائی روپیہ - ڈاک خرچ الگ.

منیجر 'نیا ھند'

۴۸ - بائی کا باغ، الہ آباد

Printer—Bishambhar Nath, Vishwavani Press, South Malaka, Allahabad.

Publisher—Bishambhar Nath for Hindustani Culture Society, 48 Bai ka Bagh, Allahabad.



नवम्बर
सन् १९४७
दस आना

نومبر
سنہ ۱۹۴۷
دس آنہ

"नया हिन्द"

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी का परचा

एडिटर—

ताराचन्द, भगवानदीन, मुज़फ़्फ़र हसन, विशम्भरनाथ, सुन्दरलाल.

नवम्बर १९४७

क़ीमत—हिन्दुस्तान में छै रुपए साल. बाहर दस रुपए साल,

एक परचा दस आने.

मैनेजर

"نیا ہند"

ہندستانی کلچر سوسائٹی کا پرچا

اڈیٹر—

تارا چند، بھگوان دین، مظفر حسن، بشمبھر ناتھ، سندر لال۔

نومبر ۱۹۴۷

قیمت—ہندستان میں چھ روپیہ سال. باہر دس روپیہ سال۔

ایک پرچا دس آنے.

۴۸ بائی کا باغ الہ آباد.

مینیجر

नया हिन्द

जिल्द ३ नवम्बर '४७ नम्बर ५

جلد۳ نومبر سنہ ۴۷ نمبر ۵

जात आदमी, प्रेम धर्म है, हिन्दुस्तानी बोली.
'नया हिन्द' पहुँचेगा घर घर, लिये प्रेम की झोली.

جات آدمی، پریم دھرم ہے، ہندستانی بولی،
'نیا ہند' پہنچے گا گھر گھر، لئے پریم کی جھولی۔

लिखें बोलें पढ़ें हिन्दोस्तानी

('बिस्मिल' साहब इलाहाबादी)

मज़े की बात है इसमें मज़ा है
मिले हिन्दी से उर्दू लुत्फ़ क्या है
यही परचार कर इसमें भला है
तरक़्क़ी देश की यों देखना है

लिखें बोलें पढ़ें हिन्दोस्तानी

لکھیں بولیں پڑھیں ہندستانی

('بسمل' صاحب الہ آبادی)

مزے کی بات ہے اس میں مزا ہے
ملے ہندی سے اردو لطف کیا ہے
یہی پرچار کر اس میں بھلا ہے
ترقی دیش کی یوں دیکھنا ہے

لکھیں بولیں پڑھیں ہندستانی

भला तारीफ़ इसकी क्या बयां हो
जो सच हो बात उस पर क्या गुमां हो
जहां हम हों बुलन्द इसका निशां हो
पसन्द एक इक को यह प्यारी ज़बां हो
लिखें बोलें पढ़ें हिन्दोस्तानी

जहां में प्रेम का दरिया बहाएं
गले उर्दू से हिन्दी को मिलाएं
नया संसार को संगम दिखाएं
यही हम राग दिल से. जी से गाएं
लिखें बोलें पढ़ें हिन्दोस्तानी

ज़बां जब साफ़ सुथरी हो मँजी हो
तो वह फिर क्यों न मिसरी की डली हो
सजावट भी अनोखी हो भली हो
तो अपने रंग की यह सादगी हो
लिखें बोलें पढ़ें हिन्दोस्तानी

ज़माना इस को देखे दंग हो जाय
अलग सब से निराला ढंग हो जाय
जमाए रंग अपना रंग हो जाय
कि इसके आगे पानी संग हो जाय
लिखें बोलें पढ़ें हिन्दोस्तानी

بھلا تعریف اِس کی کیا بیاں ہو
جو سچ ہو بات اُس پہ کیا گماں ہو
جہاں ہم ہوں بلند اِس کا نشاں ہو
پسند ایک اِک کو یہ پیاری زباں ہو
لکھیں بولیں پڑھیں ہندستانی

جہاں میں پریم کا دریا بہائیں
گلے اُردو سے ہندی کو ملائیں
نیا سنسار کو سنگم دکھائیں
یہی ہم راگ دل سے، جی سے گائیں
لکھیں بولیں پڑھیں ہندستانی

زباں جب صاف سُتھری ہو. منجی ہو
تو وہ پھر کیوں نہ مصری کی ڈلی ہو
سجاوٹ بھی انوکھی ہو بھلی ہو
تو اپنے رنگ کی یہ سادگی ہو
لکھیں بولیں پڑھیں ہندستانی

زمانہ اِس کو دیکھے دنگ ہوجائے
الگ سب سے نرالا ڈھنگ ہوجائے
جمائے رنگ اپنا رنگ ہوجائے
کہ اِس کے آگے پانی سنگ ہوجائے
لکھیں بولیں پڑھیں ہندستانی

सब मज़हबों की एकता

(डाक्टर भगवान दास, बनारस)

(२)

आज कल आम तौर पर ११ मज़हब दुनिया के ज़िन्दा मज़हबों में गिने जाते हैं. पूरब से पच्छिम को चलते हुए यह ११ मत यह हैं—(१) जापान का शिन्तो मत, (२) चीन का ताओ मत जिसे लाओत्सी मत भी कहते हैं, (३) चीन ही का कनफ्यूशियन मत, (४) हिन्दुस्तान का वैदिक मत जिसे आज कल हिन्दू मत कहते हैं, (५) बौद्धमत, (६) जैन मत, (७) सिक्ख मत, (८) ज़रथुस्त्री यानी पारसी मत, (९) यहूदी मत, (१०) ईसाई मत और (११) इसलाम.

इन सब मज़हबों की अपनी अपनी मशहूर पाक किताबें हैं जिन्हें यहाँ गिनाने की ज़रूरत नहीं है. इन किताबों से मिलती जुलती अच्छी बातें लेकर योरप के कुछ विद्वानों ने बड़ी मेहनत के साथ एक जगह जमा करदी हैं. जो लोग अँगरेज़ी पढ़ सकें उनके लिये इस तरह की एक बहुत अच्छी किताब राबर्ट अरनेस्ट ह्यूम की लिखी हुई "ट्रेज़र हाउस आफ़ लिविंग रिलीजन्स" है जिसके मानी होते हैं 'ज़िन्दा मज़हबों का तोशाख़ाना'. यह किताब सन १९३३ में न्यूयार्क और लन्दन से निकली है. इसमें अलग अलग मज़हबों की किताबों से ३०७४ अच्छे अच्छे फ़िक़रे, मन्त्र, आयत या टुकड़े जमा कर दिये गए हैं. इन्हें जमा

سب مذہبوں کی ایکتا

(ڈاکٹر بھگوان داس، بنارس)

(۲)

آج کل عام طور پر ۱۱ مذہب دُنیا کے زندہ مذہبوں میں گِنے جاتے ہیں. پورب سے پچھم کو چلتے ہوئے یہ ۱۱ مت یہ ہیں— (۱) جاپان کا شِنتو مت، (۲) چین کا تاؤ مت جسے لاؤتسی مت بھی کہتے ہیں، (۳) چین ہی کا کنفیوشین مت، (۴) ہندستان کا ویدک مت جسے آج کل ہندو مت کہتے ہیں، (۵) بودھ مت، (۶) جین مت، (۷) سِکھ مت، (۸) زرتشتی یعنی پارسی مت، (۹) یہودی مت، (۱۰) عیسائی مت اور (۱۱) اسلام.

اِن سب مذہبوں کی اپنی اپنی مشہور پاک کتابیں ہیں جنھیں یہاں گِنانے کی ضرورت نہیں ہے. اِن کتابوں سے مِلتی جُلتی اچھی باتیں لے کر یورپ کے کچھ وِدوانوں نے بڑی محنت کے ساتھ ایک جگہ جمع کردی ہیں. جو لوگ انگریزی پڑھ سکیں اُن کے لئے اِس طرح کی ایک بہت اچھی کتاب رابرٹ ارنیسٹ ہیوم کی لکھی ہوئی "ٹریزر ہاؤس آف لیونگ ریلیجنس" ہے جس کے معنی ہوتے ہیں 'زندہ مذہبوں کا توشہ خانہ'. یہ کتاب ۱۹۳۳ء میں نیویارک اور لندن سے نکلی ہے. اِس میں الگ الگ مذہبوں کی کتابوں سے ۳۰۷۴ اچھے اچھے فقرے، منتر، آیت یا ٹکڑے جمع کردئے گئے ہیں. انھیں جمع

करने के लिये विद्वान लेखक को १,०६,४२३ पन्ने पढ़ने पड़े थे. किताब चार हिस्सों में है जिनमें कुल ५१ मजमून हैं. लेखक ने किसी चीज पर अपनी कोई राय नहीं दी. सिर्फ़ समझाने के लिये और अते पते के लिये अपने कुछ नोट दे दिये हैं जिनसे पढ़ने वाले को कुछ मदद मिले. किताब के चौथे हिस्से में सब मजहब वालों के लिये एक मिली जुली पूजा का ढंग भी बताया गया है.

इसी तरह की एक दूसरी बहुत अच्छी किताब डाक्टर फ्रैन्क एल० रिले की लिखी "दि बाइबिल आफ़ बाइबिल्स" है जिसके माने होते हैं 'इन्जीलों की इन्जील' या 'किताबों की किताब'. यह सन १९२९ में छपी है. इसके ३४३ सफ़ों में दुनिया की साठ पाक किताबों में से, जिनमें से कोई कोई कहा जाता है तेरह हजार बरस पुरानी हैं, उन्नीस बरस की मेहनत से, लेखक ने क़रीब १४०० चुनी चुनी बातें बारह अध्यायों के अन्दर जमा कर दी हैं.

यह दोनों किताबें विद्वान लेखकों की सिर्फ़ ग़जब की मेहनत ही का सबूत नहीं देतीं बल्कि सब धर्मों की एकता और इनसानी भाई चारे में उनके जबरदस्त एतक़ाद और विश्वास का भी सबूत देती हैं. सच्चे धर्म के फैलने और इनसानी भाई चारे के क़ायम करने के लिये इस तरह की किताबों की सब मुल्कों में और दुनिया की सब जबानों में बेहद जरूरत है.

दुनिया की इस वक़्त जो हालत हो रही है और दुनिया भर के लोग जिस तरह की मुसीबतों में फँसे हुए हैं उससे जाहिर है कि 'नेकी, सचाई और रोशनी की ताक़तों' को 'बुराई, झूट

کرنے کے لئے ودوان لیکھک کو ۱،۰۶،۴۲۳ پنّے پڑھنے پڑے تھے. کتاب چار حصّوں میں ہے جن میں کُل ۵۱ مضمون ہیں. لیکھک نے کسی چیز پر اپنی کوئی رائے نہیں دی. صرف سمجھانے کے لئے اور اَتے پتے کے لئے اپنے کچھ نوٹ دیدیے ہیں جن سے پڑھنے والے کو کچھ مدد ملے. کتاب کے چوتھے حصّے میں سب مذہب والوں کے لئے ایک ملی جُلی پوجا کا ڈھنگ بھی بتایا گیا ہے.

اِسی طرح کی ایک دوسری بہت اچھی کتاب ڈاکٹر فرینک ایل. رِلے کی لکھی "دی بائبل آف بائبلس" ہے جس کے معنے ہوتے ہیں 'انجیلوں کی انجیل' یا 'کتابوں کی کتاب'. یہ سن ۱۹۲۹ء میں چھپی ہے. اِس کے ۳۴۳ صفحوں میں دُنیا کی ساٹھ پاک کتابوں میں سے، جن میں سے کوئی کوئی کہا جاتا ہے تیرہ ہزار برس پُرانی ہیں، اُنّیس برس کی محنت سے، لیکھک نے قریب ۱۴۰۰ چُنی چُنی باتیں بارہ ادھیاؤں کے اندر جمع کردی ہیں.

یہ دونوں کتابیں ودوان لیکھکوں کی صرف غضب کی محنت ہی کا ثبوت نہیں دیتیں بلکہ سب دھرموں کی ایکتا اور انسانی بھائی چارے میں اُن کے زبردست اعتقاد اور وشواس کا بھی ثبوت دیتی ہیں. سچے دھرم کے پھیلنے اور انسانی بھائی چارے کے قائم کرنے کے لئے اِس طرح کی کتابوں کی سب ملکوں میں اور دُنیا کی سب زبانوں میں بے حد ضرورت ہے.

دُنیا کی اِس وقت جو حالت ہو رہی ہے اور دُنیا بھر کے لوگ جس طرح کی مصیبتوں میں پھنسے ہوئے ہیں اُس سے ظاہر ہے کہ 'نیکی، سچائی اور روشنی کی طاقتوں' کو 'بُرائی، جھوٹ

और अँधेरे की ताक़तों' के साथ अभी बहुत दिनों तक और बड़ी सख्त लड़ाई लड़नी है. यह दूसरी तरह की ताक़तें ही इनसानी क़ौम की असली दुशमन हैं. जरूरत इस बात की है कि सब मुल्कों में बहुत से सच्चे काम करने वाले इस काम को अपने हाथ में लें. इसके बिना माली या राजकाजी अमन दुनिया में क़ायम नहीं हो सकता.

हमें एक ऐसे व्यापक आलमगीर मज़हब की जरूरत है जिसका साफ़ अपना ढाँचा हो. जिसमें इधर उधर से लेकर चीज़ें जोड़ न ली गई हों बल्कि जो आप एक क़ुदरती और जिन्दा जिस्म की तरह दिखाई दे. सब अलग अलग मज़हबों के अलग अलग बाहरी खोलों में से यह जिस्म उसी तरह साफ़ चमकता हुआ दिखाई दे जिस तरह सब अलग अलग आदमियों के अलग अलग शरीरों में से एक इनसानी जिस्म साफ़ दिखाई देता है. फिर जिस तरह एक इनसानी जिस्म के होते हुए अलग अलग आदमी भी होते है और उनसे कुल इनसानी क़ौम की इज्ज़त और खुशहाली बढ़ सकती है उसी तरह इस एक व्यापक आलमगीर दीन या धर्म के होते हुए जो सबका धर्म हो. लोगों के अलग अलग रास्ते, अलग अलग अक़ीदे और अलग अलग रीतरिवाज इनसानी क़ौम की शोभा और खुशहाली को बढ़ा सकते हैं.

हमें अपने सब स्कूलों और कालिजों में लड़कों और लड़कियों को धर्म की शिक्षा जरूर देनी चाहिये. पर वह शिक्षा सच्चे सदाचार की शिक्षा हो. वह शिक्षा सब मतों और मज़हबों

اور اندھیرے کی طاقتوں' کے ساتھ ابھی بہت دنوں تک اور بڑی سخت لڑائی لڑنی ہے۔ یہ دوسری طرح کی طاقتیں ہی انسانی قوم کی اصلی دشمن ہیں۔ ضرورت اس بات کی ہے کہ سب ملکوں میں بہت سے سچے کام کرنے والے اس کام کو اپنے ہاتھ میں لیں۔ اس کے بنا مالی یا راج کاجی امن دنیا میں قائم نہیں ہو سکتا۔

ہمیں ایک ایسے ویاپک عالمگیر مذہب کی ضرورت ہے جس کا صاف اپنا ڈھانچا ہو، جس میں ادھر ادھر سے لے کر چیزیں جوڑ نہ لی گئی ہوں بلکہ جو آپ ایک قدرتی اور زندہ جسم کی طرح دکھائی دے۔ سب الگ الگ مذہبوں کے الگ الگ باہری خولوں میں سے یہ جسم اسی طرح صاف چمکتا ہوا دکھائی دے جس طرح سب الگ الگ آدمیوں کے الگ الگ شریروں میں سے ایک انسانی جسم صاف دکھائی دیتا ہے۔ پھر جس طرح ایک انسانی جسم کے ہوتے ہوئے الگ الگ آدمی بھی ہوتے ہیں اور ان سے کل انسانی قوم کی عزت اور خوش حالی بڑھ سکتی ہے اسی طرح اس ایک ویاپک عالمگیر دین یا دھرم کے ہوتے ہوئے جو سب کا دھرم ہو، لوگوں کے الگ الگ راستے، الگ الگ عقیدے اور الگ الگ ریت رواج انسانی قوم کی شوبھا اور خوش حالی کو بڑھا سکتے ہیں۔

ہمیں اپنے سب اسکولوں اور کالجوں میں لڑکوں اور لڑکیوں کو دھرم کی شکشا ضرور دینی چاہئے۔ پر وہ شکشا سچے دھرم، سداچار کی شکشا ہو۔ وہ شکشا سب متوں اور مذہبوں کے لڑکے لڑکیوں کو ایک سی دی جاوے۔ وہ تعلیم اُدار ہو،

रवादारी की हो. उसका वास्ता किसी एक अलग मज़हब से न हो. उसमें सब मज़हब शामिल हों. एक दूसरे के ख़िलाफ़ दिखाई देने वाले मज़हब भी शामिल हों. और इस तरह शामिल हों कि किसी के ख़िलाफ़ कोई बात न हो. किसी से दूसरे की मुख़ालफ़त न झलके. इस तालीम का मक़सद हो बच्चों के चरित्र को, उनके चलन को मज़बूत और ऊँचा बनाना. उन्हें नेक बनाना. उन्हें अपनी तरफ़ और दूसरों की तरफ़ अपने फ़र्ज़ को समझाना और उस फ़र्ज़ के पूरा करने के क़ाबिल बनाना. उन्हें ईमानदार, प्रेमी, सच्चा, मेहनती और इन्साफ़ पसन्द बनाना यानी उन्हें अच्छा शहरी और अच्छा इनसान बनाना. इसका यही तरीक़ा है कि उन्हें सब मज़हबों के यानी मज़हब के वह बुनियादी असूल बताए जावें जिनके अनुसार हममें से हर एक का जीवन चलना चाहिये. इस तरह की तालीम में वह सब बातें चमकाई जावेंगी और सिखाई जावेंगी जिनमें सब मज़हब एक हैं और वह सब बातें अलग रक्खी जावेंगी जो मज़हब मज़हब में तफ़रक़ा पैदा करती हैं. आख़ीर में इस तरह की तालीम में यह कोशिश की जावेगी कि लड़के लड़कियों में एक दूसरे की तरफ़ और सब मज़हबों की तरफ़ उदारता हो जिससे वह एक दूसरे की अलग अलग मानताओं या रीतरिवाज के फ़रक़ों का भी आदर कर सकें और यह समझें कि यह सब अलग अलग रास्ते उसी एक ईश्वर, अल्लाह, गाड तक पहुँचने के रास्ते हैं. सब मज़हबों की किताबों से इसके लिये बेहद मसाला और मदद मिल सकती है.

इसमें शक नहीं कि सब बड़े बड़े मज़हब उसी एक ईश्वर से

رواداری کی ہو. اُس کا واسطہ کسی ایک الگ مذہب سے نہ ہو. اُس میں سب مذہب شامل ہوں. ایک دوسرے کے خلاف دکھائی دینے والے مذہب بھی شامل ہوں. اور اس طرح شامل ہوں کہ کسی کے خلاف کوئی بات نہ ہو. کسی سے دوسرے کی مخالفت نہ جھلکے. اس تعلیم کا مقصد ہو بچوں کے چرتر کو، اُن کے چلن کو مضبوط اور اونچا بنانا. اُنھیں نیک بنانا. انھیں اپنی طرف اور دوسروں کی طرف اپنے فرض کو سمجھانا اور اس فرض کے پورا کرنے کے قابل بنانا. اُنھیں ایمان دار، پریمی، سچّا، محنتی اور انصاف پسند بنانا یعنی اُنھیں اچھا شہری اور اچھا انسان بنانا. اِس کا یہی طریقہ ہے کہ اُنھیں سب مذہبوں کے یعنی مذہب کے وہ بُنیادی اُصول بتائے جاویں جن کے انوسار ہم میں سے ہر ایک کا جیون چلنا چاہیئے. اِس طرح کی تعلیم میں وہ سب باتیں چمکائی جاویں گی اور سکھائی جاویں گی جن میں سب مذہب ایک ہیں اور وہ سب باتیں الگ رکھی جاویں گی جو مذہب مذہب میں تفرقہ پیدا کرتی ہے. آخر میں اِس طرح کی تعلیم میں یہ کوشش کی جاوے گی کہ لڑکے لڑکیوں میں ایک دوسرے کی طرف اور سب مذہبوں کی طرف اُدارتا ہو جس سے وہ ایک دوسرے کی الگ الگ مانتاؤں یا ریت رواج کے فرقوں کا بھی آدر کر سکیں اور یہ سمجھیں کہ یہ سب الگ الگ راستے اُسی ایک ایشور، اللہ، گاڈ تک پہنچنے کے راستے ہیں. سب مذہبوں کی کتابوں سے اِس کے لئے بے حد مسالہ اور مدد مل سکتی ہے.

اِس میں شک نہیں کہ سب بڑے بڑے مذہب اُسی ایک ایشور سے

निकले हैं. बाद में सब में तरह तरह की नई बातें जुड़ गईं या अजीब अजीब और अलग अलग रीत रिवाज जुड़ते चले गए, यह एक दूसरी बात है. अगर हम इन बाद की चीज़ों या ऊपरी रीत रिवाज़ों को अलग कर दें तो फिर सब मज़हबों का तत्व, उनकी असलियत एक ही दिखाई देगी.

इन्जील में लिखा है—

"ईश्वर की भेजी हुई सब मज़हबी किताबें आदमी के फ़ायदे की हैं, वह आदमी को तालीम देने, ठीक करने, बुराई से बचाने और नेकी सिखाने के लिये हैं जिससे ईश्वर का हर बन्दा कामिल बन सके और हर नेक काम कर सके". (इन्जील, २ तिमोथी ३, १६—१७).

कुरान में लिखा है—

"हम उस ज्ञान को मानते हैं जो अल्लाह ने हमें भेजा है और उसे भी मानते हैं जो अल्लाह ने तुम्हें भेजा है. हमारा और तुम्हारा अल्लाह एक ही है. और उसी अल्लाह के सामने हम झुकते हैं." (कुरान २९—४५)

इन्जील में लिखा है—

"कोई आदमी सिर्फ़ अपने लिये नहीं जीता .... हम सब एक दूसरे का हिस्सा हैं .... ईश्वर ने सब क़ौमों को जो इस धरती पर आबाद हैं एक ही खून से बनाया है."

कुरान में लिखा है—

"सब मख़लूक़ (जानदार) अल्लाह का एक बड़ा कुनबा है."

نکلے ہیں۔ بعد میں سب میں طرح طرح کی نئی باتیں جڑ گئیں یا عجیب عجیب اور الگ الگ ریت رواج جڑتے چلے گئے، یہ ایک دوسری بات ہے۔ اگر ہم ان بعد کی چیزوں یا اوپری ریت رواجوں کو الگ کر دیں تو پھر سب مذہبوں کا تتو، ان کی اصلیت ایک ہی دکھائی دے گی۔

انجیل میں لکھا ہے—

"ایشور کی بھیجی ہوئی سب مذہبی کتابیں آدمی کے فائدے کی ہیں، وہ آدمی کو تعلیم دینے، ٹھیک کرنے، برائی سے بچانے اور نیکی سکھانے کے لئے ہیں جس سے ایشور کا ہر بندہ کامل بن سکے اور ہر نیک کام کر سکے"۔ (انجیل، ۲ تموتھی ۳، ۱۶—۱۷)۔

قرآن میں لکھا ہے—

"ہم اس گیان کو مانتے ہیں جو اللہ نے ہمیں بھیجا ہے اور اسے بھی مانتے ہیں جو اللہ نے تمہیں بھیجا ہے۔ ہمارا اور تمہارا اللہ ایک ہی ہے۔ اور اسی اللہ کے سامنے ہم جھکتے ہیں"۔ (قرآن ۲۹—۴۵)۔

انجیل میں لکھا ہے—

"کوئی آدمی صرف اپنے لئے نہیں جیتا...... ہم سب ایک دوسرے کا حصہ ہیں...... ایشور نے سب قوموں کو جو اس دھرتی پر آباد ہیں ایک ہی خون سے بنایا ہے۔"

قرآن میں لکھا ہے—

"سب مخلوق (جاندار) اللہ کا ایک بڑا کنبہ ہیں۔"

وید میں لکھا ہے—

"سب انسانوں کا ایک [illegible]

रवादारी की हो. उसका वास्ता किसी एक अलग ...
हो ...
نومبر ۴۷ء   مذہبوں کی ایکتا

एक शरीर के सिर, हाथ, धड़ और टांगों का एक दूसरे के साथ.”

आगे बढ़ने से पहले हम सब धर्मों के ग्रन्थों की कुछ खास खास प्रार्थनाएं नीचे देते हैं.

उपनिषद का कहना है—

“एक ही ईश्वर सब प्राणियों में छिपा हुआ है.
“वही सब को देखता है, वही सब दिलों के अन्दर है.
“समझदार आदमी उसे अपने ही अन्दर ढूंढते और पाते हैं.
“ऐसे लोग ही टिकाऊ सुख पा सकते हैं दूसरे नहीं.
“वही हमेशा से और हमेशा रहने वाला है, वह सब जानों की जान है
“वह अकेला सब की इच्छाओं को पूरा करता है.
“अक़्लमन्द आदमी उस एक को अपने अन्दर देखते हैं
“ऐसे लोग ही टिकाऊ शान्ति हासिल कर सकते हैं दूसरे नहीं.

“वह सब जगह मौजूद है, सब रूहों की रूह है
“उसका कोई रूप नहीं पर वह सब रूपों का बनाने वाला है.
“अक़्लमन्द आदमी उस एक को अपने अन्दर देखते हैं.
“ऐसे लोग ही टिकाऊ सुख पा सकते हैं दूसरे नहीं.

“वह एक है उसका कोई रंग नहीं पर वह अपनी शक्ति (कुदरत) से
“तरह तरह के बेशुमार रंग पैदा करता है
“फिर उन्हें मिटाता है और फिर बनाता है
“[illegible] साफ़ साफ़ समझ दे.”

ایک شریر کے سر، ہاتھ، دھڑ اور ٹانگوں کا ایک دوسرے کے ساتھ۔"

آگے بڑھنے سے پہلے ہم سب دھرموں کے گرنتھوں کی کچھ خاص خاص پرارتھنائیں نیچے دیتے ہیں۔

اپنشد کا کہنا ہے—

"ایک ہی ایشور سب پرانیوں میں چھپا ہوا ہے۔
"وہی سب کو دیکھتا ہے، وہی سب دلوں کے اندر ہے۔
"سمجھدار آدمی اُسے اپنے ہی اندر ڈھونڈھتے اور پاتے ہیں۔
"ایسے لوگ ہی ٹکاؤ سکھ پا سکتے ہیں دوسرے نہیں۔
"وہی ہمیشہ سے اور ہمیشہ رہنے والا ہے۔ وہ سب جانوں کی جان ہے۔
"وہ اکیلا سب کی اِچھاؤں کو پورا کرتا ہے۔
"عقل مند آدمی اُس ایک کو اپنے اندر دیکھتے ہیں۔
"ایسے لوگ ہی ٹکاؤ شانتی حاصل کرسکتے ہیں دوسرے نہیں۔
"وہ سب جگہ موجود ہے، سب روحوں کی روح ہے۔
"اُس کا کوئی روپ نہیں پر وہ سب روپوں کا بنانے والا ہے۔
"عقل مند آدمی اُس ایک کو اپنے اندر دیکھتے ہیں۔
"ایسے لوگ ہی ٹکاؤ سکھ پاسکتے ہیں دوسرے نہیں۔
"وہ ایک ہے اُس کا کوئی رنگ نہیں پر وہ اپنی شکتی (قدرت) سے
"طرح طرح کے بے شمار رنگ پیدا کرتا ہے۔
"پھر انھیں مٹاتا ہے اور پھر بناتا ہے۔
"وہ ایشور ہمیں صاف صاف سمجھ دے۔"

मुसलमान सूफ़ी कहता है—

"उसका क्या अजीब बेरंगी है कि जिससे लाखों रंग पैदा होते हैं!

"अजब वह बेशकली है कि जिससे बशुमार शकलें पैदा होती हैं!"

"मैं शुरू करता हूँ उसके नाम से कि जिसका कोई नाम नहीं.

"उसे जिस नाम से पुकारो वह सर ऊँचा करके जवाब देता है.

"मैं उसके नाम से शुरू करता हूँ जो इस कसरत (बहुतात) में आप अकेला है

"कि उसका वहदत (एकपन) में कसरत क़ैद है."

वेद में लिखा है—

"उस एक परमेश्वर को हम पूजा करते हैं, उसकी ज्योति (नूर) का हम ध्यान करते हैं! वह ज्योति हमारी बुद्धियों को रोशन कर और रास्ता दिखावे. हे ईश्वर हमें सीधे रास्ते पर ले चल. तू ही सब कुछ जानता है. हमें बल दे कि हम उन गुनाहों से लड़ सकें जिनका रुजहान हमारे अन्दर पैदा होता रहता है और जो हमें ठीक रास्ते से भटकाते रहते हैं. हम तेरे ही सामने झुकते हैं और तेरी ही पूजा करते हैं."

कुरान कहता है—

"साथ नाम उस अल्लाह के जो रहमान और रहीम है. हम उसी अल्लाह की हम्द (स्तुति) करते हैं जो सब दुनियाओं का मालिक है! जो रहमान और रहीम है! जो एक दिन सबको उनके कामों का फल देने वाला है. ऐ अल्लाह! तेरी ही हम इबादत (पूजा) करते हैं, तुम से ही हम मदद चाहते हैं. हमें सीधा रास्ता बता. वह ... ों ... रास्ता है जिन्हें तूने अपनी बरकतें दे रक्खी

مسلمان صوفی کہتا ہے—

"اُس کی کیا عجیب بے رنگی ہے جس سے لاکھوں رنگ پیدا ہوتے ہیں!

"عجب وہ بے شکلی ہے جس سے بے شمار شکلیں پیدا ہوتی ہیں!"

"میں شروع کرتا ہوں اُس کے نام سے جس کا کوئی نام نہیں.

"اُسے جس نام سے پکارو وہ سر اونچا کرکے جواب دیتا ہے.

"میں اُس کے نام سے شروع کرتا ہوں جو اِس کثرت (بہتات) میں آپ اکیلا ہے.

"کہ اُس کی وحدت (ایک پن) میں کثرت قید ہے."

وید میں لکھا ہے—

"اُس ایک پرمیشور کی ہم پوجا کرتے ہیں، اُس کی جیوتی (نور) کا ہم دھیان کرتے ہیں! وہ جیوتی ہماری بدھیوں کو روشن کرے اور راستہ دکھاوے. ہے ایشور ہمیں سیدھے راستے پر لے چل. تو ہی سب کچھ جانتا ہے. ہمیں بل دے کہ ہم اُن گناہوں سے لڑ سکیں جن کا رجحان ہمارے اندر پیدا ہوتا رہتا ہے اور جو ہمیں ٹھیک راستے سے بھٹکاتے رہتے ہیں. ہم تیرے ہی سامنے جھکتے ہیں اور تیری ہی پوجا کرتے ہیں."

قرآن کہتا ہے—

"ساتھ نام اُس اللہ کے جو رحمان اور رحیم ہے. ہم اُسی اللہ کی حمد (ستوتی) کرتے ہیں جو سب دنیاؤں کا مالک ہے! جو رحمان اور رحیم ہے! جو ایک دن سب کو اُن کے کاموں کا پھل دینے والا ہے. اے اللہ! تیری ہی ہم عبادت (پوجا) کرتے ہیں، تجھ سے ہی مدد چاہتے ہیں. ہمیں سیدھا راستہ بتا. وہ راستہ جو اُن لوگوں کا راستہ ہے جنہیں تو نے اپنی برکتیں دے رکھی

हैं. उन लोगों का रास्ता नहीं जो भटके हुए हैं और जिनसे तू नाराज़ है."

पारसियों की गाथा में लिखा है—

"ऐ बड़े ईश्वर हमें बड़ी उम्र दे और धीरज दे और साफ़ दिमाग़ दे और हमें सीधा रास्ता दिखा जिस पर तू मिलता है और जो तुझ तक पहुँचता है."

इन्जील के पुराने अहदनामें में लिखा है—

"ऐ ईश्वर मेरा रोना सुन! मेरी प्रार्थना की तरफ़ कान दे. यह प्रार्थना मेरे दिल से निकल रही है. मुझे अपने रास्ते पर सँभाल कर ले चल ताकि मेरे पैर इधर उधर न भटकें. मुझे अपना रास्ता दिखला. ऐ ईश्वर! मुझे अपने रास्तों की तालीम दे. मुझे अपनी सचाई की तरफ़ ले चल. तू ही मेरी निजात (मुक्ति) का मालिक है. मेरी आंखे खोल ताकि मैं तेरे क़ानून की अजीब अजीब बातें देख सकूँ. अपने कहने के अनुसार मुझे अन्दर से चला. मुझे झूट के रास्ते से अलग रख."

इन्जील के नए अहदनामें में लिखा है—

"ऐ हम सबके पैदा करने वाले जो आसमान में है! तेरा पाक नाम फैले! तेरा राज दुनिया में क़ायम हो! इस धरती पर जैसे आसमान में सब तेरी मर्ज़ी से चलें! आज के दिन हमारी रोज़ की रोज़ी हमें दे! हमारे कर्ज़ (क़सूर) माफ़ कर जिस तरह हम अपने कर्ज़ वालों को माफ़ कर देते हैं. हमें लोभ में मत फँसा! हमें बुराई से बचा! असली राज तेरा ही राज है! तेरी ही शक्ति (क़ूवत) है तेरी ही शान है हमेशा हमेशा के लिये! आमीन."

चीन के पैग़म्बर कनफ़्यूशियस ने कहा है—

"ऐ बड़े, सबसे बड़े ईश्वर हम तुझी को बुलाते हैं! तू ही

ہیں۔ اُن لوگوں کا راستہ نہیں جو بھٹکے ہوئے ہیں اور جن سے تو ناراض ہو۔"

پارسیوں کی گاتھا میں لکھا ہے—

"اے بڑے ایشور ہمیں بڑی عمر دے اور دھیرج دے اور صاف دماغ دے اور ہمیں سیدھا راستہ دکھا جس پر تو ملتا ہے اور جو تجھ تک پہنچتا ہے۔"

انجیل کے پرانے عہدنامے میں لکھا ہے—

"اے ایشور میرا رونا سن! میری پرارتھنا کی طرف کان دے۔ یہ پرارتھنا میرے دل سے نکل رہی ہے۔ مجھے اپنے راستے پر سنبھال کر لے چل تاکہ میرے پیر اِدھر اُدھر نہ بھٹکیں۔ مجھے اپنا راستہ دکھلا! اے ایشور! مجھے اپنے راستوں کی تعلیم دے۔ مجھے اپنی سچائی کی طرف لے چل۔ تو ہی میری نجات (مکتی) کا مالک ہے۔ میری آنکھیں کھول تاکہ میں تیرے قانون کی عجیب عجیب باتیں دیکھ سکوں۔ اپنے کہنے کے انوسار مجھے اندر سے چلا۔ مجھے جھوٹ کے راستے سے الگ رکھ۔"

انجیل کے نئے عہدنامے میں لکھا ہے—

"اے ہم سب کے پیدا کرنے والے جو آسمان میں ہے! تیرا پاک نام پھیلے! تیرا راج دنیا میں قایم ہو! اس دھرتی پر جیسے آسمان میں سب تیری مرضی سے چلیں! آج کے دن ہماری روز کی روزی ہمیں دے! ہمارے قرضے (قصور) معاف کر جس طرح ہم اپنے قرض والوں کو معاف کر دیتے ہیں۔ ہمیں لوبھ میں مت پھنسا! ہمیں برائی سے بچا! اصلی راج تیرا ہی راج ہے! تیری ہی شکتی (قوت) ہے تیری ہی شان ہے ہمیشہ ہمیشہ کے لئے! آمین!"

چین کے پیغمبر کنفیوشیس نے کہا ہے—

"اے بڑے سب سے بڑے ایشور ہم تجھی کو بلاتے ہیں! تو ہی ہمارا باپ اور تو ہی ہماری ماں ہے۔"

(हिन्दी)

सिक्खों के ग्रन्थ साहब में लिखा है—

"ऐ दया के सागर तू हमेशा हमारे दिलों के अन्दर रह और हमारे दिमाग़ों को रोशन कर ताकि हम तुझे प्यार करें, तेरी सेवा करें और तेरी पूजा करें. ऐ ईश्वर ! हम हमेशा तुझे अपने पास समझें ! तू ही हमारा बाप, हमारी माँ, हमारा गुरू और हमारा सब कुछ है."

प्यारे दोस्तो बहनों और भाइयों !

हर नेक बात सोचने और हर नेक काम करने से पहले हमें सब जानों की जान उस परमेश्वर का ध्यान करना चाहिये और उससे मदद मांगनी चाहिये जो अपनी वहदत, अपनी एकता में से बेशुमार जानों और इस बेअन्त रंग बिरंगी क़ुदरत को पैदा करता है और फिर इस सब कुनबे को एक सूत में बाँधे रखता है. वही ज़र्रों से रग पट्ठे, रग पट्ठों से जिस्म, जिस्मों से गिरोह, क़ौमें और मुल्क, मुल्कों से ग्रह और नक्षत्र, उनसे सूरज, उनसे सौर जगत (निज़ामे शम्सी), इन्हें मिलाकर फिर और बड़े बड़े जगत बे अन्त और बेहद बनाकर उन सब की फिर एक दुनिया, एक जगत, एक यूनीवर्स बनाता है. आदमी गोश्त पोस्त का लोथड़ा है. वही इसमें घुसकर जान और चेतना पैदा करता है. वह चेतना जो सारे विश्व, सारे आलम को अपने अन्दर ले सकती है. सब दिलों में वही छिपा हुआ है. उसी की बदौलत हम सब गोश्त पोस्त के लोथड़े एक दूसरे को समझ सकते हैं, एक दूसरे के साथ हमदर्दी कर सकते हैं और दुख दर्द में एक दूसरे की मदद कर सकते हैं. हममें जो कुछ एकता है वह उसी एक की दी हुई है, उसी एक से पैदा हुई है. उसी एक को अपने अन्दर और सबके

(ہندی)

سکھوں کے گرنتھ صاحب میں لکھا ہے—

"اے دیا کے ساگر تو ہمیشہ ہمارے دلوں کے اندر رہ اور ہمارے دماغوں کو روشن کر تاکہ ہم تجھے پیار کریں، تیری سیوا کریں اور تیری پوجا کریں۔ اے ایشور! ہم ہمیشہ تجھے اپنے پاس سمجھیں! تو ہی ہمارا باپ، ہماری ماں، ہمارا گرو اور ہمارا سب کچھ ہے۔"

پیارے دوستو بہنو اور بھائیو!

ہر نیک بات سوچنے اور ہر نیک کام کرنے سے پہلے ہمیں سب جانوں کی جان اس پرمیشور کا دھیان کرنا چاہئے اور اس سے مدد مانگنی چاہیئے جو اپنی وحدت، اپنی ایکتا میں سے بے شمار جانوں اور اس بے انت رنگ برنگی قدرت کو پیدا کرتا ہے اور اس سب کنبے کو ایک سوت میں باندھے رکھتا ہے۔ وہی ذرّوں سے رگ پٹھے، رگ پٹھوں سے جسم، جسموں سے گروہ، قومیں اور ملک، ملکوں سے گرہ اور نکشتر، ان سے سورج، ان سے سور جگت (نظامِ شمسی)، انھیں ملاکر پھر اور بڑے بڑے جگت بے انت اور بے حد بناکر ان سب کی پھر ایک دنیا، ایک جگت، ایک یونیورس بناتا ہے۔ آدمی گوشت پوست کا لوتھڑا ہے۔ وہی اس میں گھس کر جان اور چیتنا پیدا کرتا ہے۔ وہ چیتنا جو سارے وشو، سارے عالم کو اپنے اندر لے سکتی ہے۔ سب دلوں میں وہی چھپا ہوا ہے۔ اسی کی بدولت ہم سب گوشت پوست کے لوتھڑے ایک دوسرے کو سمجھ سکتے ہیں۔ ایک دوسرے کے ساتھ ہمدردی کر سکتے ہیں اور دکھ درد میں ایک دوسرے کی مدد کر سکتے ہیں۔ ہم میں جو کچھ ایکتا ہے وہ اسی ایک کی دی ہوئی ہے، اسی ایک سے پیدا ہوئی ہے۔ اسی ایک کو اپنے اندر اور سب کے

अन्दर बैठा हुआ देख और समझ कर ही हम सुख चैन पा सकते हैं. वह रूहे कुल, वह ज्योतियों की ज्योति, वह नूरों का नूर हमारे दिलों और दिमाग़ों को रोशन करे ! हमें 'सीधा रास्ता' दिखावे और हमें उस रास्ते पर चलने की हिम्मत और ताक़त दे. किसी भी काम में हमें कामयाबी तभी मिल सकती है जब हम शुरू करने से पहले अपने दिल उस ईश्वर अल्लाह के सामने खोल दें !

इसके बाद हमें चाहिये कि अदब के साथ सब मुल्कों, सब क़ौमों और सब ज़मानों के ऋषियों, पैग़म्बरों, बुद्धों, मसीयाहों, नबियों, रसूलों, अवतारों, तार्थकरों, अर्हतों, गुरुओं और रूहानी रास्ता दिखाने वालों को याद करें और सलाम करें जिन्होंने बार बार सच्ची तालीम देकर इनसानी समाज के दिलों में उस 'एकता' को जगाए रखने की कोशिश की.

आख़ीर में हमें उन सब भाई बहनों, सोसाइटियों को नमस्कार करनी चाहिये जो अपनी अपनी जगह इस एकता को बनाए रखने, सबका ध्यान, सबकी असलियत की तरफ़ दिलाने और बिना देश, जात, मज़हब, रंग, क़ौम, नसल या किसी तरह के फ़रक़ के एक आलमगीर, व्यापक इनसानी भाई चारे को क़ायम रखने और मज़बूत करने की कोशिश में लगे हुए हैं. बिना इस यहाँ की एकता के हम उस दुनिया की, अल्लाह की एकता को नहीं पा सकते !

इस मज़मून पर ज़्यादा जानकारी के लिये लेखक की अँगरेज़ी किताब 'The Essential Unity of All Religions' पढ़िये

—एडिटर

اندر بیٹھا ہوا دیکھ اور سمجھ کر ہی ہم سکھ چین پا سکتے ہیں. وہ روح کُل، وہ جیوتیوں کی جیوتی، وہ نوروں کا نور ہمارے دلوں اور دماغوں کو روشن کرے! ہمیں 'سیدھا راستہ' دکھاوے اور ہمیں اس راستے پر چلنے کی ہمت اور طاقت دے. کسی بھی کام میں ہمیں کامیابی تبھی مل سکتی ہے جب ہم شروع کرنے سے پہلے اپنے دل اس ایشور اللہ کے سامنے کھول دیں!

اس کے بعد ہمیں چاہئے کہ ادب کے ساتھ سب ملکوں، سب قوموں اور سب زمانوں کے رشیوں، پیغمبروں، بدھوں، مسیحوں، نبیوں، رسولوں، اوتاروں، تیرتھنکروں، ارہتوں، گروؤں اور روحانی راستہ دکھانے والوں کو یاد کریں اور سلام کریں جنھوں نے بار بار سچی تعلیم دے کر انسانی سماج کے دلوں میں اس 'ایکتا' کو جگائے رکھنے کی کوشش کی.

آخر میں ہمیں ان سب بھائی بہنوں، سوسائٹیوں کو نمسکار کرنی چاہئے جو اپنی اپنی جگہ اس ایکتا کو بنائے رکھنے، سب کا دھیان، سب کی اصلیت کی طرف دلانے اور بنا دیش، جات، مذہب، رنگ، قوم، نسل یا کسی طرح کے فرق کے ایک عالمگیر، ویاپک انسانی بھائی چارے کو قایم رکھنے اور مضبوط کرنے کی کوشش میں لگے ہوئے ہیں. بنا اس یہاں کی ایکتا کے ہم اس دنیا کی، اللہ کی ایکتا کو نہیں پا سکتے!

اس مضمون پر زیادہ جان کاری کے لئے لیکھک کی انگریزی کتاب 'The Essential Unity of All Religions' پڑھئے — اڈیٹر

मैं हुँ आज़ाद !

(गु० म०)

मेरी बस्ती नहिं पाकिस्तान,
और न ही हिन्दुस्थान,
बल्कि है इन्सानिस्तान,
सो मैं हुँ आज़ाद !

मैं नहिं पूजूँ मन्दिर में,
और न ही मस्जिद में,
बल्कि अपने ही दिल में,
सो मैं हुं आज़ाद !

मुझे छूत छात का भेद नहिं,
अपने और दूसरे का द्वेष नहिं,
पैसे पूँजी का क्लेश नहिं,
सो मैं हुँ आज़ाद !

مَیں ہوں آزاد!

(گ۔ م۔)

میری بستی نہیں پاکستان،
اور نہ ہی ہندستان،
بلکہ ہے انسانستان،
سو میں ہوں آزاد!

مَیں نہیں پُوجوں مندر میں،
اور نہ ہی مسجد میں،
بلکہ اپنے ہی دل میں،
سو میں ہوں آزاد!

مجھے چھُوت چھات کا بھید نہیں،
اپنے اور دوسرے کا دویش نہیں،
پیسے پونجی کا کلیش نہیں،
سو میں ہوں آزاد!

रोमन हर्फ़ों में देशी भाषाअें

(श्री किशोरलाल मशरूवाला, वर्धा)

मेरा कहना यह नहीं कि हम देशी लिखावटें छोड़ दें और रोमन से ही काम लें. अपनी लिखावटों की खूबियों को भी मैं समझता हूँ. हमारे प्रान्त के साहित्य के कुछ हिस्से अुस बोली की लिखावट से भी संबंध रखते हैं. जैसे, तुलसीदास जी का नीचे का मशहूर दोहा नागरी की लिखावट के बिना बे मतलब हो जायगा.

अेक छत्र अेक मुकुट मनि, सब बरननि पर जोअु।
तुलसी रघुबर नाम के बरन बिराजत दोअु॥

अिसी तरह नुक़्ते के हेर फेर से मानी कैसे बदल जाते हैं, अिस पर अुर्दू में कितनी ही नज़्में हैं, जिनका मज़ा अुर्दू लिखावट में ही लिया जा सकता है.

लेकिन साथ ही मुझे यह भी कहना चाहिये कि हमारी लिखावटों को (जिसमें अुर्दू भी शामिल है) बहुत सुधारने की जरूरत है. और जब तक हम अिस पर अेक राय से कोअी फ़ैसला नहीं कर लेते, तब तक अिन के अिस्तेमाल में बड़ी अमली कठिनाअियाँ हैं.

दूसरी बात यह है कि आज के जमाने में टाअिपराअिटर जैसे साधनों के बग़ैर और तार वग़ैरा के कामों में देशी लिखावटों का अुपयोग करने में बहुत अड़चनें होती हैं. नतीजा यह होता है कि लिखावट के लिअे हम अपनी भाषाअें भी छोड़ देते हैं, और

رومن حرفوں میں دیشی بھاشائیں

(شری کشور لال مشرو والا، وردھا)

میرا کہنا یہ نہیں کہ ہم دیشی لکھاوٹیں چھوڑ دیں اور رومن سے ہی کام لیں۔ اپنی لکھاوٹوں کی خوبیوں کو بھی میں سمجھتا ہوں۔ ہمارے پرانت کے ساہتیہ کے کچھ حصے اُس بولی کی لکھاوٹ سے بھی سمبندھ رکھتے ہیں۔ جیسے، تلسی داس جی کا نیچے کا مشہور دوہا ناگری کی لکھاوٹ کے بنا بے مطلب ہو جائے گا۔

ایک چھتر ایک مکُٹ منی، سب برنتی پر جوؤ
تُلسی رگھوبر نام کے برن براجت دوؤ

اسی طرح نقطے کے ہیر پھیر سے معنی کیسے بدل جاتے ہیں، اس پر اردو میں کئی نظمیں ہیں، جن کا مزہ اردو لکھاوٹ میں ہی لیا جا سکتا ہے۔

لیکن ساتھ ہی مجھے یہ بھی کہنا چاہئے کہ ہماری لکھاوٹوں کو (جس میں اردو بھی شامل ہے) بہت سدھارنے کی ضرورت ہے۔ اور جب تک ہم اس پر ایک رائے سے کوئی فیصلہ نہیں کر لیتے، تب تک ان کے استعمال میں بڑی عملی کٹھنائیاں ہیں۔

دوسری بات یہ ہے کہ آج کے زمانے میں ٹائپ رائٹر جیسے سادھنوں کے بغیر اور تار وغیرہ کے کاموں میں دیشی لکھاوٹوں کا اپیوگ کرنے میں بہت اڑچنیں ہوتی ہیں۔ نتیجہ یہ ہوتا ہے کہ لکھاوٹ کے لئے ہم [illegible]

अँगरेज़ी से ही काम लेते रहते हैं. यह बात मुझे "लाहे कारन मूल गँवायो"—सी मालूम होती है.

रोमन लिखावट पर अेक अिलज़ाम यह लगाया जाता है कि अुसमें सिर्फ़ २६ हरफ़ होने से वह हमारी बोलियों को ठीक ठीक लिखने में सफल नहीं हो पाती. अिस दोष को मैं नहीं । मानता. कुछ हरफ़ों के बारे में थोड़े अदल बदल से रोमन लिखावट के २६ हरफ़ों के सहारे हम बिलकुल सही रूप में अपनी बोलियां लिख सकते हैं. और यह किसी मात्राओं (ख़ास निशानों–diacritical marks) का बग़ैर अुपयोग किय हो सकता है और किसी भी आवाज़ को बनाने में दो से ज्यादा हरफ़ों की ज़रूरत नही होती. अिस के साथ दी हुआी तरक़ीब को देखने से यह मालूम हो जायगा.

अिस लिखावट की कुंजी

अिस तरकीब में मैंने रोमन लिखावट के दो तरीक़ों में से किसी अेक का दो ढंग से अुपयोग करने का रास्ता सुझाया है. अेक ढंग है ख़ास निशानों (diacritical marks) का. यूं तो अुसकी ज़रूरत नहीं, फिर भी हाथ की और टाअिपराअिटर की लिखावट में अुसकी कुछ आसानियां हैं, और जब तक दूसरे ढंग के बारे में कोअी सबका माना हुआ तरीक़ा पैदा नहीं होता तब तक अुस दूसरे का अुपयोग करने में हिचक मालूम हो सकती है. तब तक के लिअे काम रुका न रहे अिस लिअे पहला ढंग दिया है. लिखने वाला किसी अेक को पसन्द कर सकता है. जो कुछ वह अिस लिखावट में लिखे उसे वह

... ... से काम लिया है या नम्बर

انگریزی سے ہی کام لیتے رہتے ہیں. یہ بات مجھے "لاہے کارن مول گنوایو"۔سی معلوم ہوتی ہے.

رومن لکھاوٹ پر ایک الزام یہ لگایا جاتا ہے کہ اُس میں صرف ۲۶ حرف ہونے سے وہ ہماری بولیوں کو ٹھیک ٹھیک لکھنے میں سپھل نہیں ہو پاتی. اِس دوش کو میں نہیں مانتا. کچھ حرفوں کے بارے میں تھوڑے اَدل بدل سے رومن لکھاوٹ کے ۲۶ حرفوں کے سہارے ہم بالکل صحیح روپ میں اپنی بولیاں لکھ سکتے ہیں. اور یہ کسی ماتراؤں (خاص نشانوں — diacritical marks) کا بغیر اُپیوگ کئے ہوسکتا ہے اور کسی بھی آواز کو بنانے میں دو سے زیادہ حرفوں کی ضرورت نہیں ہوتی. اِس کے ساتھ دی ہوئی ترکیب کو دیکھنے سے یہ معلوم ہوجائے گا.

اِس لکھاوٹ کی کُنجی

اِس ترکیب میں میں نے رومن لکھاوٹ کے دو طریقوں میں سے کسی ایک کا دو ڈھنگ سے اُپیوگ کرنے کا راستہ سُجھایا ہے. ایک ڈھنگ ہے خاص نشانوں (diacritical marks) کا. یوں تو اُس کی ضرورت نہیں، پھر بھی ہاتھ کی اور ٹائپ رائٹر کی لکھاوٹ میں اُس کی کچھ آسانیاں ہیں، اور جب تک دوسرے ڈھنگ کے بارے میں کوئی سب کا مانا ہوا طریقہ پیدا نہیں ہوتا تب تک اُس دوسرے کا اُپیوگ کرتے میں ہچک معلوم ہوسکتی ہے. تب تک کے لئے کام رُکا نہ رہے اِس لئے پہلا ڈھنگ دیا ہے. لکھنے والا کسی ایک کو پسند کرسکتا ہے. جو کچھ وہ اِس لکھاوٹ میں لکھے اُسے وہ صاف کردے کہ اُس نے لکھاوٹ نمبر ایک سے کام لیا ہے یا نمبر

दो से. दोनों तरीक़ों में सिर्फ़ व्यंजन यानी हरूफ़ तहज्जी की लिखाई में फ़रक़ है. और सब तरह से दोनों बराबर हैं. तरीक़ा नम्बर एक में देशी—याने हिंदी—उर्दू—की लिखने की रीत बरती गअी है. यानी, जब दो या ज्यादा व्यंजन (हरूफ़ तहज्जी) साथ आते हों, तब हर अेक को अलग अलग—'अ' से मिली हुअी—आवाज़ में पढ़ना चाहिअे. जैसे, prt = परत. अगर किसी दो या ज्यादा व्यंजनों की मिली हुअी आवाज़ निकालनी हो, तो अुन दो या ज्यादा के बीच (पहले ढंग में) '/' या (दूसरे ढंग में) 'v' हरफ़ लिखा जाय. जैसे, p/rt (pvrt) = प्रत, pr/t (prvt) = पर्त, p/r/t (pvrvt) = प्र्त

तरीक़ा नम्बर दो में अंगरेज़ी रीत का अुपयोग है. याने, दो या ज्यादा व्यंजन साथ आये हों, तो अुनकी आवाज़ साथ मिला कर निकालनी चाहिअे. जैसे, prt = पृत. अगर अुन्हें अलग अलग निकालनी हो तो अुन्हें @ या v से अलग किया जाय जैसे p @ r @ t (pvrvt) = परत; pr@t (prvt) = प्रत, p@rt (pvrt) = पर्त. पहले तरीक़े से लिखने में कुछ हरफ़ कम हो जाते हैं, और अिससे जगह और समय दोनों की किफ़ायत होती है. फिर, वह देशी लिखावटों के रिवाज से मेल खाता है. लेकिन, हो सकता है कि जिन्हें अंगरेज़ी का बहुत मुहावरा है, उन्हें दूसरा तरीक़ा पसंद आवे.

अंगरेज़ी लिपि में पांच अैसे हरफ़ हैं, जो देशी भाषाओं के लिये ज़रूरी नहीं. अुनकी आवाज़ें दूसरी तरह दिखाई जा सकती हैं. यह हरफ़ v, x, z, q और f हैं. अिन हरफ़ों को अंग्रेज़ी से जुदा मानी देकर उनकी मदद से हमारी भाषाओं

دو سے. دونوں طریقوں میں صرف ویجن یعنی حروف تہجّی کی لکھائی میں فرق ہے. اور سب طرح سے دونوں برابر ہیں. طریقہ نمبر ایک میں دیشی—یعنی ہندی—اُردو—کی لکھنے کی ریت برتی گئی ہے. یعنی جب دو یا زیادہ ویجن (حروف تہجّی) ساتھ آتے ہوں، تب ہر ایک کو الگ الگ—'ا' سے ملی ہوئی—آواز میں پڑھنا چاہئے. جیسے 'prt' = پرت. اگر کسی دو یا زیادہ ویجنوں کی ملی ہوئی آواز نکالنی ہو، تو اُن دو یا زیادہ کے بیچ (پہلے ڈھنگ میں) '/' یا (دوسرے ڈھنگ میں) 'v' حرف لکھا جائے. جیسے p/rt (pvrt) = پرت، pr/t (prvt) = پرت، p/r/t (pvrvt) = پرت.

ساتھ آتے ہوں، تو ان کی آواز ساتھ ملا کر نکالنی چاہئے. جیسے، prt = پرت. اگر انھیں الگ الگ نکالنی ہو تو انھیں @ یا v سے الگ کیا جائے جیسے p@r@t (pvrvt) = پرت، pr@t (prvt) = پرت، p@rt (pvrt) = پرت. پہلے طریقے سے لکھنے میں کچھ حرف کم ہو جاتے ہیں، اور اس سے جگہ اور سمے دونوں کی کفایت ہوتی ہے. پھر، وہ دیشی لکھاوٹوں کے رواج سے میل کھاتا ہے. لیکن، ہو سکتا ہے کہ جنھیں انگریزی کا بہت محاورہ ہو، انھیں دوسرا طریقہ پسند آوے.

انگریزی لپی میں پانچ ایسے حرف ہیں، جو دیشی بھاشاؤں کے لئے ضروری نہیں. اُن کی آوازیں دوسری طرح دکھائی جا سکتی ہیں. یہ حرف q، z، x، v اور f ہیں. اِن حرفوں کو انگریزی سے جُدا معنی دے کر اُن کی مدد سے ہماری بھاشاؤں

के लिये ज़रूरी सब आवाज़ें बताई जा सकती हैं. इनका जो उपयोग यहां सोचा गया है, वह नीचे है.

v—तरीक़ा नम्बर एक में व्यंजन (: तहज्जी) के साथ हलन्त (: साकिन) दिखाने के लिये और a के साथ मिल कर अ के लिये. तरीक़ा नम्बर दो में a तथा व्यंजन दोनों के साथ अ के लिये.

x—'‒'—नाँक से निकलने वाली आवाज़ों के लिये, अपने से जुड़े स्वर के साथ, और अपने प्रान्त के रिवाज के मुताबिक़ j, g, या d के साथ ज्ञ के लिये.

z—ख, घ, छ, थ, ध, फ, भ, ष, ढ़ आदि महाप्राणों के लिये यानी जिन हरफ़ों के बोलने मे भाप निकलती हो उनके लिये यानी व्यंजन के साथ.

q—क़, ग़, च़, ज़, ट, ड, ड़, ण, ल़, श, जैसी ख़ास ख़ास आवाज़ों के लिये मुनासिब व्यंजन के साथ.

f—ख़, ठ, ढ, फ़ आदि ख़ास महाप्राण आवाज़ों के लिये. मुनासिब व्यंजन के साथ.

जब तक इन हरफ़ों के लिये ऊपर बताये इशारे क़ायम नहीं किये जाते, तब तक नीचे लिखे निशानों का इन्हीं कामों के लिये उपयोग किया जा सकता है. यह सब निशान किसी भी अंगरेज़ी टाइप राइटर पर पाये जा सकते हैं.

v के लिये तरीक़ा १ में (/), तरीक़ा २में (—); x के लिये (‒); z के लिये (:); q के लिये ('), और f के लिये (⁏).

کے لئے ضروری سب آوازیں بتائی جاسکتی ہیں۔ ان کا جو اُپیوگ یہاں سوچا گیا ہے، وہ نیچے ہے۔

v — طریقہ نمبر ایک میں ویّجن (تہجّی) کے ساتھ ہلنت (ساکن) دکھانے کے لئے اور a کے ساتھ مل کر اَ کے لئے۔ طریقہ نمبر دو میں a تتھا ویّجن دونوں کے ساتھ اَ کے لئے۔

x — '‒' — ناک سے نکلنے والی آوازوں کے لئے، اپنے سے جُڑے سور کے ساتھ، اور اپنے پرانت کے رواج کے مطابق j، g یا d کے ساتھ ज्ञ کے لئے۔

z — کھ، گھ، چھ، تھ، دھ، پھ، بھ، ش، ڑھ آدی مہا پران کے لئے یعنی جن حرفوں کے بولنے میں بھاپ نکلتی ہو اُن کے لئے یعنی ویّجن کے ساتھ۔

q — ق، غ، چ، ز، ٹ، ڈ، ڑ، ݨ، ل، ش، جیسی خاص خاص آوازوں کے لئے مناسب ویّجن کے ساتھ۔

f — خ، ٹھ، ڈھ، ف آدی خاص مہاپران آوازوں کے لئے، مناسب ویّجن کے ساتھ۔

جب تک ان حرفوں کے لئے اوپر بتائے اشارے قائم نہیں کئے جاتے، تب تک نیچے لکھے نشانوں کا انھیں کاموں کے لئے اُپیوگ کیا جاسکتا ہے۔ یہ سب نشان کسی بھی انگریزی ٹائپ رائٹر پر پائے جاسکتے ہیں۔

v کے لئے طریقہ ۱ میں (/)، طریقہ ۲ میں (—)؛ x کے لئے (‒)؛ z کے لئے (:)؛ q کے لئے (')، اور f کے لئے (⁏)۔

(यहाँ एक खुलासा कर देना ज़रूरी है. आम तौर पर ख, घ, छ, वग़ैरा महाप्राण व्यंजनों को h के साथ मिलने का रिवाज है. अिसकी जगह z या f का अुपयोग यहां किया गया है. z का अुपयोग यूरोप की कुछ भाषाओं में अिस तरह होता है. h कभी कभी शक पैदा करने वाला होता है. जैसे kher तरीक़ा १ में खेर पढ़ा जाय या क्हेर, या तरीक़ा २ में खेर या क्हेर ? अिसी तरह bhal से (१) में भाल या बहाल और (२) में भाल या ब्हाल ? फिर मद्रास वग़ैरा प्रान्तों में th और dh का अुपयोग त-थ और द-ध दोनों के लिअे होता है, और दूसरे प्रान्तों में ठ-थ और ड-ध दोनों के लिये. यह सब धोका z या f के अुपयोग से हट जाता है. f असल में qz के बराबर है. लेकिन अुस के अुपयोग से लिखाअी में अेक हरफ़ की किफ़ायत होती है.)

नीचे के निशान सिर्फ़ जगह और समय की बचत के लिये हैं. अनुस्वार के लिये ∸, विसर्ग के लिये %, अ के लिये @, अै के लिये @" औ के लिये @ =, ज्ञ के लिये £, ऋ-ऌ के लिये r̦, l̦ .

(یہاں ایک خلاصہ کر دینا ضروری ہے۔ عام طور پر کھ، گھ، چھ وغیرہ مہاپران وینجنوں کو h کے ساتھ ملنے کا رواج ہے۔ اس کی جگہ z یا f کا اُپیوگ یہاں کیا گیا ہے۔ z کا اُپیوگ یوروپ کی کچھ بھاشاؤں میں اس طرح ہوتا ہے۔ h کبھی کبھی شک پیدا کرنے والا ہوتا ہے۔ جیسے kher طریقہ ۱ میں کھیر پڑھا جائے یا کہیر، یا طریقہ ۲ میں کھیر یا کہیر؟ اسی طرح bhal سے (۱) میں بھال یا بہال اور (۲) میں بھال یا بہال؟ پھر مدراس وغیرہ پرانتوں میں th اور dh کا اُپیوگ ت۔تھ اور د۔دھ دونوں کے لئے ہوتا ہے، اور دوسرے پرانتوں میں ٹھ۔تھ اور ڈ۔دھ دونوں کے لئے۔ یہ سب دھوکا z یا f کے اُپیوگ سے ہٹ جاتا ہے۔ f اصل میں qz کے برابر ہے۔ لیکن اس کے اُپیوگ سے لکھائی میں ایک حرف کی کفایت ہوتی ہے۔)

نیچے کے نشان صرف جگہ اور سمے کی بچت کے لئے ہیں۔ انسوار کے لئے ∸، وسرگ کے لئے %، اَ کے لئے @، اَے کے لئے @" اَو کے لئے @ =، گیہ کے لئے £، رِ۔لرِ کیلئے r̦, l̦

पूरी लिखावट

پوری لکھاوٹ

कमानों में दिये हुये हरफ़ तार में काम में लाने के लिये हैं.

کمانوں میں دیے ہوئے حروف تار میں کام میں لانے کے لئے ہیں

स्वर — سُر

अ—ا	आ—آ	अि—اِ	अी—اِی	अु—اُ	अू—اُو
@ (av)*	a	i	y	u	w

*जब शब्द के शुरू में या अकेला 'अ' हो. व्यंजन के साथ 'अ' मिला हो तो @ या a की ज़रूरत नहीं; सिर्फ़ v से काम लिया जाय. अुसी तरह अै और औ के बारे में.

* جب شبد کے شروع میں یا اکیلا 'اَ' ہو۔ وینجن کے ساتھ 'اَ' ملا ہو تو @ یا a کی ضرورت نہیں، صرف v سے کام لیا جائے۔ اسی طرح اَے، اَو کے بارے میں۔

ऍ—ئے	ऐ—اے—ائی	ऑ—ؤ	औ—اَو - اَؤ	ں — ँ
e	@” (ve/vi)	o	@ = (vo/vu)	غنّہ (अर्धानुनासिक) (ॅ) ॅ

ं—ں—مٓ	:—ہ	्—جزم ^	ऋ—رٕ
(अनुस्वार)	(विसर्ग)	(हलन्त)	r
m / n	hv*	‘ / ’ (v)*	’

حروف تہجّی—व्यंजन

साधारण आवाज़ें (अल्प प्राण) — سادھارن آوازیں

क—ک	ग—گ	च—چ	ज—ج	त—ت - ط	द—د
k	g	c	j	t	d
न—ن	प—پ	ब—ب	म—م	र—ر	ल—ل
n	p	b	m	r	l
स—س	ह—ہ				
s	h				

* /(v) की जरूरत तरीक़ा १ में ही रहेगी. तरीक़ा २ में हर पूरे व्यंजन (हरफ़ तहज्जी) के साथ v या कोओ दूसरा स्वर आवेगा f लिओ भिसको जरूरत न रहेगी.

* (v) کی ضرورت طریقۃ نمبر ۱ میں ہی رہیگی طریقۃ نمبر ۲ میں ہر پورے حروف تہجی (ویئنجن) کے ساتھہ v یا کوئی دوسرا سُر آویگا اِس لئے اس کی ضرورت نہ رہیگی -

ख़ास आवाज़ें (अल्प प्राण)

خاص آوازیں (الپ پران)

तार में ’ की जगह q लगाया जाय

تار میں ’ کی جگہہ q لگایا جاے

अ—ع	क़—ق	ग़—غ	ज़—ذ—ز—ض—ظ	ट—ت
@’ (avq)	k’	g’	j’	t’
ड—ڈ	ण—ں	ड़—ڑ	श—ش	ल—ل
d’	n’	r’	s’	l’

साधारण आवाज़ें (महाप्राण)

سادھارن آوازیں (مہا پران)

(तार में : की जगह z लगाया जाय)

(تار میں : کی جگہہ z لگایا جاے)

ख—کھ	घ—گھ	छ—چھ	झ—جھ	थ—تھ	ध—دھ
k:	g:	c:	j:	t:	d:
फ—پھ	भ—بھ	ष—ش	ढ़—ڑھ		
p:	b:	s:	r:		

ख़ास आवाज़ें (महाप्राण)

خاص آوازیں (مہا پران)

(तार में :’ की जगह f लगाया जाय)

(تار میں :’ کی جگہہ f لگایا جاے)

ख़—خ	झ़—ژ	ठ—ٹھ	ढ—ڈھ	फ़—ف
k:’	j:’	t:’	d:’	p:’

ख़ास हर्फ़

خاص حرف

(जिसकी आवाज़ हर प्रान्त में अलग होती है)

(جسکی آواز ہر پرانت میں الگ ہوتی ہے)

ज्ञ—£ (jx / gx / dx)

नमूना—

सब के मन में आज अुत्साह और अुल्लास है. देहात के लोगों ने अपने गांव साफ़ किये हैं, ध्वजा-पताकाअें लगाअी हैं. ग़रीब और श्रीमान सभी अिस आनंद में सम्मिलित हैं.

سب کے من میں آج اتساہ اور الّس ہے - دیہات کے لوگوں نے اپنے گاؤں صاف کئے ہیں - دھجا-پتاکائیں لگائی ہیں - غریب اور شری مان سبھی اس آنند میں سملت ہیں -

तरीक़ा–१ طریقہ—۱

साधारण लिखावट—سادھارن لکھاوٹ

Sbke mnme÷ aj ut/sah @=r ul/las h@". Dehatke logo÷ne @pne ga÷w' sap:' kie h@"÷, d:/w'ja - ptakae÷ lgay h@"÷. G'ryb @=r s'/ryman sb:y is an÷dme÷ s÷milit h@"÷.

तार की लिखावट—تار کی لکھاوٹ

sbke mnmex aj utvsah vor ulvlas hve. Dehatke logoxne avpne gaxwq sapf kie hvex, dzvwqja-ptakaex lgay hvex. Gqryb vor sqvryman sbzy is annvdmex smvmilit hvex.

तरीक़ा–२ طریقہ ۲

साधारण लिखावट—سادھارن لکھاوٹ

S-b ke m-n me÷ aj utsah @=r ullas h@". Dehat ke logo÷ne @p-ne ga÷w' sap:' kie h@"÷, d:w'- ja - p-takae÷ l-gay h@"÷. G'-ryb @=r s'ryman s-b:y is an-ndme÷ s-mmilit h@"÷.

तार की लिखावट—تار کی لکھاوٹ

Svb ke mvn mex aj utsah vor ullas hve. Dehat ke logox ne avpvne gaxwq sapf kie hvex, dzwqvja-pvtakaex lvgay hvex. Gqvryb vor sqryman sbzy is anvnd mex svmmilit hvex.

मैं आदमी नहीं हूं

(अब्दुल हलीम साहब अंसारी, भोपाल)

मिनट मिनट खट खट
करवट करवट खट पट
आवाज़ पर आवाज़,
और—लगातार आवाज़
कौन है यह ?
कान खाए जा रहा है, नींद हराम कर रही है.
मुआफ़ फ़रमाइये, ज़रा बाहर तशरीफ़ लाइये.
अरे भाई नाम बताओ न—तुम कौन हो ?
— मैं हूँ इनक़लाब.
क्या इनक़लाब ?
जी हां इनक़लाब !
यह इनक़लाब विनक़लाब क्या होता है ?
आप बाहर तो आइये, मैं मिलना चाहता हूँ.
आप तशरीफ़ ले जाइये—मैं मिलना नहीं चाहता
अन्दाज़ से मुझे आप निहायत ख़तरनाक आदमी मालूम होते हैं.
अजी जनाब, मैं आदमी नहीं हूँ.
तो फिर आख़िर कौन हैं ?
मैं जानवर नुमा आदमी को इंसानियत के क़ालिब में
ढालने वाला "एक इसलाही अमल" हूँ.

میں آدمی نہیں ہوں

(عبدالحلیم صاحب انصاری بھوپال)

منٹ منٹ کھٹ کھٹ
کروٹ کروٹ کھٹ پٹ
آواز پر آواز،
اور— لگاتار آواز
کون ہے یہ ؟
کان کھائے جا رہا ہے، نیند حرام کر رہی ہے۔
معاف فرمائیے، ذرا باہر تشریف لائیے۔
ارے بھائی نام بتاؤ نہ — تم کون ہو ؟
— میں ہوں انقلاب۔
کیا انقلاب ؟
جی ہاں انقلاب !
یہ انقلاب ونقلاب کیا ہوتا ہے ؟
آپ باہر تو آئیے، میں ملنا چاہتا ہوں۔
آپ تشریف لے جائیے — میں ملنا نہیں چاہتا
انداز سے مجھے آپ نہایت خطرناک آدمی معلوم ہوتے ہیں۔
اجی جناب، میں آدمی نہیں ہوں۔
تو پھر آخر کون ہیں ؟
میں جانور نما آدمی کو انسانیت کے قالب میں ڈھالنے
والا "ایک اصلاحی عمل" ہوں

उर्फ़ आम में लोग मुझे को "इनक़लाब" के नाम से पुकारते हैं और उसी नाम से मैं अब सारे जहान में बदनाम हूँ.

आज़ादी के जज़बे से मशविरा—

एक मजबूर यानी कमज़ोर और बेज़बान इंसान जौर जबर का निशान बन चुका है. ज़ुल्म और अत्याचार का वह ख़ूब शिकार हो चुका है. उसके दिल के सारे भाव ज़ख्म बन चुके हैं और सारे उसके अरमान मर चुके हैं. तो ऐसी ही हालत में वह थोड़ी देर के लिये अलग बैठकर आज़ादी के जज़बे से ज़रूरी सलाह मशविरा करता है. ताकि उसकी ज़िन्दगी क्रान्ति का रूप ले ले और आप ही आप वह कामयाबी का भेद पा ले.

(३८)

हेजान में तूफ़ान—

बेबसी का दूसरा नाम है मजबूरी—मजबूरी असल में उत्पन्न करने वाली शक्ति है इरादे और करतब की.

———और, बानी है हिम्मत और टक्कर की.

जब मजबूरी को अपनी बेबसी और बदहाली के दर्शन का मौक़ा मिलता है तो उसको अपने जीवन की ज़िल्लत देखकर फुरेरी आ जाती है. वही फुरेरी उसको ग़ैरत और ख़ुद्दारी पर कोड़े लगाती है. और उसके मुरदा एहसास को जिलाती है जिसके असर से उसके बदन से आग के शोले निकलने लगते हैं. बस वह आग बगूला हो जाती है और आपे से बाहर !

धीरज को एक दम खो देती है. बरदाश्त को बिल्कुल रुख़-... ... पलट आता है. विचार उसका

عرف عام میں لوگ مجھ کو "انقلاب" کے نام سے پکارتے ہیں اور اُسی نام سے میں اب سارے جہان میں بدنام ہوں۔

آزادی کے جذبے سے مشورہ—

ایک مجبور یعنی کمزور اور بےزبان انسان جور جبر کا نشانہ بن چکا ہے۔ ظلم اور اتیاچار کا وہ خوب شکار ہوچکا ہے۔ اُس کے دل کے سارے بھاو زخم بن چکے ہیں اور سارے اُس کے ارمان مر چکے ہیں۔ تو ایسی ہی حالت میں وہ تھوڑی دیر کے لئے الگ بیٹھ کر آزادی کے جذبے سے ضروری صلاح مشورہ کرتا ہے۔ تاکہ اُس کی زندگی کرانتی کا روپ لے لے اور آپ ہی آپ وہ کامیابی کا بھید پالے۔

(۳۸)

ہیجان میں طوفان—

بےبسی کا دوسرا نام ہے مجبوری—مجبوری اصل میں اُتپن کرنے والی شکتی ہے ارادے اور کرتب کی۔

——اور، بانی ہے ہمت اور ٹکر کی۔

جب مجبوری کو اپنی بےبسی اور بدحالی کے درشن کا موقع ملتا ہے تو اُس کو اپنے جیون کی ذلت دیکھ کر پھریری آجاتی ہے۔ وہی پھریری اُس کی غیرت اور خودداری پر کوڑے لگاتی ہے۔ اور اُس کے مُردہ احساس کو جلاتی ہے جس کے اثر سے اُس کے بدن سے آگ کے شعلے نکلنے لگتے ہیں۔ بس وہ آگ بگولہ ہوجاتی ہے اور آپے سے باہر!

دھیرج کو ایک دم کھو دیتی ہے۔ برداشت کو بالکل رخصت کردیتی ہے۔ دھیان اُس کا پلٹ جاتا ہے۔ وچار اُس کا

बदल जाता है. मजबूरी अब अपने आप को महकूमी, गुलामी, बेकसी और बेबसी के मुक़ाम से हटा हुआ दूसरी जगह पर पाती है.

————यानी इनक़लाबी माहौल में

इस माहौल में जब वह दाखिल हो जाती है तो मजबूरियों के दबे दबाए और सिमटे सिमटाए ज़खीरों से जबरदस्त हेजान उमड़ पड़ता है—उसी हेजान में गरम गरम जज़बों का बेपनाह तूफ़ान होता है जो बड़े बड़े अत्याचारों की ऊंची ऊंची अटारियों को घास फूस की तरह बहा ले जाता है. और उन अत्याचारों की ज़िन्दा लाशों को फ़ना के ग़ार में ढकेल देता है, इनक़लाब की आग में झुलस देता है और उनकी जड़ बुनियादों को उखाड़ फेंकता है. यहां तक कि जब वह जोश में और तैश (गुस्सा) में आता है तो ज़मीन आसमान को भी हिला देता है.

मजबूरी का तूफ़ान क्योंकि मजबूरी की हालत में उठता है यानी जब ज़ब्त की हद ख़तम हो चुकी होती है, सब्र का पैमाना भर चुका होता है, सन्तोष का प्रमान चमकने लगता है, तब वह उठता है और मजबूर होकर उठता है. इसलिये अत्याचारों को चुनौती देकर उठता है—और उन पर क़यामत बन कर उठता है.

———

بدل جاتا ہے۔ مجبوری اب اپنے آپ کو محکومی، غلامی، بےکسی اور بےبسی کے مقام سے ہٹا ہوا دوسری جگہ پر پاتی ہے۔

——— یعنی انقلابی ماحول میں۔

اس ماحول میں جب وہ داخل ہوجاتی ہے تو مجبوریوں کے دبے دبائے اور سمٹے سمٹائے ذخیروں سے زبردست ہیجان اُمڈ پڑتا ہے—اُسی ہیجان میں گرم گرم جذبوں کا بے پناہ طوفان ہوتا ہے جو بڑے بڑے اتیاچاروں کی اونچی اونچی اٹاریوں کو گھاس پھوس کی طرح بہا لے جاتا ہے۔ اور اُن اتیاچاروں کی زندہ لاشوں کو فنا کے غار میں ڈھکیل دیتا ہے، انقلاب کی آگ میں جھلس دیتا ہے اور اُن کی جڑ بنیادوں کو اُکھاڑ پھینکتا ہے۔ یہاں تک کہ جب وہ جوش میں اور طیش (غصہ) میں آتا ہے تو زمین آسمان کو بھی ہلا دیتا ہے۔

مجبوری کا طوفان کیونکہ مجبوری کی حالت میں اُٹھتا ہے یعنی جب ضبط کی حد ختم ہوچکی ہوتی ہے، صبر کا پیمانہ بھر چکا ہوتا ہے، سنتوش کا پرمان چمکنے لگتا ہے، تب وہ اُٹھتا ہے اور مجبور ہوکر اُٹھتا ہے۔ اس لئے اتیاچاروں کو چنوتی دے کر اُٹھتا ہے— اور اُن پر قیامت بن کر اُٹھتا ہے۔

———

गो-बध

गो बध के बारे में गाँधी जी के यह शब्द काफी हैं, कि अगर तुम हिन्दुस्तान में गो-बध को क़ानून से रोकोगे तो पाकिस्तान में बुतपरस्ती यानी मूर्तिपूजा क़ानून से जरूर रोको जायगी. अब जो कुछ हम लिखेंगे वह गाँधी जी के ऊपर कहे सूत्र की सिर्फ़ तफ़सील होगी.

बध करना ही बुरी चीज़ है. और फिर गाय जैसे उपयोगी जानवर का बध करना तो और भी बुरी चीज़ है. गाय की सेवाएं इतनी ज्यादा हैं कि बध करना तो एक तरफ़ वह सचमुच इज्ज़त करने लायक जानवर बन जाती है. और आदमी उसकी इज्ज़त करते भी हैं. किसी भी जानवर को देवता या ईश्वर के नाम पर बध करना बहुत ही बुरी चीज़ है, और फिर गाय जैसे जानवर को ईश्वर के नाम पर बध करना तो बध करने को हद तक खींच ले जाना है.

गो-बध हिन्दुस्तान में कब से है इसकी तारीख़ का पता तारीख़ को भी नहीं और इसके रोकने की कितनी बार कोशिशें की गईं इसका हाल भी तारीख़ ठीक ठीक नहीं बता सकती. हां, इस बात का पता जरूर चलता है कि जब जब गोबध रोकने की कोशिश की गई तब तब दो तरीक़े काम में लाए गए.

(१) यह कि गोबध रोकने वालों ने बड़े प्रेम से गोबध करने वालों को गाय के फ़ायदे समझाए, गाय की सेवाएं उनके सामने

گؤ بدھ

گو بدھ کے بارے میں گاندھی جی کے یہ شبد کافی ہیں کہ اگر تم ہندستان میں گو بدھ کو قانون سے روکوگے تو پاکستان میں بُت پرستی یعنی مورتی پوجا قانون سے ضرور روکی جائےگی۔ اب جو کچھ ہم لکھیں گے وہ گاندھی جی کے اوپر کہے سوتر کی صرف تفصیل ہوگی۔

بدھ کرنا ہی بُری چیز ہے' اور پھر گائے جیسے اُپیوگی جانور کا بدھ کرنا تو اور بھی بُری چیز ہے۔ گائے کی سیوائیں اتنی زیادہ ہیں کہ بدھ کرنا تو ایک طرف وہ سچ مچ عزت کرنے لائق جانور بن جاتی ہے۔ اور آدمی اُس کی عزت کرتے بھی ہیں۔ کسی بھی جانور کو دیوتا یا ایشور کے نام پر بدھ کرنا بہت ہی بُری چیز ہے' اور پھر گائے جیسے جانور کو ایشور کے نام پر بدھ کرنا تو بدھ کرنے کی حد تک کھینچ لے جانا ہے۔

گؤ بدھ ہندستان میں کب سے ہے اس کی تاریخ کا پتہ تاریخ کو بھی نہیں اور اس کے روکنے کی کتنی بار کوششیں کی گئیں اس کا حال بھی تاریخ ٹھیک ٹھیک نہیں بتا سکتی۔ ہاں! اس بات کا پتہ ضرور چلتا ہے کہ جب جب گو بدھ روکنے کی کوشش کی گئی تب تب دو طریقے کام میں لائے گئے۔

(۱) یہ کہ گو بدھ روکنے والوں نے بڑے پریم سے گو بدھ کرنے والوں کو گائے کے فائدے سمجھائے، گائے کی سیوائیں اُن کے سامنے

(۴۶۰)

खोल खोल कर रक्खीं, अपने त्याग और अपनी फ़ैयाज़ी से गोवध करने वालों के दिल पिघलाए, उन्हीं के धर्म ग्रन्थों से सबूत निकाल निकाल कर दिए और आख़िर उनको ऐसी सफलता मिली कि उन्होंने गाय के मारने वालों को गाय के बचाने वालों में बदल दिया. और उन्हीं महापुरुषों का असर हज़ारों बरस बीत जाने पर भी ताज़ा और जानदार बना हुआ है, जितना वह जब था जब नया नया जन्मा था. ऐसे महात्मा थे, महावीर स्वामी और बुद्ध भगवान्.

(२) यह कि गोवध करने वाले ख़ुद ही, अगर वह राजा हुए, वो प्रजा के भावों का ख़याल रख कर अपने हुकुम के ज़रिये गोवध, को थोड़ा थोड़ा या बिलकुल रोक देते थे. या अगर मामूली आदमी हुए तो अपने पड़ोसियों का ख़्याल करके वैसा करने से रुक जाते थे. इस तरह के राजाओं में बाबर, हुमायूँ, अकबर गिनाए जा सकते हैं. और मामूली आदमियों में तो, रामचन्द्र जी के ज़माने से आज तक, जगह जगह ऐसे आदमी आए दिन पैदा होते रहते हैं फिर चाहे वह अँगुलियों पर गिने जाने लायक क्यों न हों जो अपने पड़ोसियों का ख़्याल रख कर गोवध को अपने यहाँ से हमेशा के लिए रोक देते हैं. हाँ, राजाओं के गोवध रोकने में आदमियत और दया का हिस्सा बहुत कम रहता है, ज़्यादा हिस्सा रहता है राजनीति का. इसलिये उनके फ़रमानों का असर उनके राजा रहते हुए भी गोवध करने वालों पर बहुत कम पड़ता है. और उनके दुनिया से उठ जाने के बाद तो वह

کھول کھول کر رکھیں، اپنے تیاگ اور اپنی فیاضی سے گو بدھ کرنے والوں کے دل پگھلائے، اُنھیں کے دھرم گرنتھوں سے ثبوت نکال نکال کر دیئے اور آخر اُن کو ایسی سپھلتا ملی کہ اُنھوں نے گائے کے مارنے والوں کو گائے کے بچانے والوں میں بدل دیا. اور اُنھیں مہاپرشوں کا اثر ہزاروں برس بیت جانے پر بھی تازہ اور جان دار بنا ہوا ہے، جتنا وہ جب تھا جب نیا نیا جنما تھا. ایسے مہاتما تھے، مہابیر سوامی اور بُدھ بھگوان.

(۲) یہ کہ گو بدھ کرنے والے خود ہی، اگر وہ راجا ہوئے، تو پرجا کے بھاوؤں کا خیال رکھ کر اپنے حکم کے ذریعے گو بدھ، کو تھوڑا تھوڑا یا بالکل روک دیتے تھے. یا اگر معمولی آدمی ہوئے تو اپنے پڑوسیوں کا خیال کر کے ویسا کرنے سے رُک جاتے تھے. اِس طرح کے راجاؤں میں بابر، ہمایوں، اکبر گنائے جا سکتے ہیں. اور معمولی آدمیوں میں تو، رام چندر جی کے زمانے سے آج تک، جگہ جگہ ایسے آدمی آئے دن پیدا ہوتے رہتے ہیں پھر چاہے وہ اُنگلیوں پر گنے جانے لائق کیوں نہ ہوں جو اپنے پڑوسیوں کا خیال رکھ کر گو بدھ کو اپنے یہاں سے ہمیشہ کے لئے روک دیتے ہیں. ہاں، راجاؤں کے گو بدھ روکنے میں آدمیت اور دیا کا حصہ بہت کم رہتا ہے، زیادہ حصہ رہتا ہے راج نیتی کا. اِس لئے اُن کے فرمانوں کا اثر اُن کے راجا رہتے ہوئے بھی گو بدھ کرنے والوں پر بہت کم پڑتا ہے. اور اُن کے دُنیا سے اُٹھ جانے کے بعد تو

[illegible]

हुमायूँ और उसके पोते अकबर को अपने अपने राजकाल में फिर से फ़रमान निकालने पड़े और तिस पर भी कहीं कहीं उनके फ़रमान की बेक़द्री हो ही जाती थी, क्योंकि राजाओं के अपने ख़याल से बध या गोवध कुछ बहुत बुरा नहीं समझा जाता था. राजाओं से कहीं ज्यादा तो वह मामूली आदमी अपना असर छोड़ जाते थे जो अपने पड़ोसियों की ख़ातिर गोवध या सब तरह के बध को न सिर्फ़ छोड़ देते थे बल्कि ख़ुद मांस खाना भी छोड़ देते थे और अपने घर में भी बनने देने को प्यार से रोक देते थे.

मतलब यह कि जिन दो तरीक़ों से अब तक गोवध रोका गया उन में आदमी के अंदर बैठे ईश्वर से या तो अपील की जाती थी या ईश्वर ख़ुद ही गोवध करने वालों में जागकर अपनी ख़ुदाई सिफ़त, दया की मात्रा उनमें इतनी ज्यादा कर देता था कि वह बध जैसे काम को अपने आप ही छोड़ देते थे.

आज हिन्दू गोवध रोकने के लिये जिस तरीक़े को काम में लाना चाहते हैं वह बिलकुल नया है. हो सकता है कभी पहिले भी कहीं काम में लाया गया हो पर उसका हमको पता नहीं है न सही, पर हम इतना जरूर कह सकते हैं कि इस तरीके से अगर कभी गोवध रुका होगा तो या तो वह रुका ही न होगा या अगर रुका होगा तो कुछ दिन बाद ही फिर चल पड़ा होगा. फिर जिस तरीके से, यानी क़ानून बनवाकर, आज के हिन्दू गोवध रोकना चाहते हैं उनके जी में सचमुच गाय के लिए इतनी मुहब्बत है, यह भी तो ठीक ठीक पता नहीं चलता. जहाँ तक हम समझते हैं क़ानून से गोवध रोकने की ख़्वाहिश के पीछे या तो कोई राजनीति की

ہمایوں اور اُس کے پوتے اکبر کو اپنے اپنے راج کال میں پھر سے فرمان نکالنے پڑے اور تِس پر بھی کہیں کہیں اُن کے فرمان کی بے قدری ہو ہی جاتی تھی، کیونکہ راجاؤں کے اپنے خیال سے بدھ یا گو بدھ کچھ بہت بُرا نہیں سمجھا جاتا تھا۔ راجاؤں سے کہیں زیادہ تو وہ معمولی آدمی اپنا اثر چھوڑ جاتے تھے جو اپنے پڑوسیوں کی خاطر گو بدھ یا سب طرح کے بدھ کو نہ صرف چھوڑ دیتے تھے بلکہ خود مانس کھانا بھی چھوڑ دیتے تھے اور اپنے گھر میں بھی بننے دینے کو پیار سے روک دیتے تھے۔

مطلب یہ کہ جن دو طریقوں سے اب تک گو بدھ روکا گیا اُن میں آدمی کے اندر بیٹھے ایشور سے یا تو اپیل کی جاتی تھی یا ایشور خود ہی گو بدھ کرنے والوں میں جاگ کر اپنی خدائی صفت، دیا کی ماترا اُن میں اتنی زیادہ کر دیتا تھا کہ وہ بدھ جیسے کام کو اپنے آپ ہی چھوڑ دیتے تھے۔

آج ہندو گو بدھ روکنے کے لئے جس طریقے کو کام میں لانا چاہتے ہیں وہ بالکل نیا ہے۔ ہوسکتا ہے کبھی پہلے بھی کہیں کام میں لایا گیا ہو پر اُس کا ہم کو پتہ نہیں ہے نہ سہی، پر ہم اتنا ضرور کہہ سکتے ہیں کہ اِس طریقے سے اگر کبھی گو بدھ رُکا ہوگا تو یا تو وہ رُکا ہی نہ ہوگا یا اگر رُکا ہوگا تو کچھ دن بعد ہی پھر چل پڑا ہوگا۔ پھر جس طریقے سے، یعنی قانون بنوا کر، آج کے ہندو گو بدھ روکنا چاہتے ہیں اُن کے جی میں سچ مچ گائے کے لئے اتنی محبت ہے، یہ بھی تو ٹھیک ٹھیک پتہ نہیں چلتا۔ جہاں تک ہم سمجھتے ہیں قانون سے گو بدھ روکنے کی خواہش کے پیچھے یا تو کوئی راج نیتی کی

चाल है या अपने से दूसरे धर्म वालों को चिढ़ाने का ख्याल. क्योंकि सच्चे जी से गोवध रोकने की बात जिस मन में आएगी वह मन बहुत ही पाक होना चाहिये. किसी भी जानवर के वध से जिसको दुख होता हो ऐसा ही आदमी सच्चे जी से गोवध रोकने की बात सोच सकता है, और अगर वह उसी काम में जी जान लड़ाए तो शायद मरते मरते गोवध बंद करा सकता है, पर ऐसा आदमी तो क़ानून से रोकने की बात सोचेगा भी नहीं, वह तो वैसा सोचने वाले को उल्टा रोकेगा. आज जो हिन्दू गोवध का आन्दोलन लेकर खड़े हुए हैं अगर वह पहिले हिन्दुओं के देवी के मंदिरों में देवता के नाम पर होते हुए भैंस, बकरा, घेटे की बलि को रोकने में लगे होते तब भी वह किसी दर्जे तक इस आन्दोलन को हाथ में लेने के क़ाबिल हो सकते थे, पर उनमें से तो बहुत से ऐसे हैं जो खुद मांस खाते हैं और टेढ़े सीधे गो मांस के सत को दवा की शक्ल में खुद भी खा लेते हैं क्यों कि आज कल गो मांस का सत हस्पतालों में विलायत से खूब आता रहता है. अगर हम सत वाली बात छोड़ भी दें जिसका अकसर खाने वालों को पता नहीं होता तब भी उनके मांस खाने की बात कैसे भी नहीं छोड़ी जा सकती. खुलासा यह कि उन लोगों का मन अभी इतना पवित्र नहीं हो पाया कि वह गोवध रोकने के आन्दोलन को बहुत दूर तक ले जा सकें और अगर सचमुच उसे दूर तक ले गए और दो चार दस ने अपनी जानें क़ुरबान करदीं तो हम यही समझेंगे कि वह जानें गाय बचाने के लिए नहीं क़ुरबान हुई हैं, हुई हैं कुछ राजनीति के अधिकार ऐंठने की कोशिश में.

چال ہے یا اپنے سے دوسرے دھرم والوں کو چڑھانے کا خیال. کیونکہ سچے جی سے گو بدھ روکنے کی بات جس من میں آئے گی وہ من بہت ہی پاک ہونا چاہئے. کسی بھی جانور کے بدھ سے جس کو دکھ ہوتا ہو ایسا ہی آدمی سچے جی سے گو بدھ روکنے کی بات سوچ سکتا ہے، اور اگر وہ اُسی کام میں جی جان لڑائے تو شاید مرتے مرتے گو بدھ بند کرا سکتا ہے، پر ایسا آدمی تو قانون سے روکنے کی بات سوچے گا بھی نہیں، وہ تو ویسا سوچنے والے کو اُلٹا روکے گا. آج جو ہندو گو بدھ کا آندولن لے کر کھڑے ہوئے ہیں اگر وہ پہلے ہندوؤں کے دیوی کے مندروں میں دیوتا کے نام پر ہوتے ہوئے بھینس، بکرا، گھیٹیں کی بلی کو روکنے میں لگے ہوتے تب بھی وہ کسی درجے تک اِس اندولن کو ہاتھ میں لینے کے قابل ہو سکتے تھے، پر اُن میں سے تو بہت سے ایسے ہیں جو خود مانس کھاتے ہیں اور ٹیڑھے سیدھے گو مانس کے ست کو دوا کی شکل میں خود بھی کھا لیتے ہیں کیونکہ آج کل گو مانس کا ست ہسپتالوں میں ولایت سے خوب آتا رہتا ہے. اگر ہم ست والی بات چھوڑ بھی دیں جس کا اکثر کھانے والوں کو پتہ نہیں ہوتا تب بھی اُن کے مانس کھانے کی بات کیسے بھی نہیں چھوڑی جا سکتی. خلاصہ یہ کہ اُن لوگوں کا من ابھی اتنا پوتر نہیں ہو پایا کہ وہ گو بدھ روکنے کے اندولن کو بہت دُور تک لے جا سکیں اور اگر سچ مچ اُسے دُور تک لے گئے اور دو چار دس نے اپنی جانیں قربان کر دیں تو ہم یہی سمجھیں گے کہ وہ جانیں گائے بچانے کے لئے نہیں قربان ہوئی ہیں، ہوئی ہیں کچھ راج نیتی کے ادھیکار اینٹھنے کی

कुछ लोग जल्दी में आकर सोचे समझे बिना यह दलील दे बैठते हैं कि हिंसा हिंसा से ही रुका करती है. वह यह भी कह सकते हैं कि आग आग से ही बुझाई जा सकती है और वह शायद दहकते हुए कोयले से जलती हुई मोमबत्ती को बुझाकर भी दिखा सकते हैं, पर इस पोच दलील पर खड़े हुए आदमी भी समाज के डर से यह कहने की हिम्मत नहीं कर सकते कि गोबध से गोबध रोका जा सकता है. इस तरह की पोच दलीलों में एक बहकावा छिपा रहता है और ऊपर से बड़े पक्के सुबूत का जामा पहिने रहता है, जिसकी वजह से सैकड़ों भोले आदमी धोके में आ जाते हैं और हिंसा को हिंसा से रोकने की बात को ठीक मान कर अपने धर्म में उसको जगह दे देते हैं. ऐसी धोके की दलीलें बड़ा नुक़सान कर जाती हैं. सिक्ख गुरू बाराह बध से न गोबध रोक पाए न मुसलमानों का राज छीन पाए. पर अंग्रेज़ बिना गोबध रोके और बिना बाराह बध में दख़ल दिए कुल हिन्दुस्तान के मालिक बन बैठे. पर जिस तरीक़े से वह मालिक बने वह भी हिंसा से हिंसा रोकने की तरह धोके का था, जभी तो सौ बरस से पहिले ही उनके पांव उखड़ गए और मुग़ल ख़ानदान अपनी थोड़ी और बनावटी दया से भी तीन सौ बरस से ऊपर हिन्दुस्तान की ज़मीन पर ही नहीं हिन्दुस्तानियों के दिल पर भी राज कर सका. दहकते कोयले से मोमबत्ती बुझाकर हमें धोके में नहीं रहना चाहिये. हमने मोमबत्ती बुझाई है, आग की दहक मिटाई नहीं! हिंसा या क़ानून से रोका गोबध रुका हुआ सा दिखाई दे सकता है पर रुक [illegible] जैसा मुल्क, और समझदारों का मुल्क,

کچھ لوگ جلدی میں آکر سوچے سمجھے بنا یہ دلیل دے بیٹھتے ہیں کہ ہنسا ہنسا سے ہی رُکا کرتی ہے. وہ یہ بھی کہہ سکتے ہیں کہ آگ آگ سے ہی بجھائی جا سکتی ہے اور وہ شاید دہکتے ہوئے کوئلے سے جلتی ہوئی موم بتی کو بجھا کر بھی دکھا سکتے ہیں. پر اس پوچ دلیل پر کھڑے ہوئے آدمی بھی سماج کے ڈر سے یہ کہنے کی ہمت نہیں کر سکتے کہ گو بدھ سے گو بدھ رکا جا سکتا ہے. اس طرح کی پوچ دلیلوں میں ایک بہکاوا چھپا رہتا ہے اور اوپر سے بڑے پکے ثبوت کا جامہ پہنے رہتا ہے، جس کی وجہ سے سیکڑوں بھولے آدمی دھوکے میں آجاتے ہیں اور ہنسا کو ہنسا سے روکنے کی بات کو ٹھیک مان کر اپنے دھرم میں اس کو جگہ دے دیتے ہیں. ایسی دھوکے کی دلیلیں بڑا نقصان کر جاتی ہیں. سکھ گرو باراہ بدھ سے نہ گو بدھ روک پائے نہ مسلمانوں کا راج چھین پائے. پر انگریز بنا گو بدھ روکے اور بنا باراہ بدھ میں دخل دئے کل ہندستان کے مالک بن بیٹھے. پر جس طریقے سے وہ مالک بنے وہ بھی ہنسا سے ہنسا روکنے کی طرح دھوکے کا تھا، جبھی تو سو برس بننے سے پہلے ہی ان کے پاؤں اکھڑ گئے اور مغل خاندان اپنی تھوڑی اور بناوٹی دیا سے بھی تین سو برس سے اوپر ہندستان کی زمین پر ہی نہیں ہندستانیوں کے دل پر بھی راج کر سکا. دہکتے کوئلے سے موم بتی بجھا کر ہمیں دھوکے میں نہیں رہنا چاہئے. ہم نے موم بتی بجھائی ہے، آگ کی دہک مٹائی نہیں! ہنسا یا قانون سے روکا گو بدھ رکا ہوا سا دکھائی دے سکتا ہے پر رک نہیں سکتا. امریکا جیسا ملک، اور سمجھ داروں کا ملک،

क़ानून से शराब-बंदी न कर सका, पर अरब जैसे उजड्ड मुल्क में हज़रत मुहम्मद ने प्रेम की लहर उठाकर और लोगों के दिल बदल कर शराब को ही नहीं बंद किया, सूद लेने जैसी, धीरे धीरे जान निकालने वाली, रस्म को भी बुनियाद से उखाड़ कर फेंक दिया. गोबध रोकने के लिये गोबध रोकने वालों को पूरा अहिंसक बनना पड़ेगा और अगर वह सब न बन सकें तो किसी एक को तो वैसा बनना ही होगा. अहिंसक बनना माने प्रेम रस में डूब जाना यानी दुनिया के सब आदमियों से, और हो सके तो, जगत के सब प्राणियों से प्रेम करने लग जाना. गोबध आन्दोलन के उठाने वाले, पर, इस झंझट में ही क्यों पड़ें? उन्हें तो ईश्वर ने पहिले से ही गाँधी नामी वैसा आदमी दे रक्खा है. उस पर पूरी तरह छोड़ देने में उनका काम हो सकता है. सन् १९२१ में गांधी जी ने अपने तरीक़े से गोबध को बहुत हद तक कम करा दिया था. और गोबध करने वालों के दिल इतने बदल दिये थे जितने इतिहास की जानकारी में आज तक कोई नहीं बदल पाया. यह दूसरी बात है कि वह जोश सोडे की बोतल के उबाल की तरह ज़्यादा देर न टिक पाया वजह यह थी कि वह काम अपने आप में कोई बड़ा था वह बड़े काम राजनीति की चालक का एक हिस्सा था. पर उससे हमें यह सबक़ ज़रूर मिला कि गोबध मुहब्बत से ज़रूर रुक सकता है.

आज जो लोग गोबध आन्दोलन के कर्ता धर्ता हैं वह इतने गोबध रोकने की फ़िक्र में नहीं, जितने उस सरकार को बदनाम करने की फ़िक्र में हैं जिसके हाथ में, उनकी मेहनतों की वजह

قانون سے شراب بندی نہ کرسکا، پر عرب جیسے اُجڈ ملک میں حضرت محمدؐ نے پریم کی لہر اُٹھاکر اور لوگوں کے دل بدل کر شراب کو ہی نہیں بند کیا، سود لینے جیسی، دھیرے دھیرے جان نکالنے والی اسم کو بھی بنیاد سے اکھاڑکر پھینک دیا. گو بدھ روکنے کے لئے گو بدھ روکنے والوں کو پورا اہنسک بنّا پڑے گا اور اگر وہ سب نہ بن سکیں تو کسی ایک کو تو ویسا بنّا ہی ہوگا. اہنسک بنّا معنے پریم رس میں ڈوب جانا یعنی دُنیا کے سب آدمیوں سے، اور ہوسکے تو جگت کے سب پرانیوں سے پریم کرنے لگ جانا. گو بدھ اندولن کے اُٹھانے والے، پر، اِس جھنجھٹ میں ہی کیوں پڑیں؟ اُنھیں تو ایشور نے پہلے سے ہی گاندھی نامی ویسا آدمی دے رکھا ہے. اُس پر پوری طرح چھوڑ دینے میں اُن کا کام ہوسکتا ہے. سنہ ۱۹۲۱ء میں گاندھی جی نے اپنے طریقے سے گو بدھ کو بہت حد تک کم کردیا تھا. اور گو بدھ کرنے والوں کے دل اِتنے بدل دئے تھے جتنے اتہاس کی جانکاری میں آج تک کوئی نہیں بدل پایا. یہ دوسری بات ہے کہ وہ جوش سوڈے کی بوتل کے اُبال کی طرح زیادہ دیر تک نہ ٹِک پایا وجہ یہ تھی کہ وہ کام اپنے آپ میں کوئی بڑا نہ تھا وہ بڑے کام راج نیتی کی چال کا ایک حصّہ تھا. پر اُس سے ہمیں یہ سبق ضرور ملا کہ گو بدھ محبت سے ضرور رُک سکتا ہے.

آج جو لوگ گو بدھ اندولن کے کرتا دھرتا ہیں وہ اِتنے گو بدھ روکنے کی فکر میں نہیں، جتنے اُس سرکار کو بدنام کرنے کی فکر میں ہیں جس کے ہاتھ میں، اُن کی محنتوں کی وجہ

से, या दुनिया की हालत की वजह से या ईश्वर की कृपा से, हुकूमत की बागडोर आ गई है. गोबध आन्दोलन का यह ठीक वक़्तही नहीं है. इस वक़्त आपसी तनाव अगर और खिंचता नहीं जा रहा तो ढीला हरगिज़ नहीं हो रहा. यों तो हम क़ानून से गोबध रोकने के बिलकुल खिलाफ़ हैं फिर भी अगर क़ानून से ही रोकना था तो सन् १८५८ में, या १८७२ में, या १८८५ में, या १९०५ में रोका होता. गोबध की जितनी ज़रूरत उस अंगरेज़ी सरकार को है, जो अपने को हिन्दुस्तानियों का माई-बाप समझती आई है, उतनी दूसरों को नहीं. वह सरकार अगर चाहती तो क़ानून से रोक सकती थी, पर वह तो उसको रोकने में अपना फ़ायदा नहीं देखती थी, इसलिये गोबध का आन्दोलन इस समय बिलकुल बे वक़्त है.

गोबध से अगर मतलब गो रक्षा है तब हम यह कहेंगे कि गो रक्षा के रास्ते में कोई रुकावट नहीं और हमें तो यह भी विश्वास है कि गोरक्षा से ही गोरक्षा होगी और गोबध बहुत हद तक रुक जायगा. गाय के दूध की हिन्दुस्तान में सभी को एक बराबर ज़रूरत है और सभी उसके लिये तड़प रहे हैं. सभी के बच्चे गाय के दूध के बिना बे वक़्त चल बसते हैं. अगर बड़ी चरागाहें क़ायम करके दूध देने वाली गायों के बचाने में यह आन्दोलन लग जाय और दूध के भाव को चार सेर तक भी ले जा सकें तो करोड़ों गायों की जान ही नहीं बचा लेगा बल्कि करोड़ों मनु की सन्तानों को बे वक़्त—काल के गाल में जाने से रोक लेगा. और फिर हो नहीं सकता कि उन बच्चों की दुआएं वह रंग न लाए कि इस देश में गोबध रुक जाय या नाम के लिये रह जाय.

سے، یا دُنیا کی حالت کی وجہ سے یا ایشور کی کرپا سے، حکومت کی باگ ڈور آگئی ہے. گو بدھ اندولن کا یہ ٹھیک وقت ہی نہیں ہے. اس وقت آپسی تناؤ اگر اور کھنچا نہیں جا رہا تو ڈھیلا ہرگز نہیں ہو رہا. یوں تو ہم قانون سے گو بدھ روکنے کے بالکل خلاف ہیں پھر بھی اگر قانون سے ہی روکنا تھا تو ۱۸۵۸ء میں یا ۱۸۷۲ء میں یا ۱۸۸۵ء میں، یا ۱۹۰۵ میں روکا ہوتا. گو بدھ کی جتنی ضرورت اُس انگریزی سرکار کو ہے، جو اپنے کو ہندستانیوں کا مائی باپ سمجھتی آئی ہے، جتنی دوسروں کو نہیں. وہ سرکار اگر چاہتی تو قانون سے روک سکتی تھی، پر وہ تو اُس کو روکنے میں اپنا فائدہ نہیں دیکھتی تھی، اِس لئے گو بدھ کا اندولن اِس سمے بالکل بے وقت ہے.

گو بدھ سے اگر مطلب گو رکشا ہے تب ہم یہ کہیں گے کہ گو رکشا کے راستے میں کوئی رُکاوٹ نہیں اور ہمیں تو یہ بھی وشواس ہے کہ گو رکشا سے ہی گو رکشا ہوگی اور گو بدھ بہت حد تک رُک جائے گی. گائے کے دودھ کی ہندستان میں سبھی کو ایک برابر ضرورت ہے اور سبھی اُس کے لئے تڑپ رہے ہیں. سبھی کے بچے گائے کے دودھ کے بنا بے وقت چل بستے ہیں. اگر بڑی چراگاہیں قایم کرکے دودھ دینے والی گایوں کے بچانے میں یہ اندولن لگ جائے اور دودھ کے بھاؤ کو چار سیر تک بھی لے جا سکیں تو کروڑوں گایوں کی جان ہی نہیں بچا لے گا بلکہ کروڑوں منو کی سنتانوں کو بے وقت — کال کے گال میں جانے سے روک لے گا. اور پھر ہو نہیں سکتا کہ اُن بچوں کی دُعائیں وہ رنگ نہ لائیں کہ اِس دیش میں گو بدھ رُک جائے یا نام کے لئے رہ جائے.

आज जब खुले खुले नर-बध हो रहा है तब नर-बध रोकने के आन्दोलन की न सूझ कर गोबध रोकने के आन्दोलन की बात सूझी ही क्यों ! हम तो यही चाहेंगे कि यह गोबध रोकने वाला दल अब गायों को गांधी जी के भरोसे छोड़ कर या ईश्वर के हाथों सौंप कर नर-बध रोकने में जुट जाय. पर वह तो वह समझ ही ले कि आग, आग से नहीं बुझा करती, हिंसा हिंसा से नहीं रुका करती, गुस्सा गुस्से से नहीं दबता, आग पानी से ही बुझेगी, हिंसा अहिंसा से ही रुकेगी, गुस्सा माफ़ी से ही दबेगा. हां, यह बात जरूर है कि आग बुझाते वक़्त पानी थोड़ा गरम हो जायगा, हिंसा रोकते रोकते अहिंसा थोड़ा हिंसा सी जँचने लगेगी और गुस्सा दबाते दबाते माफ़ी गुस्से का रंग ले आएगी, पर यह सब बातें तो क़ुदरती हैं. आग बुझाने के लिए पानी को उबालने की जरूरत नहीं, हिंसा को रोकने के लिए अहिंसा को सख्त बनने की जरूरत नहीं, गुस्से को दबाने के लिए माफ़ी को बिगड़ने की जरूरत नहीं. यह काम प्रकृति के ख़िलाफ़ होंगे और सफलता नहीं मिलेगी. इसलिए हम तो गोबध आन्दोलन करने वालों को यही सलाह देते हैं, कि वह ठंडे जी से सोचें, ठंडे बनें, और ठंडे ठंडे गोरक्षा में लगे हुए प्रेम के साथ दूध की गंगा बहाने की सोचें, और फिर देखें कि गोबध कैसे नहीं रुकता.

गोमाता की जय गूँजेगी, पर इसके गुँजाने में मददगार होंगे वही जो प्रेम रस में शराबोर होंगे. वह तो उस गूँज को उल्टा रोक ही सकते हैं जो नफ़रत, गुस्सा, घमंड और लालच की आग

آج جب کھلے کھلے نر بدھ ہو رہا ہے تب نر بدھ روکنے کے اندولن کی نہ سوجھ کر گو بدھ روکنے کے اندولن کی بات سوجھی ہی کیوں! ہم تو یہی چاہیں گے کہ یہ گو بدھ روکنے والا دل اب گایوں کو گاندھی جی کے بھروسے چھوڑ کر یا ایشور کے ہاتھوں سونپ کر نر بدھ روکنے میں جٹ جائے. پر یہ تو وہ سمجھ ہی لے کہ آگ، آگ سے نہیں بجھا کرتی، ہنسا ہنسا سے نہیں رکا کرتی، غصہ غصے سے نہیں دبتا، آگ پانی سے ہی بجھے گی، ہنسا اہنسا سے ہی رکے گی، غصہ معافی سے ہی دبے گا. ہاں، یہ بات ضرور ہے کہ آگ بجھاتے وقت پانی تھوڑا گرم ہو جائے گا، ہنسا روکتے روکتے اہنسا تھوڑی ہنسا سی جنچنے لگے گی اور غصہ دباتے دباتے معافی غصے کا رنگ لے آئے گی، پر یہ سب باتیں تو قدرتی ہیں. آگ بجھانے کے لئے پانی کو ابالنے کی ضرورت نہیں، ہنسا کو روکنے کے لئے اہنسا کو سخت بننے کی ضرورت نہیں، غصے کو دبانے کے لئے معافی کو بگڑنے کی ضرورت نہیں. یہ کام پرکرتی کے خلاف ہوں گے. اور سپھلتا نہیں ملے گی. اس لئے ہم تو گو بدھ اندولن کرنے والوں کو یہی صلاح دیتے ہیں کہ وہ ٹھنڈے جی سے سوچیں، ٹھنڈے بنیں، اور ٹھنڈے ٹھنڈے گورکشا میں لگے ہوئے پریم کے ساتھ دودھ کی گنگا بہانے کی سوچیں، اور پھر دیکھیں کہ گو بدھ کیسے نہیں رکتا.

گو ماتا کی جے گونجے گی، پر اس کے گونجانے میں مددگار ہوں گے وہی جو پریم رس میں شرابور ہوں گے. وہ تو اس گونج کو الٹا روک ہی سکتے ہیں جو نفرت، غصہ، گھمنڈ اور لالچ کی آگ سے جل کر گو بدھ روکنا سوچ رہے ہیں. — بھگوان دین

हमारे गिनावें के कुछ आंकड़े और हमारा राज

(डा० जाफ़र हसन, उस्मानिया यूनीवर्सिटी, हैदराबाद)

हमारे मुल्क के दो टुकड़े हो गए. हिन्दुस्तान और पाकिस्तान दो अलग अलग राज बन गए. उसके बाद अब तक मुल्क और मुल्क वालोंपर जो आफ़तें टूटीं वह सब को मालूम हैं. लाखों के घाव अभी हरे हैं. ऐसे मौक़े पर हम ज़रा ठंडे दिल से यह सोचने की कोशिश करें कि हमने क्या किया, हमें क्या करना चाहिये था, और आइन्दा हमें क्या करना चाहिये.

एक पिछले लेख में हम यह दिखा चुके हैं कि हमारे मुल्क में लोग हिन्दू, मुसलमान या ईसाइ किसी मज़हब की ठीक ठीक बातों को मानने या उन पर चलने की वजह से नहीं कहलाते बल्कि बहुत करके सिर्फ़ किसी मज़हब के नाम लेवा होने की वजह से यानी सियासी या ज़्यादा से ज़्यादा समाजी मानों में हम हिन्दू मुसलमान वग़ैरा रह गए हैं और गिने जाते हैं. फिर भी हिन्दुस्तान के फ़िरक़ेवाराना सवाल को समझने के लिये पहले हम ज़रा सन् १९४१ के गिनावे के मुताबिक़ इस मुल्क में अलग अलग मतों के नाम लेवा लोगों की तादाद पर एक निगाह डालें. वह तादादें यह हैं—

हिन्दूमत के नाम लेवा	पच्चीस करोड़
इसलाम के नाम लेवा	नौ करोड़ बीस लाख
ईसाई	तरेसठ लाख
सिख	सत्तावन लाख
जैन	चौदह लाख पचास हज़ार

ہمارے گناووں کے کچھ آنکڑے اور ہمارا راج

(ڈاکٹر جعفر حسن، عثمانیہ یونیورسٹی، حیدرآباد)

ہمارے ملک کے دو ٹکڑے ہو گئے۔ ہندستان اور پاکستان دو الگ الگ راج بن گئے۔ اس کے بعد اب تک ملک اور ملک والوں پر جو آفتیں ٹوٹیں وہ سب کو معلوم ہیں۔ لاکھوں کے گھاؤ ابھی ہرے ہیں۔ ایسے موقع پر ہم ذرا ٹھنڈے دل سے یہ سوچنے کی کوشش کریں کہ ہم نے کیا کیا، ہمیں کیا کرنا چاہیے تھا اور آئندہ ہمیں کیا کرنا چاہیے۔

ایک پچھلے لیکھ میں ہم یہ دکھا چکے ہیں کہ ہمارے ملک میں لوگ ہندو مسلمان یا عیسائی کسی مذہب کی ٹھیک ٹھیک باتوں کو ماننے یا ان پر چلنے کی وجہ سے نہیں کہلاتے بلکہ بہت کرکے صرف کسی مذہب کے نام لیوا ہونے کی وجہ سے یعنی سیاسی یا زیادہ سے زیادہ سماجی معنوں میں ہم ہندو مسلمان وغیرہ رہ گئے ہیں اور گنے جاتے ہیں۔ پھر بھی ہندستان کے فرقہ وارانہ سوال کو سمجھنے کے لئے پہلے ہم ذرا ۱۹۴۱ کے گناوے کے مطابق اس ملک میں الگ الگ متوں کے نام لیوا لوگوں کی تعداد پر ایک نگاہ ڈالیں۔ وہ تعدادیں یہ ہیں—

ہندومت کے نام لیوا	پچیس کروڑ
اسلام کے نام لیوا	نو کروڑ بیس لاکھ
عیسائی	ترسیٹھ لاکھ
سکھ	ستاون لاکھ
جین	چودہ لاکھ پچاس ہزار

बौद्ध	दो लाख बत्तीस हज़ार
पारसी	एक लाख चौदह हज़ार
यहूदी	बाइस हज़ार

यह कुल मिला कर हुए पैंतीस करोड़ अट्ठावन लाख सत्रह हज़ार. इनके अलावा तीन करोड़ आठ लाख तिरासी हज़ार लोग और हैं जिनको गिनावे में "क़बीले" बताया गया है. इस तरह कुल मिलकर सन १९४१ में इस मुल्क की आबादी अड़तीस करोड़ सरसठ लाख बताई जाती है.

अगर सौ पीछे कौन कितने हैं देखा जावे तो हिन्दू सौ में छयासठ, मुसलमान सौ में चौबीस, ईसाई हज़ार में सोलह, सिक्ख हज़ार में चौदह, जैन दस हज़ार में सैंतीस, बौद्ध दस हज़ार में छै, पारसी दस हज़ार में तीन, यहूदी पचास हज़ार में तीन और क़बीले दस हज़ार में छै सौ तैंतालीस.

मज़हबों के हिसाब से गिनती करते करते क़बीलों का अलग ज़िकर करना एक मनमानी और अनोखी बात है. तीन करोड़ से ज़्यादा आदमियों को इस तरह अलग दिखाना भेद से खाली नहीं है. क़बीले का सम्बन्ध नसल से है, मज़हब से नहीं. मज़हब बदलने के बाद भी क़बीला नहीं बदलता. इसलिये मज़हबी गिनावे में कुछ क़बीलों को एक क़िस्म ठहराना बेजोड़ बात है. यह भी मालूम रहे कि इन क़बीलों में से बहुत से मुसलमान हैं जैसे सरहद के शनवारी क़बीले के पठान, बहुत से हिन्दू हैं और

بودھ	دو لاکھ بتیس ہزار
پارسی	ایک لاکھ چودہ ہزار
یہودی	بائیس ہزار

یہ کُل ملا کر ہوئے پینتیس کروڑ اٹھاون لاکھ سترہ ہزار۔ اِن کے علاوہ تین کروڑ آٹھ لاکھ تراسی ہزار لوگ اور ہیں جن کو گناوے میں "قبیلے" بتایا گیا ہے۔ اِس طرح کُل مل کر ۱۹۴۱ء میں اِس ملک کی آبادی اڑتیس کروڑ سرسٹھ لاکھ بتائی جاتی ہے۔

اگر سَو پیچھے کون کتنے ہیں دیکھا جاوے تو ہندو سَو میں چھیاسٹھ، مسلمان سَو میں چوبیس، عیسائی ہزار میں سولہ، سِکھ ہزار میں چودہ، جین دس ہزار میں سینتیس، بودھ دس ہزار میں چھے، پارسی دس ہزار میں تین، یہودی پچاس ہزار میں تین اور قبیلے دس ہزار میں چھے سَو تینتالیس۔

مذہبوں کے حساب سے گِنتی کرتے کرتے قبیلوں کا الگ ذکر کرنا ایک من مانی اور انوکھی بات ہے۔ تین کروڑ سے زیادہ آدمیوں کو اِس طرح الگ دکھانا بھید سے خالی نہیں ہے۔ قبیلے کا سمبندھ نسل سے ہے، مذہب سے نہیں۔ مذہب بدلنے کے بعد بھی قبیلہ نہیں بدلتا۔ اِس لئے مذہبی گناوے میں کچھ قبیلوں کو ایک قسم ٹھہرانا بےجوڑ بات ہے۔ یہ بھی معلوم رہے کہ اِن قبیلوں میں سے بہت سے مسلمان ہیں جیسے سرحد کے شنواری قبیلے کے پٹھان، بہت سے ہندو ہیں اور اپنے کو ہندو کہتے ہیں جیسے گونڈ، جینچ وغیرہ

इन क़बीलों को इस तरह अलग गिनाने से एक ग़रज़ तो यह मालूम होती है कि ईसाइयों की बढ़ती हुई तादाद को छिपाया जावे क्यों कि क़बीले वाले इलाक़ों में ही ईसाई मत का प्रचार सब से ज्यादा कामयाब साबित हो रहा है.

जहाँ तक हमें मालूम है इन तीन करोड़ में से दो करोड़ हिन्दू या हिन्दू मत से नाता रखने वाले हैं जिनमें हिन्दुस्तानी रिवाज हैं. आधा करोड़ मुसलमान हैं जो बहुत कर सरहदी इलाक़ों में हैं और आधा करोड़ ईसाई यानी ईसाई मत के नाम लेवा हैं. इस अनोखे गिनावे से आबादी का मज़हबी हिसाब बदल जाता है और हिन्दुस्तान का फ़िरक़ेवारी सवाल ग़लत तादाद के धुँधलके में अच्छी तरह पहचाना नहीं जाता.

अब हम इनमें से एक एक मज़हब वालों का कुछ अलग अलग जिकर करेंगे.

हिन्दू—हिन्दुस्तान के मज़हबों की इलाक़ेवारी तक़सीम से पता चलता है कि हिन्दुओं की सबसे ज़बरदस्त तादाद हिन्दुस्तान के बीच और दक्खिन में है. गंगा जी का पाक पानी न केवल हिन्दू तहज़ीब के मरक़ज़ी इलाक़े को सैराब कर रहा है बल्कि हिन्दुओं के बहुमत को भी बचाए हुए है. युक्त प्रान्त में जो हमेशा से हिन्दुस्तानी तहज़ीब का सरचश्मा रहा है हिन्दुओं की तादाद ८५ फ़ी सदी है और बिहार और उड़ीसा में भी हिन्दुओं का बहुत बड़ा बहुमत है. बीच के हिन्दुस्तान, राजपूताना, बम्बई और दक्खिन की रियासतों में उनका साफ़ बहुमत है. हैदराबाद रियासत में सौ में ८५ हिन्दू हैं. सबसे ज्यादा हिन्दू मदरास में

اِن قبیلوں کو اِس طرح الگ گنانے سے ایک غرض تو یہ معلوم ہوتی ہے کہ عیسائیوں کی بڑھتی ہوئی تعداد کو چھپایا جاوے کیونکہ قبیلے والے علاقوں میں ہی عیسائی مت کا پرچار سب سے زیادہ کامیاب ثابت ہو رہا ہے۔

جہاں تک ہمیں معلوم ہے اِن تین کروڑ میں سے دو کروڑ ہندو یا ہندو مت سے ناتا رکھنے والے ہیں جن میں ہندستانی رواج ہے۔ آدھا کروڑ مسلمان ہیں جو بہت کر سرحدی علاقوں میں ہیں اور آدھا کروڑ عیسائی یعنی عیسائی مت کے نام لیوا ہیں۔ اِس انوکھے گناوے سے آبادی کا مذہبی حساب بدل جاتا ہے اور ہندستان کا فرقے واری سوال غلط تعداد کے دھندلکے میں اچھی طرح پہچانا نہیں جاتا۔

اب ہم اِن میں سے ایک ایک مذہب والوں کا کچھ الگ الگ ذکر کریں گے۔

ہندو — ہندستان کے مذہبوں کی علاقے واری تقسیم سے پتہ چلتا ہے کہ ہندوؤں کی سب سے زبردست تعداد ہندستان کے بیچ اور دکھن میں ہے۔ گنگا جی کا پاک پانی نہ کیول ہندو تہذیب کے مرکزی علاقے کو سیراب کر رہا ہے بلکہ ہندوؤں کے بہومت کو بھی بچائے ہوئے ہے۔ یُکت پرانت میں جو ہمیشہ سے ہندستانی تہذیب کا سرچشمہ رہا ہے ہندوؤں کی تعداد ۸۵ فی صدی ہے اور بہار اور اڑیسہ میں بھی ہندوؤں کا بہت بڑا بہومت ہے۔ بیچ کے ہندستان، راجپوتانہ، بمبئی اور دکھن کی ریاستوں میں ان کا صاف بہومت ہے۔ حیدرآباد ریاست میں سَو میں ۸۵ ہندو ہیں۔ سب سے زیادہ ہندو مدراس میں

हैं यानी सौ में ८७. मजहबी खयाल से यही इलाक़े "शुद्धिस्तान" कहे जा सकते हैं.

मुसलमान—मुसलमान उत्तर पच्छिमी सरहद, कश्मीर, सिंध, और बिलोचिस्तान पर छाए हुए हैं. इनकी साफ़ अक्सरियत यानी बहुमत बंगाल और पंजाब के सूबों में भी थी, जिनके अब दो दो टुकड़े हो गए हैं. इन्हीं इलाक़ों में से "पाकिस्तान" गढ़ा गया है. यानी पाकिस्तान कोई एक सिलसिलेवार इलाक़ा न है, न हो सकता है. उसके दो साफ़ टुकड़े हैं. एक पूरब में और एक पच्छिम में जिनके बीच एक हजार मील का फ़ासला है. इस फ़ासले की वजह से दोनों एक दूसरे से एक बड़ी हद्तक बे ताल्लुक़ हैं और रहेंगे.

एक और अनोखी बात यह है कि बड़ी से बड़ी देसी मुसलमान रियासतें जैसे हैदराबाद, भोपाल, रामपुर, उन इलाक़ों में हैं जहां हिन्दुओं का जबरदस्त बहुमत है. इसके अलावा हिन्दुस्तानी मुसलमानों की कलचर और तहजीब का गहवारा, सरचश्मा और सबसे बड़ा मरक़ज दोआबा है जहां हिन्दुओं का बहुत बड़ा बहुमत है. मुसलमानों के सबसे बड़े मजहबी और तिजारती मरक़ज हिन्दुस्तान भर में फैले हुए हैं और उनका माली नफ़ा नुक़सान ऐसे इलाक़ों से बँधा हुआ है जहां हिन्दुओं का बहुत बड़ा बहुमत है.

अगर पढ़ने लिखने और इल्म का असली मक़सद यह है कि हम अपनी जानकारी की मदद से आजकल के जमाने और ... और अगर तारीख

ہیں یعنی سو میں ۸۷: مذہبی خیال سے یہی علاقے "شدھستان" کہے جاسکتے ہیں.

مسلمان — مسلمان اُتر پچھمی سرحد، کشمیر، سندھ، اور بلوچستان پر چھائے ہوئے ہیں. ان کی صاف اکثریت یعنی بہومت بنگال اور پنجاب کے صوبوں میں بھی تھی، جن کے اب دو دو ٹکڑے ہوگئے ہیں. انھیں علاقوں میں سے "پاکستان" گڑھا گیا ہے. یعنی پاکستان کوئی ایک سلسلے وار علاقہ نہ ہے، نہ ہوسکتا ہے. اُس کے دو صاف ٹکڑے ہیں. ایک پورب میں اور ایک پچھم میں جن کے بیچ ایک ہزار میل کا فاصلہ ہے. اس فاصلے کی وجہ سے دونوں ایک دوسرے سے ایک بڑی حد تک بے تعلق ہیں اور رہیں گے.

ایک اور انوکھی بات یہ ہے کہ بڑی سے بڑی دیسی مسلمان ریاستیں جیسے حیدرآباد، بھوپال، رامپور، اُن علاقوں میں ہیں جہاں ہندوؤں کا زبردست بہومت ہے. اس کے علاوہ ہندستانی مسلمانوں کی کلچر اور تہذیب کا گہوارہ، سرچشمہ اور سب سے بڑا مرکز دوآبہ ہے جہاں ہندوؤں کا بہت بڑا بہومت ہے. مسلمانوں کے سب سے بڑے مذہبی اور تجارتی مرکز ہندستان بھر میں پھیلے ہوئے ہیں اور اُن کا مالی نفع نقصان ایسے علاقوں سے بندھا ہوا ہے جہاں ہندوؤں کا بہت بڑا بہومت ہے.

اگر پڑھنے لکھنے اور علم کا اصلی مقصد یہ ہے کہ ہم اپنی جانکاری کی مدد سے آج کل کے زمانے اور آنے والے کل کے مسئلوں کو حل کرسکیں، اور اگر تاریخ

यानी इतिहास का सबसे बड़ा फ़ायदा यह है कि हम पिछले तजरबों से सीखें और इस ज़माने में गुमराही से बचें तो यक़ीनी तौर पर हमें कुछ और बातों पर ग़ौर करना पड़ेगा. इस मुल्क की तारीख़ से हमें बार बार यह सबक़ मिलता है कि जंग के मैदान में और राज काज में हमारे मुल्क को हमेशा फूट की वजह से नाकामी हुई. आज कल राज काज और समाजी निज़ाम को देखने से पता चलता है कि छोटी छोटी इकाइयों का खुद अपने पैरों पर खड़ा हो सकना माली निगाह से नामुमकिन है और राज काजी निगाह से बहुत ही ख़तरनाक है. अमरीका की मिली हुई रियासतों जैसा बड़ा मुल्क आसानी से दुनिया के राज काज में इज़्ज़त पा सकता है और समाजी, माली और दूसरी बातों में भी ऊँचा रुतबा हासिल कर सकता है. पहली और हाल की बड़ी जंगों में हम देख चुके हैं कि बड़ी बड़ी हकूमतों ने छोटी छोटी रियासतों का क्या कर डाला. अगर रूस भी छोटी छोटी इकाइयों में फटा हुआ होता तो शायद उसका भी वही हाल होता जो हालैंड, बेलजियम, दान्यूबी रियासतों और यूनान का हुआ. दो अलग अलग हकूमतों में बँट जाने के बाद हिन्दुस्तान के लिये बाहर के हमलों या दख़ल देने वालों का मुक़ाबला करना या माली, तिजारती, कारबारी और समाजी तरक़्क़ी करना और ज़्यादा मुश्किल हो गया है और हो जावेगा.

ज़्यादा समझदारी और अक़लमन्दी की बात तो यह होती और आगे भी यही होगी कि इस मुल्क के राज काजी एकपन ... और

یعنی اتہاس کا سب سے بڑا فائدہ یہ ہے کہ ہم پچھلے تجربوں سے سیکھیں اور اِس زمانے میں گمراہی سے بچیں تو یقینی طور پر ہمیں کچھ اور باتوں پر غور کرنا پڑے گا۔ اِس ملک کی تاریخ سے ہمیں بار بار یہ سبق ملتا ہے کہ جنگ کے میدان میں اور راج کاج میں ہمارے ملک کو ہمیشہ پھوٹ کی وجہ سے ناکامی ہوئی۔ آج کل راج کاج اور سماجی نظام کو دیکھنے سے پتہ چلتا ہے کہ چھوٹی چھوٹی اکائیوں کا خود اپنے پیروں پر کھڑا ہوسکنا مالی نگاہ سے ناممکن ہے اور راج کاجی نگاہ سے بہت ہی خطرناک ہے۔ امریکا کی ملی ہوئی ریاستوں جیسا بڑا ملک آسانی سے دُنیا کے راج کاج میں عزت پاسکتا ہے اور سماجی، مالی اور دوسری باتوں میں بھی اونچا رتبہ حاصل کرسکتا ہے۔ پہلی اور حال کی بڑی جنگوں میں ہم دیکھ چکے ہیں کہ بڑی بڑی حکومتوں نے چھوٹی چھوٹی ریاستوں کو کیا کر ڈالا۔ اگر روس بھی چھوٹی چھوٹی اکائیوں میں پھٹا ہوا ہوتا تو شاید اُس کا بھی وہی حال ہوتا جو ہالینڈ، بلجیم، دانیوبی ریاستوں اور یونان کا ہوا۔ دو الگ الگ حکومتوں میں بنٹ جانے کے بعد ہندستان کے لئے باہر کے حملوں یا دخل دینے والوں کا مقابلہ کرنا یا مالی، تجارتی، کاروباری اور سماجی ترقی کرنا اور زیادہ مشکل ہوگیا ہے اور ہو جاوے گا۔

زیادہ سمجھداری اور عقلمندی کی بات تو یہ ہوتی اور آگے بھی یہی ہوگی کہ اِس ملک کے راج کاجی ایکپن

اور زیادہ بڑھایا جاتا اور نیپال، بھوٹان، لنکا اور

अफ़ग़ानिस्तान के लिये भी इसमें शामिल हो जाने की गुंजायश पैदा की जाती, ताकि वह बहुत बड़ा हिन्दुस्तान और ज्यादा आसानी से राजकाज तिजारत और कारबार में ऊँचा मरतबा हासिल कर सकता. यह कोई नई बात भी न होती. यह सब पड़ौसी मुल्क किसी जमाने में हिन्दुस्तान के हिस्से रह चुके हैं.

इसकी सबसे अच्छी मिसाल हमें अमरीका की तारीख़ से मिलती है. जब अमरीका ने अपनी आजादी का ऐलान किया उस वक़्त मिली हुई अमरीकी रियासतों की तादाद तेरह थी. आज ४८ हैं. धीरे धीरे नई नई रियासतों को अमरीकी यूनियन में शरीक कर लिया गया और आज हर रियासत अपने निजी और अन्दर के मामलों में पूरी तरह आजाद होते हुए भी बाहर की दूसरी क़ौमों या मुल्कों के सामने सब अमरीकी रियासतें मिल कर ऐसी ही हैं जैसे एक बड़े जिस्म के हाथ पैर वग़ैरा. सबकी मिली जुली ताक़त से कुल की ताक़त बढ़ी है और इसी मिली जुली ताक़त और आपसी मेल की वजह से राज काज में और हर बात में अमरीका का बोल बाला है.

बरतानवी सल्तनत का भी जोर इतने दिनों इसीलिये क़ायम रह सका कि इङ्गलिस्तान ने अलग अलग नौआबादियों को अपने अन्दर के मामलों में आजाद कर दिया और सल्तनत से बाहर के मामलों के लिये अपने को और सब नौआबादियों को एक डोरे में बाँधे रक्खा.

तीसरी मिसाल और सबसे काम की मिसाल रूस की है. रूस की मरकज़ी हकूमत ने हाल ही में ऐलान कर दिया है कि रूस

افغانستان کے لئے بھی اس میں شامل ہوجانے کی گنجائش پیدا کی جاتی، تاکہ وہ بہت بڑا ہندستان اور زیادہ آسانی سے راج کاج تجارت اور کاروبار میں اونچا مرتبہ حاصل کرسکتا۔ یہ کوئی نئی بات بھی نہ ہوتی۔ یہ سب پڑوسی ملک کسی زمانے میں ہندستان کے حصے رہ چکے ہیں۔

اس کی سب سے اچھی مثال ہمیں امریکا کی تاریخ سے ملتی ہے۔ جب امریکا نے اپنی آزادی کا اعلان کیا اُس وقت ملی ہوئی امریکی ریاستوں کی تعداد تیرہ تھی۔ آج ۴۸ ہیں۔ دھیرے دھیرے نئی نئی ریاستوں کو امریکی یونین میں شریک کرلیا گیا اور آج ہر ریاست اپنے نجی اور اندر کے معاملوں میں پوری طرح آزاد ہوتے ہوئے بھی باہر کی دوسری قوموں یا ملکوں کے سامنے سب امریکی ریاستیں مل کر ایسی ہی ہیں جیسے ایک بڑے جسم کے ہاتھ پیر وغیرہ۔ سب کی ملی جلی طاقت سے کُل کی طاقت بڑھی ہے اور اسی ملی جلی طاقت اور آپسی میل کی وجہ سے راج کاج میں اور ہر بات میں امریکا کا بول بالا ہے۔

برطانوی سلطنت کا بھی زور اتنے دنوں اسی لئے قایم رہ سکا کہ انگلستان نے الگ الگ نوآبادیوں کو اپنے اندر کے معاملوں میں آزاد کردیا اور سلطنت سے باہر کے معاملوں کے لئے اپنے کو اور سب نوآبادیوں کو ایک ڈورے میں باندھے رکھا۔

تیسری مثال اور سب سے کام کی مثال روس کی ہے۔ روس کی مرکزی حکومت نے حال ہی میں اعلان کردیا ہے کہ روس

असल में अलग खुदमुख्तार और आज़ाद मजमूइयों यानी जम्हूरियतों या रिपबलिक्स का एक मिला हुआ जत्था है जिसमें हर रिपबलिक अपनी इच्छा और रज़ामन्दी से शामिल है. सुबह का भूला अगर शाम तक घर आजावे तो उसे भूला नहीं कहा जा सकता. अब भी अगर हम अपने और दुनिया के तजरबे से फ़ायदा उठा सकें और लाखों घरों को बरबाद करके, लाखों आदमियों को कटवाकर अगर हमारे दिल कुछ पिघले हों और हम ठंडे दिल से सोच सकें तो रूस ही की तरह का एक यूनियन हम अगर हिन्दुस्तान में भी क़ायम कर सकें तो मुसलमानों की बड़ी बड़ी रियासतें अपने आप को क़ायम रख सकेंगी. पाकिस्तान भी रह सकेगा और आस पास की पड़ौसी रियासतों को एक बहुत बड़े शानदार और नेक इनसानों के यूनियन में शामिल होने का मौक़ा मिलेगा और उनका जी चाहेगा.

यहाँ यह कहना जरूरी है कि इल्म तारीख़, इल्म राजकाज, इल्म समाज और साइन्स के तालिबइल्म होने की हैसियत से और कारबार, राजकाज, समाज और खुशहाली के ऊँच नीच देखने पढ़ने वालों की हैसियत से हमारा यह फ़र्ज़ है कि हम अपने मुल्क के इन सब तरह के मसलों को समझें और ग़ौर करें और फिर खुद अपना फैसला करें. चाहे वह फैसला किसी जमात या गिरोह की राय से मिलता हो या न हो. बनी बनाई रायों के पीछे चल पड़ना बिना अपनी अक़्ल और तजरबे से काम लिये, चाहे वह महासभाई हो या पाकिस्तानी, सरकार पसन्द हो या काँगरेसी, उन लोगों की [illegible] और इल्म के तालिब हैं.

اصل میں الگ خود مختار اور آزاد مجموعوں یعنی جمہوریتوں یا ری پبلکس کا ایک ملا ہوا جتھا ہے جس میں ہر ری پبلک اپنی اچھا اور رضامندی سے شامل ہے۔ صبح کا بھولا اگر شام تک گھر آجاوے تو اُسے بھولا نہیں کہا جاسکتا۔ اب بھی اگر ہم اپنے اور دُنیا کے تجربے سے فائدہ اٹھا سکیں اور لاکھوں گھروں کو برباد کرکے، لاکھوں آدمیوں کو کٹواکر اگر ہمارے دل کچھ پگھلے ہوں اور ہم ٹھنڈے دل سے سوچ سکیں تو روس ہی کی طرح کا ایک یونین ہم اگر ہندستان میں بھی قایم کرسکیں تو مسلمانوں کی بڑی بڑی ریاستیں اپنے آپ کو قایم رکھ سکیں گی۔ پاکستان بھی رہ سکے گا اور آس پاس کی پڑوسی ریاستوں کو ایک بہت بڑے شاندار اور نیک انسانوں کے یونین میں شامل ہونے کا موقع ملے گا اور اُن کا جی چاہے گا۔

یہاں یہ کہنا ضروری ہے کہ علم تاریخ، علم راج کاج، علم سماج اور سائنس کے طالب علم ہونے کی حیثیت سے اور کاروبار، راج کاج، سماج اور خوش حالی کے اونچ نیچ دیکھنے پڑھنے والوں کی حیثیت سے ہمارا یہ فرض ہے کہ ہم اپنے ملک کے ان سب طرح کے مسئلوں کو سمجھیں اور غور کریں اور پھر خود اپنا فیصلہ کریں۔ چاہے وہ فیصلہ کسی جماعت یا گروہ کی رائے سے ملتا ہو یا نہ ہو۔ بنی بنائی رایوں کے پیچھے چل پڑنا بنا اپنی عقل اور تجربے سے کام لئے، چاہے وہ مہاسبھائی ہو یا پاکستانی، سرکار پسند ہو یا کانگریسی، اُن لوگوں کی شان کے خلاف ہے جو علم دوست اور علم کے طالب ہیں۔

कुछ दिन हुए मुझे बड़ा रंज और अचरज हुआ जब मैंने एक जलसे में अपने एक पुराने तालिबइल्म को यह कहते सुना कि—

"अगर पाकिस्तान अलहदा न हो जाए तो मुसलमान इसी तरह रौंद दिये जाएंगे जिस तरह यहूदी जरमनी में कुचल दिये गए !"

गोया हिन्दुस्तान में इन दोनों की आबादियों का औसत वैसा ही है जैसा जरमनी में था या कम से कम उससे मिलता जुलता है ! हिन्दुस्तान में मुसलमानों की तादाद कुल आबादी का एक चौथाई है. बड़े बड़े इलाक़ों में मुसलमानों की बहुत बड़ी अक्सरियत (Over whelming Majority) बड़ी अक्सरियत (Great Majority). साफ़ अक्सरियत (Absolute majority) या निस्बती अक्सरियत (Relative Majority) है. कई इलाक़ों और शहरों में आधी, तिहाई या चौथाई तादाद मुसलमानों की है. हां ऐसे भी इलाक़े हैं जहां उनकी तादाद बहुत कम है. पर जरमनी में यहूदियों की तादाद कभी सौ में एक भी नहीं थी. और किसी शहर, किसी क़स्बे और किसी गांव में भी जर्मनी भर के अन्दर यहूदियों की अक्सरियत नहीं थी. फिर भी इन दोनों का मुक़ाबला करना एक पहलवान के सामने पांच साल के लड़के को दंगल में उतारना है ! हिन्दू और मुसलमानों का मुक़ाबला हाथी और शेर का मुक़ाबला हो सकता है, बोर बच्चे और खरगोश का नहीं !

यह सोचना कि ६६ फ़ीसदी हिन्दू या ७५ फ़ीसदी ग़ैर मुसलमान हिन्दुस्तान के नौ करोड़ मुसलमानों को कुचल दे सकेंगे.

کچھ دن ہوئے مجھے بڑا رنج اور اچرج ہوا جب میں نے ایک جلسے میں ایک پرانے طالب علم کو یہ کہتے سنا کہ—

"اگر پاکستان علاحدہ نہ ہوجائے تو مسلمان اسی طرح روند دئے جائیں گے جس طرح یہودی جرمنی میں کچل دئے گئے!"

گویا ہندستان میں ان دونوں کی آبادیوں کا اوسط ویسا ہی ہے جیسا جرمنی میں تھا یا کم سے کم اس سے ملتا جلتا ہے! ہندستان میں مسلمانوں کی تعداد کل آبادی کا ایک چوتھائی ہے. بڑے بڑے علاقوں میں مسلمانوں کی بہت بڑی اکثریت (Over whelming Majority) بڑی اکثریت (Great Majority). صاف اکثریت (Absolute majority) یا نسبتی اکثریت (Relative Majority) ہے. کئی علاقوں اور شہروں میں آدھی، تہائی یا چوتھائی تعداد مسلمانوں کی ہے. ہاں ایسے بھی علاقے ہیں جہاں ان کی تعداد بہت کم ہے. پر جرمنی میں یہودیوں کی تعداد کبھی سو میں ایک بھی نہیں تھی. اور کسی شہر، اور کسی قصبے اور کسی گاؤں میں بھی جرمنی بھر کے اندر یہودیوں کی اکثریت نہیں تھی. پھر بھی ان دونوں کا مقابلہ کرنا ایک پہلوان کے سامنے پانچ سال کے لڑکے کو دنگل میں اتارنا ہے! ہندو اور مسلمانوں کا مقابلہ ہاتھی اور شیر کا مقابلہ ہوسکتا ہے، بور بچے اور خرگوش کا نہیں!

یہ سوچنا کہ ۶۶ فی صدی ہندو یا ۷۵ فی صدی غیر مسلمان ہندستان کے نو کروڑ مسلمانوں کو کچل دے سکیں گے.

ऐसी हँसी को और निकम्मी बात है कि उस पर ध्यान देना ही वक्त को खोना है. पर बदक़िस्मती से हमारे मुल्क में ऐसे अनगिनत हज़रात हैं जो ऊपर से देखने में पढ़े लिखे मगर असल में नावाक़िफ़ और गुमराह हैं और तरह तरह के तास्सुबों की वजह से मनमाने ख़याल ज़ाहिर करते रहते हैं. इन लोगों ने अपनी राय बग़ैर सोचे और कसौटी पर कसे बना ली है. जिन लोगों को दूसरों को राय बनाने में मदद देनी चाहिये थी और जिन्हें आम जनता की नेक और सही राय का सरचश्मा होना चाहिये था वहां जब अपने अपने राजकाजी गिरोहों के प्रोपैगेन्डा का शिकार हो जायं और मुद्दई से ज़्यादा चुस्त गवाह बन कर गुमराही फैलाएं तो ऊँची तालीम से मुल्क को किस फ़ायदे की उम्मीद हो सकती है ? पढ़े लिखे नादानों को कोई कैसे समझा सकता है कि सिर्फ़ राजकाजी तौर पर अलग और "आज़ाद" हो जाने से यह क्यों कर मुमकिन है कि वह यहूदियों की तरह नहीं "कुचले जायंगे"?—आज कल के राज काज ने हमें यह सबक़ सिखाया है कि सिर्फ़ यहूदी कम तादाद वाले ही नहीं कुचले गए बल्कि ज़ैकोस्लोवेकिया, आस्ट्रिया, डेनमार्क, नारवे, बेलजियम, हालैंड, हंगरी, यूगोस्लाविया, बलग़ारिया, रोमानिया, यूनान, पोलैंड और भगवान भला करे मैजिनो लाइन वाला फ्रांस भी बमों की बारिश और दबावों में दब दब कर सचमुच कुचले गए ? लोग नहीं समझते कि इस तरह का मनमाना दलीलों और बे हक़ीक़त बातों से वह ख़ुद अपने फ़िरक़े को कितना नुक़सान पहुँचा रहे हैं. सिर्फ़ आज़ाद [illegible] पर नहीं निकलता कि आज़ाद

(४७४)

ایسی ہنسی کی اور نکمی بات ہے کہ اُس پر دھیان دینا ہی وقت کو کھونا ہے۔ پر بدقسمتی سے ہمارے ملک میں ایسے اَن گنت حضرات ہیں جو اوپر سے دیکھنے میں پڑھے لکھے مگر اصل میں ناواقف اور گمراہ ہیں اور طرح طرح کے تعصبوں کی وجہ سے من مانے خیال ظاہر کرتے رہتے ہیں۔ اِن لوگوں نے اپنی رائے بغیر سوچے اور کسوٹی پر کسے بنالی ہے۔ جن لوگوں کو دوسروں کو رائے بنانے میں مدد دینی چاہیے تھی اور جنھیں عام جنتا کی نیک اور صحیح رائے کا سرچشمہ ہونا چاہیے تھا وہی جب اپنے اپنے راج کاجی گروہوں کے پروپیگنڈا کا شکار ہوجائیں اور مُدّعی سے زیادہ چست گواہ بن کر گمراہی پھیلائیں تو اونچی تعلیم سے ملک کو کس فائدے کی اُمید ہوسکتی ہے؟ پڑھے لکھے ناداں کو کوئی کیسے سمجھا جاسکتا ہے کہ صرف راج کاجی طور پر الگ اور "آزاد" ہوجانے سے یہ کیونکر ممکن ہے کہ وہ یہودیوں کی طرح نہیں "کچلے جائیں گے"؟—آج کل کے راج کاج نے ہمیں یہ سبق سکھایا ہے کہ صرف یہودی کم تعداد والے ہی نہیں کچلے گئے بلکہ زیکوسلوویکیا، آسٹریا، ڈنمارک، ناروے، بلجیم، ہالینڈ، ہنگری، یوگوسلاویا، بلغاریہ، رومانیہ، یونان، پولینڈ اور بھگوان بھلا کرے میژنوں لائن والا فرانس بھی بموں کی بارش اور دباؤں میں دب دب کر سچ مچ کچلے گئے؟ لوگ نہیں سمجھتے کہ اس طرح کی من مانی دلیلوں اور بےحقیقت باتوں سے وہ خود اپنے فرقے کو کتنا نقصان پہنچا رہے ہیں۔ صرف آزاد ہوجانے سے یہ نتیجہ لازمی طور پر نہیں نکلتا کہ آزاد

(۴۷۴)

रियासतें अपनी आज़ादी क़ायम रख सकेंगी या खुशहाली का दरजा हासिल करेंगी. इसके ख़िलाफ़ आपस में दुश्मनियों के बढ़ने से बरबादी के सामान पहले से सैकड़ों गुना ज़्यादा बढ़ जाते हैं.

इसके बाद हमें सिक्खों, ईसाइयों और दूसरे मज़हब वालों की तादादों की तरफ़ भी एक नज़र डालनी है और उनसे पैदा होने वाले मसलों पर ग़ौर करना है. पर यह चीजें किसी दूसरे लेख के लिये हैं. यहाँ हम फिर सिर्फ़ यह कह कर ख़तम करते हैं कि आइन्दा के लिये हम सबका भला और सारे मुल्क का भला मुल्क के टुकड़े क़ायम रखने में नहीं बल्कि अपने अपने इलाक़ों की आज़ादी को क़ायम रखते हुए किसी न किसी तरह मुल्क की इकाई और एकता को और ज़्यादा मज़बूत करने में. हमें उम्मीद है कि दिमाग़ों के और ज़्यादा ठंडे होने और दिलों के नरम पड़ने पर हम सब मिल कर फिर इसी राह पर चलेंगे.

ریاستیں اپنی آزادی قائم رکھ سکیں گی یا خوش حالی کا درجہ حاصل کر سکیں گی۔ اس کے خلاف آپس میں دشمنیوں کے بڑھنے سے بربادی کے سامان پہلے سے سیکڑوں گنا زیادہ بڑھ جاتے ہیں۔

اس کے بعد ہمیں سکھوں، عیسائیوں اور دوسرے مذہب والوں کی تعدادوں کی طرف بھی ایک نظر ڈالنی ہے اور ان سے پیدا ہونے والے مسئلوں پر غور کرنا ہے۔ پر یہ چیزیں کسی دوسرے لیکھ کے لئے ہیں۔ یہاں ہم پھر صرف یہ کہہ کر ختم کرتے ہیں کہ آئندہ کے لئے ہم سب کا بھلا اور سارے ملک کا بھلا ملک کے ٹکڑے قائم رکھنے میں نہیں بلکہ اپنے اپنے علاقوں کی آزادی کو قائم رکھتے ہوئے کسی نہ کسی طرح ملک کی اکائی اور ایکتا کو اور زیادہ مضبوط کرنے میں۔ ہمیں امید ہے کہ دماغوں کے اور زیادہ ٹھنڈے ہونے اور دلوں کے نرم پڑنے پر ہم سب مل کر پھر اسی راہ پر چلیں گے۔

जलियानवाला बाग़ की कुछ यादगारें

भाई राम जी दर

(५)

आपस की बेएतबारी

हमसे लोग भड़कते ज़रूर थे. महज़ पुलिस के डर के मारे. उन्हें मारशल ला की आग से निकले अभी थोड़े ही दिन बीते थे. हर एक के दिल में हमारे लिये आदर का स्थान था. इसका हमें यक़ीन था. मौक़ा पाकर लोग अपने असली भाव को ज़ाहिर भी करते थे.

गुजरानवाला एक छोटी जगह थी. वहां के पढ़े लिखे लोग ज़्यादातर वकील थे. इनमें हिन्दू मुसलमान दोनों थे और इन दोनों पर मारशल ला के ज़माने में एक सी गुज़री थी.

हमारे पंजाबी मित्र बड़े जुगत व सूझ बूझ के आदमी थे. उन्हीं की कोशिश से एक वकील साहब के बंगले पर किसी बहाने से शहर के ख़ास ख़ास लोग बुलाये गए. दस या बारह की मंडली होगी. इनमें वकील, बैरिस्टर, डाक्टर और कुछ छोटे मोटे हाकिम भी थे.

हम चारों सबसे बाक़ायदा मिलाये गये. कुछ शायद मामूली नाश्ते का भी इन्तज़ाम था.

ऐसी पार्टी मैंने न कभी सुनी और न देखी थी.

हम सब सफ़ेद पोश और पढ़े लिखे थे मगर साहब सलामत के बाद सब चुप बैठे रहे. ऐसा जान पड़ता कि किसी ने इनके [illegible] लगा दिये हैं.

جلیان والا باغ کی کچھ یادگاریں

بھائی رام جی در

(۵)

آپس کی بے اعتباری

ہم سے لوگ بھڑکتے ضرور تھے. محض پولیس کے ڈر کے مارے. انھیں مارشل لا کی آگ سے نکلے ابھی تھوڑے ہی دن بیتے تھے. ہر ایک کے دل میں ہمارے لئے آدر کا ستھان تھا. اس کا ہمیں یقین تھا. موقع پاکر لوگ اپنے اصلی بھاؤ کو ظاہر بھی کرتے تھے.

گجرانوالا ایک چھوٹی جگہ تھی. وہاں کے پڑھے لکھے لوگ زیادہ تر وکیل تھے. ان میں ہندو مسلمان دونوں تھے اور ان دونوں پر مارشل لا کے زمانے میں ایک سی گزری تھی.

ہمارے پنجابی متر بڑے جگت و سوجھ بوجھ کے آدمی تھے. انھیں کی کوشش سے ایک وکیل صاحب کے بنگلے پر کسی بہانے سے شہر کے خاص خاص لوگ بلائے گئے. دس یا بارہ کی منڈلی ہوگی. ان میں وکیل، بیرسٹر، ڈاکٹر اور [illegible] چھوٹے موٹے حاکم بھی تھے.

ہم چاروں سب سے باقاعدہ ملائے گئے. کچھ شاید معمولی ناشتے کا بھی انتظام تھا.

ایسی پارٹی میں نے نہ کبھی سنی اور نہ دیکھی تھی.

ہم سب سفید پوش اور پڑھے لکھے تھے مگر صاحب سلامت کے بعد سب چپ بیٹھے رہے. ایسا جان پڑتا کہ کسی نے ان کے ہونٹوں پر تالے ڈال دئے ہیں.

हम कुरसियों पर बैठे थे. मेरे दायें बायें एक मुसलमान बैरिस्टर और एक हिन्दू वकील थे.

मैंने कुछ राजकाजी मामलों पर बात करनी चाही तो मेरे दाहिने हाथ वाले साहब ने हलके से कहा "जरा इनसे होशियार रहियेगा जो आप के बायें तरफ़ तशरीफ़ रखते हैं.......वह ख़ुफिया पुलिस से मिले हैं."

मैंने जब बायें हाथ वाले साहब से कुछ पूछा तो उन्होंने गम्भीर शकल बना कर हलके से मुझे आगाह किया "देखिये यह जो आपके बग़ल में बैठे हैं बड़े चलते पुरज़े हैं.......जरा सम्भल कर बात कीजियेगा.......पुलिस इनसे मिली है."

मैं कुछ चौंका और कुछ चकराया. दिल में दोनों से नफ़रत पैदा हुई. थोड़ी देर इधर उधर की दुनियादारी की बातें करके मैं कुरसी छोड़ कर और लोगों के पास चला गया.

जिससे बात करूँ वह इशारे से यही कहे कि बग़ल वाला आदमी ख़ुफिया में है.

किसी को किसी पर जरा सा भी एतबार न था. शक की इन्तिहा हो गई थी. और थे सब पढ़े लिखे और एक दूसरे के रोज़ के मिलने बैठने वाले, दफ़्तर व कचहैरी में एक साथ काम करने वाले.

इस पार्टी में शामिल होकर एक नया तजुर्बा हुआ.

जैसे प्लेग या हैज़े की बीमारी जोर पकड़ती है वैसे ही उस ज़माने में गुजरानवाला में एक दूसरे पर बेएतबारी की बीमारी फैली थी. यह था मारशल ला के जुल्मों का नतीजा.

ہم کرسیوں پر بیٹھے تھے. میرے دائیں بائیں ایک مسلمان بیرسٹر اور ایک ہندو وکیل تھے.

میں نے کچھ راج کاجی معاملوں پر بات کرنی چاہی تو میرے داہنے ہاتھ والے صاحب نے ہلکے سے کہا "ذرا اِن سے ہوشیار رہئے گا جو آپ کے بائیں طرف تشریف رکھتے ہیں...... وہ خفیہ پولیس سے ملے ہیں."

میں نے جب بائیں ہاتھ والے صاحب سے کچھ پوچھا تو اُنھوں نے گمبھیر شکل بناکر ہلکے سے مجھے آگاہ کیا "دیکھئے یہ جو آپ کے بغل میں بیٹھے ہیں بڑے چلتے پُرزے ہیں..... ذرا سنبھل کر بات کیجئے گا ...... پولیس اِن سے ملی ہے."

میں کچھ چونکا اور کچھ چکرایا. دل میں دونوں سے نفرت پیدا ہوئی. تھوڑی دیر اِدھر اُدھر کی دُنیاداری کی باتیں کرکے میں کرسی چھوڑکر اور لوگوں کے پاس چلا گیا.

جس سے بات کروں وہ اشارے سے یہی کہے کہ بغل والا آدمی خفیہ میں ہے.

کسی کو کسی پر ذرا سا بھی اعتبار نہ تھا. شک کی انتہا ہوگئی تھی. اور تھے سب پڑھے لکھے ایک دوسرے کے روز کے ملنے بیٹھنے والے، دفتر و کچہری میں ایک ساتھ کام کرنے والے.

اِس پارٹی میں شامل ہوکر ایک نیا تجربہ ہوا.

جیسے پلیگ یا ہیضے کی بیماری زور پکڑتی ہے ویسے ہی اُس زمانے میں گجرانوالا میں ایک دوسرے پر بے اعتباری کی بیماری پھیلی تھی. [illegible]

(६)

कोतवाल का मुक़ाबला

गुजरानवाला में अंगरेज़ी सरकार ने निहत्थी जनता के आन्दोलन को दबाने के लिये हवाई जहाज़ से बम और मशीनगन से गोलियां बरसाई थीं.

हमें पता चला कि एक ग़रीब मुसलमान नानबाई की एक टांग एक बम के टुकड़े से, जो उसकी दूकान के पास गिरा था, ज़ख़्मी हो गई थी और फिर डाक्टरों को उस टांग को घुटने से ऊपर काटना पड़ा था.

मुझसे कहा गया कि मैं इस नानबाई के पास जाकर बयान लूँ. बम्बई से एक फ़ोटो खींचने वाले भी आए थे. इनका नाम मिस्टर पटेल था. यह उमर में मेरे ही बराबर होंगे. उस ज़माने में कोई फ़ोटोग्राफ़र पंजाब जाकर तसवीरें लेने के लिये हिम्मत नहीं करता था. पटेल साहब देश भक्त थे और अपने काम में काफी चतुर थे. ज़रूरत भी ऐसे ही शख़्स की थी

(३०)

मिस्टर पटेल और मैं इस नानबाई के मकान पर पहुँचे. पटेल साहब ने झटपट अपना कैमरा सड़क पर जमाया और उन जगहों की तसवीरें लीं जहाँ उस वक़्त तक बम के निशान क़ायम थे.

इतने में रास्ते चलते और पड़ोस के लोग और गली के ग़रीब बच्चे तमाशा देखने की ग़रज़ से इकट्ठा हो गए उनके समझ में नहीं आता था कि हम तसवीरें क्यों ले रहे हैं. कुछ काना फूसी करते 'सरकार की तरफ़ से आए हैं."

कुछ कहते "अपने ही लोग हैं."

किसी ने कहा "देखो पुलिस आ गई."

(۶)

کوتوال کا مقابلہ

گجرانوالا میں انگریزی سرکار نے نہتھی جنتا کے اندولن کو دبانے کے لئے ہوائی جہاز سے بم اور مشین گن سے گولیاں برسائی تھیں.

ہمیں پتہ چلا کہ ایک غریب مسلمان نان بائی کی ایک ٹانگ ایک بم کے ٹکڑے سے، جو اُس کی دُکان کے پاس گرا تھا، زخمی ہوگئی تھی اور پھر ڈاکٹروں کو اُس ٹانگ کو گھٹنے سے اوپر کاٹنا پڑا تھا.

مجھ سے کہا گیا کہ میں اس نان بائی کے پاس جاکر بیان لوں. بمبئی سے ایک فوٹو کھینچنے والے بھی آئے تھے. اِن کا نام مسٹر پٹیل تھا. یہ عمر میں میرے ہی برابر ہوں گے. اُس زمانے میں کوئی فوٹوگرافر پنجاب جاکر تصویریں لینے کے لئے ہمت نہیں کرتا تھا. پٹیل صاحب دیش بھکت تھے اور اپنے کام میں کافی چتر تھے. ضرورت بھی ایسے ہی شخص کی تھی.

(۳۰)

مسٹر پٹیل اور میں اِس نان بائی کے مکان پر پہنچے. پٹیل صاحب نے جھٹ پٹ اپنا کیمرا سڑک پر جمایا اور اُن جگہوں کی تصویریں لیں جہاں اُس وقت تک بم کے نشان قایم تھے.

اتنے میں راستے چلتے اور پڑوس کے لوگ اور گلی کے غریب بچے تماشا دیکھنے کی غرض سے اکٹھا ہوگئے اُن کے سمجھ میں نہیں آتا تھا کہ ہم تصویریں کیوں لے رہے ہیں. کچھ کانا پھوسی کرتے "سرکار کی طرف سے آئے ہیں."

کچھ کہتے "اپنے ہی لوگ ہیں."

کسی نے کہا "دیکھو پولیس آگئی."

लोग चुटकी बजाते में काफ़ूर हो गए.

हम काफ़ी तसवीरें ले चुके थे. झट कैमरा बन्द कर हम भी वहां से खिसके क्योंकि हमारी नियत झगड़ा फ़िसाद करने की नहीं थी और काम भी बन गया था.

पुलिस का महज़ डर था. किसी ने हमसे कुछ न कहा. पटेल साहब घर लौट गए. मैं अकेला रह गया क्योंकि मुझे अभी नानबाई का बयान लेना था.

नानबाई की दूकान बग़ल ही में थी. एक खपड़ैल की लम्बी सी कोठरी थी लबे सड़क.

मैंने बाहर से उस कोठरी में झांका तो एक लम्बा चौड़ा अच्छे हाथ पैर का गोरा चिट्टा, क़रीब तीस बरस का मुसलमान अन्दर चारपाई पर बैठा था.

"मैं आप से कुछ बातें करना चाहता हूँ"—मैंने उससे कहा.

"आइये जनाब" उसने एक लाठी के सहारे अपनी डेढ़ टांग के बल खड़े होकर आगे बढ़ते हुए, कुछ डरते हुए, जवाब दिया.

यह भी उसी डर व शक की बीमारी का मरीज़ था.

मैं उसके मन की दशा को ताड़ गया. पहले ही से मैं इस बात के लिये तय्यार था.

दरियाफ़्त करने से और आधी टांग से मालूम हो गया कि यह वही नानबाई है जो बम का शिकार हुआ था.

उसने मुझे बड़ी नम्रता से अपनी खटिया पर बैठाया मगर जब मैंने उससे बम के गिरने और तफ़सील में हाल पूछना चाहा तो बोला "ग़रीब परवर मैं आप को बता तो

لوگ چٹکی بجاتے میں کافور ہو گئے.

ہم کافی تصویریں لے چکے تھے. جھٹ کیمرا بند کر ہم بھی وہاں سے کھسکے کیونکہ ہماری نیت جھگڑا فساد کرنے کی نہیں تھی اور کام بھی بن گیا تھا.

پولیس کا محض ڈر تھا. کسی نے ہم سے کچھ نہ کہا. پٹیل صاحب گھر لوٹ گئے. میں اکیلا رہ گیا کیونکہ مجھے ابھی نان بائی کا بیان لینا تھا.

نان بائی کی دکان بغل ہی میں تھی. ایک کھپریل کی لمبی سی کوٹھری تھی لب سڑک.

میں نے باہر سے اُس کوٹھری میں جھانکا تو ایک لمبا چوڑا اچھے ہاتھ پیر کا گورا چٹا، قریب تیس برس کا مسلمان اندر چارپائی پر بیٹھا تھا.

"میں آپ سے کچھ باتیں کرنا چاہتا ہوں"— میں نے اُس سے کہا.

"آیئے جناب" اُس نے ایک لاٹھی کے سہارے اپنی ڈیڑھ ٹانگ کے بل کھڑے ہو کر آگے بڑھتے ہوئے، کچھ ڈرتے ہوئے، جواب دیا.

یہ بھی اُسی ڈر و شک کی بیماری کا مریض تھا.

میں اُس کے من کی دشا کو تاڑ گیا. پہلے ہی سے میں اِس بات کے لئے تیار تھا.

دریافت کرنے سے اور آدھی ٹانگ سے معلوم ہو گیا کہ یہ وہی نان بائی ہے جو بم کا شکار ہوا تھا.

اُس نے مجھے بڑی نمرتا سے اپنی کھٹیا پر بٹھایا مگر جب میں نے اُس سے بم کے گرنے اور تفصیل میں حال پوچھنا چاہا تو بولا "غریب پرور میں آپ کو بتا تو سب سکتا ہوں مگر مجھے ڈر لگتا ہے. آپ یہاں سے

गये और पुलिस वाले (उसने दो चार गालियाँ दीं) मुझे जिन्दा न छोड़ेंगे."

मैंने जब उसे पंडित मोतीलाल नेहरू का नाम बताया और यक़ीन दिलवाया कि अगर पुलिस सताएगी तो पडित जी तुम्हारी मदद करेंगे, तो उसने बड़ी हिम्मत बांध कर कहा, "तब मैं किसी से नहीं डरता."

इसके बाद नानबाई ने अपना क़िस्सा सुनाना शुरू किया और मैंने काग़ज़ पर लिखना जारी किया.

थोड़ी ही देर बाद नानबाई ने बयान रोक दिया और सहम कर बोला—"देखिये वह आ गया······अब ख़ुदा ख़ैर करे······आप को मैं कैसे बचाऊँ··· "

मैं उसके घबराने का मतलब न समझा, मगर ज्योंही मैंने निगाह कोठरी में से सामने दौड़ाई तो सड़क पर ठीक कोठरी के अगले हिस्से के सामने एक टांगा दिखाई दिया. उसमें पुलिस वाले बैठे थे. पुलिस की वर्दी दिख रही थी. उनमें एक हट्टा कट्टा छै फुटा पहलवान जैसा, बड़ी बड़ी गलमुच्छें करके और ठाट का साफ़ा बाँधे, एक अफ़सर भी बैठा था. एक निगाह ही में मैं समझ गया कि यह कोतवाल शहर है. पल भर के लिये मैं सन्नाटे में रह गया. कुल जिस्म में एक ठंडी फुरेरी सी दौड़ गई. मगर फ़ौरन ही मैंने हिम्मत कसी और नानबाई से बड़ी सावधानी से कहा जैसे कोई बात ही नहीं हुई "हां! बताओ फिर क्या हुआ ?"

नानबाई ठिठुर कर रह गया था. मैंने ज़रा दबंग होकर उससे कहा "डरो मत······तुम को कुछ नहीं हो सकता······जब तक मेरी

گئے اور پولیس والے (اُس نے دو چار گالیاں دیں) مجھے زندہ نہ چھوڑیں گے۔"

میں نے جب اُسے پنڈت موتی لال نہرو کا نام بتایا اور یقین دلایا کہ اگر پولیس ستائے گی تو پنڈت جی تمھاری مدد کریں گے، تو اُس نے بڑی ہمت باندھ کر کہا، "تب میں کسی سے نہیں ڈرتا۔"

اِس کے بعد نان بائی نے اپنا قصہ سُنانا شروع کیا اور میں نے کاغذ پر لکھنا جاری کیا۔

تھوڑے ہی دیر بعد نان بائی نے بیان روک دیا اور سہم کر بولا— "دیکھئے وہ آگیا...... اب خدا خیر کرے...... آپ کو میں کیسے بچاؤں..."

میں اُس کے گھبرانے کا مطلب نہ سمجھا، مگر جیوں ہی میں نے نگاہ کوٹھری میں سے سامنے دَوڑائی تو سڑک پر ٹھیک کوٹھری کے اگلے حصّے کے سامنے ایک ٹانگا دکھائی دیا۔ اُس میں پولیس والے بیٹھے تھے۔ پولیس کی وردی دِکھ رہی تھی۔ اُن میں ایک ہٹا کٹا چھ فُٹا پہلوان جیسا، بڑی بڑی گل مُچھیں کرکے اور ٹھاٹھ کا صافا باندھے، ایک افسر بھی بیٹھا تھا۔ ایک نگاہ ہی میں مَیں سمجھ گیا کہ یہ کوتوال شہر ہے۔ پل بھر کے لئے میں سنّاٹے میں رہ گیا۔ کُل جسم میں ایک ٹھنڈی پھُریری سی دَوڑ گئی۔ مگر فوراً ہی میں نے ہمّت کسی اور نان بائی سے بڑی ساودھانی سے کہا جیسے کوئی بات ہی نہیں ہوئی "ہاں! بتاؤ پھر کیا ہوا؟"

نان بائی ٹھِٹھر کر رہ گیا تھا۔ میں نے ذرا دبنگ ہوکر اُس سے کہا "ڈرو مت...... تم کو کچھ نہیں ہوسکتا...... جب تک میری

जान में जान है, किसी की मजाल नहीं तुम्हें सताए."

नानबाई के मन पर कुछ अच्छा असर पड़ा.

टांगा सामने खड़ा रहा. पुलिस वाले उतरे नहीं.

मैंने अपना क़लम चलाना फिर से जारी किया. दिल जरूर किसी क़दर तेज़ रफ़तार से धड़क रहा था.

इतने में वही मुसलमान बैरिस्टर जिनसे पार्टी में मुलाक़ात हुई थी हमारी कोठरी में घबराए हुए आए और मुझसे कहने लगे. "साहब जादे मैं एक जरूरी काम से आप के पास आया हूँ. आप फ़ौरन यहाँ से चले जाइये नहीं तो देखिये कोतवाल साहब मय सिपाहियों के आपको गिरफ़तार करने आए हैं.......आप फ़ौरन चले जाईये."

मैंने एक बार कोतवाल पर नजर दूर से डाली. उसका कल्ला और खौफ़नाक चेहरा देखकर दिल एक बार दहल गया. मगर वही दिल फिर पत्थर सा बन गया और न मालूम किसने मुझे हिम्मत दी. मैंने बैरिस्टर साहब से कहा मैं आपका मशक़ूर हूँ कि आपने मुझे नेक सलाह दी मगर मैं अपने लीडर पंडित मोतीलाल नेहरू का हुकुम नहीं टाल सकता. मैं कोई बुरी बात नहीं कर रहा हूँ. मैं अपना फ़र्ज़ अदा कर रहा हूँ और करूँगा. आप कोतवाल साहब से कह दीजिये कि वह अपना फ़र्ज़ अदा करें."

बैरिस्टर साहब ने बड़े प्रेम से मुझसे कहा—मैं कचहरी जा रहा था. मुझे आपकी जवानी पर तरस आया. देखा पुलिस आपकी गिरफ़-तारी को आ रही है. मुझसे रहा न गया. आप अब भी मेरा कहना मान लीजिये." मैंने वही दोहराया जो पहले कहा था. बैरिस्टर

جان میں جان ہو، کسی کی مجال نہیں تمھیں ستائے۔"

نان بائی کے من پر کچھ اچھا اثر پڑا۔

ٹانگا سامنے کھڑا رہا۔ پولیس والے اترے نہیں۔

میں نے اپنا قلم چلانا پھر سے جاری کیا۔ دل ضرور کسی قدر تیز رفتار سے دھڑک رہا تھا۔

اتنے میں وہی مسلمان بیرسٹر جن سے پارٹی میں ملاقات ہوئی تھی ہماری کوٹھری میں گھبرائے ہوئے آئے اور مجھ سے کہنے لگے۔ "صاحب زادے میں ایک ضروری کام سے آپ کے پاس آیا ہوں۔ آپ فوراً یہاں سے چلے جایئے نہیں تو دیکھئے کوتوال صاحب مع سپاہیوں کے آپ کو گرفتار کرنے آئے ہیں...... آپ فوراً چلے جایئے۔"

میں نے ایک بار کوتوال پر نظر دُور سے ڈالی۔ اُس کا کلاّ اور خوفناک چہرہ دیکھ کر دل ایک بار دہل گیا۔ مگر وہی دل پھر پتھر سا بن گیا اور نہ معلوم کس نے مجھے ہمت دی۔ میں نے بیرسٹر صاحب سے کہا میں آپ کا مشکور ہوں کہ آپ نے مجھے نیک صلاح دی مگر میں اپنے لیڈر پنڈت موتی لال نہرو کا حکم نہیں ٹال سکتا۔ میں کوئی بُری بات نہیں کر رہا ہوں۔ میں اپنا فرض ادا کر رہا ہوں اور کرونگا۔ آپ کوتوال صاحب سے کہہ دیجئے کہ وہ اپنا فرض ادا کریں۔"

بیرسٹر صاحب نے بڑے پریم سے مجھ سے کہا— میں کچہری جا رہا تھا۔ مجھے آپ کی جوانی پر ترس آگیا۔ دیکھو پولیس آپ کی گرفتاری کو آرہی ہے۔ مجھ سے رہا نہ گیا۔ آپ اب بھی میرا کہنا مان لیجئے۔" میں نے وہی دُہرایا جو پہلے کہا تھا۔ بیرسٹر

साहब ठंडी सांस भर के बाहर चले गए.

मैंने लिखना फिर शुरू किया. हर दम यही खटका था कि अब पुलिस की चंगुल में फँसा और तब फंसा! मेरे जीवन की वह अनोखी घड़ी थी.

टांगा कुछ ही देर और खड़ा रहा. फिर ग़ायब हो गया.

बयान ख़तम करके और नानबाई से वादा करके कि मैं बड़े से बड़े हाक़िम से मिलकर इस मामले को तय करूँगा, वहां से घर को रवाना हुआ.

❀ ❀ ❀ ❀ ❀

चालाक शिकारी

(अकरम साहब इलाहाबादी)

सन् ४६ अभी जवान हो रहा था कि साम्राज इङ्गलिशिया के महल में खलबली सी मच गई.

एक ने ख़बर दी—हुज़ूर, हिन्दुस्तान के जानवरों में अक़्ल आ चली है.

दूसरा बोला—सरकार, हमारे पालतू भी भड़क रहे हैं.

तीसरे ने सुनाया—मालिक मुअज़्ज़म के हिन्दुस्तानी सरकस के दो पाए कुछ बाग़ी हुए जा रहे हैं. ग़ुलामों की नियत कुछ ख़राब मालूम होती है.

मगर साम्राज शाही ने सब की सुन कर एक लम्बा सा क़हक़हा लगाया.

—वह अब भी बेवक़ूफ़ हैं—नादान, हमारी ही सिखाई हुई सियासत

صاحب ٹھنڈی سانس بھر کے باہر چلے گئے۔

میں نے لکھنا پھر شروع کیا۔ ہر دم یہی کھٹکا تھا کہ اب پولیس کی چنگل میں پھنسا اور تب پھنسا! میرے جیون کی وہ انوکھی گھڑی تھی۔

تانگا کچھ ہی دیر اور کھڑا رہا۔ پھر غایب ہوگیا۔

بیان ختم کرکے اور نان بائی سے وعدہ کرکے میں بڑے سے بڑے حاکم سے مل کر اس معاملے کو طے کروں گا، وہاں سے گھر کو روانہ ہوا۔

❀ ❀ ❀ ❀ ❀

چالاک شکاری

(اکرم صاحب الہ آبادی)

سنہ ۴۶ء ابھی جوان ہو رہا تھا کہ سامراج انگلشیہ کے محل میں کھلبلی سی مچ گئی۔

ایک نے خبر دی—حضور ہندستان کے جانوروں میں عقل آ چلی ہے۔

دوسرا بولا—سرکار، ہمارے پالتو بھی بھڑک رہے ہیں۔

تیسرے نے سنایا—ملک معظم کے ہندستانی سرکس کے دو پائے کچھ باغی ہوئے جا رہے ہیں۔ غلاموں کی نیت کچھ خراب معلوم ہوتی ہے۔

مگر سامراج شاہی نے سب کی سن کر ایک لمبا سا قہقہہ لگایا۔

وہ اب بھی بے وقوف ہیں—نادان، ہماری ہی سکھائی ہوئی سیاست

से क्या वह हमें फ़तह कर सकते हैं ?......मदारी के पिटारे में अभी और भी बहुत से गुर मौजूद हैं उन बेवक़ूफ़ों के लिये ......वह बोला.

मगर अब की बार तो ख़तरा मालूम होता है हुज़ूर—एक मशीर ने राय दी.

ख़तरा ......हूँ ......हम अय्यारों के लिये ख़तरा क्या चीज़ है ......तुम देखना तो अब की बार उनकी अक़ल पर ऐसे पत्थर डालेंगे हम कि कई बरसों तक वह फिर बग़ावत का नाम भी न ले सकें. साम्राजशाही का बड़ा शैतान बोला—कोई है उसने यह कह कर ताली बजाई, और फ़ौरन तीन शिकारी सामने आ पहुँचे.

तुम आज ही हिन्दुस्तान के जंगलों को रवाना हो जाओ ...... और लो ......यह बारूद का पिटारा भी साथ लेते जाना, वहां काम आयेगा.

चुनांचे वफ़ादार सिपाही मई की गरमियों में ही चल पड़े. हिन्दुस्तानी सरकस के दरिन्दे बे सब्री से राशन का इन्तज़ार कर रहे थे.

आख़िर उम्मीद बर आई, मन की आशा पूरन हो गई.

अय्यार शिकारी अपने साथ एक बूढ़ी मेम भी लाये थे जिसकी शायद अब उन्हें ज़रूरत न थी. उसका नाम, "स्वराज्य या आज़ादी" था.

भूके के सामने अगर कड़ुवे फल भी रख दो तो वह मज़े ले लेकर खा जायगा.

سے کیا وہ ہمیں فتح کر سکتے ہیں؟...... مداری کے پٹارے میں ابھی اور بھی بہت سے گُر موجود ہیں اُن بے وقوفوں کے لئے ...... وہ بولا

مگر اب کی بار تو خطرہ معلوم ہوتا ہے حضور— ایک مشیر نے رائے دی.

خطرہ...... ہوں...... ہم عیّاروں کے لئے خطرہ کیا چیز ہے...... تم دیکھنا تو اب کی بار اُن کی عقل پر ایسے پتھر ڈالیں گے کہ کئی برسوں تک وہ پھر بغاوت کا نام بھی نہ لے سکیں. سامراج شاہی کا بڑا شیطان بولا— کوئی ہے اُس نے یہ کہہ کر تالی بجائی، اور فوراً تین شکاری سامنے آ پہنچے.

تم آج ہی ہندستان کے جنگلوں کو روانہ ہو جاؤ.... اور لو ...... یہ بارود کا پٹارہ بھی ساتھ لیتے جانا، وہاں کام آئے گا.

چنانچہ وفادار سپاہی مئی کی گرمیوں میں ہی چل پڑے. ہندستانی سرکس کے درندے بے صبری سے راشن کا انتظار کر رہے تھے.

آخر اُمید بر آئی، من کی آشا پورن ہو گئی.

عیّار شکاری اپنے ساتھ ایک بوڑھی میم بھی لائے تھے جس کی شاید اب اُنھیں ضرورت نہ تھی. اُس کا نام "سوراج یا آزادی" تھا.

بھوکے کے سامنے اگر کڑوے پھل بھی رکھ دو تو وہ مزے لے لے کر کھا جائے گا.

چالاک شکاریوں نے اُس بوڑھی میم کو اپنی بندوق سے مار ڈالا—

उनमें से एक ने पूछा—यह क्या किया तुमने ?

मज़ा तो जब है कि हल्दी लगे न फिटकिरी और रंग चोखा आए, यानी सांप भी मरे और लाठी भी न टूटे······ देखो तो कि हम किस मज़े से शिकार करते हैं, दूसरा बोला.

और उन्होंने इस "स्वराज" का मुर्दा जिस्म इन दरिन्दों के सामने फेंक दिया.

चारों तरफ़ से भूके भेड़िये बेताब होकर दौड़ पड़े मगर यह क्या······देखते देखते वह आपस ही में लड़ पड़े······कुछ कह रहे थे······हम तो सर और पेट का हिस्सा खायेंगे. कुछ कह रहे थे, नहीं तुम कौन होते हो, हम सब खा जायेंगे. और कुछ कह रहे थे, ऊँ हूँ ! तुम थोड़ा थोड़ा खा लो हम ज़्यादा खा लें. मगर कुछ का कहना यह भी था कि भाई झगड़ा क्या······सब मिल बांटकर खा लो······कि थोड़ा थोड़ा सब को मिल जाय.

(४७०)

जितने मुँह उतनी बातें—और फिर दरिन्दों के अक़्ल कहां—थोड़ी बहुत सूझ बूझ जो किसी ज़माने की बाक़ी थी, वह इस भूक ने छीन ली······कम्बख़्त आपस ही में लड़ पड़े—एक ख़ूनी मंज़र खिंच गया. एक दूसरे को चीर चीर कर फेंकने लगे. एक दूसरे का ख़ून पीने बैठ गए, न अपना न पराया—आख़िर दरिन्दे ठहरे······ मीलों तक सर सब्ज़ मैदानों में ख़ून की नदियां बह उठीं······ अय्यार शिकारी अपना काम कर चुके थे—हंसते हुए चले गए.

दरिन्दे अब भी लड़ रहे थे······यहां तक कि वह लड़ते लड़ते निढाल होकर गिर पड़े······और अब जो देखा तो—स्वराज की लाश सड़ चुकी थी. मगर अब उन पर इस आपस की जंग में

اُن میں سے ایک نے پوچھا — یہ کیا کیا تم نے ؟

مزا تو جب ہے کہ ہلدی لگے نہ پھٹکری اور رنگ چوکھا آئے، یعنی سانپ بھی مرے اور لاٹھی بھی نہ ٹوٹے.... دیکھو تو کہ ہم کس مزے سے شکار کرتے ہیں، دوسرا بولا .

اور انھوں نے اس "سوراجیہ" کا مُردہ جسم ان درندوں کے سامنے پھینک دیا .

چاروں طرف سے بھوکے بھیڑیے بے تاب ہوکر دوڑ پڑے مگر یہ کیا.. دیکھتے دیکھتے وہ آپس میں لڑ پڑے .... کچھ کہہ رہے تھے .... ہم تو سر اور پیٹ کا حصہ کھائیں گے . کچھ کہہ رہے تھے، نہیں تم کون ہوتے ہو، ہم سب کھا جائیں گے . اور کچھ کہہ رہے تھے، اوں ہوں ! تم تھوڑا تھوڑا کھا لو ہم زیادہ کھا لیں . مگر کچھ کا کہنا یہ بھی تھا کہ بھائی جھگڑا کیا.... سب مل بانٹ کر کھا لو.... کہ تھوڑا تھوڑا سب کو مل جائے ۔

جتنے مُنہ اُتنی باتیں — اور پھر درندوں کے عقل کہاں — تھوڑی بہت سوجھ بوجھ جو کسی زمانے کی باقی تھی، وہ اس بھوک نے چھین لی.... کمبخت آپس ہی میں لڑ پڑے — ایک خونی منظر کھنچ گیا . ایک دوسرے کو چیر چیر کر پھینکنے لگے . ایک دوسرے کا خون پینے بیٹھ گئے، نہ اپنا نہ پرایا — آخر درندے ٹھہرے..... میلوں تک سرسبز میدانوں میں خون کی ندیاں بہہ اٹھیں..... عیار شکاری اپنا کام کر چکے تھے — ہنستے ہوئے چلے گئے .

درندے اب بھی لڑ رہے تھے..... یہاں تک کہ وہ لڑتے لڑتے نڈھال ہو کر گر پڑے...... اور اب جو دیکھا تو — سوراجیہ کی لاش سڑ چکی تھی . مگر اب اُن پر اِس آپس کی جنگ میں

इस क़दर कमजोरी छा गई थी कि लड़ना तो दूर वह जोर से चीख कर रो भी न सकते थे—और साल पर साल जनम लिये जा रहे थे. चालाक शिकारी·······दूर दूर तक सुरंगे भी बिछा गए थे जिससे आज यहां और कल वहां की जमीनें फटती रहें.

नोट—यह मजमून हमको मार्च सन् '४६ के आख़ीर में मिला था. अफ़सोस कि हम इसे जल्दी जगह न दे सके—एडिटर

اِس قدر کمزوری چھا گئی تھی کہ لڑنا تو دُور وہ زور سے چیخ کر رو بھی نہ سکتے تھے — اور سال پر سال جنم لئے جا رہے تھے. چالاک شکاری..... دُور دُور تک سُرنگیں بھی بچھا گئے تھے جس سے آج یہاں اور کل وہاں کی زمینیں پھٹتی رہیں.

نوٹ — یہ مضمون ہم کو مارچ ۴۶ء کے آخر میں ملا تھا. افسوس کہ ہم اِسے جلدی جگہ نہ دے سکے

— اڈیٹر

ज़बान के बारे में कुछ बातें

प्यारे पंडित जी !

मैंने न आप को 'श्री' लिखा और न मोहतरम. पिछले साल हलीम मुसलिम कालेज कानपुर में आप की तक़रीर सुनी थी और आप से मिला भी था. आप की सचाई ने मुझपर बड़ा असर किया. मैं 'नया हिन्द' पढ़ता रहता हूँ. सोच रहा हूँ कि ज़बान के बारे में कुछ मैं भी लिखूं.

ज़बान का मसला हमारे देस का बहुत अहम मसला है हमारी कुछ सियासी अंजमनों ने इसे सियासी चीज़ बना दिया हालांकि ज़बान का ताल्लुक़ तो कलचर से है. आज का हिन्दुस्तानी, हिन्दी, उर्दू और हिन्दुस्तानी के दो-राहे पर खड़ा है और समझ में नहीं आता कि वह किधर जाय.

उर्दू के कुछ लिखने वाले अरबी और फ़ारसी के इतने लफ़्ज़ बढ़ा देते हैं कि उनकी लिखी हुई चीज़ें उर्दू नहीं रहतीं. और अगर आप मुझे माफ़ करें तो मैं यह कहूँ कि हिन्दी वाले तो इस मैदान में बहुत बढ़ गए हैं. अगर मौजूदा उर्दू के पांच फ़ी सदी लफ़्ज़ आम आदमियों की समझ में न आयंगे, तो हिन्दी के पचास फ़ी सदी लफ़्ज़ सुनने वाले न समझ सकेंगे.

हिन्दी और उर्दू के झगड़े को मिटाने के लिये हिन्दुस्तानी [illegible] हिन्दुस्तानी का नारा लगाने वालों में सब से पहले

زبان کے بارے میں کچھ باتیں

پیارے پنڈت جی!

میں نے نہ آپ کو 'شری' لکھا اور نہ محترم. پچھلے سال حلیم مسلم کالج کان پور میں آپ کی تقریر سُنی تھی اور آپ سے ملا بھی تھا. آپ کی سچّائی نے مجھ پر بڑا اثر کیا. میں 'نیا ہند' پڑھتا رہتا ہوں. سوچ رہا ہوں کہ زبان کے بارے میں کچھ میں بھی لکھوں.

زبان کا مسئلہ ہمارے دیس کا بہت اہم مسئلہ ہے ہماری کچھ سیاسی انجمنوں نے اسے سیاسی چیز بنا دیا حالانکہ زبان کا تعلق تو کلچر سے ہے. آج کا ہندستانی، ہندی، اُردو اور ہندستانی کے دو راہے پر کھڑا ہے اور سمجھ میں نہیں آتا کہ وہ کدھر جائے.

اُردو کے کچھ لکھنے والے عربی اور فارسی کے اتنے لفظ بڑھا دیتے ہیں کہ اُن کی لکھی ہوئی چیزیں اُردو نہیں رہتیں. اور اگر آپ مجھے معاف کریں تو میں یہ کہوں کہ ہندی والے تو اس میدان میں بہت بڑھ گئے ہیں. اگر موجودہ اُردو کے پانچ فی صدی لفظ عام آدمیوں کی سمجھ میں نہ آئیں گے، تو ہندی کے پچاس فی صدی لفظ سُننے والے نہ سمجھ سکیں گے.

ہندی اور اُردو کے جھگڑے کو مٹانے کے لئے ہندستانی پیش کی گئی. ہندستانی کا نعرہ لگانے والوں میں سب سے پہلے

गांधीजी थे. मगर बहुत दिनों तक यह लोग हिन्दुस्तानी का कोई नमूना न दिखा सके. आख़िर उर्दू में 'हरिजन सेवक' छापा गया. उसे देख कर पूरे मुल्क के हर ईमानदार आदमी को दुख हुआ. उसमें तो ऐसी ज़बान लिखी गई जिसे कम से कम हिन्दुस्तान में शायद कोई आलिम आदमी नहीं समझ सकता. चाहे आप हिमालय से रास कुमारी तक चले जांय "सम्पादक" और "विषय-सूची" जैसे लफ़्ज़ों को ज़बरदस्ती ठूँसने की कोशिश की गई. इसीलिये हिन्दुस्तानी बड़ा ख़तरनाक लफ़्ज़ बन गया. फिर आल इन्डिया रेडियो ने हिन्दुस्तानी की आड़ लेकर हिन्दी का प्रचार शुरू कर दिया.

इन बातों से उर्दू से मोहब्बत करने वाले चौंक गये. मगर जब 'नया हिन्द' हमारी आंखों के सामने आया तो हमें एक ऐसी ज़बान मिली जो कठिन उर्दू और हिन्दी के बीच बीच थी. यह ज़बान ऐसी है कि कोई इसकी अच्छाई से इनकार नहीं कर सकता. चुनांचे अंजुमन तरक़्क़ी उर्दू के सेक्रेटरी मौलवी अब्दुलहक़ आपकी कलचर सोसाइटी के नायब सदर हैं.

पंडित जी !

लिखावट और लिखने के ढंग की बहस को छोड़िये लेकिन सच पूछिये तो असल में 'उर्दू' वही ज़बान है जो आप पेश करते हैं. हमें उर्दू से इस लिये मोहब्बत है कि वह हमारी मोहब्बत और मेल जोल की यादगार है.

जो ज़बान आप 'नया हिन्द' में लिखते हैं या जिस ज़बान में इस परचे में मज़मून छपते हैं अगर उसे हमारे भाई मान लें तो

گاندھی جی تھے۔ مگر بہت دنوں تک یہ لوگ ہندستانی کا کوئی نمونہ نہ دکھا سکے۔ آخر اُردو میں 'ہریجن سیوک' چھاپا گیا۔ اُسے دیکھ کر پورے ملک کے ہر ایماندار آدمی کو دُکھ ہوا۔ اُس میں تو ایسی زبان لکھی گئی جسے کم سے کم ہندستان میں شاید کوئی عالم آدمی نہیں سمجھ سکتا۔ چاہے آپ ہمالیہ سے راس کماری تک چلے جائیں۔ "سمپادک" اور "وشے سُوچی" جیسے لفظوں کو زبردستی ٹھونسنے کی کوشش کی گئی۔ اس لئے ہندستانی بڑا خطرناک لفظ بن گیا۔ پھر آل انڈیا ریڈیو نے ہندستانی کی آڑ لے کر ہندی کا پرچار شروع کر دیا۔

اِن باتوں سے اُردو سے محبت کرنے والے چونک گئے۔ مگر جب 'نیا ہند' ہماری آنکھوں کے سامنے آیا تو ہمیں ایک ایسی زبان ملی جو کٹھن اُردو اور ہندی کے بیچ بیچ تھی۔ یہ زبان ایسی ہے کہ کوئی اِس کی اچھائی سے انکار نہیں کر سکتا۔ چنانچہ انجمن ترقی اُردو کے سکریٹری مولوی عبدالحق آپ کی کلچر سوسائٹی کے نائب صدر ہیں۔

پنڈت جی !

لکھاوٹ اور لکھنے کے ڈھنگ کی بحث کو چھوڑیئے لیکن سچ پوچھئے تو اصل میں "اردو" وہی زبان ہے جو آپ پیش کرتے ہیں۔ ہمیں اُردو سے اِس لئے محبت ہے کہ وہ ہماری محبت اور میل جول کی یادگار ہے۔

جو زبان آپ 'نیا ہند' میں لکھتے ہیں یا جس زبان میں اِس پرچے میں مضمون چھپتے ہیں اگر اُسے ہمارے بھائی مان لیں تو

हमारी लड़ाई खतम हो जाय. हम तो पूरे हिन्दुस्तान के लिये एक ज़बान चाहते हैं और वह उर्दू है. ख्वाह (चाहे) कोई उसे हिन्दुस्तानी कहे हमें "नाम" से मतलब नहीं है.

उर्दू में लफ़्ज़ तो अरबी फ़ारसी के हैं लेकिन फ़ेल (verbs) और जोड़ने वाले लफ़्ज़ हिन्दी के. इसलिये यह नहीं कहा जा सकता कि उर्दू ग़ैर मुल्की ज़बान है—मैंने इस मज़मून में जो कुछ लिखा है यही वह ज़बान है जो पूरे मुल्क की हो सकती है. अगर किसी को उर्दू के नाम से जलन है तो इसे हिन्दुस्तानी कहले.

पिछले महीने में आपने ख्वाजा ग़ुलामुस्सैयदैन के मज़मून में कुछ लफ़्ज़ कमानों (ब्रैकेट) में बढ़ा दिये थे. उनमें से कुछ तो बहुत ख़ूबसूरत थे और कुछ भारी थे. ज़रूरत सिर्फ़ इस बात की है कि लिखते वक़्त हम लोग यह ख्याल रखें कि हमारी लिखी हुई चीज़ को सब समझ लें. मैंने इस मज़मून में हर जगह इस बात का ध्यान रखा है. जैसे ख़लूस की जगह सचाई, सक़ाफ़त की जगह कलचर, पर्दा की जगह आड़ और रवाबित की जगह जोड़ने वाले अलफ़ाज़, वग़ैरा.

अगर हम ढंग के साथ उर्दू और हिन्दी के लफ़्ज़ों को इस्तेमाल करें तो हमारी लिखाई में ढंग की ख़ूबसूरती पैदा हो सकती है.

हमें यह भी नहीं भूलना चाहिये कि इस्तेमाल ही लफ़्ज़ को ख़ूबसूरत बनाता है. कोई लफ़्ज़ न तो अच्छा होता है और न बुरा.

उर्दू में 'शबनम' को 'ओस' से ज़्यादा अच्छा समझा जाता है

ہماری لڑائی ختم ہوجائے. ہم تو پورے ہندستان کے لئے ایک زبان چاہتے ہیں اور وہ اُردو ہے. خواہ (چاہے) کوئی اُسے ہندستانی کہے ہمیں "نام" سے مطلب نہیں ہے.

اُردو میں لفظ تو عربی فارسی کے ہیں لیکن فعلیہ (Verbs) اور جوڑنے والے لفظ ہندی کے. اس لئے یہ نہیں کہا جاسکتا کہ اُردو غیر ملکی زبان ہے — میں نے اس مضمون میں جو کچھ لکھا ہے یہی وہ زبان ہے جو پورے ملک کی ہوسکتی ہے. اگر کسی کو اُردو کے نام سے جلن ہے تو اِسے ہندستانی کہہ لے.

پچھلے مہینے میں آپ نے خواجہ غلام السیدین کے مضمون میں کچھ لفظ کمانوں (بریکٹ) میں بڑھادئے تھے. اُن میں سے کچھ تو بہت خوبصورت تھے اور کچھ بھاری تھے. ضرورت صرف اس بات کی ہے کہ لکھتے وقت ہم لوگ یہ خیال رکھیں کہ ہماری لکھی ہوئی چیز کو سب سمجھ لیں. میں نے اس مضمون میں ہر جگہ اِس بات کا دھیان رکھا ہے. جیسے خلوص کی جگہ سچائی، ثقافت کی جگہ کلچر، پردہ کی جگہ آڑ اور روابط کی جگہ جوڑنے والے الفاظ، وغیرہ.

اگر ہم ڈھنگ کے ساتھ اُردو اور ہندی کے لفظوں کو استعمال کریں تو ہماری لکھائی میں ڈھنگ کی خوبصورتی پیدا ہوسکتی ہے.

ہمیں یہ بھی نہیں بھولنا چاہئے کہ استعمال ہی لفظ کو خوبصورت بناتا ہے. کوئی لفظ نہ تو اچھا ہوتا ہے اور نہ بُرا.

اُردو میں 'شبنم' کو 'اوس' سے زیادہ اچھا سمجھا جاتا ہے مگر اُردو کے بڑے شاعر میر انیس کہتے ہیں.

खा खा के ओस और भी सब्ज़ा हरा हुआ

अगर यहां ओस की जगह शबनम आए तो मिसरे की सारी सुन्दरता खतम हो जाय.

उर्दू के कुछ शेर सुनिये यही ज़बान एक दिन पूरे हिन्दुस्तान की ज़बान बनेगी.

ओछा सा इक प्यार है दुनिया—रेत की सी दीवार है दुनिया

—मौलाना हाली

शायद वह फिर आ जायें. ,   कहते हैं धरती है गोल
माहिर उनका क्या कहना. ,   अच्छी सूरत मीठे बोल

माहिर अल क़ादरी

कुछ लोग अंधेपन में यह भूल जाते हैं कि हिन्दी के बहुत से लफ़्ज़ बहुत मीठे हैं जैसे धरती, आकाश, प्रेम और सागर. फ़लक से मुसीबत का ख़याल आता है मगर आकाश से तारों का. सागर में रस है और 'बहर' में बोझलपन. ज़मीन में कोई बात नहीं मगर धरती में बड़ी ख़ास सी बात है.

और दूसरी तरफ़ तो यह हाल है कि "ख़ुदा हाफ़िज़" "बंदगी" "आदाब" और "तस्लीमात" पर नाक भौं चढ़ाते हैं.

'नया हिन्द' ने हिन्दुस्तानी के पाक साफ़ नमूने दिये लेकिन कहीं कहीं भारीपन पैदा हो जाता है. मुझे उम्मीद है कि कुछ दिनों में इस ज़बान में रवानी पैदा होने के बाद यह चीज़ ख़तम हो जायगी.

मैं हिन्दुस्तानी का एक नमूना पेश करके अपनी इन बातों को खत्म कर दूँगा

کھا کھا کے اوس اور بھی سبزہ ہرا ہوا

اگر یہاں اوس کی جگہ شبنم آئے تو مصرعے کی ساری سندرتا ختم ہو جائے.

اُردو کے کچھ شعر سُنیئے یہی زبان ایک دن پورے ہندستان کی زبان بنے گی.

اوچھا سا اِک پیار ہے دُنیا — ریت کی سی دیوار ہے دُنیا

— مولانا حالی

شاید وہ پھر آ جائیں. ،   کہتے ہیں دھرتی ہے گول
ماہر اُن کا کیا کہنا. ،   اچھی صورت میٹھے بول

ماہر القادری

کچھ لوگ اندھے پن میں یہ بھول جاتے ہیں کہ ہندی کے بہت سے لفظ بہت میٹھے ہیں جیسے دھرتی، آکاش، پریم اور ساگر. فلک سے مصیبت کا خیال آتا ہے مگر آکاش سے تاروں کا. ساگر میں رس ہے اور 'بحر' میں بوجھل پن. زمین میں کوئی بات نہیں مگر دھرتی میں بڑی خاص سی بات ہے.

اور دوسری طرف تو یہ حال ہے کہ "خدا حافظ" "بندگی" "آداب" اور "تسلیمات" پر ناک بھوں چڑھاتے ہیں.

'نیا ہند' نے ہندستانی کے پاک صاف نمونے دیئے لیکن کہیں کہیں بھاری پن پیدا ہو جاتا ہے. مجھے اُمید ہے کہ کچھ دنوں میں اِس زبان میں روانی پیدا ہونے کے بعد یہ چیز ختم ہو جائے گی.

میں ہندستانی کا ایک نمونہ پیش کر کے اپنی اِن باتوں کو ختم کر دوں گا.

नया हिन्द   ज़बान के बारं में कुछ बातें   नवम्बर सन् '४७

उर्दू के एक अफ़साने से यह टुकड़ा लिखता हूँ—

"एक मरीज़ बाहर स आया हुआ मालूम होता था. लिबास से तमव्वुल नुमायां था. उसका चेहरा ज़र्द हो रहा था, और निगाहों स करब नुमायां था. दस्तरास्त एक पट्टा से गले में लटका हुआ था.

काफ़ी ज़ब्त के बावजूद उसके मुंह से आह निकल ही आता था.

अगर इन जुमलों का इस तरह कर लिया जाय तो हिन्दुस्तान का आम ज़बान में बदल जायंग.

"एक बामार बाहर से आया हुआ मालूम होता था. कपड़ों से अमीर लगता था. उसका चेहरा पीला हो रहा था और आंखों से तकलीफ़ और दुख टपक रहा था. दायां हाथ एक पट्टी से गले में लटका हुआ था. काफ़ी रोकने के बावजूद उसके मुंह से आह निकल ही जाती थी". (हिं०)

हो सकता है कि आप मेरे हम ख़याल हर बात में न हों. मगर मैंने सचाई से अपने ख़यालों को इस ख़त में लिख दिया.

आपका भाई,

जाफ़र हुसैन खां कानपुर

نیا ہند   زبان کے بارے میں کچھ باتیں   نومبر ۴۷ء

اردو کے ایک افسانے سے یہ ٹکڑا لکھتا ہوں—

"ایک مریض باہر سے آیا ہوا معلوم ہوتا تھا. لباس سے تموّل نمایاں تھا. اُس کا چہرہ زرد ہو رہا تھا، اور نگاہوں سے کرب نمایاں تھا. دستِ راست ایک پٹّی سے گلے میں لٹکا ہوا تھا.

کافی ضبط کے باوجود اُس کے مُنہ سے آہ نکل ہی جاتی تھی.

اگر اِن جُملوں کو اِس طرح کر لیا جائے تو ہندستان کی عام زبان میں بدل جائیں گے.

"ایک بیمار باہر سے آیا ہوا معلوم ہوتا تھا. کپڑوں سے امیر لگتا تھا. اُس کا چہرہ پیلا ہو رہا تھا اور آنکھوں سے تکلیف اور دُکھ ٹپک رہا تھا. دایاں ہاتھ ایک پٹّی سے گلے میں لٹکا ہوا تھا. کافی روکنے کے باوجود اُس کے مُنہ سے آہ نکل ہی جاتی تھی." (ہندی)

ہو سکتا ہے کہ آپ میرے ہم خیال ہر بات میں نہ ہوں. مگر میں نے سچّائی سے اپنے خیالوں کو اِس خط میں لکھ دیا.

آپ کا بھائی

جعفر حسین خاں کان پور

नोआखाली

(श्री केदारनाथ मुज़फ्फ़रनगर)

नोआखाली के दंगे को एक साल से ऊपर हो चुका. उसकी खबरें सारे मुल्क के अखबारों में छप चुकीं और मुल्क के बड़े बड़े लीडर उस पर अपने बयान दे चुके. इन बयानों में एक दूसरे से काफ़ी फ़रक़ है. आम तौर पर हिन्दुओं को शिकायत है कि बंगाल गवरमेन्ट के बयानों ने मुसलमानों की ज्यादतियों और हिन्दुओं के ऊपर जुल्मों को कम करके दिखाया है. मुसलमानों को शिकायत है कि हिन्दू बयान और खास कर आचार्य कृपलानी और बाबू शतीशचन्द्र दास के बयान में नोआखाली के अफ़सोसनाक घटनाओं को बहुत बढ़ा कर दिखाया गया है. इसमें शक नहीं मुल्क के हिन्दू और मुसलमानों दोनों के दिलों और दिमाग़ों पर इन दोनों तरफ़ के बयानों का गहरा असर पड़ा है. एक दरजे तक मुल्क में जो कुछ उसके बाद हुआ वह नोआखाली का ही नतीजा कहा जा सकता है. मुझे भी मारवाड़ी रिलीफ़ सोसाइटी कलकत्ता की तरफ़ से दो महीने नोआखाली और आस पास के इलाक़े में रहने और सेवा करने का मौक़ा मिला. इस अरसे में नोआखाली और त्रिपुरा दोनों जिलों के उन सब स्थानों युनियनों और गावों में मैं गया जिसमें फ़साद हुआ था और हर तबक़ा और मज़हब के लोगों के बयान लिये. मैंने जो कुछ देखा और जिस नतीजे पर मैं पहुंचा वह यह है.

نواکھالی

(شری کیدار ناتھ مظفرنگر)

نواکھالی کے دنگے کو ایک سال سے اوپر ہوچکا. اُس کی خبریں سارے ملک کے اخباروں میں چھپ چکیں اور ملک کے بڑے بڑے لیڈر اُس پر اپنے بیان دے چکے. ان بیانوں میں ایک دوسرے سے کافی فرق ہے. عام طور پر ہندوؤں کو شکایت ہے کہ بنگال گورنمنٹ کے بیانوں نے مسلمانوں کی زیادتیاں اور ہندوؤں کے اوپر ظلموں کو کم کرکے دکھایا ہے. مسلمانوں کو شکایت ہے کہ ہندو بیان اور خاص کر آچاریہ کرپلانی اور بابو ستیش چندر داس کے بیان میں نواکھالی کے افسوسناک گھٹناؤں کو بہت بڑھاکر دکھایا گیا ہے. اس میں شک نہیں ملک کے ہندو اور مسلمان دونوں کے دلوں اور دماغوں پر ان دونوں طرف کے بیانوں کا گہرا اثر پڑا ہے. ایک درجے تک ملک میں جو کچھ اُس کے بعد ہوا وہ نواکھالی کا ہی نتیجہ کہا جاسکتا ہے. مجھے بھی مارواڑی ریلیف سوسائٹی کلکتہ کی طرف سے دو مہینے نواکھالی اور آس پاس کے علاقے میں رہنے اور سیوا کرنے کا موقع ملا. اِس عرصے میں نواکھالی اور تریپورا دونوں ضلعوں کے اُن سب ستھانوں یونینوں اور گاؤوں میں مَیں گیا جس میں فساد ہوا تھا اور ہر طبقہ اور مذہب کے لوگوں کے بیان لئے. میں نے جو کچھ دیکھا اور جس نتیجے پر میں پہنچا وہ یہ ہے.

नोआखाली पूर्वी बंगाल के ठेट दक्खिन का एक ज़िला है.
गंगा और ब्रह्मपुत्र दोनों के मेल से पद्मा नदी बनती है. वही
आगे चल कर मेघना कहलाती है. मेघना के पूर्वी किनारे पर
ठीक समुद्र से मिला हुआ यह ज़िला पूरब से पच्छिम तक फैला
हुआ है. सेयालदा स्टेशन से बंगाल आसाम रेलवे से होकर
ग्वालंदो जाना होता है. ग्वालंदो कलकत्ते से एक सौ सत्तर मील
है. वहाँ से चाँदपुर घाट तक अस्सी मील स्टीमर मे जाना होता
है चाँदपुर नोआखाली जिले की एक तहसील है. चाँदपुर से
सोनाई मोरी सैंतालिस मील का सफ़र है. फ़िसाद की ख़ास जगह
चाँदपुर तहसील का रामगंज थाना था. रामगंज पहुँचने के लिये
सोनाई मोरी स्टेशन से क़रीब चालीस मील मोटर का रास्ता है.
जो लोग मोटर से नहीं जा सकते उनके लिये सोनाई मोरी से
रामगंज तक किशती या पैदल का रास्ता है. चाँदपुर से रामगंज
सीधे किशती से भी जा सकते हैं. इस तरह कलकत्ते से रामगंज
याने फ़िसाद का असली मरक़ज़ साढ़े तीन सौ मील है. दूसरा
रास्ता यह है कि कलकत्ते से हवाई जहाज़ में फ़ेनी हवाई अड्डा जाकर
वहाँ से कुछ दूर रेल और इसके बाद मोटर या किशती से रामगंज
पहुँच सकते हैं.

नोआखाली से उत्तर में त्रिपुरा जिला है. दक्खिन में समुद्र
है. यह दोनों जिले चटगांव कमिशनरी में शामिल हैं. फ़ेनी
जहाँ हवाई अड्डा है नोआखाली की एक तहसील है. कहा
[illegible] फ़ेनी में हो रही थी लेकिन

نواکھالی پوربی بنگال کے ٹھیٹ دکھن کا ایک ضلع ہے۔
گنگا اور برہم پتر دونوں کے میل سے پدما ندی بنتی ہے۔
وہی آگے چل کر میگھنا کہلاتی ہے۔ میگھنا کے پوربی کنارے پر
ٹھیک سمندر سے ملا ہوا یہ ضلع پورب سے پچھم تک پھیلا ہوا
ہے۔ سیالدہ اسٹیشن سے بنگال آسام ریلوے سے ہوکر گوالندو
جانا ہوتا ہے۔ گوالندو کلکتے سے ایک سو ستر میل ہے۔ وہاں سے
چاندپور گھاٹ تک اسی میل اسٹیمر میں جانا ہوتا ہے چاندپور نواکھالی
ضلعے کی ایک تحصیل ہے۔ چاندپور سے سونائی موری سینتالیس میل
کا سفر ہے۔ فساد کی خاص جگہ چاندپور تحصیل کا رام گنج تھانہ تھا۔
رام گنج پہنچنے کے لئے سونائی موری اسٹیشن سے قریب چالیس
میل موٹر کا راستہ ہے۔ جو لوگ موٹر سے نہیں جاسکتے ان کے
لئے سونائی موری سے رام گنج تک کشتی یا پیدل کا راستہ ہے۔
چاندپور سے رام گنج سیدھے کشتی سے بھی جاسکتے ہیں۔ اس
طرح کلکتے سے رام گنج یعنے فساد کا اصلی مرکز ساڑھے
تین سو میل ہے۔ دوسرا راستہ یہ ہے کہ کلکتے سے ہوائی جہاز میں
فینی ہوائی اڈا جاکر وہاں سے کچھ دور ریل اور اس کے بعد
موٹر یا کشتی سے رام گنج پہنچ سکتے ہیں۔

نواکھالی سے اتر میں تریپورا ضلع ہے۔ دکھن میں سمندر ہے۔ یہ دونوں
ضلعے چٹ گاؤں کمشنری میں شامل ہیں۔ فینی جہاں ہوائی اڈا ہے نواکھالی
کی ایک تحصیل ہے۔ کہا جاتا ہے کہ جھگڑے کی تیاری پہلے فینی میں
ہو رہی تھی لیکن بعد میں اتفاق سے رام گنج میں فساد شروع ہو گیا۔

रामगंज थाने के अन्दर पंन्द्रह युनियन हैं. आबादी एक लाख अट्ठासी हजार है. जिसमें एक लाख सैंतीस हजार मुसलमान और एकतालिस हजार हिन्दू हैं. फैलाव एक सौ सत्तरह मील मुरब्बा है.

रामगंज थाने की युनियन नम्बर आठ में दो बड़े घराने थे. इनमें एक मुसलमान घराना था जिसके सबसे बड़े आदमी शाह सैयद गुलामसरवर चिशती हैं. यह खानदान शाहपुर गाँव में रहता है. दूसरा घराना हिन्दू है. जिसके सरदार रायसाहेब राजेन्द्रराय चौधरी थे. यह खानदान करपरा गाँव में रहता है. दोनों गाँव में क़रीब एक मील का फ़ासला है. यह दोनों घराने साहूकारा यानी लेन देन का पेशा करते हैं. और पाट (सन्) और छालिया नारियल वग़ैरा का व्योपार करते हैं और ज़िमींदार भी हैं. इन दोनों घरानों में व्योपार की वजह से बरसों से एक दूसरे से लागडाट और दुशमनी चली आती थी. नतीजा यह था कि आस पास के तमाम इलाक़े में कुछ लोग एक घराने के तरफ़दार थे और कुछ दूसरे के, क़ुदरती तौर पर यह लागडाट अकसर हिन्दू-मुसलिम झगड़े की शकल अख़तियार कर लेती थी. दोनों घरानों के असली आदमी कभी लड़ते नहीं देखे गए. लेकिन जब कभी एक घराने के दस बीस सिपाही या दूसरे हम दर्द दूसरे घराने के नौकरों या आढ़तियों से मिलते थे तो अकसर गाली गलौज या मार पीट तक हो जाती थी. कलकत्ते के हिन्दू-मुसलिम दंगे के बाद से इन दोनों घरानों की लाग डाट ने और भी गहरा रूप अख़तियार कर लिया और दोनों में मनमुटाव

رام گنج تھانے کے اندر پندرہ یونین ہیں۔ آبادی ایک لاکھ اٹھاسی ہزار ہے۔ جس میں ایک لاکھ سینتیس ہزار مسلمان اور اکتالیس ہزار ہندو ہیں۔ پھیلاؤ ایک سو سترہ میل مربع ہے۔

رام گنج تھانے کی یونین نمبر آٹھ میں دو بڑے گھرانے تھے۔ ان میں ایک مسلمان گھرانا تھا جس کے سب سے بڑے آدمی شاہ سید غلام سرور چشتی ہیں۔ یہ خاندان شاہ پور گاؤں میں رہتا ہے۔ دوسرا گھرانا ہندو ہے۔ جس کے سردار رائے صاحب راجیندر رائے چودھری تھے۔ یہ خاندان کرپرا گاؤں میں رہتا ہے۔ دونوں گاؤں میں قریب ایک میل کا فاصلہ ہے۔ یہ دونوں گھرانے ساہوکارا یعنی لین دین کا پیشہ کرتے ہیں۔ اور پاٹ (سن) اور چھالیا ناریل وغیرہ کا بیوپار کرتے ہیں اور زمیندار بھی ہیں۔ ان دونوں گھرانوں میں بیوپار کی وجہ سے برسوں سے ایک دوسرے سے لاگ ڈانٹ اور دشمنی چلی آتی تھی۔ نتیجہ یہ تھا کہ آس پاس کے تمام علاقے میں کچھ لوگ ایک گھرانے کے طرف دار تھے اور کچھ دوسرے کے، قدرتی طور پر یہ لاگ ڈانٹ اکثر ہندو مسلم جھگڑے کی شکل اختیار کر لیتی تھی۔ دونوں گھرانوں کے اصلی آدمی کبھی لڑتے نہیں دیکھے گئے۔ لیکن جب کبھی ایک گھرانے کے دس بیس سپاہی یا دوسرے ہمدرد دوسرے گھرانے کے نوکروں یا آڑھتیوں سے ملتے تھے تو اکثر گالی گلوچ یا مار پیٹ تک ہو جاتی تھی۔ کلکتے کے ہندو مسلم دنگے کے بعد سے ان دونوں گھرانوں کی لاگ ڈانٹ نے

[illegible]

बढ़ता जा रहा था. इसका असर आस पास के तमाम इलाक़े पर पड़ रहा था.

काली पूजा के दिनों में रायसाहेब राजेन्द्रराय चौधरी के यहाँ एक साधू कहीं बाहर से आकर ठहरा. कहा जाता है कि वहाँ कोई आदमी उस साधू को पहले से नहीं जानता था. किसी मुसलमान का एक छोटा लड़का काली पूजा देखने आ निकला. उस साधू ने उस लड़के से काली देवी के सामने सर झुकाने को कहा. लड़के ने इनकार किया. साधू ने जबरदस्ती उसे पकड़ कर देवी के सामने सर झुकवाया. लड़का रोता हुआ अपने घर गया. कुछ मुसलमान शिकायत करने के लिये रायसाहेब राजेन्द्रराय चौधरी के पास आये. रायसाहेब के आदमियों से उनका झगड़ा हो गया. उसी झगड़े में कहा जाता है उस साधू ने दो मुसलमानों को मारा जिनमें से एक मर गया. आस पास के मुसलमान शाह गुलामसरवर चिशती के पास शिकायत लेकर गए. शाह साहब ने दस अकतूबर सन् ४६ को अपने यहाँ शाहपुर गाँव में मुसलमानों को जमा किया. बहुत जोशीली तक़रीरें हुईं. आम हिन्दुओं के ख़िलाफ़ लोगों को भड़काया गया और कहा जाता है कि यह ऐलान किया गया कि जो कोई राय साहेब राजेन्द्र राय चौधरी का सर काट कर लायेगा उसे शाह साहब की तरफ़ से इनाम मिलेगा. उसी दिन शाम को कुछ मुससमानों ने शाहपुर के बाज़ार में हिन्दू दुकानों को लूटा और आग लगा दी. पर उस दिन शाहपुर में किसी की जान नहीं गई. दूसरे दिन यह लोग जोश में भरकर करपरा गाँव की तरफ़ रवाना हुये और राय

بڑھتا جا رہا تھا. اِس کا اثر آس پاس کے تمام علاقے پر پڑ رہا تھا.

کالی پوجا کے دنوں میں رائے صاحب راجیندر رائے چودھری کے یہاں ایک سادھو کہیں باہر سے آکر ٹھہرا. کہا جاتا ہی کہ وہاں کوئی آدمی اُس سادھو کو پہلے سے نہیں جانتا تھا. کسی مسلمان کا ایک چھوٹا لڑکا کالی پوجا دیکھنے آ نکلا. اُس سادھو نے اُس لڑکے سے کالی دیوی کے سامنے سر جھکانے کو کہا. لڑکے نے انکار کیا. سادھو نے زبردستی اُسے پکڑ کر دیوی کے سامنے سر جھکوایا. لڑکا روتا ہوا اپنے گھر گیا. کچھ مسلمان شکایت کرنے کے لئے رائے صاحب راجیندر رائے چودھری کے پاس آئے. رائے صاحب کے آدمیوں سے اُن کا جھگڑا ہوگیا. اُسی جھگڑے میں کہا جاتا ہی اُس سادھو نے دو مسلمانوں کو مارا جن میں سے ایک مرگیا. آس پاس کے مسلمان شاہ غلام سرور چشتی کے پاس شکایت لے کر گئے. شاہ صاحب نے دس اکتوبر سنہ ۴۶ کو اپنے یہاں شاہ پور گاؤں میں مسلمانوں کو جمع کیا. بہت جوشیلی تقریریں ہوئیں. عام ہندوؤں کے خلاف لوگوں کو بھڑکایا گیا اور کہا جاتا ہی کہ یہ اعلان کیا گیا کہ جو کوئی رائے صاحب راجیندر رائے چودھری کا سر کاٹ کر لائے گا اُسے شاہ صاحب کی طرف سے انعام ملے گا. اُسی دن شام کو کچھ مسلمانوں نے شاہ پور کے بازار میں ہندو دکانوں کو لوٹا اور آگ لگا دی پر اُس دن شاہ پور میں کسی کی جان نہیں گئی. دوسرے دن یہ لوگ جوش میں بھر کر کرپرا گاؤں کی طرف روانہ ہوئے اور رائے

साहेब राजेन्द्रनाथ के मकान पर धावा बोल दिया. राय साहेब को क़त्ल कर दिया गया. मकान को आग लगा दी गई और गाँव लूट लिया गया. उस दिन उस गाँव में तेईस आदमी मारे गए. जिनमें ज्यादातर आदमी राजेन्द्र बाबू के घर के थे. गाँव के कुछ और मालदार तिजारत पेशा लेन देन करने वालों पर भी हमला हुआ. लेकिन उस दिन गाँव में आम हिन्दुओं को या ग़रीब आदमियों को नहीं मारा गया और न लूटा गया.

ऊपर आ चुका है कि शाहपुर और करपरा दोनों गाँव यूनियन नम्बर आठ में हैं. बलवे की आग इस यूनियन से बढ़ कर सारे रामगंज थाने में फैल गई. और वहाँ से नोआखाली के आस पास के थानों, फ़रीदगंज, रायपुर, लखनीपुर में उत्तर पच्छिम को होती हुई जिला त्रिपुरा के हाजीगंज और चाँदपुर थानों तक फैल गई. नोआखाली के दक्खिन की तरफ़ स्वानदीप (Swandip) थाने के एक छोटे से टापू में भी बलवे का असर हुआ. इन इलाक़ों के अलावा नोआखाली जिले में या त्रिपुरा जिले में और कहीं बलवे का असर नहीं हुआ.

वह साधू जिससे यह झगड़ा शुरू हुआ था, राजेन्द्र बाबू के मकान पर हमला होते ही वहाँ से भाग निकला. पुलिस की रिपोर्ट से मालूम होता है कि वह रामगंज और हाजीगंज होता हुआ कलकत्ता पहुँच गया. यह भी पता चला है कि कलकत्ते से उसने बलवे की इस तरह की खबरें अख़बारों में भेजीं जो निहायत बढ़ा कर बयान की हुई और ग़लत भी थीं. यह खबरें ज्यादातर

صاحب راجیندر ناتھ کے مکان پر دھاوا بول دیا۔ رائے صاحب کو قتل کر دیا گیا۔ مکان کو آگ لگا دی گئی اور گاؤں لوٹ لیا گیا۔ اُس دن اُس گاؤں میں تیئیس آدمی مارے گئے۔ جن میں زیادہ تر آدمی راجیندر بابو کے گھر کے تھے۔ گاؤں کے کچھ اور مال دار تجارت پیشہ لین دین کرنے والوں پر بھی حملہ ہوا۔ لیکن اُس دن گاؤں میں عام ہندوؤں کو یا غریب آدمیوں کو نہیں مارا گیا اور نہ لوٹا گیا۔

اوپر آ چکا ہے کہ شاہ پور اور کرپرا دونوں گاؤں یونین نمبر آٹھ میں ہیں۔ بلوے کی آگ اِس یونین سے بڑھ کر سارے رام گنج تھانے میں پھیل گئی۔ اور وہاں سے نواکھالی کے آس پاس کے تھانوں، فرید گنج، رائے پور، لکھمی پور میں اُتّر پچھم کو ہوتی ہوئی ضلع تریپورا کے حاجی گنج اور چاند پور تھانوں تک پھیل گئی۔ نواکھالی کے دکھن کی طرف سوان دیپ (Swandip) تھانے کے ایک چھوٹے سے ٹاپو میں بھی بلوے کا اثر ہوا۔ اِن علاقوں کے علاوہ نواکھالی ضلع میں یا تریپورا ضلع میں اور کہیں بلوے کا اثر نہیں ہوا۔

وہ سادھو جس سے یہ جھگڑا شروع ہوا تھا، راجیندر بابو کے مکان پر حملہ ہوتے ہی وہاں سے بھاگ نکلا۔ پولیس کی رپورٹ سے معلوم ہوتا ہے کہ وہ رام گنج اور حاجی گنج ہوتا ہوا کلکتہ پہنچ گیا۔ یہ بھی پتہ چلا ہے کہ کلکتے سے اُس نے بلوے کی اِس طرح کی خبریں اخباروں میں بھیجیں جو نہایت بڑھا کر بیان کی ہوئی اور غلط بھی تھیں۔ یہ خبریں زیادہ تر پہلے آنند بازار

اور امرت بازار اخباروں میں چھپیں۔

दंगे के दौरान में कुछ हिन्दू औरतें भी भगाई गईं. कुछ की मुसलमानों के साथ जबरदस्ती शादी कर दी गई और कुछ मरदों और औरतों को जबरदस्ती मुसलमान भी बना लिया गया. जहाँ तक मुझे दो महीने को तहक़ीक़ात से पता चल सका, दोनों ज़िलों में मिला कर मरने वालों की तादाद दो सौ है. औरतों के ख़िलाफ़ सङ्गीन जुर्मों की तादाद क़रीब बारह गिनाई जाती है. जिन लोगों को जबरदस्ती मुसलमान बनाया गया था वह क़रीब क़रीब सब फिर चन्द माह के अन्दर अपने मज़हब के अन्दर वापस आ गये. जो हिन्दू डर की वजह से अपने गांव छोड़ कर भाग गए थे वह भी धीरे धीरे सब वापस आ रहे हैं. फ़साद के दौरान में जगह जगह किसी किसी गांव में ऐसे मुसलमान भी निकले जिन्होंने अपने को ख़तरे में डाल कर अपने हम मज़हबों के पागल पन से अपने गांव के हिन्दुओं की हिफ़ाज़त की.

पूरबी बङ्गाल की ज़मीन सचमुच सोने की ज़मीन है. जगह जगह पानी भरा हुआ है. धरती बेहद उपजाऊ है. कुदरत ने पूरबी बङ्गाल पर अपनी बेशुमार दौलत बरसाई है. वहाँ के रहने वालों को थोड़ी ही सी मेहनत करके सुपारी और नारियल के बाग़ाचों से काफ़ी आमदनी हो जाती है जिस से वह अच्छी तरह गुज़र बसर कर सकते हैं. ज़मीन नीची है इसलिये पानी से भरी रहती है. बारिश बहुत होती है. एक गांव से दूसरे गांव किश्ती से जाना होता है. सड़कें या रास्ते बहुत कम हैं और जहां हैं वहां थोड़ी सी बारिश से बेकार हो जाते हैं. यह रास्ते इतने तंग हैं कि कभी भी दो बैलगाड़ी बराबर से नहीं निकल

دنگے کے دوران میں کچھ ہندو عورتیں بھی بھگائی گئیں. کچھ کی مسلمانوں کے ساتھ زبردستی شادی کردی گئی اور کچھ مردوں اور عورتوں کو زبردستی مسلمان بھی بنا لیا گیا. جہاں تک مجھے دو مہینے کی تحقیقات سے پتہ چل سکا، دونوں ضلعوں میں ملا کر مرنے والوں کی تعداد دو سو ہے. عورتوں کے خلاف سنگین جرموں کی تعداد قریب بارہ گنائی جاتی ہے. جن لوگوں کو زبردستی مسلمان بنایا گیا تھا وہ قریب قریب سب پھر چند ماہ کے اندر اپنے مذہب کے اندر واپس آگئے. جو ہندو ڈر کی وجہ سے اپنے گاؤں چھوڑکر بھاگ گئے تھے وہ بھی دھیرے دھیرے سب واپس آرہے ہیں. فساد کے دوران میں جگہ جگہ کسی کسی گاؤں میں ایسے مسلمان بھی نکلے جنھوں نے اپنے کو خطرے میں ڈال کر اپنے ہم مذہبوں کے پاگل پن سے اپنے گاؤں کے ہندوؤں کی حفاظت کی.

پوربی بنگال کی زمین سچ مچ سونے کی زمین ہے. جگہ جگہ پانی بھرا ہوا ہے. دھرتی بے حد اپجاؤ ہے. قدرت نے پوربی بنگال پر اپنی بے شمار دولت برسائی ہے. وہاں کے رہنے والوں کو تھوڑی ہی سی محنت کرکے سپاری اور ناریل کے باغیچوں سے کافی آمدنی ہوجاتی ہے جس سے وہ اچھی طرح گزر بسر کرسکتے ہیں. زمین نیچی ہے اس لئے پانی سے بھری رہتی ہے. بارش بہت ہوتی ہے. ایک گاؤں سے دوسرے گاؤں کشتی سے جانا ہوتا ہے. سڑکیں یا راستے بہت کم ہیں اور جہاں ہیں وہاں تھوڑی سی بارش سے بیکار ہوجاتے ہیں. یہ راستے اتنے تنگ ہیں کہ کبھی کبھی دو بیل گاڑی برابر سے نہیں نکل

सकतीं. बांसों और लकड़ी के तख्तों के पुल जगह जगह बने हुए हैं. यह पुल आम तौर से इतने कमज़ोर हैं कि उन पर जान हथेली पर लेकर चलना पड़ता है.हर वक़्त गिरने का डर रहता है. नदी नालों और नहरों के रास्तों से नाओं में आते जाते हैं. नदियाँ आम तौर पर बहुत डरावनी मालूम होती हैं. लेकिन पूर्वी बंगाल का हर बच्चा, मर्द व औरत सब तैरना जानते हैं. किशती खेने में भी यह लोग बहुत ही होशियार हैं. छोटी छोटी किश्तियों में यह लोग नारियल, सुपारी, सन वग़ैरः अपने यहां की पैदावार की चीज़ें लेकर बाज़ार में आते हैं और इन ही में खाने पीने की चीज़ें बाज़ार से ले जाते हैं. देसावरी माल बड़ी किशतियों में ले जाते हैं.

लिबास व रहन सहन में यहां के हिन्दू और मुसलमानों में बहुत कम फ़र्क़ नज़र आता है. दोनों एक ही नोआखाली की बँगला बोलते हैं. वहां की बङ्गला ज़बान में और कलकत्ते की बङ्गला ज़बान में बहुत फ़र्क़ है. हिन्दू और मुसलमान दोनों ही एक ही लिखावट लिखते हैं. दोनों की पोशाक आम तौर पर एक ही है. नौजवान मर्द रंग-बिरंग की लुंगियाँ बांधते हैं और कमीज़ पहनते हैं. कमीज़ के ऊपर आम तौर पर चादर ओढ़ लेते हैं. कभी कभी चादर कमर पर बँधी होती है. सब नंगे सर और नंगे पैर रहते हैं. सर पर सबके अँगरेज़ी बाल दिखाई देते हैं. दाढ़ी मूछों का आम तौर पर सफ़ाया नज़र आता है. यहाँ साँप बहुत होते हैं और रास्ते की खराबी की वजह से ही क़रीब क़रीब हर एक आदमी

سکتیں. بانسوں اور لکڑی کے تختوں کے پُل جگہ جگہ بنے ہوئے ہیں. یہ پُل عام طور سے اِتنے کمزور ہیں کہ اُن پر جان ہتھیلی پر لیکر چلنا پڑتا ہے. ہر وقت گرنے کا ڈر رہتا ہے. ندی نالوں اور نہروں کے راستوں سے ناؤں میں آتے جاتے ہیں. ندیاں عام طور پر بہت ڈراونی معلوم ہوتی ہیں. لیکن پوربی بنگال کا ہر بچّہ، مرد و عورت سب تیرنا جانتے ہیں. کشتی کھینے میں بھی یہ لوگ بہت ہی ہوشیار ہیں. چھوٹی چھوٹی کشتیوں میں یہ لوگ ناریل، سپاری، سن وغیرہ اپنے یہاں کی پیداوار کی چیزیں لیکر بازار میں آتے ہیں اور اِن ہی میں کھانے پینے کی چیزیں بازار سے لے جاتے ہیں. دیساوری مال بڑی کشتیوں میں لے جاتے ہیں.

لباس و رہن سہن میں یہاں کے ہندو اور مسلمانوں میں بہت کم فرق نظر آتا ہے. دونوں ایک ہی نواکھالی کی بنگلہ بولتے ہیں. وہاں کی بنگلہ زبان میں اور کلکتے کی بنگلہ زبان میں بہت فرق ہے. ہندو اور مسلمان دونوں ہی ایک ہی لکھاوٹ لکھتے ہیں. دونوں کی پوشاک عام طور پر ایک ہی ہے. نوجوان مرد رنگ برنگ کی لنگیاں باندھتے ہیں اور قمیض پہنتے ہیں. قمیض کے اوپر عام طور پر چادر اوڑھ لیتے ہیں. کبھی کبھی چادر کمر پر بندھی ہوتی ہے. سب ننگے سر اور ننگے پیر رہتے ہیں. سر پر سب کے انگریزی بال دکھائی دیتے ہیں. ڈاڑھی مونچھوں کا عام طور پر صفایا نظر آتا ہے. یہاں سانپ بہت ہوتے ہیں اور راستے کی خرابی کی وجہ سے ہی قریب قریب ہر ایک آدمی کے ہاتھ میں ٹارچ رہتی ہے جس کے پاس ٹارچ نہیں ہوتی وہ اکثر

दियासलाई का एक बक्स ही अपने पास रखता है. जहाँ कहीं रास्ता दिखाई न दिया या किसी खतरे से बचना होता है फ़ौरन दियासलाई जलाकर कुछ पत्तियों को या सूखी घास जला देते हैं जिससे रास्ता दिखाई दे जाता है. हिन्दू कोई कोई धोती भी बांधते हैं मगर आम तौर पर लुँगी यानी तहमत बांधते हैं. ऐसे ही कोई कोई मुसलमान भी पैजामा कुरता पहनते हैं और कोई कोई टोपी भी लगा लेते हैं. कोई कोई ज़्यादा उमर के मुसलमान या मज़हबी क़िस्म के लोग दाढ़ी भी रखते हैं. हिन्दू और मुसलमान दोनों मछली और चावल खाते हैं. दोनों के खाने और पकाने का तरीक़ा बिलकुल एक है. दोनों डाब यानी कच्चे नारियल का पानी पीते हैं. केले का इस्तेमाल भी दोनों खूब करते हैं. चाय का इस्तेमाल भी दोनों में बढ़ा हुआ है. गोश्त बहुत कम मिलता है और मँहगा होता है. बकरी का गोश्त कभी कभी हिन्दू मुसलमान दोनों खाते हैं. बड़ा गोश्त वहाँ मुशिकल से छटे छमास कहीं कहीं कोई मुसलमान इस्तेमाल करता है.

आम तौर पर हिन्दू और मुसलमानों में इस पिछले खून खराबे के बाद भी जगह जगह बिलकुल भाई भाई का सा बर्ताव दिखाई देता था. मैंने हिन्दू और मुसलमान नौजवानों को बारी बारी एक ही सिगरेट पीते हुए देखा है. औरतों का लिबास भी बिलकुल एक है. दोनों साड़ी बाँधती हैं. साड़ी की क़ीमत और चमक से ग़रीब और अमीर का फ़रक़ दिखाई दे जाता है. हिन्दू ... मान औरतों में एक फ़रक़ यह भी है कि हिन्दू

دیاسلائی کا ایک بکس ہی اپنے پاس رکھتا ہے۔ جہاں کہیں راستہ دکھائی نہ دیا یا کسی خطرے سے بچنا ہوتا ہے فوراً دیاسلائی جلاکر کچھ پتیوں کو یا سوکھی گھاس جلا دیتے ہیں جس سے راستہ دکھائی دے جاتا ہے۔ ہندو کوئی کوئی دھوتی بھی باندھتے ہیں مگر عام طور پر لنگی یعنی تہمت باندھتے ہیں۔ ایسے ہی کوئی کوئی مسلمان بھی پیجاما کرتا پہنتے ہیں اور کوئی کوئی ٹوپی بھی لگا لیتے ہیں۔ کوئی کوئی زیادہ عمر کے مسلمان یا مذہبی قسم کے لوگ داڑھی بھی رکھتے ہیں۔ ہندو اور مسلمان دونوں مچھلی اور چاول کھاتے ہیں۔ دونوں کے کھانے اور پکانے کا طریقہ بالکل ایک ہے۔ دونوں ڈاب یعنی کچے ناریل کا پانی پیتے ہیں۔ کیلے کا استعمال بھی دونوں خوب کرتے ہیں۔ چائے کا استعمال بھی دونوں میں بڑھا ہوا ہے۔ گوشت بہت کم ملتا ہے اور مہنگا ہوتا ہے۔ بکری کا گوشت کبھی کبھی ہندو مسلمان دونوں کھاتے ہیں۔ بڑا گوشت وہاں مشکل سے چھٹے چھ ماس کہیں کہیں کوئی مسلمان استعمال کرتا ہے۔ (۲۸)

عام طور پر ہندو اور مسلمانوں میں اس پچھلے خون خرابے کے بعد بھی جگہ جگہ بالکل بھائی بھائی کا سا برتاؤ دکھائی دیتا تھا۔ میں نے ہندو اور مسلمان نوجوانوں کو باری باری ایک ہی سگریٹ پیتے ہوئے دیکھا ہے۔ عورتوں کا لباس بھی بالکل ایک ہے۔ دونوں ساڑی باندھتی ہیں۔ ساڑی کی قیمت اور چمک سے غریب اور امیر کا فرق دکھائی دے جاتا ہے۔ ہندو اور مسلمان عورتوں میں ایک فرق یہ بھی ہے کہ ہندو عورت کوئی پردہ نہیں کرتیں۔ اور مسلمان عورتیں کہیں

कहीं एक क़िस्म का हल्का सा परदा करती हैं. यानी या तो उनके घरों के सामने एक टाट का टुकड़ा टँगा रहता है और या वह कहीं कहीं बुरक़ा ओढ़े हुए पालकी में आती जाती नजर आती हैं. एक फ़रक़ यह भी है कि हिन्दू आम तौर पर ब्योपार करता है और मुसलमान आम तौर पर खेती. खेती की पैदावार में सन, चावल, मिर्च, तम्बाकू सबसे ज्यादा हैं. जिस तरह उत्तर हिन्दुस्तान के बहुत से हिस्सों में ऊँची जाति के हिन्दू अपने हाथ से हल नहीं चलाते उसी तरह पूरबी बंगाल में आम तौर पर हिन्दू लोग हल नहीं चलाते. हिन्दुओं की जमीन में भी यह काम मुसलमानों से लिया जाता है. जमीन इतनी नर्म है कि एक मर्तबा हल चलाना काफ़ी होता है. मैंने कहीं कहीं लोहे के जगह लकड़ी के हल भी देखे हैं.

आबोहवा बहुत अच्छी है. मौसम इतने सुहावने हैं कि जनवरी और फ़रवरी के महीने में सुबह को कोयल बोलती है और शाम को जुगुनू जगमगाते हैं. न तो सर्दी ज्यादा होती है और न गरमी. बहुत ही हल्के और कम कपड़ों से हर आदमी का बारह महीने गुजर हो सकता है.

पिछले दंगों के बाद से कहीं कहीं हिन्दू घबराए हुए नजर आते थे. मुसलमान खुश नजर आते थे. मुसलमान ज्यादा ग़रीब हैं. दोनों ज्यादातर अनपढ़ हैं. तालीम का इन्तजाम कुछ इलाक़ों में बहुत कम है. हिन्दू या मुसलमान जो भी पढ़ जाते हैं वह नौकरी के लिए कलकत्ते चले जाते हैं. हिन्दुओं में एक दूसरे से ऊँच नीच और छुआ छूत काफ़ी बरती जाती है. मुसलमानों में यह चीज नहीं है.

کہیں ایک قسم کا ہلکا سا پردہ کرتی ہیں۔ یعنی یا تو اُن کے گھروں کے سامنے ایک ٹاٹ کا ٹکڑا ٹنگا رہتا ہے یا وہ کہیں کہیں بُرقعہ اوڑھے ہوئے پالکی میں آتی جاتی نظر آتی ہیں۔ ایک فرق یہ بھی ہے کہ ہندو عام طور پر بیوپار کرتا ہے اور مسلمان عام طور پر کھیتی۔ کھیتی کی پیداوار میں سن، چاول، مرچ، تمباکو سب سے زیادہ ہیں۔ جس طرح اُتر ہندستان کے بہت سے حصّوں میں اونچی جاتی کے ہندو اپنے ہاتھ سے ہل نہیں چلاتے اُسی طرح پوربی بنگال میں عام طور پر ہندو لوگ ہل نہیں چلاتے۔ ہندوؤں کی زمین میں بھی یہ کام مسلمانوں سے لیا جاتا ہے۔ زمین اتنی نرم ہے کہ ایک مرتبہ ہل چلانا کافی ہوتا ہے۔ میں نے کہیں کہیں لوہے کی جگہ لکڑی کے ہل بھی دیکھے ہیں۔

آب و ہوا بہت اچھی ہے۔ موسم اتنے سُہاونے ہیں کہ جنوری اور فروری کے مہینے میں صبح کو کویل بولتی ہے اور شام کو جُگنو جگمگاتے ہیں۔ نہ تو سردی زیادہ ہوتی ہے اور نہ گرمی۔ بہت ہی ہلکے اور کم کپڑوں سے ہر آدمی کا بارہ مہینے گزر ہو سکتا ہے۔

پچھلے دنگوں کے بعد سے کہیں کہیں ہندو گھبرائے ہوئے نظر آتے تھے۔ مسلمان خوش نظر آتے تھے۔ مسلمان زیادہ غریب ہیں۔ دونوں زیادہ تر اَن پڑھ ہیں۔ تعلیم کا انتظام کچھ علاقوں میں بہت کم ہے۔ ہندو یا مسلمان جو بھی پڑھ جاتے ہیں وہ نوکری کے لئے کلکتے چلے جاتے ہیں۔ ہندوؤں میں ایک دوسرے سے اونچ نیچ اور چھوا چھوت کافی برتی جاتی ہے۔ مسلمانوں میں یہ چیز نہیں ہے۔

मन्दिर और मस्जिद कम हैं और जो हैं वह एक झोपड़ी के नमूने के हैं. हिन्दू इन झोपड़ियों में जमा होकर कीर्तन करते हैं और ठाकुर का मूर्ति एक सिंहासन पर रख लेते हैं. मुसलमान एक झोपड़ी के अन्दर जमा होकर नमाज पढ़ते हैं. आम तौर पर पक्की ईंटों को न मस्जिद है और न मन्दिर. मुसलमान कुरान पढ़ना कम जानते हैं फिर भी पढ़ते हैं. नमाज और रोजा अकसर रखते हैं. अरबी जबान तो कोई कोई ही जानता होगा. हिन्दू संस्कृत ज्यादा जानते हैं.

पूरबी बंगाल का इलाका दुनिया के सरसब्ज से सरसब्ज इलाकों में है. वहाँ के लोग नेक और मेहनती हैं. पिछला फसाद चाहे किसी वजह से हुआ हो, चाहे अन्दर की चीज हो चाहे बाहर की, मजहब की वजह से हुआ हो या तिजारती लाग डाट की वजह से, हर हालत में मैं अपने दो महीने के तजरबे से यह दावे से कह सकता हूँ कि इस फसाद के असर काफी तेजी से मिट रहे हैं. इसमें कोई शक नहीं कि इस इलाके के हिंदू और मुसलमान फिर अमन से रहने लगे हैं और इससे ज्यादा अमन से रहेंगे. इस बारे में गाँधी जी और उनके साथियों, खास कर उनकी मुसलमान चेली अम्तुस्सलाम का असर बहुत ही अच्छा पड़ा है इस असर के पैदा करने में मुसलिम लीग के कुछ मेम्बरों ने भी काफी मदद दी है और गवरमेन्ट ने भी कोशिश की है. हमें भरोसा है कि थोड़े ही दिनों के अन्दर यह शर्मनाक फसाद एक गुजरा हुआ ख्वाब रह [illegible] और नोआखाली फिर मेल मुहब्बत अमन और खुश हाली

مندر اور مسجد کم ہیں اور جو ہیں وہ ایک جھوپڑی کے نمونے کے ہیں۔ ہندو ان جھوپڑیوں میں جمع ہوکر کیرتن کرتے ہیں اور ٹھاکر کی مورتی ایک سنہاسن پر رکھ لیتے ہیں۔ مسلمان ایک جھوپڑی کے اندر جمع ہوکر نماز پڑھتے ہیں۔ عام طور پر پکی اینٹوں کی نہ مسجد ہے اور نہ مندر۔ مسلمان قرآن پڑھنا کم جانتے ہیں پھر بھی پڑھتے ہیں۔ نماز اور روزہ اکثر رکھتے ہیں۔ عربی زبان تو کوئی ہی جانتا ہوگا۔ ہندو سنسکرت زیادہ جانتے ہیں۔

پوربی بنگال کا علاقہ دنیا کے سرسبز سے سرسبز علاقوں میں ہے۔ وہاں کے لوگ نیک اور محنتی ہیں۔ پچھلا فساد چاہے کسی وجہ سے ہوا ہو، چاہے اندر کی چیز ہو چاہے باہر کی، مذہب کی وجہ سے ہوا ہو یا تجارتی لاگ ڈاٹ کی وجہ سے، ہر حالت میں میں اپنے دو مہینے کے تجربے سے یہ دعوے سے کہہ سکتا ہوں کہ اس فساد کے اثر کافی تیزی سے مٹ رہے ہیں۔ اس میں کوئی شک نہیں کہ اس علاقے کے ہندو اور مسلمان پھر امن سے رہنے لگے ہیں اور اس سے زیادہ امن سے رہیں گے۔ اس بارے میں گاندھی جی اور ان کے ساتھیوں، خاص کر ان کی مسلمان چیلی امتہ السلام کا اثر بہت ہی اچھا پڑا ہے۔ اس اثر کے پیدا کرنے میں مسلم لیگ کے کچھ ممبروں نے بھی کافی مدد دی ہے اور گورنمنٹ نے بھی کوشش کی ہے۔ ہمیں بھروسا ہے کہ تھوڑے ہی دنوں کے اندر یہ شرمناک فساد ایک گزرا ہوا خواب رہ جائے گا اور نواکھالی پھر میل محبت امن اور خوش حالی سے لہلہائے گا۔

आज की दुनिया

(क़ौमी खिदमतगार)

- यू. एन. ओ. का इन्डिया और पाकिस्तान की ग़ुलामी को मंजूर करना
- इन्डिया और पाकिस्तान का असली रुतबा सिर्फ़ रूस के लिये ही खतरनाक़ नहीं
- लड़ाई के लिये एंग्लो अमरीकन डाकुओं को श्री मती पंडित की मदद

बहुत कम लोगों ने इस बात पर ग़ौर किया होगा. यह चीज़ इतने चुपचाप हो गई कि मालूम होता है पक्के उस्तादों के ज़िम्मे काम सौंपा गया था जिन्होंने उसे बहुत ख़ूबी से अंजाम दिया. अगर लोगों ने इस बात पर ध्यान दिया होता कि हर एक्सेलेन्सी श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित, जो कि मास्को में इन्डिया की एलची हैं, बजाय मास्को में मशग़ूल होने के इस वक़्त न्यूयार्क में यू. एन. ओ. के काम में लगी हुई हैं तो सब बातों का असली पता चल जाता.

हर एक्सेलेन्सी श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित इस वक़्त

इस लेख के लिये—हिन्दुस्तान = पाकिस्तान जमा इन्दिया.
इन्दिया = पाकिस्तान कम हिन्दुस्तान.

آج کی دُنیا

(قومی خدمت گار)

- یو۔ این۔ او۔ کا اِنڈیا اور پاکستان کی غلامی کو منظور کرنا
- اِنڈیا اور پاکستان کا اصلی رُتبہ صرف روس کے لئے ہی خطرناک نہیں
- لڑائی کے لئے اینگلو امریکن ڈاکوؤں کو شری متی پنڈت کی مدد

بہت کم لوگوں نے اِس بات پر غور کیا ہوگا۔ یہ چیز اِتنی چپ چاپ ہوگئی کہ معلوم ہوتا ہے پکّے اُستادوں کے ذمّے کام سونپا گیا تھا جنھوں نے اُسے بہت خوبی سے انجام دیا۔ اگر لوگوں نے اِس بات پر دھیان دیا ہوتا کہ ہر اکسلنسی شری متی وجے لکشمی پنڈت، جو کہ ماسکو میں انڈیا کی ایلچی ہیں، بجائے ماسکو میں مشغول ہونے کے اِس وقت نیویارک میں یو۔ این۔ او کے کام میں لگی ہوئی ہیں تو سب باتوں کا اصلی پتہ چل جاتا۔

ہر اکسلنسی شری متی وجے لکشمی پنڈت اِس وقت

اِس لیکھ کے لئے — ہندستان = پاکستان جمع اِنڈیا۔
انڈیا = پاکستان کم ہندستان۔

न्यूयार्क में इस लिये हैं क्योंकि अभी तक मास्को में इन्दिया का एलची दफ़्तर क़ायम नहीं हुआ है. ऐसी उम्मीद की जाती है कि इस साल नवम्बर में वह क़ायम हो जायगा. जाहिर है कि जब तक बर्तानिया, अपने वादे के मुताबिक़, इन्दिया और पाकिस्तान को ताक़त नहीं सौंप देता तब तक रूस हिन्दुस्तान के विदेशों से सीधा सम्बन्ध रखने के हक़ को मंज़ूर नहीं करता. इससे एक बुनियादी सवाल यह उठता है, इन्दिया और पाकिस्तान की बाहर के मुल्कों में क्या हैसियत है, देश के अन्दर चाहे वह कुछ भी हो.

इस वक़्त इन्दिया और पाकिस्तान की हैसियत महज़ नौआबादियों (Colony) की तरह है. अभी तक बर्तानिया ने इन्दिया और पाकिस्तान को ताक़त नहीं सौंपी है. ऐसी उम्मीद की जाती है कि इस साल के आख़ीर तक ताक़त सौंपने का काम ख़तम हो जायगा. अभी तक तो सिर्फ़ हिन्दुस्तान में अंगरेज़ी साम्राज का बटवारा हुआ है. हर हिस्से (इन्दिया और पाकिस्तान) की हैसियत बिलकुल पहले जैसी है. हिन्दुस्तान में अंगरेज़ी राज अभी क़ायम है. उसकी जगह अभी कोई हकूमत या हकूमतें नहीं क़ायम की गई हैं. इन्दिया और पाकिस्तान सरकारों को ताक़त सौंपने के बाद कहीं इस बात का बाक़ायदा फ़ैसला किया जाएगा कि अँगरेज़ी राज के बदले नई आज़ाद हकूमतें क़ायम हो गईं और अँगरेज़ों ने उन्हें मान लिया.

सिर्फ़ हैसियत में तब्दीली क़बूल कर लेने से ही हैसियत नहीं बदल जाती. बर्तानिया के ताक़त सौंप देने के बाद इन्दिया और पाकिस्तान का जो दर्जा होगा वह इन्डियन इनडिपेनडेन्स एक्ट

نیویارک میں اس لئے ہیں کیونکہ ابھی تک ماسکو میں اِنڈیا کا ایلچی دفتر قایم نہیں ہوا ہے. ایسی اُمید کی جاتی ہے کہ اس سال نومبر میں وہ قایم ہوجائے گا. ظاہر ہے کہ جب تک برطانیہ، اپنے وعدے کے مطابق، انڈیا اور پاکستان کو طاقت نہیں سونپ دیتا تب تک روس ہندستان کے ودیشوں سے سیدھا سمبندھ رکھنے کے حق کو منظور نہیں کرتا. اِس سے ایک بُنیادی سوال یہ اٹھتا ہے اِنڈیا اور پاکستان کی باہر کے ملکوں میں کیا حیثیت ہے، دیش کے اندر چاہے وہ کچھ بھی ہو.

اِس وقت اِنڈیا اور پاکستان کی حیثیت محض نوآبادیوں (Colony) کی طرح ہے. ابھی تک برطانیہ نے انڈیا اور پاکستان کو طاقت نہیں سونپی ہے. ایسی اُمید کی جاتی ہے کہ اِس سال کے آخر تک طاقت سونپنے کا کام ختم ہوجائے گا. ابھی تک تو صرف ہندستان میں انگریزی سامراج کا بٹوارہ ہوا ہے. ہر حصّے (اِنڈیا اور پاکستان) کی حیثیت بالکل پہلے جیسی ہے. ہندستان میں انگریزی راج ابھی قایم ہے. اُس کی جگہ ابھی کوئی حکومت یا حکومتیں نہیں قایم کی گئی ہیں. اِنڈیا اور پاکستان سرکاروں کو طاقت سونپنے کے بعد کہیں اِس بات کا باقاعدہ فیصلہ کیا جائے گا کہ انگریزی راج کے بدلے نئی آزاد حکومتیں قایم ہوگئیں اور انگریزوں نے اُنھیں مان لیا.

صرف حیثیت میں تبدیلی قبول کرلینے سے ہی حیثیت نہیں بدل جاتی. برطانیہ کے طاقت سونپ دینے کے بعد اِنڈیا اور پاکستان کا جو رُتبہ ہوگا وہ انڈین انڈیپنڈنس ایکٹ

की दफ़ाओं में बता दिया गया है. वह कनैडा, साउथ अफ़्रीका, आस्ट्रेलिया वग़ैरा की तरह वेस्ट मिनिस्टर के स्टेच्यूट के मुताबिक़ 'डोमिनियन्स' नहीं होंगी बल्कि इन्डियन इनडिपेनडेन्स एक्ट के मुताबिक़ "ख़ुदमुख़्तार डोमिनियन्स" होंगी.

जैसे पहले थे वैसे अब भी—

बर्तानिया के इन्डिया और पाकिस्तान को ताक़त सौंप देने के बाद और उन्हें 'ख़ुदमुख़्तार डोमिनियन्स' मंज़ूर कर लेने पर भी इन्डिया और पाकिस्तान ब्रिटिश कामनवेल्थ और साम्राज के अन्दर ही बने रहेंगे. 'ख़ुदमुख़्तार डोमिनियन' के फ़िक़रे से हमें धोके में नहीं आना चाहिये. यह महज़ एक नाम है जो इन्डिया और पाकिस्तान के नए रुतबे हासिल करने पर दिया गया है. इस तरह हम देखते हैं कि ख़ुदमुख़्तारी का तो कहीं सवाल ही नहीं उठता है. अन्तरराष्ट्रीय क़ानून के मुताबिक़ इन्डिया और पाकिस्तान ख़ुदमुख़्तार हकूमतें नहीं हैं क्यों कि यह हकूमतें बर्तानवी ताज की वफ़ादार हैं.

फिर भी आजकल जो ग़ैर ख़ुदमुख़्तार हकूमतें हैं उन्हें भी दूसरे देशों से सीधा सम्बन्ध रखने का हक़ है बशर्त्ते कि जिस बड़ी ताक़त की वह वफ़ादार हैं वह उन्हें ऐसा करने की इजाज़त दे दे. इसलिये हिन्दुस्तान से सीधा सम्बन्ध रखने के बारे में रूस ने जो रुख़ अख़्तियार किया है वह बिलकुल ठीक है. अमरीका और दूसरे देशों के साथ जो सीधा सम्बन्ध क़ायम किया जा रहा है वह भी जैसा ऊपर बताया जा चुका है, बाक़ायदा हो [illegible]

کی دفعاؤں میں بتا دیا گیا ہے. وہ کنیڈا، ساؤتھ افریقہ، آسٹریلیا وغیرہ کی طرح ویسٹ منسٹر کے سٹیچوٹ کے مطابق "ڈومینینس" نہیں ہوں گی بلکہ انڈین انڈپینڈنس ایکٹ کے مطابق "خودمختار ڈومینینس" ہوں گی.

جیسے پہلے تھے ویسے اب بھی—

برطانیہ کے انڈیا اور پاکستان کو طاقت سونپ دینے کے بعد اور اُنھیں 'خودمختار ڈومینینس' منظور کر لینے پر بھی انڈیا اور پاکستان برٹش کامن ویلتھ اور سامراج کے اندر ہی بنے رہیں گے. 'خودمختار ڈومینین' کے فقرے سے ہمیں دھوکے میں نہیں آنا چاہئے. یہ محض ایک نام ہے جو انڈیا اور پاکستان کے نئے رُتبے حاصل کرنے پر دیا گیا ہے. اِس طرح ہم دیکھتے ہیں کہ خودمختاری کا تو کہیں سوال ہی نہیں اُٹھتا ہے. انتراشٹریہ قانون کے مطابق انڈیا اور پاکستان خودمختار حکومتیں نہیں ہیں کیونکہ یہ حکومتیں برطانوی تاج کی وفادار ہیں.

پھر بھی آج کل جو غیر خودمختار حکومتیں ہیں اُنھیں بھی دوسرے دیشوں سے سیدھا سمبندھ رکھنے کا حق ہے بشرطیکہ جس بڑی طاقت کی وہ وفادار ہیں وہ اُنھیں ایسا کرنے کی اجازت دے دے. اِس لئے ہندستان سے سیدھا سمبندھ رکھنے کے بارے میں روس نے جو رُخ اختیار کیا ہے وہ بالکل ٹھیک ہے. امریکا اور دوسرے دیشوں کے ساتھ جو سیدھا سمبندھ قایم کیا جا رہا ہے وہ بھی جیسا اوپر بتایا جا چکا ہے، باقاعدہ ہو سکتا ہے. لیکن کیونکہ اِسے طاقت حاصل کرنے کے پہلے ہی

किया जा रहा है इसलिये हमारी नौआबादी होने की हैसियत (Colonial status) मान ली जाती है

इस तरह हम देखते हैं कि इन्दिया और पाकिस्तान से सीधा सम्बन्ध रखने के बारे अमरीका ने जो रुख़ लिया है उसमें और रूस के रुख़ में बहुत बड़ा और गहरा फ़रक़ है. अमरीका ने इस बारे में जो कुछ किया है वह महज़ यह है कि अँगरेजों के हिन्दुस्तानी बटवारे को मान लिया है और उन हिस्सों में से एक को इन्दिया और दूसरे को पाकिस्तान नाम दे दिया है. अमरीका ने जो कुछ किया उससे यह नहीं साबित होता कि अँगरेजी राज हटकर हिन्दुस्तान में कोई दो नई आज़ाद हकूमतें क़ायम हो गई हैं. बिलकुल इसी चीज़ को रूस इन्दिया और पाकिस्तान से सीधा सम्बन्ध क़ायम करके मान लेना चाहता है, मगर वह यह जब करेगा जब इन दोनों हकूमतों से अँगरेज़ हट जायंगे.

इस बारे में अमरीका ने जो कुछ किया है उससे हिन्दुस्तान को बहुत धक्का पहुँचा है. एंग्लो अमरीकन गुट्ट से हम लोग इससे अच्छे बरताव की उम्मीद भी नहीं करते. हाँ, यू० एन० ओ० से यह उम्मीद ज़रूर की जाती थी कि वह एक बेलाग जमात होगी. वह अगर इन्दिया और पाकिस्तान को दो नई आज़ाद हकूमतों के रूप में मान लेती तो अमरीकी चाल को काफ़ी धक्का पहुँचता. मगर यह करने के बजाय, बदक़िस्मती से, वह इस बारे में अमरीका के ही पीछे पीछे चली है.

यू० एन० ओ० साम्राजवाद की हिमायती है—

पिछली २२ अगस्त को अरजेनटाइना ने एक तजवीज़

(५८)

کیا جا رہا ہے اس لئے ہماری نوآبادی ہونے کی حیثیت (Colonial status) مان لی جاتی ہے۔

اس طرح ہم دیکھتے ہیں کہ انڈیا اور پاکستان سے سیدھا سمبندھ رکھنے کے بارے امریکا نے جو رُخ لیا ہے اُس میں اور روس کے رُخ میں بہت بڑا اور گہرا فرق ہے۔ امریکا نے اس بارے میں جو کچھ کیا ہے وہ محض یہ ہے کہ انگریزوں کے ہندستانی بٹوارے کو مان لیا ہے اور اُن حصّوں میں سے ایک کو انڈیا اور دوسرے کو پاکستان نام دے دیا ہے۔ امریکا نے جو کچھ کیا اُس سے یہ نہیں ثابت ہوتا کہ انگریزی راج ہٹ کر ہندستان میں کوئی دو نئی آزاد حکومتیں قایم ہوگئی ہیں۔ بالکل اسی چیز کو روس انڈیا اور پاکستان سے سیدھا سمبندھ قایم کرکے مان لینا چاہتا ہے، مگر وہ یہ جب کرے گا جب ان دونوں حکومتوں سے انگریز ہٹ جائیں گے۔

اس بارے میں امریکا نے جو کچھ کیا ہے اُس سے ہندستان کو بہت دھکا پہنچا ہے۔ اینگلو امریکن گُٹ سے ہم لوگ اس سے اچھے برتاؤ کی اُمید بھی نہیں کرتے۔ ہاں یو۔ این۔ او۔ سے یہ اُمید ضرور کی جاتی تھی کہ وہ ایک بے لاگ جماعت ہوگی۔ وہ اگر انڈیا اور پاکستان کو دو نئی آزاد حکومتوں کے رُوپ میں مان لیتی تو امریکی چال کو کافی دھکا پہنچتا۔ مگر یہ کرنے کے بجائے، بدقسمتی سے، وہ اس بارے میں امریکا کے ہی پیچھے پیچھے چلی ہے۔

یو۔ این۔ او۔ سامراج واد کی حمایتی ہے—

پچھلی ۲۲ اگست کو ارجنٹائنا نے ایک تجویز

(۵۸)

यू० एन० ओ० की बड़ी असेम्बली के सामने रक्खी. याद रहे कि अरजेनटाइना अमरीका के मातहत एक रियासत है और वह हर बात में अमरीका की हाँ में हाँ मिलाता है. वह तजवीज़ यह है—

"चूँकि समूचा हिन्दुस्तान, पहली जनवरी सन् १९४२ के ऐलान पर दस्तख़त करने के नाते, पहले से ही यूनाइटेड नेशन्स का मेम्बर था और चूँकि वह सैनफ्रान्सिस्को कानफ़रेन्स में, जहाँ कि यूनाइटेड नेशन्स का संघठन किया गया था, मौजूद था और चूँकि पाकिस्तान और इन्दिया पूरे हिन्दुस्तान को रज़ामन्दी से बाँटने का नतीजा हैं, इसलिये इसकी कोई ज़रूरत नहीं कि यह दोनों नए मेम्बर की हैसियत से उस संघ में शामिल होने की अर्ज़ी दें जिसके कि वह पहले से ही यक़ीनी तौर पर मेम्बर हैं; और इसलिये यह बड़ी असेम्बली ऐलान करती है कि पाकिस्तान और 'हिन्दू इन्दिया' यूनाइटेड नेशन्स के मेम्बर हैं."

इस तजवीज़ की चार बातों को ध्यान में रखने की ज़रूरत है—

(१) यह बिलकुल साफ़ है कि पूरा हिन्दुस्तान सन् '४२ से ही जिस हैसियत के यूनाइटेड नेशन्स का मेम्बर था उसी हैसियत से अब भी मेम्बर रहेगा. यू० एन० ओ० के सब कामों के लिये अब से "इन्डिया" (पाकिस्तान समेत कुल हिन्दुस्तान) के माने होंगे 'अङ्गरेज़ों का हिन्दुस्तानी साम्राज'.

(२) "पाकिस्तान" और "हिन्दू इन्दिया" अँगरेज़ी गवरमेन्ट के नई सरकारों को अधिकार सौंपने का नतीजा नहीं हैं और न

یو. این. او. کی بڑی اسمبلی کے سامنے رکھی۔ یاد رہے کہ ارجنٹائنا امریکا کے ماتحت ایک ریاست ہے اور وہ ہر بات میں امریکا کی ہاں میں ہاں ملاتی ہے۔ وہ تجویز یہ ہے—

"چونکہ سموچا ہندستان، پہلی جنوری سنہ ۱۹۴۲ کے اعلان پر دستخط کرنے کے ناتے، پہلے سے ہی یونائٹیڈ نیشنس کا ممبر تھا اور چونکہ وہ سین فرانسسکو کانفرنس میں، جہاں کی یونائیٹڈ نیشنس کا سنگٹھن کیا گیا تھا، موجود تھا اور چونکہ پاکستان اور انڈیا پورے ہندستان کو رضامندی سے بانٹنے کا نتیجہ ہیں، اس لئے اس کی کوئی ضرورت نہیں کہ یہ دونوں نئے ممبر کی حیثیت سے اس سنگھ میں شامل ہونے کی عرضی دیں جس کے کہ وہ پہلے سے ہی یقینی طور پر ممبر ہیں؛ اور اس لئے یہ بڑی اسمبلی اعلان کرتی ہے کہ پاکستان اور "ہندو انڈیا" یونائٹیڈ نیشنس کے ممبر ہیں۔"

اس تجویز کی چار باتوں کو دھیان میں رکھنے کی ضرورت ہے—

(۱) یہ بالکل صاف ہے کہ پورا ہندستان سنہ ۴۲ سے ہی جس حیثیت کے یونائٹیڈ نیشنس کا ممبر تھا اسی حیثیت سے اب بھی ممبر رہے گا۔ یو. این. او. کے سب کاموں کے لئے اب سے "انڈیا" (پاکستان سمیت کُل ہندستان) کے معنے ہوں گے "انگریزوں کا ہندستانی سامراج"۔

(۲) "پاکستان" اور "ہندو انڈیا" انگریزی گورنمنٹ کے نئی سرکاروں کو ادھیکار سونپنے کا نتیجہ نہیں ہیں اور نہ

अँगरेज़ी राज को हटाकर खुद के क़ायम किये राज हैं बल्कि "इन्डिया" के रज़ामन्दी से किये गए बटवारे के नतीजे हैं. सिर्फ़ यह माना गया है कि हिन्दुस्तान में अँगरेज़ी साम्राज का बटवारा हुआ है और हर हिस्सा अँगरेज़ी साम्राज का ही हिस्सा है.

(३) क्यों कि ऐसा है इसलिये "पाकिस्तान" और "हिन्दू इन्दिया" नए मेम्बर की हैसियत से यू० एन० ओ० में शामिल होने की अर्ज़ी न दें. वह तो हिन्दुस्तान में अँगरेज़ी साम्राज के नाते दो अलग अलग हिस्से होते हुए भी पहले से ही यू० एन० ओ० के मेम्बर हैं.

(४) यू० एन० ओ० ऐलान करता है कि "पाकिस्तान" और "हिन्दू इन्दिया" पहले के तरह ही उसी अँगरेज़ी साम्राज के मेम्बर हैं.

ख़याली ख़ुशी—

बाद में यू० एन० ओ० ने अरजेनटाइना की तजवीज़ को मंज़ूर करके पूरे हिन्दुस्तान में अँगरेज़ी राज बने रहने की गारंटी करदी. लेकिन इसे साम्राजवाद क़ायम करना नहीं कहा जाता बल्कि पाकिस्तान का यू० एन० ओ० में 'ख़ुद ब ख़ुद बिना किसी मदद के दाख़िल होना' (Automatic Admission) कहा जाता है. 'हिन्दू इन्दिया' के नुमाइन्दे श्रीमती पंडित और पाकिस्तान के नुमाइन्दे सर ज़फ़रुल्ला ख़ाँ दोनों ने अपने आप को इस पर बधाई दी और दोनों बहुत ख़ुश हुए. सिर्फ़ अफ़ग़ानिस्तान ही ऐसा निकला जिसने इस चीज़ को नापसन्द किया और अपनी ख़िलाफ़ [illegible] के नज़दीक बढ़ते

انگریزی راج کو ہٹاکر خود کے قایم کیئے راج ہیں بلکہ "انڈیا" کے رضامندی سے کیئے گئے بٹوارے کے نتیجے ہیں۔ صرف یہ مانا گیا ہے کہ ہندستان میں انگریزی سامراج کا بٹوارہ ہوا ہے اور ہر حصہ انگریزی سامراج کا ہی حصہ ہے۔

(۳) کیونکہ ایسا ہے اس لئے "پاکستان" اور "ہندو انڈیا" نئے ممبر کی حیثیت سے یو۔ این۔ او۔ میں شامل ہونے کی عرضی نہ دیں۔ وہ تو ہندستان میں انگریزی سامراج کے ناتے دو الگ الگ حصے ہوتے ہوئے بھی پہلے سے ہی یو۔ این۔ او۔ کے ممبر ہیں۔

(۴) یو۔ این۔ او۔ اعلان کرتا ہے کہ "پاکستان" اور "ہندو انڈیا" پہلے کی طرح ہی اسی انگریزی سامراج کے ممبر ہیں۔

خیالی خوشی—

بعد میں یو۔ این۔ او۔ نے ارجینٹائنا کی تجویز کو منظور کرکے پورے ہندستان میں انگریزی راج بنے رہنے کی گارنٹی کردی۔ لیکن اسے سامراج واد قایم کرنا نہیں کہا جاتا بلکہ پاکستان کا یو۔ این۔ او۔ میں 'خود بخود بنا کسی مدد کے داخل ہونا' (Automatic Admission) کہا جاتا ہے۔ 'ہندو انڈیا' کے نمائندے شریمتی پنڈت اور پاکستان کے نمائندے سر ظفراللہ خاں دونوں نے اپنے آپ کو اس پر بدھائی دی اور دونوں بہت خوش ہوئے۔ صرف افغانستان ہی ایسا نکلا جس نے اس چیز کو ناپسند کیا اور اپنی خلاف رائے ظاہر کی کیونکہ اس نے اپنی سیما کے نزدیک بڑھتے

हुए ब्रिटिश साम्राज्यवाद के खतरे को महसूस कर लिया.

यह मार्के की बात है कि "हिन्दू इन्दिया" और पाकिस्तान दोनों सरकारों ने अपने अपने नुमाइन्दे श्रीमती पंडित और सर ज़फ़रुल्ला को इस बात की हिदायत नहीं दी कि वह यू० एन० ओ० की मेम्बरी के सवाल को तब तक के लिये मंसूख़ करदें जब तक कि इन्दिया और पाकिस्तान नए सिरे से अपनी मेम्बरी के लिये दरख़ास्त न दे दें. इन्दिया और पाकिस्तान दोनों को यह चाहिये था कि वह, अँगरेज़ी साम्राज को हटाने वाली नई आज़ाद हुकूमतों की हैसियत से अलग अलग यू० एन० ओ० की मेम्बरी के लिये दरख़ास्त देते. यह तभी मुमकिन था जब कि बर्तानिया इन्दिया और पाकिस्तान की सरकारों को बाक़ायदा ताक़त सौंप देता. अब तो यही उम्मीद बाक़ी रह गई है कि रूस हमारी इस आज़ाद हैसियत को मान ले.

यू० एन० ओ० की बड़ी असेम्बली में यूनाइटेड किंगडम की तरफ़ से सर हार्टले शाक्रास ने यह माँग पेश की थी कि पाकिस्तान को नए मेम्बर की हैसियत से दाख़िल कर लिया जाय और इन्दिया को, जो पहले से ही मेम्बर है, मेम्बर रहने दिया जाए. पर इस बात पर ज़ोर नहीं दिया गया. अगर इस पर ज़ोर दिया जाता तो इसके यह माने हो जाते कि यू० एन० ओ० ने इस बात को मान लिया कि बर्तानिया ने हिन्दुस्तान के सिर्फ़ उस हिस्से को आज़ाद कर दिया है जिसका नाम पाकिस्तान है. यानी हिन्दुस्तान में अँगरेज़ी साम्राज की जगह पर या उसके किसी टुकड़े के बदले आज़ाद पाकिस्तान क़ायम किया गया है और इन्दिया की

ہوئے برٹش سامراج واد کے خطرے کو محسوس کر لیا۔

یہ مرکے کی بات ہے کہ "ہندو انڈیا" اور پاکستان دونوں سرکاروں نے اپنے اپنے نمائندے شریمتی پنڈت اور سر ظفر اللہ کو اس بات کی ہدایت نہیں دی کہ وہ یو۔ این۔ او۔ کی ممبری کے سوال کو تب تک کے لئے منسوخ کر دیں جب تک کہ انڈیا اور پاکستان نئے سرے سے اپنی ممبری کے لئے درخواست نہ دے دیں۔ انڈیا اور پاکستان دونوں کو یہ چاہیے کہ وہ، انگریزی سامراج کو ہٹانے والی نئی آزاد حکومتوں کی حیثیت سے الگ الگ یو۔ این۔ او۔ کی ممبری کے لئے درخواست دیتے۔ یہ تبھی ممکن تھا جب کہ برطانیہ انڈیا اور پاکستان کی سرکاروں کو باقاعدہ طاقت سونپ دیتا۔ اب تو یہی امید باقی رہ گئی ہے کہ روس ہماری اس آزاد حیثیت کو مان لے۔

یو۔ این۔ او۔ کی بڑی اسمبلی میں یونائیٹیڈ کنگڈم کی طرف سے سر ہارٹلے نے یہ مانگ پیش کی تھی کہ پاکستان کو نئے ممبر کی حیثیت سے داخل کر لیا جائے اور انڈیا کو، جو پہلے سے ہی ممبر ہے، ممبر رہنے دیا جائے۔ پر اس بات پر زور نہیں دیا گیا۔ اگر اس پر زور دیا جاتا تو اس کے یہ معنے ہو جاتے کہ یو۔ این۔ او۔ نے اس بات کو مان لیا کہ برطانیہ نے ہندستان کے صرف اس حصے کو آزاد کر دیا ہے جس کا نام پاکستان ہے۔ یعنی ہندستان میں انگریزی سامراج کی جگہ پر یا اس کے کسی ٹکڑے کے بدلے آزاد پاکستان قایم کیا گیا ہے اور انڈیا کی

मुस्तक़िल मेम्बरी के रूप में अँगरेजी राज अभी मौजूद है. पर जब वोट लिये गए तो सर हार्टले ने अपनी तजवीज़ की परवाह न करके अरजेनटाइना की तजवीज़ के हक़ में ही राय दी और पाकिस्तान को यह भी मौक़ा नहीं दिया कि वह उनका शुक्रिया अदा कर सके.

अब जो हालत है वह श्री एस० लाल ने तसलीम करली है. श्री एस० लाल यूनाइटेड नेशन्स की क़ानूनी कमेटी में इन्दिया के नुमाइन्दे हैं. इस क़ानूनी कमेटी ने इस बारे में अपना फ़ैसला श्री एस० लाल के कहने के मुताबिक़ किया है. श्री लाल ने और बातों के अलावा यह कहा कि—

"हिन्दुस्तान के अब पूरी तरह आज़ाद हकूमत होने के बावजूद हिन्दुस्तान की अन्तरराष्ट्रीय अहमियत में, जो उसने तीस साल पहले लीग आफ़ नेशन्स में दाख़िल होने पर हासिल की थी, ज़रा भी फ़रक़ नहीं आया है."

बर्तानिया और अमरीका ने श्री एस० लाल के इस ऐलान का समर्थन किया कि हिन्दुस्तान पूरी तरह आज़ाद तो हो गया है मगर उसकी अन्तरराष्ट्रीय अहमियत में कोई फ़रक़ नह हुआ है !!

खुशी की हद हो गई !

مستقل ممبری کے روپ میں انگریزی راج ابھی موجود ہے. پر جب ووٹ لئے گئے تو سر ہارٹلے نے اپنی تجویز کی پرواہ نہ کرکے ارجینٹائنا کی تجویز کے حق میں ہی رائے دی اور پاکستان کو یہ بھی موقع نہیں دیا کہ وہ اُن کا شکریہ ادا کر سکے.

اب جو حالت ہے وہ شری ایس. لال نے تسلیم کرلی ہے. شری ایس. لال یونائیٹڈ نیشنس کی قانونی کمیٹی میں انڈیا کے نمائندے ہیں. اِس قانونی کمیٹی نے اِس بارے میں اپنا فیصلہ شری ایس. لال کے کہنے کے مطابق کیا ہے. شری لال نے اور باتوں کے علاوہ یہ کہا ہے کہ—

"ہندستان کے اب پوری طرح آزاد حکومت ہونے کے باوجود ہندستان کی انتراشٹریہ اہمیت میں، جو اُس نے تیس سال پہلے لیگ آف نیشنس میں داخل ہونے پر حاصل کی تھی، ذرا بھی فرق نہیں آیا ہے."

برطانیہ اور امریکا نے شری ایس. لال کے اس اعلان کا سمرتھن کیا کہ ہندستان پوری طرح آزاد تو ہوگیا ہے مگر اُس کی انتراشٹریہ اہمیت میں کوئی فرق نہیں ہوا ہے.!!

خوشی کی حد ہوگئی !

साम्राजी गुटबन्दी—

एंग्लो अमरीकन साम्राजवादी डाकू आज कल इस बात की बड़े ज़ोरों से कोशिश कर रहे हैं कि जरमनी के एंग्लो अमरीकन और फ्रेन्च इलाक़ों में नाज़ी जरमनी को फिर से उठा कर उसे पूरी तरह ताक़तवर बना दिया जाए. जरमनी को योरप में, रूस को छोड़ कर, सबसे बड़ी ताक़त बनाने की तय्यारियाँ हो रही हैं. आपेन व रूस में जंगी सामान के कारख़ाने और फ़ौलाद व कोयले के फ़र्म क़ायम किये जा रहे हैं.

यह बातें उस 'छिपी चिट्ठी' से जाहिर होती हैं जो पेरिस में होने वाली सोलह देशों की 'माली कानफ़रेन्स' में भेजी गई है. इस कानफ़रेन्स का मक़सद मारशल प्लैन को सफल बनाना है. ऐसा मालूम होता है कि पेरिस कानफ़रेन्स ने जरमनी के अमरीकी इलाक़े के गवरनर, जेनरल क्ले और ब्रिटिश इलाक़े के कमान्डर-इन-चीफ़ सर राबर्टसन से पूछा था कि जरमनी के एंग्लो अमरीकन इलाक़े को फिर से ताक़तवर बनाने के लिये किन किन चीज़ों की और कितनी तादाद में ज़रूरत होगी. जो छिपी चिट्ठी भेजी गई है वह इन्हीं दो जनरलों के जवाब की शकल में है. उस चिट्ठी पर राबर्टसन के दस्तख़त हैं. जनरल क्ले उससे पूरी तरह हमराय हैं पर उनके दस्तख़त उस पर नहीं हैं क्योंकि पेरिस में होने वाली सोलह देशों की कानफ़रेन्स में अमरीका हिस्सा नहीं ले रहा था, अमरीका ने इस कानफ़रेन्स में इसलिये हिस्सा नहीं लिया जिससे कि यह मालूम हो कि मारशल प्लैन को सफल

سامراجی گُٹ بندی —

اینگلو امریکن سامراج وادی ڈاکو آج کل اس بات کی بڑے زوروں سے کوشش کر رہے ہیں کہ جرمنی کے اینگلو امریکن اور فرینچ علاقوں میں نازی جرمنی کو پھر سے اُٹھا کر اُسے پوری طرح طاقتور بنا دیا جائے۔ جرمنی کو یورپ میں، روس کو چھوڑ کر، سب سے بڑی طاقت بنانے کی تیاریاں ہو رہی ہیں۔ آپین و روس میں جنگی سامان کے کارخانے اور فولاد و کوئلے کے فرم قایم کئے جا رہے ہیں۔

یہ باتیں اُس 'چھپی چٹھی' سے ظاہر ہوتی ہیں جو پیرس میں ہونے والی سولہ دیشوں کی 'مالی کانفرنس' میں بھیجی گئی ہے۔ اِس کانفرنس کا مقصد مارشل پلین کو سپھل بنانا ہے۔ ایسا معلوم ہوتا ہے کہ پیرس کانفرنس نے جرمنی کے امریکی علاقے کے گورنر، جنرل کلے اور برٹش علاقے کے کمانڈر انچیف سر رابرٹسن سے پوچھا تھا کہ جرمنی کے اینگلو امریکن علاقے کو پھر سے طاقتور بنانے کے لئے کن کن چیزوں کی اور کتنی تعداد میں ضرورت ہوگی۔ جو چھپی چٹھی بھیجی گئی ہے وہ انھیں دو جنرلوں کے جواب کی شکل میں ہے۔ اُس چٹھی پر رابرٹسن کے دستخط ہیں۔ جنرل کلے اُس سے پوری طرح ہم رائے ہیں پر اُن کے دستخط اُس پر نہیں ہیں کیونکہ پیرس میں ہونے والی سولہ دیشوں کی کانفرنس میں امریکا حصہ نہیں لے رہا تھا۔ امریکا نے اِس کانفرنس میں اِس لئے حصہ نہیں لیا جس سے کہ یہ معلوم ہو کہ مارشل پلین کو سپھل

बनाने के लिये जो जो तरकीबें की जा रही हैं उनसे अमरीका का कोई ताल्लुक़ नहीं है. इस दस्तावेज़ के मुताबिक़ जरमनी को चार साल में फिर से ताक़तवर बनाया जा सकता है.

उसी चिट्ठी में यह सुझाया गया है कि जर्मनी के एंग्लो अमरीकी इलाक़े में फ़ौलाद की पैदावार बढ़ाई जावे. सन् १९४७ में यह पैदावार सत्ताइस लाख पचास हज़ार टन होगी. अब यह तजवीज़ है कि सन १९५१ तक इसको बढ़ाकर एक करोड़ टन कर लिया जावे. तब रूस को छोड़ कर बाक़ी सारे योरप में फौलाद की पैदावार जरमनी में सबसे ज़्यादा होगी. कोयले की पैदावार भी बढ़ाई जाएगी. सन १९४६ में यह पाँच करोड़ तरेपन लाख टन थी. सन् १९५१ तक इसे बढ़ा कर बारह करोड़ दस लाख टन कर लिया जायगा. उसी चिट्ठी में बताया गया है कि इन चार बरस में जरमनी को अमरीका हर तरह की माली मदद दे. ऐसा अन्दाज़ा लगाया गया है कि खाने और खेती के सम्बन्ध में अमरीका नीचे लिखे हुए हिसाब से जरमनी की मदद करेगा—

१९४७-४८	में	अठहत्तर करोड़ बीस लाख डालर
१९४८-४९	" "	सत्तासी करोड़ पचास लाख डालर
१९४८-५०	"	एक अरब एक करोड़ पचास लाख डालर
१९५०-५१	"	एक अरब अट्ठारह करोड़ साठ लाख डालर

जरमनी को फिर से उठाने के लिये जो यह तजवीज़ें की जा रही हैं वह आसान नहीं हैं. इन तजवीज़ों को काम में लाने के लिये न सिर्फ़ उन सोलह देशों के ज़ोरदार सहयोग की ज़रूरत है ब दूसरी बड़ी और छोटी ताक़तों की दिली रज़ामन्दी

بنانے کے لئے جو جو ترکیبیں کی جا رہی ہیں اُن سے امریکا کا کوئی تعلق نہیں ہے۔ اِس دستاویز کے مطابق جرمنی کو چار سال میں پھر سے طاقتور بنایا جا سکتا ہے۔

اُسی چٹھی میں یہ سُجھایا گیا ہے کہ جرمنی کے اینگلو امریکی علاقے میں فولاد کی پیداوار بڑھائی جاوے۔ ۱۹۴۷ء میں یہ پیداوار ستائیس لاکھ پچاس ہزار ٹن ہوگی۔ اب یہ تجویز ہے کہ ۱۹۵۱ء تک اس کو بڑھاکر ایک کروڑ ٹن کر لیا جاوے۔ تب روس کو چھوڑکر سارے یورپ میں فولاد کی پیداوار جرمنی میں سب سے زیادہ ہوگی۔ کوئلے کی پیداوار بھی بڑھائی جائے گی۔ ۱۹۴۶ء میں یہ پانچ کروڑ ترپن لاکھ ٹن تھی ۱۹۵۱ء تک اسے بڑھا کر ۱۲ کروڑ ۱۰ لاکھ ٹن کر لیا جائے گا۔ اُسی چٹھی میں بتایا گیا ہے کہ ان چار برس میں جرمنی کو امریکا ہر طرح کی مالی مدد دے۔ ایسا اندازہ لگایا گیا ہے کہ کھانے اور کھیتی سمبندھ میں امریکا نیچے لکھے ہوئے حساب سے جرمنی کی مدد کرے گا۔

۱۹۴۷-۴۸	میں	اٹھتر کروڑ بیس لاکھ ڈالر
۱۹۴۸-۴۹	"	ستاسی کروڑ پچاس لاکھ ڈالر
۱۹۴۹-۵۰	"	ایک ارب ایک کروڑ پچاس لاکھ ڈالر
۱۹۵۰-۵۱	"	ایک ارب اٹھارہ کروڑ ساٹھ لاکھ ڈالر

جرمنی کو پھر سے اُٹھانے کے لئے جو یہ تجویزیں کی جا رہی ہیں وہ آسان نہیں ہیں۔ اِن تجویزوں کو کام میں لانے کے لئے نہ صرف اُن سولہ دیشوں کے زوردار سہیوگ کی ضرورت ہے بلکہ تمام دوسری بڑی اور چھوٹی طاقتوں کی دلی رضامندی

की भी ज़रूरत है. ताक़तवर नाज़ी जरमनी के ख़याल से फ्रांस अभी से डरता है और बर्तानिया भी जल्दी या देर में इस ख़तरे को महसूस कर लेगा हालाँ कि इस वक़्त बर्तानिया और फ्रांस दोनों जरमनी को फिर से उठाने की अमरीकी तजवीज़ का साथ दे रहे हैं. एंग्लो अमरीकन साम्राजवादी डाकू इस तजवीज़ को ख़ास तौर से पूरबी योरप के मुल्कों और रूस पर लादना चाहते हैं.

चोर अदालत की तय्यारियां—

एंग्लो अमरीकन साम्राजवादी डाकू अपनी तजवीज़ों को दुनिया के हर एक देश पर लादने की तरकीबें किया करते हैं यानी सारी दुनिया पर अपना सिक्का जमाना, नाज़ी जरमनी और तानाशाह जापान को फिर से उठाना और बढ़ाना और फिर रूस पर चढ़ाई करके उसे बरबाद करने के लिये यू० एन० ओ० की सिक्योरिटी काउन्सिल के ऊपर एक अलग कमेटी बनाना वग़ैरा. इस तरह की एक कमेटी बनाने की तजवीज़ अमरीका के सेक्रेटरी आफ़ स्टेट जार्ज मारशल ने बनाई है. ऐसी कमेटी बनाना यू० एन० ओ० चारटर के बिल्कुल ख़िलाफ़ है. पहले इस कमेटी को 'अमन और हिफ़ाज़त की बिच वक़्ती कमेटी' कहा गया. अब इसे सिर्फ़ 'बिचवक़्ती कमेटी' (Interim committee) कहा जाता है.

सिक्योरिटी काउन्सिल तो किसी काम को करने के लिये 'सबके एक राय होने' के असूल से बँधी है पर 'बिचवक़्ती कमेटी' के

کی بھی ضرورت ہے. طاقتور نازی جرمنی کے خیال سے فرانس ابھی سے ڈرتا ہے اور برطانیہ بھی جلدی یا دیر میں اس خطرے کو محسوس کرلےگا حالانکہ اس وقت برطانیہ اور فرانس دونوں جرمنی کو پھر سے اُٹھانے کی امریکی تجویز کا ساتھ دے رہے ہیں. اینگلو امریکن سامراج وادی ڈاکو اس تجویز کو خاص طور سے پوربی یورپ کے ملکوں اور روس پر لادنا چاہتے ہیں.

چور عدالت کی تیاریاں—

اینگلو امریکن سامراج وادی ڈاکو اپنی تجویزوں کو دُنیا کے ہرایک دیش پر لادنے کی ترکیبیں کیا کرتے ہیں یعنی ساری دُنیا پر اپنا سکّہ جمانا، نازی جرمنی اور تاناشاہ جاپان کو پھر سے اُٹھانا اور بڑھانا اور پھر روس پر چڑھائی کرکے اُسے برباد کرنے کے لئے یو. این. او. کی سکیوریٹی کاؤنسل کے اوپر ایک الگ کمیٹی بنانا وغیرہ. اِس طرح کی ایک کمیٹی بنانے کی تجویز امریکا کے سکریٹری آف اسٹیٹ جارج مارشل نے بنائی ہے. ایسی کمیٹی بنانا یو. این. او. چارٹر کے بالکل خلاف ہے. پہلے اس کمیٹی کو 'امن اور حفاظت کی بیچ وقتی کمیٹی' کہا گیا. اب اِسے صرف 'بیچ وقتی کمیٹی' (Interim Committee) کہا جاتا ہے.

سکیوریٹی کاؤنسل تو کسی کام کو کرنے کے لئے 'سب کے ایک رائے ہونے' کے اصول سے بندھی ہے پر 'بیچ وقتی کمیٹی' کے

लिये ऐसी कोई रोक न रहेगी. ऐसी तजवीज़ हो रही है कि अभी इस कमेटी को एक साल के लिये क़ायम किया जाए और फिर बाद में उसे मुस्तक़िल कर दिया जाए. बुराई इस चीज़ में इतनी नहीं है कि सब देशों को इस कमेटी की तय की हुई बातों को मानना ही पड़ेगा बल्कि बुराई इस बात में है कि सब तय की हुई बातें ऐसी होंगी जिसकी वजह से अंग्रेज़ और अमरीका वालों के डाके मारने जायज़ समझे जा सकें.

अंग्रेज़ी और अमरीकी अखबारी दुनिया के भले मानस लम्बी लम्बी जीभ निकाल कर एक तरफ़ तो यह साबित करना चाहते हैं कि सब एक राय यानी सर्वसम्मति ही का दूसरा नाम 'वीटो पावर' है और दूसरी तरफ़ 'वीटो पावर' को बुरा कह कर उसे हटाना भी चाहते हैं. असल में वीटो पावर ही एक ऐसा असूल है जिससे सिक्योरिटी काउन्सिल में ठीक ठीक इनसाफ़ हो सकता है, बड़ी ताकतें बेलाग रह सकती हैं और बड़ी ताक़तों में एका भी बना रह सकता है. यही असूल यू० एन० ओ० को किसी बड़ी ताक़त या किसी ताक़तों की जमात का हथियार बनने से रोकता है. यू० एन० ओ० के चार्टर के मुताबिक़ ऐसे सब सवालों का फ़ैसला, जिनका सम्बन्ध अमन क़ायम रखने से है या जिनका ताल्लुक़ पाँच बड़ी ताक़तों से है, सिक्योरिटी काउन्सिल के ज़रिये सबकी रज़ामन्दी से होना चाहिये.

कामरेड मोलोटोव ने पिछले साल सितम्बर में कहा था कि 'यह वीटो का असूल ऐसी हालत पैदा होने से रोकता है जब कि दो, तीन या चार ताक़तें भी आपस में मिल कर किसी एक पर या

لئے ایسی کوئی روک نہ رہے گی۔ ایسی تجویز ہو رہی ہے کہ ابھی اِس کمیٹی کو ایک سال کے لئے قایم کیا جائے اور پھر بعد میں اُسے مستقل کر دیا جائے۔ بُرائی اِس چیز میں اتنی نہیں ہے کہ سب دیشوں کو اِس کمیٹی کی طے کی ہوئی باتوں کو ماننا ہی پڑے گا بلکہ بُرائی اِس بات میں ہے کہ سب طے کی ہوئی باتیں ایسی ہوں گی جس کی وجہ سے انگریز اور امریکا والوں کے ڈاکے مارنے جایز سمجھے جا سکیں۔

انگریزی اور امریکی اخباری دُنیا کے بھلے مانس لمبی لمبی جیبھ نکال کر ایک طرف تو یہ ثابت کرنا چاہتے ہیں کہ سب ایک رائے یعنی سروسمتی ہی کا دوسرا نام 'ویٹو پاور' ہے اور دوسری طرف ویٹو پاور کو بُرا کہہ کر اُسے ہٹانا بھی چاہتے ہیں۔ اصل میں ویٹو پاور ہی ایک ایسا اصول ہے جس سے سکیورٹی کاؤنسل میں ٹھیک ٹھیک انصاف ہو سکتا ہے، بڑی طاقتیں بےلاگ رہ سکتی ہیں اور بڑی طاقتوں میں ایکا بھی بنا رہ سکتا ہے۔ یہی اصول یو۔ این۔ او۔ کو کسی بڑی طاقت یا کسی طاقتوں کی جماعت کا ہتھیار بننے سے روکتا ہے۔ یو۔ این۔ او۔ کے چارٹر مطابق ایسے سب سوالوں کا فیصلہ، جن کا سمبندھ امن قایم رکھنے سے ہے یا جن کا تعلق پانچ بڑی طاقتوں سے ہے، سکیورٹی کاؤنسل کے ذریعے سب کی رضامندی سے ہونا چاہئے۔

کامریڈ مولوٹوو نے پچھلے سال ستمبر میں کہا تھا کہ یہ ویٹو کا اصول ایسی حالت پیدا ہونے سے روکتا ہے جب کہ دو، تین یا چار طاقتیں بھی آپس میں مل کر کسی ایک پر یا

बड़ी पाँच ताक़तों में से किसी पर हमला कर सकें................ ताकतों को एक दूसरे के ख़िलाफ़ साज़िश करने से रोकता है, यह असूल बिला शक यूनाइटेड नेशन्स के भले के लिये है और इसके ज़रिये हर तरफ़ अमन रक्खा जा सकता है.......................

........सुलहकुन मुल्कों के भले के ख़िलाफ़ और उनके पीठ पीछे अगर कोई ताक़त किसी भी हमलावर ताक़त से समझौता करना चाहे तो यह असूल उसे ऐसा करने से रोकेगा."

चिराग़ ले सूरज की तलाश में—

क्या यही एक ऐसी अड़चन है जो एंग्लो अमरीकन डाकुओं को इस बात से रोकती है कि वह सिक्योरिटी काउन्सिल को 'चोरों की अदालत' की तरह इस्तेमाल करें और सच्चे, अमन पसन्द देशों को बुरा भला कहें और उन्हें लूटें? कामरेड मोलोटोव ने पिछले साल सितम्बर में कहा था कि "यह ठीक है कि सिर्फ़ 'वीटो पावर' ही ऐसी चीज़ नहीं है जो हमारे आपस के कुल झगड़ों का इलाज हो. पार्टीबन्दी और दलबन्दी तो हमेशा रहेंगी. फिर भी जहाँ तक दूसरे मुल्कों की हिफ़ाज़त का सवाल है 'वीटो पावर' का असूल एक ख़ास अहमियत रखता है. वह ऐसी बुनियाद डालता है जिसमें कि, हज़ारों दिक़्क़तें होने पर भी, अलग अलग ताक़तें आपस में मिल कर काम कर सकें."

'वीटोपावर' ने एंग्लो अमरीकन डाकुओं को सिक्योरिटी काउन्सिल के ज़रिये अपनी नापाक हरकतों को करने से तो रोका

بڑی پانچ طاقتوں میں سے کسی پر حملہ کر سکیں........ طاقتوں کو ایک دوسرے کے خلاف سازش کرنے سے روکتا ہے، یہ اصول بلاشک یونائیٹڈ نیشنس کے بھلے کے لئے ہے اور اس کے ذریعے ہر طرف امن رکھا جا سکتا ہے..........

.... صلح کن ملکوں کے بھلے کے خلاف اور اُن کے پیٹھ پیچھے اگر کوئی طاقت کسی بھی حملہ آور طاقت سے سمجھوتا کرنا چاہے تو یہ اُصول اُسے ایسا کرنے سے روکے گا۔"

چراغ لے سورج کی تلاش میں—

کیا یہی ایک ایسی اڑچن ہے جو اینگلو امریکن ڈاکوؤں کو اس بات سے روکتی ہے کہ وہ سکیورِیٹی کاؤنسل کو 'چوروں کی عدالت' کی طرح استعمال کریں اور سچے، امن پسند دیشوں کو بُرا بھلا کہیں اور اُنھیں لوٹیں؟ کامریڈ مولوٹوو نے پچھلے سال ستمبر میں کہا تھا کہ "یہ ٹھیک ہے کہ صرف 'ویٹو پاور' ہی ایسی چیز نہیں ہے جو ہمارے آپس کے کُل جھگڑوں کا علاج ہو۔ پارٹی بندی اور دَل بندی تو ہمیشہ رہیں گی۔ پھر بھی جہاں تک دوسرے ملکوں کی حفاظت کا سوال ہے 'ویٹو پاور' کا اصول ایک خاص اہمیت رکھتا ہے۔ وہ ایسی بنیاد ڈالتا ہے جس میں کہ، ہزاروں دقتیں ہونے پر بھی، الگ الگ طاقتیں آپس میں مل کر کام کر سکیں۔"

'ویٹو پاور' نے اینگلو امریکن ڈاکوؤں کو سکیورٹی کاؤنسل کے ذریعے اپنی ناپاک حرکتوں کو کرنے سے تو روکا ہے لیکن خود سکیورٹی کاؤنسل کو ختم کرنے اور اپنے

एक नई 'चोरों की अदालत' बनाने से वह इन्हें नहीं रोक सकता.

आइये अब हम देखें कि सारी दुनिया को अपने पंजे में जकड़ने की इनकी (एंग्लो अमरीका की) इस नापाक कोशिश में हिन्दुस्तान का क्या हिस्सा है.

इन्डिया के नुमाइन्दे श्रीमती विजयलक्ष्मी पंडित ने इस बारे में जो रुख अख्तियार किया है उससे साफ़ जाहिर है कि हिन्दुस्तान अँगरेजी साम्राजशाही का महज एक दुमछल्ला है. इस सिलसिले में ब्राडकास्ट करते हुए श्रीमती पंडित ने कहा है कि "मैं यह महसूस करती हूँ कि अपने अन्दर के तमाम झगड़ों के बावजूद यूनाइटेड नेशन्स ठीक रास्ते पर जा रहा है."

यह तो बिलकुल यही कहना हुआ कि "रूस के तमाम विरोध के बावजूद यू० एन० ओ० ठीक रास्ते पर जा रहा है. रूस की कुछ परवाह न करो." यू. एन. ओ. की बड़ी असेम्बली में १९ सितम्बर को श्रीमती पंडित ने खुद कहा—"इस 'वीटो पावर' का बेक़ायदा इस्तेमाल उतना ही बेजा है जितना कि किसी भी ताक़त का ग़लत इस्तेमाल करना." दूसरे लफ़्ज़ों में बड़ी बड़ी ताक़तों के बीच लाज़मी एकता बेजा है—उन्हें अपने फ़ायदे के लिये अलग अलग पार्टियों में बटने दो ! श्रीमती पंडित ने कहा कि—"हम शान्ति बनाए रखना चाहते हैं. हम अपनी सारी ताक़त उन कारनों को हटा देने में लगा देंगे जिनकी वजह से लड़ाइयाँ होती हैं. जो मुल्क इस मक़सद को सामने रख कर काम करेंगे उनसे हम पूरी तरह सहयोग करेंगे......................अगर हम इस भावना से यू० [illegible] हैं तो

ایک نئی 'چوروں کی عدالت' بنانے سے وہ انھیں نہیں روک سکتا.

آیئے اب ہم دیکھیں کہ ساری دُنیا کو اپنے پنجے میں جکڑنے کی ان کی (اینگلو امریکا کی) اس ناپاک کوشش میں ہندستان کا کیا حصہ ہے.

انڈیا کے نمائندے شریمتی وجے لکشمی پنڈت نے اس بارے میں جو رخ اختیار کیا ہے اُس سے صاف ظاہر ہے کہ ہندستان انگریزی سامراج شاہی کا محض ایک دُم چھلا ہے. اس سلسلے میں براڈکاسٹ کرتے ہوئے شریمتی پنڈت نے کہا ہے کہ "میں یہ محسوس کرتی ہوں کہ اپنے اندر کے تمام جھگڑوں کے باوجود یونائیٹڈ نیشنس ٹھیک راستے پر جا رہا ہے."

یہ تو بالکل یہی کہنا ہوا کہ "روس کے تمام ورودھ کے باوجود یو. این. او. ٹھیک راستے پر جا رہا ہے. روس کی کچھ پرواہ نہ کرو." یو. این. او. کی بڑی اسمبلی میں ۱۹ ستمبر کو شریمتی پنڈت نے خود کہا— "اس 'ویٹو پاور' کا بے قاعدہ استعمال اُتنا ہی بے جا ہے جتنا کہ کسی بھی طاقت کا غلط استعمال کرنا." دوسرے لفظوں میں بڑی بڑی طاقتوں کے بیچ لازمی ایکتا بے جا ہے— اُنھیں اپنے فائدے کے لئے الگ الگ پارٹیوں میں بٹنے دو! شریمتی پنڈت نے کہا کہ— "ہم شانتی بنائے رکھنا چاہتے ہیں. ہم اپنی ساری طاقت اُن کارنوں کو ہٹا دینے میں لگا دیں گے جن کی وجہ سے لڑائیاں ہوتی ہیں. جو ملک اس مقصد کو سامنے رکھ کر کام کریں گے اُن سے ہم پوری طرح سہیوگ کریں گے....... اگر ہم اس بھاونا سے یو. این. او. چارٹر پر عمل کرنے کے لئے تیار نہیں ہیں تو

मुझे डर है कि किसी शब्द का इधर से उधर बदलना या किसी क़ायदे का घटाना या बढ़ाना........................"

साफ़ ज़ाहिर है कि इन्दिया के नुमाइन्दे को यू० एन० ओ० चारटर की क़ानूनी अहमियत से कोई दिलचस्पी नहीं है. उन्होंने यह साबित कर दिया कि यू० एन० ओ० चारटर में बदलाव किया जा सकता है और अगर इस तरह का कोई बदलाव किया गया तो वह उसका समर्थन करेंगी और इस बारे में दूसरे से सहयोग करेंगी क्यों कि उनके ख़याल में ऐसा करने से अमन क़ायम रहेगा. अब फ़ैसला यह करना है कि क्या बर्तानिया और अमरीका का यू० एन० ओ० सिक्योरिटी काउन्सिल को हटा कर उसकी जगह ख़ुद अपनी 'चोरों की अदालत' क़ायम करना और इस तरह सारी दुनिया को अपने पंजे मे जकड़ना, श्रीमती पंडित के ख़याल से, दुनिया में अमन क़ायम करने में मदद देगा ? श्रीमती पंडित ने इस तरह से कहा तो नहीं पर उन्होंने 'वीटोपावर' के बेक़ायदा इस्तेमाल की कड़ी निन्दा की और जब वोट देने का वक़्त आया तो उन्होंने एंग्लो अमरीकन साम्राजवादी डाकुओं की तरफ़ वोट दिया.

श्रीमती पंडित को विश्वास है कि इस तरह दुनिया में अमन क़ायम रहेगा ! उन्होंने चिराग़ लेकर सूरज को ढूँढने की कोशिश की और आख़िर उसे पालिया !

مجھے ڈر ہو کہ کسی شبد کا اِدھر سے اُدھر بدلنا یا کسی قاعدے کا گھٹانا یا بڑھانا........"

صاف ظاہر ہو کہ اِندیا کے نمائندے کو یو. این. او. چارٹر کی قانونی اہمیت سے کوئی دلچسپی نہیں ہو. اُنھوں نے یہ ثابت کر دیا کہ یو. این. او. چارٹر میں بدلاؤ کیا جاسکتا ہو اور اگر اِس طرح کا کوئی بدلاؤ کیا گیا تو وہ اُس کا سمرتھن کرینگی اور اِس بارے میں دوسرے سے سہیوگ کریں گی کیونکہ اُن کے خیال میں ایسا کرنے سے امن قایم رہے گا. اب فیصلہ یہ کرنا ہو کہ کیا برطانیہ اور امریکا کا یو. این. او. سکیوریٹی کونسل کو ہٹاکر اُس کی جگہ خود اپنی 'چوروں کی عدالت' قایم کرنا اور اِس طرح ساری دُنیا کو اپنے پنجے میں جکڑنا، شریمتی پنڈت کے خیال سے دُنیا میں امن قایم کرنے میں مدد دے گا؟ شریمتی پنڈت نے اِس طرح سے کہا تو نہیں پر اُنھوں نے 'ویٹو پاور' کے بے قاعدہ استعمال کی کڑی نندا کی. اور جب ووٹ دینے کا وقت آیا تو اُنھوں نے اینگلو امریکن سامراج وادی ڈاکوؤں کی طرف ووٹ دیا.

شریمتی پنڈت کو وشواس ہو کہ اِس طرح دُنیا میں امن قایم رہے گا! اُنھوں نے چراغ لے کر سورج کو ڈھونڈھنے کی کوشش کی اور آخر اُسے پالیا!

कुछ किताबें

झरोखे—

किताब का नाम तो बड़ा प्यारा है. पर किताब के अन्दर जो कुछ है उसके लिहाज से यह नाम हलका पड़ता है. और इस लिये हम इसकी तरफ़ नाम से नहीं खिंचे. पर नीचे सुदर्शन जी का नाम देख कर हमने बहुत सी किताबों में से पहले इसी को लिया. तबियत ख़ुश हो गई. हिन्दुस्तानी यानी हिन्दी में ऐसी किताबें बहुत ही कम हैं. और यह तो अपने ढंग की अकेली ही है. इस किताब को अगर उपनिषद, पंचतंत्र और शेख़ सादी की गुलिस्तां का निचोड़ कहा जाय तो बेजा न होगा. किताब है तो कुल अस्सी सफ़े की, हज़ार ग्यारह सौ से ज़्यादा लाइने भी नहीं हैं. एक बैठक में आसानी से पढ़ी जा सकती है. पर हमारी राय में उनको सैंतीस बैठकों में पढ़ना चाहिये क्योंकि इसमें सैंतीस झांकियां हैं. और एक एक झांकी के बाद विचार करने की ज़रूरत पड़ती ही है. इसको बच्चे पढ़ जायं, कोई हर्ज नहीं. यह ठीक है कि वह इसमें से कुछ न ले पाएंगे. जवान पढ़ जायं तो उन्हें लुत्फ़ मिलेगा. अधेड़ों के यह काम की चीज़ है. उन्हें उसमें काफ़ी सबक़ मिलेंगे. यह किताब सिर्फ़ दिल ही ख़ुश नहीं करती गहरा आत्मानन्द देती है.

इसका मोल है डेढ़ रुपया, लिखावट नागरी, और मिलती है हिन्द किताब्स लिमिटेड, २६१—२६३ हार्नबी रोड बम्बई से.

—भगवानदीन

کچھ کتابیں

جھروکھے—

کتاب کا نام تو بڑا پیارا ہے. پر کتاب کے اندر جو کچھ ہے اس کے لحاظ سے یہ نام ہلکا پڑتا ہے. اور اس لئے ہم اس کی طرف نام سے نہیں کھنچے. پر نیچے سدرشن جی کا نام دیکھ کر ہم نے بہت سی کتابوں میں سے پہلے اسی کو لیا. طبیعت خوش ہوگئی. ہندستانی یعنی ہندی میں ایسی کتابیں بہت ہی کم ہیں. اور یہ تو اپنے ڈھنگ کی اکیلی ہی ہے. اس کتاب کو اگر اپنشد، پنچتنتر اور شیخ سعدی کی گلستاں کا نچوڑ کہا جائے تو بے جا نہ ہوگا. کتاب ہے تو کل اسی صفحے کی، ہزار گیارہ سو سے زیادہ لائنیں بھی نہیں ہیں. ایک بیٹھک میں آسانی سے پڑھی جاسکتی ہے. پر ہماری رائے میں ان کو سینتیس بیٹھکوں میں پڑھنا چاہیئے کیونکہ اس میں سینتیس جھانکیاں ہیں. اور ایک ایک جھانکی کے بعد وچار کرنے کی ضرورت پڑتی ہی ہے. اس کو بچے پڑھ جائیں، کوئی ہرج نہیں. یہ ٹھیک ہے کہ وہ اس میں سے کچھ نہ لے پائینگے. جوان پڑھ جائیں تو انھیں لطف ملے گا. ادھیڑوں کے یہ کام کی چیز ہے. انھیں اس میں کافی سبق ملیں گے. یہ کتاب صرف دل ہی خوش نہیں کرتی گہرا آتمانند دیتی ہے.

اس کا مول ہے ڈیڑھ روپیہ، لکھاوٹ ناگری، اور ملتی ہے ہند کتابس لمیٹیڈ، ۲۶۱—۲۶۳ ہارنبی روڈ بمبئی سے.

—بھگوان دین

खटपट लाल—

यह किताब बच्चों के लिये लिखी गई है. लिखने वाले हैं सुदर्शन जी. इसमें बारह कहानियां हैं. बच्चे इसको जरूर मन लगाकर पढ़ेंगे क्योंकि बोली इसकी वही है जो बोल चाल में है. और यह उस तरह लिखी गई है मानो नानी कहानी कह रही है और कोई बैठा ज्यों का त्यों उसको लिख रहा है.

यह ९४ सफ़े की किताब है. दाम डेढ़ रुपए. लिखावट नागरी. मिलने का पता—हिन्द किताब्स लिमिटेड २६१—२६३ हार्नबी रोड, बम्बई.

नोआखाली में— लिखने वाले श्री सियाराम शरण गुप्त, सफ़े ५२, क़ीमत आठ आने, लिखावट नागरी. पता—साहित्य-सदन, चिरगाँव (झाँसी)

इस किताब के लिखने वाले श्री सियाराम शरण जी गुप्त हिन्दुस्तान के मशहूर कवि हैं. नोआखाली के दर्दनाक कान्डों से गुप्त जी को बहुत दुख हुआ. जैसा कि आपने इस किताब में "दो शब्द" में लिखा है, आपकी भी तबियत नोआखाली जाने की थी मगर तन्दुरुस्ती ठीक न होने की वजह से लाचार थे. उसी समय आपने यू. पी. के तालीम के महकमें के मिनिस्टर श्री सम्पूर्णानन्द जी का नोआखाली के ऊपर एक लेक्चर सुना. इसी बुनियाद पर आपने अपने खयालातों को इस किताब की शकल दी. किताब कविताओं (नज़्मों) में लिखी है.

इसमें कुल ग्यारह कविताएँ हैं. कुछ कविताएँ तो इतनी जानदार और बोलती हुई हैं कि उन्हे पढ़ कर नोआखाली के नज़ारे आखों के सामने नाच उठते हैं.

کھٹ پٹ لال—

یہ کتاب بچّوں کے لئے لکھی گئی ہے. لکھنے والے ہیں سُدرشن جی. اِس میں بارہ کہانیاں ہیں. بچّے اِس کو ضرور من لگاکر پڑھیں گے کیونکہ بولی اِس کی وہی ہے جو بول چال میں ہے. اور یہ اُس طرح لکھی گئی ہے مانو نانی کہانی کہہ رہی ہے اور کوئی بیٹھا جیوں کا تیوں اُس کو لکھ رہا ہے.

یہ ۹۴ صفحے کی کتاب ہے. دام ڈیڑھ روپئے. لکھاوٹ ناگری. ملنے کا پتہ — ہند کتابس لمٹیڈ ۲۶۱—۲۶۳ ہارنبی روڈ، بمبئی.

نواکھالی میں— لکھنے والے شری سیارام شرن گپت، صفحے ۵۲، قیمت آٹھ آنے، لکھاوٹ ناگری. پتہ— ساہتیہ۔سدن، چرگانوں (جھانسی)

اِس کتاب کے لکھنے والے شری سیارام شرن جی گپت ہندستان کے مشہور کوی ہیں. نواکھالی کے دردناک کانڈوں سے گپت جی کو بہت دُکھ ہوا. جیسا کہ آپ نے اِس کتاب میں "دو شبد" میں لکھا ہے، آپ کی بھی طبیعت نواکھالی جانے کی تھی مگر تندرستی ٹھیک نہ ہونے کی وجہ سے لاچار تھے. اُسی سمے آپ نے یو. پی. کے تعلیم کے محکمے کے منسٹر شری سمپورنانند جی کا نواکھالی کے اوپر ایک لیکچر سُنا. اِسی بُنیاد پر آپ نے اپنے خیالاتوں کو اِس کتاب کی شکل دی. کتاب کویتاؤں (نظموں) میں لکھی ہے.

اِس میں کُل گیارہ کویتائیں ہیں. کچھ کویتائیں تو اِتنی جاندار اور بولتی ہوئی ہیں کہ اُنھیں پڑھ کر نواکھالی کے نظارے آنکھوں کے سامنے ناچ اُٹھتے ہیں.

किताब के शुरू में ही लेखक के बड़े भाई भारत के महान कवि श्री मैथिली शरण गुप्त की एक कविता है जिसका एक बन्द यहाँ दिया जाता है—

सुख से रहना है तो सबको, मिल जुल कर रहना होगा.
हमें तुम्हारा, तुम्हें हमारा, दुख स्वयं सहना होगा.
सदा शान्ति से सुनना होगा, संयम से कहना होगा.
बन्धु-मिलन के गले उलहना, एक बड़ा गहना होगा.

किताब में "रमजानी" नाम की कविता बहुत अच्छी है. बेचारे बूढ़े रमजानी मियाँ सारा दिन हिन्दू मुसलमान बच्चों में घुल मिल कर बच्चों का जी बहलाते थे मगर आपस की फूट और नफ़रत की वजह से हिन्दू बच्चे उनसे कटे कटे फिरने लगे और गांव के हिन्दू उन पर शक करने लगे. रमजानी अकेले पड़ गए और इसका उन्हें बड़ा दुख हुआ. "पाक—कलाम" नाम की कविता में .फौज की रखवाली में गांधी जी का 'नोआखाली सफ़र' को सुन कर बूढ़े कासिम को बड़ा दुख होता है और वह अपने बेटे से कहता है—

बेटा कह अपने वज़ीर से
गांधी की रखवाली में,
.ग़ैरत है जो भेज रहे हो
फौजी नोआखाली में,
फौज बड़ी या दीन बड़ा है ?
.फौजें करती हैं बदनाम
तुम्हें भेजना ही हो कुछ तो
भेजो अपना पाक-कलाम.

کتاب کے شروع میں ہی لیکھک کے بڑے بھائی بھارت کے مہان کوی شری میتھلی شرن گپت کی ایک کویتا ہے جس کا ایک بند یہاں دیا جاتا ہے—

سُکھ سے رہنا ہے تو سب کو، مِل جُل کر رہنا ہوگا.
ہمیں تمھارا، تمھیں ہمارا، دُکھ سویم سہنا ہوگا.
سدا شانتی سے سُننا ہوگا، سنیم سے کہنا ہوگا.
بندھو۔ مِلن کے گلے اُلہنا، ایک بڑا گہنا ہوگا.

کتاب میں "رمجانی" نام کی کویتا بہت اچھی ہے. بیچارے بوڑھے رمجانی میاں سارا دن ہندو مسلمان بچّوں میں گھُل مِل کر بچّوں کا جی بہلاتے تھے مگر آپس کی پھوٹ اور نفرت کی وجہ سے ہندو بچے اُن سے کٹے کٹے پھرنے لگے اور گاؤں کے ہندو اُن پر شک کرنے لگے. رمجانی اکیلے پڑ گئے اور اس کا انھیں بڑا دُکھ ہوا. "پاک — کلام" نام کی کویتا میں فوج کی رکھوالی میں گاندھی جی کا 'نواکھالی سفر' کو سُن کر بوڑھے قاسم کو بڑا دُکھ ہوتا ہے اور وہ اپنے بیٹے سے کہتا ہے—

بیٹا کہہ اپنے وزیر سے
گاندھی کی رکھوالی میں،
غیرت ہے جو بھیج رہے ہو
فوجی نواکھالی میں،
فوج بڑی یا دین بڑا ہے؟
فوجیں کرتی ہیں بدنام
تمھیں بھیجنا ہی ہو کچھ تو
بھیجو اپنا پاک ـ کلام.

नोआखाली का जवाब बिहार वालों ने दिया. उसी पर इशारा करते हुए "बिहार के प्रति" नाम की कविता में लिखा है—"अनल अनल से, बैर बैर से बुझता नहीं कदापि." सच है आग से आग नहीं बुझती, दुशमनी से दुशमनी नहीं मिटती. "नोआखाली में" नाम की कविता में एक ऐसे गांव की तस्वीर उतारी गई है जो जला कर बरबाद कर दिया गया है. जहाँ लाशें इधर उधर पड़ी हुई हैं. जहाँ एक अजीब सी डरावनी और दर्द भरी समां छाई हुई है.

सभी कविताएं बहुत सुन्दर हैं. गुप्त जी अपनी कोशिश में बहुत सफल हुए हैं.

——गनेश प्रसाद

प्रारंभिक रचनाएँ (तीसरा भाग कहानियाँ)——

लिखने वाले श्री 'बच्चन', सफ़े १७१, क़ीमत दो रुपए, लिखावट नागरी, पता-भारती—भंडार, लीडर प्रेस, इलाहाबाद.

हिन्दुस्तान के मशहूर कवि श्री हरिवंश राय जी 'बच्चन' को सभी अच्छी तरह जानते हैं. साहित्यिक (अदबी) दुनियाँ में उन्होंने पहले एक कहानी लेखक की हैसियत से ही क़दम रक्खा था, कवि के रूप में नहीं. कवि तो वह बाद में हुए. इस किताब में उन्हीं की शुरू शुरू में लिखी हुई बारह कहानियाँ दी हुई हैं. कहानियां सभी मज़ेदार हैं. कुछ कहानियाँ जैसे "माता और मातृभूमि", "उऋण" और "ठाकुर जी" ऊँचे और सुन्दर भावों से भरी हुई हैं.

"माता और मातृ भूमि" में उमर की माँ अंजुमन की कुर्बानी

نواکھالی کا جواب بہار والوں نے دیا۔ اُسی پر اشارہ کرتے ہوئے "بہار کے پرتی" نام کی کویتا میں لکھا ہے—"انل انل سے، بیر بیر سے بجھتا نہیں کدانی۔" سچ ہے آگ سے آگ نہیں بجھتی، دشمنی سے دشمنی نہیں مٹتی۔ "نواکھالی میں" نام کی کویتا میں ایک ایسے گاؤں کی تصویر اُتاری گئی ہے جو جلاکر برباد کردیا گیا ہے۔ جہاں لاشیں اِدھر اُدھر پڑی ہوئی ہیں۔ جہاں ایک عجیب سی ڈراونی اور درد بھری سماں چھائی ہوئی ہے۔

سبھی کویتائیں بہت سُندر ہیں۔ گپت جی اپنی کوشش میں بہت سپھل ہوئے ہیں۔

—گنیش پرساد

(۵۰۶)

پرارمبھک رچنائیں (تیسرا بھاگ کہانیاں)——

لکھنے والے شری 'بچن'، صفحے ۱۷۱، قیمت دو روپئے، لکھاوٹ ناگری، پتہ۔ بھارتی — بھنڈار، لیڈر پریس، الہ آباد۔

ہندستان کے مشہور کوی شری ہرونس رائے جی 'بچن' کو سبھی اچھی طرح جانتے ہیں۔ ساہتیک (ادبی) دنیا میں اُنھوں نے پہلے ایک کہانی لیکھک کی حیثیت سے ہی قدم رکھا تھا، کوی کے روپ میں نہیں۔ کوی تو وہ بعد میں ہوئے۔ اِس کتاب میں اُنھیں کی شروع شروع میں لکھی ہوئی بارہ کہانیاں دی ہوئی ہیں۔ کہانیاں سبھی مزے دار ہیں۔ کچھ کہانیاں جیسے "ماتا اور ماترِبھومی"، "اُورِن" اور "ٹھاکر جی" اونچے اور سُندر بھاؤں سے بھری ہوئی ہیں۔

"ماتا اور ماترِبھومی" میں عمر کی ماں انجمن کی قربانی اونچے

प्रेम का अच्छा आदर्श दिखाया है.

"चुन्नी मुन्नी" बहुत अच्छी कहानी है. सिर्फ़ चौदह सतरों की बहुत ही छोटी कहानी को लेखक ने खूब निबाहा है.

किताब की जबान बहुत आसान और रोजमर्रा के बोल चाल की है. इससे कहानियाँ और भी रसीली हो जाती हैं.

——गनेश प्रसाद

प्रेम तरंग उर्फ़ तरानए उल्फ़त (हिस्सा दोयं)—

लेखक—श्री काशी राम चावला, सफ़े २७२, क़ीमत बारह आने, लिखावट उरदू, पता—श्री कांशो राम चावला, फ़िरोज़पूर.

श्री कांशी राम जी चावला के "प्रेम तरंग उर्फ़ तराने उल्फ़त (हिस्सा अव्वल) का रिव्यू "नया हिन्द" के जून '४७ के अंक में शाया हो चुका है. उसी किताब का यह दूसरा हिस्सा भी उसी सिलसिले में हमें मजहब का सच्चा रास्ता दिखाने की कोशिश करता है.

किताब बाईस अध्यायों में बटी है, जैसे—सब का खालिक एक है, एक ही मालिक का जल्वा सबके अन्दर, सबसे मुहब्बत करो, खिदमते मख़लूक़ से खालिक़ राज़ी होता है, नेक आमाल ही काम आएँगे, निफ़ाक़ न पैदा करो, नफ़रत से नफ़रत करो वग़ैरा वग़ैरा. हर अध्याय में दुनिया के सभी मजहबों, मजहबी लीडरों, मशहूर लेखकों और शायरों की उम्दा नसीहतों और चुने चुने जुमलों को देकर लेखक ने किताब में यह दिखाने की कोशिश की है कि मजहब आपस में दुश्मनी और नफ़रत करना नहीं सिखाता

پریم کا اچھا آدرش دکھایا ہے۔

"چنّی منّی" بہت اچھی کہانی ہے۔ صرف چودہ سطروں کی بہت ہی چھوٹی کہانی کو لیکھک نے خوب نباہا ہے۔

کتاب کی زبان بہت آسان اور روزمرّہ کے بول چال کی ہے۔ اس سے کہانیاں اور بھی رسیلی ہو جاتی ہیں۔

——گنیش پرساد

پریم ترنگ عرف ترانۂ اُلفت (حصّہ دوئم)—

لیکھک شری کاشی رام چاولا، صفحے ۲۷۲، قیمت بارہ آنے، لکھاوٹ اُردو، پتہ—شری کانشی رام چاولا، فیروزپور۔

شری کاشی رام جی چاولا کے "پریم ترنگ عرف ترانۂ اُلفت (حصّہ اول) کا ریویو "نیا ہند" کے جون ۴۷ کے انک میں شائع ہو چکا ہے۔ اسی کتاب کا یہ دوسرا حصّہ بھی اسی سلسلے میں ہمیں مذہب کا سچا راستہ دکھانے کی کوشش کرتا ہے۔ (۵۲)

کتاب بائیس ادھیاؤں میں بٹی ہے، جیسے—سب کا خالق ایک ہے، ایک ہی مالک کا جلوہ سب کے اندر ہے، سب سے محبت کرو، خدمتِ مخلوق سے خالق راضی ہوتا ہے، نیک اعمال ہی کام آئیں گے، نفاق نہ پیدا کرو، نفرت سے نفرت کرو وغیرہ وغیرہ۔ ہر ادھیائے میں دُنیا کے سبھی مذہبوں، مذہبی لیڈروں، مشہور لیکھکوں اور شاعروں کی عمدہ نصیحتوں اور چنے چنے جملوں کو دے کر لیکھک نے کتاب میں یہ دکھانے کی کوشش کی ہے کہ مذہب آپس میں دشمنی اور نفرت کرنا نہیں، بلکہ

बल्कि मुहब्बत के खुशगवार सबक़ पढ़ाता है. यह दिखाया गया है जितनी बातें हम को सच्चे और सही रास्ते पर ले जाती हैं उन के बारे में क़रीब क़रीब सभी मजहबों की राय एक ही है. लिखा है—

'इस दुनिया का बाप, दादा, माँ और सहारा देने वाला मैं ही हूँ'—(गीता).

'सब में उसी का नूर है और उसी की तजल्ली से सब में रोशनी है'—(सिक्ख धर्म)

'रहम करने वालों पर अल्लाह रहम करता है. तुम जमीन वालों से भलाई करो तो तुम पर आसमान वाला रहम करेगा'—(अबूदाऊद).

'जबान के तीर यानी कडुवे बोल का जख्म कभी नहीं भरता' —(पंचतंत्र)

किसी से दुश्मनी रखना मैं मौत के बराबर समझता हूँ. मुझे इस रवैये से नफ़रत है. मैं तो तमाम नेक इनसानों का प्यारा बनना चाहता हूँ'—(शेक्सपियर)

इस किताब की तारीफ़ हिन्दुस्तान के बड़े बड़े लोगों और अख़बारों ने की है. किताब सचमुच बड़े फ़ायदे की है. सभी इसे पसन्द करेंगे. मजहब को समझाने और लोगों को सचाई के रास्ते पर लाने के लिये ऐसी ही किताबों की जरूरत है. हम इस किताब का ज्यादा से ज्यादा प्रचार चाहते हैं.

——गनेश प्रसाद

بلکہ محبت کے خوش گوار سبق پڑھاتا ہے۔ یہ دکھایا گیا ہے جتنی باتیں ہم کو سچے اور صحیح راستے پر لے جاتی ہیں اُن کے بارے میں قریب قریب سبھی مذہبوں کی رائے ایک ہی ہے۔ لکھا ہے—

'اِس دُنیا کا باپ، دادا، ماں اور سہارا دینے والا میں ہی ہوں'—(گیتا).

'سب میں اُسی کا نور ہے اور اُسی کی تجلی سے سب میں روشنی ہے'—(سکھ دھرم).

'رحم کرنے والوں پر اللہ رحم کرتا ہے۔ تم زمین والوں سے بھلائی کرو تو تم پر آسمان والا رحم کرے گا'—(ابوداؤد).

'زبان کے تیر یعنی کڑوے بول کا زخم کبھی نہیں بھرتا'—(پنچتنتر).

کسی سے دُشمنی رکھنا میں موت کے برابر سمجھتا ہوں۔ مجھے اِس رویے سے نفرت ہے۔ میں تو تمام نیک انسانوں کا پیارا بننا چاہتا ہوں'—(شیکسپیر).

اِس کتاب کی تعریف ہندستان کے بڑے بڑے لوگوں اور اخباروں نے کی ہے۔ کتاب سچ مچ بڑے فائدے کی ہے۔ سبھی اِسے پسند کریں گے۔ مذہب کو سمجھانے اور لوگوں کو سچائی کے راستے پر لانے کے لئے ایسی ہی کتابوں کی ضرورت ہے۔ ہم اِس کتاب کا زیادہ سے زیادہ پرچار چاہتے ہیں۔

—گنیش پرساد

हमारी राय

अब उर्दू लिखावट क्यों ?—

जो लोग, सच्चे जी से यह समझे बैठे थे कि उर्दू लिखना
वह सिर्फ़ मुसलमानों: को खुश करने के लिये सीख रहे थे वह
वह कहने के हर तरह हक़दार हैं कि अब, जब पाकिस्तान बन
गया और हिन्दुस्तान के दो टुकड़े हो ही गए तब उर्दू लिखना सीखने
की बला उनके पीछे क्यों लगी हुई है ? यह उनको मालूम नहीं कि
उर्दू लिखावट की बात देश ने मुसलमानों को खुश करने के लिये
उठाई ही नहीं थी. हिन्दुस्तानी, हिन्दुस्तान के जिस हिस्से की
बोली है, वहां बहुत पहले से हिन्दुस्तानी, उर्दू नागरी, दोनों
लिखावटों में लिखी जाती रही है और हिन्दू मुसलमान सभी
नहीं, तो बहुत से, उर्दू लिखना पहले से ही जानते हैं और यह
कि उर्दू लिखावट थोड़ी बहुत हर सूबे में रिवाज में भी है. यह
ठीक है कि और सूबों में उर्दू के लिखने वाले नब्बे पचानवे
फ़ी सदी मुसलमान ही हैं. इसके अलावा कई सूबों और रियासतों
के बहुत से अदालती काग़ज़ उर्दू लिखावट में ही हैं. इतना ही
नहीं, अब से हज़ार आठ सौ बरस पहले तक के सार तारीख़ी
काग़ज़ उर्दू लिखावट में ही मिलते हैं. पंजाब और सरहदी
सूबों में तो नागरी लिखावट, इनी गिनी औरतों को छोड़कर,
बहुत कम मरदों: को आती है. उनको तो नागरी सीखना ऐसा
ही अटपटा जंचेगा जैसा किसी बंगाली को उर्दू लिखावट सीखना.
... को सामने रखकर और सब के सुभीते का ख़्याल

ہماری رائے

اب اُردو لکھاوٹ کیوں ؟—

جو لوگ، سچّے جی سے یہ سمجھے بیٹھے تھے کہ اُردو لکھنا وہ
صرف مسلمانوں کو خوش کرنے کے لئے سیکھ رہے تھے وہ یہ کہنے
کے ہر طرح حق دار ہیں کہ اب، جب پاکستان بن گیا اور ہندستان
کے دو ٹکڑے ہو ہی گئے تب اُردو لکھنا سیکھنے کی بلا اُن کے پیچھے
کیوں لگی ہوئی ہے؟ یہ اُن کو معلوم نہیں کہ اُردو لکھاوٹ کی بات
دیش نے مسلمانوں کو خوش کرنے کے لئے اُٹھائی ہی نہیں تھی.
ہندستانی، ہندستان کے جس حصّے کی بولی ہے، وہاں بہت پہلے
سے ہندستانی، اُردو ناگری، دونوں لکھاوٹوں میں لکھی جاتی رہی
ہے اور ہندو مسلمان سبھی نہیں، تو بہت سے، اُردو لکھنا پہلے سے
ہی جانتے ہیں اور یہ کہ اُردو لکھاوٹ تھوڑی بہت ہر صوبے میں
رواج میں بھی ہے. یہ ٹھیک ہے کہ اور صوبوں میں اُردو کے لکھنے والے
نبّے پچانوے فی صدی مسلمان ہی ہیں. اس کے علاوہ کئی
صوبوں اور ریاستوں کے بہت سے عدالتی کاغذ اُردو لکھاوٹ میں
ہی ہیں. اتنا ہی نہیں، اب سے ہزار آٹھ سو برس پہلے تک کے
سارے تاریخی کاغذ اُردو لکھاوٹ میں ہی ملتے ہیں. پنجاب اور سرحدی
صوبوں میں تو ناگری لکھاوٹ، اِنی گنی عورتوں کو چھوڑ کر، بہت
کم مردوں کو آتی ہے. اُن کو تو ناگری سیکھنا ایسا ہی
اٹپٹا جچے گا جیسا کسی بنگالی کو اُردو لکھاوٹ سیکھنا.
سب باتوں کو سامنے رکھ کر اور سب کے سُوبھیتے کا خیال

करके ही देश ने हिन्दुस्तानी बोली और नागरी उर्दू दोनों लिखावटों को सबके लिये जरूरी तय कर दिया था.

आइये अब उर्दू लिखावट के मुकद्दमे की सुनवाई इस बुनियाद पर करें कि अब भी उसकी हिन्दुस्तान को जरूरत है या नहीं ?

दो लिखावटें क्यों सीखें—

जिनको आज मन मुटाव के कारन उर्दू लिखावट से चिढ़ हो गई है उन्हीं को यह लिखावट बड़ी दूभर मालूम होती है. और है भी ठीक. जिससे जी उतर जाय वह कितनी ही भली क्यों न हो बुरी ही लगती है. पर यहाँ यह सवाल नहीं है. हम को जवाब इस बात का देना है कि जब एक लिखावट से काम चलें तो दो लिखावटों की बला क्यों सिर मोल ली जाए.

आदमी कुछ इस क़िस्म का बना है कि एक बला से उसका जी कभी नहीं भरता. बलाओं से घिरे रहने में उसे मज़ा आता है. अच्छा भला अकेले रहते शादी कर बैठता है और फिर बच्चे पैदा कर बैठता है. लिखावट के मामले में भी किसी मुल्क और किसी आदमी को एक से तसल्ली नहीं होती. जब फ़ारसी लिखावट हिन्दुस्तान में थो ही नहीं तब भी हिन्दी की और बृज की हिन्दी की दो नहीं तीन लिखावटें थीं और आज भी तीनों जिन्दा हैं. एक छापे की यानी साफ साफ लिखी हुई, दूसरी घसीट की और तीसरी का नाम है मुड़िया जो सेठ लोगों के बही खाते में और चिट्ठी पत्री में मुद्दतों से हैं और मुद्दतों तक रहेगी. और नागरी की घसीट की लिखावट को तो कितनी ही लिखावटों में

کرکے ہی دیش نے ہندوستانی بولی اور ناگری اُردو دونوں لکھاوٹوں کو سب کے لئے ضروری طے کر دیا تھا.

آئیے اب اُردو لکھاوٹ کے مقدمے کی سنوائی اِس بنیاد پر کریں کہ اب بھی اُس کی ہندستان کو ضرورت ہے یا نہیں ؟

دو لکھاوٹیں کیوں سیکھیں—

جن کو آج من مٹاؤ کے کارن اُردو لکھاوٹ سے چڑھ ہو گئی ہے اُنھیں کو یہ لکھاوٹ بڑی دوبھر معلوم ہوتی ہے. اور ہے بھی ٹھیک. جس سے جی اُتر جائے وہ کتنی ہی بھلی کیوں نہ ہو بُری ہی لگتی ہے. پر یہاں یہ سوال نہیں ہے. ہم کو جواب اِس بات کا دینا ہے کہ جب ایک لکھاوٹ سے کام چلے تو دو لکھاوٹوں کی بلا کیوں سر مول لی جائے.

آدمی کچھ اِس قسم کا بنا ہے کہ ایک بلا سے اُس کا جی کبھی نہیں بھرتا. بلاؤں سے گھرے رہنے میں اُسے مزا آتا ہے. اچھا بھلا اکیلے رہتے شادی کر بیٹھتا ہے اور پھر بچے پیدا کر بیٹھتا ہے. لکھاوٹ کے معاملے میں بھی کسی ملک اور کسی آدمی کو ایک سے تسلی نہیں ہوتی. جب فارسی لکھاوٹ ہندستان میں تھی ہی نہیں تب بھی ہندی کی اور برج کی ہندی کی دو نہیں تین لکھاوٹیں تھیں اور آج بھی تینوں زندہ ہیں. ایک چھاپے کی یعنی صاف صاف لکھی ہوئی، دوسری گھسیٹ کی اور تیسری کا نام ہے مُڑیا جو سیٹھ لوگوں کے بہی کھاتے میں اور چٹھی پتری میں مدتوں سے ہے اور مدتوں تک رہے گی. اور ناگری کی گھسیٹ کی لکھاوٹ کو تو کتنی ہی لکھاوٹوں میں

बाँटा जा सकता है. हर आदमी की अपनी लिखावट है. इसलिये नागरी खुद दो तरह लिखी जाती है और हिन्दी नागरी और मुड़िया दो लिखावटों में मौजूद है. उर्दू की लिखावट से चिढ़ने वाले अँगरेज़ी की चार चार लिखावटें बड़े चाव से सीख लेते हैं यानी छापे की बड़ी छोटी लिखावट और लिखने की बड़ी छोटी लिखावट. अँगरेज़ी की पाँचवीं लिखावट घसीट को तो जाने ही दीजिये. हम जब स्कूल में पढ़ते थे तो उर्दू की घसीट लिखावट भी सीखनी पड़ती थी और उसकी एक किताब थी जिसका नाम था "मकतूब अहमदी". अब अगर अदालतों में और पुलिस के रोज़नामचों में नागरी का ज़ोर बढ़ा तो फिर मकतूब अहमदी जैसी कोई 'पत्री पोखनी' जल्दी ही मदरसों में जारी करनी पड़ेगी. नहीं तो पुलिस के रोज़नामचे पढ़ने के लिये उनके लिखने वालों को ही बुलाया जाया करेगा. इसलिये दो दो लिखावट सीखने का एतराज़ ज़ोरदार नहीं है.

एक हिन्दुस्तान ही नहीं दुनिया का कोई मुल्क ऐसा नहीं है जहाँ एक से ज़्यादा लिखावट न सीखनी पड़ती हो. हाँ, चीन, एक ऐसा मुल्क है कि जहाँ सब सूबों की एक लिखावट है पर उस लिखावट को सीखना तो आठ लिखावट नहीं सोलह लिखावटें जितनी मेहनत चाहता है और सिरदर्दी तो न जाने कितनी चाहता है. हिन्दुस्तानी तो चार दिन के बाद उसके सीखने से बाग़ी होकर भाग बैठे.

मुल्क के लिहाज़ से ही नहीं, वक़्त के लिहाज़ से कोई ऐसा [illegible] रहा जब एक मुल्क के आदमियों को एक से ज़्यादा

بانٹا جاسکتا ہے. ہر آدمی کی اپنی لکھاوٹ ہے. اس لئے ناگری خود دو طرح لکھی جاتی ہے اور ہندی ناگری اور مُڑیا دو لکھاوٹوں میں موجود ہے. اُردو کی لکھاوٹ سے چڑھنے والے انگریزی کی چار چار لکھاوٹیں بڑے چاو سے سیکھ لیتے ہیں یعنی چھاپے کی بڑی چھوٹی لکھاوٹ اور لکھنے کی بڑی چھوٹی لکھاوٹ. انگریزی کی پانچویں لکھاوٹ گھسیٹ کو تو جانے ہی دیجئے. ہم جب اسکول میں پڑھتے تھے تو اُردو کی گھسیٹ لکھاوٹ بھی سیکھنی پڑتی تھی اور اُس کی ایک کتاب تھی جس کا نام تھا "مکتوب احمدی". اب اگر عدالتوں میں اور پولیس کے روزنامچوں میں ناگری کا زور بڑھا تو پھر مکتوب احمدی جیسی کوئی "پتری پوکھنی" جلدی ہی مدرسوں میں جاری کرنی پڑے گی. نہیں تو پولیس کے روزنامچے پڑھنے کے لئے اُن کے لکھنے والوں کو ہی بُلایا جایا کرے گا. اس لئے دو دو لکھاوٹ سیکھنے کا اعتراض زوردار نہیں ہے.

ایک ہندستان ہی نہیں دُنیا کا کوئی ملک ایسا نہیں ہے جہاں ایک سے زیادہ لکھاوٹ نہ سیکھنی پڑتی ہو. ہاں، چین، ایک ایسا ملک ہے کہ جہاں سب صوبوں کی ایک لکھاوٹ ہے پر اُس لکھاوٹ کو سیکھنا تو آٹھ لکھاوٹ نہیں سولہ لکھاوٹیں جتنی محنت چاہتا ہے اور سر دردی تو نہ جانے کتنی چاہتا ہے. ہندستانی تو چار دن کے بعد اُس کے سیکھنے سے باغی ہوکر بھاگ بیٹھے.

ملک کے لحاظ سے ہی نہیں، وقت کے لحاظ سے کوئی ایسا وقت نہیں رہا جب ایک ملک کے آدمیوں کو ایک سے زیادہ

[लि]खावटें न सीखनी पड़ी हों. आदमी जब भी अपने दोस्तों से [कु]छ छिपाना चाहता है तब या तो एक नई लिखावट तय्यार करता [है] या नई बोली और यही वजह है कि लिखावटों की बला से वह [न]हीं बच पाता. अपने मतलब के लिये उसे लिखावटों की बला [में] फँसना पड़ता है और उसी मतलब की वजह से उस बला में [फँ]सा हुआ भी वह सुख ही मानता है.

जैसे हिन्दी बोली के साथ साथ धर्म की खातिर हिन्दुओं को [सं]स्कृत, जिसे वह देव वाणी कहते हैं, सीखनी पड़ती है और जैसे [जै]नों को प्राकृत, बौद्धों को पाली, राधा स्वामियों को फ़ारसी मिली [उ]र्दू और सिक्खों को पंजाबी और मुसलमानों को फ़ारसी [अ]रबी बोली सीखनी पड़ती है वैसे ही और लिखावटें सीखना [ही] पड़ेंगी नहीं तो वह अपने अपने धर्म ग्रन्थ कैसे पढ़ सकेंगे. [हि]न्दुस्तानियों में यह हिम्मत तो है ही नहीं कि वह अपने सब [ध]र्म ग्रन्थों को एक लिखावट और एक बोली में करलें और उससे [अ]पनी तसल्ली करलें. इसलिये सिक्खों को गुरु ग्रन्थ साहब [प]ढ़ने के लिये गुरमुखी लिखावट सीखनी ही होगी, ईसाइयों को [बा]इबिल की खातिर अँगरेज़ी लिखावट क़ायम रखनी ही होगी. मतलब यह कि धर्म भी एक कारन है जिसकी वजह से हमको रिवाज की लिखावट के अलावा एक लिखावट और सीखनी होती ही है. यों भी हमारा काम एक लिखावट से न चल सकेगा.

अंगरेज़ों से पहले मुसलमानों का राज था और उर्दू लिखावट सारे मुल्क में फैली हुई थी. अंगरेज़ अगर उस वक़्त मुसलमानों

لکھاوٹیں نہ سیکھنی پڑی ہوں. آدمی جب بھی اپنے دوستوں سے کچھ چھپانا چاہتا ہے تب یا تو ایک نئی لکھاوٹ تیار کرتا ہے یا نئی بولی اور یہی وجہ ہے کہ لکھاوٹوں کی بلا سے وہ نہیں بچ پاتا. اپنے مطلب کیلئے اُسے لکھاوٹوں کی بلا میں پھنسنا پڑتا ہے اور اُسی مطلب کی وجہ سے اُس بلا میں پھنسا ہوا بھی وہ سُکھ ہی مانتا ہے.

جیسے ہندی بولی کے ساتھ ساتھ دھرم کی خاطر ہندوؤں کو سنسکرت، جسے وہ دیو وانی کہتے ہیں، سیکھنی پڑتی ہے اور جیسے جینوں کو پراکرت، بودھوں کو پالی، رادھا سوامیوں کو فارسی ملی اُردو اور سکھوں کو پنجابی اور مسلمانوں کو فارسی عربی بولی سیکھنی پڑتی ہے ویسے ہی اور لکھاوٹیں سیکھنا ہی پڑیں گی نہیں تو وہ اپنے اپنے دھرم گرنتھ کیسے پڑھ سکیں گے. ہندستانیوں میں یہ ہمت تو ہے ہی نہیں کہ وہ اپنے سب دھرم گرنتھوں کو ایک لکھاوٹ اور ایک بولی میں کرلیں اور اُس سے اپنی تسلی کرلیں. اس لئے سکھوں کو گرو گرنتھ صاحب پڑھنے کے لئے گُرمکھی لکھاوٹ سیکھنی ہی ہوگی، عیسائیوں کو بائبل کی خاطر انگریزی لکھاوٹ قایم رکھنی ہی ہوگی. مطلب یہ کہ دھرم بھی ایک کارن ہے جس کی وجہ سے ہم کو رواج کی لکھاوٹ کے علاوہ ایک لکھاوٹ اور سیکھنی ہوتی ہی ہے. یوں بھی ہمارا کام ایک لکھاوٹ سے نہ چل سکے گا.

انگریزوں سے پہلے مسلمانوں کا راج تھا اور اُردو لکھاوٹ سارے ملک میں پھیلی ہوئی تھی. انگریز اگر اُس وقت مسلمانوں کو دشمن سمجھ کر اُردو لکھاوٹ کی جگہ ...

लिखावट जारी कर देते तो दस बरस में ही उनका राज उखड़ जाता और अँगरेजी पर जोर देते तो दो बरस भी राज न कर पाते. पर उन्हें राज करना आता था. उन्होंने उर्दू लिखावट दूर नहीं की. उसे क़ायम रखने में मदद की और अपनों में उसके जानकार पैदा किये जिस जानकारी की मदद से वह मुसलमानों की रग रग को समझ पाए. अंगरेजों के बाद आज हकूमत काँगरेस के हाथ में आई है. काँगरेस हकूमत करना जानती है. जभी तो वह अँगरेजी हटाने में जल्दी नहीं कर रही है. ध्यान से देखा जाय तो अँगरेजी की अब कोई जरूरत नहीं रह गई. क्यों कि सिर्फ अंगरेजी के जानकार जो अधगोरे यहाँ के रहने वाले हैं वह गिनती में बहुत थोड़े हैं और सिर्फ उनकी खातिर अंगरेजी लिखावट और अँगरेजी बोली को बनाए रखना किसी तरह समझदारी की बात नहीं समझी जा सकती. पर काँगरेस है कि अभी अङ्गरेजी को नहीं हटाना चाहती. अगर वह जल्दबाजी करे तो अपने पाँव में कुल्हाड़ी मारेगी. और यह भी उसकी समझदारी ही है कि वह उर्दू लिखावट को क़ायम रखना चाहती है. इस वक़्त उर्दू लिखावट को हटा कर हम अपना बहुत बड़ा नुक़सान कर लेंगे. जिनके सिरों में एक हिन्दुस्तान का नक़शा घूम रहा है वह कभी यह न चाहेंगे कि उर्दू की लिखावट दूर करदी जाए. जिनके सिरों में यह ख़याल मौजूद है कि एक न एक दिन पाकिस्तान और हिन्दुस्तान दोनों मिल कर एक होंगे वह कभी उर्दू लिखावट के ख़िलाफ़ [illegible] नहीं उठा सकते. जिनके हाथ में आज हिन्दुस्तानी संघ [illegible] है. उसकी

(४०७)

لکھاوٹ جاری کردیتے تو دس برس میں ہی اُن کا راج اُکھڑ جاتا اور انگریزی پر زور دیتے تو دو برس بھی راج نہ کر پاتے. پر اُنھیں راج کرنا آتا تھا. اُنھوں نے اُردو لکھاوٹ دُور نہیں کی. اُسے قایم رکھنے میں مدد کی اور اپنوں میں اُس کے جان کار پیدا کئے جس جان کاری کی مدد سے وہ مسلمانوں کی رگ رگ کو سمجھ پائے. انگریزوں کے بعد آج حکومت کانگریس کے ہاتھ میں آئی ہے. کانگریس حکومت کرنا جانتی ہے. جبھی تو وہ انگریزی ہٹانے میں جلدی نہیں کر رہی ہے. دھیان سے دیکھا جائے تو انگریزی کی اب کوئی ضرورت نہیں رہ گئی. کیونکہ صرف انگریزی کے جان کار جو ادھ گورے یہاں کے رہنے والے ہیں وہ گنتی میں بہت تھوڑے ہیں اور صرف اُن کی خاطر انگریزی لکھاوٹ اور انگریزی بولی کو بنائے رکھنا کسی طرح سمجھ داری کی بات نہیں سمجھی جاسکتی. پر کانگریس ہے کہ ابھی انگریزی کو نہیں ہٹانا چاہتی. اگر وہ جلد بازی کرے تو اپنے پاؤں میں کُلہاڑی مارے گی. اور یہ بھی اُس کی سمجھ داری ہی ہے کہ وہ اُردو لکھاوٹ کو قایم رکھنا چاہتی ہے. اِس وقت اُردو لکھاوٹ کو ہٹاکر ہم اپنا بہت بڑا نقصان کرلیں گے. جن کے سروں میں ایک ہندستان کا نقشہ گھوم رہا ہے وہ کبھی یہ نہ چاہیں گے کہ اُردو کی لکھاوٹ دُور کردی جائے. جن کے سروں میں یہ خیال موجود ہے کہ ایک نہ ایک دن پاکستان اور ہندستان دونوں مل کر ایک ہوں گے وہ کبھی اُردو لکھاوٹ کے خلاف آواز نہیں اُٹھا سکتے. جن کے ہاتھ میں آج ہندستانی سنگھ کی سرکار ہے وہ ہندستانی سمجھ کے درخت کے پھول ہیں. اُن کی

(۴۰۷)

बात हमें ध्यान से सुननी और समझनी चाहिये और उर्दू लिखावट के हटाने की बात कभी ध्यान में नही आने देना चाहिये.

उर्दू लिखावट को बनाए रखने की एक वजह और भी है. और वह यह कि हिन्दुस्तानी संघ में शामिल होने वाली रियासतों में ही एक से ज्यादा रियासतें ऐसी हैं जहाँ सारा काम उर्दू लिखावट में होता है. वहाँ के मामलों से पूरी जानकारी रखना और वहाँ से निकलने वाले अखबारों को पढ़ सकना हम सब के लिये जरूरी है. और फिर हमारी बिलकुल क़रीब की रियासत पाकिस्तान भी अपनी सारी कार्यवाई उर्दू लिखावट में ही करती है और उससे लगे हुए दो मुल्क अफ़ग़ानिस्तान और फ़ारस इसी लिखावट से काम लेते हैं. और फिर सबसे बड़ी बात यह कि उर्दू लिखावट हम पहले ही से सीखे हुए हैं और उसके सीखने की आसानी हमारे खून में भी आ गई है. फिर इस जरूरी और हमारे लिये आसान लिखावट को दूर करने में कोई समझदारी है यह हमारे समझ में नहीं आता. अभी तो हिन्दुस्तानी संघ में जगह जगह ऐसी कितनी ही जेबें हैं जहाँ उर्दू लिखावट काम में आरही है. ऐसी हालत में हम अपने बच्चों को उर्दू लिखावट से दूर रख कर कितना बड़ा नुक़सान कर लेंगे. अगर हम इस वक़्त जल्द बाजी कर बैठे तो हमको अपनी ग़लती पर जल्दी ही पछताना पड़ेगा.

आज़ाद होकर हमारी सब क़ाबलियतें बढ़ी हैं और लिखावटें सीखने की तो बेहद बढ़ी हैं. अब तो वह दिन है कि हम नई नई लिखावटें सीखें. अपने देश की बङ्गाली, गुजराती, उड़िया,

بات ہمیں دھیان سے سُننی اور سمجھنی چاہیئے اور اُردو لکھاوٹ کے ہٹانے کی بات کبھی دھیان میں نہیں آنے دینا چاہیے.

اُردو لکھاوٹ کو بنائے رکھنے کی ایک وجہ اور بھی ہے. اور وہ یہ کہ ہندستانی سنگھ میں شامل ہونے والی ریاستوں میں ہی ایک سے زیادہ ریاستیں ایسی ہیں جہاں سارا کام اُردو لکھاوٹ میں ہوتا ہے. وہاں کے معاملوں سے پوری جان کاری رکھنا اور وہاں سے نکلنے والے اخباروں کو پڑھ سکنا ہم سب کے لئے ضروری ہے. اور پھر ہماری بالکل قریب کی ریاست پاکستان بھی اپنی ساری کارروائی اُردو لکھاوٹ میں ہی کرتی ہے اور اُس سے لگے ہوئے دو ملک افغانستان اور فارس اِسی لکھاوٹ سے کام لیتے ہیں. اور پھر سب سے بڑی بات یہ کہ اُردو لکھاوٹ ہم پہلے ہی سے سیکھے ہوئے ہیں اور اُس کے سیکھنے کی آسانی ہمارے خون میں بھی آگئی ہے. پھر اِس ضروری اور ہمارے لئے آسان لکھاوٹ کو دُور کرنے میں کوئی سمجھ داری ہے یہ ہمارے سمجھ میں نہیں آتا. ابھی تو ہندستانی سنگھ میں جگہ جگہ ایسی کتنی ہی جیبیں ہیں جہاں اُردو لکھاوٹ کام میں آرہی ہے. ایسی حالت میں ہم اپنے بچّوں کو اُردو لکھاوٹ سے دُور رکھ کر کتنا بڑا نقصان کرلیں گے. اگر ہم اِس وقت جلدبازی کر بیٹھے تو ہم کو اپنی غلطی پر جلدی ہی پچھتانا پڑے گا.

آزاد ہوکر ہماری سب قابلیتیں بڑھی ہیں اور لکھاوٹیں سیکھنے کی تو بےحد بڑھی ہیں. اب تو وہ دن ہے کہ ہم نئی نئی لکھاوٹیں سیکھیں. اپنے دیش کی بنگالی، گجراتی، اُڑیا،

आसामी, कन्नड़, तामिल, तेलुगू ही नहीं हमको चीनी, जापानी और रूसी लिखावटें भी सीखना होगी. हम उर्दू लिखावट से इतना घबराएं क्यों.

पर हम जिस वजह से उर्दू लिखावट को ज़िन्दा रखना चाहते हैं वह बिल्कुल अपनी वजह है और ऊपर की बातों से कोई ताल्लुक़ नहीं रखती.

वह वजह यह है.

हम जनता धर्म में विश्वास रखते है और जनता की बोली के पूजने वाले हैं. हम यह नहीं चाहते कि सरकार कोई ऐसी बोली काम में लाए जिसे जनता न समझ सके और अगर सीखने की भी कोशिश करे तो पाँच फीसदी से ज़्यादा सफल ही न हो सके. आज के दिन भी अङ्गरेज़ी पार्लमेन्ट की बोली हर अङ्गरेज़ न बोल सकता है और न समझ सकता है. जभी तो बरतानियाँ की हुकूमत की बाग डोर इने गिने आदमियों के हाथ में रहती है. अमरीका में यह बात नहीं है. अमरीका की अङ्गरेज़ी अङ्गरेज़ी ही नहीं है. वह तो अमरीकी है. वहाँ के कुछ आदमियों ने उसे अङ्गरेज़ी बनाए रखने की बड़ी कोशिश की पर सफल न हुए. हम भी सिर्फ़ जनता की ख़ातिर उर्दू लिखावट को ज़िन्दा रखना चाहते हैं. उर्दू और नागरी दोनों लिखावटें मिलकर जनता की बोली को ज़िन्दा रक्खेंगी. उर्दू की लिखावट हिन्दी को संस्कृत की तरफ़ बढ़ कर और पंडिताऊ बन कर जनता से दूर न जाने देगी और नागरी लिखावट जनता की बोली को फ़ारसी की तरफ़ बढ़ने से रक्खेगी. और यों जनता की बोली की नदी जिसे हम

(५४५)

آسامی، کنڑ، تامل، تیلوگو ہی نہیں ہم کو چینی، جاپانی اور روسی لکھاوٹیں بھی سیکھنا ہونگی. ہم اُردو لکھاوٹ سے اتنا گھبرائیں کیوں.

پر ہم جس وجہ سے اُردو لکھاوٹ کو زندہ رکھنا چاہتے ہیں وہ بالکل اپنی وجہ ہے اور اوپر کی باتوں سے کوئی تعلق نہیں رکھتی.

وہ وجہ یہ ہے.

ہم جنتا دھرم میں وشواس رکھتے ہیں اور جنتا کی بولی کے پوجنے والے ہیں. ہم یہ نہیں چاہتے کہ سرکار کوئی ایسی بولی کام میں لائے جسے جنتا نہ سمجھ سکے اور اگر سیکھنے کی بھی کوشش کرے تو پانچ فی صدی سے زیادہ سپھل ہی نہ ہوسکے. آج کے دن بھی انگریزی پارلیمنٹ کی بولی ہر انگریز نہ بول سکتا ہے اور نہ سمجھ سکتا ہے. جبھی تو برطانیہ کی حکومت کی باگ ڈور اِنے گِنے آدمیوں کے ہاتھ میں رہتی ہے. امریکا میں یہ بات نہیں ہے. امریکا کی انگریزی انگریزی ہی نہیں ہے. وہ تو امریکی ہے. وہاں کے کچھ آدمیوں نے اُسے انگریزی بنائے رکھنے کی بڑی کوشش کی پر سپھل نہ ہوئے. ہم بھی صرف جنتا کی خاطر اُردو لکھاوٹ کو زندہ رکھنا چاہتے ہیں. اُردو اور ناگری دونوں لکھاوٹیں مِل کر جنتا کی بولی کو زندہ رکھیں گی. اُردو کی لکھاوٹ ہندی کو سنسکرت کی طرف بڑھ کر اور پنڈتاؤ بن کر جنتا سے دُور نہ جانے دے گی اور ناگری لکھاوٹ جنتا کی بولی کو فارسی کی طرف بڑھنے سے روکے رکھے گی. اور یوں جنتا کی بولی کی ندی جسے ہم

हिन्दुस्तानी नदी के नाम से पुकारते हैं उर्दू नागरी लिखावटों के दो किनारों के बीच अपनी सुहानी चाल से बहती रहेगी.

जनता का भला उर्दू की लिखावट क़ायम रहने में है. इने गिने पंडितों का भला उर्दू लिखावट के मिट जाने में है. आज जनता जोश में है. उर्दू लिखावट की खूबी को नहीं समझ पा रही है. इसलिये उसे धोका दिया जा सकता है. पर हम जनता को यह बताए देते हैं कि उसका भला इसी में है कि वह उर्दू लिखावट को क़ायम रक्खे. उस लिखावट के बिना जनता की बोली मर जायगी और फिर जनता-राज जैसी कोई चीज हिन्दुस्तान में न रह सकेगी.

—भगवानदीन

ہندستانی ندی کے نام سے پکارتے ہیں اُردو ناگری لکھاوٹوں کے دو کناروں کے بیچ اپنی سہانی چال سے بہتی رہے گی۔

جنتا کا بھلا اُردو کی لکھاوٹ قایم رہنے میں ہے۔ اِنے گنے پنڈتوں کا بھلا اُردو لکھاوٹ کے مٹ جانے میں ہے۔ آج جنتا جوش میں ہے۔ اُردو لکھاوٹ کی خوبی کو نہیں سمجھ پا رہی ہے۔ اِس لئے اُسے دھوکا دیا جا سکتا ہے۔ پر ہم جنتا کو یہ بتائے دیتے ہیں کہ اُس کا بھلا اِسی میں ہے کہ وہ اُردو لکھاوٹ کو قایم رکھے۔ اُس لکھاوٹ کے بنا جنتا کی بولی مر جائے گی اور پھر جنتا راج جیسی کوئی چیز ہندستان میں نہ رہ سکے گی۔

—بھگوان دین

"गीता और क़ुरान"

लेखक—पंडित सुन्दरलाल

इस किताब के शुरू में दुनिया के सब बड़े बड़े धर्मों की एकता को दिखाया गया है और सब धर्मों की किताबों से हवाले दे देकर मिलती जुलती बुनियादी सचाइयों को बयान किया गया है.

उसके बाद गीता के लिखे जाने के वक़्त की इस देश की हालत, गीता के बड़प्पन और एक एक अध्याय को लेकर गीता की तालीम को बतलाया गया है.

आख़िर में क़ुरान से पहले की अरब की हालत, क़ुरान के बड़प्पन और एक एक बात पर क़ुरान की तालीम को बयान किया गया है. इस में क़ुरान की पांच सौ से ऊपर आयतों का लफ़्ज़ी तरजुमा दिया गया है. यह भी बताया गया है कि क़ुरान में जेहाद, आक़िबत, आख़िरत, जन्नत, जहन्नम, काफ़िर वग़ैरा किसे कहा गया है.

जो लोग सब धर्मों की एकता को समझना चाहें या हिन्दू धर्म और इसलाम दोनों की इन दो अमर पुस्तकों की सच्ची जानकारी हासिल करना चाहें उन्हें इस किताब को ज़रूर पढ़ना चाहिये.

किताब आसान हिन्दुस्तानी ज़बान में, नागरी और उर्दू दोनों लिखावटों में अलग अलग मिल सकती है. पौने तीन सौ सफ़े की सुन्दर जिल्द बंधी किताब की क़ीमत सिर्फ़ ढाई रुपए. डाक ख़र्च अलग.

मैनेजर "नया हिन्द"
४८ बाई का बाग़, इलाहाबाद

"گیتا ارو قرآن"

لیکھک - پنڈت سندر لال

اس کتاب کے شروع میں دنیا کے سب بڑے بڑے دھرموں کی ایکتا کو دکھایا گیا ھے اور سب دھرموں کی کتابوں سے حوالے دے دے کر ملتی جلتی بنیادی سچائیوں کو بیان کیا گیا ھے.

اسکے بعد گیتا کے لکھے جانے کے وقت کی اس دیش کی حالت' گیتا کے بڑپن اور ایک ایک ادھیائے کو لیکر گیتا کی تعلیم کو بتلایا گیا ھے.

آخر میں قرآن سے پہلے عرب کی حالت' قرآن کے بڑپن اور ایک ایک بات پر قرآن کی تعلیم کو بیان کیا گیا ھے. اسمیں قرآن کی پانچ سو سے اوپر آیتوں کا لفظی ترجمہ دیا گیا ھے. یہ بھی بتایا گیا ھے کہ قرآن میں جہاد' عاقبت' آخرت' جنت' جہنم' کافر وغیرہ کسے کہا گیا ھے.

جو لوگ سب دھرموں کی ایکتا کو سمجھنا چاہیں یا ھندو دھرم اور اسلام دونوں کی ان دو امر پستکوں کی سچی جانکاری حاصل کرنا چاھیں انھیں اس کتاب کو ضرور پڑھنا چاھئے.

کتاب ہندستانی زبان میں ناگری اور اردو دونوں لکھاوٹوں میں الگ الگ مل سکتی ھے. پونے تین سو صفحے کی سندر جلد بندھی کتاب کی قیمت صرف ڈھائی روپیہ - ڈاک خرچ الگ

منیجر 'نیا ھند'
۴۸ - بائی کا باغ' الہ آباد

Printer--Bishambhar Nath, Vishwavani Press, South Malaka, Allahabad.
Publisher—Bishambhar Nath for Hindustani Culture Society, 48 Bai ka Bagh, Allahabad.

"नया हिन्द"

हिन्दुस्तानी कलचर सोसाइटी का परचा

एडिटर—

ताराचन्द, भगवानदीन, मुज़फ्फ़र हसन, बिशम्भरनाथ, सुन्दरलाल.

दिसम्बर १९४७

क्या किससे

क़ीमत—हिन्दुस्तान में छै रुपए साल. बाहर दस रुपए साल. एक परचा दस आने

पता: बाई का बाग़, इलाहाबाद

"نیا ہند"

ہندستانی کلچر سوسائٹی کا پرچا

اڈیٹر—

تارا چند، بھگوان دین، مظفر حسن، بشمبھر ناتھ، سندر لال.

دسمبر ۱۹۴۷

کیا کس سے

قیمت—ہندستان میں چھ روپیہ سال. باہر دس روپیہ سال. ایک پرچا دس آنے.

پتہ: بائی کا باغ، الہ آباد.

नया हिन्द — نیا ہند

जिल्द ३ दिसम्बर '४७ नम्बर ६

جلد ۳ دسمبر سنہ ۴۷ء نمبر ۶

जात आदमी, प्रेम धर्म है, हिन्दुस्तानी बोली,
'नया हिन्द' पहुँचेगा घर घर, लिये प्रेम की झोली.

جات آدمی، پریم دھرم ہے، ہندستانی بولی،
'نیا ہند' پہنچے گا گھر گھر، لئے پریم کی جھولی۔

नया दौर

('बिस्मिल' साहब इलाहाबादी)

हर वक़्त नए झगड़े भाई के हैं भाई से
मिलती नहीं अब फ़ुरसत आपस की लड़ाई से.

× × × ×

अब है न मेल जोल न उल्फ़त का रंग है
आपस में नोक झोंक है आपस की जंग है.

× × × ×

نیا دور

(بسمل صاحب الہ آبادی)

ہر وقت نئے جھگڑے بھائی کے ہیں بھائی سے
ملتی نہیں اب فرصت آپس کی لڑائی سے۔

× × × ×

اب ہے نہ میل جول نہ الفت کا رنگ ہے
آپس میں نوک جھونک ہے آپس کی جنگ ہے۔

× × × × ×

नजर आई झलक कब दीन की दुनिया के धंदों में
फंसाया अहले मजहब ने हमें मजहब के फन्दों में.

× × × ×

अलग जब हो गए दोनों तो लुत्फे अंजुमन क्या है
यह हिन्दू संगठन क्या है यह मुसलिम संगठन क्या है.

× × × ×

सच कह रहा हूँ तुमसे यह, ऐ हम नशीं न हो
मजहब न हो तो कोई भी झगड़ा कहीं न हो.

× × × ×

मेल होने का नहीं तो काम होने का नहीं
देश में तो और सब कुछ है मगर एका नहीं.

× × × ×

वो यूँ जकड़े हुए हैं बेतरह हिलने नहीं पाते
इसीसे हिन्दु-ओ-मुसलिम कभी मिलने नहीं पाते.

× × × ×

जोश मजहब पर अकड़ना चाहिये,
आग हो तो कूद पड़ना चाहिये.

× × × ×

बात यह मुझको नहीं 'बिस्मिल' पसन्द,
हिन्दू-ओ-मुसलिम को लड़ना चाहिये.

× × × ×

نظر آئی جھلک کب دین کی دنیا کے دھندوں میں
پھنسایا اہلِ مذہب نے ہمیں مذہب کے پھندوں میں۔

× × × ×

الگ جب ہوگئے دونوں تو لطفِ انجمن کیا ہے
یہ ہندو سنگٹھن کیا ہے یہ مسلم سنگٹھن کیا ہے۔

× × × ×

سچ کہہ رہا ہوں تجھ سے یہ، اے ہم نشیں نہ ہو
مذہب نہ ہو تو کوئی بھی جھگڑا کہیں نہ ہو۔

× × × ×

میل ہونے کا نہیں تو کام ہونے کا نہیں
دیش میں تو اور سب کچھ ہے مگر ایکا نہیں۔

× × × ×

وہ یوں جکڑے ہوئے ہیں بے طرح ہلنے نہیں پاتے
اسی سے ہندو و مسلم کبھی ملنے نہیں پاتے۔

× × × ×

جوشِ مذہب پر اکڑنا چاہیے
آگ ہو تو کود پڑنا چاہیے۔

× × × ×

بات یہ مجھ کو نہیں 'بسمل' پسند
ہندو و مسلم کو لڑنا چاہیے۔

× × × ×

खून के आंसुओं का

भारत के



खून के आँसुओं का नज़राना

नेताओं की सेवा में

(अब्दुल हलीम साहब अंसारी, भोपाल)

भारत की आज़ादी और आज़ादी की जीत पर देस और बिदेस के लोगों में कसरत के साथ आपको मुबारिक-बादियाँ दी हैं और बेशुमार खुशी के हार पहिनाए हैं. लेकिन मुझे अफ़सोस है यह कहते कि मेरी आँखों में खुशी के आँसू डबडबा के ही रह गए. और वह ग़रीब और हसरतज़दा शान्ति का समा देखने भो न पाए कि वहीं के वहीं सूख गए.

जैसे ही देस की आज़ादी का सन्देसा फ़िज़ा में फैला, करोड़ों आस भरे दिलों के हरे भरे बाग़ लहलहा उठे. मन-मन में उम्मीद की किरन चमक पड़ी, फूलों की भरी सभा में चमीगोइयां (क्या कहें, क्या कहें) होने लगीं. कलियां झूम झूम कर पत्तों के हरे हरे तख़्तों पर नाच करने लगीं. पर, फ़लक का यह सितम देखो कि आज़ादी की सुबह होते ही कली कली पर ओस पड़ गई. सारी कलियां मुरझा गईं और खिलने से पहिले ही पहिले झड़ मर कर रह गईं,—एक दम ऐसा मालूम पड़ा जैसे बे-वक़्त ख़िज़ाँ आ गई और बहार अपना गुलज़ार दामन समेट कर चलती बनी, या आज़ाद हिन्द से पिण्ड छुड़ा कर न जाने किधर भाग निकली या दहशत खाकर किसी कुएँ में जा गिरी. तब ही तो खोज नहीं मिल रही.

خون کے آنسوؤں کا نذرانہ

نیتاؤں کی سیوا میں

(عبدالحلیم صاحب انصاری، بھوپال)

بھارت کی آزادی اور آزادی کی جیت پر دیس اور بدیس کے لوگوں میں کثرت کے ساتھ آپ کو مبارک بادیاں دی ہیں اور بے شمار خوشی کے ہار پہنائے ہیں۔ لیکن مجھے افسوس ہے یہ کہتے کہ میری آنکھوں میں خوشی کے آنسو ڈبڈبا کے ہی رہ گئے۔ اور یہ غریب اور حسرت زدہ شانتی کا سماں دیکھنے بھی نہ پائے کہ وہیں کے وہیں سوکھ گئے۔

جیسے ہی دیس کی آزادی کا سندیسا فضا میں پھیلا، کروڑوں آس بھرے دلوں کے ہرے بھرے باغ لہلہا اٹھے۔ من من میں امید کی کرن چمک پڑی، پھولوں کی بھری سبھا میں چہ میگوئیاں (کیا کہیں، کیا کہیں) ہونے لگیں، کلیاں جھوم جھوم کر پتوں کے ہرے ہرے تختوں پر ناچ کرنے لگیں۔ پر، فلک کا یہ ستم دیکھو کہ آزادی کی صبح ہوتے ہی کلی کلی پر اوس پڑ گئی۔ ساری کلیاں مرجھا گئیں اور کھلنے سے پہلے ہی پہلے جھڑ مر کر رہ گئیں — ایک دم ایسا معلوم پڑا جیسے بے وقت خزاں آ گئی اور بہار اپنا گلزار دامن سمیٹ کر چلتی بنی، یا آزاد ہند سے پنڈ چھڑا کر نہ جانے کدھر بھاگ نکلی یا دہشت کھا کر کسی کنویں میں جا گری۔ [illegible] کہیں کھوج نہیں مل رہا۔

हमको तो नए दिनकर (सूरज) के तेवर देखते ही अन्दाज़ा हो गया था कि आज़ादी का आफ़ताब बड़े पेंच ताव के साथ निकलने वाला है. उसका उषा काल आकाश पर फैलकर खुले यह खबर दे रहा था कि अब इनसान इनसान के हाथ से हलाल होने वाला है. लेकिन अफ़सोस कि किसी ने उसके हाव-भाव को न ताड़ा और उसके रंगों के सन्देश को न जाना,

हाँ, हाँ ! जब वह निकला है तो मैंने देखा उसका चेहरा मारे गुस्से के सुर्ख अंगारे की तरह लाल भभूका हो रहा था. इसी कारन उसने अपनी गरम गरम किरनों से और क्रोध की अग्नि से दम के दम में लाखों इनसानों को झुलस कर रख दिया और खंड खंड ढा दिया यानी यह कि हिन्दुस्तान को समशान बना दिया. इस सबब मैं अपने बहिन भाइयों के ग़म में और शरीफ़ सृष्टि को तबाही के मातम में हिन्दुस्तान अथवा पाकिस्तान के महान नेताओं और प्रधान मंत्रियों की सेवा में ख़ून के आंसुओं का नज़राना पेश करता हूँ.

भारत के तिकोने कोटोरे में बूँद बूँद जमा करके.

क्यों कि वतन के शहीदों का ख़ून और माता के ख़ून में लुथड़ा दामन क़ौमी भंडार का धन है इसलिये वही उसकी सेवा और रक्षा करे.

प्रेमी आर्टिस्ट का दिल त्याग और ईसार के जज़बों से लबरेज़ होता है. ज़ख्मों से वह तकलीफ़ पाता है, मज़लूमों से वह हमदर्दी रखता है, प्रेम का शब्द उसको प्यारा है और सुन्दरता का —— है ... कि विनाश (तख़रीब) वह चाहता नहीं.

ہم کو تو نئے دنکر (سورج) کے تیور دیکھتے ہی اندازہ ہوگیا تھا کہ آزادی کا آفتاب بڑے پینچ تاؤ کے ساتھ نکلنے والا ہے۔ اُس کا اُشا کال آکاش پر پھیل کر کھلے یہ خبر دے رہا تھا کہ اب انسان انسان کے ہاتھ سے حلال ہونے والا ہے۔ لیکن افسوس کہ کسی نے اُس کے ہاؤ بھاؤ کو نہ تاڑا اور اُس کے رنگوں کے سندیش کو نہ جانا۔

ہاں، ہاں! جب وہ نکلا ہے تو میں نے دیکھا اُس کا چہرہ مارے غصے کے سُرخ انگارے کی طرح لال بھبھوکا ہو رہا تھا۔ اِسی کارن اُس نے اپنی گرم گرم کرنوں سے اور کرودھ کی اگن سے دم کے دم میں لاکھوں انسانوں کو جھلس کر رکھ دیا اور کھنڈ کھنڈ ڈھا دیا یعنی یہ کہ ہندستان کو شمشان بنادیا۔ اِس سبب میں اپنے بہن بھائیوں کے غم میں اور شریف سرشٹی کی تباہی کے ماتم میں ہندستان اتھوا پاکستان کے مہان نیتاؤں اور پردھان منتریوں کی سیوا میں خون کے آنسوؤں کا نذرانہ پیش کرتا ہوں۔

بھارت کے تکونے کٹورے میں بوند بوند جمع کرکے۔

کیونکہ وطن کے شہیدوں کا خون اور ماتا کے خون میں لتھڑا دامن قومی بھنڈار کا دھن ہے اِس لئے وہی اُس کی سیوا اور رکشا کرے۔

پریمی آرٹسٹ کا دل تیاگ اور ایثار کے جذبوں سے لبریز ہوتا ہے۔ زخموں سے وہ تکلیف پاتا ہے، مظلوموں سے وہ ہمدردی رکھتا ہے، پریم کا شبد اُس کو پیارا ہے اور سُندرتا کا وہ متوالا ہے کیونکہ وناشن (تخریب) وہ چاہتا نہیں،

निर्माण (तामीर) उसका काम है और सेवा उसका धर्म यानी ख़िदमत उसका मज़हब. कृपा करके मुझ दिल दुखे और ग़म भरे की तरफ़ से इनसानियत के नाम पर अपने तमाम देश भाइयों के सोग और त्याग में "ख़ूनी हिन्दुस्तान" के दामन पर यह अनमोल तोहफ़ा क़ुबूल कीजिये—भारत को आज़ादी की यादगार में और क्रान्ति को निशानी में.

एक लिहाज़ से ऐसा भी समझो कि यह जनता की तरफ़ से नेताओं को गरदन में डालने के लिये उनकी पुरानी आस की एक अमर भेंट. अलबत्ता रूप में ज़रा फ़र्क़ आ गया है वह भी आज की परिस्थिति के लिहाज़ से. वरना बिला शक अनमोल यह रतन माला है और आंसुओं के मोतियों का बहुत भारी हार है—

कितना सुन्दर, सुन्दर जैसे दिल की रंगत !
कैसा झिलमिल झिलमिल जैसे बहता समन्दर !!

मेरी दिली दुआ है कि खुदा बृहत्तर हिन्द (बर्रे आज़म हिन्द) के तमाम रहने बसने वालों को क़िस्मत में अमन और आश्ती को ज़िन्दगी नसीब करे. यानी इनसानी ज़िन्दगी—और हैवानी ज़िन्दगी से परे रखे. आमीन !

निश दिन के यह झगड़े टंटे सारी सृष्टि के लिये अज़ाब ज़ान हो रहे हैं. बात यह है कि स्वार्थ और ख़ुदग़र्ज़ी देश का माट बिगाड़ रहा है और तबाही को दावत दे दे कर बुला रही है. यही हमारे दर्द दुख का असली कारन है. जब तक हमारे कामों में चाहे वह सियासी हों, समाजी हों या निजी, रवादारी

نرمان (تعمیر) اُس کا کام ہے اور سیوا اُس کا دھرم یعنی خدمت اُس کا مذہب۔ کرپا کرکے مجھ دل دُکھے اور غم بھرے کی طرف سے انسانیت کے نام پر اپنے تمام دیش بھائیوں کے سوگ اور تیاگ میں "خونی ہندستان" کے دامن پر یہ انمول تحفہ قبول کیجیے۔ بھارت کی آزادی کی یادگار میں اور کرانتی کی نشانی میں۔

ایک لحاظ سے ایسا بھی سمجھو کہ یہ جنتا کی طرف سے نیتاؤں کی گردن میں ڈالنے کے لئے اُن کی پُرانی آس کی ایک امر بھینٹ۔ البتہ روپ میں ذرا فرق آگیا ہے وہ بھی آج کی پرستھتی کے لحاظ سے۔ ورنہ بلا شک انمول یہ رتن مالا ہے اور آنسوؤں کے موتیوں کا بہت بھاری ہار ہے—

کتنا سُندر، سُندر جیسے دل کی رنگت!
کیسا جھل مل جھل مل جیسے بہتا سمندر!!

میری دلی دُعا ہے کہ خدا برہتر ہند (برِّ اعظم ہند) کے تمام رہنے بسنے والوں کی قسمت میں امن اور آشتی کی زندگی نصیب کرے۔ یعنی انسانی زندگی—اور حیوانی زندگی سے پرے رکھے۔ آمین!

نِش دن کے یہ جھگڑے ٹنٹے ساری سرشٹی کے لئے عذاب جان ہو رہے ہیں۔ بات یہ ہے کہ سوارتھ اور خودغرضی دیش کا ماٹ بگاڑ رہی ہے اور تباہی کو دعوت دے دے کر بلا رہی ہے۔ یہی ہمارے درد دُکھ کا اصلی کارن ہے۔ جب تک ہمارے کاموں میں چاہے وہ سیاسی ہوں، سماجی ہوں یا نجی، رواداری

नहीं बरती जाएगी जिन्दगी ऐश और आराम को तरसती रहेगी. अगर जानो समझो तो फ़क़त एक उदारता का नाम मानवता का काम दे सकता है, यानी इन्सानियत के अच्छे और सुन्दर मक़सद का प्रचारक बन सकता है. यह वह वक़्त है कि इन्सान को अत्याचारी की जगह प्रेमधारी होना चाहिये क्यों कि प्रेम में अपना ही मान है और बिला प्रेम नुक़सान ही नुक़सान है. दोनों तरफ़.

जरूरत है कि हर तरफ़ प्रेम का चाव हो. रवादारी का प्रचार हो, परोपकार हो, विश्वास हो यानी सारी सृष्टि एक जीवन, एक प्रान हो. तबही जीवन सुखारी बन सकता है और आनन्द मिल सकता है , वरना नहीं.

मेरा पक्का विश्वास है कि सिर्फ़ उदारता के शब्द के अन्दर शान्ति का सन्देश मौजूद है और जीवन का सुन्दरपन भी उसी के अन्दर छिपा हुआ है. उसको काम में लाना हमारा काम है. जब तक हमारे अन्दर से पहली चीज़ (स्वार्थ) न जाए और दूसरा (उदारता) हमारे अन्दर न आए अमन शान्ति का आस रखना, मेरे ख़याल में, एक सपने (ख़्वाब) से ज़्यादा कुछ नहीं. लेकिन तजरबा (अनुभव) हमें यह भी बताता है कि इस एक का जाना और दूसरी का आना जीवन के इस ख़ूनी भाग में या कम से कम इस युग में बहुत दुश्वार है.

मैं बड़ी नम्रता के साथ परमात्मा (ख़ुदा) से प्रार्थना करता हूँ और बड़ी आशा रखता हूँ कि देश राज के लोक राज में सुख का राज हो ताकि हर क़िस्म के लोग सुख सन्तोष पाएँ और अमन चैन से रहें और मेरा

نہیں برتی جائے گی زندگی عیش اور آرام کو ترستی رہے گی۔ اگر جانو سمجھو تو فقط ایک "اُدارتا" کا نام مانوتا کا کام دے سکتا ہے، یعنی انسانیت کے اچھے اور سُندر مقصد کا پرچارک بن سکتا ہے۔ یہ وہ وقت ہے کہ انسان کو اتیاچاری کی جگہ پریم دھاری ہونا چاہئے کیونکہ پریم میں اپنا ہی مان ہے اور بلا پریم نقصان ہی نقصان ہے۔ دونوں طرف۔

ضرورت ہے کہ ہر طرف پریم کا چاؤ ہو۔ رواداری کا پرچار ہو، پروپکار ہو، وشواس ہو یعنی ساری سرشٹی ایک جیون، ایک پران ہو۔ تب ہی جیون سُکھاری بن سکتا ہے اور آنند مل سکتا ہے، ورنہ نہیں۔

(۵۱۸)

میرا پکا وشواس ہے کہ صرف اُدارتا کے شبد کے اندر شانتی کا سندیش موجود ہے اور جیون کا سُندرپن بھی اُسی کے اندر چھپا ہوا ہے۔ اُس کو کام میں لانا ہمارا کام ہے۔ جب تک ہمارے اندر سے پہلی چیز (سوارتھ) نہ جائے اور دوسرے (اُدارتا) ہمارے اندر نہ آئے امن شانتی کی آس رکھنا، میرے خیال میں، ایک سپنے (خواب) سے زیادہ کچھ نہیں۔ لیکن تجربہ (انوبھو) ہمیں یہ بھی بتاتا ہے کہ اس ایک کا جانا اور دوسری کا آنا جیون کے اس خونی بھاگ میں یا کم سے کم اس یگ میں بہت دشوار ہے۔

میں بڑی نمرتا کے ساتھ پرماتما (خدا) سے پرارتھنا کرتا ہوں اور بڑی آشا رکھتا ہوں کہ دیش راج کے لوک راج میں سُکھ کا راج ہو تاکہ ہر قسم کے لوگ باگ سُکھ سنتوش پائیں اور امن چین سے رہیں سہیں اور میرا

यह भी निवेदन है कि समाज में इन्सान का वज़न बराबर हो जगह बराबर हो और आदर बराबर हो, चादर ❋ बराबर हो यानी सबका एक दरजा और सब के लिये एक तरह का सुख सुभीता हो. मुल्क भर में मेल जोल का चलन हो. प्रेम की लगन हो और ऐसी लगन कि फिर नफ़रत और दुश्मनी कठिन हो.

ख़ुदा जल्द वह दिन दिखाए कि दुखियारी माताओं की आत्माओं को तसकीन और आराम मिले. और शान्ति और आनन्द फिर से आकर उनकी गोद में फले फूलें, उनके भले चंगे सपूतों को बल खाते भूतों से और रेलगाड़ी के रीछों से वह मालिक बचाए और देश का हर बूढ़ा और बच्चा उसी मूल मालिक की रक्षा में रहे.

इस समय मेरे दिल की गहराई से यह भाव निकले बिना नहीं रहता कि इन्सान का नाम पाने वालों में और इन्सानियत का दम भरने वालों में जो अपने को बड़ा मोहज़्ज़ब, सभ्य और चोटी का इन्सान समझते हैं और वह अभिमानी स्वामी जो शक्ति के बल पर घमंड करते हैं, भगवान उनको समझ और बुद्धि दे. उनकी आंखों से तास्सुब का जाला काटे. उनके दिलों का मैल कुचैल दूर करे. मन का उनके अन्तर (फ़र्क़) निकाले और दिमाग़ उनका ठीक करे. उनमें आसमानी ख़ुदा का पैग़ाम समझने की सलाहियत दे और उनमें इनसान बनने का शौक़ दे.

❋हज़रत उमर की ज़िन्दगी से चादर का ख़ास ताल्लुक़ है जो इन्साफ़ और मसावात का एक तारीख़ी वाक़या है और जो आज के लोक राज के लिये बहुत बड़ा पाठ (सबक़) है.

یہ بھی نویدن ہے کہ سماج میں انسانیت کا وزن برابر ہو جگہ برابر ہو اور آدر برابر ہو، چادر❋ برابر ہو یعنی سب کا ایک درجہ اور سب کے لئے ایک طرح کا سکھ سبھیتا ہو. ملک بھر میں میل جول کا چلن ہو. پریم کی لگن ہو اور ایسی لگن کہ پھر نفرت اور دشمنی کٹھن ہو.

خدا جلد وہ دن دکھائے کہ دکھیاری ماتاؤں کی آتماؤں کو تسکین اور آرام ملے. اور شانتی اور آنند پھر سے آکر اُس کی گود میں پھولے پھلے، اُن کے بھلے چنگے سپوتوں کو بل کھاتے بھوتوں سے اور ریل گاڑی کے ریچھوں سے وہ مالک بچائے اور دیش کا ہر بوڑھا اور بچہ اُسی مول مالک کی رکشا میں رہے.

اِس سمے میرے دل کی گہرائی سے یہ بھاؤ نکلے بنا نہیں رہتا کہ انسان کا نام پانے والوں میں اور انسانیت کا دم بھرنے والوں میں جو اپنے کو بڑا مہذب، سبھیہ اور چوٹی کا انسان سمجھتے ہیں اور وہ ابھیمانی سوامی جو شکتی کے بل پر گھمنڈ کرتے ہیں، بھگوان اُن کو سمجھ اور بدھی دے. اُن کی آنکھوں سے تعصب کا جالا کاٹے. اُن کے دلوں کا میل کچیل دور کرے. من کا اُن کے انتر (فرق) نکالے اور دماغ اُن کا ٹھیک کرے. اُن میں آسمانی خدا کا پیغام سمجھنے کی صلاحیت دے اور اُن میں انسان بننے کا شوق دے. (۵۱۵)

❋حضرت عمر کی زندگی سے چادر کا خاص تعلق ہے جو انصاف اور مساوات کا ایک تاریخی واقعہ ہے اور جو آج کے لوک راج کے لئے بہت بڑا پاٹھ (سبق) ہے

वह पैग़ाम क्या है ?

प्रेम और सेवा यानी मुहब्बत और ख़िदमत. यही धरम और इख़्लाक़ की शिक्षा है. यही इनसानियत की सुन्दरता है. यही क़ुरान की रूह है, यही गीता का सार है. और यही पवित्र आत्मा की पुकार है. जिसने इस पुकार को सुन लिया और जिसने इस राज़ (रहस्य) को समझ लिया समझो उसने अपने नैतिक कर्त्तव्य (इख़्लाक़ी फ़र्ज़) को पहचान लिया. बस जीवन भर उसके लिये शान्ति ही शान्ति है. यहाँ भी और वहाँ भी.

जबाँ पर आप है, फिर तुम है और फिर तू है
इसी से हिन्द में फैलो निफ़ाक़ की बू है.

× × × ×

मादरे हिन्दोस्ताँ तेरे अगर दिन नेक हों
फिर तो मुसलिम और हिन्दू दिल से दोनों एक हों.

× × × ×

नख़्ले उलफ़त काट कर बैठोगे किसकी छाँव में
अपने हाथों से न मारो तुम कुल्हाड़ी पाँव में

× × × ×

ख़ुदा जाने यह कैसी जंग है यह कैसी अनबन है.
किसी के हम नहीं दुशमन ज़माना फिर भी दुशमन हैं.

—'बिस्मिल' साहब
इलाहाबादी.

وہ پیغام کیا ہے؟

پریم اور سیوا یعنی محبّت اور خدمت۔ یہی دھرم اور اخلاق کی رکشا ہے۔ یہی انسانیت کی سُندرتا ہے۔ یہی قرآن کی روح ہے، یہی گیتا کا سلہ ہے۔ اور یہی پوتر آتما کی پُکار ہے۔ جس نے اِس پُکار کو سُن لیا اور جس نے اِس راز (رہسیہ) کو سمجھ لیا سمجھو اُس نے اپنے نیتک کرتویہ (اخلاقی فرض) کو پہچان لیا۔ بس جیون بھر اُس کے لئے شانتی ہی شانتی ہے۔ یہاں بھی اور وہاں بھی۔

زباں پر آپ ہے، پھر تم ہے اور پھر تو ہے
اِسی سے ہند میں پھیلی نفاق کی بُو ہے۔

× × × ×

مادرِ ہندوستاں تیرے اگر دن نیک ہوں
پھر تو مُسلم اور ہندو دل سے دونوں ایک ہوں۔

× × × ×

نخلِ اُلفت کاٹ کر بیٹھوگے کس کی چھاؤں میں
اپنے ہاتھوں سے نہ مارو تم کلہاڑی پاؤں میں۔

× × × ×

خدا جانے یہ کیسی جنگ ہے یہ کیسی اَن بن ہے
کسی کے ہم نہیں دُشمن زمانہ پھر بھی دشمن ہے۔

—'بسمل' صاحب
الہ آبادی۔

अहिंसा के विकास पर एक नज़र

(श्री किशोर लाल मशरूवाला, वर्धा)

असूल के तौर पर अहिंसा का विचार महावीर और बुद्ध से ज्यादा पुराना हो सकता है. महावीर की तरह शायद बुद्ध भी जैनों के पारसनाथ तीर्थंकर के पंथ में पले हुए थे. तब यह नहीं कहा जा सकता कि अहिंसा धर्म की दोनों में से किसी ने नई स्थापना की. लेकिन मुझे पता नहीं कि उनके जमाने से पहले अहिंसा का किस रूप में आम तौर पर पालन होता था, और लोगों में कितनी हद तक फैला हुआ था. इस लिये मैं बुद्ध महावीर से इस लेख का शुरूआत करता हूँ. (१२५)

देखने में अहिंसा शब्द नाकारी (निवृत्ति पर) है. खास तरह के काम करने से हिंसा होती है. अहिंसा के माने सिर्फ इतने ही हो सकते हैं कि वैसे काम से रुक जाना. मैं दूसरे जीव को तकलीफ देने से हाथ रोक लूं. इसका मतलब यह नहीं कि मुझे उस जीव के लिये कुछ अनुराग हमदर्दी होना चाहिये या उसकी सेवा, मदद करनी चाहिये. इतना ही नहीं बल्कि अहिंसा के लिये यह भी जरूरी नहीं कि अगर वह जीव ऐसी मुश्किल में हो जिसके लिये मैं जिम्मेदार नहीं तो उसे बचाने के लिये मुझे कुछ करना चाहिये. ❀

❀ अहिंसा धर्म के माने हैं हिंसा न करना और इस हिंसा

اہنسا کے وکاس پر ایک نظر

(شری کشور لال مشروالا، وردھا)

اصول کے طور پر اہنسا کا وچار مہابیر اور بدھ سے زیادہ پرانا ہوسکتا ہے۔ مہابیر کی طرح شاید بدھ بھی جینوں کے پارس ناتھ تیرتھنکر کے پنتھ میں پلے ہوئے تھے۔ تب یہ نہیں کہا جاسکتا کہ اہنسا دھرم کی دونوں میں سے کسی نے نئی استھاپنا کی۔ لیکن مجھے پتہ نہیں کہ ان کے زمانے سے پہلے اہنسا کا کس روپ میں عام طور پر پالن ہوتا تھا، اور لوگوں میں کتنی حد تک پھیلا ہوا تھا۔ اس لئے میں بدھ مہابیر سے اس لیکھ کی شروعات کرتا ہوں۔ (۱۲۵)

دیکھنے میں اہنسا شبد ناکاری (نورتی پر) ہے۔ خاص طرح کے کام کرنے سے ہنسا ہوتی ہے۔ اہنسا کے معنے صرف اتنے ہی ہوسکتے ہیں کہ ویسے کام سے رک جانا۔ میں دوسرے جیو کو تکلیف دینے سے ہاتھ روک لوں۔ اس کا مطلب یہ نہیں کہ مجھے اس جیو کے لئے کچھ انوراگ ہمدردی ہونا چاہئے یا اس کی سیوا، مدد کرنی چاہئے۔ اتنا ہی نہیں بلکہ اہنسا کے لئے یہ بھی ضروری نہیں کہ اگر وہ جیو ایسی مشکل میں ہو جس کے لئے میں ذمہ دار نہیں تو اسے بچانے کے لئے مجھے کچھ کرنا چاہئے۔ *

---

* اہنسا دھرم کے معنے ہیں ہنسا نہ کرنا اور اس ہنسا

आदमी को अहिंसा धर्म सूझता ही नहीं अगर जिस समाज में वह रहा हो उसमें बड़े पैमाने पर हिंसा की आदतें फैली हुई न हों. ऐसी आदतों में एक आदत मान्स यानी गोश्त खाने की है. आम तौर पर आदमी जात मान्स खाने वाली है. और अपने खुराक के लिये हर रोज हज़ारों की जान लेती है. पिछले जमाने में सब लोग अपने देवों को भी मान्स का भोग देते थे. वह धर्म का एक पाक काम समझा जाता था. तब क़ुदरती था कि जो आदमी समाज में ज्यादा धार्मिक या पैसे वाला या ऊँचे अधिकार

न करने पर ही जोर दिया जाता है. यह नीचे के लिखान से समझ में आ जायगा. मान लो एक आदमी भूकों को नाज बाटता है और किसी अहिंसा धर्मी से पूछता है कि उसका यह काम पुन्य का है या पाप का······ इस बारे में भगवान महावीर ने साफ़ बताया है कि ऐसे मौक़े पर अहिंसा धर्मी चुप रहे. कोई जवाब न दे. वह ऐसा भी न कहे कि वह काम पुन्य का है क्यों कि उसका फ़र्ज़ है कि वह किसी भी चल या अचल जान की हिंसा को अपनी मंजूरी न दे, और वह यह भी न कहे कि वह काम पाप का है क्यों कि उससे वह भूके को दान पाने में रुकावट डालने वाला हो जायगा. जो ऐसे दान की सराहना करता है वह नाज में रहे जीवों के नाश में साझी होता है और जो उसमें पाप बताता है वह दूसरे जीवों के जीने का साधन बन्द करता है. इसलिये अहिंसा धर्मी चुप रह कर दोनों पापों से खुद को बचा ले.

"The Cult of Ahimsa"—Le Shri Chand Rampuriya pr. 41.

آدمی کو اہنسا دھرم سوجھتا ہی نہیں اگر جس سماج میں وہ رہا ہو اس میں بڑے پیمانے پر ہنسا کی عادتیں پھیلی ہوئی نہ ہوں. ایسی عادتوں میں ایک عادت مانس یعنی گوشت کھانے کی ہے. عام طور پر آدمی جات مانس کھانے والی ہے، اور اپنے خوراک کے لئے ہر روز ہزاروں کی جان لیتا ہے. پچھلے زمانے میں سب لوگ اپنے دیوں کا بھی مانس کا بھوگ دیتے تھے. وہ دھرم کا ایک پاک کام سمجھا جاتا تھا. تب قدرتی تھا کہ جو آدمی سماج میں زیادہ دھارمک یا پیسے والا یا اونچے ادھکار

نہ کرنے پر ہی زور دیا جاتا ہے. یہ نیچے کے لکھان سے سمجھ میں آجائیگا. مان لو کہ ایک آدمی بھوکوں کو ناج بانٹتا ہے اور کسی اہنسا دھرمی سے پوچھتا ہے کہ اس کا یہ کام پن کا ہے یا پاپ کا...... اس بارے میں بھگوان مہابیر نے صاف بتایا ہے کہ ایسے موقع پر اہنسا دھرمی چپ رہے، کوئی جواب نہ دے. وہ ایسا بھی نہ کہے کہ وہ کام پن کا ہے کیونکہ اس کا فرض ہے کہ وہ کسی بھی چل یا اچل جان کی ہنسا کو اپنی منظوری نہ دے، اور وہ یہ بھی نہ کہے کہ وہ کام پاپ کا ہے کیونکہ اس سے وہ بھوکے کو دان پانے میں رکاوٹ ڈالنے والا ہو جائے گا. جو ایسے دان کی سراہنا کرتا ہے وہ ناج میں رہے جیووں کے ناش میں ساجھی ہوتا ہے اور جو اس میں پاپ بتاتا ہے وہ دوسرے جیووں کے جینے کا سادھن بند کرتا ہے. اس لئے اہنسا دھرمی چپ رہ کر دونوں پاپوں سے خود کو بچا لے.

"The Cult of Ahimsa"—Le Shri

पर हो वह धर्म के लिये या मेज़बानी के लिये मामूली आदमियों से ज़्यादा जानें ले. इसलिये सैकड़ों यज्ञों में अनगिनत जीवों की बलि कर अपनी बड़ी धार्मिकता के लिये मशहूर हुए राजाओं की कथाएँ हम पुरानों में पढ़ते हैं.

ऐसी हालत में हिन्दुस्तान जैसे देश में इस तरह की बेहद हिन्सा से परेशान गम्भीर विचारकों का पैदा होना अचरज की बात नहीं. बेज़बान प्रानियों की जान लेना और वह भी धर्म के नाम पर, उन्हें बरदाश्त न हुआ हिन्दुस्तान की आबोहवा में जीने के लिये भी मान्स खाने की ज़रूरत नहीं, बल्कि कह सकते हैं कि वह बेज़रूरी है. शायद मान्साहार सारी प्रजा में, आर्यों में और यहाँ के पुराने रहने वालों दोनों में एक सा हो तो भी मुमकिन है कि यज्ञ के लिये जानवर मारने का रिवाज वैदिक धर्म का ख़ास-हिस्सा रहा हो. जैसा मैंने शुरू में बतलाया है मुमकिन है बुद्ध वैदिक धर्म में पले न हों. इस लिये पहले से ही उन पर यज्ञ पर श्रद्धा का कोई ज़ोरदार संस्कार न हो. ख़ास कर उन्होंने ही यज्ञों के ख़िलाफ़ ज़ोर से प्रचार किया मालूम होता है. उन्होंने मान्साहार छोड़ने पर बहुत ज़ोर दिया हो ऐसा नहीं दिखता. लेकिन यज्ञों के नाम पर होती हुई हिन्सा के सामने उन्होंने आवाज़ उठाई और मान्स खाने की आदत को कुछ हद तक रोकने की कोशिश की. कुछ दिन ऐसे भी ठहराए जिनमें मान्स खाया न जाए. बिना मान्स की ख़ुराक का ही बुद्ध धर्म में ज़ोर न होने से आम तौर पर बौद्ध लोग सिर्फ़ सब्ज़ी खाने वाले नहीं पाये जाते. लेकिन बुद्ध धर्म के प्रचार

پر ہو وہ دھرم کے لئے یا میزبانی کے لئے معمولی آدمیوں سے زیادہ جانیں لے. اِس لئے سیکڑوں یگیوں میں اَن گنت جیووں کی بلی کر اپنی بڑی دھارمکتا کے لئے مشہور ہوئے راجاؤں کی کتھائیں ہم پرانوں میں پڑھتے ہیں.

ایسی حالت میں ہندستان جیسے دیش میں اِس طرح کی بے حد ہنسا سے پریشان گمبھیر وچارکوں کا پیدا ہونا اچرج کی بات نہیں. بے زبان پرانیوں کی جان لینا اور وہ بھی دھرم کے نام پر، انھیں برداشت نہ ہوا. ہندستان کی آب و ہوا میں جینے کے لئے بھی مانس کھانے کی ضرورت نہیں بلکہ کہہ سکتے ہیں کہ وہ بے ضروری ہے. شاید مانساہار ساری پرجا میں، آریوں میں اور یہاں کے پرانے رہنے والوں دونوں میں ایک سا ہو تو بھی ممکن ہے کہ یگیہ کے لئے جانور مارنے کا رواج ویدک دھرم کا خاص حصہ رہا ہو. جیسا میں نے شروع میں بتلایا ہے ممکن ہے بدھ ویدک دھرم میں پلے نہ ہوں. اِس لئے پہلے سے ہی اُن پر یگیہ پر شردھا کا کوئی زوردار سنسکار نہ ہو. خاص کر اُنھوں نے ہی یگیوں کے خلاف زور سے پرچار کیا معلوم ہوتا ہے. اُنھوں نے مانساہار چھوڑنے پر بہت زور دیا ہو ایسا نہیں دکھتا. لیکن یگیوں کے نام پر ہوتی ہوئی ہنسا کے سامنے اُنھوں نے آواز اُٹھائی اور مانس کھانے کی عادت کو کچھ حد تک روکنے کی کوشش کی. کچھ دن ایسے بھی ٹھہرائے جن میں مانس کھایا نہ جائے. بنا مانس کی خوراک کا ہی بدھ دھرم میں زور نہ ہونے سے عام طور پر بدھ لوگ صرف سبزی کھانے والے نہیں پائے جاتے. لیکن بدھ دھرم کے پرچار

के साथ जानवर यज्ञ कम हुए और हिन्दुस्तान के कुछ हिस्सों में से बिल्कुल निकल गए. आगे जाकर अगरचे बौद्ध धर्म इस देश में से टल गया फिर भी नई ज़िन्दगी पाए हुए वैदिक धर्म में यज्ञ धर्म को पहले जितनी इज़्ज़त नहीं मिली. वैदिक धर्म से ही निकले हुए वैष्णव वग़ैरा सम्प्रदायों ने पशु यज्ञ की जगह नाज वग़ैरा के यज्ञ जारी किये और जानवर की क़ुरबानी का विरोध बौद्धों की तरह ही किया.

दर्मियान में महावीर के उपदेशों का भी साथ साथ प्रचार होता रहा. यह शक है कि महावीर के समय के जैन पूरे पूरे शाकाहारी होंगे या नहीं लेकिन इसमें शक नहीं कि आगे चल कर जैनियों ने अहिंसा के इस पहलू को एक तय किये रूप में बढ़ाया और उसका विकास किया. इस दिशा में अहिंसा की भावना का ज्यादा से ज्यादा अमल होने के खयाल से ज़िन्दगी की आदतों और खुराक क़ायम कर देने के लिये उन्होंने जीव-विद्या (Biology) को बड़ी लगन के साथ पढ़ा और समझा और जात जात के जीवों के भेद खोले. उन्होंने बतलाया कि सब्ज़ी की खुराक पर जीवन अच्छी तरह चल सकता है और सैकड़ों गृहस्थियों में वैसी आदतें डालीं. सब्ज़ी की खुराक जैन धर्म का खास और ज़रूरी हिस्सा बना और व्यौहार में अहिंसा के मानी इतने ही हो गए कि छोटे से छोटे जानदार को भी मारा न जाए. मान्साहार किया न जाये इतना ही नहीं कई तरह की सब्ज़ियाँ भी छोड़ दी जाएँ.

मालूम होता है कि वैष्णव धर्म ने बौद्ध और जैन धर्मों के

کے ساتھ جانور یگیہ کم ہوئے اور ہندستان کے کچھ حصّوں میں سے بالکل نکل گئے. آگے جاکر اگرچہ بودھ دھرم اِس دیش میں سے ٹل گیا پھر بھی نئی زندگی پائے ہوئے ویدک دھرم میں یگیہ دھرم کو پہلے جتنی عزّت نہیں ملی. ویدک دھرم سے ہی نکلے ہوئے ویشنو وغیرہ سمپردایوں نے پشو یگیہ کی جگہ اناج وغیرہ کے یگیہ جاری کئے اور جانور کی قربانی کا وِرودھ بودھوں کی طرح ہی کیا.

درمیان میں مہابیر کے اُپدیشوں کا بھی ساتھ ساتھ پرچار ہوتا رہا. یہ شک ہے کہ مہابیر کے سمے کے جین پورے پورے شاکاہاری ہوں گے یا نہیں لیکن اِس میں شک نہیں کہ آگے چل کر جینیوں نے اہنسا کے اِس پہلو کو ایک طے کئے روپ میں بڑھایا اور اس کا وکاس کیا. اِس دِشا میں اہنسا کی بھاونا کا زیادہ سے زیادہ عمل ہونے کے خیال سے زندگی کی عادتوں اور خوراک قایم کر دینے کے لئے اُنھوں نے جیو ودیا (Biology) کو بڑی لگن کے ساتھ پڑھا اور سمجھا اور جات جات کے جیووں کے بھید کھولے. اُنھوں نے بتلایا کہ سبزی کی خوراک پر جیون اچھی طرح چل سکتا ہے اور سیکڑوں گرہستیوں میں ویسی عادتیں ڈالیں. سبزی کی خوراک جین دھرم کا خاص اور ضروری حصّہ بنا اور بیوہار میں اہنسا کے معنی اِتنے ہی ہوگئے کہ چھوٹے سے چھوٹے جان دار کو بھی مارا نہ جائے. مانساہار کیا نہ جائے اِتنا ہی نہیں کئی طرح کی سبزیاں بھی چھوڑ دی جائیں.

معلوم ہوتا ہے کہ ویشنو دھرم نے بودھ اور جین دھرموں کے

बीच का रास्ता लिया. उसने यह बहुत कुछ मान लिया कि यज्ञ और खुराक के लिये जानदारों की हिंसा नहीं की जा सकती. लेकिन साग-सब्ज़ियों के बारे में वह जैनों जैसी बारीकियों में नहीं उतरा और खाने लायक़ क़रीब क़रीब सब तरह की सब्ज़ियाँ लेने की छुट्टी रखली. अगर एक दो चीज़ें छोड़ दीं तो वह अहिंसा की नज़र से नहीं किसी दूसरी वजह से.

अब यह समझ लेना चाहिये कि अहिंसा की भावना दिल में पैदा होने से पहले आदमी में कुछ हद तक प्यार मुहब्बत की भावना का विकास हो जाना चाहिये. प्यार और मुहब्बत के कारन अहिंसा में श्रद्धा पैदा होती है. यह नहीं होता कि अहिंसा की वजह से प्यार मोहब्बत जागते हों. इसलिये व्यौहार में हिंसा न करने की यानी अहिंसा धर्म के साथ साथ हिंसा के फैलने में भी मदद मिली और वह बेज़बान प्राणियों के लिये प्यार मोहब्बत की शकल में ज़ाहिर हुई. फिर वह चाहे किसी एक आदमी में रही हो या एक समाज में. गोरत्ता, पिंजरा पोल, बन्दर, कुत्ते, चींटी, मक्खी, कछुवा वग़ैरा जानदारों को खिलाना, खटमल जैसे नाचीज़ जानदार को भी बचाना वग़ैरा का जीव दया के नाम पर रिवाज चला.

इसमें भले ही यह कहा जाए कि इन कामों में समझ की तराज़ू के दोनों पल्ले ठीक ठीक न रह सकें, फिर भी इन धर्मों के मानने वालों में बेज़बान जानवरों को प्यार मोहब्बत करने की कोशिश पाई जाती है. इन कोशिशों की वजह से जो एक ख़ास भावना हिन्दुस्तान में मज़बूती के साथ बढ़ गई वह गोरत्ता की है. गोबध

(५४८)

بیچ کا راستہ لیا. اُس نے یہ بہت کچھ مان لیا کہ یگیہ اور خوراک کے لئے جان داروں کی ہنسا نہیں کی جاسکتی. لیکن ساگ سبزیوں کے بارے میں وہ جینوں جیسی باریکیوں میں نہیں اُترا اور کھانے لائق قریب قریب سب طرح کی سبزیاں لینے کی چھٹی رکھ لی. اگر ایک دو چیزیں چھوڑ دیں تو وہ اہنسا کی نظر سے نہیں کسی دوسری وجہ سے.

اب یہ سمجھ لینا چاہئے کہ اہنسا کی بھاونا دل میں پیدا ہونے سے پہلے آدمی میں کچھ حد تک پیار محبّت کی بھاونا کا وکاس ہوجانا چاہئے. پیار اور محبّت کے کارن اہنسا میں شردھا پیدا ہوتی ہے. یہ نہیں ہوتا کہ اہنسا کی وجہ سے پیار محبّت جاگتے ہوں اس لئے بیوہار میں ہنسا نہ کرنے کی یعنی اہنسا دھرم کے ساتھ ساتھ اہنسا کے پھیلنے میں بھی مدد ملی اور وہ بے زبان پرانیوں کے لئے پیار محبّت کی شکل میں ظاہر ہوئی. پھر وہ چاہے کسی ایک آدمی میں رہی ہو یا ایک سماج میں. گورکشا، پنجرا پول، بندر، کتّے، چیونٹی، مکھی، کچھوا وغیرہ جان داروں کو کھلانا، کھٹمل جیسے ناچیز جان دار کو بھی بچانا وغیرہ کا جیو دیا کے نام پر رواج چلا.

اس میں بھلے ہی یہ کہا جائے کہ اِن کاموں میں سمجھ کی ترازو کے دونوں پلّے ٹھیک ٹھیک نہ رہ سکے، پھر بھی اِن دھرم کے ماننے والوں میں بے زبان جانوروں کو پیار محبّت کرنے کی کوشش پائی جاتی ہے. اِن کوششوں کی وجہ سے جو ایک خاص بھاونا ہندستان میں مضبوطی کے ساتھ بڑھ گئی وہ گورکشا کی ہے. گوبدھ

(٥٣٨)

हो ही नहीं सकता—यज्ञों के लिये भी नहीं और खुराक के लिये तो बिल्कुल ही नहीं. पशु हिंसा को इस रोक को क़रीब क़रीब सभी ने मान लिया. पारसियों, यूरोपियनों के आने से पहले के ईसाइयों और बहुत से मुसलमान राजाओं और अलग अलग आदमियों ने भी इस रोक को माना. वेद धर्म की नए से बढ़ती होने के बाद कुछ पशु यज्ञ फिर से जारी हुए. तो भी गाय और बैल बलि न देने लायक़ और न खाए जाने लायक़ ही समझे गए. दूसरे प्राणियों की हिंसा के बारे में गोश्त खाने वाले और साग सब्जी खाने वाले ऐसे दो भेद पड़ गए. गोश्त खाने वालों की तादाद बहुत बड़ी होने पर भी साग सब्जी खाने वालों की जमात काफ़ी बड़ी और वसीलेदार हिन्दुओं की बनी हुई है.

बौद्ध जैन और नए चले वेद धर्म की मिली जुली कोशिशों के प्रचार के बारे में निकला हुआ यह मोटा हिसाब है. ऐसा कह सकते हैं.

बौद्ध धर्म के उपदेशों में अमली अहिंसा यानी प्यार मोहब्बत के कामों पर भी बहुत जोर दिया गया है. बौद्ध धर्म की किताबों में मिसाल के तौर पर ऐसी बहुत सी कथाएँ मिलती हैं लेकिन कम से कम हिन्दुस्तान में अहिंसा का यह पहलू तरीक़े से और इन्तजाम के साथ काम में लाया गया हो, ऐसा देखने में नहीं आता. इस अमली अहिंसा के विकास के लिये दुनिया ईसाई धर्म की एहसानमन्द है.

ऐसा मालूम होता है कि ईसा मसीह का खानगी जीवन धर्म के उपदेश के साथ साथ रोगियों की सेवा में भी लगा हुआ रहता

ہو ہی نہیں سکتا — یگوں کے لئے بھی نہیں اور خوراک کے لئے تو بالکل ہی نہیں۔ پشو ہنسا کی اِس روک کو قریب قریب سبھی نے مان لیا۔ پارسیوں، یوروپینوں کے آنے سے پہلے کے عیسائیوں اور بہت سے مسلمان راجاؤں اور الگ الگ آدمیوں نے بھی اِس روک کو مانا۔ وید دھرم کی نئے سے بڑھتی ہونے کے بعد کچھ پشو یگیہ پھر سے جاری ہوئے تو بھی گائے اور بیل بلی نہ دینے لائق اور نہ کھائے جانے لائق ہی سمجھے گئے۔ دوسرے پرانیوں کی ہنسا کے بارے میں گوشت کھانے والے اور ساگ سبزی کھانے والے ایسے دو بھید پڑ گئے۔ گوشت کھانے والوں کی تعداد بہت بڑی ہونے پر بھی ساگ سبزی کھانے والوں (۵۴۹) کی جماعت کافی بڑی اور وسیلے دار ہندوؤں کی بنی ہوئی ہے۔

بودھ جین اور نئے چلے وید دھرم کی ملی جلی کوششوں کے پرچار کے بارے میں نکلا ہوا یہ موٹا حساب ہے۔ ایسا کہہ سکتے ہیں۔

بودھ دھرم کے اُپدیشوں میں عملی اہنسا یعنی پیار محبت کے کاموں پر بھی بہت زور دیا گیا ہے۔ بودھ دھرم کی کتابوں میں مثال کے طور پر ایسی بہت سی کتھائیں ملتی ہیں لیکن کم سے کم ہندستان میں اہنسا کا یہ پہلو طریقے سے اور انتظام کے ساتھ کام میں لایا گیا ہو، ایسا دیکھنے میں نہیں آتا۔ اِس عملی اہنسا کے وکاس کے لئے دُنیا عیسائی دھرم کی احسان مند ہے۔

ایسا معلوم ہوتا ہے کہ عیسیٰ مسیح کا خانگی جیون دھرم کے اُپدیش کے ساتھ ساتھ روگیوں کی سیوا میں بھی لگا ہوا رہتا

होगा. दिल दिमाग़ के मरीज़ों की उपदेशों से और तन के मरीज़ों की ख़िदमत दवाइयों से वह करते रहे होंगे. इस दूसरे क़िस्म की सेवा को बाइबिल में चमत्कारों के तौर पर बताया गया है. धार्मिक पुरुषों की ज़िन्दगी इस तरह लिखने का पुराने ज़माने में सारी दुनिया में रिवाज था. मेरा ख़याल है कि चमत्कारों के अलावा ख़ुद को मालूम हों ऐसी दवाइयों और ख़िदमत सेवा के ज़रिये ईसा रोगियों की सेवा करते होंगे. क्यों कि अगर चमत्कारों से ही रोगियों को वह अच्छा करते होते तो यह मुमकिन नहीं कि जिस तरह इस प्रकार की सेवा का काम करना ईसाई साधुओं और दाताओं का एक ख़ास अंग बना है वैसा वह हो सकता. लगभग सारी दुनिया के बड़े गुरुओं और सन्तों के चरित्रों में चमत्कार से रोग मिटाने के क़िस्से पाए जाते हैं. फिर भी उनके पन्थों में रोगियों की ख़िदमत करने की आदत पैदा हुई हो सो बात देखने में नहीं आती. ऐसा लिखते वक़्त मैं इस बात को नहीं भुला सकता कि ऐसे भी कट्टर पादरी हो चुके हैं जिन्होंने दवाइयों से इलाज करने वालों को सख़्त मना किया है और अपनी हुकूमत के दिनों में वैसा करने वालों को सज़ायें फ़रमाई हैं. फिर भी इस तरह की ख़िदमत ईसाई साधना का एक क़ायमी हिस्सा बना है और उस काम के लिये अपनी ज़िन्दगी शहीद करने वाले पवित्र मर्द औरतों की अटूट परम्परा आज तक चली आई है. ऐसी सेवा के बड़े बड़े मिशन क़ायम कर उन्होंने उनकी नमूनेदार संस्थाएँ बनाई हैं और सभी पन्थों और फ़िरक़ों के सब देशों के ईसाइयों ने इन संस्थाओं को खुले हाथ मदद दी है. नासमझों असंस्कारी

ہوگا. دل دماغ کے مریضوں کو اپدیشوں سے اور تن کے مریضوں کی خدمت دوائیوں سے وہ کرتے رہے ہوں گے. اس دوسرے قسم کی سیوا کو بائبل میں چمتکاروں کے طور پر بتایا گیا ہے. دھارمک پرشوں کی زندگی اس طرح لکھنے کا پرانے زمانے میں ساری دنیا میں رواج تھا. میرا خیال ہے کہ چمتکاروں کے علاوہ خود کو معلوم ہوں ایسی دوائیوں اور خدمت سیوا کے ذریعے عیسیٰ روگیوں کی سیوا کرتے ہوں گے. کیونکہ اگر چمتکاروں سے ہی روگیوں کو وہ اچھا کرتے ہوتے تو یہ ممکن نہیں کہ جس طرح اس پرکار کی سیوا کا کام کرنا عیسائی سادھوؤں اور داتاؤں کا ایک خاص انگ بنا ہے ویسا وہ ہو سکتا. لگ بھگ ساری دنیا کے بڑے گروؤں اور سنتوں کے چرتروں میں چمتکار سے روگ مٹانے کے قصے پائے جاتے ہیں. پھر بھی ان کے پنتھوں میں (۵۵۰)
روگیوں کی خدمت کرنے کی عادت پیدا ہوئی ہو سو بات دیکھنے میں نہیں آتی. ایسا لکھتے وقت میں اس بات کو نہیں بھلا سکتا کہ ایسے بھی کٹر پادری ہو چکے ہیں جنھوں نے دوائیوں سے علاج کرنے والوں کو سخت منع کیا ہے اور اپنی حکومت کے دنوں میں ویسا کرنے والوں کو سزائیں فرمائی ہیں. پھر بھی اس طرح کی خدمت عیسائی سادھنا کا ایک قایمی حصہ بنا ہے اور اس کام کے لیے اپنی زندگی شہید کرنے والے پوتر مرد عورتوں کی اٹوٹ پرمپرا آج تک چلی آئی ہے. ایسی سیوا کے بڑے بڑے مشن قایم کر انھوں نے ان کی نمونے دار سنستھائیں بنائی ہیں اور سبھی پنتھوں اور فرقوں کے سب دیشوں کے عیسائیوں نے ان سنستھاؤں کو کھلے ہاتھ مدد دی ہے. ناسمجھوں اسنسکاری

और रोगों से दुखी आदमियों की सेवा के संगठन को ईसाई मज़हब से पोसा हुआ अहिंसा धर्म की ख़ास चीज़ कही जा सकती है.

इसलाम ने नाम लेकर अहिंसा के असूल पर बहुत ज़ोर नहीं दिया लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि उसने अहिंसा को कुछ चन्दा नहीं दिया. चूस चूस कर ब्याज का नाजायज़ फ़ायदा उठा कर जिस तरह आदमी आदमी को हिंसा करता है उस पर सबसे पहले ध्यान खींचने वालों शायद इसलाम है. जिन मानों में आज हम भाई चारे और समाजवाद को समझते है (यानी पूँजी-वाद, ख़ास अधिकार, इकहत्ती हुकुमत वग़ैरा के विरोधी) उन मानों में इसलाम के इन उसूलों का उपदेश किया नहीं, लेकिन ग़ुलामी की प्रथा सूद ख़ोरी और धार्मिक और समाजिक व्योहारों में दिखाए जाने वाले फ़रक़ों का उसने विरोध किया है और दान और यतीमों की संस्थाओं पर ज़ोर दिया है. कह सकते हैं कि सूद ख़ोरी की मनाही अहिंसा को इसलाम की ख़ास देन है. इस बारे में यहूदी और हिन्दू धर्मों से उसका विरोध है.

धार्मिक बेदारी से सम्बन्ध न रखते हुए भी मार्टिन लूथर के बाद यूरोप में जो विज्ञान का नया ज़माना शुरू हुआ और जो पिछले डेढ़ सौ साल में बहुत तेज़ी के साथ पनपा उसने भी एक नई लाइन में अहिंसा को पनपाया है. जहाँ तकलीफ़ देना लाज़मी हो—वहाँ इतना तो हो कि वह कम से कम दुख देने वाली हों, ऐसे तरीक़े खोजना और आज़माना यह वह लाइन है. हो सकता है कि तकलीफ़ तो जानबूझ कर हिन्सा के भाव से भी की जाती हो जैसे फाँसी देने में क़त्ल करने में या ज़िन्दा जानवरों के चीर फाड़

اور روگوں سے دکھی آدمیوں کی سیوا کے سنگٹھن کو عیسائی مذہب سے پوسا ہوا اہنسا دھرم کی خاص چیز کہی جا سکتی ہے.

اسلام نے نام لے کر اہنسا کے اصول پر بہت زور نہیں دیا لیکن اس کا مطلب یہ نہیں کہ اس نے اہنسا کو کچھ چندہ نہیں دیا. چوس چوس کر بیاج کا ناجائز فائدہ اٹھا کر جس طرح آدمی آدمی کی ہنسا کرتا ہے اس پر سب سے پہلے دھیان کھینچنے والوں میں شاید اسلام ہے. جن معنوں میں آج ہم بھائی چارے اور سماج واد کو سمجھتے ہیں (یعنی پونجی-واد، خاص ادھکار، اکہتی حکومت وغیرہ کے ورودھی) ان معنوں میں اسلام کے ان اصولوں کا اپدیش کیا نہیں، لیکن غلامی کی پرتھا سود خوری اور دھارمک اور سماجک ویوہاروں میں دکھائے جانے والے فرقوں کا اس نے ورودھ کیا ہے اور دان اور یتیموں کی سنستھاؤں پر زور دیا ہے. کہہ سکتے ہیں کہ سود خوری کی منا ہی اہنسا کو اسلام کی خاص دین ہے. اس بارے میں یہودی اور ہندو دھرموں سے اس کا ورودھ ہے.

دھارمک بیداری سے سمبندھ نہ رکھتے ہوئے بھی مارٹن لوتھر کے بعد یوروپ میں جو وگیان کا نیا زمانہ شروع ہوا اور جو پچھلے ڈیڑھ سو سال میں بہت تیزی کے ساتھ پنپا اس نے بھی ایک نئی لائن میں اہنسا کو پنپایا ہے. جہاں تکلیف دینا لازمی ہو— وہاں اتنا تو ہو کہ وہ کم سے کم دکھ دینے والی ہوں، ایسے طریقے کھوجنا اور آزمانا یہ وہ لائن ہے. ہو سکتا ہے کہ تکلیف تو جان بوجھ کر ہنسا کے بھاو سے بھی کی جاتی ہو جیسے پھانسی دینے میں، قتل کرنے میں یا زندہ جانوروں کے چیر پھاڑ

में, लेकिन वैसी हिंसा भी फुर्ती से और जिस तरह प्राणी-को कम से कम तकलीफ हो उस तरह करनी चाहिये. ऐसी एक भावना बढ़ी है. चीरफाड़ में बेहोश करने वाली दवाइयों की खोज भी इसी भावना में से हुई. पेड़ और पौदों की काट छाँट में भी बहुत बार यह भावना काम करती हुई दिखाई देती है.

एक तरफ़ से विज्ञान युग ने पिछले जमाने से हजारों गुनी ज्यादा जोर की और फैली हुई हिंसा बढ़ा दी है और हिंसा की नजर से आदमी को क़रीब क़रीब बेरहम और अविचारी बना दिया है. दूसरी तरफ़ से जो तकलीफ़ दूर की जा सकती है उसे न होने देने के बारे में उसे यानी आदमी को बहुत ही फ़िक्र करने वाला और तकलीफ़ से हमदर्दी रखने वाला बना दिया है.

(५२६)

विज्ञान और उद्योग के जमाने के पीछे आए हुए समाजवाद ने भी अहिंसा के अब तक ध्यान न पाए हुए लेकिन जरूरी हिस्से का विकास करने में हाथ बटाया है. अगर सिर्फ़ जिस्म की तकलीफ़ों में ही हिंसा समझी जाती हो तो अहिंसा हिंसा का फ़रक़ समझाना कुछ आसान है लेकिन तरह तरह के चूसने के तरीक़ों के जरिये आदमी आदमी में जो बारीक हिंसा चलती है उसे परखना या रोकना बहुत मुशकिल है. जब से इनसानी समाज बंधा है, तब से जैसे गोश्त खाने के बारे में वैसे ही दूसरी बीसों हिंसक आदतों के बारे में वह ऐसा ही मान कर चला है. मानों वह उनको जिन्दगी के गुज़ारे के लिये जरूरी समझता है. लेकिन गहरा सोचने पर मालूम होता है कि बहुत सी ऐसी मानताएं बे बुनियाद हैं. इस तरह के सैकड़ों हिंसक

میں، لیکن ویسی ہنسا بھی پھرتی سے اور جس طرح پرانی کو کم سے کم تکلیف ہو اُس طرح کرنی چاہیئے۔ ایسی ایک بھاونا بڑھی ہے۔ چیرپھاڑ میں بیہوش کرنے والی دوائیوں کی کھوج بھی اسی بھاونا میں سے ہوئی۔ پیڑ اور پودوں کی کاٹ چھانٹ میں بھی بہت بار یہ بھاونا کام کرتی ہوئی دکھائی دیتی ہے۔

ایک طرف سے وگیان یگ نے پچھلے زمانے سے ہزاروں گنی زیادہ زور کی اور پھیلی ہوئی ہنسا بڑھا دی ہے اور ہنسا کی نظر سے آدمی کو قریب قریب بیرحم اور اوِچاری بنا دیا ہے۔ دوسری طرف سے جو تکلیف دُور کی جا سکتی ہے اُسے نہ ہونے دینے کے بارے میں اُسے یعنی آدمی کو بہت ہی فکر کرنے والا اور تکلیف سے ہمدردی رکھنے والا بنا دیا ہے۔

(۵۲۶)

وگیان اور اُدیوگ کے زمانے کے پیچھے آئے ہوئے سماج واد نے بھی اہنسا کے اب تک دھیان نہ پائے ہوئے لیکن ضروری حصّے کا وکاس کرنے میں ہاتھ بٹایا ہے۔ اگر صرف جسم کی تکلیفوں میں ہی ہنسا سمجھی جاتی ہو تو اہنسا ہنسا کا فرق سمجھانا کچھ آسان ہے لیکن طرح طرح کے چوسنے کے طریقوں کے ذریعے آدمی آدمی میں جو باریک ہنسا چلتی ہے اُسے پرکھنا یا روکنا بہت مشکل ہے۔ جب سے انسانی سماج بندھا ہے، تب سے جیسے گوشت کھانے کے بارے میں ویسے ہی دوسری بیسوں ہنسک عادتوں کے بارے میں ایسا ہی مان کر چلا ہے۔ مانوں وہ اُس زندگی کے گزارے کے لئے ضروری سمجھتا ہے۔ لیکن گہرا سوچنے پر معلوم ہوتا ہے کہ بہت سی ایسی مانتائیں بے بنیاد ہیں۔ اس طرح کے سیکڑوں ہنسک

रिवाजों की तरफ़ ध्यान खींचने में समाजवाद ने बहुत ज्यादा हिस्सा लिया है और चूसने को सहूलियत देने वाली बहुत सी इनसानी तरकीबों के ख़िलाफ़ लोकमत तैयार किया है. यह मत सिर्फ़ विचार की हद में ही नहीं रहे बल्कि समाजवादी आदर्शों पर कई तरह की संस्थाएँ और राज क़ायम करके उसकी मिसालें भी पेश की हैं. यह भी अहिंसा के रास्ते में ही सोच समझ कर रक्खा हुआ एक क़दम है.

इसके बाद ख़ुद हमारा यानी गान्धी युग आता है. ईसा के बाद वह अहिंसा के सबसे बड़े आचार्य हैं. उन्होंने ही पहली बार ज़ाहिर किया कि 'अहिंसा सिर्फ़ 'हिंसा न करने' का ही नाम नहीं है, बल्कि काम में लगाने वाला एक जोश है और दूसरे दुनियावी और दोनों ताक़तों की तरह अहिंसा से भी काम लिया जा सकता है. उन्होंने यह भी बतलाया कि सत्य अहिंसा वग़ैरा रुहानी गुनों को एक दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता. एक की तरफ़ से मुंह फेर कर दूसरे बढ़ाए नहीं जा सकते. यह सही है कि उन्होंने इसाई धर्म की श्रद्धा, आशा और प्रेम या बौद्धों की प्यार मुहब्बत की बनाई हुई शकल को नहीं अपनाया. उन्होंने 'हिंसा न करने' को सिफ़त को ही अपने काम में लिया है. लेकिन जिसे वह रचनात्मक या तामीरी काम नाम देते हैं उसे अहिंसा के साथ जोड़ कर उन्होंने उस शब्द में गले तक लगे रहने की ताक़त यानी प्रवृत्ति भर दी है. रचनात्मक काम के अलग अलग हिस्सों और उन्हे चलाने के तरीक़ों में भले ही जैसी जगह और जैसा वक़्त हो वैसा फ़र्क़ होता रहे. मार्के की बात यह समझने को

رواجوں کی طرف دھیان کھینچنے میں سماج واد نے بہت زیادہ حصّہ لیا ہے اور چوسنے کو سہولت دینے والی بہت سی انسانی ترکیبوں کے خلاف لوک مت تیار کیا ہے. یہ مت صرف وچار کی حد میں ہی نہیں رہے بلکہ سماج وادی آدرشوں پر کئی طرح کی سنستھائیں اور راج قایم کرکے اس کی مثالیں بھی پیش کی ہیں. یہ بھی اہنسا کے راستے میں ہی سوچ سمجھ کر رکھا ہوا ایک قدم ہے.

اس کے بعد خود ہمارا یعنی گاندھی یگ آتا ہے. عیسیٰ کے بعد وہ اہنسا کے سب سے بڑے آچاریہ ہیں. انھوں نے ہی پہلی بار ظاہر کیا کہ 'اہنسا صرف ہنسا نہ کرنے' کا ہی نام نہیں ہے' بلکہ کام میں لگانے والا ایک جوش ہے اور دوسرے دنیاوی اور دونوں طاقتوں کی طرح اہنسا سے بھی کام لیا جا سکتا ہے. انھوں نے یہ بھی بتلایا کہ ستیہ اہنسا وغیرہ روحانی گنوں کو ایک دوسرے سے الگ نہیں کیا جا سکتا. ایک کی طرف سے منہ پھیر کر دوسرے بڑھائے نہیں جا سکتے. یہ صحیح ہے کہ انھوں نے عیسائی دھرم کی شردھا' آشا اور پریم یا بودھوں کی پیار محبت کی بنائی ہوئی شکل کو نہیں اپنایا. انھوں نے 'ہنسا نہ کرنے' کی صفت کو ہی اپنے کام میں لیا ہے. لیکن جسے وہ رچناتمک یا تعمیری کام نام دیتے ہیں اسے اہنسا کے ساتھ جوڑ کر انھوں نے اس شبد میں گلے تک لگے رہنے کی طاقت یعنی پرورتی بھر دی ہے. رچناتمک کام کے الگ الگ حصّوں اور انھیں چلانے کے طریقوں میں بھلے ہی جیسی جگہ اور جیسا وقت ہو ویسا فرق ہوتا رہے. معرکے کی بات یہ سمجھنے کی

है कि कोई न कोई रचनात्मक सेवा के बिना अहिंसा की जड़ कभी गहरी जम नहीं सकती. और उन्होंने यह भी दिखलाया कि अहिंसा का अमली मैदान किसी ख़ास काम में ही बँधकर नहीं रह जाता. आदमी की ज़िन्दगी के तरह तरह के कामों में और उलझनों में सुभीते के लिये हम धार्मिक, राजनीतिक, आर्थिक सामाजिक, अदबी, कलात्मक वग़ैरा चाहे जिस नाम से पहचानें, हर एक का फ़ैसला हिंसक और अहिन्सक दोनों तरह से हो सकता है. गान्धी जी उनका अहिन्सक फ़ैसला लाने का आग्रह रखना सिखाते हैं.

उनके सिद्धान्त का इसे मोटा ढाँचा समझो. लेकिन पिछले पचास बरस में जिन ख़ास सवालों का उन्हें मुक़ाबला करना पड़ा वह कितने राजनीतिक सामाजिक और आर्थिक रिवाजों के बदलने के बारे में थे. इन मैदानों ने ज़बर्दस्त और संगठित आदमियों के गिरोहों के ज़रिये कमज़ोर और असंगठित लोगों के किये ज़ुलमों का सामना करना उनके ख़ास काम बने. इन कामों को कराते हुए उन्होंने एक ऐसा तरीक़ा पैदा कर दिया कि जिससे अहिंसा पर ज़ोर के साथ मज़बूत रह कर कमज़ोर से कमज़ोर लोग या शख़्स ज़बर से ज़बर गिरोह का सामना कर सकता है. यह सच है कि जिन हालतों में उन्हें काम करना पड़ा उसमें उन्हें हर वक़्त अपने काम में हिंसा की थोड़ी ज़्यादा मेल-सेल भी निभा लेनी पड़ी. यह उनकी इच्छा के ख़िलाफ़ ही था और उनकी राय में इसके कारन उन्हें हमेशा अधूरी कामयाबी मिली. गान्धी जी के रचनात्मक काम के १७-१८ हिस्से गिनाए जाते हैं. हो सकता

ہی کہ کوئی نہ کوئی رچناتمک سیوا کے بنا اہنسا کی جڑ کبھی گہری جم نہیں سکتی۔ اور انھوں نے یہ بھی دکھلایا کہ اہنسا کا عملی میدان کسی خاص کام میں ہی بندھ کر نہیں رہ جاتا۔ آدمی کی زندگی کے طرح طرح کے کاموں میں اور الجھنوں میں سوبھیتا کے لیۓ ہم دھارمک، راج نیتک، آرتھک سماجی، ادبی، کلاتمک وغیرہ چاہے جس نام سے پہچانیں، ہر ایک کا فیصلہ ہنسک اور اہنسک دونوں طرح سے ہو سکتا ہی۔ گاندھی جی اُن کا اہنسک فیصلہ لانے کا آگرہ رکھنا سکھاتے ہیں۔

اُن کے سدھانت کا اسے موٹا ڈھانچا سمجھو۔ لیکن پچھلے پچاس برس میں جن خاص سوالوں کا اُنھیں مقابلہ کرنا پڑا وہ کتنے راج نیتک سماجک اور آرتھک رواجوں کے بدلنے کے بارے میں تھے۔ ان میدانوں نے زبردست اور سنگٹھت آدمیوں کے گروہوں کے ذریعے کمزور اور اسنگٹھت لوگوں کے کیۓ ظلموں کا سامنا کرنا اُن کے خاص کام بنے۔ ان کاموں کو کراتے ہوۓ اُنھوں نے ایک ایسا طریقہ پیدا کر دیا کہ جس سے اہنسا پر زور کے ساتھ مضبوط رہ کر کمزور سے کمزور لوگ یا شخص جبر سے جبر گروہ کا سامنا کر سکتا ہی۔ یہ سچ ہی کہ جن حالتوں میں اُنھیں کام کرنا پڑا اُن میں اُنھیں ہر وقت اپنے کام میں ہنسا کی تھوڑی زیادہ میل۔سیل بھی نبھا لینی پڑی۔ یہ اُن کی اِچھا کے خلاف ہی تھا اور اُن کی راۓ میں اس کے کارن اُنھیں ہمیشہ ادھوری کامیابی ملی۔ گاندھی جی کے رچناتمک کام کے ۱۷-۱۸ حصے گناۓ جاتے ہیں۔ ہو سکتا

है यह कम ज्यादा हों और वह अपनी तय की हुई आज की मर्यादा में रहें या न रहें. लेकिन इतना तो तय है कि जुल्म का सामना करने का उनका पैदा किया हुआ सत्याग्रह का रास्ता और उसकी कला (Technique) और उसे सफल करने के लिये किसी न किसी तरह से कोई रचनात्मक काम से उसका रिश्ता जोड़ने की जरूरत एक पक्की चीज रहेगी. हिन्दुस्तान को आजादी तो आज मिल गई है पर उसमें कुछ दोष भी आगया है. दोनों गांधी जी की नज़र में हैं. अहिंसा कामयाब तो हुई है लेकिन उसमें हिंसा मिल गई है और अहिंसा की कामयाबी अधूरी रह गई है. यह अधूरेपन का सबूत हमेशा बना रहेगा.

लेकिन आज कल हिंसा दो बहुत ही डरावनी शकलों में उछल पड़ी है. लड़ाई और आपसी खूंरेज़ी लड़ाई की हिंसा कोई नई चीज तो नहीं है लेकिन अपनी खूँखवारी और बढ़वारी की वजह से पिछली दो लड़ाइयों ने दुनिया के सब आगे की लड़ाइयों को पीछे हटा दिया है. लड़ाई की हिंसा जुदा जुदा हकूमतों के बीच है. क़ौमों के अन्दर आपसी दंगे भी कोई अनजानी बात नहीं, वह एक प्रजा का भीतरी युद्ध है. राज्यों के बीच होती हुई हिंसा से यह ज्यादा कठिन और गहरी चीज़ है क्योंकि वह न पूरी संगठित होती है और न बिलकुल असंगठित ही और इतनी हिंसा भी पहले कभी न हुई होगी जितनी बुरे रूप और बड़े पैमाने पर इस जमाने में फट निकली है.

पहले महायुद्ध ने बहुत से गहरे विचारकों के सोच में डाल दिया था। उनमें से अमन पसन्दों का एक दल पैदा हुआ। दूसरी जंग

ہے یہ کم زیادہ ہوں اور وہ اپنی طے کی ہوئی آج کی مریادا میں رہیں یا نہ رہیں۔ لیکن اِتنا تو طے ہے کہ ظلم کا سامنا کرنے کا اُن کا پیدا کیا ہوا ستیہ گرہ کا راستہ اور اُس کی کلا (Technique) اور اُسے سپھل کرنے کے لئے کسی نہ کسی طرح سے کوئی رچناتمک کام سے اُس کا رشتہ جوڑنے کی ضرورت ایک پکی چیز رہے گی۔ ہندستان کو آزادی تو آج مل گئی ہے پر اُس میں کچھ دوش بھی آگیا ہے۔ دونوں گاندھی جی کی نظر میں ہیں۔ اہنسا کامیاب تو ہوئی ہے لیکن اُس میں ہنسا مل گئی ہے اور اہنسا کی کامیابی ادھوری رہ گئی ہے۔ یہ ادھورے پن کا ثبوت ہمیشہ بنا رہے گا۔

(۵۳۲)

لیکن آج کل ہنسا دو بہت ہی ڈراؤنی شکلوں میں اُچھل پڑی ہے۔ لڑائی اور آپسی خون ریزی۔ لڑائی کی ہنسا کوئی نئی چیز تو نہیں ہے لیکن اپنی خونخواری اور بڑھواری کی وجہ سے پچھلی دو لڑائیوں نے دُنیا کے سب آگے کی لڑائیوں کو پیچھے ہٹا دیا ہے۔ لڑائی کی ہنسا جُدا جُدا حکومتوں کے بیچ ہے۔ قوموں کے اندر آپسی دنگے بھی کوئی ان جانی بات نہیں، وہ ایک پرجا کا بھیتری یدھ ہے۔ راجیوں کے بیچ ہوتی ہوئی ہنسا سے یہ زیادہ کٹھن اور گہری چیز ہے کیونکہ وہ نہ پوری سنگٹھت ہوتی ہے اور نہ بالکل اسنگٹھت ہی اور اِتنی ہنسا بھی پہلے کبھی نہ ہوئی ہوگی جتنی بُرے روپ اور بڑے پیمانے پر اِس زمانے میں پھوٹ نکلی ہے۔

پہلے مہایدھ نے بہت سے گہرے وچارکوں کو سوچ میں ڈال دیا تھا۔ اُن میں سے امن پسندوں کا ایک دل پیدا ہوا۔ دوسری جنگ

के वक़्त उनमें से कई की श्रद्धा कच्ची पड़ी और वह फिर हिंसा की हिमायत करने लगे. लेकिन कुछ अहिंसा पर मज़बूत रहे. आपसी हिंसा के विरोधी भी कम नहीं हैं लेकिन इन दोनों तरह की हिंसा को रोकने की इच्छा रखते हुए भी वह विचारक कैसे किया जाए, किस अहिंसक तरीक़े से हिंसा की वजह से होने वाले सवालों का सन्तोष देने वाला फ़ैसला किया जाए या हिंसा उछल ही पड़े तो उसका किस तरह अहिंसक सामना किया जाए.–इसका कोई सीधा रास्ता अभी तक नहीं खोज पाए. इसमें शक नहीं कि प्रेम भरी सेवा और अहिंसक व संगठित रचनात्मक कामों के ज़रिए ही ऐसा रास्ता हाथ आ सकेगा जिससे जंग या दंगों के बीच होने वालों की कोशिशें सफल होने ही न पाएँ. उनकी बात सुनने और मानने वाले उन्हें मिलें ही नहीं. लोगों के दिलों में यह यक़ीन हो जाना चाहिये कि अपने लोगों के किसी हिस्से की या दूसरे राज के लोगों की हिंसा करने के लिये पैदा हुई किसी ख़ाहिश को वह किसी तरह मदद कर नहीं सकते. झगड़ा चाहे जिस प्रकार का क्यों न हो उसका हिंसा से फ़ैसला करने की कोशिश करने वालों को वह मदद दे नहीं सकते और इसके साथ ही उन्हें ऐसा रास्ता भी सोच निकालना चाहिए जिससे उन लोगों का मुक़ाबला किया जा सके जो सीधे सादे लोगों को झगड़े में शामिल होने के लिये मजबूर करते हैं या उन पर ज़ुल्म करके अपने में मिला लेना चाहते हैं.

इसका साफ़ रास्ता अभी हाथ नहीं लगा. इसे ऐसा जंगल समझना चाहिये जिसके अभी बहुत से हिस्से का पता नहीं चला

کے وقت اُن میں سے کئی کی شردھا کچی پڑی اور وہ پھر ہنسا کی حمایت کرنے لگے. لیکن کچھ اہنسا پر مضبوط رہے. آپسی ہنسا کے ورودھی بھی کم نہیں ہیں لیکن ان دونوں طرح کی ہنسا کو روکنے کی اِچھا رکھتے ہوئے بھی وہ وچارک کیسے کیا جائے، کس اہنسک طریقے سے ہنسا کی وجہ سے ہونے والے سوالوں کا سنتوش دینے والا فیصلہ کیا جائے یا ہنسا اُچھل ہی پڑے تو اُس کا کس طرح اہنسک سامنا کیا جائے.—اِس کا کوئی سیدھا راستہ ابھی تک نہیں کھوج پائے. اِس میں شک نہیں کہ پریم بھری سیوا اور اہنسک و سنگٹھت رچناتمک کاموں کے ذریعے ہی ایسا راستہ ہاتھ آسکے گا جس سے جنگ یا دنگوں کے بیچ ہونے والوں کی کوششیں سپھل ہونے ہی نہ پائیں. اُن کی بات سننے اور ماننے والے اُنھیں ملیں ہی نہیں. لوگوں کے دلوں میں یہ یقین ہو جانا چاہئے کہ اپنے لوگوں کے کسی حصے کی یا دوسرے راج کے لوگوں کی ہنسا کرنے کے لئے پیدا ہوئی کسی خواہش کو وہ کسی طرح مدد کر نہیں سکتے. جھگڑا چاہے جس پرکار کا کیوں نہ ہو اُس کا ہنسا سے فیصلہ کرنے کی کوشش کرنے والوں کو وہ مدد دے نہیں سکتے اور اِس کے ساتھ ہی اُنھیں ایسا راستہ بھی سوچ نکالنا چاہئے جس سے اُن لوگوں کا مقابلہ کیا جا سکے جو سیدھے سادے لوگوں کو جھگڑے میں شامل ہونے کے لئے مجبور کرتے ہیں یا اُن پر ظلم کرکے اپنے میں ملا لینا چاہتے ہیں.

اِس کا صاف راستہ ابھی ہاتھ نہیں لگا. اِسے ایسا جنگل سمجھنا چاہئے جس کے ابھی بہت سے حصے کا پتہ نہیں چلا

फ़िलहाल गान्धी जी इस रास्ते को ढूँढने के काम में लगे हुए हैं. रास्ता साफ़ नहीं पर किसी भी वक़्त साफ़ हो सकता है. इस बीच हम इतना तो ज़रूर कर सकते हैं कि लगन से हम सेवा के काम जारी रक्खें, और बदले की हिंसा करने की भूल न करें. इस सदी के शुरू के बरसों में जब हिन्दुस्तान के नेता और नौजवान इस फ़िक्र से दुखी थे कि कैसे अँगरेज़ी सल्तनत जैसी ज़बरदस्त हुकूमत से आज़ाद होने का रास्ता निकले. और जब वह सब कभी डर फैलाने और कभी क़ानूनी तहरीक चलाने के बीच झोटे खा रहे थे तब गान्धी जी ने एक सफल रहनुमाई की थी. वैसे ही हम आशा करें और विश्वास रक्खें कि इस वक़्त जो अपना नाश करने वाली हिंसा उछल पड़ी है उसे हटाने का भी सफल रास्ता दिखाने का यश उन्हें हासिल होगा. ईश्वर उन्हें वह शक्ति दे.※

※इसी सिलसिले में हमारी राय में दिया हुआ 'एक अवतार और चाहिये' नोट भी पढ़िये—एडिटर

فی الحال گاندھی جی اِس راستے کو ڈھونڈھنے کے کام میں لگے ہوئے ہیں۔ راستہ صاف نہیں پر کسی بھی وقت صاف ہوسکتا ہے۔ اِس بیچ ہم اتنا تو ضرور کرسکتے ہیں کہ لگن سے ہم سیوا کے کام جاری رکھیں، اور بدلے کی ہنسا کرنے کی بھول نہ کریں۔ اِس صدی کے شروع کے برسوں میں جب ہندستان کے نیتا اور نوجوان اِس فکر سے دُکھی تھے کہ کیسے انگریزی سلطنت جیسی زبردست حکومت سے آزاد ہونے کا راستہ نکلے، اور جب وہ سب کبھی ڈر پھیلانے اور کبھی قانونی تحریک چلانے کے بیچ جھوٹے کھا رہے تھے تب گاندھی جی نے ایک سپھل رہنمائی کی تھی۔ ویسے ہی ہم آشا کریں اور وشواس رکھیں کہ اِس وقت جو اپنا ناش کرنے والی ہنسا اُچھل پڑی ہے اُسے ہٹانے کا بھی سپھل راستہ دکھانے کا یش اُنھیں حاصل ہوگا۔ ایشور اُنھیں وہ شکتی دے۔※

※اِسی سلسلے میں ہماری رائے میں دیا ہوا 'ایک اوتار اور چاہیئے' نوٹ بھی پڑھیئے — اڈیٹر

अपने दिल से एक दो बातें

(गु० म०)

शाम का वक़्त था, मैं समन्दर के किनारे गोशए ख़ामोशी में इस तरह से ख़ुश और सही सलामत बैठा था जैसा कि एक नन्हा सा बच्चा अपनी माँ की गोद में बैठा हुआ होता है. और मुझे ऐसा मालूम हो रहा था कि मैं बादशाहों के बादशाह का ख़ूबसूरत ग़ैबी महल उस गोशे से देख रहा था.

यकायक किसी ने मेरे अन्दर से मुझसे पूछा—

"क्यों मियां, आराम का मतलब तुम्हें मालूम है ?"

यह सवाल सुनकर मैं ज़रा हँस पड़ा क्यों कि मैंने अपने आप से कहा कि "यह भी भला कोई सवाल पूछने का है ? आराम का मतलब आराम और क्या ?"

जो मेरे अन्दर बैठा हुआ था, उसने ऐसा मालूम होता है मेरी यह छिपी हुई बात भी सुनली. और क्यों ही न सुनता क्यों कि उसको आंखें और उसके कान तो कभी बन्द होते ही नहीं.

फिर मेरे कानों पर किसी के गाने की आवाज़ आ पहुँची. मैंने गाने वाले को तो न देखा मगर उसके गीत की एक सतर जो वह बार बार गा रहा था वह मैंने अच्छी तरह से और साफ़ तौर पर सुनी.

"यह प्रीति की रीति नहीं तेरी, वह जागत है तू सोवत है."

तब मेरे दिल में एक सवाल उठा—"क्या प्रेम करना हमेशा ही जगे रहना है ?"

اپنے دل سے ایک دو باتیں

(گ۔ م۔)

شام کا وقت تھا، میں سمندر کے کنارے گوشۂ خاموشی میں اس طرح سے خوش اور صحیح سلامت بیٹھا تھا جیسا کہ ایک ننھا سا بچہ اپنی ماں کی گود میں بیٹھا ہوا ہوتا ہے۔ اور مجھے ایسا معلوم ہو رہا تھا کہ میں بادشاہوں کے بادشاہ کا خوبصورت غیبی محل اُس گوشے سے دیکھ رہا تھا۔

یکایک کسی نے میرے اندر سے مجھ سے پوچھا—

"کیوں میاں، آرام کا مطلب تمھیں معلوم ہے؟"

یہ سوال سُن کر میں ذرا ہنس پڑا کیونکہ میں نے اپنے آپ سے کہا کہ "یہ بھی بھلا کوئی سوال پوچھنے کا ہے؟ آرام کا مطلب آرام اور کیا؟"

جو میرے اندر بیٹھا ہوا تھا، اُس نے ایسا معلوم ہوتا ہے میری یہ چھپی ہوئی بات بھی سُن لی۔ اور کیوں ہی نہ سُنتا کیونکہ اُس کی آنکھیں اور اُس کے کان تو کبھی بند ہوتے ہی نہیں۔

پھر میرے کانوں پر کسی کے گانے کی آواز آ پہنچی۔ میں نے گانے والے کو تو نہ دیکھا مگر اُس کے گیت کی ایک سطر جو وہ بار بار گا رہا تھا وہ میں نے اچھی طرح سے اور صاف طور پر سُنی۔

"یہ پریت کی ریت نہیں تیری، وہ جاگت ہے تو سووت ہے۔"

تب میرے دل میں ایک سوال اُٹھا—"کیا پریم کرنا ہمیشہ ہی جگے رہنا ہے؟"

मेरे दिल के जनाने में जो परदानशीन है उसने जवाब दिया—"हाँ". फिर ज़रा रुक कर उसने कहा "अरे मियाँ, मैंने तो तुम्हारे सवाल का जवाब दे दिया तुम भी तो मेरे सवाल का जवाब दो."

"तुम्हारा कोई सवाल है ? और फिर जनाब उसका जवाब माँगते हैं ?"

"अरे मियां, गुस्सा मत हो, अगर तुम्हें जवाब नहीं मालूम तो साफ़ साफ़ कहदो कि जवाब नहीं जानते !"

"तो ऐसा ही सही, मैं तुम्हारे सवाल का जवाब नहीं जानता, क्या अब तुम्हारी तसल्ली हुई ?"

"हाँ, तो मैं तुम्हें जवाब बताता हूँ. 'आराम लफ़्ज़ दो लफ़्ज़ों से बना हुआ है—'आ' और 'राम'. उसका मतलब हुआ सच्चा आराम "आ-राम" "आ-राम" कहने में है और करने में."

मैं यह मतलब "आराम" का सुनकर कुछ हैरान सा हो गया इसलिये मैंने पूछा, "मुझे तो मेरे मक़तब में ऐसा मतलब कभी नहीं बताया गया था—अच्छा जो हो, सो हो 'आ-राम' 'आ-राम' मैं कहतो लिया करूँगा लेकिन तुम्हें यह मुझे समझाना होगा कि मैं ऐसा कर कैसे सकूँ क्यों कि तुमने तो 'आ-राम' 'आ-राम' करने को भी तो कहा है ?"

"हाँ, मैंने कहा है और उसका मतलब यह है कि जो कुछ काम भी तुम करो उसे ऐसे तौर से करो कि वह राम के लायक़ है और तुम उस काम को राम के लायक़ एक घर समझ कर दिल से उसे कह सको 'आ-राम' 'आ-राम'. समझे ?"

میرے دل کے زنانے میں جو پردہ نشین ہے اُس نے جواب دیا— "ہاں". پھر ذرا رُک کر اُس نے کہا "ارے میاں، میں نے تو تمھارے سوال کا جواب دے دیا تم بھی تو میرے سوال کا جواب دو."

"تمھارا کوئی سوال ہے؟ اور پھر جناب اُس کا جواب مانگتے ہیں؟"

"ارے میاں، غصہ مت ہو، اگر تمھیں جواب نہیں معلوم تو صاف صاف کہہ دو کہ جواب نہیں جانتے!"

"تو ایسا ہی سہی، میں تمھارے سوال کا جواب نہیں جانتا، کیا اب تمھاری تسلی ہوئی؟"

"ہاں، تو میں تمھیں جواب بتاتا ہوں. 'آرام' لفظ دو لفظوں سے بنا ہوا ہے— 'آ' اور 'رام'. اُس کا مطلب ہوا سچا آرام "آ-رام" "آ-رام" کہنے میں ہے اور کرنے میں."

میں یہ مطلب "آرام" کا سُن کر کچھ حیران سا ہو گیا اس لئے میں نے پوچھا، "مجھے تو میرے مکتب میں ایسا مطلب کبھی نہیں بتایا گیا تھا— اچھا جو ہو، سو ہو 'آ-رام' 'آ-رام' میں کہہ تو لیا کروں گا لیکن تمھیں یہ مجھے سمجھانا ہوگا کہ میں ایسا کر کیسے سکوں کیونکہ تم نے تو 'آ-رام' 'آ-رام' کرنے کو بھی تو کہا ہے؟"

"ہاں، میں نے کہا ہے اور اُس کا مطلب یہ ہے کہ جو کچھ کام بھی تم کرو اُسے ایسے طور سے کرو کہ وہ رام کے لائق ہے اور تم اُس کام کو رام کے لائق ایک گھر سمجھ کر دل سے اُسے کہہ سکو 'آ-رام' 'آ-رام'. سمجھے؟"

"मैंने समझ तो लिया मगर उस पर अमल करना मुझे तो बहुत मुशकिल मालूम होता है."

"तो उसका भी तुम्हें एक आसान रास्ता बता दूं, मियां, अगर चाहो तो !"

"ज़रूर, ज़रूर" मैंने जवाब दिया.

उसने कहा, "दिल को छोड़ो और दिल को पकड़ो."

"मैंने अर्ज़ की, ज़रा इसे आसान कर दीजिये !"

"ख़ुशी से ज़िन्दगी तो एक बाज़ी है न. कबीर साहब का वह भजन तुम्हें याद है जिसमें वह कहते हैं कि ज़िन्दगी एक चौपड़ की बाज़ी है. मगर यह खेल अजीब है. अगर तुम हारते हो तो भी प्रीतम के हो जाते हो और अगर जीतते हो तो प्रीतम तुम्हारा हो जाता है. हर हालत में तुम्हें प्रीतम तो मिल ही जाता है." इसी तरह से मैं तुम्हें कहता हूँ, मियां. "पार्टी बाज़ी छोड़ो प्रेम बाज़ी खेलो."

इतने में मुझे कुछ शोरोशर सुनाई दिया. जहाँ मैं बैठा हुआ था वहीं से ज़रा दूर लोगों का एक हुजूम दिखाई दिया था. कई लोग के हाथों में क़िस्म क़िस्म के झंडे थे और ज़ोर ज़ोर से नारे लगा रहे थे "—ज़िन्दाबाद" "—ज़िन्दाबाद" "—ज़िन्दाबाद" मैं अपने गोशए ख़ामोशी से निकल कर घर वापिस आया और बार बार मुझे यह ख़याल आता रहा, "दिल की बात रुपए में सोलह आना सच है."

"میں نے سمجھ تو لیا مگر اس پر عمل کرنا تو مجھے بہت مشکل معلوم ہوتا ہے۔"

"تو اس کا بھی تمہیں ایک آسان راستہ بتا دوں میاں اگر چاہو تو۔"

"ضرور، ضرور" میں نے جواب دیا۔

اس نے کہا، "دل کو چھوڑو اور دل کو پکڑو۔"

"میں نے عرض کی، ذرا اسے آسان کر دیجئے!"

"خوشی سے زندگی تو ایک بازی ہے نہ۔ کبیر صاحب کا وہ بھجن تمہیں یاد ہے جس میں وہ کہتے ہیں کہ زندگی ایک چوپڑ کی بازی ہے مگر یہ کھیل عجیب ہے۔ اگر تم ہارتے ہو تو بھی پریتم کے ہو جاتے ہو اور اگر جیتتے ہو تو پریتم تمہارا ہو جاتا ہے۔ ہر حالت میں تمہیں پریتم تو مل ہی جاتا ہے۔" اسی طرح سے میں تمہیں کہتا ہوں میاں، "پارٹی بازی چھوڑ دو پریم بازی کھیلو۔"

اتنے میں مجھے کچھ شور و شر سنائی دیا۔ جہاں میں بیٹھا ہوا تھا وہیں سے ذرا دور لوگوں کا ایک ہجوم دکھائی دیا تھا۔ کئی لوگوں کے ہاتھوں میں قسم قسم کے جھنڈے تھے اور زور زور سے نعرے لگا رہے تھے "— زندہ باد" "— زندہ باد" "— زندہ باد" میں اپنے گوشۂ خاموشی سے نکل کر گھر واپس آیا اور بار بار مجھے یہ خیال آتا رہا، "دل کی بات روپئے میں سولہ آنہ سچ ہے۔"

हाजी रशीद अहमद गंगोही

(श्री रतन लाल बंसल, फ़िरोज़ाबाद)

सन् १८७८ ईसवी में वलीउल्लाई जमात के पांचवे इमाम मौलाना हम्मद क़ासिम साहब का इन्तकाल हो जाने पर जब इस ंगठन को एक नए नेता की ज़रूरत हुई तो सब की नज़र मौलाना हमूदुल हसन साहब पर पड़ी. मौलाना महमूदुल हसन लीउल्लाई जमात के नए मरकज़ मदरसा देवबन्द के पहिले विद्यार्थी . वलीउल्लाई संगठन के असूल और इरादों की पूरी पूरी तालीम इनको खास तरीक़े पर, मौलाना क़ासिम साहब ने दी थी. इस तालीम की ही बदौलत मौलाना महमूदुल हसन साहब ने अपनी पढ़ाई के जमाने से ही मुल्क की आजादी के लिये तजवीज़ें सोचना और उन पर काम करना शुरू कर दिया था. अपनी दूरन्देशी, निडरपन और पाक साफ़ चाल चलन की वजह से अपने हल्के में वह बहुत इज़्ज़त की निगाह से देखे जाते थे. इस लिये उनको इमाम बनाने और मानने में इनकार किस को होता ? लेकिन वह जमाना बहुत नाजुक था. सन् १८५७ की लड़ाई की नाकामयाबी और उसके बाद होने वाले भयानक जुल्मों ने बड़ों बड़ों के हौसले पस्त कर दिये थे. खासकर मुसलमानों में तो लोग सियासत तो क्या मज़हबी बातों की चर्चा करने में भी डरते थे. इस हालत से फ़ायदा उठा कर कुछ मौक़ा परस्तों ने इसलाम के नाम पर नई नई बातों को गढ़ना और फैलाना शुरू कर दिया था, यहाँ तक कि

حاجی رشید احمد گنگوہی

(شری رتن لال بنسل، فیروزآباد)

۱۸۷۸ء میں ولی اللہی جماعت کے پانچویں امام مولانا محمد قاسم صاحب کا انتقال ہو جانے پر جب اس سنگٹھن کو ایک نئے نیتا کی ضرورت ہوئی تو سب کی نظر مولانا محمود الحسن پر پڑی۔ مولانا محمود الحسن ولی اللہی جماعت کے نئے مرکز مدرسہ دیوبند کے پہلے ودیارتھی تھے۔ ولی اللہی سنگٹھن کے اصول اور ارادوں کی پوری پوری تعلیم ان کو خاص طریقے پر مولانا قاسم صاحب نے دی تھی۔ اس تعلیم کی ہی بدولت مولانا محمود الحسن صاحب نے
٥ اپنی پڑھائی کے زمانے سے ہی ملک کی آزادی کے لیے تجویزیں
٦ سوچنا اور اُن پر کام کرنا شروع کر دیا تھا۔ اپنی دور اندیشی، نڈرپن
٧ اور پاک صاف چال چلن کی وجہ سے اپنے حلقے میں وہ بہت عزت کی نگاہ سے دیکھے جاتے تھے۔ اس سے اُن کو امام بنانے اور ماننے میں انکار کس کو ہوتا؟ لیکن وہ زمانہ بہت نازک تھا۔ ۱۸۵۷ء کی لڑائی کی ناکامیابی اور اُس کے بعد ہونے والے بھیانک ظلموں نے بڑوں بڑوں کے حوصلے پست کر دیے تھے۔ خاص کر مسلمانوں میں تو لوگ سیاست تو کیا مذہبی باتوں کی چرچا کرنے میں بھی ڈرتے تھے۔ اس حالت سے فائدہ اٹھا کر کچھ موقع پرستوں نے اسلام کے نام پر نئی نئی باتوں کو گڑھنا اور پھیلانا شروع کر دیا تھا، یہاں تک کہ

अङ्गरेज़ और अङ्गरेज़ी राज के लिये वफ़ादारी भी इसलाम के असूलों में शरीक़ कर ली गई थी.

यह हालत मजबूर करती थी कि इस वक़्त वलीउल्लाई जमात की कमान किसी ऐसे आदमी के हाथ में हो, जिसको इस संगठन से बाहर के भी मुसलमान जानते और मानते हों और जिसकी राय व फ़ैसले की तमाम हिन्दुस्तान के मुसलमानों में वक़्त हो, और साथ ही साथ जिसमें मुल्क की आज़ादी के लिये सच्ची तड़प हो और जो मुसलमानों में अङ्गरेज़ों की वफ़ादारी का प्रचार करने वालों का हिम्मत के साथ मुक़ाबला कर सके.

इन तमाम बातों को ध्यान में रख कर फ़ैसला किया गया कि अभी कुछ दिनों तक हाजी रशीद अहमद साहब गंगोही पर इमामत का यह बोझ डाला जाय. हाजी रशीद अहमद साहब गंगोह ज़िला सहारनपुर के रहने वाले थे. उनकी पूरी उम्र ही वलीउल्लाई संगठन के असूलों को समझने और उन पर अमल करने में बीती थी. इसकी वजह यह थी कि गंगोही साहब के वालिद जनाब हिदायतुल्ला साहब अंसारी एक सच्चे और दीनदार मुसलमान थे. वह चाहते थे कि मेरा बेटा बड़ा होकर मुल्क और क़ौम की ख़िदमत करे. इस लिये उन्होंने गंगोही साहब को बहुत छोटी उम्र में ही पढ़ने के लिये देहली भेज दिया था, जहाँ वह वलीउल्लाई संगठन के एक ख़ास नेता मौलाना ममलूकअली साहब से पढ़ते थे और मज़हबी तालीम के साथ साथ उस ज़माने की सियासत और अङ्गरेज़ों की राजकाजी चालबाज़ियों को भी समझने की कोशिश करते थे. इसी ज़माने में उनकी जान पहचान मौलाना

انگریز اور انگریزی راج کے لئے وفاداری بھی اسلام کے اصولوں میں شریک کر لی گئی تھی۔

وہ حالت مجبور کرتی تھی کہ اس وقت ولی اللہی جماعت کی کمان کسی ایسے آدمی کے ہاتھ میں ہو، جس کو اس سنگٹھن سے باہر کے بھی مسلمان جانتے اور مانتے ہوں اور جس کی رائے و فیصلے کی تمام ہندوستان کے مسلمانوں میں وقعت ہو، اور ساتھ ہی ساتھ جس میں ملک کی آزادی کے لئے سچی تڑپ ہو اور جو مسلمانوں میں انگریزوں کی وفاداری کا پرچار کرنے والوں کا ہمت کے ساتھ مقابلہ کر سکے۔

ان تمام باتوں کو دھیان میں رکھ کر فیصلہ کیا گیا کہ ابھی کچھ دنوں تک حاجی رشید احمد صاحب گنگوہی پر امامت کا یہ بوجھ ڈالا جائے۔ حاجی رشید احمد صاحب گنگوہی ضلع سہارنپور کے رہنے والے تھے۔ ان کی پوری عمر ہی ولی اللہی سنگٹھن کے اصولوں کو سمجھنے اور ان پر عمل کرنے میں بیتی تھی۔ اس کی وجہ یہ تھی کہ گنگوہی صاحب کے والد جناب ہدایت اللہ صاحب انصاری ایک سچے اور دین دار مسلمان تھے۔ وہ چاہتے تھے کہ میرا بیٹا بڑا ہو کر ملک اور قوم کی خدمت کرے۔ اس لئے انہوں نے گنگوہی صاحب کو بہت چھوٹی عمر میں ہی پڑھنے کیلئے دہلی بھیج دیا تھا، جہاں وہ ولی اللہی سنگٹھن کے خاص نیتا مملوک علی صاحب سے پڑھتے تھے اور مذہبی تعلیم کے ساتھ ساتھ اس زمانے کی سیاست اور انگریزوں کی راجکاجی چالبازی کو بھی سمجھنے کی کوشش [illegible]

मुहम्मद क़ासिम साहब से हुई, जो इसी मदरसे में पढ़ते थे और रशीद अहमद साहब की ही तरह अपने तेज़ ज़हन के लिये मदरसे भर में मशहूर थे.

इस मदरसे की तालीम का रशीद अहमद साहब और मौलाना क़ासिम साहब पर बहुत गहरा असर पड़ा और पढ़ाई से फ़ारिग़ होने से पहिले ही दोनों ने मुल्क की आज़ादी के लिये काम करना शुरू कर दिया. इस ज़माने में दिल्ली का यह मदरसा मुल्क भर के इनक़लाबियों का एक ख़ास मरकज़ बना हुआ था. इनक़लाबियों के सबसे बड़े नेता हाजी इमदादुल्ला साहब थे. जो रशीद अहमद साहब व मौलाना क़ासिम साहब के भी उस्ताद रह चुके थे. हाजी इमदादुल्ला साहब चाहते थे कि वलीउल्लाई संगठन को जल्दी से जल्दी अङ्गरेज़ों के ख़िलाफ़ जंग का एलान कर देना चाहिये. इसके लिये उन्होंने एक जंगी कमेटी भी बनाली थी, जिसमें हाजी इमदादुल्ला साहब के अलावा मौलाना अब्दुलग़नी, मौलाना मुहम्मद याक़ूब, रशीद अहमद साहब और मौलाना क़ासिम साहब भी थे. कुछ दिनों के बाद जब हाजी इमदादुल्ला साहब को वलीउल्लाई जमात का चौथा इमाम चुना गया. तो यही चार आदमी उनके वज़ीर मुक़र्रर किये गए. इससे ज़ाहिर होता है कि क़ासिम साहब की तरह हाजी रशीद अहमद साहब ने भी कितनी जल्दी वलीउल्लाई संगठन में अपने लिये यक़ीन पैदा कर लिया था.

इसके बाद कुछ दिनों तक रशीद अहमद साहब जगह जगह घूम

محمد قاسم صاحب سے ہوئی جو اسی مدرسے میں پڑھتے تھے اور رشید احمد صاحب کی طرح اپنے تیز ذہن کے لئے مدرسہ بھر میں مشہور تھے۔

اس مدرسہ کی تعلیم کا رشید احمد صاحب اور مولانا قاسم صاحب پر بہت گہرا اثر پڑا اور پڑھائی سے فارغ ہونے سے پہلے ہی دونوں نے ملک کی آزادی کے لئے کام کرنا شروع کردیا۔ اس زمانے میں دلی کا یہ مدرسہ ملک بھر کے انقلابیوں کا ایک خاص مرکز بنا ہوا تھا۔ انقلابیوں کے سب سے بڑے نیتا حاجی امداد اللہ صاحب تھے جو رشید احمد صاحب و مولانا قاسم صاحب کے بھی استاد رہ چکے تھے۔ حاجی امداد اللہ صاحب چاہتے تھے کہ ولی اللّٰہی سنگٹھن کو جلدی سے جلدی انگریزوں کے خلاف جنگ کا اعلان کر دینا چاہیئے۔ اس کے لیئے انھوں نے ایک جنگی کمیٹی بھی بنالی تھی، جس میں حاجی امداد اللہ صاحب کے علاوہ مولانا عبدالغنی، مولانا محمد یعقوب، رشید احمد صاحب اور مولانا قاسم صاحب بھی تھے۔ کچھ دنوں کے بعد جب حاجی امداد اللہ صاحب کو ولی اللّٰہی جماعت کا چوتھا امام چنا گیا، تو یہی چار آدمی اُن کے وزیر مقرر کئے گئے۔ اس سے ظاہر ہوتا ہے قاسم صاحب کی طرح حاجی رشید احمد صاحب نے بھی کتنی جلدی ولی اللّٰہی سنگٹھن میں اپنے لئے یقین پیدا کر لیا تھا۔

اس کے بعد کچھ دنوں تک رشید احمد صاحب جگہ جگہ گھوم

कर आम जनता में बेदारी पैदा करते रहे. उनको मज़हबी बातों की बड़ी गहरी जानकारी थी. हदीस में तो उनका लोहा बड़े बड़े आलिम भी मानते थे. उनकी अमली ज़िन्दगी भी बड़ी पाक साफ़ थी. निहायत सादगी का रहन सहन, सबसे मीठा बरताव, ग़रीब व अमीर सबको एक नज़र से देखना और मुल्क के काम से जो वक़्त बचे उसे ख़ुदा की याद में लगाना यह सब ऐसी बातें थीं जो उनकी जान पहिचान में आने वाले हर एक इनसान पर गहरा असर डालती थीं. इसी से जब वह मुल्क का दुख दर्द बयान करते थे तो सुनने वालों पर पूरा पूरा असर पढ़ता था और उनके दिलों में आज़ादी के लिए कुछ करने की ख़्वाहिश पैदा होने लगती थी. इस तरह रशीद अहमद साहब ने अपने प्रचार से हज़ारों आदमियों को अज़ादी की लड़ाई का सिपाही बना दिया.

धीरे धीरे सन् १८५७ में वह ज़माना भी आगया. जिसका इतने दिनों से इन्तज़ार किया जा रहा था. लेकिन वलीउल्लाई संगठन में इस वक़्त कुछ ऐसे लोग भी थे. जो इस इनक़लाब में हिस्सा लेने के ख़िलाफ़ थे. उनकी दलील यह थी कि यह इनक़लाब उन लोगों की तरफ़ से शुरू किया गया है जो मुल्क में किसी एक आदमी की बादशाहत चाहते हैं. जब कि शाहवलीउल्ला साहब प्रजातंत्र यानी जम्हूरियत की हुकूमत चाहते थे. इसलिये इस लड़ाई में हिस्सा लेना अपने असूलों से गिरना है,

इस दलील के ख़िलाफ़ हाजी इमदादुल्ला साहब का यह

کر عام جنتا میں بیداری پیدا کرتے رہے۔ ان کو مذہبی باتوں کی بڑی گہری جانکاری تھی۔ حدیث میں تو اُن کا لوہا بڑے بڑے عالم بھی مانتے تھے۔ اُن کی عملی زندگی بھی بڑی پاک صاف تھی۔ نہایت سادگی کا رہن سہن سب سے میٹھا برتاؤ غریب و امیر سب کو ایک نظر سے دیکھنا اور ملک کے کام سے جو وقت بچے اُسے خدا کی یاد میں لگانا یہ سب ایسی باتیں تھیں جو اُن کی جان پہچان میں آنے والے ہر ایک انسان پر گہرا اثر ڈالتی تھیں۔ اسی سے جب وہ ملک کا دکھ درد بیان کرتے تھے تو سننے والوں پر پورا پورا اثر پڑتا تھا اور اُنکے دلوں میں آزادی کے لئے کچھ کرنے کی خواہش پیدا ہونے لگتی تھی۔ اس طرح رشید احمد صاحب نے اپنے پرچار سے ہزاروں آدمیوں کو آزادی کی لڑائی کا سپاہی بنا دیا۔

دھیرے دھیرے ۱۸۵۷ء میں وہ زمانہ بھی آگیا، جس کا اتنے دنوں سے انتظار کیا جا رہا تھا۔ لیکن ولی اللٰہی سنگٹھن میں اس وقت کچھ ایسے لوگ بھی تھے، جو اس انقلاب میں حصہ لینے کے خلاف تھے۔ اُن کی دلیل یہ تھی کہ یہ انقلاب اُن لوگوں کی طرف سے شروع کیا گیا ہے جو ملک میں کسی ایک آدمی کی بادشاہت چاہتے ہیں جبکہ شاہ ولی اللہ صاحب پرجاتنتر یعنی جمہوریت کی حکومت چاہتے تھے اس لئے اُس لڑائی میں حصہ لینا اپنے اُصولوں سے گرنا ہے۔

اس دلیل کے خلاف حاجی امداد اللہ صاحب کا یہ

कहना था कि हम जम्हूरियत के आज भी हामी हैं और हमेशा रहेंगे, लेकिन अंगरेज़ों को मुल्क से बाहर निकालने के लिये हमें इस इनक़लाब में पूरी ताक़त से हिस्सा लेना चाहिये. क्यों कि जब तक अंगरेज़ यहाँ पर मौजूद हैं, तब तक न यहाँ जम्हूरियत ही क़ायम हो सकती है और न शाहवलीउल्ला साहब के दूसरे असूलों को ही अमल में लाया जा सकता है.

एतराज़ करने वालों को हाजी इमदादुल्ला साहब के इस जवाब से तसल्ली नहीं हुई, क्यों कि उनमें कुछ लोग ऐसे भी थे, जो लड़ाई की मुसीबतें सहने के लिये तय्यार नहीं थे. इन लोगों ने इस दलील के बहाने उन मुसीबतों से अपना बचाव कर लिया और वलीउल्लाई संगठन से अलग हो गए. हाजी रशीद अहमद साहब भी चाहते तो इस वक़्त अपना बचाव कर सकते थे, लेकिन वह अपने दोस्त और साथी मौलाना क़ासिम साहब की तरह अपनी जगह पर अडिग रहे और उन्होंने आज़ादी की इस लड़ाई में अमली हिस्सा लेना शुरू कर दिया. अपने उस्ताद और इमाम हाजी इमदादुल्ला साहब के साथ वह भी शामली के मोर्चे पर अंगरेज़ी फ़ौजों के दाँत खट्टे करते रहे, और तब तक लड़ते रहे जब तक कि वह लड़ाई में घायल हो जाने की वजह से पकड़ नहीं लिये गए.

जेलख़ाने में रशीद अहमद साहब को बड़ी बड़ी सख़्त तकलीफ़ें सहनी पड़ीं. उस वक़्त लड़ाई में हज़ारों क़ैदी अंगरेज़ों के पास थे, जिनके खाने पीने का इन्तज़ाम उस वक़्त की हालत में न तो न हो सकता था, और न अंगरेज़ों को उसकी परवाह ही थी.

کہتا تھا کہ ہم جمہوریت کے آج بھی حامی ہیں اور ہمیشہ رہیں گے، لیکن انگریزوں کو ملک سے باہر نکالنے کیلئے ہمیں اس انقلاب میں پوری طاقت سے حصہ لینا چاہئے۔ چونکہ جب تک انگریز یہاں پر موجود ہیں، تب تک نہ یہاں جمہوریت ہی قائم ہو سکتی ہے اور نہ شاہ ولی اللہ صاحب کے دوسرے اصولوں کو ہی عمل میں لایا جا سکتا ہے۔

اعتراض کرنے والوں کو حاجی امداد اللہ صاحب کے اس جواب سے تسلی نہیں ہوئی، کیونکہ اُن میں کچھ لوگ ایسے بھی تھے، جو لڑائی کی مصیبتیں سہنے کے لئے تیار نہیں تھے۔ اِن لوگوں نے اس دلیل کے بہانے اُن مصیبتوں سے اپنا بچاؤ کر لیا اور ولی اللّٰہی سنگٹھن سے الگ ہو گئے۔ حاجی رشید احمد صاحب بھی چاہتے تو اس وقت اپنا بچاؤ کر سکتے تھے، لیکن وہ اپنے
دوست اور ساتھی مولانا قاسم صاحب کی طرح اپنی جگہ (۵۶۲)
پر اڈگ رہے اور انھوں نے آزادی کی اس لڑائی میں عملی حصہ لینا شروع کر دیا۔ اپنے استاد اور امام حاجی امداد اللہ صاحب کے ساتھ وہ بھی شاملی کے مورچے پر انگریزی فوجوں کے دانت کھٹے کرتے رہے، اور تب تک لڑتے رہے جب تک کہ وہ لڑائی میں گھائل ہو جانے کی وجہ سے پکڑ نہیں لئے گئے۔

جیل خانے میں رشید احمد صاحب کو بڑی بڑی سخت تکلیفیں سہنی پڑیں۔ اس وقت لڑائی میں ہزاروں قیدی انگریزوں کے پاس تھے، جن کے کھانے پینے کا انتظام اس وقت کی حالت میں نہ تو ہو ہی سکتا تھا، اور نہ انگریزوں کو اس کی پرواہ ہی تھی۔

इन क़ैदियों के मुक़दमें बड़ी जल्दी जल्दी निबटाए जा रहे थे. ज़्यादातर लोगों को फाँसी पर चढ़ा कर ठिकाने लगाया जा रहा था. रशीद अहमद साहब भी इस बात को जानते थे कि मुझे फाँसी की ही सज़ा मिलेगी. क्यों कि उनके जिस्म पर गोली का निशान इस बात का साफ़ सबूत था कि उन्होंने इस जंग में हिस्सा लिया है. फिर भी न उनको कोई फ़िक्र थी और न कोई अफ़सोस. उन्होंने तो जिस दिन इस राह में क़दम रक्खा था, उसी दिन इस नतीजे को जान लिया था. अफ़सोस तो उनको सिर्फ़ यह था कि आज़ादी की वह लड़ाई हिन्दुस्तानियों की आपसी फूट की वजह से कामयाब न हो सकी. और फ़िक्र भी उनको सिर्फ़ यह थी कि किसी तरह वलीउल्लाई संगठन के कुछ ऐसे ख़ास नेता अंगरेज़ों के पंजों से बच जाँय, जो इसके बाद भी वलीउल्लाई तहरीक को चलाते रहें और आज़ादी के झंडे को ऊँचा उठाये रक्खें.

कहा जाता है कि मारने वाले से बचाने वाला बड़ा होता है. ख़ुशक़िस्मती से रशीद अहमद साहब के साथ भी यही हुआ. उनके मुक़दमे का नम्बर आने से पहिले ही आम माफ़ी का ऐलान हो गया. इस ऐलान के मुताबिक़ रशीद अहमद साहब भी रिहा हुए. जेल से निकलते ही उन्होंने फिर अपना पुराना काम शुरू कर दिया. सबसे पहले उन्होंने यह पता लगाया कि वलीउल्लाई संगठन के कौन कौन से नेता फाँसी के तख़्ते की नज़र हो गए और कौन कौन से बच सके हैं. उनको यह जान कर बहुत ख़ुशी हुई कि संगठन के सब से बड़े नेता हाजी इमदादुल्ला

ان قیدیوں کے مقدمے بڑی جلدی جلدی نبٹائے جا رہے تھے. زیادہ تر لوگوں کو پھانسی پر چڑھا کر ٹھکانے لگایا جا رہا تھا. رشید احمد صاحب بھی اس بات کو جانتے تھے کہ مجھے پھانسی کی ہی سزا ملے گی. کیونکہ اُن کے جسم پر گولی کا نشان اس بات کا صاف ثبوت تھا کہ اُنھوں نے اس جنگ میں حصہ لیا ہے. پھر بھی نہ اُن کو کوئی فکر تھی اور نہ کوئی افسوس. انھوں نے تو جس دن اس راہ میں قدم رکھا تھا، اُسی دن اس نتیجے کو جان لیا تھا. افسوس تو اُن کو صرف یہ تھا کہ آزادی کی وہ لڑائی ہندوستانیوں کی آپسی پھوٹ کی وجہ سے کامیاب نہ ہو سکی اور فکر بھی اُن کو صرف یہ تھی کہ کسی طرح ولی اللّٰہی سنگٹھن کے کچھ ایسے خاص نیتا انگریزوں کے پنجوں سے بچ جائیں. جو اس کے بعد بھی ولی اللّٰہی تحریک کو چلاتے رہیں اور آزادی کے جھنڈے کو اونچا اٹھائے رکھیں.

کہا جاتا ہے کہ مارنے والے سے بچانے والا بڑا ہوتا ہے. خوش قسمتی سے رشید احمد صاحب کے ساتھ بھی یہی ہوا. اُن کے مقدمے کا نمبر آنے سے پہلے ہی عام معافی کا اعلان ہو گیا. اس اعلان کے مطابق رشید احمد صاحب بھی رہا ہوئے. جیل سے نکلتے ہی اُنھوں نے پھر اپنا پرانا کام شروع کر دیا. سب سے پہلے اُنھوں نے یہ پتہ لگایا کہ ولی اللّٰہی سنگٹھن کے کون کون سے نیتا پھانسی کے تختے کی نظر ہو گئے اور کون کون سے بچ سکے ہیں. ان کو یہ جان کر بہت خوشی ہوئی کہ سنگٹھن کے سب سے بڑے نیتا حاجی امداد اللّٰہ

साहब सही सलामत मक्का पहुँच गए हैं और मौलाना क़ासिम साहब भी पकड़े नहीं जा सके हैं.

इसके बाद हाजी रशीद अहमद साहब फ़ौरन मौलाना क़ासिम साहब से मिले और इस बात पर ग़ौर करना शुरू किया कि अब फिर से आज़ादी की लड़ाई किस तरह शुरू की जाय. कुछ ही दिनों में वह हाजी इमदादुल्ला साहब से भी ख़तो-किताबत करने में सफल हो गए और अब वहां से बाक़ायदा सलाह मशविरा मिलने लगा. इसी सलाह के मुताबिक़ वलीउल्लाई संगठन फिर से क़ायम किया गया और उसके सबसे बड़े नेता मौलाना क़ासिम साहब चुने गए. इसके बाद सन् १८६७ में देवबन्द का मदरसा भी क़ायम कर दिया गया. उस वक़्त यह मदरसा क़ायम कर लेना भी कोई आसान काम नहीं था. और ख़ास तौर पर किसी ऐसे आदमी का तो इस तरह के कामो में हिस्सा लेना बहुत ही ख़तरनाक था जो बग़ावत के इलज़ाम में गिरफ़तार हो चुका हो. लेकिन रशीद अहमद साहब ने कभी इन बातों की परवाह नहीं की और निहायत निडरता से इन तमाम कामों में आगे बढ़ कर हिस्सा लेते रहे.

देवबन्द का मदरसा क़ायम हो जाने के बाद जब कुछ लोगों ने यह कोशिश की कि देवबन्द का मदरसा अंगरेज़ी सरकार से कुछ रुपये पैसे की मदद माँगे, तो मौलाना क़ासिम साहब के साथ साथ रशीद अहमद साहब ने भी इस बात की सख़्त मुख़ालफ़त की. रशीद अहमद साहब तो देवबन्द के मदरसे को आज़ादी के सिपाहियों की एक ख़ालिस छावनी की शकल में देखना चाहते

صاحب صحیح سلامت مکہ پہونچ گئے ہیں اور مولانا قاسم صاحب بھی پکڑے نہیں جا سکے ہیں۔

اس کے بعد حاجی رشید احمد صاحب فوراً مولانا قاسم صاحب سے ملے اور اس بات پر غور کرنا شروع کیا کہ اب پھر سے آزادی کی لڑائی کس طرح شروع کی جائے۔ کچھ ہی دنوں میں وہ حاجی امداد اللہ صاحب سے بھی خط و کتابت کرنے میں سپھل ہو گئے اور اب وہاں سے باقاعدہ صلاح مشورہ ملنے لگا۔ اسی صلاح کے مطابق ولی اللّٰہی سنگٹھن پھر سے قائم کیا گیا اور اس کے سب سے بڑے نیتا مولانا قاسم چنے گئے۔ اس کے بعد ۱۸۶۷ء میں دیوبند کا مدرسہ بھی قائم ٥
کر دیا گیا۔ اس وقت یہ مدرسہ قائم کر لینا بھی کوئی آسان ٦
کام نہیں تھا۔ اور خاص طور پر کسی ایسے آدمی کا تو اس طرح ٧
کے کاموں میں حصہ لینا بہت ہی خطرناک تھا جو بغاوت کے الزام میں گرفتار ہو چکا ہو۔ لیکن رشید احمد صاحب نے کبھی ان باتوں کی پرواہ نہیں کی اور نہایت نڈرتا سے ان تمام کاموں میں آگے بڑھ کر حصہ لیتے رہے۔

دیوبند کا مدرسہ قائم ہو جانے کے بعد جب کچھ لوگوں نے یہ کوشش کی کہ دیوبند کا مدرسہ انگریز سرکار سے کچھ روپئے پیسے کی مدد مانگے، تو مولانا قاسم صاحب کے ساتھ ساتھ رشید احمد صاحب نے بھی بات کی سخت مخالفت کی۔ رشید احمد صاحب تو دیوبند کے مدرسہ کو آزادی کے سپاہیوں کی ایک خالص چھاونی کی شکل میں دیکھنا چاہتے

थे. इसी लिये एक बार उन्होंने यह भी राय जाहिर की थी कि मदरसा देवबन्द में फ़लसफ़े की तालीम देने की कोई जरूरत नहीं है. यानी वह चाहते थे कि नौजवानों को सिर्फ़ वही बातें पढ़ाई जावें जो उनमें कैरेक्टर और मजहब व वतन की मुहब्बत पैदा करने के लिये जरूरी हों. वह सिपाही चाहते थे आलिम या पंडित नहीं. मतलब यह कि वलीउल्लाई संगठन में भी अपने जमाने में वह गरम दल के लोगों में से थे.

सन् १८७८ ईसवी में अपने बचपन के साथी मौलाना क़ासिम साहब का इन्तक़ाल हो जाने से रशीद अहमद साहब को बहुत गहरा धक्का लगा. दोनों ही एक दूसरे को भाई की तरह प्यार करते थे और मुल्क की आजादी की लड़ाई में दोनों ने साथ साथ हिस्सा लिया था. दोनों के दिलों में एक दूसरे के लिये यक़ीन और इज्ज़त थी और ख़ास तौर पर रशीद अहमद साहब तो क़ासिम साहब को अपना नेता भी मानते थे. और उन पर ग़ैर मामूली भरोसा रखते थे. इसीलिये क़ासिम साहब के इन्तकाल की ख़बर पाते ही रशीद अहमद साहब ने एक ठंडी साँस लेकर कहा था, "सालार क़ाफ़िला चल बसा, जो किसी दिन ख़ुद भी शहीद होता और हमको भी क़ुर्बान कराता."

रशीद अहमद साहब के इन लफ़्ज़ों में उनकी आखों के न जाने कितने सपने बोल रहे थे.

मौलाना क़ासिम साहब के इन्तक़ाल के बाद रशीद अहमद साहब से जब इमामत का बोझ सम्हालने को कहा गया, तो वह इनकार न कर सके. इन दिनों वह गंगोह में रहते थे और कभी

(१५४)

تھے. اسی لئے ایک بار اُنھوں نے یہ بھی رائے ظاہر کی تھی کہ مدرسہ دیوبند میں فلسفے کی تعلیم دینے کی کوئی ضرورت نہیں ہے. یعنی وہ چاہتے تھے کہ نوجوانوں کو صرف وہی باتیں پڑھائی جاویں جو اُن میں کیرکٹر اور مذہب و وطن کی محبت پیدا کرنے کے لئے ضروری ہوں. وہ سپاہی چاہتے تھے عالم یا پنڈت نہیں. مطلب یہ کہ ولی اللہی سنگٹھن میں بھی اپنے زمانے میں وہ گرم دل کے لوگوں میں سے تھے.

۱۸۷۸ء عیسوی میں اپنے بچپن کے ساتھی مولانا قاسم صاحب کا انتقال ہو جانے سے رشید احمد صاحب کو بہت گہرا دھکا لگا. دونوں ہی ایک دوسرے کو بھائی کی طرح پیار کرتے تھے اور ملک کی آزادی کی لڑائی میں دونوں نے ساتھ ساتھ حصہ لیا تھا. دونوں کے دلوں میں ایک دوسرے کے لئے یقین اور عزت تھی اور خاص طور پر رشید احمد صاحب تو قاسم صاحب کو اپنا نیتا بھی مانتے تھے، اور اُن پر غیر معمولی بھروسہ رکھتے تھے. اسی لئے قاسم صاحب کے انتقال کی خبر پاتے ہی رشید احمد صاحب نے ایک ٹھنڈی سانس لے کر کہا تھا، "سالار قافلہ چل بسا، جو کسی دن خود بھی شہید ہوتا اور ہم کو بھی قربان کراتا."

رشید احمد صاحب کے اِن لفظوں میں اُن کی آنکھوں کے نہ جانے کتنے سپنے بول رہے تھے.

مولانا قاسم صاحب کے انتقال کے بعد رشید احمد صاحب سے جب امامت کا بوجھ سنبھالنے کو کہا گیا، تو وہ انکار نہ کر سکے. اِن دنوں وہ گنگوہ میں رہتے تھے اور کبھی

(۱۵۴)

कभी देवबन्द आकर मदरसे के विद्यार्थियों को दरस (पाठ) दे जाया करते थे, या जो विद्यार्थी मदरसे की पढ़ाई से फ़ारिग़ होकर गंगोह पहुँचते थे, उनको पढ़ा दिया करते थे. इस तरह से उन्होंने क़रीब तीन सौ विद्यार्थियों को तालीम दी, जिनमें से कुछ ने आगे चल कर हिन्दुस्तान की आजादी की लड़ाई में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया. ऐसे लोगों में वलीउल्लाई जमात के छटे इमाम मौलाना महमूदुल हसन साहब, मशहूर क्रान्तिकारी मौलवी उबेदुल्ला सिन्धी, मौजूदा जमाने में जमय्यत के बहुत बड़े लीडर मौलाना हुसैन अहमद साहब मदनी का नाम मिसाल के तौर पर लिया जा सकता है.

रशीद अहमद साहब की सबसे बड़ी ख़ाहिश यह थी कि किसी तरह हिन्दुस्तान के मुसलमान अंगरेज़ों की चालबाज़ियों से बचे रहें और हिन्दुस्तान में आज़ादी की लड़ाई में सबसे आगे बढ़ कर हिस्सा लें. इसी वजह से उनको ऐसे लोगों से बड़ी चिढ़ थी, जो अंगरेज़ी राज की वफ़ादारी का मुसलमानों में प्रचार करते थे, या ऐसे लोगों की राह में रोड़े अटकाते थे जो अंगरेज़ों की मुख़ालफ़त करते थे. बदक़िस्मती से ऐसे लोगों में सर सय्यद अहमद साहब भी थे, जिनकी शानदार शख़्सियत के आगे बड़े बड़े सर झुकाते थे. लेकिन हाजी रशीद अहमद साहब से उनकी कभी न पट सकी. यहीं तक नहीं, बल्कि कुछ बरसों के बाद कांग्रेस की मुख़ालफ़त करने के लिये जब सर सैयद साहब ने 'अंजुमने इस्लामिया' क़ायम की और मुसलमानों को कांग्रेस से निकल कर उसमें शरीक होने की दावत दी, तो हाजी साहब ने

کبھی دیوبند آکر مدرسے کے ودیارتھیوں کو درس (پاٹھ) دے جایا کرتے تھے، یا جو ودیارتھی مدرسے کی پڑھائی سے فارغ ہوکر گنگوہ پہنچتے تھے، اُن کو پڑھا دیا کرتے تھے. اس طرح سے اُنھوں نے قریب تین سو ودیارتھیوں کو تعلیم دی، جن میں سے کچھ نے آگے چل کر ہندستان کی آزادی کی لڑائی میں بڑھ چڑھ کر حصّہ لیا. ایسے لوگوں میں ولی اللہٰی جماعت کے چھٹے امام مولانا محمودالحسن صاحب، مشہور کرانتکاری مولوی عبیداللہ سندھی، موجودہ زمانے میں جمعیت کے بہت بڑے لیڈر مولانا حسین احمد صاحب مدنی کا نام مثال کے طور پر لیا جاسکتا ہے.

رشید احمد صاحب کی سب سے بڑی خواہش یہ تھی کہ کسی طرح ہندستان کے مسلمان انگریزوں کی چال بازیوں سے بچے رہیں اور ہندستان میں آزادی کی لڑائی میں سب سے آگے بڑھ کر حصّہ لیں. اسی وجہ سے اُن کو ایسے لوگوں سے بڑی چڑھ تھی، جو انگریزی راج کی وفاداری کا مسلمانوں میں پرچار کرتے تھے، یا ایسے لوگوں کی راہ میں روڑے اٹکاتے تھے جو انگریزوں کی مخالفت کرتے تھے. بدقسمتی سے ایسے لوگوں میں سر سید احمد صاحب بھی تھے، جن کی شاندار شخصیت کے آگے بڑے بڑے سر جھکاتے تھے. لیکن حاجی رشید احمد صاحب سے اُن کی کبھی نہ پٹ سکی. یہیں تک نہیں، بلکہ کچھ برسوں کے بعد کانگریس کی مخالفت کرنے کے لئے جب سر سید صاحب نے 'انجمنِ اسلامیہ' قایم کی اور مسلمانوں کو کانگریس سے نکل کر اُس میں شریک ہونے کی دعوت دی، تو حاجی صاحب نے

एक फ़तवा देकर यह एलान किया था कि मुसलमानों को काँग्रेस में शरीक होना चाहिये, अंजुमने इस्लामिया में नहीं. यहाँ पर यह बात भी साफ़ कर देना ज़रूरी है कि न तो हाजी रशीद अहमद साहब ख़ुद काँग्रेस में शरीक थे और न उस वक़्त की काँग्रेस का प्रोग्राम उन जैसे गरम दिल के देशभक्त को पसन्द ही आ सकता था. फिर भी इतना तो साफ़ था ही कि काँग्रेस अंगरेज़ों से हिन्दुस्तानियों को कुछ हक़ दिलवाना चाहती थी. सर सय्यद अहमद साहब और उनके साथी इस बात को भी नापसन्द करते थे और सिर्फ़ इस बात का प्रचार करते थे कि मुसलमानों को अपने हर एक काम से यह ज़ाहिर करना चाहिये कि वह अंगरेज़ी राज के पूरे पूरे वफ़ादार हैं. यही वजह थी कि हाजी रशीद अहमद साहब ने काँग्रेस की हिमायत करना ज़रूरी समझा.

इसके कुछ दिन बाद जब मौलाना सादुद्दीन साहब काश्मीरी और मौलाना अमानुल्ला साहब ने हाजी साहब से हिन्दुस्तान के 'दारुल हरब' होने या न होने की बाबत फैसला माँगा, तो हाजी साहब ने हमेशा याद रखने के क़ाबिल बहादुरी और हिम्मत के साथ यह फ़तवा दिया कि हिन्दुस्तान 'दारुल हरब' है. इस फ़तवे का कुछ हिस्सा इस तरह से था.

"अकनू हाले हिन्द रा ख़ुद ग़ौर फ़र्मायन्द कि इजराये अहकाम कुफ़्फ़ार नसारा दरींजा बचे कुव्वत व ग़ल्बा हस्त. अगर अदना कलक्टर हुक्म कर्द कि दर मसजिद जमात अदा न कुनेद, हेच मर्द अज़ अमीरो ग़रीब क़ुदरत नदारद कि अदाये आँ नमायद.

× × बहर हाल तसल्लुते कुफ़्फ़ार बर हिन्द दरींजा अस्त कि

ایک فتویٰ دے کر یہ اعلان کیا تھا کہ مسلمانوں کو کانگریس میں شریک ہونا چاہیئے، انجمنِ اسلامیہ میں نہیں۔ یہاں پر یہ بات بھی صاف کر دینا ضروری ہے کہ نہ تو حاجی رشید احمد صاحب خود کانگریس میں شریک تھے اور نہ اُس وقت کی کانگریس کا پروگرام اُن جیسے گرم دل کے دیش بھگت کو پسند ہی آسکتا تھا۔ پھر بھی اتنا تو صاف تھا ہی کہ کانگریس انگریزوں سے ہندستانیوں کو کچھ حق دلوانا چاہتی تھی۔ سر سید احمد صاحب اور اُن کے ساتھی اِس بات کو بھی ناپسند کرتے تھے اور صرف اِس بات کا پرچار کرتے تھے کہ مسلمانوں کو اپنے ہر ایک کام سے یہ ظاہر کرنا چاہیئے کہ وہ انگریزی راج کے پورے پورے وفادار ہیں۔ یہی وجہ تھی کہ حاجی رشید احمد صاحب نے کانگریس کی حمایت کرنا ضروری سمجھا

اِس کے کچھ دن بعد جب مولانا سعد الدین صاحب کاشمیری اور مولانا امان اللہ صاحب نے حاجی صاحب سے ہندستان کے دارالحرب ہونے یا نہ ہونے کی بابت فیصلہ مانگا، تو حاجی صاحب نے ہمیشہ یاد رکھنے کے قابل بہادری اور ہمّت کے ساتھ یہ فتویٰ دیا کہ ہندستان 'دارالحرب' ہے۔ اِس فتوے کا کچھ حصّہ اِس طرح سے تھا۔

"اکنوں حالِ ہند را خود غور فرمایند کہ اجرائے احکام کفار نصاریٰ دریں جا بچہ قوت و غلبہ ہست۔ اگر ادنیٰ کلکٹر حکم کرد کہ در مسجد جماعت ادا نکنید، ہیچ مرد از امیر و غریب قدرت ندارد کہ ادائے آں نماید۔

× × بہر حال تسلطِ کفار بر ہند دریں جا است کہ

दर हेच वक़्त कुफ़्फ़ार रा बर दरे हरब ज्यादा अज़ीं नबूद. व अदाये मरासिमे इसलाम अज़ मुसलमानान. महज़ ब इजाज़त ईशानस्त व अज़ मुसलमान अज़ीज़ तरीन रियाया कसे नेस्त."

यानी "अब हिन्दुस्तान की हालत पर आप ख़ुद ग़ौर करें कि इस मुल्क में ईसाई काफ़िरों के क़ानून इतनी ताक़त रखते हैं कि अगर एक अदना सा कलक्टर भी यह हुक्म कर दे कि मसजिदों में इकट्ठे होकर नमाज न पढ़ी जाय. तो फिर किसी अमीर ग़रीब की यह हिम्मत नहीं पड़ सकती कि वह मसजिद में नमाज़ पढ़ सके.

× × बहर हाल हिन्दुस्तान पर काफ़िरों का अख़्तियार इस दरजे तक बढ़ा हुआ है कि किसी वक़्त भी किसी 'दारुल हरब' पर इससे ज्यादा काफ़िरों का अख़्तियार नहीं होता. यहाँ पर जो अपने मज़हबी काम मुसलमान करते हैं, वह सिर्फ़ काफ़िरों की इजाज़त से. मुसलमान यहाँ की सबसे ज्यादा दुखी रियाया हैं."

यह फ़तवा हाजी रशीद अहमद साहब ने उस ज़माने में दिया था, जब स्वराज का नाम लेने पर लोगों को लम्बी लम्बी सज़ायें दी जाती थीं और कुछ नौजवानों को सिर्फ़ इसलिये काले पानी की सजा दीगई थी कि उनकी लिखी नज़्मों से मुल्क को आज़ाद करने का जज़बा उभरता था.

इस तरह हाजी रशीद अहमद साहब हमेशा यह कोशिश करते रहे कि हिन्दुस्तान के मुसलमान आज़ादी की लड़ाई में पूरे तौर से हिस्सा लेते रहें और इसके लिये अगर ग़ैर मुसलमानों को भी साथ लेना पड़े, तो उनको भी बिना किसी हिचक के साथ में लें. वह सन् १८५७ जैसी फ़िज़ा एक बार फिर मुल्क में देखना चाहते थे. अंग्रेज़ों का हिन्दुस्तान में रहना हर वक़्त उनके दिल

در ہیچ وقت کفار را بر دیر حرب زیادہ ازیں نبود. و ادائے مراسم اسلام از مسلمانان محض بہ اجازت ایشاں نست و از مسلمانان عزیز ترین رعایا کسے نیست."

یعنی "اب ہندستان کی حالت پر آپ خود غور کریں کہ اس ملک میں عیسائی کافروں کے قانون اتنی طاقت رکھتے ہیں کہ اگر ایک ادنیٰ سا کلکٹر بھی یہ حکم کردے کہ مسجدوں میں اکٹھے ہوکر نماز نہ پڑھی جائے' تو پھر کسی امیر غریب کی یہ ہمت نہیں پڑ سکتی کہ وہ مسجد میں نماز پڑھ سکے.

× × بہرحال ہندستان پر کافروں کا اختیار اس درجے تک بڑھا ہوا ہے کہ کسی وقت بھی کسی 'دارالحرب' پر اس سے زیادہ کافروں کا اختیار نہیں ہوتا. یہاں پر جو اپنے مذہبی کام مسلمان کرتے ہیں' وہ صرف کافروں کی اجازت سے. مسلمان یہاں کی سب سے زیادہ دکھی رعایا ہیں."

یہ فتویٰ حاجی رشید احمد صاحب نے اُس زمانے میں دیا تھا' جب سوراج کا نام لینے پر لوگوں کو لمبی لمبی سزائیں دی جاتی تھیں اور کچھ نوجوانوں کو صرف اس لئے کالے پانی کی سزا دی گئی تھی کہ اُن کی لکھی نظموں سے ملک کو آزاد کرنے کا جذبہ اُبھرتا تھا.

اس طرح حاجی رشید احمد صاحب ہمیشہ یہ کوشش کرتے رہے کہ ہندستان کے مسلمان آزادی کی لڑائی میں پورے طور سے حصہ لیتے رہیں اور اس کے لئے اگر غیر مسلمانوں کو بھی ساتھ لینا پڑے' تو اُن کو بھی بنا کسی ہچک کے ساتھ میں لیں. وہ ۱۸۵۷ء جیسی فضا ایک بار پھر ملک میں دیکھنا چاہتے تھے. انگریزوں کا ہندستان میں رہنا ہر وقت اُن کے دل

में काँटे की तरह चुभता रहता था. उनकी ख़्वाहिश थी कि वह मुल्क की आज़ादी के लिये लड़ते हुए ही शहीद हों. जब भी कोई ऐसा मौक़ा आया. उन्होंने कभी अपना पाँव पीछे न हटाया. अपने हर एक शागिर्द और मुरीद को भी वह यही तालीम देते थे. जब वह अपने कुछ ख़ास शागिर्दों को इस मैदान में काम करते देखते थे, तो उनको बड़ी तसल्ली और ख़ुशी होती थी.

हाजी रशीद अहमद साहब का इन्तकाल ११ अगस्त सन् १९०५ ईसवी दिन शुक्रवार को क़रीब ८९ बरस की उम्र में हुआ. उस वक़्त तक हिन्दुस्तान में एक नई लहर पैदा हो चुकी थी और तिलक जैसे नेता निहायत साफ़ साफ़ लफ़्ज़ों में हिन्दुस्तान की आज़ादी की माँग कर रहे थे. जिसके असर में आकर बहुत से नौजवानों ने अंगरेज़ों के ख़िलाफ़ हथियारों का भी इस्तेमाल करना शुरू कर दिया था. इस जुर्म में अंग्रेज़ सरकार बहुत से नौजवानों को फाँसी पर भी चढ़ा चुकी थी. लेकिन यह आग बढ़ती ही जा रही थी. इस वक़्त तक वलीउल्लाई संगठन भी काफ़ी मज़बूत हो चुका था और हाजी रशीद अहमद साहब के ख़ास मुरीद मौलाना महमूदुल हसन साहब की लीडरी में हिन्दुस्तान में अंग्रेज़ी हुकूमत के ख़िलाफ़ लड़ाई शुरू कर देने की काफ़ी ज़ोरदार तय्यारियाँ कर रहा था.

इस तरह हाजी रशीद अहमद साहब को अपनी जिन्दगी में ही अपने मिशन की कामयाबी देखना नसीब हो गया था और मरते वक़्त उनको यह पूरा इतमीनान था कि अब हिन्दुस्तान ज़्यादा दिनों तक गुलाम नहीं रक्खा जा सकेगा.

میں کانٹے کی طرح چبھتا تھا. اُن کی خواہش تھی کہ وہ ملک کی آزادی کے لئے لڑتے ہوئے ہی شہید ہوں. جب کبھی کوئی ایسا موقع آیا انہوں نے کبھی اپنا پاؤں پیچھے نہ ہٹایا. اپنے ہر ایک شاگرد اور مرید کو بھی وہ یہی تعلیم دیتے تھے. جب وہ اپنے کچھ خاص شاگردوں کو اس میدان میں کام کرتے دیکھتے تھے تو اُن کو بڑی تسلی اور خوشی ہوتی تھی.

حاجی رشید احمد صاحب کا انتقال ۱۱ اگست ۱۹۰۵ء عیسوی دن شکروار کو قریب ۸۹ برس کی عمر میں ہوا. اس وقت تک ہندستان میں ایک نئی لہر پیدا ہو چکی تھی اور تلک جیسے نیتا نہایت صاف صاف لفظوں میں ہندستان کی آزادی کی مانگ کر رہے تھے، جس کے اثر میں آ کر بہت سے نوجوانوں نے انگریزوں کے خلاف ہتھیاروں کو بھی استعمال کرنا شروع کر دیا تھا. اس جرم میں انگریز سرکار بہت سے نوجوانوں کو پھانسی پر بھی چڑھا چکی تھی. لیکن یہ آگ بڑھتی ہی جا رہی تھی. اس وقت تک ولی اللّٰہی سنگٹھن بھی کافی مضبوط ہو چکا تھا اور حاجی رشید احمد صاحب کے خاص مرید مولانا محمود الحسن صاحب کی لیڈری میں ہندستان میں انگریزی حکومت کے خلاف لڑائی شروع کر دینے کی کافی زوردار تیاریاں کر رہا تھا.

اس طرح حاجی رشید احمد صاحب کو اپنی زندگی میں ہی اپنے مشن کی کامیابی دیکھنا نصیب ہو گیا تھا اور مرتے وقت اُن کو یہ پورا اطمینان تھا کہ اب ہندستان زیادہ دنوں تک غلام نہیں رکھا جا سکے گا.

हिन्दुस्तानी कलचर और सङ्गीत

तानसेन का रबाबी ख़ानदान

(पं० गनेश प्रसाद द्विवेदी)

(७)

तानसेन की लड़की सरस्वती देवी और मिस्रीसिंह से जो ख़ानदान चला उसके सब गुनियों की चर्चा हम कर चुके हैं. अब तानसेन के बेटे के बंस का हाल लिखना है. नीचे इनका बंसपेड़ दिया जा रहा है. यह ज्यादातर रबाब के माहिर थे इसलिये यह ख़ानदान 'रबाबी ख़ानदान' के नाम से मशहूर है.

तान सेन के बेटे का बंस (रबाबिये)

मुकुन्द राम या मकरंद पांड़े

रामतनु पांड़े या तानसेन (स्त्री का नाम प्रेम कुमारी)

- सूरतसेन
  - मोहसेन (महासेन)
    - सुधीन सेन (सुहीलसेन) (दूसरे मत से सुरत सेन के बेटे सुहीलसेन और बेटे सुधीन सेन थे)
- शरतसेन
- तरंगसेन (तान तरंग ख़ाँ) अबुल फ़ज़ल आईने अकबरी में सिर्फ़ तानसेन के एक बेटे तान तरंग ख़ां का ज़िक्र करते हैं
- विलास ख़ां
  - उदयसेन
    - ❀
  - दयालसेन
- सरस्वती (लड़की जो मिस्री सिंह को ब्याही गई)

ہندستانی کلچر اور سنگیت

تان سین کا ربابی خاندان

(پنڈت گنیش پرشاد دودیدی)

(۷)

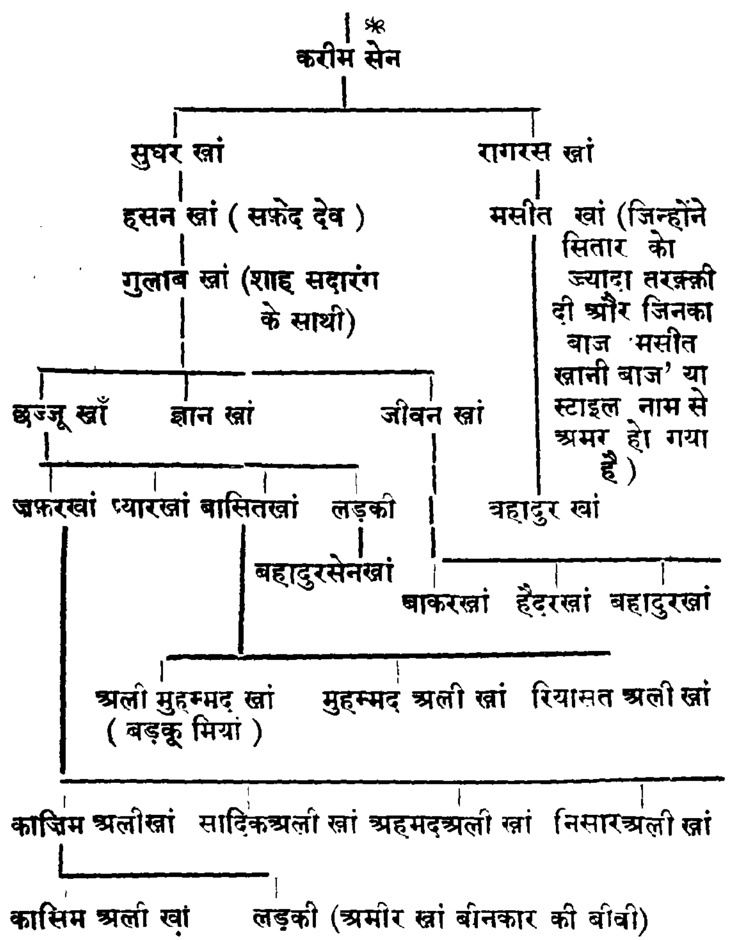
تان سین کی لڑکی سرسوتی دیوی اور مصری سنگھ سے جو خاندان چلا اُس کے سب گُنیوں کی چرچا ہم کر چکے ہیں. اب تان سین کے بیٹے کے بنس کا حال لکھنا ہے. نیچے اِن کا بنس پیڑ دیا جا رہا ہے. یہ زیادہ تر رباب کے ماہر تھے اِس لیٔے یہ خاندان 'ربابی خاندان' کے نام سے مشہور ہے۔ (۵۵۰)

تان سین کے بیٹے کا بنس (ربابیۓ)

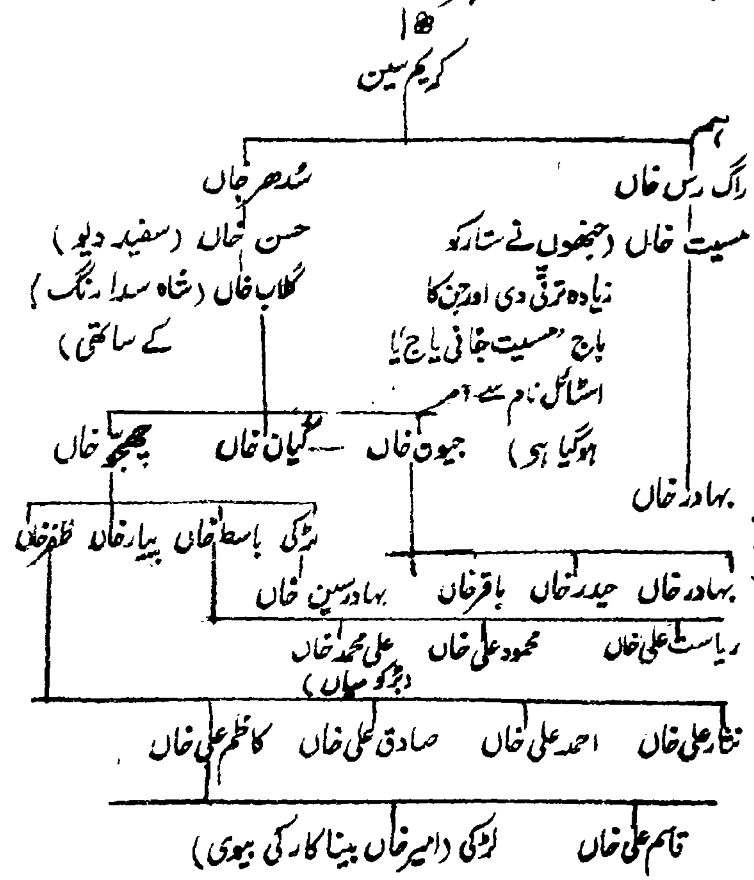
مُکند رام یا مکرند پانڈے

رام تنو پانڈے یا تان سین (استری کا نام پریم کماری)

- سرسوتی (لڑکی جو مصری سنگھ کو بیاہی گئی)
- بلاس خاں
  - دیال سین
  - اُدے سین
    - ❀
- ترنگ سین (تان ترنگ خاں) ابوالفضل آئین اکبری میں صرف تان سین کے ایک بیٹے تان سین خاں کا ذکر کرتے ہیں
- شرت سین
- صورت سین
  - موہ سین (مہا سین)
    - سُدھین سین (سُہیل سین) (دوسرے مت سے صورت سین کے بیٹے سُہیل سین اور بیٹے سُدھین سین تھے)



तानसेन की ज़िंदगी के बारे में कुछ बातें हम पहले कह चुके हैं. कुछ अभी और कहनी हैं. अभी उनके चल बसने का और उनके चारों लड़कों का कुछ हाल कहना है. तानसेन के चार बेटे थे-



تان سین کی زندگی کے بارے میں کچھ باتیں ہم پہلے کہہ چکے ہیں۔ کچھ ابھی اور کہنی ہیں۔ ابھی اُن کے چل بسنے کا اور اُن کے چاروں لڑکوں کا کچھ حال کہنا ہی۔ تان سین کے چار بیٹے تھے۔

रत सेन, सूरत सेन, तरंग सेन और बिलास खां. इनमें से छोटे बेलास खां का ही बंस चला जिसके आखिरी चिराग़, मुहम्मद अली खां साहब (पं० भात खंडे और राजा नवाब अली के गुरू) जो अभी सन् १९२८ तक जिन्दा थे. इस बीच इस खानदान में एक से एक गुनी हुए जो ज्यादातर रबाबिये थे. इनमें से जो सब से मशहूर हुए उन्हीं की चर्चा थोड़े में यहां की जा सकेगी. सबसे पहले तानसेन के चारों बेटों को लें. तानसेन ने अपना आखरी वक़्त आया जान अपने चारों बेटों को पास बुलाकर कहा, 'तुम लोगों की संगीत की तालीम पूरी हो चुकी है, अब उसका इम्तहान देना होगा, मेरी जिन्दगी अब ज्यादा नहीं है. तुम लोग अपनी अपनी रची हुई एक एक अलग चीज़ तैयार करके मुझे सुनाओ. फिर उसे बादशाह सलामत के सामने सुनाना होगा. उन लोगों ने सुनाया. फिर तानसेन ने उनकी चीज़ों को सुधार कर दुरुस्त किया और तब दरबार में बारी बारी से इन लोगों ने अपनी चीज़ों को सुनाया. तानसेन ने गाना शुरू होने के पहले बादशाह से अर्ज़ की कि "मैं अब बूढ़ा हो गया हूँ, मेरी ताक़त अब कुछ नहीं रह गई है. अब मुझे फ़ुरसत दी जाए और इन लड़कों में से जो जिस लायक़ हो उसे वैसा रुतबा देकर इनकी रोज़ी का प्रबन्ध कर दिया जाए." बादशाह ने उन चारों की जिम्मेदारी ली और उनका गाना सुनने की ख़ाहिश ज़ाहिर की. पहले बड़े लड़के सूरत सेन ने गाया. सब लोगों ने तारीफ़ की. फिर दूसरे*लड़के शरत सेन ने गाया. इनकी भी वैसी

---

* तानसेन के बड़े लड़के सुरतसेन थे या शरतसेन इस बारे

شرت سین، صورت سین، ترنگ سین اور بلاس خاں۔ ان میں سے چھوٹے بلاس خاں کا ہی بنس چلا جس کے آخری چراغ محمد علی خاں صاحب (پنڈت بھات کھنڈے اور راجا نواب علی کے گرو تھے) جو ابھی سنہ ۱۹۲۸ تک زندہ تھے۔ اس بیچ اس خاندان میں ایک سے ایک گنی ہوئے جو زیادہ تر ربابیے تھے۔ ان میں سے جو سب سے مشہور ہوئے انھیں کی چرچا تھوڑے میں یہاں کی جا سکے گی۔ سب سے پہلے تان سین کے چاروں بیٹوں کو لیں۔ تان سین نے اپنا آخری وقت آیا جان اپنے چاروں بیٹوں کو پاس بلا کر کہا "تم لوگوں کی سنگیت کی تعلیم پوری ہو چکی ہے، اب اس کا امتحان دینا ہوگا، میری زندگی اب زیادہ نہیں ہے۔ تم لوگ اپنی اپنی رچی ہوئی ایک ایک الگ چیز تیار کر کے مجھے سناؤ، پھر اسے بادشاہ سلامت کے سامنے سنانا ہوگا۔ ان لوگوں نے سنایا۔ پھر تان سین نے ان کی چیزوں کو سدھار کر درست کیا اور تب دربار میں باری باری سے ان لوگوں نے اپنی چیزوں کو سنایا۔ تان سین نے گانا شروع ہونے کے پہلے بادشاہ سے عرض کی کہ میں اب بوڑھا ہو گیا ہوں۔ میری طاقت اب کچھ نہیں رہ گئی ہے۔ اب مجھے فرصت دی جائے اور ان لڑکوں میں سے جو جس لائق ہو اسے ویسا مرتبہ دے کر ان کی روزی کا پربندھ کر دیا جائے۔" بادشاہ نے ان چاروں کی ذمہ داری لی اور ان کا گانا سننے کی خواہش ظاہر کی۔ پہلے بڑے لڑکے صورت سین نے گایا۔ سب لوگوں نے تعریف کی۔ پھر دوسرے*لڑکے شرت سین نے گایا۔ ان کی بھی ویسی

---

* تان سین کے بڑے لڑکے صورت سین تھے یا شرت سین اس بارے میں

ही तारीफ़ हुई. इसी तरह तीसरे लड़के तरंगसेन की भी तारीफ़ हुई. इन तीनों ही के गाने में कोई किसी तरह का दोष या ग़लती न निकाल सका. दरबार के सभी गुनी और मिस्रीसिंह जो भी इस मौक़े पर मौजूद थे. पर बाद में जब छोटे लड़के बिलास खां ने गाया तो सब की आंखें खुल गईं. सब सन्नाटे में आ गए, और ख़ुद बादशाह ने कहा कि स्वामी हरीदास के बाद इतनी तासीर और इतना दर्द किसी गाने में नहीं पाया गया. सब गुनी जनों ने एक राय होकर कहा कि तानसेन तुम्हारा और तुम्हारे बंस का नाम इसी लड़के से अमर होगा. इसके बाद दरबारी गायक के रूप में बिलास ख़ां तैनात कर दिए गए. इस के कुछ दिन बाद तानसेन सख़्त बीमार हुए और बादशाह अकबर ख़ुद उनके पास आए. तानसेन ने इस वक़्त अपने को ग्वालियर भेज दिये जाने की ख़ाहिश ज़ाहिर की. वह एक बार अपने गुरू हज़रत मुहम्मदग़ौस के यहां जाना चाहते थे. पर उनकी हालत उस वक़्त ऐसी नहीं थी कि उन्हें एक जगह से दूसरी जगह ले जाया जा सकता. शाही हकीमों ने राय नहीं दी. तब ख़ुद बादशाह ने उनकी सेज के बग़ल में आकर उन्हें समझाया और ग्वालियर जाने का मनसूबा छोड़ देने को कहा. इस वक़्त बादशाह को अपने पास बैठा हुआ देखकर तानसेन ने आंखों में आंसू भर कर उनसे कहा, 'ख़ुदावंद, अब और क्या कहूं, मेरा वक़्त हो गया. ग्वालियर अगर नहीं जाने देना चाहते तो कम से कम मेरी समाधि (क़ब्र) वहीं बने.' बादशाह उन्हें इसका यक़ीन दिलाकर चले गए. पर थोड़ी ही देर बाद तानसेन की हालत और

ہی تعریف ہوئی۔ اِسی طرح تیسرے لڑکے ترنگ سین کی بھی تعریف ہوئی۔ اِن تینوں ہی کے گانے میں کوئی کسی طرح کا دوش یا غلطی نہ نکال سکا۔ دربار کے سبھی گُنی اور مصری سنگھ جو بھی اِس موقع پر موجود تھے۔ پر بعد میں جب چھوٹے لڑکے بلاس خاں نے گایا تو سب کی آنکھیں کھُل گئیں۔ سب سنّاٹے میں آگئے، اور خود بادشاہ نے کہا کہ سوامی ہری داس کے بعد اِتنی تاثیر اور اِتنا درد کسی گانے میں نہیں پایا گیا۔ سب گُنی جنوں نے ایک رائے ہوکر کہا کہ تان سین تمہارا اور تمہارے بنس کا نام اِسی لڑکے سے امر ہوگا۔ اِس کے بعد درباری گایک کے روپ میں بلاس خاں تعینات کر دئے گئے۔ اِس کے کچھ دن بعد تان سین سخت بیمار ہوئے اور بادشاہ اکبر خود اُن کے پاس آئے۔ تان سین نے اِس وقت اپنے کو گوالیر بھیج دئے جانے کی خواہش ظاہر کی۔ وہ ایک بار اپنے گرو حضرت محمد غوث کے یہاں جانا چاہتے تھے۔ پر اُن کی حالت اُس وقت ایسی نہیں تھی کہ اُنھیں ایک جگہ سے دوسری جگہ لے جایا جاسکتا۔ شاہی حکیموں نے رائے نہیں دی۔ تب خود بادشاہ نے اُن کی سیج کے بغل میں آکر اُنھیں سمجھایا اور گوالیر جانے کا منصوبہ چھوڑ دینے کو کہا۔ اِس وقت بادشاہ کو اپنے پاس بیٹھا ہوا دیکھ کر تان سین نے آنکھوں میں آنسو بھر کر اُن سے کہا، 'خداوند، اب اور کیا کہوں، میرا وقت ہوگیا۔ گوالیر اگر نہیں جانے دینا چاہتے تو کم سے کم میری سمادھی (قبر) وہیں بنے۔' بادشاہ اُنھیں اِس کا یقین دلاکر چلے گئے۔ پھر تھوڑی ہی دیر بعد تان سین کی حالت اور

ख़राब हो गई. बादशाह अकबर फिर उनके पास आए. बादशाह को अपने पास मौजूद देखकर तानसेन ने उनसे बिदा मांगी और अपना आख़ीरी गाना उन्हें सुनाया. बादशाह अकबर अब अपने को ज्यादा न सँभाल सके, और बच्चों की तरह रो पड़े. इसके बाद तानसेन शान्ति से गम्भीर भाव धारन कर नादब्रम्ह और एकार के ध्यान में लीन हो गए. बादशाह ने बिदा मांगी और चारों बेटों ने पैर छूकर उनका आख़ीरी हुक्म या ख़ाहिश जाननी चाही. पर उनके चेहरे पर दूसरे लोक का तेज और दैवी ख़ुशी छा चुकी थी. तानसेन मानों किसी दूसरे लोक से अपने बेटों से सिर्फ़ यह सके कि, 'मेरे मरने के बाद मेरी मिट्टी को बीच में रखकर औरसब गुनियों को इकट्ठा कर तुम चारों बारी बारी एक एक नया राग गाना. जिसके गाने से मेरा दाहना, हाथ उठे उसी के बंस की संगीत साधना से देवी प्रसन्न होंगी.' इसके बाद ही तानसेन परलोक सिधारे. यह फ़रवरी सन् १५८५ की बात है और इस समय इनकी उम्र क़रीब ८० बरस थी और इस हिसाब से उनका जन्म सन् १५०५ में मानना चाहिये. दरबार के सभी बड़े गुनी और अमीर उमरा इकट्ठा थे. चारों लड़कों का गाना एक एक करके शुरू हुआ. उनके पलंग के एक एक पाए को थाम कर चारों बैठे थे. बड़ा दर्दनाक सीन सामने था. उस मौक़े पर यूरोप का एक राजदूत भी इत्तफ़ाक़ से वहां मौजूद था जो अकबरी दरबार की शान शौकत देखने, समझने की ग़रज़ से आया हुआ था और अकबर के दरबार में यह अजीब तमाशा देख रहा था. उसने अपनी राय भी जाहिर कर दी थी कि मरे हुए आदमी का

خراب ہوگئی. بادشاہ اکبر پھر اُن کے پاس آئے. بادشاہ کو اپنے پاس موجود دیکھ کر تان سین نے اُن سے بدا مانگی اور اپنا آخری گانا اُنھیں سنایا. بادشاہ اکبر اب اپنے کو زیادہ نہ سنبھال سکے، اور بچوں کی طرح رو پڑے. اس کے بعد تان سین شانتی سے گمبھیر بھاو دھارن کر نادبرہم اور اکار کے دھیان میں لین ہوگئے. بادشاہ نے بدا مانگی اور چاروں بیٹوں نے پیر چھوکر اُن کا آخری حکم یا خواہش جاننی چاہی. پر اُن کے چہرے پر دوسرے لوک کا تیج اور دیوی خوشی چھا چکی تھی. تان سین مانوں کسی دوسرے لوک سے اپنے بیٹوں سے صرف یہ کہہ سکے کہ، 'میرے مرنے کے بعد میری مٹی کو بیچ میں رکھ کر اور سب گنیوں کو اکٹھا کر تم چاروں باری باری ایک ایک نیا راگ گانا. جس کے گانے سے میرا داہنا ہاتھ اٹھے اُسی کے بنس کی سنگیت سادھنا سے دیوی پرسن ہوں گی.' اس کے بعد ہی تان سین پرلوک سدھارے. یہ فروری ۱۵۸۵ء کی بات ہے اور اس سمے ان کی عمر قریب ۸۰ برس تھی اور اس حساب سے اُن کا جنم ۱۵۰۵ء میں ماننا چاہئے. دربار کے سبھی بڑے گنی اور امیر اُمرا اکٹھا تھے. چاروں لڑکوں کا گانا ایک ایک کرکے شروع ہوا. اُن کے پلنگ کے ایک ایک پائے کو تھام کر چاروں بیٹھے تھے. بڑا دردناک سین سامنے تھا. اس موقع پر یوروپ کا ایک راج دوت بھی اتفاق سے وہاں موجود تھا جو اکبری دربار کی شان شوکت دیکھنے، سمجھنے کی غرض سے آیا ہوا تھا اور اکبر کے دربار میں یہ عجیب تماشا دیکھ رہا تھا. اس نے اپنی رائے بھی ظاہر کردی تھی کہ مرے ہوئے آدمی کا

.ाथ कभी भी किसी का गाना सुनकर नहीं उठ सकेगा. पहले तीन लड़के एक एक करके गा चुके, पर हाथ नहीं उठा. इस पर उस .वेलायती दूत ने अपनी राय दुहराई कि यह बेकार कोशिश है. तब सबसे छोटे बिलास खां ने उस विलायती दूत को बता कर अपना रचा हुआ बिलास खानी तोड़ी का यह ध्रुपद शुरू किया— "कौन भ्रम भूलो रे मन अज्ञानी !" इस राग का समा बँधने के साथ ही साथ तानसेन का दाहना हाथ उठा, मानों आशीर्वाद देता हो, और बिलास खां ने इसे अपने सिर से लगा कर गाना बंद किया. फिर लोगों ने बिलास खां को अलग कर मिट्टी को चादर से ढक दिया. उस विलायती दूत के अचम्भे का ठिकाना न रहा. फिर बिलास खां को सब लोगों ने एक राय से तानसेन का गद्दी नशीन मान लिया. उनकी मिट्टी बड़ी धूम धाम से ग्वालियर पहुँचाकर हज़रत ग़ौस के मक़बरे की बग़ल में दफ़नाई गई और अकबर ने वहां एक सुन्दर चंदोवा बनवा दिया जो अभी भी मौजूद है. हर साल वहां फागुन में तानसेन की याद में उर्स होता है और हिन्दुस्तान के मशहूर गुनी ख़ासकर सेनी ख़ानदान से तालीम पाए हुए संगीत घराने के उस्ताद लोग शरीक होते हैं और जी खोलकर अपना अपना करतब दिखाते हैं. ग्वालियर दरबार की तरफ़ से इनके रहने वग़ैरा का पूरा इन्तज़ाम कर दिया जाता है. तानसेन की क़बर के पास एक बहुत बड़ा और पुराना इमली का पेड़ है. कहते हैं कि यह उनके दफ़नाए जाने के बाद ही अपने आप उगा और फला फूला. गाने वालों का विश्वास है कि इस दरख़्त की पत्तियां एक बार खा लेने से आवाज़ सुरीली हो जाती है.

ہاتھ کبھی بھی کسی کا گانا سُن کر نہیں اُٹھ سکے گا. پہلے تین لڑکے ایک ایک کر کے گا چکے، پر ہاتھ نہیں اُٹھا. اِس پر اُس ولایتی دوت نے اپنی رائے دُہرائی کہ یہ بےکار کوشش ہے. تب سب سے چھوٹے بلاس خاں نے اُس ولایتی دوت کو بتا کر اپنا رچا ہوا بلاس خانی توڑی کا یہ دھرپد شروع کیا— "کون بھرم بھولو رے من اگیانی !" اِس راگ کا سما بندھنے کے ساتھ ہی ساتھ تان سین کا داہنا ہاتھ اُٹھا، مانوں آشیرواد دیتا ہو، اور بلاس خاں نے اِسے اپنے سر سے لگا کر گانا بند کیا. پھر لوگوں نے بلاس خاں کو الگ کر مٹّی کو چادر سے ڈھک دیا. اُس ولایتی دوت کے اچنبھے کا ٹھکانا نہ رہا. پھر بلاس خاں کو سب لوگوں نے ایک رائے سے تان سین کا گدّی نشین مان لیا. اُن کی مٹّی بڑی دھوم دھام سے گوالیر پہنچا کر حضرت غوث کے مقبرے کی بغل میں دفنائی گئی اور اکبر نے وہاں ایک سُندر چندووا بنوا دیا جو ابھی بھی موجود ہے. ہر سال وہاں پھاگن میں تان سین کی یاد میں عُرس ہوتا ہے اور ہندستان کے مشہور گنی خاص کر سینی خاندان سے تعلیم پائے ہوئے سنگیت گھرانے کے اُستاد لوگ شریک ہوتے ہیں اور جی کھول کر اپنا اپنا کرتب دکھاتے ہیں. گوالیر دربار کی طرف سے اِن کے رہنے وغیرہ کا پورا انتظام کر دیا جاتا ہے. تان سین کی قبر کے پاس ایک بہت بڑا اور پُرانا اِملی کا پیڑ ہے. کہتے ہیں کہ یہ اُن کے دفنائے جانے کے بعد ہی اپنے آپ اُگا اور پھلا پھولا. گانے والوں کا وشواس ہے کہ اِس درخت کی پتّیاں ایک بار کھا لینے سے آواز سُریلی ہو جاتی ہے.

तानसेन के बाद बिलास खां को अपने पिता की गद्दी मिली और कुछ दिन तक इन्होंने दरबार की शोभा बढ़ाई. पर यह फ़क़ीराना तबियत के आदमी थे और जल्दी ही इनका जी दरबार से उचट गया. यह ज्यादातर जङ्गलों में साधु-संगत की सेवा में और नाद ब्रम्ह की सधना में तल्लीन रहने लगे. इनके तीनों बड़े भाई दरबार में ही रहते थे. इनकी बीवी भी आगरे या दिल्ली में ही रहतीं थीं. तानसेन को दरबार से २०००) रुपए माहवारी मिलते थे. वही तनख़ाह इनकी भी रखी गई. पर यह धन दौलत के लोभी नहीं थे. संसार और माया मोह इनको छू तक नहीं गया था. इसका फल यह हुआ कि इनकी बीवी बच्चों को खाने पीने की तकलीफ़ भी होने लगी. एक बार कई महीने बाद जब घर लौटे तो उनकी बीवी ने रोना पीटना शुरू कर दिया और बोली 'तुम्हारे भाई जो इल्म में तुम्हारे सामने कुछ नहीं हैं, नवाबों की शान बना कर रहते हैं, और तुम्हारे बच्चे खाने कपड़े को तरसते हैं'. इस पर एक बार फिर यह अकबर के सामने हाज़िर हुए और इन्होंने दिल खोल कर गाना सुनाया. कहते हैं कि अकबर ने इस बार इनको तानसेन के मरने के बाद से लेकर अब तक की पूरी तनख़ाह और इनाम के तौर पर इतनी दौलत दे दी जो इनके बीवी बच्चों की परवरिश के लिये उमर भर को काफ़ी थी. अकबर एक निगाह में आदमी को पहचान लेते थे. वह पहले ही समझ गए थे कि बिलास खां को दरबार में रोके रखने की कोशिश बेकार होगी. यह स्वामी

تان سین کے بعد بلاس خاں کو اپنے پتا کی گدّی ملی اور کچھ دن تک انھوں نے دربار کی شوبھا بڑھائی. پر یہ فقیرانہ طبیعت کے آدمی تھے اور جلدی ہی ان کا جی دربار سے اُچٹ گیا. یہ زیادہ تر جنگل میں سادھو سنگت کی سیوا میں اور نادبرمھ کی سادھنا میں تلّین رہنے لگے. ان کے تینوں بڑے بھائی دربار میں ہی رہتے تھے. ان کی بیوی بھی آگرے یا دلّی میں ہی رہتی تھیں. تان سین کو دربار سے ۲۰۰۰ روپئے ماہواری ملتے تھے. وہی تنخواہ ان کی بھی رکھی گئی. پر یہ دھن دولت کے لوبھی نہیں تھے. سنسار اور مایا موہ ان کو چھو تک نہیں گیا تھا. اس کا پھل یہ ہوا کہ ان کی بیوی بچوں کو کھانے پینے کی تکلیف بھی ہونے لگی. ایک بار کئی مہینے بعد جب گھر لوٹے (٥٥٤)
تو ان کی بیوی نے رونا پیٹنا شروع کر دیا اور بولی 'تمھارے بھائی جو علم میں تمھارے سامنے کچھ نہیں ہیں، نوابوں کی شان بنا کر رہتے ہیں، اور تمھارے بچے کھانے کپڑے کو ترستے ہیں'. اس پر ایک بار پھر یہ اکبر کے سامنے حاضر ہوئے اور انھوں نے دل کھول کر گانا سنایا. کہتے ہیں کہ اکبر نے اس بار ان کو تان سین کے مرنے کے بعد سے کر اب تک کی پوری تنخواہ اور انعام کے طور پر اتنی دولت دے دی جو ان کے بیوی بچوں کی پرورش کے لئے عمر بھر کو کافی تھی. اکبر ایک نگاہ میں آدمی کو پہچان لیتے تھے. وہ پہلے ہی سمجھ گئے تھے کہ بلاس خاں کو دربار میں روکے رہنے کی کوشش بے کار ہوگی. یہ سوامی ہری داس، بیجو باورے وغیرہ کی لائن میں تھے. اس بار دربار سے

जो धन मिला उससे गिरिस्ती का हमेशा के लिये पक्का इन्तज़ाम करके यह सदा केलिये लोप हो गए. फिर इनका कभी किसी को पता न चला.

इनकी एक निशानी—'बिलास ख़ानी तोड़ी, नाम का राग आज भी हमारे पास है. शान्ति, करुना रस और दर्द की उपज जितनी इस राग से होती है उतनी शायद और किसी से नहीं और इसका गाना भी बड़ा कठिन है. स्वर तो इसमें सब भैरवी के ही लगते हैं, पर गंधार और धैवत की बंदिश कुछ ऐसी है कि तोड़ी का रूप साफ़ झलक आता है और भैरवी के सब सुर लगते हुए भी यह भैरवी से बिलकुल अलग दिखती है. रस में भी बहुत फ़रक़ है. तानसेन के पुत्रबंस के सभी गुनियों में हम बिलासख़ां का असर देखते हैं. इन में से ज़्यादा उस्तादों का स्वभाव साधु फ़क़ीरों का सा रहा है. हज़रत गौस की सूफ़ी विचार धारा का असर आख़ीर तक इस ख़ानदान के साथ रहा. इनकी कला में भी वही बात हम पाते हैं. इनके गाने बजाने में रंगों के खेल और बाहरी सजावट की बहार इतनी नहीं होती थी जितनी बीनकार घराने में, पर राग की पूरी तस्वीर खड़ी कर देने में, उसके हर एक अंग की ख़ूबसूरती को निखार कर रख देने में इनकी बराबरी कोई नहीं कर सकता था. पर सबके ऊपर इनकी कला में जो अनन्त का संकेत या इशारा मिलता है वही सेनी घराने की जान है. बिलास ख़ां से लेकर हसन ख़ां, छज्जू ख़ां, गुलाबख़ां, ज्ञानख़ां, जीवनख़ां, ज़फ़रख़ां वग़ैरा सभी गुनियों की कला में इस अनोखेपन की छटा हम पाते हैं. यह सभी पहुँचे हुए फ़क़ीर और ज्ञानी थे. हसन ख़ां को सभी शुभ्रदेवता यानी 'सफेद देवता' कहा करते थे. इनका शरीर

(५५७)

جو دھن ملا اس سے گرستی کا ہمیشہ کے لئے پکا انتظام کرکے یہ سدا کے لئے لوپ ہوگئے. پھر ان کا کبھی کسی کو پتہ نہ چلا.

ان کی ایک نشانی— 'بلاس خاں توڑی' نام کا راگ آج بھی ہمارے پاس ہے. شانتی، کرونا رس اور درد کی اُپج جتنی اس راگ سے ہوتی ہے اتنی شاید اور کسی سے نہیں اور اس کا گانا بھی بڑا کٹھن ہے. سور تو اس میں سب بھیروی کے ہی لگتے ہیں، پر گندھار اور دھیوت کی بندش کچھ ایسی ہے کہ توڑی کا روپ صاف جھلک آتا ہے اور بھیروی کے سب سُر لگتے ہوئے بھی یہ بھیروی سے بالکل الگ دکھتی ہے. رس میں بھی بہت فرق ہے. تان سین کے پُتر بنس کے سبھی گنیوں میں ہم بلاس خاں کا اثر دیکھتے ہیں. ان میں سے زیادہ استادوں کا سبھاؤ سادھو فقیروں کا سا رہا ہے. حضرت غوث کی صوفی وچار دھارا کا اثر آخر تک اس خاندان کے ساتھ رہا. ان کی کلا میں بھی وہی بات ہم پاتے ہیں. ان کے گانے بجانے میں رنگوں کے کھیل اور باہری سجاوٹ کی بہار اتنی نہیں ہوتی تھی جتنی بین کار گھرانے میں. پر راگ کی پوری تصویر کھڑی کر دینے میں، اس کے ہر ایک انگ کی خوبصورتی کو نکھار کر رکھ دینے میں ان کی برابری کوئی نہیں کر سکتا تھا. پر سب کے اوپر ان کی کلا میں جو اننت کا سنکیت یا اشارہ ملتا ہے وہی سینی گھرانے کی جان ہے. بلاس خاں سے لے کر حسن خاں، چھجو خاں، گلاب خاں، گیان خاں، جیون خاں، ظفر خاں وغیرہ سبھی گنیوں کی کلا میں اس انوکھے پن کی چھٹا ہم پاتے ہیں. یہ سبھی پہنچے ہوئے فقیر اور گیانی تھے. حسن خاں کو سبھی شوبھر دیوتا یعنی 'سفید دیوتا' کہا کرتے تھے. ان کا شریر

(۵۵۷)

बिल्लौर को तरह चमकीला था, मन भी वैसा ही निर्मल और देवताओं की तरह था. इनमें से कोई भी शाही दरबार में जम कर नौकरी करना नहीं पसंद करता था. बड़ी ख़ुशामद के बाद इनको दरबार में लाया जाता था. हसन खां और इनके बेटे गुलाब खां पहुँचे हुए अलापिए और धुरपदिये थे. गुलाब खां के तीन बेटे छज्जू खां, ज्ञान खां और जीवन खां थे. छज्जू खां ने रबाब में कमाल हासिल किया था. इनके तीन बेटे ज़फ़र खां, प्यार खां, और बासित खां अपने समय के सबसे बड़े तंत्रकार हुए. ज्ञान खां बे औलाद रहे. जीवन खां के दो बेटे बहादुर खां और हैदर खाँ थे. इनमें से बहादुर खां को विष्णुपुर (पूर्वी बंगाल) के राजा बड़ी आवभगत के साथ अपने यहां ले गए और हैदर खां फ़क़ीर हो गए. इनके शागिर्दों का एक घराना कालपी (कानपुर के पास) में अब भी है और लखनऊ के राजा नवाब अली साहब इस घराने के बड़े भक्त और शुक्रगुज़ार थे. उधर बहादुर खाँ ने बंगाल में बहुत से लोगों को तालीम दी.

छज्जू के तीनों बेटे, ज़फ़र खां, प्यार खां, और बासित खां अपने समय के सब से बड़े कलावंत हुए. ध्रुपद आलाप और तंत्र इन तीनों में यह माहिर थे. इनमें से ज़फ़र खां और प्यार खाँ ने अपने पिता छज्जू खां से तालीम पाई. पर बासित खां के उस्ताद थे उनके चाचा, ज्ञान खां जिन्होंने औलाद न होने की वजह से बासित खां को पाला था. उन्होंने बासित खां को संगीत के साथ ही योग विद्या

بلور کی طرح چمکیلا تھا، من بھی ویسا ہی نرمل اور دیوتاؤں کی طرح تھا. اِن میں سے کوئی بھی شاہی دربار میں جم کر نوکری کرنا نہیں پسند کرتا تھا. بڑی خوشامد کے بعد اِن کو دربار میں لایا جاتا تھا. حسن خاں اور اِن کے بیٹے گلاب خاں پہنچے ہوئے الاپیے اور دھرپدیے تھے. گلاب خاں کے تین بیٹے چھجو خاں، گیان خاں اور جیون خاں تھے. چھجو خاں نے رباب میں کمال حاصل کیا تھا. اِن کے تین بیٹے ظفر خاں، پیار خاں اور باسط خاں اپنے سمے کے سب سے بڑے تنترکار ہوئے. گیان خاں بےاولاد رہے. جیون خاں کے دو بیٹے بہادر خاں اور حیدر خاں تھے. اِس میں سے بہادر خاں کو وشنوپور (پوربی بنگال) کے راجا بڑی آؤبھگت کے ساتھ اپنے یہاں لے گئے اور حیدر خاں فقیر ہوگئے. اِن کے شاگرد کا ایک گھرانا کالپی (کانپور کے پاس) میں اب بھی ہے اور لکھنؤ کے راجا نواب علی صاحب اِس گھرانے کے بڑے بھگت اور شکرگزار تھے. اُدھر بہادر خاں نے بنگال میں بہت سے لوگوں کو تعلیم دی.

چھجو کے تینوں بیٹے، ظفر خاں، پیار خاں، اور باسط خاں اپنے سمے کے سب سے بڑے کلاونت ہوئے. دھرپد آلاپ اور تنتر اِن تینوں میں یہ ماہر تھے. اِن میں سے ظفر خاں اور پیار خاں نے اپنے پتا چھجو خاں سے تعلیم پائی. پر باسط خاں کے اُستاد تھے اِن کے چاچا، گیان خاں جنھوں نے اولاد نہ ہونے کی وجہ سے باسط خاں کو پالا تھا. اُنھوں نے باسط خاں کو سنگیت کے ساتھ ہی یوگ ودیا

(हब्सेदम) की भी तालीम दी थी. क्यों कि गाना और तंत्रकारी इन दोनों ही में ऊँचे दर्जे का काम बिना योग साधना (हब्से दम) के नहीं होता. सेनी घराने के ज्यादातर नामी गुनी योग और प्राणायाम (हब्से दम) में कमाल हासिल कर चुके थे. और यही वजह है कि लगभग सभी बड़ी उमर वाले हुए हैं. इनमें से कई को हम जानते हैं जो १०० बरस के ऊपर की उमर पाकर परलोक सिधारे और आखिरी दम तक निरोग रहे.

तानसेन के बाद उस घराने में सबसे बड़े और नामी गुनी यही तीनों भाई जफ़र खां, प्यार खां, और बासित खां हुए. इन लोगों को खास तालीम तंत्र (रबाब) की ही थी. हम यह कह चुके हैं कि तानसेन के बीनकार और रबाबी दोनों घरानों ने तंत्र का स्थान ध्रुपद (धुरपद) से ऊपर कर दिया था. इन तीनों भाइयों ने रबाब के अलावा बीन की भी पूरी तालीम हासिल की थी. बीनकारों की लाइन में उस वक़्त निर्मल शाह मौजूद थे जो इन तीनों को अपनी औलाद से कम नहीं समझते थे और उन्होंने बीन की सभी बातें उन्हें बता दी थीं. निर्मल शाह के भतीजे उमराव खां इन लोगों के हमजोली और दिली दोस्त थे. साथ ही गाने बजाने के मामले में इनमें आपस की लाग डाँट भी खूब रहती थी. इन चारों की तालीम एक साथ ही हुई थी. बहुत दिन तक यह एक साथ रहे भी थे. कभी कभी यह रजवाड़ों के दरबार में घूमने निकल जाते और जिसके यहाँ पहुँच जाते वह अपना बड़ा भाग समझता था. पर ज्यादातर यह महाराजा बनारस के दरबार में ही इकट्ठे होते थे. एक दफ़े का ज़िक्र है कि निर्मलशाह

(حبس دم) کی بھی تعلیم دی تھی. کیونکہ گانا اور تنترکاری ان دونوں ہی میں اونچے درجے کا کام بنا یوگ سادھنا (حبس دم) کے نہیں ہوتا. سینی گھرانے کے زیادہ تر نامی گنی یوگ اور پراناyam (حبس دم) میں کمال حاصل کر چکے تھے. اور یہی وجہ ہو کہ لگ بھگ سبھی بڑی عمر والے ہوئے ہیں. ان میں سے کئی کو ہم جانتے ہیں جو ۱۰۰ برس کے اوپر کی عمر پاکر پرلوک سدھارے اور آخری دم تک نروگ رہے.

تان سین کے بعد اس گھرانے میں سب سے بڑے اور نامی گنی یہی تینوں بھائی ظفر خاں، پیار خاں اور باسط خاں ہوئے. ان لوگوں کو خاص تعلیم تنتر (رباب) کی ہی تھی. ہم یہ کہہ چکے ہیں کہ تان سین کے بین کار اور ربابی دونوں گھرانوں نے تنتر کا استھان دھرپد (دھرپد) سے اوپر کا دیا تھا. ان تینوں بھائیوں نے رباب کے علاوہ بین کی بھی پوری تعلیم حاصل کی تھی. بین کاروں کی لائن میں اس وقت نرمل شاہ موجود تھے جو ان تینوں کو اپنی اولاد سے کم نہیں سمجھتے تھے اور انھوں نے بین کی سبھی باتیں انھیں بتا دی تھیں. نرمل شاہ کے بھتیجے امراؤ خاں ان لوگوں کے ہمجولی اور دلی دوست تھے. ساتھ ہی گانے بجانے کے معاملے میں ان میں آپس کی لاگ ڈانٹ بھی خوب رہتی تھی. ان چاروں کی تعلیم ایک ساتھ ہی ہوئی تھی. بہت دن تک یہ ایک ساتھ رہے بھی تھے. کبھی کبھی یہ رجواڑوں کے دربار میں گھومنے نکل جاتے اور جس کے یہاں پہنچ جاتے وہ اپنا بڑا بھاگ سمجھتا تھا. پر زیادہ تر یہ مہاراجا بنارس کے دربار میں اکٹھے ہوتے تھے. ایک دفعہ کا ذکر ہو کہ نرمل شاہ

राजा बनारस के दरबार में बीन के तारों पर पूरे तीन सप्ताह ा काम दिखा रहे थे. नायकी तार पर मध्य सप्तक के स्वर कहते ए किस तरह यह बिजली की चमक की सी फुर्ती से रवाज मंद्र वरों में पहुँच जाते और किस तरह यह फिर मध्य और र में पहुँच जाते थे यह उन तीनों भाईयों की समझ में नहीं आता था. पूछने पर इन्होंने कहा 'देखा और नकल करलो.' लगातार एक महीने तक यह देखा किए, पर बीन का यह गुर न समझ सके. आखिर में निर्मलशाह ने यह जुगत इनको समझा दी.

सुर सिंगार (स्वर शृंगार) नाम के यंत्र की ईजाद जफ़र खां ने ही की. जफ़र खां ने देखते-देखते संगीत की दुनिया में निर्मल शाह के बराबर का दर्जा हासिल कर लिया. एक बार ऐसा संजोग हुआ कि महाराज बनारस के दरबार में दोनों को एक ही जलसे में बजाना पड़ा. मौसम बरसात का था. निर्मल शाह की बीन के बाद जफ़र खां की रबाब न जम सकी. बात यह है कि बरसात में रबाब अच्छी बोलती नहीं, क्यों कि इसमें बीन की तरह लोहे या पीतल के तार नहीं चढ़ते, इसमें रोदा (बटा हुआ रेशम या ताँत) चढ़ता है और इसकी तबली सारंगी की तरह चमड़े की होती है. इस वजह से बरसात में रबाब से सिर्फ ढप ढप की आवाज निकलती है और ज्यादा चढ़ाएँ तो ताँत टूट जाती है. ख़ैर तो जफ़र खां ने उस मौक़े पर तुरन्त बजाना बन्द कर दिया और राजा साहब से एक महीने की मुहलत मांगी. इस बीच यह बनारस शहर के एक मशहूर यंत्र बनाने वाले के यहाँ रहकर एक नए तरह की रबाब बनवाने लगे.

مہاراجا بنارس کے دربار میں بین کے تاروں پر پورے تین سپتاہ کا کام دکھا رہے تھے. نایکی تار پر مدھیہ سپتک کے سور کہتے ہوئے کس طرح یہ بجلی کی چمک کی سی پھرتی سے رواج مندر سوروں میں پہنچ جاتے اور کس طرح یہ پھر مدھیہ اور تار میں پہنچ جاتے تھے یہ اُن تینوں بھائیوں کی سمجھ میں نہیں آتا تھا. پوچھنے پر انھوں نے کہا 'دیکھو اور نقل کرلو'. لگاتار ایک مہینے تک یہ دیکھا کیے، پر بین کا یہ گُر نہ سمجھ سکے. آخر میں نرمل شاہ نے یہ جُگت ان کو سمجھا دی.

سُر سنگار (سور شرنگار) نام کے ینتر کی ایجاد ظفر خاں نے ہی کی. ظفر خاں نے دیکھتے دیکھتے سنگیت کی دُنیا میں نرمل شاہ کے برابر کا درجہ حاصل کرلیا. ایک بار ایسا سنجوگ ہوا کہ مہاراج بنارس کے دربار میں دونوں کو ایک ہی جلسے میں بجانا پڑا. موسم برسات کا تھا. نرمل شاہ کی بین کے بعد ظفر خاں کی رباب نہ جم سکی. بات یہ ہو کہ برسات میں رباب اچھی بولتی نہیں، کیونکہ اس میں بین کی طرح لوہے یا پیتل کے تار نہیں چڑھتے، اس میں رودا (بٹا ہوا ریشم یا تانت) چڑھتا ہو اور اس کی طبلی سارنگی کی طرح چمڑے کی ہوتی ہو. اس وجہ سے برسات میں رباب سے صرف ڈھپ ڈھپ کی آواز نکلتی ہو اور زیادہ چڑھائیں تو تانت ٹوٹ جاتی ہو. خیر تو ظفر خاں نے اُس موقع پر تُرنت بجانا بند کردیا اور راجا صاحب سے ایک مہینے کی مہلت مانگی. اس بیچ یہ بنارس شہر کے ایک مشہور ینتر بنانے والے کے یہاں رہ کر ایک نئے طرح کی رباب بنوانے لگے. اس کی بناوٹ تو رباب ہی جیسی تھی. فرق صرف یہ تھا کہ

रबाब में तोंबा लकड़ी का, तबली चमड़े की और डाँड़ी लकड़ी की होती है जिस पर तांत चढ़ती थी पर इस नए बाजे में तोंबा लौकी का (बीन की तरह) और तबली चमड़े की जगह लकड़ी की और डाँड़ पर पक्के लोहे की चमकीली चादर (प्लेट) चिपकाई हुई थी. तांत की जगह फ़ौलाद और पीतल के तार चढ़े. इसकी बाहरी शकल तो वही रबाब की ही रही, पर इसकी रूह बदल गई. आवज़ इसकी बीन और रबाब दोनों से निराली हुई. गर्मी और जाड़े में रबाब बहुत अच्छा बोलता है, ऐसा मालूम होता है मानों कई परवावजें एक साथ मिल कर बोल रही हैं. पर बीन बहुत धीमी बोलती है. यह नया बाजा दोनों के बीच की जगह लेता है. इसका नाम ज़फ़र ख़ां ने 'सुरसिंगार' रक्खा. इस में बीन और रबाब दोनों की हरकतें अदा की जा सकती हैं. रबाब में कुछ बातें ऐसी थीं जो बीन पर नहीं हो सकतीं, और उसी तरह बीन केकुछ करतब रबाबिये अपने बाजे पर नहीं अदा कर पाते थे.

एक महीने बाद काशीराज की सभा में ज़फ़र ख़ां ने अपना नया यंत्र सुनाने का एलान किया और इसमें आपने निर्मल शाह को ख़ास तौर पर बुलाया. साथ ही देश के बहुत से चोटी के गुनी दूर दूर से बुलाये गए. इन्होंने अभी तक अपना नया बाजा न बाहर के किसी को दिखाया था न सुनाया था. उसी कारीगर ❀ के

❀ उस कारीगर के पोते—लाल जी—जिससे यह हाल हमको ख़ास तौर से मालूम हुआ अभी बनारस में मौजूद हैं. और इनकी दूकान राजा दरवाज़ा नाम के मुहल्ले में है. उनके पिता सितार बीन वग़ैरा की बनावट में मशहूर थे.

رباب میں تونبا لکڑی کا، طبلی چمڑے کی اور ڈانڑی لکڑی کی ہوتی ہے جس پر تانت چڑھتی تھی پر اِس نئے باجے میں تونبا لوکی کا (بین کی طرح) اور طبلی چمڑے کی جگہ لکڑی کی اور ڈانڑ پر پکّے لوہے کی چمکیلی چادر (پلیٹ) چپکائی ہوئی تھی۔ تانت کی جگہ فولاد اور پیتل کے تار چڑھے۔ اِس کی باہری شکل تو وہی رباب کی ہی رہی، پر اِس کی روح بدل گئی۔ آواز اِس کی بین اور رباب دونوں سے نرالی ہوئی۔ گرمی اور جاڑے میں رباب بہت اچھا بولتا ہے، ایسا معلوم ہوتا ہے مانو کئی پکھاوجیں ایک ساتھ مل کر بول رہی ہیں، پر بین بہت دھیمی بولتی ہے۔ یہ نیا باجا دونوں کے بیچ کی جگہ لیتا ہے۔ اِس کا نام ظفر خاں نے "سُرسنگار" رکھا۔ اِس میں بین اور رباب دونوں کی حرکتیں ادا کی جا سکتی ہیں۔ رباب میں کچھ باتیں ایسی تھیں جو بین پر نہیں ہو سکتیں، اور اُسی طرح بین کے کچھ کرتب ربابیے اپنے باجے پر نہیں ادا کر پاتے تھے۔

ایک مہینے بعد کاشی راج کی سبھا میں ظفر خاں نے اپنا نیا یَنتر سُنانے کا اعلان کیا اور اِس میں آپ نے نرمل شاہ کو خاص طور پر بُلایا۔ ساتھ ہی دیش کے بہت سے چوٹی کے گُنی دور دور سے بُلائے گئے۔ اِنھوں نے ابھی تک اپنا نیا باجا نہ باہر کے کسی کو دکھایا تھا نہ سُنایا تھا۔ اُسی کاری گر ❀ سے

❀ اُس کاریگر کے پوتے — لال جی — جس سے یہ حال ہم کو خاص طور سے معلوم ہوا ابھی بنارس میں موجود ہیں، اور ان کی دُکان راجا دروازہ نام کے محلّے میں ہے۔ اُن کے پتا ستار بین وغیرہ کی بناوٹ میں مشہور تھے۔

मकान पर कमरा बन्द कर रियाज़ करते और जो नुक़्स पाते उसे उससे ठीक करवाते रहे.

राजा साहब (स्वर्गीय महाराजा ईश्वरी नारायण सिंह के पिता जो खुद बीन का शौक़ करते थे) और निर्मल शाह के सामने इनका सुरसिंगार बजा और इन्होंने बीन और रबाब दोनों के सब करतब बड़ी खूबी से अदा किये. निर्मल शाह ने वहीं उन्हें गले लगाया और बहुत तारीफ़ की. तब से रबाबियों में बरसात में चार महीने 'सुरसिंगार' ही बजाने का रिवाज हो गया.

हमें दुख है कि इस सुन्दर बाजे का प्रचार ज़्यादा न हो सका' रामपुर के नवाब सआदत अली खां उर्फ़ छम्मन साहब इसके आख़िरी माहिर थे. मौजूदा गुनियों में हमने सिर्फ़ अलाउद्दीन खां साहब मैहर और बङ्गाल के वीरेन्द्रकिशोर राय चौधरी से सुर सिंगार सुना है. पर रबाब के साथ ही इसका भी अंत हुआ. रबाब की ख़ास कमी को पूरी करने के लिये यह पैदा हुआ था और कमी पूरा कर चलता बना. इसकी ईजाद हमें ख़ास तौर से उस अंग्रेज़ी कहावत की याद दिलाती है जिसका मतबल है "ज़रूरत सारे इजादों की माता है".—

ज़फ़र ख़ाँ और प्यारे ख़ां बहुत दिन तक रीवां के महाराजा विश्वनाथ सिंह जी के दरबार में भी रहे थे. हम शुरू में कह चुके हैं कि तानसेन पहले रीवां के महाराजा राजाराम के दरबारी कलावन्त थे और उन्हीं के यहां से अकबर इन्हें अपने दरबार में ले गए थे. तानसेन को औलाद के लिये रीवां दरबार का

مکان پر کمرہ بند کر ریاض کرتے اور جو نقص پاتے اُسے اُس سے ٹھیک کرواتے رہے۔

راجا صاحب (سورگیہ مہاراجا ایشوری نارائن سنگھ کے پتا جو خود بین کا شوق کرتے تھے) اور نرمل شاہ کے سامنے اِن کا سُرسنگار بجا اور اِنھوں نے بین اور رباب دونوں کے سب کرتب بڑی خوبی سے ادا کئے۔ نرمل شاہ نے وہیں اُنھیں گلے لگایا اور بہت تعریف کی۔ تب سے ربابیوں میں برسات میں چار مہینے 'سُرسنگار' ہی بجانے کا رواج ہوگیا

ہمیں دُکھ ہے کہ اِس سُندر باجے کا پرچار زیادہ نہ ہوسکا' رام پور کے نواب سعادت علی خاں عرف چھمن صاحب اِس کے آخری ماہر تھے۔ موجودہ گُنیوں میں ہم نے صرف علاؤالدین خاں صاحب میہر اور بنگال کے ویریندرکشور رائے چودھری سے سُرسنگار سُنا ہے۔ پر رباب کے ساتھ ہی اِس کا بھی انت ہوا۔ رباب کی خاص کمی کو پوری کرنے کے لئے یہ پیدا ہوا تھا اور کمی پوراکر چلتا بنا۔ اِس کی ایجاد ہمیں خاص طور سے اُس انگریزی کہاوت کی یاد دلاتی ہے جس کا مطلب ہے "ضرورت سارے ایجادوں کی ماتا ہے۔"

ظفر خاں اور پیارے خاں بہت دن تک ریواں کے مہاراجا وشوناتھ سنگھ جی کے دربار میں بھی رہے تھے۔ ہم شروع میں کہہ چکے ہیں کہ تان سین پہلے ریواں کے مہاراجا راجا رام کے درباری کلاونت تھے اور اُنھیں کے یہاں سے اکبر اِنھیں اپنے دربار میں لے گئے تھے۔ تان سین کی اولاد کے لئے ریواں دربار کا

खुद एक ऊंचे दर्जे के सङ्गीत के गुनी और हिन्दी के कवि थे. राजाओं में जैसे रीवां के राजाराम और ग्वालियर के राजा मान सङ्गीत के पूरे पंडित और रागी थे वैसे ही इधर हाल में महाराजा विश्वनाथ सिंह जी हुए. वह ज़फ़र ख़ां साहब के शागिर्द थे और उनके रचे हुए बहुत से धुरपद अब भी लोगों को याद हैं. तंत्र से कहीं ज्यादा इनको गाने में दिलचस्पी थी. और इसी लिये इन्हें गले की तालीम ही ज्यादा मिली. रागों के अलाप और अपने रचे हुए अनगिनत पदों को यह राग रागिनियों में शुद्ध स्वरताल में वीणा और मृदंग की संगत से गाते थे. ज़फ़र ख़ाँ साहब यों तो बहुत से दरबारों में आए गए पर उनका ज्यादा रहना रीवां दरबार में ही रहा.

इनके भाई प्यारे ख़ां भी अक्सर रीवां में रहते पर उनका ज्यादा ताल्लुक़ बेतिया के महाराजा नन्दकिशोर जी से हो गया जो इनके शागिर्द हो गए. यह (नन्दकिशोर) भी गाने और कविता में ही ज्यादा दिलचस्पी रखते थे और तंत्र से कम धुरपदिए. तो यह इतने बड़े हुए कि इनका एक मान्य गुरू घराना कायम हो गया. यह जब तक नियम से रोज़ाना कुछ नए धुरपद रचकर तैयार कर और उन्हें गाकर ठीक बैठा न लेते तबतक दातून नहीं करते थे. यह कथक ब्राह्मणों को तालीम भी देते थे और इनसे सीखे हुए मशहूर कथकों में बख़्तावर जी, शिवनारायन जी, गुरु प्रसाद जी वग़ैरा अपने समय के चोटी के धुरपदिए माने जाते थे. कलकत्ते के मशहूर धुरपदिए धमारिए विश्वनाथ राव इन्हीं शिवनारायण मिसिर के ही शागिर्द थे. बंगाल के सबसे बड़े गुनी और संगीत पंडित श्री राधिका गोसाईं गुरुप्रसाद जी के शागिर्द थे.

خود ایک اونچے درجے کے سنگیت کے گنی اور ہندی کے کوی تھے۔ راجاؤں میں جیسے ریواں کے راجا رام اور گوالیر کے راجا مان سنگیت کے پورے پنڈت اور راگی تھے ویسے ہی ادھر حال میں مہاراجا وشوناتھ سنگھ جی ہوئے۔ وہ ظفر خاں صاحب کے شاگرد تھے اور اُن کے رچے ہوئے بہت سے دھرپد اب بھی لوگوں کو یاد ہیں۔ تنتر سے کہیں زیادہ ان کو گانے میں دلچسپی تھی۔ اور اسی لئے انھیں گلے کی تعلیم ہی زیادہ ملی۔ راگوں کے الاپ اور اپنے رچے ہوئے ان گنت پدوں کو یہ راگ راگنیوں میں شدھ سُرتال میں بینا اور مردنگ کی سنگت سے گاتے تھے۔ ظفر خاں صاحب یوں تو بہت سے درباروں میں آئے گئے پر اُن کا زیادہ رہنا ریواں دربار میں ہی رہا۔

ان کے بھائی پیارے خاں بھی اکثر ریواں میں رہتے پر اُن کا زیادہ تعلق بتیا کے مہاراجا نندکشور جی سے ہوگیا جو ان کے شاگرد ہوگئے۔ یہ (نندکشور) بھی گانے اور کویتا میں ہی زیادہ دلچسپی رکھتے تھے اور تنتر سے کم دھرپدیے۔ تو یہ اتنے بڑے ہوئے کہ ان کا ایک مانیہ گرو گھرانا قایم ہوگیا۔ یہ جب تک نیم سے روزانہ کچھ نئے دھرپد رچ کر تیار کر اور انھیں گاکر ٹھیک بیٹھا نہ لیتے تب تک داتون نہیں کرتے تھے۔ یہ کتھک براہمنوں کو تعلیم بھی دیتے تھے اور ان سے سیکھے ہوئے مشہور کتھکوں میں بختاور جی، شیو نارائن جی، گرو پرساد جی وغیرہ اپنے سمے کے چوٹی کے دھرپدیے مانے جاتے تھے۔ کلکتے کے مشہور دھرپدیے دھماریے وشوناتھ راؤ انھیں شیو نارائن مصر کے ہی شاگرد تھے۔ بنگال کے سب سے بڑے گنی اور سنگیت پنڈت شری رادھکا گوسائیں گروپرساد جی کے شاگرد تھے۔

प्यार खां ने दिल खोल कर अलाप और धुरपद की सारी कैफ़ियतें और बारीकियाँ महाराज नन्दकिशोर जी को सिखा दी थीं. इस तरह हम देखते हैं कि हिन्दुस्तान के जितने मशहूर गाने और तंत्र के घराने कायम हुए वह सभी किसी न किसी सेनी घराने के उस्ताद से ही शुरू हुए. अगले लेख में हम कुछ घरानों का और ज़िकर करेंगे.

پیارے خاں نے دل کھول کر الاپ اور دھرپد کی ساری کیفیتیں اور باریکیاں مہاراج نندکشور جی کو سکھادی تھیں. اس طرح ہم دیکھتے ہیں کہ ہندستان کے جتنے مشہور گانے اور تنتر کے گھرانے قایم ہوئے وہ سبھی کسی نہ کسی سینی گھرانے کے استاد سے ہی شروع ہوئے. اگلے لیکھ میں ہم کچھ گھرانوں کا اور ذکر کریں گے.

जलियानवाला बाग़ की कुछ यादगारें

(श्री रामजी दर)

कोतवाल से मुलाक़ात

(७)

मुझे अपना वादा, जो नान बाई से मैंने किया था, पूरा करना था. यह भी डर था कि मेरे अलग होने के बाद कहीं पुलिस वाले उसे तंग न करें. अपने साथियों से सलाह करके मैं सीधा कमिशनर की कचहरी की तरफ़ रवाना हुआ. मैंने सोचा कि सब से बड़े हाकिम से ही मिलना मुनासिब है.

रास्ते में उन्हीं वकील साहब का बंगला पड़ा जिनके यहाँ हमने पहली रात गुजरानवाला पहुँचते ही गुजारी थी. उनसे भी मैंने सलाह की. वह कुछ राय क़ायम न कर सके.

मैं किसी किराये की सवारी पर चलने ही को था कि वकील साहब की निगाह किसी पर पड़ी और उन्होंने मुझसे कहा, 'आइये आपको कोतवाल शहर से मिला दूं.'

यह वही साहब थे जो नानबाई के मकान पर मुझे अपने भयानक दर्शन दे चुके थे.

कोतवाल साहब एक बम्बूकार्ट पर बैठे थे. उन्होंने अपनी दो पहिये की गाड़ी रोकी और बड़े तपाक से अपना ज़बरदस्त हाथ—या पंजा कहिये—बढ़ाया. मैंने भी हाथ मिलाया. जब मेरा नाम बतौर परिचय के वकील साहब ने उनको बताया तो कोतवाल

جلیان والا باغ کی کچھ یادگاریں

(شری رام جی در)

کوتوال سے ملاقات

(۷)

مجھے اپنا وعدہ، جو نان بائی سے میں نے کیا تھا، پورا کرنا تھا. یہ بھی ڈر تھا کہ میرے الگ ہونے کے بعد کہیں پولیس والے اُسے تنگ نہ کریں. اپنے ساتھیوں سے صلاح کرکے میں سیدھا کمشنر کی کچہری کی طرف روانہ ہوا. میں نے سوچا کہ سب سے بڑے حاکم سے ہی ملنا مناسب ہے.

راستے میں اُنھیں وکیل صاحب کا بنگلہ پڑا جن کے یہاں ہم نے پہلی رات گجرانوالا پہنچتے ہی گزاری تھی. اُن سے بھی میں نے صلاح کی. وہ کچھ رائے قایم نہ کر سکے.

میں کسی کرائے کی سواری پر چلنے ہی کو تھا کہ وکیل صاحب کی نگاہ کسی پر پڑی اور اُنھوں نے مجھ سے کہا، 'آیئے آپ کو کوتوال شہر سے ملا دوں'.

یہ وہی صاحب تھے جو نان بائی کے مکان پر مجھے اپنے بھیانک درشن دے چکے تھے.

کوتوال صاحب ایک بمبوکارٹ پر بیٹھے تھے. اُنھوں نے اپنی دو پہیے کی گاڑی روکی اور بڑے تپاک سے اپنا زبردست ہاتھ—یا پنجہ کہیئے—بڑھایا. میں نے بھی ہاتھ ملایا. جب میرا نام بطور پریچے کے وکیل صاحب نے اُن کو بتایا تو کوتوال

साहब जरा चौंक कर बोले, "मैं तो आपको सैयद हुसैन साहब, एडिटर 'इन्डिपन्डन्ट' समझा था."

मैंने जोर से क़हक़हा मारा और कहा, "यह आपके डिपार्टमेन्ट की तारीफ़ है."

कोतवाल साहब ने दो एक बातें मेरी तारीफ़ में कहीं. फिर बोले. "आप लोगों के यहाँ आने से खतरा सिर्फ इतना है कि जाहिल तबके को इशतिआल मिलता है ...."इतने में उनका घोड़ा भड़का और कोतवाल साहब ने लगाम को ताना मैंने चुटकी काटी देखिये घोड़े को भी इशतिआल हो रहा है।"

बात मज़ाक़ में टल गई. हम जुदा हुये.

× × × ×

(८)

कमिशनर से भेंट

कमिशनरी पहुँचा. जैसे हर कचहरी की फ़िज़ा होती है वैसे वहां भी थी. सिर्फ फ़र्क़ इतना था कि हर व्यक्ति मुझे घूर कर दूर से देखता था. वकील अपनी काली गाउनें पहने दूर से इकठ्ठा हो मुझे बड़े गौर से देख रहे थे. चपरासी और मोअक्किल भी कनीखियों से मेरी तरफ़ ताकते थे. मैं सबके लिये या तो कोई ख़ौफ़नाक जानवर था या कोई अनोखा आदमी सब मुझसे कतराए हुए थे.

मैं कमिशनर के कोर्ट के दरवाजे पर पहुंचा और मैंने दरवाजा खटखटा कर अंगरेजों में कहा, "मै अन्दर आ सकता हूँ ?"

[illegible] से किसी अंग्रेज ने जवाब दिया

صاحب ذرا چونک کر بولے، "میں تو آپ کو سید حسین صاحب اڈیٹر 'اِنڈیپنڈنٹ' سمجھا تھا."

میں نے زور سے قہقہہ مارا اور کہا، "یہ آپ کے ڈپارٹمنٹ کی تعریف ہے."

کوتوال صاحب نے دو ایک باتیں میری تعریف میں کہیں. پھر بولے. "آپ لوگوں کے یہاں آنے سے خطرہ صرف اتنا ہے کہ جاہل طبقے کو اشتعال ملتا ہے........" اتنے میں اُن کا گھوڑا بھڑکا اور کوتوال صاحب نے لگام کو تانا میں نے چٹکی کاٹی دیکھئے گھوڑے کو بھی اشتعال ہو رہا ہے."

بات مذاق میں ٹل گئی. ہم جُدا ہوئے.

× × × ×

(۸)

کمشنر سے بھینٹ

کمشنری پہنچا. جیسے ہر کچہری کی فضا ہوتی ہے ویسے وہاں بھی تھی. صرف فرق اتنا تھا کہ ہر وِیکتی مجھے گھور کر دور سے دیکھتا تھا. وکیل اپنی کالی گاؤنیں پہنے دور سے اکٹھا ہو مجھے بڑے غور سے دیکھ رہے تھے. چپراسی اور موکل بھی کنکھیوں سے میری طرف تاکتے تھے. میں سب کے لئے یا تو کوئی خوفناک جانور تھا یا کوئی انوکھا آدمی سب مجھ سے کترائے ہوئے تھے.

میں کمشنر کے کورٹ کے دروازے پر پہنچا اور میں نے دروازہ کھٹکھٹا کر انگریزی میں کہا، "میں اندر آسکتا ہوں؟"

"آجاؤ" اندر سے کسی انگریز نے جواب دیا.

मैं अन्दर घुसकर सीधा इजलास के कटहरे के पास जाकर खड़ा हो गया.

कुरसी पर एक फ़ौजी अफ़सर बैठा था.

मैंने पूछा "आप यहां के कमिशनर हैं ?"

"हाँ" उसने जवाब दिया.

"मुझे आपसे कुछ अर्ज़ करना है. इजाज़त हो तो अर्ज़ करूँ ?" मैंने कहा।

वह बोला "कहो, क्या कहना है ?" तब मैंने मुख़्तसिर में सीधे सादे लफ़ज़ों में कहा "मुझे पंडित मोती लाल नेहरू ने हुक्म दिया है कि मैं कांग्रेस इनक्वारी कमेटी की तरफ़ से मज़लूमों के बयान लूं गवरमेन्ट आफ़ इनडिया यह एलान कर चुकी है कि वह इस काम में कोई बाधा नहीं डालेगी. मगर मैं जहां जाता हूँ लोग यही कहते हैं कि पुलिस उन्हें मना करती है और धमकी देती है कि हमसे किसी क़िस्म का सम्बन्ध न करें. मैं आप से सिर्फ़ यह कहने आया था कि मैं तो अपने लीडर का बताया हुआ काम ज़रूर करुँगा. आप यहां के सब से बड़े अफ़सर हैं इसलिये मैंने मुनासिब समझा कि आपको अपना असली मक़सद इस शहर में आने का और पबलिक का भाव पुलिस के तरफ़ से क्या है. बता दूँ जिसमें आगे कोई ग़लत फ़हमी न होने पाए".

कमिशनर ने भी मुझे मुख़्तसर जवाब दिया, "मैं कोतवाल से खुद बात करके सब ठीक कर दूँगा"

मैंने कमिशनर का शुक्रिया अदा किया और वहां से रवाना हुआ.

(५७५)

میں اندر گھس کر سیدھا اجلاس کے کٹہرے کے پاس جاکر کھڑا ہوگیا.

کرسی پر ایک فوجی افسر بیٹھا تھا.

میں نے پوچھا "آپ یہاں کے کمشنر ہیں؟"

"ہاں" اس نے جواب دیا.

"مجھے آپ سے کچھ عرض کرنا ہے. اجازت ہو تو عرض کردوں؟" میں نے کہا.

وہ بولا "کہو، کیا کہنا ہے؟" تب میں نے مختصر میں سیدھے سادے لفظوں میں کہا "مجھے پنڈت موتی لال نہرو نے حکم دیا ہے کہ میں کانگریس انکوائری کمیٹی کی طرف سے مظلوموں کے بیان لوں گورنمنٹ آف انڈیا یہ اعلان کرچکی ہے کہ وہ اس کام میں کوئی بادھا نہیں ڈالے گی. مگر میں جہاں جاتا ہوں لوگ یہی کہتے ہیں کہ پولیس انھیں منع کرتی ہے اور دھمکی دیتی ہے کہ ہم سے کسی قسم کا سمبندھ نہ کریں. میں آپ سے صرف یہ کہنے آیا تھا کہ میں تو اپنے لیڈر کا بتایا ہوا کام ضرور کروں گا. آپ یہاں کے سب سے بڑے افسر ہیں اس لئے میں نے مناسب سمجھا کہ آپ کو اپنا اصلی مقصد اس شہر میں آنے کا اور پبلک کا بھاؤ پولیس کے طرف سے کیا ہے، بتا دوں جس میں آگے کوئی غلط فہمی نہ ہونے پائے."

کمشنر نے بھی مجھے مختصر جواب دیا. "میں کوتوال سے خود بات کرکے سب ٹھیک کردوں گا."

میں نے کمشنر کا شکریہ ادا کیا اور وہاں سے روانہ ہوا.

(۵۷۵)

नानबाई से जो मैंने वादा किया था वह पूरा हो गया. मेरे दिल को कुछ ढारस मिली.

वहां से लौटते समय भी वहां के लोग मुझे ऐसी निगाहों से देख रहे थे जैसे कोई शेरे बब्बर के पास से बच कर सही सलामत जा रहा हो.

× × × × ×

देवनागरी में सुधार

(डाक्टर गोरख प्रसाद, इलाहाबाद यूनीवर्सिटी)

(१)

इस लेख के लिखने में दो बातों पर ध्यान रक्खा गया है, एक तो यह कि भाषा इतनी सरल हो कि वह हिंदुस्तानी में गिनी जा सके, दूसरे यह कि देव नागरी-सुधार के बारे में मैं अपनी राय बता सकूँ. भाषा को सरल रखने के विचार से बहुत से ठेठ हिंदी के शब्द रक्खे गये हैं जो न संस्कृत के हैं और न अरबी-फ़ारसी के; बहुत बार तो इस विचार से संस्कृत शब्द न आवे, बोलने का ढंग ही बदल दिया गया है.

मैं भी चाहता हूँ कि देवनागरी में—हिंदी के लिखने के आज-कल के ढंग में—सुधार किया जाय और देवनागरी को और भी अच्छा बनाया जाय. मैं सुधार से चिढ़ता नहीं, मैं सुधारों का चाहने वाला हूँ. सुधार कैसा हो इसे दूसरों ने भी बताया है. कुछ सुधार मुझे अच्छे जान पड़ते हैं, कुछ बुरे. श्रीयुत श्री निवास जी ने हाल में ही कुछ सुधार बताये हैं जिसे, न जाने क्यों, काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा ने भी कुछ-कुछ

نان بائی سے جو میں نے وعدہ کیا تھا وہ پورا ہوگیا. میرے دل کو کچھ ڈھارس ملی.

وہاں سے لوٹتے سمے بھی وہاں کے لوگ مجھے ایسی نگاہ سے دیکھ رہے تھے جیسے کوئی شیر ببر کے پاس سے بچ کر صحیح سلامت جا رہا ہو.

× × × × ×

دیوناگری میں سدھار

(ڈاکٹر گورکھ پرساد، الہ آباد یونیورسٹی)

(۱)

اِس لیکھ کے لکھنے میں دو باتوں پر دھیان رکھا گیا ہے، ایک تو یہ کہ بھاشا اتنی سرل ہو کہ وہ ہندستانی میں گنی جا سکے، دوسرے یہ کہ دیوناگری سدھار کے بارے میں میں اپنی رائے بتا سکوں. بھاشا کو سرل رکھنے کے وچار سے ٹھیٹھ ہندی کے شبد رکھے گئے ہیں جو نہ سنسکرت کے ہیں اور نہ عربی فارسی کے؛ بہت بار تو اِس وچار سے سنسکرت شبد نہ آوے، بولنے کا ڈھنگ ہی بدل دیا گیا ہے.

میں بھی چاہتا ہوں کہ دیوناگری میں — ہندی کے لکھنے کے آج کل کے ڈھنگ میں — سدھار کیا جائے اور دیوناگری کو اور بھی اچھا بنایا جائے. میں سدھار سے چڑھتا نہیں، میں سدھاروں کا چاہنے والا ہوں. سدھار کیسا ہو اِسے دوسروں نے بھی بتایا ہے. کچھ سدھار مجھے اچھے جان پڑتے ہیں، کچھ برے. شری یت شری نواس جی نے حال میں ہی کچھ سدھار بتائے ہیں، نہ جانے کیوں، کاشی-ناگری-پرچارنی سبھا نے بھی کچھ کچھ

संद किया है. मुझे तो अचरज होता है कि सभा को श्री निवास जी का सुधार अच्छा लगा है. मेरी राय में तो श्री निवास जी के सुझाव में बहुत सी बुराइयाँ हैं और उनको अपनाने पर देवनागरी अपने आज के रूप से भी बुरी हो जायगी.

सुधार क्यों?

पहले हमें यह समझ लेना चाहिये कि हम क्यों सुधार चाहते हैं और आज कल की देवनागरी में क्या कमी है. मेरी राय में सुधार नीचे लिखी बातों के लिये हो सकते हैं.

(१) सुधारी गई देवनागरी ऐसी हो कि वह बहुत जल्द लिखी जा सके.

(२) वह बहुत जल्द हाथ से सीखी जा सके.

(३) वह बहुत सस्ते में छापी जा सके और उसकी छपाई में इतने कम अक्षर लगें कि बहुत कम पैसे में ही प्रेस वाले तरह-तरह के टाइप रख सकें और इसलिये वे बहुत सुन्दर छपाई कर सकें. अँग्रेज़ी में रोमन, इटैलिक्स और ऐंटीक ये तीन तरह के टाइप बहुत सी पोथियों में लगे रहते हैं, पर आज कल की देवनागरी के एक केस के लिये इतने अक्षर रखने पड़ते हैं कि दो से ज़्यादा तरह के टाइपों का ख़रीदना प्रेस वालों के लिए बहुत भारी हो जाता है.

(४) सुधारी हुई देवनागरी ऐसी हो कि वह लाइनो-टाइप मशीन पर छापी जा सके.

(५) वह टाइप राइटर पर चल सके.

(६) वह टेलिप्रिंटर पर भी चल सके.

پسند کیا ہے. مجھے تو اچرج ہوتا ہے کہ سبھا کو شری نواس جی کا سُدھار اچھا لگا ہے. میری رائے میں تو شری نواس جی کے سُجھاؤ میں بہت سی بُرائیاں ہیں اور اُن کو اپنانے پر دیوناگری اپنے آج کے روپ سے بھی بُری ہو جائے گی.

سُدھار کیوں؟

پہلے ہمیں یہ سمجھ لینا چاہئے کہ ہم کیوں سُدھار چاہتے ہیں اور آجکل کی دیوناگری میں کیا کمی ہے. میری رائے میں سُدھار نیچے لکھی باتوں کے لئے ہو سکتے ہیں.

(۱) سُدھاری گئی دیوناگری ایسی ہو کہ وہ بہت جلد لکھی جا سکے.

(۲) وہ بہت جلد ہاتھ سے سیکھی جا سکے.

(۳) وہ بہت سستے میں چھاپی جا سکے اور اُس کی چھپائی میں اتنے کم اکشر لگیں کہ بہت کم پیسے میں ہی پریس والے طرح طرح کے ٹائپ رکھ سکیں اور اِس لئے وے بہت سُندر چھپائی کر سکیں. انگریزی میں رومن، اٹیلکس اور اینٹک یہ تین طرح کے ٹائپ بہت سی پوتھیوں میں لگے رہتے ہیں، پر آج کل کی دیوناگری کے ایک کیس کے لئے اتنے اکشر رکھنے پڑتے ہیں کہ دو سے زیادہ طرح کے ٹائپوں کا خریدنا پریس والوں کے لئے بہت بھاری ہو جاتا ہے.

(۴) سُدھاری ہوئی دیوناگری ایسی ہو کہ وہ لائنو-ٹائپ مشین پر چھاپی جا سکے.

(۵) وہ ٹائپ رائٹر پر چل سکے.

(۶) وہ ٹیلی پرنٹر پر بھی چل سکے.

अब मैं इन बातों पर एक एक करके विचार करता हूँ. महात्मा घी, और देश की भलाई चाहने वाले कई और लोग भी, चाहते कि हिंदी और देवनागरी ऐसी हो कि उसे बहुत चटपट ही 'सिखिये' सीख सकें. उनका कहना है कि ई. उ. ऊ. ए. ऐ, ओ. ौ, अं और अः की मात्राएँ अक्षर को लिख लेने पर लगायी ाती हैं और यह मात्राएँ अक्षर की दाहिनी ओर या उसके ऊपर या ीचे लगाई जाती हैं, तब फिर क्यों छोटी इ की मात्रा को अक्षर के हले लगाया जाय और उसे अक्षर के लिखने के पहले लिखा जाय.

मैं कहता हूँ कि यह सुधार बहुत आवश्यक नहीं है. इतना याद खना कि इ की मात्रा बायीं ओर लगती है. उ और ऊ की मात्राएँ ीचे लगती हैं, ए और ऐ की मात्राएँ ऊपर और बाक़ी सब मात्राएँ ाहिनी ओर, बहुत कठिन नहीं है. जो कोई क. ख, वग़ैरह ४० अक्षरों के रूपों को सीख सकता है वह इ की मात्रा को बाईं ओर लगाना भी सीख सकता है.

इ की मात्रा को बाईं ओर से हटा कर दूसरी जगह ले जाने र देवनागरी फिर देवनागरी सी नहीं लगती. मेरी राय है कि जहाँ तक हो सके सुधार कम किया जाय. पर लोग अगर पूरा सुधार चाहते हैं तो क्यों न हिन्दी को बदल कर एसपेरैंटो कर दिया जाय और देवनागरी को सुधारा हुआ रोमन, जिसमें २६ अक्षर से भी कम अक्षर रहें ?

केवल सिद्धांत के लिए देवनागरी में इतना सुधार करना कि आज कल के हिन्दी पढ़े लोग हमारी सुधरी हुई हिंदी को बेधड़क न पढ़ पावें मुझे ठीक नहीं जँचता.

اب میں اِن باتوں پر ایک ایک کرکے وچار کرتا ہوں. مہاتما گاندھی، اور دیش کی بھلائی چاہنے والے کئی اور لوگ بھی، چاہتے ہیں کہ ہندی اور دیوناگری ایسی ہو کہ اُسے بہت چٹ پٹ ہی تو سکھیے سیکھ سکیں. اُن کا کہنا ہے کہ ای، اُو، اُو، اے، اَے، اَو، آو، اَن اور آہ کی ماترائیں اکشر کو لکھ لینے پر لگائی جاتی ہیں اور یہ ماترائیں اکشر کی داہنی اور یا اُس کے اوپر یا نیچے لگائی جاتی ہیں، تب پھر کیوں چھوٹی ای کی ماترا کو اکشر کے پہلے لگایا جائے اور اُسے اکشر کے لکھنے کے پہلے لکھا جائے.

میں کہتا ہوں کہ یہ سُدھار بہت آوشیک نہیں ہے. اِتنا یاد رکھنا کہ ای کی ماترا بائیں اَور لگتی ہے، اُو اور اُو کی ماترائیں نیچے لگتی ہیں، اے اور آے کی ماترائیں اوپر اور باقی سب ماترائیں داہنی اَور، بہت کٹھن نہیں ہے. جو کوئی 'کا' 'کھا' وغیرہ ۴۰ اکشروں کے روپوں کو سیکھ سکتا ہے وہ ای کی ماترا کو بائیں اَور لگانا بھی سیکھ سکتا ہے.

ای کی ماترا کو بائیں اَور سے ہٹاکر دوسری جگہ لے جانے پر دیوناگری پھر دیوناگری سی نہیں لگتی. میری رائے ہے کہ جہاں تک ہوسکے سُدھار کم کیا جائے. پر لوگ اگر پورا سُدھار چاہتے ہیں تو کیوں نہ ہندی کو بدل کر اسپیرنٹو کردیا جائے اور دیوناگری کو سُدھارا ہوا رومن، جس میں ۲۶ اکشر سے بھی کم اکشر رہیں ؟

کیول سِدھانت کے لئے دیوناگری میں اِتنا سُدھار کرنا کہ آج کل کے ہندی پڑھے لوگ ہماری سُدھری ہوئی ہندی کو بے دھڑک نہ پڑھ پاویں مجھے ٹھیک نہیں جچتا.

बिना सुधारी हुई देवनागरी भी जल्द लिखी जा सकती है. अब जल्द लिखने पर विचार कीजिये. साधारण देवनागरी में हर अक्षर के माथे पर डाँड़ी लगाई जाती है जिसे शिरोरेखा कहते हैं. लिखने में बहुत से लोग इस शिरोरेखा को छोड़ देते हैं, साथ ही इ, ड, वग़ैरह के फालतू शोशों को छोड़ देते हैं. ऐसा करने से देवनागरी काफ़ी जल्द लिखी जा सकती है. यदि यह शर्त लगायी जाय कि एक का लिखा दूसरे लोग भी धड़ाधड़ पढ़ते चले जायँ, कहीं कोई शक न पड़े और जिस शब्द के पढ़ने में शक पड़े उसे गलत माना जाय तो दावे के साथ कहा जा सकता है रोमन और उर्दू दोनों से हिंदी जल्द लिखी जा सकती है. मैंने इस बात को पूरी जाँच की है. एक ही पैराग्राफ़ को मैंने कई लोगों से शर्त लगा कर लिखाया है कि देखें वे कितना जल्द लिख सकते हैं. पता चला कि एक मिनट में ४० शब्द तक हिंदी ऐसी लिखी जा सकती है जिसके पढ़ने में किसी को अड़चन न हो. इस ४० में का, कि, के, में, से आदि को अलग अलग शब्द माना गया है. इसी से एक मिनट में लिखे जाने वाले शब्दों की गिनती इतनी अधिक है. तो भी, जब उसी हिंदुस्तानी भाषा के पैराग्राफ़ को फ़ारसी अक्षरों में लिखाया गया तब लिखावट इतनी गिच पिच हो गई कि दूसरे लोग उसे ठीक से नहीं पढ़ पाते थे. जब कभी कोई देखना चाहे मैं तेज़ लिख कर दिखा सकता हूँ.

इसलिए मेरी राय में देवनागरी में इसलिये सुधार करने की ज़रूरत नहीं है कि वह धीरे धीरे ही लिखी जा सकती है. यह मैं मानता हूँ कि हिंदी आज कल के शॉर्ट हैंड की बराबरी नहीं

بنا سُدھاری ہوئی دیوناگری بھی جلد لکھی جاسکتی ہے۔ اب جلد لکھنے پر وچار کیجئے۔ سادھارن دیوناگری میں ہر اکشر کے ماتھے پر ڈانڈی لگائی جاتی ہے جسے شِروریکھا کہتے ہیں۔ لکھنے میں بہت سے لوگ اِس شِرو ریکھا کو چھوڑ دیتے ہیں۔ ساتھ ہی ای، ڈا وغیرہ کے فالتو شوشوں کو چھوڑ دیتے ہیں۔ ایسا کرنے سے دیوناگری کافی جلد لکھی جاسکتی ہے۔ یدی یہ شرط لگائی جائے کہ ایک کا لکھا دوسرے لوگ بھی دھڑادھڑ پڑھتے چلے جائیں، کہیں کوئی شک نہ پڑے اور جس شبد کے پڑھنے میں شک پڑے اُسے غلط مانا جائے تو دعوے کے ساتھ کہا جاسکتا ہے رومن اور اُردو دونوں سے ہندی جلد لکھی جاسکتی ہے۔ میں نے اِس بات کی پوری جانچ کی ہے۔ ایک ہی پیراگراف کو میں نے کئی لوگوں سے شرط لگاکر لکھایا ہے کہ دیکھیں وے کتنا جلد لکھ سکتے ہیں۔ پتہ چلا کہ ایک منٹ میں ۴۰ شبد تک ہندی ایسی لکھی جاسکتی ہے جس کے پڑھنے میں کسی کو اڑچن نہ ہو۔ اِس ۴۰ میں کا، کہ، کے، میں، سے آدی کو الگ الگ شبد مانا گیا ہے۔ اِسی سے ایک منٹ میں لکھے جانے والے شبدوں کی گنتی اِتنی ادھک ہے۔ تو بھی، جب اُسی ہندستانی بھاشا کے پیراگراف کو فارسی اکشروں میں لکھایا گیا تب لکھاوٹ اِتنی پچ پچ ہوگئی کہ دوسرے لوگ اُسے ٹھیک سے نہیں پڑھ پاتے تھے۔ جب کبھی کوئی دیکھنا چاہے میں تیز لکھ کر دکھا سکتا ہوں۔

اِس لئے میری رائے میں دیوناگری میں اِس لئے سُدھار کرنے کی ضرورت نہیں ہے کہ وہ دھیرے دھیرے ہی لکھی جاسکتی ہے۔ یہ میں مانتا ہوں کہ ہندی آج کل کے شارٹ ہینڈ کی برابری نہیں

कर सकती; तो भी, जब कोई और भी तेज़ लिखना चाहे तो वह मुड़िया में लिख सकता है. मात्राओं को छोड़ देने से हमें मुड़िया मिलती है. उर्दू में भी बहुत सी मात्राएँ छोड़ दी जाती हैं, मुड़िया में सभी छोड़ दी जाती हैं. इस बात में मुड़िया उर्दू (या फ़ारसी) से भी बढ़ कर है. हाँ, यह ज़रूर ठीक है कि मात्राओं के न रहने से कभी कभी कुछ का कुछ पढ़ा जा सकता है. 'बाबा जी अजमेर गए' को 'बाबा जी आज मर गए' पढ़ने की बात तो सभी ने सुनी होगी. फ़ारसी लिखावट में भी ऐसी भूल हो जाती है.

सस्ती छपाई

सस्ती छपाई बहुत ज़रूरी बात है. देवनागरी की छपाई में यह अड़चन पड़ती है कि उसमें बहुत तरह के अक्षरों के रखने की अवश्यकता पड़ती है. बहुत से पढ़े लिखे लोग छपाई के बारे में कुछ भी नहीं जानते और इसलिये सुधार की बात समझ नहीं पाते, या ग़लत समझ लेते हैं. इसलिये यहाँ सब बातें अच्छी तरह समझाई जा रही हैं.

हिंदी की छपाई के लिये नीचे लिखे अक्षर रहते हैं.

	अक्षर	गिनती
(१)	अ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, क, ख, वग़ैरह क्ष त्र ज्ञ तक	४७
(२)	चूल कटे अक्षर (जिसे प्रेस के लोग कर्न वाले अक्षर कहते हैं).	४७

कर्न कटे रहने से जब चूल में रेफ़ (यानेअक्षर के ऊपर

کر سکتی؛ تو بھی، جب کوئی اور بھی تیز لکھنا چاہے تو وہ مُڑیا میں لکھ سکتا ہے۔ ماتراؤں کو چھوڑ دینے سے ہمیں مُڑیا ملتی ہے۔ اردو میں بھی بہت سی ماترائیں چھوڑ دی جاتی ہیں، مُڑیا میں سبھی چھوڑ دی جاتی ہیں۔ اِس بات میں مُڑیا اُردو (یا فارسی) سے بھی بڑھ کر ہے۔ ہاں، یہ ضرور ٹھیک ہے کہ ماتراؤں کے نہ رہنے سے کبھی کبھی کچھ کا کچھ پڑھا جا سکتا ہے۔ 'بابا جی اجمیر گئے' کو 'بابا جی آج مر گئے' پڑھنے کی بات تو سبھی نے سُنی ہوگی۔ فارسی لکھاوٹ میں بھی ایسی بھول ہو جاتی ہے۔

سستی چھپائی

(۵۹۵)

سستی چھپائی بہت ضروری بات ہے۔ دیوناگری کی چھپائی میں یہ اڑچن پڑتی ہے کہ اُس میں بہت طرح کے اکشروں کے رکھنے کی اوشیکتا پڑتی ہے۔ بہت سے پڑھے لکھے لوگ چھپائی کے بارے میں کچھ بھی نہیں جانتے اور اِس لئے سُدھار کی بات سمجھ نہیں پاتے، یا غلط سمجھ لیتے ہیں۔ اِس لئے یہاں سب باتیں اچھی طرح سمجھائی جا رہی ہیں۔

ہندی کی چھپائی کے لئے نیچے لکھے اکشر رہتے ہیں۔

	اکشر	گنتی
(۱)	ا، ای، اِی، اُو، اُو، اے، آے، ک، کھ وغیرہ क्ष، त्र، ज्ञ تک	۴۷
(۲)	چول کٹے اکشر (جسے پریس کے لوگ کرن والے اکشر کہتے ہیں)۔	۴۷

کرن کٹے رکھنے سے جب چول میں رنیف (یعنے اکشر کے اوپر

लगाने वाला आधार) बैठाया जाता है तब रेफ़ अक्षर के ठीक ऊपर आता है. जैसे कि यदि कर्न न हो तो रेफ़ बग़ल में छपेगा, जैसे क ॅ जो अच्छा नहीं लगता.

(३) आधे अक्षर जैसे क, ख, ग, वग़ैरह. इनमें त्, द्, वग़ैरह और क़, ख़ वग़ैरह भी गिन लिये गये हैं. ३८

(४) उ, ऊ, ए, ऐ की मात्रा लगे अक्षर, याने कु, खु, वग़ैरह ; कू, खू, वग़ैरह ; के, खे, वग़ैरह ; और कै, खै, वग़ैरह. इन अक्षरों के बिना भी काम चल सकता है क्योंकि कर्न वाले अक्षरों में उ, ऊ, वग़ैरह की मात्रा लगा देने से कु, कू, वग़ैरह बन सकते हैं. मोनोटाइप कंपनी की मशीन से ढले टाइपों में यह नहीं रहते. १५७

(५) कर्न कटे कु, खु, वग़ैरह. और कू, खू वग़ैरह, जिसमें इन पर रेफ़ या चंद्रबिंदु लगने पर वह अक्षर के ठीक ऊपर आवे, जैसे कुँ, न कि कु ॅ. इनकी पूरी गिनती क़रीब ८० है, पर बहुत कम प्रेसों में सब अक्षर रहते हैं. रेफ़ वग़ैरह को बग़ल में लगा कर काम चला लिया जाता है. ८०

(६) ऋ की मात्रा लगे अक्षर जैसे कृ वग़ैरह ... १६

(७) ऋ की मात्रा वाले कर्न कटे अक्षर (प्रेसों में सब अक्षर नहीं रहते, पर रहें तो उनकी भी गिनती १६ होगी) १६

(८) मिले हुये अक्षर. इनमें से अब बहुत से धीरे धीरे छूटते चले जा रहे हैं. जैसे पहले च में च जोड़ने के लिए एक टाइप अलग रहता था जिसमें च के नीचे च रहता था. अब सभी लोग च की बग़ल में च रखते हैं, जैसे च्च. मोटे हिसाब

لگانے والا آدھار) بیٹھایا جاتا ہے تب ریف اکشر کے ٹھیک اوپر آتا ہے. جیسے کہ یدی کرن نہ ہو تو ریف بغل میں چھپے گا، جیسے क ॅ جو اچھا نہیں لگتا.

(۳) آدھے اکشر جیسے क، ख، ग وغیرہ. ان میں त द وغیرہ اور क़، ख़ وغیرہ بھی گن لئے گئے ہیں. ... ۳۸

(۴) اُ، اُو، اے، ایے کی ماترا لگے اکشر یعنی کُ، کھُ، وغیرہ؛ کُو، کھُو وغیرہ؛ کے، کھے وغیرہ؛ اور کَے، کھَے وغیرہ. ان اکشروں کے بنا بھی کام چل سکتا ہے کیونکہ کرن والے اکشروں میں اُ، اُو وغیرہ کی ماترا لگا دینے سے کُ، کُو، وغیرہ بن سکتے ہیں. مونوٹائپ کمپنی کی مشین سے ڈھلے ٹائپوں میں یہ نہیں رہتے. ۱۵۷

(۵) کرن کٹے کُ، کھُ، وغیرہ. اور کُو، کھُو وغیرہ، جس میں ان پر ریف یا چندر بندو لگنے پر وہ اکشر کے ٹھیک اوپر آوے، جیسے कुँ نہ کہ कु ॅ. ان کی پوری گنتی قریب ۸۰ ہے، پر بہت کم پریسوں میں سب اکشر رہتے ہیں. ریف وغیرہ کو بغل میں لگا کر کام چلا لیا جاتا ہے. ۸۰

(۶) رِ کی ماترا لگے اکشر جیسے कृ وغیرہ ۱۶

(۷) رِ کی ماترا والے کرن کٹے اکشر (پریسوں میں سب اکشر نہیں رہتے، پر رہیں تو ان کی بھی گنتی ۱۶ ہوگی) ۱۶

(۸) ملے ہوئے اکشر. ان میں سے اب بہت سے دھیرے دھیرے چھوٹتے چلے جا رہے ہیں. جیسے پہلے چ میں چ جوڑنے کے لئے ایک ٹائپ الگ رہتا تھا جس میں چ کے نیچے چ رہتا تھا. اب سبھی لوگ چ کی بغل میں چ رکھتے ہیں، جیسے چچ موٹے حساب

नकी गिनती ७० मानी जा सकती है. ७०

(९) कर्न कटे मिले हुए अक्षर (प्रेसों में सब अक्षर नहीं ते, पर रहना चाहिये) ७०

(१०) बिंदी लगे अक्षर, जैसे क़, ख़, वग़ैरह ७

(११) कर्न कटे बिंदी लगे अक्षर ७

(१२) एकहरी मात्राएँ, और दो दो मात्राएँ एक साथ, जे ु या ॅ, एक साथ ही मात्रा और रेफ़ वग़ैरह ४७

(१३) रुपया, आना, पाई, मन, सेर, छटाक, तथा गणित लिये १२

(१४) गिनती १, २ वग़ैरह १०

(१५) कॉमा, फुलस्टाप, पाई वग़ैरह १५

कुल ६३९

मोनोटाइप कंपनी ने उन अक्षरों को जो कर्न कटे अक्षरों में मात्रा बैठाने से बन सकते हैं छोड़ दिया है और इस प्रकार उनकी मशीन से ढाल कर बेचे जाने वाले टाइप में क़रीब ३५० अक्षर होते हैं.

मैं कहता हूँ इतना भी बहुत है. इतने अक्षरों के रहने के कारण कोई भी प्रेस एक ही नाप के अक्षरों में तीन चार मेल का 'फ़ेस' आसानी से नहीं रख सकता. गणित की छपाई में इससे बड़ी अड़चन पड़ती है. अँग्रेज़ी में मोटे और बिना सेरिफ़ (शोशा) वाले अक्षर से बिंदु, मोटे और सेरिफ़ वाले अक्षरों से वेक्टर (Vectors), तिरछे (इटैलिक्स) अक्षरों से गिनती लिखी जाती है. साधारण अक्षरों में भी कैपिटल्स (CAPITALS), स्माल

سے اِن کی گنتی ۷۰ مانی جاسکتی ہی۔ ۷۰

(۹) کرن کٹے ملے ہوئے اکشر (پریسوں میں سب اکشر نہیں رہتے، پر رہنا چاہئے)۔ ۷۰

(۱۰) بندی لگے اکشر جیسے क़، ख़ وغیرہ ... ۷

(۱۱) کرن کٹے بندی لگے اکشر ۷

(۱۲) اکہری ماترائیں، اور دو دو ماترائیں ایک ساتھ، جیسے ے یا ۆ ایک ساتھ ہی ماترا اور ریف وغیرہ ... ۴۷

(۱۳) روپیہ، آنہ، پائی، من، سیر، چھٹانک، تتھا گنت کے لئے ۱۲

(۱۴) گنتی ۱، ۲ وغیرہ ... ۱۰

(۱۵) کاما، فلسٹاپ، پائی وغیرہ ... ۱۵

کُل ۶۳۹

مونوٹائپ کمپنی نے اُن اکشروں کو جو کرن کٹے اکشروں میں ماترا بیٹھانے سے بن سکتے ہیں چھوڑ دیا ہی اور اِس پرکار اُن کی مشین سے ڈھال کر بیچے جانے والے ٹائپ میں قریب ۳۵۰ اکشر ہوتے ہیں۔

میں کہتا ہوں اِتنا بھی بہت ہی۔ اِتنے اکشروں کے رہنے کے کارن کوئی بھی پریس ایک ہی ناپ کے اکشروں میں تین چار میل کا 'فیس' آسانی سے نہیں رکھ سکتا۔ گنت کی چھپائی میں اِس سے بڑی اڑچن پڑتی ہی۔ انگریزی میں موٹے اور بنا سیریف (شوشا) والے اکشر سے بندو، موٹے اور سیریف والے اکشروں سے ویکٹرس (Vectors)، ترچھے (اٹیلکس) اکشروں سے گنتی لکھی جاتی ہی۔ سادھارن اکشروں میں بھی کیپیٹل (CAPITALS)، اسمال

कैपिटल्स (SMALL CAPITALS) और छोटे (Lower case) अक्षरों से बड़ा सुभीता रहता है. हिंदी में अब तो पतले मोटे और तिरछे ये तीन तरह के अक्षर बनने लगे हैं, पर ऐसा ही कोई प्रेस होगा जिसमें साधरण छपाई के लिये ये तीनों टाइप काफ़ी ज्यादा रहते हों. नेवता वग़ैरह तो छप सकता है क्यों कि उसमें दो चार लाइन ही फ़ैंसी छपाई रहती है, पर पुस्तक छपने भर का टाइप रखना दूसरी बात है. सवा छै सौ अक्षरों में से कोई न कोई बराबर घटा ही रहता है. और यदि तीन तरह का टाइप रक्खा जाय तो और भी असुविधा होती है.

फिर, हेडिंग के लिए अङ्गरेज़ी में केवल २६ अक्षरों से काम चल जाता है, पर हिंदी छापने के लिये, बंबइया स्टाइल में भी, जिसमें ऊपर लगाने वाली

ॅ ॅ ॆ ै वग़ैरह

मात्राएँ अलग से कंपोज़ की जाती हैं, क़रीब २०० अक्षर लगते हैं.

इन सब अड़चनों को दूर करने के लिये सुधार की आवश्यकता है. श्रीनिवास जी ने भी सुधार ख़ास कर इसी मतलब से किया है. पर उन्होंने जरूरत से ज्यादा सुधार कर डाला है. अक्षरों को उन्होंने इतना बदल डाला है कि उनके नये अक्षर और मात्राओं को आजकल की हिंदी जानने वाला पहचान नहीं पाता. इसलिये मैं कहता हूँ कि उनकी सुधारी हुई देवनागरी सच पूछिये तो देवनागरी ही नहीं रह गयी. मेरे मत में तो सुधार इतना कम होना चाहिये कि हो सके तो लोगों को पता ही न

کیپٹلس (SMALL CAPITALS) اور چھوٹے (Lower case) اکشروں سے بڑا سُبیھتا رہتا ہے۔ ہندی میں اب تو پتلے موٹے اور ترچھے یہ تین طرح کے اکشر بننے لگے ہیں، پر ایسا ہی کوئی پریس ہوگا جس میں سادھارن چھپائی کے لئے یہ تینوں ٹائپ کافی زیادہ رہتے ہوں۔ نیوتا وغیرہ تو چھپ سکتا ہے کیونکہ اس میں دو چار لائن ہی فینسی چھپائی رہتی ہے، پر پُستک چھپنے بھر کا ٹائپ رکھنا دوسری بات ہے۔ سوا چھ سو اکشروں میں سے کوئی نہ کوئی برابر گھٹا ہی رہتا ہے، اور یدی تین طرح کا ٹائپ رکھا جائے تو اور بھی اسودھا ہوتی ہے۔

پھر، ہیڈنگ کے لئے انگریزی میں کیول ۲۶ اکشروں سے کام چل جاتا ہے، پر ہندی چھاپنے کے لئے، بمبیا اسٹائل میں بھی، جس میں اوپر لگانے والی (۵۰۵)

(۸ ۸ . ۹ ۹ ۹) وغیرہ

ماترائیں الگ سے کمپوز کی جاتی ہیں، قریب ۲۰۰ اکشر لگتے ہیں۔

ان سب اڑچنوں کو دور کرنے کے لئے سُدھار کی آوشیکتا ہے۔ شری نواس جی نے بھی سُدھار خاص کر اسی مطلب سے کیا ہے۔ پر انھوں نے ضرورت سے زیادہ سُدھار کر ڈالا ہے۔ اکشروں کو انھوں نے اتنا بدل ڈالا ہے کہ ان کے نئے اکشر اور ماتراؤں کو آج کل کی ہندی جاننے والا پہچان نہیں پاتا۔ اس لئے میں کہتا ہوں کہ ان کی سُدھاری ہوئی دیوناگری، سچ پوچھئے تو دیوناگری ہی نہیں رہ گئی۔ میرے مت میں تو سُدھار اتنا کم ہونا چاہئے کہ ہوسکے تو لوگوں کو پتہ ہی نہ

ा कि सुधार किया गया है; या पता चले भी तो वह खटके ीं, कम से कम सुधार ऐसा न हो कि इस सुधारी हुई देवनागरी सब लोग पहली ही बार बेधड़क पढ़ न सकें

मेरी राय तो यह है कि अक्षरों की गिनती कम करने के लिये त्राओं को कुछ दाहिनी ओर हटा कर लगाना चाहिये. इससे र्र कटे अक्षरों की जरूरत न रहेगी और इसलिये तब क़रीब आधे क्षरों से काम चल जायगा. यदि यह बात मान ली जाय तो क्षरों की गिनती यों होगी :

(१) अ इ ई उ ऊ ए ऋ क ख ग वग़ैरह और ड़ ढ़	४३
(२) गिनती १, २, ३, वग़ैरह	१०
(३) मात्राएँ ा, ि,	२३
(४) कॉमा वग़ैरह	१५
(५) आधे अक्षर	२५
(६) मिले हुए अक्षर	३०
कुल	१४६

केवल इतने ही अक्षरों से छपी हिंदी की बानगी साथ में है. इसके पढ़ने में कहीं रुकावट नहीं पड़ती. बहुत बुरी भी नहीं है. जब इस स्टाइल के लिए अक्षर खास करके ढाले जायँगे तब शिरोरेखा मात्राओं के लगने पर टूटने नहीं पायेगी और छपाई इससे भी सुंदर लगेगी.

यह तो मानी हुई बात है कि भारतीय वर्णमाला संसार की सभी वर्णमालाओं में अधिक वैज्ञानिक और सुगम् है. भारतीय

چلے کہ سُدھار کیا گیا ہے؛ یا پتہ چلے بھی تو وہ کھٹکے نہیں، کم سے کم سُدھار ایسا نہ ہو کہ اِس سُدھاری ہوئی دیوناگری کو سب لوگ پہلی ہی بار بے دھڑک پڑھ نہ سکیں۔

میری رائے تو یہ ہے کہ اکشروں کی گنتی کم کرنے کے لئے ماتراؤں کو کچھ داہنی اور ہٹا کر لگانا چاہیے۔ اِس سے کرن کٹے اکشروں کی ضرورت نہ رہے گی اور اِس لئے تب قریب آدھے اکشروں سے کام چل جائے گا۔ یدی یہ بات مان لی جائے تو اکشروں کی گنتی یوں ہوگی:

(۱) ا ای اِ اُو اُ اے رِ ک کھ گ وغیرہ اور ڈ ڈھ	۴۳
(۲) گنتی ۱، ۲، ۳، وغیرہ	۱۰
(۳) ماترائیں ा ि	۲۳
(۴) کاما وغیرہ	۱۵
(۵) آدھے اکشر	۲۵
(۶) ملے ہوئے اکشروں	۳۰
کُل	۱۴۶

کیول اِتنے ہی اکشروں سے چھپی ہندی کی بانگی ساتھ میں ہے۔ اِس کے پڑھنے میں کہیں رُکاوٹ نہیں پڑتی۔ بہت بُری بھی نہیں ہے۔ جب اِس اسٹائل کے لئے اکشر خاص کرکے ڈھالے جائیں گے تب شِرو ریکھا ماتراؤں کے لگنے پر ٹوٹنے نہیں پائے گی اور چھپائی اِس سے بھی سُندر لگے گی۔

یہ تو مانی ہوئی بات ہے کہ بھارتیہ ورن مالا سنسار کی سبھی ورن مالاؤں میں ادھک وگیانک اور سُگم ہے۔ بھارتیہ

लिपियां ब्राह्मी की केवल रूपांतर मात्र हैं.

ऊपर की कंपोजिंग में केवल निम्न अक्षर लगे हैं :—

अ इ ई उ ऊ ए ऋ क ख ग घ च छ ज झ ट ठ ड ढ ण ड़ ढ़ त थ द ध न प फ ब भ म य र ल व श ष स ह क्ष त्र ज्ञ १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ ० ि ी ु ू े ै ो ौ ं : . ? ! ; , ' ([ँ - — ऽ । = ≡ ❀ क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ ट ठ ड ढ ण त थ द ध न ष श्र द्य द्व ँ ॉ क्र ख्र ग्र घ्र ञ्र ट्र ठ्र ड्र द्र भ्र प्र फ्र व्र भ्र म्र व्र स्र ह्र ऋ ट्ट ड्ड त्त द्द द्म द्ध ढ्ढ ङ्क ह्म श्र ॄ ॠ

इस प्रकार मात्राओं को नाम मात्र दाहिनी ओर खिसका देने से ही हमारा काम अच्छी तरह चल जाता है. हम क्यों अक्षरों के आज कल वाले रूप को इतना बिगाड़ें कि बिना क ख ग घ फिर से सीखे हम नई छपाई को पढ़ ही न सकें ?

ऊपर मैंने उन सब अक्षरों को रक्खा है जिनसे आज-कल की छपाई से मिलती-जुलती छपाई की जा सकती है. पर हम यदि कुछ और सुधार मान ले सकें तो अक्षरों की गिनती और कम हो सकती है; जैसे

(१) यदि इ, ई, उ, ऊ, ए, ऋ के बदले हम अि, अी, वगैरह लिखें तो ये ६ अक्षर कम हो जायँगे.

(२) क्र, ख्र, वगैरह के लिये क्‍र, ख्‍र वगैरह रक्खें तो १५ अक्षर और कम हो जायँगे.

(३) यदि हम ऐसे स्थानों पर जहाँ दो मात्राएँ साथ लगती हैं मात्राओं को एक की बगल में एक रखें तो ुं या ुँ वगैरह की जरूरत न पड़ेगी और तब ९ टाइप और कम हो जाएँगे.

لپیاں براہمی کی کیول روپانتر ماترا ہیں.
اوپر کی کمپوزنگ میں کیول نمن اکشر لگے ہیں :—

अ इ ई उ ऊ ए ऋ क ख ग घ च छ ज झ ट ठ ड ढ ण ड़ ढ़ त थ द ध न प फ ब भ म य र ल व श ष स ह क्ष त्र ज्ञ १ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ ० ि ी ु ू े ै ो ौ : . ? ! ; , ' ([ँ - — ऽ । = ≡ ❀ क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ ट ठ ड ढ ण त थ द ध न ष श्र द्य द्व ँ ॉ क्र ख्र ग्र घ्र ञ्र ट्र ठ्र ड्र द्र भ्र प्र फ्र व्र भ्र म्र व्र स्र ह्र ऋ ट्ट ड्ड त्त द्द द्म द्ध ढ्ढ ङ्क ह्म श्र ॄ ॠ

اس پرکار ماتراؤں کو نام ماتر داہنی اور کھسکا دینے سے ہی ہمارا کام اچھی طرح چل جاتا ہے. ہم کیوں اکشروں کے آج کل والے روپ کو اتنا بگاڑیں کہ بنا ک کھ گ گھ پھر سے سیکھے ہم نئی چھپائی کو پڑھ ہی نہ سکیں؟ (۲۲۵)

اوپر میں نے ان سب اکشروں کو رکھا ہے جن سے آج کل کی چھپائی سے ملتی جلتی چھپائی کی جا سکتی ہے. پر ہم یدی کچھ اور سدھار مان لے سکیں تو اکشروں کی گنتی اور کم ہو سکتی ہے؛ جیسے

(۱) یدی इ, ई, उ, ऊ, ए, ऋ کے بدلے ہم अि، अी وغیرہ لکھیں تو یہ ۶ اکشر کم ہو جائیں گے.

(۲) क्र، ख्र وغیرہ کے لئے क्‍र، ख्‍र وغیرہ رکھیں تو ۱۵ اکشر اور کم ہو جائیں گے.

(۳) یدی ہم ایسے استھانوں پر جہاں دو ماترائیں ساتھ ساتھ لگتی ہیں ماتراؤں کو ایک کی بغل میں ایک رکھیں تو ुं یا ुँ وغیرہ کی ضرورت نہ پڑے گی اور تب ۹ ٹائپ اور کم ہو جائیں گے.

इन तीन सुधारों से ३० अक्षर कम हो जायँगे और इस तरह कुल ११६ अक्षरों से काम चल जायगा. परंतु इन अक्षरों छोड़ना मुझे अच्छा नहीं लगता. इनकी गिनती कुल ३० है, इनके न रहने से देवनागरी का रूप बहुत बदल जाता है. इ, ई, रह के बदले अ पर मात्रा लगा कर तो कई लोगों ने पुस्तकें छपाई पर बहुत से लोगों को अपर इ ई वग़ैरह की मात्रा लगाने से वढ़ है.

छोटे अक्षर

डिक्शनरी, रेलवे टाइम टेबुल, वग़ैरह को इस तरह छापने कि वे फूल कर बहुत बड़े न हो जाँय—वे इतने छोटे रहें कि नको बार-बार उठाने में और देखने में सुभीता रहे—छोटे अक्षरों ी जरूरत पड़ती है. हिंदी के बहुत से अक्षरों में इतना घुमाव फेराव है कि अभी तक बहुत छोटे टाइप बन नहीं पाये हैं. सब े छोटी छपाई जो कंपोज़ किये अक्षरों से अभी तक हिंदी में हो सकी है ऐसी है कि एक इंच में ८ लाइनें आ सकती हैं. प्रेस वाले टाईप का नाप प्वाइंट में करते हैं और १ इंच में ७२ प्वाइंट मानते हैं. इसलिये ऊपर के टाइप को वे ९ प्वाइंट का टाइप कहेगें. अङ्गरेज़ी में ५ प्वाइंट तक का टाइप बनता है. पर इतना छोटा टाइप कम चलता है. जहाँ छोटे अक्षरों को जरूरत होती है वहाँ अङ्गरेज़ी में अकसर ६ प्वाइंट वाला टाइप ही लगाया जाता है. ऐसे टाइप से एक इंच में १२ लाइनें छप सकती हैं.

हिंदी में छोटे टाइप के न रहने से बड़ी हान होती

ان تین اکشروں سے ۳۰ اکشر کم ہو جائیں گے اور اس طرح سے کل ۱۱۶ اکشروں سے کام چل جائے گا۔ پرنتو ان اکشروں کا چھوڑنا مجھے اچھا نہیں لگتا۔ ان کی گنتی کل ۳۰ ہے، پر ان کے نہ رہنے سے دیوناگری کا روپ بہت بدل جاتا ہے۔ इ، ई، وغیرہ کے بدلے अ پر ماترا لگا کر تو کئی لوگوں نے پستکیں چھاپی ہیں، پر بہت سے لوگوں کو अ پر इ ई وغیرہ کی ماترا لگانے سے چڑھ ہے۔

چھوٹے اکشر

ڈکشنری، ریلوے ٹائم ٹیبل، وغیرہ کو اس طرح چھاپنے میں کہ وے پھول کر بہت بڑے نہ ہو جائیں — وے اتنے چھوٹے رہیں کہ ان کو بار بار اٹھانے میں اور دیکھنے میں سبھیتا رہے — چھوٹے اکشروں کی ضرورت پڑتی ہے۔ ہندی کے بہت سے اکشروں میں اتنا گھماؤ پھراؤ ہے کہ ابھی تک بہت چھوٹے ٹائپ بن نہیں پائے ہیں۔ سب سے چھوٹی چھپائی جو کمپوز کے لئے اکشروں سے ابھی تک ہندی میں ہو سکی ہے ایسی ہے کہ ایک انچ میں ۸ لائنیں آ سکتی ہیں۔ پریس والے ٹائپ کا ناپ پوائنٹ میں کرتے ہیں اور ۱ انچ میں ۷۲ پوائنٹ مانتے ہیں۔ اس لئے اوپر کے ٹائپ کو وے ۹ پوائنٹ کا ٹائپ کہیں گے۔ انگریزی میں ۵ پوائنٹ تک کا ٹائپ بنتا ہے۔ پر اتنا چھوٹا ٹائپ کم چلتا ہے۔ جہاں چھوٹے اکشروں کی ضرورت ہوتی ہے وہاں انگریزی میں اکثر ۶ پوائنٹ والا ٹائپ ہی لگایا جاتا ہے۔ ایسے ٹائپ سے ایک انچ میں ۱۲ لائنیں چھپ سکتی ہیں۔

ہندی میں چھوٹے ٹائپ کے نہ رہنے سے بڑی ہانی ہوتی

है. काशी-नागरी-प्रचारिणी सभा से छपी हिंदी की सबसे बड़ी डिक्शनरी, जिसका नाम शब्द-सागर है, कई जिल्दों में छपी है और बड़ी महँगी हो गयी है. यदि हिंदी में भी ६ प्वाइंट का टाइप होता तो इस पुस्तक के पन्ने घट कर ४००० के बदले कुल ८०० ही रह जाते और ऐसी पुस्तक लड़ाई के पहले ५) में बिक सकती थी.

एक बहुत साधारण सुधार करने से छोटे अक्षर हिंदी में भी बन सकते हैं. यह वही सुधार है जिसे हाथ से लिखने में बहुत से लोगों ने अपना लिया है. यदि अक्षरों पर से शिरोरेखा हटा दी जाय तो हिंदी में ६ प्वाइंट के टाइप आसानी से बन सकते हैं. शिरोरेखा के रहने से छोटे टाइपों में स्याही भर जाने का डर रहता है. १२ प्वाइंट के आज कल के टाइपों से कंपोज किये मैटर का प्रूफ़ जब आता है तब उसमें व और ब, प और ष, कों और कौं वग़ैरह में कोई अंतर नहीं दिखाई देता. ६ प्वाइंट के शिरोरेखा वाले टाइप की छपाई तो इस बारे में बहुत ही खराब होगी.

(५४)

लाइनो टाइप पर देवनागरी

लाइनो टाइप मशीन से कंपोज करने में अखबार वालों को बहुत सुभीता होता है. इस मशीन से काम बहुत जल्द होता है और टाइप के गिर कर बिखर जाने का, या छपते समय एक-दो टाइप के उखड़ कर निकल जाने का डर नहीं रहता. क्योंकि लाइनो टाइप मशीन से हर बार नया टाइप ढलता है और एक-एक अक्षर अलग ढलने के बदले लाइन-की-लाइन ही ढलती है. मशीन का नाम लाइनो टाइप इसीलिये पड़ा है कि इससे लाइन आफ

ہے. کاشی ناگری پرچارنی سبھا سے چھپی ہندی کی سب سے بڑی ڈکشنری، جس کا نام شبد ساگر ہے، کئی جلدوں میں چھپی ہے اور بڑی مہنگی ہو گئی ہے. یدی ہندی میں بھی ۶ پوائنٹ کا ٹائپ ہوتا تو اس پستک کے پنے گھٹ کر ۴۰۰۰ کے بدلے کل ۸۰۰ ہی رہ جاتے اور ایسی پستک لڑائی کے پہلے ۵ روپیہ میں بک سکتی تھی.

ایک بہت سادھارن سدھار کرنے سے چھوٹے اکشر ہندی میں بھی بن سکتے ہیں. یہ وہی سدھار ہے جسے ہاتھ سے لکھنے میں بہت سے لوگوں نے اپنا لیا ہے. یدی اکشروں پر سے شرو ریکھا ہٹا دی جائے تو ہندی میں ۶ پوائنٹ کے ٹائپ آسانی سے بن سکتے ہیں. شرو ریکھا کے رہنے سے چھوٹے ٹائپوں میں سیاہی بھر جانے کا ڈر رہتا ہے. ۱۲ پوائنٹ کے آج کل کے ٹائپوں سے کمپوز کئے میٹر کا پروف جب آتا ہے تب اس میں व اور ब، प اور ष، कों اور कौं وغیرہ میں کوئی انتر نہیں دکھائی دیتا. ۶ پوائنٹ کے شرو ریکھا والے ٹائپ کی چھپائی تو اس بارے میں بہت ہی خراب ہوگی.

(۵۴)

لائنو ٹائپ پر دیوناگری

لائنو ٹائپ مشین سے کمپوز کرنے میں اخبار والوں کو بہت سبھیتا ہوتا ہے. اس مشین سے کام بہت جلد ہوتا ہے اور ٹائپ کے گر کر بکھر جانے کا، یا چھپتے سمے ایک دو ٹائپ کے اکھڑ کر نکل جانے کا ڈر نہیں رہتا، کیونکہ لائنو ٹائپ مشین سے ہر بار نیا ٹائپ ڈھلتا ہے اور ایک ایک اکشر الگ ڈھلنے کے بدلے لائن کی لائن ہی ڈھلتی ہے. مشین کا نام لائنو ٹائپ اسی لئے پڑا ہے کہ اس سے لائن آف

ाइप अर्थात टाइप की समूची लाइन ढलती है. इस मशीन ां टाइप राइटर के की–बोर्ड की तरह की–बोर्ड होता है, ग्रौर जैसे टाइप किया जाता है उसी तरह इससे कंपोज़ किया ज़ाता है. कुल मिला कर इसमें ९० ही चाभियाँ होती हैं. इसलिये इस मशीन पर साधारण हिंदी के कंपोज़ करने में अड़चन होत है. हरि जी गोविल के सुझाव पर चल कर लाइनो टाइप कंपनी ने देवनागरी की छपाई के लिये भी अक्षरों के साँचे बनाये थे. पर मशीन में केवल ९० अक्षरों के लिये ही जगह रहने से अच्छी छपाई न हो सकती थी और मशीन चल नहीं पायी. अब कंपनी देवनागरी के अक्षर नहीं बनाती. तो भी, यदि कुछ आधे अक्षरों के बनाने के लिए हलंत को काम में लाया जाय और कुछ पूरे अक्षरों को आधे में पाई जोड़ कर बनाया जाय, जैसे ग तो ९० चाभियों से ही चल सकता है. लाइनो टाइप कंपनी उस आदमी को काफ़ी रुपया देगी जो ९० ही चाभियों से ऐसी कंपोज़िंग का ढंग बता सके जिससे हिंदी वाले सुन्दर समझें.

टाइप राइटर पर हिंदी

टाइपराइटर पर हिंदी छप तो जाती ही है, पर हिंदी में, जैसा हम देख चुके हैं, अक्षर बहुत हैं और टाइपराइटर में कुल ८४ अक्षरों के लिए जगह रहती है. इसलिये हिंदी जल्द टाइप नहीं हो पाती. अंग्रेज़ी में एक मिनट में ४० शब्द टाइप करना साधारण बात है, पर टाइप राइटर से हिंदी की इतनी तेज़ छपाई नहीं हो पाती क्योंकि बार बार शिफ़्ट–की को दबाना पड़ता है (शिफ़्ट–की वह चाभी है जिसके दबाने से, अंगरेज़ी छापने वाले टाइप राइटरों

ٹائپ ارتھات ٹائپ کی سموچی لائن ڈھلتی ہے۔ اس مشین میں ٹائپ رائٹر کے کی-بورڈ کی طرح کی-بورڈ ہوتا ہے، اور جیسے ٹائپ کیا جاتا ہے اسی طرح اس سے کمپوز کیا جاتا ہے۔ کل ملاکر اس میں ۹۰ ہی چابھیاں ہوتی ہیں۔ اس لئے اس مشین پر سادھارن ہندی کے کمپوز کرنے میں اڑچن ہوتی ہے۔ ہری جی گوول کے سجھاؤ پر چل کر لائنو ٹائپ کمپنی نے دیوناگری کی چھپائی کے لئے بھی اکشروں کے سانچے بنائے تھے، پر مشین میں کیول ۹۰ اکشروں کے لئے ہی جگہ رہنے سے اچھی چھپائی نہ ہوسکتی تھی اور مشین چل نہیں پائی۔ اب کمپنی دیوناگری کے اکشر نہیں بناتی۔ تو بھی یدی کچھ آدھے اکشروں کے بنانے کے لئے ہلنت کو کام میں لایا جائے اور کچھ پورے اکشروں کو آدھے میں پائی جوڑ کر بنایا جائے، جیسے ग تو ۹۰ چابھیوں سے ہی چل سکتا ہے۔ لائنو ٹائپ کمپنی اس آدمی کو کافی روپیہ دے گی جو ۹۰ ہی چابھیوں سے ایسی کمپوزنگ کا ڈھنگ بتا سکے جسے ہندی والے سندر سمجھیں۔

ٹائپ رائٹر پر ہندی

ٹائپ رائٹر پر ہندی چھپ تو جاتی ہی ہے، پر ہندی میں جیسا ہم دیکھ چکے ہیں، اکشر بہت ہیں اور ٹائپ رائٹر میں کل ۸۴ اکشروں کے لئے جگہ رہتی ہے۔ اس لئے ہندی جلد ٹائپ نہیں ہو پاتی۔ انگریزی میں ایک منٹ میں ۴۰ شبد ٹائپ کرنا سادھارن بات ہے، پر ٹائپ رائٹر سے ہندی کی اتنی تیز چھپائی نہیں ہو پاتی کیونکہ بار بار شفٹ کی کو دبانا پڑتا ہے (شفٹ کی وہ چابھی ہے جس کے دبانے سے، انگریزی چھاپنے والے ٹائپ رائٹروں

में, छोटे के बदले कैपिटल अक्षर छपते हैं; हिंदी में इस चाभी को दबाने पर समूचे के बदले, आधे अक्षर छपते हैं या ऐसा ही कोई दूसरा उपाय रहता है). तेज छाप सकने के लिये यह जरूरी जान पड़ता है कि हलंत से आधा अक्षर बनाने का ढंग अपना लिया जाय. अब भी लोग टाइप राइटर पर द्वारा के बदले द्वारा छापते हैं और लोग इस भोंडेपन को माफ़ ही कर देते हैं.

श्री निवास जी ने जो सुधार बताया है उससे टाइप राइटर का काम कुछ ज्यादा तेज नहीं हो सकेगा. क्योंकि उनकी बात मानी जाय तो एक अक्षर के लिये अक्सर दो चाभियाँ दबानी पड़ेंगी और उसमें समय लगेगा. मेरी राय में तेज टाइप करने के लिये आधे अक्षरों के बनाने में क़रीब सब जगह हलंत को काम में लाना चाहिये. अक्षरों और मात्राओं का रूप बदलने से यह उपाय कहीं ज्यादा अच्छा है.

टेलिप्रिंटर पर देवनागरी

टेलिप्रिंटर वह मशीन है जिससे तार की खबरें आती हैं और बिना किसी के हाथ लगाये आप-से-आप एक-एक अक्षर करके छपती जाती हैं. इसमें कुल मिला कर ६० अक्षर तक रह सकते हैं.

टेलिप्रिंटर की छपाई जनता के लिये नहीं है. इसकी छपाई को कंपोजिटर पढ़ ले. बस इतना ही चाहिये. यदि (१) आधे अक्षर सब हलंत से बनाये जाँय और (२) इ. ई वग़ैरह के बदले अ पर मात्रा लगायी जाय तो टेलिप्रिंटर पर आज कल की देवनागरी अच्छी तरह काम देगी और जनता समझ भी न

میں، چھوٹے کے بدلے کیپٹل اکشر چھپتے ہیں؛ ہندی میں اس چابھی کو دبانے پر سموچے کے بدلے آدھے اکشر چھپتے ہیں یا ایسا ہی کوئی دوسرا اُپائے رہتا ہے). تیز چھاپ سکنے کے لیے یہ ضروری جان پڑتا ہے کہ ہلنت سے آدھا اکشر بنانے کا ڈھنگ اپنا لیا جائے. اب بھی لوگ ٹائپ رائٹر پر دوارا کے بدلے دُووارا چھاپتے ہیں اور لوگ اِس بھونڈے پن کو معاف ہی کر دیتے ہیں.

شری نواس جی نے جو سُدھار بتایا ہے اُس سے ٹائپ رائٹر کا کام کچھ زیادہ تیز نہیں ہو سکے گا. کیونکہ اُن کی بات مانی جائے تو ایک اکشر کے لیے اکثر دو چابھیاں دبانی پڑیں گی. اور اُس میں سمے لگے گا. میری رائے میں تیز ٹائپ کرنے کے لیے آدھے اکشروں کے بنانے میں قریب سب جگہ ہلنت کو کام میں لانا چاہیے. اکشروں اور ماتراؤں کا روپ بدلنے سے یہ اُپائے کہیں زیادہ اچھا ہے.

(۵۹۸)

ٹیلی پرنٹر پر دیوناگری

ٹیلی پرنٹر وہ مشین ہے جس سے تار کی خبریں آتی ہیں اور بنا کسی کے ہاتھ لگائے آپ سے آپ ایک ایک اکشر کر کے چھپتی جاتی ہے. اس میں کُل ملا کر ۶۰ اکشر تک رہ سکتے ہیں.

ٹیلی پرنٹر کی چھپائی جنتا کے لیے نہیں ہے. اِس کی چھپائی کو کمپوزیٹر پڑھ لے، بس اتنا ہی چاہیے. یدی (۱) آدھے اکشر سب ہلنت سے بنائے جائیں اور (۲) इ، ई وغیرہ کے بدلے अ پر ماترا لگائی جائے تو ٹیلی پرنٹر پر آج کل کی دیوناگری اچھی طرح کام دے گی اور جنتا سمجھ بھی نہ

केगी कि कहीं भी कभी अड़चन थी. सच पूछा जाय तो ६० बहुत कम चाभियों के रहने मे भी काम अच्छी तरह चल यगा. पहले बताये गये दो नियमों के ऊपर से बस एक और ह नियम लगाना पड़ेगा कि ख. घ, छ वग़ैरह के बदले क', च'. वग़ैरह लिखा जाय. टेलिप्रिंटर की छपाई को जनता तो ढ़ेगी नहीं. उसे तो कंपोज़िटर ही पढ़ेग और कंपोजिटर एक मेनट में याद कर लेगा कि जहाँ क' हो वहाँ ख कंपोज़ करो. जहाँ क हो वहाँ क कंपोज करो इसलिये टेलिप्रिंटर के लिये वनागरी में किसी-भी सुधार की जरूरत नहीं है.

इस तरह हम देखते हैं कि देवनागरी में इतना ही सुधार से काम चल सकता है कि मात्राओं को थोड़ा-सा दाहिनी ओर हटा देया जाय. इससे प्रेस का काम बहुत सुभीते से हो जाया करेगा. फिर. जब बहुत छोटे अक्षरों की जरूरत हो तब शिरोरेखा हटा दी जाय. बस इन्हीं दो सुधारों से बहुत कुछ काम चल सकता है. कुछ समय बीतने पर. जब अच्छो तरह चालू हो जाँय. नये सुधारों की बात सोचनी चाहिये. सुधारों के बारे में हमें धीरे-धीरे आगे बढ़ना चाहिये.

سکے گی کہ کہیں بھی کبھی اڑچن تھی. سچ پوچھا جائے تو ۶۰ سے بہت کم چابھیوں کے رہنے سے بھی کام اچھی طرح چل جائے گا. پہلے بتائے گئے دو نیموں کے اوپر سے بس ایک اور یہ نیم لگانا پڑے گا کہ ख، घ، छ وغیرہ کے بدلے क'، ग'، च' وغیرہ لکھا جائے. ٹیلی پرنٹر کی چھپائی کو جنتا تو پڑھے گی نہیں. اُسے تو کمپوزیٹر ہی پڑھے گا اور کمپوزیٹر ایک منٹ میں یاد کر لے گا کہ جہاں क' ہو وہاں ख کمپوز کرو، جہاں क ہو وہاں क کمپوز کرو اس لئے ٹیلی پرنٹر کے لئے دیوناگری میں کسی بھی سُدھار کی ضرورت نہیں ہے.

اس طرح ہم دیکھتے ہیں کہ دیوناگری میں اتنے ہی سُدھار سے کام چل سکتا ہے کہ ماتراؤں کو تھوڑا سا داہنی اور ہٹا دیا جائے. اس سے پریس کا کام بہت سبھیتے سے ہو جایا کرے گا. پھر، جب بہت چھوٹے اکشروں کی ضرورت ہو تب شرو ریکھا ہٹا دی جائے. بس انھیں دو سُدھاروں سے بہت کچھ کام چل سکتا ہے. کچھ سمے بیتنے پر، جب اچھی طرح چالو ہو جائیں، نئے سُدھاروں کی بات سوچنی چاہئے. سُدھاروں کے بارے میں ہمیں دھیرے دھیرے آگے بڑھنا چاہئے.

आज की दुनिया

(क़ौमी ख़िदमतगार)

❀ सच्चा जनता-राज ❀

❀ इंडिया और पाकिस्तान ❀

❀ अंगरेज़ी चालें और लूट ❀

❀ रूस और एंग्लो अमरीका ❀

सच्चा जनता-राज

(५२८) दो तरह की हकूमतें आज दुनिता में सबसे ज़्यादा मशहूर हैं. एक फ़ासिस्ट हकूमतें और दूसरी सोशलिस्ट हकूमतें. फ़ासिस्ट हकूमतें वह हैं जिनमें राज की बाग थोड़े से सरमायादारों या उनके एजेन्टों के हाथों में होती है. सोशलिस्ट हकूमतों में राज की बाग आम जनता या जनता के चुने हुए अगुवों के हाथों में होती है. फ़ासिस्ट हकूमत में माल और दौलत पैदा करने के सब साधन जैसे रेल, खानें, जंगल ज़मीन, बड़े बड़े कारख़ाने, वग़ैरा थोड़े से साहूकारों के हाथो में होते हैं सोशलिस्ट राज में इन सब चीज़ों पर आम जनता की मिलकीयत होती है. हमारे देश में जो इस वक़्त हकूमत चल रही है वह साफ़ फ़ासिस्ट रंग ढंग की है. सोशलिस्ट हकूमत या सच्चा जनता का राज अभी हमसे कोसों दूर है. अभी तो यहाँ देश के करोड़ों बालिग़ मर्द औरतों को वोट देने का हक़ तक नहीं मिला है. न हमारे राज की नींव जनता की चुनी हुई क़ौमी पंचायतों पर क़ायम है. हमारी तालीम का तरीक़ा

آج کی دُنیا

(قومی خدمت گار)

❀ سچا جنتا راج ❀

❀ انڈیا اور پاکستان ❀

❀ انگریزی چالیں اور لوٹ ❀

❀ روس اور اینگلو امریکا ❀

سچا جنتا راج

دو طرح کی حکومتیں آج دُنیا میں سب سے زیادہ مشہور ہیں۔ ایک فاسسٹ حکومتیں اور دوسری سوشلسٹ حکومتیں۔ فاسسٹ حکومتیں وہ ہیں جن میں راج کی باگ تھوڑے سے سرمایہ داروں یا اُن کے ایجنٹوں کے ہاتھوں میں ہوتی ہے۔ سوشلسٹ حکومتوں میں راج کی باگ عام جنتا یا جنتا کے چنے ہوئے اگووں کے ہاتھوں میں ہوتی ہے۔ فاسسٹ حکومت میں مال اور دولت پیدا کرنے کے سب سادھن جیسے ریل، کھانیں، زمین بڑے بڑے کارخانے وغیرہ تھوڑے سے ساہوکاروں کے ہاتھوں میں ہوتے ہیں سوشلسٹ راج میں اِن سب چیزوں پر عام جنتا کی ملکیت ہوتی ہے۔ ہمارے دیش میں جو اِس وقت حکومت چل رہی ہے وہ صاف فاسسٹ رنگ ڈھنگ کی ہے سوشلسٹ حکومت یا سچا جنتا کا راج ابھی ہم سے کوسوں دُور ہے۔ ابھی تو یہاں دیش کے کروڑوں بالغ مرد عورتوں کو ووٹ دینے کا حق تک نہیں ملا ہے۔ نہ ہمارے راج کی نیو جنتا کی چُنی ہوئی قومی پنچایتوں پر قائم ہے۔ ہمارا تعلیم کا طریقہ (۵۲۸)

हुत ही पुराना, देश में फूट डालने वाला और जनता की सच्ची रक़्क़ी में रुकावट है. हमें इन सब को बदलना होगा. हमें तेज़ी से आगे बढ़ती हुई दुनिया के साथ चलना है तो राज का, तालीम का, पैदावार का, ज़मीन के बटवारे का. सब का नया ढंग और नया डौल डालना होगा. यह सब बिना एक नए इनक़लाब के नहीं हो सकता. इस आने वाले इनक़लाब की बात तो १९ अक्तूबर को पंडित जवाहरलाल जी नेहरू ने भी यू० पी० पीस कान्फ़रेंस के सामने कही थी. पर हमारा ख़याल है कि यह इनक़लाब अब जवाहर लाल जी और उनके सरकारी साथियों के बूते का खेल नहीं है. इसके लिये दुनिया के और देशों की तरह समाज के धुर नीचे से एक नए उभार और नए तूफ़ान की ज़रूरत होगी.

इंडिया और पाकिस्तान

बहुत से लोगों को डर है कि इन्डिया और पाकिस्तान में लड़ाई न छिड़ जावे. लड़ाई तो हो रही है. हो सकता है कि यह लड़ाई और ज़्यादा ख़ूनी हो जावे. पर इसमें न दोनों में से किसी का कभी भला होगा और न किसी की जीत. जब तक यह दो दो हैं तब तक झगड़ा रहेगा ही. कभी माली झगड़ा, कभी तिजारती. कभी एक दूसरे पर उलाहना, कभी दोनों तरफ़ से यू० एन० ओ० और दूसरी बाहर की क़ौमों से मदद की अपील, आज कश्मीर में और कल हैदराबाद में.

इस खेंचातानी में चार पार्टियाँ हैं. अंगरेज़, देसी रियासतें, काँगरेस और लीग. हर एक दूसरे को झगड़े की जड़ बताता है. अँगरेज़ कहते हैं काँगरेस और लीग लड़ रही हैं. काँगरेस कहती

بہت ہی پُرانا، دیش میں پھوٹ ڈالنے والا اور جنتا کی سچّی ترقّی میں رُکاوٹ ہے. ہمیں اِس سب کو بدلنا ہوگا. ہمیں تیزی سے آگے بڑھتی ہوئی دُنیا کے ساتھ چلنا ہے تو راج کا، تعلیم کا، پیداوار کا، زمین کے بٹوارے کا، سب کا نیا ڈھنگ اور نیا ڈول ڈالنا ہوگا. یہ سب بنا ایک نئے انقلاب کے نہیں ہوسکتا. اِس آنے والے انقلاب کی بات تو ۱۹ اکتوبر کو پنڈت جواہر لال جی نہرو نے بھی یو. پی. پیس کانفرنس کے سامنے کہی تھی. پر ہمارا خیال ہے کہ یہ انقلاب اب جواہر لال جی اور اُن کے سرکاری ساتھیوں کے بُوتے کا کھیل نہیں ہے. اِس کے لیے دُنیا کے اور دیشوں کی طرح سماج کے دُھر نیچے سے ایک نئے اُبھار اور نئے طوفان کی ضرورت ہوگی. (۵۸۸)

انڈیا اور پاکستان

بہت سے لوگوں کو ڈر ہے کہ انڈیا اور پاکستان میں لڑائی نہ چھڑ جاوے. لڑائی تو ہو رہی ہے. ہوسکتا ہے کہ یہ لڑائی اور زیادہ خونی ہو جاوے. پر اِس میں نہ دونوں میں سے کسی کا کبھی بھلا ہوگا اور نہ کسی کی جیت. جب تک یہ دو دو ہیں تب تک جھگڑا رہے گا ہی. کبھی مالی جھگڑا، کبھی تجارتی، کبھی ایک دوسرے پر اُلاہنا، کبھی دونوں طرف سے یو. این. او. اور دوسری باہر کی قوموں سے مدد کی اپیل، آج کشمیر میں اور کل حیدرآباد میں.

اِس کھینچا تانی میں چار پارٹیاں ہیں. انگریز، دیسی ریاستیں، کانگریس اور لیگ. ہر ایک دوسرے کو جھگڑے کی جڑ بتاتی ہے. انگریز کہتے ہیں کانگریس اور لیگ لڑ رہی ہیں. کانگریس کہتی

है लीग और लीग की पिट्ठू रियासतें झगड़े की जड़ हैं. लीग कहती है काँगरेस और काँगरेस की पिट्ठू रियासतें झगड़े का बुनियाद है. रियासतें कहती हैं काँगरेस और लीग दोनों ज़बरदस्ती हमें अपनी अपनी तरफ़ खेंच कर बरबाद कर रही हैं. हमें मालूम होता है यह तीनों ही अँगरेज़ी हकूमत की शतरंज के मोहरे बनी हुई हैं.

जो लोग चिल्लाते रहते हैं कि हम अब आज़ाद हो गए वह बहुत ही भोले हैं. पाकिस्तान और इन्डिया दोनों अभी तक ब्रिटिश राज के दो हिस्से हैं. असली ताक़त दोनों में से किसी के हाथ में नहीं है. दोनों इंगलैन्ड के राजा की रिआया हैं और राज भक्ति की क़समें खाते हैं. यू० एन० ओ० के मेम्बर बन जाने से किसी को धोके में नहीं आना चाहिये. यू० एन० ओ० का एक क़ायदा यह है कि जो राज पूरी तरह आज़ाद नहीं है वह भी अपने अधिराज मुल्क की रज़ामन्दी से, यानी इन्डिया और पाकिस्तान इंगलिस्तान की सरकार की रज़ामन्दी से यू. एन. ओ. के मेम्बर हो सकते हैं और दूसरे मुल्कों में एलची भेज सकते हैं.

हुआ यह है कि अँगरेज़ों ने अपना हिन्दुस्तान की सल्तनत के दो टुकड़े कर दिये. एक में हिन्दुओं का ज़ोर ज़्यादा और दूसरे में मुसलमानों का. इन दोनों में राजकाजी, माली और तिजारती लागडाट ख़ूब बढ़ता रहेगा. पहले तो सिर्फ़ रामलीला बक़रीद और मोहर्रम के ही झगड़े होते थे अब हिन्दू राज और मुसलिम राज की लड़ाइयें चलेंगी जिन्हें रियासतों ने, जिनमें कहीं हिन्दू ज़्यादा कहीं मुसलमान, कहीं हिन्दू राजा कहीं मुसलमान, और भी पेचीदा

ہے لیگ اور لیگ کی پٹھو ریاستیں جھگڑے کی جڑ ہیں۔ لیگ کہتی ہے کانگریس اور کانگریس کی پٹھو ریاستیں جھگڑے کی بنیاد ہیں۔ ریاستیں کہتی ہیں کانگریس اور لیگ دونوں زبردستی ہمیں اپنی اپنی طرف کھینچ کر برباد کر رہی ہیں۔ ہمیں معلوم ہوتا ہے یہ تینوں ہی انگریزی حکومت کی شطرنج کے مہرے بنی ہوئی ہیں۔

جو لوگ چلّاتے رہتے ہیں کہ ہم اب آزاد ہوگئے وہ بہت ہی بھولے ہیں۔ پاکستان اور انڈیا دونوں ابھی تک برٹش راج کے دو حصے ہیں۔ اصلی طاقت دونوں میں سے کسی کے ہاتھ میں نہیں ہے دونوں انگلینڈ کے راجا کی رعایا ہیں اور راج بھگتی کی قسمیں کھاتے ہیں۔ یو۔ این۔ او۔ کے ممبر بن جانے سے کسی کو دھوکے میں نہیں آنا چاہئے۔ یو۔ این۔ او۔ کا ایک قاعدہ یہ ہے کہ جو راج پوری طرح آزاد نہیں ہے وہ بھی اپنے ادھراج ملک کی رضامندی سے یعنی انڈیا اور پاکستان انگلستان کی سرکار کی رضامندی سے یو۔ این۔ او۔ کے ممبر ہوسکتے ہیں اور دوسرے ملکوں میں ایلچی بھیج سکتے ہیں۔

ہوا یہ ہے کہ انگریزوں نے اپنی ہندوستان کی سلطنت کے دو ٹکڑے کر دئے۔ ایک میں ہندوؤں کا زور زیادہ اور دوسرے میں مسلمانوں کا۔ ان دونوں میں راج کاجی، مالی اور تجارتی لاگ ڈاٹ خوب بڑھتی رہے گی۔ پہلے تو صرف رام لیلا بقرعید محرم کے ہی جھگڑے ہوتے تھے اب ہندو راج اور مسلم راج کی لڑائیاں چلیں گی جنھیں ریاستوں نے جن میں کہیں ہندو زیادہ کہیں مسلمان، کہیں ہندو راجا کہیں مسلمان، اور بھی پیچیدہ

कर दिया. इन रियासतों की वजह से इन्डिया और पाकिस्तान की लड़ाई और भी टिकाऊ रहेगी और तारीफ़ यह कि किसी रियासत पर भी इन्डिया या पाकिस्तान का न क़ब्ज़ा होगा, न पूरा ज़ोर चलेगा.

अंगरेज़ी चालें और लूट—

हिन्दुस्तान पर इंगलिस्तान की हकूमत के ख़ास पहलू छै थे—(१) नौकरियों में और फ़ौज में अंगरेज़. (२) हिन्दुस्तान और इंगलिस्तान की तिजारत में अंगरेज़ों का हिस्सा (३) हिन्दुस्तान में लगी हुई अंगरेज़ों की पूंजी (४) हिन्दुस्तान का यह फ़र्ज़ कि लड़ाई छिड़ने पर इंगलिस्तान को आदमियों, सामान और रुपए से मदद दे. (५) वह माली टकसाली ढाँचा जिसे स्टरलिंग ब्लाक कहते हैं (६) हिन्दुस्तान में और देसी रियासतों में हिन्दुस्तानी व्यापार के साथ मिल कर और उसकी आड़ में ब्रिटिश व्यापार. इन सब बातों में अंगरेज़ों का पंजा इस मुल्क पर ढीला नहीं हुआ बल्कि और ज़्यादा कस गया है. सिर्फ़ नौकरियों में कुछ अंगरेज़ घटे हैं. पहले दस फ़ीसदी थे अब छै और सात फ़ीसदी के बीच में हैं. उसी के मुक़ाबले में इंगलिस्तान ने अपना माली और तिजारती पंजा और ज़्यादा मज़बूती के साथ कस लिया. हमारे कुल व्यापार में आज नव्वे फ़ीसदी से ऊपर हिस्सा इंगलिस्तान का है.

इंगलिस्तान के 'जान बुल' नाम के अख़बार में हैरी हाप किन्स लिखता है कि—"डंडी के वह स्काट्स मैन जिन्होंने पूर्वी बंगाल

کردیا. ان ریاستوں کی وجہ سے انڈیا اور پاکستان کی لڑائی اور بھی ٹکاؤ رہے گی اور تعریف یہ کہ کسی ریاست پر بھی انڈیا یا پاکستان کا نہ قبضہ ہوگا، نہ پورا زور چلے گا.

انگریزی چالیں اور لوٹ—

ہندستان پر انگلستان کی حکومت کے خاص پہلو چھے تھے— (۱) نوکریوں میں اور فوج میں انگریز. (۲) ہندستان اور انگلستان کی تجارت میں انگریزوں کا حصّہ (۳) ہندستان میں لگی ہوئی انگریزوں کی پونجی (۴) ہندستان کا یہ فرض کہ لڑائی چھڑنے پر انگلستان کو آدمیوں، سامان اور روپئے سے مدد دے. (۵) وہ مالی ٹکسالی ڈھانچا جسے اسٹرلنگ بلاک کہتے ہیں (۶) ہندستان میں اور دیسی ریاستوں میں ہندستانی ویاپار کے ساتھ مل کر اور اُس کی آڑ میں برٹش ویاپار. ان سب باتوں میں انگریزوں کا پنجہ اس ملک پر ڈھیلا نہیں ہوا بلکہ اور زیادہ کس گیا ہے. صرف نوکریوں میں کچھ انگریز گھٹے ہیں. پہلے دس فی صدی تھے اب چھ اور سات فی صدی کے بیچ میں ہیں. اُسی کے مقابلے میں انگلستان نے اپنا مالی اور تجارتی پنجہ اور زیادہ مضبوطی کے ساتھ کس لیا. ہمارے کُل ویاپار میں آج نوّے فی صدی سے اوپر حصّہ انگلستان کا ہے.

انگلستان کے 'جان بُل' نام کے اخبار میں ہیری ہاپ کنس لکھتا ہے کہ—"ڈنڈی کے وہ اسکاٹس مین جنھوں نے پوربی بنگال میں سن کے کاروبار کو اتنا بڑھایا، لنکاشائر اور [illegible]

शायर के वह लोग जिन्होंने बम्बई, अहमदाबाद और कानपुर का मिलें खड़ी कीं, साउथ वेल्स के वह लोग जिन्होंने टाटा के लोहे के कारखाने चलवाए, वह अंगरेज़ जिन्होंने आसाम को दुनिया के लिये चाय का बाग़ीचा बनाया—सब न सिर्फ़ अपनी जगह बाक़ी ही हैं बल्कि इंडिया और पाकिस्तान दोनों पर अपना क़ब्ज़ा ज़्यादा मज़बूती से जमाए हुए हैं. कुछ छोटे छोटे व्यापारी साहबों ने अपना कारबार बेच दिया है. वह इसलिये कि जिन हिन्दुस्तानी साहूकारों ने लड़ाई में ख़ूब रुपया कमाया था उन्होंने अंधे हो कर इन्हें ख़ूब मुँह माँगे दाम दिये. हिन्दुस्तान के पहाड़ी शहरों में एक अङ्गरेज़ के तीन छोटे छोटे होटल थे. उन्हें बेच कर उसने बोर्नमाउथ में एक बहुत बड़ा रेस्टोराँ ख़रीद लिया है ....एक सन के कारख़ाने के अङ्गरेज़ मैनेजर साहब ख़ूब रुपया कमा कर अपने घर डंडा लौट गए. एक एकाउन्टेन्ट कलकत्ते से बरमिंघम चला गया. यह छोटी छोटी चीज़ें हैं. इनका मतलब अङ्गरेज़ों का चला आना नहीं है. हिन्दुस्तान हमारे लिये अब भी वैसा ही भरा पूरा और मालामाल भंडार है जैसा पहले था. बड़ा व्यापारी साहब वहाँ से नहीं सरका, न सरकेगा. कहीं कहीं वह अपना काम और बढ़ा रहा है. बम्बई में जितने अङ्गरेज़ अब हैं उतने पहले कभी नहीं थे."

वही अंगरेज़ लिखता है कि—"एक अंगरेज़ पादरी कहता था कि हम हिन्दुस्तान में रहेंगे जब तक कि हमें कोई धक्के देकर न निकाल दे........ ......जब से कैबिनेट मिशन आया है तब से लोगों की दोस्ती हम से बढ़ गई है. हिन्दुस्तानियों के ख़याल में

شائر کے وہ لوگ جنھوں نے بمبئی، احمد آباد اور کان پور کی ملیں کھڑی کیں، ساؤتھ ویلس کے وہ لوگ جنھوں نے ٹاٹا کے لوہے کے کارخانے چلوائے، وہ انگریز جنھوں نے آسام کو دنیا کے لئے چائے کا باغیچہ بنایا — سب نہ صرف اپنی جگہ باقی ہی ہیں بلکہ انڈیا اور پاکستان دونوں پر اپنا قبضہ زیادہ مضبوطی سے جمائے ہوئے ہیں۔ کچھ چھوٹے چھوٹے بیوپاری صاحبوں نے اپنا کاروبار بیچ دیا ہے وہ اس لئے کہ جن ہندستانی ساہوکاروں نے لڑائی میں خوب روپیہ کمایا تھا انھوں نے اندھے ہو کر انھیں خوب منہ مانگے دام دئے۔ ہندستان کے پہاڑی شہروں میں ایک انگریز کے تین چھوٹے چھوٹے ہوٹل تھے۔ انھیں بیچ کر اس نے بورن ماؤتھ میں ایک بہت بڑا ریستوراں خرید لیا ہے......... ایک سن کے کارخانے کے انگریز منیجر صاحب خوب روپیہ کما کر اپنے گھر ڈنڈی لوٹ گئے۔ ایک اکاؤنٹنٹ کلکتے سے برمنگھم چلا گیا۔ یہ چھوٹی چھوٹی چیزیں ہیں۔ ان کا مطلب انگریزوں کا چلا آنا نہیں ہے۔ ہندستان ہمارے لئے اب بھی ویسا ہی بھرا پورا اور مالا مال بھنڈار ہے جیسا پہلے تھا بڑا بیوپاری صاحب وہاں سے نہیں سرکا نہ سرکے گا۔ کہیں کہیں وہ اپنا کام اور بڑھا رہا ہے۔ بمبئی میں جتنے انگریز اب ہیں اتنے پہلے کبھی نہیں تھے۔"

وہی انگریز لکھتا ہے کہ — "ایک انگریز پادری کہتا تھا کہ ہم ہندستان میں رہیں گے جب تک کہ ہمیں کوئی دھکے دے کر نہ نکال دے......... جب سے کیبنٹ مشن آیا ہے تب سے لوگوں کی دوستی ہم سے بڑھ گئی ہے۔ ہندستانیوں کے خیال میں

ब हमारा अँगरेजी राज से गठबंधन नहीं रहा. इससे हमारी द्र बढ़ी है और हमें फ़ायदा हुआ है."

सचमुच हम हिन्दुस्तानी भी कितने भोले हैं. अगर कुछ अंगरेज़ सिर्फ़ सोलह बरस यहां नौकरी करके एक एक आदमी क एक लाख बारह हज़ार रुपए बाक़ी नौकरी का मुआवज़ा कर चले गए, अगर कुछ अंगरेज़ फ़ौजी बीस साल नौकरी करके मारी जेब से मोटी मोटी पेन्शनें और उसके अलावा मोआवज़ा कर चले गए तो हम समझते हैं कि हम आज़ाद होगए!

श्री अमर लाहिरी ने बम्बई के एक अख़बार में हाल में लेखा था —"दुनिया के उन बड़े बड़े सरमाएदारों की निगाह, जो दूसरे मुल्कों में तिजारत करते और वहाँ से रुपया खेंचते हैं, इस वक़्त हिन्दुस्तान पर लगी हुई है, क्योंकि चीन की तरह हिन्दुस्तान में भी उन्हें ज़ोरों से जम कर माली लूट की डौल डालने का बहुत अच्छा मौक़ा दिखाई दे रहा है. आज चीन की माली ज़िन्दगी अमरीका के बड़े बड़े साहूकारों के पंजों में कसी हुई है...............हिन्दुस्तान में आज कल जो कल कारख़ाने बढ़ रहे हैं उनसे पता चलता है कि वहाँ सरमाएदारों की एक नई जमात खड़ी हो रही है. यही लोग हिन्दुस्तान के बड़े ब्यापारी हैं. वह बहुत ही ख़ुदग़रज़ हैं. उनका ध्यान सिर्फ़ अपने निजी नफ़े की तरफ़ लगा रहता है. इन्होंने अपने ब्यापारी जत्थे बना लिये हैं. हिन्दुस्तान के राज काजी क़ौमी आन्दोलन पर भी इनका बहुत बड़ा असर है. जैसे चीन के बड़े बड़े सरमाएदार सेन्ट्रल चीनी गवरमेन्ट की रीढ़ की हड्डी बने हुए हैं वैसे ही हिन्दुस्तान के यह सरमाएदार

اب ہمارا انگریزی راج سے گٹھ بندھن نہیں رہا. اس سے ہماری قدر بڑھی ہے اور ہمیں فائدہ ہوا ہے.

سچ مچ ہم ہندستانی بھی کتنے بھولے ہیں. اگر کچھ انگریز صرف سولہ برس یہاں نوکری کرکے ایک ایک آدمی ایک ایک لاکھ بارہ ہزار روپئے باقی نوکری کا معاوضہ لے کر چلے گئے اگر کچھ انگریز فوجی بیس سال نوکری کرکے ہماری جیب سے موٹی موٹی پنشنیں اور اس کے علاوہ معاوضہ لے کر چلے گئے تو ہم سمجھتے ہیں کہ ہم آزاد ہوگئے!

شری امر لاہری نے بمبئی کے ایک اخبار میں حال میں لکھا تھا — "دنیا کے ان بڑے بڑے سرمایہ داروں کی نگاہ جو دوسرے ملکوں میں تجارت کرتے اور وہاں سے روپیہ کھینچتے ہیں، اس وقت ہندستان پر لگی ہوئی ہے کیونکہ چین کی طرح ہندستان میں بھی انھیں زوروں سے جم کر مالی لوٹ کی ڈول ڈالنے کا بہت اچھا موقع دکھائی دے رہا ہے. آج چین کی مالی زندگی امریکا کے بڑے بڑے ساہوکاروں کے پنجوں میں کسی ہوئی ہے........ ہندستان میں آج کل جو کل کارخانے بڑھ رہے ہیں ان سے پتہ چلتا ہے کہ وہاں سرمایہ داروں کی ایک نئی جماعت کھڑی ہو رہی ہے. یہی لوگ ہندستان کے بڑے بیوپاری ہیں. وہ بہت ہی خود غرض ہیں. ان کا دھیان صرف اپنے نجی نفع کی طرف لگا رہتا ہے. انھوں نے اپنے بیوپاری جتھے بنا لئے ہیں. ہندستان کے راج کاجی قومی اندولن پر بھی ان کا بہت بڑا اثر ہے. جیسے چین کے بڑے بڑے سرمایہ دار سنٹرل چینی گورنمنٹ کی ریڑھ کی ہڈی بنے ہوئے ہیں ویسے ہی ہندستان کے سرمایہ دار

इन्डियन गवरमेन्ट पर असर रखते हैं. हिन्दुस्तान की क़ौमी दौलत इस वक़्त इनके थोड़े से जत्थों के हाथों में है·······सिर्फ़ अमरीका ही एक ऐसा देश है जो हिन्दुस्तान में रुपया लगा सकता है. अमरीका के व्यापारियों और हिन्दुस्तान के इन बड़े बड़े व्यापारियों ने मिलकर हिन्दुस्तान के अन्दर कारख़ाने चलाने और अमरीका के बने हुए माल की बिक्री का हिन्दुस्तान में ठीक ठीक इन्तज़ाम करने के लिये बराबर साज़ बाज़ हो रही है."

श्री अरुन बोसने "इन्डो ब्रिटिश बिग बिज़नेस डील्स" नाम की किताब में जो इसी साल पीपुल्स पबलिशिंग हाउस बम्बई से निकली है (क़ीमत चौदह आने) अच्छी तरह दिखलाया है कि हिन्दुस्तान के बड़े व्यापारियों के ज़रिये अंगरेज़ व्यापारी किस तरह हिन्दुस्तान को लूटने की तरकीबें कर रहे हैं. हिन्दुस्तान के यह बड़े व्यापारी जो इंगलिस्तान और अमरीका के व्यापारियों को इस देश के लूटने में दिल खोल कर मदद दे रहे हैं. ज़्यादा कहाँ रहते हैं. इन्डिया में या पाकिस्तान में ? इन्डिया में अभी तक एक हज़ार तीन सौ अरसठ बड़े बड़े कल कारख़ाने हैं. पाकिस्तान में तैतालीस. इंडिया में कुल व्यापारी आमदनी एक सौ चौरानवे करोड़ रुपए सालाना है. पाकिस्तान में इक्कीस करोड़ रुपए सालाना. यानी इस देश के ज़्यादातर बड़े बड़े व्यापारी इंडिया में रहते हैं और देश भक्त बने हुए हैं.

रूस और ऐङ्गलो अमरीका—

बर्तानिया और अमरीका मिलकर जरमनी को फिरसे इसके लिये तय्यार कर रहे हैं कि उसकी मदद से पूर्वी योरप के मुल्कों से

انڈین گورنمنٹ پر اثر رکھتے ہیں۔ ہندستان کی قومی دولت اِس وقت اِن کے تھوڑے سے جتھوں کے ہاتھوں میں ہے۔......صرف امریکا ہی ایک ایسا دیش ہے جو ہندستان میں روپیہ لگا سکتا ہے۔ امریکا کے ویاپاریوں کے اِن بڑے بڑے ویاپاریوں میں مل کر ہندستان کے اندر کارخانے چلانے اور امریکا کے بنے ہوئے مال کی بکری کا ہندستان میں ٹھیک ٹھیک انتظام کرنے کے لئے برابر ساز باز ہو رہی ہے۔"

شری ارون بوس نے "انڈو برٹش بگ بزنیس ڈیلس" نام کی کتاب میں جو اِسی سال پیپلس پبلشنگ ہاؤس بمبئی سے نکلی ہے (قیمت چودہ آنے) اچھی طرح دکھلایا ہے کہ ہندستان کے بڑے ویاپاریوں کے ذریعے انگریز ویاپاری کس طرح ہندستان کو لوٹنے کی ترکیبیں کر رہے ہیں ہندستان کے یہ بڑے ویاپاری جو انگلستان اور امریکا کے ویاپاریوں کو اِس دیش کے لوٹنے میں دل کھول کر مدد دے رہے ہیں۔ زیادہ کہاں رہتے ہیں؟ انڈیا میں یا پاکستان میں؟ انڈیا میں ابھی تک ایک ہزار تین سو اڑسٹھ بڑے بڑے کل کارخانے ہیں۔ پاکستان میں تینتالیس۔ انڈیا میں کُل ویاپاری آمدنی ایک سو چورانوے کروڑ روپئے سالانہ ہے۔ پاکستان میں اکیس کروڑ سالانہ۔ یعنی اِس دیش کے زیادہ تر بڑے بڑے ویاپاری انڈیا میں رہتے ہیں اور دیش بھکت بنے ہوئے ہیں۔

روس اور اینگلو امریکا

برطانیہ اور امریکا مل کر جرمنی کو پھر سے اِس کے لئے تیار کر رہے ہیں کہ اُس کی مدد سے پوربی یورپ کے ملکوں سے

ौर फिर रूस से लड़ सकें और उन्हें हरा सकें. सन् १९४२ से १९४५ क तीन बरस अंगरेज़ों और अमरीका वालों ने जर्मनी के बड़े बड़े गी कल कारख़ानों पर ख़ूब बम बरसाए. उसके बाद सन् ४५ के रू में जब अमरीका को फ़ौजें जर्मनी में घुसीं तो वह यह देखकर ग रह गईं कि जर्मनी के वह सब बड़े बड़े कारख़ाने जिनमें तरह रह का लड़ाई का सामान बनता था बिल्कुल अछूते बचे हुए थे. न्हें ज़रा भी नुक़सान नहीं पहुँचा था. इन सब कारख़ानों की हरिस्तें तक अमरीका के बड़े बड़े अख़बारों में छपी थीं. इन ख़बारों के नुमाइन्दों ने जाकर अपनी आँखों से इन जर्मन कारख़ानों का धड़ाधड़ बंदूकें. तोपें. बम और तरह तरह का सामान ढालते हुए देखा था.

इसकी वजह क्या थी कि अंगरेज़ी हवाई जहाज़ों ने निहत्थी जर्मन आबादियों पर तो ख़ूब बम बरसाए और उन्हें तबाह कर दिया. पर इन कारख़ानों को अछूता छोड़ दिया. वजह यह थी कि इन जर्मन कारख़ानों के अंदर ख़ुद इंगलैन्ड और अमरीका के बड़े बड़े साहूकारों की अरबों और खरबों की पूंजी लगी हुई थी. हवाई जहाज़ों से कह दिया गया था कि इन्हें हाथ न लगावें. इस तरह इङ्गलिस्तान और अमरीका के बड़े बड़े अरबपति एक तरफ़ तो अपनी सरकारों को हथियार पहुँचा रहे थे जिनसे वह जर्मनों को मार सकें, और दूसरी तरफ़ जर्मनों को हथियार मुहय्या कर रहे थे जिनसे वह अंगरेज़ों, अमरीका वालों, रूसियों और दूसरों को मिटा सकें, और दोनों तरफ़ से धन कमा कर अपनी जेबें भर रहे थे.

اور پھر روس سے لڑ سکیں اور اُنھیں ہرا سکیں ۱۹۴۲ء سے ۱۹۴۵ تک تین برس انگریزوں اور امریکا والوں نے جرمنی کے بڑے بڑے جنگی کل کارخانوں پر خوب بم برسائے اُس کے بعد ۴۵ء کے شروع میں جب امریکا کی فوجیں جرمنی میں گھُسیں تو وہ یہ دیکھ کر دنگ رہ گئیں کہ جرمنی کے وہ سب بڑے بڑے کارخانے جن میں طرح طرح کا لڑائی کا سامان بنتا تھا بالکل اچھوتے بچے ہوئے تھے. اُنھیں ذرا بھی نقصان نہیں پہنچا تھا. اِن سب کارخانوں کی فہرستیں تک امریکا کے بڑے بڑے اخباروں میں چھپی تھیں. اِن اخباروں کے نمائندوں نے جاکر اپنی آنکھوں سے اِن جرمن کارخانوں کو دھڑا دھڑ بندوقیں، توپیں، بم اور طرح طرح کا سامان ڈھالتے ہوئے دیکھا تھا.

اِس کی وجہ کیا تھی کہ انگریزی ہوائی جہازوں نے نہتی جرمن آبادیوں پر تو خوب بم برسائے اور اُنھیں تباہ کر دیا، پر اِن کارخانوں کو اچھوتا چھوڑ دیا وجہ یہ تھی کہ اِن جرمن کارخانوں کے اندر خود انگلینڈ اور امریکا کے بڑے بڑے ساہوکاروں کی اربوں اور کھربوں کی پونجی لگی ہوئی تھی. ہوائی جہازوں سے کہہ دیا گیا تھا کہ اِنھیں ہاتھ نہ لگاویں اِس طرح انگلستان اور امریکا کے بڑے بڑے ارب پتی ایک طرف تو اپنی سرکاروں کو ہتھیار پہنچا رہے تھے جن سے وہ جرمنوں کو مار سکیں، اور دوسری طرف جرمنوں کو ہتھیار مہیا کر رہے تھے جن سے وہ انگریزوں، امریکا والوں، روسیوں اور دوسروں کو مٹا سکیں، اور دونوں طرف سے دھن کما کر اپنی جیبیں بھر رہے تھے.

अमरीका में एक सोसाइटी है जिसका नाम है 'सोसाइटी फ़ार दि प्रीवेन्शन आफ़ वर्ल्ड वार थ्री' यानी आने वाले तीसरे महायुद्ध को रोकने के लिये सोसाइटी. इसका दफ़्तर न्यूयार्क शहर में है. इस सोसाइटी ने हाल में ऐसे बड़े बड़े जर्मन खरबपतियों, जरनैलों और राजकाजियों की एक लम्बी फ़ेहरिस्त छापी है जिन्होंने पिछली जंग में अँग्रेज़ों और अमरीका के ख़िलाफ़ ख़ास हिस्सा लिया था और जो अब जर्मनी के उन दोनों टुकड़ों में जो इंगलैन्ड और अमरीका के क़ब्ज़े में हैं बड़े बड़े ओहदों पर हैं. इनमें एक साहब डा० अर्नस्ट पेन्सगेन वह हैं जो सारी दुनिया को बर्तानिया और जर्मनी इन दोनों के बीच बाँट देने की तजवीज़ें कर रहे थे. एक साहब राबर्ट फ़र्दमैंगोज़ हैं जो जर्मनी के सबसे बड़े सरमाएदार माने जाते थे. एक साहब हर मान एब्स हैं जो बर्लिन के रूसियों के हाथ में आने से ठीक दो दिन पहले सात हज़ार अरब राइख़ मार्क (जर्मन सिक्का बराबर बारह आने) नक़द लिये हुए अँग्रेज़ी फ़ौज के बीच से अछूते निकाल दिये गए थे. इस वक़्त वह जर्मनी के अँग्रेज़ी टुकड़े में अँग्रेज़ों के सब से बड़े माली सलाह-कार बने हुए हैं.

यह लोग हैं जिनके साथ मिल कर इंगलैन्ड और अमरीका के बड़े बड़े पूँजीपति हिन्दुस्तान के बड़े बड़े साहूकारों को अपने साथ मिलाए हुए आज रूस को मिटाने और दुनिया को तबाह करने की बड़ी बड़ी तरकीबें कर रहे हैं.

****

امریکا میں ایک سوسائٹی ہے جس کا نام ہے "سوسائٹی فار دی پریونشن آف ورلڈ وار تھری" یعنی آنے والے تیسرے مہایُدھ کو روکنے کے لئے سوسائٹی۔ اس کا دفتر نیویارک شہر میں ہے۔ اس سوسائٹی نے حال میں ایسے بڑے بڑے جرمن کھرب پتیوں، جرنیلوں اور راج کاجیوں کی ایک لمبی فہرست چھاپی ہے جنھوں نے پچھلی جنگ میں انگریزوں اور امریکا کے خلاف خاص حصہ لیا تھا اور جو اب جرمنی کے ان دونوں ٹکڑوں میں جو انگلینڈ اور امریکا کے قبضے میں ہیں بڑے بڑے عہدوں پر ہیں۔ ان میں ایک صاحب ڈاکٹر ارنسٹ پونسگین وہ ہیں جو ساری دُنیا کو برطانیہ اور جرمنی ان دونوں کے بیچ بانٹ دینے کی تجویزیں کر رہے تھے۔ ایک صاحب رابرٹ فردمینگیز ہیں جو جرمنی کے سب سے بڑے سرمایہ دار مانے جاتے تھے۔ ایک صاحب ہرمان ایبس ہیں جو برلن کے روسیوں کے ہاتھ میں آنے سے ٹھیک دو دن پہلے سات ہزار ارب رائخ مارک (جرمن سکہ برابر بارہ آنے) نقد لئے ہوئے انگریزی فوج کے بیچ سے اچھوتے نکال دیے گئے تھے۔ اس وقت وہ جرمنی کے انگریزی ٹکڑے میں انگریزوں کے سب سے بڑے مالی صلاح کار بنے ہوئے ہیں۔

یہ لوگ ہیں جن کے ساتھ مل کر انگلینڈ اور امریکا کے بڑے بڑے پونجی پتی ہندستان کے بڑے بڑے ساہوکاروں کو اپنے ساتھ ملائے ہوئے آج روس کو مٹانے اور دُنیا کو تباہ کرنے کی بڑی بڑی ترکیبیں کر رہے ہیں۔

****

कुछ किताबें

विश्व का राजनैतिक भविष्य— लिखने वाले पंडित कृष्ण-न्त मालवीय, सफ़े १५६, क़ीमत दो रुपए, लिखावट नागरी, ा—अभ्युदय प्रेस, प्रयाग.

यह किताब अभ्युदय में छपे हुए सन् १९१९ से सन् १९३७ क के स्वर्गीय पंडित कृष्ण कान्त मालवीय के कुछ राष्ट्रीय और न्तर्राष्ट्रीय लेखों का एक क़ीमती भंडार है. किताब को पढ़ने से ालूम होता है कि स्वर्गीय पंडित कृष्णकान्त मालवीय सचमुच क ऊँचे दरजे के विद्वान और हिन्दुस्तानी देशभक्त थे, राजनीति के क पहुँचे हुए पंडित थे और राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय मामलों की ोस जानकारी रखने वाले एक दूरंदेश थे.

किताब में जगह जगह स्वर्गीय पंडित जी की पेशीनगोइयाँ हैं जो सभी अब तक सच साबित हो चुकी हैं. पिछले महायुद्ध के शुरू होने के बीस साल पहले ही पंडित जी ने उसकी पेशीनगोई कर रखी थी और वह सचमुच दुनिया की आँखों के सामने आया. इस महायुद्ध के बारे में पंडित जी के कई लेख हैं जो ध्यान से पढ़ने लायक़ हैं.

नैपोलियन से लेकर हिटलर के समय तक के योरप की तारीख़ का इस किताब में सियासी निचोड़ दिया हुआ है. सन् १९१४ की जंग के रहस्य, उसके कारन, उसके मक़सद और जर्मनी के फिर ... के बारे में ... काफ़ी ... गया

کچھ کتابیں

• **وشو کا راج نیتک بھوشیہ** — لکھنے والے پنڈت کرشن کانت مالویہ، صفحے ۱۵۶، قیمت دو روپئے، لکھاوٹ ناگری، پتہ — ابھیودے پریس، پریاگ۔

یہ کتاب ابھیودے میں چھپے ہوئے ۱۹۱۹ء سے ۱۹۳۷ء تک کے سورگیہ پنڈت کرشن کانت مالویہ کے کچھ راشٹریہ اور انتر راشٹریہ لیکھوں کا ایک قیمتی بھنڈار ہے۔ کتاب کو پڑھنے سے معلوم ہوتا ہے کہ سورگیہ پنڈت کرشن کانت مالویہ سچ مچ ایک اونچے درجے کے ودوان اور ہندستانی دیش بھگت تھے، راج نیتی کے ایک پہنچے ہوئے پنڈت تھے اور راشٹریہ اور انتر راشٹریہ معاملوں کی ٹھوس جانکاری رکھنے والے ایک دور اندیش تھے۔

کتاب میں جگہ جگہ سورگیہ پنڈت جی کی پیشین گوئیاں ہیں جو سبھی اب تک سچ ثابت ہو چکی ہیں۔ پچھلے مہایدھ کے شروع ہونے کے بیس سال پہلے ہی پنڈت جی نے اس کی پیشین گوئی کر رکھی تھی اور وہ سچ مچ دنیا کی آنکھوں کے سامنے آیا۔ اس مہایدھ کے بارے میں پنڈت جی کے کئی لیکھ ہیں جو دھیان سے پڑھنے لائق ہیں۔

نیپولین سے لے کر ہٹلر کے سمے تک کے یورپ کی تاریخ کا اس کتاب میں سیاسی نچوڑ دیا ہوا ہے۔ ۱۹۱۴ء کی جنگ کے رہسیہ، اس کے کارن، اس کے مقصد اور جرمنی کے پھر ... کے بارے میں ... کافی ... گیا

है. जगह जगह पर यह बताया गया है कि भारतीयों का कर्त्तव्य क्या है और हम कैसे आज़ाद हो सकते हैं. आख़िरी अध्याय 'मिनिस्टरी' में सन् १९३७ से १९४२ तक के ज़माने के बारे में पंडित ज़ी की पेशीनगोई सचमुच ग़ौर करने लायक़ है.

सभी लेख ऊँचे दरजे के हैं. गहरे विचारों से भरे हैं और अन्तर्राष्ट्रीय ज्ञान को ऊँचा उठाने वाले हैं. यह किताब हमारे लिये लेखक की एक क़ीमती देन है.

—गनेश प्रसाद

ऐ मुसलिम भाई—लिखने वाले श्री काशीराम चावला. सफ़े २७२, क़ीमत डेढ़ रुपए, लिखावट उरदू. पता—श्री काशीराम चावला, सिविल लाइन्स, लुधियाना.

इस किताब के लिखने वाले श्री काशीराम जी चावला एक मशहूर लेखक हैं. यह किताब ख़ास कर इसलाम धर्म के बारे में है. पहले क़रीब सौ सफ़े में कुछ सवाल जवाब हैं जो लेखक और कुछ और लोगों के बीच हुए हैं.

किताब २६ अध्यायों में बटी है. "ऐ हिन्दू भाई" नाम के अध्याय में लेखक ने हिन्दुओं को इसलाम धर्म की अच्छाइयाँ समझाई हैं और हिन्दुओं को अपनी कमज़ोरी दूर करने के कुछ तरीक़े बताए हैं. "इसलाम क्या है" में समझाया है कि किस तरह ख़ुदा तक पहुँचा जा सकता है. "इसलाम का ज़हूर क्यों हुआ" में बताया है कि दुनिया में पापियों की तादाद बढ़ जाने से एक ऐसे मज़हब की ज़रूरत पड़ी जो अमन और शान्ति फैलाए

ہے۔ جگہ جگہ پر یہ بتایا گیا ہے کہ بھارتیوں کا کرتویہ کیا ہے اور ہم کیسے آزاد ہوسکتے ہیں۔ آخری ادھیائے 'منسٹری' میں ۱۹۳۷ء سے ۱۹۴۲ تک کے زمانے کے بارے میں پنڈت جی کی پیشین گوئی سچ مچ غور کرنے لائق ہے۔

سبھی لیکھ اونچے درجے کے ہیں، گہرے وچاروں سے بھرے ہیں اور انتر راشٹریہ گیان کو اونچا اٹھانے والے ہیں۔ یہ کتاب ہمارے لئے لیکھک کی ایک قیمتی دین ہے۔

—گنیش پرساد

اے مسلم بھائی—لکھنے والے شری کاشی رام چاولا، صفحے ۲۷۲، قیمت ڈیڑھ روپئے، لکھاوٹ اردو، پتہ— شری کاشی رام چاولا، سول لائنس، لدھیانہ۔

اس کتاب کے لکھنے والے شری کاشی رام جی چاولا ایک مشہور لیکھک ہیں۔ یہ کتاب خاص کر اسلام دھرم کے بارے میں ہے۔ پہلے قریب سو صفحے میں کچھ سوال جواب ہیں جو لیکھک اور کچھ اور لوگوں کے بیچ ہوئے ہیں۔

کتاب ۲۶ ادھیاؤں میں بٹی ہے۔ "اے ہندو بھائی" نام کے ادھیائے میں لیکھک نے ہندوؤں کو اسلام دھرم کی اچھائیاں سمجھائی ہیں اور ہندوؤں کو اپنی کمزوری دور کرنے کے کچھ طریقے بتائے ہیں۔ "اسلام کیا ہے" میں سمجھایا ہے کہ کس طرح خدا تک پہنچا جاسکتا ہے۔ "اسلام کا ظہور کیوں ہوا" میں بتایا ہے کہ دنیا میں پاپیوں کی تعداد بڑھ جانے سے ایک ایسے مذہب کی ضرورت پڑی جو امن اور شانتی پھیلائے

और वही था "इसलाम धर्म." "सारी दुनिया मुसलमान हो" में लेखक ने अपनी राय ज़ाहिर की है कि सारी दुनिया ही अगर क़ुरान को पढ़कर और समझ कर मुसलमान हो जाय तो मुसलमानों की मरदुमशुमारी की तादाद बढ़ाने के लिये लोगों को मुसलमान बनाने की ज़रूरत न पड़े. कुछ और अध्याय जैसे "दीन इसलाम की रवादारी," "पैग़म्बर इसलाम की रवादारी," "खल्फ़ाए इसलाम की रवादारी," "सच्चे दीन दारों की रवादारी," "मुसलिम शहान की रवादारी" "इख़लाक़" काफ़ी अच्छे हैं और इनके पढ़ने से इसलाम धर्म के बारे में अच्छी जानकारी हासिल हो जाती है. "हमसाया के हक़ूक़" में एक अच्छा शेर है—

चीटियों में इत्तहाद और मक्खियों में इत्तफ़ाक़

आदमी का आदमी दुश्मन ख़ुदा की शान है.

लेखक ने एक जगह अपना विचार ज़ाहिर किया है कि वह हिन्दू, सिक्ख, बुद्ध, जैन, पारसी और ईसाई मज़हब के ख़ास ख़ास गुणों के बारे में अलग अलग किताबें लिखेंगे. इस विचार का हम स्वागत करते हैं.

—गनेश प्रसाद

रूहे रोशन मुस्तक़बिल—लिखने वाले सैयद तुफ़ैल अहमद साहब मंगलौरी, सफ़े २३६, कीमत दो रुपए. लिखावट उरदू, पता—निज़ामी प्रेस, बदायूं (यू. पी).

किताब हमें उस बीते हुए ज़माने को याद दिलाती है जब सर सैयद अहमद ख़ाँ साहब हमारे बाहमी मेल जोल के लिये दिल

اور وہی تھا "اسلام دھرم"۔ "ساری دنیا مسلمان ہو" میں لیکھک نے اپنی رائے ظاہر کی ہے کہ ساری دنیا ہی اگر قرآن کو پڑھ کر اور سمجھ کر مسلمان ہو جائے تو مسلمانوں کو مردم شماری کی تعداد بڑھانے کے لئے لوگوں کو مسلمان بنانے کی ضرورت نہ پڑے۔ کچھ اور ادھیائے جیسے "دین اسلام کی رواداری"، "پیغمبر اسلام کی رواداری"، "خلفائے اسلام کی رواداری"، "سچے دین داروں کی رواداری"، "مسلم شہان کی رواداری"، "اخلاق" کافی اچھے ہیں اور ان کے پڑھنے سے اسلام دھرم کے بارے میں اچھی جان کاری ہو جاتی ہے۔ "ہمسایہ کے حقوق" میں ایک اچھا شعر ہے—

چیونٹیوں میں اتحاد اور مکھیوں میں اتفاق۔

آدمی کا آدمی دشمن خدا کی شان ہے۔

(۵۹۷)

لیکھک نے ایک جگہ اپنا وچار ظاہر کیا ہے کہ وہ ہندو، سکھ، بدھ، جین، پارسی اور عیسائی مذہب کے خاص خاص گنوں کے بارے میں الگ الگ کتابیں لکھیں گے۔ اس وچار کا ہم سواگت کرتے ہیں۔

—گنیش پرساد

روح روشن مستقبل— لکھنے والے سید طفیل احمد صاحب منگلوری، صفحے ۲۳۶، قیمت دو روپئے۔ لکھاوٹ اردو، پتہ— نظامی پریس، بدایوں (یو۔ پی)۔

کتاب ہمیں اس بیتے ہوئے زمانے کی یاد دلاتی ہے جب سر سید احمد خاں صاحب ہمارے باہمی میل جول کے لئے دل

से कोशिश कर रहे थे. उस जमाने से मौजूदा जमाने तक का मुसलमानों की सियासत को नज़र में रखते हुए लेखक ने हमें बहुत कुछ बातें बताई हैं जिनको हम आज कल भूल रहे हैं और जिनकी हमें इस समय ख़ास ज़रूरत है. इसमें मुसलमानों की तमाम सियासी तहरीकें, वाक़ए और हाल सिलसिलेवार दिये गए हैं. और यह ख़ास तौर से बताया गया है कि मुसलमानों की सबसे पहली सियासी पार्टी 'मुस्लिम लीग' किन हालतों में क़ायम हुई और जमाने के साथ साथ इसकी नीति किस तरह बदलती रही. कुछ ख़ास वाक़यों को ख़ूब अच्छी तरह समझाया गया है जैसे—क्रिप्स मिशन, १९४४ की गाँधी-जिन्ना मुलाक़ात, शिमला कान्फ़रेन्स वग़ैरा. 'पाकिस्तान' जैसे बड़े मसले को लेखक ने अच्छी तरह समझाने की कोशिश की है और तमाम बड़े बड़े लीडरों की रायें देकर सब बातों को समझने के लिये पूरी सहूलियत पैदा की है.

किताब पढ़ने से मालूम होता है कि किस तरह सन् १८८५ में इन्डियन नेशनल कॉंग्रेस क़ायम हुई और उसके पहले प्रेसिडेन्ट मिस्टर डलहौज़ी बान्ट हुए, किस तरह उस समय के अलीगढ़ यूनिवर्सिटी के प्रिन्सिपल मि० बेक ने सर सैय्यद अहमद ख़ाँ साहब को भड़का कर कॉंग्रेस के ख़िलाफ़ आवाज़ बुलन्द करवाई और मुसलमानों की पहली जमात 'इन्डियन पैट्रिआटिक-एसोसिएशन' सर सैयद अहमद ख़ाँ की देख रेख में क़ायम हुई, कैसे सन् १९०५ में लार्ड कर्ज़न ने बंगाल को तक़सीम करने का झगड़ा शुरू किया, कैसे १९०६ में मुसलिम लीग और हिन्दू महासभा की

(५६)

سے کوشش کر رہے تھے۔ اُس زمانے سے موجودہ زمانے تک کی مسلمانوں کی سیاست کو نظر میں رکھتے ہوئے لیکھک نے ہمیں بہت کچھ باتیں بتائی ہیں جن کو ہم آج کل بھول رہے ہیں اور جن کی ہمیں اِس سمے خاص ضرورت ہے۔ اِس میں مسلمانوں کی تمام سیاسی تحریکیں، واقعے اور حال سلسلے وار دئے گئے ہیں۔ اور یہ خاص طور سے بتایا گیا ہے کہ مسلمانوں کی سب سے پہلی سیاسی پارٹی 'مسلم لیگ' کن حالتوں میں قایم ہوئی اور زمانے کے ساتھ ساتھ اِس کی نیتی کس طرح بدلتی رہی۔ کچھ خاص واقعوں کو خوب اچھی طرح سمجھایا گیا ہے جیسے—کرپس مشن ۱۹۴۴ کی گاندھی جناح ملاقات، شملہ کانفرنس وغیرہ۔ 'پاکستان' جیسے بڑے مسئلے کو لیکھک نے اچھی طرح سمجھانے کی کوشش کی ہے اور تمام بڑے بڑے لیڈروں کی رائے دے کر سب باتوں کو سمجھنے کے لئے پوری سہولیت پیدا کی ہے۔

کتاب پڑھنے سے معلوم ہوتا ہے کہ کس طرح ۱۸۸۵ء میں انڈین نیشنل کانگریس قایم ہوئی اور اُس کے پہلے پریسیڈنٹ مسٹر ڈلہوزی بونٹ ہوئے، کس طرح اُس سمے کے علی گڑھ یونیورسٹی کے پرنسپل مسٹر بیک نے سر سیّد احمد خاں صاحب کو بھڑکا کر کانگریس کے خلاف آواز بلند کروائی اور مسلمانوں کی پہلی جماعت 'انڈین پیٹریاٹک ایسوسی ایشن' سر سیّد احمد خاں کی دیکھ ریکھ میں قایم ہوئی، کیسے ۱۹۰۵ء میں لارڈ کرزن نے بنگال کو تقسیم کرنے کا جھگڑا شروع کیا، کیسے ۱۹۰۶ء میں مسلم لیگ اور ہندو مہاسبھا کی

नियाद पड़ी, किस तरह टरकी की हार के बाद इसलामी दुनिया ें एक हलचल मच गई और १६१६ में "खिलाफ़त कमेटी" क़ायम ुई जिसके आन्दोलन में हिन्दू मुसलमान दोनों ने भाग लिया, कैसे ६२२ में चौरी चौरा का खून खराबा हुआ और उसी साल गाँधी ी को छे साल की क़ैद हुई. कैसे १६२६ में "जमीयत-उल-उलमा" ायम हुई और १६२७ में मुसलिम नेशनलिस्ट पार्टी का पहला जलसा इलाहाबाद में मौलाना आज़ाद की सदारत में हुआ और सी के बाद मुसलमानों की कई और पार्टियाँ क़ायम हुईं जैसे मजलिसे अहरार, ख़ुदाई खिदमतगार. शिया पार्टी वग़ैरा, कैसे १६४० में लाहौर में मि० जिन्नाह की सदारत में "पाकिस्तान" की पैदाइश हुई, वग़ैरा वग़ैरा.

आख़री अध्याय "हासिल कलाम" में सारी किताब का ख़ुलासा दे दिया गया है जिसके पढ़ लेने से हमें पूरी किताब के बारे में बहुत कुछ मालूम हो जाता है. मुसलिम सियासत के बारे में जानकारी पैदा करने के लिये यह किताब बहुत अच्छी है.

—गनेश प्रसाद

بُنیاد پڑی، کس طرح ٹرکی کی ہار کے بعد اسلامی دُنیا میں ایک ہل چل مچ گئی اور ۱۹۱۹ میں "خلافت کمیٹی" قایم ہوئی جس کے اندولن میں ہندو مسلمان دونوں نے بھاگ لیا، کیسے ۱۹۲۲ میں چوری چورا کا خون خرابہ ہوا اور اُسی سال گاندھی جی کو چھے سال کی قید ہوئی، کیسے ۱۹۲۶ میں "جمعیت العلماء" قایم ہوئی اور ۱۹۲۷ میں مسلم نیشلسٹ پارٹی کا پہلا جلسہ الہ آباد میں مولانا آزاد کی صدارت میں ہوا اور اِسی کے بعد مسلمانوں کی کئی اور پارٹیاں قایم ہوئیں جیسے مجلسِ احرار، خدائی خدمت گار، شیعہ پارٹی وغیرہ، کیسے ۱۹۴۰ میں لاہور میں مسٹر جناح کی صدارت میں "پاکستان" کی پیدائش ہوئی، وغیرہ وغیرہ۔

آخری اُدھیائے "حاصل کلام" میں ساری کتاب کا خلاصہ دے دیا گیا ہے جس کے پڑھ لینے سے ہمیں پوری کتاب کے بارے میں بہت کچھ معلوم ہوجاتا ہے۔ مسلم سیاست کے بارے میں جان کاری پیدا کرنے کے لئے یہ کتاب بہت اچھی ہے۔

—گنیش پرساد

हमारी राय

एक अवतार और चाहिये—

सचाई आत्मा की एक सिफ़त है. वह सबमें हमेशा से है और हमेशा रहेगी. जैसे चिराग़ की लौ के चारों तरफ़ तरह तरह की चिमनियों की मदद से रोशनी कम ज्यादा हो जाती है वैसे ही आत्मा की सिफ़त सचाई में भी कमी बेशी होती रहती है. इस कमी बेशी की वजहें आदमी के बाहर, बाहरी दुनिया में रहती हैं. आदमी उन्हीं वजहों से अपनी आत्मा को माँज कर सचाई को चमकाता है. सचाई के साथ साथ सबसे मेल मोहब्बत नाम की सिफ़त भी चमक उठती है जिसको किताबों में प्रेम या इश्क़ के नाम से पुकारा गया है और जिसको ग़लत या सही अहिंसा नाम भी दे दिया गया है. और फिर इस अहिंसा के काम चलाने के लिये कितने ही दरजे बना दिये गए हैं. हम यह बाल की खाल खींच कर सिर्फ़ इतना ही कहना चाहते हैं कि सत्य और अहिंसा यह आत्मा के अपने गुन हैं और किन्हीं दो प्रानियों में या किन्हीं दो आदमियों में एक से नहीं पाए जा सकते. यह किसी धर्म के असूल बन सकते हैं, किसी धर्म की जान बन सकते हैं, पर एक सी शकल में अमल में न लाए जाने की वजह से किसी धर्म का व्योहार नहीं बन सकते और इसी वजह से किसी धर्म के संगठन का जिस्म नहीं बन सकते. जान जिस्म हो ही ... ी वजह है कि अहिंसा का झंडा हाथ में लेकर

ہماری رائے

ایک اوتار اور چاہیے—

سچائی آتما کی ایک صفت ہے. وہ سب میں ہمیشہ سے ہے اور ہمیشہ رہے گی. جیسے چراغ کی لَو کے چاروں طرف طرح طرح کی چمنیوں کی مدد سے روشنی کم زیادہ ہو جاتی ہے ویسے ہی آتما کی صفت سچائی میں بھی کمی بیشی ہوتی رہتی ہے. اس کمی بیشی کی وجہیں آدمی کے باہر، باہری دُنیا میں رہتی ہیں. آدمی اُنھیں وجہوں سے اپنی آتما کو مانج کر سچائی کو چمکاتا ہے. سچائی کے ساتھ ساتھ سب سے میل محبت نام کی صفت بھی چمک اُٹھتی ہے جس کو کتابوں میں پریم یا عشق کے نام سے پکارا گیا ہے اور جس کو غلط یا صحیح اہنسا نام بھی دے دیا گیا ہے. اور پھر اس اہنسا کے کام چلانے کے لئے کتنے ہی درجے بنا دئے گئے ہیں. ہم یہ بال کی کھال کھینچ کر صرف اتنا ہی کہنا چاہتے ہیں کہ ستیہ اور اہنسا یہ آتما کے اپنے گُن ہیں اور کنھیں دو پرانیوں میں یا کنھیں دو آدمیوں میں ایک سے نہیں پائے جا سکتے. یہ کسی دھرم کے اصول بن سکتے ہیں، کسی دھرم کی جان بن سکتے ہیں، پر ایک سی شکل میں عمل میں نہ لائے جانے کی وجہ سے کسی دھرم کا ویوہار نہیں بن سکتے اور اسی وجہ سے کسی دھرم کے سنگٹھن کا جسم نہیں بن سکتے. جان جسم ہو ہی نہیں سکتی. یہی وجہ ہے کہ اہنسا کا جھنڈا ہاتھ میں لے کر

या सचाई के झंडे के नीचे खड़े होकर बनी जमातें या जुटे दल आपस में ही लड़ने लगते हैं और झूट बोलने लगते हैं. इसलिये सचाई और अहिंसा न बड़ी बड़ी लड़ाइयों को रोक सकती है और न घर में आपस में लड़ने वालों में सुलह करा सकती है. अभी दुनिया को ऐसे अवतार की जरूरत है जो धर्म के नाम पर बने संगठनों का जी जान से दुशमन हो. पर उसे दुनिया का हर एक आदमी और हर एक प्रानी प्रान से प्यारा हो. सचाई और अहिंसा के सिलसिले की वह अवतार आख़री कड़ी होगा. वही अवतार सारी दुनिया में एक राज की स्थापना कर सकेगा. एक राज की स्थापना के माने हैं किसी राज का न रहना और सारी दुनिया में सच्चे भाई चारे का फैल जाना. सचाई और अहिंसा से कहीं ज्यादा झूट और हिंसा हमारे ख़ून में जगह पा गए हैं. तभी तो हम सचाई और अहिंसा की बातें लड़ाई के बोल काम में लाकर करते हैं. 'फ़ौलाद की तलवार' लड़ाई का बोल है इस लिये सचाई की तलवार भी लड़ाई का बोल हुआ. सचाई की तलवार न धर्म का बोल है न सचाई का बोल. पर धर्मवाले और सच्चे और सन्त और महन्त और महात्मा और परमात्मा नामधारी 'सचाई की तलवार' बोल से काम लेते रहे हैं, ले रहे हैं और जब तक लेते रहेंगे सचाई की जीत न हो पाएगी. 'सचाई की जीत' ख़ुद लड़ाई का बोल है. जीत, हार दोनों लड़ाई के लफ़्ज़ हैं. 'सचाई की जीत' न कह कर कहना चाहिये 'सचाई की खेती की फूल फलन'. मतलब यह कि हम धर्म की बातों में भी लड़ाई की बातों की बोली ही काम में लाते रहते हैं धर्म की खेती फले तो कैसे फले.

یا سچائی کے جھنڈے کے نیچے کھڑے ہوکر بنی جماعتیں یا جُٹے دل آپس میں ہی لڑنے لگتے ہیں اور جھوٹ بولنے لگتے ہیں. اس لئے سچائی اور اہنسا نہ بڑی بڑی لڑائیوں کو روک سکتی ہے اور نہ گھر میں آپس میں لڑنے والوں میں صلح کرا سکتی ہے. ابھی دُنیا کو ایسے اوتار کی ضرورت ہے جو دھرم کے نام پر بنے سنگٹھنوں کا جی جان سے دشمن ہو، پر اُسے دُنیا کا ہر ایک آدمی اور ہر ایک پران پران سے پیارا ہو. سچائی اور اہنسا کے سلسلے کی وہ اوتار آخری کڑی ہوگی. وہی اوتار ساری دُنیا میں ایک راج کی ستھاپنا کر سکے گا. ایک راج کی ستھاپنا کے معنے ہیں کسی راج کا نہ رہنا اور ساری دُنیا میں سچے بھائی چارے کا پھیل جانا. سچائی اور اہنسا سے کہیں زیادہ جھوٹ اور ہنسا ہمارے خون میں جگہ پا گئے ہیں. تبھی تو ہم سچائی اور اہنسا کی باتیں لڑائی کے بول کام میں لا کر کرتے ہیں. 'فولاد کی تلوار' لڑائی کا بول ہے اس لئے سچائی کی تلوار بھی لڑائی کا بول ہوا. سچائی کی تلوار نہ دھرم کا بول ہے نہ سچائی کا بول. پر دھرم والے اور سچے اور سنت اور مہنت اور مہاتما اور پرماتما نام دھاری 'سچائی کی تلوار' بول سے کام لیتے رہے ہیں، لے رہے ہیں اور جب تک لیتے رہیں گے سچائی کی جیت نہ ہو پائے گی. 'سچائی کی جیت' خود لڑائی کا بول ہے. جیت ہار دونوں لڑائی کے لفظ ہیں. 'سچائی کی جیت' نہ کہہ کر کہنا چاہئے 'سچائی کی کھیتی کی پھول پھلن'. مطلب یہ کہ ہم دھرم کی باتوں میں بھی لڑائی کی باتوں کی بولی ہی کام میں لاتے رہتے ہیں. دھرم کی کھیتی

दो लड़ने वाले चाहें फिर वह दो आदमी हों. दो दल हों या दो मुल्क हों यही कहते हैं कि सचाई हमारी तरफ है. हमारी जीत होगी और इसी बुनियाद पर अपने साथियों को भड़काते रहते हैं. लड़ाते रहते हैं. लुटवाते रहते हैं और कटाते रहते हैं. जब दो तलवार लेकर खड़े हो गए तो सचाई दोनों तरफ से भाग गई. क्योंकि सचाई का दूसरा पहलू प्रेम है. सचाई और प्रेम एक सिक्के के दो पहलू हैं. वह अलग नहीं हो सकते. दो सच्चे आदमी कभी लड़ नहीं सकते और न दो प्रेमी. दो सच्चे आदमी जब भी आमने सामने आवेंगे तो जिसकी सचाई ज़रा तेज़ होगी उसके सामने दूसरे की सचाई का पहलू अपने आप पीछे को हो जावेगा और प्रेम का पहलू सामने आ जावेगा. जैसे दो चुम्बक के उत्तरी हिस्से कभी सामने नहीं रह सकते. उनमें से कोई एक ज़रूर घूम जाता है. और यूं दो सच्चे आदमियों में कभी लड़ाई नहीं हो पाती. कभी झड़प हो जाती है तो वह टिक नहीं पाती. होनी तो झड़प भी नहीं चाहिये पर जैसे दो चुम्बकों के उत्तरी हिस्से कोई मिला ही दे तो वह क्या करें? झड़प में भी उनकी वह चिमनी ही कारन होती है जो सचाई की असली चमक को छिपाए रखती है.

जब तक, धर्म जैसी प्यारी चीज़ के नाम पर लड़ाई जैसे गन्दे काम के लिये जत्थे बनाने का रिवाज या संगठन खड़े करने का तरीक़ा कोई अवतार इस दुनिया से नहीं उठा देता तब तक दुनिया से लड़ाई न उठेगी और न आपसी मारकाट ही ख़तम होगी. जैसे आपसी प्यार मोहब्बत पैदा करने के लिये रचनात्मक या तामीरी काम ज़रूरी हैं वैसे ही संसार से लड़ाई उठ जाने

دو لڑنے والے چاہیں پھر وہ دو آدمی ہوں دو دل ہوں یا دو ملک ہوں یہی کہتے ہیں کہ سچائی ہماری طرف ہے۔ ہماری جیت ہوگی اور اسی بنیاد پر اپنے ساتھیوں کو بھڑکاتے رہتے ہیں، لڑاتے رہتے ہیں، لٹواتے رہتے ہیں اور کٹاتے رہتے ہیں۔ جب دو تلوار لے کر کھڑے ہوگئے تو سچائی دونوں طرف سے بھاگ گئی۔ کیونکہ سچائی کا دوسرا پہلو پریم ہے۔ سچائی اور پریم ایک سکے کے دو پہلو ہیں۔ وہ الگ نہیں ہو سکتے۔ دو سچے آدمی کبھی لڑ نہیں سکتے اور نہ دو پریمی۔ دو سچے آدمی جب بھی آمنے سامنے آویں گے تو جس کی سچائی ذرا تیز ہوگی اُس کے سامنے دوسرے کی سچائی کا پہلو اپنے آپ پیچھے کو ہی جاوے گا اور پریم کا پہلو سامنے آجاوے گا۔ جیسے دو چمبک کے اُتری حصے کبھی سامنے نہیں رہ سکتے۔ اُن میں سے کوئی ایک ضرور گھوم جاتا ہے۔ اور یوں دو سچے آدمیوں میں کبھی لڑائی نہیں ہو پاتی۔ کبھی جھڑپ ہو جاتی ہے تو وہ ٹک نہیں پاتی۔ ہونی تو جھڑپ بھی نہیں چاہئے پر جیسے دو چمبکوں کے اُتری حصے کوئی ملا ہی دے تو وہ کیا کریں؟ جھڑپ میں بھی اُن کی وہ چمنی ہی کارن ہوتی ہے جو سچائی کی اصلی چمک کو چھپائے رکھتی ہے۔

جب تک، دھرم جیسی پیاری چیز کے نام پر لڑائی جیسے گندے کام کے لئے جتھے بنانے کا رواج یا سنگٹھن کھڑے کرنے کا طریقہ کوئی اوتار اس دنیا سے نہیں اُٹھا دیتا تب تک دنیا سے لڑائی نہ اُٹھے گی اور نہ آپسی مارکاٹ ہی ختم ہوگی۔ جیسے آپسی پیار محبت پیدا کرنے کے لئے رچناتمک یا تعمیری کام ضروری ہیں ویسے ہی سنسار سے لڑائی اُٹھ جانے

लिये सरकार का हर एक काम करना हर एक को आना ज़रूरी . जैसे रचनात्मक काम का आदर्श है मिलों को ज़मींदोज़ कर देना. [श]हरों को ख़त्म कर देना. सिक्के को काफ़ूर बना देना, ऊँच नीच के [झग]ड़े को न रहने देना वैसे ही हर आदमी को 'सरकार का काम [क]रना' आजाने का आदर्श है संसार से सरकार को उठा देना. [न]ौकरी को उड़ा देना. काम के बदले पैसे पाने के रिवाज को दुनिया [में] न रहने देना और काम के बदले तारीफ़ करने या सुनने की आदत [को] भद्दी आदत गंदी आदत समझना और तारीफ़ करने या सुनने के काम को पाप का काम समझना. काम के बदले काम रहेगा पर वह हमारे खून में रहेगा. मस्तक में नहीं रहेगा और मन में [इ]च्छा के रूप में भी नहीं रहेगा. बात बड़ी मुशकिल है पर हम क्या करें. आदर्श होते ही ऐसे हैं. जितना आप लड़ाई से बचना चाहते हों उतना ही उस तरफ़ बढ़ते चलिये.

आज की मारकाट में देखने के लिये लीगियों की तरफ़ से भले ही पाकिस्तान की लेन हो और काँगरेसियों की तरफ़ से भले ही पाकिस्तान की देन हो पर उसकी जड़ में पाकिस्तान की लेन देन जैसी चीज़ हमें कहीं नहीं दिखाई देती. हमें उसकी जड़ में साफ़ दिखाई देती हैं वह अन्धाधुन्द ताक़तें जो जनता ने समझ कर या नासमझी से गवरमेन्ट के हाथ में थमा दी हैं. नाज बोए तो सरकार. नाज काटे तो सरकार, नाज बेचे तो सरकार, कपड़ा पहनाए तो सरकार यानी सब कुछ सरकार सरकार सरकार. जब तक यह ताक़तें सरकार के हाथ से निकल कर जनता के हाथ में नहीं आतीं तब तक इस मारकाट को परमात्मा भी आकर नहीं रोक सकता.

کے لئے سرکار کا ہر ایک کام کرنا ہر ایک کو آنا ضروری ہی. جیسے رچنا تمک کام کا آدرش ہی ملوں کو زمیں دوز کر دینا شہروں کو ختم کر دینا، سکے کو کافور بنا دینا، اونچ نیچ کے جھگڑے کو نہ رہنے دینا. ویسے ہی ہر آدمی کو 'سرکار کا کام کرنا' آجانے کا آدرش ہی سنسار سے سرکار کو اُٹھا دینا، نوکری کو اُڑا دینا، کام کے بدلے پیسے پانے کے رواج کو دُنیا میں نہ رہنے دینا اور کام کے بدلے تعریف کرنے یا سُننے کی عادت کو بھدّی عادت گندی عادت سمجھنا اور تعریف کرنے یا سُننے کے کام کو پاپ کا کام سمجھنا. کام کے بدلے کام رہے گا پر وہ ہمارے خون میں رہے گا، مستک میں نہیں رہے گا اور من میں اِچھا کے رُوپ میں بھی نہیں رہے گا. بات بڑی مشکل ہی پر ہم کیا کریں. آدرش ہوتے ہی ایسے ہیں. جتنا آپ لڑائی سے بچنا چاہتے ہوں اُتنا ہی اُس طرف بڑھتے چلئے.

آج کی مار کاٹ میں دیکھنے کے لئے لیگیوں کی طرف سے بھلے ہی پاکستان کی لین ہو اور کانگریسیوں کی طرف سے بھلے ہی پاکستان کی دین ہو پر اُس کی جڑ میں پاکستان کی لین دین جیسی چیز ہمیں کہیں نہیں دکھائی دیتی. ہمیں اُس کی جڑ میں صاف دکھائی دیتی ہی. وہ اندھادُھند طاقتیں جو جنتا نے سمجھ کر یا ناسمجھی سے گورنمنٹ کے ہاتھ میں تھمادی ہیں. ناج بوئے تو سرکار، ناج کاٹے تو سرکار، ناج بیچے تو سرکار، کپڑا پہنائے تو سرکار یعنی سب کچھ سرکار سرکار سرکار. جب تک یہ طاقتیں سرکار کے ہاتھ سے نکل کر جنتا کے ہاتھ میں نہیں آتیں تب تک اِس مار کاٹ کو پرماتما بھی آکر نہیں روک سکتا.

सुख चैन से रहना है तो धार्मिक संगठनों का खात्मा कीजिये. संगठन बनाइये गाँव के लिहाज से. मोहल्लों के लिहाज से. पेशों के लिहाज से वग़ैरा वग़ैरा.

सुख चैन से रहना है तो सरकार के अख़्तियारों को घटाइये. सरकार के बोझलपन को हलका कीजिये. सरकार को व्यापार से क्या काम ? सरकार को अस्पताल से क्या लेना ? सरकार को तालीम से क्या मतलब ?

पर सुख चैन से रहना किसे है ! लड़ाई में जो मजा है वह खेत बोने में कहाँ ! वह लोहार और बढ़ई के काम में कहाँ ! ख़ून में घुसी लड़ाई तो कोई अवतार ही आकर निकालेगा.

५ अक्तूबर '४७ —भगवान दीन

देहाती दुनिया—सागर के मशहूर देश भक्त भाई अब्दुल ग़नी ने अपने अख़बार "देहाती दुनिया" की कापी हमारे पास भेजी है. यह एक आठवें दिन निकलने वाला हिन्दी अख़बार है जो 'भारत प्रेस' सागर से निकलता है. सी. पी. और बरार के शिक्षा विभाग ने इसे मंजूर किया है. अपने एडीटर भाई अब्दुल ग़नी की तरह देहाती दुनिया खरा, सच्चा और फ़िरक़ेवाराना जहर से बिल्कुल ऊपर है. आस पास की देहाती दुनिया में इसे ख़ूब फैलना चाहिये.

—सुन्दर लाल

سُکھ چین سے رہنا ہے تو دھارمک سنگٹھنوں کا خاتمہ کیجئے. سنگٹھن بنائیے گاؤں کے لحاظ سے، محلوں کے لحاظ سے، پیشوں کے لحاظ سے وغیرہ وغیرہ.

سُکھ چین سے رہنا ہو تو سرکار کے اختیاروں کو گھٹائیے. سرکار کے بوجھل پن کو ہلکا کیجئے. سرکار کو دیاپار سے کیا کام؟ سرکار کو اسپتال سے کیا لینا؟ سرکار کو تعلیم سے کیا مطلب؟

پر سُکھ چین سے رہنا کسے ہے! لڑائی میں جو مزا ہے وہ کھیت بونے میں کہاں! وہ لوہار اور بڑھئی کے کام میں کہاں! خون میں گھسی لڑائی تو کوئی اوتار ہی آکر نکالے گا.

۵ راکتوبر ۴۷ —بھگوان دین

دیہاتی دُنیا—ساگر کے مشہور دیش بھگت بھائی عبدالغنی نے اپنے اخبار "دیہاتی دُنیا" کی کاپی ہمارے پاس بھیجی ہے، یہ ایک آٹھویں دن نکلنے والا ہندی اخبار ہے جو 'بھارت پریس' ساگر سے نکلتا ہے۔ سی. پی. اور برار کے شکشا وبھاگ نے اسے منظور کیا ہے۔ اپنے اڈیٹر بھائی عبدالغنی کی طرح دیہاتی دُنیا کھرا، سچا اور فرقے وارانہ زہر سے بالکل اوپر ہے۔ آس پاس کی دیہاتی دُنیا میں اسے خوب پھیلنا چاہئے.

—سُندر لال

पंजाब हमें क्या सिखाता है–

पंजाब की खबरें सारे मुल्क में फैल चुकी हैं. लाखों आदमी अपने घरों से जबरदस्ती निकाले जा चुके हैं. इस देश निकाले से पहले जो जो ज़ुल्म उन पर हुए और सफ़र में जो जो मुसीबतें उन्हें झेलनी पड़ीं उनका भी देश को थोड़ा बहुत पता है. हर अखबारों ने कम से कम दूसरे मज़हब वालों के ज़ुल्मों को खूब उछाला है. दोनों धरमों के लोगों में इससे काफ़ी ज़हर भी फैला है और फैलता जा रहा है. अखबारों की खबरें एकतरफ़ा तो अक्सर होती ही हैं. फिर भी यह मानना पड़ेगा कि खासकर पंजाब में जो कुछ हुआ है वह बयान से बाहर है और कोई आदमी जिसने अपनी आँखों से न देखा हो वहां की मुसीबत और बरबादी का अन्दाज़ा नहीं लगा सकता.

पिछली अक्तूबर के महीने में मैंने पूर्बी पंजाब और पच्छिमी पंजाब दोनों का दौरा किया. उत्तर में काश्मीर की सरहद तक और पच्छिम में सरहद प्रांत तक, कहीं रेल से. कहीं मोटर से, कहीं हवाई जहाज़ से और कहीं ट्रक से, कुल मिला कर मैंने २००० मील से ऊपर का सफ़र किया. पंजाब की कई रियासतों में से भी निकला. तीस तीस और चालीस चालीस हज़ार आदमियों के क़ाफ़िले मैंने देखे. इनमें बहुत से मुसलिम क़ाफ़िले थे जो पूरब से पच्छिम को जा रहे थे और बहुत से हिन्दू क़ाफ़िले थे जो पच्छिम ... क़ाफ़िले वालों से मैंने खूब दिल खोल

پنجاب ہمیں کیا سکھاتا ہے—

پنجاب کی خبریں سارے مُلک میں پھیل چکی ہیں۔ لاکھوں آدمی اپنے گھروں سے زبردستی نکالے جا چکے ہیں۔ اِس دیش نکالے سے پہلے جو جو ظُلم اُن پر ہوئے اور سفر میں جو جو مصیبتیں اُنھیں جھیلنی پڑیں اُن کا بھی دیش کو تھوڑا بہت پتہ ہے۔ ہر اخباروں نے کم سے کم دوسرے مذہب والوں کے ظُلموں کو خوب اُچھالا ہے۔ دونوں دھرموں کے لوگوں میں اِس سے کافی زہر بھی پھیلا ہے اور پھیلتا جا رہا ہے۔ اخباروں کی خبریں یکطرفہ تو اکثر ہوتی ہی ہیں۔ پھر بھی یہ ماننا پڑے گا کہ اکثر پنجاب میں جو کچھ ہوا ہے وہ بیان سے باہر ہے اور کوئی آدمی جس نے اپنی آنکھوں سے نہ دیکھا ہو وہاں کی مصیبت اور بربادی کا اندازہ نہیں لگا سکتا۔

پچھلی اکتوبر کے مہینے میں میں نے پوربی پنجاب اور پچھمی پنجاب دونوں کا دَورہ کیا۔ اُتّر میں کاشمیر کی سرحد تک اور پچھم میں سرحد پرانت تک، کہیں ریل سے، کہیں موٹر سے، کہیں ہوائی جہاز سے اور کہیں ٹرک سے، کُل ملا کر میں نے ۲۰۰۰ میل سے اوپر کا سفر کیا۔ پنجاب کی کئی ریاستوں میں سے بھی نکلا۔ تیس تیس اور چالیس چالیس ہزار آدمیوں کے قافلے میں نے دیکھے۔ اِن میں بہت سے مسلم قافلے تھے جو پورب سے پچھم کو جا رہے تھے اور بہت سے ہندو قافلے تھے جو پچھم سے پورب کو آ رہے تھے۔ اِن قافلے والوں سے میں نے خوب دل کھول

कर बातें कीं और उनको दर्द भरी कहानियाँ सुनीं. मैं जगह जगह रेफ्यूजी कैम्पों में ठहरा. दोनों तरफ़ के गाँवों में भी गया और जो लोग अभी तक गाँवों में रह रहे थे उनकी हालत देखी और उनसे बातें कीं. उन सब दुख भरी कहानियों को यहाँ दोहराना न तो मुमकिन ही है और न उससे कोई फ़ायदा. पर सब कुछ सुनने और देखने के बाद मेरा अन्दाज़ा है कि दोनों तरफ़ मिलाकर कुल ऐसे लोगों की तादाद जिन्हें मार डाला गया पाँच लाख के क़रीब ज़रूर है. अरबों रुपये का माल लुटा या बरबाद हुआ. जो औरतें उनके घर वालों से ज़बरदस्ती छीन ली गईं और जो लोग ज़बरदस्ती दूसरे धर्म में लाये गए उनकी तादाद भी कम से कम पच्चीस पच्चीस हज़ार ज़रूर होगी. मैं यह अन्दाज़ा बहुत से ज़िला अफ़सरों, लियेज़ान अफ़सरों और दोनों सरकारों के वज़ीरों से बातें करने के बाद लगा रहा हूँ. इनसे ज़्यादा काले पापों की बात तो छोड़ ही देनी चाहिये.

रही सारे पंजाब की समाजी, तिजारती, कारबारी और माली ज़िन्दगी. इस सब पर भी बरसों के लिये मट्टी छित गई. लाहौर का शहर इस मुल्क के ख़ुशहाल से ख़ुशहाल, सुन्दर से सुन्दर और बड़े से बड़े शहरों में से था. कुछ लोग हाल में लाहौर को हिन्दुस्तान का पेरिस कहने लगे थे. हिन्दुओं और मुसलमानों की आबादी वहाँ क़रीब क़रीब बराबर थी. मुसलमान हिन्दुओं से कहने भर के लिये मुश्किल से एक फ़ी सदी ज़्यादा थे. व्यापार और तिजारत बहुत कर हिन्दुओं के हाथों में थी. मैं लाहौर शहर की चहार-दीवारी के अन्दर गली गली पैदल घूमा. आज लाहौर का कम से

(६०३)

کر باتیں کیں اور اُن کی درد بھری کہانیاں سُنیں۔ میں جگہ جگہ رفیوجی کیمپوں میں ٹھہرا۔ دونوں طرف کے گاؤں میں بھی گیا۔ اور جو لوگ ابھی تک گاؤں میں رہ رہے تھے اُن کی حالت دیکھی اور اُن سے باتیں کیں۔ اُن سب دُکھ بھری کہانیوں کو یہاں دُہرانا نہ تو ممکن ہی ہے اور نہ اُس سے کوئی فائدہ۔ پر سب کچھ سُننے اور دیکھنے کے بعد میرا اندازہ ہے کہ دونوں طرف ملا کر کل ایسے لوگوں کی تعداد جنھیں مار ڈالا گیا پانچ لاکھ کے قریب ضرور ہے۔ اربوں روپئے کا مال لُٹا یا برباد ہوا۔ جو عورتیں اُن کے گھر والوں سے زبردستی چھین لی گئیں اور جو لوگ زبردستی دوسرے دھرم میں لائے گئے اُن کی تعداد بھی کم سے کم پچیس پچیس ہزار ضرور ہوگی۔ میں یہ اندازہ بہت سے ضلع افسروں، لیے زان افسروں اور دونوں سرکاروں کے وزیروں سے باتیں کرنے کے بعد لگا رہا ہوں۔ اِن سے زیادہ کالے پاپوں کی بات تو چھوڑ ہی دینی چاہیئے۔

رہی سارے پنجاب کی سماجی، تجارتی، کاروباری اور مالی زندگی۔ اِس سب پر بھی برسوں کے لئے مٹی چھِت گئی۔ لاہور کا شہر اِس ملک کے خوش حال سے خوش حال، سُندر سے سُندر اور بڑے سے بڑے شہروں میں سے تھا۔ کچھ لوگ حال میں لاہور کو ہندستان کا پیرس کہنے لگے تھے۔ ہندوؤں اور مسلمانوں کی آبادی وہاں قریب قریب برابر تھی۔ مسلمان ہندوؤں سے کہنے بھر کے لئے مشکل سے ایک فی صدی زیادہ تھے۔ بیوپار اور تجارت بہت کر ہندوؤں کے ہاتھوں میں تھی۔ میں لاہور شہر کی چہار دیواری کے اندر گلی گلی پیدل گھوما۔ آج لاہور کا کم سے

(۶۰۳)

म दो तिहाई हिस्सा खंडहर पड़ा हुआ है. इन खंडहरों के लगातार तलसिलों को देखकर मुझे सन् ३४ के भूडोल के बाद मुज़फ्फ़रपुर ौर मुंगेर याद आ गए. दोनों धर्मों के लोगों ने जोश से अंधे होकर क दूसरे की गलियों और मोहल्लों को आग लगा दी. नतीजा ो होना था वही हुआ. पंजाब की यह हज़ारों बरस की पुरानी ाजधानी आज वीरान दिखाई दे रही है.

मैं अमृतसर के बाजारों और गलियों में से भी निकला. अमृत-रर की हालत लाहौर से भी ज्यादा दर्दनाक है. लाहौर में हिन्दू फ़्यूजी कैम्प के अलावा कम से कम कई सौ और हिन्दू उस वक़्त भी गिने जा सकते थे. इनमें से भी ज्यादातर अपने अपने घरों में कम या ज्यादा क़ैदियों की तरह रह रहे हैं. उनमें से किसी के लिये हिन्दू शकल में गलियों में घूमना खतरे से खाली नहीं था. कोई कोई हिन्दू दुकान भी खुली हुई थी और वहाँ की सरकार की मदद से कुछ नई हिन्दू दुकानें खुलती जा रही थीं. पर अमृतसर में तो सिवाय पच्छिमी पंजाब के लियेज़ान अफ़सर और उसके दो एक नौकरों के. जिनके लिये अपने मकान के कम्पाउन्ड से बाहर निकल कर घूमना आसान काम नहीं था. शायद और कोई मुसलमान नहीं मिल सकता था. अमृतसर म्यूनिसिपैलिटी के एक अफ़सर ने मुझे बताया कि अमृतसर की चुंगी की आमदनी क़रीब साढ़े चार लाख रुपए सालाना होती थी. इस साल उनका अन्दाज़ा है कि इस मद की आमदनी पच्चीस हज़ार से तीस हज़ार रुपए तक होगी. लग भग सब बड़े बड़े हिन्दू व्यापारी अमृतसर छोड़ कर चले गए या जा रहे हैं. एक तो

کم دو تہائی حصہ کھنڈر پڑا ہوا ہے۔ اِن کھنڈروں کے لگاتار سلسلوں کو دیکھ کر مجھے سنہ ۳۴ کے بھونچال کے بعد مظفر پور اور مونگیر یاد آگئے۔ دونوں دھرموں کے لوگوں نے جوش سے اندھے ہوکر ایک دوسرے کی گلیوں اور محلوں کو آگ لگا دی۔ نتیجہ جو ہونا تھا وہی ہوا۔ پنجاب کی یہ ہزاروں برس کی پُرانی راجدھانی آج ویران دکھائی دے رہی ہے۔

میں امرتسر کے بازاروں اور گلیوں میں سے بھی نکلا۔ امرتسر کی حالت لاہور سے بھی زیادہ دردناک ہے۔ لاہور میں ہندو رفیوجی کیمپ کے علاوہ کم سے کم کئی سو اور ہندو اُس وقت بھی گنے جا سکتے تھے۔ اِن میں سے بھی زیادہ تر اپنے اپنے گھروں میں کم یا زیادہ قیدیوں کی طرح رہ رہے ہیں۔ اُن میں سے کسی کے لئے ہندو شکل میں گلیوں میں گھومنا خطرے سے خالی نہیں تھا۔ کوئی کوئی ہندو دُکان بھی کھلی ہوئی تھی اور وہاں کی سرکار کی مدد سے کچھ نئی ہندو دُکانیں کھلتی جا رہی تھیں۔ پر امرتسر میں تو سوائے پچھمی پنجاب کے لیےذان افسر اور اُس کے دو ایک نوکروں کے، جن کے لئے اپنے مکان کے کمپاؤنڈ سے باہر نکل کر گھومنا آسان کام نہیں تھا، شاید اور کوئی مسلمان نہیں مل سکتا تھا۔ امرتسر میونسپلٹی کے ایک افسر نے مجھے بتایا کہ امرتسر کی چنگی کی آمدنی قریب ساڑھے چار لاکھ روپئے سالانہ ہوتی تھی۔ اِس سال اُن کا اندازہ ہے کہ اِس مد کی آمدنی پچیس ہزار سے تیس ہزار روپئے تک ہوگی۔ لگ بھگ سب بڑے بڑے ہندو ویاپاری امرتسر چھوڑ کر چلے گئے یا جا رہے ہیں۔ ایک تو

इसलिये कि अमृतसर अब एक सरहदी बस्ती बन गया जहां वह अपने को महफ़ूज़ नहीं समझते. दूसरी दुख की बात यह भी है कि वहाँ सिक्खों और हिन्दुओं में झगड़े शुरू हो गए हैं और आगे बढ़ने का डर है. यह सब व्यापारी दिल्ली और बम्बई में बस रहे हैं. जानकारों का ख़याल है कि लाहौर या अमृतसर को अपनी पुरानी हालत में पहुँचने के लिये कम से कम तीस तीस बरस लगेंगे. कुछ का यह भी ख़याल है कि जब कि लाहौर फिर एक बार ख़ुशहाल, तिजारती और तालीमी शहर बन सकता है अमृतसर अब नहीं पनप सकता. अगर कोई ख़ास नई बात न हुई तो अमृतसर अब शायद हमेशा के लिये सरहद पर की एक सिक्ख फ़ौजी छावनी रह जायेगा. कम या ज़्यादा यही दुर्दशा देहात और दूसरे शहरों की है. पूरबी और पच्छिमी पंजाब दोनों में गाँव के गाँव उजड़े पड़े हैं. घर जले पड़े हैं. डंगर इधर उधर घूम रहे हैं. कोई रखवाली करने वाला नहीं. फ़सलें खड़ी हैं कोई काटने वाला नहीं. खेत हैं पर कोई जोतनेवाला नहीं. तिजारत और दस्तकारियाँ मलियामेट हो गईं क्यों कि हिन्दू मुसलमानों और सिक्खों तीनों की ज़िन्दगी एक दूसरे में गुथी हुई थी. एक दस्तकारी एक के हाथ में थी तो दूसरी दूसरे के हाथों में. लाहौर की एक गली में मुसलमान दर्ज़ियों ने मुझ से शिकायत की कि उनके बच्चे भूके मर रहे हैं क्यों कि कपड़ा बेचने वाला हिन्दू दूकानदार भी चला गया और कपड़ा सिलवाने वाले गाहक भी मिट गए.

अब रही क़ाफ़िलों की बात. जो मर्द औरत और बच्चे इन

اِس لئے کہ امرتسر اب ایک سرحدی بستی بن گیا جہاں وہ اپنے کو محفوظ نہیں سمجھتے۔ دوسری دُکھ کی بات یہ بھی ہے کہ وہاں سِکھوں اور ہندوؤں میں جھگڑے شروع ہو گئے ہیں اور آگے بڑھنے کا ڈر ہے۔ یہ سب ویاپاری دلی اور بمبئی میں بس رہے ہیں۔ جانکاروں کا خیال ہے کہ لاہور امرتسر کو اپنی پرانی حالت میں پہنچنے کے لئے کم سے کم تیس تیس برس لگیں گے۔ کچھ کا یہ بھی خیال ہے کہ جب کہ لاہور پھر ایک بار خوش حال، تجارتی اور تعلیمی شہر بن سکتا ہے امرتسر اب نہیں پنپ سکتا۔ اگر کوئی خاص نئی بات نہ ہوئی تو امرتسر اب شاید ہمیشہ کے لئے سرحد پر کی ایک سِکھ فوجی چھاؤنی رہ جاوے گا۔ کم یا زیادہ یہی دُردشا دیہات اور دوسرے شہروں کی ہے۔ پوربی اور پچھمی پنجاب دونوں میں گانوؤں کے گانوؤں اُجڑے پڑے ہیں۔ گھر جلے پڑے ہیں۔ ڈنگر اِدھر اُدھر گھوم رہے ہیں، کوئی رکھوالی کرنے والا نہیں۔ فصلیں کھڑی ہیں کوئی کاٹنے والا نہیں۔ کھیت ہیں پر کوئی جوتنے والا نہیں۔ تجارت اور دست کاریاں ملیا میٹ ہو گئیں کیونکہ ہندو مسلمانوں اور سِکھوں تینوں کی زندگی ایک دوسرے میں گُتھی ہوئی تھی۔ ایک دست کاری ایک کے ہاتھ میں تھی تو دوسری دوسرے کے ہاتھوں میں۔ لاہور کی ایک گلی میں مسلمان درزیوں نے مجھ سے شکایت کی کہ اِن کے بچّے بھوکے مر رہے ہیں کیونکہ کپڑا بیچنے والا ہندو دُکان دار بھی چلا گیا اور کپڑا سِلوانے والے گاہک بھی مِٹ گئے۔

اب رہی قافلوں کی بات۔ جو مرد عورت اور بچّے اِن

ज़ों में जाते हुए मिलते हैं उनके दुखों को बयान कर सकना मकिन है. बड़ी बड़ी आबादियों को इधर से उधर ले जाना ही है जैसे कोई लाखों बड़े बड़े तनेदार दरख़्तों को एक ह से उखाड़ कर सैकड़ों मील दूर ले जा कर दूसरी जगह ने की कोशिश करे. और उन्हें उखाड़ा भी गया हो बेदर्दी साथ. ज़ाहिर है इनमें से बहुत से पेड़ रास्ते ही में मर जायंगे. आख़ीर तक पहुँच जावेंगे उनमें से भी बहुत से नई आबहवा सूख कर ख़त्म हो जावेंगे. और जहाँ से यह दरख़्त उखाड़े थे वहाँ उनके आसपास और बीच बीच के दूसरे दरख़्तों की ड़ें भी हिले बिना नहीं रहसकतीं. उनमें से भी बहुत से मरेंगे. नों तरफ़ सिवाय बरबादी और तबाही के दूसरा नतीजा नहीं सकता. पूरबी और पच्छिमी पंजाब दोनों की इस वक़्त क यही हालत है.

अमृतसर और लाहौर के बीच में हमें सड़क के दोनों तरफ़ ज़ारों छोटे छोटे टीले दिखाई दिये जिन पर अभी कच्ची मिट्टी ड़ी हुई थी. मैंने पूछा यह क्या हैं. मालूम हुआ वह उन रेफ़्यूजियों की क़ब्रें थीं जो रास्ते में मर गए. उनमें एक एक आदमी की क़ब्रें शायद कम ही रही होंगी. उन सब क़ब्रों में एक एक में कई कई आदमी दफ़न थे.

दस या ग्यारह ट्रकों का एक छोटा सा क़ाफ़ला पच्छिम से आ रहा था. ट्रकों में नीचे असबाब भरा हुआ था और असबाब के ऊपर एक दूसरे से सट कर मर्द औरत और बच्चे किसी तरह बैठे हुए थे. इन चलते हुए ट्रकों पर रास्ते में पाँच औरतों के बच्चे हुए.

قافلوں میں جاتے ہوئے ملتے ہیں اُن کے دُکھوں کو بیان کرسکنا ناممکن ہے. بڑی بڑی آبادیوں کو اِدھر سے اُدھر لے جانا ایسا ہی ہے جیسے کوئی لاکھوں بڑے بڑے تنے دار درختوں کو ایک جگہ سے اُکھاڑ کر سیکڑوں میل دُور لے جاکر دوسری جگہ لگانے کی کوشش کرے اور اُنھیں اُکھاڑا بھی گیا ہو بے دردی سے ساتھ. ظاہر ہے اِن میں سے بہت سے پیڑ راستے ہی میں مر جائیں گے. جو آخر تک پہنچ جاویں گے اُن میں سے بھی بہت سے نئی آب و ہوا میں سوکھ کر ختم ہوجاویں گے. اور جہاں سے یہ درخت اُکھاڑے گئے تھے وہاں اُن کے آس پاس اور بیچ بیچ کے دوسرے درختوں کی جڑیں بھی ہلے بنا نہیں رہ سکتیں. اُن میں سے بھی بہت سے مریں گے. دونوں طرف سوائے بربادی اور تباہی کے دوسرا نتیجہ نہیں ہوسکتا. پوربی اور پچھمی پنجاب دونوں کی اِس وقت ٹھیک یہی حالت ہے.

امرتسر اور لاہور کے بیچ میں ہمیں سڑک کے دونوں طرف ہزاروں چھوٹے چھوٹے ٹیلے دکھائی دئے جن پر ابھی کچی مٹی پڑی ہوئی تھی. میں نے پوچھا یہ کیا ہیں. معلوم ہوا وہ اُن رفیوجیوں کی قبریں تھیں جو راستے میں مرگئے. اُن میں ایک ایک آدمی کی قبریں شاید کم ہی رہی ہوں گی. اُن سب قبروں میں ایک ایک میں کئی کئی آدمی دفن تھے.

دس یا گیارہ ٹرکوں کا ایک چھوٹا سا قافلہ پچھم سے آ رہا تھا. ٹرکوں میں نیچے اسباب بھرا ہوا تھا اور اسباب کے اوپر ایک دوسرے سے سٹ کر مرد عورت اور بچے کسی طرح بیٹھے ہوئے تھے. اِن چلتے ہوئے ٹرکوں پر راستے میں پانچ عورتوں کے بچے ہوئے

मैं उस वक़्त लाहौर रेफ़्यूजी कैम्प में था. जब ट्रक लाहौर पहुँचे तो चार औरतों के बच्चे किसी तरह सही सालिम मिल गए. पाँचवें बच्चे का पता नहीं चला कि वह चलते ट्रक से कहीं गिर गया या कुचल गया. ख़ुशक़िस्मती से सर गंगाराम अस्पताल अभी तक लाहौर में थोड़ा बहुत काम कर रहा था. जच्चा और बच्चे सब वहाँ भेज दिये गए.

अमृतसर से लाहौर मोटर में जाते हुए व्यास नदी के बाएँ किनारे के पास हमें एक बड़ा मैदान दिखाई दिया जिसमें मिट्टी के अन्दर से जगह जगह टूटे हुए ट्रंक, बिस्तर और गठरियाँ मुंह बा रहे थे. पूछा यह क्या है. तो मालूम हुआ कि पूरब की तरफ़ से तीस चालीस हज़ार का एक क़ाफ़ला आ रहा था. २८ सितम्बर की शाम को उस क़ाफ़ले ने इस मैदान में डेरा डाला. उन्हें पता न था कि वह मैदान नीचा था और उसके एक तरफ़ व्यास नदी और दूसरी तरफ़ एक और छोटी सी नदी थी उसी रात दोनों नदियों में बाढ़ आई और क़ाफ़ले के एक एक बच्चे को बहा कर ले गई.

शायद दुनिया के सारे इतिहास में इनसानी समाज पर इतना बड़ा ज़ुल्म या इनसानियत के ख़िलाफ़ इतना बड़ा पाप आज तक कोई नहीं हुआ जितना आज के हिन्दुस्तान में इन बड़ी बड़ी आबादियों का एक जगह से दूसरी जगह भेजा जाना यह कहना कुछ मुश्किल है कि इस पाप की ज़िम्मेवारी किस पर है. मुझे कई बार यह ख़याल आया कि इन्हीं मुसीबतज़दा रिफ़्यूजियों के चुने हुए कुछ सीधे सादे, नेक और समझदार नुमाइन्दों की एक अदालत [illegible]

میں اُس وقت لاہور رفیوجی کیمپ میں تھا. جب ٹرک لاہور پہنچے تو چار عورتوں کے بچے کسی طرح صحیح سالم مل گئے. پانچویں بچے کا پتہ نہیں چلا کہ وہ چلتے ٹرک سے کہیں گر گیا یا کچل گیا. خوش قسمتی سے سر گنگا رام اسپتال ابھی تک لاہور میں تھوڑا بہت کام کر رہا تھا. زچہ اور بچے سب وہاں بھیج دئے گئے.

امرتسر سے لاہور موٹر میں جاتے ہوئے ویاس ندی کے بائیں کنارے کے پاس ہمیں ایک بڑا میدان دکھائی دیا جس میں مٹی کے اندر سے جگہ جگہ ٹوٹے ہوئے ٹرنک، بستر اور گٹھریاں مُنہ با رہے تھے. پوچھا یہ کیا ہے. تو معلوم ہوا کہ پورب کی طرف سے تیس چالیس ہزار کا ایک قافلہ آ رہا تھا. ۲۸ ستمبر کی شام کو اُس قافلے نے اِس میدان میں ڈیرا ڈالا. اُنھیں پتہ نہ تھا کہ وہ میدان نیچا تھا اور اُس کے ایک طرف ویاس ندی اور دوسری طرف ایک اور چھوٹی سی ندی تھی. اُسی رات دونوں ندیوں میں باڑھ آئی اور قافلے کے ایک ایک بچے کو بہا کر لے گئی.

شاید دُنیا کے سارے اتہاس میں انسانی سماج پر اِتنا بڑا ظُلم یا انسانیت کے خلاف اِتنا بڑا پاپ آج تک کوئی نہیں ہوا جتنا آج کے ہندستان میں اِن بڑی بڑی آبادیوں کا ایک جگہ سے دوسری جگہ بھیجا جانا. یہ کہنا کچھ مشکل ہے کہ اِس پاپ کی ذمّےواری کس پر ہے. مجھے کئی بار یہ خیال آیا کہ اِنھیں مصیبت زدہ رفیوجیوں کے چُنے ہوئے کچھ سیدھے سادے، نیک اور سمجھ دار نمائندوں کی ایک عدالت بنائی جائے اور اُس کے سامنے ہمارے ملک کی سب پارٹیوں کے کچھ

दिन मास्टर तारासिंह ने लाहौर में वह मशहूर तक़रीर की जिसमें उन्होंने क़सम खाई कि मैं मुसलिम लीग की मिनिस्ट्री हरगिज़ बनने नहीं दूंगा. उसी दिन लाहौर में हिन्दू विद्यार्थियों का एक बहुत बड़ा जलूस निकला जिसमें लीग और पाकिस्तान दोनों के ख़िलाफ़ तरह तरह के नारे लगाए गए. चार मार्च की शाम को लाहौर में कुछ फ़िसाद हुआ जिसमें पाँच सात मुसलमान मारे गए. यह गोलमाल तीन चार दिन चलता रहा. उसी वक़्त इसी तरह की गड़बड़ अमृतसर में हुई. उसके बाद इससे कहीं ज्यादा बढ़ कर ख़ून ख़राबा रावलपिन्डी, मियाँवाली, मुलतान, डेरागाज़ी ख़ां और कुछ और सरहदी ज़िलों में हुआ. कहा जाता है कि सरहदी सूबे के कुछ मुसलिम वालंटियर बिहार गए थे. उन्होंने वहाँ से उन मुसलमानों की कुछ हड्डियाँ लाकर जो बिहार में मारे गए थे उनकी मालाएं बना कर सरहदी सूबे के शहरों और गावों में लोगों को दिखलाईं. रावलपिन्डी में और सरहद के कुछ ज़िलों मे काफ़ी शर्मनाक वारदातें हुईं. पर यह मानना पड़ेगा कि लाहौर बहुत दरजे तक शान्त रहा. लाहौर पर न बिहार का ज्यादा असर हुआ, न रावलपिन्डी का. लाहौर और अमृतसर में फ़िसाद उस वक़्त बढ़ा जब कि आधी मई के क़रीब पंजाब के दो टुकड़े किये जाने पर गरमागरम बहसें होने लगीं. वजह साफ़ थी. इन दोनों शहरों के हिन्दुओं और मुसलमानों दोनों को इस बात का फ़िक्र हुआ कि उनका शहर पाकिस्तान में जायगा या हिन्दुस्तान में. इस घबराहट और कोशिश में किसने ज्यादा पाप किये इसका अब पता लगाने [illegible] जाता है कि जब अमृतसर में एक मज़हब

دن ماسٹر تاراسنگھ نے لاہور میں وہ مشہور تقریر کی جس میں اُنھوں نے قسم کھائی کہ میں مسلم لیگ کی منسٹری ہرگز بننے نہیں دوں گا. اُسی دن لاہور میں ہندو ودیارتھیوں کا ایک بہت بڑا جلوس نکلا جس میں لیگ اور پاکستان دونوں کے خلاف طرح طرح کے نعرے لگائے گئے. چار مارچ کی شام کو لاہور میں کچھ فساد ہوا جس میں پانچ سات مسلمان مارے گئے. یہ گول مال تین چار دن چلتا رہا. اُسی وقت اِسی طرح کی گڑبڑ امرتسر میں ہوئی. اُس کے بعد اِس سے کہیں زیادہ بڑھ کر خون خرابہ راولپنڈی، میانوالی، ملتان، ڈیرہ غازی خاں اور کچھ اور سرحدی ضلعوں میں ہوا. کہا جاتا ہے کہ سرحدی صوبے کے کچھ مسلم والنٹیر بہار گئے تھے. اُنھوں نے وہاں سے اُن مسلمانوں کی کچھ ہڈیاں لاکر جو بہار میں مارے گئے تھے اُن کی مالائیں بناکر سرحدی صوبے کے شہروں اور گاؤں میں لوگوں کو دکھلائیں. راولپنڈی میں اور سرحد کے کچھ ضلعوں میں کافی شرمناک وارداتیں ہوئیں. پر یہ ماننا پڑے گا کہ لاہور بہت درجے تک شانت رہا. لاہور پر نہ بہار کا زیادہ اثر ہوا، نہ راولپنڈی کا. لاہور اور امرتسر میں فساد اُس وقت بڑھا جب کہ آدھی مئی کے قریب پنجاب کے دو ٹکڑے کئے جانے پر گرماگرم بحثیں ہونے لگیں. وجہ صاف تھی. اِن دونوں شہروں کے ہندوؤں اور مسلمانوں دونوں کو اِس بات کا فکر ہوا کہ اُن کا شہر پاکستان میں جائے گا یا ہندستان میں. اِس گھبراہٹ اور کوشش میں کس نے زیادہ پاپ کئے اِس کا اب پتہ لگانے میں کوئی فائدہ نہیں. کہا جاتا ہے کہ جب امرتسر میں ایک مذہب

लोगों पर ज़ुल्म हुए और लाहौर में उसका कोई बदला नहीं ाया जा रहा था तो अमृतसर वालों ने अपने लाहौर के हम-ज़हबों के पास कुछ 'चूड़ियाँ' और 'मेंहदी' भेजी. मतलब साफ़ ा. आग बढ़ती चली गई. तीन जून के ऐलान से इस आग पर ौर भी तेल पड़ गया. लाहौर में २१ जून के क़रीब यह आफ़त नपने पूरे जोर पर थी. उसी दिन शाह आलमी दरवाज़े के अन्दर ी शानदार इमारतें जला कर ख़ाक करदी गईं. मुक़ामी सरकारी अफ़सर तब ही साफ़ एक फ़िरक़े की तरफ़दारी करते और तरह तरह के जुर्मों में हिस्सा लेते दिखाई देने लगे. लाहौर और अमृतसर के यह फ़िसाद क़रीब क़रीब साथ साथ चल रहे थे. २७ जून की शाह आलमी की आग के बाद से हिन्दू लाहौर से भागने शुरू होगए. फिर भी लाहौर से हिन्दुओं की जबरदस्त आम भगदड़ १५ अगस्त के बाद शुरू हुई. १७ अगस्त को बाउन्डरी कमीशन का फ़ैसला हुआ. उस दिन से तेज़ी के साथ लाहौर एक ख़ालिस मुसलिम शहर और अमृतसर एक ख़ालिस हिन्दू सिक्ख शहर बनता चला गया क्योंकि लाहौर में हिन्दू और अमृतसर में मुसलमान अब अपने को महफ़ूज़ नहीं समझते थे.

एक मजहब के लोगों ने दूसरे मजहब के लोगों पर क्या क्या ज़ुल्म किये इसके हजारों क़िस्से सुनने को मिले जिन्हें सुन सुन कर हद दरजे का दुख होता है. इन क़िस्सों को दोहराने से कोई फ़ायदा नहीं. पर एक नतीजा उनसे साफ़ निकलता है. वह यह कि कोई ऐसा पाप नहीं रहा जो मुसलमान ने न किया हो. कोई ऐसा पाप नहीं जो हिन्दू ने न किया हो. कोई ऐसा पाप नहीं जो सिक्ख ने न किया

کے لوگوں پر ظلم ہوئے اور لاہور میں اس کا کوئی بدلہ نہیں لیا جا رہا تھا تو امرتسر والوں نے اپنے لاہور کے ہم مذہبوں کے پاس کچھ 'چوڑیاں اور مہندی' بھیجی. مطلب صاف تھا. آگ بڑھتی چلی گئی. تین جون کے اعلان سے اس آگ پر اور بھی تیل پڑ گیا. لاہور میں ۲۱ جون کے قریب یہ آفت اپنے پورے زور پر تھی. اسی دن شاہ عالمی دروازے کے اندر کی شان دار عمارتیں جلا کر خاک کر دی گئیں. مقامی سرکاری افسر تب ہی صاف ایک فرقے کی طرفداری کرتے اور طرح طرح کے جرموں میں حصہ لیتے دکھائی دینے لگے. لاہور اور امرتسر کے یہ فساد قریب قریب ساتھ ساتھ چل رہے تھے. ۲۷ جون کی شاہ عالمی کی آگ کے بعد سے ہندو لاہور سے بھاگنے شروع ہو گئے. پھر بھی لاہور سے ہندوؤں کی زبردست عام بھگدڑ ۱۵ اگست کے بعد شروع ہوئی. ۱۷ اگست کو باؤنڈری کمیشن کا فیصلہ ہوا. اس دن سے تیزی کے ساتھ لاہور ایک خالص مسلم شہر اور امرتسر ایک خالص ہندو سکھ شہر بنتا چلا گیا کیونکہ لاہور میں ہندو اور امرتسر میں مسلمان اب اپنے کو محفوظ نہیں سمجھتے تھے.

ایک مذہب کے لوگوں نے دوسرے مذہب کے لوگوں پر کیا کیا ظلم کئے اس کے ہزاروں قصے سننے کو ملے جنھیں سن سن کر حد درجے کا دکھ ہوتا ہے. ان قصوں کو دہرانے سے کوئی فائدہ نہیں. پر ایک نتیجہ ان سے صاف نکلتا ہے. وہ یہ کہ کوئی ایسا پاپ نہیں رہا جو مسلمان نے نہ کیا ہو. کوئی ایسا پاپ نہیں جو ہندو نے نہ کیا ہو. کوئی ایسا پاپ نہیں جو سکھ نے نہ کیا

हो. जब कभी किसी ख़ास तरह के पाप या जुर्म की ख़बर, सच्ची या झूटी, एक तरफ़ से दूसरी तरफ़ पहुँचती थी तो दूसरी तरफ़ वाले ठीक उसी तरह का जुर्म अपने यहाँ के दूसरी जमात वालों पर कर डालते थे, और फिर अगर वह ख़बर झूटी होती थी तो अब पहली तरफ़ भी ठीक उसी तरह का जुर्म कर डाला जाता था चाहे वह जुर्म कितना ही गन्दा और बुरा क्यों न हो. इस तरह एक शैतानी चक्कर के अन्दर दूसरा शैतानी चक्कर बन जाता था. दोनों तरफ़ दिखाई दे जाता था कि आदमी कितना गिर सकता है. यह भी साफ़ पता चल गया कि ऊपर के नामों या अलग अलग मजहबों के साइन बोर्डों से हमारे स्वभाव और चलन में कोई ख़ास फ़रक़ नहीं पड़ता.

इस तसवीर का एक दूसरा भी पहलू है. जब हम लाहौर की गलियों में घूम रहे थे लगभग हर गली में सैकड़ों आदमी हमारे चारों तरफ़ जमा हो गये. वह सब मुसलमान थे. उनमें मर्द, औरत, बच्चे, बूढ़े, अमीर, ग़रीब, पढ़े, बेपढ़े सब तरह के आदमी थे. हमारी उन सब से खुल कर बातें हुईं. कुछ ही दिन पहले लाहौर यूनिवर्सिटी के एक बहुत नेक प्रोफ़ेसर डा० अब्दुल्ला ने मुझसे कहा था कि जो जो ज़ुल्म लाहौर में हो चुके हैं उन पर शहर के कम से कम चालीस फ़ी सदी आदमियों को अफ़सोस है और वह फिर से अपने हिन्दू भाइयों के साथ मिल कर अमन से रहना चाहते हैं. मैंने अपने शहर में घूमने के वक़्त महसूस किया कि चालीस फ़ी सदी से बहुत ज़्यादा लोगों के दिलों की यही हालत थी. पूरबी पंजाब और पच्छिमी पंजाब दोनों के और सब हिस्सों में भी मैंने यही पाया. इसमें कुछ

ہو. جب کبھی کسی خاص طرح کے پاپ یا جُرم کی خبر، سچی یا جھوٹی، ایک طرف سے دوسری طرف پہنچتی تھی تو دوسری طرف والے ٹھیک اُسی طرح کا جُرم اپنے یہاں کے دوسری جماعت والوں پر کر ڈالتے تھے، اور پھر اگر وہ خبر جھوٹی ہوتی تھی تو اب پہلی طرف بھی ٹھیک اُسی طرح کا جُرم کر ڈالا جاتا تھا چاہے وہ جُرم کتنا ہی گندہ اور بُرا کیوں نہ ہو. اِس طرح ایک شیطانی چکّر کے اندر دوسرا شیطانی چکّر بن جاتا تھا. دونوں طرف دکھائی دے جاتا تھا کہ آدمی کتنا گر سکتا ہے. یہ بھی صاف پتہ چل گیا کہ اوپر کے ناموں یا الگ الگ مذہبوں کے سائن بورڈوں سے ہمارے سوبھاو اور چلن میں کوئی خاص فرق نہیں پڑتا.

اِس تصویر کا ایک دوسرا بھی پہلو ہے. جب ہم لاہور کی گلیوں میں گھوم رہے تھے لگ بھگ ہر گلی میں سیکڑوں آدمی ہمارے چاروں طرف جمع ہو گئے. وہ سب مسلمان تھے. اُن میں مرد، عورت، بچّے، بوڑھے، امیر، غریب، پڑھے، بےپڑھے سب طرح کے آدمی تھے. ہماری اُن سب سے کھُل کر باتیں ہوئیں. کچھ ہی دن پہلے لاہور یونیورسٹی کے ایک بہت نیک پروفیسر ڈاکٹر عبداللہ نے مجھ سے کہا تھا کہ جو جو ظلم لاہور میں ہو چکے ہیں اُن پر شہر کے کم سے کم چالیس فی صدی آدمیوں کو افسوس ہے اور وہ پھر سے اپنے ہندو بھائیوں کے ساتھ مل کر امن سے رہنا چاہتے ہیں. میں نے اپنے شہر میں گھومنے کے وقت محسوس کیا کہ چالیس فی صدی سے بہت زیادہ لوگوں کے دلوں کی یہی حالت تھی. پوربی پنجاب اور پچھمی پنجاب دونوں کے اور سب حصّوں میں بھی میں نے یہی پایا. اِس میں کچھ

भी शक नहीं हो सकता कि पाकिस्तान में मुसलमानों और हिन्दुस्तान में हिन्दुओं और सिक्खों की बहुत बड़ी तादाद इन आपसी झगड़ों को पसन्द नहीं करती और दूसरे मजहब के लोगों के साथ मिल जुल कर अमन से रहना चाहती है. मुझे यक़ीन है कि इन कुल लोगों की तादाद जिन्होंने इस तमाम क़त्ल, लूट वग़ैरह में हिस्सा लिया कुल आबादी का एक फ़ी सदी से ज्यादा नहीं थी. इसका मतलब है एक लाख की आबादी में एक हज़ार आदमी. इतने आदमी सारी आबादी के अमन को ख़त्म कर देने, शहर को वीरान कर देने और सारे शहर को लाशों से पाट देने के लिये काफ़ी हैं. यही बात देहात में थी. मेरा अन्दाज़ा है कि लाहौर शहर में छुरे चलाने वालों की कुल तादाद किसी वक़्त भी दो सौ से ज्यादा नहीं रही. शायद किसी वक़्त ज्यादा से ज्यादा रही होगी तो सौ और दो सौ के बीच में. यही बात अमृतसर के बारे में कही जा सकती है. इनके अलावा हर जगह दस बीस फ़ी सदी आबादी ऐसी भी थी जिनका ख़ून दूसरी तरफ़ के जुल्मों की कहानियां सुन सुन कर खौलता रहता था और इसीलिये जिन्हें अपनी तरफ़ के मुजरिमों के साथ थोड़ी बहुत हमदर्दी थी. लेकिन जैसा आम तौर पर ऐसे मौक़ों पर होता है लाखों और करोड़ों अमन पसन्द जनता की न आवाज़ सुनाई देती थी, न उनका कोई संगठन था और न वह कुछ कर पाते थे.

दूसरी बात ध्यान देने की यह है कि जब कि यह कई हज़ार आदमी तरह तरह के जुर्मों में लगे हुए थे, पूर्वी पंजाब और पच्छिमी पंजाब दोनों जगह हज़ारों ही लोग ऐसे थे जो ठीक उसी आफ़त के समय अपनी अपनी जान पर खेल कर दूसरे मज़हब

بھی شک نہیں ہوسکتا کہ پاکستان میں مسلمان اور ہندستان میں ہندوؤں اور سکھوں کی بہت بڑی تعداد ان آپسی جھگڑوں کو پسند نہیں کرتی اور دوسرے مذہب کے لوگوں کے ساتھ مل جل کر امن سے رہنا چاہتی ہے۔ مجھے یقین ہے کہ ان کل لوگوں کی تعداد جنھوں نے اس تمام قتل، لوٹ وغیرہ میں حصہ لیا کل آبادی کا ایک فی صدی سے زیادہ نہیں تھی۔ اس کا مطلب ہے ایک لاکھ کی آبادی میں ایک ہزار آدمی۔ اتنے آدمی ساری آبادی کے امن کو ختم کردینے، شہر کو ویران کردینے اور سارے شہر کو لاشوں سے پاٹ دینے کے لئے کافی ہیں۔ یہی بات دیہات میں تھی۔ میرا اندازہ ہے کہ لاہور شہر میں چھرے چلانے والوں کی کل تعداد کسی وقت بھی دو سو سے زیادہ نہیں رہی۔ شاید کسی وقت زیادہ سے زیادہ رہی ہوگی تو سو اور دو سو کے بیچ میں۔ یہی بات امرتسر کے بارے میں کہی جاسکتی ہے۔ ان کے علاوہ ہر جگہ دس بیس فی صدی آبادی ایسی بھی تھی جن کا خون دوسری طرف کے ظلموں کی کہانیاں سن سن کر کھولتا رہتا تھا اور اسی لئے جنھیں اپنی طرف کے مجرموں کے ساتھ تھوڑی بہت ہمدردی تھی۔ لیکن جیسا عام طور پر ایسے موقعوں پر ہوتا ہے لاکھوں اور کروڑوں امن پسند جنتا کی نہ آواز سنائی دیتی تھی، نہ ان کا کوئی سنگٹھن تھا اور نہ وہ کچھ کر پاتے تھے۔

دوسری بات دھیان دینے کی یہ ہے کہ جب کہ یہ کئی ہزار آدمی طرح طرح کے جرموں میں لگے ہوئے تھے، پوربی پنجاب اور پچھمی پنجاب دونوں جگہ ہزاروں ہی لوگ ایسے تھے جو ٹھیک اسی آفت کے سمے اپنی اپنی جان پر کھیل کر دوسرے

वालों की जान और इज़्ज़त बचाने की कोशिशों में लगे हुए थे. पच्छिमी पंजाब में इस तरह के नेक और बहादुर मुसलमानों और पूरबी पंजाब में ऐसे ही नेक और बहादुर हिन्दुओं और सिक्खों की तादाद हज़ारों तक गिनी जा सकती है. हमने यह क़िस्से उन लोगों के मुँह से सुने जिनकी जानें या जिनकी आबरू बचाई गई थी. हम जब चकवाल पहुँचे तो आसपास के गांव से भाग कर आए हुए सैकड़ों हिन्दुओं और सिक्खों ने हमें घेर लिया. उन्होंने इस बात पर ज़िद की कि मैं उनके हर गांव की बीती सुनूं और लिख लूँ. मैंने ऐसा ही किया. हर जगह वही कहानी—हमला हुआ, कुछ लोग मार डाले गए, कुछ घर जला दिये गए, कुछ माल लूट लिया गया, कुछ औरतें भगाई गईं, और गांव के बाक़ी हिन्दू और सिक्ख गांव छोड़ कर चले आये. इनमें से लगभग हर गांव वालों ने कोई न कोई इस तरह का हाल भी सुनाया कि हर जगह किसी न किसी नेक मुसलमान ने अपने हम मज़हबों की भीड़ का सामना करके किसी न किसी हिन्दू या सिक्ख पड़ौसी की जान या उसके माल या उसकी इज़्ज़त को बचाया. इस तरह के क़िस्से उन लोगों ने सवाल करने पर या जिरह करने पर नहीं सुनाए. यह क़िस्से उनकी ज़बान से ख़ुद ब ख़ुद और क़ुदरती तौर पर निकले. पूर्वी पंजाब से घर बार छोड़ कर आए हुए मुसलिम रेफ़्यूजियों ने भी वहाँ के हज़ारों हिन्दुओं और सिक्खों के इसी तरह के नेक कारनामे सुनाए.

लाहौर में डा० गुरबख़्श राय नाम के एक बहुत ही नेक सज्जन से मेरी मुलाक़ात हुई. वह शहर से और आसपास के ... मुसलिम घरों से उन हिन्दू औरतों को निकालने के काम

(६३६)

والوں کی جان اور عزّت بچانے کی کوششوں میں لگے ہوئے تھے. پچھمی پنجاب میں اِس طرح کے نیک اور بہادر مسلمانوں اور پوربی پنجاب میں ایسے ہی نیک اور بہادر ہندوؤں اور سِکھوں کی تعداد ہزاروں تک گنی جاسکتی ہے. ہم نے یہ قصّے اُن لوگوں کے مُنہ سے سُنے جن کی جانیں یا جن کی آبرو بچائی گئی تھی. ہم جب چکوال پہنچے تو آس پاس کے گانوں سے بھاگ کر آئے ہوئے سیکڑوں ہندوؤں اور سِکھوں نے ہمیں گھیر لیا. اُنھوں نے اِس بات پر ضد کی کہ میں اُن کے ہر گانوں کی بیتی سُنوں اور لکھ لوں. میں نے ایسا ہی کیا. ہر جگہ وہی کہانی— حملہ ہوا، کچھ لوگ مار ڈالے گئے، کچھ گھر جلا دئے گئے، کچھ مال لوٹ لیا گیا، کچھ عورتیں بھگائی گئیں، اور گانوں کے باقی ہندو اور سِکھ گانوں چھوڑ کر چلے آئے. اِن میں سے لگ بھگ ہر گانوں والوں نے کوئی نہ کوئی اِس طرح کا حال بھی سُنایا کہ ہر جگہ کسی نہ کسی نیک مسلمان نے اپنے ہم مذہبوں کی بھیڑ کا سامنا کرکے کسی نہ کسی ہندو یا سِکھ پڑوسی کی جان یا اُس کے مال یا اُس کی عزّت کو بچایا. اِس طرح کے قصّے اُن لوگوں نے سوال کرنے پر یا جرح کرنے پر نہیں سُنائے. یہ قصّے اُن کی زبان سے خود بخود قدرتی طور پر نکلے. پوربی پنجاب سے گھر بار چھوڑ کر آئے ہوئے مسلم رفیوجیوں نے بھی وہاں کے ہزاروں ہندوؤں اور سِکھوں کے اِسی طرح کے نیک کارنامے سُنائے.

لاہور میں ڈاکٹر گُربخش رائے نام کے ایک بہت ہی نیک سجن سے میری ملاقات ہوئی. وہ شہر سے اور آس پاس کے دیہات کے مُسلم گھروں سے اُن ہندو عورتوں کو نکالنے کے کام

(۶۳۶)

मैं लगे हुए थे जिन्हें मुसलमान जबरदस्ती भगा ले गए थे. डा० गुरबख्श राय ने मुझसे कहा और मैंने खुद भी देखा कि उन्हें आकर यह खबरें देने वाले कि फ़लाँ गाँव में या फ़लाँ घर में कोई हिन्दू औरत बन्द है सब ज्यादातर मुसलमान होते थे. इन खबर देने वालों में कभी कभी औरतें भी होती थीं. इनकी सेवा सदा बिल्कुल निस्वार्थ होती थी. इनमें से कोई कोई मीलों चलकर आकर खबर देता था. अपने पड़ौस में मुसीबत ज़दा हिन्दू औरत की चीख पुकार या उसका रोना उन्होंने सुन लिया था और उनसे सहा नहीं गया. इस तरह जो औरतें मुसलिम घरों से निकाली गईं वह भी आमतौर पर किसी न किसी मुसलमान मर्द या औरत ही की मदद से निकाली जा सकीं. इस काम में हमें कुछ ऐसी औरतें भी मिलीं जो अपने नए मुसलिम घर छोड़ने को राज़ी नहीं थीं. इस तरह की दो औरतों ने लाहौर रेफ़्यूजी कैम्प तक आकर फिर वापिस जाने की ज़िद की. जब उनसे वजह पूछी गई तो उन्होंने कहा हमें डर है हमारे घर के हिन्दू हमें फिर वापिस नहीं लेंगे और अगर ले भी लेंगे तो मुमकिन है हमें मार डालें. उनके इस डर से कई हिन्दू दोस्तों की आँखें सी खुल गईं.

(४९७)

डा० गुरबख्श राय खुद बहुत ही सच्चे, बेलाग और ग़ैर-जानिबदार आदमी हैं. उनके दिमाग़ में हिन्दू मुसलमान का फ़रक़ नहीं. लाहौर के कुछ जिम्मेदार अफ़सरों ने उन्हें एक लम्बी फ़ेहरिस्त ऐसी मुसलमान औरतों की दी जिन्हें अमृतसर में या उसके आस पास हिन्दू या सिक्ख जबरदस्ती उठाकर ले गए थे और जो अभी तक हिन्दू या सिक्ख घरों में थीं. यह फ़ेहरिस्त उधर से

میں لگے ہوئے تھے جنھیں مسلمان زبردستی بھگا لے گئے تھے. ڈاکٹر گربخش رائے نے مجھ سے کہا اور میں نے خود بھی دیکھا کہ انھیں آکر یہ خبریں دینے والے کہ فلاں گانوں میں یا فلاں گھر میں کوئی ہندو عورت بند ہو سب زیادہ تر مسلمان ہوتے تھے. ان خبر دینے والوں میں کبھی کبھی عورتیں بھی ہوتی تھیں. ان کی سیوا سدا بالکل نسوارتھ ہوتی تھی. ان میں سے کوئی کوئی میلوں چل کر آکر خبر دیتا تھا. اپنے پڑوس میں مصیبت زدہ ہندو عورت کی چیخ پکار یا اس کا رونا انھوں نے سن لیا تھا اور ان سے سہا نہیں گیا. اس طرح جو عورتیں مسلم گھروں سے نکالی گئیں وہ بھی عام طور پر کسی نہ کسی مسلمان مرد یا عورت ہی کی مدد سے نکالی جاسکیں. اس کام میں ہمیں کچھ ایسی عورتیں بھی ملیں جو اپنے نئے مسلم گھر چھوڑنے کو راضی نہیں تھیں. اس طرح کی دو عورتوں نے لاہور رفیوجی کیمپ تک آکر پھر واپس جانے کی ضد کی. جب ان سے وجہ پوچھی گئی تو انھوں نے کہا ہمیں ڈر ہو کہ ہمارے گھر کے ہندو ہمیں پھر واپس نہیں لیں گے اور اگر لے بھی لیں گے تو ممکن ہو ہمیں مار ڈالیں. ان کے اس ڈر سے کئی ہندو دوستوں کی آنکھیں سی کھل گئیں.

(۴۹۷)

ڈاکٹر گربخش رائے خود بہت ہی سچے، بےلاگ اور غیر جانبدار آدمی ہیں. ان کے دماغ میں ہندو مسلمان کا فرق نہیں. لاہور کے کچھ ذمّہ دار افسروں نے انھیں ایک لمبی فہرست ایسی مسلمان عورتوں کی دی جنھیں امرتسر میں یا اس کے آس پاس ہندو یا سکھ زبردستی اٹھاکر لے گئے تھے اور جو ابھی تک ہندو یا سکھ گھروں میں تھیں. یہ فہرست ادھر سے

आए हुए उन औरतों के रिश्तेदार मुसलिम रेफ्यूजियों ने तय्यार करके दी थी. डा० गुरबख्श राय फ़ौरन इस बात के लिये राज़ी हो गए कि वह ख़ुद अमृतसर जाकर उन औरतों को निकालें और उनके मुसलमान रिश्तेदारों के हवाले कर दें. वह इस काम के लिये बेचैन दिखाई दिये. जो क़ीमती शब्द उस मौक़े पर उनके मुंह से निकले वह मेरे दिल में घर कर गए. उन्होंने कहा कि—"जब मैं मुसलमानों के हिन्दू औरतों को उठा ले जाने के क़िस्से सुनता हूँ तो मुझे तकलीफ़ होती है, पर जब मैं हिन्दुओं या सिक्खों के मुसलिम औरतों को उठा ले जाने के क़िस्से सुनता हूँ तो मुझे तक़लीफ़ भी होती है, और शर्म भी आती है." मुझे पंजाब में इसी तरह के कई बेलाग़ नेक और बहादुर भाई मिले और कई बहिनें भी मिलीं जो बहुत ही क़ीमती काम कर रहे हैं.

पंजाब की घटनाओं का एक और पहलू है जिसे बयान करना ज़रूरी है. हमारी इस तमाम मुसीबत में अंगरेज़ों का हाथ कुछ कम नहीं है. मुझे पूरा यक़ीन है कि किसी भी ग़ैर जानिबदार अदालत या कमीशन के सामने इस बात के साबित करने में कोई दिक़्क़त नहीं पड़ सकती कि जो हथियार दिल्ली के मुसलमान इस्तेमाल करने वाले थे, या पूरबी पंजाब और वहाँ की रियासतों में हिन्दुओं और सिक्खों ने इस्तेमाल किये या जो हथियार पच्छिमी पंजाब या सरहद के मुसलमानों ने इस्तेमाल किये वह सब ज़िम्मेवार अँगरेज़ अफ़सरों के ज़रिये उन तक पहुँचे थे. लायलपुर के मुसलमान डिप्टी कमिश्नर ने वहां की म्युनिस्पैलिटी के हिन्दू चेयरमैन से कहा था कि अगर कर्नल क़्लिञ्ज नाम का एक आदमी

آئے ہوئے اُن عورتوں کے رشتےدار مُسلم رفیوجیوں نے تیار کرکے دی تھی۔ ڈاکٹر گُربخش رائے فوراً اِس بات کے لئے راضی ہوگئے کہ وہ خود امرتسر جاکر اُن عورتوں کو نکالیں اور اُن کے مسلمان رشتےداروں کے حوالے کردیں۔ وہ اِس کام کے لئے بےچین دکھائی دئے۔ جو قیمتی شبد اُس موقع پر اُن کے مُنہ سے نکلے وہ میرے دل میں گھر کر گئے۔ اُنھوں نے کہا کہ—"جب میں مسلمانوں کے ہندو عورتوں کو اُٹھا لے جانے کے قصّے سُنتا ہوں تو مجھے تکلیف ہوتی ہے، پر جب میں ہندوؤں یا سکھوں کے مسلم عورتوں کو اُٹھا لے جانے کے قصّے سُنتا ہوں تو مجھے تکلیف بھی ہوتی ہے، اور شرم بھی آتی ہے۔" مجھے پنجاب میں اِسی طرح کے کئی بےلاگ نیک اور بہادر بھائی ملے اور کئی بہنیں بھی ملیں جو بہت ہی قیمتی کام کررہے ہیں۔

پنجاب کی گھٹناؤں کا ایک اور پہلو ہے جسے بیان کرنا ضروری ہے۔ ہماری اِس تمام مصیبت میں انگریزوں کا ہاتھ کچھ کم نہیں ہے۔ مجھے پورا یقین ہے کہ کسی بھی غیرجانبدار عدالت یا کمیشن کے سامنے اِس بات کے ثابت کرنے میں کوئی دقّت نہیں پڑ سکتی کہ جو ہتھیار دلی کے مسلمان استعمال کرنے والے تھے، یا پوربی پنجاب اور وہاں کی ریاستوں میں ہندوؤں اور سکھوں نے استعمال کئے یا جو ہتھیار پچھمی پنجاب یا سرحد کے مسلمانوں نے استعمال کئے وہ سب ذمےوار انگریز افسروں کے ذریعے اُن تک پہنچے تھے۔ لائل پور کے مسلمان ڈپٹی کمشنر نے وہاں کی میونسپلٹی کے ہندو چیرمین سے کہا تھا کہ اگر کرنل فلنج نام کا ایک آدمی

ज़िले से हटा लिया जाता तो वहां एक भी हिन्दू या सिख न मारा जाता और न लूटा जाता. रावलपिंडी से आने वाले इज़्ज़तदार हिन्दुओं और मुसलमानों दोनों की यह राय थी कि मार्च के महीने में वहां जो कुछ फ़िसाद हुआ उस सब की ज़िम्मेवारी वहां के डिप्टी कमिश्नर सी. एल. केट्स और होम सेक्रेटरी मैकडानल्ड पर थी. पूरबी पंजाब के एक ज़िले में जब हिन्दुओं ने यह तय कर लिया कि वह किसी मुसलमान को तकलीफ़ न देंगे तो एक अँगरेज़ फ़ौजी अफ़सर ने मीलों घोड़े पर जाकर जगह जगह कितने ही आदमियों को केवल इसलिये अपनी गोली का निशाना बनाया ताकि आग फिर से भड़क उठे. पच्छिम पंजाब के एक ज़िले में जब कुछ हिंदुओं और सिक्खों ने एक अँगरेज़ फ़ौजी कमांडर के पास जाकर उससे मदद चाही तो अँगरेज़ अफ़सर ने उनसे कहा कि आप एक अर्ज़ी लिखकर लोगों से उस पर दस्तख़त कराइये कि अँगरेज़ सरकार फिर से आकर हुकूमत अपने हाथ में लेले. एक अर्ज़ी तय्यार की गई. उस पर कुछ दस्तख़त भी हुए. पर यह काम आगे न चला. ख़ुद लाहौर में जुलाई सन्' ४७ के आख़ीर में एक अँगरेज़ फ़ौजी अफ़सर ने एक मुसलमान पुलिस अफ़सर से कहा—"क्या आप समझते हैं हम हिन्दुस्तान छोड़कर जा रहे हैं ? नहीं. हम मलाया में रहेंगे और जब हालत काफ़ी ख़राब हो जायगी तो फिर लौट आवेंगे." और भी मिसालें दी जा सकती हैं और इससे बुरी मिसालें दी जा सकती हैं. अंगरेज़ अफ़सरों ने जिनके पास वसीला था और जिन्हें इसका मौक़ा मिला न सिर्फ़ आग को सुलगाने और फैलाने ही में

ضلع سے ہٹا لیا جاتا تو وہاں ایک بھی ہندو یا سکھ نہ مارا جاتا اور نہ لوٹا جاتا. راولپنڈی سے آنے والے عزّت دار ہندوؤں اور مسلمانوں دونوں کی یہ رائے تھی کہ مارچ کے مہینے میں وہاں جو کچھ فساد ہوا اُس سب کی ذمّے واری وہاں کے ڈسٹرکٹ کمشنر سی. ایل. کٹس اور ہوم سکریٹری میکڈانلڈ پر تھی. پوربی پنجاب کے ایک ضلع میں جب ہندوؤں نے یہ طے کرلیا کہ وہ کسی مسلمان کو تکلیف نہ دیں گے تو ایک انگریز فوجی افسر نے میلوں گھوڑے پر جاکر جگہ جگہ کتنے ہی آدمیوں کو کیول اِس لئے اپنی گولی کا نشانہ بنایا تاکہ آگ پھر سے بھڑک اُٹھے. پچھمی پنجاب کے ایک ضلع میں جب کچھ ہندوؤں اور سکھوں نے ایک انگریز، فوجی کمانڈر کے پاس جاکر اُس سے مدد چاہی تو انگریز افسر نے اُن سے کہا کہ آپ ایک عرضی لکھ کر لوگوں سے اُس پر دستخط کرالیئے کہ انگریز سرکار پھر سے آکر حکومت اپنے ہاتھ میں لے لے. ایک عرضی تیّار کی گئی. اُس پر کچھ دستخط بھی ہوئے. پر یہ کام آگے نہ چلا. خود لاہور میں جولائی ۴۷ء کے آخیر میں ایک انگریز، فوجی افسر نے ایک مسلمان پولیس افسر سے کہا "کیا آپ سمجھتے ہیں ہم ہندستان چھوڑکر جارہے ہیں؟ نہیں. ہم ملایا میں رہیں گے اور جب حالت کافی خراب ہوجائے گی تو پھر لوٹ آویں گے." اور بھی مثالیں دی جاسکتی ہیں اور اِس سے بُری مثالیں دی جاسکتی ہیں. انگریز افسروں نے جن کے پاس وسیلہ تھا اور جنھیں اِس کا موقع ملا نہ صرف آگ کو سُلگانے اور پھیلانے ہی میں

मदद दी बल्कि उसे भड़काए रखने की भी पूरी कोशिश की. हमें शर्म के साथ यह मानना चाहिये कि हममें काफ़ी बुराइयां हैं, पर इसमें भी शक नहीं कि हिन्दू मुसलमान या सिक्ख तीनों में से कोई भी इतना बुरा नहीं है जितना आज वह दूसरे मज़हब वालों को दिखाई देता है.

पंजाब की एक और ख़ास घटना: गुड़गांव ज़िले के मुसलमान मेओ और हिन्दू जाटों की लड़ाई थी. यह घटना अपने ढंग की बिलकुल अनोखी थी. मेओ लोग पहले राजपूत थे. कुछ पीढ़ियों पहले मुसलमान हो गए. उनके बहुत से रीत रिवाज आज तक हिन्दू राजपूतों से मिलते हैं. मुसलमान मेओ और हिन्दू जाट उस ज़िले में पीढ़ियों से अच्छे पड़ौसियों की तरह मेल मिलाप के साथ रहते आए हैं. इस बार की मुसीबत में कुछ हिन्दू फ़िरक़ापरस्तों ने बाहर से आकर जाटों को भड़काना शुरू किया. इसी तरह कुछ मुसलमान फ़िरक़ापरस्तों ने मेओं को भड़काना शुरू किया. दोनों में तनातनी बढ़ने लगी. आख़िर दोनों में लड़ाई हो गई. मेओ लोगों के गांव एक दूसरे से मिले हुए और एक ही इलाक़े में हैं. लेकिन क़रीब क़रीब हर मेओ गाँव में जब कि बहुत बड़ी तादाद मेओं की है थोड़े बहुत घर हिन्दुओं के भी हैं. इनके इलाक़े से सटा हुआ इलाक़ा जाटों का है. जाटों के हर गाँव में भी जब कि बहुत बड़ी तादाद हिन्दू जाटों की है थोड़े बहुत घर मुसलमान जाटों के भी हैं. यह लड़ाई कई दिन जारी रही. इस तमाम लड़ाई में मेओ गाँव के हिन्दू, मेओं के साथ कन्धे से कंधा मिलाकर हिन्दू जाटों से लड़े. इसी तरह जाट गाँव के मुसलमान जाट, हिंदू जाटों के साथ कंधे से कंधा मिला कर मेओं से

مدد دی بلکہ اُسے بھڑکائے رکھنے کی بھی پوری کوشش کی. ہمیں شرم کے ساتھ یہ ماننا چاہیے کہ ہم میں کافی بُرائیاں ہیں، پر اِس میں بھی شک نہیں کہ ہندو مسلمان یا سِکھ تینوں میں سے کوئی بھی اِتنا بُرا نہیں ہے جتنا آج وہ دوسرے مذہب والوں کو دکھائی دیتا ہے.

پنجاب کی ایک اور خاص گھٹنا گڑگانوں ضلع کے مسلمان میو اور ہندو جاٹوں کی لڑائی تھی. یہ گھٹنا اپنے ڈھنگ کی بالکل انوکھی تھی. میو لوگ پہلے راجپوت تھے. کچھ پیڑھیوں پہلے مسلمان ہوگئے. اُن کے بہت سے رِیت رواج آج تک ہندو راجپوتوں سے ملتے ہیں. مسلمان میو اور ہندو جاٹ اُس ضلع میں پیڑھیوں سے اچھے پڑوسیوں کی طرح میل ملاپ کے ساتھ رہتے آئے ہیں. اِس بار کی مصیبت میں کچھ ہندو فرقہ پرستوں نے باہر سے آکر جاٹوں کو بھڑکانا شروع کیا. اِسی طرح کچھ مسلمان فرقہ پرستوں نے میوؤں کو بھڑکانا شروع کیا. دونوں میں تناتنی بڑھنے لگی. آخر دونوں میں لڑائی ہوگئی. میو لوگوں کے گانوں ایک دوسرے سے ملے اور ایک ہی علاقے میں ہیں. لیکن قریب قریب ہر میو گانوں میں جب کہ بہت بڑی تعداد میوؤں کی ہے تھوڑے بہت گھر ہندوؤں کے بھی ہیں. اِن کے علاقے سے سٹا ہوا علاقہ جاٹوں کا ہے. جاٹوں کے ہر گانوں میں بھی جب کہ بہت بڑی تعداد ہندو جاٹوں کی ہے تھوڑے بہت گھر مسلمان جاٹوں کے بھی ہیں. یہ لڑائی کئی دن جاری رہی. اِس تمام لڑائی میں میو گانوں کے ہندو، میوؤں کے ساتھ کندھے سے کندھا ملاکر ہندو جاٹوں سے لڑے. اِسی طرح جاٹ گانوں کے مسلمان جاٹ، ہندو جاٹوں کے ساتھ کندھے سے کندھا ملاکر میوؤں سے

लड़े. किसी भी गाँव का एका नहीं टूटा. लड़ने वालों की तादाद दोनों तरफ़ दसों हज़ार थी. यह लोग दिन में लड़ते थे और रोज़ रात को मेश्रो और जाट दोनों 'पाल' में जमा होकर बातें करते थे और एक दूसरे पर इलज़ाम लगाते थे कि तुमने बाहर वालों के हाथों में खेल कर अपने इलाक़े के एके को बरबाद कर दिया. कई दिन गुज़र गए पर इस लड़ाई के दौरान में किसी दिन भी न किसी मेश्रो ने किसी श्रौरत या बच्चे को हाथ लगाया श्रौर न किसी जाट ने इस पुरानी मरजादा को तोड़ा. श्राख़िरकार एक दिन शाम को दोनों ने महसूस किया कि इस भाई भाई की लड़ाई से किसी का भला नहीं हो सकता. अगले दिन लड़ाई बंद रही. ज़िला मैजिस्ट्रेट को बुलाया गया. मैजिस्ट्रेट और फ़ौजी अफ़सरों की मौजूदगी में मुसलमान मेश्रो श्रौर हिंदू ज़ाट दोनों ने क़सम खाई कि अब हम एक दूसरे से नहीं लड़ेंगे. दोनों ने उन बाहर के फ़िरक़ापरस्तों को गालियां दीं जिन्होंने उनके सदियों के मेल मिलाप श्रौर अमन आमान को तबाह करना चाहा था. मैं पाँच नवम्बर को गुड़गाँव ज़िले के इन गांवों में गया. मेश्रो श्रौर जाट बड़े प्रेम से मिल जुल कर रहे थे. वह सब सिर्फ़ एक बात पर डटे हुए थे. वह यह कि अब हम किसी बाहर के भड़काने वाले हिन्दू फ़िरक़ापरस्त या मुसलिम फ़िरक़ापरस्त को अपने इलाक़े में घुसने न देंगे.

इस सब का इलाज क्या है ? अभी फ़िलहाल पहली चीज़ यह है कि सब इस बात को समझें श्रौर महसूस करें कि यह श्राबादियों का इधर से उधर भेजा जाना हद दरजे की ग़लती थी. ख़ुशक़िस्मती से मैंने यह देखा कि पाकिस्तान की सरकार श्रौर इंडिया की सरकार

لڑے۔ کسی بھی گاؤں کا ایکا نہیں ٹوٹا۔ لڑنے والوں کی تعداد دونوں طرف دسوں ہزار تھی۔ یہ لوگ دن میں لڑتے تھے اور روز رات کو میو اور جاٹ دونوں 'پال' میں جمع ہوکر باتیں کرتے تھے اور ایک دوسرے پر الزام لگاتے تھے کہ تم نے باہر والوں کے ہاتھوں میں کھیل کر اپنے علاقے کے ایکے کو برباد کردیا۔ کئی دن گذر گئے پر اس لڑائی کے دوران میں کسی دن بھی نہ کسی میو نے کسی عورت یا بچے کو ہاتھ لگایا اور نہ کسی جاٹ نے اس پرانی مرجادا کو توڑا۔ آخرکار ایک دن شام کو دونوں نے محسوس کیا کہ اس بھائی بھائی کی لڑائی سے کسی کا بھلا نہیں ہوسکتا۔ اگلے دن لڑائی بند رہی۔ ضلع مجسٹریٹ کو بلایا گیا۔ مجسٹریٹ اور فوجی افسروں کی موجودگی میں مسلمان میو اور ہندو جاٹ دونوں نے قسم کھائی کہ اب ہم ایک دوسرے سے نہیں لڑیں گے۔ دونوں نے اُن باہر کے فرقہ پرستوں کو گالیاں دیں جنھوں نے اُن کے صدیوں کے میل ملاپ اور امن امان کو تباہ کرنا چاہا تھا۔ میں پانچ نومبر کو گڑگاؤں ضلع کے ان گاؤں میں گیا۔ میو اور جاٹ بڑے پریم سے مل جل کر رہتے تھے۔ وہ سب صرف ایک بات پر ڈٹے ہوئے تھے۔ وہ یہ کہ اب ہم کسی باہر کے بھڑکانے والے ہندو فرقہ پرست یا مسلم فرقہ پرست کو اپنے علاقے میں گھسنے نہ دیں گے۔

اس سب کا علاج کیا ہے؟ ابھی فی الحال پہلی چیز یہ ہے کہ سب اس بات کو سمجھیں اور محسوس کریں کہ یہ آبادیوں کا اِدھر سے اُدھر بھیجا جانا حد درجے کی غلطی تھی۔ خوش قسمتی سے میں نے یہ دیکھا کہ پاکستان کی سرکار اور انڈیا کی سرکار

दोनों अब इस चीज़ को समझ गई हैं. वज़ीर आज़म नवाबज़ादा लियाक़त अली ख़ां और रिफ़्यूजियों के वज़ीर राजा ग़ज़नफ़रअली ख़ां दोनों ने मुझे यक़ीन दिलाया कि उनकी सरकार अब अपनी यह पालिसी तय कर चुकी है कि जो हिंदू भी पाकिस्तान में रहने को राज़ी हों उन्हें उनके घरों में रक्खा जावे और उनकी पूरी हिफ़ाज़त की जावे और उनके साथ और मुसलमानों के साथ बर्ताव में किसी तरह का फ़रक़ न किया जावे. वह इसके लिये भी तय्यार हैं कि जो हिन्दू पाकिस्तान छोड़ कर चले आए हैं वह भी अगर वापस जाने को तय्यार हों तो उनकी भी हर तरह हिफ़ाज़त और मदद की जावे. कोई वजह नहीं कि इस मामले में हम पाकिस्तान सरकार की बात पर भरोसा क्यों न करें. कुछ भी हो तजरबे ने और उनके अपने नफ़े नुक़सान ने उन्हें इस नतीजे पर पहुँचा दिया है. मैंने यह भी देखा कि इस मामले में राजा ग़ज़नफ़र अली की कोशिशें बहुत अच्छा असर कर रही हैं और तारीफ़ के क़ाबिल हैं. हाल में अपने हिंदू दोस्त और साथी पूरबी पंजाब की सरकार के झेलम के लियेज़ान अफ़सर लाला अवतार नरायन की मदद से राजा ग़ज़नफ़र अली ने क़रीब नौ हज़ार ऐसे हिंदुओं को जो झेलम से चले जाने का फ़ैसला कर चुके थे समझा बुझा कर उनके घरों में रोक लिया. तीन स्पेशल ट्रेन उन्हें झेलम से हिंदुस्तान पहुँचाने के लिये तय हो चुकी थीं. उन सब की रज़ामंदी से यह तीनों ट्रेन वापिस कर दी गईं.

पच्छिमी पंजाब के इन्सपेक्टर जनरल आफ़ पुलिस मि० क़ुर-बान अली ख़ां सूबे के अन्दर फिर से अमन अमान क़ायम करने की पूरी कोशिशें कर रहे थे. जब वहाँ की असेम्बली के दो मुसलमान

دونوں اب اس چیز کو سمجھ گئی ہیں۔ وزیر اعظم نواب زادہ لیاقت علی خاں اور رفیوجیوں کے وزیر راجا غضنفر علی خاں دونوں نے مجھے یقین دلایا کہ اُن کی سرکار اب اپنی یہ پالیسی طے کر چکی ہے کہ جو ہندو بھی پاکستان میں رہنے کو راضی ہوں انھیں اُن کے گھروں میں رکھا جاوے اور اُن کی پوری حفاظت کی جاوے اور اُن کے ساتھ اور مسلمانوں کے ساتھ برتاؤ میں کسی طرح کا فرق نہ کیا جاوے۔ وہ اس کے لئے بھی تیار ہیں کہ جو ہندو پاکستان چھوڑ کر چلے آئے ہیں وہ بھی اگر واپس جانے کو تیار ہوں تو اُن کی بھی ہر طرح حفاظت اور مدد کی جاوے۔ کوئی وجہ نہیں کہ اس معاملے میں ہم پاکستان سرکار کی بات پر بھروسا کیوں نہ کریں۔ کچھ بھی ہو تجربے نے اور اُن کے اپنے نفع نقصان نے انھیں اس نتیجے پر پہنچا دیا ہے۔ میں نے یہ بھی دیکھا کہ اس معاملے میں راجا غضنفر علی کی کوششیں بہت اچھا اثر کر رہی ہیں اور تعریف کے قابل ہیں۔ حال میں اپنے ہندو دوست اور ساتھی پوربی پنجاب کی سرکار کے جھیلم کے لئے زان افسر لالہ اوتار نراین کی مدد سے راجا غضنفر علی نے قریب نو ہزار ایسے ہندوؤں کو جو جھیلم سے چلے جانے کا فیصلہ کر چکے تھے سمجھا بجھا کر اُن کے گھروں میں روک لیا۔ تین اسپیشل ٹرین انھیں جھیلم سے ہندستان پہنچانے کے لئے طے ہو چکی تھیں۔ اُن سب کی رضامندی سے یہ تینوں ٹرین واپس کر دی گئیں۔

پچھمی پنجاب کے انسپکٹر جنرل آف پولیس مسٹر قربان علی خاں صوبے کے اندر پھر سے امن امان قائم کرنے کی پوری کوشش کر رہے تھے۔ جب وہاں کی اسمبلی کے دو مسلمان

मेम्बरों के घरों में जिनका जनता पर काफ़ी असर था हिन्दू घरों की लूट का माल पकड़ा गया, और ऐसे ही एक मुसलमान सेशन्स जज के यहाँ भी इसी तरह का माल मिला तो इन्सपेक्टर जनरल ने बिना झिझके इन तीनों को गिरफ़्तार कर लिया. बक़रीद से कुछ दिन पहले मैंने इन्सपेक्टर जनरल से कहा कि जो हज़ारों हिन्दू ज़बरदस्ती मुसलमान कर लिये गए थे उनमें यह डर फैला हुआ था कि उनके मुसलमान पड़ौसी बक़रीद के दिन उन्हें इस बात पर मजबूर करेंगे कि वह उनके साथ गाय की क़ुरबानी में शामिल हों वग़ैरा. इन्सपेक्टर जनरल ने मुझे यक़ीन दिलाया कि पाकिस्तान सरकार इस तरह की मज़हब की तबदीली को हरगिज़ जायज़ नहीं मानती. उन्होंने फ़ौरन ही अपने एक असिस्टेन्ट को बुलाकर सूबे भर के सब पुलिस सुपरिनटेनडेन्टों के नाम एक हुकुम लिखवाया कि इस मामले में सब हिन्दुओं की और जो नए मुसलमान कहे जाते हैं उनकी पूरी पूरी हिफ़ाज़त की जावे. यह हुकुम ऐसे शब्दों में लिखाया गया जिनसे मेरी पूरी तसल्ली हो गई और बेतार के तार से सब ज़िलों को भेज दिया गया. बाद में मुझे मालूम हुआ कि इस हुकुम पर सब जगह ठीक ठीक अमल हुआ और बक़रीद सूबे भर में अमन से गुज़र गई.

इस पर भी पच्छिमी पंजाब की हालत अभी वहाँ की सरकार के पूरी तरह क़ाबू में नहीं आई थी. जिन ताक़तों को शायद उन्होंने ख़ुद उकसा दिया था उन्हें क़ाबू में लाना इतना आसान नहीं था. इन्सपेक्टर जनरल ने ख़ुद मुझसे कहा कि जब उन्होंने चार्ज लिया था उस वक़्त कुल पुलिस वालों में से मुशकिल से सौ पीछे दो

ممبروں کے گھروں میں جن کا جنتا پر کافی اثر تھا ہندو گھروں کی لوٹ کا مال پکڑا گیا، اور ایسے ہی ایک مسلمان سیشنس جج کے یہاں بھی اِسی طرح کا مال ملا تو انسپکٹر جنرل نے بنا جھجھکے اِن تینوں کو گرفتار کر لیا. بقرعید سے کچھ دن پہلے میں نے انسپکٹر جنرل سے کہا کہ جو ہزاروں ہندو زبردستی مسلمان کر لئے گئے تھے اُن میں یہ ڈر پھیلا ہوا تھا کہ اُن کے مسلمان پڑوسی بقرعید کے دن اُنھیں اِس بات پر مجبور کریں گے کہ وہ اُن کے ساتھ گائے کی قربانی میں شامل ہوں وغیرہ. انسپکٹر جنرل نے مجھے یقین دلایا کہ پاکستان سرکار اِس طرح کی مذہب کی تبدیلی کو ہرگز جایز نہیں مانتی. اُنھوں نے فوراً ہی اپنے ایک اسسٹنٹ کو بُلاکر صوبے بھر کے سب پولیس سپرنٹنڈنٹوں کے نام ایک حکم لکھوایا کہ اِس معاملے میں سب ہندوؤں کی اور جو نئے مسلمان کہے جاتے ہیں اُن کی پوری پوری حفاظت کی جاوے. یہ حکم ایسے شبدوں میں لکھوایا گیا جن سے میری پوری تسلّی ہوگئی اور بے تار کے تار سے سب ضلعوں کو بھیج دیا گیا. بعد میں مجھے معلوم ہوا کہ اِس حکم پر سب جگہ ٹھیک ٹھیک عمل ہوا اور بقرعید صوبے بھر میں امن سے گزر گئی.

اِس پر بھی پچھمی پنجاب کی حالت ابھی وہاں کی سرکار کے پوری طرح قابو میں نہیں آئی تھی. جن طاقتوں کو شاید اُنھوں نے خود اُکسا دیا تھا اُنھیں قابو میں لانا اِتنا آسان نہیں تھا. انسپکٹر جنرل نے خود مجھ سے کہا کہ جب اُنھوں نے چارج لیا تھا اُس وقت کُل پولیس والوں میں سے مشکل سے سَو پیچھے دو

उनके सब हुकुम मानते थे. लेकिन अब कुछ हफ़्तों के अन्दर दो से बढ़ते बढ़ते यह तादाद पैंतीस तक पहुँच चुकी थी. यह तादाद बढ़ती जा रही थी. जहाँ तक मैं देख सका पच्छिमी पंजाब की सरकार न पूरी तरह मज़बूत थी और न हर तरह क़ाबिल. पर उनकी नियत कम से कम जहाँ तक अमन अमान क़ायम रखने का सवाल है अच्छी थी और उनकी ताक़त और क़ाबलियत दोनों धीरे धीरे बढ़ती जा रही थीं.

पूरबी पंजाब की सरकार कुछ ज़्यादा कमज़ोर और नाक़ाबिल थी. वहाँ के कुछ महकमों की हालत तो ख़ासी अफ़सोसनाक थी. शायद इसकी ख़ास वजह यह थी कि पच्छिम पंजाब वालों को जमी जमाई सरकार और बने बनाए महकमें मिल गए. पूरबी पंजाब वालों को गवरमेन्ट का सारा ढाँचा नए सिरे से खड़ा करना पड़ा और वह भी इन अफ़रातफ़री के दिनों में. उन्होंने जलन्धर के इसलामियां कालेज को अपना काम चलाऊ सेक्रेटेरियट बना रक्खा था. उस इमारत की हालत सेक्रेटेरियट कहलाने के क़ाबिल नहीं थी. मुझे उम्मीद है यह सारी हालत वहाँ सुधरती जा रही है.

अब हम ज़रा ज़्यादा टिकाऊ इलाज की तरफ़ ध्यान दें. इसके लिये पहले हमें यह समझना होगा कि हमारी बीमारी असल में है क्या ? किन किन कारनों ने मिल कर आज कल की इस मुसीबत को खड़ा किया है ? दो चीज़ें हैं जो इस हालत के लिये ज़िम्मेवार हैं. इनमें पहली चीज़ हमारा यह स्वभाव है कि हम ज़िन्दगी को फ़िरक़ों, सम्प्रदायों, मज़हबी गिरोहों यहाँ तक कि क़बीलों और ज़ातपात की शकल में ही देखते हैं. दूसरी चीज़ है विदेशियों

اُن کے سب حکم مانتے تھے. لیکن اب کچھ ہفتوں کے اندر دو سے بڑھتے بڑھتے یہ تعداد پینتیس تک پہنچ چکی تھی. یہ تعداد بڑھتی جا رہی تھی. جہاں تک میں دیکھ سکا پچھمی پنجاب کی سرکار پوری طرح مضبوط تھی اور نہ ہر طرح قابل. پر اُن کی نیت کم سے کم جہاں تک امن امان قایم رکھنے کا سوال ہے اچھی تھی اور اُن کی طاقت اور قابلیت دونوں دھیرے دھیرے بڑھتی جا رہی تھیں.

پوربی پنجاب کی سرکار کچھ زیادہ کمزور اور ناقابل تھی. وہاں کے کچھ محکموں کی حالت تو خاصی افسوسناک تھی. شاید اِس کی خاص وجہ یہ تھی کہ پچھمی پنجاب والوں کو جمی جمائی سرکار اور بنے بنائے محکمے مل گئے. پوربی پنجاب والوں کو گورنمنٹ کا سارا ڈھانچا نئے سرے سے کھڑا کرنا پڑا اور وہ بھی اِن افراتفری کے دنوں میں. اُنھوں نے جلندھر کے اسلامیہ کالج کو اپنا کام چلاؤ سکریٹریٹ بنا رکھا تھا. اُس عمارت کی حالت سکریٹریٹ کہلانے کے قابل نہیں تھی. مجھے اُمید ہے یہ ساری حالت وہاں سُدھرتی جا رہی ہے.

اب ہم ذرا زیادہ ٹکاؤ علاج کی طرف دھیان دیں. اِس کے لئے پہلے ہمیں یہ سمجھنا ہوگا کہ ہماری بیماری اصل میں ہے کیا؟ کن کن کارنوں نے مل کر آج کل کی اِس مصیبت کو کھڑا کیا ہے؟ دو چیزیں ہیں جو اس حالت کے لئے ذمے دار ہیں. اِن میں پہلی چیز ہمارا یہ سوبھاو ہے کہ ہم زندگی کو فرقوں، سمپردایوں، مذہبی گروہوں یہاں تک کہ قبیلوں اور جات پات کی شکل میں ہی دیکھتے ہیں. دوسری چیز ہے ودیشیوں

के राजकाजी हथकंडे. दूसरी चीज़ बीज है और पहली वह मिट्टी जिसमें वह बीज पनपा और फला फूला. एक बार जब चक्कर चल पड़ा तो चक्कर के अन्दर चक्कर. एक से एक बढ़ कर शैतानी चक्कर बनते चले गए. हमारी फ़िरक़ेवाराना गिरोह बन्दियों से दंगे फ़िसाद हुए और इन दंगों ने फ़िरक़ेवाराना मन मुटाव को और बढ़ाया. परदेसियों के राज ने हमें इस हालत तक पहुँचाया और जिस हालत तक हम पहुंच गए हैं उससे मालूम होता है कि हमारी बेबसी और ग़ैरों का आसरा ढूँढ़ने की मजबूरी और बढ़ जावेगी. मैं यहाँ इस हालत के राजकाजी पहलू में ज्यादा जाना नहीं चाहता. पर पाकिस्तान के बाद सिक्खिस्तान, जाटिस्तान और न जाने किस किस 'स्तान' की अवाज़ें अभी से सुनाई देने लगी हैं. यह भी डर है कि अगर, भगवान न करे, पाकिस्तान और इन्डिया दोनों की सरकारों में लड़ाई बढ़ी तो दोनों को दुनिया की दो सब से बड़ी लुटेरी सरकारों इंगलिस्तान और अमरीका का मुंह ताकना पड़ेगा, क्यों कि दोनों को बेशुमार हवाई जहाज़ों और तरह तरह के नए से नए फ़ौजी सामान की ज़रूरत होगी. तब फिर क्या करें ?

सब से पहले हमें इस बात की ज़बरदस्त कोशिश करनी चाहिये कि हमारी फ़िरक़ेवारी, मज़हबी या इसी तरह के दूसरे गिरोहों में सोचने की आदत बिलकुल ख़त्म हो. हमारा सबसे बड़ा रोग ही यह है कि हम पीछे को ज्यादा देखते हैं और कोल्हू के बैल की तरह हमारे दिमाग़ पुरानी धुरियों के इर्द गिर्द ही

کے راج کاجی ہتھکنڈے. دوسری چیز بیج ہے اور پہلے وہ مٹی جس میں وہ بیج پنپا اور پھلا پھولا. ایک بار جب چکر چل پڑا تو چکر کے اندر چکر، ایک سے ایک بڑھ کر شیطانی چکر بنتے چلے گئے. ہماری فرقہ وارانہ گروہ بندیوں سے دنگے فساد ہوئے اور ان دنگوں نے فرقہ وارانہ من مٹاؤ کو اور بڑھایا. پردیسیوں کے راج نے ہمیں اس حالت تک پہنچایا اور جس حالت تک ہم پہنچ گئے ہیں اس سے معلوم ہوتا ہے کہ ہماری بےبسی اور غیروں کا آسرا ڈھونڈھنے کی مجبوری اور بڑھ جاوے گی. میں یہاں اس حالت کے راج کاجی پہلو میں زیادہ جانا نہیں چاہتا. پر پاکستان کے بعد سکھستان، جاٹستان اور نہ جانے کس کس 'ستان' کی آوازیں (۴۲۲)
ابھی سے سنائی دینے لگی ہیں. یہ بھی ڈر ہے کہ اگر، بھگوان نہ کرے، پاکستان اور انڈیا دونوں کی سرکاروں میں لڑائی بڑھی تو دونوں کی دنیا کی دو سب سے بڑی لٹیری سرکاروں انگلستان اور امریکا کا منہ تاکنا پڑے گا، کیونکہ دونوں کو بےشمار ہوائی جہازوں اور طرح طرح کے نئے سے نئے فوجی سامان کی ضرورت ہوگی. تب پھر کیا کریں ؟

سب سے پہلے ہمیں اس بات کی زبردست کوشش کرنی چاہئے کہ ہماری فرقے واری، مذہبی یا اسی طرح کے دوسرے گروہوں میں سوچنے کی عادت بالکل ختم ہو. ہمارا سب سے بڑا روگ ہی یہ ہے کہ ہم پیچھے کو زیادہ دیکھتے ہیں اور کولھو کے بیل کی طرح ہمارے دماغ پرانی دھریوں کے ارد گرد ہی

गिरोह बन्दी से हममें अंधे विश्वास, तरह तरह के ग़लत वहम बढ़ते जाते हैं जिनसे हमारे दिमाग़ और हमारा चलन दोनों तेज़ी से गिर रहे हैं. यह अनोखा असूल कि हिन्दू और मुसलमान दो नेशन या दो राष्ट्र हैं ग़लत था, पर इसकी जड़ें हिन्दुओं की छुआछूत और उनकी अलगपसन्दी में थीं. मुल्क के बटवारे की मांग बुरी मांग थी, लेकिन पंजाब और बंगाल के दो दो टुकड़े कर डालने की मांग उससे भी ज़्यादा बुरी थी. अगर कोई एक नतीजा पंजाब की मुसीबतों से साफ़ निकलता हुआ दिखाई देता है तो वह यह है कि हमारे मज़हबी या धार्मिक साइन बोर्डों से हमारे चलन में कोई फ़रक़ नहीं पड़ा. हमें इन सब तंगनज़रियों से ऊपर उठना होगा. आम लोगों को मज़हबी मानताओं और रीतरिवाज के मामले में जहाँ तक हो सके आज़ादी देनी होगी. पर जो लोग इस क़ाबिल हैं उन्हें चाहिये बल्कि उनका फ़र्ज़ है कि इन साइन बोर्डों और गिरोह बन्दियों से ऊपर उठें और इस तरह से रहें सहें जिससे इनसानियत, प्रेम और एक दूसरे की सेवा के ख़याल बढ़ें, लोग इन्हीं असूलों को असली मज़हब समझें और इस मज़हब इन्सानियत के फलने फूलने में मदद मिले. इस बात से कौन इनकार कर सकता है कि हमारे ज़्यादातर पढ़े लिखे लोग सिर्फ़ पोलिटिकल मुसलिम, पोलिटिकल हिन्दू या पोलिटिकल सिक्ख हैं. हमारे इस दिखावे से देश की जनता बुरी तरह तबाह हो रही है. यह दिखावा बन्द होना चाहिये.

दूसरी बात यह है कि भोली भाली लेकिन साफ़ दिल आम जनता का हमें मज़बूत संघटन करना चाहिये. मैं कह चुका हूँ

گروہ بندی سے ہم میں اندھے وشواس، طرح طرح کے غلط وہم بڑھتے جاتے ہیں جن سے ہمارے دماغ اور ہمارا چلن دونوں تیزی سے گر رہے ہیں. یہ انوکھا اصول کہ ہندو اور مسلمان دو نیشن یا دو راشٹر ہیں غلط تھا، پر اس کی جڑیں ہندوؤں کی چھوا چھوت اور اُن کی الگ پسندی میں تھیں. ملک کے بٹوارے کی مانگ بُری مانگ تھی، لیکن پنجاب اور بنگال کے دو دو ٹکڑے کر ڈالنے کی مانگ اُس سے بھی زیادہ بُری تھی. اگر کوئی ایک نتیجہ پنجاب کی مصیبتوں سے صاف نکلتا ہوا دکھائی دیتا ہے تو وہ یہ ہے کہ ہمارے مذہبی یا دھارمک سائن بورڈوں سے ہمارے چلن میں کوئی فرق نہیں پڑا. ہمیں ان سب تنگ نظریوں سے اوپر اُٹھنا ہوگا. عام لوگوں کو مذہبی مانتاؤں اور ریت رواج کے معاملے میں جہاں تک ہو سکے آزادی دینی ہوگی. پر جو لوگ اس قابل ہیں اُنھیں چاہئے بلکہ اُن کا فرض ہے کہ ان سائن بورڈوں اور گروہ بندیوں سے اوپر اُٹھیں اور اس طرح سے رہیں سہیں جس سے انسانیت، پریم اور ایک دوسرے کی سیوا کے خیال بڑھیں، لوگ ان ہی اصولوں کو اصلی مذہب سمجھیں اور اس مذہب انسانیت کے پھلنے پھولنے میں مدد ملے. اس بات سے کون انکار کر سکتا ہے کہ ہمارے زیادہ تر پڑھے لکھے لوگ صرف پولیٹیکل مسلم، پولیٹیکل ہندو یا پولیٹیکل سکھ ہیں. ہمارے اس دکھاوے سے دیش کی جنتا بُری طرح تباہ ہو رہی ہے. یہ دکھاوا بند ہونا چاہئے.

دوسری بات یہ ہے کہ بھولی بھالی لیکن صاف دل عام جنتا کا ہمیں مضبوط سنگٹھن کرنا چاہئے. میں کہہ چکا ہوں

कि उस नेशन या राष्ट्र का असली दिल, जिसमें मैं हिन्दुओं मुसलमानों, सिक्खों, ईसाइयों, पारसियों और सब को शामिल करता हूँ, अभी तक साफ़ है. यह समझना ग़लत है कि आम जनता पढ़े लिखों की निस्बत ज्यादा फ़िरक़ापरस्त है. अंधे विश्वासों को पुश्ते बांधकर जिन्दा रखने वाले और फ़िरक़ापरस्ती को बनाए रखने वाले असल में पढ़े लिखे ही हैं. हमें मामूली जनता का इस तरह संगठन करना चाहिये कि वह खुद अपने अन्दर के बहके हुये लोगों और बुरे लोगों को क़ाबू में रख सके.

तीसरी चीज़ यह है कि हमें अपने देश के राजकाज से अँगरेज़ों, अमरीका वालों या किसी भी ग़ैर मुल्क वालों को जितनी जल्दी हो सके बिल्कुल अलग कर देना चाहिये. इसके लिये हमें अपनी उन सब तजवीज़ों और योजनाओं को बदलना होगा जो हम अपनी आगे की राजकाजी, माली या तिजारती ज़िन्दगी के बारे में कर रहे हैं. हमें अपने राजकाज, दस्तकारी और तिजारत सबका आगे का नक़्शा ज्यादा समझ के साथ, सबके और ख़ासकर जनता के भले का ज्यादा से ज्यादा ख़्याल रखते हुए, नेकी और बदी के पुराने आदर्शों को सामने रखते हुए और ऐसे ढंग से तय्यार करना होगा कि जिससे हमारा एक एक गाँव और हमारा सारा देश पूरी तरह अपने पैरों पर खड़ा हो सके. उसे किसी बाहर वाले का मुँह ताकना न पड़े.

आख़री चीज़ यह है कि हमें अपनी हिन्दू और मुसलिम देसी रियासतों का वह ढाँचा जो हज़ारों बरस का पुराना हो गया है और जो आजकल की दुनिया की हालत में हमारा कोई भला नहीं कर

کہ اُس نیشن یا راشٹر کا اصلی دل، جس میں میں ہندوؤں مسلمانوں، سکھوں، عیسائیوں، پارسیوں اور سب کو شامل کرتا ہوں، ابھی تک صاف ہے۔ یہ سمجھنا غلط ہے کہ عام جنتا پڑھے لکھوں کی نسبت زیادہ فرقہ پرست ہے۔ اندھے وشواسوں کو پُشتے باندھ کر زندہ رکھنے والے اور فرقہ پرستی کو بنائے رکھنے والے اصل میں پڑھے لکھے ہی ہیں۔ ہمیں معمولی جنتا کا اِس طرح سنگٹھن کرنا چاہئے کہ وہ خود اپنے اندر کے بہکے ہوئے لوگوں اور بُرے لوگوں کو قابو میں رکھ سکے۔

تیسری چیز یہ ہے کہ ہمیں اپنے دیش کے راج کاج سے انگریزوں، امریکا والوں یا کسی بھی غیر ملک والوں کو جتنی جلدی ہو سکے بالکل الگ کر دینا چاہئے۔ اِس کے لئے ہمیں اپنی اُن سب تجویزوں اور یوجناؤں کو بدلنا ہوگا جو ہم اپنی آگے کی راج کاجی، مالی یا تجارتی زندگی کے بارے میں کر رہے ہیں۔ ہمیں اپنے راج کاج، دستکاری اور تجارت سب کا آگے کا نقشہ زیادہ سمجھ کے ساتھ سب کے اور خاص کر جنتا کے بھلے کا زیادہ سے زیادہ خیال رکھتے ہوئے، نیکی اور بدی کے پُرانے آدرشوں کو سامنے رکھتے ہوئے اور ایسے ڈھنگ سے تیار کرنا ہوگا کہ جس سے ہمارا ایک ایک گاؤں اور ہمارا سارا دیش پوری طرح اپنے پیروں پر کھڑا ہو سکے۔ اُسے کسی باہر والے کا مُنہ تاکنا نہ پڑے۔

آخری چیز یہ ہے کہ ہمیں اپنی ہندو اور مسلم دیسی ریاستوں کا وہ ڈھانچا جو ہزاروں برس کا پُرانا ہو گیا ہے اور جو آج کل کی دُنیا کی حالت میں ہمارا کوئی بھلا نہیں کر

सकता, ख़त्म कर देना चाहिये. राजा और प्रजा दोनों का इसी में भला है. सारे देश का इसी में भला है. हमारे इन राजाओं और नवाबों को समझ लेना चाहिये कि जब समाज ऊँच नीच में बँट जाता है तो एक समय आता है कि जब ऊँचे कहलाने वालों का सबसे बड़ा फ़र्ज़ यही होता है कि वह ख़ुद अपने ऊँचेपन की क़ब्र खोद लें. पटियाला और फ़रीदकोट, अलवर और भरतपुर, कपूरथला और बहावलपुर ने ऊपर की तमाम मुसीबतों को बढ़ाने में जो अफ़सोसनाक और बुरा हिस्सा लिया है उसे मैं यहाँ बयान करना नहीं चाहता.

दुनिया के जो गिरोह इस वक़्त इनसानी समाज के सबसे आगे आगे चल रहे हैं और दूसरे गिरोहों को रास्ता दिखा रहे हैं वह अब आदमी आदमी की राजकाजी बराबरी यानी सियासी जम्हूरियत या राजनीतिक जनतंत्र से बढ़कर माली बराबरी यानी इक़्तसादी जम्हूरियत या आर्थिक जनतंत्र तक पहुँच चुके हैं. अब इस माली बराबरी से बढ़कर आत्मिक या रूहानी बराबरी तक पहुंचने का रास्ता दिखाना शायद हिन्दुस्तान ही के लिये बदा है. पच्छिम के सोशलिज़्म यानी समाजवाद का एक ऐसी मज़हबी निगाह के साथ गठजोड़ करना जो सब धर्मों और इन्सानों को अपने अन्दर लिये हुए हो हमारा ख़ास काम है. मालूम होता है कि हमारे इस वक़्त के सब दुख दर्द आगे के इसी सफ़र की तय्यारी हैं.

—सुन्दरलाल

—०—

سکتا، ختم کر دینا چاہئے. راجا اور پرجا دونوں کا اسی میں بھلا ہے. سارے دیش کا اسی میں بھلا ہے. ہمارے ان راجاؤں اور نوابوں کو سمجھ لینا چاہئے کہ جب سماج اونچ نیچ میں بٹ جاتا ہے تو ایک سمے آتا ہے کہ جب اونچے کہلانے والوں کا سب سے بڑا فرض یہی ہوتا ہے کہ وہ خود اپنے اونچے پن کی قبر کھود لیں. پٹیالہ اور فرید کوٹ، الور اور بھرت پور، کپور تھلہ اور بہاولپور نے اوپر کی تمام مصیبتوں کو بڑھانے میں جو افسوس ناک اور برا حصہ کیا ہے اسے میں یہاں بیان کرنا نہیں چاہتا.

دنیا کے جو گروہ اس وقت انسانی سماج کے سب سے آگے آگے چل رہے ہیں اور دوسرے گروہوں کو راستہ دکھا رہے ہیں وہ اب آدمی آدمی کی راج کاجی برابری یعنی سیاسی جمہوریت یا راج نیتک جنتنتر سے بڑھ کر مالی برابری یعنی اقتصادی جمہوریت یا آرتھک جن تنتر تک پہنچ چکے ہیں. اب اس مالی برابری سے بڑھ کر آتمک یا روحانی برابری تک پہنچنے کا راستہ دکھانا شاید ہندستان ہی کے لئے بدا ہے. پچھم کے سوشلزم یعنی سماج واد کا ایک ایسی مذہبی نگاہ کے ساتھ گٹھ جوڑ کرنا جو سب دھرموں اور انسانوں کو اپنے اندر لئے ہوئے ہو ہمارا خاص کام ہے. معلوم ہوتا ہے کہ ہمارے اس وقت کے سب دکھ درد آگے کے اسی سفر کی تیاری ہیں.

— سندر لال

.:——.: <✲ ✲> :.——:.